: પ્રાપ્તિ સ્થાન :

શ્રી અ. ભા. શ્વે. સ્થાનકવાસી
જૈન શાસ્ત્રોદ્ધાર સમિતિ
ગ્રીનલોજ પાસે, રાજકોટ



પ્રથમ આવૃત્તિ : પ્રત ૧૦૦૦
વીર સંવત : ૨૪૮૫
વિક્રમ સંવત : ૨૦૧૫
ઇસ્વી સન : ૧૯૫૯



મુદ્રક :
ગુણવંત કે. કોઠારી
મુદ્રણસ્થાન સુભાષ પ્રિન્ટરી,
ડૉ. ટંકારિયા રોડ, અમદાવાદ.

# विषयानुक्रमणिका

विषय पृष्ठ



॥ इति समवसरण नामक पूर्वार्ध की विषयानुक्रमणिका ॥

॥ अथ उत्तरार्ध की विषयानुक्रमणि का ॥



# प्राक्कथन

यह मानव सामाजिक प्राणी है। समाज की सुव्यवस्था ही मानवजाति की उन्नति का मूल मन्त्र है। समाजकी सुव्यवस्था मानवजीवन की नैतिकता के ऊपर सुव्यवस्थित है। नैतिकता को अनुप्राणित करने वाला धर्म है। धर्मानुरूप नैतिकता ही मानव के ऐहिक और आमुष्मिक शुभ-दायिनी होती है। धर्म से ही मानव ऐहिक और पारलौकिक शुभ फलका अधिकारी होता है। इसी धर्मानुप्राणित नैतिकता के ऊपर मानवसमाजरूपी भित्ति सुव्यवस्थित है।

परन्तु कालक्रम से उस में दुर्बलता आने लगती है। मानवसमाजरूपी भित्ति लर-खराने लगती है, 'अत्र गिरी-तत्र गिरी' जैसी दशा उपस्थित हो जाती है। ऐसी स्थिति में कोई एक महाप्राण महामानव का प्रादुर्भाव होता है, जो समाजमें धर्मानुरूप नैतिकता को सजग कर मानवको दुर्गति के गर्त्तमें पड़ने से बचाता है।

हम जब आज से अढाई हजार वर्ष पूर्वकाल की ओर दृष्टि देते हैं तो उस समय की सामाजिक परिस्थिति बिलकुल अस्तव्यस्त दिखायी देती है। उस समय धर्मानुप्राणित नैतिकता विलुप्त सी होती जा रही थी। जिस के फलस्वरूप छोटी २ गुटबन्दी, नरसंहार, पशुहत्यायें-आदि की जड़ बलवती होती जा रही थी। ऐसे समय में महाप्राण महामानव भगवान् महावीर स्वामी का प्रादुर्भाव हुआ। भगवान् महावीर स्वामी ने मानवसमाज को सुव्यवस्थित करने के लिये आजीवन दुष्कर तपश्चरण किया, समाज को सुव्यवस्थित करने के लिये उन्होंने नियम बनाये, लोगोंमें धर्मानुरूप नैतिकता की वृद्धि के लिये आर्यावर्त्त में विहरण कर धर्मोपदेश दिया, 'जीवमात्र को सुख-शान्ति मिले' ऐसा सर्वोत्तम धर्मका प्रचार किया। उनका धर्मोपदेश केवल मानव के लिये ही हितकारक नहीं, अपि तु जीवमात्र के लिये हितकारक था। उनका धर्मोपदेश त्रस-स्थावर जीवों में भ्रातृत्व-भावना का संचार करता था। उसी धर्मोपदेश की प्रतिध्वनि आज भी हमे सुनायी देती है—

खामेमि सव्वजीवे, सव्वे जीवा खमंतु मे।
मित्ती मे सव्वभूएसु, वेरं मज्झ न केणई ॥—

मैं सभी जीवों से क्षमा चाहता हूँ, सभी जीव मुझे क्षमा करें। मेरा सभी जीवों के साथ मैत्रीभाव है, किसी के भी साथ वैरभाव नहीं।

भगवान् महावीर स्वामी ने जो उपदेश दिया वह भगवान् महावीर स्वामी और गौतम गणधर के संवादरूप में संगृहीत हुआ। इस संग्रहको 'आगम' नाम से कहा जाता है। स्थानकवासी-मान्यता-अनुसार इस समय बत्तीस आगम उपलब्ध हैं, ११ अङ्ग, १२ उपाङ्ग, ४ मूल, ४ छेद और १ आवश्यक। यह प्रस्तुत आगम उपाङ्ग है और यह आचाराङ्ग का उपाङ्ग है। क्यों कि-आचाराङ्ग के प्रथम अध्ययन के प्रथम उद्देशक में कहा गया है-' एवमेगेसिं णो णायं भवइ-अत्थि मे आया ओववाइए, नत्थि मे आया ओववाइए, के अहं आसी ?, के वा इओ चुए इह पेच्चा भविस्सामि !' अर्थात्-कितनेक जीवों को यह ज्ञात नहीं होता है कि मेरी आत्मा औपपातिक है, या मेरी आत्मा औपपातिक नहीं है, मैं पूर्व मे कौन था ?, और फिर यहाँ से च्युत होकर क्या होऊँगा ?। वहाँ पर जो आत्माको औपपातिक कहा है, उसीका यहाँ पर विशद-रूपमें प्रतिपादन किया गया है। इसीलिये इस आगमका नाम 'औपपातिक' रखा गया है। 'उपपात' शब्दका का अर्थ-देवजन्म, नारकजन्म और सिद्धिगमन है। 'उपपात' को लेकर बनाया गया सूत्र 'औपपातिक' कहलाता है। इस सूत्र में 'जीवोंका किन कर्मों के करने से नरक में जन्म होता है, किन कर्मों से देवलोकमें जन्म होता है, और किस प्रकार कर्मक्षय करने से सिद्धिगति प्राप्त होती है।'-इसका विस्तारपूर्वक प्रतिपादन होने से 'औपपातिक' यह नाम सार्थक है।

इस औपपातिक सूत्रका प्रारम्भ-भाग वर्णनात्मक है। इस में नगर, चैत्य, वनषण्ड, राजा, रानी, साधु, देव, देवी, समवसरण, धर्मकथा-आदिका वर्णन बहुत सुन्दर ढंग से किया गया है। इसके अध्ययन से यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि तात्कालिक भारत का सब से अधिक शक्तिशाली राजा कूणिक का भगवान महावीर स्वामीके प्रति कैसा अनन्य भक्तिभाव था। तभी तो उन्होंने अपने राज्यसंचाल विभाग में एक सा विभाग खोला था, जिसका अधिकारी और उसके हाथ के नीचे काम करने वाले अन्य हजारों कार्यकर भगवान के विहार का समाचार राजा के पास सर्वदा पहुँचाते रहते थे। राजा की ओर से उन्हें पूरी जीविका का प्रबन्ध था, और समय समय पर राजा पूर्ण रूप से पारितोषिक प्रदान कर उनका सत्कार भी करता था। जनसमुदायका भी भगवान के प्रति अनन्य भाव था, तभी तो भगवान के आगमनका समाचार पाते ही जनसमुदाय उनके दर्शन के लिये उमड पडता था। आबालवृद्ध स्त्रीपुरुष भगवान के दर्शन-निमित्त उद्यान में पहुँचते थे। भगवान उन्हे धर्मोपदेश देते थे, उसका प्रभाव यह पडता कि कितनेक सर्वविरति और कितनेक देशविरति होते थे, और कितनेक सुलभबोधि हो जाते थे। भगवान के बताये हुए उपदेशानुसार अपने जीवन को परिवर्त्तित

कर वे देश, समाज सभीका कल्याण करते थे, और अपने इहलोक और पर-लोक की सिद्धिको भी प्राप्त करते थे।

द्वितीय भाग में भगवान् गौतमस्वामी और भगवान् महावीरका प्रश्नोत्तर-रूप संवाद है। इस संवाद के अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि किन कर्मों से जीव नरकगामी होते हैं, किन कर्मों से देवलोकगामी होते हैं, और कैसे सिद्धिगामी होते हैं।

इस प्रकार यह सूत्र परमोपादेय है। वर्णन की दृष्टि से यह तो समस्त जैनागमों का वर्णनकोश ही है। क्यों कि अन्य आगमों में जहाँ कहीं भी नगर, चैत्य, राजा, रानी आदिका वर्णन आता है, वहाँ संक्षेप में ही आता है, और वहाँ 'औपपातिक सूत्र' से ही वर्णनात्मक सन्दर्भ लेनेके लिये निर्देश किया जाता है। इस दृष्टि से भी इसकी अत्यन्त उपादेयता है। सभी जीव सर्वदा यही चाहते हैं कि 'सर्वदा मे सुखं भूयाद् दुःखं माऽस्तु कदा च न' अर्थात्-मुझे सर्वदा सुख मिले, दुःख कभी भी नही मिले। सुख अहिंसादि सत्कर्म से या आत्यन्तिक कर्मविमोक्ष से ही मिलता है, और दुःख हिंसादि असत्कर्मों से मिलता है। नरकादिक दुःख जिन कर्मों से मिलते हैं तथा देवलोकादिक सुख जिन कर्मों से मिलते हैं उन कर्मोंका परिज्ञान इस शास्त्र के अध्ययन से होता है। ज्ञपरिज्ञा से सुखदायी और दुःखदायी कर्मोंको जानकर जीव प्रत्याख्यान-परिज्ञा से दुःखदायी कर्मोंको छोड़कर, आसेवनपरिज्ञा से सुखदायी कर्मोंका आसेवन करता है, और क्रमिक आत्मविशुद्धि से सिद्धिगामी होता है। इस दृष्टि से तो इसकी उपयोगिता अद्वितीय ही है।

ऐसे अनुपम इस सूत्र की सर्वजनगम्य व्याख्या की नितान्त आवश्यकता थी। इस अभावको दूर करने के लिये पूज्य श्री १००८ घासीलालजी म. सा. ने इस सूत्र की 'पीयूषवर्षिणी' नामक सरल संस्कृत व्याख्या रची है। जो साधारण संस्कृतज्ञों के लिये भी सुबोध है। हिन्दी और गुर्जर-भाषी जनताको इस सूत्रका अभिप्राय सरलतया ज्ञात हो, इसलिये इसका हिन्दी-गुर्जर अनुवाद भी किया गया है। इस प्रकार मूल, संस्कृत व्याख्या, हिन्दी और गुजराती अनुवाद-सहित यह 'औपपातिकसूत्र' मुद्रित हो कर आप शास्त्रप्रेमी महानु-भावों के समक्ष प्रस्तुत है। आप इस के स्वाध्याय से अपने जीवन का चरम उत्कर्ष साधन कर इस दुर्लभ मानव जीवन को सफल करे, यही हमारी आन्त-रिक भावना है। इति शम्।

अहमदाबाद
ता. २४-१०-५८.

—मुनि कन्हैयालाल

રૂા. ૧૦,૦૦૦ આપનાર આદ્ય મુરબ્બીશ્રી.

સમિતિના પ્રમુખ; દાનવીર શેઠશ્રી



શેઠ શાંતિલાલ મંગળદાસભાઈ

અમદાવાદ.

## પૂજ્ય શ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજ–રચિત

સૂત્રોની ટીકા

શ્રી–વર્ધમાન–શ્રમણ–સંઘના આચાર્ય

## પૂજ્યશ્રી આત્મારામજી મહારાજશ્રીએ

આ પે લ

# સ મ્મ તિ પ ત્ર



તે મ જ

અન્ય મહાત્માઓ, મહાસતીજીઓ, અદ્યતન–પદ્ધતિવાળા કોલેજના પ્રોફેસરો

તે મ જ

**શાસ્ત્રજ્ઞ શ્રાવકોના અભિપ્રાયો.**

ઠે. ગ્રીન લોજ પાસે
ગરેડીયા કુવારોડ
**રાજકોટ : સૌરાષ્ટ્ર**

શ્રી અખિલ ભારત શ્વે. સ્થા. જૈન–
શાસ્ત્રોદ્ધાર સમિતિ.

( श्री दशवैकालिकसूत्रका सम्मतिपत्र. )

॥ श्रीवीरगौतमाय नमः ॥



# सम्मति–पत्रम्.

मए पंडियमुणि–हेमचंदेण य पंडिय–मूलचन्दवास–चारा पत्ता पंडियरयण–मुणि–घासीलालेण विरइया सक्कय–हिंदी–भासाहिं जुत्ता सिरि–दसवेयालिय–नाम–सुत्तस्स आयारमणिमंजूसा वित्ती अवलोइया, इमा मणोहरा अत्थि। एत्थ सद्दाणं अइसयजुत्तो अत्थो वण्णिओ, विउजणाणं पाययजणाण य परमोवयारिया इमा वित्ती दीसइ। आयारविसए वित्तीकत्तारेण अइसयपुव्वं उल्लेहो कडो, तहा अहिंसाए सरूवं जे जहा–तहा न जाणंति तेसिं इमाए वित्तीए परमलाहो भविस्सइ, कत्तुणा पत्तेयविसयाणं फुडरूवेण वण्णणं कडं, तहा मुणिणो अरहत्ता इमाए वित्तीए अवलोयणाओ अइसयजुत्ता सिज्झइ। सक्कयछाया सुत्तपयाणं पयच्छेओ य सुबोहदायगो अत्थि, पत्तेयजिण्णासुणो इमा वित्ती दट्ठव्वा। अम्हाणं समाजे एरिसविज्ज–मुणिरयणाणं सब्भावो समाजस्स अहोभग्गं अत्थि। किं ?, उत्तविज्जमुणिरयणाणं कारणाओ, जो अम्हाणं समाजो सुत्तप्पाओ, अम्हकेरं साहिच्चं च लुत्तप्पायं अत्थि, तेसिं पुणोवि उदओ भविस्सइ, जस्स कारणाओ भवियप्पा मोक्खस्स जोग्गो भवित्ता पुणो निव्वाणं पाविहिइ। अओहं आयारमणि–मंजूसाए कत्तुणो पुणो पुणो धन्नावायं देमि– ॥

वि. सं. १९९० फाल्गुन–<br>शुक्लत्रयोदशी–मङ्गले<br>( अलवर स्टेट )

इइ–<br>उवज्झाय–जइण–मुणी आयारामो<br>( पचनईओ )

**जैनागमवेत्ता जैनधर्मदिवाकर उपाध्याय श्री १००८ श्री आत्मारामजी महाराज तथा न्याय व्याकरण के ज्ञाता परम-पण्डित मुनिश्री १००७ श्री हेमचंद्रजी महाराज, इन दोनों महात्माओंका दिया हुआ श्री उपासकदशाङ्ग सूत्रका प्रमाणपत्र निम्न प्रकार है—**

## सम्मइवत्तं

सिरि-वीरनिव्वाण-संवच्छर २४५८ आसोई
(पुण्णमासी) १५ सुक्कवारो लुहियाणाओ।

मए मुणिहेमचंदेण य पंडियरयणमुणिसिरि-घासीलालविणिम्मिया सिरि-**उवासगसुत्तस्स अगारधम्मसंजीवणी**-नामिया वित्ती पंडियमूलचन्द-वासाओ अज्जोवंतं सुयासमीईणं, इयं वित्ती जहा णामं तहा गुणेवि धारेइ, सच्चं, अगाराणं तु इमा जीवण (संजमजीवण) दाई एव अत्थि। वित्तिकत्तुणा मूलसुत्तस्स भावो उज्जुसेलीओ फुडीकओ, अहय उवासयस्स सामण्णविसेसधम्मो, णयसियवायवाओ, कम्मपुरिसट्ठवाओ, समणोवासयस्स धम्मदढत्ता य, इच्चाइविसया अस्सिं फुडरीइओ वण्णिया, जेण कत्तुणो पडिहाए सुट्ठुप्पयारेण परिचओ होइ, तह इइहासदिट्ठिओवि सिरिसमणस्स भगवओ महावीरस्स समए **वट्टमाण**-भरहवासस्स य कत्तुणा विसयप्पयारेण चित्तं चित्तितं, पुणो सक्कयपाढीणं, वट्टमाणकाले हिन्दीणामियाए भासाए भासीण य परमोवयारो कडो, इमेण कत्तुणो अरिहत्ता दीसइ, कत्तुणो एयं कज्जं परमप्पसंसणिज्जमत्थि। पत्तेयजणस्स मज्झत्थभावाओ अस्स सुत्तस्स अवलोयणमईव लाहप्पयं, अवि उ सावयस्य उ इमं सत्थं सव्वस्समेव अत्थि, अओ कत्तुणो अणेगकोडीसो धन्नवाओ अत्थि, जेहिं अच्चंतपरिस्समेण जइणजणतोवरि असीमोवयारो कडो, अह य सावयस्य वारस नियमा उ पत्तेयजणस्स पढणिज्जा अत्थि, जेसिं पहावओ वा गहणाओ आया निव्वाणाहिगारी भवइ, तहा भवियव्वयावाओ पुरिसक्कारपरक्कमवाओ य अवस्समेव दंसणिज्जो, किं बहुणा! इमीसे वित्तीए पत्तेयविसयस्स फुडसद्देहिं वण्णणं कयं, जइ अन्नोवि एवं अम्हाणं पसुत्तप्पाए समाजे विज्जं भवेज्जा तया नाणस्स चरित्तस्स तहा सघस्स य खिप्पं उदओ भविस्सइ, एवं हं मन्ने॥

भवईओ—

**उवज्झाय-जइणमुणि-आयाराम-पंचनईओ,**

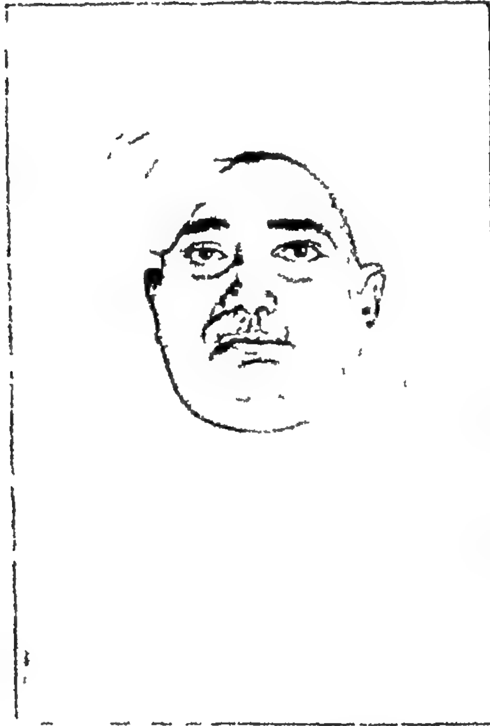
# सम्मतिपत्र

( भाषान्तर )

श्रीवीरनिर्वाण सं० २४५८ आसोज
शुक्ला ( पूर्णिमा ) १५ शुक्रवार लुधियाना

मैंने और पंडितमुनि हेमचन्द्रजीने पंडितरत्नमुनिश्री घासीलालजीकी रची हुई उपासकदशांग सूत्रकी गृहस्थधर्मसंजीवनी नामक टीका पंडित मूलचन्द्रजी व्याससे आद्योपान्त सुनी है। यह वृत्ति यथानाम तथागुणवाली–अच्छी बनी है। सच यह गृहस्थोंके तो जीवनदात्री–संयमरूप जीवनको देनेवाली ही है। टीका-कार ने मूलसूत्र के भावका सरल रीतिसे वर्णन किया है, तथा श्रावकका सामान्य धर्म क्या है ? और विशेष धर्म क्या है ? इसका खुलासा इस टीकामें अच्छे ढंगसे बतलाया है। स्याद्वादका स्वरूप कर्म–पुरुषार्थ–वाद और श्रावकको धर्मके अन्दर दृढ़ता किस प्रकार रखना; इत्यादि विषयोंका निरूपण इसमें भलीभाँति किया है। इससे टीकाकारकी प्रतिभा खूब झलकती है। ऐतिहासिक दृष्टिसे श्रमण भगवान् महावीरके समय भारतवर्षमें जैनधर्म किस जाहोजलाली पर था ? इस विषयका तो ठीक चित्र ही चित्रित कर दिया है। फिर संस्कृत जाननेवालोंको तथा हिंदीभाषाके जाननेवालोंको भी पूरा लाभ होगा, क्योंकि टीका संस्कृत है उसकी सरल हिन्दी करदी गई है। इसके पढनेसे कर्ताकी योग्यताका पता लगता है कि वृत्तिकारने समझानेका कैसा अच्छा प्रयत्न किया है। टीकाकारका यह कार्य परम प्रशंसनीय है। इस सूत्रको मध्यस्थ–भावसे पढने वालोंको परम लाभकी प्राप्ति होगी। क्या कहें श्रावकों ( गृहस्थों ) का तो यह सूत्र सर्वस्व ही है, अतः टीकाकारको कोटिशः धन्यवाद दिया जाता है, जिन्होंने अत्यन्त परिश्रमसे जैन–जनताके ऊपर असीम उपकार किया है। इसमें श्रावकके बारह नियम प्रत्येक स्त्री–पुरुषके पढने योग्य हैं, जिनके प्रभावसे अथवा यथायोग्य ग्रहण करनेसे आत्मा मोक्षका अधिकारी होता है। तथा भवितव्यतावाद और

રૂા. ૬,૦૦૦ આપનાર આદ્ય મુરબ્બીશ્રી.



(સ્વ.) શેઠ હરખચંદ કાલીદાસ વારીયા

ભાણવડ.

पुरुषकारपराक्रमवाद हर-एकको अवश्य देखना चाहिये। कहां तक कहें, इसटी कामें प्रत्येक विषय सम्यक् प्रकारसे बताये गये हैं। हमारी सुप्तप्राय (सोई हुईसी) समाजमें अगर आप जैसे योग्य विद्वान् फिर भी कोई होंगे तो ज्ञान, चारित्र तथा श्रीसंघका शीघ्र उदय होगा, ऐसा मैं मानता हूँ-

आपका

**उपाध्याय जैनमुनि आत्माराम पंजाबी.**



इसी प्रकार लाहोरमें विराजते हुए पण्डितवर्य विद्वान् मुनिश्री १००८ श्री भागचन्दजी महाराज तथा पं. मुनिश्री त्रिलोकचन्दजी महाराजके दिये हुए, श्री उपासकदशाङ्ग सूत्रके प्रमाणपत्रका हिन्दी सारांश निम्न प्रकार है-

श्री श्री स्वामी घासीलालजी महाराज-कृत श्री उपासकदशाङ्ग सूत्रकी संस्कृत टीका व भाषाका अवलोकन किया, यह टीका अतिरमणीय व मनोरञ्जक है, इसे आपने बडे परिश्रम व पुरुषार्थसे तैयार किया है सो आप धन्यवादके पात्र हैं। आप जैसे व्यक्तियोंकी समाजमें पूर्ण आवश्यकता है। आपकी इस लेखनीसे समाजके विद्वान साधुवर्ग पढकर पूर्ण लाभ उठावेंगे, टीकाके पढनेसे हमको अत्यानन्द हुआ, और मनमें ऐसे विचार उत्पन्न हुए कि हमारी समाजमें भी ऐसे २ सुयोग्य रत्न उत्पन्न होने लगे- यह एक हमारे लिये बड़े गौरवकी बात है।

वि. सं. १९८९ मा. आश्विन
कृष्णा १३ वार भौम लाहोर.

श्री **ज्ञाताधर्मकथाङ्ग** सूत्र की **'अनगारधर्मोऽमृतवर्षिणी'** टीका पर

जैनदिवाकर साहित्यरत्न जैनागमरत्नाकर परमपूज्य श्रद्धेय

जैनाचार्य **श्री आत्मारामजी महाराजका**

## सम्मतिपत्र

**लुधियाना, ता. ४-८-५१.**

मैंने आचार्यश्री घासीलालजी म. द्वारा निर्मित **'अनगारधर्मोऽमृत-वर्षिणी'** टीका वाले श्री **ज्ञाताधर्मकथाङ्ग** सूत्रका मुनि श्री **रत्नचन्द्रजीसे** आद्योपान्त श्रवण किया।

यह निःसन्देह कहना पड़ता है कि यह टीका आचार्यश्री **घासीलालजी** म. ने बड़े परिश्रम से लिखी है। इसमें प्रत्येक शब्दका प्रामाणिक अर्थ और कठिन स्थलों पर सार-पूर्ण विवेचन आदि कई एक विशेषतायें है। मूल स्थलोंको सरल बनानेमें काफी प्रयत्न किया गया है, इससे साधारण तथा असाधारण सभी संस्कृतज्ञ पाठको को लाभ होगा, ऐसा मेरा विचार है।

मै स्वाध्यायप्रेमी सज्जनो से यह आशा करूँगा कि वे वृत्तिकारके परिश्रम को सफल बनाकर शास्त्रमें दीगई अनमोल शिक्षाओं से अपने जीवनको शिक्षित करते हुए परमसाध्य मोक्षको प्राप्त करेंगे।

---

**श्रीमान्‌जी जयवीर**

आपकी सेवामें पोष्ट-द्वारा पुस्तक भेज रहे है और इसपर आचार्यश्रीजी की जो सम्मति है वह इस पत्रके साथ भेज रहे है, पहुँचने पर समाचार देवे।

श्री आचार्यश्री **आत्मारामजी म. ठाने** ६ सुख शान्तिसे विराजते हैं। पूज्य **श्री घासीलालजी म. सा. ठाने** ४ को हमारी ओरसे वन्दना अर्जकर सुखशाता पूछे।

पूज्य श्री घासीलालजी म.जी का लिखा हुआ **विपाकसूत्र** महाराजश्रीजी देखना चाहते हैं, इसलिये १ कापी आप भेजने की कृपा करें, फिर आपको वापिस भेज देवेगे। आपके पास नहीं हो तो जहां से मिले वहांसे १ कापी जरूर भिजवाने का कष्ट करे, उत्तर जल्द देनेकी कृपा करें। योग्य सेवा लिखते रहे।

**लुधियाना** ता ४-८-५१

निवेदक

**प्यारेलाल जैन**

जैनागमवारिधि – जैनधर्मदिवाकर – उपाध्याय – पण्डित – मुनि
श्रीआत्मारामजी महाराज (पंजाब)का आचाराङ्गसूत्र की
आचारचिन्तामणि टीका पर

## सम्मति–पत्र ।

'मैंने पूज्य आचार्यवर्य श्रीघासीलालजी (महाराज)की बनाई हुई श्रीमद् आचाराङ्गसूत्र के प्रथम अध्ययन की आचारचिन्तामणि टीका सम्पूर्ण उपयोग-पूर्वक सुनी ।

यह टीका–न्याय सिद्धान्त से युक्त, व्याकरण के नियम से निबद्ध है। तथा इसमें प्रसंग २ पर क्रम से अन्य सिद्धान्त का संग्रह भी उचित रूप से मालूम होता है।

टीकाकारने अन्य सभी विषय सम्यक् प्रकार से स्पष्ट किये हैं, तथा प्रौढ विषयों का विशेषरूप से संस्कृत भाषा में स्पष्टतापूर्वक प्रतिपादन अधिक मनोरंजक है, एतदर्थ आचार्य महोदय धन्यवाद के पात्र हैं।

मैं आशा करता हूँ कि–जिज्ञासु महोदय इसका भलीभाँति पठन द्वारा जैनागम–सिद्धान्तरूप अमृत पी–पी कर मन को हर्षित करेंगे, और इसके मनन से दक्ष जन चार अनुयोगों का स्वरूपज्ञान पावेंगे। तथा आचार्यवर्य इसी प्रकार दूसरे भी जैनागमों के विशद विवेचन द्वारा श्वेताम्बर स्थानकवासी समाज पर महान उपकार कर यशस्वी बनेंगे।

वि. सं. २००२
मृगशर सुदि १

जैनमुनि–उपाध्याय आत्माराम
लुधियाना (पंजाब)

—: * :—

शुभमस्तु ।

बीकानेरवाला समाजभूषण शास्त्रज्ञ भेरुदानजी शेठिआका अभिप्राय

*

आप जो शास्त्रका कार्य कर रहे हैं यह बडा उपकारका कार्य है। इससे जैनजनता को काफी लाभ पहुँचेगा.

(ता. २८–३–५६ का पत्र में से)

॥ श्री ॥

जैनागमवारिधि– जैनधर्मदिवाकर– जैनाचार्य–पूज्य–श्री आत्मारामजी–
महाराजानां पञ्चनद–( पंजाब )स्थानामनुत्तरोपपातिकसूत्राणा–
मर्थबोधिनीनामकटीकायामिदम्–

## सम्मतिपत्रम्.

आचार्यवर्यैः **श्री घासीलालमुनिभिः** सङ्कलिता **अनुत्तरोपपातिकसूत्राणामर्थबोधिनी-नाम्नी** संस्कृतवृत्तिरुपयोगपूर्वकं सकलाऽपि स्वशिष्यमुखेनाऽश्रावि मया, इयं हि वृत्तिर्मुनिवरस्य वैदुष्य प्रकटयति । श्रीमद्भिर्मुनिभिः सूत्राणामर्थान् स्पष्टयितुं य प्रयत्नो व्यधायि तदर्थमनेकशो धन्यवादानर्हन्ति ते । यथा चेयं वृत्तिः सरला सुबोधिनी च तथा सारवत्यपि । अस्याः स्वाध्यायेन निर्वाणपदमभीप्सुभिर्निर्वाणपदमनुसरद्भिर्ज्ञान–दर्शन–चारित्रेषु प्रयतमानैर्मुनिभिः श्रावकैश्च ज्ञानदर्शनचारित्राणि सम्यक् सम्प्राप्याऽन्येऽप्यात्मानस्तत्र प्रवर्तयिष्यन्ते ।

**आशासे** श्रीमदाशुकविर्मुनिवरो गीर्वाणवाणीजुषां विदुषां मनस्तोषाय जैनागमसूत्राणां सारावबोधाय च अन्येषामपि जैनागमानामित्थं सरलाः सुस्पष्टाश्च वृत्तीर्विधाय तांस्तान् सूत्र-ग्रन्थान् देवगिरा **सुस्पष्टयिष्यति** ।

अन्ते च "मुनिवरस्य परिश्रमं सफलयितुं सरलां सुबोधिनीं चेमां सूत्रवृत्तिं स्वाध्यायेन सनाथयिष्यन्त्यवश्यं सुयोग्या हंसनिभाः पाठकाः ।" इत्याशास्ते—–

विक्रमाब्द २००२
श्रावणकृष्णा प्रतिपदा
**लुधियाना.**

उपाध्याय आत्मारामो जैनमुनिः ।

---

ऐसेही :—

मध्यभारत सैलाना–निवासी श्रीमान् रतनलालजी डोसी श्रमणोपासक जैन लिखते हैं कि :—

श्रीमान की की हुई टीकावाला उपासकदशांग सेवक के दृष्टिगत हुवा, सेवक अभी उसका मनन कर रहा है । यह ग्रन्थ सर्वांग–सुन्दर एवम् उच्चकोटि का उपकारक है ।

निरयावलिकासूत्रका
आगमवारिधि-सर्वतन्त्रस्वतन्त्र-जैनाचार्य-पूज्यश्री
आत्मारामजी महाराजकी तरफ का आया हुवा

## सम्मतिपत्र

लुधियाना. ता. ११ नवम्बर ४८

श्रीयुत गुलाबचन्दजी पानाचंदजी ! सादर जय जिनेन्द्र ।

पत्र आपका मिला। निरयावलिका-विषय पूज्यश्रीजीका स्वास्थ्य ठीक न होने से उनके शिष्य पं. श्री हेमचन्द्रजी महाराजने सम्मतिपत्र लिख दिया है, आपको भेज रहे हैं। कृपया एक कौपी निरयावलिका की और भेज दीजिये और कोई योग्य सेवा-कार्य लिखते रहे ।

भवदीय.
गुजरमल-बलवंतराय जैन

॥ सम्मतिः ॥

(लेखक जैनमुनि पं. श्री हेमचन्द्रजी महाराज)

सुन्दरबोधिनीटीकया समलङ्कृतं हिन्दी-गुर्जरभाषानुवादसहितं च श्रीनिरयावलिकासूत्रं मेधाविनामल्पमेधसां चोपकारकं भविष्यतीति सुदृढं मेऽभिमतम्, संस्कृतटीकेयं सरला सुबोधा सुललिता चात एव अन्वर्थनाम्नी चाप्यस्ति। सुविशदत्वात् सुगमत्वात् प्रत्येकदुर्बोधपदव्याख्यायुतत्वाच्च टीकैषा संस्कृतसाधारणज्ञानवतामप्युपयोगिनी भाविनीत्यभिमैमि । हिन्दी-गुर्जरभाषानुवादावपि एतद्भाषाविज्ञानां महीयसे लाभाय भवेतामिति सम्यक् संभावयामि ।

जैनाचार्य-जैनधर्मदिवाकर-पूज्यश्री-घासीलालजी-महाराजानां परिश्रमोऽयं प्रशंसनीयो, धन्यवादार्हाश्च ते मुनिसत्तमाः। एवमेव श्रीसमीरमल्लजी-श्रीकन्हैयालालजी-मुनिवरेण्ययोर्नियोजनकार्यमपि श्लाघ्यं, तावपि च मुनिवरौ धन्यवादार्हौ स्तः ।

सुन्दरप्रस्तावनाविषयानुक्रमादिना समलङ्कृते सूत्ररत्नेऽस्मिन् यदि शब्दकोषोऽपि दत्तः स्यात्तर्हि वरतरं स्यात् । यतोऽस्यावश्यकतां सर्वेऽप्यन्वेषकविद्वांसोऽनुभवन्ति ।

पाठकाः सूत्रस्यास्याध्ययनाध्यापनेन लेखकनियोजकमहोदयानां परिश्रमं सफलयिष्यन्तीत्याशास्महे । इति ।

श्री उपासकदशाङ्ग सूत्र पर जैनसमाज के अग्रगण्य जैनधर्मभूषण
महान विद्वान संतों एवं विद्वान श्रावकोंने सम्मति भेजी है,
उन के नाम निम्न लिखित हैं।

(१) लुधियाना—सम्वत् १९८९, आश्विन पूर्णिमा का पत्र, श्रुतज्ञान के भंडार आगमरत्नाकर जैनधर्मदिवाकर श्री १००८ श्री उपाध्याय श्री आत्मारामजी महाराज, तथा न्यायव्याकरणवेत्ता श्री १००७ तच्छिष्य श्री मुनि हेमचन्द्रजी महाराज.

(२) लाहौर—वि० सं० १९८९ आश्विन वदि १३ का पत्र, पण्डित रत्न श्री १००८ श्री भागचन्दजी महाराज तथा तच्छिष्य पण्डितरत्न श्री १००७ श्री त्रिलोकचंद्रजी महाराज.

(३) खीचन से ता. ९–११–३६ का पत्र, क्रियापात्र स्थविर श्री १००८ श्री भारतरत्न श्री समरथमलजी महाराज.

(४) वालाचोर—ता. १४–११–३६ का पत्र, परम प्रसिद्ध भारतरत्न श्री १००८ श्री शतावधानीजी श्री रतनचन्दजी महाराज.

(५) वम्बई—ता. १६–११–३६ का पत्र, प्रसिद्ध कवीन्द्र श्री १००८ श्री कवि नानचन्द्रजी महाराज.

(६) आगरा—ता. १८–११–३६, जगद्–वल्लभ श्री १००८ श्री जैनदिवाकर श्री चौथमलजी महाराज, गुणवन्त गणीजी श्री १००७ श्री साहित्यप्रेमी प्यारचन्दजी महाराज.

(७) हैद्रावाद (दक्षिण) ता. २५–११–३६ का पत्र, स्थविरपदभूषित भाग्यवान पुरुष श्री ताराचन्दजी महाराज तथा प्रसिद्ध वक्ता श्री १००७ श्री सोभागमलजी महाराज.

(८) जयपुर—ता. २६–११–३६ का पत्र, संप्रदाय के गौरववर्धक शांतस्वभावी श्री १००८ श्री पूज्य श्री खूबचन्दजी महाराज.

(९) अम्वाला—ता. २९–११–३६ का पत्र, परम प्रतापी पंजाब केसरी श्री १००८ श्री पूज्य श्री काशीरामजी महाराज.

(१०) सैलाना–ता. २९–११–३६ का पत्र, शास्त्रों के ज्ञाता श्रीमान् रतनलालजी डोसी.
(११) खीचन–ता. ९–११–३६ का पत्र, पंडितरत्न न्यायतीर्थ सुश्रावक श्रीयुत् माधवलालजी.

---

ता. २५–११–३६

सादर जय जिनेन्द्र

आपका भेजा हुवा उपासकदशांग सूत्र तथा पत्र मिला। यहां विराजित प्रवर्तक वयोवृद्ध श्री १००८ श्री ताराचंदजी महाराज पण्डित श्री किशनलालजी महाराज आदि ठाणा १४ सुखशांति में विराजमान हैं। आपके वहां विराजित जैनशास्त्राचार्य पूज्यपाद श्री १००८ श्री घासीलालजी महाराज आदि ठाणा नव से हमारी वन्दना अर्ज कर सुखशांति पूछें। आपने उपासकदशांग सूत्र के विषय में यहां विराजित मुनिवरों की सम्मति मंगाई उसके विषय में वक्ता श्री सोभागमलजी महाराज ने फरमाया है कि वर्तमान में स्थानकवासी समाज में अनेकानेक विद्वान मुनि महाराज मौजूद हैं मगर जैनशास्त्र की वृत्ति रचने का साहस जैसा घासीलालजी महाराज ने किया है वैसा अन्य ने किया हो ऐसा नजर नहीं आता। दूसरा यह शास्त्र अत्यन्त उपयोगी तो यों है कि संस्कृत प्राकृत हिन्दी और गुजराती भाषा होने से चारों भाषा वाले एक ही पुस्तक से लाभ उठा सकते हैं। जैन–समाज में ऐसे विद्वानों का गौरव बढे यही शुभ कामना है। आशा है कि स्थानकवासी संघ विद्वानों की कदर करना सीखेगा।
योग्य लिखें, शेष शुभ। भवदीय

**जमनालाल रामलाल कीमती**

*

आगरा सेः—

श्री जैनदिवाकर प्रसिद्धवक्ता जगद्वल्लभ मुनि श्री चोथमलजी महाराज व पंडितरत्न सुव्याख्यानी गणीजी श्री प्यारचन्द जी महाराज ने इस पुस्तक को अतीव पसन्द की है।

श्रीमान् न्यायतीर्थ पण्डित

## माधवलालजी खीचन से लिखते हैं कि:-

उन पंडितरत्न महाभाग्यवंत पुरुषों के सामने उनकी अगाधतत्त्वगवेषणा के विषय में मैं नगण्य क्या सम्मति दे सकता हूं।

परन्तु :—

मेरे दो मित्रों ने जिन्होंने इसको कुछ पढा है वहुत सराहना की है। वास्तव में ऐसे उत्तम व सबके समझाने योग्य ग्रन्थों की वहुत आवश्यकता है और इस समाज का तो ऐसे ग्रन्थ ही गौरव वढा सकते है—ये दोनों ग्रन्थ वास्तव में अनुपम हैं ऐसे ग्रन्थरत्नों के सुप्रकाश से यह समाज अमावास्या के घोर अन्धकार में दीपावली का अनुभव करती हुई महावीर के अमूल्य वचनों का पान करती हुई अपनी उन्नति में अग्रसर होती रहेगी।

—: ※ :—

ता. २९-११-३६

अम्बाला (पंजाब)

पत्र आपका मिला। श्री श्री १००८ पंजाब केसरी पूज्य श्री काशीरामजी महाराज की सेवा में पढ कर सुना दिया। आपकी भेजी हुई उपासकदशाङ्ग सूत्र तथा गृहिधर्मकल्पतरु की एकएक प्रति भी प्राप्त हुई। दोनों पुस्तकें अति उपयोगी तथा अत्यधिक परिश्रम से लिखी हुई हैं, ऐसे ग्रन्थरत्नों के प्रकाशित करवाने की वडी आवश्यकता है। इन पुस्तकों से जैन तथा अजैन सबका उपकार हो सकता है। आपका यह पुरुषार्थ सराहनीय है।

आपका

**शशिभूषण शास्त्री**

अध्यापक, जैन हाई स्कूल

अम्बाला शहर.

રૂા. ૫,૨૫૧ આપનાર આદ્ય મુરબ્બીશ્રી.



છગનલાલ શામળદાસ ભાવસાર

અમદાવાદ.

शान्तस्वभावी वैराग्यमूर्ति तत्ववारिधि धैर्यवान श्री जैनाचार्य पूज्यवर श्री श्री १००८ श्री **खूबचन्दजी** महाराज साहेबने सूत्र श्री **उपासकदशाङ्गजी** को देखा। आपने फरमाया कि पण्डित मुनि **घासीलालजी** महाराज ने **उपासकदशाङ्ग** सूत्रकी टीका लिखने में वडा ही परिश्रम किया है। इस समय इस प्रकार प्रत्येक सूत्रोंकी संशोधनपूर्वक सरल टीका और शुद्ध हिन्दी अनुवाद होने से भगवान निर्ग्रन्थों के प्रवचनों के अपूर्व रस का लाभ मिल सकता है.

*

वालाचोर से भारतरत्न शतावधानी पंडित मुनि श्री १००८ श्री रतनचन्दजी महाराज फरमाते है कि :-

उत्तरोत्तर जोतां मूल सूत्रनी संस्कृत टीकाओ रचवामां टीकाकारे स्तुत्य प्रयास कर्यो छे, जे स्थानकवासी समाज माटे मगरूरी लेवा जेवुं छे, वली करांचीना श्री संघे सारा कागलमां अने सारा टाइपमां पुस्तक छपावी प्रगट कर्युं छे, जे एक प्रकारनी साहित्यसेवा बजावी छे.

*

वम्बई शहेर में विराजमान कवि मुनि श्री नानचन्दजी महाराजने फरमाया है कि पुस्तक सुन्दर है, प्रयास अच्छा है।

*

खीचन से स्थविर क्रियापात्र मुनि श्री रतनचन्दजी महाराज और पंडितरत्न मुनि समरथमलजी महाराज फरमाते है कि—विद्वान महात्मा पुरुषोंका प्रयत्न सराहनीय है। जैनागम श्रीमद् **उपासकदशाङ्ग** सूत्र की टीका, एवं उसकी सरल सुबोधनी शुद्ध हिन्दी भाषा वडी ही सुन्दरता से लिखी है।

*

श्री वीतरागाय नमः ॥

श्री श्री श्री १००८ जैनधर्मदिवाकर जैनागमरत्नाकर श्रीमज्जैनाचार्य श्री पूज्य घासीलालजी महाराज चरणवन्दन स्वीकार हो।

अपरश्च–समाचार यह है कि आपके भेजे हुए ९ शास्त्र मास्टर शोभालालजी के द्वारा प्राप्त हुए, एतदर्थ धन्यवाद ! आपश्रीजीने तो ऐसा कार्य किया है जो कि हजारों वर्षों से किसी भी स्थानकवासी जैनाचार्य ने नहीं किया।

आपने स्थानकवासी जैनसमाज के ऊपर जो उपकार किया है वह कदापि भुलाया नहीं जा सकता और नहीं भुलाया जा सकेगा।

हम तीनों मुनि भगवान महावीर से अथवा शासनदेव से प्रार्थना करते है कि आपकी इस वज्रमयी लेखनी को उत्तरोत्तर शक्ति प्रदान करें ता कि आप जैनसमाज के ऊपर और भी उपकार करते रहे, और आप चिरञ्जीव हों।

हम है आप के मुनि तीन

उदेपुर. मुनि सत्येन्द्रदेव–मुनि लखपतराय–मुनि पद्मसेन

※

इतवारी बाजार

नागपुर ता. १९–१२–५६

प्रखर विद्वान जैनाचार्य मुनिराज श्री घासीलालजी महाराज–द्वारा जो आगमोद्धार हुआ और हो रहा है सचमुच महाराजश्री का यह स्तुत्य कार्य है। हमने प्रचारकजी के द्वारा नौ सूत्रों का सेट देखा और कई मार्मिक स्थलोंको पढा, पढकर विद्वान मुनिराजश्री की शुद्ध श्रद्धा तथा लेखनीके प्रति हार्दिक प्रसन्नता फूट पडी।

वास्तव में मुनिराजश्री जैनसमाज पर ही नहीं, इतर समाज पर भी महा उपकार कर रहे हैं। ज्ञान किसी एक समाज का नहीं होता है, वह सभी समाज की अनमोल निधि है, जिसे कठिन परिश्रम से तैयार कर जनता के सम्मुख रक्खा जा रहा है, जिसका एक एक सेट हर शहर गाव और घरघर में होना आवश्यक है।

साहित्यरत्न

मोहनमुनि सोहनमुनि जैन.

# શ્રી દશવૈકાલિક સૂત્રનું સમ્મતિપત્ર.

શ્રમણસંઘના મહાન આચાર્ય આગમવારિધિ સર્વતન્ત્ર સ્વતંત્ર જૈનાચાર્ય પૂજ્યશ્રી આત્મારામજી મહારાજે આપેલા સમ્મતિપત્રનો ગુજરાતી અનુવાદ.



મેં તથા પંડિત મુનિ હેમચંદ્રજીએ પંડિત મૂલચંદજી વ્યાસ–નાગૌર મારવાડ વાળા દ્વારા મળેલી પંડિતરત્ન શ્રી. ઘાસીલાલજીમુનિ વિરચિત સંસ્કૃત અને હિન્દી ભાષા સહિત શ્રી દશવૈકાલિક સૂત્રની આચારમણિમંજૂષા ટીકાનું અવલોકન કર્યું. આ ટીકા સુંદર બની છે. તેમાં પ્રત્યેક શબ્દનો અર્થ સારી રીતે વિશેષ ભાવ લઈને સમજાવવામાં આવેલ છે.

તેથી વિદ્વાનો અને સાધારણ બુદ્ધિવાળાઓ માટે આ ટીકા પરમ ઉપકાર કરવાવાળી છે. ટીકાકારે મુનિના આચાર વિષયનો સારો ઉલ્લેખ કરેલ છે. જે અહિંસાના સ્વરૂપને યથાર્થરૂપથી નથી જાણતા, તેમને માટે 'અહિંસા શું વસ્તુ છે?' તેનુ સારી રીતે પ્રતિપાદન કરેલ છે. વૃત્તિકારે સૂત્રના પ્રત્યેક વિષયને સારી રીતે સમજાવેલ છે. આ વૃત્તિના અવલોકનથી વૃત્તિકારની અતિશય યોગ્યતા સિદ્ધ થાય છે.

આ વૃત્તિમા એક બીજી વિશેષતા એ છે કે મૂલસૂત્રની સંસ્કૃતછાયા હોવાથી સૂત્ર, સૂત્રનાં પદ અને પદચ્છેદ સુબોધદાયક બનેલ છે.

પ્રત્યેક જીજ્ઞાસુએ આ ટીકાનું અવલોકન અવશ્ય કરવું જોઈએ. વધારે શું કહેવું ?. અમારા સમાજમાં આવા પ્રકારના વિદ્વાન મુનિરત્નનું હોવું એ સમાજનું અહોભાગ્ય છે. અદ્યતન સુપ્તપ્રાય–સુતેલો સમાજ અને લુપ્તપ્રાય એટલે લોપ પામેલું સાહિત્ય એ બન્નેનો આવા વિદ્વાન મુનિરત્નોના કારણે ફરીથી ઉદય થશે. જેનાથી ભાવિતાત્મા મોક્ષને યોગ્ય બનશે અને નિર્વાણ પદને પામશે. આ માટે અમો વૃત્તિકારને વારંવાર ધન્યવાદ આપીએ છીએ.

ઇતિ

વિક્રમ સંવત ૧૯૯૦ ફાલ્ગુન શુકલ
તેરસ મંગળવાર
(અલવર સ્ટેટ)

ઉપાધ્યાય જૈનમુનિ
આત્મારામ
પંચનદીય.

શ્રમણ સંઘના પ્રચારમંત્રી પંજાબ કેસરી મહારાજશ્રી **પ્રેમચંદજી મહારાજ** જેઓશ્રી રાજકોટમાં પધાર્યા હતા. ત્યારે તેઓના તરફથી શાસ્ત્રોને માટે મળેલો અભિપ્રાય.



શાસ્ત્રોદ્ધારસમિતિ તરફથી પૂજ્યપાદ શાસ્ત્રવારિધિ પંડિતરાજ સ્વામીશ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજદ્વારા શાસ્ત્રોદ્ધારનું જે કાર્ય થઈ રહ્યું છે તે કાર્ય જૈનસમાજ અને તેમાંયે ખાસ કરીને સ્થાનકવાસી જૈનસમાજને માટે મૂળભૂત મૌલિક સંસ્કૃતિની જડને મજબૂત કરવાવાળું છે.

એટલા ખાતર આ કાર્ય અતિ પ્રશંસનીય છે. માટે દરેક વ્યકિતએ તેમાં યથાશકિત ભોગ દેવાની ખાસ આવશ્યકતા છે અને તેથી એ ભગીરથ કાર્ય જલ્દીથી જલ્દી સંપૂર્ણપણે પાર પાડી શકાય અને જનતા શ્રુતજ્ઞાનનો લાભ મેળવી શકે.



**દરિયાપુરીસંપ્રદાયના પૂજ્ય આચાર્યશ્રી ઈશ્વરલાલજી મહારાજ સાહેબના**

# સૂત્રો સબંધે વિચારો

## નમામિ વીરં ગીરિસારધીરં

પૂજ્યપાદ જ્ઞાનિપ્રવર શ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજ તથા પંડિતશ્રી કનૈયાલાલજી મહારાજ આદિ થાણા છની સેવામાં-

અમદાવાદ શાહપુર ઉપાશ્રયથી મુનિ દયાનંદજીના ૧૦૮ પ્રણિપાત.

આપ સર્વે થાણાઓ સુખ-સમાધમાં હશો, નિરંતર ધર્મધ્યાન ધર્મારાધનમાં લીન હશો.

સૂત્રપ્રકાશન કાર્ય ત્વરિત થાય એવી ભાવના છે. દશવૈકાલિક તથા આચારાંગ એક એક ભાગ અહીં છે. ટીકા ખૂબ સુંદર, સરળ અને પંડિતજનોને સુપ્રિય થઈ પડે તેવી છે. સાથે સાથે ટીકા-વિનાના મૂળ અને અર્થ સાથે પ્રકાશન થાય તો શ્રાવકગણ તેનો વિશેષ લાભ લઈ શકે. અત્રે પૂજ્ય આચાર્ય ગુરુદેવને આંખે મોતિયો ઉતરાવ્યો છે અને સારૂં છે એજ.

આસો શુદ ૧૦, મંગળવાર તા. ૨૫-૧૦-૫૫

પુનઃ પુનઃ શાતા ઈચ્છતો,
દયા મુનિના પ્રણિપાત.



## દરીયાપુરી સંપ્રદાયના પંડિતરત્ન ભાઇચંદજી મહારાજનો અભિપ્રાય

શ્રી

રાણપુર તા. ૧૯–૧૨–૧૯૫૫

પૂજ્યપાદ જ્ઞાનિપ્રવર પંડિતરત્ન પૂજ્યશ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજ આદિમુનિવરોની સેવામાં. આપ સર્વ સુખસમાધિમાં હશો.

સૂત્ર પ્રકાશનનુ કામ સુંદર થઇ રહ્યુ છે તે જાણી અત્યંત આનંદ. આપના પ્રકાશિત થયેલાં કેટલાંક સૂત્રો જોયાં સુંદર અને સરલ સિદ્ધાંતના ન્યાયને પુષ્ટિ કરતી ટીકા પંડિતરત્નોને સુપ્રિય થઈ પડે તેવી છે. સૂત્રપ્રકાશનનું કામ ત્વરિત પૂર્ણ થાય અને ભવિ આત્માઓને આત્મકલ્યાણ કરવામાં સાધનભૂત થાય એજ અભ્યર્થના

લી પંડિતરત્ન બાળબ્રહ્મચારી
પૂ. શ્રી ભાઇચંદજી મહારાજની
આજ્ઞાનુસાર શાન્તિમુનિના
પાયવંદન સ્વીકારશો.



તા. ૧૧–૫–૫૬
વીરમગામ

ગચ્છાધિપતિ પૂજ્ય મહારાજ શ્રી જ્ઞાનચંદ્રજી મહારાજના સંપ્રદાયના આત્માર્થી, ક્રિયાપાત્ર, પંડિતરત્ન, મુનિશ્રી સમરથમલજી મહારાજનો અભિપ્રાય.

ખીચનથી આવેલ તા. ૧૨–૨–૫૬ના પત્રથી ઉદ્‌ધૃત.

પૂજ્ય આચાર્યશ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજના હસ્તક જે સૂત્રોનું લખાણ સુંદર અને સરળ ભાષામાં થાય છે તે સાહિત્ય, પંડિત મુનિશ્રી સમરથમલજી મહારાજ, સમય ઓછો મળવાને કારણે સંપૂર્ણ જોઇ શકયા નથી. છતાં જેટલુ સાહિત્ય જોયુ છે, તે બહુ જ સારૂં અને મનન સાથે લખાયેલું છે. તે લખાણ શાસ્ત્ર–આજ્ઞાને અનુરૂપ લાગે છે. આ સાહિત્ય દરેક શ્રદ્ધાળુ જીવોને વાંચવા યોગ્ય છે. આમાં સ્થાનકવાસી સમાજની શ્રદ્ધા, પ્રરૂપણા અને ફરસણાની દૃઢતા શાસ્ત્રાનુકુળ છે. આચાર્યશ્રી અપૂર્વ પરિશ્રમ લઈ સમાજ ઉપર મહાન ઉપકાર કરે છે.

**લી. કીશનલાલ પૃથ્વીરાજ માલુ**
સુ. ખીચન.



## લીંબડી સંપ્રદાયના સદાનંદી મુનિશ્રી છોટાલાલજી મહારાજનો અભિપ્રાય

શ્રીવીતરાગદેવે, જ્ઞાનપ્રચારને તીર્થંકરનામગોત્ર બાંધવાનુ નિમિત્ત કહેલ છે. જ્ઞાનપ્રચાર કરનાર, કરવામાં સહાય કરનાર અને તેને અનુમોદન આપનાર જ્ઞાનાવરણીય કર્મને ક્ષય કરી, કેવળ જ્ઞાનને પ્રાપ્ત કરી પરમપદના અધિકારી બને છે. શાસ્ત્રજ્ઞ, પરમશાન્ત અને અપ્રમાદી પૂજ્યશ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજ પોતે અવિશ્રાન્તપણે જ્ઞાનની ઉપાસના અને તેની પ્રભાવના અનેક વિકટ પ્રસંગોમાં પણ કરી રહ્યા છે. તે માટે તેઓશ્રી અનેકશઃ ધન્યવાદના અધિકારી છે, વંદનીય છે. તેમની જ્ઞાનપ્રભાવનાની ધગશ ઘણા પ્રમાદિઓને અનુકરણીય છે. જેમ પૂજ્યશ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજ પોતે જ્ઞાનપ્રચાર માટે અવિશ્રાન્ત પ્રયત્ન કરે છે. તેમજ- શાસ્ત્રોદ્ધારસમિતિના કાર્યવાહકો પણ એમા સહાય કરીને જે પવિત્ર સેવા કરી રહેલ છે. તે પણ ખરેખર ધન્યવાદના પૂર્ણ અધિકારી છે.

એ સમિતિના કાર્યકરોને મારી એક સૂચના છે કે:–

શાસ્ત્રોદ્ધારક પ્રવર પંડિત અપ્રમાદી સંત ઘાસીલાલજી મહારાજ જે શાસ્ત્રોદ્ધારનુ કામ કરી રહેલ છે, તેમા સહાય કરવા માટે–પંડિતો વિગેરેના માટે જે ખર્ચો થઈ રહેલ છે તેને પહોચી વળવા માટે સારૂ–સરખુ ફંડ જોઈએ. એના માટે મારી એ સૂચના છે કે:– શાસ્ત્રોદ્ધારસમિતિના મુખ્ય કાર્યવાહકો, જો બની શકે તો પ્રમુખ પોતે અને બીજા બે ત્રણ જણાએ, ગુજરાત, સૌરાષ્ટ્ર અને કચ્છમા પ્રવાસ કરી મેમ્બરો બનાવે અને આર્થિક સહાય મેળવે

જો કે અત્યારની પરિસ્થિતિ વિષમ છે. વ્યાપારીઓ, ધંધાદારીઓને પોતાના વ્યવહાર સાચવવા પણ મુશ્કેલ બન્યા છે છતા જો સંભાવિત ગૃહસ્થો પ્રવાસે નીકળે તો જરૂર કાર્ય સફળ કરે એવી મને શ્રદ્ધા છે.

આર્થિક અનુકૂળતા થવાથી શાસ્ત્રોદ્ધારનુ કામ પણ વધુ સરલતાથી થઈ શકે. પૂજ્યશ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજ જ્યા સુધી આ તરફ વિચરે છે ત્યા સુધીમાં એમની જ્ઞાનશકિતનો જેટલો લાભ લેવાય તેટલો લઇ લેવો કદાચ સૌરાષ્ટ્રમા વધુ વખત રહેવાથી તેમને હવે બહાર વિહરવાની ઇચ્છા થતી હોય તો શાન્તિભાઈ શેઠ જેવાએ અમદાવાદ પધરાવવા માટે વિનંતી કરવી, અને ત્યા અનુકૂળતા મુજબ બે–ત્રણ વર્ષની સ્થિરતા કરાવીને તેમની પાસે શાસ્ત્રોદ્ધારનુ કામ પૂર્ણ કરાવી લેવુ જોઈએ.

થોડા વખતમાં જામજોધપુરમાં શાસ્ત્રોદ્ધાર કમિટી મળવાની છે. તે વખતે ઉપરની સૂચના વિચારાય તો ઠીક.

ફરી શાસ્ત્રોદ્ધારક પૂજ્ય ઘાસીલાલજી મહારાજને એમની આ સેવા અને પરમ કલ્યાણકારક પ્રવૃત્તિને માટે વારંવાર અભિનંદન છે. શાસનનાયક દેવ તેમના શરીરાદિને સશક્ત અને દીર્ઘાયુ રાખે જેથી તેઓ સમાજ ધર્મની વધુ ને વધુ સેવા કરી શકે. ૐ અસ્તુ.

ચાતુર્માસ સ્થળ. લીંબડી
સં. ૨૦૧૦ શ્રાવણ વદ ૧૩ ગુરુ.

લિ.
સદાનંદી જૈનમુનિ છોટાલાલજી

*

## શ્રીવર્ધમાનસંપ્રદાયના પૂજ્યશ્રી પૂનમચંદ્રજી મહારાજનો અભિપ્રાય

શાસ્ત્રવિશારદ પૂજ્ય આચાર્ય મહારાજ શ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજશ્રીએ જૈન-આગમો ઉપર જે સંસ્કૃત ટીકા વગેરે રચેલ છે. તે માટે તેઓશ્રી ધન્યવાદને પાત્ર છે. તેમણે આગમો ઉપરની સ્વતંત્ર ટીકા રચીને સ્થાનકવાસી જૈનસમાજનુ ગૌરવ વધાર્યું છે. આગમો ઉપરની તેમની સંસ્કૃતટીકા, ભાષા અને ભાવની દષ્ટિએ ઘણીજ સુંદર છે સંસ્કૃતરચના માધુર્ય તેમજ અલંકાર વગેરે ગુણોથી યુક્ત છે. વિદ્વાનોએ તેમજ જૈનસમાજના આચાર્યો, ઉપાધ્યાયો વગેરેએ શાસ્ત્રો ઉપર રચેલી આ સંસ્કૃતરચનાની કદર કરવી જોઇએ, અને દરેક પ્રકારનો સહકાર આપવો જોઇએ.

આવા મહાન કાર્યમા પંડિતરત્ન પૂજ્યશ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજ જે પ્રયત્ન કરી રહ્યા છે તે અલૌકિક છે. તેમનું આગમ ઉપરની સંસ્કૃત ટીકા વગેરે રચવાનું ભગીરથ કાર્ય શીઘ્ર સફળ થાય એ શુભેચ્છા સાથે.

અમદાવાદ
તા. ૨૨-૪-૫૬ રવિવાર,
મહાવીરજયંતી

મુનિ પૂર્ણચંદ્રજી



## ખંભાત સંપ્રદાયનાં મહાસતીજી શારદાબાઈ સ્વામીનો અભિપ્રાય

લખતર તા. ૨૫-૪-૫૬

શ્રીમાન શેઠ શાંતીલાલભાઈ મંગળદાસભાઈ
પ્રમુખ સાહેબ, અખિલ ભારત શ્વે. સ્થા. જૈનશાસ્ત્રોદ્ધાર સમિતિ
મુ. અમદાવાદ

અમો અત્રે દેવગુરુની કૃપાએ સુખરૂપ છીએ. વિ.માં આપની સમિતિ-દ્વારા પૂજ્ય આચાર્ય મહારાજ શ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજ સાહેબ જે સૂત્રોનું કાર્ય કરે છે તે પૈકીના સૂત્રોમાથી ઉપાસકદશાંગ સૂત્ર, આચારાંગ સૂત્ર અનુત્તરોપપાતિક સૂત્ર,

દશવૈકાલિક સૂત્ર વિગેરે સૂત્રો જોયા. તે સૂત્રો સંસ્કૃત હિન્દી અને ગુજરાતી ભાષાઓમાં હોવાને કારણે વિદ્વાન અને સામાન્ય જનોને ઘણુંજ લાભદાયક છે. તે વાચન ઘણુજ સુંદર અને મનોરંજક છે. આ કાર્યમાં પૂજ્ય આચાર્યશ્રી જે અગાધ પુરુષાર્થથી કાર્ય કરે છે તે માટે વારવાર ધન્યવાદને પાત્ર છે. આ સૂત્રો સમાજને ઘણું લાભનું કારણ છે

હંસ-સમાન બુદ્ધિવાળા આત્માઓ સ્વપરના ભેદથી નિખાલસ ભાવનાએ અવલોકન કરશે તો આ સાહિત્ય સ્થાનકવાસી સમાજ માટે અપૂર્વ અને ગૌરવ લેવા જેવું છે. માટે દરેક ભવ્ય આત્માઓને સૂચન કરૂં છું કે આ સૂત્રો પોતપોતાના ઘરમા વસાવવાની સુંદર તકને ચૂકશો નહિ. આવા શુદ્ધ પવિત્ર અને સ્વપરપરાને પુષ્ટીરૂપ સૂત્રો મળવા બહુ મુશ્કેલ છે. આ કાર્યમાં આપશ્રી તથા સમિતિના અન્ય કાર્યકરો જે શ્રમ લઇ રહ્યા છો તેમાં મહાન નિર્જરાનુ કારણ જોવામાં આવે છે તે બદ્દલ ધન્યવાદ. એજ

લી. **શારદાબાઈ સ્વામી**

ખભાત સંપ્રદાય.



## બરવાળા સંપ્રદાયનાં વિદુષી મહાસતીજી મોંઘીબાઈ સ્વામીનો અભિપ્રાય

ધંધુકા તા. ૨૭-૧-૫૬

શ્રીમાનશેઠ શાન્તીલાલ મગળદાસ
પ્રમુખ અ ભા. શ્વે સ્થા જૈનશાસ્ત્રોદ્ધારસમિતિ
મુ રાજકોટ.

અત્રે બિરાજતા ગુ ગુના ભડાર મહાસતીજી વિદુષી મોંઘીબાઈ સ્વામી તથા હીરાબાઇ આદિ ઠાણા બન્ને સુખશાતામા બિરાજે છે. આપને સૂચન છે કે અપ્રમત્ત અવસ્થામા રહી નિવૃત્તિ ભાવને મેળવી ધર્મધ્યાન કરશોજી એજ આશા છે

વિશેષમા અમને પૂજ્ય આચાર્ય મહારાજ શ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજનાં રચેલા સૂત્રો ભાઇ પોપટલાલ ધનજીભાઈ તરફથી ભેટ તરીકે મળેલાં. તે સૂત્રો તમામ આદ્યોપાત વાચ્યા, મનન કર્યા અને વિચાર્યા છે તે સૂત્રો સ્થાનકવાસી સમાજને અને વીતરાગમાર્ગને ખૂબજ ઉન્નત બનાવનાર છે તેમા આપણી શ્રદ્ધા એટલી ન્યાયરૂપથી ભરેલી છે તે આપણા સમાજ માટે ગૌરવ લેવા જેવું છે. હંસ સમાન

રૂા. ૫,૨૫૧ આપનાર આદ્ય મુરબ્બીશ્રી,



કોઠારી હરગોવીંદભાઇ જેચંદ
રાજકોટ.

આત્માઓ જ્ઞાનઝરણાઓથી આત્મરૂપ વાડીને વિકસિત કરશે. ધન્ય છે આપને અને સમિતિના કાર્યકરોને જે સમાજ ઉત્થાન માટે કોઈની પણ પરવા કર્યા વગર જ્ઞાનનુ દાન ભવ્ય આત્માઓને આપવા નિમિત્તરૂપ થઇ રહ્યા છે. આવા સમર્થ વિદ્વાન પાસેથી સંપૂર્ણ કાર્ય પુરૂં કરાવશો તેવી આશા છે.

એજ લિ. બરવાળા સંપ્રદાયના વિદુષી
મહાસતીજી **મોંઘીબાઇ સ્વામી**
ના ફરમાનથી લી. ખોડીદાસ ગણેશભાઈ–ધંધુકા
સ્થાનકવાસી જૈન સંઘના પ્રમુખ.

*

## અદ્યતન પદ્ધતિને અપનાવનાર વડોદરા કોલેજના એક વિદ્વાન પ્રોફેસરનો અભિપ્રાય.

સ્થાનકવાસી સંપ્રદાયના મુનિશ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજ જૈનશાસ્ત્રોના સંસ્કૃત ટીકાબદ્ધ, ગુજરાતીમાં અને હિન્દીમા ભાષાતર કરવાના ઘણા વિકટ કાર્યમાં વ્યાપ્ત થયેલા છે. શાસ્ત્રો પૈકી જે પ્રસિદ્ધ થયા છે તે હું જોઈ શકયો છુ. મુનિશ્રી પોતે સંસ્કૃત, અર્ધમાગધી, હિન્દી ભાષાઓના નિષ્ણાત છે, એ એમનો ટુંકો પરિચય કરતા સહજ જણાઇ આવે છે. શાસ્ત્રોનુ સંપાદન કરવામાં તેમને પોતાના શિષ્ય-વર્ગનો અને વિશેષમાં ત્રણ પંડિતોનો સહકાર મળ્યો છે, તે જોઈ મને આનંદ થયો. સ્થાનકવાસી સંપ્રદાયના અગ્રેસરોએ પંડિતોનો સહકાર મેળવી આપી મુનિશ્રીના કાર્યને સરળ અને શિષ્ટ બનાવ્યુ છે. સ્થાનકવાસી–સમાજમાં વિદ્વત્તા ઘણી ઓછી છે તે દિગંબર, મૂર્તિપૂજક શ્વેતાંબર વગેરે જૈનદર્શનના પ્રતિનિધિઓના ઘણા સમયથી પરિચયમા આવતા હુ વિરોધના ભય વગર કહી શકું. પૂ. મહારાજનો આ પ્રયાસ સ્થાનકવાસી સંપ્રદાયમાં પ્રથમ છે એવી મારી માન્યતા છે. સંસ્કૃત સ્પષ્ટીકરણો સારાં આપવામા આવ્યા છે. ભાષા શુદ્ધ છે એમ હું ચોક્કસ કહી શકું છું. ગુજરાતી ભાષાંતરો પણ શુદ્ધ અને સરળ થયેલાં છે. મને વિશ્વાસ છે કે મહારાજ-શ્રીના આ સ્તુત્ય પ્રયાસને જૈનસમાજ ઉત્તેજન આપશે અને શાસ્ત્રોના ભાષાંતરોને વાચનાલયમાં અને કુટુંબોમાં વસાવી શકાય તે પ્રમાણે વ્યવસ્થા કરશે.

પ્રતાપગંજ, **વડોદરા** — **કામદાર કેશવલાલ હિંમતરામ,**
તા. ૨૭–૨–૧૯૫૬ — એમ. એ.



## મુંબઇની બે કોલેજોના પ્રોફેસરોનો અભિપ્રાય

મુંબઇ તા. ૩૧-૩-૫૬

શ્રીમાન શેઠ શાતીલાલ મંગળદાસ
પ્રમુખ : શ્રી અખિલ ભારત શ્વે. સ્થા. જૈનશાસ્રોદ્ધાર સમિતિ,
રાજકોટ.

પૂજ્યાચાર્ય શ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજે તૈયાર કરેલાં આચારાંગ, દશવૈકાલિક આવશ્યક, ઉપાસકદશાગ વગેરે સૂત્રો અમે જોયા આ સૂત્રો ઉપર સસ્કૃતમાં ટીકા આપવામા આવી છે અને સાથે સાથે હિન્દી અને ગુજરાતી ભાષાંતરો પણ આપવામાં આવ્યા છે, સંસ્કૃત ટીકા અને ગુજરાતી તથા હિન્દી ભાષાંતરો જોતા આચાર્યશ્રીના આ ત્રણે ભાષા પરના એકસરખા અસાધારણ પ્રભુત્વની સચોટ અને સુરેખ છાપ પડે છે. આ સૂત્ર-ગ્રંથોમાં પાને પાને પ્રગટ થતી આચાર્યશ્રીની અપ્રતિમ વિદ્વત્તા મુગ્ધ કરી દે તેવી છે. ગુજરાતી તથા હિન્દીમાં થયેલા ભાષાતરમા ભાષાની શુદ્ધિ અને સરળતા નોધપાત્ર છે. એથી વિદ્વદ્જન અને સાધારણ માણસ ઉભયને સંતોષ આપે એવી એમની લેખિનીની પ્રતીતિ થાય છે ૩૨ સૂત્રોમાંથી હજુ ૧૩ સૂત્રો પ્રગટ થયા છે. બીજા સાત સૂત્રો લખાઇને તૈયાર થઈ ગયા છે. આ બધા જ સૂત્રો જ્યારે એમને હાથે તૈયાર થઇને પ્રગટ થશે ત્યારે જૈનસૂત્ર-સાહિત્યમાં અમૂલ્ય સંપત્તિરૂપ ગણાશે એમાં સશય નથી. આચાર્યશ્રીના આ મહાન કાર્યને જૈન સમાજનો-વિશેષત સ્થાનકવાસી સમાજનો સપૂર્ણ સહકાર સાપડી રહેશે એવી અમે આશા રાખીએ છીએ

પ્રો **રમણલાલ ચીમનલાલ શાહ**
સેંટ ઝેવિયર્સ કોલેજ, **મુંબઇ.**
પ્રો. **તારા રમણલાલ શાહ.**
સોફીયા કોલેજ, **મુંબઇ.**

## રાજકોટની ધર્મેન્દ્રસિંહજી કોલેજના પ્રોફેસર સાહેબનો અભિપ્રાય

જયમહાલ
જાગનાથ પ્લોટ
રાજકોટ, તા. ૧૮-૪-૫૬

પૂજ્યાચાર્ય પં. મુનિ શ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજ આજે જૈનસમાજ માટે એક એવા કાર્યમા વ્યાપ્ત થયેલ છે કે જે સમાજ માટે બહુ ઉપયોગી થઈ પડશે. મુનિશ્રીએ તૈયાર કરેલા આચારાગ, દશવૈકાલિક, શ્રીવિપાકશ્રુત વિ. મે જોયા.

આ સૂત્રો જોતા પહેલીજ નજરે મહારાજશ્રીનો સંસ્કૃત, અર્ધમાગધી, હિન્દી તથા ગુજરાતી ભાષાઓ ઉપરનો અસાધારણ કાબૂ જણાઇ આવે છે. એક પણ ભાષા મહારાજશ્રીથી અજાણી નથી. આપણે જાણીએ છીએ કે એ સૂત્રો ઉચ્ચ અને પ્રથમ કોટિના છે. તેની વસ્તુ ગંભીર, વ્યાપક અને જીવનને તલસ્પર્શી છે. આટલા ગહન અને સર્વગ્રાહ્ય સૂત્રોનું ભાષાતર પૂ. ઘાસીલાલજી મહારાજ જેવા ઉચ્ચ કોટિના મુનિરાજને હાથે થાય છે તે આપણા અહોભાગ્ય છે. યંત્રવાદ અને ભૌતિકવાદના આ જમાનામાં જ્યારે ધર્મભાવના ઓસરતી જાય છે એવે વખતે આવા તત્ત્વજ્ઞાન–આધ્યાત્મિકતાથી ભરેલા સૂત્રોનુ સરળ ભાષામા ભાષાંતર દરેક જીજ્ઞાસુ, મુમુક્ષુ અને સાધકને માર્ગદર્શક થઈ પડે તેમ છે. જૈન અને જૈનેતર, વિદ્વાન અને સાધારણ માણસ, સાધુ અને શ્રાવક દરેકને સમજણ પડે તેવી સ્પષ્ટ, સરળ અને શુદ્ધ ભાષામાં સૂત્રો લખવામાં આવ્યા છે. મહારાજશ્રીને જ્યારે જોઈએ ત્યારે તેમના આ કાર્યમાં સંકળાયેલા જોઇએ છીએ. એ ઉપરથી મુનિશ્રીના પરિશ્રમ અને ધગશની કલ્પના કરી શકાય તેમ છે. તેમનું જીવન સૂત્રોમા વણાઈ ગયું છે.

મુનિશ્રીના આ અસાધારણ કાર્યમાં પોતાના શિષ્યોનો તથા પંડિતોનો સહકાર મળ્યો છે. મને આશા છે કે જો દરેક મુમુક્ષુ આ પુસ્તકોને પોતાના ઘરમાં વસાવશે અને પોતાના જીવનને સાચા સુખને માર્ગે વાળશે તો મહારાજશ્રીએ ઉઠાવેલો શ્રમ સંપૂર્ણપણે સફળ થશે.

પ્રો. **રસિકલાલ કસ્તુરચંદ ગાંધી**
એમ. એ. એલ એલ. બી.
ધર્મેન્દ્રસિંહજી કોલેજ
રાજકોટ (સૌરાષ્ટ્ર)

## મુંબઇ અને ઘાટકોપરમાં મળેલી સભાએ ભીનાસર કોન્ફરન્સ તથા સાધુસંમેલનમાં મોકલાવેલ ઠરાવ.

હાલ જે વખતે શ્વેતાંબરસ્થાનકવાસી જૈન સંઘ માટે આગમ–સંશોધન અને સ્વતંત્ર ટીકાવાળા શાસ્ત્રોની અતિઆવશ્યકતા છે અને જે મહાનુભાવોએ આ વાત દીર્ઘદ્રષ્ટિથી પહેલી પોતાના મગજમા લઈ તે પાર પાડવા મહેનત લઇ રહ્યા છે તેવા મુનિ મહારાજ પંડિતરત્ન શ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજ કે જેઓને સાદડી અધિવેશનમા સર્વાનુમતે સાહિત્યમંત્રી નીમ્યા છે તેઓશ્રીની દેખરેખ નીચે અ. ભા. શ્વે. સ્થા. જૈનશાસ્ત્રોદ્ધાર સમિતિ જે એક મોટી વગવાળી કમિટી છે તેની મારફતે કામ થઇ રહ્યું છે જેને પ્રધાનાચાર્યશ્રી તથા પ્રચાર મંત્રીશ્રી

તથા અનેક અનુભવી મહાનુભાવોએ પોતાની પસંદગીની મહોર છાપ આપી છે અને છેલ્લામાં છેલ્લા વડોદરા યુનિવર્સીટીના પ્રોફેસર કેશવલાલ કામદાર (એમ. એ.) એ પોતાનું સવિસ્તર પ્રમાણપત્ર આપ્યુ છે તે શાસ્ત્રોદ્ધારકમિટીના કામને આ સંમેલન તથા કોન્ફરન્સ હાર્દિક અભિનંદન આપે છે. અને તેમના કામને જ્યાં જ્યાં અને જે જે જરૂર પડે–પંડિતની અને નાણાની પાસેના ફંડમાંથી અને જાહેર જનતા પાસેથી મદદ મળે તેવી ઇચ્છા ધરાવે છે.

આ શાસ્ત્રો અને ટીકાઓને જ્યારે આટલી બધી પ્રશંસાપૂર્વક પસંદગી મળી છે ત્યારે તે કામને મદદ કરવાની આ કોન્ફરન્સ પોતાની ફરજ માને છે અને જે કાંઇ ત્રુટી હોય તે પં. ર. શ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજની સાનિધ્યમાં જઇ બતાવીને સુધારવા પ્રયત્ન કરવો. આ કામને ટલ્લે ચઢાવવા જેવું કોઈ પણ સત્તા ઉપરના અધિકારીઓની વાણી કે વર્તનથી ન થાય તે જોવા પ્રમુખ સાહેબને ભલામણ કરે છે.

(સ્થા. જૈન પત્ર તા. ૪–૫–૫૬)

*

## સ્વતંત્રવિચારક અને નિડર લેખક 'જૈનસિદ્ધાંત'ના તંત્રીશ્રી શેઠ નગીનદાસ ગીરધરલાલનો અભિપ્રાય

શ્રી સ્થાનકવાસી શાસ્ત્રોદ્ધાર સમિતિ સ્થાપીને પૂ. શ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજને સોરાષ્ટ્રમા બોલાવી તેમની પાસે બત્રીસે સૂત્રો તૈયાર કરાવવાની હિલચાલ ચાલતી હતી ત્યારે તે હિલચાલ કરનાર શાસ્ત્રજ્ઞ શેઠ શ્રી દામોદરદાસભાઈ સાથે મારે પત્રવ્યવહાર ચાલતો ત્યારે શેઠ શ્રી દામોદરદાસભાઈએ તેમના એક પત્રમાં મને લખેલું કે—

> "આપણા સૂત્રોના મૂળ પાઠ તપાસી શુદ્ધ કરી સંસ્કૃત સાથે તૈયાર કરી શકે તેવા સ્થાનકવાસી સંપ્રદાયમાં મુનિશ્રી ઘાસીલાલજી મ. સિવાય મને કોઈ વિશેષ વિદ્વાન મુનિ જોવામાં આવતા નથી. લાંબી તપાસને અંતે મેં મુનિ શ્રી ઘાસીલાલજીને પસંદ કરેલા છે."

શેઠ શ્રી દામોદરદાસભાઈ પોતે વિદ્વાન હતા, શાસ્ત્રજ્ઞ હતા તેમ વિચારક પણ હતા. શ્રાવકો તેમજ મુનિઓ પણ તેમની પાસેથી શિક્ષા-વાંચના લેતા, તેમ જ્ઞાનચર્ચા પણ કરતા. એવા વિદ્વાન શેઠશ્રીની પસંદગી યથાર્થ જ હોય એમા

નવાઈ નથી. અને પૂ. શ્રી ઘાસીલાલજીના બનાવેલાં સૂત્રો જોતાં સૌ કોઈને ખાત્રી થાય તેમ છે કે દામોદરદાસભાઈએ તેમજ સ્થાનકવાસીસમાજે જેવી આશા શ્રી ઘાસીલાલજી મ. પાસેથી રાખેલી તે બરાબર ફળીભૂત થયેલ છે.

શ્રીવર્ધમાન – શ્રમણસંઘના આચાર્ય શ્રીઆત્મારામજી મહારાજે શ્રી ઘાસીલાલજી મ. નાં સૂત્રો માટે ખાસ પ્રશંસા કરી અનુમતિ આપેલ છે તે ઉપરથી જ શ્રી ઘાસીલાલજી મ. નાં સૂત્રોની ઉપયોગિતાની ખાત્રી થશે.

આ સૂત્રો વિદ્યાર્થીને, અભ્યાસીને તેમજ સામાન્ય વાંચકને સર્વને એક સરખી રીતે ઉપયોગી થઈ પડે છે. વિદ્યાર્થીને તેમજ અભ્યાસીને મૂળ તથા સંસ્કૃત ટીકા વિશેષ કરીને ઉપયોગી થાય તેમ છે ત્યારે સામાન્ય હિન્દી વાંચકને હિન્દી અનુવાદ અને ગુજરાતી વાંચકને ગુજરાતી અનુવાદથી આખું સૂત્ર સરળતાથી સમજાઈ જાય છે.

કેટલાકોને એવો ભ્રમ છે કે સૂત્રો વાંચવાનું આપણું કામ નહિ, સૂત્રો આપણને સમજાય નહિ. આ ભ્રમ તદ્દન ખોટો છે. બીજા કોઈપણ શાસ્ત્રીય પુસ્તક કરતાં સૂત્રો સામાન્ય વાંચકને પણ ઘણી સરળતાથી સમજાઈ જાય છે. સામાન્ય માણસ પણ સમજી શકે તેટલા માટે જ ભ. મહાવીરે તે વખતની લોકભાષામાં (અર્ધમાગધી ભાષામાં) સૂત્રો બનાવેલાં છે. એટલે સૂત્રો વાંચવામાં તેમજ સમજવામાં ઘણાં સરળ છે.

માટે કોઈ પણ વાંચકને એવો ભ્રમ હોય તો તે કાઢી નાખવો. અને ધર્મનું તેમજ ધર્મના સિદ્ધાંતોનું સાચું જ્ઞાન મેળવવા માટે સૂત્રો વાંચવાને ચૂકવું નહિ, એટલું જ નહિ પણ જરૂરથી પહેલાં સૂત્રોજ વાંચવાં.

સ્થાનકવાસીઓમાં આ શ્રી સ્થા. જૈન શાસ્ત્રોદ્ધાર સમિતિએ જે કામ કર્યું છે અને કરી રહી છે તેવું કોઇ પણ સંસ્થાએ આજ સુધી કર્યું નથી. સ્થા. જૈન શાસ્ત્રોદ્ધાર સમિતિના છેલ્લા રિપોર્ટ પ્રમાણે બીજાં છ સૂત્રો લખાયેલ પડયાં છે, એ સૂત્રો–અનુયોગદ્વાર અને ઠાણાંગ સૂત્રો–લખાય છે તે પણ થોડા વખતમાં તૈયાર થઈ જશે. તે પછી બાકીનાં સૂત્રો, હાથ ધરવામાં આવશે.

તૈયાર સૂત્રો જલ્દી છપાઇ જાય એમ ઈચ્છીએ છીએ અને સ્થા. બંધુઓ સમિતિને ઉત્તેજન અને સહાયતા આપીને તેમનાં સૂત્રો ઘરમાં વસાવે એમ ઈચ્છીએ છીએ.

'જૈન સિદ્ધાન્ત' –મે ૧૯૫૫.

*

# શ્રુત ભક્તિ

(પૂ. આચાર્ય શ્રી ઈશ્વરલાલજી મ. સા. ની આજ્ઞા અનુસાર લખનાર)

દ. સં. ના જૈન મુનિ શ્રી. દયાનંદજી મહારાજ

તા. ૨૩–૬–૫૬ શાહપુર, અમદાવાદ.

આજે લગભગ ૨૦ વર્ષથી શ્રદ્ધેય પરમપૂજ્ય, જ્ઞાનદિવાકર પં. મુનિશ્રી **ઘાસીલાલજી** મ. ચરમ તીર્થંકર ભગવાન મહાવીરના અનુત્તર અનુપમ ન્યાય–યુક્ત, પૂર્વાપર–આવરુદ્ધ, સ્વપરકલ્યાણકારક, ચરમ શીતળ વાણીના ઘોતક એવા **શ્રી જિનાગમ** પર પ્રકાશ પાડે છે. તેઓશ્રી પ્રાચીન, પૌર્વાત્ય સંસ્કૃતાદિ અનેક ભાષાના પ્રખર પંઠિત છે અને જિનવાણીનો પ્રકાશ સંસ્કૃત, ગુજરાતી અને હિન્દીમાં મૂળ શબ્દાર્થ, ટીકા, વિસ્તૃત વિવરણ સાથે પ્રકાશમાં લાવે છે. એ જૈન સમાજ માટે અતિ ગૌરવ અને આનંદનો વિષય છે.

ભ. મહાવીર અત્યારે આપણી પાસે વિદ્યમાન નથી. પરંતુ તેમની વાણીરૂપે અક્ષરદેહ ગણુધર મહારાજોએ શ્રુતપરંપરાએ સાચવી રાખ્યો. શ્રુતપરંપરાથી સચવાતું જ્ઞાન જ્યારે વિસ્મૃત થવાનો સમય ઉપસ્થિત થવા લાગ્યો ત્યારે શ્રી દેવર્દ્ધિગણિ ક્ષમાશ્રમણે વલ્લભીપુર–વળામા તે આગમોને પુસ્તકો–રૂપે આરૂઢ કર્યો. આજે આ સિદ્ધાંતો આપણી પાસે છે. તે અર્ધમાગધી ભાષામાં છે. અત્યારે આ ભાષા ભગવાનની, દેવોની તથા જનગણુની ધર્મ ભાષા છે. તેને આપણા શ્રમણો અને શ્રમણીઓ તથા મુમુક્ષુ શ્રાવક શ્રાવિકાઓ મુખપાઠ કરે છે; પરન્તુ તેનો અર્થ અને ભાવ ઘણા થોડાઓ સમજે છે.

જિનાગમ એ આપણા શ્રદ્ધેય પવિત્ર ધર્મસૂત્રો છે. એ આપણી આંખો છે. તેનો અભ્યાસ કરવો એ આપણી સૌની--જૈનમાત્રની ફરજ છે. તેને સત્યસ્વરૂપે સમજાવવા માટે આપણા સદ્ભાગ્યે જ્ઞાનદિવાકર શ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજે સત્સંકલ્પ કર્યો છે. અને તે લિખિત સૂત્રોને પ્રગટ કરાવી શાસ્ત્રોદ્ધારસમિતિ દ્વારા જ્ઞાન–પરબ વહેતી કરી છે. આવાં અનુપમ કાર્યમાં સકળ જૈનોનો સહકાર અવશ્ય હોવો ઘટે અને તેનો વધારેમાં વધારે પ્રચાર થાય તે માટે પ્રયત્નો કરવા ઘટે.

ભ. મહાવીરને ગણુધર ગૌતમ પૂછે છે કે, હે ભગવાન! સૂત્રની આરાધના કરવાથી શું ફળ પ્રાપ્ત થાય છે? ભગવાન તેનો પ્રતિ–ઉત્તર આપે છે કે શ્રુતની આરાધનાથી જીવોના અજ્ઞાનનો નાશ થાય છે, અને તેઓ સંસારના કલેશોથી નિવૃત્તિ મેળવે છે, અને સંસારકલેશોથી નિવૃત્તિ અને અજ્ઞાનનો નાશ થતાં મોક્ષ–ફળની પ્રાપ્તિ થાય છે.

આવા જ્ઞાનના કાર્યમાં મૂર્તિપૂજક જૈનો, દિગંબરો અને અન્યધર્મીઓ હજારો અને લાખો રૂપીયા ખર્ચે છે. હિન્દુ ધર્મમાં પવિત્ર મનાતા ગ્રંથ ગીતાના સેંકડો નહિ પણુ હજારો ટીકાગ્રંથો દુનિયાની લગભગ સર્વ ભાષાઓમાં પ્રગટ થયા છે. ઇસાઇ ધર્મના પ્રચારકો તેમના પવિત્ર ધર્મગ્રંથ બાઇબલના પ્રચારાર્થે જગતની સર્વ ભાષાઓમાં તેનું ભાષાંતર કરી, તેને પડતર કરતાં પણુ ઘણી ઓછી કિંમતે વેચી ધર્મ-

સૂત્રોનો પ્રચાર કરે છે. મુસ્લીમ લોકો પણ તેમના પવિત્ર મનાતા ગ્રન્થ કુરાનનું પણ અનેક ભાષાઓમાં ભાષાંતર કરી સમાજમાં પ્રચાર કરે છે. આપણે પૈસા ઉપરનો મોહ ઉતારી ભગવાનના સિદ્ધાંતોનો પ્રચાર કરવા માટે તન, મન, ધન સમર્પણ કરવાં જોઈએ, અને સૂત્ર પ્રકાશનના કાર્યને વધુ ને વધુ વેગ મળે તે માટે સક્રિય પ્રયત્નો કરવા જોઇએ. આવા પવિત્ર કાર્યમાં સાંપ્રદાયિક મતભેદો સૌએ ભૂલી જવા જોઇએ અને શુદ્ધ આશયથી થતા શુદ્ધ કાર્યને અપનાવી લેવું જોઈએ. સમિતિના નિયમાનુસાર રૂા. ૨૫૧) ભરી સમિતિના સભ્ય બનવું જોઇએ. ધાર્મિક અનેક ખાતાંઓના મુકાબલે સૂત્ર પ્રકાશનનું-જ્ઞાનપ્રચારનું આ ખાતું સર્વશ્રેષ્ઠ ગણાવું જોઇએ.

આ કાર્યને વેગ આપવાની સાથે સાથે એ આગમો-ભગવાનની એ મહાવાણીનું પાન કરવા પણ આપણે હરહંમેશ તત્પર રહેવું જોઇએ જેથી પરમ શાન્તિ અને જીવનસિદ્ધિ મેળવી શકાય. (સ્થા. જૈન તા. ૫-૭-૫૬)

---

શ્રી. અ. ભા. શ્વે. સ્થા. જૈનશાસ્ત્રોદ્ધાર સમિતિના પ્રમુખશ્રી વગેરે.

રાણપુર

પરમ પવિત્ર સૌરાષ્ટ્રની પુણ્યભૂમિ ઉપર જ્યારથી શાન્ત-શાસ્ત્રવિશારદ અપ્રમાદી પૂજ્ય આચાર્ય મહારાજ શ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજનાં પુનીત પગલાં થયાં છે ત્યારથી ઘણા લાંબા કાળથી લાગૂ પડેલ જ્ઞાનાવરણીય કર્મનાં પડળ ઉતારવાનો શુભ પ્રયાસ થઈ રહ્યો છે. અને જે પ્રવચનની પ્રભાવના તેઓશ્રી કરી રહ્યા છે તે અનંત ઉપકારક કાર્યમાં તમે જે અપૂર્વ સહાય આપી રહ્યા છો તે માટે તમો સર્વને ધન્ય છે, અને એ શુભ પ્રવૃત્તિના શુભ પરિણામોનો જનતા લાભ લ્યે છે. મને તો સમજાય છે કે સાધુજી છઠે ગુણસ્થાનકે હોય છે. પણ પૂજ્ય શ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજ તો બહુધા સાતમે અપ્રમત્ત ગુણસ્થાનકે જ રહે છે. એવા અપ્રમત્ત માત્ર પાંચ-સાત સાધુઓ જો સ્થાનકવાસી જૈન સમાજમાં હોય તો સમાજનું શ્રેય થતાં જરાએ વાર ન લાગે. સમાજાકાશમાં સ્થા. જૈન સંપ્રદાયનો દિવ્ય પ્રભાકર જળહળી નીકળે પ....ણ વો દિન....

શ્રી શાસ્ત્રોદ્ધાર સમિતિને મ્હારી એક નમ્ર સૂચના છે કે-પૂજ્યશ્રીની વૃદ્ધાવસ્થા છે, અને કાર્યપ્રણાલિકા યુવાનોને શરમાવે તેવી છે. તેમને ગામોગામ વિહાર કરવા અને શાસ્ત્રોદ્ધારનું કાર્ય કરવું તેમાં ઘણી શારીરિક, માનસિક અને વ્યાવહારિક મુશ્કેલી વેઠવી પડે છે. તો કોઇ યોગ્ય સ્થળ કે જ્યાં શ્રાવકો ભક્તિવાળા હોય, વાડાના રાગના વિષથી અલિપ્ત હોય એવા કોઈ સ્થળે શાસ્ત્રોદ્ધારનુ કાર્ય પૂર્ણ થાય ત્યાં સુધી સ્થિરતા કરી શકે એના માટે પ્રબંધ કરવો જોઈએ. બીજા કોઇ એવા સ્થળની અનુકૂળતા ન મળે તો છેવટ અમદાવાદમા યોગ્ય સ્થળે રહેવાની સગવડતા કરી અપાય તો વધુ સારૂં. મ્હારી આ સૂચના પર ધ્યાન આપવા ફરી યાદ આપું છું. ફરીવાર પૂજ્ય આચાર્યશ્રીને અને તેમના સત્કાર્યના સહાયકોને મારા અભિનંદન પાઠવું છું તે સ્વીકારશોજી.

લિ. સદાનંદી જૈનમુનિ છોટાલાલજી.

## "જૈન સિદ્ધાંતના" તંત્રીશ્રીનો અભિપ્રાય.

સ્થાનકવાસીઓમા પ્રમાણુભૂત સૂત્રો બહાર પાડનારી આ એકની એક સંસ્થા છે. અને એના આ છેલ્લા રિપોર્ટ ઉપરથી જણાય છે કે તેણે ઘણી સારી પ્રગતિ કરી છે તે જોઈ આનંદ થાય છે.

મૂળ પાઠ, ટીકા, હિન્દી તથા ગુજરાતી અનુવાદ સહિત સૂત્રો બહાર પાડવાં એ કાંઇ સહેલું કામ નથી. એ એક મહાભારત કામ છે. અને તે કામ આ શાસ્ત્રોદ્ધારસમિતિ ઘણી સફળતાથી પાર પાડી રહી છે. તે સ્થાનકવાસી સમાજ માટે ઘણા ગૌરવનો વિષય છે અને સમિતિ ધન્યવાદને પાત્ર છે.

સમિતિ તરફથી નવ સૂત્રો બહાર પડી ચૂકયા છે, હાલમા ત્રણ સૂત્રો છપાય છે. નવ સૂત્રો લખાઈ ગયાં છે અને જંબૂદ્વીપપ્રજ્ઞપ્તિ તથા નંદીસૂત્ર તૈયાર થઈ રહ્યાં છે.

હાલમાં મંત્રી શ્રી સાકરચંદ ભાઇચંદ સમિતિના કામમાં જ તેમનો આખો વખત ગાળે છે અને સમિતિના કામકાજને ઘણો વેગ આપી રહ્યા છે. તેમની ખંત માટે ધન્યવાદ.

અને આ મહાભારત કામના મુખ્ય કાર્યકર્તા તો છે વયોવૃદ્ધ પંડિત મુનિશ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજ. મૂળ પાઠનું સંશોધન તથા સંસ્કૃત ટીકા તેઓશ્રી જ તૈયાર કરે છે. મુનિશ્રીનો આ ઉપકાર આખાય સ્થા. જૈન સમાજ ઉપર ઘણો મહાન છે. એ ઉપકારનો બદલો તો વાળી શકાય તેમજ નથી.

પરંતુ આ સમિતિના મેમ્બર બની, તેના બહાર પડેલાં સૂત્રો ઘરમાં વસાવી તેનું અધ્યયન કરવામાં આવે તો જ મહારાજશ્રીનું થોડું ઋણ અદા કર્યું ગણાય.

ભગવાને કહ્યું છે કે पढमं णाणं तओ दया–પહેલું જ્ઞાન પછી દયા, દયા ધર્મને યથાર્થ સમજવો હોય તો ભગવાનની વાણીરૂપ આપણા સૂત્રો વાંચવાંજ જોઇએ તેનું અધ્યયન કરવું જોઈએ અને તેનો ભાવાર્થ યથાર્થ સમજવો જોઇએ.

એટલા માટે આ શાસ્ત્રોદ્ધારસમિતિના સર્વ સૂત્રો દરેક સ્થા. જૈને પોતાના ઘરમાં વસાવવાજ જોઇએ. સર્વધર્મજ્ઞાન આપણા સૂત્રોમાંજ સમાયેલું છે, અને સૂત્રો સહેલાઇથી વાચીને સમજી શકાય છે, માટે દરેક સ્થા. જૈન આ સૂત્રો વાચે એ ખાસ જરૂરનું છે.

"જૈન સિદ્ધાત" ડીસેમ્બર—૫૬

*

રૂા. ૫,૦૦૧ આપનાર આદ્ય મુરબ્બીશ્રી,



(સ્વ.) શેઠ ધારસીભાઇ જીવણભાઇ
સોલાપુર.

## શ્રી ઉપાસકદશાંગ સૂત્રને માટે અભિપ્રાય.

મૂળ સૂત્ર તથા પૂ. મુનિશ્રી ઘાસીલાલજીએ બનાવેલ સંસ્કૃત છાયા તથા ટીકા અને હિંદી તથા ગુજરાતી–અનુવાદ સહિત.

પ્રકાશક–અ. ભા. શ્વે. સ્થાનકવાસી જૈન શાસ્ત્રોદ્ધાર સમિતિ, ગરેડીઆ કુવા રોડ, ગ્રીન લોજ પાસે, રાજકોટ. (સૌરાષ્ટ્ર). પૃષ્ઠ ૬૧૬ બીજી આવૃત્તિ બેવડું (મોટું) કદ. પાકું પુઠું. જેકેટ સાથે સને ૧૯૫૬. કિંમત ૮–૮–૦.

આપણા મૂળ બાર અંગ સૂત્રોમાનું ઉપાસકદશાંગ એ સાતમું અંગસૂત્ર છે, એમાં ભગવાન મહાવીરના દશ ઉપાસકો–શ્રાવકોનાં જીવનચરિત્રો આપેલાં છે, તેમાં પહેલું ચરિત્ર આનંદ શ્રાવકનું આવે છે.

આનંદ શ્રાવકે જૈનધર્મ અંગીકાર કર્યો અને બાર વ્રત ભગવાન મહાવીર પાસે અંગીકાર કરી પ્રતિજ્ઞા–પ્રત્યાખ્યાન લીધાં તેનું સવિસ્તર વર્ણન આવે છે. તેના અંતર્ગત અનેક વિષયો જેવા કે, અભિગમ, લોકાલોકસ્વરૂપ, નવતત્ત્વ, નરક, દેવલોક વગેરેનું વર્ણન પણ આવે છે.

આનંદ શ્રાવકે બાર વ્રત લીધાં તે બારે વ્રતની વિગત, અતિચારની વિગત વગેરે બધું આપેલું છે. તે જ પ્રમાણે બીજા નવ શ્રાવકોની પણ વિગત આપેલ છે.

આનંદ શ્રાવકની પ્રતિજ્ઞામાં अरिहतचेइयाइं શબ્દ આવે છે. મૂર્તિપૂજકો મૂર્તિપૂજા સિદ્ધ કરવા માટે તેનો અર્થ અરિહંતનું ચૈત્ય (પ્રતિમા) એવો કરે છે. પણ તે અર્થ તદ્દન ખોટો છે. અને તે જગ્યાએ આગળ પાછળના સંબંધ પ્રમાણે તેનો એ ખોટો અર્થ બંધ બેસતો જ નથી તે મુનિશ્રી ઘાસીલાલજીએ તેમની ટીકામાં અનેક રીતે પ્રમાણો આપી સાબિત કરેલ છે અને अरिहंत चेइयाइं ના અર્થ સાધુ થાય છે તે બતાવી આપેલ છે.

આ પ્રમાણે આ સૂત્રમાથી શ્રાવકના શુદ્ધ ધર્મની માહિતી મળે છે તે ઉપરાંત તે શ્રાવકોની ઋદ્ધિ, રહેઠાણ, નગરી વગેરેનાં વર્ણનો ઉપરથી તે વખતની સામાજિક સ્થિતિ, રીતરિવાજ, રાજ્યવ્યવસ્થા વગેરે બાબતોની માહિતી મળે છે.

એટલે આ સૂત્ર દરેક શ્રાવકે અવશ્ય વાંચવું જોઈએ. એટલું જ નહિ, પણ વારંવાર અધ્યયન કરવા માટે ઘરમાં વસાવવું જોઇએ.

પુસ્તકની શરૂઆતમાં વર્દ્ધમાન શ્રમણ સંઘના આચાર્યશ્રી આત્મારામજી મહારાજનું સંમતિપત્ર તથા બીજા સાધુઓ તેમજ શ્રાવકોના સંમતિપત્રો આપેલા છે, તે સૂત્રની પ્રમાણભૂતતાની ખાત્રી આપે છે.

"જૈન સિદ્ધાંત" જાન્યુઆરી, ૫૭

☆

## સેંકડો સર્ટીફીકેટો ઉપરાંત હાલમાં મળેલા કેટલાક તાજા અભિપ્રાયો

# શાસ્ત્રોદ્ધારના કાર્યને વેગ આપો

### તંત્રીસ્થાનેથી ( જૈનજયોતિ ) તા. ૧૫-૯-૫૭

પૂજ્ય શ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજ ઠાણા ૪ હાલમાં અમદાવાદ મુકામે સરસપુરના સ્થા જૈન ઉપાશ્રયમાં બિરાજમાન છે. તેઓશ્રી શાસ્ત્રોદ્ધારનુ કાર્ય ખૂબ જ ખંત અને ઉત્સાહથી વૃદ્ધવયે પણ કરી રહ્યા છે. તેઓશ્રી વૃદ્ધ છે છતાં પણ આખો દિવસ શાસ્ત્રની ટીકાઓ લખી રહ્યા છે. આજ સુધીમાં તેમણે લગભગ ૨૦ જેટલાં શાસ્ત્રોની ટીકાઓ લખી નાખી છે અને બાકીનાં સૂત્રોની ટીકા જેમ બને તેમ જલદી પૂર્ણ કરવી એવા મનોરથ સેવી રહેલ છે, સ્થા. જૈન સમાજમાં શાસ્ત્રો ઉપર સંસ્કૃત ટીકા લખવાનો આ પ્રથમ જ પ્રયાસ છે અને તે પ્રયાસ સંપૂર્ણ બને એવી અમે શાસનદેવ પ્રત્યે પ્રાર્થના કરીએ છીએ. આજ સુધી ઘણા મુનિવરોએ શાસ્ત્રોનું કામ શરૂ કરેલ છે પણ કોઈએ પૂર્ણ કરેલ નથી. પૂજ્યશ્રી અમુલખઋષીજી મહારાજે બત્રીસે શાસ્ત્રો ઉપર હિન્દી અનુવાદ કરેલ અને સંપૂર્ણ બનેલ. ત્યારબાદ આચાર્ય શ્રી આત્મારામજી મહારાજશ્રીએ હિન્દી ટીકા કેટલાક શાસ્ત્રો ઉપર લખેલ પણ ઘણા શાસ્ત્રો બાકી રહી ગયાં. પૂજ્ય હસ્તિમલજી મહારાજે એક બે શાસ્ત્રો ઉપરની ટીકાઓના અનુવાદો કરેલ પૂજ્ય શ્રી જવાહિરલાલ મહારાજશ્રીએ સૂયગડાંગસૂત્ર ટીકા સહિત હિન્દી અનુવાદ સાથે પ્રકાશિત કરેલ. શ્રી સૌભાગ્યમલજી મહારાજે આચારાંગની હિન્દી ટીકા લખેલ પણ સંપૂર્ણ શાસ્ત્રો ઉપર સંસ્કૃત ટીકા હજી સુધી સ્થા. જૈન સાધુઓ તરફથી થયેલ નથી. જ્યારે પૂજ્યશ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજશ્રીએ ૨૦ શાસ્ત્રો ઉપર સંસ્કૃત ટીકા તેનો હિન્દી ગુજરાતી અનુવાદ કરાવેલ છે. આથી હવે આશા બંધાય છે કે તેઓશ્રી બત્રીસે બત્રીસ શાસ્ત્રો ઉપર સંસ્કૃત ટીકા લખવામાં સફળ થશે અને શાસ્ત્રોદ્ધાર સમિતિએ આજ સુધી ૧૦ થી ૧૨ શાસ્ત્રો છપાવી પણ દીધાં છે અને હજી પણ તે શાસ્ત્રો વિશેષ જલદી છપાય તે માટે શાસ્ત્રોદ્ધાર સમિતિ સંપૂર્ણ પ્રયત્ન કરી રહેલ છે તે ધન્યવાદને પાત્ર છે.

જૈનશાસ્ત્રોદ્ધારસમિતિના રૂ. ૨૫૧ ભરીને લાઈફ મેમ્બર થનારને તમામ શાસ્ત્રો શાસ્ત્રોદ્ધાર સમિતિ તરફથી ભેટ મળે છે. આ રીતે એક પંથ અને દો કાજ. બન્ને રીતે લાભ થાય તેમ છે. રૂા. ૨૫૧ થી ૫૦૦ રૂપિયાની કિંમતનાં શાસ્ત્રો મળે એ પણ મોટો લાભ છે અને પ્રવચનની પ્રભાવના કરવાનો ધર્મલાભ પણ મળે છે.

આ સાલે પૂજ્ય ઘાસીલાલજી મહારાજના સુશિષ્ય પં. મુનિશ્રી કન્હૈયાલાલજી મહારાજ મલાડ મુકામે ચાતુર્માસ બિરાજે છે અને તેઓશ્રી શાસ્ત્રોના મેમ્બરો કરવા માટે અથાગ પ્રયત્ન કરીને પ્રવચનની સેવા બજાવી રહ્યા છે. અને અત્યાર સુધીમાં મુંબઈ તેમજ પરાઓના લગભગ ૪૦ જેટલા ગૃહસ્થો લાઈફ મેમ્બર બની ગયા છે અને મુંબઇમાં લગભગ ૩૦૦ જેટલા મેમ્બરો થાય તે ઈચ્છવા યોગ્ય છે. શ્રીમંત ગૃહસ્થો હજારો રૂપિયા પોતાના ઘર ખર્ચમાં તેમજ મોજશોખના કામોમા તેમજ વ્યાવહારિક કામોમા વાપરી રહ્યા છે તો આવા શાસ્ત્રોદ્ધાર જેવા પવિત્ર કાર્યમાં રૂપિયા વાપરશે તો ધર્મની સેવા કરી ગણાશે. અને બદલામાં ઉત્તમ આગમસાહિત્યની એક લાયબ્રેરી મળી જશે. જેનું વાંચન કરવાથી આત્માને શાંતિ મળશે અને શાસ્ત્રઆજ્ઞા-પ્રમાણે વર્તવાથી જીવન સફળ થશે.



**શતાવધાની મુનિશ્રી જયંતીલાલજી મહારાજશ્રીનો અમદાવાદનો પત્ર "સ્થાનકવાસી જૈન" તા ૫-૯-૫૭ના અંકમાં છપાએલ છે જે નીચે મુજબ છે.**

સૂત્રોના મૂળ પાઠોમાં ફેરફાર હોઈ શકે ખરો ?

તા. ૭-૮-૫૭ના રોજ અત્રે બિરાજતા શાસ્ત્રોદ્ધારક આચાર્ય મહારાજશ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજ પાસે, મારા ઉપર આવેલ એક પત્ર લઈને હું ગયો હતો, તે સમયે મારે પૂ. મ. સા. સાથે જે વાતચીત થઇ તે સમાજને જાણ કરવા સારૂ લખું છું.

'શાસ્ત્રોનું કામ એક ગહન વસ્તુ છે. અપ્રમાદી થઈ તેમાં અવિરત પ્રયત્નો કરવા જોઇએ, સંપૂર્ણ શાસ્ત્રોનું જ્ઞાન તેમજ દરેક પ્રકારની ખાસ ભાષાઓનું જ્ઞાન હોય તોજ આગમોદ્ધારનું કાર્ય સફળતાથી થાય. આ પ્રકારનો પ્રયત્ન હાલ અમદાવાદ ખાતે સરસપુર જૈન સ્થાનકમાં બિરાજતા પૂજ્ય શ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજ કરી રહ્યા છે. શાસ્ત્ર-લેખનનુ આ કાર્ય થઈ રહ્યુ છે, તેમાં અનેક વ્યક્તિઓને અનેક પ્રકારની શંકાઓ થાય છે. તે પૈકી શાસ્ત્રોના મૂળ પાઠમા ફેરફાર થાય છે ? કરવામાં આવે છે ? એવો પ્રશ્ન પણ કેટલાકને થાય છે અને તેવો પ્રશ્ન થાય તે સ્વાભાવિક છે, કેમકે અમુક મુનિરાજો તરફથી પ્રગટ થયેલ સૂત્રોના મૂળ પાઠમાં ફેરફાર થયેલા છે. જેથી આ કાર્યમાં પણ સમાજને શંકા થાય.

પણ ખરી રીતે જોતાં, અત્યારે જે શાસ્ત્રોદ્ધારનું કામ ચાલી રહ્યું છે તે વિષે સમાજને ખાત્રી આપવામાં આવે છે કે, શાસ્ત્રોદ્ધારસમિતિ તરફથી અત્યાર સુધીમાં પ્રગટ થયેલાં આગમોના મૂળ પાઠમાં જરાપણ ફેરફાર કરવામાં આવેલ નથી અને ભવિષ્યમા જે સૂત્રો પ્રગટ થશે તેમાં ફેરફાર થશે નાહ તેની સમાજ નોંધ લ્યે.

લી.

**શતાવધાની શ્રી જયંત મુન-અમદાવાદ**

*

# "શ્રી અખિલ ભારત શ્વેતામ્બર સ્થાનકવાસી જૈન શાસ્ત્રોદ્ધાર સમિતિનો ટુંક પરિચય"

સ્થાનકવાસી સમાજની આ એકની એક સંસ્થા છે કે જેણે અત્યાર સુધીમાં તેર સૂત્રો છપાવી બહાર પાડી દીધાં છે. સાત સૂત્રો છપાય છે અને બીજાં કેટલાક છાપવા માટે તૈયાર થઇ ચૂકયા છે.

આ પ્રમાણે આ સંસ્થાએ મહાન્ પ્રગતિ સાધી છે તેનો ટુંક પરિચય આ પત્રિકામાં આપેલ છે તે વાંચી જઈ સર્વ સ્થા. જૈન ભાઈબહેનોએ આ સંસ્થા ને યથાશકિત મદદ કરી તેના કાર્ય ને હજુ વિશેષ વેગવાન બનાવવાની જરૂર છે.

'ખાલી ઘડો વાગે ઘણો' એમ સ્થા. કોન્ફરન્સ જેમ ખોટાં બણગાં ફૂંકનારી સંસ્થાની કોઈ કિંમત નથી, ત્યારે નક્કર કામ કરનારી આ શાસ્ત્રોદ્ધાર સમિતિને દરેક પ્રકારે ઉત્તેજન આપવાની દરેક સ્થાકવાસી જૈનની અનિવાર્ય ફરજ છે.

અને આ સર્વ સૂત્રો તૈયાર કરનાર પૂજ્ય મુનિશ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજનો સ્થાનકવાસી સમાજ ઉપર ઘણો મહાન ઉપકાર છે. વયોવૃદ્ધ હોવા છતા તેઓશ્રી જે મહેનત લઈ સૂત્રો તૈયાર કરાવે છે તેવું કામ હજુ સુધી બીજા કોઈએ કર્યું નથી અને બીજું કોઇ કરી શકશે કે નહિ તે પણ શંકાભર્યું છે. પૂજ્ય મુનિશ્રીના આ મહાન્ ઉપકારનો કિંચિત બદલો સમાજે આ શાસ્ત્રોદ્ધાર સમિતિને બની શકતી સહાય કરીને વાળવાનો છે. સ્થાનકવાસી સમાજ જ્ઞાનની કદર કરવામાં પાછો હઠે તેમ નથી એવી અમો આશા રાખીએ છીએ.

"જૈનસિદ્ધાંત" પત્ર ઓકટોમ્બર ૧૯૫૭

*

## શ્રી દશવૈકાલિક તથા ઉપાસકદશાંગ સૂત્રો

ગુજરાતી ભાષામાં અનુવાદ થયેલાં પૂજ્ય શ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજ વિરચિત ઉપરોક્ત બે સુત્રો જૈનધર્મ પાળતા દરેક ઘરમાં હોવા જ જોઇએ. તે વાંચવાથી શ્રાવક ધર્મ અને શ્રમણ ધર્મના આચારનું જ્ઞાન પ્રાપ્ત થઇ શકે છે અને શ્રાવકો પોતાની નિરવદ્ય અને એષણીય સેવા શ્રમણ પ્રત્યે બજાવી શકે છે. વર્તમાનકાળે શ્રાવકોમાં તે જ્ઞાન નહિ હોવાને લીધે અંધશ્રદ્ધાએ શ્રમણવર્ગની વૈયાવચ્ચ તો કરી રહેલ છે. પરંતુ 'કલ્પ શું અને અકલ્પ શું' એનું જ્ઞાન નહિ હોવાને લીધે પોતે સાવદ્ય સેવા અર્પી પોતાના સ્વાર્થને ખાતર શ્રમણવર્ગને પોતાને સહાયક થવામાં ઘસડી રહ્યા છે અને શ્રમણવર્ગની પ્રાયઃ કુસેવા કરી રહ્યા છે. તેમાંથી બચી લાભનું કારણ થાય અને શ્રમણને યથાતથ્ય સેવા અર્પી તેમને પણ જ્ઞાન-દર્શન-ચારિત્રની આરાધના કરવામાં સહાયક થઈ પોતાના જ્ઞાન-દર્શન-ચારિત્રની આરાધના કરી સુગતિ મેળવી શકે. શ્રમણની યથાતથ્ય સેવા કરવી તે અવશ્ય ગૃહસ્થની ફરજ છે.

પૂજ્ય શ્રી ઘાસીલાલજી મ. શાસ્ત્રોદ્ધારનો અનુવાદ ત્રણ ભાષામાં રૂડી રીતે કરી રહ્યા છે અને રૂપીયા ૨૫૧) ભરી મેમ્બર થનારને રૂા. ૪૦૦-૫૦૦ લગભગ ની કીંમતના બત્રીસે આગમો ફ્રી મળી શકે છે તો તે રૂા. ૨૫૧) ભરી મેમ્બર થઇ બત્રીસે આગમો દરેક શ્રાવકઘરે મેળવવા જોઇએ. બત્રીસે શાસ્ત્રોના લગભગ ૪૮ પુસ્તકો મળશે. તો તે લાભ પોતાની નિર્જરા માટે, પુન્યાનુબંધી પુન્ય માટે જરૂર મેળવે. ઉપરોકત બંને સૂત્રોની કીંમત સમિતિ કંઇક ઓછી રાખે તો હરકોઇ ગામમાં શ્રીમંત હોય તે સૂત્રો લાવી અરધી કીંમતે, મફત અથવા પૂરી કીંમતે લેનારની સ્થિતિ જોઈ દરેક ઘરમાં વસાવી શકે.

—એક ગૃહસ્થ

**નોંધ** :-ઉપરની સૂચનાને અમે આવકારીએ છીએ. આવાં સૂત્રો દરેક ઘરમાં વસાવવા યોગ્ય તેમજ દરેક શ્રાવકે વાંચવા યોગ્ય છે. **તંત્રી**—

"રત્નજ્યોત" પત્ર

તા. ૧-૧૦-૫૭

# શ્રી સ્થા. જૈન શાસ્ત્રોદ્ધાર સમિતિની કાર્યવાહક કમીટીનો અહેવાલ.

*

મે મહિનાની શરૂઆતમાં શાસ્ત્રોદ્ધારસમિતિની મીટીંગ અમદાવાદમાં મળી હતી તેનો હેવાલ અમને મળેલો છે તેમાં સમિતિએ સરસ કામ કર્યું છે.

આ ઉપરથી સમજી શકાય છે કે સ્થાનકવાસી સમાજમાં આજ સુધી કોઈએ પણ નથી કરી શકયું એવું મહાભારત કામ પૂ. શ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજ તથા શાસ્ત્રોદ્ધારસમિતિ ઘણી સફળતાથી કરી રહી છે. અને તેઓ થોડા વખતમાં માથે લીધેલું સર્વ કામ સંપૂર્ણ રીતે પાર ઉતારશે એવી અમને ખાત્રી છે.

આવા ઉત્તમ કાર્ય માટે સમસ્ત સ્થાનકવાસી જૈનોએ શાસ્ત્રોદ્ધારસમિતિને પોતાનાથી બની શકે તે રીતે સંપૂર્ણ ટેકો આપવો જોઈએ, તે તેમની ફરજ બની રહે છે. જૈનો માટે સૂત્રો એ પહેલી ફરજીઆતની વસ્તુ છે. સૂત્રના આધારે જ ધર્મજ્ઞાન મળે છે. આજ સુધી જે આપણને અપ્રાપ્ય હતા તે આપણા જૈન-સૂત્રો પૂ. શ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજે તથા શાસ્ત્રોદ્ધારસમિતિએ સુલભ કરી આપ્યા છે.

તો હવે સ્થાનકવાસી જૈનોએ શાસ્ત્રોદ્ધારસમિતિના સભાસદ બની સમિતિનું કામ બનતી ઉતાવળે પૂરૂં થાય તેમ કરવાની ખાસ જરૂર છે વાચકોમાંથી જેઓથી બની શકે તેમણે પહેલા વર્ગના શાસ્ત્રોદ્ધારસમિતિના સભ્ય બની જવું જોઈએ. તેથી સમિતિના કામને ઉત્તેજન મળવા ઉપરાંત સભ્યને સૂત્રોનો આખો સેટ મફત મેળવવાનો લાભ મળશે અને સૂત્રો વાંચીને ધર્મારાધન કરવાનો જે લાભ મળશે તે તો અમૂલ્ય જ છે. માટે સમિતિના સભ્ય થઈ જવાની અમારી દરેક સ્થા. જૈનને ખાસ ભલામણ છે.

"જૈન સિદ્ધાંત" જુલાઈ–૧૯૫૮

# શાસ્ત્રોદ્ધાર સમિતિના આગમો અંગે અભિપ્રાય.

*

દક્ષિણ, ઉત્તરપ્રદેશ, દિલ્હી અને પંજાબમાં ઉગ્ર વિહાર કરીને હાલમાં ગુજરાત-સૌરાષ્ટ્રમાં વિચરી રહેલા ઉગ્ર વિહારી પૂ. મહાસતીજી શ્રી **રંભાકુંવરજી** તથા પ્રસિદ્ધ વ્યાખ્યાની વિવિધભાષાવિશારદા પૂ મહાસતીજી શ્રી. **સુમતિકુંવરજીનો,** પૂજ્ય શ્રી ૧૦૦૮ શ્રી ઘાસીલાલજી મ. સા. નિર્મિત જૈનાગમોની સંસ્કૃત ટીકા તથા હિન્દી-ગુજરાતીભાષાંતર પર અભિપ્રાયઃ-

**ૐ નમો સિદ્ધાણું**

શાસ્ત્રવિશારદ શ્રદ્ધેય પંડિત રત્ન પૂજ્ય આચાર્ય મુનિશ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજ સાહેબ જૈનાગમોના એક વિદ્વાન, વૃદ્ધવિચારક અને ઉત્તમ લેખક છે.

સાહિત્યસર્જન એ તેમનાં જીવનનો એક ઉત્તમ સંકલ્પ છે. સામાજિક-પ્રપંચોથી દૂર રહી, અથાગ પરિશ્રમ દ્વારા વિરચિત, સંપાદિત અને અનુવાદિત તેમના અનેક ગ્રંથો પ્રકાશિત થયા છે, જે તમામ જૈનોને માટે ચિંતન, મનન અને અધ્યયન-અધ્યાપન માટે એક અપૂર્વ સાધનરૂપ છે. આવું ઉત્તમ સાહિત્ય તૈયાર કરીને તેઓશ્રીએ સાહિત્યસેવીના મહાન પદને દીપાવ્યુ છે.

આગમના રહસ્યોથી અનભિજ્ઞ (અજાણ) આજની પ્રજામાં શ્રદ્ધેય શ્રી મહારાજ સાહેબનું સાહિત્ય અત્યત ઉપયોગી છે, તેમ હું માનું છું.

**અમદાવાદ** તા. ૧-૫-૫૮ **આર્યા-સુમતિકુંવર.**

# અલવરથી

## શ્રી શ્રમણ સંઘના ઉપાધ્યાય કવિ મુનિશ્રી અમરચંદજી મહારાજનો

# કલ્પસૂત્ર માટે આવેલ પત્ર

## શ્રીયુત ભોગીલાલજી-અમદાવાદ.

જયવીર

આપને ત્યાં બીરાજમાન પરમ શ્રદ્ધેય શ્રી શ્રી ૧૦૦૮ શ્રી પૂજ્યપાદશ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજ આદિ બધા સંતોની સેવામાં વંદન સુખ-શાન્તિ નિવેદન છે.

આપે મોકલેલ "કલ્પસૂત્ર" મેળવીને શ્રદ્ધેય કવિજીએ પ્રસન્નતા પ્રગટ કરી છે અને સાદર યથાયોગ્ય અભિનંદનપૂર્વક લખાવ્યું છે કે "કલ્પસૂત્રનું પ્રકાશન બહુજ ઉત્કૃષ્ટ કોટિનું છે. તેની ટીકા સુંદર વિસ્તારપૂર્વક સારી રીતે લખેલ છે. ટાઇમ મળતાં અધ્યયન કરવા માટે પ્રયત્ન કરવામાં આવશે. છાપવામાં આવેલ આવૃત્તિ માટે કોટિ કોટિ ધન્યવાદ આપવામાં આવે છે.

કવિશ્રીજીનું સ્વાસ્થ્ય સારી રીતે ચાલે છે. પહેલાની અપેક્ષાએ કંઈક સારૂં છે. આ પત્ર વિલમ્બથી લખવામાં આવેલ છે તો ક્ષમા કરજો.

અલવર (રાજસ્થાન)
તા. ૯-૮-૧૯૫૮.

ભવદીય : રતનલાલ સંચેતી
(હિન્દીનો ગુજરાતીમાં અનુવાદ)

श्री-मेवाडदेश-पावनकर्तृणां श्रीश्रमणसंघीयपण्डित-मुनिश्री-
माँगीलालजी महाराजानां तच्छिष्यस्य हस्तिमुनेश्च

# सम्मतिपत्रम्

२०१५ वर्षीय-वर्षावास-दीपावली
राजकरेड़ा ( **राजस्थान** )

पुरतो जिनवाणीरसिकसज्जनानां पूज्यश्री १००८ **श्रीघासीलालजी**-महाराजविरचित-जैनागमव्याख्याऽध्ययनजन्मनोऽस्मत्स्वान्ते परिमितिमप्राप्नुवतो निर्भरानन्दस्यानुभवं प्रसन्न-मनसा कतिपयैः शब्दैर्निर्दिशावः ।

अस्माकमहोभाग्येन विराजमानैर्विद्यया वयसा च वृद्धैः सज्जनशिरोमणिभिः पूज्यपाद-वीमलङ्कुर्वद्भिः **श्रीमज्जैनाचार्य-घासीलालजी-महाराजैः** प्रणीतया व्याख्यया समलङ्कृतो-जैनागमो दृष्टिगोचरीकृतः । मनोहारिणी संस्कृतटीका हिन्दी-गुर्जरभाषानुवादद्वयं च बलान्मानसं समाकर्षति । पूज्यश्रीविरचितजैनागमव्याख्यानसहस्रभानुनाऽऽवयोर्जैनागमरहस्याज्ञान-तमस्सहतिरपहृता, हृत्पद्मं च प्रफुल्लितम् ।

आसीदभावो बहोः कालाज्जैनागमेषु स्थानकवासी संप्रदायाभिमत संस्कृत व्याख्यानस्य, परतन्त्रश्चासीदद्यावधि स्थानकवासिजैनसमुदायः । परं परमकृपालुना श्रीमताऽऽचार्यप्रवरेणाऽ-नवरत परिश्रम्य जैनागमेषु स्वसम्प्रदायपरिपोषिकां टीकां विधाय सकलोऽपि स्थानकवासिजैनसंघः स्वावलम्बीकृतः । श्रीमज्जैनाचार्यकृतेयमुपकृतिः सकलस्थानकवासिजैनहृदयेषु वज्रलेपायिता भविष्यतीति मन्यावहे ।

अनादिघोराज्ञानतमसि पततां जनानां त्राणोपायः केवलं जिनभाषितमेवेति सर्वविदित-मेव । तत्र सर्वजनकल्याणकामनया पूज्यश्रीचरणैर्या टीका विरचिता सा सर्वेषामपि सिद्धिप्रदा विजयप्रदा कल्याणप्रदा सन्मार्गप्रदर्शिका चास्तीति सुदृढोऽस्मद्विश्वासः । अतोऽहं सर्वानपि जैनबन्धून् प्रोत्साहयामि, यत्ते स्वहितमभिसंधाय श्रीमत्पूज्यजैनाचार्यविरचितव्याख्यासाहाय्येन जैनागमहृदय सम्यगवगम्य तन्निर्दिष्टमार्गेण स्व-स्वजीवनं सफलयन्तो लोकद्वयं साधयन्त्वित्य-लमतिविस्तरेण ।

अन्ते च शासनाधीशमभ्यर्थयावहे यदस्मदीयाचार्यप्रवराः शतायुषो निरामयाश्च भवन्त्विति

इत्थं पूज्यश्री १००८ **श्रीघासीलालजी**-महाराज-विरचित-जैनागमव्याख्यायां स्व-सम्मतिं प्रदर्शयतः—

श्रीश्रमणसंघीय पण्डितमुनि **माँगीलालः**,
तच्छिष्यो हस्ती मुनिश्च

# शुद्धिपत्रम्

| अशुद्धि | शुद्धि | पृष्ठ | पङ्क्ति |
| --- | --- | --- | --- |
| संपिडिय | संपिंडिय | ३५ | १ |
| संपरिक्खत्ते | संपरिक्खित्ते | ४१ | ४ |
| अविद्यमाना रुजा यस्य | अविद्यमाना रुजा यत्र | | |
| तत्—अविद्यमान शरीरमनस्क | तत्—अधिव्याधिरहितम् | | |
| त्वात्—आधिव्याधिरहितम् इत्यर्थः। | इत्यर्थः। | ८०—८१ | ८—३ |
| तत्ततवे घोरतवे | तत्ततवे महातवे घोरतवे | ४९६ | १ |
| अम्बड परिवाजका-चारवर्णनम्। | कर्णादि—शीलध्यादि परिव्राज-कानाम् आचारवर्णनम्। | ५४९ | शीर्षक |
| ” | ” | ५५१ | शीर्षक |
| ” | ” | ५५३ | शीर्षक |
| ” | ” | ५५५ | शीर्षक |
| अम्बडपरिव्राजकानां देवलोक स्थितिवर्णनम्। | कर्णादि-शीलध्यादि-परिव्राज-कानां देवलोकस्थितिवर्णनम्। | ५५७ | शीर्षक |
| त्रिषष्ठितमे | एकोनचत्वारिंशत्तमे | ६५२ | ८ |

इति।

॥ श्री वीतरागाय नमः ॥

'जैनाचार्य'–'जैनधर्मदिवाकर'–पूज्य–श्री–घासीलालजीमहाराज–
विरचित–पीयूषवर्षिण्याख्यया व्याख्यया समलङ्कृतम्

# औपपातिकसूत्रम्.

## ( मङ्गलाचरणम् )

## मालिनीछन्दः।

भविजनहितकारं ज्ञानवित्तैकसारं, कृतभवनिधिपारं नष्टकर्मारिभारम्।
अघहरणसमीरं दुःखदावाग्निनीरं, विमलगुणगभीरं नौमि वीरं सुधीरम् ॥ १ ॥

---

## औपपातिकसूत्रकी पीयूषवर्षिणी टीका का हिन्दी–भाषानुवाद।

### मङ्गलाचरण–

ज्ञानावरण आदि चार घातिया कर्मों के सर्वथा विनाश से उद्भूत केवल ज्ञानरूपी अनंत अचिन्त्य अन्तरंगविभूतिविशिष्ट, भव्यजीवो के अबाध आत्मकल्याण का उज्वल मार्गप्रदर्शन करनेसे सदा हितकारक, स्वयं संसाररूपी अपार पारावार से पार होकर अन्य जीवोंको भी वहांसे पार करनेवाले, तृणादिक को उडानेवाली वायुकी तरह पापपुंज को उडानेके लिये अबाधगतिवाले, आधि, व्याधि एवं उपाधिजन्य अनेक दुःखोंकी राशिरूपी प्रचण्ड अग्निकी ज्वालाको ध्वस्त करने के लिये निर्मल सलिल जैसे, ऐसे धीर वीर अन्तिम तीर्थंकर श्रीवीरप्रभुको—जो क्षायिकगुणों से सदा ओतप्रोत बने हुए हैं—मैं भक्तिपूर्वक नमन करता हूं ॥ १ ॥

---

## ઔપપાતિકસૂત્રની પીયૂષવર્ષિણી ટીકાનો ગુજરાતી–અનુવાદ

### મંગલાચરણ–

જ્ઞાનાવરણ આદિ ચાર ઘાતિયા કર્મોના સર્વથા વિનાશથી ઉત્પન્ન થયેલ કેવળજ્ઞાનરૂપી અનંત અચિંત્ય અંતરંગવિભૂતિરૂપ, ભવ્યજીવોના અબાધ આત્મકલ્યાણના ઉજ્જવલ માર્ગપ્રદર્શન કરવાથી સદા હિતકારક, પોતે સંસારરૂપી અપાર સમુદ્ર પાર કરીને બીજા જીવોને પણ તેમાંથી પાર કરવાવાળા, જેમ વાયુ તૃણને ઉડાડી નાખે તેમ પાપપુંજને ઉડાડવામાં અબાધ ગતિવાળા, આધિ વ્યાધિ તેમજ ઉપાધિજન્ય અનેક દુઃખોની રાશિરૂપી પ્રચંડ અગ્નિની જ્વાલાને શાંત કરવા નિર્મલ જળ જેવા, એવા ધીર વીર અંતિમ તીર્થંકર શ્રી વીરપ્રભુ કે જે નિર્મલ ક્ષાયિક ગુણોથી સદા ઓતપ્રોત બનેલા છે તેમને હું ભક્તિપૂર્વક નમન કરૂં છું. (૧)

## वसन्ततिलका ।

आनन्तराऽऽगमसुधारसनिर्झरेण,
संसिच्य धर्मतरुसद्रुचिराऽऽलवालम् ।
स्वर्गाऽपवर्गसुखराशिफलं वितीर्य,
मोक्षं गतं तमिह गौतममानमामि ॥ २ ॥

## द्रुतविलम्बितम् ।

कमलकोमलमञ्जुपदाम्बुजं,
विमलबोधिदबोधविबोधकम् ।
मुखसुशोभिसदोरकवस्त्रिकं,
गुरुवरं सदयं प्रणमाम्यहम् ॥ ३ ॥

---

अनन्तरागमरूपी निर्मल सुधारस के प्रवाह से धर्मरूपी वृक्षके सम्यग्दर्शनरूप आलवाल (क्यारी)को सींचकर जिन्होंने भव्यजनोंके लिये उसके फलस्वरूप स्वर्ग एवं मोक्ष के सुखरूप फलों को वितरित कर (देकर) उन्हे कल्याणस्थानमें लगाया; ऐसे मोक्षप्राप्त उन गौतमस्वामी को मैं भक्तिपूर्वक नमन करता हूं ॥ २ ॥

जिनके उभय सुन्दर चरणकमल कमल जैसे कोमल हैं। जो निर्मल बोधि अर्थात् सम्यक्त्वको तथा श्रुतचारित्ररूप बोधको देने वाले हैं। जिनके मुखके ऊपर दोरासहित मुखपत्ति छहकाय के जीवोंकी रक्षा के निमित्त सदा बंधी हुई रहती है; ऐसे दयालु गुरुवर को मैं भक्तिपूर्वक नमन करता हूं ॥ ३ ॥

---

અનંતરાગમરૂપી નિર્મળ અમૃતના પ્રવાહથી ધર્મરૂપી વૃક્ષના સમ્યગ્દર્શનરૂપ આલવાલ (ક્યારી) ને સિંચન કરીને જેમણે ભવ્યજનો માટે તેના ફલસ્વરૂપ સ્વર્ગ તેમજ મોક્ષનાં સુખરૂપ ફલોનું વિતરણ કરી તેમને કલ્યાણ-સ્થાનમાં લગાડ્યા એવા મોક્ષપ્રાપ્ત તે ગૌતમસ્વામીને હું ભક્તિપૂર્વક નમન કરૂં છું. (૨)

જેમનાં બંને સુંદર ચરણકમલ કમલ જેવાં કોમળ છે, જે નિર્મલબોધિ એટલે સમ્યક્ત્વને તથા શ્રુતચારિત્રરૂપ બોધને આપવાવાળા છે, જેના મુખ ઉપર દોરાસહિત મુખપત્તિ છકાયના જીવોની રક્ષાના નિમિત્ત સદા બાંધેલી રહે છે એવા દયાળુ ગુરૂવરને હું ભક્તિપૂર્વક નમન કરૂં છું. (૩)

## आर्या-गाथा।

जयणट्ठं मुहपत्तिं, सदोरगं बंधए मुहे निच्चं ।
जो मुक्करागदोसो, वंदे तं गुरुवरं सुद्धं ॥ ४ ॥

## अनुष्टुप् ।

जैनीं सरस्वतीं नत्वा, घासीलालेन तन्यते ।
औपपातिकसूत्रस्य, वृत्तिः पीयूषवर्षिणी ॥ ५ ॥

**अथौपपातिकसूत्रम्**--औपपातिकमिति कः पदार्थः ? इतिचेदुच्यते--देवजन्म नैरयिकजन्म सिद्धिगमनञ्चेतित्रयम् उपपातः, तमुपपातमधिकृत्य कृतमध्ययनम् औपपातिकम्, एतत् औपपातिकमुपाङ्गं, कस्मात् ? अङ्गस्य=आचाराङ्गस्य समीपवर्त्तित्वात्, तत्र हि प्रथ-

---

मैं सदा उन गुरुदेव को नमस्कार करता हूं कि जिन्होंने छहकाय के जीवों की यतनानिमित्त अपने मुख पर दोरासहित मुखपत्तिको सदा बांध रखा है। तथा जिनकी दृष्टि मे शत्रु और मित्र एवं निन्दक और वन्दक दोनों समान हैं। ऐसे रागद्वेष से सदा परे रहनेवाले शुद्ध गुरुदेव को मैं नमस्कार करता हूं ॥ ४ ॥

श्री जिनेन्द्र के मुखकमल से निर्गत द्वादशाङ्गीरूप वाणी को नमन कर मैं **घासीलाल** मुनि औपपातिकसूत्रकी पीयूषवर्षिणीनामक टीका रचता हूं ॥ ५ ॥

प्र०-- 'औपपातिक' इस पदका क्या अर्थ है ?

उ०-- देवोंका जन्म, नारकियोंका जन्म एवं सिद्धिगति में गमन, ये तीन उपपात हैं। इनको लेकर रचे गये सूत्रका नाम औपपातिक है। यह अंग नहीं है उपाङ्ग है।

---

હું સદા તે ગુરૂદેવને નમસ્કાર કરૂં છું કે જેમણે છકાયના જીવોની યતનાનિમિત્ત પોતાના મુખપર દોરાસહિત મુખપત્તિને સદા બાંધી રાખે છે, તથા જેમની દૃષ્ટિમાં શત્રુ અને મિત્ર તેમજ નિંદક તથા પ્રશંસક બંને સમાન છે. એવા રાગદ્વેષથી સદા પર રહેવાવાળા શુદ્ધ ગુરૂદેવને હું નમસ્કાર કરૂં છું. (૪)

શ્રી જિનેન્દ્રના મુખકમલથી નીકલેલી દ્વાદશાંગીરૂપ વાણીને નમન કરીને હું **ઘાસીલાલ** મુનિ ઔપપાતિકસૂત્રની પીયૂષવર્ષિણી નામે ટીકા રચું છું. (૫)

પ્ર૦- ઔપપાતિક એ પદનો શું અર્થ છે?

ઉ૦- દેવોના જન્મ, નારકિઓના જન્મ તેમજ સિદ્ધિગતિમાં ગમન એ ત્રણ ઉપપાત છે. તેમને લઇને બનાવેલા સૂત્રનું નામ ઔપપાતિક છે. આ અંગ નથી, ઉપાંગ છે. તેને ઉપાંગ એ માટે કહે છે કે તે આચારાંગસૂત્રનું

माध्ययनस्य प्रथमोद्देशके—'**एवमेगेसिं णो णायं भवइ—अत्थि मे आया ओववाइए, नत्थि मे आया ओववाइए, के अहं आसी ? के वा इओ चुए इह पेच्चा भविस्सामि ?**' इत्यादि, अत्राऽऽचाराङ्गसूत्रे यदात्मन औपपातिकत्वमुपात्तम् तदेवाऽत्र प्रतन्यते, तेन तदुपदिष्टार्थस्य सविस्तरं पुष्टिकरणरूपं सामीप्यमिह वर्तते, अत एवाचाराङ्गोपाङ्गता सिध्यति। अस्योपाङ्गस्य अयमुपोद्घातः—

**मूलम्—तेणं कालेणं तेणं समएणं चंपा नाम नयरी**

**टीका—'तेणं कालेणं' इत्यादि। 'तेणं कालेणं तेणं समएणं'**

---

इसे उपांग इसलिये कहा है कि यह आचारांगसूत्रका समीपवर्ती है, अर्थात् आचारांग सूत्र के प्रथम अध्ययन के प्रथम उद्देश मे "**एवमेगेसिं णो णायं भवइ—अत्थि मे आया ओववाइए, नत्थि मे आया ओववाइए, के अहं आसी ? के वा इओ चुए इह पेच्चा भविस्सामि ?**" अर्थात्—किन्ही किन्ही जीवों को यह ज्ञान नहीं होता कि मेरा आत्मा उत्पत्तिशील है या मेरा आत्मा उत्पत्तिशील नहीं है ? मै पहले कौन था और यहांसे मरकर परलोक में कौन होऊँगा ?, इत्यादि सूत्र जो कहा है, और इसमें आत्मा के जिस औपपातिकपने का कथन करने मे आया है इसीकी इस उपांग में विस्तारके साथ पुष्टि करने मे आई है, अतः यह पुष्टिकरणरूप समीपता इसमे है, इसीलिये इसमें आचारांगसूत्र की उपांगता सिद्ध होती है। इस उपांगका उपोद्घात इस प्रकार है—'**तेणं कालेणं**' इत्यादि।

(**तेणं कालेणं तेणं समएणं चंपा नाम णयरी होत्था**) उस अवस-

---

સમીપવર્તી છે એટલે આચારાંગસૂત્રના પ્રથમ અધ્યયનના પ્રથમ ઉદ્દેશમાં "एवमेगेसिं णो णायं भवइ—अत्थि मे आया ओववाइए, नत्थि मे आया ओववाइए, के अहं आसि ? के वा इओ चुए इह पेच्चा भविस्सामि ?" એટલે—કોઇ કોઈ જીવોને એ જ્ઞાન નથી હોતું કે મારો આત્મા ઉત્પત્તિશીલ છે કે નથી, હું પ્રથમ કોણ હતો અને અહિંથી મૃત્યુબાદ પરભવમાં હું કોણ થઈશ. ઇત્યાદિ સૂત્ર જે કહેલુ છે, તથા એમાં આત્માનુ જે ઔપપાતિકપણાનું કથન કરવામાં આવ્યું છે તેની આ ઉપાંગમાં વિસ્તારસહિત પુષ્ટિ કરવામાં આવી છે. આમ આ પુષ્ટિકરણરૂપ સમીપતા આમાં છે તે માટે આમાં આચારાંગસૂત્રની ઉપાંગતા સિદ્ધ થાય છે. ઉપાંગનો ઉપોદ્ઘાત આ પ્રકારે છેઃ—'तेणं कालेणं' ઇત્યાદિ.

(तेणं कालेणं तेणं समएणं चंपा णाम णयरी होत्था) તે અવસર્પિણી કાલના

**होत्था, रिद्धत्थिमियसमिद्धा पमुइयजणजाणवया आइण्ण-**

तस्मिन् काले तस्मिन् समये, अत्र सप्तम्यर्थे तृतीया प्राकृतशैल्या, कालसमययोर्लोकोक्तौ पर्यायत्वे कथ युगपन्निर्देशः ? कथं न वा पुनरुक्तिदोषः ? अत्र समाधानमाह-'कालः' इति वर्तमानावसर्पिण्याश्चतुर्थारकलक्षणः, समयस्तु हीयमानलक्षणः। यत्र काले सा चम्पाऽभूत् स कोणिको राजा बभूव, श्रीवर्द्धमानस्वामी च भगवान् आसीत्। अथवा 'तेणं' इति तृतीयैकवचनान्तं-तेन कालेन तेन समयेन हेतुभूतेन अवसर्पिणीचतुर्थाऽऽरकलक्षणेन उपलक्षिता चम्पानामिका नगरी आसीत्। ननु सा नगरी सम्प्रत्यपि वर्तते, तर्हि औपपातिकसूत्रप्ररूपणाकालेऽपि 'आसीत्' इति 'अस्ति' इति वक्तव्यम्, तत्कथमुक्तम् 'आसीत्' ? इति चेत्, उच्यते-अवसर्पिणीत्वात्कालस्य प्रस्तुतोपाङ्गसंग्रन्थनकाले वर्णनीयचम्पानगरी तादृशी वक्ष्यमाणविशेषणविशिष्टा नाऽभूदिति 'अस्ति' इत्यनुक्त्वाऽऽसीदित्युक्तम्। चम्पापुरी वर्ण्यते-'**रिद्ध-त्थिमिय-समिद्धा**' ऋद्धस्तिमितसमृद्धा, ऋद्धा-विभवभवनादिभिर्वृद्धिमुपगता, स्तिमिता-स्वपरचक्रभयरहिता, स्थिरेति यावत्, समृद्धा-धनधान्यसमेधिता, एभिस्त्रिभिः पदैः कर्मधारयसमासः, ऋद्धा चासौ स्तिमिता चासौ समृद्धा चेति तथा, विभवविस्तीर्णा प्रशान्तिसम्पन्ना चेत्यर्थः, '**पमुइय-जण-जाणवया**' प्रमुदितजनजानपदा, प्रमुदिता=प्रमोदं प्राप्ताः जनाः=नागरिकाः, जानपदाः=अशेषदेशवासिनो यस्यां सा तथा, हृष्टप्रभूत-

---

र्पिणी काल के चतुर्थ आरे में और हीयमान उस समय में चम्पा नाम की नगरी थी, उसमें कोणिक राजा राज्य करते थे, और भगवान विचर रहे थे। वह नगरी कैसी थी ? इसका वर्णन करते है-वह नगरी (**रिद्ध-स्थिमिय-समिद्धा**) ऋद्ध-विभव एवं भवनादिकों की विशिष्ट वृद्धि से संपन्न थी। स्तिमित-इसमें निवास करने वाले लोगों को स्वचक्र और परचक्र का भय बिलकुल ही नहीं था। जनता यहां की सुख की नींद सोती और सुख की नींदसे उठती थी। समृद्धा-यह नगरी अखंड धन एवं धान्य से सदा परिपूर्ण थी। (**पमुइय-जण-जाणवया**) इसीलिये यहां के समस्त नागरिक जन एवं अशेष देशनिवासी मानव सर्वदा आनंद में मग्न

---

ચોથા આરામાં અને હીયમાન તે સમયમાં ચંપા નામે નગરી હતી, તેમાં કોણિક રાજા રાજ્ય કરતા હતા અને ભગવાન મહાવીર વિચરી રહ્યા હતા. તે નગરી કેવી હતી ? તેનું વર્ણન કરવામાં આવે છે—તે નગરી (रिद्ध-त्थिमिय-समिद्धा) ऋद्ध-વિભવ તેમજ ભવનાદિની વિશિષ્ટ વૃદ્ધિથી તે નગરી સંપન્ન હતી. स्तिमित-તેમાં નિવાસ કરવાવાળા લોકોને સ્વચક્ર તથા પરચક્રનો બિલકુલ ભય નહોતો. ત્યાંની પ્રજા સુખે નિદ્રા કરતી અને સુખે નિદ્રાથી ઉઠતી હતી. समृद्धा આ નગરી અખંડ ધન ધાન્યથી સદા પરિપૂર્ણ હતી. (पमुइय-जण-जाणवया)

## जण-मणुस्सा हलसयसहस्स-संकिट्ठ-विकिट्ठ-लट्ठ-पण्णत्त-सेउसीमा

वस्तुसौलभ्यात्प्रमोदमाननिखिलजनेति यावत् । 'आइण्णजण-मणुस्सा' आकीर्णजन-मनुष्या, सख्यातिरेकात् सकुलतया परस्परोपसंघटितमनुष्यप्राणिपरिपूर्णेत्यर्थः। अत्र जनेति जातसामान्यवाचित्वात्प्राणीति निर्वक्ति, ततो मनुष्यश्चासौ जनश्चेति कर्मधारये राजदन्ता-दीनामाकृतिगणत्वात् मनुष्यशब्दस्य परप्रयोगः, तेन आकीर्णा=व्याप्ता-आकीर्णजनमनुष्या, आर्षत्वात्-आकीर्णशब्दस्य पूर्वप्रयोगः, 'हलसयसहस्स-संकिट्ठ-विकिट्ठ-लट्ठ-पण्णत्त-सेउसीमा' हलशतसहस्रसंकृष्टविकृष्टलष्टप्रज्ञप्तसेतुसीमा, शतानि च सहस्राणि च शतसहस्राणि, हलानां शतसहस्राणि, अथवा शतमितानि सहस्राणि लक्षमिति यावत्, तैर्हलशतसहस्रैः संकृष्टा विकृष्टा द्विवारं कृष्टा त्रिवारं कृष्टा अत एव लष्टा=मृष्टा प्रतनूकृतलोष्टा मनोज्ञा प्रज्ञप्ता='इयमस्य कर्षकस्ये'-ति निर्दिष्टा सेतुसीमा=क्षेत्रपालीरूपा सीमा यस्यां सा तथा, सेतुभङ्गे कृषीवलानां सीमाविवादो मा भूदिति सेतुसीमा प्रज्ञप्ता, इति भावः,

बने हुए थे। (आइण्ण-जण-मणुस्सा) यहां की मेदिनी (भूमि) सदा अधिक से अधिक मानवजनसंख्या से आकीर्ण बनी रहती थी-मार्गों पर बडी भीड लगी रहती थी। (हलसयसहस्स-संकिट्ठ-विकिट्ठ-लट्ठ-पण्णत्त-सेउसीमा) यहां की भूमि सैकडों अथवा हजारों अथवा लाखों हलों द्वारा जोती जाती थी, दो तीन वार जुतने से खेतों की मिट्टी बिलकुल पिस सी जाती थी, प्रायः वह कंकर पत्थर रहित थी, इससे वह बहुत ही मनोज्ञ प्रतीत होती थी। 'यह इस कर्षक की भूमि है, यह इस कर्षक की भूमि है' इस प्रकार से वहां प्रत्येक किसान के खेतकी सीमा निर्धारित- मेडद्वारा करने में आई थी। खेत में मेडद्वारा सीमा निर्धारित यदि न की जाय तो इससे किसानों में अपने खेत की सीमा के बारे में अनेक प्रकारसे विवाद उपस्थित हो जाता

આથી અહીંના સમસ્ત નાગરિકજન તેમજ બાકીના બધા દેશનિવાસી મનુષ્યો સર્વદા આનંદમાં મગ્ન થયેલા હતા. (आइण्णजण-माणुस्सा) અહીંની ભૂમિ સદા વધારેને વધારે માનવજનસંખ્યાથી ભરી રહેતી હતી. (हलसय-सहस्स-संकिट्ठ-विकिट्ठ-लट्ठ-पण्णत्त-सेउसीमा) અહીંની ભૂમિ સેંકડો કે હજારો અથવા લાખો હળોથી ખેડાતી હતી. બે ત્રણ વાર ખેડવાથી ખેતરોની માટી બિલકુલ પીસાઈ જતી હતી. મુખ્યતઃ કાંકરા પત્થર રહિત હતી તેથી તે ઘણી જ મનોજ્ઞ પ્રતીત થતી હતી. 'આ આ ખેડૂતની ભૂમિ છે, આ આ ખેડૂતની ભૂમિ છે' એ પ્રકારે ત્યાં પ્રત્યેક ખેડૂતના ખેતરની સીમા મેડ-સીમાચિહ્ન દ્વારા નક્કી કરવામાં આવી હતી. ખેતરમાં મેડ-સીમાચિહ્ન દ્વારા જો નક્કી ન કરવામાં આવે તો તેથી ખેડૂતોમાં પોતપોતાના ખેતરની સીમાના અનેક

**कुक्कुड-संडेय-गाम-पउरा उच्छु-जव-सालि-कलिया गो-महिस-गवेल-ग-प्पभूया आयारवंतचेइय-जुवइ-विविह-सण्णिविट्ठ-बहुला उक्कोडि-**

'**कुक्कुड-संडेय-गामपउरा**' कुक्कुटषाण्डेयग्रामप्रचुरा-कुक्कुटाश्च षाण्डेयाः=लघुगोपतयश्च कुक्कुटषाण्डेयाः, तेषां ग्रामाः=समूहाः ते प्रचुराः=प्रभूता यस्यां सा तथा। '**उच्छु-जव-सालि-कलिया**' इक्षुयवशालिकलिता-इक्षुभिर्यवैः शालिभिश्च कलिता=युक्ता, अनेन प्रजायाः पोषणहेतुरभिहितः। रिक्तोदराणां हि कार्यक्षमता न भवति। '**गो-महिस-गवेलग-प्पभूया**' गोमहिषगवेलकप्रभूता-गावो, महिष्य; गवेलकाः=मेषाः, ते प्रभूता यस्यां सा तथा। '**आयारवंतचेइय-जुवइ-विविह-सण्णिविट्ठ-बहुला**' आकारवच्चैत्ययुवतिविविधसन्निविष्ट-बहुला-आकारवन्ति=सुन्दराकृतिकानि चैत्यानि=उद्यानानि, तथा युवतीनां विविधानि सन्निविष्टानि=नर्तक्यादीनां सन्निवेशनानि भवनानि बहुलानि यस्यां सा तथा,

है, अतः सेतुसीमा की हुई थी। (**कुक्कुड-संडेय-गामपउरा**) इस नगरी में कुक्कट एवं छोटे-छोटे साँढ बहुत थे। (**उच्छु-जव-सालि=कलिया**) इक्षु, जव एवं शाली का ढेर का ढेर यहां के खेतों में लगा रहता था, इससे प्रजाजन के पोषण में किसी भी प्रकार की बाधा किसी भी समय उपस्थित नहीं होती थी। बात भी ठीक है-भूखे पेट कुछ भी नहीं हो सकता। (**गो-महिस-गवेलग-प्पभूया**) गाय और भैंसों की पंक्ति की पंक्ति इस नगरी में दृष्टिपथ होती थी, इससे दूध और घी का अभाव जनता में कभी भी दिखलाई नहीं पडता था। मेष भी यहाँ अधिक मात्रा में थे (**आयार-वंतचेइय-जुवइ-विविह-सण्णिविट्ठ-बहुला**) यहां बडे २ सुन्दर उद्यान थे, एवं युवति नर्तकियों के अनेक भवन भी थे। (**उक्कोडिय-गायगंठिभेयग-भड-तक्कर-खंडरक्ख-**

પ્રકારના વિવાદ પેદા થાય છે એટલે સેતુસીમા કરવામાં આવી હતી. (કુક્કુડ-સંડેય-ગામપઉરા) આ નગરીમાં મુર્ગા તેમજ નાના નાના સાંઢ ઘણા હતા. (ઉચ્છુ-જવ-સાલિ-કલિયા) શેરડી, જવ તેમજ શાલીઓના ઢગલે ઢગલા અહીંના ખેતરોમાં લાગેલા રહેતા હતા, તેથી પ્રજાજનના પોષણમાં કોઈ પણ પ્રકારની બાધા કોઈપણ સમયે ઉપસ્થિત થતી નહોતી. વાત પણ બરાબર છે-ભૂખ્યા પેટે કોઈથી કાંઈ થાય નહિ. (ગો-મહિસ-ગવેલગ-પ્પભૂયા) ગાય અને ભેંસોની હારની હાર આ નગરીમાં નજરે જોવામાં આવતી હતી તેથી દૂધ અને ઘીનો અભાવ જનતામા કદી પણ જોવામાં આવતો ન હોતો. ઘેટાં પણ અહીં વધારે પ્રમાણમાં હતાં. (આયારવંતચેઇય-જુવઇ-વિવિહ-સણ્ણિવિટ્ઠ-બહુલા) ત્યાં મોટા મોટા સુંદર ઉદ્યાન (બાગ) હતા તેમજ યુવતી નર્તકીઓ (નાચ કરનારિઓ)નાં અનેક ભવનો પણ હતાં. (ઉક્કોડિય-ગાયગંઠિભેયગ-ભડ-તક્કર-ખંડરક્ખ-રહિયા) એમાં

**य-गायगंठिभेयग-भड-तक्कर-खंडरक्ख-रहिया खेमा णिरुवद्दवा सुभिक्खा वीसत्थसुहावासा अणेगकोडिकुडुंबियाइण्ण-णिव्वुय-सुहा**

'**उक्कोडिय-गायगंठिभेयग-भड-तक्कर-खंडरक्ख-रहिया**' औत्कोटिकगात्रग्रन्थिभेदक-भट-तस्कर-खण्डरक्ष-रहिता, उत्कोटैरुत्कोचैर्व्यवहरन्ति ते औत्कोटिका=लञ्चग्राहिणः, गात्रात् कटिप्रदेशादेः सकाशाद् ग्रन्थिं भिन्दन्तीति गात्रग्रन्थिभेदकाः=गुप्तरीत्या ग्रन्थिहारिणः, भटाः=हठाल्लुण्टाकाः, तस्कराः=चौराः खण्डरक्षाः=शुल्कपालाः, देशसीमायां स्थित्वा ये राजकरं गृह्णन्ति ते, एतैः रहिता=एतेषामुपद्रवैर्वर्जिता सर्वोपद्रवविरहितेत्यर्थः, अतएव '**खेमा**' क्षेमा-कुशलस्वरूपा अशुभाभावात्, '**णिरुवद्दवा**' निरुपद्रवा, स्वचक्रपरचक्रो-भयचक्रकृतोपद्रवविरहिता। '**सुभिक्खा**' सुभिक्षा-सु=सुलभा भिक्षा भिक्षूणां यत्र सा तथा, '**वीसत्थसुहावासा**' विश्वस्तसुखावासा-विश्वस्तं=विश्वासमुपगतं निश्चितं सुखं आवासे निवासस्थाने यस्यां सा तथा, '**अणेगकोडिकुडुंबियाइण्ण-णिव्वुय-सुहा**'

रहिया) इसमें किसी भी प्रकारका भय नहीं था, न तो लांच लेने वाले जन यहां थे और न गुप्तरीति से गांठ कतरनेवाले ग्रन्थिच्छेदक लुटेरे यहां थे। न यहां भट- जबरदस्ती लूटने वाले डाकू थे और न तस्कर-चोर ही थे। ऐसा भी कोई यहां नहीं था जो देशकी सीमा में खडा होकर राजा के टेक्स को लोगों से जोर-जुल्म द्वारा अपहरण करनेवाला हो। तात्पर्य यह है कि यह नगरी समस्त प्रकार के उपद्रवों से रहित थी। इसीलिये यहां पर (**खेमा णिरुवद्दवा सुभिक्खा वीसत्थसुहावासा**) क्षेमा कुशलता बनी रहती थी, निरुपद्रवा-स्वचक्र और परचक्र का भय यहां नहीं था। सुभिक्षा-भिक्षुओंको भिक्षा भी सदा सुलभ थी। विश्वस्तसुखावासा-यहां का निवास जनता को सुखकारक था। मकानका दरवाजा खोलकर भी रात्रि को जनता

કોઈ પણ પ્રકારનો ભય નહોતો. નતો લાંચ લેવા વાળા જનો અહીં હતા કે ન તો ખીસાકાતરૂ લુટારા અહીં હતા. નહોતા અહીં ભટ-જબરદસ્ત લૂટવાવાળા ડાકૂઓ કે નહોતા તસ્કર-ચોર લોકો. એવા પણ કોઈ અહીં નહોતા કે જે દેશની હદમાં ઉભા રહીને રાજાના કરને લોકો પાસેથી જોરજુલમથી પડાવા લેવાવાળા હોય. તાત્પર્ય એ છે કે આ નગરી સમસ્ત પ્રકારના ઉપદ્રવોથી રહિત હતી. એટલા માટે અહીં (खेमा णिरुवद्दवा सुभिक्खा वीसत्थसुहावासा) क्षेमा-કુશલતા કાયમ રહેતી હતી, निरुपद्रवा-સ્વચક્ર અને પરચક્રનો ભય અહીં નહોતો. सुभिक्षा-ભિક્ષુઓને ભિક્ષા પણ સદા સુલભ હતી. विश्वस्तसुखावासा-અહીંનો નિવાસ જનતાને સુખકારક હતો. મકાનના બારણા ઉઘાડાં રાખીને પણ લોકો રાત્રિમાં

**णड-णट्टग-जल्ल-मल्ल-मुट्ठिय-वेलंबग-कहग-पवग-लासग-आइक्खग-लंख-मंख-तूणइल्ल-तुंबवीणिय-अणेगतालायराणुचरिया आरा-**

अनेककोटिकौटुम्बिकाकीर्णनिर्वृतसुखा, अनेककोटिभिः=असंख्येयैः कौटुम्बिकैः=अनेक-पुत्रादि-परिवारवद्भिराकीर्णा=व्याप्ता चासौ निर्वृतसुखा=सम्पन्नसौख्या चेति तथा, जनताया बाहुल्येऽपि सुखसामग्री न तत्र दुर्लभेति भावः। '**णड-णट्टग-जल्ल-मल्ल-मुट्ठिय-वेलंबग-कहग-पवग-लासग-आइक्खग-लंख-मंख-तूणइल्ल-तुंबवीणिय-अणेगतालायराणुचरिया**' नट-नर्त्तक-जल्ल-मल्ल-मौष्टिक-विडम्बक-कथक-प्लवक-लासका-चक्षक-लङ्घ-मङ्ख-तूणावत्तुम्बवीणिकानेकतालाचरानुचरिता, तत्र **नटाः**=नाटककारकाः, **नर्तकाः**=नैकविध-नृत्यनिष्णाताः, **जल्लाः**=रज्जूपरिक्रीडनशीलाः, **मल्लाः**=मल्लक्रीडाकारकाः, **मौष्टिकाः**=मुष्टि-

निश्चिन्तरीति से सुखकी निद्रा लिया करती थी। (**अणेगकोडिकुडुंबियाइण्णणिव्वुयसुहा**) करोडों कुटुम्बों से इस नगरी के व्याप्त होने पर भी उन्हे यहां किसी भी प्रकार के कष्टका अनुभव नहीं होता था। उन्हें यहाँ प्रत्येक जीवनोपयोगी सामग्री सुलभ थी। (**णड-णट्टग-जल्ल-मल्ल-मुट्ठिय-वेलंबग-कहग-पवग-लासग-आइक्खग-लंख-मंख-तूणइल्ल-तुंबवीणिय-अणेगतालायराणुचरिया**) **नट**-नाटक करनेवालों से, **नर्त्तक**-अनेक प्रकारकी नृत्यक्रिया में निष्णात व्यक्तियो से, **जल्ल**-रस्सी पर चढकर विविध प्रकार के खेल तमासे दिखलाकर जनता का मनोरंजन करनेवाले नटोंसे, **मल्ल**-मल्लक्रीडा में निपुण पहलवानों से, **मौष्टिक**-मुष्टि से प्रहार करनेवाले मौष्टिकों से, **विडम्बक**-वेष एवं भाषा आदि द्वारा दूसरों की नकल करके स्वयं हसनेवाले तथा दूसरों को भी उनके चित्तको अनुरंजित करके हंसानेवाले वहुरूपियों से, **कथक**-अनेक प्रकार की

નિશ્ચિંત રીતે સુખની નિદ્રા લેતા હતા. (अणेगकोडिकुडुंबियाइण्णणिव्वुयसुहा) કરોડો કુટુંબોથી આ નગરી વ્યાપ્ત હોવા છતાં પણ તેમને અહીં કોઇપણ પ્રકારનાં કષ્ટનો અનુભવ થતો નહિ. તેમને અહીં પ્રત્યેક જીવન-ઉપયોગી ચીજ વસ્તુ સહેજે મળતી હતી. (णड-णट्टग-जल्ल-मल्ल-मुट्ठिय-वेलंवग-कहग-पवग-लासग-आइक्खग-लंख-मंख-तूणइल्ल-तुंबवीणिय-अणेगतालायराणुचरिया) नट-નાટક કરવાવાળાઓથી नर्त्तक-અનેક પ્રકારની નૃત્યક્રિયાઓમાં નિષ્ણાત એવા પાત્રોથી, जल्ल-દોરડાં પર ચઢીને વિવિધ પ્રકારના ખેલ-તમાસા દેખાડીને જનતાને મનોરંજન કરવાવાળા નટોથી, मल्ल-મલ્લક્રીડામાં નિપુણ પહેલ-વાનોથી, मौष्टिक-મુષ્ટિથી પ્રહાર કરવાવાળા મૌષ્ટિકોથી, विडम्बक-ભેષ તેમજ ભાષા (બોલી) દ્વારા બીજાઓની નકલ કરીને પોતે હસે તથા બીજાઓને પણ ખુશી

मुज्जाण-अगड-तलाग-दीहिय-वप्पिणगणोववेया नंदणवण-सन्नि-

प्रहरणशीला:, **विडम्बका:**=वेषभाषादिभिः परानुकरणेन हसनहासनशीला:, **कथका:**=विविधकथाकारकाः गायका वा, **प्लवका:**=उत्प्लवनशीला –नद्यादितरणशीला वा, **लासका:**=रासक्रीडाकारिणः, **आचक्षका:**=शुभाशुभशकुनाभिधायकाः, **लङ्खा:**–दीर्घवंशशिरसि क्रीडनशीलाः, **मङ्खा:**=चित्रफलकं दर्शयित्वा भिक्षाग्राहिणः, **तूणावन्त:**=तूणाभिधानवाद्यवादकाः, **तुम्बवीणिका:**–वीणावादकाः, अनेके च ते **तालाचरा:**–काष्ठकरतालादिभिस्तालान् ददतो लोकानाऽऽचरन्ति=अनुरञ्जयन्ति ये ते तथा; एतैर्नटादितालाचरान्तैरनुचरिता=युक्ता या सा तथा। '**आरामु-ज्जाण-अगड-तलाग-दीहिय-वप्पिणगणोववेया**' आरामोद्यानावटतडागदीर्घिका–

---

कथाकहानियों के कहने मे कुशलमतिवाले कथाकारकों से, अथवा विविध प्रकार की गानकला में निपुण संगीतविद्याके जाननेवालों से, **प्लवक**–कूदनेवालोंसे अथवा तैरने की कलामें पारंगत अनेक तैराकोंसे, **लासक**-रास रचनेमे निपुण व्यक्तियों से, **आचक्षक**-शुभ और अशुभ शकुन को प्रकट करने में विशेषदक्ष नैमित्तिकों से, **लङ्ख**-बडे बडे बांसों के अग्रभाग पर चढकर वहां अनेक प्रकारकी क्रीडा करके दिखानेवाले नटों से, **मङ्ख**-सुन्दर चित्रों को दिखलाकर जनतासे भिक्षा ग्रहण करनेवाले भिक्षुकोंसे, **तूणइल्ल**-तूणा नामके वाद्यविशेष को बजाने वाले वाजीगरों से, **तुम्बवीणिक**-वीणा के बजाने में विशेष पटु वीणावादकों से, एवं **तालाचर**-काष्ठ-करताल आदिद्वारा ताल देकर लोगोंको अनुरंजित करनेवाले तालाचरों से **अनुचरिता**-वह नगरी कभी भी शून्य नहीं रहती थी। ( **आरामु-ज्जाण-अगड-तलाग-दीहिय-वप्पिणगणो**–

---

કરીને હસાવે એવા બહુરૂપીઓથી, कथक–અનેક પ્રકારની કથા–વાર્તા કહેવામાં કુશલમતિવાળા કથાકારોથી, અથવા વિવિધ પ્રકારની ગાનકળામા નિપુણ એવા સંગીતજ્ઞોથી, प्लवक–કુદવાની વિદ્યામા પૂર્ણ નિપુણતા પ્રાપ્ત કરેલી હોય તેવા કુદનારાઓથી, અથવા તરવાની કળામાપારગત અનેક તારૂઓથી, लासक-રાસ રચવામા નિપુણ વ્યક્તિઓથી, आचक्षक-શુભ અને અશુભ શકુન કહેવામા બહુજ દક્ષ એવા નૈમિત્તિકોથી, लङ्ख–મોટા મોટા વાસની ટોચ ઉપર ચઢીને ત્યા અનેક પ્રકારની ક્રીડા કરીને દેખાડવાવાળા નટોથી, मङ्ख–સુંદર સુંદર ચિત્રોને દેખાડીને લોકો પાસેથી ભિક્ષા ગ્રહણ કરવાવાળા ભિક્ષુઓથી, तूणइल्ल-તૂણા નામના વાદ્યવિશેષ બજાવવાવાળા બાજીગરોથી, तुम्बवीणिक-વીણા બજાવવામા વિશેષ પ્રવીણ એવા વીણાવાદકોથી, તેમજ तालाचर-કાષ્ઠકરતાલ આદિદ્વારા તાલ દઈ ને લોકોને ખુશી કરવાવાળા તાલાચરોથી अनुचरिता-તે નગરી કદી પણ શૂન્ય રહેતી નહોતી (आरामु–ज्जाण–अगड–तलाग–दीहिय–वप्पिण-गणोववेया नंदणवणसन्निभप्पगासा ) આરામો–માલતી

**भप्पगासा उव्विद्ध-विउल-गंभीर-खायफलिहा चक्क-गय-मु-**

वप्पिणगणोपपेताः, तत्र आरमन्ति=क्रीडन्ति यत्र ते **आरामाः**=मालतीप्रभृतिलता-व्रातंतरुसमूहसमेताः प्रदेशाः, **उद्यानानि**=कुसुमस्तबकाऽवनतलघुतरुपरिमण्डितानि स्थानानि, **अवटाः**=कूपाः, **तडागाः**=जलाशयविशेषाः, **दीर्घिकाः**=वाप्यः, **वप्पिणाः**=जलक्रीडा-स्थानानि क्षेत्राणि वा, 'वप्पिण' इति देशीयः शब्दः, एतेषां **गणाः**=समूहाः, गुणा वा=रमणीयतादयः, तैः **उपपेता**=युक्ता सा, **'नंदणवणसन्निभप्पगासा'** नन्दनवनसन्निभप्रकाशा-नन्दनवनं-मेरोर्द्वितीयवनं, तत्सन्निभप्रकाशः तत्प्रकाशसदृशः प्रकाशो यस्यां सा तथा, नन्दनवनसदृश-सुखसम्पन्ना चम्पानगरी-इत्यर्थः । **'उव्विद्ध-विउल-गंभीर-खायफलिहा'** उद्विद्ध-विपुलगम्भीरखातपरिखा-उद्विद्धम्-उत्=उत्कर्षेण विद्धम्=अत्यधः खानितम् 'अतिउण्ड' इति भाषाप्रसिद्धं. ' विपुलं=विस्तृतम्, गम्भीरम्=अदृश्याधस्तलम्, खातम्=उपरिविशालम् सङ्कुचिताधस्तलम्, परिखा च=चतुर्दिक्षु गोलाकारखातरूपा 'खाई' इति भाषाप्रसिद्धा यस्यां सा तथा, खातपरिखापरिवेष्टितेत्यर्थः । **'चक्क-गय-मुसुंढि-ओरोह-सयग्घि-जमलकवाडघणदुप्पवेसा'** चक्रगदामुसुण्ढ्यवरोधशतघ्नीयमलकपाटघनदुष्प्रवेशा,

---

**ववेया नंदणवणसन्निभप्पगासा )** **आरामों**-मालतीलता आदि के समूहो मे एवं वृक्षराजि से मंडित प्रदेशों-से, **उद्यानों**-पुष्पोंके गुच्छों के भारसे अवनत छोटे २ वृक्षों से परिमण्डित स्थानों-से, **अवट**-कूपों-से, **तडाग**-सरोवरों-से, **दीर्घिका**-वापियों से, **वप्पिण**-जलक्रीडा करनेके विशेष स्थानो से वह नगरी सुशोभित थी, इसलिये मेरु के नंदनवन जैसी वह शोभाका धाम बनी हुई थी। ( **उव्विद्ध-विउल-गंभीर-खायफलिहा, चक्क-गय-मुसुंढि-ओरोह-सयग्घि-जमलकवाडघणदुप्पवेसा** ) **उद्विद्ध**-इस नगरी के चारों ओर जो गोलाकार खाई थी वह बहुत ही गहरी थी, **विपुल**-विस्तृत थी, **गंभीर**-जिसका अधस्तल अदृश्य था ऐसी थी, एवं **खातपरिखा**-ऊपर विस्तृत और नीचे संकुचित थी। इसका जो चारों ओर का

---

लता आदिना समूहोथी तेमज वृक्षराजिथी शोभता प्रदेशोथी, **उद्यानो**-पुष्पोना गुच्छोना भारथी लची पडेला नाना नानां वृक्षोथी वींटाएलां स्थानोथी, **अवट**-कूवाओथी, **तडाग**-सरोवरोथी, **दीर्घिका**-वावोथी **वप्पिण**-जलक्रीडा करवानां स्थान विशेषथी ते नगरी सुशोभित हती. तेथी मेरुना नंदनवन जेवी ते शोभानु धाम बनी गई हती. (उव्विद्ध-विउल-गंभीर-खायफलिहा, चक्क-गय-मुसुंढि-ओ-रोह-सयग्घि-जमलकवाडघणदुप्पवेसा ) आ नगरीनी चारे कोर जे गोळाकार खाई हती ते घणीज ऊंडी हती, विस्तारवाळी हती, गंभीर-जेनु तळियुं अदृश्य हतुं एवी हती, तेमज उपर पहोळी अने नीचे संकुचित

**सुंढि-ओरोह-सयग्घि-जमलकवाडघणदुप्पवेसा धणुकुडिल-वंक-पागार-परिक्खित्ता कविसीसगवट्टरइयसंठियविरायमाणा अट्टालय-**

तत्र-**चक्राणि**=रथाङ्गानि, **गदाः**=शस्त्रविशेषाः **मुसुण्ढ्यः**-शस्त्रविशेषा एव, अवरोध-रथ्याद्वारे प्रतिभित्तिः, **शतघ्न्यः**-या उपरितनदेशान्निपातिताः सत्य पुरुषशतानि घ्नन्ति ताः, **यमलकपाटानि**=समभागद्वयोपेतानि कपाटानि, तान्येव **घनानि**=सान्द्राणि-दृढानि वा-"घनः सान्द्रे दृढे दार्ढ्ये विस्तारे मुद्गरेऽम्बुदे।" इति हेमकोशात्। एतैः परचक्रादीनां दुष्प्रवेशा=दुःखेन प्रवेष्टुं योग्या परचक्रादिपराभवरहितेत्यर्थः, **'धणुकुडिलवंकपागारपरिक्खित्ता'** धनुःकुटिलवक्रप्राकारपरिक्षिप्ता-कुटिलं च तद्धनुः-धनुःकुटिलम्, आर्षत्वाद्विशेषणस्य परनिपातः, कुटिलधनुषोऽपेक्षयाऽपि वक्रेण प्राकारेण परिक्षिप्ता युक्तेत्यर्थः, **'कविसीसगवट्टरइयसंठिय-विरायमाणा'** कपिशीर्षकवृत्तरचितसंस्थितविराजमाना, तत्र-कपिशीर्षकाः=प्राकाराग्रभागाः **'कंगुरा,** इति भाषाप्रसिद्धाः वृत्तरचिताः=गोलाकारेण निर्मिताः संस्थिताः=सुन्दरसंस्थान-युक्तास्तैर्विराजमाना-सुन्दरकपिशीर्षकतया शोभाशालिनीत्यर्थः, **'अट्टालय-चरिय-दार-गोपुर-तो-रण-समुण्णय-सुविभत्त-रायमग्गा'** अट्टालकचरिकाद्वारगोपुरतोरणसमुन्नतसुविभक्तराजमार्गा,

कोट था वह चक्र, गदा, मुसुंढी, और **अवरोध**-रथ्याद्वार के पासकी दोहरी भीत से, **शतघ्नी**-जिनके उपर से गिराने पर सैकडों व्यक्ति चूर्णित हो जाते है ऐसे अस्त्रविशेषों से या तोपों से, और **यमलकपाटघन**-मजबूत, सम युगल कपाटों से युक्त था, अत एव **दुष्प्रवेशा**-उस नगरी में शत्रु प्रवेश नहीं कर सकते थे। (**धणुकुडिल-वंक-पागार-परिक्खित्ता**) इस नगरी का प्राकार (किला) कि जिससे यह परिवेष्टित थी वह वक्र हुए धनुष से भी अधिक वक्र था। (**कवि-सीसगवट्टरइयसंठियविरायमाणा अट्टालय-चरिय-दार-गोपुर-तोरण-समुण्णय-सुविभत्त-रायमग्गा**) **कपिशीर्षक**-कोट के कंगूरे गोल आकार के थे एवं रंग-विरंगे थे। इस कोट के

હતી. તેની ચારે કોર જે કોટ હતો તે ચક્ર, ગદા, મુસુંઢી, અને અવરોધ-દ્વારના પાસેની બેવડી ભીંત-થી, શતઘ્ની-જેને ઉપરથી પાડી નાખવાથી સેંકડો વ્યક્તિ ચુરેચુરા થઇ જાય છે એવાં અસ્ત્રવિશેષથી, અથવા તોપોથી, અને મજબૂત સમ યુગલ કપાટોથી યુક્ત હતી. આ કારણથી તે નગરીમાં શત્રુ પ્રવેશ કરી શક્તા નહોતા. (धणुकुडिल-वंक-पागार-परिक्खित्ता) આ નગરીનો પ્રાકાર (કિલ્લો) કે જેનાથી તે ઘેરાયેલી હતી તે વાંકા થયેલા ધનુષથી પણ વધારે વાંકો હતો. (कविसी-सगवट्टरइयसंठियविरायमाणा अट्टालय-चरिय-दार-गोपुर-तोरण-समुण्णय-सुविभत्त-राय-मग्गा) કોટના કાંગરા ગોળ આકારના હતા તેમજ રંગબેરંગી હતા. આ કોટની ઉપર અટ્ટાલિકાઓ (અગાસીઓ) બનાવેલી હતી. કોટના મધ્યભાગમાં જ્યાં દરવાજા

**चरिय-दार-गोपुर-तोरणसमुण्णयसुविभत्तरायमग्गा छेयायरिय-रइयदढफलिहइंदकीला विवणिवणिछेत्तसिप्पियाइण्णाणिव्वुयसुहा**

तत्र-अट्टालकाः-प्राकारोपरिवर्तिस्थलविशेषाः, **चरिकाः**=अष्टहस्तप्रमाणा वसति-दुर्गान्तरालवर्तिमार्गाः 'दार' द्वाराणि-प्रसिद्धानि, गोपुराणि-गोपुराणि हि नगरस्य सौन्दर्यार्थं प्रतिद्वाराग्रे निर्मितानि विचित्रशोभासम्पन्नानि प्रवेशद्वाराणि, तोरणानि=प्रसिद्धानि, एतैरट्टालकादिभिः-उन्नताः-दर्शनीयत्वादिगुणसम्पन्नाः सुविभक्ताः-तत्तत्स्थाने गमनाय विभागरूपेण रचिताः राजमार्गा यस्यां सा। '**छेयायरियरइयदढफलिहइंदकीला**' छेकाचार्यरचितदृढपरिघेन्द्रकीला-छेकाचार्येण निपुणशिल्पिना, रचितः कृतः, परिघः=**अर्गला,** इन्द्रकीलः=संयोजितकपाटद्वयदृढीकरणाय लौहमयकीलविशेषः यद्वा-कपाटदृढीकरणाय लौहमयकण्टकविशेषः, यस्यां सा तथा, '**विवणिवणिछेत्तसिप्पियाइण्णाणिव्वुयसुहा**' विपणिवणिक्क्षेत्रशिल्प्याकीर्णनिर्वृतसुखा, तत्र-विपणीनां=हट्टानां वणिजां च '**छेत्त**' क्षेत्रं-स्थानरूपा या सा, प्रचुरहट्टप्रचुरव्यापारिगणसम्पन्नेत्यर्थः, तथा-शिल्पिभिः=कुम्भकारतन्तुवायादिभिः-आकीर्णा=परिपूर्णा, अतएव जनानां प्रयोजनसिद्ध्या निर्वृत-

---

ऊपर अट्टालिकाएँ बनी हुई थीं, कोट के मध्यभाग में जहां पर दरवाजे थे वहां आठ हाथ-प्रमाण चौडा मार्ग था। कोटमें प्रधान दरवाजे थे, जहां से नगरी में प्रवेश किया जाता था। द्वारों पर तोरण बहुत उन्नत थे। भिन्न २ स्थानों पर पहुँचने के लिये अलग २ मार्ग बने हुए थे। (**छेयायरियरइयदढफलिहइंदकीला**) निपुण शिल्पीके द्वारा रचित-कृत अर्गला से एवं इन्द्रकीला-दोनों किवाडोंको परस्पर में दृढ करनेके लिये लगाये गये लोहनिर्मित कीलों से इस नगरीके द्वार युक्त थे। (**विवणिवणिछेत्तसिप्पियाइण्णाणिव्वुयसुहा**) इसके बाजार अनेक दुकानों एवं व्यापारियोंसे आकीर्ण रहते थे। नगरीमें कुंभार और तन्तुवाय-जुलाहे बहुत थे, इससे

---

હતા ત્યાં આઠ હાથના માપના પહોળા રસ્તા હતા. કોટમાં મુખ્ય દરવાજા હતા જેમાંથી નગરીમાં પ્રવેશ કરાતો હતો. દ્વારો ઉપર તોરણ ઘણાં સરસ હતાં, જુદાં જુદાં સ્થાનો પર પહોંચવા માટે જુદા જુદા માર્ગ બનેલા હતા. (छेयायरियरइयदढफलिहइंदकीला) નિપુણ શિલ્પીથી બનાવેલ અર્ગલા (આગળીયા)થી તેમજ ઇંદ્રકીલા-બન્ને કમાડોને પરસ્પરમાં દૃઢ કરવા માટે લગાડવામાં આવેલ લોઢાના બનાવેલ કીલા (ભોગળ) થી આ નગરીનાં દ્વારો યુક્ત હતાં. (विवणिवणिछेत्तसिप्पियाइण्णाणिव्वुयसुहा) એની બજાર અનેક દુકાનો તેમજ વ્યાપારીઓથી ભરચક રહેતી હતી. નગરીમાં કુંભાર અને વણકર

**सिंघाडग-तिग-चउक्क-चच्चर-पणियावण-विविहवत्थुपरिमंडिया सुरम्मा नरवइपविइण्णमहिवइपहा अणेगवरतुरग-मत्तकुंजर-रहपह-**

निष्पन्न सुख यस्यां सा तथा, तत पदत्रयस्य–विपणिगविगिक्षेत्रं चासौ गिल्याकीर्णा चासौ निर्वृतसुखा चेति विगृह्य कर्मधारयः। **'सिंगाडग-तिग-चउक्क-चच्चर-पणियावण-विविहवत्थुपरिमंडिया'** शृङ्गाटकत्रिकचतुष्कचत्वरपणिताऽऽपणविविधवस्तुपरिमण्डिता, तत्र–शृङ्गाटकं–त्रिकोणं स्थानम्, त्रिकं–यत्र त्रयो मार्गा मिलिताः, चतुष्क–यत्र चत्वारो मार्गा मिलन्ति, चत्वर–यत्र विविधमार्गसंगम, एषु स्थानेषु पणितं–पणनं=क्रयविक्रयव्यवहारस्तदर्थं ये–आपणाः=हट्टास्तेषां विविधवस्तूनि–विक्रेयद्रव्याणि, तैः परिमण्डिता–सुशोभिता। **'सुरम्मा'** सुरम्या **'नरवइपविइण्णमहिवइपहा'** नरपतिप्रविकीर्णमहीपतिपथा–नरपतिना भूपेन प्रविकीर्णः–गमनागमनाभ्यां व्याप्तः, महीपतिपथः–राजमार्गो यस्यां सा।

लोगोंकी प्रत्येक आवश्यक प्रयोजनकी सिद्धि होते रहनेमे चित्तवृत्ति सुखित बनी रहती थी, **(सिंघाडग–तिग–चउक्क–चच्चर-पणियावण-विविहवत्थुपरिमंडिया)** शृंगाटक–त्रिकोण-स्थानमे, त्रिक–तीनमार्ग जहां पर आकर मिले होते है ऐसे स्थानमे, चतुष्क–जहां चार रास्ते आकर मिलते है ऐसे स्थानमें, चत्वर–जहां अनेक प्रकारके मार्गोंका संगम होता है ऐसे स्थानमें, क्रय और विक्रय करनेके निमित्त अनेक दुकाने बनी हुईथीं, जो सदा अनेक प्रकारकी विक्रेय वस्तुओंसे परिमण्डित रहा करती थीं, ऐसी दुकानोंसे यह नगरी सुरम्य थी। शोभा भी नगरीकी निराली होनेसे यह नगरी स्वयं **(सुरम्मा)** देखने-वालोंके मनको आह्लादकारक हो रही थी। **(नरवइपविइण्णमहिवइपहा)** इसके राज-मार्ग नरपतिके गमन और आगमनसे सदा व्याप्त बने रहते थे। **(अणेगवरतुरग-**

घणा હતા તેથી લોકોની પ્રત્યેક આવશ્યક પ્રયોજનની સિદ્ધિ થતી રહેતી હોવાથી ચિત્તવૃત્તિ સુખમય બની રહેતી હતી. (सिंघाडग–तिग–चउक्क–चच्चर–पणियावण-विविहवत्थुपरिमंडिया) શૃંગાટક–ત્રિકોણ સ્થાનમાં, ત્રિક–ત્રણ રસ્તા જ્યા આવીને ભેગા થાય છે એવાં સ્થાનમાં, ચતુષ્ક–જ્યા ચાર રસ્તા આવીને મળે છે એવાં સ્થાનમા, ચત્વર–જ્યા અનેક પ્રકારના માર્ગોનો સંગમ થાય છે એવા સ્થાનમાં, ક્રય અને વિક્રય કરવા નિમિત્તે અનેક દુકાનો બનાવેલી હતી–જે સદા અનેક પ્રકારની વેચવાની વસ્તુઓથી શોભિત રહ્યા કરતી હતી. એવી દુકાનોથી આ નગરી સુરમ્ય ( સુન્દર ) હતી. શોભા પણ આ નગરીની નિરાલી હોવાથી તે ( सुरम्या ) જોનારના મનને આહ્લાદકારક થતી ( લાગતી ) હતી. ( नरवइपविइण्णमहिवइपहा ) એના રાજમાર્ગ નરપતિનાં ગમન આગ-મનથી સદા વ્યાપ્ત બનેલા રહેતા હતા. ( अणेगवरतुरग–मत्तकुंजर–रहपहकर–

**कर-सीय-संदमाणीआइण्णजाणजुग्गा विमउलणवणलिणिसोभियजला पंडुरवरभवणसण्णिमहिया उत्ताणणयणपेच्छणिज्जा पासाईया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा ॥ सू. १ ॥**

'**अणेगवरतुरग-मत्तकुंजर-रहपहकर-सीय-संदमाणीआइण्णजाणजुग्गा**' अनेकवरतुरगमत्तकुञ्जररथप्रकरशिविकास्यन्दमान्याकीर्णयानयुग्या, तत्र-अनेकैः-बहुविधैः, वरतुरगैः श्रेष्ठैरश्वैः, मत्तकुञ्जरैः-मदोन्मत्तगजैः, रथप्रकरैः-रथसमूहैः शिविकाभिः-चतुरष्टषोडशपुरुषवाह्याभिः, स्यन्दमानीभिः-लघुशिविकाभिः, आकीर्णा-व्याप्ता परिपूर्णा इत्यर्थः, यानानि-रथभेदा युग्या-युगवहनशीलाः-हया वृषभा वा सन्ति यस्या सा तथा, ततः पदद्वयस्य कर्मधारयः । '**विमउलणवणलिणिसोभियजला**' विमुकुलनवनलिनीशोभितजला-विमुकुलाभिर्विकसिताभिः, नवाभिः-अचिरसमुत्पन्नाभिः, नलिनीभिः-कमलिनीभिः शोभितानि जलानि यस्यां सा तथा । '**पंडुरवरभवणसण्णिमहिया**' पाण्डुरवरभवनसम्यक्महिता-पाण्डुरैः-सुधाधवलैः, वरभवनैः-प्रासादैः सम्यक् समन्तात्, महिता-प्रशंसिता रम्या-इत्यर्थः । '**उत्ताणणयणपेच्छणिज्जा**' उत्ताननयनप्रेक्षणीया-उत्तानैः-निर्निमेषैः नयनैः

---

**मत्तकुंजर-रहपहकर-सीय-संदमाणीआइण्णजाणजुग्गा**) यहां के मार्ग अनेक प्रकारके सुन्दर घोडोंसे, मत्तकुंजरोंसे, रथोंके समूहसे, चार या आठ अथवा सोलह मनुष्यों द्वारा उठाई जानेवाली बडी२ पालकियोंसे, तामजामोंसे युक्त रहा करते थे। हय-घोडे वृषभ-बैल यहां रथोंको खेचा करते थे। (**विमउलणवणलिणिसोभियजला**) यहाके जलाशयोंका जल भी प्रफुल्लित नवीन२ कमलिनियोंसे सुशोभित था। (**पंडुरवरभवणसण्णिमहिया**) इसका प्रत्येक सदन सदा सुधा-चुने से पुते रहनेके कारण बडाही भला मालूम पडता था (**उत्ताणणयणपेच्छणिज्जा**) नगरीकी

---

सीय-संदमाणीआइण्णजाणजुग्गा) અહીંના માર્ગ અનેક પ્રકારના સુંદર ઘોડાઓથી, મત્ત કુંજરોથી (હાથીઓથી), રથોના સમૂહોથી, ચાર કે આઠ અથવા સોળ મનુષ્યો દ્વારા ઉપાડાતી મોટી મોટી પાલખીઓથી, તામજાનોથી યુક્ત રહ્યા કરતા હતા. હય-ઘોડા, વૃષભ-બળદ અહીં રથોને ખેંચતા હતા. (विमउलणवणलिणिसोभियजला) અહીંનાં જલાશયોના જલ પણ પ્રફુલ્લિત નવીન નવીન કમળોથી સુશોભિત રહેતા હતાં (पंडुरवरभवणसण्णिमहिया) આનાં પ્રત્યેક સદન (મકાન) સદા ચુનાથી પોતાએલા રહેવાના કારણે ખૂબ જ સરસ લાગતા હતાં. (उत्ताणणयणपेच्छणिज्जा)

प्रेक्षणीया, शोभासम्भारशालितया नगरीं पश्यद्भिर्निमेषा प्रायो न पात्यन्ते। 'पासाईया' प्रासादीया–प्रसादो मनःप्रसन्नता प्रयोजनं यस्याः सा प्रासादीया–हार्दिकोल्लासकारिणी-ति यावत् 'दरिसणिज्जा' दर्शनीया–रमणीयतया क्षणे क्षणे द्रष्टुं योग्या, 'अभिरूवा' अभिरूपा–अभिमतमनुकूलं रूपं यस्याः सा तथा, 'पडिरूवा' प्रतिरूपा–रूप्यते एवोऽयमिति निश्चीयतेऽनेनेतिरूपमाकारः–अभिमतम् असाधारणं रूपं यस्याः सा अभिरूपा–सर्वथा दर्शकजननयनमनोहारिणीति निष्कर्षः ॥ सू. १ ॥

---

शोभा–अपलक–निर्निमेष दृष्टि से ही देखने योग्य थी–यह नगरी इतनी अधिक सुन्दर थी की जिसे निर्निमेष होकर लोग निहारा करते थे–फिर भी नहीं अघाते थे। (पासाईया) देखकर मनमें बडीही प्रसन्नता होती थी। (दरिसणिज्जा) प्रदर्शिनीकी वस्तु जैसी यह बनी हुई थी। अति रमणीय होनेकी वजहसे यह क्षण २ में देखनेके काबिल थी। (अभिरूवा पडिरूवा) इसका रूप अनुकूल था–मनको रुचे ऐसा था। इसीलिये यह अभिरूप एवं प्रतिरूप थी–दर्शकजनके मनको सब प्रकारसे आनंद प्रदान करनेवाली थी।

**भावार्थ**—अवसर्पिणी कालके चतुर्थ आरेमें चंपा नामकी नगरी थी। इसमें ऊंचे २ मकान थे। ऋद्धिसे यह मंडित थी। किसीभी प्रकारका यहां भय नहीं था। जनता हरएक प्रकारसे निर्भय होकर इसमें निर्विघ्न से रहा करती थी। नगरीमें ऐसा कोई भी स्थल नहीं था जो भाग्यशाली जनसमूह से आकीर्ण न हो। इसके

---

નગરીની શોભા નિર્નિમેષ દૃષ્ટિએ જ જોવા લાયક હતી (દેખાઈ આવતી હતી). આ નગરી એટલી તો વધારે સુંદર હતી કે લોકો આંખનું મટકું માર્યા વગર જોયા જ કરતા હતા છતાં થાકતા નહોતા. (पासाईया) જોઇને મનમા ખૂબજ પ્રસન્નતા થતી હતી. (दरिसणिज्जा) પ્રદર્શનીની વસ્તુ જેવા એ બની ગઈ હતી. અતિરમણીય હોવાને કારણે એ ક્ષણે ક્ષણે જોવા યોગ્ય હતી (अभिरूवा पडिरूवा) તેનું રૂપ અનુકૂળ હતું–મનને રૂચે એવું હતું, તેથી તો તે અભિરૂપ તેમજ પ્રતિરૂપ હતી. જોનાર લોકોનાં મનને સર્વ પ્રકારથી આનંદ પ્રદાન કરાવે તેવી હતી.

ભાવાર્થ–અવસર્પિણી કાલના ચોથા આરામાં ચંપા નામે નગરી હતી. તેમાં ઉંચાં ઉંચાં મકાન હતાં. ઋદ્ધિથી તે શોભતી હતી. કોઇ પણ પ્રકારનો અહીં ભય નહોતો. લોકો હરેક પ્રકારથી નિર્ભય બનીને તેમા નિર્વિઘ્ને રહેતા હતા. નગરીમાં એવું કોઈ પણ સ્થળ નહોતું કે જે ભાગ્યશાળી જનસમૂહથી

बाहिरकी जमीन हजारो हलोसे जुता करती थी । प्रत्येक मौसमका धान्य इसमें होता था । गाय-भैसोकी इसमें कमी नहीं थी । नगरीकी सीमामें गांव बहुत नजदीक बसे हुए थे । इक्षु आदिकी उपज इसमें अधिक मात्रामें होती थी । बडे सुन्दर एवं विशाल वगीचे थे । इसमें जनताको कष्ट देनेवालोका नामोनिशा तक भी नहीं था । न यहां लॉच लेने वाले थे, न ग्रन्थिच्छेदक थे, न उचक्के लुटेर ही थे । इसमें नर्तकियोंके स्थान भी अनेक थे । भिक्षुओंको प्रत्येक समय यहां भिक्षा सुलभ थी । कुलपरम्परासे श्रीमंत लोगोंका यहां अभाव नहीं था । मनोविनोद के साधन भी इस नगरीमें जगह२ पर थे । नट थे, नाटककार थे, मल्लयुद्ध करनेवाले थे, मुष्टियुद्ध करनेवाले थे । कथा-कहानी सुनाकर लोगोमें सुप्त शुद्धपुरुषार्थको जगानेवाले जनभी यहां थे । रास रचा-कर मानवोंको आनंदित करने वाले खिलाडी व्यक्तिभी यहां रहा करते थे । तात्पर्य यह कि प्रत्येक मनोविनोद की सामग्री यहां सतत प्रस्तुत रहा करती थी । नगरी के बाहिर-भीतर का प्रदेश आरामों, उद्यानों, कुवा, वावडी एवं जलाशय-तालाब आदि से सुशोभित था ।

---

भरेलुं न होय. तेनी બહારની ભૂમિ હજારો હળોથી ખેડાયા કરતી હતી. પ્રત્યેક મોસમનાં ધાન્ય તેમાં ઉત્પન્ન થતાં હતાં. ગાય-ભેંસોની તેમાં ખોટ નહોતી. નગરીની સીમામાં ગામડાં બહુ નજીકમાં વસેલા હતાં. શેરડી આદિની ઉપજ તેમાં વધારે પ્રમાણમાં થતી હતી. મોટા સુંદર તેમજ વિશાલ બગીચા હતા. તેમાં લોકોને કષ્ટ દેવાવાળાનું નામનિશાન પણ નહોતું. ન તો અહીં લાંચ લેવા વાળા હતા કે ન ખિસ્સાકાતરૂ હતા. વળી લુંટારા પણ નહોતા. તેમાં નાચનારીઓનાં સ્થાન પણ ઘણાં હતાં. ભિક્ષુઓને પ્રત્યેક સમય અહીં સ્હેજે ભિક્ષા મળી રહેતી હતી. કુળપરંપરાથી શ્રીમંત લોકોનો અહીં અભાવ નહોતો. મનોવિનોદનાં સાધન પણ આ નગરીમાં ઠેકઠેકાણે હતાં. નટ હતા, નાટ્યકાર હતા, મલ્લયુદ્ધ કરવાવાળા હતા, મુષ્ટિયુદ્ધ કરવા વાળા હતા, કથા-વારતા સંભળાવી લોકોમાં ઢંકાઈ રહેલો શુદ્ધ-પુરૂષાર્થ જાગૃત કરાવવાવાળા લોકો પણ અહીં હતા. રાસ રચાવીને માનવોને આનંદિત કરવાવાળા ખેલાડી વ્યક્તિઓ પણ અહીં રહેતા હતા. તાત્પર્ય એ કે પ્રત્યેક મનોવિનોદની સામગ્રી અહીં સતત પ્રસ્તુત રહ્યા કરતી હતી. નગરીની બહાર તેમજ અંદરના પ્રદેશ આરામો ઉદ્યાનો કુવા વાવડી તેમજ જલાશયો-તળાવ આદિથી સુશોભિત હતા.

इस नगरी के बाहिर एक विशाल और बहुत गहरी खाई थी। नगरी का कोट वक्र धनुषकी अपेक्षा भी अधिक वक्र था, जिसमें प्रत्येक आत्मरक्षण के साधन थे। किले में बडे २ दरवाजे थे, दरवाजों में वज्र जैसे मजबूत किवाड थे, किवाडों में नुकीले कीले लगे हुए थे। कोट के ऊपर जो अट्टालिकाएँ थीं उनमें अनेक प्रकार के अस्त्र और शस्त्रों का सग्रह किया गया था। वह वहां सदा सुरक्षित रहता था। नगरीमें विस्तृत बाजार थे, बाजारोंमें बडी २ दुकाने थीं, दुकानों में क्रय विक्रय की बहुमूल्य प्रत्येक आवश्यकीय वस्तुएँ सगृहीत थीं। नगरी के राजमार्ग हर समय अपार जनकी भीड से, हाथियो से, पालकियों से, रथों से, और तामजाम आदि से संकुलित बने रहा करते थे। यहां के मकान धवल चूनासे पुते हुए रहने के कारण बडे ही सुहावने मालूम होते थे, तात्पर्य यह है कि यह नगरी बहुत ही सुन्दर और चित्त को लुभानेवाली थी। सब प्रकार से यहां जनताको आराम था। किसी भी त्रिलोकगत वस्तु का यहां अभाव नहीं था। अमरावती जैसी यह भली मालूम होती थी।

---

આ નગરીની બહાર એક વિશાલ અને ઘણી ઉંડી ખાઈ હતી. નગરીને ફરતો વાંકુ ધનુષ કરતાં પણ વધારે વાકો કોટ હતો. જેમાં દરેક આત્મરક્ષણનાં સાધન હતાં. કિલ્લામાં મોટા મોટા દરવાજા હતા. દરવાજામાં વજ્ર જેવાં મજબૂત કમાડ હતાં. કમાડમાં આગળીઓ તથા ભોગળો લગાવેલાં હતાં. કોટના ઉપર જે અટારિઓ હતી તેમાં અનેક પ્રકારનાં અસ્રો તથા શસ્રો નો સંગ્રહ કરેલો હતો. તે ત્યા સદા સુરક્ષિત રહેતો હતો. નગરીમાં વિસ્તૃત બજાર હતી. બજારોમા મોટી મોટી દુકાનો હતી. દુકાનોમાં ક્રય-વિક્રયની બહુ-મૂલ્ય ( કિમતી ) પ્રત્યેક આવશ્યકીય વસ્તુઓ સંઘરેલી હતી. નગરીના રાજમાર્ગ દરેક સમય અપાર માણસોની ભીડથી, હાથીઓથી, પાલખીઓથી, રથોથી અને તામજામ આદિથી ભરચક રહ્યા કરતા હતા. અહીંનાં મકાન સફેદ ચુનાથી પોતાયેલાં રહેવાના કારણે ખૂબ જ રોનકદાર લાગતા હતાં. તાત્પર્ય એ કે આ નગરી બહુજ સુંદર અને ચિત્તને ખેંચવાવાળી હતી. દરેક પ્રકારથી અહીં લોકોને આરામ હતો. કોઇ પણ ત્રિલોકગત ( ત્રણ લોકમાં થતી ) વસ્તુનો અહી અભાવ નહોતો. અમરાવતી જેવી આ સરસ લાગતી હતી.

शंका—काल और समय तो एक ही अर्थ के वाचक है फिर सूत्र में " तेणं कालेणं तेणं समएणं' ' ऐसा प्रयोग सूत्रकार ने क्यों किया ? उत्तर यह है—'काल' शब्द से अवसर्पिणी कालके चतुर्थ आरे का ग्रहण होता है, और 'समय' शब्द से यहाँ हीयमान लिया जाता है, तथा घडी घंटा पक्ष मास संवत्सर आदिरूप से परिवर्तित होने वाला परिणमन लिया जाता है, अथवा—जिस प्रकार संवत् और मिती खातों आदिमें लीखी जाती है, ठीक इसीप्रकार यहां पर भी समझना चाहिये । यह चंपा नगरी तो अब भी है फिर " अस्ति " ऐसा न कहकर सूत्रकार ' आसीत् ' इस भूतकालिक क्रिया का प्रयोग क्यो करते है ? अर्थात्—जिस समय औपपातिकसूत्रकी रचना हुई उस समय मे भी वह नगरी थी, फिर 'अस्ति' ऐसा न कहकर 'आसीत्' ऐसा क्यों कहा ? इसका उत्तर यह है कि जिस समय इस उपांग रूप आगम की वाचना हुई थी, उस समय यह नगरो सूत्र में कहे हुए विशेषणों से सर्वथा युक्त नहीं थी, न इस समय वैसी है, इसलिये 'अस्ति' क्रियापदका प्रयोग न करके सूत्रकार ने आसीत् इस भूतकालिक क्रियापदका प्रयोग किया है ॥ सू. १ ॥

---

શંકાઃ—કાલ અને સમય તો એકજ અર્થના વાચક છે છતાં સૂત્રમાં " तेणं कालेणं तेणं समएणं " એવો પ્રયોગ સૂત્રકારે કેમ કર્યો છે ? ઉત્તર એ છે કે 'કાલ' શબ્દથી અવસર્પિણી કાલના ચોથા આરાનો અર્થ ગ્રહણ થાય છે, અને 'સમય' શબ્દથી અહીં હીયમાન લેવાય છે, તથા ઘડી કલાક પક્ષ માસ સંવત્સર આદિ રૂપથી પરિવર્તિત થનાર પરિણમન લેવાય છે અથવા જે પ્રકારે સંવત્ તથા મિતી ચોપડા આદિમાં લખવામાં આવે છે તેવી જ રીતે અહીંયાં પણ સમજવું જોઈએ. આ ચંપા નગરી તો હજી પણ છે છતાં ' अस्ति ' એમ ન કહેતાં ' आसीत् ' એમ ભૂતકાલિક ક્રિયાનો પ્રયોગ કેમ કરે છે ? એટલે કે જે સમયે ઔપપાતિક—સૂત્રની રચના થઇ તે સમયમાં પણ તે નગરી હતી તો પણ अस्ति એમ ન કહેતાં आसीत् કેમ કહ્યું ? તેનો જવાબ એ છે કે, જે સમયે આ ઉપાંગરૂપ આગમની વાચના થઈ હતી તે સમયે આ નગરી સૂત્રમાં કહેલા વિશેષણોથી સર્વથા યુક્ત ન હતી અને આ સમયે પણ તેવી નથી રહી. એ માટે अस्ति ક્રિયાપદનો પ્રયોગ ન કરતાં સૂત્રકારે आसीत् એવા ભૂતકાલિક ક્રિયાપદનો પ્રયોગ કર્યો છે. (૧)

मूलम्—तीसे णं चंपाए णयरीए बहिया उत्तर-पुरत्थिमे दिसीभाए एत्थ णं पुण्णभद्दे णामं चेइए होत्था, चिराईए पुव्वपुरिसपण्णत्ते पोराणे सद्दिए वित्तिए कित्तिए णाए

टीका—'तीसे णं' इत्यादि। 'तीसे णं चंपाए णयरीए' तस्याः खलु चम्पाया नगर्याः-न करोऽष्टादशविधस्तन्निवासिनां राज्ञे देयो यस्यां सा नगरी, अत्र ककारस्य गकाररूपो वर्णविपर्यासः पृषोदरादित्वात्, अष्टादशविधः करोऽस्माभिरन्तकृद्दशाङ्गसूत्र प्रथमसूत्रस्य मुनिकुमुदचन्द्रिकाटीकायामुक्तस्ततो विज्ञेयः। 'बहिया' बाह्ये, 'उत्तरपुरत्थिमे' उत्तरपौरस्त्ये-उत्तरस्याः पूर्वस्या अन्तराले-ऐशान्ये कोण इति यावत्। 'दिसीभाए' दिग्भागे। 'पुण्णभद्दे णामं चेइए होत्था' पूर्णभद्रं नाम चैत्यं=व्यन्तरायतनमासीत्। तत् कीदृशम्? इत्याह—'चिराईए' चिरादिकम् चिरकालिकम् अतएव—'पुव्वपुरिसपण्णत्ते' पूर्वपुरुषप्रज्ञप्तम्, पूर्वपुरुषैः प्राचीन-पुरुषैः प्रज्ञप्तम्—कथितं बहुकालतः प्रसिद्धम् इत्यर्थः। यतः पोराणे—पुरातनमति-प्राचीनम् 'सद्दिए' शब्दितं—शब्दः—प्रसिद्धिः सञ्जातो यस्य तत्—शब्दितम्—प्रसिद्धिप्राप्तम्। 'वित्तिए' वित्तिकम्—वित्तं—प्रसिद्धिरस्यास्तीति वित्तिकम् प्रसिद्ध-मित्यर्थः। 'कित्तिए' कीर्तितम्—प्रवर्णितम् 'णाए' प्रख्याततया ज्ञातं—सकलजन-

'तीसे णं चंपाए णयरीए०' इत्यादि।

(तीसे णं चंपाए णयरीए) उस चंपा नगरी के (बहिया) बाहिर (उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए) उत्तर और पूर्व दिशा के बीच ईशानकोणमें (पुण्णभद्दे णामं चेइए होत्था) पूर्णभद्र नाम का एक चैत्य—यक्षालय था। (चिराईए पुव्वपुरिसपण्णत्ते) वह बहुत प्राचीन था। बडे—बूढे पुराने पुरुष भी इसकी तारीफ करते आ रहे थे। इसलिये वह (पोराणे) बहुत पुराना था। (सद्दिए) इसी प्रकार से इसकी प्रसिद्धि भी चली आरही थी। और इसी कारण से वह (वित्तिए) बहुत पुराना है—इस रूपसे प्रसिद्धि—कोटि में आ गया

तीसे णं चंपाए णयरीए० ઇત્યાદિ.

(तीसे णं चंपाए णयरीए) તે ચંપા નગરીના (बहिया) બહાર ('उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए) ઉત્તર અને પૂર્વ દિશાની વચ્ચે-ઇશાન કોણમાં (पुण्णभद्दे णामं चेइए होत्था) પૂર્ણભદ્ર નામનો એક ચૈત્ય-યક્ષાલય હતો. (चिराईए पुव्वपुरिसपण्णत्ते) એ ઘણો પ્રાચીન હતો. ઘણા બુઢ્ઢા પુરાણા પુરૂષ પણ તેની પ્રશંસા કરતા આવતા હતા, તે માટે તે (पोराणे) ઘણો પુરાણો હતો. (सद्दिए) એવી રીતે તેની પ્રસિદ્ધિ પણ ચાલી આવતી હતી અને એ કારણથી તે (वित्तिए)

**सच्छत्ते सज्झए सघंटे सपडागे पडागाइपडागमंडिए सलोमहत्थे कयवेयद्दिए लाउल्लोइयमहिए गोसीससरसरत्तचंदणदद्दर-**

विदितम्। '**सच्छत्ते**' सच्छत्रम्—छत्रमण्डितम्। '**सज्झए**' सध्वजं—ध्वजोच्छ्रायैः सश्रीकम्। '**सघंटे**' सघण्टम्। '**सपडागे**' सपताकम्। '**पडागाइपडागमंडिए**' पताकाऽतिपताकामण्डितम्—पताकाः=लघुपताका अतिपताका'=विशालपताकाः, ताभिर्मण्डितम्। '**सलोमहत्थे**' सरोमहस्तं—मृदुप्रमार्जनिकया सहितम्। '**कयवेयद्दिए**' कृतवितर्दिकम् रचितवेदिकम्। '**लाउल्लोइयमहिए**'—लापितोल्लोचितमहितम्, तत्र **लापितं**—गोमयादिभिरङ्गणभित्त्यादेर्लेपनम्, **उल्लोचितम्**—खटिकादिद्रव्यैर्भित्त्यादीनां चाकचिक्ययुक्तकरणम्।

था, (**कित्तिए**) लोगों द्वारा भी तरह तरह की किंवदंतियों (दन्तकथाओं) से यह कीर्तित हो रहा था। (**णाए**) ऐसा कोई भी जन नहीं था जो उसके नामसे अपरिचित हो। सर्वत्र जनों में यह ख्यातिप्राप्त स्थान था। (**सच्छत्ते**) वह छत्रसहित था। (**सज्झए**) ध्वजाओं से युक्त था, (**सघंटे**) घंटाओं से विशिष्ट था (**सपडागे**) पतकाओं से उसकी शोभा अपूर्व बन रही थी। उसमें (**पडागाइपडागमंडिए**) कोई २ छोटी पताकाएं थीं और कोई २ विशाल पताकाएँ थीं, जिनसे वह मंडित था। (**सलोमहत्थे**) मृदुप्रमार्जनिका—मयूरपिच्छकी पीछी से ही उसकी सफाई होती थी, अतः इतस्ततः वे ही वहां रखी हुई रहती थीं, कठिन बुहारियां नहीं। (**कयवेयद्दिये**) इसमें वेदिका बनी हुई थी (**लाउल्लोइयमहियं**) इसके आंगन की जमीन **लापित**—गोमय से लिपी हुई रहती थी, उसकी भीते **उल्लोचित**—सफेद खडिया से पुती

घणो पुराणो छे એ રૂપથી પ્રસિદ્ધિ—કોટિમાં આવી ગયો હતો. (कित्तिए) લોકોદ્વારા પણ જાતજાતની કિંવદંતિઓથી—દંતકથાઓથી તે કીર્તિત (પ્રખ્યાત) થઈ રહ્યો હતો. (णाए) એવો કોઇ પણ માણસ નહોતો કે જે એના નામથી અપરિચિત હોય. સર્વત્ર લોકોમાં આ ખ્યાતિ પામેલું સ્થાન હતું. (सच्छत्ते) તે છત્રસહિત હતું. (सज्झए) ધજાઓથી યુક્ત હતું. (सघंटे) ઘંટાઓથી વિશિષ્ટ હતું. (सपडागे) પતાકાઓથી તેની શોભા અપૂર્વ થઈ રહી હતી. તેમાં (पडागाइपडागमंडिए) કોઈ કોઇ નાની પતાકાઓ હતી અને કોઇ કોઇ વિશાલ પતાકાઓ હતી જેથી તે શોભતું હતું (सलोम-हत्थे) મૃદુપ્રમાર્જનિકા—મોરના પીછાંની પીંછીથી જ તેની સફાઈ થતી હતી, આથી અહીં તહીં તે ત્યાં રાખવામાં આવતી હતી, કઠણ સાવરણી નહિ. (कयवेयद्दिए) તેમાં વેદિકા બનાવેલી હતી. (लाउल्लोइयमहिए) તેના આંગણાંની ભૂમિ लापित—છાણથી લીપાએલી રહેતી હતી. તેની ભીંતો उल्लोचित—સફેદ

दिण्णपंचंगुलितले उवचियचंदणकलसे चंदणघडसुकय-तोरणपडिदुवारदेसभाए आसत्तोसत्तविउलवट्टवग्घारियमल्ल-

ताभ्यां महितं=युक्तम् । 'गोसीससरससरत्तचंदणदद्दर दिण्णपंचंगुलितले' गोशीर्षसरसरक्त-चन्दनप्रचुरदत्तपञ्चाङ्गुलितलम्, गोशीर्ष—गोरोचनं सरसं रक्तचन्दनम्, एतेन चन्दनस्य पीतवर्णता रक्तता च व्यज्यते, तेन पीतरक्तसरसचन्दनेन दर्दरं—प्रचुरं यथा स्यात्तथा दत्तं पञ्चानामङ्गुलीनां तलं=व्यायतपञ्चाङ्गुलपाणितलं चपेटारूपम् अङ्कनं चिह्नं यत्र तत् तथा । 'उवचियचंदणकलसे' उपचितचन्दनकलशम्—मङ्गलार्थं न्यस्तचन्दन-लिप्तघटम् । 'चंदणघडसुकयतोरणपडिदुवारदेसभाए' चन्दनघटसुकृत-तोरणप्रतिद्वारदेशभागम्—चन्दनघटाश्च सुष्ठु कृततोरणानि च प्रतिद्वारदेशभागे यस्य तत्तथा, यत्र प्रतिद्वारे चन्दनलिप्तकलशाः सुन्दरतोरणानि च सन्तीत्यर्थः, 'आसत्तोसत्त-विउलवट्टवग्घारियमल्लदामकलावे' आसक्तोत्सक्तविपुलवृत्ताऽवतारितमाल्यदाम-कलापम्—आसक्तो—भूमिसंसक्तः, उत्सक्तः— उपरिसंसक्तः, विपुलो विस्तीर्णः, 'वट्टो' वृत्तो—वर्तुलो गोलाकारः, उपरिदेशात्—अवतारितः प्रलम्बमानीकृतः,—'मल्लदामकलावे' माल्यानि—कुसुमानि, तेषां दामानि—मालाः पुष्पमालाः, तेषां माल्यदाम्नां

रहती थी। इस कारण खूब महित—चमकती रहती थी। (गोसीससरससरत्तचंदणदद्दरदिण्ण-पंचंगुलितले) भित्तियों में जगह २ पर गोरोचन और सरस रक्तचंदन के प्रचुरमात्रा में हाथे लगाये हुए थे। (उवचियचंदणकलसे) उस यक्षालयमें मंगल के निमित्त चंदन से लिप्त कलश स्थापित थे। (चंदणघडसुकयतोरणपडिदुवारदेसभाए) प्रत्येक द्वारों पर चंदन के घट रखे हुए थे, एवं अच्छी तरह से बनाए गये सुन्दर तोरण दरवाजों के ऊपर सुशोभित हो रहे थे, अथवा चंदन के छोटे २ कलशों से दरवाजों पर तोरणों की रचना करने में आई थी। (आसत्तोसत्तविउलवट्टवग्घारिय-

ખડીથી પોતાએલી રહેતી હતી. તે કારણે તે ખૂબ મહિત-ચમકતી રહેતી હતી. (गोसीस-सरसरत्तचंदणदद्दरदिण्णपंचंगुलितले) ભીંતમાં ઠેકઠેકાણે ગોરોચન અને સરસ રક્ત-ચંદનના થાપા ખૂબ પ્રમાણમાં લગાવેલા હતા. (उवचियचंदणकलसे) તે યક્ષાલયમાં મંગલના નિમિત્ત ચંદન લગાડેલા કળશ સ્થાપિત હતા. (चंदणघड-सुकयतोरणपडिदुवारदेसभाए) પ્રત્યેક દ્વારો ઉપર ચંદનવાળા ઘટ રાખેલા હતા. તેમજ સરસ રીતે બનાવેલાં સુંદર તોરણ દરવાજાની ઉપર સુશોભિત લટકી રહેલા હતા. અથવા ચંદન લગાવેલા નાના નાનાં કળશોથી દરવાજા પર તોરણોની રચના કરવામાં આવી હતી. (आसत्तोसत्तविउलवट्टवग्घारिय

**दामकलावे पंचवण्णसरससुरभिमुक्कपुप्फपुंजोवयारकलिए कालागुरुपवरकुंदुरुक्कतुरुक्कधूवडज्झंतमघमघंतगंधुद्धुयाभिरामे सुगंधवर-**

कलापः=समूहो यत्र तत्, अर्थात्—उपर्यधोविस्तृतवर्तुलप्रलम्बमानकुसुममाला-कलापोपेतम्। '**पंचवण्णसरससुरहिमुक्कपुप्फपुंजोवयारकलिए**' पञ्चवर्णसरस-सुरभिमुक्तपुष्पपुञ्जोपचारकलितम्—पञ्चवर्णानि कृष्णनीलपीतरक्तश्वेतकान्तियुक्तानि सरसानि सुरभीणि—सुगन्धीनि च तानि मुक्तानि—विकीर्णानि यानि पुष्पाणि तेषां पुञ्जैरुपचाराः—रचनाविशेषाः, तैः कलितं युक्तं विविधवर्णकुसुमरचनासम्पन्नमित्यर्थः, '**कालागुरुपवरकुंदुरुक्कतुरुक्कधूवडज्झंतमघमघंतगंधुद्धुयाभिरामे**' कालागुरुप्रवरकुन्दरुष्कतुरुष्कधूपदह्यमानातिशयगन्धोद्धूताऽभिरामम्—कालागुरुः=कृष्णागुरुः, प्रवरकुन्दुरुष्कः=श्रेष्ठगन्धद्रव्यविशेषः, तुरुष्कः=सिल्हकः 'लोवान' इति भाषायाम्, धूपः=गन्धद्रव्यसंयोगजन्यः पदार्थः, एते दह्यमानाः अग्नौ प्रक्षिप्यमाणास्तेषां 'मघमघंत' अतिशयितो यो गन्धः '**उद्धुय**' उद्भूतः=सर्वतः प्रसृतः,तेन अभिरामम्=मनोहरम् '**सुगंधवरगंध-**

---

**मल्लदामकलावे**) यक्षायतन में भींतों के ऊपर और नीचे सर्वत्र विस्तीर्ण एवं गोलाकार लटकते हुए कुसुमकी मालाओ के कलाप की सजावट हो रही थी। (**पंचवण्णसरससुरभिमुक्कपुप्फपुंजोवयारकलिए**) प्रतिस्थान पर यहां पंचवर्ण के सरस एवं सुगंधित पुष्पों के पुंजों से अनेक प्रकारकी रचना रचने मे आई थी। (**कालागुरुपवरकुंदुरुक्कतुरुक्कधूवडज्झंतमघमघंतगंधुद्धुयाभिरामे**) उस यक्षायतनमें कृष्णागुरु, प्रवरकुन्दुरुष्क—श्रेष्ठगन्धद्रव्यविशेष, तुरुष्क—सेल्हारस—लोवान और धूप ये सब सुगंधित पदार्थ अग्नि में समय २ पर प्रक्षिप्त हुआ करते थे, इसलिये वहां अद्भुत विशेष गंध भरी रहती थी, इसलिये वह सदा अतिशय

---

मल्लदामकलावे) यक्षायतनमां भींतोनी ઉપર તથા નીચે સર્વત્ર વિસ્તીર્ણ તેમજ ગોલાકાર લટકાવેલી પુષ્પોની માળાઓના કલાપની સજાવટ (શોભા) થઈ રહી હતી (पंचवण्णसरससुरभिमुक्कपुप्फपुंजोवयारकलिए) દરેક સ્થાન પર અહીં પંચ વર્ણના સરસ તેમજ સુગંધિત પુષ્પોના ઢગલાથી અનેક પ્રકારની રચના બનાવવામાં આવી હતી. (कालागुरुपवरकुंदुरुक्कतुरुक्कधूवडज्झंतमघमघंत-गंधुद्धुयाभिरामे) તે યક્ષાયતનમાં કૃષ્ણાગુરૂ, પ્રવરકુન્દુરૂષ્ક—શ્રેષ્ઠ ગંધદ્રવ્ય વિશેષ, તુરૂષ્ક—સેલ્હારસ—લોબાન અને ધૂપ, એ બધા સુગંધિત પદાર્થ અગ્નિમાં વારંવાર નાખવામા આવતા હતા, તેથી ત્યાં બધુંજ સુગંધભરી રહેતી હતી. આથી તે સદા મઘમઘતું-બધી તરફથી સુગંધીથી સુશોભિત બની રહેતું

**गंधगंधिए गंधवट्टिभूए णड-णट्टग-जल्ल-मल्ल-मुट्ठिय-वेलंबग-पवग-कहग-लासग-आइक्खग-लंख-मंख-तूणइल्ल-तुंववीणिय-भुयग-मागह-परिगए बहुजणजाणवयस्स विस्सुयकित्तिए बहुजणस्स**

**गंधिए '** सुगन्धवरगन्धगन्धितम्-नानाविधपुष्पसम्पादितगन्धद्रव्यैः सुवासितम्। **'गंधवट्टिभूए'** गन्धवर्तिभूतं=गन्धद्रव्यगुटिकासदृशम्-सौरभ्यातिशयात् गन्धद्रव्यनिर्मितवद् भासमानम्। **'णडणट्टगे'**-त्यादि, अत्रैव प्रथमसूत्रे व्याख्यातम्, नवरम्-**'भुयगमागह-परिगए'** भोजकमागधपरिगतम्, भोजकाः-सेवकाः मागधाःस्तुतिपाठकाः, तैः- परिगतं व्याप्तम्। **'बहुजणजाणवयस्स विस्सुयकित्तिए'** बहुजनजानपदस्य

सुगंधि से सुशोभित बना रहता था। (**सुगंधवरगंधिए**) अनेक प्रकार के सुगंधित पुष्पो की गंध से भी वह सदा सुवासित होता रहता था (**गंधवट्टिभूए**) इसलिये यह गंधकी वत्ती जैसा हो रहा था। ऐसा ज्ञात होता था कि यह सुगंधित द्रव्यों के चूर्ण से ही मानो विरचित किया गया है। (**णड-णट्टग-जल्ल-मल्ल-मुट्ठिय-वेलंवय-इत्यादि**) नृत्य करने वालों से, नाटक करने वालो से, डोरी पर नाचने वालों से, मुष्टियुद्ध करने वालों से, बंदर की तरह कूदने वालों से, भांड के जैसी नकल करने वालों से, तथा कहानी कहने वालों से, रास रचने वालों से, शुभा-शुभ प्रकट करने वालों से, वांसके अग्रभाग पर खेलने वालों से, चित्रपट दिखला कर आजीविका करने वालों से, वीणा बजाने वालों से, तुंबी बजाने वालों से, भोजकों-सेवकों-से, और मागधो-स्तुतिपाठकोंसे वह मंदिर सदा युक्त बना रहता था। (**बहुजणजाण-**

હતુ. (सुगंधवरगंधिए) અનેક પ્રકારના સુગંધિત પુષ્પોની ગંધથી પણ તે હમેશ સુવાસિત થઇ રહેતું હતું. (गंधवट्टिभूए) એથી તે ગંધના વાતી જેવું થઇ રહ્યું હતું. એમજ લાગતું હતું કે એ સુગંધિત દ્રવ્યોના ચૂર્ણથી જ જાણે બનાવ્યું છે. (णड-णट्टग-जल्ल-मल्ल-मुट्ठिय-वेलंवय-इत्यादि) નૃત્ય કરનારાઓથી, નાટચકારોથી, દોરા ઉપર નાચવાવાળાઓથી, મુષ્ટિયુદ્ધ કરનારાઓથી, વાંદરાની પેઠે કૂદવાવાળાઓથી, ભાંડ (ભવાયા) જેવી નકલ કરવાવાળાઓથી, તથા વાર્તા કહેવાવાળાઓથી, રાસ કરનારાઓથી, શુભાશુભ પ્રકટ કરનારાઓથી, વાંસની ટોચ પર રમનારાઓથી, ચિત્રપટ દેખાડીને આજીવિકા કરવાવાળાઓથી, વીણા વગાડનારાઓથી, તુંબુર વગાડનારાઓથી, ભોજકો-સેવકોથી અને માગધો-સ્તુતિપાઠકોથી તે મંદિર સદા ભરચક રહેતું હતું. (बहुजणजाण-

**आहुस्स आहुणिज्जे पाहुणिज्जे अच्चणिज्जे वंदणिज्जे नमंसणिज्जे पूयणिज्जे सक्कारणिज्जे सम्माणणिज्जे कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं विणएणं पज्जुवासणिज्जे दिव्वे सच्चे सच्चोवाए सण्णिहियपाडिहेरे**

विश्रुतकीर्त्तिकम्—बहुजनस्य=पौरस्य, जानपदस्य=जनपदजातस्य अर्थात्—नागरिकाणां देशवासिनां च विश्रुतकीर्त्तिकम्—प्रसिद्धियुक्तम्, **'बहुजणस्स'** बहुजनस्स, **'आहुस्स'** आहोतु:—दातुः—दानशीलस्य बहुजनस्य, **'आहुणिज्जे'** आहवनीयम् आहूयते—दीयते ऽस्मै इति आहवनीयं—सम्प्रदानरूपम्, **'पाहुणिज्जे'** प्राहवणीयम् — प्रकृष्टतया सम्प्रदानरूपम्, **'अच्चणिज्जे'** अर्चनीयम्—आदरपात्रम्, **'वंदणिज्जे'** वन्दनीयं—स्तुतियोग्यम्, **'नमंसणिज्जे'** नमस्यनीयम्, **'पूयणिज्जे'** पूजनीयं—प्रशंसनीयम्, **'सक्कारणिज्जे'** सत्करणीयम्, **'सम्माणणिज्जे'** सम्माननीयम्, **'कल्लाणं'** कल्याणम् **'मंगलं'** मङ्गलम् **'देवयं'** दैवतम्, **'चेइयं'** चैत्यम्, **'विणएणं'** विनयेन, **'पज्जुवासणिज्जे'** पर्युपासनीयम्, **'दिव्वे'** दिव्यम्, **'सच्चे'** सत्यं, **'सच्चोवाए'** सत्यावपातं—सफलसेवम्,

**वयस्स विस्सुयकित्तिए** ) इस यक्षायतन की प्रसिद्धि अनेक पुरवासियो एवं अनेक नगरनिवासियो तक थी। ( **बहुजणस्स आहुस्स आहुणिज्जे** ) बहुत लोग इस मे दान दिया करते थे। ( **वंदणिज्जे णमंसणिज्ज अच्चणिज्जे पूयणिज्जे सक्कारणिज्जे सम्माणणिज्जे** ) यहां के लोग इस यक्षको वन्दनीय, नमस्करणीय, अर्चनीय, पूजनीय, सत्करणीय, और सम्माननीय मानते थे। ( **कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं विणएणं पज्जुवासणिज्जे दिव्वे सच्चे सच्चोवाए सण्णिहियपाडिहेरे जागसहस्स-भागपडिच्छए०** ) तथा कल्याण, मंगल, दैवत मानते थे, और चैत्य अर्थात् लोगों की अभिलाषा को जानने वाले मानते थे, विनय से उपासना करने के योग्य मानते थे, दिव्य और सत्य मानते थे, सफल सेवा मानते थे, जगह २ इसके

वयस्स विस्सुयकित्तिए ) आ यक्षायतननी प्रसिद्धि अनेक पुरवासीओ तेमज अनेक नगरवासीओ सुधी पहोंची हती. ( वहुजणस्स आहुस्स आहुणिज्जे ) घणा लोको एमां दान आप्या करता हता. ( वंदणिज्जे णमंसणिज्जे अच्चणिज्जे पूयणिज्जे सक्कारणिज्जे सम्माणणिज्जे ) अहींना लोको आ यक्षने वंदनीय, नमस्करणीय, अर्चनीय, पूजनीय, सत्करणीय, अने सम्माननीय मानता हता. (कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं विणएणं पज्जुवासणिज्जे दिव्वे सच्चे सच्चोवाए सण्णिहिय-पाडिहेरे जागसहस्सभागपडिच्छए) तथा कल्याण, मंगल, दैवत मानता हता अने चैत्य अर्थात् लोकोनी अभिलाषाने जाणवावाळा मानता हता, विनयथी उपासना करवा योग्य मानता हता, दिव्य अने सत्य मानता हता, सफ्ल

**जागसहस्सभागपडिच्छए बहुजणो अच्चेइ आगम्म पुण्णभद्दचेइयं पुण्णभद्दचेइयं ॥सू. २॥**

**मूलम्–से णं पुण्णभद्द चेइए एक्केणं महया वणसंडेणं सव्वओ समंता परिक्खित्ते। से णं वणसंडे किण्हे किण्होभासे**

'**सण्णिहियपाडिहेरे**' सन्निहितप्रातिहार्यम्–सन्निहितं–प्रातिहार्यम्–उपहाररूपं यस्य तत्, '**जागसहस्सभागपडिच्छए**' यागसहस्रभागप्रतीक्षकम् यागो – देवतोद्देशेन परोपकाराय दानकरणम्, तेषां सहस्राणि, तेषां भागाः–स्वयमादेयाः, तान् प्रतीक्षते इति यागसहस्रभागप्रतीक्षकम्, '**बहुजणो**' बहुजनः, '**अच्चेइ**' अर्चति–सत्कुरुते, '**आगम्म**' आगत्य, '**पुण्णभद्दं चेइयं२**' **पूर्णभद्रं चैत्यम्२**–पूर्णभद्रचैत्यमागत्य पूर्णभद्रचैत्यमर्चति–सत्कुरुते ॥ सू० २ ॥

**टीका**–पुनः कीदृशं पूर्णभद्रं चैत्यम्? इत्याह '**से णं पुण्णभद्दे चेइए**' तत्खलु पूर्णभद्रं चैत्यम्। '**एक्केणं महया वणसंडेणं**' एकेन–परस्परसमिलिततया एकीभूतेन, महता–विशालेन, वनषण्डेन '**सव्वओ समंता संपरिक्खित्ते**' सर्वतः समन्तात् सम्परिक्षिप्तम्, सर्वत्र–सर्वासु दिक्षु, समन्तात्–सर्वासु विदिक्षु, सम्परिक्षिप्तं-वेष्टितम्। स वनषण्डः कीदृशः? इत्याह (**से णं**) इत्यादि। '**से णं वणसंडे**' स वनषण्डःखलु

पास भेटरूप प्रातिहार्य रखे हुए नजर आते थे। इनके नाम से हजारों आदमी दान देते थे, और बहुत से लोग आकर सांसारिक अभिलाषा की पूर्ति के लिये इसकी अर्चना करते थे ॥ सू०२ ॥

'**से णं पुण्णभद्दे चेइए०**' इत्यादि—

(**से णं पुण्णभद्दे चेइए**) वह पूर्णभद्र चैत्य (**एक्केणं महया वणसंडेणं**) एक विस्तृत वनखंड–वनषंड से (**सव्वओ समंता परिक्खित्ते**) समस्त दिशाओं एवं विदिशाओं में घिरा हुआ था। (**से णं वणसंडे किण्हे किण्होभासे नीले नीलोभासे**

સેવા માનતા હતા, ઠેકઠેકાણે તેમની પાસે ઉપહારરૂપ પ્રસાદ રાખેલો નજરે પડતો હતો. તેમના નામથી હજારો માણસો દાન દેતા હતા અને ઘણા લોકો આવીને સાંસારિક અભિલાષાની પૂર્ણતા માટે તેની પૂજા અર્ચા કરતા હતા. (સૂ. ૨)

'से णं पुण्णभद्दे चेइए' ઇત્યાદિ,

(से णं पुण्णभद्दे चेइए) તે પૂર્ણભદ્ર ચૈત્ય (एक्केणं महया वणसंडेणं) એક વિશાળ વનખંડ-વનષંડથી (सव्वओ समंता परिक्खित्ते) સમસ્ત દિશાઓ તેમજ વિદિશાઓમાં ઘેરાએલો હતો. (से णं वणसंडे किण्हे किण्होभासे नीले

**नीले नीलोभासे हरिए हरिओभासे सीए सीओभासे णिद्धे णिद्धो-भासे तिव्वे तिव्वोभासे, किण्हे किण्हच्छाए नीले नीलच्छाए हरिए हरियच्छाए सीए सीयच्छाए णिद्धे णिद्धच्छाए तिव्वे**

कृष्णः-कृष्णवर्णः, '**किण्होभासे**' कृष्णावभासः—कृष्ण इवाऽवभासते, नतु वस्तुतःकृष्ण एव, '**नीले नीलोभासे**' नीलो नीलावभासः—मयूरकण्ठवत्प्रतिभासमानः, '**हरिए हरि-ओभासे**' हरितो हरिताऽवभासः—हरितवर्णपर्णानां प्राचुर्यात् शुकपक्षवदवभासमानः, इदानीं स्पर्शापेक्षया वर्ण्यते—'**सीए सीओभासे**' शीतः शीताऽवभासः—लतापुञ्जव्याप्तत्वात् शीत-स्पर्शवान् इत्यर्थः, '**णिद्धे णिद्धोभासे**' स्निग्धः स्निग्धावभासः—नवनीतमिव चिक्कणः—चिक्कण-वदवभासमानः नतु रूक्षः । '**तिव्वे तिव्वोभासे**' तीव्रस्तीव्रावभासः तीव्रः—प्रभाप्रकर्षवान् तीव्रावभासः—प्रकृष्टप्रभाऽवभासमानः, '**किण्हे किण्हच्छाए**' कृष्णः कृष्णच्छायः—एते द्वे अपि विशेषणे गाढकृष्णतां ब्रूतः, तेन करालकालिमावलीवलीढो वनषण्ड इत्युक्तो भवति ।

**हरिए हरिओभासे सीए सीओभासे णिद्धे णिद्धोभासे तिव्वे तिव्वोभासे किण्हे किण्हच्छाए नीले नीलच्छाए हरिए हरियच्छाए सीए सीयच्छाए णिद्धे णिद्धच्छाए तिव्वे तिव्वच्छाए** ) यह वनखंड अतिशय सघन होने की वजह से कृष्ण तथा कृष्ण आभावाला था, देखने वालों के यह नील एवं नीलप्रभा से विशिष्ट ज्ञात होता था। यह हरित तथा हरित आभावाला था, इस कारण से इस वनखंड की कांति हरी प्रतीत होती थी। रंग भी हरा २ मालूम देता था। जहां २ वृक्षों की अतिशय सघन पंक्ति थी वहां २ की छाया अत्यंत शीतल थी। सदा वहां तरावट रहने से प्रभामें भी शीतलता रहा करती थी। जमीन कहीं २

नीलोभासे हरिए हरिओभासे सीए सीओभासे णिद्धे णिद्धोभासे तिव्वे तिव्वोभासे, किण्हे किण्हच्छाए नीले नीलच्छाए हरिए हरियच्छाए सीए सीयच्छाए णिद्धे णिद्धच्छाए तिव्वे तिव्वच्छाए ) આ વનખંડ અતિશય ઘાટો હોવાના કારણથી કાળો તથા કાળાશની આભાવાળો હતો. જોનારાઓ માટે તે લીલો તેમજ લીલી પ્રભાથી વિશિષ્ટ જણાતો હતો. તે હરિત તથા હરિત આભાવાળો હતો. તે કારણથી આ વનખંડની કાંતિ હરી લાગતી હતી. રંગ પણ હરાહરા (લીલોછમ) દેખાતો હતો. જ્યાં જ્યાં વૃક્ષોની બહુ ઘાટી હાર હતી ત્યાંની છાયા બહુ જ ઠંડી હતી. સદા ત્યાં ઠંડક રહેવાથી પ્રભામાં (ઉજાસમાં) પણ ઠંડક રહ્યા કરતી હતી. જમીન ક્યાંક ક્યાંક એટલી ચિકણી

**तिव्वच्छाए घणकडियकडिच्छाए रम्मे महामेहणिकुरंव-भूए ॥ सू. ३ ॥**

'घणकडियकडिच्छाए' '**घनकटितकडिच्छायः**'—परस्परं शाखानामनुप्रवेशाद् घनः—सान्द्रः, कटितः—कटाच्छादित इव निविडः—बहुलनिरन्तरच्छाय इत्यर्थः। रम्यः—रमणीयगुणयुक्तः। '**महामेहणिकुरंवभूए**' महामेघनिकुरम्बभूतः—महान्तः—विशालाः, **मेघाः**—जलधराः, तेषां निकुरम्बम्—महामेघनिकुरम्बम् सजलजलदवृन्दम् तथाभूतः—तत्सदृशः—**महामेघनिकुरम्बभूतः**—महाजलदवृन्दोपमः सश्रीकः श्यामतमो वनषण्ड इति यावत् ॥ सू. ३॥

पर इतनी चिकनी थी कि लोगों को इसकी प्रभा में भी चिकनाई लक्षित होती थी। वर्णादिक से यह तीव्र एवं तीव्र छायावाला था। (**घणकडियकडिच्छाए रम्मे महामेहणिकुरंवभूए**) यहां जितने भी वृक्ष थे उन सबकी शाखाएँ एक दूसरे वृक्षों की शाखाओं से परस्पर में मिल गई थीं, इससे यहां छाया की अत्यंत सघनता रहा करती थी। यह वन बडा ही सुहावना लगता था। ऐसा मालूम पडता था कि मानो महामेघों का यह एक विशाल समुदाय ही है। अथवा (**किण्हे**) इत्यादि पदों की व्याख्या इस प्रकार भी हो सकती है—अत्यंत सघन होने से इस वनखंड मे सूर्य की किरणों का प्रवेश तक भी नहीं हो सकता था इसलिये इसमें चारों ओर अंधकार छाया रहता था, अतः यह काला जैसा प्रतीत होता था। जैसे मयूर का कंठ नीला होता है यह भी उसी तरह नीला था। इसमें हरे२ पत्तों की प्रचुरता थी इसलिये इस वनकी कांति भी तोते की पांखो—जैसी हरी ज्ञात होती थी। वन का

હતી કે લોકોને જેની પ્રભામા પણ ચિકાશ લાગતી હતી. વર્ણાદિક (રૂપરંગ)થી એ તીવ્ર તેમજ તીવ્રછાયાવાળો હતો. (घणकडियकडिच्छाए रम्मे महामेहणिकुरंवभूए) અહી જેટલાં વૃક્ષો હતા તે બધાંયની શાખાઓ એક બીજા વૃક્ષોની શાખાઓ સાથે પરસ્પર મળી ગઈ હતી. આથી અહીં છાયા બહુ જ ઘાટી થઇ રહી હતી. આ વન ઘણુ જ શોભાયમાન લાગતું હતું. એમ જણાતું હતું કે જાણે મહામેઘોનો એ એક મોટો સમુદાય જ છે. અથવા (किण्हे) ઇત્યાદિ પદોની વ્યાખ્યા એમ પણ થઇ શકે છે કે અત્યંત ઘાટું હોવાથી આ વનખંડમા સૂર્યના કિરણોનો પ્રવેશ માત્ર પણ થઈ શકતો નહિ. એથી તેમાં ચારે તરફ અંધકાર છવાઈ રહેતો હતો. તેથી તે કાળા જેવું પ્રતીત થતું હતું. જેમ મોરનો કંઠ લીલો હોય છે તેમ આ પણ લીલુ હતું. એમાં લીલાંછમ પાંદડાં બહુ જ હતાં, તેથી આ વનની કાંતિ પણ પોપટની પાંખો જેવી લીલી જણાતી હતી. વનનો સ્પર્શ ઠંડો એ કારણથી

**मूलम्—ते णं पायवा मूलमंतो कंदमंतो खंधमंतो तयामंतो सालमंतो पवालमंतो पत्तमंतो पुप्फमंतो**

**टीकाः**—'**ते णं पायवा**' इत्यादि। 'ते' तत्सम्बन्धिनः—तच्छब्दस्य लक्षणया तत्सम्बन्धिन इत्यर्थः, तच्छब्देन बुद्धिस्थविषयपरामर्शात् वनखण्डस्य परामर्शः। वनखण्डसम्बन्धिन इत्यर्थः, पादपा वृक्षाः, कीदृशास्ते वृक्षाः? इत्यत्राऽऽह—'**मूलमंतो**' मूलवन्तः—मूलानि सन्ति एषाम् इति मूलवन्तः मूलसम्बद्धा वृक्षा इत्यर्थः। '**कंदमंतो**' कन्दवन्तः—मूलानामुपरि ग्रन्थिरूपाः कन्दाः, ते सन्ति येषां ते तथा। '**खंधमंतो**' स्कन्धवन्तः—शाखाविभागस्थानं स्कन्धः, ते स्कन्धाः सन्त्येषां ते स्कन्धवन्तः। '**तयामंतो**' त्वग्वन्तः—त्वचो—वल्कलानि सन्त्येषामिति ते तथा। '**सालमंतो**' शालावन्तः—शालाः शाखाः सन्त्येषामिति। '**पवालमंतो**' प्रवालवन्तः—प्रवाला=बाल-

---

स्पर्श शीत इसलिये था कि यहां लताओं का कुज अधिक था। मक्खन के समान यह स्पर्श में चिकन था। प्रभा के प्रकर्ष से इसकी प्रभा भी तीव्र थी। कृष्ण एवं कृष्णावभास इन दो विशेषणों से सूत्रकार का यह अभिप्राय है कि यहां पर जो कृष्णता थी वह गाढ थी। ॥ सू० ३ ॥

'**ते णं पायवा०**' इत्यादि—

(**ते णं पायवा मूलमंतो**) उस वनखंड के ये वृक्ष जमीन के भीतर गहरी फैली हुई बडी २ जडों वाले थे। (**कंदमंतो खंधमतो तयामंतो सालमंतो पवालमंतो पत्तमंतो पुप्फमंतो फलमंतो वीयमंतो**) कंद—मूलों के ऊपर गांठ—वाले थे। स्कंध—शाखाओं के रहने के स्थानवाले थे। त्वचा—छाल युक्त थे। शालाओं—शाखाओं से विशिष्ट थे। **प्रवाल**—कोंपल सहित थे। पत्रों से भरे हुए थे, पुष्पों से युक्त थे।

---

હતો કે અહીં લતાઓના કુંજ વધારે હતા. માખણના જેવો તેનો સ્પર્શ ચિકણો હતો. ઉજાસ વધારે હોવાથી તેનો ઉજાસ પણ તીવ્ર હતો. કૃષ્ણ તેમજ કૃષ્ણાવભાસ એ બે વિશેષણોથી સૂત્રકારનો એ અભિપ્રાય છે કે અહીં જે કાળાશ હતી તે ઘેરી હતી. (સૂ. ૩)

'ते णं पायवा.' ઈત્યાદિ,

(ते णं पायवा मूलमंतो) એ વનખંડમાં આ વૃક્ષો જમીનની અંદર ઉંડાં ફેલાઇ ગયેલાં મોટાં મોટાં મૂળવાળાં હતાં. (कंदमंतो खंधमंतो तयामंतो सालमंतो पवालमंतो पत्तमंतो पुप्फमंतो फलमंतो वीयमंतो) કંદ—મૂળ ઉપર ગાંઠ—વાળાં હતાં, સ્કંધ—શાખાઓને રહેવાનાં સ્થાનરૂપ હતાં. ત્વચા—છાલયુક્ત હતા, શાલાઓ—શાખાઓથી વિશિષ્ટ હતા, પ્રવાલ—કુંપળોવાળા હતા, પત્ર—પાંદડાંથી ભરેલાં

**फलमंतो बीयमंतो अणुपुव्व-सुजाय-रुइल-वट्टभाव-परिणया एक्कखंधा अणेगसाला अणेग-साह-प्पसाह-विडिमा अणेग-नर-वाम-सुप्पसारिय-अग्गेज्झ-घण-विउल-वट्ट-खंधा अच्छिद्दपत्ता अविरलप-**

पल्लवानि सन्त्येषामिति। एवं '**पत्तमंतो**' पत्रवन्तः, '**पुप्फमंतो**' पुष्पवन्तः। '**फलमंतो**' फलवन्तः। '**बीयमंतो**' बीजवन्तः—बीजान्यङ्कुरजनकानि सन्त्येषामिति ते तथा '**अणुपुव्व-सुजाय-रुइल-वट्टभाव-परिणया**' अनुपूर्व-सुजात-रुचिर-वृत्तभावपरिणताः-अनुपूर्वं यथाक्रमं सुजाताः रुचिराः सुन्दराश्चामी वृत्तभावैर्वर्तुलभावैर्गोलाकारैः परिणताश्च। '**एक्क-खंधा**' एकस्कन्धाः-एकस्कन्धवन्तः, '**अणेगसाला**' अनेकशालाः, '**अणेग-साह-प्पसाह-विडिमा**' अनेक-शाखा-प्रशाखा-विडिमाः—अनेकाः शाखाः—स्कन्धसञ्जाताः प्रशाखाः—शाखा-प्रसूताः, विडिमाः—ऊर्ध्वविनिर्गताः शाखाश्च येषु ते तथा, अनेकशाखाप्रशाखायुक्त-वृक्षा इत्यर्थः। '**अणेग-नर-वाम-सुप्पसारिय-अग्गेज्झ-घण-विउल-वट्ट-खंधा**' अनेक-नर-वाम-सुप्रसारिताऽग्राह्य-घन - विपुल - वृत्त-स्कन्धाः—अनेकैः नरव्यामैः – नराणां= व्यामैः = तिर्यग्बाहुद्वयप्रसारणप्रमाणैः सुप्रसारितैः अग्राह्यः = अप्रमेयः घनः—सान्द्रः, विपुलो—विशालो, वृत्तो—वर्तुलः, स्कन्धो येषां ते, अतिस्थूल—

फलों से लदे हुए थे। बीजों से भरे हुए थे। (**अणुपुव्व—सुजाय—रुइल—वट्टभाव-परिणया**) ये सब के सब वृक्ष अनुक्रम से उत्पन्न हुए थे और छत्ते के जैसे रम्य गोल—आकारवाले थे। (**एक्कखंधा अणेगसाला अणेग—साह—प्पसाह—विडिमा**) इनके स्कन्ध एक थे और अनेक शाखा प्रशाखा एवं विडिमाओं—ऊपरकी ओर गयी हुई शाखाओं से युक्त थे। (**अणेग—नरवाम—सुप्पसारिय—अग्गेज्झ—घण—विउल—वट्ट—खंधा**) अनेक पुरुषों द्वारा अच्छी तरह पसारे गये हाथों से भी इनका सान्द्र, विपुल एवं वर्तुलाकार स्कंधका ग्रहण नहीं हो सकता था। (**अच्छिद्दपत्ता**) इनके पत्र भी इतने

હતા, ફૂલોવાળાં હતા, ફૂલોથી ભરેલા હતા, બીજોથી ભરપૂર હતાં. (अणुपुव्व-सुजाय-रुइल-वट्टभाव-परिणया) આ તમામે-તમામ વૃક્ષો અનુક્રમવાર ઉત્પન્ન થયેલાં હતાં અને છત્રી જેવાં રમ્ય ગોળ આકારવાળાં હતાં. (एक्कखंधा अणेगसाला अणेग-साह-प्पसाह-विडिमा) એમનું થડ એક હતું અને અનેક શાખા પ્રશાખા તેમજ વિડિમાઓ-ઉપરની તરફ ગયેલી શાખાઓથી યુક્ત હતાં. ( अणेग-नर-वाम-सुप्पसारिय-अग्गेज्झ-घण-विउल-वट्ट-खंधा ) અનેક પુરૂષો-દ્વારા ખૂબ પહોળા કરેલા હાથોથી પણ તેમનાં સાન્દ્ર વિશાળ તેમજ વર્તુળા-કાર થડને બાથ ભીડી શકતા નહોતા. (अच्छिद्दपत्ता) તેમનાં પાંદડાં પણ

त्ता अवाईणपत्ता अणईयपत्ता निद्धूय-जरढ-पंडु-पत्ता णव-हरिय-भिसंत-पत्तभारं-धयार-गंभीर - दरिसणिज्जा उवणिग्गय - णवतरुण-

सघनविशालतया प्रसारितपाणिभिः नरैर्दुर्ग्रहवर्तुलस्कन्धा इति यावत्। 'अच्छिद्दपत्ता' अच्छिद्रपत्राः—अच्छिद्राणि—सूर्यकिरणैरपि दुष्प्रवेशानि, पत्राणि येषां ते, परस्परमिलितदलाः। 'अविरलपत्ता' अविरलपत्राः—बहुलपत्राः। 'अवाईणपत्ता' अवाचीनपत्राः—अवाचीनानि—अधोमुखानि, पत्राणि येषां ते तथा। 'अणईयपत्ता' अनीतिकपत्राः—ईतयःषट्—अतिवृष्टिः, अनावृष्टिः, मूषकः, शलभः, खगः, दिग्विजयादौ प्रस्थितो भूत्वाऽतिनिकटसमागतो नृपश्चेति; अविद्यमाना ईतयो येषां तानि—अनीतिकानि निरुपद्रवाणि पत्राणि येषां ते तथा। 'निद्धूय-जरढ-पंडु-पत्ता' निर्द्धूत-जरठ-पाण्डु-पत्राः—निर्द्धूतानि—क्षिप्तानि, जरठानि—जीर्णानि, पाण्डूनि—परिणतानि—पीतानि, पत्राणि येषां ते तथा। 'णव-हरिय-भिसंत-पत्तभारं-धयार-गंभीर-दरिसणिज्जा' नव-हरित-भासमान-पत्रभाराऽ-

सघन थे कि जिनके बीच में जरा भी अन्तराल नहीं था। (अविरलपत्ता) इसीलिये इनके पत्र दूर २ नहीं थे, बिलकुल पास २ में चिपके हुए जैसे थे। (अवाईणपत्ता) जितने भी पत्र इन वृक्षों में लगे हुए थे वे सब अधोमुख थे। (अणईयपत्ता) ये पत्र अतिवृष्टि, अनावृष्टि, मूषक, शलभ, पक्षी और राजा इन छह ईतियों—विपत्तियों से रहित थे। (निद्धूय-जरढ-पंडु-पत्ता णव-हरिय-भिसंत-पत्तभारं-धयार-गंभीर-दरिसणिज्जा) इन वृक्षों से पुराने पत्ते, पीले पत्ते एवं सडे हुए पत्ते गिर गये थे, उनके स्थान पर नवीन हरे चमकीले पत्र आगये थे उससे वहां अन्धकार जैसा सदा व्याप्त हो रहा था। अतः इस हालत में 'ये वृक्ष ऐसे हैं' इस प्रकार लोकों के लिये इनका स्पष्टरीति से विवेचन करना अशक्य था। (उवणिग्गय-णव-तरुण-पत्त-पल्लव-को-

એટલાં ઘાટાં હતાં કે જેની વચમા જરા પણ અંતર નહોતું. (अविरलपत्ता) આમ તેમનાં પાંદડાં છેટે છેટે નહોતાં, બિલકુલ પાસે પાસેજ ચોંટેલાં જેવાં હતાં (अवाईणपत्ता) એ વૃક્ષોમાં જેટલાં પાંદડાં લાગેલાં હતાં તે બધાં અધોમુખ (નીચે મુખવાળાં) હતાં. (अणईयपत्ता) આ પાંદડાં અતિવૃષ્ટિ, અનાવૃષ્ટિ, ઉંદર, શલભ (તીડ), પક્ષી અને રાજા એ છ ઇતિઓ—વિપત્તિઓથી રહિત હતાં. (निद्धूय-जरढ-पंडु-पत्ता णव-हरिय-भिसंत-पत्तभारं-धयार-गंभीर-दरिसणिज्जा) એ વૃક્ષો ઉપરથી જુનાં પાન, પીળાં પાન, તેમજ સડી ગયેલાં પાન પડી ગયાં હતાં અને તેમને ઠેકાણે નવાં લીલાં ચમકદાર પાન આવી ગયાં હતાં તેથી ત્યાં અંધકાર જેવું સદા વ્યાપ્ત થઇ રહ્યું હતું. આ પ્રમાણે આવી સ્થિતિમાં 'એ વૃક્ષો એવાં જ છે' એ પ્રકારે સ્પષ્ટપણે વિવેચન કરવું લોકોને માટે

**पत्त-पल्लव-कोमल-उज्जल-चलंत-किसलय-सुकुमाल-पवाल-सोहिय-वरंकुर-ग्गसिहरा णिच्चं कुसुमिया णिच्चं मऊरिया णिच्चं पल्लविया**

न्धकार-गम्भीर-दर्शनीयाः'—नवेन हरितेन भासमानो—दीप्यमानो यः पत्रभारः—पत्रसमूहः, तेन अन्धकाराः=सान्धकाराः, अतएव-गम्भीरदर्शनीया-गम्भीरम्-'इदमीदृग्'-इति विवेक्तुमशक्यं यथा स्यात्तथा दृश्यन्ते इति गम्भीरदर्शनीयाः। **'उवणिग्गय-णव—तरुण-पत्त-पल्लव-कोमल-उज्जल-चलंत-किसलय-सुकुमाल-पवाल-सोहिय-वरंकुर-ग्गसिहरा'** उपनिर्गत-नवतरुण-पत्र-पल्लव-कोमलो-ज्ज्वल-चलत्किसलय-सुकुमार - प्रवाल - शोभित - वराऽङ्कुराऽग्रशिखराः—तत्र—उपनिर्गतानि—सद्यःप्रकटितानि, नवतरुणानि—नवीनागततरुणतासम्पन्नानि पत्रपल्लवानि—पत्ररूपाणि गुच्छरूपाणि तैः, तथा कोमलोज्ज्वलैः—मृदुनिर्मलैः, चलद्भिः, किसलयैः—सद्योजातैः पत्रविशेषैः सुकुमारप्रवालैः - कोमलपल्लवैः, शोभितवराऽङ्कुराणि=सुन्दराङ्कुर—युक्तानि अग्रशिखराणि—उपरितनभागा येषां ते तथा। अत्र विशेषणे अङ्कुरप्रवालपल्लव—किसलयपत्राणि स्वल्पबहुबहुतरादिकालकृतावस्थाभेदाद्भिन्नानीति भावः। **'णिच्चं कुसुमिया'** नित्यं कुसुमिताः—सदा सर्वर्तुसंजातकुसुमोपेताः—न तु ऋतुभेद—

---

**मल-उज्जल-चलंत-किसलय-सुकुमाल-पवाल-सोहिय-वरंकुर-ग्गसिहरा)** इनके जो पत्र एवं पल्लव थे वे नवीन निकलने की वजह से नवीनतरुणता—संपन्न थे, कुम्हलाये या मुर्झाये हुए नहीं थे। इन पर जो किसलय—कोंपले थीं वे कोमल थीं उज्जल थीं तथा मृदु पवन के झोके से हिलती रहती थीं। इनमें जो प्रवाल थे वे बहुत ही कोमल थे। इस प्रकार पत्रों से, पल्लवों से, कोंपलों से और प्रवालों से इनके उत्तम अंकुर शोभित हो रहे थे, इन अंकुरों से इन वृक्षों का अग्रभाग लहलहा रहा था। [**णिच्चं कुसुमिया**] ये वृक्ष सदा सर्व ऋतुओं के पुष्पों से फूले रहते थे।

---

અશક્ય હતું. (उवणिग्गय-णव—तरुण-पत्त—पल्लव-कोमल-उज्जल-चलंत—किसलय-सुकुमाल-पवाल—सोहिय—वरंकुर—ग्गसिहरा) એનાં જે પાન તેમજ પલ્લવ હતાં તે નવીન ઉગવાનાં કારણથી નવીન તરૂણતા—સંપન્ન હતાં. કરમાઇ ગયેલાં કે ચીમળાઈ ગયેલાં નહોતાં. તેના પર જે કિસલય—કુંપળો હતાં તે કોમળ હતાં, ઉજ્જવળ હતાં તથા મંદ પવનની લહેરીથી હલતાં હતાં. તેમાં જે પ્રવાલ હતાં તે બહુ જ કોમળ હતા. આ પ્રકારે પત્રોથી, પલ્લવોથી, કુંપળોથી અને પ્રવાલોથી તેમનાં ઉત્તમ અંકુરો શોભી રહેતાં હતાં. એ અંકુરોથી એ વૃક્ષોનો આગળનો ભાગ સુશોભિત હતો. (णिच्चं कुसुमिया) એ વૃક્ષો હમેશાં સર્વ ઋતુઓનાં પુષ્પોથી ખિલી રહેલાં રહેતાં હતાં (णिच्चं मऊरिया) સર્વદા એ

**णिच्चं थवइया णिच्चं गुलइया णिच्चं गोच्छिया णिच्चं जमलिया णिच्चं जुवलिया णिच्चं विणमिया णिच्चं पणमिया णिच्चं कुसुमिय-**

प्रतिबन्धितकुसुमाः। '**णिच्चं मऊरिया**' नित्यं मयूरिताः—मयूराः सन्त्येषामिति मयूरिताः नित्यं मयूरयुक्ता इत्यर्थः। '**णिच्चं पल्लविया**' नित्यं पल्लविताः—सर्वदा पल्लवसम्पन्नाः। '**णिच्चं थवइया**' नित्यं स्तबकिताः—नित्यं स्तबकवन्तः, गुच्छवन्त इत्यर्थः। '**णिच्चं गुलइया**' नित्यं गुल्मिताः जातियूथिकानवमल्लिकादिलतावन्तः, '**णिच्चं गोच्छिया**' नित्यं गुच्छिताः सदापुष्पगुच्छयुक्ताः। '**णिच्चं जमलिया**' नित्यं यमलिताः समपंक्तितया स्थिताः—अथवा यमलाः युग्मतया जाताः, ते सन्ति येषां ते यमलिताः। '**णिच्चं जुवलिया**' नित्यं युगलिता—युगलतया स्थिताः। '**णिच्चं विणमिया**' नित्यं विनमिताः—फलपुष्पादिभारेण नताः। '**णिच्चं पणमिया**' नित्यं प्रणमिताः—केचित् प्रकर्षेण नम्रीभूताः।

[ **णिच्चं मऊरिया** ] सर्वदा इन वृक्षों पर मोर रहते थे। ( **णिच्चं पल्लविया** ) ये वृक्ष नित्यपल्लवित रहते थे, अकाल मे पतझड इनमें नहीं होता था। ( **णिच्चं थवइया** ) गुच्छों से ये हमेशा अन्वित बने हुए रहते थे [ **णिच्चं गुलइया** ] इनपर सदा नवमल्लिका आदि लताएं लिपटी रहती थीं। '**णिच्चं गोच्छिया**' ये हमेशां फूलों और फलों के गुच्छों से युक्त रहते थे। '**णिच्चं जमलिया णिच्चं जुवलिया**' ये जितने भी वृक्ष यहां पर थे वे सब जोडे सहित एक सी कतार मे आजू-बाजू खडे हुए थे। '**णिच्चं विणमिया**' ऐसा कोई सा भी समय नहीं था कि जब ये फल एवं पुष्पादिक के भार से झुके न रहते हों। '**णिच्चं पणमिया**' कोई २ वृक्ष तो ऐसे भी थे जो पुष्पादिकों के भार से बिलकुल जमीन तक भी झुके हुए थे। [ **णिच्चं-कुस-**

વૃક્ષો પર મોર રહેતા હતા ( णिच्चं पल्लविया ) એ વૃક્ષો હમેશાં પલ્લવિત રહ્યા કરતાં હતાં. દુકાળમાં પણ તેમનાં પાન ખરતાં નહોતાં ( णिच्चं थवइया ) ગુચ્છોથી તે હમેશ સભર રહેતાં હતાં ( णिच्चं गुलइया ) તેમના પર સદા નવ-મલ્લિકા આદિ લતાઓ (વેલો) વીંટળાયેલી રહેતી હતી. ( णिच्चं गोच्छिया ) તે હમેશાં ફૂલો અને ફળોના ગુચ્છાથી યુકત રહેતા હતા. ( णिच्चं जमलिया णिच्चं जुवलिया ) એ જેટલાં વૃક્ષો અહીં હતાં તે બધાં જોડે જોડે એક જ હારમાં આજુબાજુમાં ઉભાં હતાં. ( णिच्चं विणमिया ) એવો કોઈપણ સમય નહતો કે જ્યારે તેઓ ફલ તેમજ પુષ્પાદિકના ભારથી ઝુકેલાં ન રહેતાં હોય. ( णिच्चं पणमिया ) કોઈ કોઈ વૃક્ષ તો એવાં પણ હતાં કે જે પુષ્પાદિકના ભારથી બિલકુલ જમીન સુધી નમી ગયેલા હતાં ( णिच्चं-कुसमिय-मऊरिय-

मऊरिय-पल्लविय-थवइय-गुलइय-गोच्छिय - जमलिय - जुवलिय-विणमिय-पणमिय-सुविभत्त-पिंड-मंजरी-वडिंसय-धरा सुय-वरहिण-मयणसाल - कोइल-कोभगक-भिंगारग-कोंडलग-जीवंजीवग-णंदीमुह-कविल-पिंगलक्खग-कारंड-चक्कवाय-कलहंस-सारस-अणेग-सउणगण-मिहुण-विरइय-सद्दुण्णइय - महुर - सर-णाइया

'णिच्चं-कुसुमिय-मऊरिय-पल्लविय-थवइय-गुलइय-गोच्छिय-जमलिय-जुवलिय-विणमिय-पणमिय-सुविभत्त-पिंड-मंजरी-वडिंसय-धरा' नित्यं-कुसुमित-मयूरित--पल्लवित-स्तवकित - गुल्मित-गुच्छित-यमलित-युगलित-विनमित-प्रणमित-सुविभक्त-पिण्ड-मञ्जर्यवतंसकधराः, अत्र-कुसुमितादि-प्रणमितान्तं प्रतिपदं पूर्वं व्याख्यातम्, कुसुमितादयः प्रणमितान्ता ये पादपास्ते कीदृशा इत्याह-सुविभत्त इत्यादि, सुविभक्ताः-पृथक्-पृथक् स्थिताः पिण्डाः=पिण्डीभूताः-घनीभूता या मञ्जर्यस्ता एवाऽवतंसकाः-शिरोभूषणभूता इव तासां धराः-धारका इत्यर्थः।

पुनस्ते पादपाः कीदृशाः? इत्याह-'सुय-वरहिण-मयणसाल-कोइल-कोभगक-भिंगारग-कोंडलग-जीवंजीवग-णंदीमुह-कविल-पिंगलक्खग-कारंड-चक्कवाय-कलहंस-सारस-अणेग-सउणगण-मिहुण-विरइय-सद्दुण्णइय-महुर-सर-णाइया' शुक-बर्हि-मदनशाला-कोकिल-कोभगक-भृङ्गारक-कोण्डलक-जीवञ्जीवक-नन्दीमुख-कपिल-पिङ्गलाक्षक-कारण्ड-चक्रवाक-कलहंस-सारसाऽनेक-शकुनगण-मिथुन -विरचित-

मिय-मऊरिय-पल्लविय-थवइय-गुलइय-गोच्छिय-जमलिय-जुवलिय-विणमिय-पणमिय सुविभत्त-पिंड-मंजरी-वडिंसय-धरा ] इस प्रकार ये सब के सब कुसुमित, मयूरित, पल्लवित, स्तवकित, गुल्मित, गुच्छित, यमलित, विनमित, युगलित और प्रणमित वृक्ष. पृथक् पृथक् घनीभूत मंजरीरूप शिरोभूषणों से सदा युक्त बने हुए थे। (सुय-वरहिण-मयणसाल-कोइल-कोभगक-भिंगारग-कोंडलग-जीवंजीवग-णंदीमुह-कविल-पिंगलक्खग-कारंड-चक्कवाय-कलहंससारस-अणेग-सउणगण-मिहुण-विरइय-सद्दुण्णइय-महुर-सर-णाइया) ये वृक्ष शुक-[तोता]

पल्लविय-थवइय-गुलइय-गोच्छिय-जमलिय-जुवलिय-विणमिय-पणमिय-सुविभत्त-पिंड-मंजरी-वडिंसय-धरा) આ પ્રકારે તે તમામે તમામ વૃક્ષો કુસુમિત, મયૂરિત, પલ્લવિત. સ્તબકિત, ગુલ્મિત, ગુચ્છિત, યમલિત, યુગલિત, વિનમિત અને પ્રણમિત થઈ જુદાં જુદા ઘાટા મંજરીરૂપ શિરોભૂષણોથી સદા યુક્ત બનેલાં હતા. (सुय-वरहिण-मयणसाल-कोइल-कोभगक-भिंगारग-कोंडलग-जीवंजीवग-णंदीमुह-कविल-पिंगलक्खग-कारंड-चक्कवाय-कलहंस-सारस-अणेग-सउणगण-मिहुण-विरइय-सद्दुण्णइय-महुर-सर-

**सुरम्मा संपिंडिय-दरिय-भमर-महुयरि-पहकर-परिलिंत-मत्तछप्पय-कुसुमासव-लोल-महुर-गुमगुमंत-गुंजंत-देसभाया अब्भिंतर-पुप्फ-**

शब्दोन्नत-मधुर-स्वरनादिताः । तत्र-शुकाः=प्रसिद्धाः, बर्हिणः=मयूराः, मदनशालाः-सारिकाविशेषाः 'मैना' इति प्रसिद्धाः, कोकिलाः-प्रसिद्धाः, कोभगकाः-पक्षिविशेषाः, भृङ्गारकाः-पक्षिविशेषाः, कोण्डलकाः-पक्षिविशेषाः, जीवञ्जीवकाः-चकोरपक्षिणः, नन्दीमुखाः-पक्षिविशेषाः, कपिलाः=पक्षिविशेषाः, पिङ्गलाक्षकाः-पक्षिविशेषाः, कारण्डकाः-पक्षिविशेषाः, चक्रवाकाः-चकवा इति प्रसिद्धाः, कलहंसाः, सारसाः-प्रसिद्धाः, शुकादि-सारसान्ता येऽनेके पक्षिगणास्तेषां मिथुनानि स्त्रीपुंसयुग्मानि, तैर्विरचिताः=कृताः शब्दोन्नता उन्नतशब्दाः-दीर्घशब्दाः मधुरस्वरास्तैर्नादिताः-विविधपक्षिकृतमधुरध्वनियुक्ताः पादपा इत्यर्थः, **'सुरम्मा'** सुरम्याः-अतीव रमणीयाः । **'संपिंडिय-दरिय-भमर-महुयरि-पहकर-परिलिंत-मत्तछप्पय-कुसुमासव-लोल-महुर-गुमगुमंत-गुंजंत-देसभाया'** सम्पिण्डित-दृप्त-भ्रमर-मधुकरी-प्रकर-परिमिलन्मत्तषट्पद-कुसुमासव-लोल-मधुर-गुमगुमेति-गुञ्जद्देशभागाः, तत्र-सम्पिण्डिताः परस्परसंमिलिताः, दृप्तानां=मदमत्तानां भ्रमराणां मधुकरीणां=भ्रमरीणां प्रकराः=समूहास्तैः प्रकरैः परिमिलन्तो ये मत्तषट्पदाः, त एव पुनः कुसुमाऽऽसवलोलाश्च पुष्परसाऽऽस्वाद-

बर्हिण-मयूर, मदनशाल-मैना, कोकिल-कोयल, कोभगक-पक्षिविशेष, भृङ्गारक-पक्षिविशेष, कोंडलक-पक्षिविशेष, जीवंजीव-चकोर, नंदीमुख-पक्षिविशेष, कपिल-तीतर, पिंगलाक्षक-बटेर, कारण्ड, चक्रवाक-चकवा, कलहंस-बतक, सारस-इत्यादि अनेक पक्षियोंके जोडो की उन्नत एवं मधुरस्वरवाली ध्वनियों से युक्त थे। [**सुरम्मा**] इसलिये बडे ही आनंदप्रद थे, देखनेवालों को बहुत ही सुहावने लगते थे। (**संपिंडिय-दरिय-भमर-महुयरि-पहकर-परिलिंत-मत्तछप्पय-कुसुमासव-लोल-महुर-गुमगुमंत-गुंजंत-देसभाया**) मद से उन्मत्त भ्रमर और भ्रमरियों के समुदाय जो पुष्पों के रस के पान से उन्मत्त बने हुए थे, अथवा पुष्पों के रस को पान करने के लिये

णाइया)એ વૃક્ષો પોપટ. બર્હિણ-મયૂર, મદનશાલ-મૈના, કોકિલ-કોયલ, કોભગક-પક્ષિવિશેષ, ભૃંગારક-પક્ષિવિશેષ, કોંડલક-પક્ષિવિશેષ, જીવંજીવ-ચકોર, નંદીમુખ-પક્ષિવિશેષ, કપિલ-તેતર, પિંગલાક્ષક-બટેર, કારંડક, ચક્રવાક-ચકવા, કલહંસ-વતક, સારસ ઈત્યાદિ અનેક પક્ષીઓનાં જોડાંની ઉન્નત તેમજ મધુર સ્વરવાળી વાણીથી યુક્ત હતાં (सुरम्मा) તેથી ખૂબ જ આનંદમય હતાં. જોનારને બહુ જ સુંદર લાગતાં હતાં. (संपिंडिय-दरिय-भमर-महुयरि-पहकर-परिलिंत-मत्तछप्पय-कुसुमासव-लोल-महुर-गुमगुमंत-गुंजंत-देस-भाया) મદથી ઉન્મત્ત ભ્રમર અને ભમરીઓનો સમુદાય જે પુષ્પોના રસ પીને ઉન્મત્ત બન્યો હતો અથવા

फला बाहिरपत्तोच्छण्णा पत्तेहि य पुप्फेहि य ओच्छन्नवलिच्छत्ता साउफला निरोयया अकंटया णाणाविह-गुच्छ-गुम्म-मंडवग-रम्म-सोहिया विचित्तसुहकेउभूया वावीपुक्खरिणीदीहियासु य सुनि-

लोलुपाः तेषां मधुरं यथा तथा गुमगुमेत्यव्यक्तनादानुकरणे तैर्मधुरभृङ्गसङ्घैस्तैर्गुञ्जन् देशभागो येषां पादपानां ते तथा। 'अभिंतरपुप्फफला' अभ्यन्तरपुष्पफलाः-अभ्यन्तरे पुष्पफलसंभृताः। 'बाहिरपत्तोच्छण्णा' बाह्यपत्रावच्छन्नाः—बहिः संजातपत्रसमूह-प्रच्छन्नाः। 'पत्तेहि य' पत्रैश्च, 'पुप्फेहि य' पुष्पैश्च, 'ओच्छन्नवलिच्छत्ते' अवच्छन्न-प्रतिच्छन्नाः—सर्वथाऽऽच्छादिताः। 'साउफला' स्वादुफलाः 'निरोयया' नीरोगकाः शीतविद्युदातपादिजनितोपघातरहिताः। 'अकंटया' अकण्टकाः — कण्टकरहिताः, 'णाणाविह-गुच्छ-गुलम-मंडवग-रम्म-सोहिया' नानाविध — गुच्छ-गुल्म-मण्डपक-रम्य—शोभिताः—नानाविधैर्बहुप्रकारैः गुच्छगुल्ममण्डपकैः = पुष्पस्तवक-लताप्रतान-

लालायित हो रहे थे, उनके 'गुमगुम' इस प्रकार के अव्यक्तनाद से गूँजते रहते थे। [अभिंतरपुप्फफला] भीतर में पुष्प एवं फल से [बाहिरपत्तोच्छण्णा] तथा बाहिर में पत्तां से ये वृक्ष व्याप्त हो रहे थे। (पत्तेहि य पुप्फेहि य ओच्छन्न-वलिच्छत्ते) इसलिये देखनेवालों को ऐसा मालूम होता था कि ये पत्र और पुष्पों से ही आच्छादित हो रहे हैं। (साउफला) ये मीठे फलवाले थे, (निरोयया) नीरोग थे अर्थात् इनको न तो कभी विद्युत्पात का भय था और न कभी आतप—जनित पीडा का ही त्रास था। [अकंटया] कंटक—रहित थे। [णाणाविह—गुच्छ—गुम्म—मंडवग—रम्म—सोहिया] ये अनेक प्रकार के गुच्छगुल्मों—पुष्प स्तवकों से मंडित लताप्रतानों के निकुंजों से युक्त थे, इससे इनकी शोभा निराली

પીવાને માટે ઝંખી રહેતો હતો તેના ગણુગણાટના અવ્યક્ત નાદથી ગુંજીત હતાં (अभिंतरपुप्फफला) અંદરના ભાગમાં પુષ્પ તેમજ ફલથી (बाहिरपत्तोच्छण्णा) તથા બહારના ભાગમાં પાનથી આ વૃક્ષો વ્યાપ્ત બની રહેલા હતા. (पत्तेहि य.पुप्फेहि य ओच्छन्नवलिच्छत्ते) આથી જોનારાઓને એમ જણાતું હતું કે આ વૃક્ષો પાન અને પુષ્પોથી જ ઢંકાએલાં રહે છે. (साउफला) એ મીઠા ફળવાળાં હતાં, (निरोयया) નિરોગ હતાં અર્થાત્ તેમને ન તો કદી વિજળી પડવાનો ભય હતો અને ન તો તડકાની પીડાનો ત્રાસ હતો. (अकंटया) કાંટા રહિત હતાં. (णाणाविह—गुच्छ—गुम्म—मंडवग रम्म-सोहिया) એ અનેક પ્રકારનાં ગુચ્છ-ગુલ્મો—પુષ્પ સ્તવકોથી શોભતા લતાપ્રતાનોનાં નિકુંજોથી યુક્ત હતાં. તેથી

**वेसिय-रम्म-जाल-हरया पिंडिमणीहारिमं सुगंधिं सुह-सुरभि-मणहरं च महयागंधद्धणिं मुयंता णाणाविह-गुच्छ-गुम्म-मंडवग-**

विनिर्मितमण्डपैर्ये रम्याः=रमणीयाः शोभिताः= शोभासंपन्नाश्च ते तथा । '**विचित्तसुहकेउभूया**' विचित्रसुखकेतुभूता—विचित्रसुखानां विविधसुखानां घ्राणनयनरसना—हृदयप्रमोदानां केतुभूताः । '**वावी—पुक्खरिणी—दीहियासु य सुनिवेसिय—रम्म जाल—हरया**' वापी-पुष्करिणी-दीर्घिकासु च सुनिवेशित—रम्य—जाल—गृहकाः, तत्र—वापीषु—चतुष्कोणरूपासु पुष्करिणीषु—गोलाकारासु कमलवतीषु वा, दीर्घिकासु आयामरूपासु '**सुनिवेसिय**' सुनिवेशिताः—सुष्टुप्रकारेण रचिताः, '**रम्मजालहरया**' रम्याः—सुन्दराः जालगृहाः—गवाक्षाः 'जाली झरोखा' इति भाषाप्रसिद्धा यैस्ते तथा । '**पिंडिमणीहारिमं**'इत्यादि, पिण्डिमनिहारिमां—शुभपुद्गलसमूहरूपेण दूरदेशगामिनीम् । '**सुगंधिं**' सुगन्धिं—शोभनगन्धवतीम् । '**सुहसुरभिमणहरं**' शुभसुरभिमनोहरां श्रेष्ठसुगन्धमनोहारिणीं

हो रही थी। (**विचित्तसुहकेउभूया**) विचित्र सुखों के केन्द्र बने हुए थे। (**वावी—पुक्खरिणी—दीहियासु य सुनिवेसिय—रम्म-जाल-हरया**) वनषण्ड में जितनी भी वापी—चारकोने वाली बावडियां एवं पुष्करिणी—गोलाकार तथा कमलनियों से युक्त बावडियां तथा दीर्घिकायें—लम्बे आकारवाली बावडियां थीं, इन सब पर वृक्षों के यथायोग्य संनिवेशसे स्थान २ पर सुन्दर जाली—झरोखे बने हुए थे। अर्थात् बावडियों के ऊपर रहे हुए ये वृक्ष जाली—झरोखे के आकारवाले दीखते थे। इस वनखंड में कितनेक ऐसे भी वृक्ष थे जो (**पिंडिमणीहारिमं**) शुभ पुद्गलो के समूहरूप से दूर २ तक फैलनेवाली, (**सुगंधिं**) तथा जिसमें अच्छी गन्ध आती थी—

તેમની શોભા અનોખી જ થઈ રહેતી હતી. (विचित्तसुहकेउभूया) વિચિત્ર સુખોનું કેન્દ્ર બની ગયાં હતાં (वावी-पुक्खरिणी-दीहियासु य सुनिवेसिय-रम्म—जाल-हरया) વનષંડમાં જેટલી એ વાવો—ચાર ખૂણાવાળી વાવડિઓ તેમજ પુષ્કરિણી—ગોલાકાર તથા કમલિનીઓથી યુક્ત વાવડિઓ- તથા દીર્ઘિકાઓ—લાંબા આકારવાળી વાવડિઓ હતી. એ બધી ઉપર વૃક્ષોના યથાયોગ્ય સંનિવેશથી ઠેકઠેકાણે સુંદર જાળી—ઝરોખા બનાવેલાં હતાં. અર્થાત્ વાવડિઓની ઉપર ઝૂકી રહેલા એ વૃક્ષો જાળી ઝરોખાના આકારવાળાં દેખાતાં હતાં. આ વનખંડમાં કેટલાંક એવાં પણ વૃક્ષો હતાં કે જે (पिंडिमणीहारिमं) શુભ પુદ્ગલોના સમૂહરૂપથી દૂર દૂર સુધી ફેલાઈ જનારી- (सुगंधिं) તથા જેમાં સારી સુગંધ આવતી

घरग-सुहसेउ-केउ-बहुला अणेग-रह-जाण-जुग्ग-सिविय - परिमो-

'महयागंधद्धणिं' महागन्धध्राणिम्-गन्ध एव ध्राणिः अर्थात्-गन्धतृप्तिः, महती चासौ गन्धध्राणिस्तां 'मुयंता' मुञ्चन्तः, पुनः कीदृशा वृक्षाः? अत्राह–'णाणाविह-गुच्छ-गुम्म-मंडवग–घरग-सुहसेउ-केउ-बहुला' नानाविध-गुच्छ-गुल्म - मण्डपक-गृहक-सुखसेतु-केतु-बहुलाः-नानाविधगुच्छगुल्मानां मण्डपकाः, गृहकाः सुखाः=सुखकारकाः सेतवः=मार्गाः केतवश्च पताकाः बहुलाः=प्रचुरा येषु ते तथा, 'अणेग-रह-जाण-जुग्ग-सिविय-परिमोयणा' अनेक-रथ-जान-युग्य-शिबिका-प्रविमोचनाः, अनेके रथाः,यानानि=अश्वादीनि, युग्यानि शकटादीनि, शिबिकाः-पुरुषवाह्ययानविशेषाः–'पालखी' इति प्रसिद्धाः, तासां रथादिशिबिकान्तानां परिमोचनं–स्थापनं यत्र तादृशाः, क्रीडाद्यर्थमागतानां जनानां रथादयस्तत्र तिष्ठन्तीति भावः। 'सुरम्मा' सुरम्याः–अतिशयरमणीयाः। 'पासाईया' प्रसादीयाः–हृदयप्रसादकारकाः, 'दरिसणिज्जा' दर्शनीयाः–द्रष्टुं योग्याः, 'अभिरूवा'

सुगंधी से जो मंडित थी, और इसीलिए (सुहसुरभिमणहरं) जो अपनी इस शुभ-सुरभिसे मन को आनंदित करती थी ऐसी (महयागंधद्धणिं) विशिष्ट गंधध्राणि-सुगंध की परम्परा को(मुंयता) छोडते थे। (णाणाविह–गुच्छ–गुम्म–मंडवग-घरग-सुहसेउ-केउ–बहुला) इस प्रकार ये वृक्ष गुच्छों और गुल्मों से बने हुए अनेक मंडप, घर, सुन्दर मार्ग और पातकाओं से सदा सुशोभित थे (अणेग–रह–जाण–जुग्ग–सिविय-परिमोयणा) इनके नीचे वनक्रीडा के निमित्त आये हुए व्यक्तियों के अनेक रथ, यान, युग्य–तांगा–वगैरह, पालखी आदि सवारियों के साधन रखे जाते थे (सुरम्मा, पासाईया, दरिसणिज्जा, अभिरूवा, पडिरूवा,) इसलिये ये वृक्ष बडे ही सुरम्य,

હતી. સુગંધથી જે ભરેલી હતી અને તેથી જ (सुहसुरभिमणहरं) જે પોતાની આ શુભ સુવાસથી મનને આનંદિત કરતી હતી એવી (महयागंधद्धणिं) વિશિષ્ટ ગંધધ્રાણિ–સુગંધની પરંપરાને (मुयंता) છોડતા હતા. (णाणाविह–गुच्छ–गुम्म–मंडवग–घरग–सुहसेउ–केउ–बहुला) એ પ્રકારે એ વૃક્ષો ગુચ્છો અને ગુલ્મોથી બનેલાં અનેક મંડપ, ઘર, સુંદર માર્ગ અને પતાકાઓથી સદા સુશોભિત રહેતાં હતાં. (अणेग–रह–जाण–जुग्ग–सिविय–परिमोयणा) એમની નીચે વનક્રીડાને નિમિત્તે આવેલી વ્યક્તિઓના અનેક રથ–યાન, બગી, ટાંગા વગેરે, પાલખી આદિ સવારિઓનાં સાધન રાખવામાં આવતાં હતાં. (सुरम्मा, पासाईया; दरिसणिज्जा, अभिरूवा, पडिरूवा) એથી તે વૃક્ષો બહુજ સુરમ્ય,

**यणा सुरम्मा पासाईया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा ॥सू०४॥**

**मूलम्—तस्स णं वणसंडस्स बहुमज्झदेसभाए एत्थ णं महं एक्के असोगवरपायवे पण्णत्ते, कुस-विकुस-विसुद्ध-रुक्खमूले**

अभिरूपा'—सुन्दराकृतिमन्त', 'पडिरूवा' प्रतिरूपाः—अभिमतरूपवन्तः=सकलजनचित्ताकर्षकाः वनषण्डस्य वृक्षाः सन्तीत्यर्थः ॥सू०४॥

**टीका**—अशोकवृक्षवर्णनमाह— '**तस्स णं वणसंडस्स**' इत्यादि । तस्य खलु वनषण्डस्य—पूर्ववर्णितवनषण्डस्य '**बहुमज्झदेशभाए**' बहुमध्यदेशभागे—सर्वथा मध्यभागे इत्यर्थः, '**एत्थ णं**' अत्र खलु—वनषण्डमध्यप्रदेशे '**महं**' महान्—अतिशयसमुन्नत '**एक्के**' एक प्रधानः **असोगवरपायवे**' अशोकवरपादपः=अशोक-नामकः श्रेष्ठवृक्ष. '**पण्णत्ते**' प्रज्ञप्त',—कीदृशः सः ? इत्याह '**कुसविकुसविसुद्धरुक्खमूले**' कुश-विकुश-विशुद्धवृक्षमूलः—कुश दर्भाः, विकुशाः कुशभिन्नास्तत्सदृशास्तृणविशेषा एव, तैर्विशुद्धं—विरहितं—तृणवर्जितमित्यर्थः, **वृक्षमूलं**—वृक्षाऽधःस्थलं यस्य अशोकपादपस्य स तथा । पुनः कीदृशः सः ? अत्राऽऽह—'**मूलमंते**' मूलवान्, '**कंदमंते**' कन्दवान् 'जाव' यावच्छब्दात्—

हृदय—आह्लादक, दर्शनीय, सुन्दर आकृति से युक्त एवं यथेच्छरूपविशिष्ट प्रतिभासित होते थे ॥ सू० ४ ॥

'**तस्स णं वणसंडस्स०**' इत्यादि

[**तस्स णं वणसंडस्स बहुमज्झदेसभाए**] इस वनखंड के ठीक बीचोबीचवाले प्रदेश में (**एत्थ णं**) इसके सिवाय अन्यत्र नहीं (**महं एक्के असोगवरपायवे पण्णत्ते**) एक विस्तृत अशोक नामका श्रेष्ठ वृक्ष था। (**कुस-विकुस-विसुद्ध-रुक्खमूले**) इसका अधोभाग कुश एवं कुश—जैसे अन्य तृणादिकों से रहित था। (**मूलमंते**

હૃદયાહ્લાદક, દર્શનીય, સુંદર આકૃતિથી યુક્ત તેમજ યથેચ્છરૂપવિશિષ્ટ ભાસતાં હતાં. (સૂ. ૪)

तस्स णं वणसंडस्स ઇત્યાદિ,

(तस्स णं वणसंडस्स बहुमज्झदेसभाए) આ વનખંડના બરાબર વચ્ચોવચ્ચના ભાગમાં (एत्थ णं) તેના સિવાય બીજે નહિ (महं एक्के असोगवरपायवे पण्णत्ते) એક વિશાળ અશોક નામનું શ્રેષ્ઠ વૃક્ષ હતું. (कुस-विकुस-विसुद्ध-रुक्खमूले) તેની નીચેનો ભાગ કુશ તેમજ કુશ જેવાં અન્ય તૃણાદિકોથી રહિત હતો. (मूलमंते कंदमंते जाव परिमोयणे) જે વૃક્ષોના વિષયનું વર્ણન ચોથા સૂત્રમાં

मूलमंते कंदमंते जाव परिमोयणे सुरम्मे पासाईए दरिसणिज्जे अभिरूवे पडिरूवे ॥ सू. ५ ॥

मूलम्—से णं असोगवरपायवे अण्णेहिं बहूहिं तिलएहिं बउलेहिं-लउएहिं छत्तोवेहिं सिरीसेहिं सत्तवण्णेहिं दहिवण्णेहिं लोद्धेहिं

---

स्कन्ध—त्वक्—शाला—प्रवाल—पत्र—पुष्प—फल—बीजानामपि ग्रहणम्, 'परिमोयणे' परिमोचनः—अनेकरथादिवाहनानां परिमोचनं स्थापनं यत्र स तथा, क्रीडाद्यर्थमागतानां जनानां रथादयस्तत्र तिष्ठन्तीति भावः । 'सुरम्मे' सुरम्यः—अतिशयरमणीयः । 'पासाईए' प्रासादीयः—प्रसादाय हितः प्रसादीयः स एव, मनः प्रसन्नताहेतुभूतः 'दरिसणिज्जे' दर्शनीयः—द्रष्टुं योग्यः । 'अभिरूवे' अभिरूपः—अभिमतं रूपं यस्य स तथा । 'पडिरूवे' प्रतिरूपः—प्रति=विशिष्टम्—असाधारणं रूपं यस्य स तथा ॥सू०५॥

टीका—'से णं असोगवरपायवे' इत्यादि । स खल्वशोकवरपादपः=पूर्ववर्णितः अशोकनामकः श्रेष्ठवृक्षः, अन्यैः बहुभिःबहुविधैर्वृक्षैर्वेष्टितः, तथाहि 'तिलएहिं'

---

कंदमंते जाव परिमोयणे) जो वृक्षों के विषयका वर्णन चतुर्थ सूत्रमें आया है, उस समस्त वर्णन से यह युक्त था। इसलिये यह भी [सुरम्मे पासाईए दरिसणिज्जे अभिरूवे पडिरूवे) सुरम्य, चित्ताह्लादक, दर्शनीय, अभिरूप एवं विशिष्ट आसाधारण शोभा—संपन्न था ॥ सू. ५ ॥

'से णं असोगवरपायवे०' इत्यादि—

(से णं असोगवरपायवे) यह सुन्दर अशोक वृक्ष (अण्णेहिं बहूहिं) अन्य अनेक प्रकारके वृक्षों से परिवेष्टित था, उनमें से कितनेक वृक्षोंके नाम ये हैं—(तिलएहिं बउलेहिं) तिलक, बकुल (लउएहिं छत्तोवेहिं सिरीसेहिं सत्तवण्णेहिं

---

કરવામાં આવેલું છે એ સમસ્ત વર્ણનથી તે યુક્ત હતું તેથી તે પણ (सुरम्मे पासाईए दरिसणिज्जे अभिरूवे पडिरूवे) સુરમ્ય, ચિત્તાહ્લાદક, દર્શનીય, અભિરૂપ તેમજ વિશિષ્ટ અસાધારણ શોભા-સંપન્ન હતું. (સૂ. ૫)

'से णं असोगवरपायवे' ઇત્યાદિ.

(से णं असोगवरपायवे) આ સુંદર અશોક વૃક્ષ (अण्णेहिं बहूहिं) અન્ય અનેક પ્રકારનાં વૃક્ષોથી વીંટળાએલું હતું. તેમાંથી કેટલાંક વૃક્ષોનાં નામ આ પ્રમાણે છે. (तिलएहिं बउलेहिं) તિલક, બકુલ (लउएहिं छत्तोवेहिं सिरीसेहिं

**धवेहिं चंदणेहिं अज्जुणेहिं णीवेहिं कुडएहिं कलंबेहिं सव्वेहिं फणसेहिं दाडिमेहिं सालेहिं तालेहिं तमालेहिं पियएहिं पियंगूहिं पुरोवगेहिं रायरुक्खेहिं नंदिरुक्खेहिं सव्वओ समंता संपरिक्खित्ते ॥ सू० ६ ॥**

तिलकैः 'बउलेहिं' बकुलैः 'लउएहिं' लकुचैः विहारादिदेशेषु (बडहर) इति ख्यातैः—'छत्तोवेहिं' छत्रोपैः—वृक्षविशेषैः । 'सिरीसेहिं' शिरीषैः प्रसिद्धैः पुष्पवृक्षैः । 'सत्तवण्णेहिं' सप्तपर्णैः, 'दहिवण्णेहिं' दधिवर्णैः—वृक्षविशेषैः । 'लोद्धेहिं' लोध्रैः—श्वेतरक्तकुसुमयुक्तैर्वृक्षविशेषैः । 'धवेहिं' धवैः प्रसिद्धैः । 'चंदणेहिं' चन्दनैः 'अज्जुणेहिं' अर्जुनैः—वृक्षविशेषैः । 'णीवेहिं' नीपैः=कदम्बैः । 'कुडएहिं'—कुटजैः—गगनमल्लिकापर्यायैः । 'कलंबेहिं' कदम्बैः । 'सव्वेहिं' सव्यैः—त्वक्प्रदैर्वृक्षविशेषैः । 'फणसेहिं' पनसैः । 'दाडिमेहिं' दाडिमैः । सालेहिं' शालैः । 'तालेहिं' तालैः । 'तमालेहिं' तमालैः । 'पिएहिं' प्रियैः 'पियंगूहिं' प्रियङ्गुभिः—वृक्षविशेषैः । 'पुरोवगेहिं' पुरोपगैर्वृक्षभेदैः । 'रायरुक्खेहिं' राजवृक्षैरश्वत्थैः । 'णंदिरुक्खेहिं' नन्दिवृक्षैः । 'सव्वओ' सर्वतः—सर्वदिक्षु—'समंता' समन्तात् परितः । 'संपरिक्खित्ते' सम्परिक्षिप्तः—सम्यक् प्रकारेण वेष्टितः ॥ सू० ६ ॥

दहिवण्णेहिं लोद्धेहिं धवेहिं) लकुच, (विहार आदि देशों में इसे "बडहर" कहते हैं) छत्रोप—वृक्षविशेष, शिरीष, सप्तपर्ण, दधिवर्ण, लोध्र, धव (**चंदणेहिं अज्जुणेहिं, णीवेहिं, कुडएहिं, कलंबेहिं, सव्वेहिं, फणसेहिं, दाडिमेहिं**) चंदन, अर्जुन, नीप, कुटज, कदम्ब, सव्य, पनस, दाडिम—अनार के वृक्ष, (**सालेहिं तालेहिं तमालेहिं पिएहिं पियंगूहिं पुरोवगेहिं रायरुक्खेहिं नंदिरुक्खेहिं**) शाल, ताल, तमाल, प्रिय, प्रियंगु, पुरोपग, पीपल और नंदिवृक्ष, इन वृक्षों से यह अशोक वृक्ष (**सव्वओ**

सत्तवण्णेहिं दहिवण्णेहिं, लोद्धेहिं धवेहिं ) લકુચ, ( બિહાર આદિ દેશોમાં તેને બડહર કહે છે ) છત્રોપ-વૃક્ષવિશેષ, શિરીષ, સપ્તપર્ણ, દધિવર્ણ, લોધ્ર, ધવ, ( चंदणेहिं, अज्जुणेहिं, णीवेहिं, कुडएहिं, कलंबेहिं, सव्वेहिं,फणसेहिं, दाडिमेहिं ) ચંદન, અર્જુન, નીપ, કુટજ, કદમ્બ, સવ્ય, પનસ, દાડમ-અનારના વૃક્ષ, ( सालेहिं तालेहिं तमालेहिं पिएहिं पियंगूहिं, पुरोवगेहिं राजरुक्खेहिं नंदिरुक्खेहिं ) શાલ, તાલ, તમાલ, પ્રિય, પ્રિયંગુ, પુરોપગ, પીપલ અને નંદિવૃક્ષ, એ વૃક્ષોથી તે અશોક વૃક્ષ ( सव्वओ समंता संपरिक्खित्ते ) સર્વ દિશાઓમા ચારે

मूलम्—ते णं तिलया बउला लउया जाव णंदिरुक्खा कुसविकुसविसुद्धरुक्खमूला मूलमंतो कंदमतो एएसिं वण्णओ भाणियव्वो जाव सिबियपडिमोयणा सुरम्मा पासाईया

**टीका**—तस्य पूर्ववर्णितस्याऽशोकवृक्षस्य परिवेष्टकाः तिलकाः पूर्ववर्णिताऽशोक-वृक्षवद् वर्णनीयाः, तथा बकुलाः लकुचाः यावत्—शब्दस्योपादानात् नन्दिवृक्षेभ्यः पूर्ववर्तिनः छत्रोपगिरीषसप्तपर्णादयो राजवृक्षान्ताः सर्वे वृक्षा ग्राह्याः, नन्दिवृक्षाः, एते वृक्षाः कीदृशाः ? इत्याह—**'कुसविकुसविसुद्धरुक्खमूला'** कुश—विकुश विशुद्धवृक्षमूला—**दर्भादितृणापनयनात्** निर्मलतरुतलाः, एतेषां पदानां **'वण्णओ'** वर्णकः—वर्णनम्, **'भाणियव्वो'** भणितव्यः चतुर्थसूत्रवत् कथनीय इति यावत्, **'जाव'** यावत् **'सिबियपरिमोयणा'** शिबिकापरिमोचनाः—रथादिशिबिकान्त—वाहनानां परिमोचनं स्थापनं यत्र

**समंता संपरिक्खित्ते**) सब दिशाओ में चारों ओर से अच्छी तरह घिरा हुआ था ॥ सू. ६ ॥

'**ते णं तिलया बउला**' इत्यादि,

(**ते णं तिलया बउला लउया जाव**) यह सब तिलकबकुल लकुचवृक्ष से लगाकर नंदिवृक्ष-पर्यन्त-वृक्षसमूह ( **कुस—विकुस—विसुद्ध-रुक्खमूला** ) अपने २ नीचे भाग में कुस एवं अन्य कुस जैसी घास आदि से रहित था ( **मूलमंतो कंदमंतो एएसि वण्णओ भाणियव्वो जाव सिबियपरिमोयणा** ) पहिले ४ चतुर्थसूत्र में जो " **मूलमंत कंदमंत** " इत्यादि पद वृक्षों के वर्णन करने में कहे गये है उन सभी पदों का अध्याहार इन वृक्षोंके वर्णन करने में भी कर लेना चाहिये। उन वृक्षों के नीचे

બાજુથી સારી રીતે ઘેરાયેલું હતું. ( સૂ. ૬ )

' ते णं तिलया बउला ' ઈત્યાદિ,

(ते णं तिलया बउला लउया जाव) આ બધા તિલકબકુલ લકુચવૃક્ષથી માંડીને નંદિવૃક્ષ સુધીનો વૃક્ષસમૂહ (कुस—विकुस—विसुद्ध-रुक्खमूला) પોતપોતાના નીચેના-ભાગમા કુસ તેમજ બીજાં કુસ જેવાં ઘાસ આદિથી રહિત હતા ( मूलमंतो कंदमंतो एएसिं वण्णओ भाणियव्वो जाव सिवियपरिमोयणा ) ચોથા સૂત્રમા "મૂલમંત કંદમંત" ઈત્યાદિ વૃક્ષોનાં વર્ણન કરવામાં જે પદો કહેલાં છે તે બધા પદોનો અધ્યાહાર આ વૃક્ષના વર્ણનમા પણ કરી લેવો જોઈએ. તે વૃક્ષોની નીચે જે પ્રકારે રથોથી માંડીને શિબિકા ( પાલખી ) સુધીનાં

दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा ॥ सू० ७ ॥

मूलम्—ते णं तिलया जाव णंदिरुक्खा अण्णेहिं बहूहिं पउमलयाहिं णागलयाहिं असोगलयाहिं चंपगलयाहिं

ते तथा. क्रीडाद्यर्थमागतानां जनानां रथादयस्तत्र तिष्ठन्तीति भावः । 'सुरम्मा' सुरम्याः—अतीवरमणीयाः । 'पासाईया' प्रासादीयाः—हृदयोल्लासकाः, 'दरिसणिज्जा' दर्शनीयाः—द्रष्टुं योग्या 'अभिरूवा' अभिरूपाः—अभिमतसुन्दराकृतिमन्तः । 'पडिरूवा' प्रतिरूपाः—असाधारणसौन्दर्यवन्तः ॥ सू० ७ ॥

टीका—अयमत्र वक्तव्योऽर्थः—यथाऽशोकवरपादपो बहुविधैस्तिलकादिवृक्षैः परितो वेष्टितः, तथैव ते वेष्टकवृक्षा अपि अन्याभिर्वक्ष्यमाणाभिः बहुविधाभिर्लताभिः परिवेष्टिता अभूवन्। कास्ताः परिवेष्टनसाधनीभूता लता इत्यत्राह—'ते णं' ते खलु अशोकवरपादपस्य परिवेष्टकाः'तिलया जाव णंदिरुक्खा' तिलका यावन्नन्दिवृक्षाः पञ्चविंशतिजातीया इत्यर्थः, ते पुनः कीदृशाः ? इत्याह—'अण्णेहिं बहूहिं' अन्याभिर्बह्वीभिः—

जिस प्रकार रथों से लेकर शिविकापर्यन्त के वाहन रखे जाते थे वैसे ही ये सब वाहन इन वृक्षों के भी अधोभाग में रखे हुए रहते थे। (सुरम्मा पासाईया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा) ये वृक्ष भी सुरम्य, प्रासादीय, दर्शनीय, अभिरूप एवं प्रतिरूप—असाधारण सौन्दर्यवाले थे ॥ सू. ७ ॥

'ते णं तिलया जाव' इत्यादि,

जिस प्रकार अशोक वृक्ष अनेक प्रकारके तिलकादिक वृक्षो से चारों ओर से घिरा हुआ था उसी प्रकार ये तिलकवृक्ष से लेकर नंदिवृक्षतकके समस्त अशोकवृक्षको परिवेष्टित करनेवाले वृक्ष भी (अण्णेहिं बहूहिं पउमलयाहिं) अन्य अनेक

વાહન રાખવામાં આવતા હતાં, તે જ પ્રકારે તે બધા આ વૃક્ષોની નીચે પણ રાખવામાં આવતાં હતાં. (सुरम्मा पासाईया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा) એ વૃક્ષો પણ સુરમ્ય, પ્રાસાદીય, દર્શનીય, અભિરૂપ તેમજ પ્રતિરૂપ—અસાધારણ સૌન્દર્યવાળાં હતાં. (सू. ७)

'ते णं तिलया जाव' ઇત્યાદિ,

જે પ્રકારે અશોક વૃક્ષ અનેક પ્રકારનાં તિલકાદિક વૃક્ષોથી ચારે બાજૂથી ઘેરાએલું હતું તે જ પ્રકારે આ તિલક વૃક્ષથી માંડીને નંદિવૃક્ષ સુધીનાં સમસ્ત વૃક્ષો કે જે અશોક વૃક્ષને વીંટળાઈ ગયેલાં હતાં તે પણ (अण्णेहिं बहूहिं पउमलयाहिं)

चूयलयाहिं वणलयाहिं वासंतियलयाहिं अइमुत्तयलयाहिं कुंद-लयाहिं सामलयाहिं सव्वओ समंता संपरिक्खित्ता ॥ सू. ८॥

मूलम्–ताओ णं पउमलयाओ णिच्चं कुसुमियाओ

---

बहुविधाभि । 'पउमलयाहिं' पद्मलताभिः । 'णागलयाहिं'—नागलताभिः । 'असोगलयाहिं' अशोकलताभिः ।'चंपगलयाहिं' चम्पकलताभिः, 'चूयलयाहिं' आम्रलताभिः, 'वणलयाहिं' वनलताभिः, 'वासंतियलयाहिं' वासन्तिकलताभिः, 'अइमुत्तयलयाहिं' अतिमुक्तकलताभिः 'कुंदलयाहिं' कुन्दलताभिः । 'सामलयाहिं' श्यामलताभिः, द्रुमाभिर्दगजातीयाभिर्लताभिः, 'सव्वओ समंता संपरिक्खित्ता' सर्वतः समन्तात्सम्परिक्षिताः—सर्वदिक्षु परितः सम्यक् परिवेष्टिताः ॥ सू० ८॥

'ताओ णं पउमलयाओ' ताः खलु पद्मलताः—याभिस्तिलकादिनन्दिवृक्षान्ता वृक्षाः परितो वेष्टिता ता लता कीदृश्यः ? अत्राह—'णिच्चं कुसुमियाओ' नित्यं

---

प्रकारकी पद्मलताओ से (णागलयाहिं) नागलताओ से, (चंपगलयाहिं) चंपक-लताओं से, (चूयलयाहिं) आम्र–लताओं से, (वणलयाहिं) वनलताओं से (वासंतियलयाहिं) वासंतीलताओ से, (अइमुत्तयलयाहिं) अतिमुक्तलताओं से (कुंदलयाहिं) कुन्दलताओं से और (सामलयाहिं) श्यामलताओं से (सव्वओ समंता संपरिक्खित्ता) समस्त दिशाओंमें चारों ओर से घिरे हुए थे ॥ सू. ८॥

'ताओ णं पउमलयाओ' इत्यादि,

ये पद्मलता आदि लताएँ कि जिनसे तिलकसे प्रारंभकर नंदिवृक्ष तकके समस्तवृक्ष परिवेष्टित बने हुए थे, वे (णिच्चं कुसुमियाओ) नित्य प्रफुल्लित पुष्पों से

---

બીજી અનેક પ્રકારની પદ્મલતાઓથી (णागलयाहिं) નાગલતાઓથી (चंपगलयाहिं) ચંપકલતાઓથી (चूयलयाहिं) આમ્રલતાઓથી (वणलयाहिं) વનલતાઓથી (वासंतियलयाहिं) વાસંતીલતાઓથી (अइमुत्तयलयाहिं) અતિમુક્તક લતાઓથી (कुंदलयाहिं) કુંદલતાઓથી અને (सामलयाहिं) શ્યામલતાઓથી (सव्वओ समंता संपरिक्खित्ता) સમસ્ત દિશાઓમાં ચારે તરફથી ઘેરાયેલાં હતા. (સૂ. ૮)

"ताओ णं पउमलयाओ" ઈત્યાદિ,

આ પદ્મલતા આદિ લતાઓ કે જેનાવડે તિલકથી માંડીને નંદિવૃક્ષ સુધીનાં સમસ્ત વૃક્ષો વીંટળાએલાં હતાં તે (णिच्चं कुसुमियाओ) નિત્ય

**जाव वडिंसयधराओ पासाईयाओ दरिसणिज्जाओ अभिरूवाओ पडिरूवाओ ॥ सू. ९ ॥**

**मूलम्–तस्स णं असोगवरपायवस्स हेट्ठा ईसिं**

---

कुसुमिताः सदासञ्जातपुष्पाः । '**जाव वडिंसयधराओ**' यावदवतंसकधराः–शिरोभूषण–भूषिता इव दृश्यमानाः, यावच्छब्दोपादानात्–'**मऊरियलवइयथवइयगुलइय०**' इत्यादि द्रष्टव्यम्, मयूरितपल्लवितस्तवकितगुल्मितादीनि विशेषणानि लतास्वपि योज्यानि. अतएव–तादृश्यो लताः–'**पासाईयाओ**' प्रासादीयाः–चित्तप्रसन्नताकारिण्यः । '**दरिसणिज्जाओ**' दर्शनीयाः–द्रष्टुं योग्याः । '**अभिरूवाओ**' अभिरूपाः,–अभिमत–रूपवत्यः '**पडिरूवाओ**' प्रतिरूपाः–प्रतिविशिष्टरूपवत्यः ॥ ९ ॥

**टीका**–'**तस्स णं असोगवरपायवस्स**' इत्यादि । तस्य अशोकवरपादपस्य '**ईसिं खंधसमल्लीणे**' ईषत् स्कन्धसंलीनः–वृक्षस्कन्धसमीपवर्त्ती यः '**हेट्ठा**' अशोक-

---

युक्त थीं। ( **जाव वडिंसयधराओ** ) अतएव ऐसी ज्ञात होती थीं कि मानो इन्होंने शिरोभूषण ही धारण कर रक्खा है। यहां '**यावत्**' शब्द से "**मयूरित-पल्लवित-स्तवकित-गुल्मित**" इत्यादि विशेषणोंका ग्रहण हुआ है। अतएव ये लताएँ भी ( **पासाईयाओ दरिसणिज्जाओ अभिरूवाओ पडिरूवाओ** ) देखने वालोके चित्तको प्रसन्न करनेवाली, देखने योग्य, अभिरूप एवं असाधारण शोभा से युक्त थीं ॥ सू. ९ ॥

'**तस्स णं असोगवरपायवस्स हेट्ठा**' इत्यादि,

( **तस्स णं असोगवरपायवस्स हेट्ठा** ) उस उत्तम अशोकवृक्षके नीचे ( **ईसिं खंधसमल्लीणे** ) स्कन्ध (पेड) से कुछ दूरी पर ( **एत्थ णं** ) किन्तु उसीके अधः

---

પ્રફુલ્લિત પુષ્પોથી યુક્ત હતી. ( जाव वडिंसयधराओ ) તેથી એમ લાગતું હતું કે જાણે તેઓએ શિરોભૂષણ ( મુકુટ ) જ ધારણ કરેલા છે. અહીં યાવત્ શબ્દથી 'मयूरित पल्लवित स्तवकित गुल्मित' ઇત્યાદિ વિશેષણો લીધેલાં છે તેથી લતાઓ પણ ( पासाईयाओ दरिसणिज्जाओ अभिरूवाओ पडिरूवाओ ) જોનારાઓના ચિત્તને પ્રસન્ન કરવાવાળી, જોવાયોગ્ય, અભિરૂપ, તેમજ અસાધારણ શોભાયુક્ત હતી. ( સૂ. ૯ )

"तस्स णं असोगवरपायवस्स हेट्ठा" ઇત્યાદિ,

( तस्स णं असोगवरपायवस्स हेट्ठा ) તે ઉત્તમ અશોક વૃક્ષની નીચે ( ईसिं खंध-समल्लीणे ) સ્કન્ધ ( वृक्ष ) થી જરા દૂર ( एत्थ णं ) પણ તેના નીચેના

**खंधसमल्लीणे एत्थ णं महं एक्के पुढविसिलापट्टए पण्णत्ते विक्खं-भायामउस्सेहसुप्पमाणे किण्हे अंजण–घण–किवाण-कुवलय-हल-हर–कोसेज्जा-गास-केस-कज्जलंगी खंजण-सिंगभेद-रिट्ठय-जंबूफल-**

वृक्षस्य अध प्रदेशः, आसीदिति शेष. '**एत्थ णं महं एक्के पुढविसिलापट्टए पण्णत्ते**' अत्र–अस्मिन्–अध प्रदेशे '**महं**' महान्, '**एक्के**' एकः '**पुढविसिलापट्टए**' पृथ्वीशिलापट्टक–पृथ्वीशिलापीठ इत्यर्थः । '**पण्णत्ते**' प्रज्ञप्त कथितः । स पृथ्वीशिलापीठः कीदृशः ? इत्याऽऽह–'**विक्खंभा-याम–उस्सेह–सुप्पमाणे**' विष्कम्भाऽऽ-यामो-त्सेध-सुप्रमाणः, विष्कम्भ–पृथुत्वं–परितो विशालत्वम् । 'आयामो' दीर्घत्वम् । 'उत्सेधः'–उच्चत्वम् । एतैर्विष्कम्भा-ऽऽयामोत्सेधैः सु–सुष्ठुप्रमाणं यस्य स विष्कम्भाऽऽयामोत्सेधसुप्रमाणः, कस्यापि प्रमेयस्य त्रिधा परिमाणं भवति, तेषु विष्कम्भः पृथुत्वं–स्थूलत्वं, आयामो दैर्घ्यम्, उत्सेध उच्चैस्त्वम्, एतैस्त्रिभिः प्रमाणैः सुष्ठु युक्त नातिन्यूननात्यधिकप्रमाणयुक्त इति भावः । तथा–'**किण्हे**' कृष्ण–कृष्णवर्णः नील इति यावत् । कीदृशः कृष्ण ? अत्राह–'**अंजण–घण–किवाण–कुवलय–हलहरकोसेज्जा–गास–केस–कज्जलंगी खंजण–सिंगभेद–रिट्ठय–जंबूफल–असणग–सणबंधण–णीलुप्पलपत्तनिकर–अयसिकुसुम–प्पगासे**' अञ्जन–घन–कृपाण–कुवलय–हलधरकौशेया–काश–केश–कज्जलाङ्गी खञ्जन–शृङ्गभेद–रिष्टक –जम्बूफला–सनक–शणबन्धन–नीलोत्पलपत्रनिकराऽ-तसी-कुसुम–प्रकाशः, तत्र–अञ्जनः–

प्रदेश में (**महं**) विशाल (**एक्के पुढविसिलापट्टए पण्णत्ते**) एक पृथिवीशिलापट्ट था। (**विक्खंभा–याम–उस्सेह–सुप्पमाणे**) यह लम्बाई, चौडाई, एवं ऊंचाई में बराबर प्रमाणवाला था, हीनाधिक–प्रमाणवाला नहीं था। (**किण्हे**) वर्ण इसका कृष्ण–श्याम था। (**अंजण-घण-किवाण-कुवलय-हलहरकोसेज्जा–गास-केस-कज्जलंगी खंजण-सिंगभेद-रिट्ठय–जंबूफल–असणग–सणबंधण–णीलुप्पलपत्तनिकर-अयसिकुसुम-प्पगासे**) अतः इसका प्रकाश अंजनवृक्ष, घन–नीलमेघ, कृपाण–तलवार, कुवलय–नीलकमल, हलधरकौशेय–

ભાગમાં (**महं**) વિશાલ (**एक्के पुढविसिलापट्टए पण्णत्ते**) એક પૃથિવીશિલા-પટ્ટ હતો. (**विक्खंभा-याम-उस्सेह-सुप्पमाणे**) એ લંબાઈ પહોળાઇ તેમજ ઉંચા-ઇમાં સરખા માપવાળો હતો. ઓછાં વધારે માપનો નહોતો. (**किण्हे**) વર્ણ તેનો કૃષ્ણ–શ્યામ (કાળો) હતો. (**अंजण-घणं-किवाण-कुवलय-हलहरकोसे-ज्जा-गास-केस-कज्जलंगी खंजण-सिंगभेद-रिट्ठय-जंबूफल-असणग-सणबंधण-णीलुप्पल-पत्तनिकर-अयसिकुसुम-प्पगासे**) આમ તેનો પ્રકાશ આંજણ જેવો, નીલમેઘ,

**असणग-सणबंधन-णीलुप्पलपत्तनिकर-अयसिकुसुम-प्पगासे मर-गयमसार-कलित्त-णयणकीय-रासिवण्णे णिद्धघणे अट्ठसिरे आयं-**

---

अञ्जनकनामको वृक्षः। घनः—नीलजलधरः। कृपाणः—खड्गः, कुवलय—नीलकमलम्, हलधर-कौशेयं—बलभद्रकौशेयं—बलदेववस्त्रम्। आकाशं-दूरतया-नीलाऽवभासम्। केशाः-तरुणसम्बद्धा एव तेषामतिकृष्णत्वात्। कज्जलाङ्गी—कज्जलगृहं यत्र पात्रे कज्जलं स्थाप्यते, कज्जलकूपिका इति यावत्। खञ्जनः-खञ्जननामा कृष्णपक्षिविशेषः। शृङ्गभेदः—महिषशृङ्गखण्डः। रिष्टकं—नील-वर्णरत्नं। **जम्बूफलम्**—अतिपक्वम्—जम्बूफलं नीलतमं भवति। **'असणग'** असनकः—बीयकाभिधानो वृक्षविशेषः। 'शणबन्धनं—शणकुसुमवृन्तम्। नीलोत्पलपत्रनिकरः—नीलकमलपत्रसमूहः। अतसीकुसुमम् **'अलसीफूल'** इति भाषाप्रसिद्धं पुष्पम्। अत्र—अञ्जना-द्यतसीकुसुमान्तानां प्रकाश इव प्रकाशो यस्य स तथा, अञ्जनादिसदृशश्यामवर्णवान् पृथिवीशिलापट्टक इत्यर्थः। तथा—**'मरगय—मसार—कलित्त—णयणकीय—रासिवण्णे'** मरकत-मसार-कटित्र-नयनकनीनिका-राशिवर्णः। तत्र मरकतः—नीलमणिः पन्ना इति भाषायाम्। **मसारः**—पाषाणस्य चिक्कणीकरणार्थं शिलाखण्ड एव, अथवा—कषपट्टः—कसौटीति लोके-ख्यातः, कटित्रं—कृष्णचर्मण एव निर्मितम्। **नयनकनीनिका**—नेत्रकनीनिका—एतेषां राशिः= पुञ्जः, तस्य वर्ण इव वर्णो यस्य स तथा, **णिद्धघणे'** स्निग्धघनः—सजलमेघ इव

---

बलदेवका वस्त्र, आकाश, केश—युवापुरुष के वाल, कज्जलाङ्गी—काजल रखने की डिबिया, खंजनपक्षी, शृंगभेद—महिष के शृंग का टुकडा, रिष्टक—नीलवर्ण का रत्न, जम्बूफल—अतिशय पका हुआ जामुन, असनक—बीयक नामक वृक्षविशेष, सणबन्धन—सनके फूल का बेंट, नीलोत्पलपत्रनिकर—नीलकमल के पत्रों का समूह, और अतसीकुसुम—अलसी का पुष्प—इन सब के प्रकाश जैसा था। अर्थात् पृथिवीशिलापट्ट अञ्जन से लेकर अलसी के फूल के समान श्यामवर्ण था। [ **मरगय—मसार—कलित्त-णयणकीय—रासिवण्णे** ]

---

કૃપાણ—તલવાર, કુવલય—નીલકમલ. હલધરકૌશેય—બલદેવનાંવસ્ત્ર, આકાશ, કેશ—યુવાન પુરૂષનાવાળ, કજ્જલાંગી—કાજળ રાખવાની ડબ્બી, ખંજન—ખંજનપક્ષી, શૃંગભેદ—ભેંસનાં શીંગના કટકા, રિષ્ટક—નીલવર્ણનાં રત્ન, જંબૂફલ—અતિશય પાકેલ જાંબુ, અસનક—બીયક નામે વૃક્ષવિશેષ, સનબન્ધન—સનના ફૂલોનો બેંટ, નીલોત્પલપત્રનિકર—નીલ કમલનાં પાનનો સમૂહ અને અતસી-કુસુમ—અળસીનાં પુષ્પ એ બધાંના પ્રકાશ જેવો હતો. અર્થાત્ પૃથિવી-શિલાપટ્ટ અંજનથી માંડીને અળસીના ફૂલના જેવો શ્યામવર્ણનો હતો.

**सयतलोवमे सुरम्मे ईहामिय-उसभ-तुरग-णर-मगर-विहग-वालग-किण्णर-रुरु-सरभ-चमर-कुंजर-वणलय-पउमलय-भत्ति-चित्ते आई-**

श्यामः। आकारस्तस्य कीदृग इत्याह—'अट्ठसिरे' अष्टशिरस्कः—अष्टकोण इत्यर्थः। 'आयंसयतलोवमे' आदर्शतलोपमः-आदर्शतलस्य=दर्पगतलस्योपमा यस्य स तथा। 'सुरम्मे' अतीवरमणीयः। 'ईहामिय—उसभ—तुरग-नर—मगर—विहग—वालग—किण्णर-रुरु-सरभ-चमर-कुंजर—वणलय—पउमलय—भत्ति-चित्ते' ईहामृग—वृषभ-तुरग-नर-मकर—विहग—व्यालक—किन्नर—रुरु—शरभ चमर—कुञ्जर—वनलता—पद्मलता—भक्ति—चित्रः। तत्र—ईहामृगाः—वृकाः 'भेडिया' इति भाषाप्रसिद्धा। वृषभाः—बलीवर्दाः, तुरगाः—अश्वाः, नराः—मनुष्याः, मकराः—ग्राहाः, विहगाः—पक्षिगः, व्यालकाः—सर्पाः, किन्नराः—व्यन्तरदेवाः, रुरवः—मृगाः, शरभाः—अष्टापदाः, कुञ्जराः—हस्तिनः, वनलताः—प्रसिद्धाः, पद्मलताः—कमलल्लताः,

---

मरकत—पन्ना, मसार—पत्थर को चिकना करने वाला पत्थर अथवा कसौटी, कटित्र-कृष्णचमडे की वनी हुई वस्तुविशेष और नयनकीका—नेत्र की कनीनिका—इनसब के पुंज जैसा इसका वर्ण था। (**णिद्धघणे**) वह सजल-मेघ के समान श्याम था। [**अट्ठसिरे**] आठ इसके कोने थे। [**आयंसयतलोवमे**] इसका तलभाग आदर्श—काच-दर्पण जैसा चमकीला था। (**सुरम्मे**) इससे यह देखने में विशेषकर रमणीय लगता था। (**ईहामिय-उसभ-तुरग-नर-मगर-विहग-वालग-किण्णर-रुरु-सरभ-चमर-कुंजर-वणलय-पउमलय—भत्ति—चित्ते**) ईहामृग—वृक—भेडिया, वृषभ—बलीवर्द,तुरग—अश्व, नर-मनुष्य, मकर—ग्राह, विहग—पक्षी, व्यालक—सर्प, किन्नर—व्यन्तरदेव, रुरु—मृग, सरभ—अष्टापद,

---

(मरगय-मसार-कलित्त-णयणकीय-रासि-वण्णे) મરકત—પન્ના, મસાર—પત્થરને ચિકણું કરવાવાળો પત્થર અથવા કસોટી, કટિત્ર—કૃષ્ણ ચામડાની બનાવેલી વસ્તુવિશેષ અને નયનકીકા—આંખની કનીનિકા—એ બધાના પુંજ જેવો તેનો વર્ણ હતો. (णिद्धघणे) તે સજલ મેઘના જેવો શ્યામ હતો. (अट्ठसिरे) આઠ તેના ખૂણા હતા. (आयंसयतलोवमे) એનો તળિયાનો ભાગ આદર્શ—કાચ—દર્પણ જેવો ચમકીલો હતો. (सुरम्मे) તેથી તે જોવામા વિશેષ કરીને રમણીય લાગતો હતો. (ईहामिय—उसभ—तुरग—नर-मगर-विहग-वालग-किण्णर-रुरु-सरभ-चमर-कुंजर - वणलय - पउमलय-भत्ति—चित्ते) ઈહામૃગ—વૃક, વૃષભ-બળદ, તુરગ—અશ્વ, નર—મનુષ્ય, મકર ગ્રાહ, વિહગ—પક્ષી, વ્યાલક—સર્પ, કિન્નર—વ્યન્તરદેવ, રૂરૂ—મૃગ, સરભ—અષ્ટાપદ, ચમર, કુંજર—હાથી,વનલતા તેમજ પદ્મલતા એ બધાના ચિત્રો વડે એ સુંદર

णग-रूय-बूर-णवणीय-तूल-फरिसे सीहासणसंठिए पासाईए दरिसणिज्जे अभिरूवे पडिरूवे ॥ सू. १० ॥

मूलम्—तत्थ णं चंपाए णयरीए कूणिए णामं राया परिवसइ

ईहामृगादिपद्मलतान्तानां भक्तयः—रचनाविशेषाश्चित्राणि, ताभिश्चित्रः सुन्दरः । 'आईणग-रुय-बूर-णवणीय-तूल-फरिसे' आजिनक-रूत-बूर-नवनीत-तूल-स्पर्शः । तत्र आजिनकं-चर्ममयवस्त्रम्, रूतं-मृदुकार्पासविशेषः, बूरो—वृक्षविशेषः, नवनीतम्—'मक्खन' इति प्रसिद्धम्, तूलम्—अर्कतूलम्, एतेषां स्पर्श इव स्पर्शो यस्य शिलापट्टकस्य स आजिनक-रूत-बूर—नवनीत—तूल—स्पर्शः—अत्यन्तकोमल इत्यर्थः, 'सीहासणसंठिए' सिंहासनसंस्थितः सिंहासनाकारः । 'पासाईए' प्रासादीयः—हृदयहर्षकः । 'दरिसणिज्जे' दर्शनीयः—नेत्रा-ह्लादजनकः 'अभिरूवे' अभिरूपः, 'पडिरूवे' प्रतिरूपः ॥ सू. १० ॥

टीका—'तत्थ णं चंपाए णयरीए' इत्यादि—तत्र खलु चम्पायां नगर्याम्,

चमर, कुञ्जर—हाथी, वनलता एवं पद्मलता इन सबके चित्रों से यह सुन्दर था । ( आई-णग—रुय—बूर—णवणीय—तूल—फरिसे ) इसका स्पर्श आजिनक—चर्ममयवस्त्र, रूत—रुई, बूर—वृक्षविशेष, नवनीत—मक्खन और तूल—अर्कतूल इनके स्पर्श के समान था । तात्पर्य यह अत्यन्त कोमल स्पर्शवाला था। ( सीहासनसंठिए ) इसका आकार सिंहा-सन जैसा था । [ पासाईए दरिसणिज्जे अभिरूवे पडिरूवे ] हृदय को हर्ष देनेवाला, नेत्रोंको आह्लादित करनेवाला, एवं सुन्दर—आकृति संपन्न यह पृथिवीशिलापट्ट अपूर्व शोभा-संपन्न था ॥ सू० १० ॥

'तत्थ णं चंपाए णयरीए' इत्यादि,

( तत्थ णं चंपाए णयरीए ] उस चंपानगरी में ( कूणिए णामं राया )

હતો. (आईणग-रूय-बूर-णवणीय-तूल-फरिसे) તેનો સ્પર્શ આજિનક—ચર્મમયવસ્ત્ર, રૂ—મૃદુકપાસ, બૂર—વૃક્ષવિશેષ, નવનીત—માખણ અને તૂલ—અર્કતૂલ ( આકડાનું રૂ) તેના જેવો હતો. મતલબ કે તે અત્યન્ત કોમળ સ્પર્શવાળો હતો (सीहासनसंठिए) તેનો આકાર સિંહાસન જેવો હતો. (पासाईए दरिसणिज्जे अभिरूवे पडिरूवे) હૃદયને હર્ષ પમાડનાર, નેત્રોને આહ્લાદકારક તેમજ સુંદર આકૃતિસંપન્ન આ પૃથિવીશિલાપટ્ટ અપૂર્વ શોભાયુક્ત હતો. ( સૂ. ૧૦)

'तत्थ णं चंपाए णयरीए' ઇત્યાદિ,

(तत्थ णं चंपाए णयरीए) તે ચંપાનગરીમાં (कूणिए णामं राया) કૂણિક

**महया - हिमवंत–महंतमलय–मंदर–महिंदसारे अच्चंतविसुद्ध–दीह–रायकुल–वंस–सुप्पसूए णिरंतरं रायलक्खण–विराइयंग-पच्चंगे बहुजणबहुमाणपूइए सव्वगुणसमिद्धे खत्तिए मुइए मुद्धा-**

'**कूणिए णामं राया परिवसइ**' कूणिको नाम राजा परिवसति स्म, कूणिको भूपः कीदृशः ? इत्याह–'**महयाहिमवंत–महंतमलय–मंदर–महिंदसारे**' महाहिमवन्महामलयमन्दरमहेन्द्रसारः–महाहिमवन्महामलय–मन्दर–महेन्द्राणाम् एतन्नामकशैलानां सारः =शक्तिरिव सारो यस्य स तथा। '**अच्चंतविसुद्ध–दीह–रायकुल–वंस–सुप्पसूए**' अत्यन्तविशुद्ध–दीर्घ–राजकुल–वंश–सुप्रसूतः अत्यन्तविशुद्धौ=सर्वातिशायिनिर्मलौ दीर्घौ–अतिपुरातनौ यौ राज्ञां कुलवंशौ=मातापितृवंशौ तत्र सु–सुष्ठु प्रसूतः=प्रादुर्भूतः–समुत्पन्न इति यावत्, '**णिरंतरं**' निरन्तरम्, '**रायलक्खण–विराइयंगपच्चंगे**' राजलक्षण–विराजिताङ्गप्रत्यङ्गः–राजलक्षणैः = सामुद्रिकशास्त्रोक्तैर्विराजितमङ्गं=हस्तादिकं प्रत्यङ्गम्=अङ्गुल्यादिकं यस्य स तथा। '**बहुजणबहुमाणपूइए**' बहुजनबहुमानपूजितः–बहुभिर्जनैर्बहुमानैरतिशयसत्कृतः, '**सव्वगुणसमिद्धे**' सर्वगुणसमृद्धः–सर्वैः=अशेषैः गुणैः=

कूणिक नाम के राजा [ **परिवसइ** ] राज्य करते थे। ( **महया-हिमवंत-महंतमलय–मंदर–महिंदसारे**) यह महाहिमवंत पर्वत, महामलय पर्वत, मेरु पर्वत, और महेन्द्रपर्वत के तुल्य श्रेष्ठ थे। ( **अच्चंतविसुद्ध-दीह-रायकुल-वंस-सुप्पसूए** ) अत्यंत विशुद्ध एवं अति-प्राचीन मातापिता संबंधी कुल एवं वंशमें इनका जन्म हुआ था। (**णिरंतर-रायलक्खण-विराइयंगपच्चंगे**)अखंडित राजचिह्नो से इनके अंग एवं उपांग सुशोभित थे। (**बहुजणबहुमाणपूइए**) अनेकजनों द्वारा ये बहुमानपूर्वक सत्कृत होते रहते थे। ( **सव्वगुणसमिद्धे** ) अनेक नीति, दया एवं दाक्षिण्यादिक सद्गुणो से समृद्ध थे। ( **मुइये** ) ये सदा प्रसन्न-

नामे राजा (परिवसइ) राज्य करता हता. (महया-हिमवंत-महंत-मलय-मंदर-महिंद-सारे) એ મહાહિમવંત પર્વત, મહામલય પર્વત, મેરૂ પર્વત, અને મહેન્દ્ર પર્વતના જેમ શ્રેષ્ઠ હતા. (अच्चंत-विसुद्ध-दीह-रायकुल-वंस सुप्पसूए) અત્યંત વિશુદ્ધ તેમજ અતિ પ્રાચીન માતાપિતા સંબંધી કુળ તેમજ વંશમા તેમનો જન્મ થયો હતો. ( णिरंतर-राय-लक्खण-विराइयंगपचंगे ) અખંડિત રાજચિહ્નોથી તેમનાં અંગ તેમજ ઉપાંગ સુશોભિત હતા. ( बहुजण-बहुमाण–पूइए ) અનેક લોકોદ્વારા તે બહુમાન પૂર્વક સત્કાર પામતા હતા. ( सव्वगुणसमिद्धे ) અનેક નીતિ તેમજ દાક્ષિણ્ય આદિક સદ્‌ગુણોથી વધારે

**हिसित्ते माउपिउसुजाए दयपत्ते सीमंकरे सीमंधरे खेमंकरे खेमंधरे मणुस्सिंदे जणवयपिया जणवयपाले जणवयपुरोहिए**

नीतिदयादाक्षिण्यादिभिः समृद्धः=सम्पन्नः, 'मुइये' मुदितः=प्रसन्नः, अथवा 'मुइये' इति निर्दोषमातृकार्थो देशीशब्दः। उक्तं च 'मुइये जे होइ जोणिसुद्धे' इति। निर्दोषमातृकः-निर्दोषाया मातुरपत्यं पुमान्। 'खत्तिए' क्षत्रियः-शुद्धक्षत्रियगोत्रोत्पन्नः। 'मुद्धाहिसित्ते' मूर्द्धाभिषिक्तः-सर्वैरपि प्रत्यन्तराजैः प्रतापमसहमानैर्नान्यथा-ऽस्माकं गतिरिति परिभाव्य मूर्द्धभिर्मस्तकैरभिषिक्तः सम्मानितो मूर्द्धाभिषिक्तः। 'माउपिउसुजाए' मातापितृसुजातः- मातृभक्तः पितृनिदेशकारको विनीतश्च 'दयपत्ते' दयाप्राप्तः-निसर्गकारुणिकः। 'सीमंकरे' सीमाकरः-सीमा कुलमर्यादा, तस्याः करः=कारकः। 'सीमंधरे' सीमाधरः=कुलमर्यादाधारकः 'खेमंकरे' क्षेमङ्करः= लब्धवस्तुपालनशीलः। 'खेमंधरे' क्षेमधरः-क्षेमस्य धारकः, लब्धस्य परिपालनं क्षेमः-

---

चित्त रहा करते थे। अथवा निर्दोष माता के ये पुत्र थे। (खत्तिए) शुद्ध क्षत्रिय वंश में ये उत्पन्न हुए थे। (मुद्धाहिसित्ते) उनके प्रबल प्रताप को सहन करने में असमर्थ हो उनके राज्य की चतुर्दिग्वर्त्ती सीमाओं के राजा लोग उनके चरणों में अपना शिर नमाते थे। (माउपिउसुजाए) यह माताके भक्त एवं पिता की आज्ञा के परमपालक थे। (दयपत्ते सीमंकरे सीमंधरे खेमंकरे खेमंधरे) ये स्वभाव से दयालु थे, यह कुलमर्यादा के कारक थे, तथा उसका आराधक भी थे, लब्ध वस्तु के पालक एवं उसके धारक भी थे। अर्थात्-प्रजा-हित के योग्य वस्तुओं को प्राप्त करते थे, और प्राप्त वस्तुओं का रक्षण करते थे, उन पर स्वयं

---

समृद्ध હતા. (मुइये) તે સદા પ્રસન્નચિત્ત રહ્યા કરતા હતા અથવા નિર્દોષ માતાના તે પુત્ર હતા. (खत्तिए] શુદ્ધ ક્ષત્રિયવંશમાં તે ઉત્પન્ન થયા હતા. (मुद्धाहिसित्ते) તેમના પ્રબલ પ્રતાપને સહન કરવામાં અસમર્થ, તેમના રાજ્યની ચારેબાજુની સીમાઓના રાજાલોકો તેમનાં ચરણોમાં પોતાના શિર નમાવતા હતા. (माउपिउसुजाए) તે માતાના ભકત, તેમજ પિતાની આજ્ઞાના પરમ પાલક હતા. (दयपत्ते सीमंकरे सीमंधरे खेमंकरे खेमंधरे) તેઓ સ્વભાવે દયાળુ હતા. તેઓ કુળમર્યાદાનુ પાલન કરતા કારવતા અને તેના આરાધક પણ હતા. મેળવેલી વસ્તુના પાલક તેમજ તેના ધરાક પણ હતા. અર્થાત્ પ્રજાહિતને યોગ્ય વસ્તુઓને પ્રાપ્ત કરતા હતા અને પ્રાપ્ત

**सेउकरे केउकरे णरपवरे पुरिसवरे पुरिससीहे पुरिसवग्घे पुरिसा-सीविसे पुरिसपुंडरीए पुरिसवरगंधहत्थी अड्ढे दित्ते वित्ते विच्छिण्ण-**

---

तस्य कारको धारकश्चेतिभाव । '**मणुस्सिंदे**' मनुष्येन्द्रः—मनुष्येषु इन्द्र इव परमैश्वर्यवान् । '**जणवयपिया**' जनपदपिता—जनपदस्य—जनपदवासिनां जनानां विनय-शिक्षाप्रदानाद्रक्षणात् भरणपोषण—शीलतया च पितेव—पिता । '**जणवयपाले**' जन-पदपाल —जनपदवासिजीवमात्रप्रतिपालकः । '**जणवयपुरोहिए**' जनपदपुरोहितः—जनपदस्य=जनपदवासिनां जनानां शान्तिकारितया पुरोहित इव पुरोहितः, '**सेउकरे**' सेतुकरः—मार्गे सेतुः मर्यादाऽपि सेतुः, तदुभयस्य कर कर्त्तेति यावत् । '**केउकरे**' केतुकरः=चिह्नकारकः, अद्भुतकार्यकरणात्, '**णरपवरे**' नरप्रवरः—नराः साधारणाः तेषु प्रवरः=कोशसैन्यबलशालितया श्रेष्ठः, '**पुरिसवरे**' पुरुषवर —पुरुषेषु—पुरुषार्थ-

---

देख—रेख रखते थे । [ **मणुस्सिंदे जणवयपिया जणवयपाले जणवयपुरोहिए** ] मनुष्यों में ये इन्द्र समान परमैश्वर्यशाली थे । जनपदनिवासियों को विनय संबंधी शिक्षा के दाता होने से एवं उनका अच्छी तरह से रक्षण करने से तथा भरण-पोषण करने से ये देश के पिता तुल्य थे । इसीलिये ये जनपदपालक ऐसा विरुद धारण किये हुए थे । और इसीलिये ये प्रजाजन के लिये पुरोहित—सबसे पहिले हित में सावधान रहने वाले थे । [ **सेउकरे** ] ये उन्मार्गगामी मनुष्यों को मार्ग पर लाते थे और उन्हें मर्यादा में स्थिर करते थे । [ **केउ-करे** ] ये अक्षत कार्यों के करने वाले थे । [ **णरपवरे** ] ये मनुष्यों में श्रेष्ठ थे, ( **पुरिसवरे** ) और पुरुषों में प्रधान थे । "**नर**" इस शब्द से यहा साधारण

---

વસ્તુઓનું રક્ષણ કરતા હતા. તેમના પર જાતે દેખરેખ રાખતા હતા. ( મણુ-સ્સિંદે જણવયપિયા જણવયપાલે જણવયપુરોહિએ ) મનુષ્યોમાં તે ઇન્દ્ર સમાન પરમ ઐશ્વર્યશાલી હતા જનપદ નિવાસીઓને વિનય સંબંધી શિક્ષા દેવાવાળા હોવાથી તેમજ તેમનું સારી રીતે રક્ષણ કરવાથી તથા ભરણપોષણ કરવાથી તેઓ દેશના પિતા-તુલ્ય હતા. તે માટે જ તેઓ જનપદપાલક એવું બિરદ ધારણ કરતા હતા. અને એટલા માટે જ પ્રજાજનને માટે પુરોહિત—સર્વથી પહેલા હિતમાં સાવધાન રહેવાવાળા હતા. (સેઉકરે) તેઓ ઉન્માર્ગગામી મનુષ્યોને માર્ગ પર લાવતા હતા અને તેમને મર્યાદામાં સ્થિર કરતા હતા. (કેઉકરે) તેઓ અદ્ભુત કાર્યો કરનારા હતા. (ણરપવરે) તેઓ મનુષ્યોમાં શ્રેષ્ઠ હતા. (પુરિસવરે)

चतुष्टयकारकेषु जनेषु परमार्थचिन्तकतयाऽग्रेसर। 'पुरिससीहे' पुरुषसिंह', पुरुषः सिंह इव, सिंह इव निर्भयो वलवांश्च इत्यर्थ, 'पुरिसवग्घे' पुरुषव्याघ्र'—व्याघ्रसदृशशूर इत्यर्थ', 'पुरिसासीविसे' पुरुषाशीविष'—अवन्ध्यकोपत्वाद् भुजङ्गतुल्यः। 'पुरिसपुंडरीए' पुरुषपुण्डरीक'—पुरुष पुण्डरीकमिव=श्वेतकमलमिव मृदुहृदयवत्वात्, जनानां सुखकरत्वाच्च। 'पुरिसवरगंधहत्थी' पुरुषवरगन्धहस्ती—विपक्षपक्षमर्दकतया राजा पुरुषवरगन्धहस्ती-त्युच्यते। 'अड्ढे' आढच'—प्रचुरधनस्वामित्वात्, 'दित्ते' दृप'—दर्पवान्—शत्रुविजयकारित्वात्, स्वदेशस्वधर्माभिमतत्वाच्च। 'वित्ते' वित्त'—प्रख्यात', 'विच्छिण्ण—विउल—भवण—सयणा—सण—जाण—वाहणाइण्णे' विस्तीर्ण—विपुल-भवन-शयनाऽऽ-सन-यान-वाहनाकीर्ण',

---

मनुष्यों का ग्रहण हुआ है। उनमें श्रेष्ठ ये इसलिये थे कि ये कोश एवं सैन्यबल आदि से समृद्ध थे। पुरुष शब्द से चारों पुरुषार्थों को साधन करनेवाले मनुष्य-विशेष का ग्रहण हुआ है, उनमें ये प्रधान इसलिये थे कि ये परमार्थ के चिन्तक थे। (**पुरिससीहे पुरिसवग्घे पुरिसासीविसे पुरिसपुंडरीए पुरिसवरगंधहत्थी अड्ढे दित्ते वित्ते विच्छिण्ण-विउल-भवण-सयणा-सण-जाण-वाहणा-इण्णे**) पुरुषसिंह ये इसलिये थे कि पुरुषो में ये सिंह के समान निर्भय एवं वलिष्ठ थे। पुरुषव्याघ्र ये इसलिये थे कि ये पुरुषों में व्याघ्र के समान शूर थे। पुरुषाशीविष ये इसलिये थे कि ये पुरुषों में सर्प के समान अवंध्यकोपवाले थे। पुरुषों में पुंडरीक तुल्य ये

---

અને પુરૂષોમાં પ્રધાન—મુખ્ય હતા. 'નર' આ શબ્દથી અહીં સાધારણ મનુષ્યોનો અર્થ લેવાય છે. તેમનામાં શ્રેષ્ઠ તેઓ એટલા માટે હતા કે તેઓ કોશ તેમજ સૈન્યબલ આદિથી સમૃદ્ધ હતા. 'પુરૂષ' શબ્દથી ચારે પુરૂષાર્થોને સાધન કરવાવાળા મનુષ્ય વિશેષનો અર્થ ગ્રહણ કરાયો છે. તેમનામાં તેઓ પ્રધાન (મુખ્ય) એટલા માટે હતા કે તેઓ પરમાર્થના ચિન્તક હતા. (पुरिससीहे पुरिसवग्घे पुरिसासीविसे पुरिसपुंडरीए पुरिसवरगंधहत्थी अड्ढे दित्ते वित्ते विच्छिण्ण-विउल-भवण-सयणा-सण-जाण-वाहणा-इण्णे) પુરૂષસિંહ તેઓ એટલા માટે હતા કે પુરૂષોમાં તેઓ સિંહના જેવા નિર્ભય તેમજ બલિષ્ઠ હતા. પુરૂષવ્યાઘ્ર તેઓ એટલા માટે કહેવાતા કે તેઓ પુરૂષોમાં વાઘના જેવા શૂરાં હતા. પુરૂષાશીવિષ એટલા માટે હતા કે પુરૂષોમાં તેઓ સર્પના જેવા સફળ—કોપવાળા હતા. પુરૂષોમા પુંડરીક તુલ્ય તેઓ એ માટે હતા કે તેમનું હૃદય ગરીબો પ્રતિ દયાર્દ્ર—કોમલ હતું, તેમજ સાધા-

**विउल–भवण–सयणा–सण–जाण–वाहणाइण्णे बहुधण्ण-बहु-जायरूवरयए आओगपओगसंपउत्ते विच्छड्डिय–पउरभत्तपाणे**

विस्तीर्णानि=विस्तारमुपगतानि, विपुलानि=प्रचुराणि, भवनानि=गृहाः, शयनानि=शय्याः, आसनानि, यानानि=रथाः, वाहनानि=अश्वादयः, तैराकीर्णः=परिपूर्णः, '**बहुधण्णबहुजायरूवरयए**' बहुधान्यबहुजातरूपरजत –बहूनि धान्यानि यस्य स बहुधान्यः, बहूनि जातरूपरजतानि–जातरूपाणि=सुवर्णानि रजतानि=रूप्याणि च यस्य स बहुजातरूपरजतः, बहुधान्यश्चासौ बहुजातरूपरजतश्चेति तथा, बहुधान्यबहुसुवर्णरजत–परिपूर्ण इत्यर्थः। '**आओग–पओग–संपउत्ते**' आयोग–प्रयोगसम्प्रयुक्तः–आयोगो=धनलाभः, तस्य प्रयोगो=व्यवहारः, तत्र सम्प्रयुक्तो=व्यापृत –कृतोद्यम इत्यर्थः। '**विच्छड्डियपउर-**

इसलिये थे कि इनका हृदय गरीबों के प्रति दयार्द्र–कोमल था, एवं साधारण से भी साधारण मनुष्य के लिये ये सुखकारी थे। पुरुषों में उत्तम गंधहस्ती के तुल्य ये इसलिये थे कि ये शत्रुओं के मर्दक थे। प्रचुर धनका स्वामी होने से ये आढ्य थे। शत्रुओ के जीतनेवाले होने से ये दृप्त थे। स्वदेश एवं स्वधर्म का पालक होने से ये वित्त–प्रख्यात थे। इनके अनेक विस्तृत प्रासाद थे। बहुत अधिक अनेक प्रकार के शय्या, आसन, यान और वाहन इनके पास थे। [ **बहुधण्ण-बहुजायरूवरयए** ] इनका कोष्ठागार शालि गोधूमादि धान्यो से भरा रहता था। तथा–इनका भण्डार सोने चान्दी से सदा भरा रहता था। [ **आओगपओगसंपउत्ते** ] धनके लाभके व्यवहार में ये सदा उद्यमशील रहते थे। (**विच्छड्डिय–पउर–भत्त–पाणे**)

રણુમાં પણ સાધારણ મનુષ્યને માટે તેઓ સુખદાતા હતા પુરૂષોમાં ઉત્તમ ગંધહસ્તીના જેવા તેઓ એ માટે હતા કે તેઓ શત્રુઓને મર્દન કરનારા હતા. ઘણા ધનના સ્વામી હોવાથી તેઓ આઢય હતા. શત્રુઓને જીતવા-વાળા હોવાથી તેઓ દૃપ્ત હતા. સ્વદેશ તેમજ સ્વધર્મના પાલક હોવાથી તેઓ વિત્ત-પ્રખ્યાત હતા. તેમના અનેક મોટા મોટા મહેલો હતા. બહુજ વધારે અનેક પ્રકારની શય્યા, આસન, યાન (રથ) અને વાહનો તેમની પાસે હતાં. (बहुधण्ण–बहुजायरूव–रयए) તેમનો કોષ્ઠાગાર (કોઠાર) શાલિ ગોધૂમ આદિ ધાન્યોથી ભરેલો રહેતો હતો તથા તેમનો ભંડાર સોના ચાંદીથી સદા ભરપૂર રહેતો હતો (आओग–पओग–संपउत्ते) ધનના લાભના વ્યવહારમાં તેઓ હમેશ ઉદ્યમશીલ રહેતા હતા. (विच्छड्डिय–पउर–भत्त–पाणे) તેમના રસોડામાં

बहु-दासी-दास-गो-महिस-गवेलगप्पभूए पडिपुण्ण-जंत-कोस-कोट्ठागारा-उधागारे बलवं दुब्बलपच्चामित्ते ओहयकंटयं निहय-

भत्तपाणे ' विच्छर्दितप्रचुरभक्तपान'-विच्छर्दिते=दत्ते प्रचुरं=बहुले भक्तपाने=आहार-पानीये येन स तथा, वितीर्णबहुतरान्नजल इत्यर्थ । ' बहु-दासी-दास-गो-महिस-गवेलगप्पभूए ' बहु-दासी-दास-गो-महिष-गवेलकप्रभूत -बहवो दास्यो दासा गावो महिष्यो गवेलका'=मेषाश्च, तैः प्रभूतः=सुवृद्धिमुपगत । ' पडिपुण्ण-जंत-कोस-कोट्ठागारा-उधागारे' प्रतिपूर्ण-यन्त्र-कोश-कोष्ठागारा-ऽऽ-युधाऽऽगार , तत्र-यन्त्रं-शिल्पादि-साधनरूपं-जलयन्त्रादिकं प्रस्तरप्रक्षेपणादिरूप च, कोशो-दीनार-रत्नादिभाण्डागारम् , कोष्ठागारं-धान्यगृहम्, आयुधागारं=विविधशस्त्रास्त्रगृहं च प्रतिपूर्णं यस्य स तथा। 'बलवं' बलवान् - तनुबल-धनबल-सैन्यबलसम्पन्न । ' दुब्बलपच्चामित्ते ' दुर्बल-

इनके रसोई घर में इतना भक्तपान बनता था, कि सबके भोजन कर लेने पर भी बहुतसा बच जाता था, जो गरीबों को दे दिया जाता था। (बहु-दासी-दास-गो-महिस-गवेलग-प्पभूए ) इनकी सेवा के लिये बहुत से दासी दास इनके पास सर्वदा रहते थे। और इनकी पशुशाला में गाय, भैंस तथा मेंपोंका झुण्डका झुण्ड रहता था। (पडिपुण्ण-जंत-कोस-कोट्ठागारा-उधागारे) उनका यन्त्रागार यन्त्रो से-शिल्प के साधनों से, फुहारा के साधनो से, तथा पत्थर फेकने के साधनो से परिपूर्ण था, इनका कोश सुवर्णमुद्रा रत्न आदि से भरा रहता था, अनेक प्रकार के धान्यो से इनका कोष्ठागार परिपूर्ण था, तथा इनका शस्त्रागार अनेक प्रकारों के अस्त्रशस्त्रो से सदा भरा रहता था। (बलवं) ये राजा विशेष बलवान् थे, अर्थात् तनुबल

એટલી તો રસોઈ બનતી હતી કે બધાં ભોજન કરી લીધા પછી પણ ઘણીએ રસોઈ વધી પડતી હતી કે જે ગરીબોને આપી દેવામાં આવતી. (बहु-दासी-दास-गो-महिस-गवेलग-प्पभूए) તેમની સેવા માટે ઘણા દાસીદાસ તેમની પાસે સર્વદા રહ્યા કરતા હતા. તેમની પશુશાલામાં ગાય ભેંસ તથા ઘેટાનાં ટોળાનાં ટોળા રહેતાં હતાં. (पडिपुण्ण-जंत-कोस-कोष्ठागारा-उधागारे ) તેમના યંત્રા-ગાર યંત્રોથી-શિલ્પનાં સાધનોથી, ફુવારાનાં સાધનોથી, તથા પત્થર ફેંકવાના સાધનોથી પરિપૂર્ણ હતા. તેમનો ખજાનો સોનાના સિક્કા રત્નો આદિથી ભરપૂર રહેતો હતો. અનેક પ્રકારનાં ધાન્યોથી તેમનો કોઠાર પરિપૂર્ણ હતો તથા તેમનું શસ્ત્રાગાર અનેક પ્રકારનાં અસ્ત્રશસ્ત્રોથી સદા ભરેલું રહેતુ

**कंटयं मलियकंटयं उद्धियकंटयं अकंटयं ओहयसत्तुं निहयसत्तुं**

प्रत्यमित्र'—दुर्बला'=बलहीनाः प्रत्यमित्रा'=शत्रवो यस्य स दुर्बलप्रत्यमित्रः। अत' परं सर्वाणि विशेषणानि राज्यस्य, प्रशासदिति क्रियाया वा सन्ति, तस्माद् विशेषणानां नपुसकत्वं द्वितीयैकवचनान्तत्व च। 'ओहयकंटयं' उपहतकण्टकम्—उपहता'=सम्पत्तिहरणादिभि उपघातं प्राप्ताः कण्टका'=कण्टकवत् अन्तःप्रविष्टतया वेदनाप्रदाः तस्करादयो यस्मिन् राज्ये, शासने वा, तत् तथा। 'निहयकंटयं' निहतकण्टकम्—निहता'—बन्धनादिभिर्दण्ड प्राप्ता' कण्टका' यत्र तत् 'मलियकंटयं' मलितकण्टकम्—मलिता=प्रहारादिभिर्मथिता कण्टका यत्र तत्। 'उद्धियकंटयं' उद्धृतकण्टकम्—उद्धृता'=निजजनपदाद्बहिष्कृता· कण्टका यत्र तत् तथा। 'अकंटयं' अकण्टकम्—

धनबल एवं सैन्यबल से सपन्न थे। (दुब्बलपच्चामित्ते) इनके जितने भी वैरी थे वे सब दुर्बल-बलहीन थे। राज्य भी इनका (ओहयकंटयं निहयकंटयं मलियकंटयं उद्धियकंटयं) उपहतकटक—भीतर प्रविष्ट होकर चुभनेवाले काटोंकी तरह प्रजाको पीडित करनेवाले तस्कर आदिकों से सर्वथा रहित था। निहतकटक इसलिये कि जितने भी राज्य में चोर आदि थे वे सब बधनद्वारा बद्धकर कारावास मे बन्द कर दिये गये थे। मलितकटक इसलिये था कि राज्य मे जो भी चोर आदि थे वे सब प्रहारों द्वारा मथित कर दिये गये थे। उद्धृतकटक इसलिये था कि राज्य के समस्त चोर आदि अपने जनपद से बाहर कर दिये गये थे। इसप्रकार इनका राज्य (अकंटयं)

હતું. (बलवं) આ રાજા વિશેષ બળવાન હતા અર્થાત્ તનુબલ (શારીરિક બળ) ધનબલ તેમજ સૈન્યબલથી સ પન્ન હતા. (दुब्बलपच्चामित्ते) તેમના જેટલા વેરી હતા તેઓ બધા દુર્બલ-બલહીન હતા. તેમનુ રાજ્ય પણ (ओहयकंटयं निहयकंटयं मलियकंटयं उद्धियकंटयं) ઉપહતક ટક-અ દરમા જતો રહી દુખ્યા કરે તેવા કાટાના જેવા પ્રજાને દુ:ખ-પીડા કરનાર તસ્કર આદિકોથી સર્વથા રહિત હતુ નિહતક ટક-એટલા માટે કે રાજ્યમા જે કોઈ ચોર આદિ હતા તેઓ બધાને બ ધનથી બાધીને કારાવાસમા પુરી મુકેલા હતા મલિતક ટક એટલા માટે હતુ કે રાજ્યમાં જે કોઇ ચોર આદિ હતા તેઓ બધાને પ્રહારોથી મથિત કરવામા (મારવામા) આવ્યા હતા. ઉદ્ધૃતક ટક એટલા માટે હતું કે રાજ્યના તમામ ચોર આદિને પોતાનાં દેશથી બહાર કરી દેવામાં આવ્યા હતા. આ પ્રકારે તેમનું રાજ્ય (अकंटयं) એ ઉપાયો દ્વારા તસ્કર આદિ કાંટાઓને કાઢીને સર્વથા નિષ્ક ટક

**मलियसत्तुं उद्धियसत्तुं निज्जियसत्तुं पराइयसत्तुं ववगयदुब्भिक्खं मारिभयविप्पमुक्कं खेमं सिवं सुभिक्खं पसांतडिंबडमरं रज्जं पसासेमाणे विहरइ ॥ सू. ११ ॥**

प्रबलप्रतापभयाद् अविद्यमाना. कण्टका', यद्वा उपघात–निहनन–मलनोद्धारणक्रियाभिर्निर्मूलीकृताः कण्टका यस्मिन् तत्तथा। '**ओहयसत्तुं**' उपहतशत्रु–उपहताः=सम्पत्तिहरणादिभिरुपघातं प्राप्ताः शत्रवो यत्र तत् उपहतशत्रु राज्यं शासनं वा, '**निहयसत्तुं**' निहतशत्रु निहता =बन्धादिभिर्दण्ड प्राप्ताः शत्रवो यत्र तत्तथा, '**मलियसत्तुं**' मलितशत्रु–प्रहारादिभिर्मलिताः=मथिताः शत्रवो यत्र तत्तथा, '**उद्धियसत्तुं**' उद्धृतशत्रु–स्वदेशबहिष्कृतशत्रु। '**निज्जियसत्तुं**' निर्जितशत्रु–तत्सैन्यप्रहारादिभि. परिभूतशत्रु। '**पराइयसत्तुं**' पराजितशत्रु–पराजिताः शत्रवो यत्र तत्तथा, वशीकृतशत्रु इत्यर्थः। '**ववगयदुब्भिक्खं**' व्यपगतदुर्भिक्षम्–दुर्लभा भिक्षा दुर्भिक्षा, व्यपगता–दुर्भिक्षा यस्मात् तद् व्यपगतदुर्भिक्षं भिक्षादौर्लभ्यरहितमित्यर्थः; '**मारिभयविप्पमुक्कं**' मारीभयविप्रमुक्तम्=मरकीभयरहितम्। '**खेमं**' क्षेमम्–क्षेमयुक्तं सकुशलम्, '**सिवं**' शिवं–निरुपद्रवम्। '**सुभिक्खं**' सुभिक्षं–सुलभा भिक्षा यत्र तत्तथा। '**पसांतडिंबडमरं**' प्रशान्त-

इन उपायों द्वारा तस्कर आदि कांटों से रहित होकर सर्वथा अकंटक बना हुआ था। (**ओहयसत्तुं निहयसत्तुं मलियसत्तुं उद्धियसत्तुं निज्जियसत्तुं पराइयसत्तुं**) इसी प्रकार इनका राज्य उपहतशत्रु, निहतशत्रु, मथितशत्रु, उद्धृतशत्रु, निर्जितशत्रु एवं पराजितशत्रु था। [**ववगयदुब्भिक्खं मारिभयविप्पमुक्कं**] इनके राज्य में भिक्षुकों को भिक्षा की दुर्लभता नहीं थी। मरकी का भयतक भी जनता को पीडित नहीं करता था। अतः राज्य में सर्वत्र (**क्षेमं**) कुशलता का सद्भाव था। (**सिवं**) यहां की जनता में कुशलता छाने का एक कारण यह भी था कि यहां किसी भी

બન્યું હતું. (ઓહયસત્તું નિહયસત્તું મલિયસત્તું ઉદ્ધિયસત્તું નિજ્જિયસત્તું પરાઇયસત્તું) એ પ્રકારે જ તેનું રાજ્ય ઉપહતશત્રુ, નિહતશત્રુ, મથિતશત્રુ, ઉદ્ધૃતશત્રુ, નિર્જિતશત્રુ તેમ જ પરાજિતશત્રુ હતું. (વવગયદુબ્ભિક્ખં મારિભયવિપ્પમુક્કં) તેના રાજ્યમાં ભિક્ષુકોને ભિક્ષા મળવી દુર્લભ નહોતી. મરકીનો ભય પણ પ્રજાને દુઃખ આપતો નહિ. આમ રાજ્યમાં સર્વત્ર (ક્ષેમં) કુશળતાનો સદ્ભાવ હતો. (સિવં) અહીંની પ્રજામાં કુશળતા છવાઈ જવાનું એક કારણ એ પણ હતું કે અહીં કોઇપણ પ્રકારનો ઉપદ્રવ નહોતો. ઉપદ્રવનો અભાવ

मूलम्—तस्स णं कोणियस्स रन्नो धारिणी णामं देवी होत्था, सुकुमालपाणिपाया अहीण-पडिपुण्ण-पंचिंदियस-

डिम्बडमरम्—विघ्नकलहाभ्यां रहितम्, एवं यथा स्यात्तथा, एवंभूतं वा 'रज्जं' राज्यं—'पसासेमाणे' प्रशासत्—पालयन् 'विहरइ' विहरति=तिष्ठति ॥ सू. ११ ॥

टीका—तस्स णं कोणियस्स रन्नो' तस्य खलु कोणिकस्य राज्ञः 'धारिणी णामं देवी होत्था' धारिणी नाम देवी=राज्ञी आसीत्, सा धारिणी राज्ञी कीदृशी? अत्रोच्यते—'सुकुमालपाणिपाया' सुकुमारपाणिपादा—पाणी च पादौ च पाणिपादम्, प्राण्यङ्गत्वादेकवद्भावः, ततः सुकुमारं=कोमलं पाणिपादं यस्याः सा तथा, सुकोमलकरचरणा। 'अहीण-पडिपुण्ण-पंचिंदिय-सरीरा' अहीन-परिपूर्ण-पञ्चेन्द्रिय-शरीरा-लक्षणतोऽहीनानि=सम्पूर्णलक्षणानि, स्वरूपतः परिपूर्णानि=नातिह्रस्वानि नातिदीर्घाणि

प्रकार का उपद्रव नहीं था। उपद्रव का अभाव भी इसलिये था कि (सुभिक्खं) इसमें लोगों को खाद्यसामग्री सुलभ थी। (पसांतडिंवडमरं) विघ्न और कलहका यहाँ नाम भी नहीं था। इस प्रकार, अथवा ऐसे [रज्जं पसासेमाणे विहरइ] राज्य का पालन करते हुए कोणिक राजा राज्य करते थे॥ सू० ११॥

'तस्स णं कोणियस्स रन्नो' इत्यादि,

(तस्स णं कोणियस्स रन्नो) उस कोणिक राजा की (धारिणी णामं) धारिणी नाम की (देवी) रानी (होत्था) थी। (सुकुमालपाणिपाया) इसके हाथ और पैर दोनों ही बडे सुकुमार थे। (अहीण–पडिपुण्ण–पंचिंदिय–सरीरा) इसका शरीर लक्षणसे अहीन एवं स्वरूप से परिपूर्ण—न अतिह्रस्व और न अति-

પણ એટલા માટે હતો કે (सुभिक्ख) તેમાં લોકોને ખાવાની સામગ્રી સુલભ હતી. (पसांतडिंवडमरं) વિઘ્ન અને કલહ (કજીઆ)નું નામ નિશાન જ નહોતું. આ પ્રકારે અથવા—એવા (रज्जं पसासेमाणे विहरइ) રાજ્યનું પાલન કરતા થકા કોણિક રાજા રાજ્ય કરતા હતા. (સૂ. ૧૧)

"तस्स णं कोणियस्स रण्णो" ઇત્યાદિ.

(तस्स णं कोणियस्स रण्णो) તે કોણિક રાજાની (धारिणी णामं) ધારિણીનામની (देवी) રાણી (होत्था) હતી. (सुकुमाल–पाणि-पाया) તેના હાથ અને પગ બન્નેય બહુ સુકુમાર (કોમળ) હતા (अहीण-पडिपुण्ण-पंचिंदिय--सरीरा) તેનું શરીર લક્ષણોથી અહીન તેમ જ સ્વરૂપથી પરિપૂર્ણ—બહુ નાનું નહિ તેમ બહુ મોટું

**रीरा लक्खण-वंजण-गुणोववेया माणु-म्माण--प्पमाण--पडिपुण्ण-सुजाय-सव्वंग-सुंदरंगी ससि-सोमाकार-कंत-पिय--दंसणा सुरूवा**

नातिपीनानि नातिकृशानि पञ्च इन्द्रियाणि यत्र तदहीनपरिपूर्णपञ्चेन्द्रियं, तादृशं शरीरं यस्याः सा अहीनपरिपूर्णपञ्चेन्द्रियशरीरा—न्यूनाधिकवैकल्यादिदोषरहितलक्षणसहित—पञ्चेन्द्रियपूर्णसुन्दरशरीरा इति यावत् । **'लक्खण-वंजण-गुणोववेया'** लक्षण—व्यञ्जन-गुणोपपेता, तत्र—लक्षणानि=चिह्नानि हस्तरेखादिरूपाणि स्वस्तिकादीनि, व्यञ्जनानि=मशतिलादीनि, तान्येव गुणाः=प्रशस्तरूपाः तैरुपपेता=सुसम्पन्ना । **'माणु-म्माण-प्पमाण-पडिपुण्ण-सुजाय सव्वंग-सुंदरंगी'** मानोन्मान-प्रमाण-प्रतिपूर्ण-सुजात-सर्वाङ्ग-सुन्दराङ्गी, मानं=जलादिपरिपूर्णकुण्डादिप्रविष्टे पुरुषादौ यदा द्रोणपरिमितं जलादि निस्सरति तदा स पुरुषादिर्मानवानुच्यते, तस्य शरीरावगाहनाविशेषो मानमत्र गृह्यते । उन्मानम्= ऊर्ध्वमानं यत् तुलायामारोप्य तोलनेऽर्धभारप्रमाणं भवति तत् । प्रमाणं=निजाङ्गुलीभिरष्टोत्तरशताङ्गुलिपरिमितोच्छ्रायः, मानं च उन्मानं च प्रमाणं चेति मानोन्मानप्रमाणानि, तैः प्रतिपूर्णानि=संपन्नानि, अत एव सुजातानि=यथोचितावयवसंनिवेशयुक्तानि, सर्वाणि=सकलानि, अङ्गानि=मस्तकादारभ्य चरणान्तानि यस्मिंस्तत् तादृशम्—अत एव सुन्दर-

---

दीर्घ और पांचों इन्द्रियों से परिपूर्ण था। (**लक्खण—वंजण—गुणोववेया**) लक्षण-हस्तरेखादिकरूप एवं व्यंजन—मसतिल आदिरूप चिह्नों से यह सुसंपन्न थी। (**माणु-म्माण—प्पमाण—पडिपुण्ण—सुजाय—सव्वंग—सुंदरंगी**) मान, उन्मान एवं प्रमाण से परिपूर्ण होने के कारण यथोचित अवयवों की रचना से इसके मस्तक से लेकर चरणतक के समस्त अंग एवं उपांग वडे ही सुहावने थे, अतः इसका शरीर सर्वांग-सुन्दर था। (**ससि—सोमाकार—कंत—पियदंसणा**) चंद्रमा के तुल्य इसका स्वरूप

---

કે લાંબું ટુંકું નહિ તેવું અને પાંચેય ઇન્દ્રિયોથી પરિપૂર્ણ હતું (लक्खण-वंजण-गुणोववेया) લક્ષણ—હસ્ત રેખાદિકરૂપ તેમ જ વ્યંજન—મસા તલ આદિ રૂપ ચિહ્નોથી તે સુસંપન્ન હતી. (माणु-म्माण-प्पमाण-पडिपुण्ण-सुजाय-सव्वंग-सुंदरंगी) માન, ઉન્માન તેમ જ પ્રમાણથી પરિપૂર્ણ હોવાના કારણે યથોચિત અવયવોની રચનાથી તેના માથાથી લઈને પગ સુધીનાં સમસ્ત અંગ તેમ જ ઉપાંગો ઘણાં જ સુંદર હતાં તેથી તેનું શરીર સર્વાંગ—સુંદર હતું. (ससि-सोमाकार-कंत-पियदंसणा) ચંદ્રમા સમાન તેનું સ્વરૂપ હોવાથી તે

**करयल-परिमिय-पसत्थ-तिवली-वलियमज्झा कुंडलु-ल्लिहिय-गंड-लेहा कोमुइय-रयणियर-विमल-पडिपुण्ण-सोमवयणा सिंगारागार-**

मङ्गं=वपुर्यस्याः सा तथोक्ता **'ससि-सोमाकार-कंत-पिय-दंसणा'** शशि-सौम्याकार-कान्त-प्रियदर्शना, शशीव=चन्द्र इव सौम्यः=सुन्दरः आकारः=स्वरूपं यस्याः सा तथा, कान्ता=कमनीया-मनोहरा, प्रियं=हृदयाह्लादकं दर्शनं यस्याः सा तथा। ततः पदत्रयस्य कर्मधारयः। **'सुरूवा'** सुरूपा-शोभनं रूपं यस्याः सा तथा। **'करयल-परिमिय-पसत्थ-तिवली-वलिय-मज्झा'** करतल-परिमित-प्रशस्त-त्रिवली-वलित-मध्या-करतलेन परिमितः=प्रमाणितः-मुष्टिग्राह्य इत्यर्थः, स चासौ प्रशस्तः=शुभः, त्रिवली-वलितः=उदरोपरि वर्तमाना त्रिरेखा त्रिवलिस्तया वलितो=युक्तो मध्यो=मध्यभागो यस्या सा तथा। **'कुंडलु-ल्लिहिय-गंडलेहा'** कुण्डलो-ल्लिखित-गण्डलेखा, कुण्डलाभ्यामुल्लिखिता=घृष्टा गण्डलेखा=कपोलमण्डले रचिता पत्रावली यस्याः सा तथोक्ता, **'कोमुइय-रयणियर-विमल-पडिपुण्ण-सोमवयणा'** कौमुदित-रजनीकर-विमल-परिपूर्ण-सौम्यवदना, कौमुदितः शरच्चन्द्रिकासहितो यो रजनीकरः=पूर्णचन्द्रस्तद्वद् विमलं

होने से यह देखनेवालों के लिये बडी ही कान्त-मनोहर लगती थी, इसलिये इसका दर्शन हृदय का आह्लादक होता था। ( **सुरूवा** ) और यही कारण था कि जिसकी वजह से यह सुरूपा थी। ( **करयल-परिमिय-पसत्थ-तिवली-वलियमज्झा** ) इसका मध्यभाग-कटिप्रदेश करतलपरिमित अर्थात् मूठी में आसके इतना पतला था, प्रशस्त था, तथा इसका उदर त्रिवलीयुक्त था। ( **कुंडलु-ल्लिहिय-गंडलेहा कोमुइय-रयणियर-विमल-पडिपुण्ण-सोमवयणा** )इसके कपोलमंडल पर जो पत्रावळी रचित थी वह कानो में पहिरे हुए दोनों कुण्डलों से उल्लिखित-घृष्ट होती रहती थी। इसका जो सौम्यवदन-सुन्दर मुख था वह चन्द्रिका से समन्वित रजनीकर अर्थात्

જોનારાઓ માટે ઘણીજ કાંત-મનોહર લાગતી હતી. તેથી તેનું દર્શન હૃદયને આહ્લાદક થતું હતું. (सुरूवा) અને એજ કારણથી તે સુરૂપા હતી. (करयल परिमिय-पसत्थ-तिवली-वलियमज्झा) તેનો મધ્યભાગ-કટિપ્રદેશ કરતલ-પરિમિત એટલે મુઠ્ઠીમાં સમાઇ શકે એવો પાતળો હતો, પ્રશસ્ત હતો તથા પેટ ત્રિવલી (ત્રણ વલી) વાળું હતું. (कुंडलु-ल्लिहिय गंडलेहा कोमुइय-रयणियर-विमल-पडिपुण्ण--सोमवयणा) તેના કપોલમંડલ (બે ગાલ) પર જે પત્રાવલી (શોભા વધારવા બનાવેલ રચના) બનાવેલી હતી તે તેના કાનમાં પહેરેલાં બન્ને કુંડલોથી ઘસાતી હતી. તેનું જે સૌમ્ય વદન-મુખ હતું તે ચંદ્રિકાથી

**चारुवेसा संगय-गय-हसिय-भणिय-विहिय-विलास-सललिय-संलाव -णिउण-जुत्तोवयार-कुसला सुंदर-थण-जघण-वयण-कर-चरण-**

परिपूर्णं सौम्यं वदनं मुखं यस्याः सा तथा । **'सिंगारागारचारुवेसा'** शृङ्गाराऽऽगार-चारुवेषा, शृङ्गारस्य=शृङ्गाररसस्य अगारमिव=गृहमिव चारुः=शोभनो वेषो=नेपथ्यं-वस्त्रादिरचना यस्याः सा तथा । **'संगय-गय-हसिय-भणिय-विहिय-विलास-सललिय-संलाव-णिउण-जुत्तोवयार-कुसला'**-सङ्गत-गत-हसित-भणित-विहित-विलास-सललित-संलाप-निपुण-युक्तोपचार-कुशला, संगतेषु=समुचितेषु गत-हसित-भणित-विहित-विलास-सललित-संलापेषु निपुणा, तत्र-गतं=गमनं गजहंसादिवत्, हसितं=स्मितं, भणितं-वचनं कोकिलवीणादिस्वरेण च युक्तं, विहितं=चेष्टितं, विलासो=नेत्रचेष्टा, सललितसंलापः-वक्रोक्त्याद्यलङ्कारेण सहितं परस्परभाषणं, तेषु निपुणा=चतुरेत्यर्थः, तथा-युक्तोपचारेषु=सद्व्यवहारेषु कुशला=दक्षेत्यर्थः, ततः पदद्वय-

चन्द्रमा के समान बिलकुल विमल था। [ **सिंगारागारचारुवेसा** ] इसका नेपथ्य अर्थात् वेष शृङ्गार का घर था । [ **संगय-गय-हसिय-भणिय-विहिय-विलास-सललिय-संलाव-णिउण-जुत्तोवयार-कुसला** ] इसकी गति गज एवं हंसादिकों की गति जैसी मनोमुग्धकारी थी, इसका स्मित बहुत सुन्दर था, एवं इसका भाषण कोकिल और वीणा आदि के स्वर जैसा कर्णप्रिय था, इसकी चेष्टाएँ और विलास अति मनोहर थे, तथा सललितसंलाप-परस्परसंभाषण वक्रोक्ति आदि अलंकारों से युक्त था। मतलब कहने का यह है कि यह इन गमनादिक क्रियाओं में विशेष चतुर थी। साथ २ योग्य सद्व्यवहारों में भी यह कुशल थी। [ **सुंदर-थण-जघण-वयण-**

શોભતા ચંદ્રમા સમાન બિલકુલ નિર્મળ હતું. [ सिंगारा-गार-चारुवेसा ] તેનો નેપથ્ય અર્થાત્ વેષ જાણે શણગારનું ઘર હતું. ( संगय-गय-हसिय-भणिय-विहिय-विलास-सललिय-संलाव-णिउण-जुत्तोवयार - कुसला ) તેની ચાલ ગજ (હાથી) તેમ જ હંસ આદિકોની ગતિ જેવી મનોમુગ્ધકારી હતી. તેનું સ્મિત (હસવું) અતિ સુન્દર હતું. તેની બોલી કોયલ અને વીણા આદિના સ્વર જેવાં કર્ણપ્રિય હતાં. તેની ચેષ્ટાઓ અને વિલાસ અતિ મનોહર હતા. તથા સલલિતસંલાપ-પરસ્પર સંભાષણ-વક્રોક્તિ આદિ અલં-કારોવાળાં હતા. કહેવાનો મતલબ એ છે કે તે ગમન (ચાલ) આદિક ક્રિયા-ઓમાં બહુ ચતુર હતી. સાથે સાથે ઉચિત સદ્વ્યવહારોમાં પણ તે કુશલ

**नयण-लावण्ण-विलास-कलिया पासाईया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा, कोणिएणं रण्णा भंभसारपुत्तेण सद्धिं अणुरत्ता अविरत्ता, इट्ठे सद्द-फरिस-रस-रूव-गंधे पंचविहे माणुस्सए कामभोए पच्चणुभवमाणी विहरइ ॥ सू. १२ ॥**

स्य कर्मधारय । **'सुंदर-थण-जघण-वयण-कर-चरण-नयण-लावण्ण-विलास-कलिया'** सुन्दर-स्तन-जघन-वदन-कर-चरण-नयन-लावण्य-विलास-कलिता **'पासाईया'** प्रासादीया-**'दरिसणिज्जा'** दर्शनीया । **'अभिरूवा'** अभिरूपा **'पडिरूवा'** प्रतिरूपा, **'कोणिएण रण्णा भंभसारपुत्तेण'** कोणिकेन राज्ञा भंभसारपुत्रेण **'सद्धिं'** सार्द्धं-सह । **'अणुरत्ता'** अनुरक्ता-अनुरागवती, **'अविरत्ता'** अविरक्ता-पत्यौ प्रतिकूलेऽपि कोपरहिता, **'इट्ठे'** इष्टान्-मनोऽनुकुलान्, **'सद्द-फरिस-रस-रूव-गंधे'** शब्द-स्पर्श-रस-रूप-गन्धान्, **'पंचविहे'** पञ्चविधान्, **'माणुस्सए कामभोए'** मानुष्यकान्=मनुष्यसम्बन्धिनः कामभोगान्, **'पच्चणुभवमाणी'** प्रत्यनुभवन्ती-भुञ्जाना **'विहरइ'** विहरति स्म इति ॥ सू० १२ ॥

**कर-चरण-नयण-लावण्ण-विलास-कलिया** ] इसके पयोधरयुगल पुष्ट, जघन कदलीस्तंभ जैसे, वदन राकाशशि जैसा अर्थात् पूर्णिमा के चन्द्र जैसा था, कमल जैसे कोमल इसके कर चरण थे, नयनलावण्य अनुपम, एवं विलास मनोहर था । [ **पासाईया** ] यह राजा के चित्त को प्रतिसमय प्रमुदित करती रहती थी । द्रष्टव्य वस्तुओं में यह भी एक [ **दरिसणिज्जा** ] द्रष्टव्य वस्तु थी । [ **अभिरूवा पडिरूवा** ] अभिरूप एवं प्रतिरूप थी । ( **कोणिएणं रण्णा भंभसारपुत्तेण सद्धिं अणुरत्ता अविरत्ता इट्ठे सद्द-फरिस-रस-रूव-गंधे पंचविहे माणुस्सए कामभोए पच्चणुभवमाणी विहरइ** ] यह रानी अपने प्रियपति कोणिक राजा के साथ,

હતી. [ सुंदर-थण-जघण-वयण-कर-चरण-नयण-लावण्ण - विलास - कलिया ] તેના બન્ને સ્તનો પુષ્ટ, જઘન કેળનાં સ્તંભ જેવાં, વદન-મુખ રાકાશશિ-અર્થાત્ પૂર્ણિમાના ચંદ્ર જેવું હતું. કમળ જેવા સુંવાળા હાથ પગ હતાં. નેત્રનું લાવણ્ય અનુપમ તેમ જ વિલાસ મનોહર હતું. (पासाईया) તે રાજાના ચિત્તને હરવખત ખુશી કરતી રહેતી હતી. જોઈ શકાય તેવી વસ્તુઓમાં તે પણ એક (दरिसणिज्जा) જોવાલાયક હતી. [अभिरूवा पडिरूवा] અભિરૂપ તેમ જ પ્રતિરૂપ હતી. (कोणिएणं रण्णा भंभसारपुत्तेण सद्धिं अणुरत्ता अविरत्ता

मूलम्—तस्स णं कोणियस्स रण्णो एक्के पुरिसे विउलकयवित्तिए भगवओ पवित्तिवाउए भगवओ तद्देवसियं पवित्तिं णिवेदेइ ॥ सू०१३ ॥

टीका—'तस्स णं कोणियस्स रण्णो' इत्यादि । तस्य खलु कोणिकस्य राज्ञः 'एक्के' एकः 'पुरिसे' पुरुषः 'विउलकयवित्तिए' विपुलकृतवृत्तिकः—विपुला=अधिका कृता वृत्तिराजीविका यस्मै स विपुलकृतवृत्तिकः—दत्तप्रचुरजीविकः, 'भगवओ' भगवतः सर्वविधैश्वर्यवतो महावीरस्य 'पवित्तिवाउए' प्रवृत्तिव्यापृतः=प्रवृत्तौ—वार्तायां कदा कुतो विहृत्य क्व ग्रामे नगरे वा समवसृतः ' एतद्रूपायाम्—व्यापृतः नियुक्तः 'भगवओ' भगवतः—श्री महावीरस्य 'तद्देवसियं' तद्दैवसिकीं—तस्मिन् दिवसे भवा तद्दैवसिकी—ताम्, अर्थात् अस्मिन् दिवसेऽस्मान्नगराद् विहृत्याऽस्मिन्नगरे भगवान् विराजते. इत्येतद्रूपा दिवससम्बन्धिनीं 'पवित्तिं' प्रवृत्तिं वार्त्तां 'णिवेदेइ' निवेदयति—कथयतीति ॥ सू० १३ ॥

---

जो भंभसार ( श्रेणिक ) का पुत्र था; अनुरक्त होती हुई, उसके क्रोधित होने पर भी प्रतिकूलता से विमुख बन, इच्छित शब्द, स्पर्श, रस, रूप एवं गन्धरूप पांचों इन्द्रियों के मानवोचित प्रधान कामभोगों का अनुभव करती हुई आनंद से, अपना समय व्यतीत करती थी ॥ सू० १२ ॥

'तस्स णं कोणियस्स' इत्यादि,

[ तस्स णं कोणियस्स रण्णो ] उन कोणिक राजा के यहां [ एक्के पुरिसे ] एक ऐसा पुरुष नियुक्त था जिसे राजा की ओर से [ विउलकयवित्तिए ] बडी

---

इट्ठे सद्द–फरिस–रस–रूव–गंधे पंचविहे माणुस्सए कामभोए पच्चणुभवमाणी विहरइ ) એ રાણી પોતાના પ્રિયપતિ કોણિક રાજા કે જે ભંભસાર (શ્રેણિક) નો પુત્ર હતો તેની સાથે અનુરક્ત (પ્રેમાળ) હતી. રાજા ક્રોધિત થાય તો પણ તે પ્રતિકૂળતાથી વિમુખ હતી, એટલે અનુકૂળ હતી. મનને ગમે તેવા શબ્દ, સ્પર્શ, રસ, રૂપ તેમ જ ગંધરૂપ પાંચ ઈંદ્રિઓના માનવોચિત મુખ્ય કામભોગોનો અનુભવ કરતી આનંદથી પોતાનો સમય વ્યતીત કરતી હતી. ( સૂ. ૧૨ )

"तस्स णं कोणियस्स" ઇત્યાદિ.

( तस्स णं कोणियस्स रण्णो ) તે કોણિક રાજાને ત્યાં [ एक्के पुरिसे ] એક

मूलम्—तस्स णं पुरिसस्स वहवे अण्णे पुरिसा दिण्ण-भइ-भत्त-वेयणा भगवओ पवित्तिवाउया भगवओ तद्देवसिअं पवित्तिं णिवेदेंति ॥ सू० १४ ॥

टीका—तस्स णं पुरिसस्स' इत्यादि, तस्य भगवद्वार्ताहरस्य पुरुषस्य भृत्यस्य 'वहवे अण्णे पुरिसा' वहवोऽन्ये पुरुषाः—राजसेवकाः, ते कीदृशाः ? इत्याह—'दिण्ण–भइ–भत्त–वेयणा' दत्त–भृति–भक्त–वेतनाः—भृतिः स्वर्णमुद्रादिरूपा, भक्तम्–

आजीविका मिलती थी। (भगवओ पवित्तिवाउए) "भगवान् कब कहां से विहार कर किस ग्राम में समवसृत हुए है" इस समाचार को जानने के लिये वह नियुक्त किया गया था। तथा [भगवओ तद्देवसियं पवित्तिं णिवेदेइ] भगवान् के दैनिक वृतान्त का भी–अर्थात्–आजदिन भगवान् इस नगर से विहार कर इस नगर में विराज रहे है इस प्रकार की उनकी दैनिक विहारवार्ता का भी ध्यान रखता था। यह वृत्तान्त राजा के निकट निवेदन करता था ॥ सू० १३ ॥

'तस्स णं पुरिसस्स वहवे' इत्यादि,

[तस्स णं पुरिसस्स वहवे अण्णे पुरिसा] इस पुरुष के हाथ के नीचे और भी वहुत से अनेक पुरुष कि जिन्हे (दिण्ण–भइ–भत्त–वेयणा) इसकी तरफ से सुवर्णमुद्रादिरूप भृति, एव अन्नादिरूप भक्त इस प्रकार दोनों तरह का

એવો પુરૂષ રાખેલો હતો કે જેને રાજા તરફથી (विउलकयवित्तिए) મોટી આજીવિકા મળતી હતી. [भगवओ पवित्तिवाउए] "ભગવાન ક્યારે ક્યાથી વિહાર કરી ક્યા ગામમાં સમવસૃત થયા છે" એ સમાચાર જાણવાને માટે તેની નિમણુક કરેલી હતી. તથા [भगवओ तद्देवसियं पवित्तिं णिवेदेइ] ભગવાનનો દૈનિક વૃત્તાન્ત=અર્થાત્ આજરોજ ભગવાન આ નગરથી વિહાર કરીને આ નગરમાં બિરાજે છે એ પ્રકારની તેની દૈનિક (દિવસ સંબંધી) વિહારવાર્તા નું પણ ધ્યાન રાખતો હતો. આ વૃત્તાન્ત રાજાની પાસે નિવેદન કરતો હતો. (સૂ. ૧૩)

"तस्स णं पुरिसस्स वहवे" ઇત્યાદિ.

(तस्स णं पुरिसस्स वहवे अण्णे पुरिसा) તે પુરુષના હાથ નીચે બીજા પણ ઘણા પુરૂષો હતા. જેમને (दिण्ण–भइ–भत्त–वेयणा) તેના તરફથી સુવર્ણમુદ્રારૂપ ભૃતિ તેમજ અન્નાદિરૂપ ભક્ત–ખોરાક એમ બન્ને પ્રકારનું વેતન

**मूलम्——तेणं कालेणं तेणं समएणं कोणिए राया भंभसारपुत्ते बाहिरियाए उवट्ठाणसालाए अणेग-गणणायग-दंड-**

अनुरूपम्—इदं द्विविधं वेतनं—जीविका दत्तं येभ्यः, ते दत्तभृति—भक्तवेतनाः **'भगवओ पवित्तिवाउआ'**—भगवतः प्रवृत्तिव्यापृता —भगवद्विहारसमवसरणादिवृत्तान्त—निवेदने नियुक्ताः, भगवतस्तद्दैवसिकीं प्रवृत्तिं निवेदयन्ति—कथयन्तीति यावत्, नह्येकेन भृत्येन तादृगप्रतिबन्धविहारिणो भगवतः विहारसमवसरणवार्तानिवेदनं सुलभम्—इति हेतोरत्र कार्ये बहवो नियुक्ता इति भावः ॥ सू० १४ ॥

**टीका—'तेणं कालेणं तेणं समएणं'** इत्यादि, तस्मिन् काले तस्मिन् समये **'कोणिए राया भंभसारपुत्ते'** कोणिको राजा भंभसारपुत्रः—अयं कोणिको नृपो भंभसारस्य—श्रेणिकापरनामवतो नृपस्य पुत्रः, **'बाहिरियाए उवट्ठाणसालाए'** बाह्यायामुपस्थानशालायाम्—बाह्ये सभागृहे—**'अणेग-गणणायग-दंडणायग-राई-सर-तलवर-माडं-**

वेतन दिया जाता था। ( **भगवओ** ) वे भगवान् महावीर के ( **पवित्तिवाउया** ) विहार और समवसरण आदि वृत्तान्त का निवेदन करने के लिये नियुक्त थे, [ **भगवओ तद्देवसियं पवित्तिं णिवेदेंति** ] इसलिये वे भगवान् की विहारसंबंधी एवं समवसरणसंबंधी वार्ता प्रतिदिन आकर के निवेदन करते थे ॥ सू० १४ ॥

**'तेणं कालेणं तेणं समएणं'** इत्यादि।

( **तेणं कालेणं तेणं समएणं** ) उस काल उस समय ( **कोणिए राया भंभसारपुत्ते** ) भंभसार—श्रेणिक नृप के पुत्र कोणिक राजा ( **बाहिरियाए उवट्ठाणसालाए** ) बाहर की उपस्थान शाला में ( **अणेग—गणणायग—दंडणायग—**

( પગાર ) આપવામા આવતું ( भगवओ ) તેઓ ભગવાન મહાવીરના ( पवित्तिवाउया ) વિહાર અને સમવસરણ આદિ વૃત્તાંતનુ નિવેદન કરવા માટે રાખેલા હતાં ( भगवओ तद्देवसियं पवित्ति णिवेदेंति ) તેથી તેઓ ભગવાનની વિહાર સંબંધી તેમજ સમવસરણ સંબંધી વાર્તા દરરોજ આવીને નિવેદન કરતા હતા. ( સૂ. ૧૪ )

" तेणं कालेणं तेणं समएणं " ઈત્યાદિ.

( तेणं कालेणं तेणं समएणं ) તે કાલ તે સમયે ( कोणिए राया भंभसारपुत्ते ) ભંભસાર–શ્રેણિક રાજાના પુત્ર કોણિક રાજા ( बाहिरियाए उवट्ठाणसालाए ) બહારની ઉપસ્થાન શાલામા ( अणेग–गणणायग–दंडणायग–राई–सर–तलवर–माडं-

णायग-राई-सर-तळवर-माडंबिय-कोडुंबिय-मंति-महामंति-गणग-दोवारिय-अमच्च-चेड-पीढमद्द-नागर-नेगम-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाह-दूय-संधिवाल सद्धिं संपरिवुडे विहरइ ॥ सू० १५ ॥

बिय-कोडुंबिय-मंति-महामंति-गणग-दोवारिय-अमच्च-चेड-पीढमद्द-नागर-नेगम-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाह-दूय-संधिवाल सद्धिं' अनेक-गणनायक-दण्डनायक-राजेश्वर-तलवर-माडम्बिक-कौटुम्बिक-मन्त्रि-महामन्त्रि-गणक-दौवारिका-ऽमात्य-चेट-पीठमर्द-नागर-नैगम-श्रेष्ठि-सेनापति-सार्थवाह-दूत-सन्धिपालैः सार्धम्, तत्र-अनेके ये गणनायका'=समुत्पन्ने प्रयोजने ये गणं कुर्वन्ति ते गणनायकाः, गणप्रधाना इत्यर्थः', दण्डनायका-दण्डदातारः, राजानः-मण्डलाऽधिपाः, ईश्वरा-ऐश्वर्यसम्पन्नाः युवराजा', तलवरा'-तलं=सौवर्णपट्टबन्धः, परितुष्टनरपतिप्रदत्तेन तेन तलेन वराः, तलवराः-सन्तुष्टभूपप्रदत्तपट्टबन्धसुशोभितराजकल्पा' इत्यर्थः', 'माडंबिय' माडम्बिका', ग्रामपञ्चशतीपतय इत्यर्थः, यद्वा-सार्धक्रोश-द्वयपरिमितप्रान्तरैर्विच्छिद्य विच्छिद्य स्थितानां ग्रामाणामधिपतय', कोडुंबिय-कौटुम्बिका -बहुकुटुम्बभरणतत्परा, मन्त्रिण'-

राई-सर-तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय-मंति-महामंति-गणग-दोवारिय-अमच्च-चेड-पीढमद्द-नागर-नेगम-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाह-दूय-संधिवाल सद्धिं संपरिवुडे विहरइ) अनेक गणनायकों से-प्रयोजन उपस्थित होने पर जो गण तैयार करते थे ऐसे लोगों से, दण्डनायकों से, माण्डलिक राजाओं से, ईश्वरों से=युवराजों से, तलवरों से=राजाने सतुष्ट होकर जिन लोगों को सुवर्णका पट्टबन्ध दिया, उस पट्टबन्ध से सुशोभित राजातुल्य पुरुषों से, माडम्बिकों से=पॉच सौ ग्रामों के अधिपतियों से, अथवा-ढाई ढाई कोशका अन्तर जिन दो गामो के बीच में होता है ऐसे अनेक गामों के अधिपतियों से, कौटुम्बिकों से=कुटुम्ब के भरण-पोषण मे तत्पर व्यक्तियों से

बिय-कोडुंबिय-मंति-महामंति-गणग-दोवारिय-अमच्च-चेड-पीढमद्द-नागर-नेगम-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाह-दूय-संधिवाल सद्धिं संपरिवुडे विहरइ) અનેક ગણુનાયકોથી=પ્રયોજન ઉપસ્થિત થાય ત્યારે જે ગણુ તૈયાર કરતા હતા તેવા લોકોથી, દંડનાયકોથી, માંડલિક રાજાઓથી, ઈશ્વરોથી=યુવરાજોથી, તલવરોથી=રાજાએ સંતુષ્ટ થઈને જે લોકોને સુવર્ણનો પટ્ટબન્ધ આપ્યો હોય તે પટ્ટબંધથી સુશોભિત રાજા જેવા પુરૂષોથી, માડમ્બિકોથી=પાંચસો ગામના અધિપતિઓથી અથવા અઢી અઢી ગાઉનું અંતર જે બે ગામોની વચ્ચે હોય એવા અનેક ગામોના અધિપતિઓથી, કૌટુમ્બિકોથી=કુટુંબના ભરણુ પોષણમાં તત્પર વ્યક્તિઓથી, મંત્રીઓથી,=કર્તવ્યની સમીક્ષા (निर्णय)

कर्तव्यालोचनं मन्त्रः, सोऽस्यास्तीति मन्त्री, बहुसंख्यका मन्त्रिणः, विचारकारका इत्यर्थः, महामन्त्रिणः-मन्त्रिमण्डलप्रधानाः-सूक्ष्मातिसूक्ष्मविचारका इत्यर्थः, **गणग**-गणकाः-ज्योतिषिकाः-शुभाशुभफलादेशकारिणः, '**दोवारिय**' दौवारिका द्वारपालाः, अमात्याः-राज्यहितचिन्तकाः-अष्टादशानां प्रकृतीनां-नागरिकश्रेणीनां महत्तरा इति यावत्, चेटाः-दासाः, पीठमर्दाः-अङ्गसंवाहकाः-आसनसमीपवर्तिनः-सेवकाः, नागराः=नगरवासिनो नागरिका, नैगमाः-पौरवणिजः, श्रेष्ठिनः-लक्ष्मीकृपासूचकपट्टालंकृतकाः प्रधानव्यवहारिणः '**सेणावइ**' सेनापतयः-चतुरङ्गसेनायाश्चतुर्विधा अधिपाः, सार्थवाहाः-सार्थं समानव्यवसायिसमूहं वाहयन्ति योगक्षेमाभ्यां रक्षन्ति इति अर्थात्-समूहेन दूरदेशं गत्वा क्रयविक्रयकर्त्तारः। दूताः-सन्देशहराः, सन्धिपालाः-युध्यमानेन राज्ञा कृतःसन्धिःतं पालयन्तीति सन्धिपालाः। एतेषां द्वन्द्वं विधाय तैर्गणनायकादिसन्धिपालाऽन्तैः सार्द्धम्, अत्र आर्षत्वात् सन्धिपालशब्दोत्तरवर्तितृतीयाविभक्तेर्लोपः, '**संपरिवुडे**' सम्परिवृतः -सं-सम्यक्-समन्ताद्वेष्टितः '**विहरइ**' विहरति-सुखेन कालं नयति स्मेति भावः॥ सू० १५॥

---

**मन्त्रियों** से=कर्तव्य की समीक्षा करनेवाले विचारवान पुरुषो से, महामन्त्रियों से=सूक्ष्मातिसूक्ष्मविचारशील मन्त्रिमण्डल के प्रधानों से, **गणकों** से=शुभ, अशुभ फल का निवेदन करनेवाले ज्योतिषियों से, **दौवारिकों** से=द्वारपालो से, अमात्यों से=राज्य के हित चिन्तको से अर्थात् अठारह प्रकृतियों-ज्ञातियो के मुखियों से, **चेटों** से=दासों से, पीठमर्दकों से=अङ्गमर्दको से अर्थात् समीप में रहनेवाले सेवकों से, **नागरों** से=नागरिक पुरुषों से, **नैगमों** से=पौरवणिग्जनों से, **श्रेष्ठियों** से=लक्ष्मी की कृपा का सूचक पट्ट से सुशोभित मुख्य मुख्य सेठों से, **सेनापतियों** से=चतुरङ्गिणी सेना के नायकों से, **सार्थवाहों** से, दूतों से, तथा-**सन्धिपालों** से=शत्रु राजाओं के साथ सन्धि करने के लिये नियुक्त अधिकारी पुरुषों से परिवृत होकर बैठे हुए थे॥ सू० १५॥

---

. કરનારા વિચારવાન પુરૂષોથી, મહામંત્રિઓથી=સૂક્ષ્માતિસૂક્ષ્મ વિચારશીલ મંત્રિમંડલના પ્રધાનોથી, ગણકોથી=શુભ અશુભ ફલનાં નિવેદન કરવાવાળા જ્યોતિષિઓથી, દૌવારિકોથી=દ્વારપાળોથી, અમાત્યોથી,=રાજ્યહિતચિંતકોથી અર્થાત્ અઢાર પ્રકૃતિઓ-જ્ઞાતિઓના મુખિઓથી, ચેટોથી=દાસોથી, પીઠમર્દકોથી-અંગમર્દકોથી અર્થાત્ પાસે રહેવાવાળા (હજુરીઆ) સેવકોથી, નાગરોથી=નાગરિક પુરૂષોથી, નૈગમોથી=પૌર વણિક જનોથી, શ્રેષ્ઠિઓથી=લક્ષ્મીની કૃપાના સૂચક પટ્ટથી સુશોભિત મુખ્ય મુખ્ય શેઠોથી, સેનાપતિઓથી=ચતુરંગિણી સેનાના નાયકોથી, સાર્થવાહોથી, દૂતોથી તથા સંધિપાલોથી=શત્રુ રાજાઓની સાથે સંધિ કરવાને માટે નિમણુંક કરેલા અધિકારી પુરૂષોથી વીંટળાઇને બેઠા હતા. (સૂ. ૧૫).

मूलम्—तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महा-

**टीका**—'**तेणं कालेणं**' इत्यादि। अधुना चरमतीर्थङ्करं भगवन्तं श्रीमहावीरस्वामिनं वर्णयति- '**तेणं**' इति मत्रेण। स खलु भगवान् वचनागोचरगुणनिकररुचिरो महावीरोऽप्रतिबन्धविहारक्रमेण पूर्णभद्रमुद्यान समवसर्तुकाम' चम्पाया नगर्या समीपं ग्राममुपागत इति वर्ण्यते '**तेणं कालेणं तेणं समएणं**' इत्यादि। तस्मिन् खलु काले=चतुर्थारकलक्षणे तस्मिन् समये=कोणिकभूपशासनसमये, '**समणे**' श्रमण'—श्राम्यति—तीव्रतपसि यतते, इति श्रमण.। '**भगवं**' भगवान्—समग्रैश्वर्यसम्पन्न', '**महावीरे**' महावीर —महावीरनाम्ना प्रसिद्धश्चरमतीर्थकर:, गुणनिष्पन्नमिदं नाम. अधुना महावीरशब्द-व्युत्पत्तिमाह-विशेषेण शिवपदमियर्ति—गच्छतीति वीर अथवा विदारयति

'**तेणं कालेण तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे**' इत्यादि,

अब चरमतीर्थकर भगवान महावीर स्वामी का "**तेणं कालेणं**" इत्यादि १६ वे सूत्रद्वारा वर्णन किया जाता है। इसमें सर्वप्रथम वचन—अगोचर-प्रशस्त गुणों के समूह से विराजित वे प्रभु अप्रतिबध विहार करते हुए पूर्णभद्र नाम के उद्यान में पधारने के निमित्त चंपानगरी के समीपवर्ती ग्राम में पधारे। (**तेणं कालेणं तेणं समएणं**) अवसर्पिणी कालके चतुर्थ आरे के उस समयमें कि जिस समय में कोणिक राजा राज्य करते थे, (**समणे**) श्रमण—तीव्र तपस्या करनेवाले (**भगवं**) भगवान—समग्र ऐश्वर्य सम्पन्न (**महावीरे**) महावीर—जो अपुन-रागमनरूप से शिवपद को प्राप्त करते हैं वे वीर है, कर्मशत्रुओं का जो विदारण

"तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे" ઈત્યાદિ.

હવે ચરમ તીર્થંકર ભગવાન મહાવીર સ્વામીનું વર્ણન "तेणं कालेणं" ઇત્યાદિ ૧૯મા સૂત્રદ્વારા કરવામાં આવે છે તેમાં સર્વથી પ્રથમ વચન અગોચર-પ્રશસ્ત ગુણોના સમૂહથી વિરાજમાન તે પ્રભુ અપ્રતિબન્ધ વિહાર કરતા કરતા પૂર્ણભદ્ર નામના ઉદ્યાનમા પધારવાના નિમિત્તે ચંપા-નગરીના નજીકના ગામમા પધાર્યા (नेणं कालेण तेणं समएणं) અવસર્પિણી કાલના ચોથા આરાના તે સમયે કે જે સમયમા કોણિક રાજા રાજ્ય કરતા હતા, (समणे) શ્રમણ—તીવ્ર તપસ્યા કરવાવાળા (भगवं) ભગવાન-સમગ્ર ઐશ્વર્યસંપન્ન (महावीरे) મહાવીર—જે અપુનરાગમન—રૂપથી શિવ-પદને પ્રાપ્ત કરે છે તે વીર છે, કર્મશત્રુઓનો જે નાશ કરે છે તે વીર છે.

**वीरे आइगरे तित्थगरे सयंसंबुद्धे पुरिसुत्तमे पुरिससीहे पुरिस-**

रिपुसंघ-मिति वीरः। यद्वा—अनन्याऽनुभूतमहातपःश्रिया विराजते इति वीरः, यद्वा अन्तरङ्ग-मोहमहाबलनिर्दलनार्थमनन्ततपोवीर्यं व्यापारयति इति वीरः सामान्यजिनः; तदपेक्षया महांश्चासौ वीरः महावीरः। महत्त्वगुणयुक्तवीरत्वमस्य विविधपरिषहोपसर्गनिपातेऽपि निश्चलत्वात् जन्मसमये निजाङ्गुष्ठेन मेरोश्चालनाच्च। **'आइगरे'** आदिकरः-आदौ प्रथमतः स्वशासनापेक्षया श्रुतचारित्रधर्म-लक्षणं कार्यं करोति तच्छील आदिकरः। **'तित्थगरे'** तीर्थकरः—तीर्यते—पार्यते संसारमोहमहोद-

करते है—वे वीर है, जो अनन्य सदृश तपस्या की शोभा से विराजमान होते है-वे वीर है, जिन्होंने अन्तरग—अन्तःस्थित मोहके महाबल का नाश करने के लिये अपने अनन्त तप वीर्यका प्रयोग किया है—वे वीर है। इस प्रकार के वीरों—सामान्य जिनोंकी अपेक्षा भगवान् महत्त्व गुणों से युक्त है, **इसलिये वे महावीर हैं।** अनेक परिषह उपसर्ग उपस्थित होने पर भी वे निश्चल थे, जन्म समय में अपने अंगूठे से मेरु को हिलाया था यही इनका महत्त्व है। ऐसे अन्तिम तीर्थकर महावीर प्रभु जो इन **निम्नलिखित** विशेषणों से संपन्न है वे चंपानगरी के समीपस्थ ग्राममें पधारे, इस प्रकार इस सूत्रका संबंध लगाना चाहिये। वे महावीर प्रभु कैसे है? इस बात को नीचे लिखे हुए विशेषणों द्वारा सूत्रकार स्पष्ट करते है। वे प्रभु (**आइ-गरे**) आदिकर--स्वशासन की अपेक्षा श्रुतचारित्ररूप धर्म की आदि करने वाले है, (**तित्थयरे**) तीर्थकर है—जिसको प्राप्त कर जीव संसाररूपी महासमुद्र पार करते है

જે અનન્ય-સદૃશ તપસ્યાની શોભાવડે વિરાજમાન છે તે વીર છે. જેઓએ અંતરંગ-અંતઃસ્થિત મોહના મહાબલનો નાશ કરવાને માટે પોતાના અનંત તપવીર્ય (બલ)નો પ્રયોગ કર્યો છે તે વીર છે. એ પ્રકારના વીરોની-સામાન્ય જીનોની અપેક્ષા ભગવાન મહત્ત્વ ગુણોથી યુક્ત છે, તેથી તેઓ મહાવીર છે. અનેક પરીષહ ઉપસર્ગ ઉપસ્થિત થતાં પણ તેઓ નિશ્ચળ રહેતા, જન્મ સમયે પોતાના અંગુઠાવડે મેરૂ પર્વતને હલાવ્યો હતો એજ તેમનુ મહત્ત્વ છે. એવા અંતિમ તીર્થંકર મહાવીર પ્રભુ કે જે નિમ્ન લિખિત વિશેષણોથી સંપન્ન છે તે ચંપાનગરીના નજીકના ગામમાં પધાર્યા. એ પ્રકારે આ સૂત્રનો સંબંધ ઘટાવવો જોઈએ. તે મહાવીર પ્રભુ કેવા છે તે વાતને નીચે લખેલા વિશેષણોદ્વારા સૂત્રકાર સ્પષ્ટ કરે છે. તે પ્રભુ (आइगरे) આદિકર-સ્વશાસનની અપેક્ષા શ્રુતચારિત્રરૂપ ધર્મને આદિ કરવાવાળા છે, (तित्थयरे) તીર્થ-

धियेन तत् तीर्थम्—चतुर्विध सङ्घ, तत्करणशीलत्वात् तीर्थकरः । 'सयंसंबुद्धे' स्वयसम्बुद्धः—स्वयं परोपदेशमन्तरेण सम्बुद्ध'=सम्यक्तया बोधं प्राप्तः—स्वयंसम्बुद्धः । 'पुरिसुत्तमे' पुरुषोत्तम'—पुरुषेषु उत्तमः—श्रेष्ठः—ज्ञानाद्यनन्तगुणवत्त्वात्पुरुषोत्तमः । 'पुरिससीहे' पुरुषसिहः—पुरुषेषु सिंह'—रागद्वेषादिशत्रुपराजये दृष्टाऽद्भुतपराक्रमत्वात् इति, यद्वा—पुरुषः सिह इव इति पुरुषसिंह' । 'पुरिसवरपुंडरीए' पुरुषवरपुण्डरीकम्—पुण्डरीक—धवल-कमल, वरञ्च तत्पुण्डरीक वरपुण्डरीकं=धवलकमलप्रधानं, पुरुषो वरपुण्डरीकमिवेत्युपमि-तसमासे पुरुषवरपुण्डरीकम्, भगवतो वरपुण्डरीकोपमा च विनिर्गताऽखिलाऽशुभमलीमस-त्वात् सर्वैः शुभानुभावैः परिशुद्धत्वाच्च, यद्वा यथा पुण्डरीकं पङ्काज्जातमपि सलिले वर्द्धितमपि चोभयसम्बन्धमपहाय निर्लेपं जलोपरि रमणीयं संदृश्यते निजानुपमगुण-गणबलेन सुरासुर—नर—निकर—शिरोधारणीयतयाऽतिमहनीयं परमसुखाऽऽस्पदञ्च भवति

---

ऐसे चतुर्विध संघरूप तीर्थ के कर्त्ता हैं ( सयंसंबुद्धे ) परोपदेश के विना स्वयमेव बोध को प्राप्त हुए है, इसलिये स्वयंसंबुद्ध है, ( पुरिसुत्तमे ) ज्ञानादिक अनन्तशुद्ध गुणों की जागृति—विशिष्ट होने से पुरुषों में उत्तम है, ( पुरिससीहे ) रागद्वेषादिक शत्रुओं के पराजित करने में अद्वितीय—पराक्रम प्रदर्शित करने के कारण पुरुषसिंह हैं । ( पुरिसवरपुंडरीए ) पुरुषवरपुंडरीक—समस्त प्रकार की मलिनता के अभाव से पुरुषो में श्रेष्ठ शुभ्र कमल जैसे है । यहां भगवान् को जो वरपुंडरीक की उपमा दी गई है उसका भाव यह है कि जिस प्रकार कमल कीचड से उद्भूत होने पर एवं जल में वर्द्धित होने पर भी इन दोनों ( कीचड और जल ) के संबंध से रहित होकर निर्लेप होता है, जल से भिन्न होकर उसीमें रहता हुआ भी जैसे

---

કર છે. જેને પ્રાપ્ત કરીને જીવ સંસારરૂપી મહાસમુદ્ર પાર કરે છે એવા ચતુર્વિધ સંઘરૂપ તીર્થના કર્તા છે ( सयंसंबुद्धे ) પરોપદેશના વગર પોતાની મેળેજ બોધને પ્રાપ્ત કર્યો છે તેથી સ્વયસબુદ્ધ છે. ( पुरिसुत्तमे ) જ્ઞાનાદિક અનન્ત શુદ્ધ ગુણોની જાગૃતિ—વિશિષ્ટ હોવાથી પુરૂષોમા ઉત્તમ છે. (पुरिससीहे) રાગ દ્વેષાદિક શત્રુઓને પરાજિત કરવામાં અદ્વિતીય પરાક્રમ બતાવવાના કાર-ણથી પુરૂષ—સિંહ છે. ( पुरिसवरपुंडरीए ) પુરૂષવરપુંડરીક—સમસ્ત પ્રકારની મલિનતાના અભાવથી પુરૂષોમા શ્રેષ્ઠ શુભ્ર કમલ જેવા છે. અહીં ભગવાનને જે વરપુંડરીકની ઉપમા આપેલી છે તેનો ભાવ એ છે કે જે પ્રકારે કમલ કીચડથી ઉત્પન્ન થાય છે તેમજ જલમાં વધતું જાય છે છતાં પણ એ બન્ને ( કીચડ અને જલ )ના સબંધથી રહિત થઈને નિર્લેપ રહે છે. જલથી જુદા

**वरपुंडरीए पुरिसवरगंधहत्थी लोगुत्तमे लोगनाहे लोगहिए लोग-**

तथाऽयं भगवान् कर्मपङ्काज्जातो भोगाऽम्भोवर्द्धित सन्नपि निर्लेपस्तदुभयमतिवर्तते, गुणसम्पदाऽऽस्पदतया च केवलादिगुणभावादखिलभव्यजनशिरोधारणीयो भवतीति । '**पुरिसवरगंधहत्थी**' पुरुषवरगन्धहस्ती—गन्धयुक्तो हस्ती गन्धहस्ती वरश्चासौ गन्ध हस्ती वरगन्धहस्ती पुरुषो वरगन्धहस्तीव—पुरुषवरगन्धहस्ती, गन्धहस्तिलक्षणं यथा—

यस्य गन्धं समाघ्राय, पलायन्ते परे गजाः ।
तं गन्धहस्तिनं विद्यान्नृपतेर्विजयावहम् ॥ इति ॥

अत एव यथा गन्धहस्तिगन्धमाघ्राय अन्ये गजा इतस्ततो द्रुतं पलाय्य क्वापि निलीयन्ते तद्वदचिन्त्यातिशयप्रभाववशाद् विहरणसमीरणगन्धसम्बन्धगन्धतोऽपि—ईति-

---

सुन्दर दिखता है और सुर, असुर एवं नरों द्वारा अपने २ शिरपर धारण किये जाने से अतिमहनीय एवं अत्यंत प्रशंसनीय होता है, उसीप्रकार प्रभु भी कर्मरूप पङ्क से उद्भूत होने पर एवं भोगरूप जल में वर्द्धित होने पर भी इन दोनों से निर्लिप्त ही है एवं ज्ञानादिकगुणरूपी सम्पत्ति के स्थान होने से अर्थात् केवलज्ञानादिक गुणों से विशिष्ट होने से समस्त भव्यजनो द्वारा शिरोधार्य है। (**पुरिसवर-गंधहत्थी**) भगवान् पुरुषों में गंधहस्ती जैसे हैं। जिसकी गंध से अन्य गज दूर भाग जावे उसका नाम गंधहस्ती है। यह हस्ती जिस राजा के पास होता है वह नियम से शत्रुओं के बीच में रहने पर भी विजयलक्ष्मी प्राप्त करता है। इसी प्रकार प्रभु के विहार की गंध से भी उस २ स्थान से डमर—मरकी आदि उपद्रव

---

રહીને પણ તેમાંજ રહેતાં છતાં જેમ સુંદર લાગે છે અને સુર, અસુર તેમજ મનુષ્યોદ્વારા પોતપોતાને માથે ધારણ કરવામા આવતા અતિમહનીય તેમજ અત્યંત પ્રશંસનીય બને છે, તેમ પ્રભુ પણ કર્મરૂપ પંક (કીચડ) થી ઉત્પન્ન થયા છતાં તેમજ ભોગરૂપ જલમાં વૃદ્ધિ પામ્યા છતા પણ એ બન્નેથી નિર્લેપજ રહેલા છે તેમજ જ્ઞાનાદિક ગુણરૂપી સંપત્તિનું સ્થાન હોવાથી અર્થાત્ કેવલ જ્ઞાનાદિક ગુણોથી વિશિષ્ટ હોવાથી સમસ્ત ભવ્ય જીવો દ્વારા શિરોધાર્ય બનેલા છે. (**पुरिसवरगंधहत्थी**) ભગવાન્ પુરૂષોમાં ગંધહસ્તી જેવા છે, જેની ગંધથી બીજા હાથીઓ દૂર ભાગી જાય તેનું નામ ગંધહસ્તી છે. આ હાથી જે રાજાની પાસે હોય છે તે નિયમથી શત્રુઓની વચમાં રહેવા છતા પણ વિજયલક્ષ્મી પ્રાપ્ત કરે છે. એવી જ રીતે પ્રભુના વિહારની ગંધથી પણ

डमर-मरकादय उपद्रवा द्राग् दिक्षु प्रद्रवन्तीति, गन्धगजाश्रितराजवद् भगवदाश्रितो भव्यगण' सर्वदा विजयवान् भवतीति भवत्युभयोर्युक्तं सादृश्यम्। 'लोगुत्तमे' लोकोत्तम'-लोकेषु=भव्यसमाजेषु उत्तम'=उत्कृष्टतम', चतुस्त्रिंशदतिशयपञ्चत्रिंशद्वाणीगुणोपेतत्वात्। 'लोगनाहे' लोकनाथ'-लोकानां=भव्यानां नाथ'=नेता-योगक्षेमकरत्वात्। 'लोगहिए' लोकहित'-लोकः=एकेन्द्रियादिः सर्वप्राणिगणस्तस्मै हितः-तद्रक्षोपायप्रदर्शकत्वात्। 'लोगपईवे' लोकप्रदीप'-लोकस्य=भव्यजनसमुदायस्य प्रदीप'; तन्मनोऽभिनिविष्टानादिमिथ्यात्वतमःपटलव्यपगमेन विशिष्टात्मतत्त्वप्रकाशकत्वात्, यथा प्रदीपस्य सकलजीवार्थं तुल्यप्रकाशकत्वेऽपि चक्षुष्मन्त एव तत्प्रकाशसुखभाजो भवन्ति न त्वन्धास्तथा भव्या एव भगवदनुभावसमुद्भूतपरमानन्दसन्दोहभाजो भवन्ति नाभव्या इति

---

भी इतस्ततः भाग जाते है। एवं भगवान का भक्तजन भी सर्वदा विजयशील रहा करते है। (लोगुत्तमे) चौतीस अतिशय और पैंतीस वाणीगुणों से युक्त होने के कारण भगवान भव्यरूपी लोक में उत्कृष्टतम है। (लोगनाहे) लोकों के अर्थात् भव्यों के योगक्षेम करनेवाले होने से भगवान लोकनाथ है। (लोगहिए) सभी प्राणिया की रक्षा के उपाय दिखलाने के कारण भगवान् लोकों के अर्थात् एकेन्द्रिय आदि सभी प्राणियों के हितकारक है। इसलिये वे लोकहित है। (लोगपईवे) भगवान् लोगो के=भव्यों के मन में बसे हुए अनादिमिथ्यात्व पुञ्ज को दूर कर विशिष्ट आत्मतत्त्व प्रकाशित करने के कारण लोकप्रदीप है। जैसे-प्रदीप यद्यपि सभी जीवो के लिये तुल्यप्रकाश देने वाला है, तथापि नेत्रवान् मनुष्य ही उसके प्रकाश का आनन्द ले सकता है, उसी प्रकार भव्यलोग ही

---

ते ते स्थानमाथी डमर, मरकी-आदि उपद्रव पण आमतेम भागी जाय छे, तेमज भगवानना भक्तजनो पण सर्वदा विजयशील रह्या करे छे. (लोगुत्तमे) चोत्रीस अतिशयो अने पात्रीस वाणी गुणोथी युक्त होवाना कारणे भगवान भव्यरूपी लोकमां उत्कृष्टतम छे, (लोगनाहे) लोकोना अर्थात् भव्योना योगक्षेम करवावाळा होवाथी भगवान लोकनाथ छे. (लोगहिए) तमाम प्राणीओनी रक्षाना उपाय बतावनार होवाना कारणे भगवान लोकोना अर्थात् एकेन्द्रिय आदि तमाम प्राणीओना हितकारक छे ते माटे लोकहित छे. (लोगपईवे) भगवान लोकोना-भव्य जीवोना मनमा वसेला अनादि मिथ्यात्वपुंजने दूर करीने विशिष्ट आत्मतत्त्व प्रकाशित करनारा होवाना कारणे लोकप्रदीप छे. जेमके प्रदीप जो के बधा जीवोने माटे समान प्रकाश आपवावाळो होय छे, तोपण

**पईवे लोगपज्जोयगरे अभयदए चक्खुदए मग्गदए सरण-**

प्रतिबोधयितुं प्रदीपदृष्टान्तः, अतएव लोकपदेन भव्यानां ग्रहणम् । '**लोगपज्जोयगरे**' लोकप्रद्योतकरः—लोकशब्देनात्र लोक्यते—दृश्यते केवलालोकेन यथावस्थिततयेति व्युत्पत्त्या लोकालोकयोरुभयोर्ग्रहणम्, तेन—लोकस्य—लोकालोकलक्षणस्य सकलपदार्थस्य प्रद्योतः—लोकालोकप्रद्योतस्तं करोतीत्येवं शीलो लोकालोकप्रद्योतकरः सर्वलोकप्रकाशकरणशील । ताच्छील्ये कर्त्तरि टः प्रत्ययः । '**अभयदये**' अभयदयः-न भयम्—अभयम्, भयानामभावो वा—अभयम्—अक्षोभलक्षण आत्मनोऽवस्थाविशेषो मोक्षसाधनभूतमुत्कृष्टधैर्यमिति यावत्, दयते—ददातीति दयः, अभयस्य दयः अभयदयः, यद्वा—अभया—भयरहिता—दया—सर्वजीवसङ्कटप्रतिमोचनस्वरूपाऽनुकम्पा यस्य सोऽभयदय । '**चक्खुदये**' चक्षुर्दयः—चक्षुर्ज्ञानं—निखिलवस्तुतत्त्वाऽवभासकतया

भगवान के प्रभाव—जनित परमानन्द के भागी होते है, अभव्य नहीं । (**लोगपज्जोयगरे**) भगवान् लोकालोकलक्षण सभी पदार्थों के प्रकाशक है, इसलिये वे लोक—प्रद्योतकर है । (**अभयदए**) भगवान् अभयदय है—आत्माकी अक्षोभपरिणति का ना अभय है । दूसरे शब्द में इसे मोक्षका साधनभूत उत्कृष्ट धैर्य भी कहते है । प्रभुम इसे प्रदान करते है, अतः वे अभयदय कहे गये है । अथवा भयरहित दया जिनके पास है वे अभयदय है । भगवान की दया समस्त जीवो को संकटो से छुडाने वाली होती है, इसलिये प्रभु अभयदय है । (**चक्खुदये**) भगवान चक्षुर्दय है । जिस प्रकार हरिणादि जंगली जानवरों से युक्त वन में चोरो द्वारा लूटे गये और

નેત્રવાળો મનુષ્ય જ તેના પ્રકાશનો આનંદ લઈ શકે છે, તે પ્રકારે જ ભવ્ય લોક જ ભગવાનના પ્રભાવજનિત પરમાનન્દના ભાગી થાય છે; અભવ્ય નહિં. (लोगपज्जोयगरे) ભગવાન્ લોકાલોક લક્ષણ તમામ પદાર્થોના પ્રકાશક છે, તેથી તેઓ લોકપ્રદ્યોતકર છે. (अभयदये) ભગવાન અભયદાતા છે. આત્માના ક્ષોભરહિતપણાની પરિણતિનુ નામ અભય છે. બીજા શબ્દમાં તેને મોક્ષના સાધનભૂત ઉત્કૃષ્ટ ધૈર્ય પણ કહે છે. પ્રભુ તેને પ્રદાન કરવાવાળા છે તેથી તેઓ અભયદય છે. અથવા ભયરહિત દયા જેની પાસે છે તે અભયદય છે. ભગવાનની દયા સમસ્ત જીવોને સંકટોથી છોડાવવાવાળી હોય છે તે કારણથી પ્રભુ અભયદય છે. (चक्खुदये) ભગવાન ચક્ષુર્દય છે. જે પ્રકારે હરિણ આદિ જંગલી જાનવરોથી યુક્ત વનમા ચોરોદ્વારા લૂંટવામા

चक्षुःसादृश्यात् तस्य दयो दायकश्चक्षुर्दय', यथा हरिणादिशरण्येऽरण्ये लुण्टाक-लुण्टितेभ्यः पट्टिकादिदानेन चक्षूंषि पिधाय हस्तपादादि वद्ध्वा तैर्गर्त्ते पातितेभ्यः कश्चित्पट्टिकाऽपनोदेन चक्षुर्दत्वा मार्गं प्रदर्शयतीति तथा भगवानपि भवारण्ये रागद्वेषलुण्टाक-लुण्टिताऽऽत्मगुणधनेभ्यो दुराग्रहपट्टिकाऽऽच्छादितज्ञानचक्षुर्भ्यो मिथ्यात्वगर्ते पातितेभ्यस्त-दपनयनपूर्वकं ज्ञानचक्षुर्दत्वा मोक्षमार्गं प्रदर्शयति । एतदेव प्रकारान्तरेणाऽऽह **'मग्गदए'** मार्गदय'—सम्यग्रत्नत्रयलक्षण' शिवपुरपथः, यद्वा—विशिष्टगुणस्थानप्रापकः क्षयोपशमभावो

आंखों के ऊपर पट्टी वांधकर एवं हाथ पैर वाधकर खड्डे में पटके गये प्राणियों को कोई दयालु सज्जन उनकी आंखों की पट्टी खोल कर एवं उन्हें खड्डे से निकाल कर मार्ग दिखलाता है और इस अपेक्षा जैसे वह उन्हे व्यावहारिकरूप से चक्षु का दाता कहा जाता है उसी प्रकार भगवान् भी इस संसाररूप अरण्य मे रागद्वेष आदि चोरो द्वारा जिनका आत्मगुणरूपी धन हरण किया जा चुका है एवं दुराग्रहरूपी पट्टी द्वारा जिनके ज्ञानरूपी नेत्र ढके हुए है तथा जो मिथ्यात्वरूपी खड्डे मे पडे है ऐसे प्राणियों को उस मिथ्यात्वरूपी खड्डे से निकालकर ज्ञानरूपी चक्षु देकर उन्हें मुक्तिमार्ग दिखलाते है, अत' प्रभु **चक्षुर्दय** है। इसी वातको प्रकारान्तर से सूत्रकार पुनः प्रदर्शित करते है—( **मग्गदए** ) वे प्रभु मार्गदय है—सम्यग्दर्शनादि रत्नत्रय मुक्ति का मार्ग है, अथवा विशिष्ट गुणस्थानो का प्रापक क्षयोपशमभाव भी मार्ग है । प्रभु इसके दाता है। ( **सरणदए** ) कर्मरूपी शत्रुओं से वशीकृत होने के कारण

આવેલાં અને આંખોના ઉપર પટ્ટી બાંધીને તેમજ હાથ પગ બાંધીને ખાડામા નાખી દેવામાં આવેલા પ્રાણિઓને કોઇ દયાળુ સજ્જન તેમની આખોની પટ્ટી ખોલીને તેમજ તેમને ખાડામાંથી બહાર કાઢીને રસ્તો બતાવે છે અને તે અપેક્ષાએ તે જેમ તેના વ્યાવહારિકરૂપથી ચક્ષુનો દાતા કહેવાય છે, તેજ પ્રકારે ભગવાન પણ આ સસારરૂપ અરણ્યમા રાગદ્વેષ આદિ ચોરો દ્વારા જેના આત્મગુણરૂપી ધન હરણ કરવામા આવી ચુકેલુ છે તેમજ દુરાગ્રહરૂપી પટ્ટીદ્વારા જેના જ્ઞાનરૂપી નેત્ર ઢાંકી દીધેલાં છે તથા જે મિથ્યાત્વરૂપી ખાડામાં પડયા છે તેવા પ્રાણિઓને તે મિથ્યાત્વરૂપી ખાડામાથી કાઢીને જ્ઞાનરૂપી ચક્ષુ આપીને તેમને મુક્તિમાર્ગ બતાવે છે-તેથી પ્રભુ ચક્ષુર્દય છે. આ વાતને પ્રકારાન્તરથી સૂત્રકાર ફરીને પ્રદર્શિત કરે છે, (मग्गदए) તેઓ (પ્રભુ) માર્ગદય છે—સમ્યગ્દર્શનાદિ રત્નત્રય મુક્તિનો માર્ગ છે અથવા વિશિષ્ટ ગુણસ્થાનોને પ્રાપ્ત કરાવનાર ક્ષયોપશમભાવ પણ માર્ગ છે. પ્રભુ તેનો દાતા છે. (सरण-

दए जीवदए बोहिदए धम्मदए धम्मदेसए धम्मनायए धम्म-

मार्ग', तस्य दय'—दाता, 'सरणदए' शरणदयः—शरणं—परित्राणं कर्मरिपुवशीकृततया व्याकुलानां प्राणिनां रक्षणस्थानं वा तस्य दयः। 'जीवदए' जीवदयः—जीवेषु—एकेन्द्रियादिसमस्तप्राणिषु दया—सङ्कटमोचनलक्षणा यस्येति, यद्वा—जीवन्ति मुनयो येन स जीव'—संयमजीवितं तस्य दयः। 'बोहिदए' बोधिदय'—बोधिः—जिनप्रणीतधर्ममूलभूता तत्त्वार्थश्रद्धानलक्षणसम्यग्दर्शनरूपा तस्या दय'। 'धम्मदए' धर्मदय'—धर्मः—दुर्गतिप्रपतज्जन्तुसंरक्षणलक्षणः श्रुतचारित्रात्मकस्तस्य दयः। 'धम्मदेसए' धर्मदेशकः—धर्मः=प्राक्प्रतिपादितलक्षणस्तस्य देशक.=उपदेशक'। 'धम्मनायए' धर्मनायक'—

व्याकुल हुए प्राणियों को प्रभु निर्भय स्थान के प्रदायक है, (जीवदए) भगवान् की दया केवल सञ्ज्ञी पचेन्द्रिय जीवों तक ही सीमित (व्याप्त) नहीं है, किन्तु एकेन्द्रिय से लेकर समस्त संज्ञी असंज्ञी पचेन्द्रिय प्राणियोतक भी वह एकरस होकर वह रही है, इसलिये वे जीवदय हैं। अथवा—मुनिजन जिस जीवनसे जीते है ऐसा जो संयमरूप जीवित है उसके प्रदाता होने से प्रभुको जीवदय कहा गया है। (बोहिदए) भगवान् समकितरूपी बोधको देने वाले है। (धम्मदए) दुर्गति में गिरते हुए प्राणियोंको जो धारण अर्थात् रक्षण करे वह श्रुतचारित्रात्मक धर्म ही धर्म है। भगवान उस धर्मके दाता है। (धम्मदेसए) भगवान् उक्तस्वरूप धर्मके उपदेशक है। (धम्मनायए) भगवान् उस धर्मके नायक=नेता अर्थात् प्रभवस्थान है।

दए) કર્મરૂપી શત્રુઓથી વશ કરાએલા હોવાના કારણે વ્યાકુલ થએલાં પ્રાણિઓને પ્રભુ નિર્ભય સ્થાનનો પ્રદાયક છે. (जीवदये) ભગવાનની દયા કેવલ સંજ્ઞી પંચેંદ્રિય જીવો સુધી જ વ્યાપ્ત (મર્યાદિત) નથી, પરંતુ એકેંદ્રિયથી માંડીને સમસ્ત સંજ્ઞી અસંજ્ઞી પંચેંદ્રિય પ્રાણીઓ સુધી પણ તેઓ એકરસ થઈને વહે છે, તે માટે તેઓ જીવદય છે. અથવા મુનિજન જેવું જીવન જીવે છે તેવું સંયમરૂપ જીવન જે છે તેના પ્રદાતા હોવાથી પ્રભુને જીવદય કહેલા છે. (बोहिदये) ભગવાન્ સમકિતરૂપી બોધને દેવાવાળા છે. (धम्मदए) દુર્ગતિમાં પડતા પ્રાણિઓનો ઉદ્ધાર અર્થાત્ રક્ષણ કરે તે શ્રુતચારિત્રાત્મક ધર્મ જ ધર્મ છે. ભગવાન્ તે ધર્મના દાતા છે. (धम्मदेसए) ભગવાને ઉપર કહેલા સ્વરૂપ ધર્મના ઉપદેશક છે. (धम्मनायए) ભગવાન તે ધર્મના નાયક=નેતા અર્થાત્ પ્રભવસ્થાન છે. (धम्मसारही) ભગવાન ધર્મરૂપ

**सारही धम्मवरचाउरंत-चक्कवट्टी दीवो ताणं सरणगई पइट्ठा**

धर्मस्य नायकः=नेता प्रभव इति यावत्। '**धम्मसारही**' धर्मसारथि–धर्मस्य सारथिः, भगवति सारथित्वारोपेण धर्मे रथत्वारोपो व्यज्यते इति परम्परितरूपकालङ्कारस्तस्माद् यथा सारथी रथद्वारा तत्स्थमध्वनीनं सुखपूर्वकमभीष्ट स्थान नयति उन्मार्गगमनादितश्च प्रतिरुणद्धि तथा भगवान् धर्मद्वारा मोक्षस्थानमिति भावः। '**धम्मवर-चाउरंत-चक्कवट्टी**' धर्मवरचातुरन्तचक्रवर्ती–दान–शील–तपो–भावैः चतसृणा नरकादिगतीनां चतुर्णां वा कषायाणामन्तो नाशो यस्मात्, **अथवा**–चतस्रो गतीश्चतुरः कषायान् वाऽन्तयति नाशयतीति, **यद्वा**–चतुर्भिर्दानशीलतपोभावैः कृत्वाऽन्तो रम्योऽथवा चत्वारो दानादयोऽन्ता–अवयवा

(**धम्मसारही**) भगवान् धर्मरूप रथका संचालन करनेवाले हैं। भगवानमें सारथित्वका आरोप करनेसे धर्ममें रथत्वका आरोप व्यञ्जित होता है, इसलिये यहाँ परम्परितरूपक अलकार समझना चाहिये। इसका अभिप्राय यह है कि, जैसे सारथी रथद्वारा रथ पर बैठे हुए पथिकोंको सुखपूर्वक उनके अभीष्ट स्थानमे पहुँचाता है, उन्मार्गगमन आदिसे उनको रोकता है, उसी प्रकार भगवान् भी धर्मरूप रथमें भव्य प्राणियोंको बैठाकर उसके द्वारा उन्हे उनका अभीष्ट मोक्ष स्थानतक सुखपूर्वक पहुँचा देते हैं और उन्हें उन्मार्गसे रोकते है। इसलिये भगवान् **धर्मसारथि** कहे गये है। (**धम्मवर-चाउरंतचक्कवट्टी**) दान, शील, तप, एवं भाव इन धर्मके जिन चार पायो द्वारा चार नरकादि गतियोंका अथवा चार क्रोधादि कषायोका नाश होता है, अथवा–चार गतियोका एवं चार कषायोका जो नाश करता है, अथवा दान, शील, तप एवं

રથના સંચાલન કરવાવાળા છે. ભગવાનમા સારથિત્વનો આરોપ કરવાથી ધર્મમા રથત્વનો આરોપ વ્યજિત (પ્રગટ) થાય છે. તેથી અહીં પરંપરિત-રૂપક અલંકાર સમજવો જોઇએ તેનો અભિપ્રાય એ છે કે જેમ સારથી રથ-દ્વારા રથ પર બેઠા બેઠા પથિકોને સુખપૂર્વક તેના અભીષ્ટ સ્થાને પહોચાડે છે, આડા–અવળા માર્ગથી તેને રોકે છે, તેજ પ્રકારે ભગવાન પણ ધર્મરૂપ રથમા ભવ્ય પ્રાણિઓને બેસાડીને તે દ્વારા તેમને તેમના અભીષ્ટ મોક્ષ સ્થાન-સુધી સુખપૂર્વક પહોંચાડી દે છે અને તેમને ખોટા માર્ગથી રોકે છે. આથી ભગવાન ધર્મસારથિ કહેવાય છે (**धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टी**) દાન, શીલ, તપ, તેમજ ભાવ એ ધર્મના જે ચાર પાયા છે તે વડે ચાર નરકાદિ ગતિઓનો અથવા ચાર કષાયોનો નાશ થાય છે અથવા ચાર ગતિઓનો તેમજ ચાર

यस्य, यद्वा—चत्वारि दानादीनि अन्तानि स्वरूपाणि यस्य, 'अन्तोऽवयवे स्वरूपे च'—इति हेमचन्द्रः। स चतुरन्तः, स एव स्वार्थिके प्रज्ञादित्वादणि चातुरन्तः, चातुरन्त एव चक्रं जन्मजरामरणोच्छेदकत्वेन चक्रतुल्यत्वात्, वरञ्च तत्—चातुरन्तचक्रं वरचातुरन्तचक्रम्, वरपदेन राजचक्रापेक्षयाऽस्य श्रेष्ठत्वं व्यज्यते लोकद्वयसाधकत्वात्, धर्म एव वरचातुरन्तचक्रं धर्मवरचातुरन्तचक्रं तादृशस्य धर्माऽतिरिक्तस्यासम्भवात्। अतएव सौगतादि—धर्माभासनिरासः, तेषां तात्त्विकार्थप्रतिपादकत्वाभावेन श्रेष्ठत्वाभावात्, धर्मवरचातुरन्तचक्रेण वर्तितुं शीलं यस्येति धर्मवरचातुरन्तचक्रवर्त्ती, चक्रवर्त्तिपदेन षट्खण्डाधिपति—सादृश्यं व्यज्यते, तथाहि—चत्वारः—उत्तरदिशि हिमवान् शेषदिक्षु चोपाधिभेदेन समुद्रा अन्ताः सीमानस्तेषु स्वामित्वेन भवश्चातुरन्तः, चक्रेण—रत्नभूत—प्रहरणविशेषसदृशेन चारित्ररत्नेन वर्तितुं शीलं यस्य स चक्रवर्ती, चातुरन्तश्चासौ चक्रवर्ती च चातुरन्तचक्रवर्ती,

---

भाव इन चारको लेकर जो रम्य—श्रेष्ठ है, अथवा—दानादिक चार जिसके अवयव हैं, अथवा—दानादिक चार जिसके स्वरूप हैं, वह चतुरन्त है, चतुरन्त शब्दसे स्वार्थमें अण् प्रत्यय करने पर "**चातुरन्त**" बन जाता है, चातुरन्तही जन्म, जरा और मरणका उच्छेदक होनेसे एक चक्र है, इसे वर शब्दके साथ संबंधित करने पर "**वरचातुरन्तचक्र**" ऐसा पद बन जाता है, वर पद इस चातुरन्तचक्रको राजचक्रकी अपेक्षा श्रेष्ठ प्रकट करनेके लिये दिया गया है। राजचक्र तो केवळ इस लोककाही साधक होता है तब कि यह चातुरन्तचक्र इहलोक और परलोक इन दोनों लोकोंका साधक माना गया है। अब इस "**वरचातुरन्तचक्र**" पदको धर्मके साथ मिलाने पर "**धर्मवरचातुरन्तचक्र**" इस प्रकारका पद निष्पन्न हो जाता है,

---

કષાયોનો જે નાશ કરે છે અથવા દાન. શીલ, તપ તેમજ ભાવ એ ચારને લઈને જે રમ્ય—શ્રેષ્ઠ છે અથવા દાનાદિક ચાર જેનાં અવયવો છે અથવા દાનાદિક ચાર જેનું સ્વરૂપ છે તે ચતુરન્ત છે. ચતુરન્ત શબ્દથી સ્વાર્થમાં અણ્ પ્રત્યય કરવાથી ચાતુરન્ત બને છે. ચાતુરન્ત જ જન્મ જરા અને મરણનો નાશ કરનાર હોવાથી ચક્ર છે, તેને વર શબ્દની સાથે જોડવાથી '**વરચાતુરન્તચક્ર**' એવું પદ બની જાય છે. વર પદ આ ચાતુરન્તચક્રને રાજચક્રની અપેક્ષાએ શ્રેષ્ઠ પ્રકટ કરવા માટે આપેલું છે. રાજચક્ર તો કેવલ આજ લોકનો સાધક બને છે જ્યારે આ ચાતુરન્તચક્ર ઈહલોક અને પરલોક એ બન્ને લોકોનો સાધક માનવામાં આવે છે. હવે આ 'વરચાતુરન્તચક્ર' પદને ધર્મની સાથે જોડવાથી 'ધર્મવરચાતુરન્તચક્ર' આ પ્રકારનું પદ

अप्पडिहय-वर-नाण-दंसण-धरे वियट्टच्छउमे जिणे जावए तिण्णे

धर्मेण—न्यायेन वरः श्रेष्ठः इतरतीर्थिकाऽपेक्षयेति धर्मवरः, धर्माः पुण्य—यम—न्याय स्वभावा-ऽऽचारसोमपाः, इत्यमरः, स चासौ चातुरन्तचक्रवर्ती च। यद्वा—चातुरन्तं च तच्चक्रं चातुरन्तचक्रं, वरश्च तच्चातुरन्तचक्रं वरचातुरन्तचक्रं धर्मो वरचातुरन्तचक्रमिव धर्मवरचातुरन्त-चक्रं, तेन वर्तितुं वर्तयितुं वा शीलं यस्य स तथा। '**दीवो**' द्वीपः—संसारसमुद्रे निमज्जतां द्वीपतुल्यत्वात्। '**ताणं**' त्राणं कर्मकदर्थितानां भव्यानां रक्षणसमर्थः। अत एव तेषां '**सरणगई**' शरणगतिः—आश्रयस्थानम्। '**पइट्ठा**' प्रतिष्ठा—कालत्रयेऽप्यविनाशित्वेन स्थितः। '**अप्पडिहय—वर—नाण—दंसण—धरे**' अप्रतिहतवरज्ञानदर्शनधरः—प्रतिहतं

जिसका अर्थ "धर्मही वरचातुरन्तचक्र है" ऐसा होता है। अन्य सौगतादिक धर्म धर्मवरचातुरन्तचक्र नहीं है, क्योंकि उनमें तात्त्विकता का अभाव है। इसका भी कारण एक यही है कि वे यथावस्थित अर्थका यथार्थ प्रतिपादन नहीं करते है। इस धर्मवर-चातुरन्तचक्रके अनुसार जिसके वर्तन करनेका स्वभाव है वह धर्मवरचातुरन्तचक्रवर्ती है, अत एव भगवान् धर्मवरचातुरन्तचक्रवर्ती है। भगवान् संसार समुद्रमें डूबनेवाले प्राणियोके द्वीपतुल्य हैं; इसलिये वे स्वयं (**दीवो**) द्वीप है। (**ताणं**) कर्मों से कदर्थित भव्योंके प्रभु रक्षक है इसलिये **त्राता** कहे गये है, और इसी कारण वे (**सरणगई**) भव्योंके लिये शरणस्वरूप है। (**पइट्ठा**) प्रभु स्वयं प्रतिष्ठास्वरूप इसलिये है कि तीनो कालों मे भी उनका कभी भी विनाश नहीं होता है। (**अप्प-डिहय—वर—नाण—दंसणधरे**) प्रभुका अनंतज्ञान एवं अनंत दर्शन अप्रतिहत—निरा-

નિષ્પન્ન થાય છે. જેનો અર્થ '**ધર્મ જ વરચાતુરન્તચક્ર**' છે એવો થાય છે. બીજા સૌગત આદિ, ધર્મ ધર્મવરચાતુરન્તચક્ર નથી; કેમકે તેમાં તાત્વિ-કતાનો અભાવ છે તેનું પણ કારણ એક તો એ છે કે તેઓ યથાવસ્થિત અર્થને યથાર્થ (બરાબર) પ્રતિપાદન કરતા નથી. આ ધર્મવરચાતુરન્તચક્રને અનુસરીને જેનો વર્તન કરવાનો સ્વભાવ છે તે ધર્મવરચાતુરન્તચક્રવર્ત્તી છે. એટલે જ ભગવાન ધર્મવરચાતુરન્તચક્રવર્ત્તી છે ભગવાન સંસાર સમુદ્રમાં ડૂબવાવાળા પ્રાણિઓના દ્વીપ જેવા છે તેથી તેઓ પોતે (दीवो) દ્વીપ છે. (ताणं) કર્મોથી કદર્થિત ભવ્યોના પ્રભુ રક્ષક છે તે માટે તેઓ ત્રાતા કહે-વાય છે, અને તે જ કારણથી તેઓ (सरणगई) ભવ્યોને માટે શરણસ્વરૂપ છે. (पइट्ठा) પ્રભુ પોતે પ્રતિષ્ઠા—સ્વરૂપ એટલા માટે છે કે ત્રણે કાળમાં પણ તેમનો કદીએ વિનાશ થતો નથી (अप्पडिहय—वर—नाण—दंसण—धरे) પ્રભુનુ

**तारए बुद्धे बोहए मुत्ते मोयगे सव्वन्नू सव्वदरिसी सिव-मयल-**

मित्ताद्यावरणस्खलितं न प्रतिहतम्—अप्रतिहतं, ज्ञानञ्च दर्शनञ्चेति ज्ञानदर्शने, वरे श्रेष्ठे च ते ज्ञानदर्शने—वरज्ञानदर्शने—केवलज्ञानकेवलदर्शने, अप्रतिहते वरज्ञानदर्शने—अप्रतिहतवरज्ञानदर्शने, धरतीति धरः—अप्रतिहतवरज्ञानदर्शनयोर्धरः—अप्रतिहतवरज्ञानदर्शनधरः—आवरणरहितकेवलज्ञानकेवलदर्शनधारी। '**वियट्टच्छउमे**' व्यावृत्तच्छद्मा—छाद्यते—आव्रियते केवलज्ञान—केवलदर्शनाद्यात्मनोऽनेनेति छद्म—घातिककर्मवृन्दं—ज्ञानावरणीयादिरूपं कर्मजातम्, व्यावृत्तं—निवृत्तं छद्म यस्मात् स व्यावृत्तच्छद्मा। '**जिणे**' जिनः—रागद्वेषशत्रुविजेता। '**जावए**' जापकः—जापयति=रागद्वेपादिशत्रून् जयन्तं भव्यजीवगणं धर्मदेशनादिना प्रेरयतीति जापकः। '**तिण्णे**' तीर्णः—स्वयं संसारौघं तीर्णः—उत्तीर्णः। '**तारए**' तारकः—तारयति—तरतोऽन्यान् भव्यजीवान् प्रेरयतीति तारकः। '**बुद्धे**' बुद्धः—स्वयं

---

वरण एवं वर=श्रेष्ठ है अर्थात् प्रभु आवरणरहित केवलज्ञान, केवलदर्शन के धारक है। (**वियट्टच्छउमे**) केवलज्ञान एवं केवलदर्शनादिक जिसके द्वारा आवृत होते है वह यहां छद्म शब्दसे गृहीत हुआ है, अतः इस दृष्टिसे 'छद्म' शब्दका अर्थ घातिक कर्म होता है, यह छद्म प्रभुकी आत्मासे सर्वथा निवृत्त हो चुका है, इसलिये प्रभु व्यावृत्तछद्म है। (**जिणे**) रागादिक अन्तरंग शत्रुओं पर विजय पाने से प्रभु जिन हैं। (**जावए**) जीतनेवाले भव्यजोवो को प्रभु ने अपनी धर्मदेशना द्वारा आत्म-कल्याण के मार्ग की ओर प्रेरित किया, इसलिये प्रभु जापक—जितानेवाले है। (**तिण्णे**) संसारसमुद्र से पार होने की वजह से प्रभु स्वयं तीर्ण है। (**तारए**) भगवान ने संसारसमुद्र से पार होने के इच्छावाले जीवो को प्रेरित किया इसलिये

---

-અનંતજ્ઞાન તેમજ અનંત દર્શન અપ્રતિહત—નિરાવરણ તેમજ વર=શ્રેષ્ઠ છે અર્થાત્ પ્રભુ આવરણરહિત કેવલજ્ઞાન અને કેવલ દર્શનના ધારક છે. (वियट्टच्छउमे) કેવલજ્ઞાન તેમજ કેવલ દર્શનાદિક જેના દ્વારા ઢંકાઈ જાય છે તે અહીં છદ્મ શબ્દથી લેવામા આવેલ છે. આમ એ દૃષ્ટિથી છદ્મ શબ્દનો અર્થ ઘાતિકકર્મ થાય છે. આ છદ્મ પ્રભુના આત્માથી સર્વથા નિવૃત્ત થયેલો છે. માટે પ્રભુ વ્યાવૃત્ત-છદ્મ છે. (जिणे) રાગાદિક અંતરંગ શત્રુઓ પર વિજય મેળવવાથી પ્રભુ જિન છે. (जावए) જીતવાવાળા ભવ્ય જીવોને પ્રભુએ પોતાની ધર્મદેશના દ્વારા આત્મકલ્યાણના માર્ગના તરફ પ્રેરિત કર્યાં તે માટે પ્રભુ જાપક—જીતાવવાવાળા છે. (तिण्णे) સંસાર સમુદ્રથી પાર થવાના કારણે પ્રભુ પોતે તીર્ણ છે (तारए) ભગવાને સંસાર સમુદ્રથી પાર થવાના ઈચ્છાવાળા જીવોને

बोध प्राप्त.। 'बोहए' बोधक' बुध्यमानान् अन्यान् भव्यजीवान् प्रेरयतीति बोधक'। 'मुत्ते' मुक्त'—अमोचि स्वयं कर्मपञ्जरादिति मुक्त'। 'मोयए' मोचकः—मुच्यमानानन्यान् भव्यजीवान् प्रेरयतीति मोचक.। 'सव्वण्णू' सर्वज्ञः—सर्वं सकलद्रव्य—गुण—पर्यायलक्षणं वस्तुजातं याथातथ्येन जानातीति सर्वज्ञ। 'सव्वदरिसी' सर्वदर्शी—सर्वं—समस्तं पदार्थस्वरूपं सामान्येन द्रष्टु शीलमस्याऽसौ सर्वदर्शी। 'सिवं' शिवं निखिलोपद्रवरहितत्वाच्छिवं—कल्याणमयं, स्थानमित्यस्य विशेषणमिदम्। शिवादीना सर्वेषां द्वितीयान्तानामग्रेतनेन सपाविउकामे—इत्यनेन सम्बन्ध'। 'अयलं' अचलं स्वाभाविकप्रायोगिकचलनक्रियाशून्यम्। 'अरुयं' अरुजम्—अविद्यमाना रुजा यस्य

---

तारक है। (बुद्धे) स्वय बोध को प्राप्त होने के कारण भगवान् बुद्ध है, (बोहए) बुध्यमान अनेक भव्य जीवो को प्रेरित करने से वे बोधक है, (मुत्ते) भगवान ने स्वय कर्मरूपी पांजरे से मुक्ति प्राप्त की, इसलिये मुक्त हैं। (मोयगे) और कर्मरूपी पांजरे से मुक्त होने की इच्छावाले जीवों को उन्हों ने मुक्त किया इसलिये वे मोचक है। (सव्वण्णू) सकलद्रव्यों के समस्त गुण और पर्यायो को युगपत् हस्तामलकवत् यथार्थ जानने से प्रभु सर्वज्ञ हैं। (सव्वदरिसी) तथा सामान्यरूप से त्रिकालवर्त्ती समस्त द्रव्यो के द्रष्टा होने से प्रभु सर्वदर्शी है। (सिव—मयल—मरुय—मणंत—मक्खय—मव्वाबाह—मपुणरावत्ति सिद्धिगइणामधेयं ठाणं संपाविउकामे) निखिल उपद्रव रहित होने से शिव=कल्याणमय, स्वाभाविक एव प्रायोगिक चलनक्रिया से शून्य होने के कारण अचल, शरीर तथा मन से

---

પ્રેરિત કર્યા તેથી તેઓ તારક છે. (बुद्धे) પોતે બોધ પામેલા હોવાના કારણે ભગવાન બુદ્ધ છે (बोहए) બુધ્યમાન અનેક ભવ્ય જીવોને બોધ માટે પ્રેરિત કરવાથી તેઓ બોધક છે. (मुत्ते) ભગવાને પોતે કર્મરૂપી પાંજરાંમાથી મુક્તિ પ્રાપ્ત કરી તેથી તેઓ મુક્ત છે. (मोयगे) અને કર્મ-રૂપી પીંજરામાથી મુક્ત થવાના ઇચ્છાવાળા જીવોને તેઓએ મુક્ત કર્યા તેથી તેઓ મોચક છે. (सव्वण्णू) સકલ દ્રવ્યો (પદાર્થોના) સમસ્ત ગુણ અને પર્યાયોને યુગપત્ હસ્તામલકવત્ યથાર્થરૂપે જાણવાથી પ્રભુ સર્વજ્ઞ છે. (सव्वदरिसी) તથા સામાન્ય રૂપથી ત્રિકાલવર્તી સમસ્ત દ્રવ્યોના દ્રષ્ટા હોવાથી પ્રભુ સર્વદર્શી છે. (सिव—मयल—मरुय—मणंत—मक्खय—मव्वाबाह—मपुणरावत्ति सिद्धिगइणामधेयं ठाणं संपाविउकामे) સકળ ઉપદ્રવ રહિત હોવાથી શિવ=કલ્યાણ-મય, સ્વાભાવિક તેમજ પ્રાયોગિક ચલન ક્રિયાથી શૂન્ય હોવાના કારણે અચલ,

**मरुय-मणंत-मक्खय-मव्वाबाह-मपुणरावित्ति सिद्धिगइणामधेयं ठाणं संपाविउकामे अरहा जिणे केवली सत्तहत्थुस्सेहे समचउ-**

तत्-अविद्यमानशरीरमनस्कत्वात्-आधिव्याधिरहितम् इत्यर्थ। 'अणंतं' अनन्तम्-अविद्यमानोऽन्तो नाशो यस्य तत्। अत एव 'अक्खयं' अक्षयं-नास्ति लेशतोऽपि क्षयो यस्य तत्-अविनाशीत्यर्थः। 'अव्वाबाहं-अव्याबाधं न विद्यते व्याबाधा-पीडा द्रव्यतो भावतश्च यत्र तत्। 'अपुणरावित्ति' अपुनरावृत्ति-अविद्यमाना पुनरावृत्तिः-संसारे पुनरवतरणं यस्मात् तत्, यत्र गत्वा न कदाचिदप्यात्मा विनिवर्तते, समाम्नातमन्यत्राऽपि-न स पुनरावर्तते, न स पुनरावर्त्तते-इति। इत्थमुक्तशिवत्वादि-विशेषणविशिष्टं-'सिद्धिगइनामधेयं' सिद्धिगतिनामधेयं-सिद्धिगतिरिति नामधेयं=प्रशस्तं नाम यस्य तत्, 'ठाणं' स्थानम्-स्थीयतेऽस्मिन् इति स्थानं-लोकाग्रलक्षणम्। 'संपाविउकामे' सम्प्राप्तुकामः सम्यक् प्राप्तुं प्रयत्नवान् इत्यर्थ। 'अरहा' अरहाः-अविद्यमानं रहः-तिरोहितं वस्तुजातं यस्य सोऽरहाः, 'अरहस्' इति सकारान्तः शब्दः, केवलज्ञानबलात् हस्तामलकीकृतलोकालोकवर्तिवस्तुकलाप इति यावत्। 'जिणे' जिनः-रागद्वेषादिविजेता। 'केवली' केवली-केवलज्ञानसम्पन्नः। 'सत्तहत्थुस्सेहे' सप्तहस्तोत्सेधः-उत्सेधः=उच्चैस्त्वं

---

रहित होने के कारण अरुज-आधिव्याधिरहित, अनंत-नाशरहित, अतएव अक्षय, अव्याबाध-द्रव्यपीडा एवं भावपीडासे सर्वथा निर्मुक्त, अपुनरावृत्तिस्वरूप-जहां प्राप्त होने पर पुनः संसार में वापिस जीव का आना न हो ऐसे स्वरूपवाले, सिद्धिगति इस प्रशस्त नाम से प्रसिद्ध स्थान-लोकाग्रस्थान को प्राप्त करने वाले [अरहा] केवलज्ञान के बल से लोकालोकवर्ति समस्त वस्तुजात को हस्तामलकवत् जानने वाले वे प्रभु हैं, एवं (जिणे) रागद्वेषादिके विजेता है [केवली] केवलज्ञानसंपन्न हैं। [सत्त-

---

શરીર તથા મનથી રહિત હોવાના કારણે અરૂજ-આધિ-વ્યાધિ-રહિત, અનંત-નાશ રહિત, અને તેટલા માટે અક્ષય, અવ્યાબાધ-દ્રવ્યપીડા તેમજ ભાવપીડાથી સર્વથા નિર્મુક્ત, અપુનરાવૃત્તિસ્વરૂપ-જ્યાં પહોંચ્યા પછી ફરીથી સંસારમાં પાછા જીવનુ આવવું ન થાય એવાં સ્વરૂપવાળા સિદ્ધિગતિ એ પ્રશસ્ત નામથી પ્રસિદ્ધ સ્થાન-લોકાગ્ર સ્થાનને પ્રાપ્ત કરવાવાળા (अरहा) કેવલજ્ઞાનના બળથી લોકાલોકવર્તી સમસ્ત વસ્તુજાતને હસ્તામલકવત્ જાણવાવાળા તે પ્રભુ છે, તેમજ (जिणे) રાગદ્વેષ આદિના વિજેતા છે (केवली) કેવલજ્ઞાન-સંપન્ન છે. (सत्तहत्थुस्सेहे) સાત હાથ ઉંચા છે (सम-चउरंस-संठाण-संठिए)

**रंस-संठाण-संठिए वज्ज-रिसह-नाराय-संघयणे अणुलोमवाउवेगे कंकग्गहणी कवोयपरिणामे सउणिपोस-पिट्ठंतरोरुपरिणए पउमु-**

सप्तहस्त उत्सेधो यस्य स सप्तहस्तोत्सेधः—सप्तहस्तोच्छ्रित इत्यर्थः । **'सम–चउ–रंस–संठाण–संठिए'** सम–चतुरस्र–संस्थान–संस्थितः—समाः—तुल्याःअन्यूनाधिकाः, चतस्रोऽस्रयः=हस्तपादोपर्यधोरूपाश्चत्वारोऽपि विभागाः [शुभलक्षणोपेताः] यस्य (संस्थानस्य) तत् समचतुरस्रं—तुल्यारोहपरिणाहं तच्च संस्थानम्—आकारविशेष इति समचतुरस्र-संस्थानं, तेन संस्थितः=युक्तः । **'वज्ज-रिसह-नाराय-संघयणे'** वज्रर्षभनाराचसंहननः—वज्रं=कीलिकाकारमस्थि, ऋषभः—तदुपरिवेष्टनपट्टाऽऽकृतिकोऽस्थिविशेषः, नाराचम्—उभयतोमर्कटवन्धः, तथा च द्वयोरस्थ्नोः परिवेष्टितयोरुपरि तदस्थित्रयं पुनरपि दृढीकर्तुं तत्र निखातं कीलिकाऽऽकारं वज्रनामकमस्थि यत्र भवति तद् वज्रऋषभनाराचं तत् संहनम्—संहन्यन्ते=दृढीक्रियन्ते शरीरपुद्गला येन तत्संहननम्—अस्थिनिचयो यस्य स वज्रऋषभनाराचसंहननः । **'अणुलोमवाउवेगे'** अनुलोमवायुवेगः—अनुलोमोऽनुकूलो वायुवेगः=शरीराऽन्तर्वर्ती वायुवेगो यस्य स तथा, वायुप्रकोपरहितदेह इत्यर्थः, **'कंकग्गहणी'** कङ्कग्रहणी—कङ्कः पक्षिविशेषः, तस्य ग्रहणीव ग्रहणी यस्य स कङ्कग्रहणी—कङ्कगुदाशयवद् गुदाशयवान् । **'कवोयपरिणामे'** कपोतपरिणामः—कपोतस्येव परिणामः आहारपरिपाको यस्य स तथा, यथा कपोतस्य जाठराऽनलः पाषाणकणानपि पाचयति तथा तस्यापि जाठरानलोऽन्तप्रान्तादिसर्वविधाऽऽहारपरिपाचकः । **'सउणि-**

**हत्थुस्सेहे** ] सात हाथ ऊँचे है। ( **समचउरंस–संठाण–संठिए** ) समचतुरस्रसंस्थान-वाले [ **वज्ज–रिसह–नाराय–संघयणे** ] वज्र–ऋषभ–नाराच–संहनन से युक्त [ **अणुलोमवाउवेगे** ] अनुकूल शरीरान्तर्वर्ती वायु के वेग से समन्वित, [ **कंकग्गहणी** ] कंकपक्षी के गुदाशय के समान गुदाशयवाले, [ **कवोयपरिणामे** ] कपोत की जठराग्नि जिस प्रकार ककर पत्थर के कणों को भी पचा देती है उसी प्रकार प्रभु की जठराग्नि भी सब प्रकार के आहार को पचा देती है ऐसी जठराग्नि वाले,

સમચતુરસ્ર સંસ્થાનવાળા ( वज्ज–रिसह–नाराय–संघयणे ) વજ્ર–ઋષભ–નારાચ-સંહનનથી યુક્ત ( अणुलोमवाउवेगे ) અનુકૂલ શરીરાંતર્વર્તી વાયુના વેગથી સમન્વિત, ( कंकग्गहणी ) કંક પક્ષીના ગુદાશયના જેવાં ગુદાશયવાળા ( कवोयपरिणामे ) કપોતનો જઠરાગ્નિ જે પ્રકારે કાકરા–પત્થરની કણીઓને પણ પચાવી દે છે તેજ પ્રકારે પ્રભુનો જઠરાગ્નિ પણ અન્ત પ્રાન્તઆદિ સર્વ પ્રકા-

प्पल-गंध-सरिस-निस्सास-सुरभि-वयणे छवी निरायंक-उत्तम-पस-

**पोस-पिट्ठंतरोरु-परिणए'** शकुनि-पोस-पृष्ठान्तरोरुपरिणत'-शकुनेः पक्षिणः पोसवत् पुरीषसम्पर्करहितो निरुपलेपः पोसः-गुदाशयो यस्य स शकुनिपोसः, पृष्ठञ्च अन्तरे च-पृष्ठोदरयोरन्तरालवर्तिनी अङ्गे-पार्श्वाविति यावत्, ऊरू च जङ्घे एतेषां प्राण्यङ्गत्वात्समाहार-द्वन्द्वे-पृष्ठा-ऽन्तरोरु पृष्ठपार्श्वजङ्घम्-तत् परिणतं-विशिष्टपरिणामवत्-सुजातं यस्य स तथा, शकुनिपोसश्चासौ पृष्ठान्तरोरुपरिणतश्च स शकुनिपोसपृष्ठाऽन्तरो-रुपरिणतः-निर्लेपमलद्वारसुन्दरपृष्ठपार्श्वजङ्घावान्-इत्यर्थः । **'पउमु-प्पल-गंध-सरिस-निस्सास-सुरभि-वयणे'** पद्मोत्पल-गन्ध-सदृश-निःश्वास-सुरभि-वदनः-पद्मं= कमलम्, उत्पलं=नीलकमलं तयोर्गन्धः, अथवा पद्मं-पद्मकाभिधानं गन्ध-द्रव्यम्, उत्पलं च उत्पलकुष्टं तयोर्गन्धः, तेन सदृशः-समो यो निःश्वासः-श्वासोच्छ्वासपवनः तेन सुरभि-सौरभमयं वदनं-मुखं यस्य स तथा, परिमल-मयपदार्थसौरभसम्भारसम्भृतश्वासोच्छ्वाससुरभितमुख इति भावः । **'छवी'** छविः-छविमान्-दीप्तिदेदीप्यमानशरीर इत्यर्थः । **'निरायंक-उत्तम-पसत्थ-अइ-सेय-निरुवम-पले'** निरातङ्कोत्तमप्रशस्ताऽतिश्वेतनिरुपमपलः, तत्र-आतङ्को रोगो निर्गतो यस्मात् तन्निरातङ्कं नीरोगम्, उत्तमम्-उत्कृष्टतमम् अत एव प्रशस्तम्, अतिश्वेतम्-

---

( **सउणिपोस-पिट्ठंतरोरु-परिणए** ) शकुनि-पक्षी के-गुदाशय की तरह पुरीष के उत्सर्ग के संसर्ग मे रहित गुदाशयवाले, एवं सुन्दर पृष्ठ, पार्श्व और जंघावाले ( **पउमु-प्पल-निस्सास-सुरभिवयणे** ) पद्म-कमल एवं उत्पल-नीलकमल अथवा पद्म-पद्मकनामक गंध द्रव्य और उत्पल-उत्पलकुष्ट-सुगन्धद्रव्य विशेष, इनकी सुगध के समान उच्छ्वासवायु से सुरभितमुखवाले [ **छवी** ] कान्तियुक्त शरीरवाले, [ **निरायंक-उत्तम-पसत्थ-अइसेय-निरुवम-पले** ] रोगमुक्त, सर्वोत्तमगुणयुक्त,

---

રના આહારને પચાવી દે છે એવા જઠરાગ્નિવાળા છે. (सउणि-पोस-पिट्ठंतरोरु-परिणए) શકુનિ-પક્ષીના ગુદાશયની પેઠે મળના સંસર્ગથી રહિત ગુદાશયવાળા તેમજ સુંદર પૃષ્ઠ (પીઠ) પાર્શ્વ (પડખાં) અને જંઘા-વાળા (पउमु-प्पल-निस्सास-सुरभि-वयणे) પદ્મ-કમલ તેમજ ઉત્પલ-નીલકમલ, અથવા પદ્મ-પદ્મક નામક ગંધ દ્રવ્ય અને ઉત્પલ-ઉત્પલ કુષ્ટ-સુગન્ધ દ્રવ્ય વિશેષ, એમની સુગંધના જેવા ઉચ્છ્વાસ વાયુથી સુરભિત-સુગંધિત મુખવાળા (छवी) કાંતિયુક્ત શરીરવાળા ( निरायंक-उत्तम-पसत्थ-अइसेय-निरुवम-पले ) રોગમુક્ત,

**रथ-अइसेय-निरुवम-पले जल्ल-मल्ल-कलंक-सेय-रय-दोस-वज्जियसरी-र-निरुवलेवे छाया-उज्जोइयंग-पच्चंगे घण-निचिय-सुवद्ध-लक्खणु-ण्णय-कूडागारनिभपिंडिय-सिरए सामलिबोंड-घणनिचिय-च्छोडिय-**

अतिशयशुक्लगुणयुक्त, निरुपमम्--अनुपम पलं मांसं यस्य स', रोगमुक्तसर्वोत्तम-गुणयुक्तश्वेतनिरुपम--मांसवान्--इत्यर्थः । **'जल्ल--मल्ल--कलंक--सेय--रय--दोस-वज्जिय-शरीर-निरुवलेवे'** जल्ल--मल्ल--कलङ्क--स्वेद--रजो--दोष--वर्जित--शरीर--निरुपलेपः, तत्र-जल्लः--शरीरमलं शुष्कस्वेदरूपं, 'जल्ल' इति देशीयः शब्दः, मल्लः--शरीरगतं प्रयत्नविशेषापनेयं कठिनीभूतं रजः, कलङ्कः--दुष्टमशतिलादिरूपः, स्वेदः--प्रस्वेदः, रजः--धूलिः, तेषां यो दोषः--मलिनीकरणं तेन वर्जितम् अतएव निरुलेपं-निर्मलं शरीरं यस्य स तथा, विविधमलकलङ्कस्वेदरेणुदोषरहिततया निर्लेपनिर्मल-शरीरवानित्यर्थः । **' छाया--उज्जोइयं--गपच्चंगे '** छायोद्द्योतिताङ्गप्रत्यङ्गः--छायया-कान्त्या उद्द्योतितानि--चाकचिक्ययुक्तानि अङ्गप्रत्यङ्गानि--अङ्गोपाङ्गानि यस्य स तथा, अनुपमकान्त्या देदीप्यमानाऽङ्गप्रत्यङ्ग इत्यर्थः । **'घण-निचिय-सुवद्ध-लक्खणु-ण्णय-कूडागारनिभ-पिंडिय-सिरए'** घन--निचित--सुबद्ध--लक्षणोन्नत--कूटाऽऽकारनिभ--पिण्डित-शिरस्कः, तत्र--घनम्--अतिशयेन निचितं घननिचितम्--अतिनिबिडम् , सुष्ठु--अतिशयेन

श्वेत एवं निरुपम मांसवाले [ **जल्ल--मल्ल--कलंक--सेय--रय--दोस--वज्जिय--सरीर-निरुवलेवे** ] विविध प्रकार के मैल--शुष्कस्वेदरूप जल्ल, कठिनीभूत रज.स्वरूप मल्ल, दुष्ट मसा तिल आदिरूप कलंक, एवं--स्वेद प्रस्वेद रज--धूलि के दोष से वर्जित शरीर होने से निर्मल शरीरवाले, [ **छायाउज्जोइयंगपच्चंगे** ] कान्ति से चमकते हुए अंगोपांगवाले, ( **घणनिचिय--सुवद्ध--लक्खणु--ण्णय--कूडागारनिभ--पिंडिय--सिरए**) अतिनिबिड, स्पष्टरीति से प्रकटित--शुभलक्षण--सपन्न, उन्नत कूटाकार तुल्य एवं

સર્વોત્તમગુણયુક્ત, શ્વેત, તેમજ નિરૂપમ માંસવાળા (જલ્લ--મલ્લ--કલંક--સેય--રય--દોસ--વજ્જિય--સરીર--નિરુવલેવે) વિવિધ પ્રકારના મેલ--સુકાયેલા પરસેવા રૂપ જલ્લ, કઠણ બનેલ રજસ્વરૂપ મલ્લ, દુષ્ટ મસા તલ આદિ રૂપ કલંક, તેમજ સ્વેદ-પ્રસ્વેદ રજ--ધૂળના દોષથી વર્જિત શરીર હોવાથી નિર્મળ શરીરવાળા (છાયા--ઉજ્જોઇયંગપચ્ચંગે) કાંતિથી ચમકારા મારતાં અંગ ઉપાંગવાળા (ઘણ--નિચિય--સુવદ્ધ--લક્ખણુ--ણ્ણય--કૂડાગારનિભ--પિંડિય--સિરએ) અતિનિબિડ, સ્પષ્ટ રીતથી પ્રકટિત શુભલક્ષણ--સંપન્ન, ઉન્નત કૂટાકાર તુલ્ય તેમજ નિર્માણ નામના

**मिउ-विसय-पसत्थ-सुहुम- लक्खण-सुगंधि-सुंदर-भुयमोयग-भिंग-नेल-कज्जल-पहट्ठ-भमरगण - णिद्ध—निकुरुंब-निचिय—कुंचिय-पया-**

वद्धानि—अवस्थितानि प्रकटतया विद्यमानानि लक्षणानि शिरःसम्बन्धिशुभलक्षणानि यत्र तत् सुवद्धलक्षणम्, उन्नतम्—मध्यभागे उच्चं यत् कूटं तस्य य आकारस्तन्निभम्—उन्नतकूटाकारसदृशमिति भावः। पिण्डितं—निर्माणकर्मणा नियोजित शिरो यस्य स घन-निचित—सुवद्ध—लक्षणोन्नत—कूटाकारनिभ-पिण्डित-शिरस्कः। '**सामलिवोंड-घणनिचिय-च्छोडिय-मिउ-विसय-पसत्थ-सुहुम-लक्खण-सुगंधि-सुंदर-भुयमोयग— भिंग-नेल-कज्जल-पहट्ठ-भमरगण-णिद्ध-निकुरुंब-निचिय-कुंचिय-पयाहिणावत्त-मुद्ध-सिरए**' शाल्मलि-वोण्ड-घननिचित-च्छोटित-मृदु-विशद-प्रशस्त-सूक्ष्म-लक्षण—सुगन्धि-सुन्दर-भुजमोचक-भृङ्ग-नैल-कज्जल-प्रहृष्ट- भ्रमरगण - स्निग्ध - निकुरम्ब - निचित - कुञ्चित - प्रदक्षिणाऽऽवर्त्त - मूर्द्ध-शिरोजः—शाल्मलिः वृक्षविशेषः, तस्य वोण्डं=फलं, घननिचितम्—अतिनिबिडं, छोटितं—स्फोटितं—तूलव्याप्तं शाल्मलि—फलखण्डं तद्वत् मृदवः—मृदुलाः—इति शाल्मलिवोण्डघननि-चितच्छोटितमृदवः, अधस्तले शिरोभागः कठिनः, उपरिभागे शाल्मलिफलखण्डगत—तूल-वन्मृदुला केशाः इति भावः। तथा—विशदाः—निर्मलाः, प्रशस्ता—उत्तमाः सूक्ष्माः—तनुतराः, लक्षणाः—सुलक्षणवन्तः, सुगन्धयः—शोभनगन्धयुक्ताः, सुन्दराः—मनोहराः, तथा भुजमोचकवत्=नीलरत्नविशेष इव, भृङ्गवत्—भ्रमरवत्, एवं नैलवत्—नीलीविकारवद्—

---

निर्माणनाम कर्म द्वारा सुरचित ऐसे मस्तकवाले, [ **सामलिवोंड—घणनिचिय—च्छोडिय—मिउ—विसय—पसत्थ—सुहुम—लक्खण—सुगंधि—सुंदर—भुयमोयग— भिंग—नेल-कज्जल—पहट्ठ—भमरगण—णिद्ध— निकुरुंब—निचिय — कुंचिय — पयाहिणावत्त—मुद्ध—सिरए** ] सेमरवृक्ष के फलान्तर्गत तूल के समान मृदुल, विशद—निर्मल, प्रशस्त—उत्तम, सूक्ष्म—तनुतर ( पतले ), लक्षण—सुलक्षणयुक्त, सुगन्ध—शोभनगंधसम्पन्न, सुन्दर—मनोहर तथा—नील रत्नविशेष की तरह लच्छेदार, नीलगुलिका की तरह नीले, कज्जल की

---

કર્મથી સુરચિત એવાં મસ્તકવાળા ( सामलिवोंड—घणनिचिय — च्छोडिय—मिउ-विसय—पसत्थ—सुहुम—लक्खण—सुगंधि - सुंदर—भुयमोयग—भिंग—नेल—कज्जल—पहट्ठ-भमर-गण—निद्ध—निकुरुंब—निचिय—कुंचिय—पयाहिणावत्त—मुद्ध — सिरए ) સેમર વૃક્ષના ફલની અંતર્ગત રૂના જેવા કોમળ, વિશદ—નિર્મળ, પ્રશસ્ત—ઉત્તમ, સૂક્ષ્મ-ઙળવાં પાતળાં, લક્ષણ—સુલક્ષણયુક્ત, સુગંધ—શોભનગંધસંપન્ન, સુંદર—મનોહર તથા નીલ રત્નવિશેષની પેઠે લછેદાર, નીલગુલિકાની જેમ લીલાં, કાજળના

**हिणावत्त-मुद्धसिरए दालिमपुप्फप्पगास-तवणिज्ज-सरिस-निम्मल-सुणिद्ध-केसंत-केसभूमी छत्तागारुत्तिमंगदेसे णिव्वण-सम-लट्ठ-मट्ठ-चंदद्ध-सम-णिडाले उडुवइ-पडिपुण्ण-सोम्मवयणे अल्लीण-**

---

नीलीगुलिकावत्, कज्जलवत्-मषीवत्, प्रहृष्ट-भ्रमर-गणवत्-सोल्लास-भ्रमर-वृन्दवत् स्निग्धं=कान्तियुक्तम्-अतीवश्याममित्यर्थः, निकुरम्बं=समूहो येषां ते भुजमोचक-भृङ्ग-नैल-कज्जल-प्रहृष्ट-भ्रमर-गणस्निग्धनिकुरम्बाः, ते च पुनर्निचिताः=परस्परं श्लिष्टाः कुञ्चिताः= वक्रीभूताः-कुण्डलवद्वर्तुलाकाराः प्रदक्षिणाऽऽवर्त्ताः-प्रदक्षिणम् आवर्तन्ते ते तथा मूर्द्धनि-मस्तके, शिरोजाः-केशा यस्य स तथा-शाल्मलि-फलखण्डवत्कोमलातिश्यामल-कृष्णमणि-भ्रमरकज्जलवत्कृष्णतर-परस्परश्लिष्ट-प्रदक्षिणावर्त-कुञ्चित-मस्तककेशवानिति यावत्। केशोत्पत्तिस्थानं वर्ण्यते-'**दालिम-पुप्फ-प्पगास-तवणिज्ज-सरिस-निम्मल-सुणिद्ध-केसंत-केसभूमी**' दाडिम-पुष्प-प्रकाश-तपनीय-सदृश-निर्मल-सुस्निग्ध-केशान्त-केशभूमिः', तत्र-दाडिम-पुष्प-प्रकाशा रक्तवर्णेत्यर्थः, तपनीयसदृशी-अग्निप्रतप्त-सुवर्णसदृशवर्णा, तथा-निर्मला-उज्ज्वला, सुस्निग्धा-सुचिक्कणा, केशान्ते=केशसमीपे-केशमूले केशभूमिः-केशोत्पत्तिस्थानं-मस्तकत्वक् यस्य स तथा, पूर्वोक्तमेव-विशेषणं प्रकारान्तरेणाह-'**छत्तागारुत्तिमंगदेसे**' छत्राऽऽकारोत्तमाङ्गदेशः-छत्राऽऽकारः-वर्तुलोन्न-तत्वगुणयोगाच्छत्राऽऽकृतिः-उत्तमाङ्गदेशः-मस्तकप्रदेशो यस्य सः, अत्युन्नतोत्तमाङ्गवान् इति

---

तरह काले, प्रहृष्टभ्रमरगण की तरह कान्तियुक्त, परस्पर में संश्लिष्ट-विरले नहीं, टेढे कुण्डल की तरह वर्तुल आकारयुक्त दक्षिणावर्त केशों से युक्त थे, अर्थात्-घुँघरवालवाले थे। [ **दालिमपुप्फ-प्पगास-तवणिज्जसरिस-निम्मल-सुणिद्ध-केसंत-केस-भूमी** ] भगवान् के मस्तक की त्वचा दाडिम के पुष्प के समान लाल, तथा ताये हुए सुवर्ण के समान निर्मल एवं स्निग्ध=चिक्कण थी। ( **छत्तागारुत्तिमंगदेसे** ) भगवान का मस्तक छत्र समान गोलाकार था। ( **णिव्वण-सम-**

---

જેવાં કાળા, પ્રહૃષ્ટ ભ્રમરાની પેઠે કાંતિયુક્ત, પરસ્પરમાં સંશ્લિષ્ટ, વિરલ નહિ; વાંકા કુંડલની પેઠે વર્તુળ આકારવાળા દક્ષિણાવર્ત કેશોથી યુક્ત ભગવાન હતા. અર્થાત્ ઘુંઘરવાળા વાળ વાળા હતા. ( दालिमपुप्फ-प्पगास-तवणिज्ज-सरिस-निम्मल-सुणिद्ध-केसंत-केस-भूमी ) ભગવાનના મસ્તકની ત્વચા [ ચામડી ] દાડમના પુષ્પના જેવી લાલ, તથા તાવેલા સુવર્ણના જેવી નિર્મળ તેમજ સ્નિગ્ધ-ચિકણી હતી, ( छत्तागारुत्तिमंगदेसे ) ભગવાનનું મસ્તક છત્રની પેઠે ગોળાકાર

**पमाणजुत्त-सवणे सुस्सवणे पीण-मंसल-कवोल-देसभाए आणा-मिय-चाव-रुइल-किण्हब्भराइ-तणु-कसिण-णिद्ध-भमुहे अवदा-**

भावः, **'णिव्वण-सम-लट्ठ-मट्ठ-चंदद्ध-सम-णिडाले'** निर्व्रण-सम-लष्ट- मृष्ट-चन्द्रार्द्ध-सम-ललाटः तत्र-निर्व्रणं-क्षतरहित तया व्रणकिणरहितं, समं-विषमतारहितं, लष्टं-सुन्दरं, मृष्टं-शुद्धं चन्द्राऽर्द्धसमम्-अष्टमी-चन्द्र-मण्डलाऽऽकारम्, ललाटं-भालस्थलं यस्य सः, अष्टमी-चन्द्र-मण्डल-समानाकार-सुन्दर-ललाट-इति भावः । **'उडुवइ-पडिपुण्ण-सोम्मवयणे'** उडुपति-प्रतिपूर्ण-सौम्यवदनः-उडुपतिः—शारदीयपूर्णचन्द्रस्तद्वत् परिपूर्ण-प्रभासमूहसम्भृतं, सौम्यं—सुन्दरं, वदनं—मुखं यस्य स तथा, शारदपूर्णचन्द्र-समान-सुन्दर-मुख इत्यर्थः । **'अल्लीण-पमाणजुत्त-सवणे'** आलीन-प्रमाणयुक्त-श्रवणः-समुचितप्रमाणकर्णयुक्तः, अत एव-**'सुस्सवणे'** सुश्रवणः, शोभनकर्णवान् **'पीण-मंसल-कवोल-देसभाए'** पीन-मांसल-कपोल-देशभागः-पीनौ-पुष्टौ, मांसलौ मांसपूर्णौ कपोलदेशभागौ—कपोलावयवौ यस्य स तथा-सुपुष्टकपोलयुक्त इति भावः । **'आणामिय-चाव-रुइल-किण्हब्भराइ-तणु-कसिण-णिद्ध-भमुहे'** आनामित-चाप-रुचिर-कृष्णाभ्रराजि-तनु-कृष्ण-स्निग्ध-भ्रूः-आनामित-चापः-वक्रीकृतधनुः, तद्वद्रुचिरे-सुन्दरे तथा कृष्णा-भ्रराजी इव श्याममेघपङ्क्ती इव तनू-सूक्ष्मे, कृष्णे-श्यामे, स्निग्धे-चिक्कणे- भ्रुवौ यस्य स तथा, वक्रकृष्णसूक्ष्मचिक्कण-

**लट्ठ-मट्ठ-चंदद्ध-सम-णिडाले** ) भगवान का भालस्थल व्रग के चिह्न से रहित, विषमता से वर्जित, सुन्दर, शुद्ध एवं अष्टमी के चंद्रमा के समान था । [ **उडु-वइ-पडिपुण्ण-सोम्मवयणे** ] प्रभु का मुख शरद ऋतु के पूर्णचन्द्रमण्डल समान सुन्दर और आह्लादक था । [ **अल्लीण-पमाण-जुत्त-सवणे** ] कान प्रमाणयुक्त थे । [ **सुस्सवणे** ] इसलिये भगवान सुन्दर कानवाले थे । ( **पीण-मंसल-कवोल-देसभाए** ) भगवान के पुष्ट एवं भरे हुए सुन्दर कपोल थे । ( **आणामिय-चाव-रुइल-किण्ह-ब्भराइ-तणु-कसिण-णिद्ध-भमुहे** ) वक्रित धनुष के समान रुचिर, तथा कृष्णमेघ

હતું ( णिव्वण-सम-लट्ठ-मट्ठ-चंदद्ध-सम-णिडाले ) ભગવાનનું લલાટ વ્રણના ચિહ્નથી રહિત, વિષમતાથી વર્જિત, સુંદર, શુદ્ધ તેમજ અષ્ટમીના ચંદ્રના જેવું હતું. ( उडुवइ-पडिपुण्ण-सोम्म-वयणे ) પ્રભુનું મુખ શરદઋતુના પૂર્ણચંદ્રમંડલ સમાન સુંદર તથા આહ્લાદક હતું ( अल्लीण-पमाण-जुत्त-सवणे ) કાન માપસર હતા. ( सुस्सवणे ) તેથી ભગવાન સુંદર કાનવાળા હતા ( पीण-मंसल-कवोल-देसभाए ) ભગવાનના પુષ્ટ તેમજ ભરેલા સુંદર ગાલ હતા. ( आणामिय-चाव-रुइल-किण्हब्भराइ-तणु-कसिण-णिद्ध-भमुहे ) વક્ર થયેલા ધનુષના જેમ રૂચિર, તથા કૃષ્ણમેઘ ( કાળાં વાદળા ) ની હારના જેવી

**लिय-पुंडरीय-णयणे कोआसिय-धवल-पत्तलच्छे गरुलायय-उज्जु तुंग-णासे उवचिय-सिलप्पवाल-बिंबफल-सण्णिभाहरोट्ठे पंडुर-ससि-सयल-विमल-णिम्मल-संख-गोक्खीर-फेण-कुंद-दगरय-मुणा-**

भ्रूयुक्त इत्यर्थः । **'अवदालिय-पुंडरीय-णयणे'** अवदलित-पुण्डरीक-नयनः-अवदलिते-विकसिते, पुण्डरीके-श्वेतकमले इव नयने-नेत्रे यस्य सः, विकसितश्वेतकमलसदृश-नेत्र इति भावः । **'कोआसिय-धवल-पत्तलच्छे'** विकसित-धवल-पत्रलाऽक्षः-कमलवद् विकसिते धवले-श्वेते, पत्रले-पक्ष्मयुक्ते, अक्षिणी-नेत्रे यस्य सः, विशालनेत्रवानित्यर्थः । **'गरुला-यय-उज्जु-तुंग-णासे'** गरुडा-यत-र्जुतुङ्ग-नासिकः-गरुडस्येव-गरुडपक्षिचञ्चुवद्-आयता-दीर्घा, ऋज्वी-सरला, तुङ्गा-उन्नता, नासिका यस्य स तथा, गरुडचञ्चु-वद्दीर्घसरलोच्चनासिकावान् इत्यर्थः । **'उवचिय-सिलप्पवाल-बिंबफल-सण्णिभा-हरोट्ठे'** उपचित-शिलाप्रवाल-बिम्बफल-सन्निभाऽधरोष्ठ -उपचित-कृतसंस्कारं यच्छिलाप्रवाल-विद्रुमं, बिम्बफल-रक्तातिरक्तं तयोः सन्निभ -सदृशो रक्तः अधरोष्ठो यस्य सः, अतिरक्तोष्ठवान्-इत्यर्थः । **'पंडुर-ससि-सयल-विमल-णिम्मल-संख-गोक्खीर-फेण-कुंद-दगरय-मुणा-लिया-धवल-दंतसेढी'** पाण्डुर-शशि-शकल-विमल-निर्मल-शङ्ख-गोक्षीर-फेन-कुन्द-दक-

की पंक्ति के समान काली, पतली और चिकनी भगवान की भौंहे थीं। ( **अव-दालिय-पुंडरीय-णयणे** ) विकसित श्वेतकमल के समान नेत्र थे। ( **कोआसिय-धवल-पत्तलच्छे** ) वे नेत्र-विकसित, स्वच्छ एवं पक्ष्मल-सुन्दर पीपणी वाले थे। ( **गरुला-यय-उज्जु-तुंग-णासे** ) गरुड पक्षी की चंचु समान दीर्घ, सरल एवं उन्नत नासिका थी। ( **उवचिय-सिलप्पवाल-बिंबफल-सण्णिभाहरोट्ठे** ) संस्कार-युक्त विद्रुम एवं रक्तातिरक्त-अतिशय लाल कुन्दुरुफल के समान अधरोष्ठ था। ( **पंडुर-ससिसयल-विमल-णिम्मल-संख-गोक्खीर-फेण-कुंद-दगरय-मुणालिया-**

કાળી, પાતળી અને ચિકણી ભમરો હતી. ( अवदालिय-पुंडरीय-णयणे ) ખીલેલા શ્વેત કમળના જેવા નેત્ર હતાં. ( कोआसिय-धवल-पत्तलच्छे ) તે નેત્ર વિકસેલાં સ્વચ્છ તેમજ પક્ષ્મલ ( સુંદર પાંપણવાળાં ) હતાં ( गरुला-यय-उज्जु-तुंग-णासे ) ગરુડ પક્ષીની ચાંચ સમાન લાંબા સરલ તેમજ ઉન્નત નાસિકા હતી ( उवचिय-सिलप्पवाल-बिंबफल-सण्णिभा-हरोट्ठे ) સંસ્કારયુક્ત વિદ્રુમ તેમજ રક્તાતિરક્ત-અતિશય લાલ કુંદુરૂ ફલના જેવો અધરોષ્ઠ ( હોઠ ) હતો. ( पंडुर-ससिसयल-विमल-णिम्मल-संख-गोक्खीर-फेण-कुंद- दग-

लिया-धवल-दंतसेढी अखंडदंते अप्फुडियदंते अविरलदंते सुणिद्धदंते सुजायदंते एगदंतसेढीविव अणेगदंते हुयवह-णिद्धंत-

रजो-मृगालिका-धवल-दन्तश्रेणिः-पाण्डुरं-श्वेत यत्-शशिशकलं-चन्द्रखण्डं, तद्वद् विमला, तथा निर्मलः-अतिस्वच्छः, शङ्ख प्रसिद्ध, गोक्षीरं-गोदुग्धम्,-फेनः-जलोपरिवर्तमानो नवनीतसमः, कुन्दं-तलामकं श्वेतकुसुमम्-दकरजः-जलकण, मृगालिका-बिसिनी-तद्वद् धवला-महाश्वेता, दन्तश्रेणि-दन्तपङ्क्तिर्यस्य स तथा, शुभ्रातिशुभ्रदन्तपङ्क्तिमानित्यर्थः। 'अखंडदंते' अखण्डदन्त-दन्तपङ्क्तौ दन्तवैकल्याभावात्; 'अप्फुडियदंते' अस्फुटितदन्त. दन्तपङ्क्तौ दन्तानां- देशतोऽपि भङ्गाभावत्, 'अविरलदंते' अविरलदन्तः-अन्तरावकाशरहितदन्तः 'सुणिद्धदंते' सुस्निग्धदन्तः-चिक्कणदन्तवान्, 'सुजायदंते' सुजातदन्तः-सुन्दरदन्तवान्-इत्यर्थः। 'एगदंतसेढीविव अणेगदंते' एकदन्तश्रेणीवाऽनेकदन्त, 'हुतवह-णिद्धंत-धोय-तत्त-तवणिज्ज-रत्त-तल-तालुजीहे' हुतवह-निर्ध्मात-धौत=तप्ततपनीय-रक्ततर=तालुजिहः-हुतवहेन-वह्निना पूर्वं निर्ध्मातं-निश्शेषेण न्योजितं पश्चाज्जलादिना धौतम्, अत एव-तप्तं-वह्नितापं प्राप्तं

धवल-दंतसेढी) श्वेत चन्द्रखंडके के समान विमल, तथा निर्मल शंख, गोक्षीर, फेन, श्वेतकुसुम, जलकण, एवं मृणाल के समान धवल दन्तपंक्तियाँ थीं। (अखंडदंते) भगवान के दाँत अखण्ड थे, (अप्फुडियदंते) अत्रुटित थे, (अविरलदंते) अवकाश रहित थे। (सुणिद्धदंते) चिक्कण थे, (सुजायदंते) सुन्दर थे, ।(एगदंतसेढीविव अणेगदंते) एक दाँत की श्रेणी के समान सभी दाँत मालूम होते थे। (हुयवह-णिद्धंत-धोय-तत्ततवणिज्ज-रत्ततल-तालुजीहे) पहले अग्नि में तपाये गये पश्चात् जलादिक द्वारा धोये गये पुनः अग्नि में तपाये

रय-मुणालिया-धवल--दंत-सेढी) શ્વેત ચંદ્રખંડના જેવી વિમલ, તથા નિર્મળ શંખ, ગાયનું દૂધ, ફીણ, શ્વેતપુષ્પ, જલકણ (પાણીના બુંદ) તેમજ મૃણાલ ના જેવી સફેદ દાંતની હાર હતી. (अखंडदंते) ભગવાનના દાંત અખંડ હતા. (अप्फुडियदंते) તૂટયા વગરના દાંત હતા. (अविरलदंते) અવકાશ (પોલ) રહિત હતા, (सुणिद्धदंते) ચિકણા હતા, (सुजायदंते) સુંદર હતા, (एगदंतसेढी--विव अणेगदंते) એક દાંતની શ્રેણી (હાર) ના જેમ બધા દાંત દેખાતા હતા. (हुतवह--णिद्धंत--धोय-तत्त-तवणिज्ज--रत्ततल- तालुजीहे) પહેલા અગ્નિમા તપાવેલા પાછલથી જળાદિદ્વારા

**धोयतत्ततवणिज्ज-रत्ततल-तालुजीहे अवट्ठिय-सुविभत्त-चित्त-मंसू मंसल-संठिय-पसत्थ-सद्दूल-विउल-हणुए चउरंगुल-सुप्पमाण-कंबु-वर-सरिसग्गीवे वरमहिस-वराह-सीह-सद्दूल-उसभ-नागवर-पडि-**

यत्तपनीयं=सुवर्णं तद्वद् रक्ततरम्-अतीवरक्तं, तालु च जिह्वा च यस्य स तथा, अतिरक्त-तालुजिह्वावान् इत्यर्थः। '**अवट्ठिय-सुविभत्त-चित्त-मंसू**' अवस्थित-सुविभक्त-चित्र-श्मश्रुः-अवस्थितानि-अवर्द्धनशीलानि, सुविभक्तानि-द्विभागाभ्यां विभक्ततया स्थितानि, चित्राणि-शोभासम्पन्नानि श्मश्रूणि-'दाढी मूछ'-इति भाषाप्रसिद्धानि यस्य सः, अवर्धन-शील-सुविभक्त-सुशोभितश्मश्रुवान् इत्यर्थः। '**मंसल-संठिय-पसत्थ-सद्दूल-विउल-हणुए**' मांसल-संस्थित-प्रशस्त-शार्दूल-विपुल-हनुः-तत्र-मांसलः-पुष्टः, संस्थितः-सुन्दरा-ऽऽकारः, प्रशस्तः-अतिरमणीयः,शार्दूलस्येव व्याघ्रस्येव, विपुलः-दीर्घः हनुः=चिबुकं यस्य स तथा-शार्दूल-वत्सुन्दर-सुविशालचिबुक इति भावः। '**चउरंगुल-सुप्पमाण-कंबुवर-सरिस-ग्गीवे**' चतुरङ्गुल-सुप्रमाण-कम्बुवरसदृश-ग्रीवः-भगवदङ्गुल्यपेक्षया चतुरङ्गुल-सुप्रमाणा कम्बुवरसदृशी-उन्नततया त्रिबलिसद्भावाच्च श्रेष्ठशङ्खसदृशी ग्रीवा यस्य सतथा, चतुरङ्गुलप्रमाणोपेतश्रेष्ठशङ्खसदृशग्रीवावान् इत्यर्थः। '**वर-महिस-वराह-सीह-सद्दूल-उसभ-नागवर-पडिपुण्ण-विउल-क्खंधे**' वरमहिष-वराह-सिंह-शार्दूल-वृषभ-नागवर-परिपूर्ण-

गये सोने के समान अत्यंतरक्त तालु और जिह्वा थी। (**अवट्ठिय-सुविभत्त-चित्त-मंसू**) अवर्द्धनशील एवं दोभागों से विभक्त होकर अलग २ रही हुई दाढी एवं मूंछे थी। (**मंसल-संठिय-पसत्थ-सद्दूल-विउल-हणुए**) पुष्ट, सुन्दर आकार युक्त, एवं अतिरमणीय सिंह जैसी विपुल दाढी थी। (**चउरंगुल-सुप्पमाण-कंबुवरसरिस-ग्गीवे**) भगवान की अंगुली की अपेक्षा चार अंगुलप्रमाणवाली एवं शंख के समान त्रिवलीविशिष्ट ग्रीवा थी। **वरमहिस-वराह-सीह-सद्दूल-उसभ-**

ધોએલા સુવર્ણની પેઠે અત્યંત લાલ તાળવું અને જીભ હતાં. (अवट्ठिय-सुवि-भत्त-चित्त-मंसू) અવર્ધનશીલ તેમજ બે ભાગોથી વિભક્ત થઈને અલગ અલગ રહેલી દાઢી તેમજ મુછો હતી. [मंसल-संट्ठिय-पसत्थ-सद्दूल-विउल-हणुए] પુષ્ટ, સુંદર આકારવાળી તેમજ અતિ રમણીય સિંહ જેવી વિપુલ દાઢી હતી. (चउरंगुल-सुप्पमाण-कंबुवरसरिस-ग्गीवे) ભગવાનનાં આંગળાની અપેક્ષાએ ચાર આગળાના માપવાળી તેમજ શંખની પેઠે ત્રિવલી (ત્રણ-રેખા) વાળી ડોક (ગરદન) હતી. [वरमहिस-वराह-सीह-सद्दूल-उसभ-नाग-

**पुण्ण-विउलक्खंधे जुगसन्निभ-पीण-रइय-पीवर-पउट्ठ-सुसंठिय-सुसिलिट्ठ-विसिट्ठ-घण-थिर-सुबद्ध-संधि-पुरवर-फलिह-वट्टिय-भुए**

विपुलस्कन्धः-श्रेष्ठमहिषवराह सिंहव्याघ्रवृष गजवराणामिव प्रतिपूर्णौ-प्रमाणयुक्तौ-विपुलौ=विस्तीर्णौ सामुद्रिकशास्त्रोक्तलक्षणयुक्तौ स्कन्धौ यस्य स तथा, 'सिंहव्याघ्रादिवत्सामुद्रिकोक्तलक्षणयुक्तप्रमाणसहितविशालस्कन्धवान् इति भावः। '**जुगसन्निभ-पीण-रइय-पीवर-पउट्ठ-सुसंठिय-सुसिलिट्ठ-विसिट्ठ-घण-थिर-सुबद्ध-संधि-पुरवर-फलिह-वट्टियभुए**' युगसन्निभ-पीन-रतिद-पीवर-प्रकोष्ठ-सुसंस्थित-सुश्लिष्ट-विशिष्ट-घन - स्थिर-सुबद्ध-सन्धि-पुरवर-परिघ-वर्तितभुजः, युगेन=शकटाग्रायामस्थितकाष्ठेन सन्निभौ=तुल्यौ, पीनौ=पुष्टौ, रतिदौ=प्रीतिप्रदौ, पीवरप्रकोष्ठौ-कफोणे '**खूणी**' इति प्रसिद्धादधस्तान्मणिबन्धपर्यन्तः प्रकोष्ठ, पीवरौ पुष्टौ प्रकोष्ठौ ययोर्भुजयोस्तौ, सुसंस्थितौ=सुन्दरसंस्थानवन्तौ, पुनः कीदृशौ ?—सुश्लिष्टाः-संयुक्ताः, विशिष्टाः-प्रधानाः,घनाः-सघनाः, स्थिराः-दृढाः-सुबद्धाः=सुष्टु बद्धाःस्नायुभिःसन्धयः=सक्थिसंयोगस्थानानि ययोस्तौ—सुश्लिष्टविशिष्टघनस्थिरसुबद्धसन्धी, पुनः-पुरवरपरिघवत्=नगरश्रेष्ठा—र्गलावत् वर्तितौ-वर्तुलौ बाहू=भुजौ यस्य स तथा; सुन्दरनगरार्गलावत् दृढदीर्घभुजवान् इति भावः। '**भुयगीसर-विउल-भोग-आयाण-पलिहउच्छूढ-दीह-बाहू**-भुजगेश्वर - विपुल-भोगा -दान-पर्यवक्षिप्त-दीर्घ-

---

**नागवर—पडिपुण्ण—विउल—क्खंधे**) श्रेष्ठ महिष, वराह, सिंह, शार्दूल, वृषभ, एवं श्रेष्ठ हाथी के स्कंध जैसे विपुल स्कन्ध थे, (**जुगसन्निभ—पीण—रइय—पीवर—पउट्ठ—सुसंठिय—सुसिलिट्ठ—विसिट्ठ—घण—थिर—सुबद्धसंधि—पुरवर—फलिह-वट्टियभुए**) गाडी के जुए के समान प्रीतिप्रद, पीवरप्रकोष्ठयुक्त—पुष्टपौंचावाली, सुन्दर आकृतिसंपन्न ऐसे, एवं सुश्लिष्ट—संयुक्त—मिली हुई, विशिष्ट—उत्तम, घन—गठीली, मजबूत, स्थिर—स्नायुओं से सुसंबद्ध ऐसी सन्धियों वाली, तथा नगर की परिघा—भोंगल—जैसी वर्तुल भुजायें थीं। (**भुयगीसर—विउलभोग—आयाण—पलिहउच्छूढ—दीह—बाहू**) वाञ्छित वस्तु

---

वर—पडिपुण्ण—विउल—क्खंधे] श्रेष्ठ पाडा, वराह, सिंह, शार्दूल, बळद, तेमज श्रेष्ठ हाथीना खांध जेवी विपुल खांध हती. (जुगसन्निभ—पीण—रइय—पीवर—पउट्ठ—सुसंठिय—सुसिलिट्ठ—विसिट्ठ—घण—थिर—सुबद्ध—संधि—पुरवर—फलिह—वट्टियभुए) गाडाना धोंसरा जेवी पुष्ट, प्रीतिप्रद, पीवर प्रकोष्ठ—पुष्ट कांडा वाळी, सुंदर आकृतिवाळी तेमज सुश्लिष्ट—संयुक्त—मिलित, विशिष्ट—उत्तम, घन—भराउ, स्थिर—मजबूत स्नायुओथी सुसंबद्ध संधिओवाळी तथा नगरनी भोगळ जेम गोळाकार भुजाओ हती. [भुयगी—सर—विउलभोग—आयाण—पलिहउच्छूढ-

**भुयगीसर-विउल-भोग-आयाण-पलिहउच्छूढ-दीह-बाहू रत्ततलो-वइय-मउय-मंसल - सुजाय-लक्खण-पसत्थ-अच्छिद्दजाल -पाणी पीवर-कोमल—वरं-गुली आयंबतंब—तलिण-सुइ—रुइल-णिद्ध-णखे**

बाहु', भुजगेश्वर -सर्पराज', तस्य विपुलभोग -विशालदेह , स च आदानाय-वाञ्छितवस्तुग्रहणाय 'पलिहउच्छूढ ' पर्यवक्षिप्त -प्रेरित'-सर्वथा दण्डवत्प्रसारित', तद्वत् दीर्घौ=लम्बौ-विशालौ, बाहू=भुजौ यस्य स तथा, लम्बविशालबाहुमान्-इत्यर्थ' । '**रत्ततलो-वइय-मउय-मंसल-सुजाय-लक्खणपसत्थ-अच्छिद्द-जाल-पाणी**' रक्ततलो-पचित-मृदु-मांसल-सुजात-लक्षणप्रशस्ता-च्छिद्रजाल-पाणि', तत्र-रक्ततलौ-रक्ते तले ययोस्तौ तथा, तलभागे रक्त-वर्णयुक्तौ इत्यर्थ', उपचितौ पृष्ठभागे उन्नतौ, मृदुकौ-कोमलौ, मांसलौ-पुष्टौ, सुजातौ-सुन्दरौ प्रशस्तलक्षणौ-शुभचिह्नयुतौ, अच्छिद्रजालौ-च्छिद्रजालवर्जितौ, पाणी-हस्तौ यस्य स तथा, '**पीवर-कोमल-वरं-गुली**' पीवर-कोमल-वराङ्गुलि —पीवरा'-पुष्टा', कोमलाः-मृदुलाः, वराः-श्रेष्ठा', अङ्गुलयो यस्य स तथा, '**आयंब-तंब-तलिण-सुइ-रुइल-णिद्ध-णखे**' आताम्र-ताम्र-तलिन-शुचि-रुचिर-स्निग्धनख'-आताम्रताम्रा'=ईषद्रक्ताः, तलिना'=प्रतलाः शुचय'=शुद्धाः, रुचिरा'=मनोज्ञाः, स्निग्धा.=सरसा', नखा यस्य स तथा, '**चंदपाणि-लेहे**' चन्द्रपाणिरेख'-चन्द्राकाराः पाणौ रेखा यस्य स', चन्द्ररेखाचिह्नितहस्तवानित्यर्थ',

को ग्रहण करने के लिये फैलाये हुए सर्पराज के शरीर समान दीर्घबाहु थे। **(रत्ततलो-वइय-मउय-मंसल-सुजाय-लक्खण-पसत्थ-अच्छिद्दजाल-पाणी)** तलभाग में लाल, पृष्ठभाग में उन्नत, कोमल, पुष्ट, शुभचिह्नों से युक्त, एव छिद्रों से रहित हाथ थे। **(पीवर-कोमल-वरं-गुली)** हाथों की अगुलियाँ पुष्ट, कोमल एवं सुन्दर थीं। **(आयंबतंब-तलिण-सुइ-रुइल-णिद्ध-णखे)** ईषद्रक्त, पतले, शुद्ध, सुन्दर, एवं चिकने नख थे। **(चंदपाणिलेहे)** हाथो में चन्द्ररेखा थी।

दीह-बाहू ] કોઈ ઇચ્છિત વસ્તુ લેવાને માટે ફેલાવેલા સર્પરાજના શરીર સમાન લાંબા બાહુ હતા. ( रत्ततलो-वइय-मउय-मंसल-सुजाय-लक्खण-पसत्थ-अच्छिद्द-जाल-पाणी ] તળીયાના ભાગમા લાલ, પાછળના ભાગમા ઉન્નત, કોમળ, પુષ્ટ, શુભ ચિહ્નોથી યુક્ત તેમજ છિદ્રો વગરના હાથ હતા. [ पीवर-कोमल-वरं-गुली ] હાથોની આંગળીઓ પુષ્ટ, કોમળ તેમજ સુંદર હતી. [ आयंबतंब-तलिण-सुइ-रुइल-णिद्ध-णखे ] ઇષદ્રક્ત પાતળા, શુદ્ધ, સુંદર તેમજ ચિકણા નખ હતા. ( चंदपाणिलेहे ) હાથોમાં ચન્દ્રરેખા હતી.

**चंदपाणिलेहे सूरपाणिलेहे संखपाणिलेहे चक्कपाणिलेहे दिसासोत्थियपाणिलेहे चंद-सूर-संख-चक्क-दिसासोत्थिय-पाणिलेहे कणग-सिलायलुज्जल-पसत्थ-समतल-उवचिय-विच्छिण्ण-पिहुलवच्छे सिरिवच्छंकियवच्छे अकरंडुय-कणग-रुयय-निम्मल-**

'**संखपाणिलेहे**' शङ्खपाणिरेखः-शङ्खरेखायुक्तहस्त इत्यर्थः, '**चक्कपाणिलेहे**' चक्रपाणिरेखः-चक्ररेखायुक्तहस्तः, '**दिसासोत्थियपाणिलेहे**' दिक्स्वस्तिकपाणिरेखः-दक्षिणाऽऽवर्तस्वस्तिकाऽऽकार-रेखा-युक्त-हस्तवान् इति भावः। '**चंद-सूर-संख-चक्क-दिसासोत्थिय-पाणिलेहे**' चन्द्रसूरशङ्खचक्रदिक्स्वस्तिकपाणिरेखः-चन्द्रसूर्यादिहस्तरेखा हस्ते विद्यमानाः प्रशस्तफलप्रदा भवन्ति, ताभिश्चन्द्रादिरेखाभिश्चिह्नितहस्तवानित्यर्थः, '**कणग-सिलायलु-ज्जल-पसत्थ-समतल-उवचिय-विच्छिण्ण-पिहुलवच्छे**' कनक-शिलातलो-ज्ज्वल-प्रशस्त-समतलो-पचित-विस्तीर्ण-पृथुल-वक्षस्कः- कनकशिलातलवत्=सौवर्णपट्टिकावत्, उज्ज्वलं=देदीप्यमानं प्रशस्तं=सुलक्षणोपेतं समतलञ्च-उन्नताऽऽनतरहितम्, उपचितं-पुष्टं, विस्तीर्णपृथुलम्,-अतिविशालं, वक्षः-उरस्थलं यस्य स तथा,

(**सूरपाणिलेहे**) सूर्यरेखा थी, (**संखपाणिलेहे**) शंखरेखा थी, (**चक्कपाणिलेहे**) चक्ररेखा थी, (**दिसासोत्थियपाणिलेहे**) दक्षिणावर्त स्वस्तिक रेखा थी, (**चंद-सूर-संख-चक्क-दिसासोत्थिय-पाणिलेहे**) इस प्रकार चन्द्रमा, सूर्य, शंख, चक्र एवं दक्षिणावर्त स्वस्तिक की रेखाओं से भगवान के हाथ सुशोभित थे। (**कणग-सिलायलु-ज्जल-पसत्थ-समतल-उवचिय-विच्छिण्ण-पिहुल-वच्छे**) कनक शिला के समान-सुवर्ण के पाट के समान देदीप्यमान, शुभलक्षणों से युक्त, सम, पुष्ट, विस्तीर्ण एवं अतिविशाल वक्षस्थल था। वह वक्षस्थल (**सिरिवच्छंकियवच्छे**)

(सूरपाणिलेहे) સૂર્યરેખા હતી. [संखपाणिलेहे] શંખરેખા હતી. (चक्कपाणिलेहे] ચક્રરેખા હતી, (दिसासोत्थियपाणिलेहे) દક્ષિણાવર્ત સ્વસ્તિક રેખા હતી. (चंद-सूर-संख-चक्क-दिसासोत्थिय-पाणिलेहे)' એ પ્રકારે ચંદ્રમા, સૂર્ય, શંખ, ચક્ર તેમજ દક્ષિણાવર્ત સ્વસ્તિકની રેખાઓથી ભગવાનના હાથ સુશોભિત હતા. (कणग-सिलायलु-ज्जल-पसत्थ-समतल-उवचिय-विच्छिण्ण-पिहुल-वच्छे) કનક શિલા સમાન-સોનાની પાટાના જેવું દેદીપ્યમાન, શુભલક્ષણોવાળું, સરખું, પુષ્ટ, વિશાળ તેમજ બહુ પહોળું વક્ષસ્થળ [છાતી] હતું. તે વક્ષસ્થળ (सिरिवच्छंकियवच्छे) શ્રીવત્સના ચિહ્નવાળું હતું. અને

सुजाय-निरुवहय-देह-धारी अट्ठसहस्स-पडिपुण्ण-वरपुरिस-लक्खण-धरे सण्णयपासे संगयपासे सुंदरपासे सुजायपासे मियमाइय-

'सिरिवच्छंकियवच्छे' श्रीवत्साङ्कितवक्षस्कः-श्रीवत्सेन=शुभचिह्नविशेषेण अङ्कितं=चिह्नितं-वक्षः-हृदयस्थलं यस्य स तथा, 'अकरंडुय-कणग-रुयय-निम्मल-सुजाय-निरुवहय-देह-धारी, अकरण्डुक-कनक-रुचक-निर्मल-सुजात-निरुपहत-देहधारी, अकरण्डुक-'करडुय' इति देशीय शब्दः, अदृश्यमानं करण्डुकं=पृष्ठभागास्थिकं यस्य देहस्य स अकरण्डुकः, तथा कनकरुचकः-सुवर्णवर्णयुक्त, तथा-निर्मलः, सुजात', निरुपहतः=रोगादिबाधारहितो यो देहस्त देहं धरतीत्येवं शीलो यः स तथा, 'अट्ठ-सहस्स-पडिपुण्ण-वरपुरिस-लक्खण-धरे' अष्टसहस्र-प्रतिपूर्ण-वरपुरुष-लक्षणधरः-अष्टोत्तरं सहस्रम्-अष्टसहस्रं, प्रतिपूर्णम्-अन्यूनं, वरपुरुषाणां लक्षणं-स्वस्तिकादिकम्, तस्य धर'-धारक', महापुरुषाणामष्टोत्तरसहस्रपरिमितानि सुलक्षणानि सन्ति, तेषां सर्वेषां धारक'-इति भाव'। 'सण्णयपासे' सन्नतपार्श्व'-सन्नतौ अधोऽधोऽवनतौ पार्श्वौ-पार्श्व-भागौ यस्य स सन्नतपार्श्वः, 'संगयपासे' सङ्गतपार्श्व'-सङ्गतौ-प्रमाणोचितौ, पार्श्वौ-भुजमूलादध'प्रदेशौ यस्य सः, प्रमाणयुक्तपार्श्वप्रदेशवानिति भाव'। 'सुंदरपासे' सुन्दरपार्श्व'-दर्शनीयपार्श्वयुक्तः, 'सुजायपासे' सुजातपार्श्व'-सुन्दरपार्श्ववानित्यर्थः।

श्रीवत्सके चिह्न से युक्त था। और प्रभुका शरीर (अकरंडुय-कणग-रुयय-निम्मल-सुजाय-निरुवहय-देह-धारी) अकरण्डुक-अदृश्यमान पृष्ठभाग की हड्डीयुक्त, तथा सुवर्ण के जैसा निर्मल एवं रोगादिक बाधा से रहित था। भगवान् (अट्ठसहस्स-पडिपुण्ण-वर-पुरिस-लक्खण-धरे) न्यूनतारहित ऐसे १००८ स्वस्तिकादिक उत्तम पुरुषों के योग्य लक्षणों के धारक थे। भगवान् के शरीरका पार्श्वभाग (सण्णयपासे संगयपासे सुंदरपासे सुजायपासे मियमाइय-पीण-रइय-पासे) क्रमिक अवनत

પ્રભુનું શરીર (अकरंडुय-कणग-रुयय-निम्मल-सुजाय-निरुवहय-देह-धारी) અકરંડુક-અદૃશ્યમાન-ન દેખાય તેવી રીતે વાંસા-બરડા-ની કરોડવાળું તથા સોનાના વર્ણ જેવું નિર્મળ તેમજ રોગાદિકની પીડા વગરનું હતુ. ભગવાન્ (अट्ठसहस्स-पडिपुण्ण-वर-पुरिस-लक्खण-धरे) ન્યૂનતારહિત એવાં ૧૦૦૮ સ્વસ્તિક આદિક ઉત્તમ પુરૂષોને યોગ્ય લક્ષણોના ધારક હતા. ભગવાનના શરીરનો પડખાનો ભાગ (सण्णयपासे संगयपासे सुंदरपासे सुजायपासे मियमा-इय-पीण-रइय-पासे) ક્રમથી નમેલો હતો, ઉચિત પ્રમાણવાળો હતો, સુંદર

**पीण-रइय-पासे उज्जुय-सम-सहिय-जच्च-तणु-कसिण-णिद्ध-आइज्ज-लडह-रमणिज्ज-रोम-राई झस-विहग-सुजाय-पीण-कुच्छी झसोयरे सुइकरणे पउम-वियड-णाभे गंगावत्तग-पयाहिणावत्त-**

'**मियमाइय-पीण-रइय-पासे**' मितमात्रिक-पीन-रतिद-पार्श्वः, तत्र-मितमात्रिकौ-समुचितपरिमाणवन्तौ, पीनौ-पुष्टौ, रतिदौ-रम्यौ, पार्श्वौ-कक्षाभ्यामधो वामदक्षिणशरीर-भागौ यस्य स तथा, '**उज्जुय-सम-सहिय-जच्च-तणु-कसिण-णिद्ध-आइज्ज-लडह-रमणिज्ज-रोमराई**' ऋजुक-सम-सहित-जात्य-तनु-कृष्ण-स्निग्धा-ऽऽदेय-ललित-रमणीय-रोमराजि', ऋजुकाणां-सरलानां, समसहितानां-मिलितानां, जात्यानां-स्वजातीयेषूत्तमानां, तनूनां-सूक्ष्माणां, स्निग्धानां-सरसानाम्, आदेयानाम्-उपादेयानां, 'लडह' ललितानां=रमणीयानां-मनोरमाणां रोम्णां राजिः-पङ्क्तिर्यस्य स तथा, सरल-सूक्ष्म-कृष्ण-सरस-रम्य-रोमराजिमान् इत्यर्थः। '**झस-विहग-सुजाय-पीण-कुच्छी**' झष-विहग-सुजात-पीन-कुक्षि'-मत्स्य-पक्षिणोरिव सुजातः=सुन्दरः, पीनः-पुष्ट', कुक्षिः-उदरं यस्य स तथा, '**झसोयरे**' झषोदरः-मीनवत्सुन्दरोदरवान् इति भावः। '**सुइकरणे**'' शुचिकरण'-शुचीनि-पवित्राणि, करणानि-इन्द्रियाणि यस्य सः, इन्द्रियाणां मलवाहित्वेऽपि भगवदतिशयाद्-निर्मलतया निर्मल-निरुपलेपेन्द्रियवान् इति भावः। '**पउम-वियड-**

था, उचित प्रमाण से युक्त था, सुन्दर था, शोभन था, तथा-परिमित मात्रावाला, पुष्ट एवं रम्य था। रोमराजि (**उज्जुय-सम-सहिय-जच्च-तणु-कसिण-णिद्ध-आइज्ज-लडह-रमणिज्ज-रोम-राई**) सरल, परस्पर में मिलित, उत्तम, पतली, काली, चिकनी, उपादेय एवं अत्यन्त मनोहर थी। उनकी कुक्षि (**झस-विहग-सुजाय-पीण-कुच्छी**) मत्स्य एवं पक्षी के समान सुन्दर और पुष्ट थी। (**झसोयरे**) उनका उदर मत्स्य के जैसा सुन्दर था। (**सुइकरणे**) इन्द्रियाँ यद्यपि स्वभावतः मलवाहिनी है, तथापि अतिशय के प्रभाव

હતો, શોભન હતો, તથા મર્યાદિત ઘાટનો પુષ્ટ તેમજ રમ્ય હતો. રોમરાજિ (શરીર ઉપરના વાળની પંક્તિ) (उज्जुय-समसहिय-जच्च-तणु-कसिण-णिद्ध-आइज्ज-लडह- रमणिज्ज-रोम-राई) સરખી, પરસ્પરમાં મળી ગયેલી, ઉત્તમ, પાતળી, કાળી, ચિકણી, ઉપાદેય તેમજ બહુજ મનોહર હતી. તેમની કાંખ (બગલ) (झस-विहग-सुजाय-पीण-कुच्छी) મત્સ્ય તેમજ પક્ષીના જેવી સુંદર અને પુષ્ટ હતી. (झसोयरे) તેમનું ઉદર (પેટ) માછલીના જેવુ સુંદર હતું. (सुइकरणे) ઇંદ્રિયો જોકે સ્વભાવથી મલવાહિની છે તો પણ અતિશયના

**तरंग-भंगुर-रवि-किरण-तरुण-बोहिय-अकोसायंत-पउम-गंभीर-वि-यड-णाभे पाहय-सोणंद-मुसल-दप्पण-णिकरिय-वर-कणगच्छ-रुसरिस-वरवइर-वलियमज्झे पमुइय-वरतुरग-सीह-वर-वट्टिय-कडी**

णाभे' पद्म-विकट-नाभः-पद्मकोशवद् विकटा-गम्भीरा नाभिर्यस्य स तथा, '**गंगावत्तग-पयाहिणावत्त-तरंग-भंगुर-रवि-किरण-तरुण-बोहिय-अकोसायंत-पउम-गंभीर--वियडणाभे**' गङ्गाऽऽवर्तक-प्रदक्षिणाऽऽवर्त-तरङ्ग-भङ्गुर-रवि-किरण-तरुण-बोधित-विकसत्पद्म-गम्भीर - विकट-नाभः-तत्र - गङ्गाऽऽवर्तकसम्बन्धिप्रदक्षिणावर्ततरङ्गवद्भङ्गुरा=चक्राकारवर्तुला, रविकिरणतरुणबोधितविकसत्पद्मवद् गम्भीरा, विकटा=विशाला च नाभिर्यस्य स तथा, '**साहय-सोणंद-मुसल-दप्पण-णिकरिय-वरकणगच्छरु-सरिस-वरवइर-वलिय-मज्झे**' संहत-सोनन्द-मुसल-दर्पण-निकरित-वरकनकत्सरु-सदृश-वरवज्र-वलित-मध्यः-संहतं-संक्षिप्तमध्य यत्-सोनन्दं=त्रिकाष्ठिका, मुसलः-प्रसिद्धः, दर्पणः-दर्पणदण्डः, निकरितवरकनकत्सरुः=निकरितं=सारीकृतं सर्वथा संशोधित यद् वरकनकं-श्रेष्ठसुवर्ण, तस्य त्सरुः-खड्गमुष्टिः, एतेषामितरेतरयोगद्वन्द्वः, तैः सदृशः-वर-

से भगवान की इन्द्रियाँ निर्लेप रहती थीं। (**पउमवियडणाभे**) नाभि पद्मकोश के समान गंभीर थी, (**गंगावत्तग-पयाहिणावत्त-तरंग-भंगुर-रवि-किरण-तरुण-बोहिय-अकोसायंत-पउम-गंभीर-वियड-णाभे**) तथा-गंगावर्त्तक-संबंधी प्रदक्षिणावर्तयुक्त तरंग की तरह भंगुर, चक्रसमान गोल, मध्याह्नकालके सूर्यकी किरणो द्वारा विकसित पद्म के समान गंभीर एवं विशाल थी। (**साहय-सोणंद-मुसल-दप्पण-णिकरिय-वरकणगच्छरु-सरिस-वरवइर-वलिय-मज्झे**) कटिप्रदेश त्रिकाष्ठिका के मध्यभाग समान, मूसल के मध्यभाग समान, दर्पण के दण्ड के मध्यभाग समान, चलकते हुए सोनेकी

પ્રભાવથી ભગવાનની ઈંદ્રિયો નિર્લેપ રહેતી હતી. (पउमवियडणाभे) નાભિ પદ્મકોશ જેવી ગંભીર હતી (गंगावत्तग-पयाहिणावत्त-तरंग-भंगुर-रवि-किरण-तरुण-बोहिय-अकोसायंत-पउम-गंभीर-वियड-णाभे) તથા ગંગાવર્ત્તક સંબંધી પ્રદક્ષિણાવર્તયુક્ત તરંગની પેઠે ભંગુર, ચક્રના જેવી ગોળ, મધ્યાહ્ન કાળના સૂર્યના કિરણોથી વિકસેલા પદ્મ સમાન ગંભીર તેમજ વિશાળ હતી. (साहय-सोणंद-मुसल-दप्पण-णिकरिय-वरकणगच्छरु-सरिस-वरवइर-वलिय-मज्झे) કટિપ્રદેશ ત્રિકાષ્ઠિકા (ઘોડી અથવા તિરપાઈ)ના મધ્યભાગ જેવો, મૂસલના મધ્યભાગ જેવો, દર્પણના દંડના મધ્યભાગ જેવો, ચળકતા સોનાની ખડ્ગ-

**वर-तुरग-सुजाय-गुज्झ-देसे आइण्ण-हउव्व णिरुवलेवे वर-वारण-तुल्ल-विक्कम-विलसिय-गई गय-ससण-सुजाय-सन्निभोरू**

वज्र इव वलितः=क्षामः-कृशः, मध्यः=मध्यभागो यस्य स तथा, '**पमुइय-वरतुरग-सीह-वर-वट्टिय-कडी**' प्रमुदित-वरतुरग-सिंहवर-वर्तित-कटिः-प्रमुदितस्य रोगादिरहिततया प्रसन्नस्य, वरतुरगस्य-श्रेष्ठहयस्य, तादृगस्य सिंहस्य चैव वरा=श्रेष्ठा वर्तिता-वर्तुला, कटिर्यस्य स तथा, '**वर-तुरग-सुजाय-गुज्झ-देसे**' वर-तुरग-सुजात-गुह्यदेशः-वरस्य=श्रेष्ठस्य अश्वस्येव सुजातः-सुन्दरो गुह्यदेशो यस्य स तथा। '**आइण्णहउव्व णिरुवलेवे**' आकीर्णहय इव निरुपलेपः-आकीर्णः=सुलक्षणयुक्त उत्तम-जातीयो यो हयः=अश्वः, स इव निरुपलेपः=निर्गत उपलेपात्—मलिनसम्पर्कात् इति निरुपलेपः-निर्मल इत्यर्थः। '**वर-वारण-तुल्ल-विक्कम-विलसिय-गई**' वर-वारण-तुल्य-विक्रम-विलसित-गतिः-वरवारणस्य=श्रेष्ठगजस्य तुल्यः=समानः विक्रमः=पराक्रमः, तथा तत्तुल्या विलसिता=चरणसंचरणरणनरहिता गतिर्गमनं यस्य सः, गजेन्द्रवदतुलबलशाली ललितगमनशीलश्चेति भावः। '**गय-ससण-सुजाय-संनिभोरू**' गज-श्वसन-सुजात-सन्निभोरुः-गजश्वसनस्य=हस्तिशुण्डादण्डस्य सुजातस्य=सुष्ठूत्पन्नस्य हस्तिश्वसनस्यैव सन्निभौ-सदृशौ

---

खड्गमुष्टि के मध्यभाग समान और वज्रके मध्यभाग समान पतला था। तथा (**पमुइय-वरतुरग-सीहवर-वट्टिय-कडी**) कटिप्रदेश रोगादिकरहित होने से प्रसन्न श्रेष्ठ घोडे के समान और सिह के समान गोल था। (**वर-तुरग-सुजाय-गुज्झ-देसे**) गुह्य प्रदेश सुन्दर घोड़े के गुह्य प्रदेश के समान था। (**आइण्णहउव्व णिरुवलेवे**) आकीर्ण जातीय घोड़ेके गुह्य प्रदेश के समान भगवानका गुह्य प्रदेश निरुपलेप था। तथा (**वर-वारण-तुल्ल-विक्कम-विलसिय-गई**) भगवानका पराक्रम उत्तम हाथी के समान था, तथा उनकी गति भी उसीके समान सुन्दर थी। (**गय-ससण-सुजाय-सन्निभोरू**) हस्तिशुण्डा-

---

મુઠીના મધ્યભાગ જેવો અને વજ્રના મધ્યભાગ જેવો પાતળો હતો. તથા (पमुइय-वरतुरग-सीह-वर-वट्टिय-कडी) કટિપ્રદેશ રોગ આદિકથી રહિત હોવાથી પ્રસન્ન શ્રેષ્ઠ ઘોડાની પેઠે અને સિંહની પેઠે ગોળ હતો. (वरतुरग-सुजाय-गुज्झ-देसे) ગુહ્યપ્રદેશ સુંદર ઘોડાના ગુહ્યપ્રદેશના જેવો હતો ( आइण्णहउव्व णिरुवलेवे ) આકીર્ણ-જાતવાન ઘોડાના ગુહ્યપ્રદેશના જેવો ભગવાનનો ગુહ્યપ્રદેશ નિરૂપલેપ હતો. તથા ( वर-वारण-तुल्ल-विक्कम-विलसिय-गई ) ભગવાનનું પરાક્રમ ઉત્તમ હાથીના જેવું હતું, તથા તેમની ચાલ પણ તેના

समुग्ग-णिमग्ग-गूढ–जाणू एणी–कुरुविंदा-वत्त-वट्टा–णुपुव्व-जंघे संठिय–सुसिलिट्ठ-विसिट्ठ–गूढ-गुप्फे सुपइट्ठिय-कुम्म-चारु-चलणे

ऊरू यस्य स तथा, सुन्दर-गजशुण्डादण्डसदृशोरुयुगलवानिति भावः, '**समुग्ग-णिमग्ग-गूढ-जाणू**' समुद्ग-निमग्न-गूढ-जानुः–समुद्गः–सम्पुटकः–तस्योपरितनाधस्तन-रूपयोर्भागयोः संधिवत् निमग्नगूढे=अत्यन्तावृते-मांसपुष्टे इत्यर्थः, तादृशे जानुनी 'घुटना' इति प्रसिद्धे यस्य स तथा, उपचितत्वाददृश्यमानजान्वस्थिक इत्यर्थः। '**एणी–कुरुविंदावत्त–वट्टा–णुपुव्व–जंघे**' एणी-कुरुविन्द – वर्त्र-वृत्ता-नुपूर्व्यजङ्घः–एण्याः–हरिण्या इव, कुरुविन्दः–तृणविशेषः, वर्त्रं=सूत्रवलनकं च, ते इव च वृत्ते–वर्तुले, आनुपूर्व्येण तनुरूपे जङ्घे यस्य स तथा यद्वा–एणी–कुरुविन्दावर्त्त–वृत्ता-नुपूर्व्यजङ्घः–इति च्छाया, तत्र–एण्या इव, कुरुविन्दावर्त्त=भूषणविशेष इव च वृत्ते= वर्तुले आनुपूर्व्येण तनुस्वरूपे जङ्घे यस्य स तथा, '**संठिय–सुसिलिट्ठ–विसिट्ठ–गूढ–गुप्फे**' संस्थित–सुश्लिष्ट–विशिष्ट–गूढ–गुल्फः–संस्थितौ–सुसंस्थानवन्तौ, सुश्लिष्टौ–

दण्ड के समान उन प्रभुकी दोनों जंघाएँ थीं। (**समुग्ग-निमग्ग-गूढ-जाणू**) डिब्बे के समान प्रभुके घुटने गुप्तढकनी से युक्त एवं अन्तर रहित होनेसे सुन्दर थे। अर्थात् उपचित होनेसे प्रभुके जानु की अस्थियाँ दृष्टिगोचर नहीं होती थीं। (**एणी-कुरुविंद–वत्त–वट्टा–णुपुव्व–जंघे**) एणी–हिरणी की जङ्घा समान, तथा–कुरु-विन्द–तृणविशेष और डोरी के बलके समान अथवा कुरुविन्दावर्त्त नामक भूषणके समान गोल पतली–ऊपर से मोटी नीचेकी ओर उतरतीं २ पतली प्रभुकी दोनों जंघाएँ थीं। (**संठिय–सुसिलिट्ठ–विसिट्ठ–गूढ–गुप्फे**) शोभन आकारयुक्त, अच्छी

જેવીજ સુંદર હતી. (गय–ससण–सुजाय–सन्निभोरु) હસ્તિશુંડાદંડના (હાથીના સૂંઢના) જેવી તે પ્રભુની બન્ને જંઘાઓ હતી. (समुग्ग–णिमग्ग–गूढ-जाणू) ડબ્બાની પેઠે પ્રભુના ઘુંટણો ગુપ્ત ઢાકણવાળાં તેમજ અંતર રહિત હોવાથી સુંદર હતા., અર્થાત્ ઉપચિત હોવાથી પ્રભુના ઘુંટણનાં હાડકાં દેખાતાં નહતાં. (एणी–कुरुविंदा–वत्त–वट्टा–णुपुव्व–जंघे) એણી–હિરણીની જંઘાં-સમાન, તથા–કુરૂવિંદ–તૃણવિશેષ. અને દોરીની વલ સમાન, અથવા કુરૂ-વિન્દાવર્ત્ત નામક ભૂષણ સમાન ગોળ પાતળી–ઉપરથી જાડી તેમજ નીચેની તરફ ઉતરતી ઉતરતી પાતળી પ્રભુની બન્ને જંઘાઓ હતી. (संठिय–सुसि-लिट्ठ–विसिट्ठ–गूढ–गुप्फे) શોભાયમાન આકારવાળા, સારી રીતે મળેલા તેમજ

**अणुपुव्व-सुसंहयं-गुलीए उण्णय-तणुतंब-णिद्ध-णक्खे रत्तुप्पल-पत्त-मउय-सुकुमाल-कोमल-तले नग-नगर-मगर-सागर-चक्कंक-**

सुमिलितौ, गूढौ-मांसलत्वाददृश्यौ गुल्फौ यस्य स तथा, पुष्टतया तिरोहितगुल्फः । 'सुप्पइट्ठिय-कुम्म-चरुचलणे' सुप्रतिष्ठित-कूर्मचारु-चरणः-सुप्रतिष्ठितौ-शोभनरूपेण स्थितौ, कूर्मवत्-कच्छपवत्, चारू=सुन्दरौ चरणौ यस्य स तथा, संकोचिताङ्गक-च्छपपृष्ठवच्चरणवानिति भावः । 'अणुपुव्व-सुसंहयं-गुलीए' आनुपूर्व्य-सुसंहताऽङ्गुलीकः-आनुपूर्व्येण=क्रमेण हीयमाना वर्द्धमाना वा, तथा सुसंहताः-विभिन्ना अपि संमिलिता अङ्गुल्यः=चरणाङ्गुल्यो यस्य स तथा, 'उण्णय-तणु-तंब-णिद्ध-णक्खे' उन्नत-तनुताम्र-स्निग्ध-नखः-समुन्नत-प्रतल-रक्तचिक्कण-नख-युक्त इत्यर्थः, 'रत्तुप्पल-पत्त-मउय-सुकुमाल-कोमल-तले' रक्तोत्पल-पत्र-मृदुक-सुकुमार-कोमलतलः-रक्तकमलदलवदतिकोमलारुणवर्णचरणतलवानित्यर्थः । 'नग-नगर-मगर-सागर-चक्कंक-वरंग-मंगलं-किय-चलणे' नग-नगर-मकर-सागर-चक्राङ्क-वराङ्क-मङ्गलाङ्कित-चरणः,तत्र-नगः=पर्वतः,

रीति से मिलित एवं गूढ-मांसल-पुष्ट होनेसे अदृश्य ऐसे प्रभुके दोनों पैरोंके गुल्फ थे । (सुप्पइट्ठिय-कुम्म-चारु-चलणे) प्रभुके पॉव सकुच कर बैठे हुए कच्छपके समान सुन्दर थे । (अणुपुव्व-सुसंहयं-गुलीए) अनुक्रमसे उचित आकारवाली एवं भिन्न २ होने पर भी परस्पर में संमिलित प्रभुके चरणोंकी अंगुलियां थीं। (उन्नय-तणु-तंब-णिद्ध-णक्खे) समुन्नत, प्रतल, रक्त एवं चिक्कण प्रभुके नख थे । (रत्तुप्पल-पत्त-मउय-सुकुमाल-कोमल-तले) रक्तकमलके दलके समान अति कोमल लालवर्णके प्रभुके चरणोंके तले थे । (नग-नगर-मगर-सागर-चक्कंक-वरंग-मंगलं-किय-चलणे) नग-पर्वत, नगर-पुर, मकर-जलचरजीवविशेष,

ગૂઢ-માંસલ-પુષ્ટ-હોવાથી ન દેખાય એવા પ્રભુના બન્ને પગના ગોઠણો હતા. (सुप्पइट्ठिय-कुम्म-चारु-चलणे) પ્રભુના પગ સંકુચાઈને બેઠેલા કાચબાની પેઠે સુંદર હતા. (अणुपुव्व-सुसंहयं-गुलीए) અનુક્રમથી ઉચિત આકારવાળી તેમજ જુદી જુદી હોવા છતાં પણ પરસ્પરમાં જોડાએલી પ્રભુના ચરણોની આંગળીઓ હતી. (उन्नय-तणु-तंब-णिद्ध-णक्खे) સમુન્નત, પ્રતલ, લાલ તેમજ ચિકણા પ્રભુના નખ હતા. (रत्तुप्पल-पत्त-मउय-सुकुमाल-कोमल-तले) રક્ત કમલના દલના જેવાં અતિશય કોમળ લાલ વર્ણનાં પ્રભુના ચરણોનાં તળિયાં હતાં. (नग-नगर-मगर-सागर-चक्कंक-वरंग-मंगलं-किय-चलणे). નગ-પર્વત, નગર-પુર, મકર-જલચર જીવ વિશેષ, સાગર-સમુદ્ર અને ચક્ર

**वरंग-मंगलं-किय-चलणे विसिट्ठरूवे हुयवह-निद्धूम-जलिय-तडि-तडिय-तरुण-रवि-किरण-सरिस-तेए अणासवे अममे अकिंचणे**

नगरं=पुरं, मकर:=जलचरजीवविशेषः, सागरः=समुद्रः, चक्रं=प्रसिद्धम्, एतान्येव अङ्का-लक्षणानि, तथा वराऽङ्काश्च=शुभसूचकस्वस्तिकादिलक्षणानि, मङ्गलः=शुभलक्षण-विशेषश्च, तैरलङ्कृतौ सुशोभितौ-चरणौ यस्य स तथा, नगनगरमकरादिचिह्न-स्वस्तिकादिचिह्न-मङ्गलचिह्नरूप-शुभलक्षणसुशोभितचरणयुगवानिति भावः । **'विसिट्ठरूवे'** विशिष्टरूपः-अतिसुन्दरः, **'हुयवह-निद्धूम-जलिय-तडितडिय-तरुण-रवि-किरण-सरिस-तेए'** हुतवह - निर्द्धूम - ज्वलित - तडितडि - तरुण - रवि-किरण - सदृश - तेजस्कः, हुतवहनिर्द्धूमज्वलितस्य=अग्नेर्निर्द्धूमज्वालाया', तडितडितः – धारावाहिकतया पुनः पुनर्विद्योतितविद्युतः,–तथा तरुणरविकिरणानां—सदृशं=समानं तेजः—दीप्तिर्यस्य स तथा, **'अणासवे'** अनास्रवः—अविद्यमाना आस्रवा यस्य स तथा, कर्मागमरहित इत्यर्थः, **'अममे'** अममः—ममत्वरहितः **'अकिंचणे'** अकिञ्चनः—नास्ति

सागर—समुद्र और चक्र इनके शुभ चिह्नों से, स्वस्तिकादि शुभ चिह्नों से तथा मङ्गल नामक शुभ चिह्नसे सुशोभित प्रभुके दोनों चरण थे। **(विसिट्ठरूवे)** प्रभुका रूप विशिष्ट—असाधारण अर्थात् अनुपम था। **(हुयवय—णिद्धूम—जलिय—तडित-डिय—तरुण—रवि—किरण—सरिस—तेए)** निर्धूम अग्नि के समान, वार बार चम-कती हुई बिजली के समान तथा मध्याह्नकालिक रविकिरणोंके समान प्रभुका तेज था। **(अणासवे)** नवीन कर्मोंके आस्रवसे प्रभु सर्वथा रहित थे। **(अममे)** प्रभुके किसी भी पर पदार्थमें ममत्व नहीं था। **(अकिंचणे)** प्रभु अकिंचन—परिग्रह-रहित थे। **(छिन्नसोए)** भगवानने अपनी भवपरम्पराको नष्ट कर दिया था।

એનાં શુભ ચિહ્નોથી—સ્વસ્તિકાદિ શુભચિહ્નોથી, તથા મંગળનામક ચિહ્નથી સુશોભિત પ્રભુના બન્ને ચરણુ હતા (विसिट्ठरूवे) પ્રભુનું રૂપ વિશિષ્ટ--અસાધા-રણુ અર્થાત્ અનુપમ હતું. (हुयवह-णिद्धूम- जलिय--तडि--तडिय--तरुण--रवि--किरण--सरिस--तेए) ધુમાડા વગરના અગ્નિના જેવું, વારંવાર ચળકતી વિજ-ળીના જેવું, તથા મધ્યાહ્ન કાળના સૂર્યનાં કિરણો જેવું પ્રભુનુ તેજ હતું (अणासवे) નવીન કર્મોના આસ્રવથી પ્રભુ સર્વથા રહિત હતા. (अममे) પ્રભુને કોઇ પણુ પર પદાર્થમાં મમત્વ નહોતું (अकिंचणे) પ્રભુ અકિંચણુ—પરિ-ગ્રહ વગરના હતા. (छिन्नसोए) ભગવાને પોતાના ભવપરંપરાનો નાશ કરી

**छिन्नसोए निरुवलेवे ववगय-पेम-राग-दोस-मोहे निग्गंथस्स पवयणस्स देसए सत्थनायगे पइट्ठावए समणगपई समणग-**

किञ्चन यस्य स तथा, परिग्रहग्रन्थिरहितः। '**छिन्नसोए**' छिन्नस्रोताः-निवर्तित-भवप्रवाहः, '**निरुवलेवे**' निरुपलेपः-उपलेपो-मालिन्यं; तद् द्विविधं द्रव्यरूपं भावरूपञ्च, तादृशाद् द्विविधादुपलेपात्-निर्गतो निरुपलेपः, द्रव्यतो निर्मलशरीरः, भावतः कर्मबन्धहेतु-भूतोपलेपरहितः। पूर्वोक्तमेवार्थं विशेषतः स्पष्टयन्नाऽऽह '**ववगय-पेम-राग-दोस-मोहे**' व्यपगतप्रेमरागद्वेषमोहः-प्रेम च रागश्च द्वेषश्च मोहश्चेति प्रेमरागद्वेषमोहाः, प्रेम-आसक्ति-लक्षणम्, रागः-विषयेषु अनुरागरूपः, द्वेषः-अप्रीतिरूपः मोहः-अज्ञानरूपः, एते प्रेमादयो व्यपगताः-विनष्टा यस्य स तथा, '**निग्गंथस्स पवयणस्स देसए**' निर्ग्रन्थस्य प्रवचनस्य देशकः-निर्ग्रन्थस्य-निर्गतं ग्रन्थाद् द्रव्यतः सुवर्णादिरूपाद्, भावतो मिथ्यात्वादिलक्षणात्-निर्ग्रन्थं तस्य निर्ग्रन्थस्य, प्रवचनस्य-प्रकर्षेण-उच्यते-परमकल्याणाय कथ्यते-इति प्रवचनम्-तस्य प्रवचनस्य देशकः=उपदेशकः-निरारम्भ-निष्परिग्रह-धर्मोपदेशक इति भावः। '**सत्थनायगे**' सार्थनायकः-सार्थस्य-मोक्षप्रस्थितभव्यसमूहस्य, नेता-स्वामीत्यर्थः '**पइट्ठावए**' प्रतिष्ठापकः-श्रुतचारित्र-लक्षणधर्मसंस्थापकः। '**समणगपई**' श्रमणकपतिः-श्राम्यन्ति=सोत्साहं कर्मनिर्जरार्थं

(**णिरुवलेवे**) द्रव्य एवं भाव रूप दोनों प्रकारकी मलिनतासे प्रभु वर्जित थे। इसी बातको पुनः विशेष रूपसे इन विशेषणों से सूत्रकार स्पष्ट करते हैं-(**ववगय-पेम-राग-दोस-मोहे**) भगवानने अपनी आत्मा से प्रेम, राग द्वेष एवं मोहको नष्ट कर दिया था। (**णिग्गंथस्स पवयणस्स देसए**) प्रभु निर्ग्रन्थ प्रवचनके उपदेशक थे। (**सत्थणायगे**) मोक्षकी ओर प्रस्थित भव्यसमूहके भगवान नेता थे। (**पइ-ट्ठावए**) श्रुतचारित्ररूप धर्मके प्रभु संस्थापक थे। (**समणगपई**) भगवान् तप एवं

દીધો હતો. ( णिरुवलेवे ) દ્રવ્ય તેમજ ભાવરૂપ બન્ને પ્રકારની મલિનતાથી પ્રભુ વર્જિત હતા. આ વાતને ફરીને વિશેષ રૂપથી તેમનાં અંગોનાં વિશે-ષણોથી સૂત્રકાર સ્પષ્ટ કરે છે. ( ववगय-पेम-राग-दोस-मोहे ) ભગવાને પોતાના આત્મામાંથી પ્રેમ, રાગ, દ્વેષ તેમજ મોહનો નાશ કર્યો હતો. ( **णिग्गंथस्स पवयणस्स देसए** ) પ્રભુ નિર્ગ્રન્થ પ્રવચનના ઉપદેશક હતા ( **सत्थणायगे** ) મોક્ષના તરફ વળેલા ભવ્યસમૂહના ભગવાન નેતા હતા. ( **पइट्ठावए** ) શ્રુત ચારિત્રરૂપ ધર્મના પ્રભુ સંસ્થાપક હતા. ( समणगपई )

विंद्-परियड्ढिए चउतीस-बुद्धा-इसेस-पत्ते, पणतीस-सच्चवयणा-

श्रम कुर्वन्ति तपः-स्वाध्यायादिपु इति श्रमणाः-त एव श्रमणकाः, तेषां पतिः-चतुर्विधसङ्घाधिपतिरिति भाव', 'समणग-विंद-परियड्ढिए' श्रमणक-वृन्द-परिवर्द्धकः-श्रमणकानां चतुर्विधानां, वृन्दं-सङ्घः-तस्य परिवर्द्धकः-वृद्धिकारी। अथवा 'परियट्टए' पर्यटक'-अग्रेसरः, यद्वा पर्यायकः-तै' परिपूर्ण'। 'चउत्तीस-बुद्धाइसेस-पत्ते' चतुस्त्रिंशद्-बुद्धातिशेष-प्राप्तः=चतुस्त्रिंशत्=चतुस्त्रिंशत्सङ्ख्यका ये बुद्धानां=तीर्थकराणाम् अतिशेषाः-अतिशया' तान् प्राप्तः, तत्र-अवृद्धिस्वभावकं केशश्मश्रुरोमनखमिति प्रथमोऽतिशयः, अन्येऽप्यतिशयाः समवायाङ्गसूत्रेऽभिहितास्ततोऽवगन्तव्याः। 'पणतीस-सच्चवयणाइ-सेस-पत्ते' पञ्चत्रिंशत्सत्यवचनाऽतिशेपप्राप्तः-पञ्चत्रिंशत्सङ्ख्यका ये सत्यवचनस्य अति-शेषा'-अतिशयाः तान् प्राप्तः, अर्थात् पञ्चत्रिंशद्वाणीगुणयुक्त इति भावः। पञ्चत्रिंश-द्वाणीगुणा आचाराङ्गसूत्रस्य मत्कृताऽऽचारचिन्तामणिटीकायां प्रथमाध्ययने

स्वाध्याय आदि क्रियाओंमें कर्मनिर्जराके लिये परिश्रम करनेवाले श्रमणोंके स्वामी थे। (समणग-विंद-परि-यड्ढिए) चतुर्विध संघके वे प्रभु वर्द्धक थे। अथवा उसके अग्रेसर या उससे परिपूर्ण थे। (चउत्तीस-बुद्धाइसेस-पत्ते) तीर्थंकरोंके चौतीस अतिशयोंसे प्रभु विराजमान थे। इनमें नख, केश एवं श्मश्रु-दाढी-मूँछका नहीं वढना यह पहला अतिशय है, अवशिष्ट अतिशय समवायाङ्ग सूत्र से जान लेना चाहिये। (पणतीस-सच्चवयणा-इसेस-पत्ते) वाणीके पैंतीस गुणों से प्रभु युक्त थे। ३५वाणी-गुणरूप अतिशय आचारांग सूत्रके प्रथम अध्ययनकी आचारचिंतामणि टीका में कहे हैं, अत' वहां से जान लेना चाहिये। (आगासगएणं चक्केणं) आकाशगत

ભગવાન તપ તેમજ સ્વાધ્યાય આદિ ક્રિયાઓમા કર્મનિર્જરાને માટે પરિ-શ્રમ કરવાવાળા શ્રમણોના સ્વામી હતા. (समणग--विंद--परियड्ढिए) ચતુ-ર્વિધ સંઘના તે પ્રભુ વર્દ્ધક હતા અથવા તેના અગ્રેસર કે તેનાથી પરિ-પૂર્ણ હતા. (चउत्तीसबुद्धा--इसेसपत्ते) તીર્થંકરોના ચોત્રીસ અતિશયોથી પ્રભુ બિરાજમાન હતા. તેમા નખ કેશ તેમજ શ્મશ્રુ-દાઢી--મૂંછનું ન વધવું એ પહેલો અતિશય છે, બાકીના અતિશય સમવાયાગ સૂત્રથી જાણી લેવા જોઈએ. (पणतीस--सच्च-.वयणाइसेस--पत्ते) વાણીના પાંત્રીસ ગુણોથી પ્રભુ યુક્ત હતા. ૩૫ વાણી ગુણરૂપ અતિશય આચારાગ સૂત્રના પ્રથમ અધ્યય-નની આચાર--ચિંતામણિ ટીકામાં કહેલા છે, એટલે ત્યાંથી તે જાણી લેવા

इसेस-पत्ते आगासगएणं चक्केणं आगासगएणं छत्तेणं आगासमियाहिं चामराहिं आगासगएणं फालियामएणं सपायवीढेणं सीहासणेणं धम्मज्झएणं पुरओ पकढिज्जमाणेणं चउदसहिं समणसाहस्सीहिं छत्तीसाए अज्जियासाहस्सीहिं सद्धिं संपडिवुडे

व्याख्याताः, 'आगासगएणं चक्केणं' आकाशगतेन चक्रेण। 'आगासगएणं छत्तेणं' आकाशगतेन छत्रेण। 'आगासमियाहिं' आकाशमिताभ्यां=प्राप्ताभ्यां, 'चामराहिं' चामराभ्याम्—अतिशयप्रभावाच्चक्रादिभिरुपलक्षित इति भावः। 'आगासगएणं फलिआमएणं' आकाशगतेन स्फटिकमयेन—आकाशस्थितेन स्फटिकनिर्मितेन 'सपायवीढेणं' सपादपीठेन—पादस्थापनपीठसहितेन 'सीहासणेणं' सिंहासनेन, 'धम्मज्झएणं' धर्मध्वजेन, 'पुरओ' पुरतः—अग्रतः, 'पकढिज्जमाणेणं' अतिशयमहिम्नो प्रकटयमानेन 'चउद्दसहिं समणसाहस्सीहिं' चतुर्दशभिः—श्रमणसाहस्रीभिः श्रमणानां चतुर्दशसहस्रैः 'छत्तीसाए अज्जियासाहस्सीहिं' षट्त्रिंशता आर्यिकासाहस्रीभिः—आर्यिकाणां षट्त्रिंशत्सहस्रैः 'सद्धिं' सार्द्धं—सह। 'संपडिवुडे' सम्परिवृतः-

चक्रसे, (आगासगएणं छत्तेणं) आकाशगत छत्रों से (आगासमियाहिं चामराहिं) आकाशगत चामरों से वे प्रभु उपलक्षित थे। (आगासगएणं फलियामएणं सपायवीढेणं सीहासणेणं धम्मज्झएणं पुरओ पकढिज्जमाणेणं) आकाशगत, स्फटिकमय एवं पादपीठसहित ऐसे सिंहासन से एवं अतिशय की महिमा से प्रकटित और आगे २ चलनेवाले ऐसे धर्मध्वजा से युक्त, तथा—(चउद्दसहिं समणसाहस्सीहिं छत्तीसाए अज्जियासाहस्सीहिं सद्धिं संपरिवुडे) १४ हजार श्रमणों के, एवं

જોઈએ. (आगासगएणं चक्केणं) આકાશગત ચક્રથી (आगासगएणं छत्तेणं) આકાશગત છત્રોથી (आगासमियाहि चामराहिं) આકાશગત ચામરોથી તે પ્રભુ ઉપલક્ષિત (દેખાતા) હતા. (आगासगएणं फलियामएणं सपायवीढेणं सीहासणेणं धम्मज्झएणं पुरओ पकढिज्जमाणेणं] આકાશગત, સ્ફટિકમય તેમજ પાદપીઠ સહિત એવાં સિંહાસનથી તેમજ અતિશયની મહિમાથી પ્રગટિત અને આગળ આગળ ચાલનારા એવા ધર્મધ્વજાથી યુક્ત [चउद्दसहिं समणसाहस्सीहिं छत्तीसाए अज्जियासाहस्सीहिं सद्धिं संपरिवुडे] ૧૪ હજાર શ્રમણોના તેમજ છત્રીસહજાર આર્યાઓના પરિવારથી યુક્ત ભગવાન શ્રી મહાવીર પ્રભુ

**पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुग्गामं दूइज्जमाणे सुहंसुहेणं विहरमाणे चंपाए णयरीए बहिया उवणगरग्गामं उवागए चंपं नगरिं पुण्णभद्दं चेइयं समोसरिउकामे ॥ सू० १६॥**

भगवान्–श्रीमहावीरः, '**पुव्वाणुपुव्विं**' पूर्वानुपूर्व्या–तीर्थकरपरिपाट्या–तीर्थङ्करपरम्परया। '**चरमाणे**' चरन्–विहरन्, '**गामाणुग्गामं**' ग्रामानुग्रामम् एकस्माद् ग्रामाद् ग्रामान्तरम्, '**दूइज्जमाणे**' द्रवन्–गच्छन् एकस्माद् ग्रामादनन्तरं ग्राममनुल्लङ्घयन्नित्यर्थः, '**सुहंसुहेणं**' सुखसुखेन–नयमवाधारहितेन, '**विहरमाणे**' विहरन्–अप्रतिबद्धविहारं कुर्वन्, '**चंपाए नयरीए**' चम्पाया नगर्याः, '**बहिया**' बहिः '**उवणगरग्गामं**' उपनगरग्रामम् नगरसमीपवर्त्तिनं ग्रामम्। '**उवागए**' उपागतः–समवसृतः, किमर्थमुपागतः ? इत्याह–'**चंपं णयरिं**' चम्पायां–चम्पानाम्न्यां नगर्यां '**पुण्णभद्दं चेइयं समोसरिउकामे**' पूर्णभद्रं=पूर्णभद्रनामकं चैत्यम्=उद्यानं समवसर्तुकामः–आगन्तुकामः सन् उपागत इति सम्बन्धः॥ सू०१६॥

छत्तीसहजार आर्यिकाओं के परिवार से युक्त भगवान् श्रीमहावीर प्रभु (**पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे**) तीर्थंकरों की परंपरा के अनुसार विहार करते हुए (**गामाणुग्गामं दूइज्जमाणे**) एकग्राम से दूसरे ग्राम पधारते हुए (**सुहंसुहेणं विहरमाणे**) सुख सुख से विचरते हुए (**चंपाए णयरीए बहिया उवणगरग्गामं उवागए**) चंपानगरी के बाहरभाग की ओर स्थित; परन्तु वहा से बहुत दूर नहीं; किन्तु थोडी दूर पर रहे हुए ऐसे ग्राम में पधारे, यहां आने का कारण उनका यह था कि वे प्रभु (**चंपं णयरिं पुण्णभद्दं चेइयं समोसरिउकामे**) चंपानगरी के पूर्णभद्र नामक उद्यान में पधारनेवाले थे ॥ सू० १६॥

(पुव्वाणुपव्विं चरमाणे) तीर्थंकरोनी परंपराने अनुसरीने विहार करता करता (गामाणुग्गामं दूइज्जमाणे) એક ગામથી બીજે ગામ પધારતા (सुहंसुहेण विहरमाणे) સુખ સુખેથી વિચરતા (चंपाए णयरीए बहिया उवणगरग्गामं उवागए) ચંપા નગરીની બહારના ભાગ તરફ પરંતુ એનાથી બહુ દૂર નહિ પણ જરા દૂર આવેલા એવા ગામમાં પધાર્યા. અહીં આવવાનું કારણ તેમને એ હતું કે તે પ્રભુ (चंपं णयरिं पुण्णभद्दं चेइय समोसरिउकामे) ચંપાનગરીના પૂર્ણભદ્ર નામના ઉદ્યાનમાં પધારવાવાળા હતા. [સૂ. ૧૬]

**मूलम्—तए णं से पवित्तिवाउए इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे हट्ठ-तुट्ठ-चित्त-माणंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए**

**टीका**—'तए णं' इत्यादि, ततः खलु=यदा भगवान्—चम्पानगरीसमीपग्राम-मुपागतः तदनन्तरं—तत्पश्चात्, '**से पवित्तिवाउए**' स प्रवृत्तिव्यापृतः=स पूर्वोक्तः—भगवद्वार्ताऽऽनयने नियुक्तः '**इमीसे कहाए**' अस्याः कथायाः '**लद्धट्ठे समाणे**' लब्धार्थः सन्—ज्ञातभगवदागमनवृत्तान्तः सन्, '**हट्ठ-तुट्ठ-चित्त-माणंदिए**' हृष्ट-तुष्ट-चित्ता-नन्दितः—हृष्टतुष्टं=अतितुष्टम्, यद्वा हृष्टं=हर्षितम्, तुष्टम् प्राप्तसन्तोषं-तादृशं चित्तं यस्य स हृष्टतुष्टचित्तः, अत एव आनन्दितः=आनन्दं प्राप्तः संजात-मानसोल्लास इत्यर्थः। सूत्रे '**चित्तमाणंदिए**' इत्यत्र मकारः प्राकृतत्वात्। '**पीइमणे**' प्रीतिमनाः—प्रीतिः—तृप्तिर्मनसि यस्य स प्रीतिमनाः—तृप्तमानसः। '**परमसोमणस्सिए**' परमसौमनस्यितः—परमम्—उत्कृष्टं च तत् सौमनस्यं प्रसन्नचित्तता चेति परमसौमनस्यं तदस्य संजातं परमसौमनस्यितः परमानुरागपूर्णमनस्कः,

---

'**तए णं से पवित्तिवाउए**' इत्यादि—

(**तए णं**) जब भगवान् चंपानगरी के समीपवर्ती ग्राम में पधारे तब (**से पवित्तिवाउए**) भगवान की वार्ता के लाने के लिये नियुक्त किया हुआ वह पुरुष (**इमीसे कहाए**) इस समाचार को (**लद्धट्ठे समाणे**) जानकर कि भगवान् चंपानगरी के समीपवर्ती ग्राम में आकर विराजमान हो चुके हैं, (**हट्ठ-तुट्ठ-चित्त-माणंदिए**) इससे उसके चित्त में अत्यन्त हर्ष और सन्तोष हुआ। अतः वह अत्यन्त आनंदित हुआ, (**पीइमणे**) मन में प्रेम छा गया, (**परमसोमणस्सिए**) अत्यंत अनुराग से उसका मन भर गया (**हरिस-वस-विसप्पमाण-हियए**) अपार

---

'तए णं से पवित्तिवाउए' ઈત્યાદિ—

(तए णं) જ્યારે ભગવાન ચંપાનગરીના સમીપવર્તી ગામમા પધાર્યા ત્યારે (से पवित्तिवाउए) ભગવાનની વાર્તા-સમાચાર લઇ જવા માટે નિમાએલા તે પુરૂષે (इमीसे कहाए) એ સમાચારને (लद्धट्ठे समाणे) જાણ્યા કે ભગવાન ચંપાનગરીના સમીપવર્તી ગામમા આવીને બિરાજમાન થઇ ચૂકયા છે, (हट्ठ-तुट्ठ-चित्त-माणंदिए) આથી તેના મનમાં અત્યંત હર્ષ અને સંતોષ થયો અને તેથી તે બહુ આનંદ પામ્યો, (पीइमणे) મનમાં પ્રેમ છવાઈ ગયો, (परमसोमणस्सिए) અત્યંત અનુરાગથી તેનું મન ભરાઈ ગયું,

**हरिस-वस-विसप्पमाण-हियए ण्हाए कयबलिकम्मे कय-कोउय-मंगल-पायच्छित्ते सुद्धप्पवेसाइं मंगलाइं वत्थाइं पवर परिहिए अप्प-महग्घा-भरणा-लंकिय-सरीरे सयाओ गिहाओ पडिणिक्ख-**

'**हरिस-वस-विसप्पमाण-हियए**' हर्ष-वश-विसर्प-द्धृदयः-हर्षवशेन विसर्पत्-परित उच्छलद् हृदयं यस्य स तथा, भगवद्दर्शनादमन्दानन्दतरङ्गसमुच्छलितचित्त इत्यर्थः। '**ण्हाए**' स्नातः-कृतस्नानः, '**कयवलिकम्मे**' कृतवलिकर्मा-स्नाने कृते पशुपक्ष्याद्यर्थं कृतान्नभाग' '**कय-कोउय-मंगल-पायच्छित्ते**' कृत-कौतुक-मङ्गल-प्रायश्चित्तः-कृतानि कौतुकमङ्गलान्येव प्रायश्चित्तानि-दुःस्वप्नादिविघातार्थमवश्यकरणीयत्वात् येन स तथा, तत्र कौतुकानि=मषीतिलकादीनि, मङ्गलानि तु सिद्धार्थदध्यक्षतादीनि। '**सुद्धप्पवेसाइं**' शुद्धप्रवेश्यानि-शुद्धानि=प्रक्षालितत्वात् निर्मलानि, प्रवेश्यानि=राजसभाप्रवेशाऽर्हाणि-राजसभायोग्यानि '**मंगलाइं**' मङ्गलानि-मङ्गलकारकाणि, '**वत्थाइं**' वस्त्राणि-विविधरूपप्रकाराणि--'**पवर**'-प्रवराणि-मूल्यतो महार्घाणि, रूपत उज्ज्वलानि मृदूनि सान्द्राणि च; प्राकृतत्वाद् विभक्तेर्लोपः, '**परिहिए**' परिहितः-शरीरे यथास्थानं योजित'। '**अप्प-महग्घा-भरणा-लंकियसरीरे**' अल्प-महार्घा-भरणा-ऽलंकृत-शरीरः-अल्पानि=

हर्ष से उसका हृदय उछलने लगा। फिर उसने कोणिक राजा के पास जाने की तैयारी की। उसने (**ण्हाए**) स्नान किया, (**कयवलिकम्मे**) पश्चात् पशुपक्षी आदि के लिये अन्न का विभागरूप वलिकर्म किया, (**कय-कोउय-मंगल-पायच्छित्ते**) दुःस्वप्नादि निवारण के लिए मषीतिलकादि किये और दही अक्षतादि धारण किये। (**सुद्धप्पवेसाइं मंगलाइं वत्थाइं पवर परिहिए**) पश्चात् उसने स्वच्छ, राजसभा में जाने योग्य, मांगलिक, वहुमूल्य, तथा रूप से उज्वल वस्त्रों को धारण किये। (**अप्प-महग्घा-भरणा-लंकिय-सरीरे**) वस्त्र पहिर चुकने के अनन्तर फिर उसने

(हरिस--वस--विसप्पमाण--हियए) અપાર હર્ષથી તેનું હૃદય ઉછળવા લાગ્યું. પછી તેણે કોણિક રાજાની પાસે જવાની તૈયારી કરી તેણે (ण्हाए) સ્નાન કર્યું, (कयवलिकम्मे) પછી પશુ પક્ષિ આદિ ને માટે અન્નના વિભાગરૂપ બલિકર્મ કર્યું. (कय--कोउय--मगल--पायच्छित्ते) દુઃસ્વપ્નાદિ દોષના નિવારણને માટે મષી-તિલક આદિ કર્યાં અને દહીં અક્ષત આદિ ધારણ કર્યાં. (सुद्धप्पवेसाइं मंगलाइं वत्थाइं पवर परिहिए) પછી તેણે સ્વચ્છ, રાજસભામાં પહેરી જવા યોગ્ય, માંગલિક, બહુમૂલ્ય તથા રૂપથી ઉજ્જવલ વસ્ત્રો ધારણ કર્યાં. (अप्प-महग्घा-भरणा-लंकिय सरीरे) વસ્ત્ર પહેરી લીધા પછી તેણે ઓછા

**मइ, पडिणिक्खमित्ता चंपाए णयरीए मज्झंमज्झेणं जेणेव कोणियस्स रण्णो गिहे जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव कूणिए राया भिंभसारपुत्ते तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छि-**

परिमाणतो न्यूनानि, महार्घाणि-महान्=अतिशयः-अर्घो=मूल्यं येषां तानि, आभ्रियन्ते= सम्यग् धार्यन्त इत्याभरणानि- अलङ्काराः, तैरलकृतं शरीरं यस्य स तथा, अल्पबहुमूल्य-भूषणभूषितदेह इत्यर्थः, '**सयाओ गिहाओ**' स्वकाद् गृहाद्, '**पडिणिक्खमइ**' प्रतिनिष्क्राम्यति-निर्गच्छति। '**पडिणिक्खमित्ता**' प्रतिनिष्क्रम्य-निर्गत्य, '**चंपाए णयरीए**' चम्पाया नगर्याः, '**मज्झंमज्झेणं**' मध्यमध्येन-चतुर्दिगपेक्षमध्यभागेन, '**जेणेव कोणियस्स रण्णो गिहे**' यत्रैव कोणिकस्य राज्ञो गृहं-भवनम्, '**जेणेव वाहिरिया उवट्ठाणसाला**' यत्रैव बाह्या उपस्थानशाला-आस्थानमण्डपः, '**जेणेव कूणिए राया भिंभसारपुत्ते**' यत्रैव कोणिको राजा भिंभसारपुत्रः, '**तेणेव उवागच्छइ**' तत्रैवोपागच्छति, '**उवागच्छित्ता**' उपागत्य, '**करयलपरिग्गहियं**'

भार से अल्प एवं वहुमूल्य आभरण भी शरीर पर धारण किये। इस प्रकार सज-धज कर वह (**सयाओ गिहाओ पडिणिक्खमइ**) अपने घर से निकला, (**पडिणिक्खमित्ता चंपाए णयरीए मज्झंमज्झेणं जेणेव कोणियस्स रण्णो गिहे**) घर से निकलकर यह चंपानगरी के ठीक मध्य के मार्ग से होकर जहां कोणिक राजा का प्रासाद था, (**जेणेव वाहिरिया उवट्ठाणसाला**) जहां पर बाहरी उपस्थानशाला थी, और (**जेणेव कूणिए राया भंभसारपुत्ते तेणेव उवागच्छइ**) उस उपस्थानशाला में, जहाँ भंभसार के पुत्र कोणिक राजा बैठे हुए थे, वहां पहुँचा। (**उवागच्छित्ता**) वहाँ पहुँचते ही सर्वप्रथम उसने (**करयलपरिग्गहियं**

वजननां तेमज बहुमूल्य आभरण पण शरीर उपर धारण कर्यां. आ प्रकारे शणगार करीने ते (सयाओ गिहाओ पडिणिक्खमइ) पोताने घेरथी नीकळ्यो. (पडिणिक्खमित्ता चंपाए णयरीए मज्झंमज्झेणं जेणेव कोणियस्स रण्णो गिहे) घेरथी नीकळीने ते चंपानगरीना बराबर मध्यभागमां थईने ज्यां कोणिक राजानो महेल हतो (जेणेव वाहिरिया उवट्ठाणसाला) अने ज्यां बाह्य उपस्थान शाला हती, तथा (जेणेव कूणिए राया भंभसारपुत्ते तेणेव उवागच्छइ) ते उपस्थान-शालामां ज्यां भंभसारना पुत्र कोणिक राजा बेठा हता त्यां पहोंच्यो. (उवागच्छित्ता) त्यां पहोंचतांज सर्व प्रथम तेणे (करयलपरिग्गहि-

त्ता करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेइ, वद्धावित्ता एवं वयासी ॥ सू० १७॥

मूलम्—जस्स णं देवाणुप्पिया दंसणं कंखंति, जस्स

करतलपरिगृहीतं=करतलेन करतलं परिगृहीतं—परस्परं संश्लिष्टम् । 'सिरसावत्तं' शिरआवर्तम्—शिरसि=शिरसोऽग्रभागे आ—समन्ताद् वर्तते—परिभ्राम्यति इति शिर-आवर्तस्तम् । 'अंजलिं' संमिलितकरयुगम् । 'मत्थए' मस्तके—ललाटदेशे, 'कट्टु'—कृत्वा 'जएणं' जयेन—जयः=उत्कर्षप्राप्तिरूपः तेन—'जय जय महाराज' इति रूपेण, 'विजएणं' विजयेन—विशिष्टः प्रचण्डशत्रुनिग्रहरूपो जयो विजयः तेन—अर्थात्—विजयस्व विजयस्व महाराज इति रूपेण 'वद्धावेइ' वर्द्धयति—जयेन विजयेन वर्द्धस्वेति वृद्धिकामनारूपामाशिषं प्रयुङ्क्ते स्म, वर्द्धयित्वा 'एवं वयासी' एवं=वक्ष्यमाणप्रकारेण अवादीत् ॥ सू० १७ ॥

टीका—भगवद्विहारादिवार्तानिवेदकः पुरुषः कोणिकनृपं किमवादीत्? इत्याह—'जस्स णं' इत्यादि, यस्य भगवतः श्रीमहावीरस्य खलु=निश्चयेन, हे देवानु-प्रियाः! 'दंसणं' दर्शनं सबहुमानं रूपावलोकनं भवन्तः 'कंखंति' काङ्क्षन्ति—

सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेइ, वद्धावित्ता एवं वयासी) दोनों हाथ जोडकर और अञ्जलिरूप में परिणत उन्हे मस्तक के दाँये-बाँये घुमाकर पश्चात् उन्हे मस्तक पर लगाकर अर्थात् नमस्कार कर "जय हो महाराज की, विजय हो महाराज की"—इस प्रकार जय विजय शब्दों द्वारा राजा को बधाया। बधाने के बाद फिर वह इस प्रकार बोला—॥सू० १७॥

'जस्स णं देवाणुप्पिया' इत्यादि—

(देवाणुप्पिया) हे देवानुप्रिय! (जस्स णं) जिनके सदा आप (दंसणं कंखंति) दर्शनों की इच्छा किया करते हैं (जस्स णं देवाणुप्पिया

यं सिरसावत्त मत्थए अंजलिं कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेइ वद्धावित्ता एवं वयासी) બન્ને હાથ જોડીને અને તેમને મસ્તકની જમણી અને ડાબી બાજુએ ફેરવીને અંજળિ રૂપમા પરિણત કરી માથે લગાવીને અર્થાત્ નમસ્કાર કરીને "જય હો મહારાજાનો, વિજય હો મહારાજાનો" એ પ્રકારે જય વિજય શબ્દો દ્વારા રાજાને વધાવ્યા અને વધાવ્યા પછી તે નીચે પ્રમાણે બોલ્યો. (સૂ. ૧૭)

'जस्स णं देवाणुप्पिया' ઈત્યાદિ—

(देवाणुप्पिया!) હે દેવાનુપ્રિય! (जस्स णं) જેમનાં સદા આપ (दंसणं

**णं देवाणुप्पिया दंसणं पीहंति, जस्स णं देवाणुप्पिया दंसणं पत्थंति, जस्स णं देवाणुप्पिया दंसणं अभिलसंति, जस्स णं देवाणु-**

अप्राप्तं प्राप्तुमिच्छन्ति '**जस्स खलु देवाणुप्पिया दंसणं पीहंति**' हे देवानुप्रियाः! यस्य भगवतः श्रीमहावीरस्य खलु दर्शनाय भवन्तः स्पृहयन्ति=कदा मे भगवद्दर्शनं भविष्यतीत्युत्कण्ठां सततं धरन्ति, प्राप्तं सत् पुनस्तत्परित्यक्तुं नेच्छन्तीति भावः। हे देवानुप्रियाः! यस्य भगवतः खलु '**दंसणं**' दर्शनं '**पत्थंति**' प्रार्थयन्ति—भवन्तो याचन्ते—हे भगवन्! भवद्दर्शनादेव मम जन्मनः सफलता स्यादतो भवन्तश्चरणपङ्कजं दर्शयन्तु—इति रहसि पुनः पुनः प्रार्थनां कुर्वन्ति, यद्वा—अस्मत्सदृशेभ्यो जनेभ्यः सततं याचन्ते—भगवद्दर्शनं कारयतेति भावः। '**जस्स णं देवाणुप्पिया दंसणं अभिलसंति**' यस्य खलु देवानुप्रिया दर्शनमभिलष्यन्ति=कदाऽहं भगवत्समीपमुपगत्य तत्पर्युपासनं करिष्यामीत्यभिलाषमन्तःकरणे कुर्वन्तो भवन्तः सन्ति। '**जस्स णं देवाणुप्पिया**

**दंसणं पीहंति**) जिनके आप देवानुप्रिय दर्शन करने की सदा स्पृहा रखा करते हैं—कब मुझे भगवान् के दर्शन होंगे इस प्रकार की उत्कंठा निरन्तर किया करते हैं, (**जस्स णं देवाणुप्पिया दंसणं पत्थंति**) हे देवानुप्रिय! जिनके दर्शनों की याचना किया करते हैं, अर्थात्—हे भगवन्! आपके दर्शन से ही मेरा जन्म सफल होगा, इसलिये आप कृपा करके अपने चरणकमल का दर्शन दीजिये, इस प्रकार एकान्त में आप वार २ प्रार्थना किया करते हैं, अथवा—हमारे जैसे लोगों से आप प्रार्थना करते हैं कि—मुझे भगवान का दर्शन कराओ। (**जस्स णं देवाणुप्पिया दंसणं अभिलसंति**) हे देवानुप्रिय! आप जिनके दर्शनों की चित्तमें सदा अभिलाषा धारण किये रहते हैं कि कब मैं प्रभु के चरणोंमें उपस्थित होकर उनकी

कंखंति) दर्शननी ईच्छा कर्या करो छो, (जस्स णं देवाणुप्पिया! दंसणं पीहंति) जेमना आप दर्शन करवानी सदा स्पृहा राखो छो के क्यारे मने भगवाननां दर्शन थशे-ए प्रकारनी उत्कंठा निरंतर कर्या करो छो, (जस्स णं देवाणुप्पिया! दंसणं पत्थंति) हे देवानुप्रिय! जेमनां दर्शनोनी याचना कर्या करो छो, अर्थात् हे भगवान्! आपनां दर्शनथीज मारो जन्म सफल थशे;ए माटे आप कृपा करीने आपनां चरण कमलनां दर्शन आपशो-ए प्रकारे एकांतमां आप वारंवार प्रार्थना कर्या करो छो, अथवा-अमारा जेवा लोको पासे आप प्रार्थना करो छो के मने भगवाननां दर्शन करावो. (जस्स णं देवाणुप्पिया! दंसणं अभिलसंति) हे देवानुप्रिय! आप जेनां दर्शनोनी मनमां सदा अभिलाषा धारण

**प्पिया नामगोयस्सवि सवणयाए हट्ठ-तुट्ठ-जाव-हियया भवंति, से णं समणे भगवं महावीरे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे चंपाए णयरीए उवणगरग्गामं उवागए चंपं णयरिं पुण्णभद्दं चेइयं समोसरिउकामे। तं एवं देवाणुप्पियाणं पियट्ठयाए पियं णिवेदेमि, पियं ते भवउ ॥ सू० १८॥**

---

**नामगोयस्सवि सवणयाए हट्ठ-तुट्ठ-जाव-हियया भवंति'** यस्य भगवतः खलु हे देवानुप्रियाः! नामगोत्रस्यापि-नाम='**महावीर**' इति, गोत्रं=वंशः-काश्यपं गोत्रम् इति तयोरित्यर्थः, श्रवणतया-श्रवणेन इत्यर्थः, स्वार्थिकस्ताप्रत्ययः प्राकृतशैलीप्रभव इति, हृष्ट-तुष्ट-यावत्-हृदया भवन्ति, '**से णं समणे भगवं महावीरे**' स खलु श्रमणो भगवान् महावीरः-अतिशयमहिमान्वितः श्रमणः-साधुः, भगवान्-परमैश्वर्यसम्पन्नः महावीर इति अन्वर्थनामा '**पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे चंपाए णयरीए उवणगरग्गामं उवागए**' पूर्वानुपूर्व्या चरन् ग्रामानुग्रामं द्रवन्-चम्पाया नगर्या उपनगरग्रामं-नगरसमीपवर्तिनं ग्रामम् उपागतः-समागतः। किमर्थम्? अत्राह- '**चंपं णयरिं पुण्णभद्दं चेइयं समोसरिउकामे**' चम्पां नगरीं पूर्णभद्रनामकम्

---

उपासना करूँगा, (**जस्स णं देवाणुप्पिया नामगोयस्सवि सवणयाए हट्ठ-तुट्ठ-जाव-हियया भवंति**) हे देवानुप्रिय! जिनका नाम तथा गोत्र-वंश सुनकर भी आपका हृदय हृष्ट तुष्ट हुआ करता है, (**से णं समणे भगवं महावीरे**) वे श्रमण भगवान्=परमैश्वर्यसम्पन्न, गुणनिष्पन्न नामवाले महावीर (**पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे चंपाए णयरीए उवणगरग्गामं उवागए**) पूर्वानुपूर्वीरूप से विहार करते हुए, एक ग्राम से दूसरे ग्राम में विचरते हुए आज चंपा नगरी के समीप ग्राम में पधारे हुए हैं, (**चंपं णयरिं पुण्णभद्दं चेइयं समोसरिउकामे**) और

---

કર્યા કરો છો કે ક્યારે હુ પ્રભુના ચરણોમાં ઉપસ્થિત થઇને તેમની ઉપાસના કરૂં, (जस्स णं देवाणुप्पिया! नामगोयस्सवि सवणयाए हट्ठ-तुट्ठ-जाव-हियया भवंति) હે દેવાનુપ્રિય! જેમનું નામ તથા ગોત્ર-વંશ સાંભળીને પણ આપનુ હૃદય હૃષ્ટ-તુષ્ટ થઈ જાય છે, (से णं समणे भगवं महावीरे) તે શ્રમણ ભગવાન્-પરમૈશ્વર્યસંપન્ન, ગુણનિષ્પન્ન નામવાળા મહાવીર (पुव्वाणुपुव्वि चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे चंपाए णयरीए उवणयरग्गामं उवागए) પૂર્વાનુપૂર્વી રૂપથી વિહાર કરતા કરતા એક ગામથી બીજે ગામ વિચરતા વિચરતા આજ ચંપાનગરીની સમીપના ગામમાં પધાર્યા છે. (चंपं णयरिं पुण्णभद्दं चेइयं

**मूलम्—तए णं से कूणिए राया भंभसारपुत्ते तस्स पवित्तिवाउयस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म हट्ठ—तुट्ठ-जाव**

---

उद्यानं समवसर्तुकाम '**तं एवं देवाणुप्पियाणं पियट्ठयाए**' तदेवं देवानुप्रियाणां प्रियार्थतया=उत्कण्ठाविषयत्वादनुकूलार्थतया, एवम्=अमुना प्रकारेण तद् वृत्तम् '**पियं णिवेदेमि**' प्रियं=प्रीतिकारकं निवेदयामि=सविनयं कथयामीति भावः। '**पियं ते भवउ**' प्रियं ते भवतु ॥सू० १८॥

**टीका**—'**तए णं से कूणिए राया भंभसारपुत्ते**' इत्यादि। ततः=तदनन्तरं खलु स कूणिको राजा भंभसारपुत्रः '**तस्स पवित्तिवाउयस्स अंतिए**' तस्य प्रवृत्तिव्यापृतस्य भगवद्विहारनिवेदकस्य पुरुषस्य अन्तिके=समीपे-तन्मुखादिति भावः, '**एयमट्ठं**' एतमर्थम्-भगवदागमनरूपम्-'**सोच्चा**' श्रुत्वा-श्रवणविषयं कृत्वा, '**णिसम्म**' निशम्य-हृदि धृत्वा '**हट्ठ-तुट्ठ-जाव-हियए**' हृष्ट-तुष्ट-यावद्-हृदयः=हर्षाति-

---

चम्पानगरी के पूर्णभद्रचैत्य में पधारेंगे; (**तं एवं देवाणुप्पियाणं पियट्ठयाए पियं णिवेदेमि पियं ते भवउ**) इसलिये हे देवानुप्रिय! मै आपको यह प्रिय आत्म-हितकारी समाचार आपके हितके लिये सविनय निवेदन करता हूं। आपका कल्याण हो ॥ सू० १८ ॥

'**तए णं से कूणिए राया**' इत्यादि—

(**तए णं से कूणिए राया भंभसारपुत्ते**) उसके बाद भंभसार का पुत्र वह कोणिक राजा (**तस्स पवित्तिवाउयस्स अंतिए**) उस सदेशवाहक के मुख से (**एयमट्ठं सोच्चा**) 'भगवान पधारे है' इस कर्णप्रिय समाचार को सुनकर (**णिसम्म**) और हृदय मे अच्छी तरह धारण कर (हट्ठ—तुट्ठ—जाव—हियए)

---

समोसरिउकामे) અને ચંપાનગરીના પૂર્ણભદ્ર ચૈત્યમાં પધારશે. (तं एवं देवाणुप्पियाणं पियं णिवेदेमि पियं ते भवउ) આથી હે દેવાનુપ્રિય! હું આપને આ પ્રિય આત્મહિતકારી સમાચાર આપનાં હિતને માટે સવિનય નિવેદન કરૂં છું. આપનું કલ્યાણ થાઓ. (સૂ. ૧૮.)

'तए णं से कूणिए राया' ઇત્યાદિ—

(तए णं से कूणिए राया भंभसारपुत्ते) ત્યારપછી ભંભસારના પુત્ર તે કોણિક રાજા (तस्स पवित्तिवाउयस्स अंतिए) તે સંદેશવાહકના મુખથી (एयमट्ठं सोच्चा) 'ભગવાન પધાર્યા છે' એ કર્ણપ્રિય સમાચાર સાંભળીને (णिसम्म) અને હૃદયમા સારી રીતે ધારણ કરીને (हट्ठ—तुट्ठ—जाव—हियए)

**हियए धारा-हय-नीव-सुरहि-कुसुमंव चंचुमालइय-ऊसविय-रोमकूवे वियसिय-वर-कमल-णयण-वयणे पयलिय-वर-कडग-तुडिय-केऊर-**

शयेन प्रमुदितहृदयः, '**धारा-हय-नीव-सुरहि-कुसुमंव चंचुमालइय-ऊसविय-रोमकूवे**' धारा—हत—नीप—सुरभि—कुसुममिव रोमाञ्चितो—च्छ्रित—रोमकूपः, तत्र—धाराभिः—जलधरजलधाराभिः आहतं=संसिक्तं यत्—नीपस्य=कदम्बस्य सुरभि=परिमलयुक्तं कुसुमं=पुष्पम् तदिव '**चंचुमालइय**' इति देशीयः शब्दः, रोमाञ्चित इत्यर्थः, अतएव—उच्छ्रितः—उच्चतां गतो रोमकूपो—रोमस्थानं यस्य स उच्छ्रितरोमकूपः, ततः पदद्वयस्य कर्मधारयः । '**विअसिय-वर-कमल-णयण-वयणे**' विकसित-वर-कमल-नयन-वदनः—विकसितवरकमलवन्नयनवदनं यस्य स तथा, '**पयलिय-वर-कडग-तुडिय-केऊर-मउड-कुंडल-हार-विरायंत-रइय-वच्छे**' प्रचलित वर-कटक-त्रुटित-केयूर-मुकुट-कुण्डल-हार-विराजमान-रचित-वक्षस्कः—प्रचलितानि=प्रकम्पितानि वर—कटक—त्रुटित-केयूर—मुकुट—कुण्डलानि यस्य स तथा, तत्र-वरौ=श्रेष्ठौ, कटकौ=वलयौ, त्रुटिते-बाहुरक्षकभूषणे, केयूरौ—बाहुभूषणे भुजबन्धविशेषौ, मुकुटं=शिरोभूषणम्, कुण्डले=कर्णभूषणे-इति, तथा हारः=अष्टादशसरिकादिकः, विराजमानः=शोभमानः, रचितः=विन्यस्तः—

बहुत ही हृष्ट तुष्ट एवं आनन्दित हुए, (**धारा-हय-नीव-सुरहि-कुसुमंव चंचुमालइय-ऊसविय-रोमकूवे**) जिस प्रकार बरसात की धारा से सींचे जाने पर कदम्ब के सुगन्धित फूल एकदम विकसित हो जाते हैं, उसी प्रकार भगवान् के पधारने का समाचार सुनकर राजा के रोम खडे हो गये, (**वियसिय—वर-कमल-णयण-वयणे**) उनके नेत्र और मुख दोनों कमल के समान विकसित हो गये। (**पयलिय-वर-कडग-तुडिय-केऊर-मउड-कुंडल-हार-विरायंत-रइय-वच्छे**) अपार हर्ष के मारे कम्पित इनके शरीर पर धृत श्रेष्ठ दोनों वलय, दोनों त्रुटित—बाहुरक्षकभूषण,

ઘણાજ હૃષ્ટ તુષ્ટ તેમજ આનંદિત થયા. [ धारा—हय—नीव—सुरहि—कुसुमंव चंचु-मालइय—ऊसविय—रोमकूवे ) જે પ્રકારે વરસાદની ધારાથી સીંચાયેલા કદંબનાં સુગંધિત ફૂલ એકદમ ખીલી નીકળે છે તેજ પ્રકારે ભગવાનના પધારવાના સમાચાર સાંભળીને રાજાના રોમે રોમ આનંદથી પુલકિત થઈ ઉભાં થયા, ( वियसिय--वर—कमल—णयण—वयणे ) તેમનાં નેત્ર તથા મુખ બન્ને કમલના જેમ વિકસી ગયા. ( पयलिय—वर—कडग—तुडिय—केऊर—मउड—कुंडल—हार—विरायंत-रइय—वच्छे) અપાર હર્ષને લઈને કંપાયમાન થતા તેમના શરીર પર ધારણ કરેલા શ્રેષ્ઠ બન્ને વલય (કડા), બન્ને ત્રુટિત—બાહુરક્ષક ભુષણ, બંન્ને કેયૂર

मउड-कुंडल-हार-विरायंत-रइय-वच्छे पालंबपलंबमाण-घोलंत-भूसणधरे ससंभमं तुरियं चवलं नरिंदे सीहासणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठित्ता पायपीढाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता वेरुलिय-वरिट्ठ-रिट्ठ-

परिधृतं वक्षसि=वक्षःस्थले यस्य स तथा, ततः पदद्वयस्य कर्मधारयः। 'पालंब-पलंबमाण-घोलंत-भूसण-धरे' प्रालम्ब-प्रलम्बमान-घूर्णमान-भूषण-धरः-प्रालम्बः-कण्ठाभरणविशेषः, स एव प्रलम्बमानं=लम्बाकारं घूर्णमानं=दोलायमानं भूषणं तस्य धरः-धारकः, एतादृशः 'नरिंदे' नरेन्द्रः कूणिकनृपः 'ससंभमं' ससम्भ्रमं-सादरं यथा स्यात्, 'तुरियं' त्वरितं-शीघ्रतया यथा स्यात्, 'चवलं' चपलं-चञ्चलतया यथा स्यात् तथा 'सीहासणाओ अब्भुट्ठेइ' सिंहासनादभ्युत्तिष्ठति-अवतरति, 'अब्भुट्ठित्ता' अभ्युत्थाय-अवतीर्य 'पायपीढाओ पच्चोरुहइ' पादपीठात्प्रत्यवरोहति-अवतरति, प्रत्यवरुह्य-अवतीर्य पादपीठादधोऽवतीर्य 'पाउआओ ओमुअइ' पादुके अवमुञ्चति, कीदृशे पादुके? इत्याह-'वेरुलिय' इत्यादि, 'वेरुलिय-वरिट्ठ-

दोनों केयूर-बाजूबन्द, मुकुट, दोनों कुण्डल, एवं १८ लरका हार, जो वक्षस्थल मे धारण किया हुआ था और जिसकी शोभा से वक्षःस्थल सुशोभित हो रहा था, ये सब के सब आभूषणादि कंपित हो उठे। (पलंब-पालंबमाण-घोलंत-भूसण-धरे) हर्ष-जनित कम्प से चलायमान उनका प्रलम्बमान कण्ठाभरण उनकी शोभा को बढा रहा था। बाद में (ससंभमं तुरियं चवलं नरिंदे) राजा बडे ही संभ्रम से-आदरपूर्वक, अर्थात् एकदम जैसे बैठे थे वैसे ही, शीघ्र ही चंचल जैसा होकर (सीहासणाओ अब्भुट्ठेइ) अपने सिंहासन से उठे, और (अब्भुट्ठित्ता पायपीढाओ पच्चोरुहइ) उठ कर पादपीठ पर पैर रखकर नीचे उतरे, (पच्चोरुहित्ता वेरु-

(બાજુબંધ), મુકુટ, બન્ને કુંડલ તેમજ ૧૮ સરનો હાર જે વક્ષઃસ્થળ ઉપર ધારણ કરવામાં આવ્યો હતો, અને જેની શોભાથી વક્ષઃસ્થલ સુશોભિત થઇ રહ્યું હતું, તે તમામે તમામ આભૂષણ આદિ હલી રહ્યા હતા, (पालंब-पलंबमाण-घोलंत-भूसण-धरे) હર્ષથી ઉત્પન્ન થતા કંપથી ચલાયમાન થતા તેના ગળામાં પહેરેલા લાંબા લટકતા હાર તેની શોભામાં વધારો કરી રહ્યા હતા. પછી (ससंभमं तुरियं चवलं नरिंदे) રાજા ઘણા સંભ્રમથી-આદરથી અર્થાત્ એકદમ જેવા બેઠેલા હતા તેવાજ ઉતાવળા ચંચળ જેવા થઈને (सीहासणाओ अब्भुट्ठेइ) પોતાના સિંહાસન પરથી ઉઠયા, અને (अब्भुट्ठित्ता पायपीढाओ पच्चोरुहइ) ઉઠીને પાદપીઠ પર પગ રાખીને નીચે ઉતર્યા, (पच्चोरुहित्ता-वेरुलिय-वरिट्ठ-रिट्ठ-

**अंजण-निउणो-विय-मिसिमिसंत-मणि-रयण-मंडियाओ पाउयाओ ओमुयइ, ओमुइत्ता अवहट्टु पंच रायककुहाइं, तंजहा-खग्गं १, छत्तं २, उप्फेसं ३, वाहणाओ ४, बालवीयणं ५। एगसाडियं**

रिट्ठ-अंजण-निउणो-विय-मिसिमिसंत-मणि-रयण-मंडियाओ' वैडूर्य-वरिष्ठ-रिष्टा-ञ्जन-निपुणाऽवरोपित-चिकिचिकायमान-मणि-रत्न-मण्डिते, तत्र-वरिष्ठानि=श्रेष्ठानि वैडूर्याणि रिष्टानि अञ्जनानि-एतन्नामकानि रत्नानि ययो' पादुकयोस्ते वैडूर्य-वरिष्ठ-रिष्टाञ्जने,-वैडूर्यादिभिश्चित्रिते इत्यर्थः, पुन' '**निपुणावरोपित-चिकिचिकायमान-मणि-रत्न-मण्डिते**'-निपुणेन=शिल्पकलाकुशलेन अवरोपितानि=परिकर्मितानि-सस्कारितानि यथास्थानजटितानि यानि चिकचिकायमानानि=चाकचिक्यमयानि मणि-रत्नानि तैर्मण्डिते, ततः पदद्वयस्य कर्मधारयः, अवमुच्य, '**अवहट्टु पंच रायककुहाइं**' अपहृत्य पञ्च राजककुदानि-अवतार्य पञ्चसंख्यकानि राजचिह्नानि, तान्येव पृथक्२ परिसंख्याति-तद्यथा-तानि-इमानि १-'**खग्गं**' खड्गं त्यजति, २-'**छत्तं**' छत्रं-जहाति। ३-**उप्फेसं**-मुकुटम्-अवतारयति, ४ **वाहणाओ**-उपानहौ, पूर्व-परित्यक्ते पादुके अत्र '**वाहणाओ**' इति पदेन गृह्येते; त्यजति। ५-'**वालवीयणं**'

**लिय-वरिट्ठ-रिट्ठ-अंजण-निउणो-विय-मिसिमिसंत-मणि-रयण-मंडियाओ पाउयाओ ओमुयइ**) नीचे उतर कर इन्होने फिर दोनों पैरों से पादुकाएँ उतारीं, ये पादुकाएँ श्रेष्ठ वैडुर्य, रिष्ट एवं अंजन नाम के रत्नों से खचित थीं, तथा शिल्पकलामे कुशल ऐसे कारीगरों द्वारा यथास्थान निवेशित चमकते हुए अनेक रत्नों से मडित थीं। (**ओमुइत्ता अवहट्टु पंच रायककुहाइं**) पादुकाएँ उतारने के बाद इन्होंने पांच राज-चिह्नों का भी परित्याग कर दिया। वे पांच राजचिह्न ये है-(**खग्गं छत्तं उप्फेसं वाहणाओ वालवीयणं**) खड्ग, छत्र, उप्फेस=मुकुट, दोनों पैरों के जूते-पादुकाएँ

અંજણ-નિઉણો-વિય-મિસિમિસંત-મણિ-રયણ-મંડિયાઓ પાઉયાઓ ઓમુયઇ) નીચે ઉતરીને પછી તેમણે બન્ને પગમાંથી પાદુકાઓ ઉતારી નાખી, એ પાદુકાઓ શ્રેષ્ઠ વૈડૂર્ય, રિષ્ટ તેમજ અંજન નામના રત્નોથી જડેલી હતી તથા શિલ્પકલામાં કુશળ એવા કારીગરો દ્વારા યથાસ્થાન બેસાડેલા ચમકાર મારતા અનેક રત્નોથી તે શોભિત હતી. (ઓમુઇત્તા અવહટ્ટુ પંચ રાયકકુહાઇં) પાદુકાઓ ઉતાર્યા પછી તેમણે પાંચ રાજચિહ્નોનો પણ પરિત્યાગ કર્યો. તે પાંચ રાજચિહ્ન આ પ્રમાણે હતાં-(ખગ્ગં છત્તં ઉપ્ફેસં વાહણાઓ વાલવીયણં) ખડ્ગ, છત્ર, ઉપ્ફેસ=મુકુટ, બન્ને પગના જોડા-પાદુકાઓ તેમજ ચામર. પછી

**उत्तरासंगं करेइ, करित्ता अंजलिमउलियहत्थे तित्थगराभिमुहे सत्तट्ठपयाइं अणुगच्छइ, अणुगच्छित्ता वामं जाणुं अंचेइ, अंचित्ता दाहिणं जाणुं धरणितलंसि साहट्टु तिक्खुत्तो मुद्धाणं धरणितलंसि**

---

वालव्यजनं—चामरयुगलं त्यजति । त्यक्त्वा '**एगसाडियं उत्तरासंगं करेइ**' एकशाटिकमुत्तरासङ्गं करोति, एकशाटिकम्—अस्फाटितमयोजितं स्यूतरहितम् उत्तरासङ्गम्—=उत्तरीयवस्त्रं मुखोपरि यतनार्थं करोति—धरति '**करित्ता**' कृत्वा '**अंजलि-मउलियहत्थे**' अञ्जलिमुकुलितहस्तः—अञ्जलिना—अञ्जलिबन्धनेन मुकुलितौ—कमलमुकुल—तुल्यौ, हस्तौ यस्य स तथा—बद्धाञ्जलिपुट इत्यर्थः । '**तित्थगराभिमुहे**' तीर्थङ्करा-भिमुखः—यस्यां दिशि महावीरप्रभुर्वर्तते तस्यां दिशि कृतमुखः '**सत्तट्ठपयाइं अणुगच्छइ**' सप्त अष्ट पदानि अनुगच्छति—आनुकूल्येन व्रजति—सिंहासनात्प्रभु—सम्मुखं सप्ताष्टपदानि गच्छति, '**अणुगच्छित्ता**' अनुगम्य '**वामं जाणुं अंचेइ**' वामं जानु आकुञ्चयति—उर्ध्वं करोति, '**अंचित्ता**' वामं जान्वाकुञ्च्य—उर्ध्वीकृत्य, '**दाहिणं जाणुं धरणितलंसि साहट्टु**' दक्षिण जानु धरणितले संहृत्य—अधः संस्थाप्य, '**तिक्खुत्तो**' त्रिकृत्वः—त्रिरावृत्तं—त्रिवारमिति यावत्—'**मुद्धाणं धरणितलंसि**

---

एवं दोनों चामर । फिर (**एकसाडियं उत्तरासंगं करेइ**) पश्चात् अस्फाटित, अयो-जित—विना सीये ऐसे उत्तरीयवस्त्र को मुख के ऊपर यतनानिमित्त धारण किया । (**करित्ता**) धारण कर (**अंजलिमउलियहत्थे तित्थगराभिमुहे सत्तट्ठपयाइं अणुगच्छइ**) बद्ध कमल के समान अञ्जलिपुट करके जिस दिशामें तीर्थंकर विराजमान थे उस ओर सन्मुख होकर सात आठ पग आगे गये, (**अणुगच्छित्ता वामं जाणुं अंचेइ**) जाकर वहां उन्होंने अपने बाये घुटने को ऊपर किया और (**दाहिणं जाणुं धरणितलंसि साहट्टु**) दाहिने घुटने को जमीन पर रखकर (**तिक्खुत्तो**

---

(एगसाडियं उत्तरासंगं करेइ) અસ્ફાટિત, (ફાટયા વગરનું) અયોજિત-સ્યૂત-રહિત (સીવ્યા વગરનું) એવા ઉત્તરીય વસ્ત્રને મુખ ઉપર યતના નિમિત્ત ધારણ કર્યું. (करित्ता) ધારણ કરીને (अंजलिमउलियहत्थे तित्थगराभिमुहे सत्तट्ठपयाइं अणुगच्छइ) બંધ કમળની પેઠે અંજલિપુટ કરીને જે દિશામાં તીર્થંકર બિરાજમાન હતા તે તરફ સન્મુખ થઈને સાત આઠ પગલાં આગળ ગયા, (अणुगच्छित्ता वामं जाणुं अंचेइ) જઈને ત્યાં તેમણે પોતાનો ડાબો ઢીંચણ ઉપર રાખ્યો અને (दाहिणं जाणुं धरणितलंसि साहट्टु) જમણા ઢીંચણને જમીન ઉપર રાખીને (तिक्खुत्तो मुद्धाणं धरणितलंसि निवेसेइ) ત્રણ વાર

**निवेसेइ, निवेसित्ता ईसिं पच्चुण्णमइ, पच्चुण्णमित्ता कडग-तुडिय-थंभियाओ भुयाओ पडिसाहरइ, पडिसाहरित्ता करयल-जाव-कट्टु एवं वयासी ॥ सू. १९ ॥**

**निवेसेइ**' मूर्द्धानं धरणितले निवेशयति=निजमस्तकं भूमिसंलग्नं करोति । '**निवेसित्ता**' निवेश्य, '**ईसिं पच्चुण्णमइ**' ईषत् प्रत्युन्नमति—अल्पनम्रीभूतकायो भवति, '**पच्चुण्णमित्ता**' प्रत्युन्नम्य—अल्पनम्रीभूतकायो भूत्वा '**कडग-तुडिय-थंभियाओ भुयाओ पडिसाहरइ**' कटकत्रुटितस्तम्भितौ भुजौ प्रतिसंहरति,—कटकत्रुटिताभ्यां-कङ्कण-भुजरक्षकाभ्यां स्तम्भितौ—स्तम्भरूपौ यौ भुजौ तौ प्रतिसंहरति-उर्ध्वं नयति-उत्थापयतीत्यर्थः, '**पडिसाहरित्ता**' प्रतिसंहृत्य—उत्थाप्य, '**करयल जाव कट्टु**' करतल यावत् कृत्वा, अत्र-यावच्छब्देन-परिगृहीतं—परस्परं संमिलितं शिरआवर्तं मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वेति बोध्यते, '**एवं वयासी**' एवं=वक्ष्यमाणप्रकारेण अवादीत् ॥ सू० १९ ॥

**मुद्धाणं धरणितलंसि निवेसेइ**) तीनबार अपने मस्तक को जमीन पर झुकाया—जमीन से माथे को लगाया। (**निवेसित्ता ईसिं पच्चुण्णमइ**) लगाने के बाद फिर ये थोडे से उठे, (**पच्चुण्णमित्ता कडग-तुडिय-थंभियाओ भुयाओ पडिसाहरइ**) उसके पश्चात् इन्होंने अपने दोनों हाथों को कि जो ककण एवं भुजरक्षक अलंकारों से स्तम्भित थे, ऊँचा किया, (**पडिसाहरित्ता करयल—जाव—कट्टु एवं वयासी**) ऊँचे करने के बाद फिर ये मस्तक पर अंजलिपुट रख कर इस प्रकार बोले-

भावार्थ—संदेशहर से प्रभु के आगमन की वार्ता सुनकर कोणिकराजा मारे अतिशय आनन्द के कारण उल्लसित हो गये। इस समाचार को सुनते ही ये रोमाञ्चित हो उठे। कमल के समान मुख आनन्दातिरेक से खिल उठा। नयनों ने

પોતાના મસ્તકને જમીનપર નમાવ્યુ—જમીનને માથું અડાવ્યું (निवेसित्ता ईसि पच्चुण्णमइ) અડાડયા પછી તેઓ જરા ઉઠયા. (पच्चुण्णमित्ता कडग-तुडिय-थंभियाओ भुयाओ पडिसाहरइ) ત્યાર પછી તેઓએ પોતાના બન્ને હાથ કે જે કંકણ તેમજ કડા ભુજરક્ષક વગેરે અલંકારોથી સ્તંભિત હતા તે ઉંચા કર્યા (पडिसाहरित्ता करयल जाव कट्टु एवं वयासी) ઉંચા કરીને પછી તેઓએ મસ્તક ઉપર અંજલિપુટ રાખીને આ પ્રમાણે કહ્યું—

ભાવાર્થ—સંદેશવાહકદ્વારા પ્રભુના આગમનના સમાચાર સાભળીને કોણિક રાજા અતિશય આનંદ થવાના કારણે ઉલ્લાસમાં આવી ગયા. એ સમાચાર સાંભળતા જ તેઓ રોમાંચિત થઇ ગયા. કમલની પેઠે મુખ આનંદના

**मूलम्—णमोत्थु णं अरिहंताणं भगवंताणं आइगराणं तित्थ-**

**टीका**—'नमोत्थु णं' इत्यादि—

**'नमोत्थु णं'** नमोऽस्तु खलु, **'अरिहंताणं'** अरिहन्तृभ्यः-अरीन्-रागदिरूपान्-शत्रून् घ्नन्ति-नाशयन्तीति व्युत्पत्त्याऽत्र सिद्धाऽर्हतोरुभयोररिहन्तृपदेन ग्रहणं बोध्यम्, तेभ्यः, **'भगवंताणं'** भगवद्भ्यः, **भगः-१ ज्ञानं**-सर्वार्थविषयकम्,

भी मुख का साथ दिया। हर्षातिरेक के कारण इनका सम्पूर्ण शरीर कम्पित होने लगा, इस हेतु धारण किये हुए आभूषणादिक भी चंचल हो उठे। ये एकदम सिंहासन से उठे, उठकर पादपीठपर पैर रखकर नीचे उतरे। मणि-वैडूर्य-खचित दोनों पादुकाएँ उतारीं। खड्ग आदि राजचिह्नो का परित्याग कर ये एकशाटिक उत्तरासग कर जिस दिशा की तरफ वे महावीर प्रभु विराजमान थे उस दिशाकी ओर सात आठ पैर आगे जाकर नमस्कारविधि के अनुसार प्रभुकी परोक्ष वंदना करने लगे। उसमें यह पाठ बोले—॥ सू० १९ ॥

**'नमोत्थु णं'** इत्यादि—

(**नमोत्थु णं अरिहंताणं**) रागादिकरूप शत्रुओ पर विजय पानेवाले अरिहंतों को नमस्कार हो। (**भगवंताणं**) भगवान के लिये नमस्कार हो, भग जिनके हो वे भगवान है। भग शब्द के दस (१०) अर्थ है। वे इस प्रकार है—**ज्ञान**=

અતિરેકથી ખિલી ઉઠ્યું. નેત્રોએ પણ મુખને સાથ આપ્યો. હર્ષાતિરેક થવાના કારણે તેમનું આખું શરીર ધ્રુજવા લાગ્યુ અને તેથી શરીર પર ધારણ કરેલાં આભૂષણાદિક પણ ચંચલ (ચળાયમાન) થઈ ગયાં. તેઓ એકદમ આસન ઉપરથી ઉઠયા અને ઉઠીને પાદપીઠ પર પગ રાખીને નીચે ઉતર્યા. મણિવૈડૂર્ય જડેલી બંન્ને પાદુકાઓ ઉતારી. ખડગ આદિ રાજચિહ્નોનો પરિત્યાગ કરી તેઓ એકશાટિક ઉત્તરાસંગ ધારણ કરી જે દિશા તરફ તે મહાવીર પ્રભુ બિરાજમાન હતા તે દિશા તરફ સાત આઠ પગલાં આગળ જઈને નમસ્કાર વિધિ અનુસાર પ્રભુની પરોક્ષ વંદના કરવા લાગ્યા. તેમાં આ પાઠ બોલ્યા. (સૂ. ૧૯)

'नमोत्थुणं' ઈત્યાદિ.

(नमोत्थु णं अरिहंताणं) રાગાદિકરૂપ શત્રુઓ પર વિજય મેળવવા વાળા અરિહંતોને નમસ્કાર હો. (भगवंताणं) ભગવાનને નમસ્કાર હો. જેને ભગ હોય તે ભગવાન છે. ભગ શબ્દના ૧૦ અર્થ છે, તે આ પ્રકારે છે.

૧ જ્ઞાન-સમસ્ત ત્રણકાળના પદાર્થને યુગપત્ જાણનાર કેવળજ્ઞાન,

२-माहात्म्यम्--अनुपम--महनीय-महिम-सम्पन्नत्वम्, ३ यशः-विविधानुकूलप्रतिकूल-परीषहोपसर्गसहन--समुद्भूता कीर्ति । यद्वा-जगद्रक्षणप्रज्ञासमुत्था कीर्तिः । ४-वैराग्यम्--सर्वथा कामभोगाभिलाषराहित्यम्, यद्वा-क्रोधादिकषायनिग्रहलक्षणम्, ५-मुक्तिः-सकलकर्मक्षयलक्षणो मोक्षः, ६ रूपम्-सकलहृदयहारि सौन्दर्यम्, ७-वीर्यम्-अन्तरायान्तजन्यमनन्तसामर्थ्यम्, ८-कर्मपलटविघटनजनितज्ञानदर्शनसुखवीर्यरूपाऽनन्तचतुष्टयलक्ष्मीः, ९--धर्मः--अपवर्गद्वार-कपाटोद्घाटनसाधन श्रुतचारित्र--लक्षणम्' १०-ऐश्वर्य-लोकत्रयाधिपत्यम्, चास्यास्तीति भगवान्, तद्बहुत्वे भगवन्तः, तेभ्य । 'आइगराणं' आदिकरेभ्यः-आदौ प्रथमतः स्वस्वशासनापेक्षया श्रुत--चारित्रधर्म-लक्षणं कार्य कुर्वन्ति तच्छीला आदिकरास्तेभ्यः । 'तित्थयराणं' तीर्थ-

समस्त त्रैकालिक पदार्थों को युगपत् जाननेवाला केवलज्ञान, २ माहात्म्य--अनुपम एवं महनीय महिमा (३) यश--विविध अनुकूल एव प्रतिकूल परीषहों के जीतने से उद्भूत असाधारण कीर्ति अथवा जगत् को संरक्षण करने के बुद्धिचातुर्य से प्राप्त यश, (४) वैराग्य--कामभोगों की अभिलाषाका सर्वथा अभाव अथवा क्रोधादिक कषायों का बिलकुल विनाश, (५) मुक्ति--समस्त कर्मोंका अत्यंत क्षयरूप मोक्ष, (६) रूप--समस्त जनता के हृदय को हरण करनेवाला सौन्दर्य, (७) वीर्य--अन्तराय कर्म के सर्वथा विलयसे प्राप्त अनन्तसामर्थ्य, (८) लक्ष्मी--समस्त कर्मोंके सर्वथा प्रक्षीण होने से लब्ध अनन्तचतुष्टय, (९) धर्म--मोक्ष के द्वार को खोलने में साधकतम श्रुतचारित्ररूप धर्म, एव (१०) ऐश्वर्य--लोकत्रयका आधिपत्य; ये दशों प्रकार जिनमें हों वे भगवान् है। (आइगराणं) अपने २ शासन की अपेक्षा जो सर्वप्रथम इस

(२) महात्म्य--અનુપમ તેમજ મહનીય મહિમા, (૩) यश--વિવિધ અનુકૂળ તેમજ પ્રતિકૂળ પરીષહોને જીતવાથી ઉદ્‌ભવ પામેલી અસાધારણ કીર્તિ, અથવા જગતનાં સંરક્ષણ કરવાના બુદ્ધિચાતુર્યથી પ્રાપ્ત યશ, (૪) वैराग्य--કામભોગોની અભિલાષાનો સર્વથા અભાવ અથવા ક્રોધાદિક કષાયોનો બિલકુલ વિનાશ, (૫) मुक्ति--સમસ્ત કર્મોનો અત્યંત ક્ષયરૂપ મોક્ષ, (૬) रूप--સમસ્ત પ્રાણિનાં હૃદયનું હરણ કરે તેવું સૌંદર્ય, (૭) वीर्य--અંતરાય કર્મનો સર્વથા નાશ કરીને પ્રાપ્ત થયેલું અનંત સામર્થ્ય, (૮) लक्ष्मी--સમસ્ત કર્મો એકદમ ક્ષીણ થવાથી પ્રાપ્ત થયેલ અનંતચતુષ્ટય (૯) धर्म--મોક્ષનાં દ્વારને ખોલવામા મુખ્ય સાધન શ્રુતચારિત્રરૂપ ધર્મ, તેમજ (૧૦) ऐश्वर्य--ત્રણે લોકનું આધિપત્ય. આ દશેય પ્રકાર જેનામાં હોય તે ભગવાન છે. (आइगराणं) પોતપોતાના શાસનની અપેક્ષાએ જે સર્વથી પહેલા આ કર્મભૂમિમાં શ્રુત-

यराणं सयंसंबुद्धाणं पुरिसुत्तमाणं पुरिससीहाणं पुरिसवरपुंडरीयाणं

करेभ्यः-तीर्यते=पार्यते संसारमोहमहोदधिर्यस्माद् इति तीर्थम्-चतुर्विधः सङ्घस्तत्करण-शीलत्वात् तीर्थकरास्तेभ्यः । 'सयंसंबुद्धाणं' स्वयसम्बुद्धेभ्यः-स्वयं=परोपदेशमन्तरेण सम्बुद्धाः सम्यक्तया बोधं प्राप्ताः स्वयंसंबुद्धास्तेभ्यः। 'पुरिसुत्तमाणं' पुरुषोत्तमेभ्यः-पुरुषेषु उत्तमाः=श्रेष्ठाः ज्ञानाद्यनन्तगुणवत्त्वात्-इति पुरुषोत्तमास्तेभ्यः। 'पुरिससीहाणं' पुरुषसिंहेभ्यः-पुरुषेषु सिंहा रागद्वेषादिशत्रुपराजये दृष्टाद्भुत-पराक्रमत्वादिति, यद्वा पुरुषाः सिंहा इवेति पुरुषसिंहास्तेभ्य. 'पुरिसवरपुंडरीयाणं' पुरुषवरपुण्डरीकेभ्यः-पुण्डरीकं-धवलकमलं वरंच तत्पुण्डरीकं-धवलकमलप्रधानं, पुरुषो वरपुण्डरीकमिवेत्युपमितसमासे पुरुषवरपुण्डरीकं,

कर्मभूमि में श्रुतचारित्ररूप धर्मकी प्ररूपणा करते है वे आदिकर है, ऐसे आदिकरों के लिये नमस्कार हो। (तित्थगराणं) तीर्थकरों के लिये नमस्कार हो। जिसके सहारे संसारी जीव इस संसाररूप समुद्र का पार पा जाते है उस चतुर्विध संघका नाम तीर्थ है, इस तीर्थकी स्थापना तीर्थकर करते है। (सयं-संबुद्धाणं) स्वयं-संबुद्धो के लिये नमस्कार हो। जो किसी के उपदेश विना प्रबुद्ध होते है वे स्वयंसंबुद्ध है। (पुरिसुत्तमाणं) ज्ञानादिक अनंत गुणों के धनी होने से पुरुषो में जो उत्तम है उनके लिये नमस्कार हो। (पुरिससीहाणं) रागद्वेष आदि शत्रुओं के पराजय करने में जिनकी अद्भुत शक्ति है वे पुरुषसिंह है, उनको नमस्कार हो (पुरिसवरपुंडरीयाणं) पुरुषो में वरपुण्डरीक के तुल्य जो हैं वे पुरुषवरपुंडरीक है, उनके लिये नमस्कार हो। प्रभु को जो वरपुंडरीक की

ચારિત્રરૂપ ધર્મની પ્રરૂપણા કરે છે તે આદિકર છે, તેવા આદિકરોને નમસ્કાર હો. (तित्थगराणं) તીર્થકરોને નમસ્કાર હો. જેના આશ્રયથી સંસારી જીવ આ સંસારરૂપ સમુદ્રને પાર કરી જાય છે તે ચતુર્વિધ સંઘનું નામ તીર્થ છે. એ તીર્થની સ્થાપના તીર્થકર કરે છે. (सयंसंबुद्धाणं) સ્વયંસંબુદ્ધોને નમસ્કાર હો. જે બીજા કોઈએ આપેલા ઉપદેશ વિનાજ પ્રબુદ્ધ હોય છે તે સ્વયંસંબુદ્ધ છે. (पुरिसुत्तमाणं) જ્ઞાનાદિક અનંત ગુણોના સ્વામી હોવાથી પુરૂષોમાં જે ઉત્તમ છે તેમને નમસ્કાર હો (पुरिससीहाणं) રાગદ્વેષ આદિ શત્રુઓનો પરાજય કરવામા જેની અદ્ભુત શકિત છે તે પુરૂષસિંહ છે, તેમને નમસ્કાર હો. (पुरिसवरपुंडरीयाणं) પુરૂષોમાં વરપુંડરીક=શ્રેષ્ઠ કમળના તુલ્ય જે છે તે પુરૂષવરપુંડરીક છે, તેમને નમસ્કાર હો. પ્રભુને

पुरुषवरपुण्डरीकञ्च पुरुषवरपुण्डरीकञ्चेत्यादिरीत्यैकशेषे पुरुषवरपुण्डरीकाणि तेभ्यः । भगवतो वरपुण्डरीकोपमा च विनिर्गताऽखिलाऽशुभमलीमसत्वात्सर्वैः शुभानुभावैः परिशुद्धत्वाच्च, यद्वा यथा पुण्डरीकाणि पङ्काज्जातान्यपि सलिले वर्धितान्यपि चोभयसम्बन्धमपहाय निर्लेपानीव जलोपरि रमणीयानि सन्दृश्यन्ते निजानुपमगुणगणबलेन सुरासुरनरनिकरशिरोधारणीयतयाऽतिमहनीयानि परमसुखाऽऽस्पदानि च भवन्ति, तथेमे भगवन्तः कर्मपङ्काज्जाता भोगाऽम्भोवर्द्धिताः सन्तोऽपि निर्लेपास्तदुभयमतिवर्तन्ते, गुणसम्पदास्पदतया च केवलादिगुणभावादखिलभव्यजनशिरोधारणीया भवन्तीति, विस्तरस्तु शास्त्रान्तरेऽवलोकनीयः । '**पुरिसवरगंधहत्थीणं**' पुरुषवरगन्धहस्तिभ्यः-

उपमा से युक्त किया है उसका कारण यह है कि प्रभु की आत्मा से समस्त अशुभ मलिन कर्म नष्ट हो गये है एवं शुभ अनुभावों से प्रभु सभी प्रकार से शुद्ध है। धवल कमल जिस प्रकार कीचड़ से उद्भूत होने पर और जल में वर्द्धित होने पर भी उन दोनों से अलिप्त रहता है, जलके ऊपर वहुत ही रमणीय प्रतिभासित होता है, तथा सुर असुरादिकों द्वारा शिरोधार्य होने से वह अतिमहनीय एवं परम सुख का आस्पद होता है उसी प्रकार प्रभु भी नामकर्म के उदय से, कर्मरूप पक से पैदा होने पर एवं भोगरूप जल से संवर्द्धित होने पर भी इन दोनों के सबंध से सर्वथा निर्लेप रहा करते है, एवं गुणरूपसंपत्ति के आस्पद होने से तथा केवलज्ञान की जागृति होने से वे अखिल भव्यजनों द्वारा शिरोधार्य भी होते हैं। (**पुरिसवरगंधहत्थीणं**) पुरुषों में उत्तम गंधहस्ती के समान जो होते है वे पुरुषवरगंधहस्ती कहे जाते है,

જે વરપુંડરીકની ઉપમા આપી છે તેનું કારણ એ છે કે પ્રભુના આત્મામાંથી સમસ્ત અશુભ કાલિમા નષ્ટ થઈ ગયી છે તેમજ શુભ અનુભાવોથી પ્રભુ સારી રીતે શુદ્ધ છે, શ્વેત કમલ જે પ્રકારે કીચડથી ઉત્પન્ન થાય છે અને જલમાં વધે છે છતા પણ તે બન્નેથી અલિપ્ત રહે છે, જલની ઉપર બહુજ રમણીય પ્રતિભાસિત થાય છે, તથા સુર અસુર આદિકોથી શિરપર ધારિત હોવાથી તે અતિમહનીય તેમજ પરમ સુખને આપનાર બને છે, તેવીજ રીતે પ્રભુ પણ નામ કર્મના ઉદયથી, કર્મરૂપ પંકથી પેદા થવા છતાં તેમજ ભોગરૂપ જલથી સંવર્ધન પામવા છતા પણ એ બન્નેના સંબંધથી સર્વથા નિર્લેપ રહ્યા કરે છે તેમજ ગુણરૂપ સંપત્તિના આપનાર હોવાથી તથા કેવલજ્ઞાનની જાગૃતિ થવાથી તેઓ તમામ ભવ્યજનો દ્વારા શિરોધાર્ય પણ થઈ જાય છે. (पुरिस-वर-गंध-हत्थीणं) પુરૂષોમા ઉત્તમ ગંધહસ્તીના જેવા જે હોય

**पुरिसवरगंधहत्थीणं लोगुत्तमाणं लोगनाहाणं लोगहियाणं लोग-**

गन्धयुक्ता हस्तिनो गन्धहस्तिनः, वराश्च ते गन्धहस्तिनो वरगन्धहस्तिनः, पुरुषा वरगन्धहस्तिन इव पुरुषवरगन्धहस्तिनस्तेभ्यः, गन्धहस्तिलक्षणं यथा—

यस्य गन्धं समाघ्राय, पलायन्ते परे गजाः ।
तं गन्धहस्तिनं विद्यान्नृपतेर्विजयावहम् ॥ इति ।

अतएव यथा गन्धहस्तिगन्धमाघ्राय गजान्तराणीतस्ततो द्रुतं पलाय्य प्रच्छन्नस्थानं प्राप्नुवन्ति, तद्वदचिन्त्यातिशयप्रभाववशाद् भगवद्विहरणसमीरणगन्ध-सम्बद्धगन्धतोऽपि-ईति-डमर-मरकादय उपद्रवा द्राग् दिक्षु प्रद्रवन्तीति, गन्धगजाऽऽश्रितराजवद् भगवदाश्रितो भव्यगणः सर्वदा विजयवान् भवतीति भवत्युभयोः सादृश्यम् । '**लोगुत्तमाणं**' लोकोत्तमेभ्यः, लोकेषु-भव्यसमाजेषु उत्तमाश्चतुस्त्रिंशदति-

उनके लिये नमस्कार हो, गंधहस्तीका लक्षण इस प्रकार है-

**"यस्य गन्धं समाघ्राय पलायन्ते परे गजाः ।
तं गंधहस्तिनं विद्यान्नृपतेर्विजयावहम्" ॥**

जिसकी गंध को सूंघकर भी अन्य हाथी भाग जाते है वह गंधहस्ती कहलाता है। यह जिस राजा के पास होता है वह अवश्य ही युद्ध में विजय प्राप्त करता है। तात्पर्य यह है कि-जिस प्रकार गंधहस्ती की गंध को सूंघकर अन्यगज भाग जाते है उसी प्रकार प्रभु के विहार की गंध सूंघ कर, अर्थात्-प्रभुके विहार की वायु के संबंध से ईति, डमर और मरकी आदि उपद्रव विलकुल शांत हो जाते है। (**लोगुत्तमाणं**)

છે તે પુરૂષવરગંધહસ્તી કહેવાય છે. તેમને નમસ્કાર હો. ગંધહસ્તીનું લક્ષણ આ પ્રકારે છે-

"यस्य गन्धं समाघ्राय पलायन्ते परे गजाः ।
तं गन्धहस्तिनं विद्यान्नृपतेर्विजयावहम्"

જેની ગંધ સૂંઘવામાત્રથી બીજા હાથી ભાગી જાય તે ગંધહસ્તી કહેવાય છે. તે જે રાજાની પાસે હોય છે તે અવશ્યમેવ યુદ્ધમાં વિજય પ્રાપ્ત કરે છે. તાત્પર્ય એ છે કે-જે પ્રકારે ગંધહસ્તીની ગંધને સુંઘીને બીજા હાથી ભાગી જાય છે તેવી જ રીતે પ્રભુના વિહારની ગંધને સુંઘીને અર્થાત્ પ્રભુના વિહારના વાયુના સંબંધથી ઇતિ ડમર અને મરકી આદિ ઉપદ્રવ બિલકુલ શાંત થઈ જાય છે. (लोगुत्तमाणं) ચોત્રીશ અતિશયો તેમજ

शयपञ्चत्रिंशद्वाणीगुणोपेतत्वात्, तेभ्यः '**लोगनाहाणं**' लोकनाथेभ्यः, लोकानां= भव्यानां नाथा=नेतारो योगक्षेमकारित्वादिति लोकनाथास्तेभ्यः । '**लोगहियाणं**' लोकहितेभ्यः--लोकः--एकेन्द्रियादिः सर्वप्राणिगणस्तस्मै हिता रक्षोपायपथप्रदर्शकत्वा- ल्लोकहितास्तेभ्यः । '**लोगपईवाणं**' लोकप्रदीपेभ्यः, लोकस्य=भव्यजनसमुदायस्य प्रदीपास्तन्मनोऽभिनिविष्टाऽनादिमिथ्यात्वतमःपटलव्यपगमेन विशिष्टात्मतत्त्वप्रकाशक- त्वात्प्रदीपतुल्यास्तेभ्यः । यथा प्रदीपस्य सकलजीवार्थं तुल्यप्रकाशकत्वेपि चक्षुष्मन्त एव तत्प्रकाशसुखभाजो भवन्ति नत्वन्धास्तथा भव्या एव भगवदनुभावसमुद्भूत- परमानन्दसन्दोहभाजो भवन्ति नाऽभव्या इति प्रतिबोधयितुं प्रदीपदृष्टान्तः, अत एव च लोकपदेन भव्यानामेव ग्रहणम् । '**लोगपज्जोयगराणं**' लोकप्रद्योतकरेभ्यः--

चौतीस अतिशयों एवं पैंतीस वाणी के गुणों से युक्त होने से प्रभु लोकोत्तम कहलाते हैं; ऐसे उनके लिये नमस्कार हो । (**लोगनाहाणं**) भव्यजीवों के योग-क्षेम-कारी होने से लोकनाथ प्रभु को नमस्कार हो। (**लोगहियाणं**) एकेन्द्रिय प्राणियों से लेकर पंचेन्द्रिय पर्यन्त समस्त जीवो से व्याप्त इस लोक के लिये रक्षाके उपायभूत मार्ग के प्रदर्शक होने से लोकहितस्वरूप प्रभुके लिये नमस्कार हो। (**लोगपईवाणं**) भव्यजनो के मन में अनादिकाल से ठसाठस भरे हुए मिथ्यात्वरूपी अन्धकार के पटल के विनाश से विशिष्ट आत्मतत्त्व के प्रकाशक होने से भगवान् प्रदीपतुल्य है, जिस प्रकार दीपक सकल जीवों के लिये समान प्रकाशक होता हुआ भी चक्षुष्मान जीवों के लिये विशेष आनंदप्रद होता है उसी प्रकार प्रभु को लखकर भव्य जीव ही अमन्द आनंद के सदोह से सुखी हुआ करते हैं, ऐसे लोकके प्रदीपस्वरूप को नमस्कार

પાંત્રીશ વાણીના ગુણોથી યુકત હોવાથી પ્રભુ લોકોત્તમ કહેવાય છે, તેમને નમસ્કાર હો. (लोगनाहाणं) ભવ્ય જીવોના યોગક્ષેમ કરનાર હોવાથી લોકનાથ પ્રભુને નમસ્કાર હો. (लोगहियाणं) એકેંદ્રિય પ્રાણિઓથી માંડીને પંચેંદ્રિય પર્યન્ત સમસ્ત જીવોથી વ્યાપ્ત આ લોકના માટે રક્ષાના ઉપાયભૂત માર્ગના પ્રદર્શક હોવાથી લોકહિતસ્વરૂપ પ્રભુને નમસ્કાર હો.(लोगपईवाणं) ભવ્ય જનોના મનમા અનાદિકાલથી ઠસાઠસ ભરેલા મિથ્યાત્વરૂપી અંધકારના સમૂહના વિના- શથી વિશિષ્ટ આત્મતત્વના પ્રકાશક હોવાથી ભગવાન પ્રદીપ સમાન છે, જેમ દીવો બધા જીવોને સમાન પ્રકાશક હોય છે છતાં ચક્ષુવાળા જીવોને વિશેષ આનંદપ્રદ થાય છે તેવી રીતે પ્રભુને જોઈ ભવ્ય જીવો જ ઘણો આનંદ મેળવીને સુખ પ્રાપ્ત કરે છે, એવા લોકના પ્રદીપસ્વરૂપને નમસ્કાર હો. [लोयपज्जोयगराणं]

**पईवाणं लोगपज्जोयगराणं अभयदयाणं चक्खुदयाणं मग्गदयाणं**

लोकशब्देनाऽत्र लोक्यते—दृश्यते केवलाऽऽलोकेन यथावस्थिततयेति व्युत्पत्त्या लोकालोकयोरुभयोर्ग्रहणम्, तेन लोकस्य—लोकालोकलक्षणस्य सकलपदार्थस्य प्रद्योतः—लोकालोकप्रद्योतस्तं कर्तुं शीलं येषां ते लोकालोकप्रद्योतकराः लोकालोकसकलपदार्थ—प्रकाशकरणशीलास्तेभ्यः। **'अभयदयाणं'** अभयदयेभ्यः—न भयम् अभयम्, भयानामभावो वा अभयम्, अक्षोभलक्षण आत्मनोऽवस्थाविशेषो मोक्षसाधनभूतमुत्कृष्टधैर्यमिति यावत्, दयन्ते=ददतीति दयाः, दयधातोःकर्तरि पचादित्वादच्, अभयस्य दया अभयदया., यद्वा अभया=भयविरहिता दया=सर्वजीवसङ्कटप्रतिमोचनस्वरूपा अनुकम्पा येषां तेऽभयदयास्तेभ्यः। **'चक्खुदयाणं'** चक्षुर्दयेभ्य चक्षुः—ज्ञानं—निखिलवस्तुतत्त्वाऽवभासकतया चक्षुः—सादृश्यात्, तस्य दयाः—दायकाश्चक्षुर्दयास्तेभ्यः, यथा हरिणादिशरण्येऽरण्ये लुण्टाक—

हो। **(लोयपज्जोयगराणं)** लोकालोकस्वरूप सकलपदार्थों को प्रकाश करनेके स्वभाववाले लोकप्रद्योतकरों के लिये नमस्कार हो। **(अभयदयाणं)** अभयदयों के लिये नमस्कार हो। आत्मा को अक्षोभलक्षण अवस्थाविशेष का नाम अभय है, इसे मोक्षसाधनरूप उत्कृष्ट धैर्य—स्वरूप जानना चाहिये। इसे प्रदान करनेवाले होने से प्रभु अभयदय कहे गये हैं। अथवा—जिनकी दया भयरहित है अर्थात् भगवान् द्वारा प्रतिपादित दया समस्त जीवो के संकटोंको दूर करनेवाली है, भगवानने इस प्रकार की दयाका स्वरूप प्रकट किया है कि जिससे जीवों के ऊपर कोई भी संकट नहीं आ सकता है। **( चक्खुदयाणं )** ज्ञानरूपचक्षु के दातार को नमस्कार हो। प्रभु चक्षुर्दय इसलिये कहे गये हैं कि जिसप्रकार हरिणादि जन्तुओं से व्याप्त जंगल में लुटेरों से लूटे गये

લોકાલોક સ્વરૂપ સકલ પદાર્થોનો પ્રકાશ આપવાના સ્વભાવવાળા લોકપ્રદ્યોતકરોને નમસ્કાર હો.[अभयदाणं] અભયદયોને નમસ્કાર હો.આત્માના અક્ષોભ—લક્ષણ અવસ્થાવિશેષનું નામ અભય છે, એને મોક્ષ સાધનરૂપ ઉત્કૃષ્ટ ધૈર્ય-સ્વરૂપ જાણવા જોઈએ. એનું પ્રદાન કરવાવાળા હોવાથી પ્રભુ અભયદય કહેવાય છે. અથવા—જેમની દયા ભયરહિત છે અર્થાત્ ભગવાન દ્વારા પ્રતિપાદિત દયા સમસ્ત જીવોનાં સંકટને દૂર કરવાવાળી છે. ભગવાને એ પ્રકારે દયાનું સ્વરૂપ પ્રકટ કર્યું છે કે જેથી જીવો ઉપર કોઇ પણ સંકટ ન આવી શકે. (चक्खुदयाणं) જ્ઞાનરૂપ ચક્ષુના દાતારને નમસ્કાર હો. પ્રભુ ચક્ષુર્દય એટલા માટે કહેવાય છે કે જે પ્રકારે હરિણ આદિ જાનવરોથી વ્યાપ્ત જંગલમાં લુટારાથી લૂટાયેલા પછી આંખો પર પાટા બાંધીને ખાડા આદિમાં ધક્કા

लुण्टितेभ्यः पट्टिकादिदानेन चक्षूंषि पिधाय हस्तपादादि बद्ध्वा तैर्गर्ते पातितेभ्यः कश्चित्पट्टिकाद्यपनोदनेन चक्षुर्दत्वा मार्गं प्रदर्शयति तथा भगवन्तोऽपि भवाऽरण्ये रागद्वेष–लुण्टाकलुण्ठिताऽऽत्मगुणधनेभ्यो दुराग्रहपट्टिकाच्छादितज्ञानचक्षुर्भ्यो मिथ्यात्वोन्मार्गे पातितेभ्यस्तदपनयनपूर्वकं ज्ञानचक्षुर्दत्त्वा मोक्षमार्गं प्रदर्शयन्ति। एतदेव भङ्ग्यन्तरेणाऽऽह '**मग्गदयाणं**' मार्गदयेभ्यः–मार्गः=सम्यग्रत्नत्रयलक्षणः शिवपुरपथः, यद्वा–विशिष्ट–

---

पश्चात् आंखों पर पट्टी बांधकर गर्त आदि में धक्का देकर पटके गये मानवों के लिये कोई दयालु मानव उनकी आंखोंकी पट्टी खोलकर चक्षुर्दाता बन उन्हें मार्गका प्रदर्शन कराता है, उसी प्रकार प्रभु भी इस अशरण भवरूप अरण्य में रागद्वेष आदि लुटेरो द्वारा आत्मगुणरूप धनों के अपहरण होने से दीनहीन बने हुए समस्त संसारी जीवोंको कि जिनकी ज्ञानरूप आंखों पर दुराग्रहरूपी पट्टी कर्मोंने बांध रखी है और इसीसे जिनका ज्ञानरूप नेत्र आच्छादित हो रहा है और इसीके वजह से जो उन्मार्गरूपी गर्त में धकेल दिये गये है, प्रभुने अपने दिव्य उपदेश द्वारा उन्हें सत् ज्ञान दिया, इससे उनका दुराग्रह नष्ट हो गया, और ज्ञानरूप अन्तरंग नेत्र निर्मल हो जाने से प्रभुने उन्हे मोक्षमार्ग दिखाया। इसलिये प्रभु उनके चक्षुर्दाता समान माने गये है। इसी विषय को विशेष स्पष्ट करने के लिये सूत्रकार प्रकारान्तर से कहते है–कि (**मग्गदयाणं**) मोक्षमार्ग में लगानेवालों के लिये नमस्कार हो। यहां रत्नत्रय यही मोक्षमार्ग है, अथवा–गुणस्थानोंकी प्राप्ति करानेवाला क्षयोपशम

---

દઈને નાખી દેવાયેલા માણુસને જેમ કોઈ દયાળુ માણુસ તેની આંખોના પાટા ખોલીને ચક્ષુર્દાતા બની તેને માર્ગ બતાવે છે તેજ પ્રકારે પ્રભુ પણુ આ અશરણુ ભવરૂપ અરણ્યમાં રાગદ્વેષ આદિ લૂટારા દ્વારા આત્મગુણુરૂપ સંપત્તિ લુટાઈ જતાં દીનહીન બનેલા સમસ્ત સંસારી જીવોને કે જેમની જ્ઞાનરૂપ આંખો પર દુરાગ્રહરૂપી પાટા કર્મોએ બાંધી રાખેલા છે અને તેથીજ જેનાં જ્ઞાનરૂપી નેત્ર ઢંકાઈ ગયા છે અને એજ કારણુથી જે ખોટા માર્ગરૂપી ખાડામા ધકેલાઈ ગયા છે તેમને પ્રભુએ પોતાના દિવ્ય ઉપદેશ દ્વારા સત્ જ્ઞાન આપ્યુ, તેથી તેમના દુરાગ્રહ નાશ પામ્યા અને જ્ઞાનરૂપ અંતરંગનાં નેત્ર નિર્મળ થઈ જવાથી પ્રભુએ તેમને મોક્ષમાર્ગ દેખાડયો. તેથી પ્રભુ તેમના ચક્ષુર્દાતા સમાન મનાય છે. આજ વિષયને વિશેષ સ્પષ્ટ કરવા માટે સૂત્રકાર પ્રકારાંતરથી કહે છે કે (**मग्गदयाण**) મોક્ષ માર્ગમા લગાડવાવાળાને નમસ્કાર હો. અહીં રત્નત્રય એજ મોક્ષમાર્ગ છે. અથવા ગુણુસ્થાનોની પ્રાપ્તિ કરા-

**सरणदयाणं जीवदयाणं बोहिदयाणं धम्मदयाणं धम्मदेसयाणं**

गुणस्थानप्रापकः क्षयोपशमभावो मार्गस्तस्य दयाः—दातारस्तेभ्यः। '**सरणदयाणं**' शरणदयेभ्यः—शरणं=परित्राणं—कर्मरिपुवशीकृततया व्याकुलानां प्राणिनां रक्षणस्थानं वा तस्य दयास्तेभ्यः। '**जीवदयाणं**' जीवदयेभ्यः—जीवेषु—एकेन्द्रियादिसमस्तप्राणिषु दया—सङ्कटमोचनलक्षणा येषामिति, यद्वा—जीवन्ति मुनयो येन स जीवः—संयमजीवितं तस्य दयास्तेभ्यः। '**बोहिदयाणं**' बोधिदयेभ्यः—बोधिर्जिनप्रणीतधर्ममूलभूता-तत्वार्थ-श्रद्धानलक्षणसम्यग्दर्शनरूपा तस्या दयाः—बोधिदयास्तेभ्यः। '**धम्मदयाणं**' धर्म-दयेभ्यः—धर्मः—दुर्गतिप्रपतज्जन्तुसंरक्षणलक्षणः श्रुतचारित्रात्मकस्तस्य दयास्तेभ्यः।

भावरूप मार्ग है, भव्य जीवोंके लिये प्रभु इसके दातार है। इसलिये प्रभु मार्गदय है। (**सरणदयाणं**) शरणदातारों के लिये नमस्कार हो। प्रभु शरणदातार इसलिये है कि उन्होंने कर्मरूपी रिपु द्वारा वशीकृत होनेके कारण व्याकुल बने हुए समस्त प्राणियों को निर्भय स्थान में पहुँचनेका उपदेश दिया, अथवा—तुम्हारी रक्षा कैसे हो सकती है इसका उपाय बतलाया। (**जीवदयाणं**) जीवों के ऊपर दया रखने का उपदेश देनेवालों के लिये, अथवा—संयमरूप जीवन को प्रदान करनेवालों के लिये नमस्कार हो। (**बोहिदयाणं**) बोधिके दातारोंको नमस्कार हो। प्रभुने समस्त संसारी जीवों को जो मोक्षाभिलाषी थे उन्हे तत्त्वार्थ के श्रद्धान करने रूप बोधि को प्रदान किया; क्योंकि आत्मकल्याण के मार्ग में सर्वप्रथम यही एक प्रधान साधक है। इसलिये प्रभु इस अपेक्षा से बोधिदातार कहे गये है। (**धम्मदयाणं**) धर्मके

વનારા ક્ષયોપશમભાવરૂપ માર્ગ છે. ભવ્ય જીવોનેમાટે પ્રભુ તેના દાતાર છે. તેથી પ્રભુ માર્ગદય છે. (सरणदयाणं) શરણદાતારોને નમસ્કાર હો. પ્રભુ શરણ-દાતાર એટલા માટે છે કે તેમણે કર્મરૂપી રિપુદ્વારા વશીભૂત થઈ જવાના કારણે વ્યાકુલ બની ગયેલાં સમસ્ત પ્રાણિયોને નિર્ભય સ્થાનમાં પહોં-ચવાનો ઉપદેશ કર્યો, અથવા તેમની રક્ષા કેમ થઈ શકે તેનો ઉપાય બતાવ્યો. (जीवदयाणं) જીવોના ઉપર દયા રાખવાનો ઉપદેશ દેવાવાળા અથવા સંયમરૂપ જીવન પ્રદાન કરવા વાળાને નમસ્કાર હો. ( बोहिदयाणं ) બોધિના દાતારોને નમસ્કાર હો. પ્રભુએ સમસ્ત સંસારી જીવોને જે મોક્ષાભિલાષી હતા તેમને તત્ત્વાર્થશ્રદ્ધાનરૂપ બોધિ પ્રદાન કર્યું; કેમકે આત્મકલ્યાણના માર્ગમાં સૌથી પ્રથમ આજ એક મુખ્ય સાધન છે. એ માટે પ્રભુ એ અપેક્ષાએ બોધિ-દાતાર કહેવાય છે ( धम्मदयाणं ) ધર્મના દાતારોને નમસ્કાર હો. દુર્ગતિમાં

**धम्मनायगाणं धम्मसारहीणं धम्म-वर-चाउरंत-चक्क-वट्टीणं दीवो**

इहोक्तेषु विशेषणेषु तं दयन्ते इत्यपव्याख्यानम्, '**अधीगर्थदयेशाम्**' इति कर्मणि शेषत्वविवक्षायां षष्ठ्युत्पत्तेः। शेषत्वाऽविवक्षायां तु द्वितीयायाः सत्त्वेऽपि '**कर्मण्यण्**' इत्यणुत्पत्त्या अभयदायेभ्य इत्याद्यनिष्टप्रयोगापत्तेर्दुर्वारत्वात्। '**धम्मदेसयाणं**' धर्मदेशकेभ्यः—धर्मः=प्राक्प्रतिपादितलक्षणः, तस्य देशकाः उपदेशकास्तेभ्यः। '**धम्मनायगाणं**' धर्मनायकेभ्यः—धर्मस्य नायकाः=नेतारः—जनानामन्तःकरणे धर्मप्रचार-करणाद् इति यावत्—धर्मनायकास्तेभ्यः। '**धम्मसारहीणं**' धर्मसारथिभ्यः—धर्मस्य सारथयः धर्मसारथयस्तेभ्यः, भगवत्सु सारथित्वाऽऽरोपेण धर्मे रथत्वारोपो व्यज्यते इति परम्परितरूपकमलङ्कारस्तस्माद्यथा सारथयो रथद्वारा रथस्थान् पथिकान् सुखपूर्वक-मभीष्ट स्थानं नयन्त्युन्मार्गगमनादितश्च प्रतिरुन्धते, तथा भगवन्तो धर्मद्वारा मोक्षस्थान—

दातारोंको नमस्कार हो। दुर्गति में पड़ने से जीवोको रोकनेवाला एक सर्वज्ञ वीतराग प्रभु द्वारा प्रतिपादित श्रुतचारित्ररूप धर्म ही है। प्रभुने ऐसे धर्मका जीवों को अपनी दिव्यवाणी द्वारा उपदेश दिया, अतः वे धर्मके दातार कहलाये। (**धम्मदेसयाणं**) धर्मदेशकों के लिये नमस्कार हो। (**धम्मनायगाणं**) धर्मके नायकों के लिये नमस्कार हो। प्रभु धर्म के नायक इसलिये कहलाये है कि उन्होंने जनता के अन्तःकरण में धर्मका प्रचार किया है। (**धम्मसारहीणं**) धर्मके सारथियों को नमस्कार हो। यहां परम्परितरूपकालंकार है। क्यों कि भगवान में सारथित्व का जब आरोप किया गया है तो धर्ममें रथत्वका आरोप प्रकट होता है। इसलिये जिसतरह सारथी रथ द्वारा रथस्थ पथिक को सुखपूर्वक अभीष्ट स्थान पर पहुँचा दिया करता है,

પડવાથી જીવોને રોકવાવાળા એક સર્વજ્ઞ વીતરાગ પ્રભુદ્વારા પ્રતિપાદિત શ્રુત-ચારિત્રરૂપ ધર્મજ છે. પ્રભુએ એવા ધર્મનો જીવોને પોતાની દિવ્યવાણી દ્વારા ઉપદેશ આપ્યો, માટે તેઓ ધર્મના દાતાર કહેવાયા. (धम्मदेसयाणं) ધર્મ-દેશકો ને નમસ્કાર હો. (धम्मनायगाणं) ધર્મના નાયકોને નમસ્કાર હો. પ્રભુ ધર્મના નાયક એટલા માટે કહેવાય છે કે તેમણે જનતાના અંતઃકરણમાં ધર્મનો પ્રચાર કર્યો છે (धम्मसारहीणं) ધર્મના સારથિઓને નમસ્કાર હો. અહીં પરંપરિત-રૂપક અલંકાર છે, કેમકે ભગવાનમાં સારથિત્વનો આરોપ કરવાથી ધર્મમાં રથત્વનો આરોપ પ્રકટ થાય છે. આ માટે જેવી રીતે સારથી રથદ્વારા રથમાં બેસનાર પથિકને સુખપૂર્વક અભીષ્ટ સ્થાને પહોંચાડી દે છે તેમજ ખોટા માર્ગથી તેની રક્ષા કરે છે તેવીજ રીતે પ્રભુએ પણ

मितिभावः । 'धम्म-वर-चाउरंत-चक्क-वट्टीणं'-धर्म-वर-चातुरन्त-चक्र-वर्तिभ्यः दानशीलतपोभावैश्चतसृणां नरकादिगतीनां चतुर्णां वा कषायाणामन्तो नाशो यस्मात्, अथवा चतस्रो गतीश्चतुरः कषायान् वा अन्तयति=नाशयतीति, यद्वा-चतुर्भिर्दानशील-तपोभावैः कृत्वा अन्तो रम्यः, 'मृतावत्रसिते रम्ये समाप्तावन्त इष्यते' इति विश्वकोषात् । अथवा चत्वारो दानादयोऽन्ताः=अवयवा यस्य, यद्वा चत्वारो दानादयः अन्ताःस्वरूपाणि यस्य, 'अन्तोऽवयवे स्वरूपे च' इति हेमचन्द्रः, स चतुरन्तः स एव चातुरन्तः, स्वार्थिकः प्रज्ञाद्यण्, चातुरन्त एव चक्रं-

---

एवं उन्मार्ग गमन से उसकी रक्षा करता है, उसी प्रकार प्रभु ने भी धर्मद्वारा जीवों को उनके अभीष्ट स्थानरूप मुक्तिस्थान में पहुँचाया है, एवं कुमार्ग-कुधर्म-से उनकी रक्षा की है। ( धम्म-वर-चाउरंत-चक्क-वट्टीणं ) दान, शील, तप एवं भाव इन चार का सहारा लेकर चार नरकादिगतियों का, अथवा-चार क्रोधादिक कषायो का जिससे नाश होता है, अथवा-चार गतियों एवं चार कषायो का जो विनाश करता है, अथवा दान, शील, तप एवं भाव इनको लेकर जो रम्य है, अथवा-ये चार दानादिक जिसके अवयव है, अथवा-ये चार दानादिक जिसके निजस्वरूप है वह चातुरन्त है। अन्त शब्द के कोषों में "मृतावत्रसिते रम्ये समाप्तावन्त इष्यते" "अन्तोऽवयवे स्वरूपे च" इस प्रकार अनेक अर्थ है। उन्हीं अर्थों को लेकर यहां "अन्त" शब्द के अर्थ का स्पष्टीकरण किया गया है। स्वार्थ में अण् प्रत्यय करने से "चातुरन्त" ऐसा पद निष्पन्न हो जाता

---

ધર્મદ્વારા જીવોને તેમના અભીષ્ટ સ્થાનરૂપ મુક્તિસ્થાનમાં પહોંચાડયા છે તેમજ કુમાર્ગ કુધર્મથી તેમની રક્ષા કરી છે. ( धम्मवर-चाउरंत-चक्क-वट्टीणं ) દાન, શીલ, તપ, તેમજ ભાવ એ ચારનો આશ્રય લઈને ચાર નરકાદિ ગતિઓનો, અથવા ચાર ક્રોધાદિક કષાયોનો જે વિનાશ કરે છે, અથવા દાન, શીલ, તપ તેમજ ભાવ એ લઈને જે રમ્ય છે, અથવા એ ચાર દાનાદિક જેમના અવયવ છે, અથવા એ ચાર દાનાદિક જેના નિજસ્વરૂપ છે તે ચાતુરન્ત છે. અન્ત શબ્દના કોષોમાં "मृतावत्रसिते रम्ये समाप्तावन्त इष्यते" "अन्तोऽवयवे स्वरूपे च" એ પ્રકારે અનેક અર્થ છે. તે અર્થો લઈને અહીં અંત શબ્દના અર્થનું સ્પષ્ટીકરણ કરવામાં આવેલું છે. સ્વાર્થમાં अण् પ્રત્યય કરવાથી "चातुरन्त" એવું પદ નિષ્પન્ન થઈ જાય છે. આ चातुरन्त જ એક ચક્ર છે, કેમકે ચક્ર જે પ્રકારે બીજાનો ઉચ્છેદ કરે છે

जन्मजरामरणोच्छेदकत्वेन चक्रतुल्यत्वात्, वरं च तच्चातुरन्तचक्रं वरचातुरन्तचक्रम्, वरपदेन राजचक्राऽपेक्षयाऽस्य श्रेष्ठत्वं व्यज्यते लोकद्वयसाधकत्वात्, धर्म एव वरचातुरन्तचक्रं-धर्मवरचातुरन्तचक्र, तादृशस्य धर्मातिरिक्तस्याऽसम्भवात्; अत एव सौगतादिधर्माऽऽभासनिरास; तेषां तात्त्विकार्थप्रतिपादकत्वाभावेन श्रेष्ठत्वाऽभावात्; धर्मवरचातुरन्तचक्रेण वर्तितुं शीलं येषामिति धर्मवरचातुरन्तचक्रवर्तिनस्तेभ्य'। चक्रवर्तिपदेन षट्खण्डाधिपतिसादृश्यं व्यज्यते, तथा हि चत्वारः=उत्तरदिशि हिमवान् शेषदिक्षु चोपाधिभेदेन समुद्रा अन्ता'=सीमानस्तेषु स्वामित्वेन भवाश्चातुरन्ताः, चक्रेण=रत्न-

है। यह **चातुरन्त** ही एक चक्र है; क्यों कि चक्र जिस प्रकार पर का उच्छेदक होता है उसी प्रकार यह "**चातुरन्तचक्र**" भी जीवों के जन्म, जरा एवं मरण का उच्छेदक है। इसलिये इसमें चक्र की उपमा सार्थक होती है। '**वर**' शब्द का अर्थ उत्कृष्ट है, यह चातुरन्तचक्र में उत्कृष्टता द्योतित करता है। राजचक्र की अपेक्षा यह चक्र उत्कृष्ट है। क्यों कि यह लोकद्वय में हित का साधक होता है। धर्म ही एक उत्कृष्ट चातुरन्त चक्र है, अन्य नहीं! इस कथन से अन्य सौगतादिक संमत धर्म में धर्माभासता होने से तात्त्विक अर्थ को प्रतिपादन करने का अभाव कथित हुआ है, अतः उनमें श्रेष्ठता नहीं है। इस धर्मवरचातुरन्तचक्र के अनुसार जिनका वर्तन करने का स्वभाव है वे **धर्मवरचातुरन्तचक्रवर्ती** कहे गये हैं। "**चक्रवर्ती**" पद से षट्खड के अधिपति का सादृश्य अभिव्यक्त होता है। "**चत्वारःअन्ताः-चतुरन्ताः**" यहा अन्त शब्द का अर्थ सीमा होता है। उत्तरदिशा में हिमवान् एवं शेष तीन दिशाओं में उपाधि के भेद से तीन समुद्र ये चतुरन्त पद से गृहीत

તેજ પ્રકારે આ ચાતુરન્તચક્ર પણ જીવોના જન્મ, જરા તેમજ મરણનો ઉચ્છેદ કરે છે. એ માટે આમાં ચક્રની ઉપમા સાર્થક થાય છે. 'वर' શબ્દનો અર્થ ઉત્કૃષ્ટ છે. આ પદ ચાતુરન્તચક્રમાં ઉત્કૃષ્ટતા દ્યોતિત કરે છે. રાજચક્રની અપેક્ષાએ આ ચક્ર ઉત્કૃષ્ટ છે. કેમકે આ બન્ને લોકમાં હિતનું સાધક થાય છે. ધર્મજ એક ઉત્કૃષ્ટ ચાતુરન્તચક્ર છે, બીજું નહિ! આ કથનથી બીજા સૌગત આદિક સંમત ધર્મમાં ધર્માભાસના હોવાથી તાત્ત્વિક અર્થને પ્રતિપાદન કરવાનો અભાવ કહેવામા આવ્યો છે, માટે તેમા શ્રેષ્ઠતા નથી. આ ધર્મવરચાતુરન્તચક્ર અનુસાર જેનું વર્તન કરવાનો સ્વભાવ છે તે ધર્મવરચાતુરન્તચક્રવર્તી કહેવાય છે. "ચક્રવર્તી" પદથી ષટ (છ) ખંડના અધિપતિનુ સાદૃશ્ય અભિવ્યક્ત થાય છે. "चत्वारःअन्ताः चतुरन्ताः" અહીં અન્ત શબ્દનો અર્થ સીમા થાય છે. ઉત્તરદિશામાં હિમવાન્ તેમજ શેષ (બાકીની)

भूतप्रहरणविशेषसदृशसम्यक्चारित्ररूपरत्नेन वर्तितु शीलं येषां ते चक्रवर्तिन, चातुरन्ताश्च ते चक्रवर्त्तिन. चातुरन्तचक्रवर्तिन, धर्मेण—न्यायेन वराः श्रेष्ठा इतरतीर्थिकाऽपेक्षयेति धर्मवरा, धर्मा=प्राणातिपातादिनिवृत्तिदानशीलादिरूपा, '**धर्मः पुण्य–यम–न्याय–स्वभावाऽऽचार–सोमपा**'–इत्यमर', तैर्वराः=श्रेष्ठा अन्यतीर्थिकापेक्षयेति धर्मवरा', ते च ते चातुरन्तचक्रवर्त्तिनश्चेति–धर्मवरचातुरन्तचक्रवर्त्तिन' । यद्वा चातुरन्तं च तच्चक्रं चातुरन्तचक्रं, वरञ्च तच्चातुरन्तचक्रं वरचातुरन्तचक्र, धर्मो वरचातुरन्त–चक्रमिव धर्मवरचातुरन्तचक्रं, तेन वर्तितुं-वर्तयितु वा शीलं येषां ते धर्मवरचातुरन्तचक्रवर्त्तिन–स्तेभ्यः, '**दीवो**' द्वीपेभ्य'-संसारसमुद्रे निमज्जता द्वीपतुल्यत्वात् । '**ताण**' त्राणेभ्यः-कर्मकद-

---

किये गये है। इन चार सीमाओ के जो स्वामी है वे चातुरन्त हैं। चक्रशब्द का अर्थ रत्नरूप प्रहरण—शस्त्रविशेष है। चक्रवर्ती के चौदह रत्नो में एक रत्न चक्र भी होता है। चक्रवर्ती के चक्ररत्नसदृश सम्यक्चारित्ररूपी रत्न से वर्तन करने का जिनका स्वभाव है वे चक्रवर्ती हैं। धर्म शब्द का अर्थ न्याय और प्राणातिपातादि–निवृत्ति, दान, शील, आदि भी है। धर्म से–न्याय से, अथवा–प्राणातिपातादि–निवृत्ति, दान, शील–आदि से जो अन्यतीर्थिको की अपेक्षा उत्तम है वे धर्मवरचातुरन्तचक्रवती है। अथवा–चातुरन्तचक्रसदृश धर्म से जिनका वर्त्तने का स्वभाव है वे धर्मवरचातुरन्तचक्रवर्ती है । ऐसे धर्मवरचातुरत्नचक्रवर्तियों के लिये नमस्कार हो। '**दीवो**' =संसारसमुद्र में डूबते हुए प्राणियो के जो द्वीप के समान आधार है ऐसे प्रभु के लिये नमस्कार हो। (**ताणं**) कर्मों से कदर्थित प्राणियों

---

त्रणु हिशाओमा उपाधिना लेहथी त्रणु समुद्र ए चतुरन्त पहथी लेवायुं छे. आ चार सीमाओना जे स्वामी छे ते चातुरन्त छे. चक्र शब्हनो अर्थ रत्नरूप प्रहरणु अर्थात् शस्त्रविशेष छे. चक्रवर्तीना चौह रत्नोमां एक रत्न चक्र पणु होय छे. चक्रवर्तीना चक्ररत्नसहृश सम्यक्चारित्ररूपी रत्नथी वर्तन करवानो जेनो स्वभाव छे ते चक्रवर्ती छे. धर्म शब्हनो अर्थ न्याय अने प्राणुातिपाताहिनिवृत्ति, हान, शील आहि पणु छे. धर्मथी, न्यायथी अथवा प्राणुातिपाताहिनिवृत्ति, हान, शील आहिथी जे अन्यतीर्थिकोनी अपेक्षाए उत्तम छे ते धर्मवरचातुरन्तचक्रवर्ती छे. अथवा वरचातुरन्तचक्रसहृश धर्मथी जेनो वर्त्तवानो स्वभाव छे ते धर्मवर-चातुरन्तचक्रवर्ती छे. एवा धर्मवरचातुरन्तचक्रवर्त्तीओने नमस्कार हो. (दीवो) संसारसमुद्रमा डूणता प्राणुीओने द्वीपना समान जे आधार छे

**ताणं सरणगई पइट्ठा अप्पडिहय-वर-नाण-दंसण-धराणं वियट्ट-**

र्थितानां भव्यानां रक्षसक्षणेभ्यः। अतएव तेषां भव्यानां 'सरणगई' शरणगतिभ्यः–आश्रयस्थानेभ्यः, 'पइट्ठा' प्रतिष्ठाभ्यः–कालत्रयेऽपि अविनाशित्वात् स्थितेभ्यः, 'दीवो' इत्यादीनि 'पइट्ठा' इत्यन्तानि चतुर्थ्यर्थे प्रथमान्तानि, अत्रैकवचनं नपुंसकत्वं स्त्रीत्वं चाविवक्षितम्। 'अप्पडियहय–वर–नाण–दंसण–धराणं' अप्रतिहतवर–ज्ञान दर्शन–धरेभ्यः–प्रतिहतं–भित्त्याद्यावरणस्खलितं–न प्रतिहतम्–अप्रतिहतं, ज्ञानञ्च दर्शनञ्चेति ज्ञानदर्शने, यतोऽप्रतिहते अतएव वरे–श्रेष्ठे च ते ज्ञानदर्शने वरज्ञानदर्शने केवल–ज्ञानकेवलदर्शने, अप्रतिहते वरज्ञानदर्शने अप्रतिहतवरज्ञानदर्शने, तयोर्धराः–अप्रतिहतवरज्ञानदर्शनधराः – सम्पूर्णोऽवरणरहितकेवलज्ञानकेवलदर्शनधारिणस्तेभ्यः। 'वियट्टच्छउमाणं' व्यावृत्तच्छद्मभ्यः–छाद्यते=आव्रियते केवलज्ञानकेवलदर्शनगुणाद्यात्मनोऽनेनेति छद्म–ज्ञानावरणीयादिकं कर्माष्टकं, व्यावृत्त–निवृत्तं छद्म येभ्यस्ते व्यावृ-

---

के जो त्राता है ऐसे प्रभु के लिये नमस्कार हो। (सरणगई) भव्यों के लिये आश्रयस्थानस्वरूप प्रभु के लिये नमस्कार हो। (पइट्ठा) कालत्रय में भी अविनश्वरस्वरूप प्रभु के लिये नमस्कार हो (दीवो) यहां से लेकर (पइट्ठा) तक के समस्त विशेषण चतुर्थी विभक्ति के अर्थ में प्रथमान्त प्रयुक्त हुए है। यहां एकवचन, नपुंसकत्व एवं स्त्रीत्व अविवक्षित है। (अप्पडिहय–वर–नाण-दंसण–धराणं) जो अप्रतिहत अनन्त ज्ञान और अनन्त दर्शन के धारक है, उनके लिये नमस्कार हो। (वियट्टच्छउमाणं) जिनके द्वारा आत्मा का स्वभावभूत केवलज्ञान एवं केवल दर्शन आवृत होता है ऐसे आठों ही कर्म 'छद्म' शब्द से गृहीत हुए है, यह छद्म जिनकी आत्मा से सदा के लिये दूर हो चुका है

---

એવા પ્રભુને નમસ્કાર હો. (ताणं) કર્મોથી અથડાતા પ્રાણિઓના જે ત્રાણુ અર્થાત્ રક્ષક છે. એવા પ્રભુને નમસ્કાર હો. (सरणगई) ભવ્યોને માટે આશ્રય-સ્થાનસ્વરૂપ પ્રભુને નમસ્કાર હો. (पइट्ठा) ત્રણે કાળમા અવિનાશીસ્વરૂપ પ્રભુને નમસ્કાર હો (दीवो) અહીંથી લઈને (पइट्ठा) સુધીના બધાં વિશેષણો ચતુર્થી વિભકિતના અર્થમાં પ્રથમાન્ત વપરાયેલાં છે, અહીં એકવચન નપુંસકત્વ (નાન્યતર જાતિ) તેમ જ સ્ત્રીત્વ [નારી જાતિ] અવિવક્ષિત છે. [अप्पडिहय वर-नाण-दंसण-धराणं] જે અપ્રતિહત અનંતજ્ઞાન અને અનંત દર્શનના ધારક છે તેમને નમસ્કાર હો. (वियट्टच्छउमाणं) જેમના દ્વારા આત્માના સ્વભાવભૂત કેવલ જ્ઞાન તેમજ કેવલ દર્શન આવૃત થાય છે એવા આઠેય કર્મ 'छद्म' શબ્દથી ગૃહીત થાય

**च्छउमाणं जिणाणं जावयाणं तिण्णाणं तारयाणं बुद्धाणं बोहयाणं मुत्ताणं मोयगाणं सव्वण्णूणं सव्वदरिसीणं सिव-मयल-**

त्तछद्मानस्तेभ्यः । '**जिणाणं**' जिनेभ्यः—स्वयं रागद्वेषशत्रुजेतृभ्यः, '**जायवाणं**' जापकेभ्यः—जापयन्ति कर्मशत्रून् जयन्तं भव्यजीवगण धर्मदेशनादिना प्रेरयन्तीति जापका, जिधातोर्णौ '**क्रीङ्जीनां णौ**' इतिसूत्रेण आत्वे पुकि जापि इति ण्यन्ताद्धातोर्ण्वुलि जापकपदसिद्धिः, तेभ्यो जापकेभ्यः । '**तिन्नाणं**' तीर्णेभ्यः—स्वयं संसारौघं—संसारार्णवं तीर्णाः=उत्तीर्णास्तेभ्यः । '**तारयाणं**' तारकेभ्यः—तारयन्त्यन्यान् इति तारकास्तेभ्यः । '**बुद्धाणं**' बुद्धेभ्यः—स्वयं बोधं प्राप्तेभ्यः । '**बोहयाणं**' बोधकेभ्यः—बोधयन्त्यन्यान् इति बोधकास्तेभ्यः । '**मुत्ताणं**' मुक्तेभ्यः—अमोचिषत स्वयं कर्मबन्धादिति मुक्तास्तेभ्यः । '**मोयगाणं**' मोचकेभ्यः—मुच्यमानान् अन्यान् प्रेरय-

ऐसे व्यावृत्तछद्मवाले सिद्ध प्रभु के लिये नमस्कार हो। (**जिणाणं**) राग द्वेष आदि अंतरंग शत्रुओ के विजेता ऐसे प्रभु के लिये नमस्कार हो। (**जावयाणं**) जो कर्मशत्रुओं के जीतने के लिये उद्यत भव्यगणों को धर्मदेशनादि द्वारा प्रेरित करते हैं वे जापक है, ऐसे जापक सिद्ध प्रभु को नमस्कार हो। (**तिन्नाणं**) स्वयं संसार समुद्र से जो पार हुए हैं वे तीर्ण है, ऐसे तीर्ण सिद्ध प्रभु को नमस्कार हो। (**तारयाणं**) जो पर को पार कर देते है वे तारक है, ऐसे तारक प्रभु को नमस्कार हो। (**बुद्धाणं**) स्वयं बोध को प्राप्त जो होते है वे बुद्ध कहलाते है उनको नमस्कार हो। (**बोहयाण**) पर को बोध करने वाले प्रभु के लिये नमस्कार हो। (**मुत्ताणं**) मुक्त प्रभु के लिये नमस्कार हो। (**मोयगाणं**)

છે. આ 'છદ્મ' જેમના આત્માથી સદાને માટે દૂર થઇ ચુકેલાં છે એવા વ્યાવૃત્તછદ્મવાળા સિદ્ધ પ્રભુને નમસ્કાર હો. (जिणाणं) રાગદ્વેષ આદિ અંતરંગ શત્રુઓના વિજેતા એવા સિદ્ધ પ્રભુને નમસ્કાર હો. (जावयाणं) જે કર્મશત્રુઓને જીતવાને માટે ઉદ્યત (તૈયાર) ભવ્યગણોને ધર્મદેશના આદિ દ્વારા પ્રેરિત કરે છે તે જાપક છે એવા જાપક સિદ્ધ પ્રભુને નમસ્કાર હો. (तिन्नाणं) પોતે સંસાર સમુદ્રથી પાર થએલા છે તે તીર્ણ કહેવાય છે એવા તીર્ણ સિદ્ધ પ્રભુને નમસ્કાર હો. (तारयाणं) જે બીજાને પાર ઉતારી દે છે તે તારક છે એવા તારક પ્રભુને નમસ્કાર હો. (बुद्धाणं) પોતે બોધને પ્રાપ્ત થયેલા છે તે બુદ્ધ કહેવાય છે તેમને નમસ્કાર હો. (बोहयाणं) બીજાને બોધ કરવાવાળા પ્રભુને નમસ્કાર હો. (मुत्ताणं) મુક્ત પ્રભુને નમસ્કાર હો. (मोयगाणं) બીજાને

**मरुय-मणंत-मक्खय-मव्वाबाह-मपुणरावित्ति सिद्धिगइनामधेयं**

न्तीति मोचकास्तेभ्य, '**सव्वन्नूणं**' सर्वज्ञेभ्यः—सर्व=सकलद्रव्यगुण—पर्यायलक्षणं वस्तुजात याथातथ्येन जानन्तीति सर्वज्ञास्तेभ्यः, '**सव्वदरिसीणं**' सर्वदर्शिभ्य.—सर्व=समस्त पदार्थस्वरूप सामान्येन द्रष्टु शीलं येषां ते सर्वदर्शिनस्तेभ्य', स्थान-विशेषणमाह—'**सिवं**' शिवं-निखिलोपद्रवरहितत्वात्शिव—कल्याणमयम्, '**अयलं**' अचलम् स्वाभाविकप्रायोगिकचलनक्रियाशून्यम्. '**अरुयं**' अरुजम्—अविद्यमाना रुजा यत्र तत्, अविद्यमानशरीरमनस्कत्वाद आधिव्याधिरहितमित्यर्थ, '**अणतं**' अनन्तम्—अविद्यमानोऽन्तो नाशो यस्य तत, अत एव-'**अक्खय**' अक्षयम्—नास्ति लेशतोऽपि क्षयो यस्य तत्—अविनाशीत्यर्थ, '**अव्वाबाह**' अव्याबाधम्—न विद्यते व्याबाधा—पीडा द्रव्यतो भावतश्च यत्र तत् । '**अपुणरावित्ति**' अपुनरावृत्ति=न संसारे पुनरावृत्ति'=पुनरवतरण यस्मात तत, यत्र गत्वा न कदाचिदप्यात्मा निवर्तते, समाम्नातमन्य-

---

दूसरों को मुक्त करने वाले सिद्ध प्रभु के लिये नमस्कार हो। (**सव्वण्णूणं सव्व-दरिसीण**) सर्वज्ञ—समस्त गुणपर्यायस्वरूप वस्तुसमूह के युगपत यथार्थ ज्ञाता के लिये नमस्कार हो, एव यथार्थ द्रष्टा के लिये नमस्कार हो। विशेषाकार बोध का नाम ज्ञान एवं सामान्याकार बोध का नाम दर्शन है। (**सिव—मयल—मरुय-मणत—मक्खय—मव्वाबाह—मपुणरावित्ति सिद्धिगइनामधेय ठाणं संपत्ताणं**) निखिल उपद्रवो से रहित होने के कारण शिव=कल्याणमय, अचल=स्वाभाविक एवं प्रायोगिक क्रिया से शून्य, अरुज=शारीरिक एवं मानसिक व्याधि और आधि से सर्वथा परिवर्जित, अनन्त, अविनाशी, अतएव अक्षयस्वरूप, अव्याबाध—द्रव्य और भाव दोनों प्रकार की पीडा से निर्मुक्त, अपुरावृत्ति—जहा जाकर फिर संसार में

---

मुक्त કરાવવાવાળા સિદ્ધ પ્રભુને નમસ્કાર હો. (सवण्णूणं सव्वदरिसीणं) સર્વજ્ઞ- સમસ્ત—ગુણ—પર્યાય—સ્વરૂપ વસ્તુસમૂહના યુગપત્ યથાર્થ જ્ઞાતાને નમસ્કાર હો, તેમજ યથાર્થ દ્રષ્ટાને નમસ્કાર હો વિશેષાકાર બોધનું નામ જ્ઞાન તેમજ સામાન્યાકાર બોધનું નામ દર્શન છે. (सिव मचल-मरुय-मणंत-मक्ख-य-मव्वाबाह-मपुणराविति सिद्धिगइनामधेयं ठाणं सपत्ताणं) સકળ ઉપદ્રવોથી રહિત હોવાના કારણે શિવ—કલ્યાણમય, અચલ—સ્વાભાવિક તેમજ પ્રાયોગિક ક્રિયાઓથી શૂન્ય, અરૂજ-શારીરિક તેમજ માનસિક વ્યાધિ અને આધિથી સર્વથા પરિવર્જિત (મુક્ત), અનંત, અવિનાશી અને તેથી અક્ષય—સ્વરૂપ,અવ્યાબાધ-દ્રવ્ય અને ભાવ બન્ને પ્રકારની પીડાથી નિર્મુક્ત, અપુનરાવૃત્તિ—જ્યા જઈને પાછુ

**ठाणं संपत्ताणं, नमोत्थु णं समणस्स भगवओ महावीरस्स**

त्रापि- 'न स पुनरावर्त्तते न स पुनरावर्त्तते'-इति । इत्थम्-उक्तशिवत्वादि-विशेषणविशिष्टम् । '**सिद्धिगइनामधेय**' सिद्धिगतिनामधेयम्, सिद्धिगतिरिति नाम-धेयं=नाम यस्य तत्, सिद्धिगतिनामकम् '**ठाणं**' स्थानम्-स्थीयतेऽस्मिन् इति स्थान-लोकाग्रलक्षणम्, '**संपत्ताणं**' सम्प्राप्तेभ्यः-समाश्रितेभ्यः । इयदवधि-समुच्चयेन सर्व-सिद्धापेक्षया विशेषणोपादानपूर्वकं नमस्कारवाक्यमभिधाय सम्प्रति भगवन्महावीरोद्देश्यकं नमस्कारमभिधत्ते-'**नमोत्थु णं**' नमोऽस्तु खलु-'**समणस्स भगवओ महावीरस्स**' श्रमणाय भगवते-महावीराय, अत्र श्रमणशब्देनायमर्थो बोद्धव्यः-परकृतस्थान-निवासा-दुरगसमः, परीषहोपसर्गेष्वप्रकम्पत्वाद्गिरिसमः, तपस्तेजोमयत्वादनलसमः, गम्भीरत्वाद्-

जीव का अवतरण नहीं होवे ऐसे सिद्धिगति नामके स्थान को-लोक के अग्रभाग में स्थित मुक्तिस्थान को-प्राप्त हुए श्री सिद्धों को नमस्कार हो। यहां तक के इन विशेषणों से समस्त सिद्धो की अपेक्षा से नमस्कार का कथन किया गया है। अब भगवान् महावीर को उद्देश्य कर के यहां से नमस्कार करने का कथन सूत्रकार करते है-(**नमोत्थु णं समणस्स भगवओ महावीरस्स आदिगरस्स तित्थगरस्स जाव संपाविउकामस्स मम धम्मायरियस्स धम्मोवदेसगस्स**) श्रमण भगवान् महावीर के लिये नमस्कार हो। श्रमण शब्द से सूत्रकार ने प्रभु महावीर में इन विशेषताओ का कथन किया है; वे कहते है भगवान महावीर सर्प की तरह परकृत स्थान में निवास करने के कारण सर्प-सदृश है। परीषह एवं उपसर्गों के आने पर भी प्रभु अप्रकंप थे; अतः वे गिरिसम है। तप एवं तेजके धारक होने से प्रभु अग्नि-जैसे प्रतापशाली है। गांभीर्य एवं ज्ञानादिकरूप

સંસારમાં જીવને અવતરવું ન થાય એવા, સિદ્ધિગતિ નામના સ્થાનને-લોકના અગ્રભાગમાં રહેલાં મુક્તિસ્થાનને પ્રાપ્ત થયેલ શ્રીસિદ્ધ પ્રભુને નમસ્કાર હો. અહીં સુધીનાં આ વિશેષણોથી સમસ્ત સિદ્ધોની અપેક્ષાએ નમસ્કારનું કથન કર્યું છે. હવે ભગવાન્ મહાવીરને ઉદ્દેશીને અહીંથી નમસ્કાર કરવાનું કથન સૂત્રકાર કરે છે-(नमोत्थु णं समणस्स भगवओ महावीरस्स आदिगरस्स तित्थ-गरस्स जाव संपाविउकामस्स मम धम्मायरियस्स धम्मोवदेसगस्स) શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીરને નમસ્કાર હો. શ્રમણ શબ્દથી સૂત્રકારે પ્રભુ મહાવીરમાં આ વિશે-ષતાઓનું કથન કર્યું છે. તેઓ કહે છે કે ભગવાન મહાવીર સર્પની પેઠે બીજાએ કરેલાં નિવાસસ્થાનમાં રહેવાને કારણ સર્પ જેવા છે. પરીષહ તેમજ ઉપસર્ગો આવતાં પણ પ્રભુ ધ્રુજી જતા નહિ; માટે તે પર્વત

**आदिगरस्स तित्थगरस्स जाव संपाविउकामस्स मम धम्माय-**

ज्ञानादिरत्नाकरत्वात् मर्यादाधारकत्वात् सागरसमः। निरालम्बनत्वाद् गगनसमः। सुखदुःखयोरदर्शितविकारभावाद् वृक्षसमः। अनियतवृत्तित्वाद् भ्रमरसमः। संसारभयोद्विग्नत्वात् मृगसमः। सर्वसहत्वाद् धरणिसमः। कामभोगोद्भवत्वेऽपि विषयविरक्ततया पङ्कजलोपरि वर्तमानकमलवन्निर्लेपत्वात् कमलसमः। लोकालोकयोरविशेषत्वेन प्रकाशकत्वाद्रविसमः। सर्वत्राप्रतिहतगतित्वात्पवनसमः। स एवभूतो भगवानस्तीति भावः। भगवते—समग्रैश्वर्ययुक्ताय, महावीराय—महाश्चासौ वीरः—'वीर विक्रान्तौ'—अस्माद्धातोर्णिजन्तात्पचाद्यच्प्रत्यये 'वीरः'—कषायादिमहारिपुविजेता इत्यर्थः, तस्मै महावीराय=अस्यामवसर्पिण्यां चतुर्विंशतितमचरमतीर्थङ्कराय। '**आदिगरस्स**' आदिकराय, '**तित्थगरस्स**' तीर्थकराय, '**जाव संपाविउकामस्स**' यावत् सम्प्राप्तुकामाय—यावच्छब्दात्— 'सयंसंबुद्धस्स' इत्यारभ्य—

रत्नों से भरे हुए होने के कारण, एवं मर्यादा के धारक होने के कारण प्रभु समुद्रतुल्य हे। गगन की तरह निरालम्ब, वृक्षकी तरह सुख एवं दुःख में अदर्शितविकारभावयुक्त, भ्रमर की तरह अनियतवृत्तिसंपन्न, मृग की तरह इस संसाररूपी भय से अत्यंत त्रस्त, धरिणी की तरह क्षमा के भंडार वे प्रभु हैं। प्रभु कामभोग से उत्पन्न हैं तो भी विषयों से विरक्त होने के कारण पंक से उत्पन्न एवं जल से संवर्द्धित कमल की तरह बिलकुल वैषयिक भावों से निर्लिप्त है, इसलिये प्रभु कमल जैसे हे। प्रभु लोक और अलोक के समानरूप से प्रकाशक है, इसलिये रवितुल्य है। प्रभु सर्वत्र अप्रतिहत—विहारी है, इसलिये वायु जैसे है। प्रभु समग्र ऐश्वर्यसम्पन्न है, इसलिये भगवान् है। प्रभु एक महावीर हैं;

જેવા છે તપ તેમજ તેજના ધારક હોવાથી પ્રભુ અગ્નિ જેવા પ્રતાપશાલી છે. ગાંભીર્ય તેમજ જ્ઞાનાદિકરૂપ રત્નોથી ભરેલા હોવાના કારણે, તેમજ મર્યાદાના ધારક હોવાના કારણે પ્રભુ સમુદ્ર સમાન છે. આકાશની પેઠે નિરાલંબ, વૃક્ષની પેઠે સુખ તેમજ દુઃખમાં ન દેખાય જેનો વિકાર એવા, ભ્રમરની પેઠે અનિયતવૃત્તિસંપન્ન, મૃગની પેઠે આ સંસારરૂપી ભયથી અત્યંત ત્રાસી ગયેલા, ધરનીની પેઠે ક્ષમાના ભંડાર, તે પ્રભુ છે. પ્રભુ કામભોગથી ઉત્પન્ન થયેલા છે તો પણ વિષયોથી વિરક્ત હોવાના કારણે કીચડથી પેદા થયેલ તેમજ જલથી વધેલા કમળની પેઠે બિલકુલ વિષયના ભાવોથી નિર્લેપ છે, તેથી પ્રભુ કમલ જેવા છે. પ્રભુ લોક અને અલોકનો સમાનરૂપથી પ્રકાશક છે તેથી રવિ (સૂર્ય) સમાન છે. પ્રભુ સમગ્ર—ઐશ્વર્ય—સંપન્ન છે તેથી ભગવાન છે. પ્રભુ એક મહાન વીર છે, કેમકે તેમણે કષાય આદિક

'सिद्धिगइनामधेयं ठाण'इयदवधि ग्राह्यम् । अत्रैतावान् विशेष–'**ठाणं संपत्ताणं**' स्थानं संप्राप्तेभ्यः–इति प्रागुक्तम्. इह तु '**संपाविउकामस्स**' संप्राप्तुकामाय–मोक्षगामिने–इत्युच्यते, चरमस्य तीर्थकरस्य कूणिकनृपशासनकाले विद्यमानत्वात् । '**मम धम्मायरियस्स**' मम धर्माऽऽचार्याय=ज्ञानाचारादिपञ्चविधाचारधारकाय, न तु कलाचार्याय,

---

क्यों कि उन्होंने कषायादिक अन्तरंग शत्रुओं पर विजय प्राप्त की है । महावीर प्रभु इस अवसर्पिणी काल के चौवीसवे अन्तिम तीर्थकर है। "**आदिगरस्स**" इस पद–द्वारा प्रभु मे अपने शासन की अपेक्षा धर्म की आदिकर्तृता प्रकट की गयी है। भगवान महावोर चतुर्विध संघ के संस्थापक है। "**जाव**" पदसे "**सयसंबुद्धस्स**" यहां से लेकर "**सिद्धिगइनामधेयं ठाणं**" यहां तकका पाठ संगृहीत किया गया है। यहां इस पाठ मे इतनी विशेषता पहिले पाठ की अपेक्षा जान लेनी चाहिये कि पहिले पाठ में "**ठाणं संपत्ताणं–स्थानं संप्राप्तेभ्यः**" ऐसा पद रखा गया है और यहां पर "**ठाणं संपाविउकामस्स–स्थानं संप्राप्तुकामाय**" ऐसा पाठ रखा है; क्योंकि प्रभु महावीर अभी उस सिद्धिगतिनामक स्थान की प्राप्ति करनेवाले है। '**मम धम्मायरियस्स**'–कोणिक कहते है कि ये श्रमण भगवान् महावीर प्रभु, जो कि ज्ञानाचारादि पाँच प्रकार के आचारो के धारक होने के कारण मेरे धर्माचार्य है, कलाचार्य नहीं, उनके लिये नमस्कार है। इससे यह सूचित होता है कि जो ज्ञानाचारादि पॉच प्रकार के आचारों के धारक है वे ही धर्माचार्य कहे जाते है।

---

અંતરંગ શત્રુઓ પર વિજય પ્રાપ્ત કર્યો છે. મહાવીર પ્રભુ આ અવસર્પિણી કાલના ચોવીસમા અંતિમ તીર્થંકર છે. "आदिगरस्स" એ પદથી પ્રભુમાં પોતાના શાસનની અપેક્ષાએ ધર્મના આદિકર્તાપણુ પ્રગટ કર્યું છે. ભગવાન મહાવીર ચતુર્વિધ સઘના સંસ્થાપક છે. 'जाव' પદથી "सयंसंबुद्धस्स" અહીંથી લઈને "सिद्धिगइनामधेयं ठाणं" અહીં સુધીનો પાઠ લેવામાં આવ્યો છે. અહીં આ પાઠમા એટલી વિશેષતા પ્હેલા પાઠની અપેક્ષાએ જાણવી જોઈએ કે પહેલા પાઠમાં "ठाणं सपत्ताणं"–स्थानं संप्राप्तेभ्यः" એવું પદ વપરાયું છે અને અહીં "ठाणं संपाविउकामस्स–स्थानं संप्राप्तुकामाय" એવો પાઠ લીધો છે, કેમકે પ્રભુ મહાવીર હજુ તે સિદ્ધિગતિનામક સ્થાનને પ્રાપ્ત કરવાવાળા છે. "मम धम्मायरियस्स" કોણિક કહે છે કે તે શ્રમણ ભગવાન્ કે જે જ્ઞાનાચારાદિ પાંચપ્રકારના આચારોના ધારક હોવાના કારણે મારા ધર્માચાર્ય છે, કલાચાર્ય નથી, એવા પ્રભુ ને નમસ્કાર હો આથી એમ સૂચિત થાય છે કે જે જ્ઞાનાચારાદિ પાચપ્રકારના આચારોના ધારક હોય

रियस्स धम्मोवदेसगस्स, वंदामि णं भगवंतं तत्थ गयं इहगए, पासउ मे भगवं तत्थगए इहगयंति–कट्टु वंदइ णमंसइ, वंदित्ता

धर्माचार्यत्वमेव प्रकटीकरोति–'धम्मोवदेसगस्स' धर्मोपदेशकाय, श्रुतचारित्रलक्षणस्य-धर्मप्ररूपकाय, 'वंदामि णं भगवंतं तत्थगयं इहगए' वन्दे खलु भगवन्तं तत्रगतमिहगतः-इह गतः-चम्पानगरीस्थितोऽहम् कोणिक ,तत्रगत=चम्पा-नगरीसमीप–ग्रामे स्थितं भगवन्तं महावीरं, वन्दे–पूर्वोक्तस्तुत्या स्तुतिविषयं करोमि । 'पासउ मे भगवं तत्थगए इहगयं तिकट्टु' पश्यतु मा भगवान् तत्रगत इहगतमिति कृत्वा–सर्वज्ञत्वात् तत्रगतो=दूरस्थितो भगवान् इहगतं=व्यवधानेन स्थित मां पश्यतु–इति कृत्वा=उक्त्वा–'वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता' वन्दते–स्तौति, नमस्यति=पञ्चाङ्गनमनपूर्वकं प्रणमति, वन्दित्वा नमस्यित्वा

'धम्मोवदेसगस्स' भगवान वीर श्रुतचारित्ररूप धर्मका उपदेश करते हैं. इसलिये वे धर्मोपदेशक है, अत ऐसे वीरप्रभु के लिये नमस्कार हो। कोणिक राजा इस प्रकार कहकर प्रभुवीर को परोक्ष वंदन करते है कि–(तत्थगयं इहगएत्ति कट्टु वंदइ णमंसइ) वे वीरप्रभु कि जिन्हे मे इस समय नमस्कार कर रहा हूं; यद्यपि मेरे प्रत्यक्ष नहीं है तथापि वे इस चंपानगरी के पास के ग्राम में विराजमान हैं और मैं यहां पर हू, अत यहां चंपानगरी में रहा हुआ मै उपनगरग्राम में विराजमान वीर प्रभु को नमस्कार करता हूं। "पासउ मे भगवं तत्थगए इहगयं" वे प्रभु वहा पर विराजमान होते हुए व्यवधान से स्थित मुझे अपने ज्ञानरूपी नेत्र द्वारा देखे। इस प्रकार कहकर कोणिक राजाने प्रभु को वंदन किया एवं नमस्कार किया–पंचागनमनपूर्वक नमस्कार किया। (वंदित्ता नमंसित्ता सीहासणवरगए पुरत्थाभिमुहे

છે તેમને જ ધર્માચાર્ય કહેવામા આવે છે "धम्मोवदेसगस्स" ભગવાન મહાવીર શ્રુતચારિત્રરૂપ ધર્મના ઉપદેશક છે તેથી તેઓ ધર્મોપદેશક છે, માટે એવા મહાવીર પ્રભુને નમસ્કાર હો. કોણિકરાજા આ પ્રકારે કહીને પ્રભુ વીરને પરોક્ષ વંદન કરે છે કે (तत्थगय इहगएत्ति कट्टु वंदइ णमंसइ) તે વીર પ્રભુ કે જેમને હુ આ સમયે નમસ્કાર કરી રહ્યો છુ તે જો કે મને પ્રત્યક્ષ નથી તો પણ તેઓ આ ચંપાનગરીની પાસેના ગામમાં છે અને હું અહીં છું; આથી હું અહીં ચંપાનગરીમા રહીને ઉપનગર ગામમા વિરાજમાન વીર પ્રભુને નમસ્કાર કરૂ છુ [पासउ मे भगवं तत्थगए इहगयं] પ્રભુ ત્યા વિરાજમાન હોવા છતા દૂર રહેલા એવો મને પોતાના જ્ઞાનરૂપી નેત્રદ્વારા જુઓ. આ પ્રકારે કહીને કોણિક રાજાએ પ્રભુને વંદન કર્યા,

**णमंसित्ता सीहासणवरगए पुरत्थाभिमुहे निसीयइ, निसीइत्ता तस्स पवित्तिवाउयस्स अट्ठुत्तरं सयसहस्सं पीइदाणं दलयइ, दलइत्ता सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारित्ता संमाणित्ता एवं वयासी ॥ सू० २० ॥**

'**सीहासणवरगए**' सिंहासनवरगतः, '**पुरत्थाभिमुहे**' पौरस्त्याभिमुखः,-पूर्वाभिमुखः सन् '**निसीयइ**' निषीदति-उपविशति, '**निसीइत्ता**' निषद्य-उपविश्य '**तस्स पवित्तिवाउयस्स**' तस्मै प्रवृत्तिव्यापृताय-भगवदागमननिवेदकाय, '**अट्ठुत्तरं सयसहस्सं पीइदाणं दलयइ**' अष्टोत्तर शतसहस्रं प्रीतिदानं ददाति-अष्टाधिकं लक्षमितं राजतमुद्रारूपं प्रीतिदानं=तुष्टिदानं पारितोषिकं ददाति । '**दलइत्ता सक्कारेइ संमाणेइ**' दत्वा सत्करोति-वस्त्रादिना, सम्मानयति आसनादिना, दानं विधिसहितमेव भव्यस्य भवति-इति भावः । '**सक्कारित्ता सम्माणित्ता एवं वयासी**' सत्कृत्य=सन्तोष्य, सम्मान्य=सम्मानं विधाय, एवं=वक्ष्यमाणप्रकारेण अवादीत् ॥ सू० २० ॥

**निसीयइ**) वंदन नमन करके वह कोणिक राजा अपने सिंहासन पर पीछे जाकर पूर्व की तरफ मुख करके बैठ गये। (**निसीइत्ता तस्स पवित्तिवाउयस्स अट्ठुत्तरं सयसहस्सं पीइदाणं दलयइ**) बैठकर फिर उन्होंने उस संदेशवाहक को प्रीतिदान में-पारितोपिकरूपसे १ लाख ८ चांदी की मुद्राएँ दीं। (**दलइत्ता सक्कारेइ सम्माणेइ**) देकर उसका खूब सत्कार किया और समान किया, (**सक्कारित्ता संमाणित्ता एवं वयासी**) आदर सत्कार कर चुकने पर फिर राजाने उससे इस प्रकार कहा-॥सू०२०॥

તેમજ નમસ્કાર કર્યા-પંચાંગ-નમન-પૂર્વક નમસ્કાર કર્યા. (वंदित्ता नमंसित्ता सीहासणवरगए पुरत्थाभिमुहे निसीयइ) વંદન નમસ્કાર કરીને તે કોણિકરાજા પોતાના સિંહાસન પર પાછા જઈને પૂર્વ તરફ મુખ કરીને બેસી ગયા. (निसीइत्ता तस्स पवित्तिवाउयस्स अट्ठुत्तरं सयसहस्सं पीइदाणं दलयइ) બેસીને પછી તેમણે તે સંદેશવાહકને પ્રીતિદાનમાં પારિતોષિક (ઈનામ) રૂપે ૧ લાખ ૮ મુદ્રાઓ આપી. (दलइत्ता सक्कारेइ संमाणेइ) દઈને તેનો ખૂબ સત્કાર કર્યો અને સન્માન કર્યું (सक्कारित्ता संमाणित्ता एवं वयासी) આદર સત્કાર કરી ચુકયા પછી રાજાએ તેને આ પ્રકારે કહ્યું-(સૂ. ૨૦)

मूलम्—जया णं देवाणुप्पिया ! समणे भगवं महावीरे इहमागच्छेज्जा, इह समोसरिज्जा, इहेव चंपाए णयरीए बहिया पुण्णभद्दे चेइए अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हित्ताणं अरहा जिणे केवली समणगणपरिवुडे संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरेज्जा, तया णं तुमं मम एयमट्ठं निवेदिज्जासि-त्ति कट्टु विसज्जिए ॥ सू० २१ ॥

टीका—राजा कूणिको भगवद्वार्तानिवेदकं पुरुषमादिशति 'जया णं' इत्यादि। यदा खलु देवानुप्रिय ! श्रमणो भगवान् महावीरः इहाऽऽगच्छेत्, इह समवसरेत्, इहैव चम्पायां नगर्या बाह्ये पूर्णभद्रे चैत्ये यथाप्रतिरूपमवग्रहमवगृह्य अरहा जिनः केवली श्रमणगणपरिवृतः संयमेन तपसाऽऽत्मानं भावयन् विहरेत्, तदा खलु मह्यमेतमर्थं निवेदयेरितिकृत्वा विसर्जित' ॥ सू० २१ ॥

'जया णं इत्यादि—

( देवाणुप्पिया ) हे देवानुप्रिय ! ( जया णं ) जिस समय ( समणे भगवं महावीरे ) श्रमण भगवान् महावीर प्रभु ( इहमागच्छेज्जा ) यहां पर विहार करते हुए पधारे, ( इह समोसरिज्जा ) यहाँ समवसृत हों, और ( इहेव चंपाए णयरीए वहिया पुण्णभद्दे चेइए अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हित्ताणं अरहा जिणे केवली समणगणपरिवुडे संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरेज्जा ) इस चंपानगरी के बाहर पूर्णभद्र नामक उद्यान में यथाप्रतिरूप—साधु को कल्पने योग्य—अवग्रह—वसति की आज्ञा वनमाली से ग्रहण कर वे श्रमणगण से परिवृत अरहा जिन

'जया णं' ઇત્યાદિ—

( देवाणुप्पिया ) ! હે દેવાનુપ્રિય ! ( जया णं ) જે સમયે ( समणे भगवं महावीरे ) શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીર પ્રભુ ( इहमागच्छेज्जा ) વિહાર કરતા કરતા અહીં પધારે, ( इह समोसरिज्जा ) અહીં સમવસૃત થાય, અને ( इहेव चंपाए णयरीए वहिया पुण्णभद्दे चेइए अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हित्ताणं अरहा जिणे केवली समणगणपरिवुडे सजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरेज्जा ) આ ચંપાનગરીની બહાર પૂર્ણભદ્ર નામના ઉદ્યાનમાં યથાપ્રતિરૂપ—સાધુને કલ્પવા યોગ્ય અવગ્રહ—વસ્તીની આજ્ઞા ગ્રહણ કરીને તેઓ શ્રમણગણથી વીંટળાએલા અરહા જિન કેવલી ભગવાન્ મહાવીર સ્વામી સત્તર પ્રકારના સંયમ વડે

मूलम्—तए णं समणे भगवं महावीरे कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए फुल्लुप्पल-कमल-कोमलु-म्मीलियम्मि अहपंडुरे पहाए रत्तासोग-प्पगास-किंसुय-सुयमुह-गुंजद्धराग-सरिसे कम-

टीका—'तए णं' इत्यादि। ततस्तदनन्तरं खलु श्रमणो भगवान् महावीर: 'कल्लं' कल्ये-द्वितीयदिवसे 'पाउप्पभायाए रयणीए' प्रादुष्प्रभातायां प्रकटीभूत-प्रभातायां रजन्यां 'फुल्लुप्पल-कमल-कोमलु-म्मीलियम्मि' फुल्लो-त्पल-कमल-कोमलोन्मीलिते-फुल्लं-विकसितं च तत्—उत्पलं—पद्मं, कमलश्च=चित्रमृग:—हरिणविशेष:, तयो: कोमल-मृदुकम्, उन्मीलितं-पत्राणां नयनयोश्चोन्मीलनं यस्मिन् तत्तथा तस्मिन्, इदं प्रभातविशेषणम्। 'अह' अथ-अनन्तरं-रजनीपर्यवसानाऽनन्तरम्-'पंडुरे' पाण्डुरे-शुक्ले 'पभाए' प्रभाते-प्रात:काले, अथ सूर्यविशेषणान्याह-'रत्तासोग' इत्यादि। 'रत्तासोग-प्पगास-किंसुय-सुयमुह-गुंज-द्धराग-सरिसे' रक्ताऽशोक-प्रकाश-किंशुक-शुकमुख-गुञ्जाऽर्द्धराग-सदृशे, रक्ताऽ

केवली भगवान् महावीर स्वामी सत्रह प्रकार के संयम से और बारह प्रकार के तप से अपनी आत्मा को भावते हुए जब विचरे, (तया णं) तब तुम निश्चय से (मम एयमट्ठं निवेदिज्जासि) मुझे यह समाचार निवेदित करना, (त्तिकट्टु विसज्जिए) ऐसा कहकर उसे विसर्जित कर दिया ॥सू०२१॥

'तए णं' इत्यादि—

(तए णं) तदनन्तर (समणे भगवं महावीरे) श्रमण भगवान् महावीर (कल्लं) दूसरे दिन (पाउप्पभायाए रयणीए) जिसमें प्रभात प्रकट हो चुका है ऐसी रजनी के होने पर (फुल्लु-प्पल-कमल-कोमलुम्मीलियंमि अहपंडुरे पहाए) तथा विकसित कमलपत्रों एवं चित्रमृग के नयनो का उन्मीलन जिसमें हो चुका है ऐसे शुभ्र आभायुक्त प्रात:काल के होने पर, तथा (रत्तासोग-प्पगास-किंसुय-

અને બાર પ્રકારના તપ વડે પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા જ્યારે વિચરે (तया णं) ત્યારે તમે જરૂર (मम एयमट्ठं निवेदिज्जासि) મને એ સમાચાર નિવેદન કરજો. (त्तिकट्टु विसज्जिए) એમ કહીને તેને વિદાય કર્યો. [સૂ. ૨૧].

'तए णं' ઇત્યાદિ.

(तए णं) ત્યાર પછી (समणे भगवं महावीरे) શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીર (कल्लं) બીજે દિવસે (पाउप्पभायाए रयणीए) તે રાત્રિનુ જ્યારે પ્રભાત પ્રકટ થયું, (फुल्लु-प्पल-कमल-कोमलु-म्मीलियंमि अहपंडुरे पहाए) તથા વિકસેલાં કમલપત્રો તેમજ ચિત્રમૃગનાં નયન જ્યારે ઉઘડી ચુકયા હોય એવી શુભ આભાવાળો પ્રાતઃકાળ થયો, તથા (रत्तासोग-प्पगास-किंसुय-सुयमुह-

**लागर-संड-बोहए उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते, जेणेव चंपा णयरी, जेणेव पुण्णभद्दे चेइए, जेणेव वणसंडे,**

शोकः=प्रसिद्धवृक्षः—तस्य प्रकाशः=प्रभा, स रक्ताऽशोकप्रकाशः, सच किंशुकं=पलाशपुष्पं, शुकमुखं च, गुञ्जा=रक्तकृष्ण फलविशेषः—तदर्द्धं च रक्तार्द्धभागः, एतेषां यो रागः—रक्तवर्णः तेन सदृशः—समानः तस्मिन्=तत्तुल्यलालिमयुक्ते, 'कमलागर-संड-बोहए' कमलाऽऽकर-षण्ड-बोधके-कमलानामाकराः=कमलोत्पत्तिस्थानानि-तडागादयः, तेषु-कमलाकरेषु यानि षण्डानि=कमलवनानि, तेषां बोधकः=विकाशकः तस्मिन्-कमल-वनविकाशकारिणीत्यर्थः, **'उट्ठियम्मि'** उत्थिते—उदिते **'सूरे'** सूर्ये, पुनः कीदृशे' **'सहस्सरस्सिमि दिणयरे तेयसा जलंते'** सहस्ररश्मौ दिनकरे तेजसा ज्वलति—सहस्रं—सहस्रपरिमिताः रश्मयः=किरणा यस्य स तस्मिन् तादृशे दिनकरे—दिवसकारके, तेजसा—किरणपुञ्जेन, ज्वलति—जाज्वल्यमाने सति, **'जेणेव चंपा णयरी'** यत्रैव चम्पा नगरी वर्तते इति शेषः । **'जेणेव पुण्णभद्दे चेइए'** यत्रैव पूर्णभद्रं चैत्यमुद्यानमस्ति । **'जेणेव वणसंडे'** यत्रैव वनषण्डः, **'जेणेव असोगवरपायवे'** यत्रैवाशोकवरपादपः, **'जेणेव पुढविसिलापट्टए'** यत्रैव पृथ्वी-

**सुयमुह-गुंजद्धराग-सरिसे कमलागर-संड-बोहए**) रक्त-अशोक के प्रकाशतुल्य, पलाशपुष्प के समान, शुक के मुख के समान और गुंजा के आधे भाग की ललाई के समान, कमलवनो को विकसित करनेवाला प्रभात होने पर (**उट्ठियंमि सूरे**) आकाश में सूर्य का उदय होने पर, और पश्चात् (**सहस्सरस्सिमि दिणयरे तेयसा जलंते**) सहस्रकिरणवाला दिनकर जब अपने तेजसे आकाश में चमकने लगा तब (**जेणेव चंपाणयरी जेणेव पुण्णभद्दे चेइए जेणेव वणसंडे जेणेव असोगवर-पायवे जेणेव पुढवीसिलापट्टए तेणेव उवागच्छइ**) जहाँ वह चंपानगरी थी, जहाँ वह पूर्णभद्र उद्यान था, जहाँ वह अशोक वरवृक्ष था, जहाँ पृथिवीशिलापट्टक था, वहां

गुंजद्धराग-सरिसे) રક્ત અશોકના પ્રકાશ સમાન,કિંશુક-કેસુડાના પુષ્પ સમાન, શુકમુખ-પોપટના મુખ સમાન, અને ગુંજાના અર્ધભાગની લાલાશ સમાન (कमलागरसंडवोहए) કમલનાં વનોને ખીલવવાવાળું પ્રભાત થતાં (उट्ठियम्मि सूरे) આકાશમાં સૂર્યનો ઉદય થતાં અને પછી (सहस्सरस्सिमि दिणयरे तेयसा जलंते) સહસ્રકિરણવાળો સૂર્ય જ્યારે પોતાના તેજવડે આકાશમા ચમકવા લાગ્યો ત્યારે, (जेणेव चंपाणयरी जेणेव पुण्णभद्दे चेइए जेणेव वणसंडे जेणेव असोगवरपायवे जेणेव पुढवीसिलापट्टए तेणेव उवागच्छइ) જ્યાં તે ચંપાનગરી હતી, જ્યાં તે પૂર્ણભદ્ર ઉદ્યાન હતું, જ્યાં તે અશોક વરવૃક્ષ હતુ અને જ્યાં

जेणेव असोगवरपायवे जेणेव, पुढवीसिलापट्टए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हित्ताणं असोगवरपायवस्स अहे पुढविसिलापट्टगंसि पुरत्थाभिमुहे पलियंकनिसन्ने अरहा जिणे केवली समणगणपरिवुडे संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥ सू० २२ ॥

शिलापट्टकोऽस्ति, 'तेणेव उवागच्छइ' तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य, 'अहापडिरूवं' यथाप्रतिरूपम्-यथासाधुकल्प, 'ओग्गहं' अवग्रहम्-आज्ञाम्, 'ओगिण्हित्ता णं' अवगृह्य-गृहीत्वा खलु 'असोगवरपायवस्स अहे' अशोकवरपादपस्य अधः=अधःप्रदेशे, 'पुढविसिलापट्टगंसि' पृथ्वीशिलापट्टके-पृथ्वीशिलापट्टकोपरि, 'पुरत्थाभिमुहे' पौरस्त्याऽभिमुखः-पूर्वाऽभिमुखः, 'पलियंकनिसन्ने' पल्यङ्कनिषण्णः-पल्यङ्केन-पलथीतिख्यातेन आसनविशेषेण निषण्णः-उपविष्टः, 'अरहा' अरहाः-अविद्यमानं-रह =एकान्तम् यस्य सोऽरहाः-केवलज्ञानबलेन सर्वज्ञः, 'जिणे' जिनः-रागद्वेषविजेता, 'केवली' प्राप्तकेवलज्ञानः, 'समणगणपरिवुडे' श्रमणगणपरिवृत -साधुपरिवारसंयुक्त 'संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे' संयमेन तपसा आत्मानं भावयन् 'विहरइ' विहरति स्म ॥ सू० २२ ॥

पधारे। (उवागच्छित्ता अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हित्ताणं असोगवरपायवस्स अहे पुढवीसिलापट्टगंसि पुरत्थाभिमुहे पलियंकनिसन्ने अरहा जिणे केवली समणगणपरिवुडे संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ) पधारने के बाद वे प्रभु साधुसमाचारी के अनुसार वनमाली की आज्ञा लेकर अशोकवृक्ष के नीचे पृथवीशिलापट्टक पर पूर्वकी ओर मुख कर पर्यङ्क आसन से (पलथी मारकर) विराजमान हुए। तथा श्रमणगणों से परिवृत वे अरहा केवली जिन महावीर प्रभु तप एवं संयम से अपनी आत्मा को भावित करते हुए विचरने लगे ॥ सू०२२ ॥

પૃથિવીશિલા-પટ્ટક હતો, ત્યાં પધાર્યા. (उवागच्छित्ता अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हित्ताणं असोगवरपायवस्स अहे पुढवीसिलापट्टगंसि पुरत्थाभिमुहे पलियंकनिसन्ने अरहा जिणे केवली समणगणपरिवुडे संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ) પધાર્યા પછી તે સાધુ-સમાચારી પ્રમાણે વનમાલીની આજ્ઞા લઈને અશોકવૃક્ષની નીચે પૃથિવીશિલાપટ્ટક ઉપર પૂર્વદિશા તરફ મુખ રાખીને પર્યંક આસનથી (પલોંઠી વાળીને) વિરાજમાન થયા. તથા શ્રમણ-ગણોથી વીંટળાઈને અરહા કેવલી જિન મહાવીર પ્રભુ, તપ તેમજ સંયમથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા વિચરવા લાગ્યા. સૂ. ૨૨.

**मूलम्—तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतेवासी बहवे समणा भगवंतो, अप्पेगइया उग्ग-**

**टीका**—चम्पायां नगर्या पूर्णभद्रोद्याने यदा भगवतः श्रीमहावीरस्य समवसरण-मभूत् तदा तेन सार्धं समागतानां श्रमणानां वर्णनं कुर्वन्नाह—**'तेणं कालेणं'** इत्यादि। तस्मिन् खलु काले तस्मिन् खलु समये च श्रमणस्य भगवतो महावीरस्य=श्रीमहावीर-स्वामिनः अन्तेवासिनः—अन्ते=समीपे चारित्रक्रियाद्यर्थं वस्तु शीलं=स्वभावो येषां तेऽन्ते-वासिनः—शिष्याः, **'बहवे'**—बहवः—बहुसंख्यकाः, **'समणा'** श्रमणाः—साधवः **'भग-वंतो'**—भगवन्तः—वैराग्येण श्रुतचारित्रलक्षणधर्मेण च युक्तत्वात् श्रमणा अपि भगवन्त इत्युच्यन्ते। **'अप्पेगइया'** अप्येके—अपिः—समुच्चये, एके=केचिदित्यर्थः। **'उग्गपव्वइया'** उग्रप्रव्रजिताः—उग्राः=आदिनाथेन ये नगररक्षकत्वेन—आरक्षकत्वेन नियुक्तास्तद्वंशजाः प्रव्र-जिताः=दीक्षिताः, उग्र इति क्षत्रियजातिभेदः, तद्वन्त उग्रा उच्यन्ते, ते प्रव्रजिता इत्यर्थः।

**'तेणं कालेणं'** इत्यादि

**'तेणं कालेणं तेणं समएणं'** उसी काल और उसी समयमें (**समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतेवासी बहवे समणा भगवंतो**) श्रमण भगवान् महावीर के बहुत से श्रमण भगवंत अन्तेवासी=समीप में रह कर चारित्रक्रिया आदिके आराधन करने वाले शिष्य थे। शिष्यों का विशेषण जो **"समणा भगवंतो"** है, उसका अभिप्राय यह है कि वे सब श्रमण—साधु थे, और वैराग्य से, एवं श्रुतचारित्ररूप धर्म से युक्त थे। इनमें (**अप्पेगइया**) कितनेक (**उग्गपव्वइया**) उग्रवंश के—आदिनाथ प्रभुने पहिले जिन्हे नगरो की रक्षा के लिये नियुक्त किया था उन पुरुषों के वंशके थे। कितनेक

"तेणं कालेणं" ઇત્યાદિ.

(तेणं कालेणं तेणं समएणं) તેજ કાલ અને તેજ સમયમાં (समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतेवासी बहवे समणा भगवंतो) શ્રમણ ભગવાન મહા-વીરના ઘણાય શ્રમણ ભગવંત અંતેવાસી=સમીપમાં રહીને ચારિત્રક્રિયા આદિના આરાધના કરવાવાળા શિષ્યો હતા. શિષ્યોનું વિશેષણ જે समणा भगवंतो છે, તેનો અભિપ્રાય એ છે કે તેઓ બધા શ્રમણ=સાધુ હતા અને વૈરાગ્ય તેમજ શ્રુતચારિત્રરૂપ ધર્મથી યુકત હતા. તેઓમાં (अप्पेगइया) કેટલાએક (उग्गपव्वइया) ઉગ્ર વંશના—આદિનાથ પ્રભુએ પહેલાં જેઓને નગરોની રક્ષા માટે નિયુકત કર્યા હતા તે પુરૂષોના વંશના—હતા.

**पव्वइया, भोगपव्वइया, राइण्ण-णाय-कोरव्व-खत्तिय-पव्व-इया, भडा जोहा सेणावई पसत्थारो सेट्ठी इब्भा, अण्णे य बहवे**

'**भोगपव्वइया**' भोगप्रव्रजिता—ऋषभदेवेन ये पूर्वं गुरुत्वेन स्थापितास्तद्वंशजा भोगा इत्युच्यन्ते, भोगाश्च ते प्रव्रजिता:=दीक्षिताः भोगप्रव्रजिता:, भोगकुलोत्पन्ना दीक्षिता इत्यर्थः । '**राइण्ण-णाय-कोरव्व-खत्तिय-पव्वइया**' राजन्य-ज्ञात-कौरव-क्षत्रिय प्रव्रजिता:—ये तेनैव मित्रत्वेन व्यवस्थापितास्तद्वंशजाश्च राजन्या उच्यन्ते, ज्ञाता इक्ष्वाकुवंशविशेषे जाताः, कौरवा:—कुरुवंशोत्पन्नाः, '**खत्तिय**' क्षत्रियाः—क्षतात् त्रायन्ते इति क्षत्रियाः, ते राजन्यादयः प्रव्रजिता:, '**भडा**'—भटाः—चारभटा:—पदातय:, '**जोहा**'=योधाः—भटेभ्यो विशिष्टतरा: सहस्रपरिमितैरपि रिपुसैनिकैरेकाकिनोऽपि योद्धुं समर्था: । '**सेणावई**' सेनापतयः—सैन्यनायका, '**पसत्थारो**' प्रशास्तार—शासका नीतिशास्त्रधुरीणा:, '**सेट्ठी**' श्रेष्ठिन:—लक्ष्मीदेवताऽध्यासितसौवर्णपट्टमण्डितमस्तका:, '**इब्भा**' इभ्या—इभो—हस्ती तत्प्रमाणपरिमितसुवर्णादिराशिस्वामिनः । एते सर्वे प्रव्रजिता अन्तेवासिनो जाता । ये—च—

(**भोगपव्वइया**) जिन्हे आदिनाथ प्रभुने गुरुरूप से स्थापित किया था उन भोगों के वंश के थे । कितनेक (**राइण्ण-णाय-कोरव्व-खत्तिय-पव्वइया**) प्रभुने जिन्हे अपने मित्ररूप से स्थापित किया था उन राजन्यो के वंश के थे, कितनेक ज्ञात=इक्ष्वाकुवंश के थे, कितनेक कौरव=कुरुवंश के थे, कितनेक क्षत्रियवंश के थे। ऐसे ही (**भडा जोहा सेणावई पसत्थारो सेट्ठी इब्भा**) भट=सामान्यवीर, योधा=अकेले ही हजारों शत्रुसैनिकों से युद्ध करने में समर्थ वीर, तथा—सेनापति, प्रशास्ता=न्यायाधीश, सेठ=सर्वापेक्षा अधिक धनी होने का सूचक राजप्रदत्त पट्टबन्ध को धारण करने वाले नगरसेठ, और इभ्य=हाथी प्रमाण सुवर्णादि राशिके स्वामी भी भगवान् के समीप प्रव्रजित हुए थे।

કેટલાએક (भोगपव्वइया) જેમને આદિનાથ પ્રભુએ ગુરુરૂપે સ્થાપિત કર્યા હતા તે ભોગ-વંશના હતા. કેટલાએક (राइण्ण-णाय-कोरव्व खत्तिय-पव्वइया) પ્રભુએ જેમને પોતાના મિત્રરૂપે સ્થાપિત કર્યા હતા તે રાજન્ય-વંશના હતા. કેટલાએક જ્ઞાત= ઇક્ષ્વાકુવંશના હતા. કેટલાક કૌરવ=કુરૂવંશના હતા, કેટલાક ક્ષત્રિયવંશના હતા. તેમજ (भडा जोहा सेणावई पसत्थारो सेट्ठी इब्भा) ભટ=સામાન્યવીર, યોદ્ધા-એકલાજ હજારો શત્રુ સૈનિક સાથે યુદ્ધકરવામાં સમર્થવીર, તથા સેનાપતિ, પ્રશાસ્તા=ધારાશાસ્ત્રમાં નિપુણ, સેઠ=સર્વની અપેક્ષાએ વધારે પૈસાદાર હોવાનું સૂચક રાજ્યતરફથી અપાએલ પટ્ટબંધ (ઇલકાબ) ધારણ કરવાવાળા નગરશેઠ, અને ઇભ્ય=હાથી જેવડા સુવર્ણના ઢગલાના સ્વામી પણ ભગવાન પાસે પ્રવ્રજિત થયા હતા. (अण्णे य वहवो एवमाइणो) ભગવાનની પાસે બીજા

**एवमाइणो उत्तम-जाइ-कुल-रूव-विणय विण्णाण-वण्ण-लावण्ण-विक्कम-पहाण-सोभग्ग-कंति-जुत्ता बहु-धण-धण्ण-**

पुनः 'अण्णे' अन्ये-उक्तातिरिक्ताः, 'बहवे' बहवः-बहुसंख्यकाः । '**एवमाइणो**' एवमादयः-एवम्प्रकाराः, '**उत्तम-जाइ-कुल-रूव-विणय-विण्णाण-वण्ण-विक्कम-पहाण-सोभग्ग-कंति-जुत्ता**' उत्तम-जाति-कुल-रूप-विनय-विज्ञान-वर्ण-लावण्य-विक्रम-प्रधान-सौभाग्य-कान्ति-युक्ताः-उत्तमाः-श्रेष्ठा जात्यादयो विक्रमान्ताः, तत्र-जातिर्मातृवंशः, **कुलं**-पितृवंशः, **रूपं**-शरीराऽऽकारः, **विनयः**-कायिक-वाचिक-मानसिक-विशुद्धिर्नम्रता च, **विज्ञानं**-संसाराऽसारतारूप विशिष्टज्ञानं, **वर्ण**-कायकान्तिः, **लावण्यम्**-आकारस्यैव स्पृहणीयता, **विक्रमः** पराक्रमः, **प्रधाने**-श्रेष्ठे ये **सौभाग्यकान्ती**-सौभाग्यं-सुन्दरभाग्यम्, कान्तिः-दीप्तिः-एताभ्याम् सौभाग्यकान्तिभ्याम्, तथा उत्तमजात्यादिभिर्युक्ताः उत्तमजात्यादिमन्तः प्रव्रजिताः, तथा '**बहु-धण-धण्ण-णिचय-परियाल-फिडिया**' बहु-धन-धान्य-निचय-परिवार-

(**अण्णे य बहवो एवमाइणो**) भगवान के समीप और भी बहुत से प्रव्रजित हुए थे, वे सब (**उत्तम-जाइ-कुल-रूव-विणय-विण्णाण-वण्ण-लावण्ण-विक्कम-पहाण-सोभग्ग-कंति-जुत्ता**) उत्तमजाति=निर्मलमातृवंश, उत्तमकुल=निर्मलपितृवंश, उत्तमरूप=सुन्दर आकार, विनय=कायिक वाचिक मानसिक विशुद्धि, अथवा नम्रता, विज्ञान=संसार को असार समझने की बुद्धि, वर्ण=शरीरकान्ति, लावण्य=शरीर का जगमगाहट, विक्रम=शारीरिक बल, श्रेष्ठ सौभाग्य और उत्तम दीप्ति से युक्त थे। (**बहु-धण-धण्ण-णिचय-परियाल-फिडिया णरवइ-गुणा-इरेगा इच्छियभोगा सुहसंपललिया**) कितनेक इस शिष्यमंडली में ऐसे भी थे जो दीक्षित होने के पहिले गणिम एवं धरिमरूप धन की एवं शाली आदि धान्य की राशियों से, और

પણ ઘણાય પ્રવ્રજિત થયા હતા. તેઓ બધા (उत्तम-जाइ-कुल-रूव-विणय-विण्णाण वण्ण लावण्ण-विक्कम-पहाण-सोभग्ग-कंति-जुत्ता) ઉત્તમજાતિ=નિર્મળ માતૃવંશ, ઉત્તમકુળ=નિર્મળ પિતૃવંશ, ઉત્તમરૂપ=સુંદરઆકાર, વિનય=કાયિક વાચિક માનસિક વિશુદ્ધિ, નમ્રતા, વિજ્ઞાન-સંસારને અસાર સમજવાનીબુદ્ધિ, વર્ણ=શરીરની કાંતિ, લાવણ્ય=શરીરનો ઝગમગાટ, વિક્રમ=શારીરિકબલ, શ્રેષ્ઠ સૌભાગ્ય તથા ઉત્તમ દીપ્તિવાળા હતા. (बहुधण धण्ण-णिचय-परियाल-फिडिया णरवइ-गुणा-इरेगा इच्छियभोगा सुहसंपललिया) કેટલાએક આ શિષ્યમંડલીમાં એવા પણ હતા કે જે દીક્ષિત થયા પહેલાં ગણિમ તેમજ ધરિમરૂપ ધનના, તેમજ શાલી આદિ ધાન્યના ઢગલાથી અને દાસદાસીઓ આદિ પરિવાર સમુદાયથી રાજશ્રી

**णिचय-परियाल-फिडिया णरवइ-गुणा-इरेगा इच्छियभोगा सुहसंपललिया किंपागफलोवमं च मुणिय विसयसोक्खं, जल-**

स्फुटिताः, तत्र-धनानि-गणिम-धरिमादीनि, धान्यानि-शाल्यादीनि तेषां निचया राशयः, बहवश्चामी धनधान्यनिचयाश्च, परिवाराः-दासीदासादिपरिकराः, तैः स्फुटिताः=प्रकाशिताः, **'नरवइ-गुणाइरेगा'** नरपति-गुणा-तिरेकाः, नरपतिगुणैर्विभवविलासादिभिरतिरेक आधिक्यं येषां ते तथा, **'इच्छियभोगा'** ईप्सितभोगाः-ईप्सिताः-वाञ्छिता भोगा-भुज्यन्त इति भोगाः=शब्दरूपादयो विषया येषां ते तथा, परमविलासिनः, **'सुहसंपललिया'** सुखसम्प्रलालिताः-सुखेन-अनुकूलवेदनीयेन-शुभपरिणामोपार्जितानुकूलशब्दादिजनकपुण्यपुञ्जेन सम्प्रलालिताः-सम्यक् वर्धिताः, एवंविधाः पूर्वं सुखिनोऽपि प्रव्रजिताः, किं कृत्वा प्रव्रजिता इत्याह-**'किंपागफलोवमं च'** इत्यादि। **किम्पाक-फलोपमं**=किंपाको वृक्षविशेषस्तत्फलतुल्यम्, किम्पाकफलं दर्शने आस्वादे च मनोरमं परिणामे प्राणहारकं भवति तद्वदित्यर्थः। **'विसयसोक्खं'** विषयसौख्यम्-विषयाणां-शब्दस्पर्शादीनां सौख्यं सुखं **'मुणिय'**-ज्ञात्वा, च-पुनः **'जल-बुब्बुय-समाणं'** जल-बुद्बुद-समा-

दासीदास आदि परिवार समुदाय से राजसी ठाठ वाले थे, जो वाञ्छित शब्द-रूपादिक विषयों में तल्लीन थे, परम विलासी थे, एवं पुण्य के पुंज से ही जिनका मानो लालन-पालन होता रहता था। (**किंपाक-फलो-वमं च मुणिय विसय-सोक्खं जलबुब्बुय-समाणं कुसग्ग-जल-बिंदु-चचलं जीवियं य णाऊण**) इन्होंने क्या समझकर के दीक्षा धारण की? इस प्रश्न का समाधान करते हुए सूत्रकार कहते हैं-उन्होंने यह समझा कि ये वैषयिक सुख किंपाकफलके समान परिणाम में अनिष्टकारक है, और यह मानवजीवन पानी के बुलबुले के समान क्षणभंगुर है, एवं कुश के अग्र पर रहे हुए जल के विन्दु के समान चंचल है

ઠાઠવાળા હતા, જે મનવાંછિત શબ્દરૂપ આદિક વિષયોમાં તલ્લીન હતા, બહુજ વિલાસી હતા, તેમજ પુણ્યના ઢગલાથી જ જાણે જેમનું લાલન પાલન થતું રહેતું હતું. (किंपाग-फलो-वमं च मुणिय विसयसोक्खं जल-बुब्बुय-समाणं कुसग्ग-जल-बिंदु-चंचलं जीवियं य णाऊण) તેઓ એ શું સમજીને દીક્ષા ધારણ કરી હતી? એ પ્રશ્નનું સમાધાન કરતા સૂત્રકાર કહે છે-તેઓ એમ સમજ્યા કે આ વિષયસુખ કિંપાકફલની પેઠે પરિણામે અનિષ્ટકારક છે, અને આ માનવ જીવન પાણીના પરપોટાની પેઠે ક્ષણભંગુર છે, તેમજ કુશના છેડાપર રહેલાં પાણીનાં ટીપાંની પેઠે ચંચલ છે. એમ જાણીને (अद्धुवमिणं रयमिव पडग्ग-

**बुब्बुयसमाणं कुसग्ग-जल-बिंदु-चंचलं जीवियं च णाऊण, अद्धुवमिणं रयमिव पडग्गलग्गं संविधुणित्ताणं, चइत्ता हिरण्णं, चिच्चा सुवण्णं, चिच्चा धणं, एवं धण्णं बलं वाहणं कोसं कोट्ठा-**

नम्-यथा जले बुद्बुदा प्रादुर्भवन्ति झटित्येव नश्यन्ति च तद्वत् आशुविनाशि, तथा '**कुसग्ग-जलबिंदु-चंचलं**' कुशाग्र-जलविन्दु-चञ्चलं-कुशाऽग्रे-दर्भपत्राग्रभागे यो जलविन्दुः तद्वच्चञ्चल-झटिति पतनशीलं, '**जीवियं**' जीवितं-मनुष्यजीवनम्, '**णाऊण**-ज्ञात्वा-अवगत्य, '**अद्धुवमिणं**' अध्रुवमिदम्-इदं विषयसौख्यधनादिसञ्चयाऽऽदिकम्, अध्रुवम् अनियतरूपं, '**पडग्गलग्गं**' पटाग्रलग्नं, '**रयमिव**-रज इव-धूलिकणमिव '**संविधुणित्ताणं**' संविधूय-सम्यक्-विशेषरूपेण, पृथक्कृत्य, तथा '**चइत्ता**' त्यक्त्वा, '**हिरण्णं**' हिरण्यं-रूप्यम्, '**चिच्चा सुवण्णं**' त्यक्त्वा सुवर्णम्, '**चिच्चा धणं**' त्यक्त्वा धनम्, '**एवं**' एवम्-अनेन प्रकारेण '**धण्णं**'-धान्यं-शाल्यादिसञ्चयम्, **बलं**-चतुर्विधं सैन्यम्, '**वाहणं**' वाहनं-रथादिकम्, '**कोसं**' कोशम्-स्वर्णरजतादिगृहम्, '**कोट्ठागारं**' कोष्ठागारं धान्यराशिगृहम्' '**रज्जं**'-राज्यं-राजाधिकृतदेशम्

ऐसा जानकर (**अद्धुवमिणं रयमिव पडग्गलग्गं संविधुणित्ताणं**) तथा ये विषयसुख एवं धन आदि का संचय सब के सब अध्रुव-अनित्यस्वरूप है, ऐसा विचार कर, उन्होंने पटके अग्रभाग में लगी हुई धूलि के समान उन्हे भावतः मन से सर्वथा दूर कर दिया। और ये द्रव्यतः बाह्यरूप से भी (**चइत्ता हिरण्णं, चिच्चा सुवण्णं, चिच्चा धणं एवं धण्णं बलं वाहणं कोसं कोट्ठागारं रज्जं रट्ठं पुरं अंतेउरं चिच्चा, विउल-धण-कणग-रयण-मणि-मोत्तिय-संख-सिलप्पवाल-रत्तरयण-माइयं संत-सार-सावतेज्ज विच्छड्डइत्ता विगोवइत्ता, दाणं च दाइयाणं परिभायइत्ता, मुंडा भवित्ता, अगाराओ अणगारियं पव्वइया**) हिरण्य-चान्दी-का परित्याग कर, सुवर्ण का परित्याग कर, सोनाचान्दी से अतिरिक्त धन का परित्याग कर, इसी तरह धान्य का,

लग्गं संविधुणित्ताण) तथा આ વિષયસુખ તેમજ ધન આદિનો સંચય તમામે-તમામ અધ્રુવ-અનિત્યસ્વરૂપ છે, એમ વિચારીને તેઓએ વસ્ત્રના છેડા ઉપર લાગેલ ધૂળની જેમ તેમનો ભાવપૂર્વક મનમાંથી તદ્દન ત્યાગ કર્યો. અને તેઓ દ્રવ્યથી બાહ્યરૂપે પણ (चइत्ता हिरण्णं, चिच्चा सुवण्ण, चिच्चा धणं, एवं धण्णं बलं वाहणं कोसं कोट्ठागारं रज्जं रट्ठं पुरं अंतेउरं चिच्चा, विउल-धण-कणग-रयण-मणि-मोत्तिय-संख-सिलप्पवाल-रत्तरयण-माइयं संत-सार-सावतेज्जं विच्छड्डइत्ता विगोवइत्ता, दाणं च दाइयाणं परिभायइत्ता, मुंडा भवित्ता, अगाराओ अणगारियं पव्वइया). હિરણ્ય-ચાંદીનો પરિત્યાગ કરીને, સુવર્ણનો પરિત્યાગ કરીને,

गारं रज्जं रट्ठं पुरं अंतेउरं चिच्चा, विउल-धण-कणग-रयण-मणि-मोत्तिय-संख-सिलप्पवाल-रत्तरयण-माइयं संत-सार-सावतेज्जं विच्छड्डइत्ता विगोवइत्ता, दाणं च दाइयाणं परिभाय-

एकभूपाज्ञावगवर्तिदेशम्। 'रट्ठं' राष्ट्रं-देशम्, 'पुरं-प्राकारयुक्तं नगरम्। 'अंतेउरं' अन्तःपुरं-राजस्त्रीणां निवासगृहम्,। 'चिच्चा' त्यक्त्वा 'विउल-धण-कणग-रयण-मणि-मोत्तिय-संख-सिलप्पवाल-रत्तरयण-माइयं, विपुल-धन-कनक-रत्न-मणि-मौक्तिक-शङ्ख-शिलाप्रवाल-रक्तरत्नाऽऽदिकम्, तत्र-विपुलानि धनानि-गोवृषादीनि, कनकं सुवर्णम्-अघटितसुवर्णसमूहम्, रत्नानि-कर्केतनादीनि, मणय-चन्द्रकान्तादयः, मौक्तिकानि-मुक्ताफलानि, शङ्खाः-पद्मशङ्खादय, शिलाप्रवालानि-विद्रुमाणि, रक्तरत्नानि-पद्मरागादीनि, आदिशब्दात् शय्यासिंहासनादिपरिग्रहः। एतत्सर्वसारभूतं कथयति-'संत-सार-सावतेज्जं' सत्सारस्वापतेयम्-सन्=विद्यमान सारो=बहुमूल्यता यत्र तत् सत्सारं, स्वपतौ साधु स्वापतेयं-धनं, सत्सारञ्च तत्स्वापतेयं सत्सारस्वापतेयं प्रधानधनं त्यक्त्वा, पुनः 'विच्छड्डइत्ता' विच्छर्दय-परित्यज्य, विच्छर्दवत् कृत्वेत्यर्थः। 'विगोवइत्ता' विगोप्य

चतुर्विध सैन्य का, रथादिकरूप वाहनका, स्वर्ण रजत आदि के स्थानभूत कोशका, कोष्ठागार का, राज्यका, देशका, पुरका, अन्तःपुरका परित्याग कर, एवं विपुलधन-गोवृषभादिकका, कनक-सामान्य सुवर्णका, रत्न का, मणि-मौक्तिकका, शंख-पद्मशंख आदि का, शिलाप्रवाल-विद्रुम का, रक्तरत्न-पद्मरागादिक मणियो का, आदि शब्द से गृहीत शय्यासिंहासन वगैरह इन सबका परित्याग कर, तथा उत्तमसारभूत-कोहीनूर जैसे बहुमूल्य होने से जिसमें सार विद्यमान है ऐसे स्वापतेय-प्रधानधन को भी छोडकर, वमन के समान उससे ममत्व बुद्धि हटाकर, एवं जो खजाने में भी पहिले से गुप्त

સોના ચાન્દીથી અતિરિક્ત ધનનો પરિત્યાગ કરીને, અને એવી રીતે ધાન્યનો, ચતુર્વિધ સૈન્યનો, રથ આદિરૂપ વાહનનો, સોના ચાંદી આદિના સ્થાનભૂત ખજાનાનો, કોષ્ઠાગારનો, રાજ્યનો, દેશનો, પુરનો, અંતઃપુરનો પરિત્યાગ કરીને, તેમજ વિપુલ (બહુ) ધનનો-ગાય બળદ આદિકનો, કનકનો-સામાન્ય સુવર્ણનો, રત્નનો, મણિમોતીનો, શંખ-પદ્મશંખ આદિનો, શિલાપ્રવાલ-વિદ્રુમનો, રક્તરત્ન-પદ્મરાગ આદિક મણિઓનો, આદિ શબ્દથી એમ સમજવાનું કે શય્યા સિંહાસન વગેરે એ બધાંનો પરિત્યાગ કરીને, તથા ઉત્તમ સારભૂત કોહીનૂર જેવાં કિંમતી હોવાથી જેમાં સાર મોજુદ છે એવાં સ્વાપતેય-મુખ્ય ધનને પણ છોડીને, વમન (ઉલટી) ની પેઠે તેમાંથી મમત્વ બુદ્ધિ હટાવી દઈને તેમજ જે ખજાનામાં પણ પહેલેથી જ ગુપ્ત દ્રવ્ય હતું તેને પણ બહાર

**इत्ता, मुंडा भवित्ता, अगाराओ अणगारियं पव्वइया; अप्पेगइया अद्धमासपरियाया, अप्पेगइया मासपरियाया, एवं दुमास-**

यदपि गुप्त–निधौ निक्षिप्तं धनं प्रागासीत् तदपि प्रकटीकृत्य=निःसार्य, उदारतापूर्वकं '**दाणं**' दानं दत्त्वा, '**दाइयाणं**' दायादेभ्यः–स्वगोत्रिकेभ्यः '**परिभायइत्ता**' विभागशो-दत्त्वा च '**मुंडा भवित्ता**' मुण्डा भूत्वा=द्रव्यतः शिरोलुञ्चनेन, भावतः क्रोधाद्यपनयनेन च मुण्डिता भूत्वा, '**पव्वइया**' प्रव्रजिताः–श्रमणा जाता इत्यर्थः । '**अप्पेगइया**' अप्येके–केचिद् '**अद्धमासपरियाया**' अर्द्धमासपर्यायाः कथञ्चित्प्रागवस्थात्यागेन अवस्थान्तराऽऽप्तौ पर्यायः, स पर्यायो जन्मना दीक्षया चेति द्विविधः, प्रथमो जन्मपर्यायः, द्वितीयो दीक्षापर्यायः, अत्र दीक्षापर्यायो गृह्यते, केचिदर्द्धमासाद् गृहीतश्रमपर्यायाः । '**अप्पेगइया**' अप्येके–केचन, '**मासपरियाया**' मासपर्यायाः–मासाऽवधेः कालाद् गृहीतश्रमणपर्यायाः । एवम्–अमुना प्रकारेण केचिद्द्विमासपर्यायाः, केचित् त्रिमास-

द्रव्य था उसे भी बाहर निकाल कर, और उदारतापूर्वक उसे दान में व्यय करके तथा सगोत्रियों में विभक्त करके, मुडित हो–द्रव्यरूप से मस्तक लुंचितकर एवं भावरूप से क्रोधादिक का परिहार कर प्रव्रजित हुए थे। (**अप्पेगइया**) कितनेक (**अद्धमासपरियाया**) इनमें ऐसे थे जिन्हे दीक्षा ग्रहण किये केवल अर्धमास ही हुआ था। (**अप्पेगइया मासपरियाया एवं दुमासपरियाया तिमासपरियाया जाव एक्कारसमासपरियाया**) इसी प्रकार कितनेक ऐसे थे जिन्हे दीक्षा लिये हुए दो मास हुए थे, कितनेक ऐसे थे जिन्हे दीक्षा लिये ३ मास हुए थे, कितनेक ऐसे थे जिन्हे चार, पांच, छह, सात, आठ, नौ, दश एवं ११ ग्यारह

કાઢીને અને ઉદારતાપૂર્વક તેનો દાનમાં વ્યય કરીને તથા સગોત્રિઓમાં વહેંચી દઈને મુંડિત થઈ–દ્રવ્યરૂપથી મસ્તકને લુંચિત કરીને તથા ભાવરૂપથી ક્રોધાદિકને છોડીને પ્રવ્રજિત થયા હતા. (अप्पेगइया) કેટલાએક (अद्धमास-परियाया) એમાં એવા હતા જેઓને દીક્ષા લીધાને માત્ર અરધો મહિનો જ થયો હતો. (अप्पेगइया मासपरियाया एवं दुमासपरियाया तिमासपरियाया जाव एक्कारसमासपरियाया) તેવીજ રીતે કેટલાએક તેઓમાં એવા હતા કે જેઓને દીક્ષા લીધાને એક માસ થયો હતો, કેટલાએક એવા હતા કે જેઓને દીક્ષા લીધાને બે માસ થયા હતા, કેટલાએક એવા હતા કે જેઓને દીક્ષા લીધાને ત્રણમાસ થયા હતા, કેટલાએક એવા હતા જેમને ચાર, પાંચ, છ, સાત, આઠ, નવ, દશ તેમજ અગિઆર મહિના થયા હતા (अप्पेगइया

परियाया, तिमासपरियाया जाव एक्कारसमासपरियाया, अप्पेगइया वासपरियाया, दुवासपरियाया, तिवासपरियाया, अप्पेगइया अणेगवासपरियाया संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणा विहरंति ॥ सू. २३ ॥

पर्याया यावदेकादशमासपर्यायाः, केचिद्वर्षपर्यायाः, केचिद् द्विवर्षपर्यायाः, केचित् त्रिवर्षपर्यायाः, केचिदनेकवर्षपर्यायाः, '**संजमेणं**' संयमेन सप्तदशविधेन, तपसा कर्मनिवारकेण द्वादशविधेन '**अप्पाणं**' आत्मानं '**भावेमाणा**' भावयन्तो विहरन्ति ॥ सू० २३ ॥

महिने हुए थे । (**अप्पेगइया वासपरियाया दुवासपरियाया तिवासपरियाया**) कितनेक इनमें ऐसेभी थे कि जिन्हे दीक्षा लिये हुए १ वर्ष, २ वर्ष, एवं तीनवर्ष आदि हो चुके थे। (**अप्पेगइया अणेगवासपरियाया**) कितनेक एसे भी मुनिजन थे जिन्हे दीक्षा लिए हुए अनेक वर्ष व्यतीत हो चुके थे। ये सबके सब मुनिजन (**संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरंति**) १७ प्रकार के संयम से एवं १२ प्रकारके तपसे अपनी आत्माको भावित करते हुए विचरते थे ॥

भावार्थ—भगवान् महावीर प्रभुकी शिष्यमंडली में अनेक मुनिजन थे। कोई उग्रकुलके थे, कोई भोगकुलके थे, कोई राजन्यकुलके थे। कोई कौरव वंश के थे, कोई क्षत्रियवंश के थे। कितनेक भट—सामान्य वीर, योधा, सेनापति, प्रशासक, श्रेष्ठी और इभ्य आदि थे। विनय विज्ञान आदि अनेक सद्गुणों से संपन्न ये मुनिजन दीक्षा लेने के पहिले अनेक प्रकार के धनादिक से, एवं भोगोपभोग की सामग्री

वासपरियाया दुवासपरियाया तिवासपरियाया) કેટલાએક તેઓમા એવા પણ હતા કે જેમને દીક્ષા લીધાને ૧ વર્ષ, ૨ વર્ષ, તેમજ ત્રણ વર્ષ આદિ થઈ ગયાં હતાં. (अप्पेगइया अणेगवासपरियाया) કેટલાએક એવા પણ મુનિ હતા કે જેઓને દીક્ષા લીધાને અનેક વર્ષ વીતી ગયેલાં હતાં. તે તમામે તમામ મુનિજનો (संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणा विहरंति) ૧૭ પ્રકારના સંયમથી તેમજ ૧૨ પ્રકારના તપથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા થતા વિચરતા હતા.

ભાવાર્થ—ભગવાન મહાવીર પ્રભુની શિષ્યમંડલીમા અનેક મુનિજનો હતા. કોઈ ઉગ્રકુળના હતા, કોઈ ભોગકુળના હતા, કોઈ રાજન્યકુળના હતા, કોઈ કૌરવ વંશના હતા, કોઈ ક્ષત્રિય વંશના હતા, કેટલાએક ભટ સામાન્યવીર, યોદ્ધા-વિશિષ્ટવીર, સેનાપતિ, પ્રશાસક, શ્રેષ્ઠી અને ઈભ્ય આદિ હતા. વિનય વિજ્ઞાન આદિ અનેક સદ્‌ગુણોથી સંપન્ન એવા આ મુનિજન દીક્ષા લીધા પહેલાં

## मूलम्—तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ

टीका—'तेणं कालेणं' इत्यादि,

तस्मिन् काले तस्मिन् समये श्रमणस्य भगवतो महावीरस्य 'अंतेवासी'

---

से युक्त थे। इनका वैभवविलास राजाओ के वैभवविलास तुल्य था। इन्होंने अपने जीवन में यह विचार किया था कि ये सांसारिक विषयभोग किंपाकफल के समान बाहर से ही मनोहर लगते हैं, परिणाम में ये जीवको महान् दुखदायी है। जलबिन्दु के समान ये क्षणविनश्वर हैं। कुशाग्रभागमें स्थित ओसकी बूंद के तुल्य देखते २ नष्ट हो जाते है। अत इनका परित्याग ही सर्वश्रेयस्कर है। ऐसा समझ कर ही इन्होंने समस्त धनधान्यादिक परिग्रहका परित्याग किया और प्रभु के पास दीक्षित हो गये। इनमें कितनेक मुनिजनोकी दीक्षापर्याय १५ दिन, एकमास आदि की थी, कितनेक मुनिजनों की १ वर्ष २ वर्ष आदि की थी, एवं कितनेक मुनिजनों की अनेक वर्ष की थी ॥ सू. २३ ॥

'तेणं कालेणं' इत्यादि०

(तेणं कालेणं तेणं समएणं) उस काल में और उस समयमें (समणस्स भगवओ महावीरस्स) श्रमण भगवान् महावीर के (बहवे) अनेक (अंतेवासी) शिष्य

---

અનેક પ્રકારના ધન આદિક તેમજ ભોગોપભોગની સામગ્રીવાળા હતા. તેમના વૈભવ વિલાસ રાજાઓના વૈભવવિલાસ જેવા હતા. તેઓએ પોતાના જીવનમા એમ વિચાર કર્યો હતો કે આ સાંસારિક વિષયભોગ કિંપાકફલની પેઠે બહારથી જ મનોહર લાગે છે, પરિણામમાં તે આ જીવને દુઃખદાયી છે. પાણીનાં ટીપાંની પેઠે તે ક્ષણમા નાશ પામે તેવા છે. કુશના અગ્રભાગમાં રહેલા ઓસના ટીપાની પેઠે જોતજોતામાંજ નાશ પામી જાય છે. આથી તેમનો પરિત્યાગ જ સર્વશ્રેયસ્કર. છે એમ સમજીને તેઓએ તમામ ધન ધાન્ય આદિક પરિગ્રહનો પરિત્યાગ કર્યો, અને પ્રભુની પાસે દીક્ષિત થઈ ગયા. તેઓમાં કેટલાએક મુનિજનોની દીક્ષાપર્યાય ૧૫ દિવસ, એક માસ વગેરે મુદતની હતી, અને કેટલાએક મુનીજનોની દીક્ષાપર્યાય ૧ વર્ષ-૨ વર્ષ આદિની હતી, તેમજ કેટલાક મુનિજનોની અનેક વર્ષની હતી. (સૂ. ૨૩)

"તેણ કાલેણં" ઇત્યાદિ.

(તેણં કાલેણ તેણં સમએણ) તે કાલમા અને તે સમયમાં (સમણસ્સ ભગવઓ મહાવીરસ્સ) શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીરના (બહવે) અનેક (અંતેવાસી)

**महावीरस्स अंतेवासी बहवे निग्गंथा भगवंतो, अप्पेगइया आभिणिबोहियणाणी जाव केवलणाणी, अप्पेगइया मणबलिया**

अन्तेवासिनः—शिष्याः 'बहवे' बहवः—बहुसङ्ख्यकाः, '**निग्गंथा**' निर्ग्रन्थाः—ग्रन्थो द्विविध आभ्यन्तरो बाह्यश्च, तत्र—कषायादिरूप आभ्यन्तरः, धनधान्यादिपरिग्रहरूपो बाह्यः, तेन द्विविधेन बाह्याभ्यन्तररूपेण ग्रन्थेन निर्मुक्ता निर्ग्रन्थाः, अथवा ग्रन्थान्निर्गता निर्ग्रन्थाः—क्रोधादिभिर्धनादिभिश्च मुक्ता इत्यर्थः, भगवन्तः '**अप्पेगइया**' अप्येकके—केचित् '**आभिणिबोहियणाणी**' आभिनिबोधिकज्ञानिनः—'अभि' इति आभिमुख्ये, 'नि'—इति नैयत्ये; ततश्च—अभिमुखो=वस्तुयोग्यदेशाऽवस्थानाऽपेक्षी बोधः—अभिनिबोधः, स एव आभिनिबोधिकम्, स्वार्थे विनयादित्वात् इकण् प्रत्ययः, क्वचित्स्वार्थिकोऽपि प्रत्ययः प्रकृति वचनञ्चातिवर्तते, तेन अभिनिबोधस्य पुस्त्वेऽपि आभिनिबोधिकस्य नपुंसकत्वं, यथा विनय एव वैनयिकम्, आभिनिबोधिकं च तज्ज्ञानम् आभिनिबोधिकज्ञानम्, तदस्त्येषामित्याभिनिबोधिकज्ञानिनः, '**जाव**' यावत् '**केवलणाणी**' केवलज्ञानिनः — केवलं — शुद्धं — निर्मलं — सकलाऽऽवरणमलकलङ्कविगमसम्भूतत्वात्, अथवा

थे, जो (**निग्गंथा**) बाह्य एवं अन्तरग परिग्रह के सर्वथा त्यागी थे, तथा (**भगवंतो**) त्याग एवं वैराग्य से जिनका अन्तःकरण भरपूर था। इनमें (**अप्पेगइया**) कितनेक (**आभिणिबोहियनाणी**) आभिनिबोधिक ज्ञानी थे। जो ज्ञान अभिमुख एवं योग्यक्षेत्र में स्थित वस्तु को इंद्रिय और मनकी सहायता से जानता है वह अभिनिबोध है, अभिनिबोध ही आभिनिबोधिक है। आभिनिबोधिक ज्ञान का दूसरा नाम मतिज्ञान है। इस ज्ञान से जो युक्त थे वे आभिनिबोधिकज्ञानी कहे गये हैं। (**जाव केवलणाणी**) कितनेक श्रुतज्ञानी थे, कितनेक अवधिज्ञानी थे, कितनेक मनःपर्ययज्ञानी थे और कितनेक केवलज्ञानी

શિષ્યો હતા. (निग्गंथा) જે બાહ્ય તેમજ અંતરંગ પરિગ્રહના સર્વથા ત્યાગી હતા, તથા (भगवंतो) ત્યાગ તેમજ વૈરાગ્યથી જેમનાં અંતઃકરણ ભરપૂર હતાં. તેઓમાં (अप्पेगइया) કેટલાએક (आभिणिवोहियनाणी) આભિનિબોધિકજ્ઞાની હતા. જે જ્ઞાન અભિમુખ એટલે યોગ્ય ક્ષેત્રમાં રહેલ વસ્તુને ઈંદ્રિય અને મનની સહાયતાથી જાણે છે તે અભિનિબોધ છે. અભિનિબોધ એજ આભિનિબોધિક છે. આભિનિબોધિક જ્ઞાનનું જ બીજું નામ મતિજ્ઞાન છે. આ જ્ઞાનથી જે યુક્ત હતા તેમનેજ આભિનિબોધિકજ્ઞાની કહેવામા આવે છે. (जाव केवलणाणी) કેટલાએક શ્રુતજ્ઞાની હતા, કેટલાએક અવધિજ્ઞાની હતા, કેટલાએક મનઃપર્યયજ્ઞાની હતા, તથા કેટલાએક કેવલજ્ઞાની હતા. કેવલ

**वयबलिया कायबलिया णाणबलिया दंसणबलिया चारित्त-**

सकलं—परिपूर्णं—सम्पूर्णज्ञेयग्राहित्वात्, यद्वा केवलम् असाधारणं तादृगाऽपरज्ञानाऽभावात्, केवलञ्च तद् ज्ञानं केवलज्ञानं, तदस्ति येषां ते केवलज्ञानिनः। अत्र—आभिनिबोधिकज्ञानि—केवलज्ञानिनोर्मध्ये यावच्छद्मस्थत्यवधि-मन:पर्ययज्ञानिनोऽपि गृह्यन्ते, विस्तरभयादेषां व्याख्यातो विरम्यते, **'अप्पेगइया'** अप्येकके—केचित् **'मणबलिया'** मनोबलिकाः—अनुकूलप्रतिकूलपरिषहेऽपि तत्सहनशीलतया मनोबलधारिणः, **'वयबलिया'** वाग्बलिकाः-प्रतिज्ञातार्थनिर्वाहक्षमाः, **'कायबलिया'** कायबलिकाः—क्षुधादि—परिषहेषु तीव्रेषु ग्लानिरहितदेहाः, **'णाणबलिया'**

थे। केवल शब्दका शुद्ध परिपूर्ण अथवा असाधारण ऐसा अर्थ है। यह ज्ञान शुद्ध इसलिये कहा गया है कि यह आत्मा में चतुर्विध घातिकर्मों के सर्वथा विनाश से उद्भूत होता है। परिपूर्ण—संपूर्ण इसलिये है कि यह त्रिकालगत समस्त ज्ञेयराशि को युगपत् जानता है। असाधारण इसलिये है कि इसके जैसा और कोई दूसरा ज्ञान नहीं है। यह केवलज्ञान जिनके आत्मामें अभिव्यक्तरूपमें विद्यमान है वे केवलज्ञानी हैं। ( **अप्पेगइया मणबलिया वयबलिया कायबलिया** ) कितनेक मनोबलधारी थे। इसबल के प्रभाव से ही अनुकूल एवं प्रतिकूल परिषहों के सहनेमें शक्ति आत्मा को मिलती है। कितनेक वचनबल के धारी थे। प्रतिज्ञात अर्थ को निर्वाह करने की क्षमता इस बलद्वारा आत्मा को प्राप्त होती है। कितनेक कायबल के धारी थे। इसके द्वारा तीव्र क्षुधादिक परीषहों के होने पर भी देहमें थोडीसी भी ग्लानि उद्भूत नहीं होने पाती है। ( **णाणबलिया दंसणबलिया चारित्तबलिया** ) कितनेक निरति-

શબ્દનો અર્થ શુદ્ધ પરિપૂર્ણ અથવા અસાધારણ એવો છે. આ જ્ઞાન શુદ્ધ એટલા માટે કહેવામાં આવ્યું છે કે તે આત્માનાં ચતુર્વિધ ઘાતિકર્મોના સર્વથા વિનાશથી ઉત્પન્ન થાય છે, પરિપૂર્ણ—સંપૂર્ણ એટલા માટે છે કે તે ત્રણે કાળમાં સમસ્ત જ્ઞેયરાશિને યુગપત્ જાણે છે. અસાધારણ એટલા માટે છે કે તેના જેવું બીજુ કોઇ જ્ઞાન નથી. આ કેવલજ્ઞાન જેના આત્મામાં અભિવ્યક્તરૂપમાં વિદ્યમાન છે તે કેવલજ્ઞાની છે (अप्पेगइया मणबलिया वय-बलिया कायबलिया) કેટલાએક મનોબલધારી હતા, આ બલના પ્રભાવથીજ અનુકૂળ તેમજ પ્રતિકૂળ પરીષહોને સહન કરવાની શક્તિ આત્માને મળે છે. કેટલાએક વચનબલના ધારી હતા, પ્રતિજ્ઞાત અર્થાત્ પ્રતિજ્ઞા કરેલા અર્થનું પાલન કરવાની ક્ષમતા આ બલથી જ આત્માને પ્રાપ્ત થાય છે. કેટલાએક કાયબલના ધારી હતા. તેના દ્વારા તીવ્ર ક્ષુધા આદિક પરિષહો આવતાં પણ

**लिया, अप्पेगइया मणेणं सावा-णुग्गह-समत्था, एवं वएणं**

ज्ञानवलिकाः-निरतिचारज्ञानवन्तः । '**दंसणबलिया**' दर्शनबलिकाः दर्शनं-श्रद्धा तद्रूपं बलमस्त्येषामिति दर्शनबलिकाः - सुरैरपि सम्यक्त्वधर्मतश्चालयितुमशक्या इत्यर्थः, '**चारित्तबलिया**' चारित्रबलिकाः-दृढचारित्रबलयुक्ताः, '**अप्पेगइया**' अप्येकके-केचित्, '**मणेणं सावा-णुग्गह-समत्था**' मनसा शापाऽ-नुग्रह-समर्थाः-मनसैव मनोभावादिनैव परेषां शापाऽनुग्रहौ=निग्रहाऽनुग्रहौ कर्तु समर्थाः, '**एवं**' एवम्-अनेन प्रकारेण '**वएण काएणं**' वाचा कायेन च निग्रहाऽनुग्रहयोः समर्थाः । '**अप्पेगइया**' अप्येकके-'**खेलोसहिपत्ता**' खेलौषधिप्राप्ताः-खेलः-श्लेष्मा, स एवौषधिः सकलरोगादच-

चारज्ञानवान थे । कितनेक श्रद्धारूपबलसंपन्न थे। इस बल की प्राप्ति होने पर सम्यक्त्व से चलायमान करने के लिये कोई भी शक्ति कार्यकर नहीं हो सकती है। कितनेक चारित्ररूपबलविशिष्ट थे। इस शक्ति की जागृतिमें आत्मा अपने गृहीत चारित्र से रंचमात्र भी शिथलित नहीं होता है। (**अप्पेगइया मणेणं सावा-णुग्गह-समत्था एवं वएणं कायेणं**) कितनेक मन से ही शाप एवं अनुग्रह करने में समर्थ थे। इसी तरह वचन और काय से भी समझ लेना चाहिये। (**अप्पेगइया खेलोसहिपत्ता, एवं जल्लोसहिपत्ता, विप्पोसहिपत्ता, आमोसहिपत्ता, सव्वोसहिपत्ता**) कितनेक ऐसे थे जिन्हे खेलोषधिरूप लब्धि प्राप्त थी। इस लब्धिवाले मुनिजन का स्वेदज मल भी समस्त शारीरिक उपद्रवों का अपहारक होता है। कितनेक ऐसे थे जिन्हें विप्रुडोषधि प्राप्त थी। इस लब्धिवाले मुनि के थूंक की बूंदे तक भी रोगोंपर ओषधिका

દેહમાં જરા-જેટલીએ ગ્લાનિ ઉત્પન્ન થતી નથી. (णाणबलिया दंसणबलिया चारित्तबलिया) કેટલાએક નિરતિચાર જ્ઞાનવાન હતા. કેટલાએક શ્રદ્ધારૂપ-બલ-સંપન્ન હતા, આ બલની પ્રાપ્તિ થતાં સમ્યક્ત્વથી ચલાયમાન કરવાને કોઈ પણ સમર્થ નથી. કેટલાએક ચારિત્રરૂપ બલવિશિષ્ટ હતા. આ શક્તિની જાગૃતિમાં આત્મા પોતે ગ્રહણ કરેલ ચારિત્રથી થોડો પણ શિથિલ થતો નથી. (अप्पेगइया मणेणं सावाणुग्गहसमत्था एवं वएणं कायेणं) કેટલાએક મનથી જ શાપ તેમ જ અનુગ્રહ કરવામાં સમર્થ હતા. એવી જ રીતે વચન અને કાયાથી પણ સમજી લેવા જોઈએ. (अप्पेगइया खेलोसहिपत्ता, एवं जल्लोसहिपत्ता विप्पोसहिपत्ता आमोसहिपत्ता सव्वोसहिपत्ता) કેટલાએક એવા હતા જેઓને જલ્લૌષધિ લબ્ધિ પ્રાપ્ત હતી.આ લબ્ધિ (સિદ્ધિ)વાળા મુનિજનના સ્વેદ (પરસેવા)ના મલ પણ સમસ્ત શારીરિક ઉપદ્રવોનો નાશ કરે છે. કેટલાએક એવા હતા

**काएणं, अप्पेगइया खेलोसहिपत्ता, एवं जल्लोसहिपत्ता, विप्पोसहिपत्ता, आमोसहिपत्ता, सव्वोसहिपत्ता, अप्पेगइया कोट्ठबुद्धी, एवं**

नर्थोपशमनहेतुत्वात्, तां प्राप्ताः, येषां श्लेष्मस्पर्शेन सर्वे रोगा विनश्यन्ति ते-इत्यर्थः, एवम्-अमुना प्रकारेण '**जल्लोसहिपत्ता**' जल्लौषधिप्राप्ताः — जल्लः-स्वेदजो मलः स एवौषधिः सकलव्याधिप्रशमनहेतुत्वात्तां प्राप्ताः, येषां स्वेदजमलस्पर्शेन रोगा विनश्यन्ति ते इति भावः, '**विप्पोसहिपत्ता**' विप्रुडोषधिप्राप्ताः-विप्रुषः-निष्ठीवनादिबिन्दवः, तद्रूपा ओषधिस्तां प्राप्ताः, '**आमोसहिपत्ता**' आमर्षौषधिप्राप्ताः-आमर्षणम्-आमर्षः-हस्तादिसंस्पर्श इति, स ओषधिरिव इत्यामर्षौषधिस्तां प्राप्ताः। '**सव्वोसहिपत्ता**' सर्वौषधिप्राप्ताः-सर्वे खेलजल्लविप्रुट्केशनखादयस्ते सर्व एवौषधयस्ताः प्राप्ताः, एषु एकैकस्य सर्वविधरोगोपशमकतयौषधित्वाऽऽरोपः। '**अप्पेगइया**' अप्येकके-केचित्-'**कोट्ठबुद्धी**' कोष्ठबुद्धयः-कोष्ठवत्-कुशूलवत् सूत्राऽर्थरूपधान्यस्य यथालब्धस्याऽविस्मृतस्य आजीवनधारणात् कोष्ठबुद्धयः, यथा धान्य-

काम करती है। कितनेक ऐसे थे जिन्हे आमर्षौषधि प्राप्त हो चुकी थी। इस लब्धि के प्रभाव से इस लब्धिप्राप्त मुनिजन का हस्तादिक स्पर्श औषधि का काम करता है। कितनेक ऐसे भी मुनिजन थे जिन्हें सर्वौषधि नामकी लब्धि प्राप्त हो चुकी थी। इस लब्धिप्राप्त मुनिजन के खेल-श्लेष्मा, जल्ल-स्वेदज मेल, विप्रुट्-थूंक आदि के कण, केश और नखादिक सब औषधि का काम करते है। इन सब को औषधि इसलिये कहा गया है कि जिस प्रकार औषधियां रोगोपशामक होती है उसी प्रकार ये सब भी रोगोपशामक होते है। (**अप्पेगइया कोट्ठबुद्धी, एवं बीयबुद्धी, पडबुद्धी, अप्पेगइया पयाणुसारी, अप्पेगइया संभिन्नसोया**) कितनेक ऐसे थे जिन्हें कोष्ठ-

જેમને વિપ્રુડોષધિ લબ્ધિ પ્રાપ્ત હતી. આ લબ્ધિવાળા મુનિના થૂકનું ટીપું પણ ઓષધીનું કામ કરે છે. કેટલાએક એવા મુનિજનો હતા જેઓને આમર્ષૌષધિ પ્રાપ્ત હતી. આ લબ્ધિના પ્રભાવથી આ લબ્ધિવાળા મુનિજનના હસ્તાદિકનો સ્પર્શ પણ ઓષધીનું કામ કરે છે. કેટલાક એવા પણ મુનિજન હતા, જેમને સર્વૌષધિ નામની લબ્ધિ પ્રાપ્ત હતી. આ લબ્ધિવાળા મુનિજનના ખેલ-કફ, જલ્લ-સ્વેદજ મેલ, વિપ્રુટ્-થૂંક આદિના કણ, કેશ અને નખ આદિક બધું ઓષધિનુ કામ કરે છે. એ બધાને ઓષધિઓ એટલા માટે કહેવામાં આવે છે કે જે પ્રકારે ઔષધીઓ રોગને મટાડે છે તે જ પ્રકારે એ પણ સમસ્ત રોગ મટાડે છે. (अप्पेगइया कोट्ठबुद्धी, एवं बीयबुद्धी, पडबुद्धी, अप्पेगइया पयाणुसारी, संभिन्नसोया) કેટલાએક

**बीयबुद्धी पडबुद्धी, अप्पेगइया पयाणुसारी, अप्पेगइया संभि-**

सम्भृतकुशूला इष्टदेवताऽनुग्रहप्रभावात्सदा पूर्णा आसते तथा प्रवर्धमानमेधापरिपूर्णा-स्तेऽप्यन्तेवासिन इति भावः। '**एवम्**'-इत्थम् '**बीयबुद्धी**' बीजबुद्धयः-विविध-सूत्राऽर्थागमरहस्याधिगमविशालवृक्षजननाद् बीजमिव बुद्धिर्येषां ते बीजबुद्धयः-अल्पेनापि पदेन बह्वर्थप्रतिपादकबुद्धिशालिन इति भावः। '**पडबुद्धी**' पटबुद्धयः-अत्र पट-शब्देन पटसदृशा विस्तीर्णाः सूत्रार्था गृह्यन्ते, तद्विषयिका बुद्धिर्येषां ते तथा, तन्तुसमु-दायात्मकवस्त्रवत्प्रभूतसूत्रार्थग्रहणसमर्थज्ञानवन्त इत्यर्थः। '**अप्पेगइया पयाणुसारी**' अप्येकके पदानुसारिणः-पदेनैकेनैव सूत्रपदेन तदनुकूलानि तदाकाङ्क्षितानि पदगतान्य-

बुद्धि प्राप्त थी। जिस प्रकार कोठा धान्य से इष्टदेवता के अनुग्रहवश सदा भरा हुआ रहता है उसी प्रकार इस बुद्धि की प्राप्ति से मुनिजन भी सूत्रार्थरूप धान्य से जीवन-पर्यन्त भरे हुए रहते है। वह इन्हे कभी भी विस्मृत नहीं होता है। कितनेक ऐसे थे जिन्हे बीजबुद्धि प्राप्त थी। जिस प्रकार सूक्ष्म से भी सूक्ष्म बीज से विशालवृक्ष तैयार हो जाता है उसी प्रकार इस बुद्धि के धारक मुनिजन भी विविध सूत्रो के अर्थों के अर्थात् आगमो के रहस्यो के ज्ञाता हो जाते है। अल्पपद से भी ये विस्तृत अर्थ के प्रतिपादन करने की योग्यता से विशिष्ट बन जाते है। कितनेक पटबुद्धि के धारक थे। पट शब्द से यहां विस्तृत सूत्रार्थ गृहीत हुए है। जिस प्रकार वस्त्र तन्तुओका समुदायात्मक होता है उसी प्रकार इस बुद्धि के प्रभाव से मुनिजन भी विस्तृत-सूत्रार्थ के ज्ञानविशिष्ट होते है। कितनेक पदानुसारी थे। एक ही सूत्र के पद से इतर तदनुकूल एवं उस सूत्र

એવા હતા કે જેમને કોષ્ઠબુદ્ધિ પ્રાપ્ત હતી, જે પ્રકારે ઇષ્ટદેવતાના અનુગ્રહથી કોઠાર ધાન્યથી સદા ભરેલા રહ્યા કરે છે તેજ પ્રકારે આ બુદ્ધિની પ્રાપ્તિથી મુનિજન પણ સૂત્રના અર્થરૂપ ધાન્યથી જીવનપર્યન્ત ભરેલા રહ્યા કરે છે. તેઓ તેને કદી પણ ભૂલી જતા નથી.

કેટલાએક એવા પણ હતા કે જેમને બીજબુદ્ધિ પ્રાપ્ત હતી. જે પ્રકારે સૂક્ષ્મમાં પણ સૂક્ષ્મ બીજથી વિશાલ વૃક્ષ તૈયાર થઇ જાય છે તે જ પ્રકારે આ બુદ્ધિના ધારક મુનિજન પણ વિવિધ સૂત્રોના અર્થોને એટલે આગમોના રહસ્યોને જાણનારા થઇ જાય છે. અલ્પપદથી પણ વિસ્તૃત અર્થનું પ્રતિપાદન કરવાની યોગ્યતાવાળા બની જાય છે. કેટલાએક પટબુદ્ધિના ધારક હતા. પટ શબ્દથી અહીં વિસ્તૃત સૂત્રાર્થ લીધેલ છે. જે પ્રકારે વસ્ત્ર એ તંતુઓનું સમુદાયાત્મક હોય છે તેજ પ્રકારે આ બુદ્ધિના પ્રભાવથી મુનિજન પણ વિસ્તૃત સૂત્રાર્થના જ્ઞાનવિશિષ્ટ થાય છે. કેટલાક પદાનુસારી હતા. એક જ સૂત્રના

**न्नसोया, अप्पेगइया खीरासवा, अप्पेगइया महुयासवा, अप्पे-**

नुसरन्ति तच्छीला'। अल्पेनाऽप्यनल्पकल्पका इत्यर्थः। '**अप्पेगइया संभिन्नसोया**' अप्येकके सभिन्नश्रोतारः—सभिन्नान् शब्दान्—पृथक् २ युगपच्छृण्वन्ति इति सभिन्नश्रोतार', यद्वा सभिन्नानि—शब्देन सबद्धानि शब्दग्राहकाणि श्रोतांसि—सर्वाणीन्द्रियाणि येषां ते सम्भिन्नश्रोतस'। '**अप्पेगइया खीरासवा**' अप्येके क्षीराऽऽस्रवाः—मधुरत्वेन क्षीरवद्—दुग्धवच्छ्रोतॄणां सुखकराणि वचनान्यास्रवन्ति—मुखेभ्यो विनिर्गच्छन्ति येषां ते क्षीराऽऽस्रवा', '**अप्पेगइया महुयासवा**' अप्येके मध्वास्रवाः—मधुवत्

में आकांक्षित अन्य सैकडों पदों का भी जो अनुसरण करनेवाले होते है वे पदानुसारी कहलाते है। कितनेक संभिन्नश्रोता थे। संभिन्नश्रोता मुनिजन अनेक भेदों से भिन्न २ शब्दों को भी युगपत् पृथक् २ रूप से सुन लिया करते है। एक ही साथ अनेक शब्द एकत्र हो रहे हों, तो भी सभिन्नश्रोता उन शब्दों को पृथक् २ रूप से युगपत् जान लिया करते है, अथवा 'श्रोतस्' शब्द समस्त इन्द्रियों का वाचक है, इससे यह अर्थ लब्ध होता है कि सभिन्नश्रोता मुनिजन की समस्त इन्द्रियॉ शब्दों से संबद्ध रहा करती है, अर्थात् वह श्रोत्र—इन्द्रियका काम शेष चार इन्द्रियों से भी लेते हैं, एक इन्द्रिय से अन्य इन्द्रियों का काम लेते हैं। (**अप्पेगइया खीरासवा अप्पेगइया महुयासवा अप्पेगइया सप्पियासवा अप्पेगइया अक्खीणमहाणसिया**) कितनेक ऐसे भी थे जिनके मुख से श्रोताजनों के प्रति क्षीर के जैसे मधुर—मीठे वचन

પદથી બીજા તેને અનુકૂળ તેમજ તે સૂત્રમાં આકાંક્ષિત અન્ય સેંકડો પદોના પણ જે અનુસરણ કરવાવાળા હોય છે તે પદાનુસારી કહેવાય છે. કેટલાએક સંભિન્ન–શ્રોતા હતા. સંભિન્નશ્રોતા મુનિજનો અનેકભેદોવાળા જુદા જુદા શબ્દોને પણ યુગપત્ જુદા જુદા રૂપથી સાંભળી લે છે. એકીસાથે અનેક શબ્દ એકત્ર થઈ જાય છે તો પણ સંભિન્નશ્રોતા તે શબ્દોને જુદા જુદા રૂપથી યુગપત્ જાણી લે છે. અથવા શ્રોતસ્ શબ્દ ઇંદ્રિયોનો વાચક છે. તેથી એવો અર્થ નીકળે છે કે સંભિન્ન–શ્રોતા મુનિજનની સમસ્ત ઇંદ્રિઓ શબ્દ સાથે સંબદ્ધ રહ્યા કરે છે (જોડાએલી રહે છે), અર્થાત્ તે શ્રોત્ર ઇંદ્રિયનું કામ બીજી ચાર ઇંદ્રિયો પાસેથી પણ લે છે. એક ઇંદ્રિય પાસે બીજી ઇંદ્રિયોનું કામ લે છે. (अप्पेगइया खीरासवा अप्पेगइया महुयासवा अप्पेगइया सप्पियासवा अप्पेगइया अक्खीणमहाणसिया) કેટલાએક એવા પણ હતા, જેમના મુખથી

**गइया सप्पियासवा, अप्पेगइया अक्खीणमहाणसिया, एवं**

मधुरवचनान्यास्रवन्ति येषां ते तथा, 'अप्पेगइया सप्पियासवा' अप्येकके सर्पिरास्रवा –घृतवच्छ्रोतॄणां स्नेहातिशयसम्पादकाः, श्रोतृस्नेहातिशयसंपादकत्वादेव ते क्षीरास्रवमध्वास्रवेभ्यो भेदेन कथिताः, 'अप्पेगइया अक्खीणमहाणसिया' अप्येकके अक्षीणमहानसिकाः– अक्षीणमहानसीं नाम लब्धिं प्राप्ताः, अत्र महानसम्–अन्नपाकस्थानं, तदाश्रितत्वादन्नमपि महानसमुच्यते, अक्षीणं–भिक्षार्थमागताय लब्धिविशेषधारिणे साधवेऽन्ने प्रदत्ते सति तदवशिष्टमन्नं पुरुषशतसहस्रेभ्योऽपि दीयमानं न क्षीयते, यावत्तदन्नस्वामी स्वयं न भुङ्क्ते; अपिच भिक्षापात्रगतं तदन्नं लब्धिविशेषप्रभावादेव साधुशतसहस्रेभ्योऽपि परिविष्यमाणं न क्षीयते यावत् तदन्नभिक्षाग्राहकः स्वयं न भुङ्क्ते,

---

निकला करते थे। क्षीरास्रवलब्धि का काम यही है कि यह जिसे प्राप्त होती है वह क्षीर के समान मधुर वचनों को सदा बोला करता है। कितनेक ऐसे मुनिजन थे जो मध्वास्रव थे, जिनके मुखकमल से मधु के तुल्य मधुर वचन निकला करते थे। कितनेक ऐसे थे जो सर्पिरास्रव थे–घृत के समान स्नेहापादन करनेवाले वचनों के प्रयोक्ता थे। कितनेक अक्षीणमहानसिक थे। इस लब्धिप्राप्त मुनिजन का यह प्रभाव होता है कि यह जिस घर से भिक्षा ले आवे उस घर का अवशिष्ट अन्न जबतक देनेवाला स्वयं न खा लेवे, तबतक लाख आदमियों को भी वितरित करने पर खूटता नहीं है। तथा उस साधुद्वारा लाया गया वह भिक्षान्न भी जबतक लानेवाला साधु स्वयं न खा लेवे तबतक लाख साधुओ द्वारा आहारित होने पर भी

---

શ્રોતાજનોના પ્રતિ દૂધપાક જેવાં મધુર–મીઠાં વચન નીકળ્યા કરતાં હતાં. ક્ષીરાસ્રવ લબ્ધિનું કામ એજ છે કે તે જેને પ્રાપ્ત થાય છે તે દૂધપાક જેવાં મધુર વચનો જ સદાય બોલ્યા કરે છે. કેટલાએક એવા પણ મુનિજનો હતા જે મધ્વાસ્રવ હતા.જેમના મુખકમલમાંથી મધના જેવાં મધુર વચન નીકળે છે તે મધ્વાસ્રવ છે. કેટલાએક એવા હતા કે જે સર્પિરાસ્રવ હતા, ઘીની પેઠે સ્નેહાપાદન કરવાવાળાં વચનો બોલનારા હતા. કેટલાએક અક્ષીણમહાનસિકલબ્ધિધારી હતા, આ લબ્ધિપ્રાપ્ત મુનિજનનો એવો પ્રભાવ હોય છે કે તે જે ઘેરથી ભિક્ષા લઇને આવે તે ઘરનું બાકીનુ અન્ન જ્યાં સુધી દેવાવાળો પોતે ન ખાય ત્યાં સુધી લાખો માણસોમાં વહેંચી આપે તો પણ ખૂટી જતું નથી. તથા તે સાધુએ લાવેલું તે ભિક્ષાનું અન્ન પણ તે લઈ આવનાર સાધુ પોતે ખાય નહિ, ત્યાં સુધી લાખો સાધુઓ તેનો આહાર કરે તોય પણ

उज्जुमई, अप्पेगइया विउलमई विउव्वणिड्ढिपत्ता चारणा विज्जा-

एवम् 'उज्जुमई' ऋजुमतयः—मननं मतिः, संवेदनमित्यर्थः—ऋज्वी सामान्यग्राहिणी मतिर्येषां ते ऋजुमतयः। अर्धतृतीयोच्छ्रयाङ्गुलन्यूनमनुष्यक्षेत्रवर्तिसञ्ज्ञिपञ्चेन्द्रिय-मनोद्रव्यप्रत्यक्षीकरणहेतुमनःपर्ययज्ञानविशेषवन्त इत्यर्थः। ऋजुमतिनामकलब्धि-विशेषधारिण इति भावः। अप्पेगइया विउलमई' अप्येकके विपुलमतयः— विपुला सविशेषणवस्तुग्राहितया विस्तीर्णा मतिः—मनःपर्ययज्ञानं येषां ते विपुलमतयः। ऋजुमतिविपुलमतिमतामयं तात्त्विको भेदः, विपुलमतयः— घटोऽनेन चिन्तितः, स घटो द्रव्यतः— सुवर्णघटितः, क्षेत्रतः— पाटलिपुत्रनगरस्थः, कालतः— शारदीयः, भावतः—पीतवर्ण इत्येवमशेषविशेषणयुक्तं वस्तु जानन्ति, ऋजुमतयस्तु सामान्यत एव जानन्ति। अर्द्धतृतीयोच्छ्रयाऽङ्गुलन्यूने मनुजक्षेत्रे वर्तमानानां सञ्ज्ञिपञ्चेन्द्रि-

खूटता नहीं है। (**एवं उज्जुमई, अप्पेगइया विउलमई विउव्वणिड्ढिपत्ता चारणा विज्जाहरा आगासाइवाई**) इस प्रकार कितनेक तपस्वी शिष्यजन ऋजुमति—मनःपर्यवज्ञानवाले थे। ऋजुमति—मनःपर्यवज्ञानी सामान्यतः संज्ञी—पंचेन्द्रिय के मन के भावों को जानते है। कितनेक विपुलमति—मनःपर्यव के धारक थे—विशेषणसहित वस्तु को ग्रहण करने की बुद्धिवाले थे। जैसे किसी ने द्रव्य की अपेक्षा सुवर्ण का, क्षेत्र की अपेक्षा पाटलिपुत्र का, काल की अपेक्षा शरदकाल का और भाव की अपेक्षा पीत वर्णका घट चिन्तित किया, विपुलमति इन समस्त विशेषणो सहित उस घट को जान लेते है। अर्द्धतृतीय अंगुलसे न्यून इस मनुष्य क्षेत्रमें वर्तमान सज्ञि-पंचेन्द्रिय जीवों के मनमें स्थित वस्तु का सामान्यतः जाननेवाला ऋजुमति—मन.पर्य-

ખૂટતું નથી. (एवं उज्जुमई अप्पेगइया विउलमई विउव्वणिड्ढिपत्ता चारणा विज्जाहरा आगासाइवाई) તેજ પ્રકારે કેટલાએક તપસ્વી શિષ્યજન ઋજુમતિ-મનઃ-પર્યવજ્ઞાની હતા. ઋજુમતિમનઃ-પર્યવજ્ઞાની સામાન્યતઃ સંજ્ઞી-પંચેંદ્રિયના મનના ભાવોને જાણે છે. કેટલાએક વિપુલમતિ-મનઃપર્યવના ધારક હતા, વિશેષણુસહિત વસ્તુને જાણનારી બુદ્ધિવાળા હતા. જેમ કે કોઈએ દ્રવ્યની અપેક્ષા સુવર્ણના, ક્ષેત્રની અપેક્ષાએ પાટલિપુત્રના, કાલની અપેક્ષાએ શરદકાલના, અને ભાવની અપેક્ષાએ પીળા રંગના ઘટનું ચિંતવન કર્યું, ત્યારે વિપુલમતિ એ બધા વિશેષણો સહિત તે ઘટને જાણી લે છે. અર્દ્ધતૃતીયઅંગુળન્યૂન આ મનુષ્ય-ક્ષેત્રમાં વર્તમાન સંજ્ઞી પંચેંદ્રિય જીવોના મનમા રહેલ વસ્તુને સામાન્યતઃ જાણવા-વાળા ઋજુમતિ-મનઃપર્યવજ્ઞાન થાય છે, તેમજ સંપૂર્ણ મનુષ્યક્ષેત્રમાં વર્તમાન

याणां मनोऽवस्थितवस्तुनः सामान्यतो ग्राहिका ऋजुमतिः। सम्पूर्णे मनुजक्षेत्रेऽशेष-विशेषवस्तुग्राहिका विपुलमतिः। विपुलमतिनामकलब्धिविशेषधारिण इति भावः। '**विउव्वणिड्ढिपत्ता**' विकुर्वणर्द्धिप्राप्ता'—विकुर्वणा—वैक्रियकरणलब्धिः सैव ऋद्धिः, तां प्राप्ता ये ते तथा। 'विकुर्व' विक्रियाम् इति पारिभाषिकः सौत्रो धातुः, अस्माद्धा-तोर्युच्प्रत्यये विकुर्वणा, नानारूपा विक्रिया— रचनेत्यर्थः, बाह्यपुद्गलान् भवधारणीय-शरीरानवगाढक्षेत्रप्रदेशवर्तिनो वैक्रियसमुद्घातेन गृहीत्वा एका विकुर्वणा क्रियते, एवम् आभ्यन्तरपुद्गला भवधारिणीयेनौदारिकेण वा शरीरेण ये क्षेत्रप्रदेशमवगाढास्तेष्वेव ये वर्तन्ते तान् गृहीत्वा विज्ञेया। एवं बाह्यान्तरपुद्गलयोगेन तृतीया विकुर्वणा बोध्या। स्थानाङ्गसूत्रे—(३ ठा. १उ०) सविस्तरं वर्णिता। '**चारणा**' चारणाः—चरणं=गमनम् अतिशययुक्तमस्ति येषां ते चारणाः, 'ज्योत्स्नादिभ्योऽण्' इति पाणिनिसूत्रान्मत्वर्थीयोऽण्प्रत्ययः। आकाशगमनागमनरूपलब्धिसम्पन्ना इत्यर्थः। ते द्विविधाः—विद्याचारणाः, जङ्घाचारणाश्च। तत्र विद्या—पूर्वगतविवक्षितश्रुतज्ञानांशः, तदभ्याससमये षष्ठषष्ठनिरन्त-

---

वज्ञान होता है, एवं सम्पूर्ण मनुष्यक्षेत्र में वर्तमान समस्त वस्तुओं—बादर पदार्थों को विशेषरूप से जाननेवाला विपुलमतिमनःपर्यवज्ञान होता है। कितनेक वैक्रिय—लब्धि के धारी थे। वैक्रियलब्धि अनेक प्रकार की होती है। इस ऋद्धि के धारी मुनिजन अनेक प्रकार से अपने शरीर की विकुर्वणा कर लेते है। इसका विशेष वर्णन स्थानांग सूत्र के तृतीय ठाणे के प्रथम उद्देशक में किया गया है। कितनेक चारणलब्धि के धारक थे। चारणलब्धि के धारी मुनिजनों का गमन अतिशयसंपन्न होता है। इस ऋद्धि के धारक मुनियों का गमनागमन आकाश में होता है। चारणऋद्धिधारी मुनिजन दो प्रकार के होते है--एक विद्याचारण, दूसरे जंघाचारण। १४ पूर्वों में विवक्षित श्रुतज्ञान

---

સમસ્ત વસ્તુઓ-બાદર પદાર્થોને વિશેષરૂપે જાણવાવાળા વિપુલમતિ–મનઃપર્યવજ્ઞાન થાય છે. કેટલાએક વૈક્રિયલબ્ધિના ધારક હતા. વૈક્રિયલબ્ધિ અનેક પ્રકારની થાય છે. એ ઋદ્ધિના ધારક મુનિજનો અનેક પ્રકારથી પોતાના શરીરની વિકુર્વણા કરે છે. આનું વિશેષ વર્ણન સ્થાનાંગ સૂત્રના તૃતીય ઠાણા પ્રથમ ઉદ્દેશકમાં કરેલું છે. કેટલાક ચારણલબ્ધિના ધારક હતા. ચારણલબ્ધિના ધારક મુનિજનોનું ગમન અતિશયસંપન્ન હોય છે. આ ઋદ્ધિના ધારક મુનિઓનું ગમનાગમન આકાશ માર્ગે થાય છે. ચારણ–ઋદ્ધિધારી મુનિજન બે પ્રકારના થાય છે–એક વિદ્યા-ચારણ અને બીજા જંઘાચારણ. ૧૪ પૂર્વોમાં વિવક્ષિત શ્રુતજ્ઞાનનું અંશ વિદ્યા

रतपःकरणेन द्विचत्वारिंशद्दोषवर्जनपूर्वकसाभिग्रहान्तप्रान्ततुच्छरूक्षादिग्रहणरूपया पिण्ड-विशुद्धया च विद्याचारणनामकलब्धिरुत्पद्यते, ये तया लब्ध्या युक्तास्ते विद्याचारणा उच्यन्ते। यद्यपि पिण्डविशुद्ध्यादिकं सर्वेषां साधूनामपेक्ष्यं तथाप्यत्रान्तप्रान्तादिसाभिग्रहग्रहणमावश्यक-मिति विशेषः। विद्याचारणास्तिर्यग्गत्या प्रथमेनोत्पातेन मानुषोत्तरं पर्वतं गच्छन्ति, ततो द्वितीयोत्पातेनाष्टमं नन्दीश्वरं गच्छन्ति, ततः परं तेषां गतिर्नास्ति, नन्दीश्वरद्वीपात् प्रति-निवर्तमानाः एकेनैवोत्पातेन स्वस्थानमायान्ति। ते पुनरूर्ध्वगत्या मेरुं जिगमिषवः प्रथमे-

का अंश विद्या है। इस विद्या के अभ्यास के समय में मुनिजन अन्तररहित षष्ठ षष्ठ तपस्या करते है, और पारणा के दिन ४२ दोषों को टालकर अन्तप्रान्त एवं तुच्छ-रूक्षादिक आहार ग्रहण करते है। इसपर भी अभिग्रह रखते है। इस तरह उन्हें विद्याचारण नामकी लब्धि प्राप्त होती है। इस लब्धि से युक्त मुनिजन विद्या-चारण कहे गये है। यद्यपि पिण्डादिक की विशुद्धि समस्त साधुओं के लिये सापेक्ष है, तथापि इस ऋद्धि की प्राप्ति के लिये साभिग्रह अन्त-प्रान्तादि आहार का ग्रहण करना आवश्यक है। विद्याचारण ऋद्धि के धारक मुनिजन यदि तिरछे गमन करें तो इस ऋद्धि के प्रभाव से प्रथम उत्पात में मानुषोत्तर पर्वत तक चले जाते हैं। द्वितीय उत्पात से आठवे नंदीश्वर द्वीप तक जाते हैं। इससे आगे उनका गमन नहीं होता है। पुनः एक ही उत्पात से ये नंदीश्वर द्वीप से वापिस अपने स्थान-पर आ जाते हैं। यदि ये ऊपर की ओर गमन करे, और मेरु पर्वत पर जाने के इच्छुक हों तो प्रथम उत्पात से नंदनवन तक जाते है और द्वितीय उत्पात से

છે. આ વિદ્યાના અભ્યાસના સમયમાં મુનિજન અંતરરહિત છઠછઠ તપસ્યા કરે છે. અને પારણાને દિવસે ૪૨ દોષોથી રહિત અંતપ્રાંત તેમજ તુચ્છ રૂક્ષ આદિક આહાર ગ્રહણ કરે છે. તે ઉપરાંત પણ અભિગ્રહ રાખે છે. આવી રીતે તેમને વિદ્યાચારણ નામની લબ્ધિ પ્રાપ્ત થાય છે. આ લબ્ધિવાળા મુનિજન વિદ્યાચારણ કહેવાય છે. જો કે પિંડાદિકની વિશુદ્ધિ સમસ્ત સાધુઓ માટે સાપેક્ષ છે, તો પણ આ ઋદ્ધિની પ્રાપ્તિ માટે સાભિગ્રહ અંતપ્રાંતાદિ આહાર ગ્રહણ કરવો આવશ્યક છે. વિદ્યાચારણ ઋદ્ધિના ધારક મુનિજન જો તિરછા ગમન કરે તો આ ઋદ્ધિના પ્રભાવથી પ્રથમ ઉત્પાતમાં માનુષોત્તર પર્વતસુધી ચાલ્યા જાય છે, બીજા ઉત્પાતમાં આઠમા નંદીશ્વર દ્વીપ સુધી જાય છે. તેનાથી આગળ તેમનું ગમન થતું નથી. પાછા એક જ ઉત્પાતથી એ નંદીશ્વર દ્વીપથી પોતાના સ્થાને આવી જાય છે. જો તેઓ ઉપરની તરફ ગમન કરે અને મેરૂપર્વત પર જવાની ઇચ્છા હોય તો પ્રથમ ઉત્પાતથી નંદનવન

नोत्पातेन नन्दनवनं गच्छन्ति, ततो द्वितीयोत्पातेन पण्डकवनम्, ततः प्रतिनिवर्तमानाः एकेनैवोत्पातेन स्वस्थानमागच्छन्ति। पण्डकवनादूर्ध्वं तेषां गतिर्नास्ति।

येऽष्टमाष्टमनिरन्तरतपःकरणेनाऽऽत्मानं भावयन्ति तेषां जङ्घाचारणनामकलब्धिः समुत्पद्यते, ये तया लब्ध्या युक्तास्ते जङ्घाचारणा उच्यन्ते। जङ्घाचारणास्तिर्यग्गत्या एकेनोत्पातेनेतस्त्रयोदशं रुचकवरद्वीपं गच्छन्ति, ततः परं तेषां गतिर्नास्ति, ततः प्रतिनिवर्तमाना प्रथमोत्पातेन नन्दीश्वरवरं द्वीपमागच्छन्ति, द्वितीयोत्पातेन स्वस्थानम्। ते पुनरूर्ध्वगत्या मेरुं जिगमिषवः स्वस्थानादेकोत्पत्त्या पण्डकवनमधिरोहन्ति। ततः प्रतिनिवर्तमाना प्रथमोत्पातेन नन्दनवनमागच्छन्ति, ततो द्वितीयोत्पातेन स्वस्थानमायान्ति। पण्डकवनादूर्ध्वं जङ्घाचारणानामपि गतिर्नास्ति।

---

पण्डकवन तक चले जाते है। फिर वहां से लौटकर एक ही छलांग में अपने स्थान पर वापिस आजाते है। पण्डकवन से आगे इनका गमन नहीं है। जंघाचारण नामकी लब्धि उन साधुजनों को प्राप्त होती है, जो निरन्तर–अन्तररहित अष्टम की तपस्या करते है। इस लब्धिसपन्न मुनिजन यदि तिरछे गमन करे तो प्रथम ही उत्पात में तेरहवां द्वीप जो रुचकवर द्वीप है वहां तक पहुँच जाते है, इसके आगे नहीं जाते है। क्यों कि आगे इनकी गति नहीं होती है। वहां से वापिस होकर ये प्रथम उत्पात में नन्दीश्वर द्वीप आ जाते हैं और द्वितीय उत्पात में अपने स्थान पर आ जाते है। यदि ये ऊपर की ओर उडे और मेरुपर्वत पर जाने की इच्छावाले हो तो अपने स्थान से एक ही उत्पात में पण्डकवन में पहुँच जाते है। वहां से जब ये वापिस होते हैं तो प्रथम उत्पात में ये नंदनवन आजाते है और फिर द्वितीय उत्पात् से अपने स्थान पर। पण्डकवन से आगे जंघाचारणवालों की भी गति नहीं है।

---

સુધી જાય છે, અને બીજા ઉત્પાતથી પંડકવન સુધી ચાલ્યા જાય છે. પછી ત્યાંથી પાછા આવતાં એક જ છલાંગમાં પોતાના સ્થાનપર પાછા આવી જાય છે. પંડકવનથી આગળ તેમનું ગમન નથી.

જંઘાચારણ નામની લબ્ધિ એ સાધુઓને પ્રાપ્ત થાય છે કે જે નિરંતર-સતત અષ્ટમ–અષ્ટમની તપસ્યા કરે છે. આ લબ્ધિવાળા મુનિજનો જો તિરછા ગમન કરે તો પ્રથમ જ ઉત્પાતમાં તેરમો દ્વીપ જે રૂચકવર નામે દ્વીપ છે, ત્યાં સુધી પહોંચી જાય છે, તેનાથી આગળ નથી જતા; કેમ કે આગળ તેમની ગતિ થતી નથી. ત્યાંથી પાછા વળતાં તેઓ પ્રથમ ઉત્પાતમાં નંદીશ્વરદ્વીપ આવી જાય છે, અને બીજા ઉત્પાતમાં પોતાના સ્થાનપર આવી જાય

चारणलब्धिसम्पन्नो हि साधुः खलु भगवद्वर्णितगणितानुयोगं विज्ञाय, स्वेन स्वेन गम्यं द्वीपवनादिकं विलोकयितुमौत्सुक्यवशात् स्वस्वलब्धिं स्फोटयित्वा तत्र तत्र जिगमिषति। गत्वा च तत्र तत्र यथाभगवद्वर्णितं द्वीपवनादिकं विलोक्य संजाताह्लादश्चैत्यानि वन्दते, अर्थात् भगवतोऽनन्तानि ज्ञानानि स्तौति, स्तुत्वा प्रतिनिवर्तते, प्रतिनिवृत्य इह स्वस्थानमागच्छति, आगत्य इह चैत्यानि वन्दते—अर्थात्—ज्ञानानि स्तौति। ज्ञानानन्त्याद् बहुवचनम्। सर्वमेतद् भगवतीसूत्रेऽभिहितम्। अधिकजिज्ञासुभिस्तत्र द्रष्टव्यम्। 'विज्जाहरा' विद्याधराः—रोहिणीप्रज्ञप्त्यादिविविधविद्याविशेषधारिणः। 'आगा-

चारणलब्धिसंपन्न साधुजन प्रभुद्वारा वर्णित गणितानुयोग को जान करके अपने२ द्वारा गम्य द्वीपवनादिक को देखने के लिये उत्कंठा के वशवर्ती हो, अपनी२ लब्धि को प्रगट करते है और वहां२ जाते है। भगवान् ने द्वीपवनादिक का स्वरूप जैसा कहा है वैसा वे वहां उसे देखते है और अपार आनंद से पुलकित होते हैं। प्रभु के अपार ज्ञान की अतिशय स्तुति करते है। फिर वहां से वापिस अपनी जगह पर आजाते हैं। आकर यहां पर भी चैत्यों की अर्थात् प्रभु के ज्ञान की स्तुति करते है। यह सब प्रकरण भगवतीसूत्र में कहा हुआ है। जिन्हें अधिक जानने की इच्छा हो वह वहां से देख लेवें। कितनेक मुनि रोहिणी—प्रज्ञप्ति—आदि विविध प्रकार की विद्याओं के धारण करनेवाले

છે. જો તેઓ ઉપરની તરફ ઉડે અને મેરૂ પર્વત પર જવાની ઈચ્છા કરે તો પોતાના સ્થાનથી એક જ ઉત્પાતમાં પંડકવનમાં પહોંચી જાય છે. ત્યાંથી જ્યારે તેઓ પાછા વળે ત્યારે પ્રથમ ઉત્પાતમાં નંદનવન આવી જાય છે, અને પછી બીજા ઉત્પાતમાં પોતાના સ્થાન પર આવે છે. પંડકવનથી આગળ જંઘાચારણવાલાની પણ ગતિ હોતી નથી.

ચારણલબ્ધિસંપન્ન સાધુજન પ્રભુએ વર્ણવેલા ગણિતાનુયોગને જાણીને પોતપોતાથી ગમ્ય દ્વીપવન આદિકને જોવા માટે ઉત્કંઠાને વશવતી થઇને પોતપોતાની લબ્ધિને પ્રગટ કરે છે, અને ત્યાં ત્યાં જાય છે. ભગવાને દ્વીપવન આદિકનાં સ્વરૂપ જેવાં કહેલાં છે તેવાં જ તેઓ ત્યાં જુએ છે, અને અપાર આનંદથી પુલકિત થાય છે. પ્રભુના અપાર જ્ઞાનની અતિશય સ્તુતિ કરે છે. પછી ત્યાંથી પાછા પોતાના સ્થાને આવી જાય છે. આવીને અહીં પણ ચૈત્યની અર્થાત્ પ્રભુના જ્ઞાનની સ્તુતિ કરે છે કેટલાએક મુનિ રોહિણી પ્રજ્ઞપ્તિ આદિ વિવિધ પ્રકારની વિદ્યાઓના ધારણ કરવાવાળા હતા. કેટલાએક મુનિજન

हरा आगासाइवाई, अप्पेगइया कणगावलितवोकम्मं पडिवण्णा, एवं एगावलिं खुड्डागसीहनिक्कीलियं तवोकम्मं पडिवण्णा, अप्पेगइया

साइवाई' आकाशातिपातिनः—आकाशं—व्योम अतिपतन्ति—अतिक्रामन्ति—आकाशगामिविद्याप्रभावात्—ये ते तथा। 'अप्पेगइया कणगावलितवोकम्मं पडिवण्णा' अप्येकके कनकावलीतपःकर्म प्रतिपन्नाः, 'एवं' एवम्—अनेन प्रकारेण 'एगावलिं' एकावलीं प्रतिपन्नाः, एकावलीनामकतपःकर्मण आकृतिरन्यत्रोक्ता—इति न सा विव्रियते। 'खुड्डागसीहनिक्कीलियं तवोकम्मं पडिवण्णा' क्षुल्लक—सिंह—निष्क्रीडितम्—क्षुल्लकं—लघु, सिंहनिष्क्रीडितं—सिंहगमनं तदिव यत्तपस्तत् सिंहनीष्क्रीडितम्, एतत्तपो वक्ष्यमाणमहासिंहनिष्क्रीडिताऽपेक्षया क्षुल्लकं, सिंहगमनञ्च अतिक्रान्तदेशाऽवलोकनतो भवति, एवमतिक्रान्ततपःसेवनेन अपूर्वतपसोऽनुष्ठानं यस्मिन् तत् सिंहनिष्क्री-

थे। कितनेक ऐसे मुनिजन थे जो आकाशगामी थे। इनके पास आकाशगामिनी विद्या थी। उसके ही प्रभाव से ये आकाशमें उडते थे। (अप्पेगइया कणगावलितवोकम्मं पडिवण्णा एवं एगावलिं खुड्डागसीहनिक्कीलियं तवोकम्मं पडिवन्ना) कितनेक ऐसे मुनिजन थे जो कनकावली तप को तपते थे, और कितनेक मुनिजन एकावली तप तपते थे। कितनेक ऐसे थे जो लघुसिंहनिष्क्रीडित तप की आराधना करते थे। इस तप के साथ "क्षुल्लक" पद का प्रयोग हुआ है सो महासिंहनिष्क्रीडित तपकी अपेक्षा समझना चाहिये। जिस प्रकार सिंह अपने द्वारा अतिक्रान्त देश को अवलोकन करते हुए आगे २ गमन करता है। उसी प्रकार इस तप में भी अतिक्रान्त तप के सेवन की अपेक्षा रखते हुए अपूर्व २ तपों का अनुष्ठान किया जाता है।

એવા હતાકે જે આકાશગામી હતા. તેમની પાસે આકાશગામિની વિદ્યા હતી. તેનાજ પ્રભાવથી તેઓ આકાશમાં ઉડતા હતા. (अप्पेगइया कणगावलितवोकम्मं पडिवण्णा, एवं एगावलिं खुड्डागसीहनिक्कीलियं तवोकम्मं पडिवन्ना) કેટલાએક એવા મુનિજનો હતા કે જે કનકાવલી તપ તપતા હતા, અને કેટલાક મુનિજન એકાવલી તપ તપતા હતા. કેટલાક એવા હતા જે લઘુસિંહ-નિષ્ક્રીડિત તપની આરાધના કરતા હતા. આ તપની સાથે "ક્ષુલ્લક" પદનો પ્રયોગ થયો છે, તે મહાસિંહનિષ્ક્રીડિત તપની અપેક્ષાએ સમજવો જોઈએ. જે પ્રકારે સિંહ પોતાથી અતિક્રાંત દેશને જોતો થકો આગળ આગળ ગમન કરે છે તે જ પ્રકારે આ તપમાં પણ અતિક્રાંત તપના સેવનની અપેક્ષા રાખતાં અપૂર્વ અપૂર્વ તપોનું અનુષ્ઠાન કરવામાં આવે છે.

महालयं सीहनिक्कीलियं तवोकम्मं पडिवण्णा, भद्दपडिमं महाभद्दपडिमं सव्वओभद्दपडिमं आयंबिलवद्धमाणं तवोकम्मं पडिवण्णा, मासियं भिक्खुपडिमं, एवं दोमासियं पडिमं, तिमासियं

डितं तपःकर्म प्रतिपन्नाः, 'अप्पेगइया महालयं सीहनीक्कीलियं तवोकम्मं पडिवण्णा' अप्येकके महासिंहनिष्क्रीडितं तपःकर्म प्रतिपन्नाः, 'भद्दपडिमं' भद्रप्रतिमां 'महाभद्दपडिम' महाभद्रप्रतिमां, 'सव्वओभद्दपडिमं' सर्वतोभद्रप्रतिमां प्रतिपन्नाः, 'आयंबिलवद्धमाणं तवोकम्मं पडिवण्णा' आचामाम्लवर्द्धमानकं तपःकर्म प्रतिपन्नाः। 'मासियं भिक्खुपडिम' मासिकीं भिक्षुप्रतिमां—मासपरिमाणा मासिकी तां भिक्षुप्रतिमाम्—अभिग्रहरूपाम्, तत्र हि मासं यावदेका दत्तिः—अविच्छिन्नदानम्, अर्थात्—अविच्छिन्नधारया करस्थाल्यादिभ्यः यद् भक्तं पानं च पतति सा

(अप्पेगइया महालयं सीहनीकीलियं तवोकम्मं पडिवन्ना) कितनेक मुनिजन महासिंहनिष्क्रीडित तप करते थे। (भद्दपडिमं महाभद्दपडिमं सव्वओभद्दपडिमं आयंबिलवद्धमाणं तवोकम्मं पडिवण्णा) कितनेक मुनि ऐसे थे जो भद्रप्रतिमा, महाभद्रप्रतिमा एवं सर्वतोभद्रप्रतिमा—रूप तप का आराधन करते थे। कितनेक ऐसे भी थे जो आयंबिलवर्द्धमान तप को करते थे। इनका विस्तृत वर्णन अन्य शास्त्रों में है। (मासियं भिक्खुपडिमं, एवं दोमासियं पडिमं तिमासियं पडिमं जाव सत्तमासियं भिक्खुपडिमं पडिवण्णा) कितनेक मुनिराज ऐसे थे जो एकमासिक भिक्षुप्रतिमा के धारी थे। इस प्रतिमा में एक महिने तक एक दत्ति होती है। भिक्षापात्र में अविच्छिन्नधारापूर्वक जो भिक्षा दाता के हाथ अथवा थाली आदिसे गिरती

(अप्पेगइया महालयं सीहनीक्कीलिय तवोकम्मं पडिवन्ना) કેટલાક મુનિજન મહાસિંહનિષ્ક્રીડિત તપ કરતા હતા. (भद्दपडिमं महाभद्दपडिमं सव्वओभद्दपडिमं आयविलवद्धमाणं तवोकम्मं पडिवण्णा) કેટલાએક મુનિઓ એવા હતા કે જેઓ ભદ્રપ્રતિમા મહાભદ્રપ્રતિમા તેમજ સર્વતોભદ્રપ્રતિમા રૂપ તપનું આરાધન કરતા હતા. કેટલાક એવા પણ હતા જે આયબિલ-વર્દ્ધમાન તપ કરતા હતા. આનું વિસ્તારપૂર્વક વર્ણન અન્ય શાસ્ત્રોમા છે. (मासियं भिक्खुपडिमं, एवं दोमासियं पडिमं तिमासियं पडिमं जाव सत्तमासियं भिक्खुपडिमं पडिवण्णा) કેટલાએક મુનિરાજ એવા હતા કે જે એકમાસિક ભિક્ષુપ્રતિમાના ધારક હતા. આ પ્રતિમામાં એક મહીના સુધી એક દત્તિ થાય છે. ભિક્ષા-

पडिमं जाव सत्तमासियं भिक्खुपडिमं पडिवण्णा, पढमं सत्तराइं-दियं भिक्खुपडिमं पडिवण्णा जाव तच्चं सत्तराइंदियं भिक्खु-

दत्ति', एवं द्वितीयाद्याः सप्तम्यन्ता एकैकदत्तिवृद्धियुक्ताः। एवं 'दोमासियं पडिमं' द्वैमासिकीं प्रतिमाम् प्रतिपन्नाः। 'तिमासियं पडिमं' त्रैमासिकीं प्रतिमां प्रतिपन्नाः। 'जाव सत्तमासियं भिक्खुपडिमं पडिवण्णा' यावत् सप्तमासिकीं भिक्षुप्रतिमां प्रतिपन्नाः। 'पढमं सत्तराइंदियं भिक्खुपडिमं पडिवण्णा जाव तच्चं सत्तराइंदियं भिक्खुपडिमं पडिवण्णा' प्रथमां सप्तरात्रिन्दिवां भिक्षु-प्रतिमां प्रतिपन्ना'—यावत्तृतीयां सप्तरात्रिन्दिवां भिक्षुप्रतिमां प्रतिपन्नाः। तत्र सप्तरात्रिन्दिवा-

है उसका नाम दत्ति है। इस प्रकार १ महीने तक आहार की एक दत्ति और पानी की एक दत्ति ग्रहण की जाती है। इसी प्रकार दोमास प्रमाणवाली–भिक्षुप्रतिमा को, तीन मास की प्रमाणवाली भिक्षुप्रतिमा को यावत् सातमास प्रमाणवाली भिक्षुप्रतिमा को पालन करनेवाले मुनिजन थे। द्विमासिक भिक्षुप्रतिमामें २ दत्तियाँ आहार की २ दत्तियाँ पानी की ली जाती है। इस क्रमिक वृद्धि से सातमास–प्रमाणवाली सप्तम-भिक्षुप्रतिमा में ७ दत्तियाँ आहार की और सात दत्तियाँ पानी की ली जाती है। (पढमं सत्तराइंदियं भिक्खुपडिमं पडिवण्णा जाव तच्चं सत्तराइंदियं भिक्खुपडिमं पडिवन्ना) और पहली सात दिनरात की भिक्षुप्रतिमा के, दूसरी सात दिनरात की भिक्षुप्रतिमा के, तथा तीसरी सात दिनरात की भिक्षुप्रतिमा के धारी थे। इन तीनों

પાત્રમાં અવિચ્છિન્ન–ધારાપૂર્વક જે ભિક્ષા દાતાના હાથે અથવા થાળીથી પડે છે તેનું નામ દત્તિ છે. આ પ્રકારે એક મહિના સુધી આહારની એક દત્તિ અને પાણીની એક દત્તિ ગ્રહણ કરાય છે. એ પ્રકારે બે માસના પ્રમાણ-વાળી ભિક્ષુ–પ્રતિમાનું, ત્રણ માસ પ્રમાણવાળી ભિક્ષુપ્રતિમાનું, યાવત્ સાત માસ પ્રમાણ વાળી ભિક્ષુપ્રતિમાનુ પાલન કરવાવાળા મુનિજન હતા. દ્વિમાસિકભિક્ષુપ્રતિમામા ૨ દત્તિ આહારની, ૨ દત્તિ પાણીની લેવામાં આવે છે. આ પ્રકારે ક્રમિક વૃદ્ધિથી સાત માસના પ્રમાણવાળી સપ્તમ ભિક્ષુપ્રતિ-મામાં ૭ દત્તિ આહારની અને ૭ દત્તિ પાણીની લેવામાં આવે છે. (પઢમં સત્તરાઇંદિયં ભિક્ખુપડિમં પડિવણ્ણા જાવ તચ્ચં સત્તરાઇંદિય ભિક્ખુપડિમં પડિવન્ના) અને પહેલી સાત દિવસ રાતની ભિક્ષુપ્રતિમાના, બીજી સાત દિવસ–રાતની ભિક્ષુપ્રતિમાના તથા ત્રીજી સાત દિવસરાતની ભિક્ષુપ્રતિમાના ધારકો હતા. આ ત્રણેય સાત દિવસ–રાતની ભિક્ષુપ્રતિમાઓની વિધિ આ પ્રકારે છે:—

**पडिमं पडिवण्णा, अहोराइंदियं भिक्खुपडिमं पडिवण्णा, एक्क-**

सप्त रात्रिन्दिवानि=अहोरात्रा यस्यां सा सप्तरात्रिन्दिवा-सप्ताऽहोरात्रप्रमाणा। प्रथमायां च चतुर्थचतुर्थेन पानकाऽऽहारविरहित उत्तानको वा पार्श्वशायी वा निपद्योपगतो वा ग्रामादिभ्यो बहिर्विहरति। द्वितीया सप्तरात्रिन्दिवाऽप्येवंविधैव, नवरम्-दण्डाऽऽयतो वा लगण्डशायी वा उत्कुटुको वा विहरति। एवं तृतीया सप्तरात्रिन्दिवाऽपि, नवरं वीराऽऽसनिको वा गोदोहिकस्थितो वा आम्रकुब्जको वाऽऽस्ते। 'अहोराइंदियं भिक्खुपडिमं

सात दिनरात की भिक्षुप्रतिमाओं की विधि इस प्रकार है-प्रथम सप्तरात्रिन्दिव भिक्षुप्रतिमा में-अष्टमी भिक्षुप्रतिमा में-एकान्तर चउविहार उपवास करते हुए ग्राम से बाहर कायोत्सर्ग करे, और तीन आसन करे। उनके नाम (१) **उत्तानासन**=चित्त होकर सोना (२) एकपार्श्वासन=एक करवट से सोना, और (३) निपद्यासन-पर्यङ्कासन से रहना। दूसरी और तीसरी सात दिनरात की भिक्षुप्रतिमायें-नवमी तथा दसमी भिक्षुप्रतिमायें भी इसी प्रकार की है। केवल आसन के भेद है। नौमी के तीन आसन-दण्डासन, लगण्डासन, उत्कुटुकासन। (१) दण्डासन=दण्ड के समान सीधे शयन करना। (२) लगण्डासन=टेढे काठ के जैसे शयन करना अर्थात् मस्तक और एँडी को पृथ्वी पर सटा कर पीठ को अधर रख कर सोना, (३) उत्कुटुकासन=पैरों के बल बैठना। दसमी के तीन आसन-वीरासन, गोदोहिकासन, आम्रकुब्जकासन। (१) वीरासन=पृथ्वी पर पैर रख कर सिंहा-

પ્રથમ સપ્તરાત્રિંદિવ ભિક્ષુપ્રતિમામાં-અષ્ટમી ભિક્ષુપ્રતિમામાં-એકાન્તર ચૌવિહાર ઉપવાસ કરતાં ગામથી બહાર જઈ કાયોત્સર્ગ કરવો. અને ત્રણ આસન કરવા. તેમનાં નામ-(૧) ઉત્તાનાસન-ચિત્તા થઈને સુવું. (૨) એકપાર્શ્વાસન-એક પડખે રહી સુવુ, અને (૩) નિષદ્યાસન-પર્યંકાસનથી રહેવું. બીજી અને ત્રીજી સાત દિવસ-રાતની ભિક્ષુપ્રતિમાઓ-નૌમી અને દશમી ભિક્ષુપ્રતિમાઓ-પણ આ પ્રકારની છે. કેવલ આસનમા ફેર છે. નવમી પ્રતિમાના ત્રણ આસન-દંડાસન, લગંડાસન, ઉત્કુટુકાસન. (૧) દંડાસન-દંડની પેઠે સીધા સુઈ જવું, (૨) લગંડાસન-વાંકા લાકડાની પેઠે શયન કરવું અર્થાત્ માથું અને એડી (પાની) ને પૃથ્વીપર લગાડી પીઠને અધર રાખી સુવું, (૩) ઉત્કુટુકાસન-પગના બલથી (ઉભડક પગે) બેસવું.

દશમી પ્રતિમાના ત્રણ આસન-વીરાસન, ગોદોહિકાસન, આમ્રકુબ્જ-કાસન. (૧) વીરાસન-પૃથ્વીપર પગ રાખીને સિંહાસન પર બેઠેલાની પેઠે

**राइंदियं भिक्खुपडिमं पडिवण्णा, सत्तसत्तमियं भिक्खुपडिमं,**

**पडिवण्णा'** अहोरात्रिन्दिवां भिक्षुप्रतिमां प्रतिपन्नाः—आहोरात्रिकीमित्यर्थः। अत्र—रात्रिन्दिवशब्दो रात्रिपरो बोध्य.। अस्याञ्च षष्ठोपवासिको ग्रामादिभ्यो बहिः प्रलम्बभुजस्तिष्ठति। '**एकराइंदियं भिक्खुपडिमं पडिवण्णा'** एकरात्रिन्दिवाम्=एकरात्रप्रमाणां भिक्षुप्रतिमां प्रतिपन्नाः; अत्रापि 'रात्रिन्दिव' शब्दो रात्रिपरो बोध्यः। अस्यां चाऽष्टमभक्तिको ग्रामाद् बहिरीषदवनतगात्रोऽनिमिषनयनः शुष्कपुद्गलनिबद्धदृष्टिर्जिनमुद्रास्थापि-

---

सन पर बैठे हुए के समान घुटने अलग २ रखकर विना सहारे स्थिर रहना, (२) गोदोहिकासन—गोदोहिक के समान बैठना अर्थात् जैसे गाय दूहने वाला जब दूध दूहता है तब वह अपने दोनों पैरों के अग्रभाग के सहारे बैठता है, उसी प्रकार बैठना। (३) आम्रकुब्जकासन=आम्रफल के समान कूबड़े होकर स्थिर रहना। आठवीं नौमी दशमी प्रतिमा में तीन २ आसन बताये है, उन तीन तीन में से किसी एक आसन से रहे। तथा (**अहोराइंदियं भिक्खुपडिमं पडिवण्णा**) ग्यारहवीं अहोरात्रिक भिक्षुप्रतिमा के धारक थे। इसमें चउविहार बेला किया जाता है, और गाम के बाहर आठ प्रहरो तक काउसग किया जाता है। (**एक्कराइंदियं भिक्खुपडिमं पडिवण्णा**) बारहवीं एकरात्रिक भिक्षुप्रतिमा के धारक थे। इसमें चउविहार तेले के दिन गाम से बाहर श्मशान भूमि में जाकर किसी एक पुद्गल पर दृष्टि स्थिर करके चार प्रहरों तक कायोत्सर्ग किया जाता है। इन सभी प्रतिमाओं—अभिग्रहविशेषों में सभी का

---

ગોઠણો જુદા જુદા રાખીને ટેકો લીધા વિના સ્થિર રહેવું, (૨) ગોદોહિકાસન-ગોદોહિકની પેઠે બેસવું અર્થાત્ જેમ ગાય દોહવાવાળો જ્યારે દૂધ દોહે છે ત્યારે તે પોતાના બન્ને પગના અગ્રભાગને ટેકે બેસે છે, તેવી જ રીતે બેસવું (૩). આમ્રકુબ્જકાસન-આમ્રફલની પેઠે કૂંબડા થઈને સ્થિર રહેવું. આઠમી નોમી અને દશમી પ્રતિમામાં ત્રણ ત્રણ આસન બતાવ્યાં છે. તે ત્રણ ત્રણમાંથી કોઈ પણ એક આસનથી રહેવું. તથા (अहोराइंदियं भिक्खुपडिमं पडिवण्णा) અહોરાત્ર-દિવસરાતની અગ્યારમી ભિક્ષુપ્રતિમાના ધારકો હતા. આમાં ચૌવિહાર છઠ કરાય છે, અને ગામની બહાર આઠ પહોરનો કાઉસગ કરાય છે. (एक्कराइंदियं भिक्खुपडिमं पडिवण्णा) બારમી એકરાત્રિક ભિક્ષુ પ્રતિમાના ધારક હતા. આમાં ચૌવિહાર તથા અટ્ઠમને દિવસે ગામથી બહાર શ્મશાન ભૂમિમાં જઈને એક પુદ્ગલપર દૃષ્ટિ સ્થિર કરીને કાયોત્સર્ગ કરાય છે. આ બધી પ્રતિમાઓમાં-

तपादः प्रलम्बितभुजस्तिष्ठति। एतासु प्रतिमासु न सर्वेषामधिकारः, किन्तु विशिष्टसंहननवतामेव। आह च, 'पडिवज्जइ एयाओ, संघयणधिइजुओ महासत्तो। पडिमाउ भावियप्पा सम्मं गुरुणा अणुन्नाओ॥ १ ॥ इति, 'सत्तसत्तमियं भिक्खुपडिमं' सप्तसप्तमिकां भिक्षुप्रतिमां—सप्त सप्तमानि दिनानि यस्यां सा सप्तसप्तमिका, इयं च सप्तभिर्दिनानां सप्तकैर्भवति अर्थात्—सप्तभिः सप्ताऽहैरिति। तत्र च प्रथमदिने एका दत्तिर्भक्तस्य, एकैव दत्तिः पानकस्य, एवं द्वितीयादिषु दिनेषु क्रमेणैकैकदत्तिवृद्ध्या सप्तमदिने सप्त दत्तयः। एवम्

अधिकार नहीं है, किन्तु विशिष्ट संहननवाले ही इन प्रतिमाओं का आराधन कर सकते हैं। कहा भी है—'पडिवज्जइ एयाओ, संघयण–धिइ–जुओ महासत्तो। पडिमाउ भावियप्पा, सम्मं गुरुणा अणुन्नाओ॥" छाया—प्रतिपद्यते एताः संहनन-धृति-युतो महासत्त्वः। प्रतिमा भावितात्मा, सम्यग्गुरुणा अनुज्ञातः॥ अर्थात्—महासत्त्वशाली, संहनन और धैर्य से युक्त भावितात्मा मुनिजन ही गुरु से सम्यक् अनुज्ञात होकर इन प्रतिमाओं को स्वीकार करते हैं। तथा (सत्तसत्तमियं भिक्खुपडिमं) सात हैं सातवें दिन जिसमें ऐसी भिक्षुप्रतिमा के अर्थात् ऊनपचास दिन की भिक्षुप्रतिमा के धारक थे। यह प्रतिमा सातसप्ताहों में की जाती है। इसमें प्रथम सप्ताह के प्रथमदिन में एक दत्ति आहार की और एक दत्ति पानी की ली जाती है, द्वितीय-दिन में दो दत्तियाँ आहार की और दो दत्तियाँ पानी की ली जाती हैं। इसी तरह प्रतिदिन एक एक दत्ति की वृद्धि से सातवें दिन सात दत्तियाँ आहार की और

અભિગ્રહ વિશેષોમાં બધાનો અધિકાર નથી, પરંતુ વિશિષ્ટસંહનનવાળા જ આ બધી પ્રતિમાઓનું આરાધન કરી શકે છે. કહ્યું પણ છે—

" पडिवज्जइ एयाओ, संघयण–धिइ–जुओ महासत्तो।
पडिमाउ भावियप्पा, सम्मं गुरुणा अणुन्नाओ "॥

छाया—प्रतिपद्यते एताः संहनन–धृतियुतो महासत्त्वः।
प्रतिमा भावितात्मा, सम्यग्गुरुणा अनुज्ञातः॥

અર્થાત્ મહાસત્ત્વશાલી સંહનન અને ધૈર્યથી યુક્ત ભાવિતાત્મા મુનિજન સમ્યક્ અનુજ્ઞાત થઈને અર્થાત્ ગુરૂની આજ્ઞા લઈને, પ્રતિમાઓનો સ્વીકાર કરે છે. તથા (सत्तसत्तमियं भिक्खुपडिमं) સાતછે સાતમો દિવસ જેમાં એવી ભિક્ષુપ્રતિમાના અર્થાત્ ઓગણપચાસ દિવસની ભિક્ષુપ્રતિમાના ધારક હતા. આ પ્રતિમા સાત સપ્તાહોમાં કરાય છે. તેમા પ્રથમ સપ્તાહના પ્રથમ દિવસે એક દત્તિ આહારની અને એક દત્તિ પાણીની લેવાય છે. બીજે

**अट्ठअट्ठमियं भिक्खुपडिमं, णवणवमियं भिक्खुपडिमं, दसदस-**

'**अट्ठअट्ठमियं** '**भिक्खुपडिमं**' अष्टाऽष्टमिकां भिक्षुप्रतिमाम्, '**णवणवमियं**' नवनवमिकां भिक्षुप्रतिमाम्, '**दसदसमियं**' दशदशमिकां भिक्षुप्रतिमाम्, नवरम्—दत्तिवृद्धिः

सात दत्तियाँ पानी की ली जाती है। इसी प्रकार दूसरे सप्ताह से लेकर सातवें सप्ताह तक की दत्तियों के विषय में भी समझना चाहिये। इस प्रकार आहार और पानी की सब दत्तियाँ ३९२ होती है। तथा (**अट्ठअट्ठमियं भिक्खुपडिमं**) अष्टाष्टमिक भिक्षुप्रतिमा के धारक थे। यह भिक्षुप्रतिमा आठ अष्टाहो में अर्थात् चौसठ दिनों में की जाती है। इसमें प्रथम अष्टाह के प्रथम दिन में एकदत्ति आहार की और एक दत्ति पानी की ली जाती है। प्रत्येक दिन में एक एक दत्ति की वृद्धि होने के कारण आठवें दिन में आठ दत्तियाँ आहार की और आठ दत्तियाँ पानी की ली जाती है। इसी प्रकार अवशिष्ट सातो अष्टाहो के बारे में भी समझना चाहिये। इस प्रकार आहार और पानी की कुल दत्तियाँ ५७६ होती हे। तथा (**नवनवमियं भिक्खुपडिमं**) नवनवमिका भिक्षुप्रतिमा के धारक थे। यह भिक्षुप्रतिमा नौ नवाहों में, अर्थात् ८१ दिनों में पूरी होती है। प्रत्येक नौ दिनो के अन्तिम दिन में एक एक दत्ति की वृद्धि होने से नौ दत्तियाँ आहार की और नौ दत्तियाँ पानी की होती है।

દિવસે બે દત્તિ આહારની અને બે દત્તિ પાણીની લેવાય છે. એવી રીતે પ્રતિદિન એક એક દત્તિના વધારાથી સાતમે દિવસે ૭ દત્તિ આહારની અને ૭ દત્તિ પાણીની લેવાય છે. આ પ્રકારે બીજા સપ્તાહથી લઈને ૭ મા સપ્તાહ સુધીની દત્તિઓના વિષયમાં પણ સમજી લેવુ જોઈએ. આ પ્રકારે આહાર અને પાણીની બધી દત્તિઓ ૩૯૨ થાય છે. તથા (अट्ठअट्ठमियं भिक्खुपडिमं) અષ્ટાષ્ટમિક ભિક્ષુપ્રતિમાના ધારકો હતા. આ ભિક્ષુપ્રતિમા આઠ અષ્ટાહોમાં અથાત્ ચોસઠ દિવસોમાં કરાય છે. તેમા પ્રથમ અષ્ટાહના (અઠવાડિયાના) પ્રથમ દિવસે એક દત્તિ આહારની અને એક દત્તિ પાણીની લેવાય છે. પ્રત્યેક દિવસે એક એક દત્તિનો વધારો થવાના કારણે આઠમે દિવસે આઠ દત્તિઓ આહારની અને આઠ દત્તિઓ પાણીની લેવાય છે. એજ પ્રકારે બાકીના ૭ અષ્ટાહો (અઠવાડિયા)ના બારામા પણ સમજવું જોઈએ. એવી રીતે આહાર અને પાણીની કુલ દત્તિઓ ૫૭૬ થાય છે. તથા (नवनवमियं भिक्खुपडिमं) નવનવમિકા ભિક્ષુપ્રતિમાના ધારકો હતા. આ ભિક્ષુપ્રતિમા નવનવાહોમાં અર્થાત ૮૧ દિવસોમાં પૂરી થાય છે. પ્રત્યેક નવ

मियं भिक्खुपडिमं, खुड्डियं मोयपडिमं पडिवण्णा, महल्लियं मोयपडिमं पडिवण्णा, जवमज्झं चंदपडिमं पडिवण्णा, वइर-

संख्याक्रमेण कार्या। केचित् 'खुड्डियं मोयपडिमं पडिवण्णा' क्षुल्लिकां मोकप्रतिमां प्रतिपन्ना', अस्याः क्षुल्लकत्वं महत्यपेक्षया बोध्यम्। तथा 'महल्लियं मोयपडिमं पडिवण्णा' महतीं मोकप्रतिमां प्रतिपन्नाः। अनयोः प्रतिमयोर्व्याख्या ग्रन्थान्तरे विलोकनीया। 'जवमज्झं चंदपडिमं पडिवण्णा' यवमध्यां चन्द्रप्रतिमां प्रतिपन्नाः—यवस्येव मध्य यस्यां सा यवमध्या, चन्द्र इव कलावृद्धिहानिभ्यां या प्रतिमा सा चन्द्रप्रतिमा, तथा हि शुक्लप्रतिपदि—एकं कवलम् अभ्यवहृत्य प्रतिदिनमेकैक-

इस प्रकार आहार और पानी की सब दत्तियाँ ८१० होती हैं। तथा (दसदसमियं भिक्खुपडिमं) दशदशमिका भिक्षुप्रतिमा के धारक थे। यह भिक्षुप्रतिमा दश दशाहों में, अर्थात् सौ दिनो में पूरी होती है। इसमें प्रत्येक दशवें दिनमें दस दत्तियाँ आहार की और दस दत्तियाँ पानी की होती हैं। इस प्रकार आहार और पानी की कुल दत्तियाँ ११०० होती है। कितनेक मुनिजन (खुड्डियं मोयपडिमं पडिवण्णा) क्षुल्लक मोकप्रतिमा के धारक थे। तथा—(महल्लियं मोयपडिमं पडिवण्णा) महामोकप्रतिमा के धारक थे। तथा कितनेक मुनिजन (जवमज्झं चंदपडिमं पडिवण्णा) यवमध्य चन्द्रप्रतिमा के धारक थे। इस प्रतिमा में शुक्ल पक्ष की एकम तिथि में एक कवल आहार किया जाता है। प्रतिदिन एक एक कवल की वृद्धि से पूर्णिमा में १५ कवल आहार

દિવસોના અંતના દિવસે એક એક દત્તિની વૃદ્ધિ થવાથી નવ દત્તિઓ આહારની અને નવ દત્તિઓ પાણીની થાય છે. આ પ્રકારે આહાર અને પાણીની બધી દત્તિઓ ૮૧૦ થાય છે. તથા (दसदसमियं भिक्खुपडिमं) દશદશમિકા ભિક્ષુપ્રતિમાના ધારકો હતા. આ ભિક્ષુપ્રતિમા દશ દશાહોમાં અર્થાત સો દિવસોમાં પૂરી થાય છે. એમાં પ્રત્યેક દશમા દિવસે દશ દત્તીઓ આહારની અને દશ દત્તિઓ પાણીની હોય છે.આ પ્રકારે આહાર અને પાણીની કુલ દત્તિઓ ૧૧૦૦ થાય છે. કેટલાક મુનિજન (खुड्डियं मोयपडिमं पडिवण्णा) ક્ષુલ્લકમોકપ્રતિમાના ધારક હતા. તથા (महल्लियं मोयपडिमं पडिवण्णा) મહામોક પ્રતિમાના ધારક હતા. તથા કેટલાક મુનિજન (जवमज्झ चंदपडिमं पडिवण्णा) યવમધ્યચન્દ્રપ્રતિમાના ધારક હતા. આ પ્રતિમામાં શુક્લપક્ષની એકમ તિથિમાં એક કોળિઆનો આહાર કરાય છે. પ્રતિદિન એક એક કોળિઆનો વધારો

**मज्झं चंदपडिमं पडिवण्णा, विवेगपडिमं विओसग्गपडिमं उव-**

कवलवृद्धया पञ्चदश पौर्णमास्यां, कृष्णप्रतिपदि च पञ्चदशैव भुक्त्वा द्वितीयादौ प्रतिदिनम् एकैककवलहान्या अमावास्यायामेकमेव यस्यां भुङ्क्ते सा स्थूलमध्यत्वाद् यवमध्येति तां प्रतिपन्नाः । 'वइर-(वज्ज)मज्झं चंदपडिमं पडिवण्णा' वज्रमध्यां चन्द्रप्रतिमां प्रतिपन्नाः-वज्रस्येव मध्यं यस्यां सा तथा, यस्यां हि कृष्णप्रतिपदि पञ्चदश कवलान् भुक्त्वा ततः प्रतिदिनमेकैकहान्या अमावास्यायामेकं, शुक्लप्रतिपद्यपि एकमेव, ततो द्वितीयादौ पुनरेकैकवृद्धया पौर्णमास्यां पञ्चदश भुङ्क्ते सा तनुमध्यत्वाद् वज्रमध्या इति तां प्रति-

किया जाता है । तथा कृष्णपक्ष की एकम तिथि में १५ कवल आहार किया जाता है, और द्वितीया से एक एक कवल घटाने से अमावास्या तिथि में मात्र एक कवल आहार किया जाता है । जैसे-यव का मध्यभाग स्थूल होता है, उसी प्रकार इस प्रतिमा का भी मध्यभाग पूर्णिमा और कृष्ण पक्षकी एकम, पन्द्रह पन्द्रह कवल आहार-लेने के कारण स्थूल है । इसलिये इस प्रतिमा को '**यवमध्यचन्द्रप्रतिमा**' कहते हैं । तथा-कितनेक मुनिजन (**वइरमज्झं चंदपडिमं पडिवण्णा**) वज्रमध्य चन्द्रप्रतिमा को धारण किये हुए थे । यह प्रतिमा कृष्णपक्ष की एकम के दिन पन्द्रह कवल आहार कर के प्रारम्भ की जाती है । प्रतिदिन एक एक कवल घटाने से अमावास्या में एक कवल तथा-शुक्लपक्ष की एकमतिथि में एक कवल आहार किया जाता है । फिर प्रतिदिन एक एक कवल की वृद्धि से पूर्णिमा के दिन पन्द्रह कवल आहार लिया जाता

કરવાનો હોવાથી પૂનમના દિવસે ૧૫ કોળિઆનો આહાર કરાય છે, તથા કૃષ્ણપક્ષની એકમ તિથિએ ૧૫ કોળિઆનો આહાર કરાય છે, અને બીજથી એક એક કોળિઆનો આહાર ઘટાડતાં અમાવાસ્યા તિથિમાં માત્ર એક કોળિઆનો આહાર કરાય છે. જેમ યવનો મધ્યભાગ સ્થૂલ હોય છે તેવી જ રીતે આ પ્રતિમામાં પણ મધ્યભાગ પૂનમ અને કૃષ્ણપક્ષની એકમ, પંદર પંદર કોળિઆ આહાર લેવાને કારણે, સ્થૂલ છે; તેથી આ પ્રતિમાને 'યવમધ્ય-ચંદ્રપ્રતિમા' કહે છે. તથા કેટલાક મુનિજન (वइरमज्झं चंदपडिमं पडिवण्णा) વજ્રમધ્યચંદ્રપ્રતિમાને ધારણ કરવાવાળા હતા. આ પ્રતિમા કૃષ્ણપક્ષની એકમને દિવસે પંદર કોળિઆ આહાર લઈને શરૂ કરાય છે. પ્રતિદિન એક એક કોળિઓ આહાર ઘટાડતાં અમાવાસ્યાને દિવસે એક કોળિઓ તથા શુક્લ પક્ષની એકમ તિથિએ એક કોળિઓ આહાર કરાય છે. પછી પ્રતિદિન

**हाणपडिमं पडिसंलीणपडिमं पडिवण्णा संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणा विहरंति ॥ सू. २४ ॥**

पन्नाः। तथा—केचित् '**विवेगपडिमं**' विवेकप्रतिमां—विवेचनं विवेकः=त्यागः,स च आन्तराणां कषायादीनां बाह्यानां च गणशरीरानुचितभक्तपानादीनाम्, तस्य प्रतिमा=प्रतिपत्तिर्विवेकप्रतिमा तां, '**विओसग्गपडिमं**' व्युत्सर्गप्रतिमां=कायोत्सर्गप्रतिमाम्, '**उवहाणपडिमं**' उपधानप्रतिमाम्—मोक्षं प्रति उप=सामीप्येन दधाति=नयतीत्युपधानम्—अनशनादिकं तपस्तद्विषया प्रतिमा=अभिग्रहस्तां, तथा '**पडिसंलीणपडिमं**' प्रतिसंल्लीनप्रतिमां=क्रोधादिनिरोधाऽभिग्रहं '**पडिवण्णा**' प्रतिपन्नाः संयमेन तपसा आत्मानम् भावयन्तः विहरन्ति ॥ सू० २४ ॥

है। जैसे वज्रका मध्यभाग पतला होता है उसी प्रकार इस प्रतिमा का भी मध्यभाग अमावास्या और शुक्लपक्ष की एकम, एक एक कवल आहार लेने के कारण पतला है, इसीलिये इस प्रतिमा को 'वज्रमध्यचन्द्रप्रतिमा' कहते है। तथा कितनेक मुनिजन '**विवेगपडिमं**' विवेकप्रतिमाके अर्थात् आभ्यन्तरिक कषायादिकों के, तथा—गण, स्वशरीर और अकल्पनीय भक्तपानादिकों के त्याग की प्रतिमा के, '**विओसग्गपडिमं**' व्युत्सर्गप्रतिमा के, अर्थात् कायोत्सर्गप्रतिमा के, '**उवहाणपडिमं**' उपधान प्रतिमा के अर्थात् अनशनादिरूप उग्र तपस्या की प्रतिमा के, तथा—(**पडिसंलीणपडिमं**) प्रतिसंलीन प्रतिमा के अर्थात् क्रोध आदि कषायों के निरोध करने के अभिग्रह के (**पडिवण्णा**) धारक थे। पूर्वोक्त सभी प्रकार के मुनिराज सत्रह प्रकार के संयम से

એક એક કોળિઓ વધારતાં જઈ પૂનમને દિવસ પંદર કોળિઆ આહાર લેવાય છે. જેમ વજ્રનો મધ્યભાગ પાતળો હોય છે તેવી જ રીતે આ પ્રતિમામાં પણ મધ્યભાગ—અમાવાસ્યા અને શુક્લ પક્ષની એકમ, એક એક કોળિઓ આહાર લેવાના કારણે પાતળો છે, એ માટે જ આ પ્રતિમાને "વજ્રમધ્ય-ચંદ્રપ્રતિમા" કહેવાય છે. તથા કેટલાએક મુનિજન (विवेगपडिमं) વિવેક-પ્રતિમાના અર્થાત આભ્યંતરિક કષાય આદિના, તથા—ગણના, પોતાના-શરીરના અને અકલ્પનીય ભોજન પાન આદિના ત્યાગની પ્રતિમાના (विओसग्गपडिमं) વ્યુત્સર્ગપ્રતિમા એટલે કાયોત્સર્ગપ્રતિમાના, (उवहाणपडिमं) ઉપધાનપ્રતિમાના અર્થાત્ અનશન આદિરૂપ ઉગ્ર તપસ્યાની પ્રતિમાના, તથા (पडिसंलीणपडिमं) પ્રતિસંલીનપ્રતિમાના અર્થાત્ ક્રોધ આદિ કષાયોના નિરોધ કરવાના અભિગ્રહના (पडिवण्णा) ધારક હતા. પૂર્વોક્ત સર્વ પ્રકારના મુનિરાજ સત્તર પ્રકારના સંય-

**मूलम्—तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतेवासी बहवे थेरा भगवंतो जाइसंपण्णा कुलसंपण्णा बलसंपण्णा रूवसंपण्णा विणयसंपण्णा णाणसंपण्णा दंसणसंपण्णा**

**टीका—'तेणं कालेणं' इत्यादि।** तस्मिन् काले तस्मिन् समये श्रमणस्य भगवतो महावीरस्य **'अंतेवासी'** अन्तेवासिनः–शिष्या बहवः स्थविराः= चिरतरकालपालितश्रामण्यपर्याया, भगवन्तः=संयमशोभाशालिनः, एषां विशेषणान्याह–**'जाइसंपण्णा'** जातिसम्पन्नाः-उत्तममातृकवंशयुक्ताः, एवम् **'कुलसंपण्णा'** कुलसम्पन्नाः—श्रेष्ठपैतृकवंशयुक्ताः, **'बलसंपण्णा'** बलसम्पन्नाः—बलं—संहननसमुत्थितः पराक्रमः, तेन सम्पन्नाः-युक्ताः, **'रूवसंपण्णा'** रूपसम्पन्नाः—रूपम्—आकृतिः-सुन्दराऽऽकारस्तेन युक्ताः। **'विण-**

---

तथा बारह प्रकार के तप से आत्मा को भावित करते हुए विचरते थे ॥ सू० २४ ॥

**'तेणं कालेणं तेणं समएणं' इत्यादि.**

**(तेणं कालेणं तेणं समएणं)** उसकाल उस समय में **(समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतेवासी बहवे थेरा भगवंतो)** श्रमण भगवान् महावीर के अन्तेवासी–शिष्य अनेक स्थविर भगवन्त थे। दीक्षापर्याय से युक्त एवं धर्म से प्रचलित को पुनः धर्म में स्थिर करनेवाले को स्थविर कहते हैं। संयमशोभासे जो युक्त हो उन्हे 'भगवन्त' कहते है। ये **(जाइसंपण्णा)** जातिसंपन्न—उत्तममातृवंश के थे, और **(कुलसंपण्णा)** कुल—सम्पन्न—उत्तमपितृवंश के थे। **(बलसंपण्णा)** संहनननामकर्मसे प्राप्त बल से विशिष्ट थे। **(रूवसंपण्णा)** सुन्दर आकृतिवाले थे। **(विणयसंपण्णा)** जिससे अष्टविध कर्ममल

---

મથી તથા બાર પ્રકારના તપથી આત્માને ભાવિત કરતા વિચરતા હતા. (સૂ. ૨૪)

'तेणं कालेणं तेणं समएणं' ઈત્યાદિ.

(तेणं कालेणं तेणं समएणं) તે કાલ તે સમયમાં (समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतेवासी बहवे थेरा भगवंतो) શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીરના અંતેવાસી–શિષ્ય અનેક સ્થવિર ભગવંતો હતા. ધર્મથી ચલાયમાન થતા સાધુઓને ફરીથી ધર્મમાં સ્થિર કરવાવાળાને સ્થવિર કહે છે. જે સંયમ–શોભાવાળા હોય તેમને ભગવંત કહે છે. તેઓ (जाइसंपण्णा) જાતિસંપન્ન–ઉત્તમ માતૃવંશના હતા, અને (कुलसंपण्णा) કુલ સંપન્ન–ઉત્તમ પિતૃવંશના હતા. (बलसंपण्णा) સંહનનનામકર્મથી પ્રાપ્ત થયેલ બલવડે વિશિષ્ટ હતા. (रूवसंपण्णा) સુંદર આકૃતિવાળા હતા. (विणयसंपण्णा) જેનાથી

चरित्तसंपण्णा लज्जासंपण्णा लाघवसंपण्णा ओयंसी तेयंसी

यसंपण्णा' विनयसम्पन्नाः—विनीयतेऽपनीयते- संक्लेशकारकमष्टविधं कर्म येन स विनयः— अभ्युत्थानादि—गुरुसेवालक्षणः तेन युक्ताः, 'णाणसंपण्णा' ज्ञानसंपन्नाः, ज्ञानं=श्रुतचारित्र- लक्षणं तेन युक्ताः, 'दंसणसंपण्णा' दर्शनसम्पन्नाः—दर्शनं—सम्यक्त्वं तेन युक्ताः 'चरित्त- संपण्णा' चरित्रसम्पन्नाः चरित्रं-समितिगुप्त्यादिकं तेन युक्ताः,'लज्जासंपण्णा' लज्जा-सम्पन्ना लज्जा—संयमविराधनायां हृदयसंकोचरूपा तया युक्ताः; 'लाघवसंपण्णा' लाघवसम्पन्नाः लाघवं द्रव्यतो ऽल्पोपधिता, भावतो गौरवत्रयत्यागः—तेन युक्ताः, 'ओयंसी' ओजस्विनः, ओजो-मानसी शक्तिस्तद्वन्तः, 'तेयंसी' तेजस्विनः—तेजः अन्तर्बहिर्देदीप्यमानत्वं तेजोलेश्यादि वा तद्वन्तः, 'वच्चंसी' वचस्विनः, वचः—आदेयवचनं—सौभाग्याद्युपेतमेषामस्तीति ते वचस्विनः,

अपनीत—नष्ट होता है वह विनय है, ऐसे विनय से युक्त थे। गुरुओं के आने एवं जाने आदि पर खडे होना इत्यादिक क्रियाएँ सब विनय के ही अन्तर्गत हैं। (णाण- संपण्णा) विशिष्टज्ञान से सपन्न थे। (दंसण-संपण्णा) विशिष्टदर्शनसे—सम्यक्त्व से संपन्न थे। (चरित्तसंपण्णा) समिति—गुप्ति—आदिरूप चारित्र से सपन्न थे। (लज्जा- संपन्ना) सयमविराधनामें जो स्वाभाविक हृदयका संकोच उसे लज्जा कहते है, उससे वे युक्त थे। (लाघवसंपण्णा) अल्प—उपधिरूप द्रव्यलाघव एवं तीन गौरवका परि- त्यागरूप भावलाघव से युक्त थे। (ओयंसी) ये ओजस्वी थे, अर्थात् तप और संयम के प्रभाव से युक्त थे। (तेयंसी) ये तेजस्वी थे, अर्थात् भीतर और बाहर देदीप्यमान थे, अथवा द्रव्यभावरूप तेजोलेश्या आदिसे युक्त थे। (वच्चंसी) ये आदेयवचन से,

અષ્ટવિધ કર્મમલ અપનીત—નષ્ટ થાય છે તેને વિનય કહે છે એવા વિનયથી યુક્ત હતા. ગુરૂઓ આવે તેમ જ જાય ત્યારે ઉભા થવું વિગેરે ક્રિયાઓ બધી વિનયની જ અંતર્ગત છે. (णाणसंपण्णा) વિશિષ્ટજ્ઞાનવાળા હતા. (दंसणसंपण्णा) વિશિષ્ટ દર્શનથી—સમ્યક્ત્વથી સંપન્ન હતા. (चरित्तसंपण्णा) સમિતિગુપ્તિ—આદિરૂપ ચારિત્રથી સંપન્ન હતા. (लज्जासंपण्णा) સંયમવિરાધ- નામાં જે સ્વાભાવિક હૃદયનો સંકોચ થાય તેને લજ્જા કહે છે તેનાથી યુક્ત હતા. (लाघवसंपण्णा) અલ્પ—ઉપધિરૂપ દ્રવ્યલાઘવ તેમજ ત્રણ ગૌરવના પરિત્યાગરૂપ ભાવલાઘવથી યુક્ત હતા. (ओयंसी) તેઓ ઓજસ્વી હતા, અર્થાત્ તપ અને સંયમના પ્રભાવવાળા હતા. (तेयंसी) તેઓ તેજસ્વી હતા અર્થાત્ અંદર અને બહાર દેદીપ્યમાન હતા, અથવા દ્રવ્યભાવરૂપ તેજોલેશ્યા આદિવાળા હતા. (वच्चंसी) તેઓ આદેયવચનવાળા, અથવા તપ સંયમના

**वच्चंसी जियकोहा जियमाणा जियमाया जियलोभा जिइंदिया जियणिद्दा जियपरीसहा जीवियास-मरण-भय-विप्पमुक्का वय-**

अथवा—वर्चः तेजः प्रभावः—तद्वन्तो वर्चस्विनः। **'जसंसी'** यशस्विनः तपःसंयमसमाराधनख्यातिप्राप्ताः। **'जियकोहा'** जितक्रोधाः-जितः क्रोधो यैस्ते जितक्रोधाः, क्रोधजयः—उदयप्राप्तक्रोधविफलीकरणतो ज्ञातव्यः। **'जियमाणा'** जितमानाः, तत्र मानः-मन्यतेऽनेनेति मानः-अभिमानः-ज्ञानादिना अहमनुपमोऽस्मीत्यभिमानरूपः—गर्व इति यावत्। **'जियमाया'** जितमायाः-तत्र माया—परवञ्चनाभिप्रायेण शरीराकारनेपथ्यमनोवाक्कायकौटिल्यकरणरूपा, सा जिता यैस्ते तथा, उदयप्राप्तपरवञ्चनकर्मविफलीकारकाः, **'जियलोभा'** जितलोभाः **'जिइंदिया'** जितेन्द्रियाः **'जियणिद्दा'** जितनिद्राः **'जियपरीसहा'** जितपरीषहाः **'जीवियास-मरण-भय-विप्पमुक्का'** जीविताऽऽशा—मरण—भय—विप्रमुक्ताः—जीवितस्य—प्राण-

अथवा तपसंयमके प्रतापसे युक्त थे। (**जसंसी**) ये यशस्वी थे, अर्थात् तप और संयमकी आराधना से प्रसिद्धि पाये हुए थे। (**जियकोहा**) क्रोधको जिन्होंने जीत लिया था। (**जियमाणा**) मानको जिन्होंने दूर कर दिया था, अर्थात् " मैं ज्ञानादिक गुणोंसे अनुपम हूँ" इस प्रकार अभिमानरूप गर्वको जिन्होने परास्त कर दिया था। (**जियमाया**) दूसरोंको वंचन करनेके अभिप्रायसे वेष बनाना, एवं मन—वचन और कायको कुटिलतामें परिणत करना इसका नाम माया है; इस मायाका भी जिन्होंने अपनी शुभपरिणति द्वारा निवारण कर दिया था। (**जियलोभा**) इसी प्रकार लोभको भी जिन्होंने नष्ट कर दिया था। (**जिइंदिया**) इन्द्रियोंको जिन्होंने अच्छी तरह अपने वशमें कर रखा था। (**जियणिद्दा जियपरीसहा**) निद्रा और परीषहों को जिन्होंने जीत लिया था। (**जिवियास-मरण-भय-विप्पमुक्का**) जीनेकी आशा एवं मरणके

પ્રતાપવાળા હતા. ( जसंसी ) તેઓ યશસ્વી હતા, અર્થાત્ તપ અને સંયમની આરાધનાથી પ્રસિદ્ધિ પામેલા હતા. ( जियकोहा ) ક્રોધ જેમણે જીત્યો છે. ( जियमाणा ) માન જેઓએ દૂર કરેલું છે, અર્થાત્ ' હું જ્ઞાનાદિક ગુણોથી અનુપમ છું ' એવાં અભિમાનરૂપ ગર્વને જેઓએ પરાસ્ત કર્યો છે. (जियमाया) બીજાની વંચના-છેતરપિંડી કરવાના હેતુથી વેષ બનાવવા તેમ જ મન વચન-કાયાથી કુટિલતા કરવી તેનુ નામ માયા છે. આ માયાનું પણ જેઓએ પોતાની શુભપરિણતિથી નિવારણ કર્યું છે. ( जियलोभा ) તેવી જ રીતે લોભનો પણ જેઓએ નાશ કર્યો છે. (जिइंदिया) જેઓએ સારીરીતે ઇંદ્રિયોને પોતાને વશ કરી લીધી હતી. (जियणिद्दा जियपरीसहा) નિદ્રા અને પરીષહોને જેઓએ જીતી

**प्पहाणा गुणप्पहाणा करणप्पहाणा चरणप्पहाणा णिग्गहप्प-हाणा निच्छयप्पहाणा अज्जवप्पहाणा मद्दवप्पहाणा लाघवप्पहाणा**

धारणस्य-आशा जीविताऽऽशा, मरणस्य भयं=त्रासः, एताभ्यां विप्रमुक्ताः, '**वयप्पहाणा**' व्रतप्रधानाः-व्रतं-संयमः प्रधानम्-उत्तमं-शाक्यादिभिक्षुकाऽपेक्षया निर्ग्रन्थत्वाद् येषां ते व्रतप्रधानाः, अथवा व्रतेन-संयमेन प्रधानाः श्रेष्ठाः-निर्ग्रन्थश्रमणा इत्यर्थः। ते च न केवलं व्यवहारत एव इत्यत आह-'**गुणप्पहाणा**' गुणप्रधानाः-गुणाः कारुण्यादयः, यथोक्तं-'परोपकारैकरतिर्निरीहता, विनीतता सत्यमनुत्थचित्तता। श्रुते विनोदोऽनुदिनं न दीनता, गुणा इमे सत्त्ववतां स्वभावजाः। इति, एतैर्गुणैःप्रधानाः। '**करणप्पहाणा**' करण-प्रधानाः-करणं=क्रिया, तच्चेह पिण्डविशुद्ध्यादिरूपं, तेन प्रधानाः, अथवा करणं-पिण्डविशु-द्ध्यादिरूप प्रधानं येषां ते करणप्रधानाः, '**चरणप्पहाणा**' चरणप्रधानाः-चरणं=महा-व्रतादिमूलगुणरूपं तत्प्रधानाः, '**णिग्गहप्पहाणा**' निग्रहप्रधानाः-इन्द्रियनोइन्द्रियदमनप्रधानाः, '**निच्छयप्पहाणा**' निश्चयप्रधानाः-निश्चयः-तत्त्वनिर्णयः; तत्र प्रधानाः, अथवा अव-श्यङ्करणीयासु संयमक्रियासु निश्चितचित्ताः, '**अज्जवप्पहाणा**' आर्जवप्रधानाः-आर्जवं-माया-राहित्यं तत्प्रधानाः, कर्पूरवदन्तर्वहिर्निर्मलाः, '**मद्दवप्पहाणा**' मार्दवप्रधानाः-मार्दवं-मानो-

भयसे जो सर्वथा विप्रमुक्त थे। (**वयप्पहाणा**) व्रतपालन करनेके कारण प्रधान थे, (**गुण-प्पहाणा**) क्षान्त्यादि गुणोसे प्रधान थे, (**करणप्पहाणा**) पिण्डविशुद्ध्यादि रूप मुनियोंकी क्रियामे प्रधान थे, (**चरणप्पहाणा**) महाव्रत आदि मूल गुणोंसे प्रधान थे, (**णिग्गहप्पहाणा**) इन्द्रिय, नोइन्द्रिय (मनके) दमन करनेमे प्रधान थे, (**णिच्छयप्पहाणा**) तत्त्वनिर्णय तथा अवश्य-करणीय संयम क्रियामें प्रधान थे। (**अज्जवप्पहाणा**) सरलतामें प्रधान थे, अर्थात् कपूर के तुल्य अन्तर बाहर निर्मल थे। (**मद्दवप्पहाणा**) मानके उदयका निरोध करनेवाले

લીધા હતા, (जीवियास मरण-भय-विप्पमुक्का) જીવવાની આશા તેમજ મરણના ભયથી જેઓ સર્વથા મુક્ત હતા. (वयप्पहाणा) વ્રતપાલન કરવાના કારણે પ્રધાન હતા, (गुणप्पहाणा) ક્ષાન્તિ આદિ ગુણોથી પ્રધાન (મુખ્ય) હતા, (करणप्पहाणा) પિંડવિશુદ્ધિ-આદિરૂપ મુનિઓની ક્રિયામા પ્રધાન હતા, (चरणप्पहाणा) મહાવ્રત આદિ મૂલગુણોથી પ્રધાન હતા, (णिग्गहप्पहाणा) ઈંદ્રિય નોઇંદ્રિયનું દમન કરવામા પ્રધાન હતા, (णिच्छयप्पहाणा) તત્ત્વ-નિર્ણય તથા અવશ્ય કરવાની સંયમક્રિયામા પ્રધાન હતા. (अज्जवप्पहाणा) સરલતામા પ્રધાન હતા, અર્થાત્ કપૂરની પેઠે અંતર બહારથી નિર્મળ હતા, (मद्दवप्पहाणा) માનના ઉદયનો નિરોધ કરવાવાળા અર્થાત્ જાત્યાદિ આઠ પ્રકા-

**खंतिप्पहाणा मुत्तिप्पहाणा विज्जापहाणा मंतप्पहाणा वेयप्पहाणा बंभप्पहाणा नयप्पहाणा नियमप्पहाणा सच्चप्पहाणा सोयप्पहाणा**

दयनिरोधः, तत्प्रधानाः—जात्याद्यष्टविधमदवर्जिताः, '**लाघवप्पहाणा**' लाघवप्रधानाः, लाघवं-द्रव्यतोऽल्पोपधित्वं भावतो गौरवत्रयत्याग, तत्प्रधानाः। '**खंतिप्पहाणा**' क्षान्तिप्रधानाः-क्षान्तिः-क्रोधोदयनिरोधः-तत्प्रधानाः। '**मुत्तिप्पहाणा**' मुक्तिप्रधाना—मुक्तिर्लोभोदयनिरोधः, तत्प्रधानाः, निर्लोभा इत्यर्थः। '**विज्जापहाणा**' विद्याप्रधानाः—वेदनं विद्या—ससाधना रोहिणीप्रज्ञप्तिप्रभृतिर्देव्यधिष्ठिता सा प्रधानं येषां ते विद्याप्रधाना। '**मंतप्पहाणा**' मन्त्रप्रधानाः, '**वेयप्पहाणा**' वेदप्रधानाः—वेद्यते ज्ञायते जीवाजीवादिस्वरूपमेभिरिति वेदाः-आचाराङ्गादय आगमाः, तत्प्रधाना, '**बंभप्पहाणा**' ब्रह्मप्रधानाः, ब्रह्म—ब्रह्मचर्य—कुशलानुष्ठानं तत्प्रधाना। '**नयप्पहाणा**' नयप्रधाना—नयन्ति बोधयन्ति अनेकधर्मात्मकवस्तुन एकांशम् इति नयाः-नैगमादयः सप्त, तत्प्रधानाः, '**नियमप्पहाणा**' नियमप्रधानाः, नियमो-द्रव्य-क्षेत्रकालभावतो विविधाभिग्रहग्रहणम् तत्प्रधानाः, '**सच्चप्पहाणा**' सत्यप्रधानाः—जीवा-

अर्थात् जात्यादि आठ प्रकारके मदसे रहित थे। (**लाघवप्पहाणा**) द्रव्यसे अल्प-उपधियुक्त होने कारण तथा भावसे गौरवत्रयरहित होनेके कारण प्रधान थे। (**खंतिप्पहाणा**) क्रोधके उदयका निरोध करनेमें प्रधान थे। (**मुत्तिप्पहाणा**) लोभ के उदयका निरोध करने में प्रधान थे। (**विज्जापहाणा**) रोहिणी प्रज्ञप्ति आदि विद्याओंसे प्रधान थे। (**मंतप्पहाणा**) मन्त्रोंसे प्रधान थे। (**वेयप्पहाणा**) आचाराङ्ग आदि शास्त्रो से प्रधान थे। (**बंभप्पहाणा**) ब्रह्मचर्यसे प्रधान थे। (**नयप्पहाणा**) नैगमादि सात—नयोंके स्वरूप निरूपण करनेमें प्रधान थे। (**निगमप्पहाणा**) द्रव्य क्षेत्र काल भावसे विविध प्रकार के अभिग्रह करनेमें प्रधान थे। (**सच्चप्पहाणा**) जीवा-

રના મદથી રહિત હતા, (लाघवप्पहाणा) દ્રવ્યથી અલ્પ-ઉપધિવાળા હોવાના કારણે તથા ભાવથી ત્રણ ગૌરવથી રહિત હોવાના કારણે પ્રધાન હતા. (खंतिप्पहाणा) ક્રોધના ઉદયનો નિરોધ કરવામા પ્રધાન હતા, (मुत्तिप्पहाणा) લોભના ઉદયનો નિરોધ કરવામાં પ્રધાન હતા, (विज्जापहाणा) રોહિણી પ્રજ્ઞપ્તિ આદિ વિદ્યાઓમાં પ્રધાન હતા. (मंतप्पहाणा) મંત્રોથી પ્રધાન હતા. (वेयप्पहाणा) આચારાંગ આદિ શાસ્ત્રોથી પ્રધાન હતા. (बंभप्पहाणा) બ્રહ્મચર્યથી પ્રધાન હતા, (नयप्पहाणा) નૈગમ આદિ સાત નયોનાં સ્વરૂપ નિરૂપણ કરવામાં પ્રધાન હતા. (नियमप्पहाणा) દ્રવ્ય-ક્ષેત્ર-કાલ-ભાવથી વિવિધ પ્રકારના અભિ-ગ્રહ કરવામાં પ્રધાન હતા, (सच्चप्पहाणा) જીવ અજીવ આદિ પદાર્થોનાં

# चारुवण्णा लज्जा-तवस्सी-जिइंदिया सोही अणियाणा अप्पोसुया

जीवादिपदार्थानां यथावस्थितस्वरूपकथनं सत्यं तत्प्रधानाः, 'सोयप्पहाणा' शौचप्रधानाः-शौचम्-अन्तःकरणशुद्धिरूपम्, तत्प्रधानाः। यद्यप्यत्र चरणकरणग्रहणेऽप्यार्जवादिकं गृहीतं भवति, तथापि आर्जवादीनां पृथक्कथनं प्रधानताख्यापनार्थम्-इत्यवगन्तव्यम्। 'चारुवण्णा' चारुवर्णाः-वर्णः-कान्तिः, कीर्तिः, मतिश्च,-चारुर्वर्णो येषां ते, गौरवर्णयुक्ताः, अथवा उत्तमकीर्तिमन्तः, प्रशस्तमतियुक्ता वा, 'लज्जा-तव-स्सी-जिइंदिया' लज्जातपः-श्री-जितेन्द्रियाः-लज्जया=संयमविराधनायां हृदयसंकोचरूपया तपःश्रिया=तपस्तेजसा जितानि इन्द्रियाणि यैस्ते तथा, यद्यपि जितेन्द्रिया इति प्रागुक्तं, तथाप्यत्र लज्जातपःश्रीविशेषितत्वान्न पुनरुक्तिदोषः। 'सोही' शोधयः-शोधियोगात् शोधिरूपाः-शुद्धाः-अकलुषहृदया इत्यर्थः,

जीवादि पदार्थोंके यथावस्थित स्वरूपकथनको सत्य कहते है, उससे वे प्रधान थे। (सोयप्पहाणा) अन्तःकरणकी शुद्धिको शौच कहते है, उसमें वे प्रधान थे। (चारुवण्णा) वर्णशब्दका प्रयोग कान्ति, कीर्त्ति एवं मतिमें होता है। इस अपेक्षासे ये सब गौरवर्ण विशिष्ट थे, अथवा उत्तमकीर्तिसंपन्न थे, या उत्तमबुद्धि-आत्मकल्याणमें आगे२ अधिकाधिकरूपसे प्रेरणा करनेवाली बुद्धिसे युक्त थे। (लज्जा-तव-स्सी-जिइंदिया) लज्जा-संयमविराधनामें संकोच, एवं तपःश्री के प्रभावसे इन्होंने इन्द्रियोंको जीत लिया था। यद्यपि "जिइंदिया" इस पद-द्वारा उनमें जितेन्द्रियता प्रकट कर दी गई है, फिर भी यहां पर जो पुनः जितेन्द्रियता वर्णित हुई है, वह लज्जा एवं तपके प्रभाव से उनमें जितेन्द्रियता थी यह विशेषरूपसे कथित हुआ है, अतः इस कथनमे पुन-

યથાવસ્થિત સ્વરૂપનુ કથન સત્ય કહેવાય, તેમાં તેઓ પ્રધાન હતા. (सोयप्पहाणा) અંતઃકરણની શુદ્ધિને શૌચ કહે છે, તેમાં તેઓ પ્રધાન હતા. (चारुवण्णा) વર્ણ શબ્દનો પ્રયોગ કાંતિ, કીર્ત્તિ તેમજ મતિમાં થાય છે. આ અપેક્ષાએ તેઓ બધા ગૌરવર્ણવિશિષ્ટ હતા, અથવા ઉત્તમ કીર્તિ-સંપન્ન હતા, અથવા ઉત્તમબુદ્ધિ-આત્મ કલ્યાણમાં આગળ આગળ વધારેમા વધારે રૂપથી પ્રેરણા કરવાવાળી બુદ્ધિવાળા હતા. (लज्जा-तवस्सी-जिइंदिया) લજ્જા=સંયમવિરાધનામાં સંકોચ તેમ જ તપશ્રીના પ્રભાવથી તેઓએ ઇંદ્રિઓને જીતી લીધી હતી. જો કે "जिइंदिया" એ પદથી તેમનામાં જિતેંદ્રિયપણું પ્રકટ કરી દીધેલું છે, છતાં પણ અહીં જે ફરીને જિતેંદ્રિયતાનું વર્ણન કરવામા આવ્યું છે તે લજ્જા તેમજ તપના પ્રભાવથી તેમનામાં જિતેંદ્રિયપણું હતું તેનુ વિશેષરૂપથી કથન કર્યું છે. માટે આ કથનમાં પુન-

**अवहिल्लेसा अप्पडिलेस्सा सुसामण्णरया दंता इणमेव णिग्गंथं पावयणं पुरओकाउं विहरंति ॥ सू० २५॥**

यद्वा-सुहृदः-प्राणिमात्रस्य मित्ररूपाः, '**अणियाणा**' अनिदानाः-निदायते=छिद्यते मोक्ष-फलमनेन इति निदानं-स्वर्गादिऋद्धिप्रार्थनम्, न विद्यते निदानं येषां ते अनिदानाः, '**अप्पोसुया**' अल्पौत्सुक्याः-अल्पम्-अपगतम् औत्सुक्यम्-उत्सुकता येषां ते-अल्पौत्सुक्याः-विषयौत्सुक्यरहिताः, '**अवहिल्लेसा**' अबहिर्लेश्याः-संयमादबहिर्भूता लेश्या मनोवृत्तयो येषां ते इत्यर्थः। '**अप्पडिलेस्सा**' अप्रतिलेश्याः-अविद्यमानाःप्रतिलेश्याः-सदृशमनोवृत्तयो येषां ते-अप्रतिलेश्याःप्रवर्धमानपरिणामसम्पन्नाः, '**सुसामण्णरया**' सुश्रामण्यरता -श्रमणस्य भाव श्रामण्यं, शोभनं श्रामण्यं सुश्रामण्यं-सम्पूर्णःसकलसावद्यनिवृत्तिरूपःसंयमःतस्मिन् रताः=संलग्नाः, '**दंता**' दान्ताः-इन्द्रिय-नोइन्द्रियदमनपरायणा इति भावः। '**इणमेव**' इदमेव '**णिगंथं**' नैर्ग्रन्थ्यं-निर्ग्रन्थानां भावो नैर्ग्रन्थ्यं-श्रमणधर्ममयम् '**पावयणं**' प्रवचनं-प्र=प्रकृष्टतया-उच्यते जीवादिस्वरूपं यस्मिन् तत्प्रवचनं जैनागमः तत् '**पुरओकाउं**' पुरस्कृत्य=प्रमाणीकृत्य '**विहरंति**' विहरन्ति॥ सू० २५॥

रुक्तिदोष नहीं आता है। (**सोही**) ये शोधि-अकलुषहृदयवाले थे, अथवा प्राणि-मात्रके मित्रस्वरूप थे। (**अणियाणा**) मोक्षरूप फल जिसके द्वारा काट दिया जाता है वह निदान है, इस निदानसे ये सर्वथा रहित थे। (**अप्पोसुया**) इनमें विषय-सम्बन्धी कोई उत्सुकता नहीं थी। (**अवहिल्लेसा**) इनका मानसिक व्यापार संयमकी आराधनासे वाहिरकी ओर थोडा भी नहीं जाता था। (**अप्पडिलेस्सा**) मनके साधारण प्रवृत्तिको प्रतिलेश्या कहते है, परन्तु वे अप्रतिलेश्या से-प्रवर्द्धमान मनके शुभ परिणामोंसे युक्त थे। (**सुसामण्णरया**) वे सुश्रामण्य में रत थे, अर्थात् सकल सावद्यकी

રૂક્તિ દોષ આવતો નથી. (सोही) તેઓ શોધિ-અકલુષિતહૃદયવાળા હતા. અથવા પ્રાણિમાત્રના મિત્રસ્વરૂપ હતા. (अणियाणा) મોક્ષરૂપ ફલ જેનાથી કપાઈ જાય છે તેને નિદાન કહે છે, તેવા નિદાનથી તેઓ સર્વથા રહિત હતા. (अप्पोसुया) તેમનામાં વિષયસંબંધી કોઈ ઉત્સુકતા નહોતી, (अवहिल्लेसा) તેમનો માનસિક વ્યાપાર સંયમની આરાધનાથી બહારની તરફ જરાપણ જતો નહોતો. (अपडिलेस्सा) મનની સાધારણ પ્રવૃત્તિને પ્રતિલેશ્યા કહે છે, પરંતુ તેઓ અપ્રતિલેશ્યાથી=પ્રવર્દ્ધમાન મનનાં શુભ પરિણામોથી યુક્ત હતા. (सुसामण्णरया) તેઓ સુશ્રામણ્યમાં રત (લાગી રહેલા) હતા, અર્થાત્ સઘળા સાવદ્યની નિવૃત્તિરૂપ સંયમમાં તેઓ સદા સંલગ્ન રહેતા હતા, (दंता) દાન્ત હતા-

मूलम्—तेसि णं भगवंताणं आयावाया वि विदिता भवंति, परवाया वि विदिता भवंति, आयावायं जमइत्ता नलवणमिव-

टीका—'तेसि णं भगवंताणं' इत्यादि। तेषां खलु श्रीमहावीरशिष्याणां भगवतां—संयमविभूषितानाम् 'आयावाया वि' आत्मवादा अपि—स्वसिद्धान्तवादा अपि-आर्हतवादा अपीत्यर्थः, विदिता—विज्ञाता भवन्ति, 'परवाया वि विदिता भवंति' परवादा अपि विदिता भवन्ति—परेषां—शाक्यादीनां वादाः—मतानि विदिता भवन्ति, स्वपर—

निर्वृत्तिरूप संयममें ये सदा संलग्न रहते थे। (दंता) दान्त थे, अर्थात् इन्द्रिय और नोइन्द्रिय-मन के दमन करनेवाले थे। (इणमेव णिग्गंथं पावयणं पुरओकाउं विहरंति) ये मुनिजन इसी निर्ग्रन्थ प्रवचनको आगे रखकर विचरते थे, अर्थात् इनकी सब प्रवृत्ति आगमानुकूल ही होती थी ॥ सू० २५ ॥

'तेसि णं भगवंताणं' इत्यादि—

(तेसि णं भगवंताणं) भगवान् महावीर के संयम से विभूषित उन शिष्यों के (आयावाया वि) आत्मवाद—स्वसिद्धान्तप्रतिपादित —आर्हतवाद भी (विदिता भवंति) विदित था, अर्थात् भगवान् महावीर के ये शिष्य स्वसिद्धान्त—प्रतिपादित-तत्त्वों के पूर्ण ज्ञाता थे। (परवाया वि विदिता भवंति) तथा शाक्यादिकों का क्या सिद्धान्त है, यह भी इन्हें विदित था। मतलब कहने का यह है कि ये मुनिजन स्वपरसिद्धान्त के पूर्णवेत्ता थे। ऐसा कोई भी सिद्धान्त नहीं था जो इनकी

અર્થાત્ ઇન્દ્રિય અને નોઇંદ્રિયનુ દમન કરવાવાળા હતા, (इणमेव णिग्गंथं पावयणं पुरओ काउं विहरंति) તે મુનિજનો આ નિર્ગ્રન્થ પ્રવચનને આગળ રાખીને વિચરતા હતા, અર્થાત્ તેમની સર્વ પ્રવૃત્તિ આગમને અનુકૂળ જ થતી હતી. (સૂ. ૨૫)

'तेसि णं भगवंताणं ઇત્યાદિ.

(तेसि ण भगवंताण) સંયમથી વિભૂષિત ભગવાન મહાવીરના તે શિષ્યો (आयावायावि) આત્મવાદ–સ્વસિદ્ધાંત–પ્રતિપાદિત તત્ત્વ–આર્હતવાદ પણ (विदिता भवंति) જાણતા હતા, અર્થાત્ ભગવાન મહાવીરના તે શિષ્યો સ્વસિદ્ધાંતપ્રતિપાદિત તત્ત્વોના સંપૂર્ણ જ્ઞાતા હતા. (परवायावि विदिता भवंति) તથા શાક્ય આદિકોનો શું સિદ્ધાંત છે તે પણ તેઓ જાણતા હતા. કહેવાનો મતલબ એ છે કે તે મુનિજનો સ્વપર-સિદ્ધાંતના પૂર્ણ જ્ઞાતા હતા. એવો કોઇ પણ સિદ્ધાંત નહોતો કે જે તેમની નજર બહાર હોય. હજુ તેઓ કેવા

**मत्तमातंगा अच्छिद्दपसिणवागरणा रयणकरंडगसमाणा कुत्तिया-**

सिद्धान्तप्रवीणतया न किञ्चिदविदितं तेषां भवतीति भावः । पुनस्ते कीदृशाः ? इत्यनेकै-र्विशेषणैःकथयति–'**आयावायं जमइत्ता**' आत्मवादान् यमयित्वा–स्वसिद्धान्तान् पुनः पुनरभ्यस्य–अतिपरिचितान् विधाय, '**नलवणमिव मत्तमातंगा**' नलवनमिव मत्त-मातङ्गाः–क्रीडार्थं पुनःपुनःप्रवेशेन कमलवनं यथा मदोन्मत्ता गजेन्द्रा अतिपरिचितं कुर्व-न्ति तथैव ते पुनःपुनरभ्यासेन निजसिद्धान्तं परिचितं कृतवन्तोऽनस्ते तत्तुल्या इत्यर्थः । '**अच्छिद्द–पसिण–वागरणा**' अच्छिद्र–प्रश्न–व्याकरणाः–अच्छिद्राः–निरन्तराः–धारा-वाहिकरूपाः प्रश्ना, निरन्तराण्युत्तराणि येषु तादृशानि व्याकरणानि–विस्तारयुक्तव्याख्या-नानि येषां ते–अच्छिद्रप्रश्नव्याकरणाः–पुनःपुनःप्रश्नोत्तरसमुचितव्याख्यानिनिपुणाः, अत एव–'**रयण–करंडग–समाणा**' रत्न–करण्डक–समानाः–रत्नानां=मणिमाणिक्या-दीनां करण्डको मञ्जूषा तस्य समानास्तत्तुल्याः, करण्डको यथा बहुविधरत्नपूर्णो भवति

दृष्टि से बाहर हो। और भी ये कैसे थे? सो इस बात को आगे के विशेषणों द्वारा सूत्रकार कहते है–(**आयावायं जमइत्ता नलवणमिव मत्तमायंगा**) जिस प्रकार मदोन्मत्त गजराज सरोवर आदि में क्रीड़ा करने के लिये पुनःपुनः प्रवेश कर कमलवन से पूर्ण परिचित हो जाते है उसी प्रकार ये भी ज्ञानरूपी सरोवर में क्रीडा करने के लिये पुनः २ प्रवेश कर स्वपर–सिद्धान्तरूपी कमलवन से पूर्ण परिचित थे। (**अच्छिद्द–पसिण–वागरणा**) जब ये प्रवचन करते थे तब उसमें श्रोताजन धारा-वाहिकरूप से प्रश्न किया करते थे, उनका उत्तर भी ये उसी ढंग से देते थे । (**रयण–करंडक–समाणा**) इसलिये ये ऐसे ज्ञात होते थे कि मानों रत्नकरण्डक है; जैसे रत्नों का करण्डक अनेक प्रकार के उत्तमोत्तम अमूल्य रत्नों से भरपूर होता

હતા તે વાત આગળના વિશેષણોદ્વારા સૂત્રકાર કહે છે–(आयावायं जमइत्ता नलवणमिव मत्तमायंगा) જેવી રીતે મદોન્મત્ત ગજરાજ સરોવર આદિમાં ક્રીડા કરવા માટે વારંવાર પ્રવેશ કરીને કમલોના વનથી પૂર્ણ પરિચિત થઈ જાય છે, તેવીજ રીતે તેઓ પણ જ્ઞાનરૂપી સરોવરમાં ક્રીડા કરવાના કારણે વારંવાર પ્રવેશ કરીને સ્વપર–સિદ્ધાંતરૂપી કમલવનથી પૂર્ણ પરિચિત હતા. (अच्छिद्द–पसिण–वागरणा) જ્યારે તેઓ પ્રવચન કરતા હતા ત્યારે તેમાં શ્રોતા-જનો એકધારી રીતે પ્રશ્ન કર્યા કરતા હતા અને તેના ઉત્તર પણ તેઓ તેવીજ રીતે આપતા હતા. (रयण-करंडग-समाणा) એથી તેઓ એવા લાગતા હતા કે જાણે રત્નનો કરંડિઓ હોય. જેમ રત્નોનો કરંડિઓ અનેક પ્રકારના ઉંચામાં ઉંચા

**वणभूया परवाइपमद्दणा आयारधरा चोद्दसपुव्वी दुवालसंगिणो**

तथैव तेऽपि मुनिवराः सम्यग्ज्ञानादिरत्नपूर्णाःसन्ति। पुनस्ते कीदृशाः? इत्याह-'**कुत्तियावणभूया**' कुत्रिकाऽऽपणभूताः=कूनां=स्वर्गमर्त्यपातालभूमीनां त्रिकं कुत्रिकं, तात्स्थ्यात् तद्व्यपदेश इति कृत्वा तत्र स्थितं वस्त्वपि कुत्रिकमुच्यते,कुत्रिकस्य आपणःकुत्रिकापणः। देवाधिष्ठितत्वेन स्वर्गमर्त्यपाताललोकत्रयसंभविवस्तुसम्पादकहट्ट इत्यर्थः, तद्भूता-समीहितार्थसम्पादनलब्धियुक्तत्वेन तत्तुल्या इति भावः। '**परवाइपमद्दणा**' परवादिप्रमर्दनाः-परवादिनां शाक्यादीनां मतनिराकरणेन विजेतार इत्यर्थः। '**आयारधरा**' आचारधराः-आचाराङ्गसूत्रस्य धारकाः यावद्विपाकसूत्रधराः, '**चोद्दसपुव्वी**' चतुर्दशपूर्विणः-चतुर्दश पूर्वाणि विद्यन्ते येषां ते चतुर्दशपूर्विणः षड्गुणहानिवृद्धिरूपस्थानसंस्थिताः परस्परं भवन्ति न्यूनाधिक्येन, तथाहि-यः कश्चित् सकलाभिलाप्यवस्तुवेदितया चतुर्दशपूर्वी स उत्कृष्टः, ततोऽन्ये सूत्रार्थतदुभयरूपतारतम्याच्चतुर्दशपूर्वधराः। '**दुवालसंगिणो**' द्वादशाङ्गिनः-द्वादशानि-अङ्गानि आचाराङ्गादीनि सन्ति

है उसी प्रकार ये साधुजन भी सम्यग्दर्शन एवं सम्यग्ज्ञान आदि विविध गुणरूप रत्नों से भरपूर थे। (**कुत्तियावणभूया**) ये कुत्रिकापण तुल्य थे। जिस आपण (दूकान) में स्वर्ग मर्त्य, पाताल—तीनों लोक की वस्तुएँ रहती है, उसको '**कुत्रिकापण**' कहते है। उस कुत्रिकापण से सभी अभिलषित वस्तुएँ मिलती है। उसी प्रकार ये अभिलषित तीनों लोक के पदार्थों के सम्पादन करने की लब्धियों से युक्त थे। अत एव कुत्रिकापण—तुल्य थे। (**परवाइपमद्दणा**) परवादियों के मत को निराकरण करने से ये उनके विजेता थे। (**आयारधरा**) आचारांग सूत्र से लेकर विपाकसूत्रतक के आगमों के ये धारक थे। (**चोद्दसपुव्वी**) चौदहपूर्वों के ये पाठी थे। इस प्रकार ये सब के सब (**दुवालसंगिणो**) द्वादशांग के वेत्ता थे। (**समत्त-**

કિંમતી રત્નોથી ભરપૂર હોય છે તેમ એ સાધુજનો પણ સમ્યગ્દર્શન તેમજ સમ્યગ્જ્ઞાન આદિ વિવિધ ગુણરૂપ રત્નોથી ભરપૂર હતા, (कुत्तियावणभूया) તેઓ કુત્રિકાપણ જેવા હતા. જે આપણ (દૂકાન)માં સ્વર્ગ મર્ત્ય અને પાતાળ ત્રણે લોકોની વસ્તુઓ રહેતી હોય તેને 'કુત્રિકાપણ' કહે છે. તે કુત્રિકાપણમાં બધી ઇચ્છિત વસ્તુઓ મળે છે, તેવી રીતે તેઓ પણ ત્રણે લોકોના ઇચ્છિત પદાર્થો મેળવવાની લબ્ધિઓવાળા હતા. એથી તેઓ કુત્રિકાપણ જેવા હતા. (आयारधरा) આચારાંગસૂત્રથી લઈને વિપાકસૂત્ર સુધીનાં આગમોના તેઓ ધારક હતા. (चोद्दसपुव्वी) ચૌદ પૂર્વોના તેઓ જાણનારા હતા. એ પ્રકારે એ તમામે તમામ (दुवालसंगिणो) દ્વાદશાંગના જ્ઞાતા હતા. (समत्तगणिपिडगधरा) સમસ્ત

**समत्तगणिपिडगधरा सव्वक्खरसण्णिवाइणो सव्वभासाणुगामिणो अजिणा जिणसंकासा जिणा इव अवितहं वागरमाणा संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणा विहरंति ॥ सू० २६ ॥**

येषां ते द्वादशाङ्गिनः-द्वादशाङ्गागमज्ञातारः, द्वादशाऽङ्गज्ञातृत्वेऽपि समस्तश्रुतधरत्वं न सिध्यतीत्यत आह-'**समत्तगणिपिडगधरा**' समस्तगणिपिटकधराः-गणो-गच्छः,गुणगणो वाऽस्याऽस्तीति गणी-आचार्यः तस्य पिटक इव पिटकः सर्वस्वमित्यर्थः, समस्तस्य गणिपिटकस्य धराः=धारकाः अतएव-'**सव्वक्खर-सण्णिवाइणो**' सर्वाऽक्षरसन्निपातिनः,यद्यपि न क्षरति-स्वभावान्न कदाचित्प्रच्यवते इत्यक्षरं परं तत्त्वं केवलज्ञानादिरूपम्, तथाप्यत्र अक्षर-शब्दो स्वरव्यञ्जनभेदेन भिन्ने वर्णसमुदाये, ततश्च—अक्षराणां सन्निपाताः संयोगाः स्ववर्गपरवर्गैः समीलनानि-अक्षरसन्निपाताः, सर्वे च तेऽक्षरसन्निपाताः, ते सन्ति येषां ते सर्वाऽक्षरसन्निपातिनः सर्वाक्षरज्ञानवन्त इतिभावः।'**सव्वभासाणुगामिणो**' सर्वभाषानुगामिनः—सर्वाश्च ता भाषाः—भाषणानि, यद्वा भाष्यन्ते इति भाषाः=व्यक्तवचनानि, आसां भाषाणां संस्कृतप्राकृताऽऽदय आर्याऽनार्यादयो बहवो भेदा भवन्ति, ताःसर्वभाषा अनुगच्छन्ति एवं शीलाः सर्वभाषानुगामिनः, '**अजिणा**' अजिनाः-असर्वज्ञत्वादिति भावः। जयन्ति कर्मरिपून् इति जिनाः=सर्वज्ञाः, ये जिना न भवन्ति ते अजिनाः—असर्वज्ञाः, तथापि—'**जिनसंकासा**, जिनसङ्काशाः—जिनसदृशाः पृष्टनिर्वचनकारि-

**गणिपिटग-धरा**) समस्तगणिपिटक के धारक थे। (**सव्वक्खरसण्णिवाइणो**) यद्यपि केवलज्ञानादिरूप तत्त्व—अक्षर शब्द से गृहीत होना चाहिये था, परन्तु ऐसा अक्षर यहां गृहीत नहीं हुआ है, किन्तु स्वर एवं व्यंजन के भेद से भिन्न वर्णसमुदाय का ही यहां अक्षर शब्द से ग्रहण किया गया है। सन्निपात शब्द का अर्थ सयोग है। ये मुनिजन, सर्व प्रकार के अक्षरो के सयोग से क्या अर्थ होता है, उसके ज्ञाता थे। (**सव्व—भासा—णुगामिणो**) आर्य एवं अनार्य सब देश की भाषा के ये सब जानकार थे। (**अजिणा**) ये सर्वज्ञ तो नहीं थे पर (**जिणसंकासा**) सर्वज्ञ के जैसे थे।

ગણિપિટકના તેઓ ધારક હતા. (सव्वक्खरसण्णिवाइणो) જો કે કેવલજ્ઞાન આદિરૂપ તત્ત્વ—અક્ષર શબ્દથી લેવો જોઈતો હતો, પરંતુ એવો અક્ષર અહીં લેવાયો નથી, પણ સ્વર તેમજ વ્યંજનના ભેદથી જુદા વર્ણસમુદાયજ અહીં અક્ષર શબ્દથી લેવામાં આવ્યો છે. સન્નિપાત શબ્દનો અર્થ સંયોગ છે. એ મુનિજનો સર્વ પ્રકારના અક્ષરોના સંયોગથી શું અર્થ થાય છે તેના જ્ઞાતા હતા. (सव्व-भासा-णुगामिणो) આર્ય તેમજ અનાર્ય બધા દેશની ભાષાના તેઓ બધા જાણકાર હતા. (अजिणा) તેઓ સર્વજ્ઞ તો નહોતા, પણ (जिणसंकासा)

मूलम्-तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतेवासी बहवे अणगारा भगवंतो, इरियासमिया

त्वाद् अविसंवादिवचनत्वाच्चेति भावः । जिणा इव अवितहं वागरमाणा' जिना इव अवितथं व्याकुर्वाणा.-जिनवद् याथातथ्येन-यद्वस्तु यादृगेव तथा कथयन्तः 'संजमेण' संयमेन-सावद्ययोगविरमणलक्षणेन 'तवसा' तपसा 'अप्पाणं भावेमाणा विहरंति' आत्मानं भावयन्तो विहरन्ति ॥ सू० २६ ॥

टीका-'तेणं कालेणं' इत्यादि। तस्मिन् काले तस्मिन् समये श्रमणस्य भगवतो महावीरस्य अन्तेवासिनो बहवोऽनगारा, 'भगवंतो' भगवन्तः-नयमशोभावन्तः, 'इरियासमिया' ईर्यासमिता-ईरणं-गमनमीर्या, तस्यां समिताः=सम्यक्प्रवृत्ताः, गमने

(जिणा इव अवितहं वागरमाणा) जिन-सर्वज्ञ-प्रभु जिस प्रकार यथार्थ की प्ररूपणा करते हैं उसी प्रकार ये भी अवितथ-जो वस्तु जैसी थी उसी तरह से उसकी व्याख्या करने वाले थे। (संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणा विहरंति) ये सब के सब साधुजन सावद्ययोगविरमणलक्षणरूप १७ प्रकार के संयम से एवं अनशनादि १२ प्रकार के तप से आत्मा को भावित करते हुए प्रभु के साथ विचरते थे ॥सू० २६॥

'तेणं कालेणं तेणं समएणं' इत्यादि—

(तेणं कालेणं तेणं समएणं) उस काल और उस समय में (समणस्स भगवओ महावीरस्स) श्रमण भगवान् महावीर के (अंतेवासी) पास में रहनेवाले (बहवे अणगारा भगवंतो) सभी अनगार भगवान (इरियासमिया) ईर्यासमिति से युक्त थे, अर्थात् अन्य जीवों की किसी भी प्रकार से विराधना न

सर्वज्ञ જેવા હતા. (जिणा इव अवितहं वागरमाणा) જિન-સર્વજ્ઞ-પ્રભુ જે પ્રકારે યથાર્થની પ્રરૂપણા કરે છે તેજ પ્રકારે તેઓ પણ અવિતથ-જે વસ્તુ જેવી હતી તેવીજ રીતથી તેની વ્યાખ્યા કરનારા હતા. (संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणा विहरंति) તેઓ તમામ સાધુજનો સાવદ્યયોગ વિરમણ લક્ષણરૂપ ૧૭ પ્રકારનાં સંયમથી તેમ જ અનશન આદિ ૧૨ પ્રકારનાં તપથી આત્માને ભાવિત કરતા કરતા પ્રભુની સાથે વિચરતા હતા. (સૂ૦ ૨૬)

"तेणं कालेणं तेण समएणं" ઇત્યાદિ.

(तेणं कालेणं तेणं समएणं) તે કાળ અને તે સમયમાં (समणस्स भगवओ महावीरस्स) શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીરના (अंतेवासी) પાસે રહેવાવાળા (बहवे अणगारा भगवंतो) ઘણા અનગાર ભગવાન (इरियासमिया) ઈર્યાસમિતિ-

**भासासमिया एसणासमिया आयाण-भंड-मत्त-निक्खेवणा-समि-**

दत्तावधाना इत्यर्थः, यथाऽन्यजीवस्य कथमपि विराधना न भवेत् तथोपयोगपूर्वकगमनशीला इति भावः। **'भासासमिया'** भाषासमिताः– भाषासमितियुक्ताः–भाषासमितिर्निरवद्यवचनप्रवृत्तिस्तया युक्ता इत्यर्थः। **'एसणासमिया'** एषणासमिताः–एषणायामुद्गमादिद्विचत्वारिंशद्दोषवर्जनेन समितिः–सम्यक्प्रवृत्तिरेषणासमितिस्तया युक्ताः, विशुद्धाऽऽहारादिग्रहणान्वेषणोपयोगयुक्ता इत्यर्थः। **'आयाण-भंड-मत्त-निक्खेवणा-समिया'** आदान-भाण्ड-मात्र-निक्षेपणासमिताः–आदाने=ग्रहणे–अस्य भाण्डमात्रयोरित्यनेन सम्बधः–प्रत्यासत्तिन्यायात्, साहचर्याद्वा। देहलीदीपन्यायाद्वा भाण्डमात्रशब्दस्य आदाननिक्षेपाभ्यां संबन्धः, भाण्डमात्रयोः–भाण्डस्य=पात्रस्य, मात्रस्य=वस्त्राद्युपपकरणस्य चेत्यर्थः,

---

हो इस प्रकार उपयोगपूर्वक गमन करने के स्वभाववाले थे। ( **भासासमिया** ) निरवद्यवचनप्रवृत्ति से युक्त थे। ( **एसणासमिया** ) एषणा में उद्गमादिक ४२ दोषों का परिवर्जनपूर्वक प्रवृत्ति करना इसका नाम एषणासमिति है। इस समिति से युक्त एषणासमित है। ये साधुजन विशुद्ध आहारादिके ग्रहण में एवं अन्वेषणमें उपयोग–विशिष्ट थे। ( **आयाण–भंड–मत्त–निक्खेवणा–समिया** ) आदान शब्द का अर्थ ग्रहण है। इसका संबंध प्रत्यासत्तिन्याय से, अथवा साहचर्य से भाण्डमात्र के साथ है। अथवा–भाण्डमात्र शब्द का सम्बन्ध 'देहली–दीपक' न्याय से आदान और निक्षेप इन दोनों के साथ होता है। ये साधुजन भाण्ड=पात्र एवं मात्र=वस्त्रादिक उपकरण के आदान–ग्रहण और निक्षेपण–रखना रूप समिति से युक्त थे।

---

વાળા હતા, અર્થાત્ બીજા જીવોની કોઈ પણ પ્રકારે વિરાધના ન થાય એવી રીતે ઉપયોગપૂર્વક ગમન કરવાના સ્વભાવવાળા હતા. (भासासमिया) નિરવદ્ય-વચન–પ્રવૃત્તિવાળા હતા. (एसणासमिया) એષણામાં ઉદ્‌ગમ આદિક ૪૨ દોષોનાં પરિવર્જનપૂર્વક પ્રવૃત્તિ કરવી તેનું નામ એષણાસમિતિ છે. આ સમિતિથી યુકત જે છે તે એષણાસમિત છે. તે સાધુજનો વિશુદ્ધ આહારાદિક લેવામાં તેમજ તેનાં અન્વેષણમાં ઉપયોગવિશિષ્ટ હતા, (आयाण-भंड-मत्त-निक्खेवणा-समिया) આદાન શબ્દનો અર્થ ગ્રહણ છે, તેનો સંબંધ પ્રત્યાસત્તિન્યાયથી અથવા સાહચર્યથી ભાંડમાત્રની સાથે છે. અથવા ભાંડમાત્ર શબ્દનો સંબંધ 'દેહલીદીપક' ન્યાયથી આદાન અને નિક્ષેપ એ બેઉની સાથે થાય છે, તે મુનિઓ ભાંડપાત્રના અને વસ્ત્રાદિક ઉપકરણનાં આદાન=ગ્રહણ અને નિક્ષેપણ=મૂકવારૂપ સમિતિથી યુકત હતા, અર્થાત્ પાત્ર તેમજ વસ્ત્રાદિક ઉપકરણોનાં

या उच्चार-पासवण-खेल-जल्ल-सिंघाण-पारिट्ठावणिया-समिया मण-गुत्ता वयगुत्ता कायगुत्ता गुत्ता गुत्तिंदिया गुत्तबंभयारी अममा अकिं-

तयोर्निक्षेपणे—अवस्थापने समिता.—सुप्रतिलेखन—प्रमार्जनाद्युपयोगपूर्वकप्रवृत्तियुक्ताः, '**उच्चार-पासवण—खेल—जल्ल—सिंघाण—पारिट्ठावणिया—समिया**' उच्चार—प्रस्रवण—श्लेष्म—जल्ल-शिङ्घाण—परिष्ठापनिका—समिताः, तत्र-उच्चारः-पुरीषम्, प्रस्रवणं-मूत्रं, खेलः-श्लेष्मा, उपलक्षण-त्वान्निष्ठीवनस्यापि ग्रहणम्, जल्लः—स्वेदजमलम्, शिङ्घाणं—नासिकामलम्, एतेषां परिष्ठापनिका—परिष्ठापना—परित्यागः—सैव परिष्ठापनिका, स्वार्थे कः, तस्यां समिताः, शुद्धस्थण्डिलाश्रयणा-त्सम्यगुपयुक्ताः। '**मणगुत्ता**' मनोगुप्ताः—(१) त्रिविधा मनोगुप्तयः—आर्त्तरौद्रध्यानानुबन्धि-कल्पनाजालवियोगः प्रथमा (२) शास्त्रानुसारिणी परलोकसाधिका धर्मध्यानानुबन्धिनी माध्यस्थ्य-परिणतिर्द्वितीया, (३) सकलमनोवृत्तिनिरोधेन योगनिरोधाऽवस्थाभाविनी—आत्मरमणरूपा

अर्थात् पात्र एवं वस्त्रादिक उपकरणों के सुप्रतिलेखन प्रमार्जनादिक में ये सब उप-योगपूर्वक प्रवृत्ति करने वाले थे। (**उच्चार—पासवण—खेल—जल्ल—सिंघाण—पारिट्ठा-वणिया—समिया**) उच्चार—पुरीष, प्रस्रवण—मूत्र, खेल—श्लेष्मा, उपलक्षण से निष्ठीवन-थूकना, जल्ल—स्वेदज मेल, गिंघाण—नासिका का मेल, इन सबके परिष्ठापन—रूप समिति से युक्त थे। (**मणगुत्ता वयगुत्ता कायगुत्ता**) गुप्ति तीन प्रकार की है—मनोगुप्ति, वचनगुप्ति और कायगुप्ति, इनमें मनोगुप्ति तीन प्रकारकी है-आर्त्त एवं रौद्रध्यान का परित्याग करना प्रथम मनोगुप्ति है, शास्त्र के अनुसार, परलोक की साधक और धर्मध्यान के साथ अनुबन्ध रखने वाली माध्यस्थ्यपरिणतिरूप द्वितीय मनोगुप्ति है। सकल मनोवृत्ति के निरोध से योगों की निरोधावस्था में होनेवाली परिणति—आत्मा में रमणरूप परिणति

સુપ્રતિલેખન અને પ્રમાર્જન આદિકમાં તે બધા ઉપયોગપૂર્વક પ્રવૃત્તિ કરવાવાળા હતા. (उच्चार-पासवण-खेल-जल्ल-सिंघाण-पारिट्ठावणिया—समिया) ઉચ્ચાર=પુરીષ, પ્રસ્રવણ=મૂત્ર, ખેલ=શ્લેષ્મા, ઉપલક્ષણથી નિષ્ઠીવન—થૂકવું, જલ્લ—પરસેવાનો મેલ, શિંઘાણ—નાકનો મેલ, આ બધાના પરિષ્ઠાપનરૂપ સમિતિથી યુક્ત હતા. (मणगुत्ता वयगुत्ता कायगुत्ता) ગુપ્તિ ત્રણ પ્રકારની છે. મનોગુપ્તિ, વચનગુપ્તિ અને કાયગુપ્તિ, તેમા મનોગુપ્તિ ત્રણ પ્રકારની છે—આર્ત્ત તેમજ રૌદ્ર ધ્યાનનો પરિત્યાગ કરવો એ પ્રથમ મનોગુપ્તિ છે, શાસ્ત્રને અનુસરનારી પરલોકની સાધક અને ધર્મધ્યાનની સાથે અનુબંધ રાખનારી માધ્યસ્થ્યપરિણતિરૂપ બીજી મનોગુપ્તિ છે. બધી મનો-વૃત્તિ માત્રના નિરોધથી યોગોની નિરોધાવસ્થામાં થનારી પરિણતિ—આત્મામાં

तृतीया। उक्तं च योगशास्त्रे—

विमुक्तकल्पनाजालं समत्वे सुप्रतिष्ठितम्।
आत्मारामं मनस्तज्ज्ञैर्मनोगुप्तिरुदाहृता ॥इति॥

तया मनोगुप्त्या युक्ताः—मनोगुप्ताः। 'वयगुत्ता' वचोगुप्ताः-वचनगुप्तियुक्ताः, वचनगुप्तिश्चतुर्विधा, उक्तं च—

सच्चा तहेव मोसा य सच्चामोसा तहेव य।
चउत्थी असच्चमोसा य, वयगुत्ती चउव्विहा॥ (उत्त० अ. २४ गा. २२)

छाया—सत्या तथैव मृषा च सत्यमृषा तथैव च।
चतुर्थ्यसत्यमृषा च वचोगुप्तिश्चतुर्विधा॥

वचोगुप्तिः=वचनगुप्तिश्चतुर्विधा—सत्या, मृषा, सत्यमृषा असत्यमृषा चेति। जीवं प्रति—'अयं जीवः' इति कथनं सत्या, जीवं प्रति 'अयमजीवः' इति कथनं मृषा, पूर्वमनिर्णीय वदति-'अद्यास्मिन्

---

तीसरी मनोगुप्ति है। योगशास्त्र में यही बात कही है—

विमुक्तकल्पनाजालं समत्वे सुप्रतिष्ठितम्॥
आत्मारामं मनस्तज्ज्ञैर्मनोगुप्तिरुदाहृता॥

इस मनोगुप्ति से युक्त होने का नाम मनोगुप्त है। वचनगुप्ति से युक्त होना सो वचनगुप्त है। वचनगुप्ति ४ प्रकार की है—

"सच्चा तहेव मोसा य, सच्चामोसा तहेव य॥
चउत्थी असच्चमोसा य वयगुत्ती चउव्विहा॥ (उत्त० अ० २४ गा. २२)

अर्थ इस गाथा का इस प्रकार है। सत्य, मृषा, सत्यमृषा और असत्य-मृषा; इस प्रकार वचन ४ प्रकार के होते है, (१) जिस वस्तु का जैसा स्वरूप

---

રમણુરૂપ પરિણુતિ એ ત્રીજી મનોગુપ્તિ છે. યોગશાસ્ત્રમાં એજ વાત કહી છે-

विमुक्तकल्पनाजालं, समत्वे सुप्रतिष्ठितम्।
आत्मारामं मनस्तज्ज्ञै, - र्मनोगुप्तिरुदाहृता॥

આ મનોગુપ્તિથી યુક્ત હોવાનું નામ મનોગુપ્ત છે. વચનગુપ્તિથી યુકત વચનગુપ્ત છે. વચનગુપ્તિ ૪ પ્રકારની છે.

सच्चा तहेव मोसा य सच्चामोसा तहेव य।
चउत्थी असच्चमोसा य वयगुत्ती चउव्विहा॥ (उत्त० अ० २४गा० २२)

ગાથાનો અર્થ આ પ્રકારનો છે .સત્ય ૧, મૃષા ૨, સત્યમૃષા ૩ અને અસત્યમૃષા ૪-એ પ્રકારે વચન ૪ પ્રકારના થાય છે.

(૧) જે વસ્તુનું જેવું સ્વરૂપ હોય તે વસ્તુને તે જ સ્વરૂપથી પ્રકાશિત

नगरे शतं बालका जाताः ' इति तत्कथनं सत्यमृषा । ' स्वाध्यायसमं तपो नास्ति ' इति कथनं चतुर्थी असत्यमृषा, यद्वचनं न सत्यं नापि मृषा, सा चतुर्थीति, चतुर्विधवचनयोग-निवृत्तिर्वचोगुप्तिरिति भावः । **' कायगुत्ता '** कायगुप्ताः-गमनागमनप्रचलनादिक्रियाया गोपनं-कायगुप्तिः, कायगुप्तिर्द्विधा-चेष्टानिवृत्तिरूपा, यथागम चेष्टा-नियमरूपा च । तत्र परीषहोपसर्गादिसंभवेऽपि यत् कायोत्सर्गकरणादिना कायस्य निश्चलताकरणम्, सर्वयोगनिरोधा-वस्थायां वा सर्वथा यत् कायचेष्टानिरोधनं सा प्रथमा । गुरुमापृच्छ्य शरीरसंस्तारकभूम्यादि-

---

है उस वस्तु को उसी स्वरूप से प्रकाशित करनेवाला वचन सत्यवचन है; जैसे-यह जीव है । (२) जीव को अजीव कहना मृषावचन है। (३) मिश्रितवचन सत्य-मृषा वचन है, जैसे-आज इस नगर में सौ बालक जन्मे हैं । यह वचन मिश्ररूप इसलिये है कि इसमें सौ का निर्णय नहीं है। (४) जो वचन मृषा भी न हो और सत्य भी न हो ऐसे वचन का नाम असत्यमृषा है; जैसे-स्वाध्याय समान तप नहीं है "-ऐसा वचन न सत्य है और न असत्य ही है, अर्थात् व्यवहार वचन है । इस ४ प्रकार के वचनयोग का वचनगुप्ति में निरोध हो जाता है । गमन-आगमन आदि क्रिया का जिसमें निरोध है वह कायगुप्ति है । यह कायगुप्ति २ प्रकारकी है-चेष्टा-निवृत्तिरूप १, यथा-आगम-चेष्टानियमनरूप २ । परीषह एवं उपसर्ग के आनेपर भी शरीर से ममत्व का परित्याग कर जो उसे निश्चल करना है, अथवा सर्वयोगों की निरोध-अवस्था में जो सर्वथा काय की चेष्टाओं का निरोध करना है यह चेष्टानिवृ-त्तिरूप पहली कायगुप्ति है । गुरु से पूछकर शारीरिक क्रियाओं की निवृत्ति के समय,

---

કરવાવાળું વચન સત્યવચન છે. જેમકે આ જીવ છે. (૨) જીવને અજીવ કહેવું એ મૃષાવચન છે. (૩) મિશ્રવચન સત્યમૃષાવચન છે, જેમ કે આજે આ નગરમાં સો બાળક જન્મ્યા છે. આ વચન મિશ્રરૂપ એટલા માટે છે કે એમાં સોનો નિર્ણય નથી (૪) જે વચન મૃષા પણ ન હોય અને સત્ય પણ ન હોય એવાં વચનનુ નામ અસત્યમૃષા છે, જેમ " સ્વાધ્યાયના જેવું તપ નથી." એવા વચન નથી તો સત્ય કે નથી અસત્ય, અર્થાત્ વ્યવહારવચન છે. આ ચાર પ્રકારનાં વચનયોગનો વચનગુપ્તિમાં નિરોધ થઇ જાય છે. ગમન-આગમન-આદિ ક્રિયાઓનો જેમાં નિરોધ હોય તેને કાયગુપ્તિ કહે છે. આ કાયગુપ્તિ બે પ્રકારની છે-૧ ચેષ્ટાનિવૃત્તિરૂપ, અને ૨ યથા-આગમ-ચેષ્ટાનિયમનરૂપ. પરીષહ તેમજ ઉપસર્ગના આવવા છતાં પણ શરીરથી મમત્વનો ત્યાગ કરીને જે તેને નિશ્ચલ કરવું, અથવા સર્વ યોગોની નિરોધ-અવસ્થામાં જે સર્વથા કાયની ચેષ્ટાઓનો નિરોધ કરવું તે ચેષ્ટા-

प्रतिलेखनाप्रमार्जनादिसमयोक्तक्रियाकलापपुरःसर शयनासनादि विधेयम्, तत' शयनासननिक्षेपादानादिषु स्वेच्छया चेष्टापरिहारेण नियता=शास्त्रनियमानुसारिणी या कायचेष्टा सा द्वितीयेति।

उक्तं च—उपसर्गप्रसङ्गेऽपि कायोत्सर्गजुषो मुनेः।
स्थिरीभावः शरीरस्य कायगुप्तिर्निगद्यते ॥१॥
शयनासननिक्षेपादानसंक्रमणेषु च।
स्थानेषु चेष्टानियमः कायगुप्तिस्तु सा परा ॥२॥इति॥

तया युक्ताः। '**गुत्ता**' गुप्ताः—अशुभयोगनिग्रहो गुप्तिस्तया युक्ताः, '**गुत्तिंदिया**' गुप्तेन्द्रिया'—गुप्तानि—असंयमस्थानेभ्यः सुरक्षितानि—इन्द्रियाणि यैस्ते गुप्तेन्द्रियाः, '**गुत्त-**

---

अथवा भूमि आदिकी प्रतिलेखना एवं प्रमार्जन करते समय जो अपनी इच्छानुसार शारीरिक चेष्टाओं का परित्याग करना है, एवं गुरु आदि की आज्ञानुसार शयन, आसन, निक्षेपण एवं आदानादिक में कायचेष्टा का नियमन करना है वह दूसरी कायगुप्ति है। कहा भी है—**उपसर्गप्रसंगेऽपि, कायोत्सर्गजुषो मुनेः। स्थिरीभावः शरीरस्य, कायगुप्तिर्निगद्यते ॥१॥ शयनासननिक्षेपा,-दानसंक्रमणेषु च। स्थानेषु चेष्टानियमः कायगुप्तिस्तु सा परा ॥२॥** श्लोकों का अर्थ ऊपर लिखे भावके अनुसार है। ये साधुजन कायगुप्ति के आराधक थे। अत एव ( **गुत्ता** ) अशुभ योग के निग्रहरूप गुप्ति से ये मुनिजन युक्त थे। ( **गुत्तिंदिया** ) असंयमस्थानों से इन्द्रियों को सुरक्षित रखनेवाले थे, इसलिये इन्हे गुप्तेन्द्रिय कहा गया है। ( **गुत्तबंभयारी** ) नौ—

---

निवृत्तिरूप पहेली कायगुप्ति छे. गुरुने पूछीने शारीरिक क्रियाओनी (शौचादिनी) निवृत्तिना समये अथवा भूमि आदिनी प्रतिलेखना तेमज प्रमार्जना करवाना समये जे पोतानी ईच्छाप्रमाणे शारीरिक चेष्टाओनो परित्याग करवानो छे, तेमज गुरु आदिनी आज्ञा-अनुसार शयन, आसन, निक्षेपण, तेमज आदानादिकमां कायचेष्टानुं नियमन करवानुं होय छे, ते बीजी कायगुप्ति छे. कह्युं पण छे के- उपसर्गप्रसङ्गेऽपि, कायोत्सर्गजुषो मुनेः।
स्थिरीभावः शरीरस्य, कायगुप्तिर्निगद्यते ॥
शयनासननिक्षेपा,-दानसंक्रमणेषु च।
स्थानेषु चेष्टानियमः कायगुप्तिस्तु सा परा ॥

श्लोकोनो अर्थ उपर लखेला भाव प्रमाणे छे. ते साधुजनो कायगुप्तिना आराधक हता. माटेज (गुत्ता) अशुभयोगना निग्रहरूप गुप्तिथी ते मुनिजनो युक्त हता. (गुत्तिंदिया) असंयमना स्थानोथी ईंद्रियोने सुरक्षित राखवावाळा

**चणा अकोहा अमाणा अमाया अलोभा संता पसंता उवसंता परिणिव्वुया अणासवा अग्गंथा छिण्णग्गंथा छिण्णसोया निरुवलेवा,**

बंभयारी' गुप्तब्रह्मचारिणः—गुप्तं नवभिर्ब्रह्मचर्यगुप्तिभी रक्षितं ब्रह्म—मैथुनविरमणं चरन्ति तच्छीलाः, '**अममा**' अममाः—ममत्वरहिताः, '**अकिंचणा**' अकिञ्चनाः—नास्ति किंचन येषां ते अकिञ्चनाः—धर्मोपकरणातिरिक्तवस्तुरहिताः। '**अकोहा**' अक्रोधाः=क्रोधवर्जिताः, '**अमाणा**' अमानाः = मानरहिताः, '**अमाया**' अमायाः = मायावर्जिताः, '**अलोभा**' अलोभाः=लोभरहिताः, '**संता**' शान्ताः=बहिर्वृत्त्या शान्तियुक्ताः, '**पसंता**' प्रशान्ताः= अन्तर्वृत्त्या शान्तियुक्ताः, अत एव '**उवसंता**' उपशान्ताः=शीतीभूताः '**परिणिव्वुया**' परिनिर्वृताः=कर्मकृतविकाररहितत्वात् स्वस्थीभूताः, अतएव '**अणासवा**' अनास्रवाः= आस्रवरहिताः, '**अग्गंथा**' अग्रन्थाः=निर्ग्रन्थाः, '**छिण्णगंथा**' छिन्नग्रन्थाः ग्रन्थाति बध्नाति आत्मानं कर्मणेति ग्रन्थः, स द्विविधः—द्रव्यभावभेदात्, द्रव्यं-हिरण्यादिः,

वाटिका-सहित ब्रह्मचर्य के धारक थे, इसलिये गुप्तब्रह्मचारी थे। (**अममा**) ममत्व से रहित थे। (**अकिंचणा**) धर्मोपकरण से अतिरिक्त और इनके पास कुछ नहीं था। (**अकोहा**) क्रोधरहित थे। (**अमाणा**) मानरहित थे। (**अमाया**) मायारहित थे। (**अलोभा**) लोभरहित थे। (**संता**) बाहरसे शान्तियुक्त थे, (**पसंता**) आभ्यन्तर से शान्तियुक्त थे, अत एव (**उवसंता**) शीतीभूत थे। (**परिणिव्वुया**) कर्मकृत विकार से रहित होने के कारण स्वस्थ थे, अत एव (**अणासवा**) आस्रव से रहित थे। (**अग्गंथा**) निर्ग्रन्थ थे। (**छिण्णगंथा**) जो आत्मा को कर्मों से जकड़े (बाँधे) उसका नाम ग्रन्थ है। यह दो प्रकार का होता है। १ द्रव्यग्रन्थ, दूसरा भावग्रन्थ। हिरण्यादि द्रव्यग्रन्थ हैं।

હતા, તેથી તેમને ગુપ્તેંદ્રિય કહે છે. (गुत्तबंभयारी) નવવાટિકા (વાડ) સહિત બ્રહ્મચર્યનું પાલન કરનાર હતા. (अममा) મમત્વથી રહિત હતા. (अकिंचणा) ધર્મોપકરણથી અતિરિક્ત બીજું તેમની પાસે કંઈ નહોતું (अकोहा) ક્રોધરહિત હતા. (अमाणा) માનરહિત હતા. (अमाया) માયારહિત હતા. (अलोभा) લોભરહિત હતા. (संता) બહારથી શાન્તિયુક્ત હતા. (पसंता) આભ્યન્તરથી શાન્તિયુક્ત હતા, અત એવ (उवसंता) ઉપશાન્ત-શીતીભૂત અન્દર અને બહારથી શીતલ હતા. (परिणिव्वुया) કર્મકૃત વિકારથી હોવાને કારણે સ્વસ્થ હતા, અત એવ (अणासवा) આસ્રવથી રહિત હતા. (अग्गंथा) નિર્ગ્રન્થ હતા. (छिण्णगंथा) જે આત્માને કર્મોથી જકડી રાખે (બાંધે) તેનું નામ ગ્રન્થ છે. એ બે પ્રકારના થાય છે. ૧ દ્રવ્યગ્રન્થ અને ૨ ભાવગ્રન્થ.

**कंसपाईव मुक्कतोया, संखइव निरंगणा, जीवो विव अप्पडिहयगई,**

भावो मिथ्यात्वादिः, स द्विविधो ग्रन्थश्छिन्नो यैस्ते तथा। '**छिण्णसोया**' छिन्नस्रोतसः—छिन्नसंसारप्रवाहाः। '**निरुवलेवा**' निरुपलेपाः—कर्मबन्धहेतुरुपलेपो रागादिस्तेन रहिताः, निरुपलेपतामेव '**कंसपाईव**' इत्यादि—'**सुहुयहुयासणो इव**' इत्यन्तैरुपमानोपमेयभावैः प्रदर्शयति, तत्र—'**कंसपाईव मुक्कतोया**' कांस्यपात्रीव मुक्ततोया—मुक्त-त्यक्त तोयमिव संसारबन्धहेतुत्वात्स्नेहो यैस्ते तथा, यथा कांस्यपात्र्या पतितमपि जलं लिप्तं न भवति तथा संसारबन्धहेतुस्तेनु लिप्तो न भवतीति भावः; '**संख इव निरंगणा**' शङ्ख इव

मिथ्यात्वादि भावग्रन्थ है। इन दोनो प्रकार के ग्रन्थों से रहित होने के कारण ये 'छिन्नग्रन्थ' कहे गये हैं। (**छिण्णसोया**) संसार का प्रवाहरूप स्रोत इनसे अलग हो चुका था। (**णिरुवलेवा**) कर्मबंध में कारणभूत रागादिक लेप से भी ये रहित थे, इसलिये निरुपलेप थे। इसी बात को आगे के '**कंसपाईव**' से लेकर '**सुहुयहुयासणो इव**' यहाँ तक के उपमान पदो के द्वारा सूत्रकार प्रकट करते हैं। (**कंसपाईव मुक्कतोया**) काँसे का भाजन जिस प्रकार पानी के संसर्ग से सर्वथा रहित होता है उसी प्रकार जल के तुल्य स्नेह को संसार का बंधन का हेतु होने से जिन्होंने सर्वथा छोड दिया, अथवा काँसे के भाजन में गिरा हुआ जल जैसे लिप्त नहीं होता उसी प्रकार संसारबंधनहेतु आस्रव जिनमें लिप्त नहीं होता, अतः वे काँसे के भाजन के समान निरुपलेप कहे गये है। (**संख इव निरंगणा**) शंख में

હિરણ્ય આદિ દ્રવ્યગ્રંથ છે. મિથ્યાત્વ આદિ ભાવગ્રન્થ છે. આ બન્ને પ્રકારના ગ્રન્થોથી રહિત હોવાના કારણે તેઓને છિન્નગ્રથ કહેવામાં આવ્યા છે. (छिण्णसोया) સંસારના પ્રવાહરૂપ સ્રોત તેમનાથી અલગ થઈ ચુકયા હતા. (णिरुवलेवा) કર્મબંધમાં કારણભૂત રાગાદિકલેપથી પણ તેઓ રહિત હતા, તેથી નિરૂપલેપ હતા. આજ વાતને આગળના 'कंसपाईव' થી લઈને 'सुहुयहुयासणो इव' અહીં સુધીનાં ઉપમાનપદોથી સૂત્રકાર પ્રકટ કરે છે. (कंसपाईव मुक्कतोया) કાંસાનું વાસણ જેમ પાણીના સંસર્ગથી સર્વથા રહિત હોય છે તેજ રીતે જલના તુલ્ય સ્નેહ જે, સંસારના બંધનનો હેતુ છે તેને જેમણે સર્વથા છોડી દીધો, અથવા કાંસાના વાસણમા પડેલા પાણી જેમ લિપ્ત થતાં (ચોટતાં) નથી, તેવીજ રીતે સંસારબંધનનો હેતુ આસ્રવ જેઓમાં લિપ્ત થતો નથી, તેથી તેઓને કાંસાના વાસણની પેઠે નિરૂપલેપ કહેવામાં આવ્યો છે. (संख इव निरंगणा) શંખમાં જેમ કોઈ પણ રંગ હોતો નથી તેવીજ રીતે

## जच्चकणगं पिव जायरूवा, आदरिसफलगा इव पागडभावा, कुम्मो

नीरङ्गणाः–रङ्गणं–रागाद्युपरञ्जनं तस्मान्निर्गताः, शङ्खे यथा किमपि रञ्जनद्रव्यं स्थितिं न लभते तथैतेष्वनगारेषु रागादयो न तिष्ठन्तीत्यर्थः। '**जीवो विव अप्पडिहयगई**' जीव इव अप्रतिहतगतयः–जीवो यथा शुभाशुभकर्मवशादव्याहतगत्या सर्वत्र याति तथा अप्रतिहता गतिर्येषां ते तथा, देशनगरादिषु अप्रतिबन्धविहारित्वेन वादादिषु–कुतीर्थिकमतनिराकरणसामर्थ्योपेतत्वेन च अस्खलितगतयः, '**जच्चकणगं पिव जायरूवा**' जात्यकनकमिव जातरूपाः–शोधितसुवर्णमिव निर्मलाः–रागादिरहिता इत्यर्थः। '**आदरिसफलगा इव पागडभावा**' आदर्शफलका इव प्रकटभावाः–प्रकटाः=प्रकटिताः, भावाः–उत्पादव्ययध्रौव्यस्वभावका जीवाजीवादिपदार्था यैस्ते तथा, आदर्शफलका

जैसे कोई भी रंग स्थिति नहीं पा सकता, उसी प्रकार रागादिक भी उन अनगारों में ठहर नहीं सकते थे। अतः ये शंख के समान नीरङ्गण कहे गये है। (**जीवो विव अप्पडिहयगई**) 'जीव जिस प्रकार शुभ और अशुभ कर्म के वश प्रेरित होकर अव्याहत गति से सर्वत्र चला जाता है उसी प्रकार इनका भी देश, नगर आदिमें अप्रतिहतगतिविहार होने से एवं वाद–विवाद आदि में कुतीर्थिक मतों के निराकरण करने की सामर्थ्य से युक्त होने से ये भी जीव के समान अस्खलितगतिवाले थे। (**जच्चकणगं पिव जायरूवा**) शोधितसुवर्ण के समान ये बिल्कुल निर्मल थे। (**आदरिसफलगा इव पागडभावा**) आदर्श अर्थात् काच जिस प्रकार प्रतिबिम्बित मुखादिक अवयवों को यथावस्थित प्रकट करता है उसी प्रकार ये भी अपने ज्ञान के द्वारा उत्पाद व्यय एवं ध्रौव्य–विशिष्ट जीवाजीवादिक पदार्थों को प्रकट करते थे। इनकी

રાગાદિક પણ તે અનગારોમાં રહી શકતા નથી, તેથી તેઓ શંખની પેઠે નીરંગણ કહેવાય છે. (जीवोविव अप्पडिहयगई) જીવ જેમ શુભ અને અશુભ કર્મવશ પ્રેરિત થઇને અવ્યાહત ગતિથી સર્વત્ર ચાલ્યો જાય, તેમ તેઓની પણ દેશ નગર આદિમાં અપ્રતિહતગતિ–વિહાર હોવાથી તેમજ વાદવિવાદ આદિમા કુતીર્થિકમતોનું નિરાકરણ કરવાનું સામર્થ્ય હોવાથી તેઓ પણ જીવની પેઠે અસ્ખલિતગતિવાળા હતા. (जच्चकणगं पिव जायरूवा) શોધેલા સુવર્ણના જેવા તેઓ બિલકુલ નિર્મળ હતા. (आदरिसफलगा इव पागडभावा) આદર્શ અર્થાત્ અરીસો જેમ પ્રતિબિંબિત મુખ આદિક અવયવોને યથાવસ્થિત પ્રકટ કરે છે (દેખાડે છે) તેમ તેઓ પણ પોતાના જ્ઞાનદ્વારા ઉત્પાદ, વ્યય તેમ જ ધ્રૌવ્ય–વિશિષ્ટ જીવ–અજીવ–

**इव गुत्तिंदिया, पुक्खरपत्तं व निरुवलेवा, गगणमिव निरालंबणा,**

यथा प्रतिबिम्बितान् मुखाद्यवयवान् यथावस्थितं प्रकटीकुर्वन्ति, तथा यत्कृतदेशनया जनानां चित्तदर्पणे जीवाजीवादिसकलपदार्थाः सुस्पष्टं प्रकाशन्ते इत्यर्थः । '**कुम्मो इव गुत्तिंदिया**' कूर्म इव गुप्तेन्द्रियाः—कूर्मो यथा भयहेतौ सति संवृतसर्वेन्द्रियो भवति तथा संसार-भ्रमणभयाद् गुप्तानि=विषयकषायेभ्यः संरक्षितानि इन्द्रियाणि येषां ते गुप्तेन्द्रियाः । '**पुक्खरपत्त व निरुवलेवा**' पुष्करपत्रमिव निरुपलेपाः—यथा कमलपत्रं निर्लिप्तं सत् जलोपरि तिष्ठति तथा निरुपलेपाः—पङ्कजलतुल्यस्वजनविषयसम्बन्धरहिता भवन्तीति भावः । '**गगणमिव निरालंबणा**' गगनमिव निरालम्बनाः—कुलग्रामनगराद्यालम्बनवर्जिताः,

जीवाजीवादिविषयक देशना ऐसी होती थी कि जिससे मनुष्यों के चित्तरूपी दर्पण में उत्पादादि—स्वभाव वाले समस्त जीवादिक पदार्थ अच्छी तरह—स्पष्टरूप से प्रतिभासित होने लगते थे। (**कुम्मो इव गुत्तिंदिया**) कच्छप जिस प्रकार भय के कारणो के उपस्थित होने पर समस्त इन्द्रियों को संगोपित कर लेता है उसी प्रकार ये मुनिजन भी संसारपरिभ्रमण के भयसे विषय—कषायों की ओर से अपनी २ इन्द्रियो को सुरक्षित किये हुए रहते थे। (**पुक्खरपत्तंव निरुवलेवा**) जिस प्रकार कमलपत्र जल से निर्लिप्त होकर उस के ऊपर रहता है और कीचड से उत्पन्न होने पर भी जैसे वह उसके संबंध से रहित होता है इसी प्रकार ये साधुजन भी कीचड एवं जलतुल्य स्वजन, एवं विषयो के संबंध से बिलकुल रहित थे। (**गगणमिव निरालंबणा**) आकाश की तरह ये कुल, ग्राम और नगर आदि के सहारे की अपेक्षा नहीं रखते थे। (**अणिलो इव निरालया**) पवन की तरह घर

આદિક પદાર્થોને પ્રકટ કરતા હતા. તેમની જીવાજીવાદિ વિષયની દેશના એવી થતી હતી કે જેથી મનુષ્યોના ચિત્તરૂપી દર્પણમાં ઉત્પાદ આદિ સ્વ-ભાવવાળા સમસ્ત જીવાદિક પદાર્થ સારી રીતે સ્પષ્ટરૂપે પ્રતિભાસિત થતા હતા. (कुम्मो इव गुत्तिंदिया) કાચવો જેમ ભયનાં કારણો આવી પડતાં સમસ્ત ઇંદ્રિઓને સંગોપિત કરી લે છે તેમ એ મુનિજનો પણ સંસાર—પરિભ્રમણના ભયથી વિષયકષાયોની તરફથી પોતપોતાની ઇંદ્રિઓને સુરક્ષિત રાખતા હતા. (पुक्खरपत्तं व निरुवलेवा) જેમ કમળપત્ર જલથી નિર્લિપ્ત થઈને તેની ઉપર રહે છે અને કીચડથી ઉત્પન્ન થાય છે તો પણ જેમ તે તેના સંબંધથી રહિત હોય છે તેવી જ રીતે સાધુજન પણ કીચડ તેમ જ જલતુલ્ય સ્વજન તેમ જ વિષયોના સંબંધથી બિલકુલ રહિત હતા. (गगणमिव निरा-लंबणा) આકાશની પેઠે તેઓ કુળ, ગામ અને નગર આદિના આશ્રયની

**अणिलो इव निरालया, चंदो इव सोमलेस्सा, सूरो इव दित्ततेया, सागरो इव गंभीरा, विहग इव सव्वओ विप्पमुक्का, मंदरो इव अप्पकंपा, सारयसलिलंव सुद्धहियया, खग्गिविसाणं व एगजाया,**

'**अणिलो इव निरालया**' अनिल इव निरालया'-पवन इव गृहरहिता', '**चंदो इव सोमलेस्सा**' चन्द्र इव सौम्यलेश्याः-अनुपतापहेतुमनःपरिणामधारिणः', '**सूरो इव दित्ततेया**' सूर्य इव दीप्ततेजसः'-द्रव्यतः शरीरदीप्त्या भावतो ज्ञानेन च देदीप्यमानाः'। '**सागर इव गंभीरा**' सागर इव गम्भीराः-हर्षशोकादिकारणसंयोगेऽपि निर्विकारचित्ताः। '**विहग इव सव्वओ विप्पमुक्का**' विहग इव सर्वतो विप्रमुक्ता'-परिवारपरित्यागात् नियत-वासरहितत्वाच्चेति भावः'। '**मंदरो इव अप्पकंपा**' मन्दर इव अप्रकम्प्याः-मेरुवत् परिषहोपसर्गपवनैरचलिताः'। '**सारयसलिलं व सुद्धहियया**' शारदसलिलमिव शुद्ध-हृदयाः-यथा शरदृतौ जलं निर्मलं भवति तथा परमनिर्मलहृदया इति भावः। '**खग्गिविसाणं**

से रहित थे। (**चंदो इव सोमलेस्सा**) चन्द्र के समान इनकी लेश्या सौम्य थी। (**सूरो इव दित्ततेया**) सूर्य के समान ये दीप्त तेजवाले थे। शारीरिक कांति द्रव्यतेज, एवं ज्ञान यह भावतेज है। (**सागर इव गंभीरा**) सागर के तुल्य ये गंभीर प्रकृति के थे। हर्ष शोक आदि के कारणों के उपस्थित होने पर भी इनके चित्त में किसी भी तरह का विकार उत्पन्न नहीं होता था। (**विहग इव सव्वओ विप्पमुक्का**) पक्षी की तरह ये नियमित निवास से रहित थे। (**मंदरो इव अप्पकंपा**) मेरुपर्वत की तरह परीषह एवं उपसर्गरूप पवन से ये अचलित थे। (**सारयसलिलं व सुद्धहियया**) शरद ऋतु के जल समान उनका हृदय निर्मल था। (**खग्गिविसाणं व एगजाया**) खड्गी

અપેક્ષા રાખતા નહતા (अणिलो इव निरालया) પવનની પેઠે ઘરથી રહિત હતા. (चंदो इव सोमलेस्सा) ચંદ્રની પેઠે તેમની લેશ્યા સૌમ્ય હતી. (सूरो इव दित्ततेया) સૂર્યની પેઠે તેઓ દીપ્ત-તેજસ્વી હતા. શારીરિક કાંતિ દ્રવ્યતેજ તેમ જ જ્ઞાન એ ભાવતેજ છે. (सागर इव गंभीरा) સાગરના જેવા ગંભીર પ્રકૃતિના તેઓ હતા. હર્ષ શોક આદિનાં કારણો આવી જતા પણ તેમના ચિત્તમાં કોઈ પણ જાતનો વિકાર ઉત્પન્ન થતો નહોતો. (विहग इव सव्वओ विप्पमुक्का) પક્ષીની પેઠે તેઓ નિયમિત નિવાસથી રહિત હતા. (मंदरो इव अप्पकंपा) મેરુ પર્વતની પેઠે પરીષહ તેમજ ઉપસર્ગરૂપ પવનથી તેઓ અચલિત હતા. (सारयसलिलं व सुद्धहियया) શરદ ઋતુના જલની પેઠે તેમના હૃદય નિર્મળ હતાં. (खग्गिविसाणं व एगजाया) ખડ્ગી (ગેંડા)ના શીંગડાની પેઠે,

**भारंडपक्खीव अप्पमत्ता, कुंजरो इव सोंडीरा, वसभो इव जाय-**

**व एगजाया** ' खड्गिविषाणमिवैकजाताः—खड्गी=आरण्यजीवः—तस्य विषाणं शृङ्गं, तदेकमेव भवति, तद्वित् एकजाताः—एकीभूता—रागादिसहायरहिताः, कुटुम्बादिसाहाय्यवर्जिता इत्यर्थः। '**भारंडपक्खीव अप्पमत्ता**' भारण्डपक्षीवाऽप्रमत्ताः—भारण्डपक्षी=भारण्डश्चासौ पक्षी च भारण्ड-पक्षी, अयं द्विजीवकस्त्रिचरणवान् द्वाभ्यां ग्रीवाभ्यां द्वाभ्यां मुखाभ्यां च युक्तः, द्वयोर्जीवयोरेकमेवोदरं भवति,तौ चात्यन्तमप्रमत्ततयैव निर्वाहं लभेते। यदि कदाचिद्दैवात् तत्रैकोऽपि जीव. प्रमादं करोति, तदा उभयोर्नाशो भवति, तस्मात् सर्वदा चकितचित्तौ प्रमादरहितौ तौ तिष्ठत'। तद्वद-प्रमत्ता'—तपःसयमादिधर्मरक्षणे प्रमादरहिता इत्यर्थ। '**कुंजरो इव सोंडीरा**' कुञ्जर इव शौण्डीरा'—हस्तीव शूराः—कषायादिरिपुभञ्जनशीलाः। '**वसभो इव जायत्थामा**' वृषभ इव जातस्थामानः—जातं स्थाम—बलं येषां ते जातस्थामानः—वृषभवत्संजातपराक्रमा

(**गैंडा**) के सींग की तरह, ये रागादिकों की सहायता से रहित होने के कारण, एक-स्वरूप थे। (**भारंडपक्खीव अप्पमत्ता**) भारंड पक्षी की तरह ये अप्रमत्त थे। यह पक्षी दो जीववाला होता है। इसके तीन पैर होते है। ग्रीवा और मुख इसके दो होते है। उदर अर्थात् पेट एकही होता है। ये दोनों जीव अत्यंत अप्रमत्त होते है। यदि कदाचित् एक जीव प्रमाद करे तो दोनों का नाश होवे। इसलिये अप्रमत्तचित्त होकर ये दोनों बहुत ही सावधानी से रहते है। उसी तरह ये मुनिजन भी तप एवं संयमादिक धर्म के रक्षण करने में प्रमादवर्जित थे। (**कुंजरो इव सोंडीरा**) कुंजर के समान ये कषायादिक के भंजन में शौण्डीर—शूरवीर थे। (**वसभो इव जायत्थामा**) वृषभ के

તેઓ રાગાદિકોની સહાયતાથી રહિત હોવાને કારણે, એકસ્વરૂપ હતા. (भारंड-पक्खीव अप्पमत्ता) ભારંડ પક્ષીની પેઠે તેઓ અપ્રમત્ત હતા. આ પક્ષી બે જીવવાળાં હોય છે. તેને ત્રણ પગ હોય છે. ડોક અને મુખ તેને બે હોય છે. ઉદર (પેટ) તેને એક જ હોય છે. તે બન્ને જીવ બહુ અપ્રમત્ત હોય છે. જો કદાચિત્ એક જીવ પ્રમાદ (ભૂલ) કરે છે તો બન્નેનો નાશ થાય છે. તેથી અપ્રમત્તચિત્ત (ચતુર) થઇને તે બન્ને બહુ જ સાવધાનીથી રહે છે. તેવી જ રીતે એ મુનિજનો પણ તપ તેમજ સયમ આદિ ધર્મનાં રક્ષણ કરવામાં પ્રમાદરહિત હતા. (कुंजरो इव सोंडीरा) કુંજર (હાથી)ની પેઠે તેઓ કષાય આદિકના ભંગ (નાશ) કરવામાં શૌંડીર-શૂરવીર હતા. (वसभो इव जायत्थामा) વૃષભની પેઠે તેઓ બલિષ્ઠ હતા. (सीहो इव दुद्ध-

स्थामा, सीहो इव दुद्धरिसा, वसुंधरा इव सव्वफासविसहा, सुहुयहुयासणो इव तेयसा जलंता ॥ सू० २७॥

इत्यर्थः। 'सीहो इव दुद्धरिसा' सिंह इव दुर्द्धर्षाः—सिंहवत्परीषहादिमृगैर्दुर्धर्षा इत्यर्थः। 'वसुंधरा इव सव्वफासविसहा' वसुन्धरा इव सर्वस्पर्शविषहाः—पृथ्वी यथा सर्वं सह्यमसह्यं वा स्पर्शं सहते सर्वंसहेति चोच्यते तथैवैते साधवोऽपि अनुकूलप्रतिकूलपरीषहोपसर्गसुसहा भवन्ति। 'सुहुयहुयासणो इव तेयसा जलंता' सुहुतहुताग्न इव तेजसा ज्वलन्तः—सुहुतः=सुष्ठु हुतः—घृताद्याहुतिभिस्तर्पितो यो हुताशनो वह्निः—तद्वत्तेजसा—तपः—संयमतेजसा ज्वलन्तो दीप्यमाना इति भावः॥

अत्र उपमानसंग्राहकम् इदं गाथाद्वयम्:—

'कंसे १ संखे २ जीवे ३, जच्चे कणगे य ४ आदरिसे ५।
कुम्मे ६ पुक्खरपत्ते ७, गयणे ८ अणिले ९ य चंद १० सूरे य ११॥
सागर १२ विहगे १३ मंदर १४, सारयसलिलं च १५ खग्गी य १६।
भारंडे १७ गय १८ वसहे १९, सीह २० वसुंधरा २१ सुहुयहुए २२॥ २॥ इति ॥ सू० २७ ॥

समान ये बलिष्ठ थे। (सीहो इव दुद्धरिसा) सिंह के समान ये दुर्धर्ष थे। सिंह जैसे मृगादिकों से अप्रधृष्य होता है, उसी प्रकार मृग जैसे परीषहादिकों से ये भी चलितचित्त नहीं होते थे। (वसुंधरा इव सव्वफासविसहा) पृथिवी के समान सर्वस्पर्शसह थे। पृथिवी जिस तरह सहने योग्य अथवा नहीं सहन करने योग्य ऐसे भी स्पर्श को सहती है उसी प्रकार ये मुनिजन भी अनुकूल एवं प्रतिकूल परीषहों के उपनिपात को अच्छी तरह सहन करते थे। (सुहुयहुयासणो इव तेयसा जलंता) सुहुत अग्नि की तरह ये तप और संयम के तेज से देदीप्यमान थे ॥सू. २७॥

रिसा) સિંહના જેવા તેઓ દુર્ધર્ષ હતા. સિંહ જેમ મૃગ આદિકોથી અપ્રધૃષ્ય હોય છે તેવી જ રીતે મૃગસમાન પરીષહ આદિકોથી તેઓ પણ ચલિતચિત્ત થતા નહોતા. (वसुंधरा इव सव्वफासविसहा) પૃથિવીની પેઠે સર્વ સ્પર્શ સહન કરતા હતા. પૃથિવી જેમ સહેવા યોગ્ય અથવા ન સહન કરવા યોગ્ય એવા પણ સ્પર્શને સહન કરે છે તેવી જ રીતે એ મુનિજનો પણ અનુકૂળ તેમ જ પ્રતિકૂળ પરીષહોના ઉપનિપાત ને સારી રીતે સહન કરતા હતા. (सुहुयहुयासणो इव तेयसा जलंता) સુહુત અગ્નિની પેઠે તેઓ તપ અને સંયમના તેજથી દેદીપ્યમાન હતા. (સૂ૦ ૨૭)

**मूलम्—नत्थि णं तेसि णं भगवंताणं कत्थइ पडिबंधे भवइ। से य पडिबंधे चउव्विहे पण्णत्ते; तंजहा—दव्वओ खेत्तओ कालओ भावओ। दव्वओ णं—सचित्ताचित्तमीसिएसु**

टीका—'**नत्थि**' इत्यादि। नास्ति अयं पक्षः, यत् खलु '**तेसि णं भगवंताणं**' तेषां खलु भगवताम्—श्रीमहावीरस्वामिनः शिष्याणाम् '**कत्थइ**' क्वापि—कस्मिन्नपि विषये '**पडिबंधे भवइ**' प्रतिबन्धः—आसक्तिः भवतीति, श्री महावीरस्वामिनोऽन्तेवासिनां संयमप्रतिबन्धीभूतः कोऽपि हेतुः कुत्राऽपि न भवतीति भावः। '**से य पडिबंधे चउव्विहे पण्णत्ते**' स च प्रतिबन्धश्चतुर्विधः प्रज्ञप्तः '**तं जहा**' तद्यथा-भेदप्रकारश्चेत्थम्—द्रव्यतः क्षेत्रतः कालतो भावतश्च। तेषु '**दव्वओ णं**' द्रव्यतः खलु '**सचित्ता—चित्त—मीसिएसु दव्वेसु**' सचित्ताऽचित्त—मिश्रितेषु द्रव्येषु। तत्र—सचित्तं=शिष्यादिकम्, अचित्तं=वस्त्रादिकम्, मिश्रितम्=शिष्यसहितवस्त्रादिकम्, एतेषु द्रव्येषु; '**खेत्तओ**' क्षेत्रतः—

'**नत्थि णं**' इत्यादि।

(**तेसि णं भगवंताणं**) भगवान महावीर के समीप में रहनेवाले उन स्थविर भगवन्तों का (**कत्थइ**) किसी भी विषय में (**पडिबंधे**) प्रतिबंध (**नत्थि**) नहीं था। अर्थात् भगवान् वीर प्रभु के ये समस्त मुनिजन संयम के विघातक किसी भी विषय में आसक्ति नहीं रखते थे। (**से य पडिबंधे चउव्विहे पण्णत्ते**) वह प्रतिबंध चार प्रकार का कहा गया है, (**तंजहा**) वह इस प्रकार है—(**दव्वओ खेत्तओ कालओ भावओ**) द्रव्य से, क्षेत्र से, काल से एव भाव से। (**दव्वओ णं सचित्ता—चित्त—मीसिएसु दव्वेसु**) द्रव्य से प्रतिबंध ३ प्रकार का है—(१) सचित्त (२) अचित्त (३) सचित्ताचित्त।

'नत्थि णं' ઇત્યાદિ.

(तेसि णं भगवंताणं) ભગવાન મહાવીરના સમીપમાં રહેવાવાળા તે સ્થવિર ભગવંતોને (कत्थइ) કોઈપણ વિષયમા (पडिबंधे) પ્રતિબંધ (नत्थि) ન હોતો, અર્થાત્—ભગવાન્ વીરપ્રભુના તે સમસ્ત મુનિજનો સંયમના વિઘાતક હોય એવા કોઈ પણ વિષયમા આસક્તિ રાખતા નહોતા. (से य पडिबंधे चउव्विहे पण्णत्ते) તે પ્રતિબંધ ચાર પ્રકારના કહેલા છે. (तंजहा) તે આ પ્રકારે છે. (दव्वओ खेत्तओ कालओ भावओ) દ્રવ્યથી, ક્ષેત્રથી, કાળથી તેમજ ભાવથી. (दव्वओ णं सचित्ता—चित्त—मीसिएसु दव्वेसु) દ્રવ્યથી પ્રતિબંધ ત્રણ પ્રકારનો છે—(૧) સચિત્ત, (૨) અચિત્ત, (૩) સચિત્તાચિત્ત, શિષ્ય આદિક સચિત્ત છે.

दव्वेसु। खेत्तओ–गामे वा णयरे वा रण्णे वा खेत्ते वा खले वा घरे वा अंगणे वा। कालओ–समए वा आवलियाए वा आणा-

'गामे वा' ग्रामे वा, 'णयरे वा' नगरे वा 'रण्णे वा' अरण्ये वा, 'खेत्तेवा' क्षेत्रे वा, खले=धान्यसंमर्दनसंगोपनस्थाने वा, 'घरे वा अंगणे वा' गृहे वाऽङ्गणे वा। 'कालओ समएवा आवलियाए वा' कालतः–समये सर्वतो जघन्ये काले, समयस्य विस्तृतोऽर्थ उपासकदशाङ्गस्यागारधर्मसञ्जीवनी-वृत्तितोऽवसेयः। 'आवलिकायाम्' असंख्यातसमय रूपायाम्, 'आणापाणुए वा' आनप्राणे वा=

शिष्यादिक सचित्त है। वस्त्रादिक अजीव पदार्थ अचित्त है। शिष्यसहित वस्त्रादिक सचित्ताचित्त है। इनमें इन मुनिजनों को बिलकुल भी आसक्ति नहीं थी। (**खेत्तओ गामे वा णयरे वा रण्णे वा खेत्ते वा खले वा घरे वा अंगणे वा**) इसी तरह क्षेत्र की अपेक्षा–ग्राम में, नगर में, जंगल में, क्षेत्र में, खल–धान्यादिक के कूटने और फटकने के स्थान ऐसे खलिहान में, घर में अथवा आंगन में प्रतिबंध नहीं था। (**कालओ समए वा आवलियाए वा आणापाणुए वा थोवे वा लवे वा मुहुत्ते वा अहोरत्ते वा पक्खे वा मासे वा अयणे वा अण्णयरे वा दीहकालसंजोगे**) कालकी अपेक्षा से समय–सब से छोटे काल में, इस समय और कालका विस्तृत अर्थ 'उपासकदशांग' की 'अगारधर्मसंजीवनी' वृत्ति में कहा है, वहां से जान लेना चाहिये। आवलिका में, असंख्यात समयकी एक आवलिका होती है, उच्छ्वासनिश्वासकालरूप आनप्राण में, स्तोकमें–सप्तप्राणप्रमाणवाले कालविशेषमें–सात उच्छ्वासमें, लवमें–सात-

વસ્ત્રાદિક અજીવ પદાર્થ અચિત્ત છે. શિષ્યસહિત વસ્ત્રાદિક સચિત્તાચિત્ત છે. તેમાં એ મુનિજનોને બિલકુલ જ આસક્તિ નહોતી. (खेत्तओ गामे वा णयरे वा रण्णे वा खेत्ते वा खले वा घरे वा अंगणे वा) તેવી જ રીતે ક્ષેત્રની અપેક્ષા–ગામમાં, નગરમા, જંગલમાં, ખેતરમાં, ખલ–ધાન્ય વગેરેને કૂટવા-ખાડવાનાં સ્થાનભૂત એવાં ખલિહાનમાં, ઘરમાં, આંગણાંમા પ્રતિબંધ નહોતો. (कालओ समए वा आवलियाए वा आणापाणुए वा थोवे वा लवे वा मुहुत्ते वा अहोरत्ते वा पक्खे वा मासे वा अयणे वा अण्णयरे वा दीहकालसंजोगे) કાલની અપેક્ષાએ સમય–સૌથી થોડા કાળમાં (આ સમય અને કાલનો વિસ્તૃત અર્થ 'ઉપાસકદશાંગની' 'અગારધર્મસંજીવની' વૃત્તિમાં કહેલો છે ત્યાંથી જાણી લેવો જોઇએ.), આવલિકામાં (અસંખ્યાત સમયની એક આવલિકા થાય છે), ઉચ્છવાસ–નિઃશ્વાસ–કાલરૂપ આનપ્રાણમાં, સ્તોકમાં–સપ્તપ્રાણના પ્રમાણ

**पाणुए वा थोवे वा लवे वा मुहुत्ते वा अहोरत्ते वा पक्खे वा मासे वा अयणे वा अण्णयरे वा दीहकालसंजोगे। भावओ–कोहे वा माणे वा मायाए वा लोहे वा भए वा हासे वा। एवं तेसिं ण भवइ ॥ सू० २८ ॥**

उच्छ्वासनिःश्वासकाल इत्यर्थः, '**थोवे वा**' स्तोके वा=सप्तप्राणमाने वा कालविशेषे, '**सत्त पाणाणि से थोवे**' इत्युक्तेः। '**लवे वा**'–'**सत्त थोवाणि से लवे**' इति सप्तस्तोकमिते काले वा, '**मुहुत्ते वा**' मुहूर्ते वा–लवानां सप्तसप्ततिप्रमाणे काले, '**अहोरत्ते वा**' अहोरात्रे वा–रात्रिदिवसप्रमाणे काले वा, '**पक्खे वा**' पक्षे–पञ्चदशदिवसप्रमाणके काले वा '**मासे वा**' त्रिंशद्दिवसप्रमाणके काले वा, '**अयणे वा**' अयने–उत्तरायणदक्षिणायनभेदाद्द्विविधे षण्मासप्रमिते काले वा, '**अण्णयरे वा दीहकालसंजोगे**' अन्यतरस्मिन् वा दीर्घकालसंयोगे–उक्तप्रभेदाद् भिन्ने वा संवत्सरादिरूपे काले। '**भावओ**' भावतः–'**कोहे वा**' क्रोधे वा '**माणे वा**'–माने वा, '**मायाए वा**'–मायायां वा, '**लोहे वा**' लोभे वा '**भए वा**' भये वा, हासे वा। '**एवं तेसिं ण भवइ**' एवं तेषां न भवति, एवं–पूर्ववर्णितप्रकारेण तत्र तत्र प्रतिबन्धः–आसक्तिस्तेषां मुनीनां न भवति ॥सू० २८॥

स्तोक अर्थात् ४९ उच्छ्वास–प्रमित कालमें, मुहूर्त्तमें–७७ लवोसे प्रमित कालमें, अहोरात्रमें, पक्ष–१५ दिनके कालमें, मास–३० दिन–प्रमाण समयमें, अयनमें–उत्तरायण–दक्षिणायन रूप छ छ महिनोंमें, एवं और भी सवत्सरादिरूप बृहत्समयमें प्रतिबंध नहीं था। (**भावओ**) भावकी अपेक्षासे (**कोहे वा माणे वा मायाए वा लोहे वा भए वा हासे वा एवं तेसिं ण भवइ**) क्रोधमें, मानमें, मायामें, लोभमें, भयमें, अथवा हास्यमें उन मुनिजनोंको किसीभी तरहका प्रतिबंध नहीं था ॥ सू० २८ ॥

જેટલા કાળવિશેષમાં–સાત ઉચ્છ્વાસમાં, લવમાં–સાત સ્તોક અર્થાત્ ૪૯ ઉચ્છ્વાસના પ્રમાણના કાળમાં, મુહૂર્ત્તમાં–૭૭ લવોથી પ્રમિત કાળમાં, અહોરાત્રિમાં, પક્ષ–૧૫ દિવસના કાળમાં, માસ–૩૦ દિવસના સમયમાં, અયનમાં–ઉત્તરાયણ–દક્ષિણાયનરૂપ છ છ મહિનામાં, તેમજ બીજાપણ સંવત્સર આદિરૂપ લાંબા સમયમાં પ્રતિબંધ નહોતો. (भावओ) ભાવની અપેક્ષાએ (कोहे वा माणे वा मायाए वा लोहे वा भए वा हासे वा एवं तेसिं ण भवइ) ક્રોધમાં, માનમાં, માયામાં, લોભમાં, ભયમાં અથવા હાસ્યમાં તે મુનિઓને કોઇ પણ તરેહનો પ્રતિબંધ નહોતો. (સૂ. ૨૮)

**मूलम्—ते णं भगवंतो वासावासवज्जं अट्ठ गिम्हहेमंतियाणि मासाणि गामे एगराइया णयरे पंचराइया, वासीचंदणसमाण-**

'ते णं भगवंतो' इत्यादि। ते=श्रीवर्धमानस्वामिनः शिष्याः खलु भगवन्तो '**वासावासवज्जं**' वर्षावासवर्जम् '**अट्ठ गिम्हहेमंतियाणि**' अष्टौ ग्रैष्महैमन्तिकान् '**मासाणि**' मासान्, '**गामे एगराइया**' ग्रामे एकरात्रिकाः—यस्मिन् दिवसेऽनगारा ग्राममागच्छन्ति स दिवसः पुनर्यावन्नावर्तते तावत्पर्यन्तः काल एकरात्रशब्देन गृह्यते, तेनैकसप्ताहनिवासिन इत्यर्थः। '**णयरे पंचराइया**'—नगरे पञ्चरात्रिकाः—यस्मिन् दिवसेऽनगारा नगरमागच्छन्ति स दिवसः पञ्चवारमावर्तितः पञ्चरात्रमुच्यते, तेनैकोनत्रिंशद्दिवसवासिन इत्यर्थः। स्थविरकल्पिनां शेषकाले एकस्मिन् नगरे मासकल्पविहारित्वात्। '**वासी-चंदण-समाण-कप्पा**' वासी—चन्दन—समान—कल्पाः, वासी—'वसुला' इति प्रसिद्धः काष्ठतक्षणशस्त्रविशेषः, वासीव वासी अपकारी, तां चन्दनसमानं—चन्दनवत् कल्पयन्ति=मन्यन्ते ये ते वासीचन्दनसमानकल्पाः—अपकारिणमप्युपकारकत्वेन मन्यमाना इत्यर्थः। तथा चोक्तम्—

---

'**तेणं भगवंतो**' इत्यादि,

(**तेणं भगवंतो**) वर्द्धमान स्वामी के वे संयमी शिष्यजन (**वासावासवज्जं**) वर्षाकाल—चौमासा छोडकर (**अट्ठ गिम्हहेमंतियाणि मासाणि**) ग्रीष्मकाल एवं शीत-कालके ८ महीनोंमें (**गामे**) छोटे गाममें (**एगराइया**) एकरात्रिपर्यन्त—एक सप्ताह तक और (**णयरे**) नगरमें (**पंचराइया**) पांच रात्रितक—२९ दिवस—पर्यन्त ठहरते थे। (**वासी-चंदण-समाण-कप्पा**) ये अपने अपकारीजनको भी उपकारीरूपसे मानते थे। अथवा कोई चाहे इन्हे वसूलासे छीले, चाहे चदनसे चर्चे, दोनों पर समान दृष्टि रखते थे। कहा भी है

---

'तेणं भगवंतो' ઇત્યાદિ

(तेणं भगवंतो) વર્દ્ધમાન સ્વામીના તે સંયમી શિષ્યજનો (वासावास-वज्जं) વર્ષાકાલ—ચોમાસું છોડીને (अट्ठ गिम्हहेमंतियाणि मासाणि) ગ્રીષ્મકાલ તેમજ શીતકાલના આઠ મહિનામા (गामे) નાના ગામમા (एगराइया) એક રાત્રિ સુધી—એક અઠવાડીયા સુધી, અને (णयरे) નગરમા (पंचराइया) પાંચ રાત્રિ સુધી—૨૯ દિવસ સુધી રોકાતા હતા. (वासीचंदणसमाणकप्पा) તે પોતાના અપકારીજનોને પણ ઉપકારીરૂપ ગણતા હતા. અથવા કોઈ ભલે તેમને વાંસલાથી છોલે કે ભલે ચંદનથી ચર્ચે બેઉપર સમાન દૃષ્ટિ રાખતા હતા. કહ્યું પણ છે—

"यो मामपकरोत्येष, तत्त्वेनोपकरोत्यसौ ॥

शिरामोक्षाद्युपायेन, कुर्वाण इव नीरुजम् ॥" इति ॥

यद्वा-वास्यां चन्दनसमानः कल्प आचारो येषां ते वासीचन्दनसमानकल्पाः,

---

**यो मामपकरोत्येष तत्त्वेनोपकरोत्यसौ ।**

**शिरामोक्षाद्युपायेन, कुर्वाण इव नीरुजम् ॥ १ ॥**

सज्जनोका जब कोई मनुष्य अपकार करता है, तब वे ऐसा समझते हैं कि यह जो मेरा अपकारी है सो तो वस्तुतः उपकारी ही है । क्यों कि इसके अपकार से हमारी सहनशीलता आदि गुणोंकी परीक्षा होती है, शत्रु-मित्रमें, निन्दा-स्तुति-आदिमें समदृष्टिता बढती है । अत यह मेरा अपकारी नहीं, प्रत्युत उपकारी है । जैसे किसीकी गर्दनकी नस यदि चढ जाती है, उसको यथास्थानमें बैठानेके वैद उसका शिर पकडकर बायें-दाये घुमाता है, उस समय रोगीको पीडा होती है, परन्तु नसके अपने स्थान पर बैठ जाने पर पीडितकी पीडा शान्त हो जाती है, वह नीरोग हो जाता है, उसी प्रकार अपकारी भी अपकारके द्वारा सज्जनोंकी आत्माको, जो अनादिकालसे स्व-स्थानच्युत हो संसारमें भ्रमण कर रही है, स्वस्थानमें स्थित करता है । इसलिये सज्जन अपने अपकारीको उपकारीही मानते हैं, उस पर आक्रोश कभी भी नहीं करते

---

यो मामपकरोत्येष तत्त्वेनोपकरोत्यसौ ।

शिरामोक्षाद्युपायेन कुर्वाण इव नीरुजम् ॥ १ ॥

સજ્જનોને કોઈ મનુષ્ય જ્યારે અપકાર કરે છે ત્યારે તેઓ એમ સમજે છે કે આ જે અમારો અપકારી છે તે તો ખરીરીતે ઉપકારી જ છે. કેમકે તેના અપકારથી અમારી સહનશીલતા આદિગુણોની પરીક્ષા થાય છે, શત્રુ-મિત્રમાં, નિંદા-સ્તુતિ આદિમાં સમદૃષ્ટિપણું વધે છે. તેથી તે અમારો અપકારી નથી; પરંતુ ઉપકારી છે. જેમકે કોઇની ગરદનની નસ જો ચડી જાય છે તો તે બરાબર ઠેકાણે બેસાડી દેવાને માટે વૈદ્ય તેનું માથું પકડીને જમણું-ડાબું ફેરવે છે. તે વખતે રોગીને પીડા થાય છે, પરંતુ નસને પોતાને ઠેકાણે બેસી જવાથી તે રોગીની પીડા શાંત થઇ જાય છે, અને તે નિરોગી થઇ જાય છે. તેવીજ રીતે અપકારી પણ અપકારદ્વારા સજ્જનોના આત્માને-કે જે અનાદિકાલથી પોતાના સ્થાનથી ચ્યુત થઇ સંસારમાં ભ્રમણ કરી રહેલો છે તેને-પોતાના સ્થાનમા સ્થિર કરે છે. તેથી સજ્જન પોતાના અપકારીને ઉપકારીજ માને છે. તેના પર ગુસ્સો કદી પણ કરતા નથી.

**कप्पा समलेट्ठुकंचणा समसुहदुक्खा इहलोग-परलोग-अप्पडिवद्धा संसारपारगामी कम्मणिग्घायणट्ठाए अब्भुट्ठिया विहरंति ॥सू. २९॥**

तथाचोक्तम्—

"अपकारपरेऽपि परे, कुर्वन्त्युपकारमेव हि महान्तः ।
सुरभीकरोति वासीं, मलयजमपि तक्षमाणमपि ॥" इति ।

'**समलेट्ठुकंचणा**' समलेष्टुकाञ्चनाः=लेष्टुः—मृत्तिकाखण्डः, काञ्चन—सुवर्णं, ते उभे समे तुल्ये येषां ते तथा, '**समसुहदुक्खा**' समसुखदुःखाः, सुखे दुःखे च समानपरिणामा

है, अथवा—वासी—अपकारीमे चंदनके समान है आचार जिनका ऐसे वे साधुजन थे। चंदन वासी द्वारा—वसूला द्वारा—काटे जाने पर भी वसूलाके मुखको सुवासित करता है। कहा भी है—

**अपकारपरेऽपि परे, कुर्वन्त्युपकारमेव हि महान्तः ।**
**सुरभीकरोति वासीं मलयजमपि तक्षमाणमपि ॥ १ ॥**

तथा दुष्ट—स्वभाववाले मनुष्य यद्यपि सज्जनोंका निरन्तर अपकार ही करते रहते हैं, तो भी वे सज्जन उन अपकारियों पर कभी भी क्रुद्ध नहीं होते हैं, उनका कभी भी अपकार नहीं करते है। प्रत्युत वे अपकारियोंका भी उपकार ही करते हैं। जैसे चंदनवृक्ष अपने अङ्गको काटनेवाले मनुष्यको, काटने के साधन कुठारके मुखको भी सुरभित ही करता है ॥१॥ (**समलेट्ठुकंचणा**) पाषाण और सुवर्ण इन दोनों को बराबर समझते थे। (**समसुह-**

અથવા વાસી—અપકારી પ્રતિ ચંદનના સરખો આચાર છે જેમનો એવા તે સાધુજનો હતા. ચંદન વાસીદ્વારા—વાંસલાથી કપાઇ જવા છતાં પણ વાંસલાના મુખને સુવાસિત કરે છે. કહ્યું પણ છે—

अपकारपरेऽपि परे, कुर्वन्त्युपकारमेव हि महान्तः ।
सुरभीकरोति वासीं मलयजमपि तक्षमाणमपि ॥

તથા તે દુષ્ટ સ્વભાવવાળા મનુષ્ય જો કે સજ્જનોનો હમેશ અપકાર જ કર્યા કરે છે તો પણ તે સજ્જનો તે અપકારીઓ ઉપર કદી પણ ક્રોધ કરતા નથી, કદી પણ તેમનો અપકાર કરતા નથી, પરંતુ તે અપકારીઓ ઉપર પણ ઉપકાર જ કરે છે. જેમ ચંદનવૃક્ષ પોતાના અંગને કાપવાવાળા મનુષ્યને, અને કાપવાના સાધન કુહાડાના મુખને પણ સુગંધિત કરે છે (૧) (समलेट्ठु-कंचणा) પાષાણ અને સુવર્ણ એ બન્નેને બરાબર સમજતા હતા. (समसुह-

**मूलम्—तेसि णं भगवंताणं एएणं विहारेणं विहरमा-**

इत्यर्थः । '**इहलोग-परलोग-अप्पडिबद्धा**' इहलोकपरलोकाऽप्रतिबद्धाः-लोकद्वयसुखासक्तिरहिता, '**संसार-पार-गामी**' संसार-पार-गामिनः-भवसमुद्रतः स्वपरात्मतारकाः, '**कम्मणिग्घायणट्ठाए अब्भुट्ठिया विहरंति**' कर्मनिर्घातनार्थमभ्युत्थिताः-सकलकर्मनिर्जरणार्थं कृतोद्यमा विहरन्ति ॥ सू० २९ ॥

**टीका**—'**तेसि ण**' इत्यादि । तेषां श्रीमहावीरस्वामिशिष्याणां '**भगवंताणं**' भगवतां-तपःसंयमशोभाशालिनाम्, '**एएणं विहारेणं विहरमाणाणं**' एतेन विहारेण विहरताम्-तत्र विहार =विचरणं-मुनिचर्या, यद्वा विविधैरनेकप्रकारैरुपधिभारवहन-पादचलन-परीषहसहनादिरूपैः कायक्लेशैः कर्माणि ह्रियन्तेऽनेनेति विहारः, एतेन विहारेण-ग्रामनगरा-

**दुक्खा**) सुख एवं दुःखमें समान परिणाम वाले थे। सुखमें हर्ष एवं दुःखमें विषाद इस प्रकार विषमता लिये इनके परिणाम नहीं थे। (**इहलोग-परलोग-अप्पडिबद्धा**) इस लोक-संबंधी एवं परलोक संबंधी सुखोंकी आसक्ति इनके हृदयमें नहीं थी। (**संसार-पारगामी**) ये भवरूपी समुद्रको तिरनेवाले थे। (**कम्मणिग्घायणट्ठाए अब्भुट्ठिया विहरंति**) समस्त कर्मोंकी निर्जरा करनेके लिये ही संयमाराधनमें तत्पर होकर विचरते थे ॥ सू० २९ ॥

'**तेसि णं भगवंताणं**' इत्यादि,

(**तेसि णं भगवंताणं**) महावीर स्वामीके इन स्थविर भगवन्तोंका जो (**एएणं विहारेण विहरमाणाणं**) इस प्रकारके विहार करते थे। विहार शब्दका अर्थ मुनिचर्या

दुक्खा) સુખ તેમજ દુઃખમાં સમાન પરિણામવાળા હતા. સુખમાં હર્ષ તેમ જ દુઃખમાં વિષાદ (શોક) એવી વિષમતા તેમનામાં નહોતી. (इहलोग-परलोग-अप्पडिबद्धा) આ લોક-સંબંધી તેમજ પરલોક-સંબંધી સુખોની આસક્તિ તેમના હૃદયમાં નહોતી. (संसारपारगामी) તેઓ ભવરૂપી સમુદ્રને તરવાવાળા હતા. (कम्मणिग्घायणट्ठाए अब्भुट्ठिया विहरंति) સમસ્ત કર્મોની નિર્જરા કરવા માટે જ સંયમ-આરાધનમાં તત્પર થઈને વિચરતા હતા. (सू. २९)

'तेसि णं भगवंताणं' ઇત્યાદિ,

(तेसि णं भगवंताणं) એ મહાવીર સ્વામીના તે સ્થવિર ભગવંતો (एएणं विहारेणं विहरमाणाणं) આ પ્રકારે વિહાર કરતા હતા. વિહાર શબ્દનો

णाणं इमे एयारूवे सब्भंतरबाहिरए तवोवहाणे होत्था। तं जहा—अब्भितरए वि छव्विहे, बाहिरए वि छव्विहे। से

दिगमनरूपेण सञ्चरताम्, 'इमे एयारूवे' इदमेतद्रूप=वक्ष्यमाणस्वरूपं 'सब्भंतरबाहिरए' साभ्यन्तरबाह्यं 'तवोवहाणे' तपउपधानं=तपःकर्म 'होत्था' आसीत्, 'तं जहा' तद्यथा—'अब्भितरए वि छव्विहे' आभ्यन्तरकमपि षड्विधं, 'बाहिरए वि छव्विहे' बाह्यमपि षड्विधम्। 'से किं तं बाहिरए छव्विहे पण्णत्ते'?—अथ किं तद् बाह्यं षड्विधं प्रज्ञप्तम्?—अथेति

है। अथवा—"विविधैः—अनेकप्रकारैः—रुपधिभारवहन-पादचलन-परीषहसहनादिरूपैःकायक्लेशैः कर्माणि ह्रियन्ते अनेनेति विहारः" इस व्युत्पत्तिके अनुसार संयमोपयोगी वस्त्रपात्रादिरूप उपधिको स्वयं उठाना, विना किसी सवारीके पादत्राण—रहित होकर चलना, क्षुधापरीषह आदिका सहना—आदि विविध कायक्लेशों द्वारा कर्मोंका हरण किया जाता है जिससे उसका नाम विहार है। इस विहार से वे मुनिवर ग्राम-नगरादि में विचरते थे। इन मुनिवरों के (इमे एयारूवे) इस प्रकार वक्ष्यमाण रूप से (सब्भंतरबाहिरए तवोवहाणे होत्था) आभ्यन्तर एवं बाह्य तप—उपधान था, अर्थात् वे तपस्या में तत्पर थे। (तं जहा) वह इस प्रकार है—(अब्भितरएवि छव्विहे बाहिरएवि छव्विहे) तप दो प्रकार का है—एक आभ्यन्तर तप और दूसरा बाह्य तप। इनमें आभ्यन्तर तप भी छह प्रकार का है और बाह्यतप भी छह प्रकार का है। (से किं तं बाहिरए छव्विहे पण्णत्ते) ये छ प्रकार के बाह्यतप

અર્થ મુનિચર્યા છે. અથવા—"विविधैः=अनेकप्रकारैरुपधिभारवहन–पादचलन–परीषहसहनादिरूपैः कायक्लेशैः कर्माणि ह्रियन्ते अनेन इति विहारः" એ વ્યુત્પત્તિ-અનુસાર સંયમ-ઉપયોગી વસ્ત્રપાત્ર આદિરૂપ ઉપધિને પોતે ઉપાડવી, કોઇ વાહન વિના અને પગરખાં વિના ચાલવું, ક્ષુધા (ભૂખ)-પરીષહ આદિ સહન કરવાં વિગેરે વિવિધ કાયકલેશોદ્વારા કર્મોનો ક્ષય થાય છે જેનાથી તેનું નામ વિહાર છે. આ વિહારથી તે મુનિવરો ગામ નગર આદિમાં વિચરતા હતા. તે મુનિવરોનું (इमे एयारूवे) આ પ્રકારે વક્ષ્યમાણરૂપથી (सब्भंतर-बाहिरए तवोवहाणे होत्था) આભ્યંતર તેમ જ બાહ્ય તપ હતું, અર્થાત્ તે તપસ્યામાં તત્પર હતા. (तं जहा) તે આ પ્રકારે છે–(अब्भितरए वि छव्विहे बाहिरए वि छव्विहे) તપ બે પ્રકારનાં છે—એક આભ્યતર તપ, અને બીજું બાહ્યતપ. તેમાં આભ્યંતર તપ પણ છ પ્રકારનાં છે અને બાહ્યતપ પણ છ પ્રકારનાં છે. (से किं तं बाहिरए छव्विहे पण्णत्ते?) તે છ પ્રકારનું બાહ્યતપ

**किं तं बाहिरए छव्विहे पण्णत्ते?, तं जहा–अणसणे १ ओमोयरिया २ भिक्खायरिया ३ रसपरिच्चाए ४ कायकिलेसे ५ पडिसंलीणया ६। से किं तं अणसणे? अणसणे दुविहे पण्णत्ते, तं**

---

आनन्तर्ये, तद् बाह्यं=बहिर्दृश्यमानं षड्विधं=षट्प्रकारकं तपः किं=कीदृशं प्रज्ञप्तम्?–इति प्रश्नः। उत्तरमाह–'**तं जहा**'–इत्यादि। '**तं जहा**' तद्यथा, '**अणसणे**' अनशनम् १, '**ओमोअरिया**' अवमोदरिका (२), '**भिक्खायरिया**' भिक्षाचरिका (३), '**रसपरिच्चाए**' रसपरित्यागः (४), '**कायकिलेसे**' कायक्लेशः (५), '**पडिसंलीणया**' प्रतिसंलीनता (६), एतत् षड्विधं तपो बहिर्दृश्यते इति बाह्यम्। एषु अनशनं जिज्ञासु शिष्यः पृच्छति–'**से किं तं अणसणे**' अथ किन्तदनशनम्? अनशनं किंस्वरूपं कतिविधं चेति प्रष्टुरभिप्रायः। अस्योत्तरम्–'**अणसणे दुविहे पण्णत्ते**' अनशनं द्विविधं प्रज्ञप्तम्?–अनशनम्=आहारपरित्यागः, तद् द्विविधं प्रज्ञप्तम्, द्विविधत्वं प्रकटयति–'**तं जहा**' तद्यथा '**इत्तरिए य**' इत्व-

---

कौन है? यह प्रश्न है। उत्तर–(**तं जहा**) वे छह प्रकार के बाह्य तप इस प्रकार है–(**अणसणे, ओमोयरिया, भिक्खायरिया, रसपरिच्चाए, कायकिलेसे, पडिसंलीणया**) अनशन, अवमोदरिका, भिक्षाचरिका, रसपरित्याग, कायक्लेश और प्रतिसंलीनता ये बाह्यतप हैं। बाह्यतप ये इसलिये कहे गये हैं कि सबके लिये प्रकटरूपसे दृष्टिगोचर होते है। (**से किं तं अणसणे**) शिष्य प्रश्न करता है–हे भदन्त! अनशन तप का क्या स्वरूप है? वह कितने प्रकार का है?, उत्तर (**अणसणे दुविहे पण्णत्ते**) अनशन दो प्रकार का है। (**तं जहा**) उसके वे दो प्रकार ये है–(**इत्तरिए य आवकहिए य**) इत्वरिक और यावत्कथिक। इनमें इत्वरिक अल्प काल का है, और यावत्कथिक यावज्जीव का है। श्रीमहावीर

---

शुं छे? (तं जहा) ते छ प्रकारना बाह्यतप आ प्रमाणे छे–(अणसणे, ओमोयरिया, भिक्खायरिया, रसपरिच्चाए, कायकिलेसे, पडिसंलीणया) अनशन, अवमोदरिका, भिक्षाचरिका, रसपरित्याग, कायक्लेश अने प्रतिसंलीनता ए बाह्यतप छे. ए बधांने बाह्यतप एटलामाटे कहेवामां आवे छे के बधाने ते प्रकटरूपे दृष्टिगोचर थाय छे. (से किं तं अणसणे?) शिष्य प्रश्न करे छे–हे भदन्त! अनशन तपनुं शुं स्वरूप छे? ते केटला प्रकारनुं छे? उत्तर–(अणसणे दुविहे पण्णत्ते) अनशन बे प्रकारनुं छे. (तंजहा) तेना ए बे प्रकार आ प्रमाणे छे–(इत्तरिए य आवकहिए य) ईत्वरिक अने यावत्कथिक. तेमां ईत्वरिक थोडा समयनुं छे, अने यावत्कथिक जीवनपर्यंतनुं छे. श्री महावीर

**जहा–इत्तरिए य १ आवकहिए य २। से किं तं इत्तरिए? इत्तरिए अणेगविहे पण्णत्ते, तं जहा–चउत्थभत्ते १ छट्ठभत्ते २ अट्ठमभत्ते**

रिकं च–एति–गच्छति तच्छीलम् इत्वरं, तदेव–इत्वरिकम्–अल्पकालिकम्, यथा श्रीमहावीरस्वामिनस्तीर्थे नमस्कारसहितप्रत्याख्यानकालादारभ्य षण्मासपर्यन्तम्, श्रीनाभेयतीर्थङ्करतीर्थे संवत्सरपर्यन्तम्–इति १। **'आवकहिए य'** यावत्कथिकञ्च–यावत्–यदवधिर्मनुष्योऽयमिति मुख्यव्यवहाररूपा कथा यावत्कथा, तत्र भवं यावत्कथिकं–जीवनपर्यन्तम् अनशनमिति। अनयोरित्वरिकं पृच्छति–**'से किं तं इत्तरिए'** अथ किं तद् इत्वरिकम्?, अस्योत्तरमाह–**'इत्तरिए अणेगविहे पण्णत्ते'** इत्वरिकम् अनेकविधं प्रज्ञप्तम्, **'तं जहा'**–तद्यथा–तानि यद्रूपाणि सन्ति तथा कथयति–**'चउत्थभत्ते'** चतुर्थभक्तम्–एकोपवासरूपम् १। **'छट्ठभत्ते'** षष्ठभक्तम्–निरन्तरदिनद्वयोपवासरूपम् २। **'अट्ठमभत्ते'** अष्टमभक्तं–निरन्तरदिनत्रयोपवासरू-

स्वामी के तीर्थ में इत्वरिक तप नमस्कारसहित=नौकारसी प्रत्याख्यान काल से लेकर छह मासपर्यन्त का कहा गया है। श्री आदिनाथ तीर्थंकर के शासनमें इसकी मर्यादा नौकारसी से लेकर एकवर्ष पर्यन्त की थी। शेष २२ तीर्थंकरों के शासनमें अष्टमास पर्यन्त इसकी अवधि थी। (**से किं तं इत्तरिए?**) इत्वरिक तप क्या है? उत्तर–(**इत्तरिए अणेगविहे पण्णत्ते**) यह इत्वरिक तप अनेक प्रकार का कहा गया है, (**तं जहा**) वे प्रकार ये हैं–(**चउत्थभत्ते छट्ठभत्ते अट्ठमभत्ते दसमभत्ते बारसभत्ते चउद्दसभत्ते सोलसभत्ते अद्धमासियभत्ते मासियभत्ते दोमासियभत्ते तेमासियभत्ते चउमासियभत्ते पंचमासियभत्ते छम्मासियभत्ते**) चतुर्थभक्त–एक उपवास, षष्ठभक्त–दो उपवास–निरन्तर–लगातार–दो दिन का उपवास, अष्टमभक्त–निरन्तर तीन दिन तक उपवास, दशमभक्त–चार–उपवास–लगातार

સ્વામીના તીર્થમાં ઈત્વરિક તપ નમસ્કારસહિત–નૌકારસી પ્રત્યાખ્યાનકાલથી લઈને છ માસ સુધીનું કહેલું છે. શ્રી આદિનાથ તીર્થંકરના સમયે તીર્થમાં તેની મર્યાદા નૌકારસીથી લઈને એક વર્ષ સુધીની હતી. બાકીના ૨૨ તીર્થંકરોના તીર્થમાં ૮ માસ સુધીની તેની અવધિ હતી (से किं तं इत्तरिए?) ઈત્વરિક તપ શું છે? ઉત્તર–(इत्तरिए अणेगविहे पण्णत्ते) આ ઈત્વરિક તપ અનેક પ્રકારનું કહેલું છે; (तंजहा) તે આમ છે. (चउत्थभत्ते छट्ठभत्ते अट्ठमभत्ते दसमभत्ते बारसभत्ते चउद्दसभत्ते सोलसभत्ते अद्धमासियभत्ते मासियमभत्ते दोमासियभत्ते तेमासियमभत्ते चउमासियमभत्ते पंचमासियभत्ते छम्मासियभत्ते) ચતુર્થ-ભક્ત એક ઉપવાસ, ષષ્ઠભક્ત–બે ઉપવાસ–નિરન્તર–લગાતાર બે દિવસનો ઉપવાસ, અષ્ટમભક્ત–એક સાથે ત્રણ દિવસનો ઉપવાસ–ત્રણ ઉપવાસ, દશમ-

३ दसमभत्ते ४ बारसभत्ते ५ चउद्दसभत्ते ६ सोलसभत्ते ७ अद्ध-मासियभत्ते ८ मासियभत्ते ९ दोमासियभत्ते १० तेमासियभत्ते ११ चउमासियभत्ते १२ पंचमासियभत्ते १३ छम्मासियभत्ते-१४,

पम् ३। 'दसमभत्ते' दशमभक्तम्-निरन्तरदिनचतुष्टयोपवासरूपम् ४। 'बारसभत्ते' द्वादशभक्तम्-निरन्तरदिनपञ्चकोपवासव्रतम् ५। 'चउद्दसभत्ते' चतुर्दशभक्तम्-निरन्तरदिनषट्कोपवासरूपम् ६। 'सोलसभत्ते' षोडशभक्तम्-निरन्तरदिनसप्तकोपवासरूपम् ७। 'अद्धमासियभत्ते' अर्द्धमासिकभक्तम्-निरन्तरपञ्चदशदिवसोपवासरूपम् ८। 'मासियभत्ते' मासिकभक्तम्-निरन्तरत्रिंशद्दिवसोपवासरूपम् ९। 'दोमासियभत्ते' द्वैमासिकभक्तम् 'तेमासियभत्ते' त्रैमासिकभक्तम्। 'चउमासियभत्ते' चातुर्मासिकभक्तम्। 'पंचमासियभत्ते' पाञ्चमासिकभक्तम्। 'छम्मासियभत्ते' षाण्मासिकभक्तम्। 'से तं इत्तरिए' तदेतदित्वरिकम्। 'से किं तं आवकहिए' अथ किन्तद् यावत्कथिकम्? 'आवकहिए' यावत्कथिकम्-यावत्-यदवधिः

४ दिन के उपवास, द्वादशभक्त-पॉच उपवास-लगातार पॉच दिन तक उपवास, चतुर्दशभक्त-छ उपवास-लगातार ६ दिनतक उपवास करना, षोडशभक्त-७ दिन उपवास-लगातार ७ दिनतक उपवास करना, **अर्द्धमासिकभक्त**-निरन्तर-लगातार १५ दिनतक उपवास करना, **मासिकभक्त**-लगातार एक महिने भरके उपवास करना, **द्वैमासिकभक्त**-लगातार एकही साथ दोमास के उपवास, त्रैमासिकभक्त-लगातार-एकही साथ ३ मास के उपवास, **चातुर्मासिकभक्त**-लगातार-एकहीसाथ चार महिने का उपवास, **पाञ्चमासिकभक्त**-पॉच महिने के लगातार उपवास, और षाण्मासिकभक्त-लगातार छह महिने के उपवास करना। यह सब इत्वरिक नामका अनशन तप है। यावत्कथिक का मतलब है-जबतक "यह मनुष्य है" इस

ભક્ત-ચાર ઉપવાસ-એક સાથેજ ચાર દિવસનો ઉપવાસ, દ્વાદશભક્ત-પાંચ ઉપવાસ-એકસાથે પાચ દિવસ સુધી ઉપવાસ, ચતુર્દશભક્ત-એક સાથે ૬ દિવસો સુધી ઉપવાસ કરવો, ષોડશભક્ત-૭ દિવસ એક સાથે ઉપવાસ કરવો, અર્ધમાસિકભક્ત નિરંતર એક સાથે ૧૫ દિવસ સુધી ઉપવાસ કરવો, માસિકભક્ત-એક સાથે એક મહિના સુધી ઉપવાસ કરવો, દ્વૈમાસિકભક્ત-એક સાથે બે મહીના સુધીના ઉપવાસ, ત્રૈમાસિક ભક્ત-એક સાથે ત્રણ માસ સુધી ઉપવાસ, ચાતુર્માસિક ભક્ત-એક સાથે ચાર મહિનાના ઉપવાસ, પાંચમાસિકભક્ત=પાંચ મહિના સુધી એકીસાથે ઉપવાસ, અને ષાણ્માસિક ભક્ત-છ મહિના સુધી એકીસાથે ઉપવાસ કરવો. આ બધું ઈત્વરિકનામનુ અનશન તપ છે. યાવત્ક-

**से तं इत्तरिए। से किं तं आवकहिए ? आवकहिए दुविहे पण्णत्ते, तं जहा–पाओवगमणे य १ भत्तपच्चक्खाणे य २। से किं तं पाओ-**

कथा–'मनुष्योऽयम्' एतद्रूपा सा यावत्कथा, तत्र भव यावत्कथिकम्–यावज्जीवनमित्यर्थः, तद् '**दुविहे पण्णत्ते**' द्विविधं प्रज्ञप्तम्। '**तं जहा**' तद्यथा–'**पाओवगमणे य भत्तपच्चक्खाणे य**' पादपोपगमनं च भक्तप्रत्याख्यान च, तत्र–पादपस्येव वृक्षस्येवोपगमनम्–अस्पन्दतया–निश्चलतयाऽवस्थानं पादपोपगमनम्–चतुर्विधाऽऽहारपरित्यागेन शरीरप्रतिक्रियावर्जनेन च वृक्षवन्निश्चलावस्थानमित्यर्थः। '**से किं तं पाओवगमणे**'–अथ किन्तत्पादपोपगमनम्?–पादपोपगमनं कीदृगम्? अत्राह–'**पाओवगमणे दुविहे पण्णत्ते**' पादपो-

प्रकार का उसके–तप करने वाले के–साथ व्यवहार चलता रहे तबतक जो व्रत किया जाय वह यावत्कथिक है–जीवनपर्यन्त आराधित अनशन व्रत यावत्कथिक है। (**से किं तं आवकहिए ?**) यावत्कथिक तप कितने प्रकार का है? उत्तर–(**आवकहिए दुविहे पण्णत्ते**) यह तप दो प्रकार का है–(**तं जहा**) वह इस प्रकारसे (**पाओवगमणे य भत्तपच्चक्खाणे य**) पादपोपगमन और दूसरा भक्तप्रत्याख्यान। जिसमें कटे वृक्ष की तरह निश्चल हो कर स्थिति रहे वह पादपोपगमन है–चारों प्रकार के आहार के परित्याग से एवं शरीर की शुश्रूषा आदि क्रियाओ के परित्याग से कटे वृक्ष की तरह निश्चल हो जाना इसका नाम पादपोपगमन है। (**से किं तं पाओवगमणे ?**) पादपोपगमन कितने प्रकार का है?, (**पाओवगमणे दुविहे पण्णत्ते**) यह पादपोपगमन संथारा दो प्रकार का है, (**तं जहा**) वह इस

थिकनी मतलब छे, ज्यां सुधी "आ मनुष्य छे" ए प्रकारनो तेना–तप करनारना साथे व्यवहार चालतो रहे त्यां सुधी जे व्रत करवामां आवे ते यावत्कथिक छे–जीवनपर्यंत आराधित अनशन व्रत यावत्कथिक छे. (से कि तं आवकहिए) यावत्कथिक व्रत केटला प्रकारना छे? उत्तर (आवकहिए दुविहे पण्णत्ते) आ तप बे प्रकारनु छे. (त जहा) ते आ प्रकारे छे. (पाओवगमणे य भत्तपच्चक्खाणे य) (१) पादपोपगमन अने बीजुं भक्तप्रत्याख्यान. जेमां कापेलां वृक्षनी पेठे निश्चल जेवी स्थिति रहे ते पादपोपगमन छे–चारेय प्रकारना आहारनो त्याग करीने तेमज शरीरनी सेवा–शुश्रूषा आदि क्रियाओना त्याग करीने कापेला वृक्षनी पेठे निश्चल थई जवुं तेनु नाम पादपोपगमन छे. (से किं तं पाओवगमणे?) पादपोपगमन केटला प्रकारना छे? (पाओवगमणे दुविहे पण्णत्ते) आ पादपोपगमन संथारा बे प्रकारना

वगमणे? पाओवगमणे दुविहे पण्णत्ते; तं जहा—वाघाइमे य १ निव्वाघाइमे य २ नियमा अप्पडिकम्मे। से तं पाओवगमणे। से किं तं भत्तपच्चक्खाणे? भत्तपच्चक्खाणे दुविहे पण्णत्ते; तं

पगमनं द्विविधं प्रज्ञप्तम्, 'तं जहा' तद्यथा—'वाघाइमे य' व्याघातवच्च—व्याघातः—व्याघ्र-सिंह—दावानलादि—संजातोपद्रवः, तेन सहितं व्याघातवत्। 'निव्वाघाइमे य' निर्व्याघातवच्च—सिंहदावानलाद्युपद्रवरहितं यत्प्रतिपद्यते तत् निर्व्याघातवत्, व्याघातविरहितमित्यर्थः। एतद् द्विविधं 'नियमा अप्पडिकम्मे' नियमादप्रतिकर्म=नियमतः शरीरचलनादिक्रियारहितं भवति। 'से तं पाओवगमणे' तदेतत्पादपोपगमनम्। 'से किं तं भत्तपच्चक्खाणे?' अथ किं तद् भक्तप्रत्याख्यानम्?,—'भत्तपच्चक्खाणे दुविहे पण्णत्ते' भक्तप्रत्याख्यानं द्विविधं प्रज्ञप्तम्, तत्र—भक्तप्रत्याख्यानं—चतुर्विधस्याऽऽहारस्य, त्रिविधस्य पानकरहितस्य वाऽऽहारस्य वर्जनरूपं द्विविधं प्रज्ञप्तम्—द्विप्रकारकं कथितम्। 'तं जहा' तद्यथा—'वाघाइमे य'

प्रकार से—(वाघाइमे य १ निव्वाघाइमे य २ नियमा अप्पडिकम्मे) १ व्याघातवत्, २ निर्व्याघातवत्। जो व्याघ्र, सिंह एवं दावानल आदि से उद्भूत उपद्रव से सहित होता है वह व्याघातवत् है। जिसमें इस प्रकार के उपद्रव न हों वह निर्व्याघातवत् है। यह पादपोपगमन नियमतः शारीरिक हलनचलन आदि क्रियाओं से रहित होता है। तथा इसमें औषधोपचार आदि नहीं किया जाता है। (से तं पाओवगमणे) यह पादपोपगमन सन्थारा है। अब भक्तप्रत्याख्यान का वर्णन करते हैं—(से किं तं भत्तपच्चक्खाणे) यह भक्तप्रत्याख्यान कितने प्रकार का होता है?, (भत्तपच्चक्खाणे दुविहे पण्णत्ते) यह भक्तप्रत्याख्यान दो प्रकार का है, (तं जहा) वह इस प्रकार—(वाघाइमे य निव्वाघाइमे य

छे—(तं जहा) ते आ प्रकारे—(वाघाइमे य १ निव्वाघाइमे २ य नियमा अप्पडिकम्मे) १ व्याघातवत् अने बीजो निर्व्याघातवत्. जे वाघ (सावज) तेमज दावानलथी थता उपद्रववाळा होय छे ते व्याघातवत् छे. जेमां ए प्रकारना उपद्रव न होय ते निर्व्याघातवत् छे. आ पादपोपगमन नियम प्रमाणे शारीरिक हलनचलन आदि क्रियाओथी रहित होय छे, तथा एमा औषधोपचार आदि नथी करता. (से तं पाओवगमणे) ए पादपोपगमन संथारो आ प्रमाणे थाय छे. हवे भक्तप्रत्याख्याननुं वर्णन करे छे—(से किं तं भत्तपच्चक्खाणे?) आ भक्तप्रत्याख्यान केटला प्रकारना थाय छे? (भत्तपच्चक्खाणे दुविहे पण्णत्ते) ए बे प्रकारना छे—(तं जहा) ते आ प्रकारे—(वाघाइमे य निव्वाघाइमे य नियमा

जहा—वाघाइमे य १ निव्वाघाइमे य २ णियमा सप्पडिकम्मे। से तं भत्तपच्चक्खाणे। से तं अणसणे। से किं तं ओमोयरिया? ओमोयरिया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—दव्वोमोयरिया य १ भावोमो-

---

व्याघातवच्च विघ्नयुक्तश्च। 'निव्वाघाइमे य' निर्व्याघातवच्च—विघ्नरहितं च। एतद् द्वयं 'णियमा सप्पडिकम्मे' नियमात् सप्रतिकर्म—नियमतः शरीरचलनादिक्रियासहितं भवति। तेन बाह्यौषधोपचारो वैयावृत्यं च तस्य भवति। 'से तं भत्तपच्चक्खाणे' तदेतद् भक्तप्रत्याख्यानम्। 'से तं अणसणे' तदेतदनशनम्।

'से किं तं ओमोयरिया' अथ का साऽवमोदरिका?, 'ओमोयरिया दुविहा पण्णत्ता' अवमोदरिका द्विविधा प्रज्ञप्ता—अवमोदरिका—अवमम्—ऊनम्, उदरं यस्मिन् भोजने तद् अवमोदरं, तदस्त्यस्यामिति अवमोदरिका—तपोरूपा क्रिया, सा द्विविधा प्रज्ञप्ता,—द्विप्रका-

---

नियमा सप्पडिकम्मे) १ व्याघातवत् २ निर्व्याघातवत्। इस भक्तप्रत्याख्यान में चौविहार एवं तेविहार दोनों किया जाता है। विघ्नयुक्त का नाम व्याघातवत् एवं विघ्नरहित का नाम निर्व्याघातवत् है। इस तप में नियमतः शारीरिक हलन—चलनादिक क्रियाएँ होती है। उनका इसमें परित्याग नहीं है। इसलिये इसमें बाह्य औषधोपचार, एवं वैयावृत्य किये जाते है। (से तं भत्तपच्चक्खाणे) यह भक्तप्रत्याख्यान के भेदों का वर्णन है। (से तं अणसणे) इस प्रकार तपके १२ भेदों में से अनशन नामका १ प्रथम बाह्यतप का वर्णन सम्पूर्ण हुआ। (से किं तं ओमोयरिया?) प्रश्न—अवमोदरिका किसे कहते है और वह कितने प्रकार की है? (ओमोयरिया दुविहा पण्णत्ता) उत्तर-यह अवमोदरिका

---

सप्पडिकम्मे) १ व्याघातवत् २ निर्व्याघातवत्. આ ભક્તપ્રત્યાખ્યાનમાં ચૌવિહાર-૪ ચારે પ્રકારના આહારનો ત્યાગ તેમજ તેવિહાર બન્ને કરવામાં આવે છે. વિઘ્નવાળાનુ નામ વ્યાઘાતવત્ તેમજ વિઘ્નરહિતનુ નામ નિર્વ્યાઘાતવત્ છે. આ તપમાં નિયમપ્રમાણે શારીરિક હલનચલન આદિક ક્રિયાઓ થાય છે. તેનો આમાં પરિત્યાગ નથી. તેથી આમાં બાહ્ય ઔષધોપચાર તેમજ વૈયાવૃત્ય કરાય છે. (से तं भत्तपच्चक्खाणे) આ ભક્તપ્રત્યાખ્યાનના ભેદોનું વર્ણન છે. (से तं अणसणे) એ પ્રકારે તપના ૧૨ ભેદોમાંથી અનશનનામના ૧ પ્રથમ બાહ્ય-તપનું વર્ણન સંપૂર્ણ થયું.

(से किं तं ओमोयरिया) પ્રશ્ન—અવમોદરિકા કોને કહે છે? અને તે કેટલા પ્રકારની છે? (ओमोयरिया दुविहा पण्णत्ता) ઉત્તર—એ અવમોદરિકા બે પ્રકારની

यरिया य २। से किं तं दव्वोमोयरिया? दव्वोमोयरिया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा–उवगरणदव्वोमोरिया य १ भत्तपाणदव्वोमोयरिया य २। से किं तं उवगरणदव्वोमोयरिया? उवगरणदव्वोमोयरिया तिविहा पण्णत्ता, तं जहा–एगे वत्थे १ एगे पाए २ चिय-

रा कथिता 'तं जहा' तद्यथा–'दव्वोमोयरिया य' द्रव्यावमोदरिका च। 'भावोमोयरिया य' भावाऽवमोदरिका च। 'से किं तं दव्वोमोयरिया?' अथ का सा द्रव्याऽवमोदरिका?, 'दव्वोमोयरिया दुविहा पण्णत्ता' द्रव्यावमोदरिका द्विविधा प्रज्ञप्ता, 'तं जहा'–तद्यथा 'उवगरणदव्वोमोयरिया य' उकरणद्रव्यावमोदरिका च १। 'भत्तपाणदव्वोमोयरिया य' भक्तपानद्रव्यावमोदरिका च २। 'से किं तं उवगरणदव्वोमोयरिया' अथ का सा उपकरणद्रव्यावमोदरिका? 'उवगरणदव्वोमोयरिया तिविहा पण्णत्ता' उपकरणद्रव्यावमोदरिका त्रिविधा प्रज्ञप्ता, 'तं जहा' तद्यथा–१ 'एगे वत्थे' एकं वस्त्रम्–एकं–चोलपट्टरूप वस्त्रं न द्वितीयम्; २–'एगे पाए' एकं पात्रम्; ३–'चियत्तोवगरणसाइ-

दो प्रकारकी है; [तं जहा] वे दो प्रकार ये है–[दव्वोमोयरिया य भावोमोयरिया य] एक द्र०.ावमोदरिका और दूसरी भावावमोदरिका। [से किं तं दव्वोमोयरिया] प्रश्न–वह द्रव्यावमोदरिका क्या है–कितने भेदवाली है? उत्तर–[दव्वोमोयरिया दुविहा पण्णत्ता] द्रव्यावमोदरिका दो भेदवाली है; [तं जहा] वे दो प्रकार इस तरह है–[उवगरण–दव्वोमोयरिया य भत्तपाणदव्वोमोयरिया य] १ उपकरणद्रव्यावमोदरिका और २ भक्तपानद्रव्यावमोदरिका। [उवगरणदव्वोमोयरिया तिविहा पण्णत्ता] इनमें उपकरण-द्रव्यावमोदरिका तीन प्रकार की है। (तं जहा) वे तीनप्रकार ये है–[एगे वत्थे एगे पाए चियत्तोवगरणसाइज्जणया] एक वस्त्र १, एक पात्र २, और तीसरा त्यक्तोपकरणस्वादनता

છે. (तंजहा) તે બે પ્રકાર આ છે–(दव्वोमोयरिया य भावोमोयरिया य) એક દ્રવ્યાવમોદરિકા અને બીજી ભાવાવમોદરિકા. (से किं तं दव्वोमोयरिया) પ્રશ્ન– એ દ્રવ્યાવમોદરિકા શું છે? કેટલા પ્રકારની છે? (दव्वोमोयरिया दुविहा पण्णत्ता) ઉત્તર–તે બે પ્રકારની છે–(तं जहा) તે બે પ્રકાર આવી રીતે છે. (उवगरणदव्वोमोयरिया य भत्तपाणदव्वोमोयरिया य) ૧ ઉપકરણદ્રવ્યાવમોદરિકા અને બીજી ભક્તપાનદ્રવ્યાવમોદરિકા. (उवगरणदव्वोमोयरिया तिविहा पण्णत्ता) તેમાં ઉપકરણદ્રવ્યાવમોદરિકા ત્રણ પ્રકારની છે. (तं जहा) તે ત્રણ પ્રકાર આ છે–(एगे वत्थे एगे पाए चियत्तोवगरणसाइज्जणया) ૧ એક વસ્ત્ર, બીજું એક પાત્ર, અને ત્રીજું ત્યક્તોપકરણસ્વા-

त्तोवगरणसाइज्जणया ३ से तं उवगरणदव्वोमोयरिया। से किं तं भत्तपाणदव्वोमोयरिया? भत्तपाणदव्वोमोरिया–अणेगविहा पण्णत्ता, तं जहा–अट्ठ कुक्कुडियंडगप्पमाणमेत्ते कवले आहार-

ज्जणया' त्यक्तोपकरणस्वादनता, त्यक्ता–उपकरणस्य स्वादनता–आसक्तिर्यस्यामवमोदरिकायां सा तथा, भाण्डोपकरणादिषु मूर्च्छापरित्यागितेत्यर्थः । 'से तं उवगरणदव्वोमोयरिया' सैषा उपकरणद्रव्यावमोदरिका। 'से किं तं भत्तपाणदव्वोमोयरिया' अथ का सा भक्तपानद्रव्यावमोदरिका ? 'भत्तपाणदव्वोमोयरिया'–भक्तपानद्रव्यावमोदरिका–'अणेगविहा पण्णत्ता' अनेकविधा प्रज्ञप्ता, 'तं जहा' तद्यथा-'अट्ठ कुक्कुडियंडगप्पमाणमेत्ते कवले आहारमाणे अप्पाहारे' अष्टौ कुक्कुटाऽण्डकप्रमाणमात्रान् कवलान् आहरन्नल्पाहारः-अष्ट कुक्कुटा-

३। वस्त्र में एक ही वस्त्र रखना, जैसे कोई चोलपट्ट रखता है तो वह वही रखेगा, अन्य दूसरा वस्त्र नहीं रख सकता। दूसरे प्रकार में एक ही पात्र रखना दूसरा पात्र नहीं। जिस अवमोदरिका में उपकरण की आसक्ति त्यक्त हो जाती है वह उसका तीसरा प्रकार है, अर्थात्–भाण्डोपकरण में मूर्च्छा का परित्याग। (से तं उवगरणदव्वोमोयरिया) इस प्रकार ये तीन भेद उपकरणद्रव्यावमोदरिका के कहे गये है। [से किं तं भत्तपाण-दव्वोमोयरिया] प्रश्न–भक्तपानद्रव्यावमोदरिका क्या है?, अर्थात्–भक्तपानद्रव्यावमोदरिका के कितने भेद हैं?, (भत्तपाणदव्वोमोयरिया अणेगविहा पण्णत्ता) यह भक्तपान-द्रव्यावमोदरिका अनेक प्रकार की कही गयी है, (तं जहा) वे प्रकार ये है–(अट्ठ कुक्कुडियंडगप्पामाणमेत्ते कवले आहारमाणे अप्पाहारे) प्रथम भेद अल्पाहार है, इसमें

दनता. वस्त्रमां એકજ વસ્ત્ર રાખવું. જેમ કોઈ ચોલપટ્ટ રાખે છે તો તે તે જ રાખે, બીજું વસ્ત્ર રાખી શકે નહિ. બીજા પ્રકારમાં એક જ પાત્ર રાખવું બીજું (દ્વિતીયાદિક) પાત્ર નહિ. જે અવમોદરિકામાં ઉપકરણની આસક્તિ ત્યક્ત થઇ જાય છે તે તેનો ત્રીજો પ્રકાર છે અર્થાત્ ભાંડોપકરણમા મૂર્ચ્છાનો પરિત્યાગ. (से तं उवगरणदव्वोमोयरिया) એ પ્રકારના આ ત્રણ ભેદ ઉપકરણદ્રવ્યાવમોદરિકાના કહેલા છે. (से किं तं भत्तपाणदव्वोमोयरिया) પ્રશ્ન–ભક્તપાનદ્રવ્યાવ-મોદરિકા શું છે? અર્થાત્ ભક્તપાનદ્રવ્યાવમોદરિકાના કેટલા પ્રકાર છે? (भत्तपाणदव्वोमोयरिया अणेगविहा पण्णत्ता) આ ભકતપાનદ્રવ્યાવમોદરિકા અનેક પ્રકારની કહેલી છે, (तंजहा) તે આ પ્રકારે છે–(अट्ठ कुक्कुडियंडगप्पमाण-मेत्ते कवले आहारमाणे अप्पाहारे) પ્રથમ ભેદ અલ્પાહાર છે. તેમાં કુકડાના ઇંડા

**माणे अप्पाहारे १, दुवालस कुक्कुडियंडगप्पमाणमेत्ते कवले आहारमाणे अवड्ढोमोयरिया २, सोलस कुक्कुडियंडगप्पमाणमेत्ते कवले आहारमाणे दुभागपत्तोमोयरिया ३, चउवीसं कुक्कुडियंडगप्प-**

ण्डकप्रमाणमात्रान् कवलान् य आहरन् भवति, तस्य स आहारः अल्पाहारः। द्वात्रिंशत्परिमितैः कवलैः पुरुषाऽऽहारः पर्याप्तः, तत्र चतुर्थांशस्य ग्रहणादल्पाहारस्तेनैव भक्तपानद्रव्यावमोदरिकाऽपि सिद्धा (१)। '**दुवालस कुक्कुडियंडगप्पमाणमेत्ते कवले आहारमाणे अवड्ढोमोयरिया**' द्वादश कुक्कुटाऽण्डकप्रमाणमात्रान् कवलान् आहरन् यो भवति तस्य स आहारःअपार्द्धावमोदरिका, षोडश कवला अर्द्धम्, तस्मात् अपकृष्टा = न्यूना द्वादशकवलात्मकत्वाद् याऽवमोदरिका सा-अपार्द्धाऽवमोदरिका (२)। '**सोलस कुक्कुडियंडगप्पमाणमेत्ते कवले आहारमाणे दुभागपत्तोमोयरिया**' षोडश कुक्कुटाण्डकप्रमाणमात्रान् कवलान् आहरन् द्विभागप्राप्ताऽवमोदरिका—षोडश कुक्कुटाण्डकप्रमाणमात्रान् कवलान् आहरन् यो भवति तस्य स आहारो द्विभागप्राप्तावमोदरिका=द्वितीयभागप्राप्तावमोदरिका भवति। अयं भावः—पर्याप्तपुरुषाहारद्वात्रिंशत्कवलानां भागद्वये कृते सति प्राप्तान् षोडश कवलान् भुञ्जानस्य द्विभागप्राप्तावमोदरिका तपस्या भवतीति (३)। '**चउवीसं कुक्कुडियंडगप्पमाणमेत्ते कवले**

कुक्कुटके अण्ड प्रमाण आठ कवल का आहार होता है। पुरुष के लिये ३२ कवलप्रमाण आहार पर्याप्त होता है। इनमें चतुर्थांश—आठ कवल प्रमाण आहार के लेने से यह अल्पाहार कहा गया है (१)। (**दुवालस कुक्कुडियंडगप्पमाणमेत्ते कवले आहारमाणे अवड्ढोमोयरिया**) दूसरा भेद अपार्द्ध—अवमोदरिका है, इसमें—कुकुड अंड प्रमाण १२ कवलों का आहार लिया जाता है (२)। (**सोलस कुकुडियंडगप्पमाणमेत्ते कवले आहारमाणे दुभागपत्तोमोयरिया**) तीसरा भेद द्विभागप्राप्तावमोदरिका है, इसमें—कुक्कुट—अंड—प्रमाण १६ कवलों का आहार किया जाता है (३)। (**चउवीसं कुकुडियंडगप्पमाणमेत्ते कवले आहारमाणे**

જેટલો—કોળિઆનો આહાર થાય છે. પુરૂષને માટે ૩૨ કોળિઆ જેટલો આહાર પર્યાપ્ત થાય છે. તેમાથી ચતુર્થાંશ કોળિઆ—જેટલો આહાર લેવાથી એને અલ્પાહાર કહેવાય છે. (૧) (दुवालस कुक्कुडियंडगप्पमाणमेत्ते कवले आहारमाणे अवड्ढोमोयरिया) બીજો ભેદ અપાર્દ્ધ—અવમોદરિકા છે. એમાં કુકડાનાં ઇંડા જેવડા ૧૨ કોળિઆનો આહાર લેવાય છે. (૨) (सोलस कुक्कुडियंडगप्पमाणमेत्ते कवले आहारमाणे दुभागपत्तोमोयरिया) ત્રીજો ભેદ દ્વિભાગપ્રાપ્તાવમોદરિકા છે. એમાં કુકડાના ઇંડા જેવડા ૧૬ કોળિઆનો આહાર લેવાય છે. (૩) (चउवीसं कुक्कुडियंडगप्पमाणमेत्ते कवले आहारमाणे पत्तोमोयरिया) ચોથો ભેદ પ્રાપ્તાવ-

माणमेत्ते कवले आहारमाणे पत्तोमोयरिया ४, एक्कतीसं कुक्कुडियं-डगप्पमाणमेत्ते कवले आहारमाणे किंचूणोमोयरिया ५, बत्तीसं कुक्कुडियंडगप्पमाणमेत्ते कवले आहारमाणे पमाणपत्ते, एत्तो एगेण वि घासेणं ऊणयं आहारमाहारेमाणे समणे निग्गंथे णो पकामरस-

---

आहारमाणे पत्तोमोयरिया'—चतुर्विंशतिं कुक्कुटाण्डकप्रमाणमात्रान् कवलान् आहरन् प्राप्ताऽवमोदरिका—द्वात्रिंशत्कवलानां चतुर्थांशन्यूनमाहारम् आहरन् यो भवति, तस्य स आहारः प्राप्तावमोदरिका—पादमात्रोनतया प्राप्तेवाऽवमोदरिका प्राप्तावमोदरिका भवति, ॥४॥ 'एक्कतीसं कुक्कुडियंडगप्पमाणमेत्ते कवले आहारमाणे किंचूणोमोयरिया' एक-त्रिंशतं कुक्कुटाऽण्डकप्रमाणमात्रान् कवलान् आहरन् यो भवति तस्य किञ्चिदूनावमोदरिका=कवलैकन्यूनावऽमोदरिका भवति ॥५॥ 'बत्तीसं कुक्कुडियंगप्पमाणमेत्ते कवले आहारमाणे पमाणपत्ते' द्वात्रिंशतं कक्कुटाऽण्डप्रमाणमात्रान् कवलान् आहरन् प्रमाणप्राप्तः=प्रमाणप्रमिता-ऽऽहारयुक्तो भवतीत्यर्थः, 'एत्तो एगेण वि घासेणं ऊणयं आहारमाहारेमाणे समणे निग्गंथे णो पकामरसभोइत्ति वत्तव्वं सिया' इत एकेनापि ग्रासेन ऊनकम् आहरम् आहरन् श्रमणो निर्ग्रन्थो नो प्रकामरसभोजीति वक्तव्यं स्यात्—इतः—एतेभ्यः—द्वात्रिंशत्कव-

---

पत्तोमोयरिया) चौथा भेद प्राप्तावमोदरिका है, इसमें कुक्कुटाण्डप्रमाण २४ कवलोंका आहार किया जाता है (४)। (एक्कतीसं कुक्कुडियंडगप्पमाणमेत्ते कवले आहारमाणे किंचू-णोमोयरिया) पाँचवाँ भेद किंचित्—न्यून—अवमोदरिका है। इसमें कुक्कुट अंड प्रमाण ३१ कवलों का आहार लिया जाता है। (बत्तीसं कुक्कुडियंडगप्पमाणमेत्ते कवले आहा-रमाणे पमाणपत्ते) ३२—कवल—प्रमाण आहार करना पर्याप्त आहार है। यह अवमो-दरिका तप नहीं है। (एत्तो एगेणवि घासेणं ऊणयं आहारमाहारेमाणे समणे निग्गंथे णो पकामरसभोइत्ति वत्तव्वं सिया) ३२ कवलप्रमाण आहार में से जो श्रमण

---

મોદરિકા છે એમાં કુકડાના ઇંડા જેવડા ૨૪ કોળિઆનો આહાર કરાય છે. (૪) (एक्कतीसं कुक्कुडियंडगप्पमाणमेत्ते कवले आहारमाणे किंचूणोमोयरिया) પાંચમો ભેદ કિંચિત્—ન્યૂન—અવમોદરિકા છે. તેમા કુકડાના ઇંડા જેવડા ૩૧ કોળિઆનો આહાર લેવાય છે. (बत्तीसं कुक्कुडियंडगप्पमाणमेत्ते कवले आहारमाणे पमाण-पत्ते) ૩૨ કોળિઆ જેટલો આહાર કરવો એ મર્યાદા છે. આ અવમોદરિકા તપ નથી. (एत्तो एगेणवि घासेणं ऊणयं आहारमाहारेमाणे समणे निग्गंथे णो पकाम-रसभोइत्ति वत्तव्वं सिया) ૩૨ કોળિયા જેટલા આહારમાંથી જે શ્રમણ નિર્ગ્રંથ

**भोइत्ति वत्तव्वं सिया। से तं भत्तपाणदव्वोमोयरिया। से तं दव्वोमोयरिया। से किं तं भावोमोयरिया? भावोमोयरिया अणेगविहा पण्णत्ता; तं जहा—अप्पकोहे १, अप्पमाणे २, अप्पमाए ३,**

---

लेभ्यः—एकेनाऽपि ग्रासेनोनकमाहारमाहरन् श्रमणो निर्ग्रन्थो नो प्रकामरसभोजी-नात्यन्तभोजनशीलोऽस्तीति वक्तव्यम् स्यात्, अयं भावः—किंचिदूनावमोदरिकां तपस्यां कुर्वन् 'प्रकामभोजी' इति नोच्यते इति। **'से तं भत्तपाणदव्वोमोयरिया'** सैषा भक्तपानद्रव्यावमोदरिका। अतः परं भावाऽमोदरिकामाह—**'से किं तं भावोमोयरिया'** अथ का सा भावाऽवमोदरिका? **'भावोमोयरिया अणेगविहा पण्णत्ता'** भावाऽमोदरिका अनेकविधा प्रज्ञप्ता, **'तं जहा'** तद्यथा **'अप्पकोहे'** अल्पक्रोधः-क्रोधनं क्रोधः-क्रोधमोहनीयोदयसम्पाद्यः अक्षमापरिणतिरूपः, अल्पशब्दोऽत्र प्रतनुवाचकः—तेन अल्पः—स्वल्पः क्रोधः—अल्पक्रोधः। **'अप्पमाणे'**

---

निर्ग्रथ एक कवल भी आहार कम करते है वे प्रकामभोजी नहीं है, अर्थात् जिह्वा-इन्द्रिय के विजेता है—ऐसा समझना चाहिये। (**से तं भत्तपाणदव्वोमोयरिया**) इस प्रकार यहां तक भक्तपानद्रव्यावमोदरिका का कथन किया, अर्थात् इस पूर्वोक्त प्रकार से भक्तपानद्रव्यावमोदरिका का स्वरूप है। (**से तं दव्वोमोयरिया**) इस प्रकार यह द्रव्यावमोदरिका का स्वरूप है। यहां से आगे अब भावावमोदरिका का कथन करते है—(**से किं तं भावोमोयरिया?**) प्रश्न—यह भावावमोदरिका क्या है? कितने प्रकार की है? (**भावोमोयरिया अणेगविहा पण्णत्ता**) उत्तर—भावावमोदरिका अनेक प्रकार की कही गई है, (**तं जहा**) जैसे—(**अप्पकोहे**) अल्पक्रोध—अक्षमापरिणतिका नाम क्रोध है, अल्पशब्द प्रतनुवाची है, अर्थात् क्रोधकषाय में अल्पता करना। (**अप्प-**

---

એક કોળિયો પણ આહાર ઓછો કરે તે પ્રકામભોજી નથી, અર્થાત્ જીભ-ઇંદ્રિયનો વિજેતા છે-એમ સમજવું જોઇએ. (से तं भत्तपाणदव्वोमोयरिया) એ પ્રકારે અહીંસુધી ભક્તપાનદ્રવ્યાવમોદરિકાનું કથન કર્યું, અર્થાત્ એ પૂર્વોક્ત પ્રકારે ભક્તપાનદ્રવ્યાવમોદરિકાનું સ્વરૂપ છે. (से तं दव्वोमोयरिया) આ પ્રકારે આ દ્રવ્યાવમોદરિકાનું સ્વરૂપ છે. અહિંથી આગળ હવે ભાવાવમોદરિકાનું કથન કરે છે-(से किं तं भावोमोयरिया?) પ્રશ્ન-આ ભાવાવમોદરિકા શું છે, કેટલા પ્રકારની કહેવાય છે? (भावोमोयरिया अणेगविहा पण्णत्ता) ઉત્તર-ભાવાવમોદરિકા ઘણા પ્રકારની કહેવાય છે. (तं जहा) જેમકે (अप्पक्कोहे) અલ્પક્રોધ, અક્ષમા-પરિણતિનું નામ ક્રોધ છે, અલ્પ શબ્દ પ્રતનુવાચી છે-અર્થાત્ ક્રોધકષાયમાં અલ્પપણું (ઓછું) કરવું. (अप्पमाणे अप्पमाए

अप्पलोहे ४, अप्पसद्दे ५, अप्पकलहे ६, अप्पझंझे ७। से तं भावोमोयरिया। से तं ओमोयरिया। से किं तं भिक्खायरिया? भिक्खायरिया अणेगविहा पण्णत्ता; तं जहा-दव्वाभिग्गहचरए १,

अल्पमानः—जात्याद्यभिमानरहितत्वम्। 'अप्पमाए' अल्पमाया, 'अप्पलोहे' अल्पलोभः,—'अप्पसद्दे' अल्पशब्दः,—'अप्पकलहे' अल्पकलहः=कलहाभावः, 'अप्पझंझे' अल्पझञ्झः=परस्परभेदोत्पादकवचनव्यापारो झञ्झः, तस्याभावः। 'से तं भावोमोयरिया' सैषा भावाऽवमोदरिका। 'से तं ओमोयरिया' सैषाऽवमोदरिका।

'से किं तं भिक्खायरिया' अथ का सा भिक्षाचर्या?, 'भिक्खायरिया अणेगविहा पण्णत्ता' भिक्षाचर्या अनेकविधा प्रज्ञप्ता. 'तं जहा' तद्यथा—'दव्वाभिग्गहचरए' द्रव्याभिग्रहचरक —द्रव्याऽऽश्रिताभिग्रहेण 'अमुकवस्तु ग्रहीष्यामि' इति रूपेण

माणे अप्पमाए अप्पलोहे अप्पसद्दे अप्पकलहे अप्पझंझे) मान को अल्प करना, माया को अल्प करना, लोभ को अल्प करना, शब्द को अल्प करना अर्थात् कम बोलना, कलह को अल्प करना—अभाव करना, झंझा को अर्थात्—गण में जिस वचन से छेद—भेद उत्पन्न होता है उस वचनका अल्प करना—अभाव करना, यहाँ पर 'अल्प' शब्द अभावार्थक है। (से तं भावोमोयरिया) ये सभी भावावमोदरिका है। (से तं ओमोयरिया) यह अवमोदरिका तपका वर्णन संपूर्ण हुआ।

(से किं तं भिक्खायरिया?) भिक्षाचर्या क्या है—कितने तरह की है?

उत्तर—(भिक्खायरिया अणेगविहा पण्णत्ता) भिक्षाचर्या अनेक तरह की कही गई है। (त जहा) जैसे (दव्वाभिग्गहचरए, खेत्ताभिग्गचरए, कालाभिग्गहचरए भावाभिग्गहचरए) १ द्रव्याभिग्रहचरक—मुनि अभिग्रह लेता है कि मुझे जो अमुक वस्तु भिक्षा में

अप्पलोहे अप्पसद्दे अप्पकलहे अप्पझंझे) मान अल्प(ओछु')करवु', माया अल्प करवी, लोभ अल्प करवो, शब्द अल्प करवा अर्थात् ओछु' बोलवु, कलह (कंकास) ओछा करवा, झंझा अर्थात् लोकोना समूहमा जे वचनोथी छेद–भेद उत्पन्न थाय एवां वचन नही बोलवा, (से तं भावोमोयरिया) आ बधा भावावमोदरिका छे. (से तं ओमोयरिया) आ अवमोदरिका तपनु वर्णन संपूर्ण थयु'. (से किं तं भिक्खायरिया) भिक्षाचर्या शु छे–केटला जातनी छे? उत्तर (भिक्खायरिया अणेगविहा पण्णत्ता) भिक्षाचर्या अनेकजातनी कहेवाय छे. (तं जहा) जेमके (दव्वाभिग्गहचरए, खेत्ताभिग्गहचरए, कालाभिग्गहचरए, भावाभिग्गहचरए) १ द्रव्या-

**खेत्ताभिग्गहचरए २, कालाभिग्गहचरए ३, भावाभिग्गहचरए ४, उक्खित्तचरए ५, णिक्खित्तचरए ६, उक्खित्तणिक्खित्तचरए ७,**

---

चरति=भिक्षामटति, द्रव्याश्रिताऽभिग्रहं वा चरति–आसेवते यः स द्रव्याभिग्रहचरकः, इह च भिक्षाचर्यायां प्रक्रान्तायां यद् द्रव्याभिग्रहचरक इत्युक्तं तद्धर्मधर्मिणोरभेदविवक्षणात्। द्रव्याभिग्रहश्च लेपकृतादिद्रव्यविषयः।१। '**खेत्ताभिग्गहचरए**' क्षेत्राऽभिग्रहचरकः-क्षेत्राऽभिग्रहः 'अमुकस्थाने ग्रहीष्यामि' इत्यादिरूपः।२। '**कालाभिग्गहचरए**' कालाभिग्रहचरकः, कालाभिग्रहः–पूर्वाह्णादिविषयः।३। '**भावाभिग्गहचरए**' भावाभिग्रहचरकः–भावाभिग्रहो–गानहसनादिप्रवृत्तपुरुषादिविषयः, तेन चरतीति।४। '**उक्खित्तचरए**' उत्क्षिप्तचरकः–उत्क्षिप्तं–गृहस्थेन स्वप्रयोजनाय पाकभाजनादुद्धृतं तदर्थमभिग्रहतश्चरति–गच्छतीत्युत्क्षिप्तचरकः।।५। '**णिक्खित्तचरए**' निक्षिप्तचरकः–निक्षिप्तं–पाकादिभाजनादुद्धृत्य अन्यभाजने स्थापितं, तदर्थमभिग्रहं कृत्वा चरति–इति निक्षिप्तचरकः।६। '**उक्खित्त-णिक्खित्त-चरए**' उत्क्षिप्तनिक्षिप्तचरकः–पाकभाजनादुत्क्षिप्त तदेव अन्यत्र स्थाने निक्षिप्तं यत् तदुत्क्षिप्तनिक्षिप्तम्,

---

मिलेगी तो ही लूंगा, अन्यथा नहीं। भिक्षाचर्या का यद्यपि प्रकरण है, परन्तु जो "द्रव्याभिग्रहचरक" ऐसा निर्देश किया है वह धर्म और धर्मी में अभेद की विवक्षासे समझना चाहिये। २ क्षेत्राभिग्रहचरक–अमुक स्थान में मिलेगा तो लूंगा। ३ कालाभिग्रहचरक-अमुक समय में लूगा। ४ भावाभिग्रहचरक–अमुक प्रकार का दाता देगा तो लूंगा। ५–(**उक्खित्तचरए**) उत्क्षिप्तचरक–गृहस्थने पाकभाजन से अपने लिये निकाला हो, उसमें से यदि देगा तो लूंगा। (६) (**निक्खित्तचरए**) निक्षिप्तचरक-गृहस्थने पाक भाजन से निकाल कर अन्य भाजन में रख दिया हो, उसमें से देगा तो लूंगा। ७–(**उक्खित्त-**

---

ભિગ્રહચરક–મુનિ અભિગ્રહ કરે છે કે મને જે અમુક વસ્તુ ભિક્ષામાં મળશે તે જ હું લઈશ, બીજી નહિ. ભિક્ષાચર્યાનું જો કે પ્રકરણ છે; પરંતુ જે 'દ્રવ્યાભિગ્રહચરક' એમ નિર્દેશ કરેલો છે તે ધર્મ અને ધર્મીમાં અભેદની વિવક્ષાએ સમજવો જોઇએ. [૨] ક્ષેત્રાભિગ્રહચરક–અમુક સ્થાનમાં મળશે તો લઇશ, [૩] કાલાભિગ્રહચરક–અમુક સમયમાં લઈશ, [૪] ભાવાભિગ્રહચરક–અમુક પ્રકારનો દાતા આપશે તો લઇશ, [૫] (उक्खित्तचरए) ઉત્ક્ષિપ્તચરક–ગૃહસ્થે રાંધવાના પાત્રમાંથી પોતાને માટે કાઢેલું હોય તેમાંથી જો આપશે તો લઈશ, [૬] (निक्खित्तचरए) નિક્ષિપ્તચરક–ગૃહસ્થે રાધવાના પાત્રમાંથી કાઢીને બીજાં વાસણમાં રાખી દીધું હોય તેમાથી આપશે તો લઇશ. [૭] (उक्खित्त–निक्खि-

**णिक्खित्तउक्खित्तचरए ८, वट्टिज्जमाणचरए ९, साहरिज्जमाणचरए १०, उवणीयचरए ११, अवणीयचरए १२, उवणीय-अवणीयचरए**

तदर्थमभिग्रहतश्चरति स उत्क्षिप्तनिक्षिप्तचरक इत्युच्यते ।७। '**णिक्खित्त-उक्खित्त-चरए**' निक्षिप्तोत्क्षिप्तचरकः-निक्षिप्तं-पाकभाजनादन्यत्र स्थापितमुत्क्षिप्तं-तदेव पुनरुद्धृतं-हस्ते गृहीतं, तदर्थमभिग्रहं कृत्वा चरति स निक्षिप्तोत्क्षिप्तचरकः ।८। '**वट्टिज्जमाणचरए**' वर्त्यमानचरक'-वर्त्यमानं-परिविष्यमाणं ग्रहीतुं चरति स वर्त्यमानचरकः ।९। '**साहरिज्जमाणचरए**' संहियमाणचरकः-अत्युष्णं व्यञ्जनसूपादि शीतलीकरणाय स्थाल्यादिषु विस्तारित तत्पुनर्भाजने क्षिप्यमाण संह्रियमाणमुच्यते, तद् ग्रहीतुं चरति-इति संह्रियमाणचरकः ।१०। '**उवणीयचरए**' उपनीतम्=अन्येन केनचिद् गृहस्थाय प्रेषितं यत् तदुपनीतं, तदेव ग्रहीतुं चरति-इत्युपनीत-चरक' ।११। '**अवणीयचरए**' अपनीतचरकः-अपनीतं गृहस्थेन अन्यस्मै कस्मै चिद्दातुं

**निक्खित्त-चरए** ) उत्क्षिप्तनिक्षिप्तचरक-दाताने पहले पाकभाजन से अन्नादिक निकाला, फिर उसको उसने अन्य पात्रमें रखा, उसमें से यदि देगा तो लूंगा । ८-( **निक्खित्त-उक्खित्त-चरए** ) निक्षिप्तउत्क्षिप्तचरक-दाताने पाकभाजन से अन्नादिक को निकाल कर दूसरे पात्र में रख दिया हो, उसीको हाथ में उठाया हुआ हो, उससे यदि देगा तो लूंगा । ९-( **वट्टिज्जमाणचरए** ) वर्त्यमानचरक-दाता द्वारा परोसी जाती हुई वस्तु में से देगा तो लूंगा । १०-( **साहरिज्जमाणचरए** ) संह्रियमाणचरक-दाताने उष्ण व्यञ्जन एवं सूपादिक को ठंडा करने के लिये स्थाली आदि में रखा, फिर उस व्यञ्जनादिक को उसी पात्र में रखता हुआ उसमें से देगा तो लूंगा । ११-( **उवणीयचरए** ) उपनीतचरक-दाता से मै उसी पदार्थ को लूंगा जो उसके लिये अन्य किसी व्यक्तिने भेजा होगा । १२-( **अवणीयचरए** ) अपनीतचरक-मै दाता से वही पदार्थ लूंगा जो उसने अन्य किसी

त्तचरए) ઉત્ક્ષિપ્તનિક્ષિપ્તચરક-દાતાએ પહેલાં રાંધવાનાં વાસણમાંથી અન્નાદિક કાઢયું પછી તેને તેણે બીજા વાસણમાં રાખ્યું હોય, તેમાંથી એ આપશે તો લઈશ. [૮] (वट्टिज्जमाणचरए) વર્ત્યમાનચરક-દાતા દ્વારા પીરસવામાં આવતી વસ્તુમાથી આપશે તો લઈશ. [૧૦] (साहरिज्जमाणचरए) સંહ્રિયમાણચરક-દાતાએ ગરમ વ્યંજન તેમજ સૂપ (દાલ) આદિ ને ઠંડાં કરવા માટે થાળી આદિમા રાખ્યાં હોય, પછી તે વ્યંજન આદિકને તે જ પાત્રમા રાખતાં તેમાથી આપશે તો લઈશ. [૧૧] (उवणीयचरए) ઉપનીતચરક-દાતા પાસેથી હું એ જ પદાર્થ લઈશ કે જે બીજા કોઇએ તેને માટે મોકલ્યો હોય. [૧૨] (अवणीयचरए) અપનીતચરક-હું દાતા પાસેથી તે જ પદાર્થ લઈશ કે જે

**१३, अवणीय-उवणीयचरए १४, संसट्ठचरए १५, असंसट्ठचरए १६, तज्जायसंसट्ठचरए १७, अण्णायचरए १८, मोणचरए १९,**

निःसार्यान्यत्र स्थापितं तदेव अपनीतं, तदर्थं चरति-इत्यपनीतचरकः।१२। **'उवणीय-अवणीय-चरए'** उपनीतापनीतचरकः-यदेव उपनीतम्-अन्येन प्रेषितं तदेव अपनीतं स्थानान्तरे स्थापितं तद् ग्रहीतुं चरति इत्युपनीताऽपनीतचरकः।१३। **'अवणीय-उवणीय-चरए'** अपनीतोपनीतचरक -अपनीतम्=कस्मै चित् अन्यस्मै दातुं निःसार्यान्यत्र स्थापितं, तदेव उपनीतं=यस्य गृहस्थस्य समीपे प्रेषितं तस्य गृहस्थस्य गृहे प्रापितं तदपनीतोपनीतं, तदर्थं चरतीत्यपनीतोपनीतचरकः।१४। **'संसट्ठचरए'** संसृष्टचरक-संसृष्टेन=खरण्टितेन हस्तादिना दीयमानं संसृष्टमुच्यते, तद् ग्रहीतुं चरति-इति संसृष्टचरकः।१५। **'असंसट्ठचरए'** असंसृष्टचरकः-असंसृष्टेन=अखरण्टितेन चरति-इत्यसंसृष्टचरकः। १६। **'तज्जायसंसट्ठचरए'** तज्जातसंसृष्टचरकः-तज्जातेन=परिविष्यमाणद्रव्येण यत्संसृष्टं हस्तादि, तेन दीयमानं वस्तु ग्रहीतुं य-

दूसरे को देने के लिये निकाल कर रख दिया होगा। १३-(**उवणीय-अवणीय-चरए**) उपनीत-अपनीतचरक-मै वही पदार्थ लूंगा जो उस दाता के लिये किसी दूसरेने उसके पास भेजा होगा, और दाताने उसी पदार्थ को यदि दूसरे को देने के लिये एक तरफ रख छोडा होगा। १४-(**अवणीय-उवणीय-चरए**) अपनीतउपनीतचरक-किसी गृहस्थने किसी व्यक्ति को देने के लिये अन्नादिक अन्यत्र स्थापित कर रखा होगा और उसको उसने उसके यहां भेज दिया होगा, तथा वह उसके घर भी पहुँच चुका होगा, उसमें से देगा तो लूंगा। १५-(**संसट्ठचरए**) संसृष्टचरक-भरे हुए हाथ से देगा तो लूंगा। १६-(**असंसट्ठचरए**) असंसृष्टचरक-विना भरे हुए हाथ से देगा तो लूंगा। १७ (**तज्जायसंसट्ठचरए**) तज्जातसंसृष्टचरक-हाथ जिस चीज से संसृष्ट-भरा रहा होगा, वही चीज यदि

તેણે બીજા કોઈ માણસને દેવાને માટે કાઢી રાખેલો હોય. [૧૩] (उवणीय-अवणीयचरए) ઉપનીત-અપનીત-ચરક-હું તે જ પદાર્થ લઈશ કે જે કોઇ બીજાએ તે દાતાને માટે તેની પાસે મોકલ્યો હોય અને દાતાએ તે જ પદાર્થને કોઈ બીજાને દેવા માટે એક તરફ રાખી મૂકયો હોય. [૧૪] (अवणीय-उवणीयचरए) અપનીત-ઉપનીત-ચરક-કોઇ ગૃહસ્થે કોઇ વ્યકિતને દેવા માટે અન્નાદિક બીજે ઠેકાણે રાખી મુકેલું હોય અને તે તેણે તેને ત્યાં મોકલી દીધું હોય અને તે તેને ઘેર પણ પહોંચી ગયું હોય તેમાંથી આપશે તો લઈશ. [૧૫] (संसट्ठचरए) સંસૃષ્ટચરક-શાક આદિથી ભરેલા હાથથી આપશે તો લઈશ. (૧૬) (असंसट्ठचरए) અસંસૃષ્ટચરક-વગર ભરેલા હાથથી આપશે તો લઈશ.

दिट्ठलाभिए २०, अदिट्ठलाभिए २१, पुट्ठलाभिए २२, अपुट्ठलाभिए

श्चरति स तज्जातसंसृष्टचरकः ।१७। 'अण्णायचरए' अज्ञातचरकः–अज्ञातम्–अज्ञात-साधुनियमं कुलं चरति यः सोऽज्ञातचरकः । १८ । 'मोणचरए' मौनचरकः–मौनम्=वाक्संयमन, तेन चरति यः स मौनचरकः ।१९। 'दिट्ठलाभिए' दृष्टलाभिकः–दृष्टस्यैव भक्तादेर्लाभो दृष्टलाभः, यद्वा दृष्टात्प्रथमदृष्टादेव दातुर्गृहाद्वा लाभो दृष्टलाभः, सोऽस्ति यस्य स दृष्टलाभिकः ।२०। 'अदिट्ठलाभिए' अदृष्टलाभिकः–अदृष्टस्य–आवरणाऽऽच्छादितस्य दात्रादिभिः कृतोपयोगस्य भक्तादेर्लाभः, अथवा अदृष्टात्=पूर्वं कदापि न दृष्टाद् दायकाल्लाभः, सोऽस्याऽस्तीत्यदृष्टलाभिकः ।२१। 'पुट्ठलाभिए' पृष्टलाभिकः–भिक्षार्थं समागतं यं साधुं 'भो साधो! त्वं किमिच्छसि?' एवं कश्चिद् गृहस्थः पृच्छति स पृष्ट इत्युच्यते, तस्य साधो-

मुझे देगा तो लूंगा। १८–(अण्णायचरए) अज्ञातचरक–जो साधुओं के नियमो से अन-भिज्ञ होगा उसी कुल की मैं भिक्षा लूंगा। १९–(मोणचरए) मौनचरक–मै वहीं से भिक्षा-प्राप्त करूँगा जो मेरे विना बोले मुझे भिक्षा लाकर देगा। २०–(दिट्ठलाभिए) दृष्टला-भिक–मै वही भिक्षा लूंगा जो सर्वप्रथम मेरी दृष्टि में आवेगी, अथवा मै उसीसे भिक्षा लूंगा जो सर्वप्रथम मुझे दिखाई देगा, अथवा मै उसी स्थान से भिक्षा लूंगा जो सबसे पहिले मुझे दिख जायगा। २१–(अदिट्ठलाभिए) अदृष्टलाभिक–जो अशनादिक आवरण से आच्छादित होने की वजह से दिखलाई तो न पडे, परन्तु दाता उसे अपने उपयोग में ला चुका हो, उसमें से भिक्षा देगा तो लूंगा, अथवा–जिस दाता को मै पहिले कभी भी नहीं देखा वह देगा तो लूँगा। २२–(पुट्ठलाभिए) पृष्टलाभिक–दाता यदि पूछेगा,

[१७] (तज्जायसंसट्ठचरए) तज्जातसंसृष्टचरक–હાથ જે ચીજથી સંસૃષ્ટ થઈ જાય તે ચીજ જો મને આપશે તો લઈશ (૧૮) (अण्णायचरए) અજ્ઞાતચરક–જે સાધુઓના નિયમોથી અજ્ઞાત હોય એવા કુળની હું ભિક્ષા લઈશ (૧૯) (मोणचरए) મૌનચરક–હું તેના પાસેથી ભિક્ષા લઈશ કે જે મારા બોલ્યા વિનાજ મને ભિક્ષા લાવીને આપી દેશે (૨૦) (दिट्ठलाभिए) દૃષ્ટલાભિક–હું એ જ ભિક્ષા લઈશ કે જેને હું સર્વથી પહેલા જોઈશ. અથવા હું તેના જ હાથથી ભિક્ષા લઈશ જે માણસ મારે સર્વપ્રથમ જોવામાં આવશે, અથવા હું તેજ જગ્યાથી ભિક્ષા લઈશ જે જગ્યા મારે સર્વ-પ્રથમ દેખાશે (૨૧) (अदिट्ठलाभिए) અદૃષ્ટલાભિક–જે ખાવાના પદાર્થો ઢાંકણાથી ઢાંકેલાં હોવાના કારણથી દેખાય નહિ પણ દાતા તેને પોતાના ઉપયોગમાં લાવી ચૂકેલા હોય તેમાંથી ભિક્ષા આપશે તો લઈશ. અથવા જે દાતાને મેં પહેલા કદી જોયેલા ન હોય તે આપશે તો લઈશ. (૨૨) (पुट्ठलाभिए) પૃષ્ટલાભિક–દાતા જો

## २३, भिक्खालाभिए २४, अभिक्खालाभिए २५, अण्णगिलायए

स्तस्माद् गृहस्थाद् यो लाभः स पृष्टलाभः, सोऽस्याऽस्तीति पृष्टलाभिकः ।२२। 'अपुट्ठलाभिए' अपृष्टलाभिकः—केनचिद् गृहस्थेनाऽपृष्टस्यैव साधोर्यस्तस्माद् गृहस्थाल्लाभः सोऽपृष्टलाभः, सोऽस्याऽस्तीत्यपृष्टलाभिकः ।२३। 'भिक्खालाभिए' भिक्षालाभिकः—कस्यचित् क्षेत्राद् गृहाद्वा याचित्वा गृहस्थेन समानीततुच्छवल्लचणककोद्रवादिकनिष्पादित आहारो भिक्षा, तस्या लाभोऽस्यास्तीति भिक्षालाभिकः ।२४। 'अभिक्खालाभिए' अभिक्षालाभिकः—अयाचितलाभः—अभिक्षा, तस्या लाभोऽस्याऽस्तीत्यभिक्षालाभिकः ।२५। 'अण्णगिलायए' अन्नग्लायकः—अन्नेन—आहारेण विना ग्लायकः, रात्रिनिष्पन्नमन्नं ग्रहीष्यामीत्यवग्रहं कृत्वा भिक्षाचरक इत्यर्थः, पर्युषितान्नभिक्षाचरक इति भावः ।२६। 'ओवणिहिए' औपनिहितिकः—उपनिहित—कथञ्चिद् गृहस्थेन स्वसमीपे समानीतमन्नादिकम्, तेन चरति इत्यौपनिहितिकः

---

महाराज! आप क्या चाहते है, तभी लूँगा। २३—(अपुट्ठलाभिए) अपृष्टलाभिक—दाता यदि नहीं पूछेगा तभी लूँगा। २४—(भिक्खालाभिए) भिक्षालाभिक—दाता गृहस्थ वाल चना एवं कोद्रव आदि अन्न को किसी के खेत से अथवा किसी के घर से मांग कर लाया होगा उस अन्न से निष्पादित आहारमें से यदि देगा तो लूंगा। २५ (अभिक्खालाभिए) अभिक्षालाभिक—दाता माँग कर जो पदार्थ नहीं लाया होगा उसमें से देगा तो लूंगा। २६—(अन्नगिलायए) अन्नग्लायक—जो अशनादिक रात्रिमें पकाया गया होगा वही लूंगा, अर्थात्—पर्युषित अन्न की भिक्षा लेने का अभिग्रह लेनेवाला संयमी जन अन्नग्लायक है। २७ (ओवणिहिए) औपनिहितिक—गृहस्थ अपने समीप में किसी प्रकार से लाया गया अशनादिक में से देगा तो लूँगा। २८—( परिमियपिंड-

---

પૂછશે કે મહારાજ! આપને શું જોઇએ છે ત્યારે લઇશ. (२३) (अपुट्ठलाभिए) અપૃષ્ટલાભિક—દાતા જો નહિ પૂછશે તો જ લઈશ. (२४) (भिक्खालाभिए) ભિક્ષાલાભિક—દાતા ગૃહસ્થ જે વાલ ચણા તેમજ કોદરા આદિ અનાજ કોઇના ખેતરથી અથવા કોઇને ઘેરથી માગીને લાવ્યા હોય તે અન્નથી બનાવેલા આહાર માંથી આપશે તો લઈશ.(२५) (अभिक्खालाभिए) અભિક્ષાલાભિક—દાતાએ માંગીને જે પદાર્થ નહીં લાવ્યો હોય તેમાંથી આપશે તો લઈશ. (२६) (अन्नगिलायए) અન્નગ્લાયક—જે ભોજન રાતમાં રાંધેલું હશે તે જ લઈશ—અર્થાત્ વાસી અન્નની ભિક્ષા લેવાનો અભિગ્રહ લેનાર સંયમી જન અન્નગ્લાયક છે. (२७) (ओवणिहिए) ઔપનિહિતિક—ગૃહસ્થ પોતાની સમીપમાં કોઇ પણ પ્રકારે લાવેલા ભોજનમાંથી

**२६, ओवणिहिए २७, परिमियपिंडवाइए २८, सुद्धेसणिए २९, संखादत्तिए ३०। से तं भिक्खायरिया ॥ सू. ३० ॥**

।२७। '**परिमियपिंडवाइए**' परिमितपिण्डपातिकः—परिमितपिण्डस्य — प्रमाणोपेतपिण्डस्य पातो लाभः परिमितपिण्डपातः, सोऽस्यास्तीति परिमितपिण्डपातिकः—आधाकर्मादिदोषरहितं भक्तादिकमेकस्माद् गृहाद्यदि पर्याप्तं लभ्येत तदा ग्राह्यम्—इत्यभिग्रहवान् ।२८। '**सुद्धेसणिए**' शुद्धैषणिकः—शुद्धैषणा—शङ्कादिदोषरहितता, शुद्धस्य=उद्गमादिदोषरहितस्य वा एषणा, साऽस्याऽस्तीति शुद्धैषणिकः, सर्वथा शुद्धमेव ग्राह्यमित्यभिग्रहधारीति भावः ।२९। '**संखा-दत्तिए**' संख्यादत्तिकः—संख्याप्रधाना दत्तिः संख्यादत्तिः, तया चरतीति संख्यादत्तिकः। दर्वीकटोरकादितोऽविच्छिन्नधारया या भिक्षा पतति सा, तथा—एकक्षेपरूपा च भिक्षा दत्तिरित्युच्यते ।३०। '**से तं भिक्खायरिया**' सैषा भिक्षाचर्या ॥ सू. ३० ॥

**वाइए** ) परिमितपिण्डपातिक—आधाकर्मादिक दोषों से रहित भक्तादिक यदि एक ही गृह से पर्याप्तमात्रा में मिल जाय तो लूँगा। २९ ( **सुद्धेसणिए** ) शुद्धैषणिक—शंकादिक दोषों से रहित अथवा उद्गमादिक दोषों से वर्जित आहार लेने वाला। ३०-( **संखादत्तिए** ) संख्यादत्तिक वह है जो इस प्रकार का संकल्प करता है कि दर्वी—कडछी एवं कटोरी आदि से अविच्छिन्न धारारूप में जो भिक्षा मेरे पात्र में पड़ जायगी उतनी ही भिक्षा मैं ग्रहण करूंगा। (**से तं भिक्खायरिया**) भिक्षाचर्या के ये ३० भेद है ॥ सू० ३० ॥

આપશે તો લઈશ. (૨૮) (परिमियपिंडवाइए) પરિમિતપિંડપાતિક—આધા-કર્મ આદિક દોષોથી રહિત ભક્તાદિક જો એક જ ઘેરથી પુરતા પ્રમાણમાં મળી જાય તો લઈશ. (૨૯) (सुद्धेसणिए) શુદ્ધૈષણિક—શંકા આદિક દોષોથી રહિત અથવા ઉદ્‌ગમાદિક દોષોથી વર્જિત આહાર લેવાવાળા. ૩૦ (संखादत्तिए) સંખ્યાદત્તિક તે છે કે જે એવો સંકલ્પ કરે છે કે દર્વી—કડછી તેમજ કટોરી આદિથી સતત ધારારૂપમાં જેટલી પણ ભિક્ષા મારા પાત્રમાં પડી જશે એટલી જ ભિક્ષા લઈશ. (से तं भिक्खायरिया) ભિક્ષાચર્યાના આ ૩૦ ભેદ છે. (સૂ. ૩૦)

**मूलम्—से किं तं रसपरिच्चाए? रसपरिच्चाए अणेगविहे पण्णत्ते; तं जहा १ निव्विइए, २ पणीयरसपरिच्चाए, ३ आयंबिलिए,**

टीका—'से किं तं' इत्यादि—'से किं तं रसपरिच्चाए' अथ कोऽसौ रसपरित्यागः?, 'रसपरिच्चाए' रसपरित्यागः 'अणेगविहे पण्णत्ते' अनेकविधः प्रज्ञप्तः, 'तं जहा' तद्यथा—तदनेकविधत्व चैवम्—'निव्विइए' निर्विकृतिकः—निर्गता घृतादिरूपा विकृतिर्यस्मात् स निर्विकृतिकः १, 'पणीयरसपरिच्चाए' प्रणीतरसपरित्यागः—प्रणीतरसः प्रचुरत्वात् द्रवद्घृतबिन्दुसन्दोहोऽपूपादिः, तस्य परित्यागः २, 'आयंबिलिए' आचामाम्लम्—विकृतिरहितानामोदनभर्जितचणकादीनां रूक्षान्नानामचित्त उदके प्रक्षिप्यैकासनस्थेन सकृद्भोजनमाचामाम्लं नाम तप उच्यते। तथा चोक्तम्—

'से किं तं रसपरिच्चाए?' इत्यादि।

(से किं तं रसपरिच्चाए?) रसपरित्याग तप किसे कहते है? वह कितने प्रकार का है? इस प्रकार शिष्य प्रश्न करता है। उत्तर—(रसपरिच्चाए) रसपरित्याग तप (अणेगविहे पण्णत्ते) अनेक प्रकारका कहा गया है। वह इस प्रकार से है—(निव्विइए) निर्विकृतिक—जिस आहार से घृतादिक विकृति निर्गत हो चुकी हो ऐसे आहारका ग्रहण करना सो निर्विकृतिक है। अर्थात्—विगय नहीं लेना (१)। (पणीयरसपरिच्चाए) प्रणीतरसपरित्याग—अपूप अर्थात मालपुआ आदि सरस आहार का परित्याग करना (२)। (आयंबिलिए) आचामाम्ल—विगयरहित ओदन, भूँजे हुए चने आदि रूक्ष अन्नको अचित्त पानी में डालकर एकस्थान पर बैठ एक वार ही खाना सो आचामाम्ल तप है।

'से किं तं रसपरिच्चिाए?' ઇત્યાદિ

(से किं तं रसपरिच्चाए) હવે અહીં રસપરિત્યાગ તપ કોને કહે છે—તે કેટલા પ્રકારનાં છે? આ પ્રકારે શિષ્ય પ્રશ્ન કરે છે. ઉત્તર (रसपरिच्चाए) રસપરિત્યાગ તપ (आणेगविहे पण्णत्ते) અનેક પ્રકારનાં કહેવાય છે. તે આ પ્રકારે છે—(निव्विइए) નિર્વિકૃતિક—જે આહારમાંથી ઘી વગેરેની વિકૃતિ નીકળી ગઇ હોય એવો આહાર લેવો તે નિર્વિકૃતિક છે. અર્થાત્ વિગય (ઘી—દૂધ વગેરે) લેવું નહિ. (૧) (पणीयरसपरिच्चाए) પ્રણીતરસપરિત્યાગ—અપૂપ અર્થાત્ માલપુઆ આદિ સરસ આહારનો પરિત્યાગ કરવો. (૨) (आयंबिलिए) આચામામ્લ—વિગયરહિત ભાત, ભુંજેલ ચણા આદિ લુખું અન્ન અચિત્ત પાણીમાં નાખી

४ आयामसित्थभोई, ५ अरसाहारे, ६ विरसाहारे, ७ अंताहारे,

विगइरहियस्स ओयण,—भज्जियचणगाऽऽलुक्ख—अन्नस्स ।
खित्ता जले अचित्ते, खाणं आयंविल जाण ॥ ३ ॥ इति

'आयाम-सित्थ-भोई' आयाम-सिक्थ-भोजी,=अवस्रावणगतसिक्थभोक्ता, ४ 'अरसाहारे' अरसाऽऽहारः-अरसः=जीरक-हिङ्ग्वादिभिरसंस्कृत आहारो यस्य सोऽरसाऽऽहारः ५। 'विरसाहारे' विरसाऽऽहारः—विरसः=विगतरसः—पुराणधान्यौदनादिः आहारो यस्य स विरसाहारः ६। 'अंताहारे' अन्त्याऽऽहारः—अन्ते भवम् अन्त्य—जघन्यधान्य कोद्रवादि तदेवाऽऽहारो यस्य सोऽन्त्याहारः ७। 'पंताहारे' प्रान्ताऽऽहारः—प्रकर्षेणान्तं प्रान्त—पाकपात्रादन्ने निःसारिते तत्पात्रश्लिष्ट दर्व्यादिना घर्षणेन निःसारितमन्नं, वल्लचणकादिनिष्पादि-

---

कहा भी है—"विगइरहियस्स ओयणभज्जियचणगाइलुक्खअन्नस्स । खित्ता जले अचित्ते खाणं आयंविलं जाण" इसका अर्थ आयविल का जो अर्थ किया है वही है (३)। (आयामसित्थभोई) आयामसिक्थभोजी—ओसामण में आये हुए सीथ मात्र का आहार करना (४)। (अरसाहारे) अरसाहार—जीर हींग आदि से विना बघारे हुए आहार का लेना (५) (विरसाहारे) विरसाहार—विगत रसवाले पुराने धान्य का आहार लेना (६)। (अंताहारे) अन्ताहार-कोद्रव आदि तुच्छ धान्य का आहार लेना (७)। (पंताहारे) प्रान्ताहार—पकाने के वर्तन मे से अन्न के निकालने पर करछली आदि के घर्षण से पात्र में लगा हुआ जो कुछ अन्न निकाला जाता है वह, अथवा वल्ल चणा आदि से बना हुआ पश्चात् खट्टी छाछ से मिश्रित अन्नादि

---

[] એક ઠેકાણે બેસી એકવાર ખાવુ તે આચામામ્લ તપ છે. "विगइरहियस्स ओयणभज्जियचणगाइलुक्खअन्नस । खित्ता जले अचित्ते खाणं आयंबिलं जाण" આનો અર્થ આયબિલનો જે અર્થ કર્યો છે તે જ છે. (૩) (अयामसित्थभोई) આયામસિકથભોજી—ઓસામણમા આવેલા સીથનો જ માત્ર આહાર કરવો (૪) (अरसाहारे) અરસાહાર—જીરૂં હીંગ આદિથી વઘાર્યા વગરના ભોજનનો આહાર કરવો (૬) (विरसाहारे) વિરસાહાર—રસ વગરના જુના ધાન્યથી બનેલું આહાર લેવો (अंताहारे) અંતાહાર—કોદરા આદિ તુચ્છ ધાન્યનો આહાર લેવો. (૭) (पंताहारे) પ્રાન્તાહાર—રાધવાના વાસણમાથી અન્ન કાઢી લીધા પછી કડછી આદિના ઘર્ષણથી પાત્રમા લાગેલુ જે કાંઈ અન્ન નિકાળવામાં આવે છે તે અથવા વાલ—ચણા આદિનો બનેલો (લોટ) પછી ખાટી છાશમાં મેળવી રાધેલું અન્ન આદિ તે

**८ पंताहारे, ९ लूहाहारे, १० तुच्छाहारे, से तं रसपरिच्चाए। से किं तं कायकिलेसे ? कायकिलेसे अणेगविहे पण्णत्ते; तंजहा–ठाणट्ठिइए १, उक्कुडुयासणिए २, पडिमट्ठाई ३,**

---

तमम्लतक्रमिश्रितं पर्युषितं वाऽन्नं, तदाहारो यस्य स तथा ८। '**लूहाहारे**' रूक्षाहारः–रूक्षम्=अस्निग्धमन्नमेवाहारो यस्य स तथा ९। '**तुच्छाहारे**' तुच्छाहारः-तुच्छः–अल्पोऽसारश्च श्यामाकादिनिष्पादित आहारो यस्य स तथा१० इति। उपसंहरन्नाह–'**से तं रसपरिच्चाए**' स एष रसपरित्याग इति।

इत्थं दशविधं रसपरित्यागं वर्णयित्वा कायक्लेशं वर्णयति–'**से किं तं कायकिलेसे**' अथ कोऽसौ कायक्लेश ? उत्तरमाह–'**कायकिलेसे अणेगविहे पण्णत्ते**' कायक्लेशोऽनेकविधः प्रज्ञप्तः। '**तंजहा**' तद्यथा–'**ठाणट्ठिइए**' स्थानस्थितिकः–स्थानं कायोत्सर्गः, तेन स्थितिर्यस्य स स्थानस्थितिक ।१। '**उक्कुडुयासणिए**' उत्कुटुकाऽऽसनिकः–भूमावसंलग्नपुतेन

---

प्रान्त है, अथवा प्रान्तका अर्थ वासी अन्न भी है। इसका आहार करना प्रान्ताहार है (९)। (**लूहाहारे**) रूक्षाहार–रूक्षस्वभाववाला कुलथी आदि का आहार रूक्षाहार है (९)। (**तुच्छाहारे**) तुच्छाहार–असार–जिसमें कुछ भी सार नहीं है ऐसा श्यामाक, मलीचा आदि तुच्छ धान्य का आहार तुच्छाहार है (१०)। (**से तं रसपरिच्चाए**) ये दस प्रकार के रसपरित्याग तप है। अब कायक्लेश का वर्णन सूत्रकार करते है–(**से किं तं कायकिलेसे?**) प्रश्न–वह कायक्लेश तप कितने प्रकार का है? (**कायकिलेसे अणेगविहे पण्णत्ते**) उत्तर-कायक्लेश तप अनेक प्रकार का है, (**तं जहा**) वे प्रकार इस तरह है–(**ठाणट्ठिइए**) स्थानस्थितिक, स्थान शब्द का अर्थ कायोत्सर्ग है; इस कायोत्सर्ग से जिसकी स्थिति सर्वदा रहती है वह स्थानस्थितिक है। (**उक्कुडुयासणिए**) उत्कुटुकासनिक–उकडु–आसन से बैठना

---

પ્રાન્ત છે, અથવા-પ્રાન્તનો અર્થ વાસી અન્ન પણ છે, તેનો આહાર કરવો તે પ્રાન્તાહાર છે (૮). (लूहाहारे) રૂક્ષાહાર–રૂક્ષ સ્વભાવના કુળથી આદિ નો આહાર રૂક્ષાહાર છે (૯). (तुच्छाहारे) તુચ્છાહાર–અસાર–જે અન્નમાં કાંઈ પણ સાર નથી એવું સામો મલીચા આદિ તુચ્છ ધાન્યનો આહાર તે તુચ્છાહાર છે (૧૦). (से तं रसपरिच्चाए) આ દસ પ્રકારનાં રસપરિત્યાગ તપ છે. હવે કાયક્લેશનું વર્ણન સૂત્રકાર કરે છે-(से किं तं कायकिलेसे) પ્રશ્ન–તે કાયક્લેશ તપ કેટલા પ્રકારના છે ?–(कायकिलेसे अणेगविहे पण्णत्ते) કાલક્લેશ અનેક પ્રકારનાં છે, (तं जहा) તે પ્રકાર આમ છે–(ठाणट्ठिइए) સ્થાનસ્થિતિક=સ્થાન શબ્દનો અર્થ કાયોત્સર્ગ છે. આ કાયોત્સર્ગથી જેની સ્થિતિ સર્વદા રહે છે તે

वीरासणिए ४, नेसज्जिए ५, दंडायइए ६, लउडसाई ७, आया-

वद्धाञ्जलिपुटेन भूमौ चरणतलमारोप्योपवेशनम्—उत्कुटुकं, तदासनमस्यास्तीति उत्कुटुकाऽऽसनिकः ।२। 'पडिमट्ठाई' प्रतिमास्थायी—प्रतिमा=मासिक्यादयः नियमविशेषाः, ताभिस्तिष्ठति तच्छीलः प्रतिमास्थायी ।३। 'वीरासणिए' वीराऽऽसनिकः—सिंहासनोपरि समुपविष्टस्य भूमिस्थितचरणस्य सिंहासनापनयने कृते सिंहासनोपविष्टवदवस्थानं वीरासनं, तदस्यास्तीति वीरासनिकः ।४। 'नेसज्जिए' नैषधिकः—निषद्या—पुताभ्यां भूम्यामुपवेशनं, तया चरतीति नैषधिकः ।५। 'दंडायइए' दण्डायतिकः—दण्डस्येवायतम्=आयामोऽस्याऽस्तीति

यह उत्कुटुक—आसन है, जो इस आसन से बैठता है वह उत्कुटुकासनिक है। इस आसन में भूमि पर दोनों चरणों के तलियो को जमाया जाता है और पुत-(बेठक) जमीन को स्पर्श नहीं करते, तथा दोनों हाथों की अंजली बंधी रहती है। (पडिमट्ठाई) प्रतिमास्थायी—साधु की १२ प्रतिमाओं का धारण करने वाला प्रतिमास्थायी है। (वीरासणिए) वीरासनिक-वीरासन से ठहरनेवाला वीरासनिक है। इस आसन का यह लक्षण है—कोई मनुष्य सिंहासन पर बैठा हुआ है, उस सिंहासन को हटा लेने पर वह वैसे ही खडा रह जाय, उसे 'वीरासन' कहते है। उस आसन से तप करनेवाले को वीरासनिक कहते है। (नेसज्जिए) नैषधिक—निषद्याका अर्थ है—पालथी मार कर बैठना। इस आसन से तप करनेवाले को नैषधिक कहते है । (दंडायइए) दण्डायतिक—दंड की तरह लंबा होकर आसन में स्थिति करनेवाला दंडायतिक है। (लउडसायी) लकुटशायी—वक्रकाष्ठ का नाम

સ્થાનસ્થિતિક છે. (उक्कुडुयासणिए) ઉત્કુટુકાસનિક=ઉકડુ આસનથી બેસવું તે ઉત્કુટુક આસન છે. જે આ આસન કરે છે તે ઉત્કુટુકાસનિક છે. આ આસનમાં ભૂમિ ઉપર બન્ને પગનાં તળિયાંને જમાવી દેવામાં આવે છે અને પુત (બેઠક) જમીનને સ્પર્શ કરતી નથી. તથા બન્ને હાથની અંજલિ બાંધેલી રહે છે. (पडिमट्ठाई) પ્રતિમાસ્થાયી—સાધુની ૧૨ પ્રતિમાઓનો ધારણ કરવાવાળો પ્રતિમાસ્થાયી છે. (वीरासणिए) વીરાસનિક—વીરાસનથી બેસનાર વીરાસનિક છે. આ આસનનું એ લક્ષણ છે કે—કોઈ મનુષ્ય સિંહાસન ઉપર બેઠો હોય તે સિંહાસનને હટાવી લેવાથી તે જ પ્રમાણે ઉભો રહી જાય તેને વીરાસન કહે છે. તે આસનથી તપ કરવાવાળાને વીરાસનિક કહે છે. (नेसज्जिए) નૈષધિક—નિષદ્યાનો અર્થ છે પલાંઠી મારીને બેસવું. આ આસનથી તપ કરવાવાળાને નૈષધિક કહે છે. (दंडायइए) દંડાયતિક—દંડની પેઠે લાંબા થઈને આસનમાં સ્થિતિ કરવાવાળા દંડાયતિક છે. (लउडसाई) લકુટશાયી—વાંકા લાકડાનું નામ

**वए ८; अवाउडए ९, अकंडुयए १०, अणिट्ठूहए ११, सव्वगाय-परिकम्म-विभूस-विप्पमुक्के १२, से तं कायकिलेसे।**

दण्डायतिकः ।६। '**लउडसाई**' लकुटशायी–लकुटो=वक्रकाष्ठं तद्वच्छेते तच्छीलो लकुटशायी–उत्तानः सन् शयित्वा पार्ष्णिकद्वयं ('एडी' इति भाषाप्रसिद्धद्वयं) शिरश्चेति त्रयं भूमौ स्थापयित्वा शेते तच्छीलः ।७। '**आयावए**' आतापकः-आतापयति शीतोष्णादिभिर्देहं संतापयति-क्लेशयतीत्यातापकः, आतापना च सूर्यातपादिसहनम् ।८। '**अवाउडए**' अप्रावृतकः–शीतकाले प्रावरणरहितः–सदोरकमुखवस्त्रिकाचोलपट्टातिरिक्तवस्त्ररहितः ।९। '**अकंडूयए**' अकण्डूयकः-कण्डूयनं–गात्रघर्षणं, तद्रहितः ।१०। '**अणिट्ठूहए**' अनिष्ठीवकः–निष्ठीवनरहितः ।११। '**सव्वगाय–परिकम्म–विभूस–विप्पमुक्के**' सर्वगात्र–परिकर्म–विभूषा–विप्रमुक्तः=सर्वस्य गात्रस्य परिकर्म–मार्जनं विभूषा–विभूषणं च, ताभ्यां विप्रमुक्तः–त्यक्तसंमार्जनविभूषणः ।१२। '**से तं कायकिलेसे**' स एष कायक्लेशः।

लकुट है। इस तरह होकर जो शयन करता है वह लकुटशायी है। ऊपर मुँह कर पहिले सोना पश्चात् दोनों पैरों की एडियों को एवं शिर को जमीन पर टेकना, इस प्रकार शरीर को अधर रखकर आसन करना 'लकुटशयनासन' है। (**आयावए**) आतापक–सूर्यादि की आतापना लेने वाला, (**अवाउडए**) अप्रावृतक–शीतकाल में सदोरक मुँहपत्ती एवं चोलपट्टा के अतिरिक्त अन्यवस्त्रों से रहित हो खुले शरीर से शीतको सहन करनेवाला अप्रावृतक है। (**अकंडूयए**) अकण्डूयक–खुजली चलने पर भी शरीर को नहीं खुजलाने वाला अकण्डूयक है। (**अणिट्ठूहए**) अनिष्ठीवक–थूँक आने पर भी नहीं थूँकनेवाला अनिष्ठीवक है। (**सव्वगाय–परिकम्म–विभूस–विप्पमुक्के**) सर्वगात्रपरिकर्मविभूषाविप्रमुक्त–शरीर की सर्वथा शुश्रूषा–विभूषा नहीं करनेवाला सर्वगात्रपरिकर्मविभूषाविप्रमुक्त है। (**से तं काय-**

લકુટ છે. એવી રીતે થઇને જે શયન કરે છે તે લકુટશાયી છે. ઉપર મોઢું રાખીને પહેલાં સુવુ, પછી બન્ને પગની એડીઓને તેમજ શિરને જમીન ઉપર ટેકાવવું–આ પ્રકારે શરીરને અધર રાખીને આસન કરવું તે 'લકુટ-શયનાસન' છે. (आयावए) આપાતક–સૂર્યઆદિની આતાપના લેવાવાળા, (अवा-उडए) અપ્રાવૃતક–શીતકાલમાં દોરાસાથે મુંહપત્તી તેમજ ચોલપટ્ટા સિવાયનાં બીજાં વસ્ત્રો રહિત થઈને ખુલ્લે શરીરે શીતને સહન કરવાવાળા અપ્રાવૃતક છે. (अकंडूयए) અકંડૂયક–ખુજલી આવતાં છતાં પણ જે શરીરને ખંજવાળે નહિ તે અકંડૂયક છે. (अणिट्ठूहए) અનિષ્ઠીવક–થૂંક આવવા છતાં પણ ન થૂંકવાવાળા અનિષ્ઠીવક છે. (सव्वगाय-परिकम्म-विभूस-विप्पमुक्के) સર્વગાત્રપરિકર્મ-

से किं तं पडिसंलीणया? पडिसंलीणया चउव्विहा पण्णत्ता; तंजहा—१ इंदियपडिसंलीणया, २ कसायपडिसंलीणया, ३ जोगपडिसंलीणया, ४ विवित्त-सयणा-सण-सेवणया। से किं तं इंदियपडिसंलीणया? इंदियपडिसंलीणया पंचविहा पण्णत्ता, तं जहा—

'से किं तं पडिसंलीणया?' अथ का सा प्रतिसंलीनता=प्रतिसलीनता=गोपनं, सा कतिविधा? उत्तरमाह—'पडिसंलीणया' प्रतिसंलीनता—'चउव्विहा पण्णत्ता' चतुर्विधा प्रज्ञप्ता, 'तं जहा' तद्यथा १—'इंदियपडिसंलीणया' इन्द्रियप्रतिसंलीनता—इन्द्रियनिरोधकरणशीलता । २—'कसायपडिसंलीणया' कषायप्रतिसंलीनता। ३—'जोगपडिसंलीणया' योगप्रतिसंलीनता। ४—'विवित्त—सयणा—सण—सेवणया' विविक्त—शयनाऽऽसन—सेवनता। 'से किं तं इंदियपडिसंलीणया' अथ का सा इन्द्रियप्रतिसंलीनता?, 'इंदिय-

किलेसे) कायक्लेश के ये १२ भेद है। (से किं त पडिसंलीणया) प्रतिसंलीनता तप कितने प्रकार का है? (पडिसंलीणया चउव्विहा पण्णत्ता) प्रतिसंलीनता तप चार प्रकार का है। (तं जहा) वे चार प्रकार ये है—(इंदियपडिसलीणया) इन्द्रियप्रतिसंलीनता—इन्द्रियों को गोप करके रखना। (कसायपडिसंलीणया) कषायप्रतिसंलीनता—क्रोधादिकषायों को गोप करके रखना, (जोगपडिसंलीणया) योगप्रतिसलीनता—मन वचन काया के व्यापार को गोप करके रखना (विवित्त—सयणा—सण—सेवणया) विविक्तशयनासनसेवनता-स्त्री-पशु-पण्डक-रहित स्थान में शयनासन करना। (से किं तं इंदियपडिसंलीणया) इन्द्रियप्रतिसंलीनता कितने प्रकार की है? (इंदियपडिसंलीणया पंचविहा पण्णत्ता) यह

વિભૂષાવિપ્રમુક્ત—શરીરની સર્વથા શુશ્રૂષા (સેવા શણગાર) ન કરવાવાળાને સર્વગાત્રપરિકર્મવિભૂષાવિપ્રમુક્ત કહે છે. (से तं कायकिलेसे) કાયક્લેશના આ ૧૨ પ્રકાર થાય છે. (से किं तं पडिसंलीणया) પ્રતિસંલીનતા તપ કેટલા પ્રકારનાં છે? (पडिसंलीणया चउव्विहा पण्णत्ता) પ્રતિસંલીનતા તપ ચાર પ્રકારના છે. (तं जहा) તે ચાર પ્રકાર આ પ્રમાણે છે. (इंदियपडिसंलीणया) ઇંદ્રિઓને ગોપી રાખવી. (कसायपडिसंलीणया) કષાયપ્રતિસંલીનતા—ક્રોધ આદિ કષાયોને રોકી રાખવા. (जोगपडिसंलीणया) યોગપ્રતિસંલીનતા—વાણી, મન અને કાયાના વ્યાપારને રોકી રાખવા. (विवित्त-सयणा-सण-सेवणया) વિવિક્તશયનાસનસેવનતા-સ્ત્રીપશુપંડકરહિત સ્થાનમાં શયનાસન કરવું. (से किं तं इंदियपडिसंलीणया) ઇંદ્રિયપ્રતિસંલીનતા કેટલા પ્રકારની છે? (इंदियपडिसंलीणया पंचविहा पण्णत्ता)

**सोइंदिय-विसय-प्पयार-निरोहो वा सोइंदिय-विसय-पत्तेसु अत्थेसु रागदोसनिग्गहो वा १, चक्खिंदिय-विसय-प्पयार-निरोहो वा चक्खि-**

**पडिसंलीणया**' इन्द्रियप्रतिसंलीनता '**पंचविहा पण्णत्ता**' पञ्चविधा प्रज्ञप्ता, '**तं जहा**' तद्यथा–'**सोइंदिय–विसय–पयार–निरोहो वा, सोइंदिय–विसय–पत्तेसु अत्थेसु राग-दोसनिग्गहो वा**' श्रोत्रेन्द्रियविषयप्रचारनिरोधो वा श्रोत्रेन्द्रियविषयप्राप्तेष्वर्थेषु रागद्वेषनिग्रहो वा–श्रोत्रेन्द्रियस्य=कर्णस्य विषये=शब्दे, प्रचारस्य=प्रवृत्तेः, निरोधः–निषेधः, संयमशीलताविघातकः शब्दो न श्रोतव्यः, यद्यकस्मात्कर्णकुहरगतः स्यात् तदा यत्कार्यं तदाह–श्रोत्रेन्द्रिय-विषय-प्राप्तेष्वर्थेषु=श्रुतेषु भावेषु, रागद्वेषयोर्निग्रहो विधेयः, अर्थात्–मधुरमृदङ्गसङ्गीतेषु–अनुरागो न कर्तव्यः, आक्रोशादिषु शब्देषु द्वेषः–अप्रीतिलक्षणश्चित्तविकारो न कार्यः १ । '**चक्खिंदिय–विसय–प्पयार–निरोहो वा, चक्खिंदिय–विसय–पत्तेसु अत्थेसु रागदोसनिग्ग-हो वा**' चक्षुरिन्द्रियविषयप्रचारनिरोधो वा चक्षुरिन्द्रियविषयप्राप्तेष्वर्थेषु रागद्वेषनिग्रहो वा–

इन्द्रियप्रतिसंलीनता पांच प्रकार की है, (**तं जहा**) वे प्रकार ये है-(**सोइंदिय-विसय-प्पयार-निरोहो वा, सोइंदिय–विसय–पत्तेसु अत्थेसु रागदोसनिग्गहो वा**) श्रोत्र -इन्द्रिय को विषय–शब्द में प्रवृत्ति करने से रोकना, संयम एवं शील को विघात करनेवाले शब्दो को नहीं सुनना, यदि अकस्मात् इस प्रकार के शब्द कानमें आकर पड भी जावें तो उस विषयमें राग-द्वेष नहीं करना, यह प्रथम प्रकार है १ । मतलब इसका यह है कि मधुर मृदङ्ग सङ्गीत आदि प्रिय एव आक्रोशादि अप्रिय शब्दों के प्रति प्रीति–अप्रीतिलक्षणरूप चित्तविकार नहीं करना सो श्रोत्रेन्द्रियविषयप्रचारनिरोध, एव श्रोत्रेन्द्रियविषयप्राप्तार्थरागद्वेषनिग्रहनामक प्रथम प्रकार है १। **चक्खिंदिय-विसय-प्पयार-निरोहो वा चक्खिंदिय–विसय–पत्तेसु अत्थेसु रागदोसनिग्गहो वा**) चक्षु इन्द्रिय को अपने विषयभूत पदार्थों में प्रवृत्त होने से रोकना,

આ ઇંદ્રિયપ્રતિસંલીનતા ૫ પ્રકારની છે-(तं जहा) તે પ્રકાર આ છે-(सोइंदिय-विसय-प्पयार-निरोहो वा, सोइंदिय-विसय-पत्तेसु अत्थेसु रागदोसनिग्गहो वा) શ્રોત્ર–ઇંદ્રિયને વિષય–શબ્દમા પ્રવૃત્તિ કરવાથી રોકવી, સંયમ તેમજ શીલનો વિઘાત કરવાવાળા શબ્દો સાભળવા નહિ. જો અકસ્માત્ આવા પ્રકારના શબ્દ કાનમાં આવીને પડી પણ જાય તો તે વિષયમાં રાગદ્વેષ ન કરવો. એ ૧ પ્રથમ પ્રકાર છે. મતલબ તેની એ છે કે મધુર મૃંદગ સંગીત આદિ પ્રિય, તેમજ આક્રોશ આદિ અપ્રિય શબ્દોમાં પ્રીતિ અપ્રીતિ–લક્ષણરૂપ ચિત્તવિકાર ન કરવો. તે શ્રોત્રેંદ્રિયવિષય–પ્રચારનિરોધ તેમજ શ્રોત્રેંદ્રિયવિષયપ્રાપ્તાર્થરાગદ્વેષનિગ્રહ નામનો પ્રથમ પ્રકાર છે. (चक्खिंदिय-विसय-प्पयार-निरोहो वा चक्खिंदिय-विसय-पत्तेसु अत्थेसु

दिय-विसय-पत्तेसु अत्थेसु रागदोसनिग्गहो वा २, घाणिंदिय-विसय-प्पयार-निरोहो वा घाणिंदिय-विसय-पत्तेसु अत्थेसु रागदोसनिग्गहो वा ३, जिब्भिंदिय-विसय-प्पयार-निरोहो वा जिब्भिंदिय-विसय-पत्तेसु अत्थेसु रागदोसनिग्गहो वा ४, फासिंदिय-विसय-प्पयार-

चक्षुरिन्द्रियस्य=नेत्रस्य विषये=रूपे प्रचारस्य=प्रवृत्तेर्निरोधः कार्यः, वा-अथवा चक्षुरिन्द्रिय-विषयप्राप्तेषु=दृष्टेषु अर्थेषु-मनोज्ञामनोज्ञरूपेषु रागद्वेषयोर्निग्रहः कर्तव्य इति शेषः ।२। **'घाणिंदिय-विसय-प्पयार-निरोहो वा, घाणिंदिय-विसय-पत्तेसु अत्थेसु रागदोस-निग्गहो वा'** घ्राणेन्द्रियविषयप्रचारनिरोधो वा घ्राणेन्द्रियविषयप्राप्तेष्वर्थेषु रागद्वेषनिग्रहो वा-घ्राणेन्द्रियं=नासिका, तस्य विषयो=गन्धस्तस्य प्रवृत्तेर्निषेधो विधेयः-सुरभिगन्धे दुरभिगन्धे वा नासिकामागते रागद्वेषौ निराकर्तव्यौ ।३। **'जिब्भिंदिय-विसय-प्पयार-निरोहो वा, जिब्भिंदिय-विसय-पत्तेसु अत्थेसु रागदोसनिग्गहो वा'** जिह्वेन्द्रियविषयस्य भोजनरसस्य प्रचारनिषेधः, जिह्वायामागतेऽपि मनोज्ञामनोज्ञरसे रागद्वेषयोर्निग्रहः ।४। **'फासिं-**

अथवा प्रवृत्त होने पर उसके विषय में राग और द्वेष नहीं करना, यह द्वितीय प्रकार है २। **( घाणिंदिय-विसय-प्पयार-निरोहो वा, घाणिंदिय-विसय-पत्तेसु अत्थेसु रागदोस-निग्गहो वा )** घ्राण-इन्द्रिय को अपने विषय में प्रवृत्त होने से रोकना, तथा प्रवृत्त होने पर उस विषयमें राग द्वेष नहीं करना, यह तृतीय प्रकार है ३। **( जिब्भिंदिय-विसय-प्पयार-निरोहो वा जिब्भिंदिय-विसय-पत्तेसु अत्थेसु रागदोसनिग्गहो वा )** जिह्वा-इन्द्रिय को अपने विषयमें प्रवृत्त होने से रोकना, एवं उस विषय में उसके प्रवृत्त होने पर प्राप्त विषयमें राग-द्वेषका निग्रह करना, यह चौथा प्रकार है ४। **( फासिंदिय-विसय-प्पयार-निरोहो वा, फासिंदिय-विसयपत्तेसु अत्थेसु रागदोसनिग्गहो वा )** इसी प्रकार स्पर्शन, इन्द्रिय

रागदोसनिग्गहो वा) ચક્ષુ-ઇંદ્રિયના વિષયભૂત પદાર્થોમાં તેની પ્રવૃત્તિ રોકવી અથવા પ્રવૃત્તિ થઈ જતાં તે બાબત રાગ અને દ્વેષ ન કરવો. એ બીજો પ્રકાર છે. (घाणिंदिय विसय-प्पयार-निरोहो वा घाणिंदिय-विसय-पत्तेसु अत्थेसु रागदोसनिग्गहो वा) ઘ્રાણ-ઇંદ્રિયના વિષયમાં તેની પ્રવૃત્તિ રોકવી, અથવા પ્રવૃત્તિ થઇ જતાં તે બાબતમાં રાગ-દ્વેષ ન કરવો. એ ત્રીજો પ્રકાર છે. (जिब्भिंदिय-विसय-प्पयार-निरोहो व. जिब्भिंदिय-विसय-पत्तेसु अत्थेसु रागदोसनिग्गहो वा) જીભ ઇંદ્રિયના વિષયમા-પ્રવૃત્તિ રોકવી તેમજ તેના વિષયમા તે પ્રવૃત્ત થઇ જાય તો પછી પ્રાપ્ત બાબતમાં રાગ દ્વેષ થતાં રોકવો. એ ચોથો પ્રકાર છે. ( फासिंदिय-विसय-

**निरोहो वा फासिंदिय-विसय-पत्तेसु अत्थेसु रागदोसनिग्गहो वा ५, से तं इंदियपडिसंलीणया । से किं तं कसायपडिसंलीणया ? कसायपडिसंलीणया चउव्विहा पण्णत्ता, तं जहा—१ कोहस्सुदय-निरोहो वा, उदयपत्तस्स वा कोहस्स विफलीकरणं । २ माण-**

**दिय-विसय-प्पयार-निरोहो वा, फासिंदिय-विसय-पत्तेसु अत्थेसु रागदोस-निग्गहो वा** ' स्पर्शेन्द्रियविषयप्रचारनिरोधो वा स्पर्शेन्द्रियविषयप्राप्तेष्वर्थेषु रागद्वेषनिग्रहो वा-स्पर्शेन्द्रियं=त्वक्, तस्य विषयः स्पर्शः=शीतोष्णादिकः, तत्र प्रवृत्तेः प्रतिषेधः, प्राप्तेष्वपि शुभाशुभस्पर्शेषु रागद्वेषयोर्निषेधः। '**से तं इंदियपडिसंलीणया**' सैषा इन्द्रियप्रति-संलीनता । '**से किं तं कसायपडिसंलीणया**' अथ का सा कषायप्रतिसंलीनता ?, '**कसाय-पडिसंलीणया**' कषायप्रतिसंलीनता '**चउव्विहा पण्णत्ता**' चतुर्विधा प्रज्ञप्ता, '**तं जहा**' तद्यथा—'**कोहस्सुदयनिरोहो वा, उदयपत्तस्स वा कोहस्स विफलीकरणं**' क्रोधस्योदय-निरोधो वा, उदयप्राप्तस्य वा क्रोधस्य विफलीकरणम्—प्रथमतस्तु क्रोधस्य उदय एव निषे-

को भी अपने विषय में प्रवृत्त होने से रोकना एवं उस विषय में उसके प्रवृत्त होने पर उसमें राग द्वेष होने का वर्जन करना, यह पांचवाँ प्रकार है । इन पांचों प्रकारों का भाव यही है कि इन्द्रियों पर विजय प्राप्त करना, तथा प्राप्त उनके अपने २ मनोज्ञ एवं अमनोज्ञ विषयों के ऊपर राग एवं द्वेषकी परिणति से विरक्त रहना । (**से तं इंदियपडि-संलीणया**) यह सब इन्द्रियप्रतिसंलीनता है । ( **से किं तं कसायपडिसंलीणया** ) कषायप्रतिसलीनता क्या है ? (**कसायपडिसंलीणया चउव्विहा पण्णत्ता**) कषायप्रतिसंलीनता चार प्रकार की है । (**तं जहा**) वह इस प्रकार से है—(**१—कोहस्सुदयनिरोहो वा, उदय-**

प्पयार-निरोहो वा फासिंदियविसयपत्तेसु अत्थेसु रागदोसनिग्गहो वा ) એ પ્રકારે સ્પર્શન-ઇંદ્રિયના વિષયમાં તેની પ્રવૃત્તિ રોકવી તેમજ તે વિષયમાં તેની પ્રવૃત્તિ થઇ જાય તો તે માટે રાગ દ્વેષ ન કરવો. એ પાંચમો પ્રકાર છે. આ પાંચેય પ્રકારોનો ભાવ એ જ છે કે ઇંદ્રિઓ ઉપર વિજય પ્રાપ્ત કરવો, તથા તે પ્રાપ્ત થતાં પોતપોતાના મનોજ્ઞ તેમજ અમનોજ્ઞ વિષયો ઉપર રાગ કે દ્વેષની પરિણતિથી વિરક્ત રહેવું. ( से तं इंदियपडिसंलीणया ) આ બધું ઇંદ્રિયપ્રતિસંલીનતા છે. ( से किं तं कसायपडिसंलीणया ) પ્રશ્ન-કષાયપ્રતિસંલીનતા શું છે ? ઉત્તર-(कसायपडिसंलीणया चउव्विहा पण्णत्ता ) કષાયપ્રતિસંલીનતા ચાર પ્રકારની છે. ( तं जहा ) તે આ પ્રકારે છે-(कोहस्सुदयनिरोहो वा उदयपत्तस्स वा

स्सुदयनिरोहो वा, उदयपत्तस्स वा माणस्स विफलीकरणं। ३ मायाउदयणिरोहो वा, उदयपत्ताए वा मायाए विफली-करणं। ४ लोहस्सुदयणिरोहो वा, उदयपत्तस्स वा लोहस्स

धनीयः, यथा क्रोधो नोदयेत तथा यतितव्यम्, अथापि यदि क्रोध उदयं प्राप्नुयात् तदा तस्य विफलीकरणम्=व्यर्थीकरणम् ।१। '**माणस्सुदयनिरोहो वा, उदयपत्तस्स वा माणस्स विफलीकरणं**'–मानस्योदयनिरोधो वा उदयप्राप्तस्य वा मानस्य विफलीकरणम्–मानस्य–अभिमानस्योदय एव निषेधितव्यः, माने उदयं प्राप्तेऽपि विफलीकरणम्=सतोऽपि असत इव करणम् ।२। '**माया–उदय–निरोहो वा, उदयपत्ताए वा मायाए विफलीकरणं**' मायाया उदयनिरोधो वा, उदयप्राप्ताया वा मायाया विफलीकरणम्–उदयमानाया एव मायाया'=परवञ्चनारूपाया निषेधः कर्तव्य', कथञ्चिदुदिताया वा मायायाः=कपटक्रियाया विफलीकरणम् ।३। '**लोहस्सुदयणिरोहो वा, उदयपत्तस्स वा लोहस्स**

**पत्तस्स वा कोहस्स विफलीकरणं, २–माणस्सुदयनिरोहो वा, उदयपत्तस्स वा माणस्स विफलीकरणं, ३ मायाउदयनिरोहो वा, उदयपत्ताए वा मायाए विफली-करणं, ४ लोहस्सुदयणिरोहो वा उदयपत्तस्स वा लोहस्स विफलीकरणं**) प्रथम तो क्रोध के उदय का ही निरोध करना, यह सर्वोत्तम पक्ष है, उदयनिरोध होने से क्रोध का मूल विनष्ट हो जाता है। यदि क्रोध उदित हो जाय तो उसे विफल कर देना चाहिये १। प्रथम तो ऐसा ही यत्न करना चाहिये कि जिससे मानकषाय का उदय ही न हो, यदि मानकषाय उदित हो जाय तो उसे विफल कर देना चाहिये २। उत्तम बात यही है कि मायाकषाय आत्मा में उदित न हो, यदि वह उदित हो जाती है तो उसको विफल बना देना

कोहस्स विफलीकरणं, माणुस्सुदयनिरोहो वा उदयपत्तस्स वा माणस्स विफलीकरणं, माया-उदयनिरोहो वा उदयपत्ताए वा मायाए विफलीकरण, लोहस्सुदयणिरोहो वा उदयपत्तस्स वा लोहस्स विफलीकरणं ) પ્રથમ તો ક્રોધનો ઉદય થતાં જ નિરોધ કરવો એ સર્વોત્તમ પક્ષ છે. ઉદયનિરોધ થવાથી ક્રોધનું મૂળ જ નાશ પામે છે. જો ક્રોધનો ઉદય થઈ જાય તો તેને વિફલ કરી દેવો જોઇએ ૧. પહેલા તો એવો જ યત્ન કરવો જોઇએ કે જેથી માનકષાયનો ઉદય જ ન થાય. જો માનકષાયનો ઉદય થઈ જાય તો તેને વિફલ કરી દેવો જોઇએ ૨. ઉત્તમ વાત એ જ છે કે માયાકષાય પણ આત્મામાં ઉદય ન થઈ શકે એવી જાતની પ્રવૃત્તિ કરવી જોઇએ. જો તેનો ઉદય થઈ ચુકયો હોય તો તેને વિફલ કરી દેવું જોઇએ ૩ એ જ પ્રકારે લોભ પણ આત્મામાં ઉદિત ન થાય

**विफलीकरणं, से तं कसायपडिसंलीणया। से किं तं जोगपडिसंलीणया? जोगपडिसंलीणया तिविहा पण्णत्ता; तं जहा-१ मणजोगपडिसंलीणया, २ वयजोगपडिसंलीणया, ३ कायजोगपडिसंली-**

**विफलीकरणं**'-लोभस्योदयनिरोधो वा, उदयप्राप्तस्य वा लोभस्य विफलीकरणम्-परस्वग्रहणलालसा लोभस्तस्योदय एव निराकरणीयः, कथञ्चित्क्वापि वस्तुनि लोभे सत्यपि स लोभ उदितोऽपि निषेधनीय' ।४। '**से तं कसायपडिसंलीणया**' सैषा कषायप्रतिसंलीनता ।४। '**से किं तं जोगपडिसंलीणया**' अथ का सा योगप्रतिसंलीनता? '**जोगपडिसंलीणया**' योगप्रतिसंलीनता-'**तिविहा पण्णत्ता**' त्रिविधा प्रज्ञप्ता '**तं जहा**' तद्यथा '**मणजोगपडिसंलीणया**' मनोयोगप्रतिसंलीनता-योगो=बन्धः, कर्मणा सह मनसो योगो-मनोयोगः, तस्य प्रतिसंलीनता-निरोधशीलता १। '**वयजोगपडिसंलीणया**'-वाग्योगप्रतिसंलीनता २। '**कायजोगपडिसंलीणया**' काययोगप्रतिसंलीनता ३। '**से किं तं**

चाहिये ३। इसी प्रकार लोभ भी आत्मा में उदित न हो सके, इस प्रकार प्रवृत्ति करनी चाहिये, यदि वह उदित हो चुका हो तो उसे विफल कर देना चाहिये ४। तात्पर्य यह है कि चारों कषायो को जैसे भी बने उस प्रकार से जीतना। (**से तं कसायपडिसंलीणया**) यह कषायप्रतिसंलीनता है। (**से किं तं जोगपडिसंलीणया**) योगप्रतिसंलीनता क्या है? (**जोगपडिसंलीणया तिविहा पण्णत्ता**) योगप्रतिसंलीनता तीन प्रकार की कही गई है, (**तंजहा**) वह इस तरह से, (**मणजोगपडिसंलीणया वयजोगपडिसंलीणया कायजोगपडिसंलीणया**) कर्मों के साथ मनका बंधन होना सो मनोयोग है, उसका गोपन करना मनोयोगप्रतिसंलीनता है। वचनयोगप्रतिसंलीनता एवं काययोगप्रतिसंलीनता भी वचनयोग को गोपना एवं काययोग को गोपना है। इसी विषय को आगे के सूत्रांश से सूत्र-

આ માટે પ્રયત્ન કરવો જોઈએ. કદાચ તે ઉદિત થઈ ચુકયો હોય તો તેને નિષ્ફળ કરી દેવું જોઈએ ૪.

તાત્પર્ય એ છે કે ચારેય કષાયોને જેમ બને તેવા પ્રકારે જીતવા. (से तं कसायपडिसंलीणया) આ કષાયપ્રતિસંલીનતા છે. (से किं तं जोगपडिसंलीणया) પ્રશ્ન-યોગપ્રતિસંલીનતા શું છે? ઉત્તર-(जोगपडिसंलीणया तिविहा पण्णत्ता) યોગપ્રતિસંલીનતા ત્રણ પ્રકારની કહેવાય છે, (तं जहा) તે આ પ્રમાણે છે-(मणजोगपडिसंलीणया वयजोगपडिसंलीणया कायजोगपडिसंलीणया) કર્મોની સાથે મનનું બંધન થાય તે મનોયોગ છે. તેનું ગોપન કરવું તે મનોયોગપ્રતિસંલીનતા છે. વચનયોગપ્રતિસંલીનતા તેમજ કાયયોગપ્રતિસંલીનતા પણ વચનયોગને ગોપવું તેમજ કાય-

णया। से किं तं मणजोगपडिसंलीणया ? मणजोगपडिसंलीणया—१ अकुसलमणनिरोहो वा, २ कुसलमणउदीरणं वा। से तं मण-जोग-पडिसंलीणया। से किं तं वयजोगपडिसंलीणया? वयजोगपडिसंलीणया—१ अकुसलवयणिरोहो वा, २ कुसलवयउदीरणं वा। से तं वयजोगपडिसंलीणया। से किं तं कायजोगपडिसंलीणया?

मणजोगपडिसंलीणया' अथ का सा मनोयोगप्रतिसंलीनता ? 'मणजोगपडिसंलीणया' मनोयोगप्रतिसंलीनता 'अकुसल-मण-णिरोहो वा' अकुशलमनोनिरोधो वा, 'कुसल-मण-उदीरणं वा' कुशलमनउदीरणं वा, शुभमनस उदीरणं=प्रवर्तनम्, 'से तं मण-जोग-पडिसंलीणया' सैषा मनोयोगप्रतिसंलीनता,। 'से किं तं वयजोगपडिसंलीणया' अथ का सा वाग्योगप्रतिसंलीनता ? 'वयजोगपडिसंलीणया' वाग्योगप्रतिसंलीनता-'अकुसलवयनिरोहो वा' अकुशलवाङ्निरोधो वा १, 'कुसलवयउदीरणं वा' कुशलवागुदीरणं वा २। 'से तं वयजोगपडिसंलीणया' सैषा वाग्योगप्रतिसंलीनता।

कार प्रकट करते है – (से किं तं मणजोगपडिसंलीणया) वह मनोयोगप्रतिसलीनता क्या है ? (मणजोगपडिसंलीणया-अकुसलमणनिरोहो, कुसलमणउदीरणं वा, से तं मणजोगपडिसंलीणया) अकुशल-अशुभ मनका निरोध होना, अथवा शुभमन का प्रवर्त्तन होना सो यह मनोयोगप्रतिसलीनता है। (से किं तं वयजोगपडिसंलीणया) वचनयोगप्रतिसलीनता क्या है ? (वयजोगपडिसंलीणया अकुसलवयनिरोहो वा कुसलवयउदीरणं वा, से तं वयजोगपडिसंलीणया) अकुशलवाणी का निरोध करना अथवा कुशलवाणी का उदीरण करना, यह वचनयोगप्रतिसलीनता है। (से किं तं कायजोगपडिसंलीणया) काययोगप्रतिसंलीनता किसका नाम है ? (कायजोग-

યોગને ગોપવું એ છે. આ વિષયને આગળના સૂત્રના અંશમાં સૂત્રકાર પ્રકટ કરે છે--(से किं तं मणजोगपडिसंलीणया) તે મનોયોગપ્રતિસંલીનતા શું છે? (मणजोगपडिसंलीणया अकुसलमणनिरोहो कुसलमणउदीरणं वा, से तं मणजोगपडिसंलीणया)-અકુશલ-અશુભ મનને નિરોધ થવો,અથવા શુભ મનમાં પ્રવર્તન થવું તે મનોયોગપ્રતિસંલીનતા છે. (से किं तं वयजोगपडिसंलीणया)-વચનયોગપ્રતિસંલીનતા શું છે? (वयजोगपडिसंलीणया अकुसलवयनिरोहो वा कुसलवयउदीरणं वा,से तं वयजोगपडिसंलीणया)-અકુશલ વાણીને નિરોધ કરવો, અથવા કુશલ વાણીનું ઉદીરણ કરવું તે વચનયોગપ્રતિસંલીનતા છે. (से किं तं कायजोगपडिसंलीणया)

कायजोगपडिसंलीणया—जं णं सुसमाहियपाणिपाए कुम्मो इव गुत्तिंदिए सव्वगायपडिसंलीणे चिट्ठइ, से तं कायजोगपडिसंलीणया। से किं तं विवित्त-सयणा-सण-सेवणया? विवित्त-सयणा-सण-सेवणया--जं णं आरामेसु उज्जाणेसु देवकुलेसु सहासु पवासु पणि-

---

काययोगप्रतिसंलीनतामाह—'से किं तं कायजोगपडिसंलीणया?' अथ का सा काययोगप्रतिसंलीनता? 'कायजोगपडिसंलीणया' काययोगप्रतिसंलीनता नाम—'जं णं सुसमाहियपाणिपाए कुम्मो इव गुत्तिंदिए सव्वगायपडिसंलीणे चिट्ठइ' यत् खलु सुसमाहितपाणिपादः कूर्म इव गुप्तेन्द्रियः सर्वगात्रप्रतिसंलीनस्तिष्ठति। यत् खलु=निश्चयेन सुसमाहितपाणिपादः=सुसंयतहस्तचरणः, अत एव कच्छपवद् गुप्तेन्द्रियः=सुरक्षितसर्वेन्द्रियः, सर्वगात्रप्रतिसंलीनः--सर्वैः गात्रैः=अवयवैः प्रतिसंलीनः—निवारितवृत्तिस्तिष्ठति—कायिकसावद्याऽनुष्ठानवर्जितो भवति। 'से तं कायजोगपडिसंलीणया' सैषा काययोगप्रतिसंलीनता। 'से किं तं विवित्त—सयणा—सण—सेवणया' अथ का सा विविक्तशयनाऽऽसनसेवनता? विविक्तानि=दोषरहितानि शयनासनानि, तेषां सेवनता—सेवनम्, सा कीदृशी? इति प्रश्न, उत्तरमाह—'विवित्त—सयणा—सण—सेवणया—जं णं आरामेसु उज्जाणेसु देवकुलेसु सहासु पवासु पणियगिहेसु पणियसालासु इत्थी—पसु—पंडग—संसत्त—विरहियासु वसहीसु फासुएसणिज्जं पीढ—फलग—सेज्जा—संथारगं उवसंपज्जित्ताणं

---

पडिसंलीणया—जं णं सुसमाहियपाणिपाए कुम्मो इव गुत्तिंदिए सव्वगायपडिसंलीणे चिट्ठइ, से तं कायजोगपडिसंलीणया) हाथ पैरों को तथा इन्द्रियों को कच्छप के समान अच्छी तरह विषयों से गोप कर रखना काययोगप्रतिसंलीनता है। (से किं तं विवित्त-सयणा-सण-सेवणया) विविक्तशयनासन—दोषरहित शयन तथा आसन की सेवनता क्या है? (विवित्त—सयणा—सण—सेवणया—जं णं आरामेसु उज्जाणेसु देवकुलेसु, सहासु, पवासु, पणियगिहेसु, पणियसालासु, इत्थीपसुपंडगसंसत्तविरहियासु

---

કાયયોગપ્રતિસંલીનતા શેનું નામ છે?—(कायजोगपडिसंलीणया—जं णं सुसमाहियपाणिपाए कुम्मो इव गुत्तिंदिए सव्वगायपडिसंलीणे चिट्ठइ, से तं कायजोगपडिसंलीणया) હાથ, પગ, તથા ઇંદ્રિયોને કાચબાની પેઠે સારી રીતે વિષયોથી ગોપવી રાખવાં તે કાયયોગપ્રતિસંલીનતા છે. (से किं तं विवित्त-सयणा-सण-सेवणया) વિવિક્તશયનાસન-દોષરહિત શયન તેમજ આસનનું સેવન શું છે? (विवित्त-सयणा-सण-सेवणया-जं णं आरामेसु उज्जाणेसु देवकुलेसु सहासु पवासु पणियगिहेसु पणियसालासु,

**यगिहेसु पणियसालासु इत्थी-पसु-पंडग-संसत्त-विरहियासु वसहीसु फासुएसणिज्जं पीढ-फलग-सेज्जा-संथारगं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ, से तं विवित्तसयणासणसेवणया । से तं पडिसंलीणया । से तं बाहिरए तवे ॥ सू०३० ॥**

विहरइ' विविक्तशयनासनसेवनता—यत् खल्वारामेषु उद्यानेषु देवकुलेषु प्रपासु पणित-गृहेषु पणितशालासु स्त्री-पशु-पण्डक-संसक्त-विरहितासु वसतिषु प्रासुकैषणीय पीठ-फलक-शय्या-संस्तारकम् उपसम्पद्य विहरति, 'स्त्री-पशु-पण्डक-संसक्त-विरहितासु' इत्यस्य लिङ्गविपरिणामेन आरामादिपदेष्वप्यन्वयः कार्य', ततश्च—यत् खलु=निश्चयेन अनगारः, स्त्री-पशु-पण्डक-संसक्त-विरहितेषु=स्त्रियः, पशवः, पण्डकाः=नपुंसकाः, एतैः सर्वैः संसक्तं=संयोग', तेन विरहितेषु आरामेषु=कृत्रिमवनेषु, उद्यानेषु=कुसुमकाननेषु, देवकुलेषु=यक्षकुलेषु, तथा स्त्र्यादिसंसक्तवर्जितासु सभासु, प्रपासु=पानीयशालासु, पणितगृहेषु=व्यावहारिक-जनोचितेषु पण्यगृहेषु, पणितशालासु = बहुग्राहकदायकजनयोग्यासु, स्त्र्यादि-संसर्गरहितासु वसतिषु=सामान्यगृहिगृहेषु, एवंविधानेकस्थानेषु '**फासुएसणिज्जं**' प्रासु-कैषणीय—प्रगता असवः=असुमन्त' प्राणिनो यस्मात् तत्प्रासुकम्=अचित्तम्, अत एव एष-

**वसहीसु फासुएसणिज्जं पीढफलगसेज्जासंथारगं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ** ) दोषरहित शयन एवं आसन की सेवनता यह इस प्रकार से होती है—जो अनगार स्त्रियों, पशुओं, एवं नपुंसकों से रहित आरामों में—कृत्रिमवनों में, उद्यानों में—कुसुमित काननों में, देवकुलों में—यक्षायतनों में, सभाओं में, प्रपाओं में—पानीयशालाओं में, पणितगृहो में—व्यावहारिक-जनोचित पण्यगृहों में, पणितशालाओं में—अनेक ग्राहक एवं दायक जनों के योग्य ऐसे स्थानों में, वसतियों में—सामान्य गृहस्थजनों के घरों में, अचित्त एवं निरवद्य पीठ, फलक,

इत्थीपसुपंडगसंसत्तविरहियासु वसहीसु फासुएसणिज्जं पीढफलगसेज्जासंथारगं उवसं-पज्जित्ताणं विहरइ, से तं पडिसंलीणया) દોષરહિત આસન તેમજ શયનનું સેવન કરવું તે આ પ્રકારે થાય છે કે જે અનગાર સ્ત્રીઓ, પશુઓ, તેમજ પંડકો-નપુંસકોથી રહિત આરામોમાં—એટલે કૃત્રિમવનોમાં, ઉદ્યાનોમાં—ફુલવાડીઓમાં, દેવકુલોમાં—યક્ષાયતનોમાં, સભાઓમાં, પ્રપાઓમા—પાનીયશાલાઓમાં (પરબના સ્થાનમાં) પણિતગૃહોમાં—વ્યવહારિક—લોકોચિત દુકાનોમાં, પણિતશાલાઓમાં —અનેક ગ્રાહકો તેમજ દાયકો (દેનારા) લોકોને યોગ્ય એવાં સ્થાનોમાં એટલે ગોદામોમાં, વસતિઓમાં—સામાન્ય ગૃહસ્થ લોકોનાં ઘરોમાં, અચિત્ત તેમજ નિરવદ્ય

**मूलम्—से किं तं अब्भितरए तवे ?, अब्भितरए तवे छव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—१ पायच्छित्ते, २ विणए, ३ वेयावच्चं ४ सज्झाओ, ५ झाणं, ६ विउसग्गो।**

णीयं=निरवद्यम् पीठफलकशय्यासंस्तारकम् उपसम्पद्य विहरति। '**से तं विवित्त-सयणा-सण-सेवणया**' सैषा विविक्त-शयना-सन-सेवनता। '**से तं पडिसंलीणया**' सैषा प्रतिसंलीनता, '**से तं बाहिरए तवे**' तदिदं बाह्यं तपः ॥ सू० ३० ॥

**टीका**—अथाभ्यन्तरं तपः प्रोच्यते—'**से किं तं अब्भितरए तवे ?**' अथ किं तद् आभ्यन्तरं तपः ?, उत्तरमाह—'**अब्भितरए तवे छव्विहे पण्णत्ते**' आभ्यतरं तपः षड्विधं प्रज्ञप्तम्; '**तं जहा**' तद्यथा—१ '**पायच्छित्तं**' प्रायश्चित्तम्, २—'**विणए**' विनयः, ३ '**वेयावच्चं**' वैयावृत्यम्, ४—'**सज्झाओ**' स्वाध्यायः, ५—'**झाणं**' ध्यानम्, ६—'**विउसग्गो**' व्युत्सर्ग इति। तत्र प्रायश्चित्तमाह—'**से किं तं पायच्छित्ते**' अथ किं

शय्या एवं संस्तारक अंगीकार कर विचरता है, (**से तं विवित्त-सयणा-सण-सेवणया**) यह विविक्तशयनासनसेवनता है। (**से तं पडिसंलीणया**) इस प्रकार यह प्रतिसंलीनता है। (**से तं बाहिरए तवे**) इस प्रकार यह छह प्रकार के बाह्य तप के भेद-प्रभेद कहे गये हैं ॥ सू० ३० ॥

अब आभ्यन्तर तप का सूत्रकार वर्णन करते हैं-'**से किं तं अब्भितरए तवे ?**' इत्यादि।

(**से किं तं अब्भितरए तवे ?**) आभ्यन्तर तप क्या है—कितने प्रकार का है ? (**अब्भितरए तवे छव्विहे पण्णत्ते**) आभ्यन्तर तप छह प्रकार का है; (**तं जहा**) वह इस प्रकार से है, (**पायच्छित्तं, विणए, वेयावच्चं, सज्झाओ, झाणं, विउसग्गो**) १ प्रायश्चित्त, २ विनय, ३ वैयावृत्य, ४ स्वाध्याय, ५ ध्यान और ६

પીઠ, ફલક, શય્યા તેમજ સંસ્તારક અંગીકાર કરીને વિચરે છે (से तं विवित्त-सयणा-सण-सेवणया) તે વિવિક્ત શયનાસનસેવનતા છે. (से तं पडिसंलीणया) આ પ્રકારે આ પ્રતિસંલીનતા છે. (से तं बाहिरए तवे) આ પ્રકારે તે છ પ્રકારના બાહ્યતપના ભેદ-પ્રભેદ કહેલા છે. (સૂ. ૩૦).

હવે આભ્યંતર તપનુ સૂત્રકાર વર્ણન કરે છે-'से किं तं अब्भितरए तवे ?' ઈત્યાદિ.

(से किं तं अब्भितरए तवे ?) પ્રશ્ન-આભ્યન્તર તપ શું છે ? કેટલા પ્રકારનાં છે ? (अब्भितरए तवे छव्विहे पण्णत्ते) ઉત્તર-આભ્યન્તર તપ છ પ્રકારનાં છે. (तं जहा) તે આ પ્રકારે છે-(पायच्छित्तं विणए वेयावच्चं, सज्झाओ झाणं विउसग्गो) ૧ પ્રાયશ્ચિત્ત, ૨ વિનય, ૩ વૈયાવૃત્ય, ૪ સ્વાધ્યાય, ૫ ધ્યાન ૬

से किं तं पायच्छित्ते? पायच्छित्ते–दसविहे पण्णत्ते; तं जहा-आलोयणारिहे १, पडिक्कमणारिहे २, तदुभयारिहे ३, विवे-

तत्प्रायश्चित्तम् ?–प्रायश्चित्तं किंस्वरूपं कतिविधश्चेति पृच्छति, उत्तरमाह–'पायच्छित्ते दसविहे पण्णत्ते' प्रायश्चित्तं दशविधं प्रज्ञप्तम्–प्रायः=पापं, तस्मात् चित्तं=जीवं शोधयति=कर्ममलिनं विमलीकरोतीति प्रायश्चित्तमिति । यद्वा–प्रायो=बाहुल्येन चित्तम्=अन्तःकरणं स्वेन स्वरूपेण अस्मिन् सति भवति–इति प्रायश्चित्तम्–अनुष्ठानविशेषः । संवरादेरपि तथैवात्मनः शुद्धिकरणात् प्रायोग्रहणमिति । अस्य दशविधत्वं दर्शयति–'तं जहा' तद्यथा–'आलोयणारिहे' आलोचनाऽर्हम्–आलोचना गुरुसमीपे पापस्य निवेदनं, तावन्मात्रेणैव यस्य पापस्य शुद्धिस्तदालोचनार्हम् । आलोचनां=गुरुनिवेदनां विशुद्धये

व्युत्सर्ग । (से किं तं पायच्छित्ते) प्रायश्चित्त कितने प्रकार का है ?—(पायच्छित्ते दसविहे पण्णत्ते)–प्रायश्चित्त १० प्रकारका है । (तं जहा) वे प्रकार ये है–(आलोयणारिहे[1] पडिक्कमणारिहे[2] तदुभयारिहे[3] विवेगारिहे[4] विउसग्गारिहे[5] तवारिहे[6] छेयारिहे[7] मूलारिहे[8] अणवट्ठप्पारिहे[9] पारंचियारिहे[10]) कर्मों से मलिन चित्त–जीवका संशोधन जिससे होता है, अथवा जिसके होने पर प्रायः करके अन्तःकरण अपने स्वरूप में स्थित होता है, वह प्रायश्चित्त है । संवरादिक से भी आत्मा की शुद्धि होती है इसलिये उनसे इसे पृथक् करनेके लिये प्रायश्चित्त में 'प्राय.' शब्दका प्रयोग हुआ है । इस में प्रथम प्रायश्चित्त आलोचनार्ह होता है । गुरु के समीप पापों का निवेदन करना इसका नाम आलोचना है । इस आलोचनामात्र से जिस पाप की शुद्धि हो जाती है वह आलोचनार्ह

વ્યુત્સર્ગ. (से किं तं पायच्छित्ते) પ્રાયશ્ચિત્ત કેટલા પ્રકારનાં છે ? (पायच्छित्ते दसविहे पण्णत्ते)–પ્રાયશ્ચિત્ત ૧૦ પ્રકારનાં છે. (तं जहा) તે આ પ્રકારે છે–(आलोयणारिहे[1] पडिक्कमणारिहे[2] तदुभयारिहे[3] विवेगारिहे[4] विउसग्गारिहे[5] तवारिहे[6] छेयारिहे[7] मूलारिहे[8] अणवट्ठप्पारिहे[9] पारंचियारिहे[10], से तं पायच्छित्ते) કર્મોથી મલિન થયેલાં ચિત્તનું સંશોધન જેનાથી થાય છે અથવા જે થવાથી પ્રાયઃ અંતઃકરણ પોતાના સ્વરૂપમાં આવી જાય છે તે પ્રાયશ્ચિત્ત છે. સંવરાદિકથી પણ આત્માની શુદ્ધિ થાય છે તેથી તેનાથી આને જુદું કરવા માટે પ્રાયશ્ચિત્તમાં પ્રાયઃ શબ્દ લીધો છે. આમા પ્રથમ પ્રાયશ્ચિત્ત આલોચનાર્હ થાય છે. ગુરૂની પાસે પાપોનુ નિવેદન કરવું તેનું નામ આલોચના છે. આ આલોચનામાત્રથી જે પાપની શુદ્ધિ થઈ જાય છે તે આલોચનાર્હ પ્રાયશ્ચિત્ત છે. ભિક્ષાચર્યા

यदर्हति भिक्षाचर्यादौ संजातमतिचारजातं तदालोचनार्हं, तद्विशोधकमालोचनालक्षणं प्रायश्चित्तरूपं कार्यमपि अतिचाररूपे कारणे कार्योपचारादालोचनार्हमित्युच्यते। **'पडिक्कमणारिहे'** प्रतिक्रमणार्हम्—प्रतिक्रमणं=प्रतिनिवर्तनं—शुभयोगादशुभयोगसंक्रान्तस्यात्मनः पुनः शुभयोगे प्रत्यानयनं, मिथ्यादुष्कृतप्रदानरूपमित्यर्थः। अयं भावः—गुप्तित्रये समितिपञ्चके च सहसाकारतोऽनाभोगतो वा कथमपि प्रमादे सति मिथ्यादुष्कृतप्रदानलक्षणं प्रतिक्रमणम्। तत्र सहसाकारतोऽनाभोगतो वा यदि मनसा दुश्चिन्तितं, तथा वचसा दुर्भाषितं, कायेन दुश्चेष्टितं, तथा—ईर्यायां यदि कथां कथयन् व्रजेत्, भाषायामपि यदि गृहस्थभाषया, प्रहररात्र्यनन्तर-

---

प्रायश्चित्त है। भिक्षाचर्या आदि में लगे हुए अतिचारस्वरूप पापों की गुरु के समीप विशुद्धि के लिये आलोचना की जाती है, अतः ये पाप आलोचना के योग्य हैं। आलोचना के योग्य जो प्रायश्चित्त को कहा है वह कारण में कार्य के उपचार से जानना चाहिये। (**पडिक्कमणारिहे**) प्रतिक्रमण शब्द का अर्थ पीछे हटना है, शुभ योग से अशुभ योग की तरफ झुके हुए आत्मा को पुनः शुभ योग में लाने के लिये मिथ्यादुष्कृत देना सो प्रतिक्रमण के योग्य प्रायश्चित्त है। इसका भाव यह है—तीन गुप्तियों में, एवं पांच समितियों में अकस्मात्—सहसाकार से, अथवा अनाभोग—अनुपयोग से कथमपि प्रमाद के हो जाने पर मिथ्यादुष्कृत प्रदान करना सो प्रतिक्रमण है। इसमें यदि सहसाकार से अथवा अनाभोग से मन द्वारा खोटा चिन्तवन हो गया हो, वचन से दुर्भाषण हो गया हो, एवं काय से—दुश्चेष्टित हो गया हो, तथा ईर्यापथ में प्रवृत्ति करते (मार्गमें चलते) समय यदि कथा कही गयी हो, भाषासमिति में यदि गृहस्थ की भाषा के अनुसार, अथवा प्रहररात्रि के

---

આદિમાં લાગેલાં અતિચારસ્વરૂપ પાપોની ગુરુની પાસે વિશુદ્ધિને માટે આલોચના કરાય છે. આથી તે પાપ આલોચનાયોગ્ય છે. આલોચનાને યોગ્ય જે પ્રાયશ્ચિત્ત ને કહ્યું છે તે કારણમાં કાર્યના ઉપચારથી જાણવું જોઈએ ૧. (पडिक्कमणारिहे) પ્રતિક્રમણ શબ્દનો અર્થ 'પાછું હટવું' છે. શુભયોગથી હટી જઈને અશુભ યોગની તરફ વળતાં ચિત્તને ફરીને શુભયોગમાં લાવવા માટે મિથ્યાદુષ્કૃત દેવું તે પ્રતિક્રમણને યોગ્ય પ્રાયશ્ચિત્ત છે. તેનો આ ભાવ છે–ત્રણ ગુપ્તિઓમાં, તેમજ પાંચ સમિતિઓમાં અકસ્માત્ –અચાનક, અથવા અનાભોગ–અનુપયોગથી કાંઈ પણ પ્રમાદ થઈ જતાં મિથ્યાદુષ્કૃત પ્રદાન કરવું તે પ્રતિક્રમણ છે. આમાં જો અચાનક અથવા અનાભોગે મનથી ખોટું ચિંતવન થઈ ગયું હોય, વચનથી ખરાબ ભાષણ થયું હોય, તેમજ કાયાથી ખરાબ ચેષ્ટા થઈ હોય, તથા ઈર્યાપથમાં પ્રવૃત્તિ કરતાં (માર્ગે ચાલતાં) જો કથા કહેવાઈ ગઈ હોય, ભાષાસમિતિમાં જો ગૃહસ્થની ભાષા

मुच्चैःस्वरेण वा, अन्यथा सावद्यवचनेन भाषेत, तथा–एषणायां=भक्तपानगवेषणवेलाया-मनुपयुक्तः सदोषमाहारादिकं गृह्णीयात्, तथा सहसाऽनाभोगतो वा भाण्डोपकरणस्या-दानं निक्षेपं प्रमार्जनं प्रतिलेखनं च कुर्यात्, तथा–अप्रत्युपेक्षिते स्थण्डिले उच्चारादीना परिष्ठापनं सहसाऽनाभोगतो वा कुर्यात्। उपलक्षणमेतत्–तेन यदि चतुर्विधा विकथा, क्रोधादयः कषाया, शब्दादिविषयेष्वासक्तिर्वा सहसाऽनाभोगतो वा कृता स्यात्, तदा एतेषु सर्वेषु स्थानेषु मिथ्यादुष्कृतप्रदानलक्षणं प्रायश्चित्तं; तच्च पूर्ववत् कारणे कार्योप-चारात्प्रतिक्रमणार्हमित्युच्यते।२। 'तदुभयारिहे' तदुभयाऽर्हम्–आलोचनाप्रतिक्रमणोभय-

अनन्तर उच्चस्वर से वचनकी प्रवृत्ति हो गई हो, या सावद्यवचन निकल गया हो, एषणा-समिति में–भक्तपानगवेषण के काल में अनुपयुक्त होकर यदि सदोष आहार ग्रहण करने में आगया हो, अनाभोग से–अनुपयोग से अथवा सहसाकार से भाण्डोपकरण का आदान एवं निक्षेपण, प्रमार्जन या प्रतिलेखन हो गया हो, तथा अप्रत्युपेक्षित स्थंडिल में उच्चार आदिका परिष्ठापन सहसाकार से या अनाभोग से कर दिया गया हो, इसी तरह यदि सहसाकार से एवं अनाभोग से चार विकथाओं में, चार क्रोधादिक कषायों में, एवं शब्दादि पांच इन्द्रियों के विषयों में आसक्ति हो गई हो तो इन समस्त स्थानो में "मेरे दुष्कृत मिथ्या हों" इस प्रकार मिथ्यादुष्कृतप्रदानस्वरूप यह प्रतिक्रमण प्रायश्चित्त है। पहिले की तरह यह प्रायश्चित्त भी कारण में कार्य के उपचार से प्रतिक्रमणार्ह कहा गया है २। (तदुभयारिहे) जो प्रायश्चित्त आलोचना एवं प्रतिक्रमण, इन दोनों के

અનુસાર અથવા પ્રહરરાત્રિ વીત્યા પછી ઉંચા સ્વરથી વચન બોલાઈ ગયું હોય, અથવા સાવદ્ય વચન નીકળી ગયું હોય, એષણાસમિતિમાં–આહારપાણીના ગવેષણ કાલમાં અનુપયુક્ત થઇને જો સદોષ આહાર ગ્રહણ કરવામા આવી ગયો હોય, અનાભોગથી અથવા અચાનક ભાંડોપકરણનાં આદાન તેમજ નિક્ષે-પણ, પ્રમાર્જન અથવા પ્રતિલેખન થઇ ગયું હોય, તથા અપ્રત્યુપેક્ષિત સ્થંડિલમાં ઉચ્ચાર આદિનુ પરિષ્ઠાપન સહસાકારથી કે અનાભોગથી (અચાનક કે અના-ભોગથી) કરાઇ ગયુ હોય, એવી જ રીતે જો સહસાકારથી કે અનાભોગથી ચાર વિકથાઓમા, ચાર ક્રોધાદિક કષાયોમાં, તેમજ શબ્દાદિ પાચ ઇંદ્રિઓના વિષયોમા આસક્તિ થઇ ગઈ હોય તો એ બધા સ્થાનોમાં "મારૂં દુષ્કૃત મિથ્યા થાઓ" એ પ્રકારે મિથ્યાદુષ્કૃતપ્રદાનસ્વરૂપ આ પ્રતિક્રમણ–પ્રાય-શ્ચિત્ત છે. પહેલાની પેઠે આ પ્રાયશ્ચિત્ત પણ કારણમા કાર્યના ઉપચારથી પ્રતિક્રમણાર્હ કહેવાય છે ૨. (तदुभयारिहे) જે પ્રાયશ્ચિત્ત આલોચના તેમજ

**गारिहे ४, विउस्सग्गारिहे ५, तवारिहे ६, छेदारिहे ७, मूलारिहे ८, अणवट्ठप्पारिहे ९, पारंचियारिहे १०। से तं पायच्छित्ते।**

योग्यम् ।३। 'विवेगारिहे' विवेकाऽर्हम्-विवेकः-अनेषणीयभक्तादिपरित्यागः, तदर्हम् ।४। 'विउस्सग्गारिहे' व्युत्सर्गाऽर्हम्-व्युत्सर्गः=कायोत्सर्गः, तद्योग्यम् ।५। 'तवारिहे' तपोऽर्हम्-तपः=नमस्कारसहितकालादारभ्य षण्मासपर्यन्तमनशनम्, तत्र कस्यापि तपसो योग्य तपोऽर्हम्-अतीचारः, तद्विशोधकत्वात् प्रायश्चित्तमपि तपोऽर्हमुच्यते-इति ।६। 'छेदारिहे' छेदार्हम्-छेदः-दिनपञ्चकादारभ्य षण्मासपर्यन्तं साधुपर्यायस्य न्यूनताकरणं, तदर्हम् ।७। 'मूलारिहे' मूलाऽर्हम्-मूलं-पुनर्व्रतस्योपस्थापनम्-पुनर्दीक्षारोपणम्, तदर्हम् ।८। 'अणवट्ठप्पारिहे' अनवस्थाप्याऽर्हम्-यस्मिन् आसेविते कंचन कालं व्रतेषु अनवस्थाप्यं कृत्वा पश्चात्तपश्चीर्णतया तद्दोषोपरतो व्रतेषु स्थाप्यते तदनवस्थाप्यार्हम्।

योग्य होता है वह तदुभयार्ह प्रायश्चित्त है ३। (विवेगारिहे) अनेषणीय भक्तादिक का परित्याग करना विवेक है, इसके योग्य जो प्रायश्चित्त है वह विवेकार्ह प्रायश्चित्त है ४। (विउसग्गारिहे) व्युत्सर्ग शब्द का अर्थ कायोत्सर्ग है। इसके योग्य प्रायश्चित्त का नाम व्युत्सर्गार्ह प्रायश्चित्त है ५। (तवारिहे) जो प्रायश्चित्त तपस्या के योग्य होता है वह तपोऽर्ह प्रायश्चित्त है। यह प्रायश्चित्त नोकारसी से लेकर छ मास तक होता है ६। (छेदारिहे) साधुपर्याय में पॉच दिनसे लेकर छ मास तक की साधुपर्याय की न्यूनता करना छेदार्ह प्रायश्चित्त है ७। (मूलारिहे) जो प्रायश्चित्त पुनः दीक्षा आरोपण के योग्य होता है वह मूलार्ह प्रायश्चित्त है ८। (अणवट्ठप्पारिहे) जिस दोषके सेवन करने पर संयमीजन कुछ काल तक महाव्रतों के विषय में अनवस्थापित अलग-कर दिये जाते है,

પ્રતિક્રમણુ, એ બન્નેને યોગ્ય હોય છે તે તદુભયાર્હ પ્રાયશ્ચિત્ત છે ૩. (विवेगारिहे) અનેષણીય ભોજન આદિકનો પરિત્યાગ કરવો તે વિવેક છે. તેને યોગ્ય જે પ્રાયશ્ચિત્ત છે તે વિવેકાર્હ પ્રાયશ્ચિત્ત છે ૪. (विउसग्गारिहे) વ્યુત્સર્ગ શબ્દનો અર્થ કાયોત્સર્ગ છે. તેને યોગ્ય પ્રાયશ્ચિત્તનું નામ વ્યુત્સર્ગાર્હ પ્રાયશ્ચિત્ત છે ૫. (तवारिहे) જે પ્રાયશ્ચિત્ત તપસ્યાને યોગ્ય હોય છે તે તપોऽર્હ પ્રાયશ્ચિત્ત છે. આ પ્રાયશ્ચિત્ત નોકારસીથી લઇને છ માસ સુધી થાય છે ૬. (छेयारिहे) સાધુપર્યાયમાં પાંચ દિવસથી લઈને છ માસ સુધીની સાધુપર્યાયની ન્યૂનતા કરવી તે છેદાર્હ પ્રાયશ્ચિત્ત છે ૭. (मूलारिहे) જે પ્રાયશ્ચિત્ત ફરીને દીક્ષા આરોપણને યોગ્ય હોય છે તે મૂલાર્હ પ્રાયશ્ચિત્ત છે ૮. (अणवट्ठप्पारिहे) જે દોષનુ સેવન કરવાથી સયમી જન કેટલાક કાળ સુધી મહાવ્રતોના વિષયમાં

अय भाव·—अनवस्थाप्यो द्विविधो भवति—आशातनाऽनवस्थाप्यः, प्रतिसेवनानवस्थाप्यश्चेति। तत्र तीर्थकर—सघ—श्रुता-ऽऽचार्यो—पाध्याय—गणधर—महर्द्धिकान् आशातयन् अनवस्थाप्यार्ह-नामकं नवमं प्रायश्चित्तं प्राप्नोति। स जघन्येन षण्मासान् उत्कर्षतः संवत्सरं यावत् तपः कुर्वन् आशातनतपोऽनवस्थाप्यः कर्तव्यः। तावता च तपसा क्षपिताऽऽशातनाजनितकर्मत्वा-दूर्ध्वं महाव्रतेषु स्थाप्यते। प्रतिसेवनानवस्थाप्यस्तु साधर्मिकाऽन्यधार्मिकवस्तुस्तैन्याभ्यां हस्त-तालादिभिश्च भवति। स च जघन्यतो वर्षम् उत्कृष्टतो द्वादश वर्षाणि तपः कुर्वन् भवति,

एवं पुनः उस दोष के निवारण के लिये तपस्या में लगाये जाते है, इस प्रकार जव तपसे उस दोषकी पूर्णतया शुद्धि हो जाती है तव दोषोपरत वे सयमी महाव्रतों में स्थापित कर दिये जाते है। इस प्रकार के प्रायश्चित्त का नाम अनवस्थाप्यार्ह है, मतलव इसका यह है—अनवस्थाप्य दो प्रकारका होता है—१ आशातनानवस्थाप्य, २ प्रतिसेवनानवस्थाप्य। जो तीर्थंकर, सघ, श्रुत, आचार्य, उपाध्याय, गणधर एव लब्धिधारियो की आशातना करता है एसा सयमी इस अनवस्थाप्यार्ह नामक नवम प्रायश्चित्त का भागी होता है। इनसे आशा-तनाजन्य दोष की शुद्धि के लिये जघन्य से छहमाह तक, और उत्कृष्ट से एक वर्ष तक तप कराया जाता है। इतने तप से आशातनाजन्य दोप की जव शुद्धि हो जाती है तव बाद में वह साधु महाव्रतों में स्थापित कर दिया जाता है। जो स्वधर्मी और अन्यधर्मी की वस्तु चुराता है, अथवा दयारहित बुद्धि से थप्पड आदि मारता है, उसे प्रतिसेवनाऽन-वस्थाप्यार्ह प्रायश्चित्त करना पडता है। यह प्रायश्चित्त जघन्य से एक वर्ष का होता है,

અનવસ્થાપિત કરવામાં આવે છે, તેમજ પાછા તે દોષના નિવારણ માટે તપ-સ્યામા લગાડવામાં આવે છે, એ પ્રકારે જ્યારે તપસેવનથી દોષની સંપૂર્ણ શુદ્ધિ થઈ જાય છે ત્યારે દોષોપરત (દોષમુક્ત) તે સંયમી મહાવ્રતોમા સ્થાપિત કરવામા આવે છે. આ પ્રકારના પ્રાયશ્ચિત્તનુ નામ અનવસ્થાપ્યાર્હ છે. એની મતલબ એ છે કે—અનવસ્થાપ્ય બે પ્રકારના થાય છે. ૧ આશા-તનાનવસ્થાપ્ય અને ૨ પ્રતિસેવનાનવસ્થાપ્ય. જે તીર્થંકર, સંઘ, શ્રુત, આચાર્ય, ઉપાધ્યાય, ગણધર, તેમજ લબ્ધિધારિઓની આશાતના કરે છે, એવા સંયમી આ અનવસ્થાપ્યાર્હ નામના નવમા પ્રાયશ્ચિત્તના ભાગી થાય છે. તેનાથી આશાતનાજન્ય દોષની શુદ્ધિને માટે જઘન્યથી છ મહિના સુધી અને ઉત્કૃષ્ટથી એક વર્ષ સુધી તપ કરાય છે એટલા તપથી આશાતનાજન્ય દોષની જ્યારે શુદ્ધિ થઇ જાય છે ત્યાર બાદ તે સાધુ મહાવ્રતોમા સ્થાપિત કરી દેવાય છે. જે સાધર્મીની અને અન્યધર્મીની વસ્તુને ચોરી લે છે, અથવા દયારહિત બુદ્ધિથી લાફો આદિ મારે છે તેને પ્રતિસેવનાનવસ્થાપ્યાર્હ પ્રાયશ્ચિત્ત કરવું પડે છે.

तदनन्तरं व्रतेषु स्थाप्यते। संहननादिगुणयुक्त एवानवस्थाप्यः क्रियते, अन्यस्य तु मूलमेव दीयते। संहननादिगुणयुक्तोऽपि यदि अनन्यसाध्यकुलगणसङ्घकार्यकारी बहुजनसाध्यकार्यकारी वा भवेत्, तर्हि द्विविधोऽप्यनवस्थाप्यः खलु गुरुमुखात् सङ्घसाक्षितया च स्तोकं स्तोकतरं वा मासद्वयं मासैकमात्रं वा अनवस्थाप्यतपो वहेत्। यद्वा—चतुर्विधसंघाधारभूतोऽयं परमभद्रकः स्वयमेव तपश्चर्यादिनाऽनवस्थाप्यशोध्यमतीचारमलं क्षालयिष्यतीति कृत्वा सर्वं मुञ्चेत्—अनवस्थाप्यतपो न कारयेदिति।

---

और उत्कृष्ट से बारह वर्ष का। इस प्रकार तपस्या करने के बाद वह साधु महाव्रतों में स्थापित किया जाता है। संहननादिगुणयुक्त ही इस प्रायश्चित्त के अधिकारी है। दूसरे को तो मूलार्ह प्रायश्चित्त ही दिया जाता है। संहननादिगुणयुक्त साधु यदि दूसरों से असाध्य ऐसे कुल गण संघ के कार्य करनेवाला हो, अथवा कुल गण सघ का जो कार्य बहुजनसाध्य हो उस कार्य को वह अकेले ही करनेवाला हो तो ऐसे आशातनाऽनवस्थाप्य और प्रतिसेवनाऽनवस्थाप्य साधु के लिये संघकी साक्षी में गुरुके मुख से स्तोक—दो मास का, अथवा स्तोकतर—एकमास का तप दिया जाता है। तदनन्तर वह महाव्रतों में स्थापित किया जाता है। अथवा यदि कोई साधु चतुर्विध संघ का आधार हो, परमभद्रक हो, वह स्वयमेव तपस्या करके अनवस्थाप्य तप के द्वारा विशोधनीय पापमल का प्रक्षालन कर लेगा, ऐसा विश्वास हो, तो ऐसे साधु को अनवस्थाप्य प्रायश्चित्त नहीं दिया जाता है।

---

આ પ્રાયશ્ચિત્ત જઘન્યથી એક વર્ષનું થાય છે અને ઉત્કૃષ્ટથી બાર વર્ષનું થાય છે આ પ્રકારે તપસ્યા કર્યા પછી તે સાધુ મહાવ્રતોમાં સ્થાપિત કરાય છે. સહનનાદિગુણયુક્ત જ તે પ્રાયશ્ચિત્તના અધિકારી છે. બીજાને તો મૂલાર્હ પ્રાયશ્ચિત્ત જ અપાય છે. સંહનનાદિગુણયુક્ત સાધુ જો બીજાથી અસાધ્ય (ન બને) એવાં કુલ ગણ સંઘના કાર્ય કરવાવાળો હોય અથવા કુલ ગણ સંઘના જે કાર્ય બહુજનસાધ્ય હોય, એવાં કાર્યોને તે એકલો જ કરવાવાળો હોય તો એવા આશાતનાનવસ્થાપ્ય અને પ્રતિસેવનાનવસ્થાપ્ય સાધુને માટે સઘની સાક્ષીમા ગુરુના મુખથી સ્તોક—બે માસનું, અથવા સ્તોકતર—એક માસનું તપ અપાય છે. ત્યાર પછી તે મહાવ્રતોમાં સ્થાપિત કરાય છે. અથવા જો કોઇ સાધુ ચતુર્વિધ સંઘનો આધાર હોય, પરમભદ્રક હોય, તે પોતે જ તપસ્યા કરીને અનવસ્થાપ્ય તપ દ્વારા વિશોધનીય પાપમલ ધોઈ નાખશે એવો વિશ્વાસ હોય તો એવા સાધુને અનવસ્થાપ્ય પ્રાયશ્ચિત્ત અપાતું નથી.

अनवस्थाप्यतपोविधिरुच्यते—अनवस्थाप्यप्रायश्चित्ती साधुः प्रशस्तेषु द्रव्यक्षेत्रकालभावेषु गुरुसमीपे सरलभावेन स्वातिचारमालोचयति। आलोचनाऽनन्तरं गुरुः कायोत्सर्गं कारयति, तथाहि-ऐर्यापथिकीं समग्रां श्रावयति, 'तस्सुत्तरीकरणेणं' इत्यारभ्य यावत्—'अप्पाणं वोसिरामि' इति पठित्वा कायोत्सर्गे वारद्वय चतुर्विंशतिस्तवमनुचिन्त्य पारयित्वा पुनश्चतुर्विंशतिस्तवमुच्चार्याचार्यः साधूनामन्त्र्य वदति—"एषोऽनवस्थाप्यो मुनिस्तपः प्रतिपद्यते, एष युष्मान्नालपिष्यति, युष्माभिरपि नालपनीयः, एष सूत्रार्थं शरीरवार्तां सुखशातादिरूपां वा न प्रक्ष्यति, युष्माभिरपि न प्रष्टव्य, परिष्ठापनादिकमस्य भवद्भिर्न कर्तव्यम्, न चाऽयं भवतां करिष्यति। उपकरणमस्य भव-

---

अब अनवस्थाप्यप्रायश्चित्त की विधि कहते हैं—अनवस्थाप्य प्रायश्चित्त लेने वाला साधु प्रशस्त द्रव्य क्षेत्र काल भावमें गुरु के निकट सरल भावसे अपने अतीचारों की आलोचना करता है। जब वह आलोचना कर चुकता है तब गुरु महाराज उसे कायोत्सर्ग करवाते हैं। वह इस प्रकार है—गुरु महाराज पहले समग्र ईर्यापथिकी सुनाते हैं, फिर 'तस्सुत्तरीकरणेणं' यहा से लेकर "अप्पाणं वोसिरामि" यहाँ तक पढकर कायोत्सर्ग में दो वार चतुर्विंशतिस्तव की अनुचिन्तना कर, पाल कर, फिर एकवार चतुर्विंशतिस्तव का उच्चारण करते हैं, और आचार्य तथा साधुओं को बुलाकर इस प्रकार कहते हैं—"यह अनवस्थाप्य मुनि तपस्या कर रहा है, यह न तुम लोगों से बोलेगा, न तुम लोग इससे बोलना। यह तुम लोगों से सूत्रार्थ और शरीर की सुखशाता आदि नहीं पूछेगा, तुम लोग भी इस से मत पूछना। इसकी परिष्ठापनिका आदि तुम लोग मत करना, यह भी तुम लोगों की नहीं करेगा।

---

હવે અનવસ્થાપ્ય પ્રાયશ્ચિત્તની વિધિ કહે છેઃ—

અનવસ્થાપ્ય પ્રાયશ્ચિત્ત લેવાવાળો સાધુ પ્રશસ્ત દ્રવ્ય ક્ષેત્ર કાલ અને ભાવમાં ગુરૂની પાસે સરલભાવથી પોતાના અતીચારોની આલોચના કરે છે. જ્યારે તે આલોચના કરી લે છે ત્યારે ગુરૂ મહારાજ તેને કાયોત્સર્ગ કરાવે છે. તે આ પ્રકારે છે—ગુરૂ મહારાજ પહેલા સમગ્ર ઈર્યાપથિકી સંભળાવે છે. પછી 'तस्सुत्तरीकरणेणं' અહીંથી લઈને 'अप्पाण वोसिरामि' અહીં સુધી ભણીને કાયોત્સર્ગમાં ચતુર્વિંશતિસ્તવની અનુચિંતના કરીને, પાળીને, પછી ચતુર્વિંશતિસ્તવનું ઉચ્ચારણ કરે છે, અને આચાર્ય તથા સાધુઓને બોલાવીને આ પ્રકારે કહે છે—"આ અનવસ્થાપ્ય મુનિ તપસ્યા કરી રહ્યો છે, તે ન તો તમારી સાથે બોલશે અને ન તમારે એને બોલાવવો. એ તમોને સૂત્રાર્થ અને શરીરની સુખશાતા આદિ નહિ પૂછે અને તમારે પણ તેને પુછવું નહિ. તેની પરિષ્ઠાપનિકા આદિ તમારે ન કરવી અને તે પણ તમારી નહિ કરે. તેનાં

द्भिर्न प्रतिलेख्यम्, न चायं भवतां प्रतिलेखयिष्यति। भक्तपानमस्मै न देयं, नाप्यस्माद्ग्राह्यम्, अनेन सार्धं नोपवेष्टव्यम्, न चाप्यनेन सहैकमण्डल्यां भोक्तव्यम्, अनेन सार्धं किमपि न कार्यमिति।" अयं नवदीक्षितं साधुं वन्दते, एनं न कोऽपि वन्दते, ग्रीष्मे चतुर्थषष्ठाष्टमानि, शिशिरे षष्ठाष्टमदशमानि, वर्षास्वष्टमदशमद्वादशानि जघन्यमध्यमोत्कृष्टानि, पारणके च निर्लेपः, एवंरूपं सुदुश्चरं तपश्चरति। अस्य गच्छेन सह वासः एकक्षेत्रे एकोपाश्रये एकस्मिन् पार्श्वे शेषसाधुपरिभोग्यप्रदेशे कल्पते, नत्वालपनादीनि शेषाणि। रोगादौ समुत्पन्ने सति रोगादिनिवृत्तिपर्यन्तं

इसके उपकरण की प्रतिलेखना तुम लोग मत करना, यह भी तुम लोगोंके उपकरण की प्रतिलेखना नहीं करेगा, न तुम लोग इसे भक्तपान दो, न इससे भक्तपान लो, न इसके साथ बैठो, न इसके साथ एक मण्डली में आहारादि करो, और न इसका सहकार लेकर कोई अन्य कार्य करो।" यह साधु नवदीक्षित साधु की वन्दना करता है, इसको वन्दना कोई भी नहीं करता। यह साधु ग्रीष्म ऋतु में–जघन्य से उपवास, मध्यम से बेला, और उत्कृष्ट से तेला करता है, शिशिर ऋतु में–जघन्य से बेला, मध्यम से तेला और उत्कृष्ट से चौला करता है, एवं वर्षा ऋतु में–जघन्य से तेला, मध्यम से चोला और उत्कृष्ट से पँचोला करता है, पारणा में विकृतिवर्जित आहार लेता है। अनवस्थाप्य–प्रायश्चित्ती इस प्रकार का दुष्कर तप करता है। इस साधु को अन्य साधुओं के वसतियोग्य प्रदेश में रहना कल्पता है। यह गच्छ के साथ एकक्षेत्र में, एक उपाश्रय में, एक ही पार्श्व में रह सकता है, किन्तु इसको आलपन (बातचीत) आदि नहीं

ઉપકરણની પ્રતિલેખના તમારે ન કરવી તે પણ તમારાં ઉપકરણની પ્રતિલેખના નહિ કરે. ન તમારે તેને આહારપાણી દેવાં કે ન તેની પાસેથી આહારપાણી લેવાં. ન તેની સાથે બેસવું, ન તેની સાથે એકમંડલીમાં આહાર આદિ કરવા અને ન તેનો સહકાર લઇને કોઈ અન્ય કાર્ય કરવું." આ સાધુ નવદીક્ષિત સાધુની વંદના કરે છે, તેની વંદના કોઈ પણ કરતું નથી. આ સાધુ ગ્રીષ્મઋતુમાં જઘન્યથી ઉપવાસ, મધ્યમથી બેલા, અને ઉત્કૃષ્ટથી તેલા કરે છે, શિશિરઋતુમાં જઘન્યથી બેલા, મધ્યમથી તેલા અને ઉત્કૃષ્ટથી ચૌલા કરે છે, તેમજ વર્ષાઋતુમાં જઘન્યથી તેલા, મધ્યમથી ચૌલા અને ઉત્કૃષ્ટથી પંચોલા કરે છે. પારણામાં વિકૃતિવર્જિત આહાર લે છે. અનવસ્થાપ્યપ્રાયશ્ચિત્તી આ પ્રકારનું દુષ્કર તપ કરે છે. આ સાધુને અન્ય સાધુઓના વસતિયોગ્ય પ્રદેશમાં રહેવું કલ્પે છે. તે ગચ્છની સાથે એક ક્ષેત્રમાં, એક ઉપાશ્રયમાં, એક જ પાર્શ્વમાં રહી શકે છે પરંતુ તેને આલપન (વાતચીત) આદિ કલ્પતું

तद्वैयावृत्यं करणीय, तस्मिन्निवृत्ते सति पुनस्तपसि स्थाप्यः। इति संक्षेपतोऽनवस्थाप्यतपोविधिः। इद नवमं प्रायश्चित्तम् ।९।

'पारंचियारिहे' पाराञ्चिकाऽर्हम्–पार=तीरं तपसाऽपराधस्य अञ्चति=गच्छति ततो दीक्ष्यते यः स पाराञ्ची, स एव पाराञ्चिकः, तस्य यदर्हं तत् पाराञ्चिकार्हं दशमं प्रायश्चित्तम्। यद्वा–पारमन्तं प्रायश्चित्ताना तत उत्कृष्टतरप्रायश्चित्ताऽभावाद् अञ्चति–गच्छतीत्येवंशील. साधुः पाराञ्चिकस्तदर्हं प्रायश्चित्तम् ।१०। पाराञ्चिकः संक्षेपतो द्विविधः–आशातनापाराञ्चिकः, प्रतिसेवनापाराञ्चिकश्चेति। तत्र–तीर्थकर–संघ–श्रुताचार्य–गणधर–महर्द्धिकान् आशातयति यः स

---

कल्पता है। यदि उस साधु को रोगादि हो जाय तो जबतक रोगादि की निवृत्ति न हो तबतक अन्य साधु उसकी वैयावृत्य कर सकते हैं। जब वह साधु रोग से निर्मुक्त हो जाय तो फिर उससे तपस्या करानी चाहिये। यह अनवस्थाप्यार्ह नामक नवमा प्रायश्चित्त हुआ।

'पारंचियारिहे' जो साधु तप के द्वारा अपने किये हुए अपराध को पार करता है, अर्थात् अपराधजनित पापसे मुक्त होता है; फिर उसे दीक्षा दी जाती है, वह साधु 'पाराञ्चिक' है। उस साधु को पापविशोधनार्थ जो प्रायश्चित्त दिया जाता है, वह 'पाराञ्चिकार्ह' प्रायश्चित्त है। अथवा जो साधु उत्कृष्टतर अन्य प्रायश्चित्त के न होने के कारण मात्र अन्तिम प्रायश्चित्त का अधिकारी होता है वह 'पाराञ्चिक' कहा जाता है। उस अन्तिम प्रायश्चित्त को 'पाराञ्चिकार्ह' कहते हैं। पाराञ्चिक साधु दो प्रकार का है–पहला आशातनापाराञ्चिक, दूसरा प्रतिसेवना पाराञ्चिक। जो तीर्थंकर, संघ, श्रुत, आचार्य, गणधर और लब्धिधारी की आशातना

---

નથી. જો તે સાધુને રોગાદિ થઈ જાય તો જ્યાં સુધી રોગાદિની નિવૃત્તિ ન થાય ત્યાં સુધી અન્ય સાધુ તેનું વૈયાવૃત્ય કરી શકે છે. જ્યારે તે સાધુ રોગથી નિર્મુક્ત થઇ જાય ત્યાર પછી તેની પાસે તપસ્યા કરાવવી જોઈએ. આ અનવસ્થાપ્યાર્હ નામનું નવમું પ્રાયશ્ચિત્ત થયું.

'पारंचियारिहे' જે સાધુ તપદ્વારા પોતે કરેલા અપરાધને પાર કરે છે અર્થાત્ અપરાધજનિત પાપથી મુક્ત થાય છે તેને ત્યાર પછી દીક્ષા દેવાય છે. તે સાધુ 'पाराञ्चिक' છે તે સાધુને પાપવિશોધનાર્થ જે પ્રાયશ્ચિત્ત દેવાય છે તે 'पाराञ्चिकार्ह' પ્રાયશ્ચિત્ત છે, અથવા જે સાધુ ઉત્કૃષ્ટતર અન્ય પ્રાયશ્ચિત્ત ન હોવાના કારણ માત્રથી અંતિમ પ્રાયશ્ચિત્તનો અધિકારી છે તે 'पाराञ्चिक' કહેવાય છે. તે અંતિમ પ્રાયશ્ચિત્તને 'पाराञ्चिकार्ह' કહેવાય છે. પારાઞ્ચિક સાધુ બે પ્રકારના છે–પહેલા આશાતનાપારાંચિક, બીજા પ્રતિસેવનાપારાંચિક. જે તીર્થંકર, સંઘ,

आशातनापाराञ्चिकः। तस्य पाराञ्चिकार्हनामकं दशमं प्रायश्चित्तं प्राप्नोति। स जघन्येन षण्मासान्, उत्कर्षतो द्वादश मासान् गच्छतो निःसारितस्तपसि तिष्ठति। प्रतिसेवनापाराञ्चिकस्त्रिविधः—दुष्टः, प्रमत्तः, अन्योन्यं कुर्वाणश्चेति। तत्र दुष्टो द्विविधः—कषायदुष्टो, विषयदुष्टश्चेति। तत्र कषायदुष्टो द्विविधः-स्वपक्षदुष्टः, परपक्षदुष्टश्च। अत्र चतुर्भङ्गी, तद्यथा—स्वपक्षः स्वपक्षे दुष्टः १, स्वपक्षः परपक्षे दुष्टः २, परपक्षः स्वपक्षे दुष्टः ३, परपक्षः परपक्षे दुष्टः ४। प्रथमभङ्गे—मृतगुरुदन्तभञ्जकः १, गुरुगलमर्दकः २, नेत्रोत्खातकः ३, दन्तैर्दशकः ४, इत्यादीन्युदाहरणानि। द्वितीयभङ्गे—राजादिगृहस्थवधकः २, तृतीये—यथा केनापि गृहस्थावस्थायां वादे पराजितः कश्चिद् आसीत्,

करता है वह **'आशातनापाराञ्चिक'** है। इसे 'पाराञ्चिकार्ह' नामक दशवाँ प्रायश्चित्त दिया जाता है। यह जघन्य से छ मास तक और उत्कृष्ट से बारह मास तक गच्छ से बहिष्कृत होकर तपस्या करता है। **'प्रतिसेवनापाराञ्चिक'** तीन प्रकार का होता है। वे प्रकार ये है—(१) दुष्ट, (२) प्रमत्त और (३) अन्योऽन्य-कुर्वाण। इनमें 'दुष्ट' दो प्रकार का होता है—(१) कपायदुष्ट और (२) विषय-दुष्ट। कपायदुष्ट दो प्रकार का है—(१) **स्वपक्षदुष्ट** और (२) **परपक्षदुष्ट**। यहाँ पर चतुर्भङ्गी होती है। चतुर्भङ्गी का प्रकार इस प्रकार है—(१) स्वपक्ष, स्वपक्ष में दुष्ट—साधुओं से द्वेष करनेवाला साधु। **इसका उदाहरण** है—मृत गुरु का दाँत पाडनेवाला, मृत गुरु की गर्दन मरोड़नेवाला, मृत गुरु तथा साधु की आँखों को निकालनेवाला, दाँतो से साधु को काटनेवाला—साधु। (२) स्वपक्ष—परपक्ष में दुष्ट—गृहस्थों से द्वेष करनेवाला साधु। **इसका उदाहरण** है—राजा आदि गृहस्थों का वध

શ્રુત, આચાર્ય, ગણધર અને લબ્ધિધારીની આશાતના કરે છે તે 'આશાતના-પારાંચિક' છે. તેને પારાંચિકાર્હ નામનું દશમું પ્રાયશ્ચિત્ત દેવાય છે. એ જઘન્યથી છ માસ સુધી અને ઉત્કૃષ્ટથી બાર માસ સુધી ગચ્છથી બહિષ્કૃત થઇને તપસ્યા કરે છે. 'પ્રતિસેવનાપારાંચિક' ત્રણ પ્રકારના થાય છે. તે આ પ્રકારે છે—(૧) દુષ્ટ, (૨) પ્રમત્ત અને (૩) અન્યોઽન્યકુર્વાણ. તેમાં 'દુષ્ટ' બે પ્રકારનાં થાય છે. (૧) કષાયદુષ્ટ અને (૨) વિષયદુષ્ટ. કષાયદુષ્ટ બે પ્રકારનાં છે—(૧) સ્વપક્ષદુષ્ટ અને (૨) પરપક્ષદુષ્ટ. અહી ચતુર્ભંગી થાય છે. ચતુર્ભંગીના પ્રકાર આમ છે—(૧) સ્વપક્ષ, સ્વપક્ષમાં દુષ્ટ—સાધુઓનો દ્વેષ કરવાવાળો સાધુ. તેનું ઉદાહરણ છે—મરેલા ગુરૂના દાંત પાડવાવાળો, મરેલા ગુરૂની ગરદન મરડવાવાળો, મરેલા ગુરૂ તથા સાધુની આંખો કાઢી લેવાવાળો, દાંતોથી સાધુને બટકાં ભરવાવાળો સાધુ. (૨) સ્વપક્ષ, પરપક્ષમાં દુષ્ટ—ગૃહસ્થોનો દ્વેષ કરવાવાળો સાધુ. તેનુ ઉદાહરણ છે—રાજા આદિ ગૃહસ્થોનો વધ કરવા-

स तस्य गृहस्थावस्थाया विजयिनः सार्धोवैरिको जात ; यथा स्कन्दकुमारस्य पालक इति ।३। यो राज्ञो युवराजस्य वा वधकः स चतुर्थभङ्गान्तर्गतः । अदीक्षितत्वात् वधकः परपक्षः, राजा तु परपक्ष एवास्ति ।४।

प्रथमभङ्गे योऽनुपरतः स प्रायश्चित्तानर्हः, तस्मात् तस्य साधुवेषमपहृत्य गुरुणा बहिर्निस्सारणं करणीयम्, यस्तूपरत 'पुनर्नैव करिष्यामी' ति प्रतिजानाति तस्य तपोरूपं

करनेवाला साधु। (३) परपक्ष, स्वपक्ष में दुष्ट—साधु से द्वेष करनेवाला गृहस्थ। इसका उदाहरण इस प्रकार है—किसी साधुने गृहस्थावस्था में वादविवाद में किसी को पराजित किया था। पराजित मनुष्य उसका वैरी हो गया। वाद में विजयी मनुष्यने दीक्षा लेकर साधुत्व को अङ्गीकार किया, उस समय पराजित मनुष्य तीव्र वैरानुबन्ध के कारण उस साधु को मार डाला। जैसे—पालकने स्कन्दक आदि पाँचसौ मुनियों को मार डाला। तथा (४) परपक्ष—परपक्ष में दुष्ट—गृहस्थ से द्वेष करनेवाला गृहस्थ। इसका उदाहरण है—राजा वा युवराज का वध करनेवाला गृहस्थ। हत्या करनेवाला अदीक्षित होने के कारण परपक्षी है, राजा आदि तो परपक्षी है ही, इसलिये यह चतुर्थ भङ्ग का उदाहरण है।

प्रथमभङ्ग में जो साधु अनुपरत है, अर्थात् मृतगुरु के दात पाड़ना आदि दुष्कृत्य से निवृत्त नहीं होता है, वह प्रायश्चित्त का अधिकारी नहीं है। गुरु को चाहिये कि ऐसे साधु का वेप छीन लें, और गच्छ से उसको निकाल दे। जो साधु दाँत पाडना आदि दुष्कृत्यों से निवृत्त हो जाता है, और प्रतिज्ञा करता है कि "मै अब फिर कभी ऐसा काम नहीं करूंगा"

વાળો સાધુ. (૩) પરપક્ષ, સ્વપક્ષમા દુષ્ટ—સાધુનો દ્વેષ કરવાવાળો ગૃહસ્થ. આનું ઉદાહરણ આમ છે—કોઇ સાધુએ ગૃહસ્થાશ્રમમાં વાદવિવાદમાં કોઈને પરાજિત કર્યો હતો. પરાજિત માણસ તેનો વેરી થઈ ગયો. પછી વિજયી મનુષ્યે દીક્ષા લઇ સાધુત્વ અંગીકાર કર્યું, તે સમયે પરાજિત મનુષ્યે તીવ્ર વૈરાનુબંધને કારણે તે સાધુને મારી નાખ્યો. જેમ, પાલકે સ્કંદક આદિ પાચસો મુનિઓને મારી નાખ્યા. તથા (૪) પરપક્ષ, પરપક્ષમાં દુષ્ટ—ગૃહસ્થોનો દ્વેષ કરવાવાળો ગૃહસ્થ. તેનું ઉદાહરણ છે—રાજા અથવા યુવરાજનો વધ કરવાવાળો ગૃહસ્થ. હત્યા કરવાવાળો અદીક્ષિત હોવાને કારણે પરપક્ષી છે, રાજા આદિ તો પરપક્ષી છેજ, આથી એ ચતુર્થભંગનું ઉદાહરણ છે.

પ્રથમ ભંગમાં—જે સાધુ અનુપરત છે અર્થાત્ મરેલા ગુરૂના દાંત પાડવા આદિ દુષ્કૃત્યથી નિવૃત્ત થતો નથી તે પ્રાયશ્ચિત્તનો અધિકારી નથી. ગુરૂએ એવા સાધુનો વેષ છીનવી લેવો જોઈએ અને ગચ્છથી તેનો બહિષ્કાર કરવો જોઇયે. જે

पाराञ्चिकार्हं प्रायश्चित्तं कर्तव्यम्। ततः साधुवेषपरित्यागेन स गुरुनिदेशतः कपर्दिका वणिग्भ्यो याचित्वा गुरवे प्रदर्शयति, ततो गुरुर्मुनिवेषं दत्त्वा दीक्षां ददाति। पाराञ्चिकतपोविधानं प्रागुक्तानवस्थाप्यतपोवद् ग्रीष्मे चतुर्थषष्ठाष्टमानि, शिशिरे षष्ठाष्टमदशमानि, वर्षास्वष्टम-दशमद्वादशानि जघन्यमध्यमोत्कृष्टानि, पारणके च निर्लेप इति।

द्वितीयभङ्गेऽपि चानुपरतः प्रथमभङ्गवत् साधुवेषापहारेण गच्छाद् बहिष्करणीयः, उपर-

---

ऐसे साधु को गुरु पाराञ्चिकार्ह प्रायश्चित्त दे। ऐसा साधु साधुवेष का परित्याग कर शिर के ऊपर कपड़ा बाँधकर गुरु की आज्ञा से बाजार में जाकर व्यापारियों से अपना पाप-निवेदनपूर्वक एक एक कौड़ी माँगता है, माँग कर उन कौड़ियों को गुरु महाराज को दिखलाता है। तब गुरु महाराज उसे मुनिवेष देकर फिर से दीक्षा देते हैं। पाराञ्चिक तप का विधान पूर्वोक्त अनवस्थाप्य तप के समान है। इस तपस्या में वह साधु ग्रीष्म ऋतु में जघन्य से उपवास, मध्यम से वेला, उत्कृष्ट से तेला, शिशिर ऋतु में जघन्य से से वेला, मध्यम से तेला, उत्कृष्ट से चौला, और वर्षा ऋतु में जघन्य से तेला, मध्यम से चौला, उत्कृष्ट से पँचोला करता है। पारणा में विकृतिवर्जित आहार लेता है।

**द्वितीयभङ्ग** में जो साधु अनुपरत है अर्थात् राजा आदि गृहस्थों के घातरूप व्यापार से निवृत्त नहीं होता है, ऐसे साधु का साधुवेष छीनकर गुरु महाराज उसे गच्छ से निकाल दे। जो साधु राजादिक गृहस्थ के घातरूप व्यापार

---

સાધુ દાત પાડવા આદિ દુષ્કૃત્યોથી નિવૃત્ત થઈ જાય છે અને નિયમ કરે છે કે-'હવે હું ફરીને એવું કામ નહિ કરૂં' એવા સાધુને ગુરૂ પારાંચિકાર્હ પ્રાય-શ્ચિત્ત આપે. એવો સાધુ, સાધુનો વેષ છોડી દઈ શિરના ઉપર કપડું બાંધી ગુરૂની આજ્ઞા લઈ બજારમાં જાય છે અને વ્યાપારીઓની પાસે પોતાનું પાપનું નિવેદન કરી એક એક કોડી માંગે છે. માંગીને તે કોડિઓને ગુરૂ મહારાજને બતાવે છે. ત્યારે ગુરૂ મહારાજ તેને મુનિવેષ આપીને ફરીને દીક્ષા આપે છે. પારાચિક તપનું વિધાન આગળ કહેલ અનવસ્થાપ્ય તપના સમાન છે. આ તપસ્યામાં તે સાધુ ગ્રીષ્મઋતુમાં જઘન્યથી ઉપવાસ, મધ્યમથી બેલા, ઉત્કૃષ્ટથી તેલા, શિશિરઋતુમાં જઘન્યથી બેલા, મધ્યમથી તેલા, ઉત્કૃષ્ટથી ચૌલા, અને વર્ષાઋતુમાં જઘન્યથી તેલા, મધ્યમથી ચૌલા, ઉત્કૃષ્ટથી પંચોલા કરે છે. પારણામાં વિકૃતિવર્જિત આહાર લે છે.

દ્વિતીયભંગમાં-જે સાધુ અનુપરત હોય અર્થાત્ રાજા આદિ ગૃહસ્થોના ઘાતરૂપ વ્યાપારથી નિવૃત્ત થતો નથી, એવા સાધુનો સાધુવેષ છીનવી લઈને

तश्चेत् तर्हि तस्य न पाराञ्चिकतपःकरणं, नापि च साधुवेषापहारः, किं तु पुनर्दीक्षाप्रदानमात्रं प्रायश्चित्तम्।

तृतीयभङ्गे चतुर्थभङ्गे च—यद्यतिशयज्ञानी 'उपशान्तोऽयम्' इति मन्यते, तदा स्वदेशे दीक्षितुं न कल्पते, किन्तु अन्यस्मिन् देशे गत्वा दीक्षा दातव्या।

विषयदुष्टोऽपि पूर्ववद् द्विविधः—स्वपक्षदुष्टः, परपक्षदुष्टश्चेति। तत्रापि चतुर्भङ्गी-तद्यथा—स्वपक्षः स्वपक्षे दुष्टः १, स्वपक्षः परपक्षे दुष्टः २, परपक्षः स्वपक्षे दुष्टः ३,

---

से निवृत्त हो जाय तो उससे गुरु पाराञ्चिक तप नहीं कराये, न उसका साधुवेष ही छीने, किन्तु उसे क्षेत्रपाराञ्चिक करके फिर से दीक्षा दे, यह उसका प्रायश्चित्त है।

**तृतीयभङ्ग** में—जो गृहस्थ साधु का घातक है वह यदि दीक्षा लेना चाहे, गुरुमहाराज को वह उपशान्त ज्ञात हो तो उसे गुरुमहाराज अन्यदेश में ले जाकर दीक्षा दे। क्यों कि स्वदेश में इसके लिये दीक्षा नहीं कल्पती है। चतुर्थभङ्ग में—जो कोई गृहस्थ, राजा युवराज आदि गृहस्थ का घातक है, वह यदि दीक्षा लेना चाहे और गुरु महाराज को वह उपशान्त मालूम हो, तो उसको परदेश में ले जाकर दीक्षा दे। स्वदेश मे उसके लिये दीक्षा नहीं कल्पती है।

**विषयदुष्ट** भी पूर्ववत् दो प्रकार का होता है—स्वपक्षदुष्ट और परपक्षदुष्ट। यहाँ पर भी चतुर्भङ्गी है। वह इस प्रकार है—(१) स्वपक्ष, स्वपक्ष में दुष्ट—बाला या तरुणी साध्वी का शील भङ्ग करनेवाला साधु। (२) स्वपक्ष, परपक्ष में दुष्ट—शय्यातर की स्त्री या

---

ગુરૂ મહારાજે તેને ગચ્છથી બહાર કરવો. જો સાધુ રાજાદિક ગૃહસ્થના ઘાતરૂપ વ્યાપારથી નિવૃત્ત થઇ જાય તો તેને ગુરૂ પારાંચિક તપ ન કરાવે, ન તેનો સાધુવેશ પણ છીનવી લે, પરંતુ તેને ક્ષેત્રપારાંચિક કરીને ફરીથી તેને દીક્ષા આપે; એ જ તેનું પ્રાયશ્ચિત્ત છે.

તૃતીયભંગમા—જે ગૃહસ્થ સાધુનો ઘાતક હોય તે જો દીક્ષા લેવા ચાહે તો અતિશયજ્ઞાની ગુરૂમહારાજને જો તે ઉપશાંત જણાય તો તેને ગુરૂમહારાજ અન્ય-દેશમા લઇ જઇને દીક્ષા આપે. કેમકે સ્વદેશમા તેને માટે દીક્ષા કલ્પતી નથી. ચતુર્થભંગમા—જો કોઇ ગૃહસ્થ, રાજા યુવરાજ આદિ ગૃહસ્થનો ઘાતક હોય, તે જો દીક્ષા લેવાને ચાહે તો તેને પરદેશમા લઇ જઈને દીક્ષા દેવી. સ્વદેશમા તેને માટે દીક્ષા કલ્પતી નથી.

વિષયદુષ્ટ પણ પૂર્વ પ્રમાણે બે પ્રકારના થાય છે. સ્વપક્ષદુષ્ટ અને પરપક્ષ-દુષ્ટ. અહી પણ ચતુર્ભંગી છે. તે આ પ્રકારે છે—(૧) સ્વપક્ષ, સ્વપક્ષમા દુષ્ટ—બાલા અથવા તરૂણી સાધ્વીનુ શીયળ ભંગ કરવાવાળો સાધુ. (૨) સ્વપક્ષ,

परपक्षः परपक्षे दुष्टः ४। तत्र-बालायां तरुण्यां वा साध्व्यां यः साधुर्दुष्टः=शीलभङ्गकारकः, स प्रथमो भङ्गः। साधुरेव शय्यातरगृहिण्यामन्यतीर्थिकायां वा अध्युपपन्न इति द्वितीयः। गृहस्थो बालायां तरुण्यां वा साध्व्यामध्युपपन्न इति तृतीयः। गृहस्थो गृहस्थायामिति चतुर्थः। एवं विषयदुष्टोऽपि चतुर्विधो मन्तव्यः।

तत्र-प्रथमभङ्गे वर्तमानो योऽनुपरतः स लिङ्गपाराञ्चिकः कर्तव्यः-साधुवेषापहारेण सर्वथा गच्छाद् बहिष्करणीयः। यस्तूपरतः=उपशान्तः 'पुनर्नैवं करिष्यामी'-ति प्रतिजानाति, तस्य पाराञ्चिकार्हं तपोरूपं प्रायश्चित्तं कारयति, ततः साधुवेषमनपहृत्य दीक्षाप्रदानं कर्तव्यम्, उपरतस्य विषयदुष्टस्य लिङ्गपाराञ्चिकत्वविधानाभावात्।

परतीर्थिक की स्त्री से व्यभिचार करनेवाला साधु। (३) परपक्ष, स्वपक्ष में दुष्ट=बाला या तरुणी साध्वी का शीलभङ्ग करनेवाला गृहस्थ। (४) परपक्ष, परपक्ष में दुष्ट-गृहस्थ स्त्री के साथ व्यभिचार करने वाला गृहस्थ। विषयदुष्टके ये चार भङ्ग हुए। इनमें प्रथम-भङ्ग में वर्तमान साधु अपने दुष्कर्म से निवृत्त न हो तो गुरु उसको लिंगपाराञ्चिक कर दे, अर्थात्-उसका साधुवेष ले ले, और उसका गच्छ से सर्वथा बहिष्कार कर दे। जो साधु अपने दुष्कर्म से निवृत्त एवं उपशान्त होकर ऐसी प्रतिज्ञा करे कि "मै अब फिर कभी भी ऐसा नहीं करूँगा" उसको गुरु पाराञ्चिकार्ह तपोरूप प्रायश्चित्त देते है। ऐसे साधुका साधु-वेष नहीं छीना जाता है, मात्र उसे नयी दीक्षा दी जाती है। अपने दुष्कर्म से निवृत्त विषयदुष्ट के लिये लिङ्गपाराञ्चिक का विधान नहीं है, अर्थात्-उसका वेष नहीं छीना जाता है।

परपक्षमा दुष्ट-शय्यातरनी स्त्री अथवा परतीर्थिकनी स्त्रीथी व्यभिचार करवावाळो साधु (३) परपक्ष, स्वपक्षमा दुष्ट-बाला अथवा तरुणी साध्वीनुं शीयळ भंग करवावाळो गृहस्थ. (४) परपक्ष, परपक्षमां दुष्ट-गृहस्थ स्त्रीनी साथे व्यभिचार करवावाळो गृहस्थ. विषयदुष्टना आ चार भंग थया. तेमां प्रथम भंगमां वर्तमान साधु पोतानां दुष्कर्मथी निवृत्त न थाय तो गुरु तेने लिंगपाराचिक करी दे, अर्थात् तेनो साधु वेष लई ले अने गच्छमांथी तेनो सर्वथा बहिष्कार करी दे. जे साधु पोतानां दुष्कर्मथी निवृत्त तेम ज उपशांत थईने एवी प्रतिज्ञा करे के 'हुं हवे फरीने कदी एवुं नहि करुं' तेने गुरु पाराचिकार्ह-तपोरूप प्रायश्चित्त आपे छे. एवा साधुनो साधुवेष छीनवी लेवातो नथी. मात्र तेने नवी दीक्षा अपाय छे. पोतानां दुष्कर्मथी निवृत्त विषयदुष्टने माटे लिंगपारांचिकनुं विधान नथी. अर्थात् तेनो वेष छीनवी लेवातो नथी.

द्वितीयभङ्गेऽपि वर्तमानो योऽनुपरतः स एव लिङ्गपाराञ्चिकः कर्तव्यः, उपरतस्तु न लिङ्गतः पाराञ्चिकः कर्तव्यः, क्षेत्रत एव पाराञ्चिकः कर्तव्यः, पुनर्दीक्षाप्रदानमात्रं तस्य प्रायश्चित्तम्। तृतीये चतुर्थे च भङ्गे यद्युपशान्तस्तदाऽन्यस्मिन् देशे दीक्षा दातव्या, अत्र पाराञ्चिकतपसः प्रस्तुतत्वात् परपक्षे तस्यासम्भवात्। यद्यनुपशान्तस्तर्हि दीक्षा न दातव्या। येषु ग्रामादिषु ताः साध्व्यो विहरन्ति तेषु तेषु स्थानेषु विहर्तुं स प्रथमभङ्गे वर्तमानः साधुर्निवार्यते। द्वितीयादिष्वपि भङ्गेषु तानि स्थानानि ग्रामादीनि परिहर्तव्यानि। एतदुक्तं भवति-द्वितीयभङ्गे यस्यां

द्वितीयभङ्गमें वर्तमान साधु यदि अपने दुष्कर्म से निवृत्त न हो तो गुरु महाराज उस साधुको लिङ्गपाराञ्चिक कर दे, अर्थात् उसका साधुवेष लेकर उसको गच्छ से सर्वथा के लिये निकाल दें। जो साधु निवृत्त हो जाय उसको लिङ्गसे पाराञ्चिक न करे, अर्थात् उसका साधुवेष नहीं छीने, किन्तु उसको क्षेत्र से पाराञ्चिक कर दे। ऐसे साधुको फिर से दीक्षा दें। यही इसके लिये प्रायश्चित्त है। तृतीय चतुर्थ भङ्गमें वर्तमान गृहस्थ उपशान्त अर्थात् अपने दुष्कर्म से निवृत्त हो तो उसको अन्यदेश में दीक्षा देनी चाहिये। यदि वह उपशान्त न हो तो अन्य देश में भी दीक्षा नहीं दे। यहाँ पाराञ्चिक का प्रस्ताव, अर्थात्—उपक्रम है, पाराञ्चिक तप परपक्ष अर्थात् गृहस्थ के लिये सम्भवित नहीं है, इसलिये गृहस्थ के लिये देशान्तर में दीक्षा देने का विधान किया है।

प्रथमभङ्ग के साधु को, जिन साध्वियों का उसने शील भङ्ग किया है वे साध्वियाँ

દ્વિતીયભંગમાં વર્તમાન સાધુ જો પોતાના દુષ્કર્મથી નિવૃત્ત ન થાય તો ગુરૂ તે સાધુને લિંગપારાચિક કરી દે, અર્થાત્ તેનો સાધુ વેષ લઈ લે અને તેને ગચ્છથી સર્વથા માટે બહિષ્કાર કરે. જે સાધુ નિવૃત્ત થઇ જાય તેને લિંગથી પારાચિક ન કરે, અર્થાત્ તેનો સાધુવેષ ન લઈ લે. પરંતુ તેને ક્ષેત્રથી (તે સ્થળથી) પારાંચિક કરે એવા સાધુને ફરીને દીક્ષા દે, એ જ તેને માટે પ્રાયશ્ચિત્ત છે.

તૃતીય ચતુર્થભંગમાં વર્તમાન ગૃહસ્થ ઉપશાંત અર્થાત્ પોતાનાં દુષ્કર્મથી નિવૃત્ત થાય તો તેને બીજા દેશમા દીક્ષા દેવી જોઇએ. જો તે ઉપશાંત ન થાય તો બીજા દેશમા, પણ દીક્ષા ન દેવી. અહી પારાચિકનો પ્રસ્તાવ, અર્થાત્ ઉપક્રમ છે, પારાચિક તપ પરપક્ષ અર્થાત્ ગૃહસ્થને માટે સંભવિત નથી, તેથી ગૃહસ્થને માટે દેશાંતરમાં દીક્ષા દેવાનું વિધાન કર્યું છે.

પ્રથમ ભંગના સાધુને, જે સાધ્વીઓનુ તેણે શીલભંગ કર્યું હોય તે સાધ્વીઓ જે ગામ નગરાદિ સ્થાનોમા વિહાર કરતી હોય ત્યાં વિહાર કરવા દેવામા આવતો નથી.

नगर्यां यस्मिन् गृहस्थकुले दोष उत्पन्नः, उत्पत्स्यते वा, तदीये कुले प्रवेष्टुं वारणीयः। तथा—यत्र निर्गमप्रवेशयोर्द्वारमेकमेवास्ति तत्र, तथा द्वयोर्ग्रामयोरपान्तराले यत्र द्व्यादिगृहाणां संनिवेशस्तत्रापि गमनागमनं वारणीयम्। अयं क्षेत्रपाराञ्चिक इत्युच्यते।

द्विविधेऽपि दुष्टपाराञ्चिके प्रथमभङ्गाधिकारः। शेषाणि पुनर्द्वितीयभङ्गादीनि शिष्यबुद्धिवैशद्यार्थं प्रदर्शितानि।

अथ प्रमत्तपाराञ्चिक उच्यते—स्त्यानर्द्धिनिद्रावान् प्रमत्तपाराञ्चिकः, तस्य सामान्यलोकवलाद् द्विगुणं त्रिगुणं चतुर्गुणं वा बलं भवति, तस्मादसौ गुरुणा एवं प्रज्ञापनीयः—सौम्य! लिङ्गं मुञ्च, चारित्रं तव नास्ति। यद्येवं गुरुणा सानुनयमुक्तः साधुवेषं मुञ्चति, ततः

---

जिन ग्रामनगरादि स्थानो में विहार करती है वहाँ विहार नहीं करने दिया जाता है। द्वितीयभङ्ग के साधु को जिस नगरी में, जिस कुलमें उससे दोष हो गया और होने की संभावना है, वहां नहीं जाने दिया जाता है, और जहाँ निकलने तथा प्रवेश करने का द्वार एक ही है वहाँ, तथा दो गावों के बीच में जहाँ दो तीन घर बसे हुए हो वहाँ भी, इस साधु का गमनागमन रोक दिया जाता है। यही क्षेत्रपाराञ्चिक कहा जाता है।

प्रतिसेवनापाराञ्चिक के दुष्ट नामक प्रथम भेद के कषायदुष्ट और विषयदुष्ट ये दो भेद हुए। इन दोनों भेदो में प्रथम भङ्गका ही यहाँ अधिकार है, क्यो कि प्रथम भङ्ग में ही पाराञ्चिकार्ह प्रायश्चित्त दिया जाता है। द्वितीयभङ्ग आदि तो शिष्यों की बुद्धि विशद हो, इसलिये दिखलाये गये है।

अब **प्रमत्तपाराञ्चिक** कहते है। स्त्यानर्द्धिनिद्रावान् साधु प्रमत्तपाराञ्चिक है। उसे सामान्य लोगों के बलसे द्विगुण, त्रिगुण वा चतुर्गुण बल होता है। ऐसे साधु को

---

દ્વિતીય ભંગના સાધુને, જે નગરીમાં જે કુળમાં તેનાથી દોષ થઈ ગયો હોય અને હોવાની સંભાવના હોય ત્યાં જવા દેવાતા નથી. અને જ્યાં નીકળવાનું તથા પ્રવેશ કરવાનું દ્વાર એક જ હોય ત્યાં, તથા બે ગામોની વચ્ચે જ્યાં બે ત્રણ ઘર વસેલાં હોય ત્યાં પણ તે સાધુનું ગમનાગમન રોકવામાં આવે છે, આ જ ક્ષેત્રપારાંચિક કહેવાય છે.

પ્રતિસેવનાપારાંચિકના દુષ્ટ નામના પ્રથમ ભેદના કષાયદુષ્ટ અને વિષયદુષ્ટ, એ બે પ્રકાર થયા. એ બન્ને પ્રકારોમાં પ્રથમ ભંગનો જ અહીં અધિકાર છે, કેમકે પ્રથમ ભંગમાં જ પારાચિકાર્હ પ્રાયશ્ચિત્ત દેવાય છે. દ્વિતીય ભંગ આદિ તો શિષ્યોની બુદ્ધિ વિશદ થાય તે માટે બતાવ્યા છે.

હવે પ્રમત્તપારાંચિક કહે છે. સ્ત્યાનર્દ્ધિનિદ્રાવાન્ સાધુ પ્રમત્તપારાંચિક છે. તેનામાં સામાન્યલોકોનાં બળ કરતાં બમણું ત્રણગણું અથવા ચારગણું બળ

शोभनम्। अथ न मुञ्चति ततः संघो मिलित्वा तस्य साधुवेषं हरति, न त्वेक एव जनः, तस्यैकस्योपरि प्रद्वेषसंभवात्, प्रद्वेषयुक्तश्च स तस्य हिंसनमपि कुर्यात्। तस्मै पुनर्दीक्षा न दीयते। यस्तु ज्ञानातिशयवान् आचार्य एवं जानाति—'यन्न पुनरेतस्य स्त्यानर्द्धिनिद्रोदयो भविष्यतीति, ततः पाराञ्चिकार्हं प्रायश्चित्तं कारयित्वा तस्मै दीक्षां ददाति। संघेन मिलित्वा तस्य साधुवेषापहारे कृते पुनराचार्य एवमुपदिशति—स्थूलप्राणातिपातविरमणादीनि देशव्रतानि गृहाण, तानि चेत् प्रतिपत्तुं न समर्थस्ततो दर्शन (सम्यक्त्वं) गृहाण। अथैवमुक्तोऽपि

गुरुमहाराज इस प्रकार कहे—"सोम्य! तुम साधुवेष छोड दो, क्यों कि तुम में चारित्र का अभाव है। गुरु से इस प्रकार सरल भाव से कहे जाने पर यदि वह साधुवेष का परित्याग कर दे तो अच्छा है, नहीं तो संघ मिलकर उसका साधुवेष छीन ले, अकेले नहीं, क्यों कि साधुवेष छीने जाने के समय उस साधु को द्वेष उत्पन्न होगा, और द्वेषयुक्त वह साधु मनुष्य की हिंसा भी कर सकता है। ऐसे साधु को फिर से दीक्षा नहीं दी जाती है। यदि अतिशयज्ञानी गुरु को ऐसा अनुभव हो कि यह प्रकृतिभद्रक है, इसे अब स्त्यानर्द्धिनिद्रा आदि नहीं होगी, तो गुरु उस साधु को पाराञ्चिकार्ह प्रायश्चित्त देकर फिर से दीक्षा दें। संघ मिलकर उस साधु का जब वेष छीन ले, तब गुरु महाराज स्त्यानर्द्धिनिद्रावान् प्रमत्तपाराञ्चिक साधु को इस प्रकार उपदेश दें—आज से तुम स्थूलप्राणातिपातविरमणरूप श्रावक धर्म को स्वीकार करो। यदि तुम इसका आचरण करने में असमर्थ हो तो तत्त्वार्थश्रद्धानरूप सम्यक्त्व को स्वीकार करो। इस प्रकार उपदेश देने पर भी यदि

હોય છે. એવા સાધુને ગુરૂમહારાજ આ પ્રમાણે કહે—" સૌમ્ય! તું સાધુવેષ છોડી દે, કેમકે તારામા ચારિત્રનો અભાવ છે. ગુરૂ તરફથી આ પ્રકારે સરલ ભાવે કહેવામાં આવતાં જો તે સાધુવેષનો પરિત્યાગ કરી દે તો સારૂં છે, નહિ તો સંઘે મળીને તેનો સાધુવેષ છીનવી લેવો, એકલાએ નહિ. કેમકે સાધુવેષ છીનવી લેતી વખતે તે સાધુને દ્વેષ ઉત્પન્ન થશે, અને દ્વેષવાળો તે સાધુ મનુષ્યની હિંસા પણ કરી શકે છે. એવા સાધુને ફરીને દીક્ષા દેવાતી નથી. જો અતિશય જ્ઞાનવાન્ ગુરૂને એવો અનુભવ થાય કે આ પ્રકૃતિભદ્રક છે, હવે એને સ્ત્યાનર્દ્ધિનિદ્રા આદિ નહિ થાય તો ગુરૂ તે સાધુને પારાંચિકાર્હ પ્રાયશ્ચિત્ત દઈને ફરીને દીક્ષા આપે. સંઘ મળીને તે સાધુનો જ્યારે વેષ છીનવી લે ત્યારે ગુરૂમહારાજ સ્ત્યાનર્દ્ધિનિદ્રાવાન્ પ્રમત્તપારાંચિક સાધુને આ પ્રકારે ઉપદેશ આપે—આજથી તું સ્થૂલપ્રાણાતિપાતવિરમણરૂપ શ્રાવક ધર્મનો સ્વીકાર કર જો તુ તેનુ આચરણ કરવામા અસમર્થ હોય તો તત્ત્વાર્થશ્રદ્ધાનરૂપ સમ્યક્ત્વનો સ્વીકાર કર. આ પ્રકારે ઉપદેશ દેવા છતાં પણ

श्रावकत्वं सम्यक्त्वं वा नेच्छति, तदा तस्य सहवासो वर्जनीयः।

अथाऽन्योन्यकुर्वाणपाराञ्चिक उच्यते—मुखपायुभ्यां मैथुनी अन्योन्यकुर्वाणपाराञ्चिकः। स पुनर्न दीक्षणीयः। यदि तु अतिशयज्ञानी आचार्यः—'अयं न पुनरेवं करिष्यति' इति जानाति, तदा पाराञ्चिकार्ह तपः कारयित्वा पुनस्तस्मै दीक्षा प्रदेया।

विषयदुष्टोऽनुपरत एव लिङ्गतः पाराञ्चिकः क्रियते। यस्तु विषयदुष्ट उपरतः स उपाश्रयादिक्षेत्रत एव पाराञ्चिकः क्रियते, न तु लिङ्गत। शेषाः कषायदुष्टप्रमत्तान्योन्यकुर्वाणा नियमाल्लिङ्गपाराञ्चिकाः क्रियन्ते।

---

वह श्रावकत्व अथवा सम्यक्त्व को स्वीकार करना नहीं चाहे, तब संघ उसका सहवास कभी भी नहीं करे, सर्वदा के लिये उसका बहिष्कार कर दे।

अब **अन्योऽन्यकुर्वाण** पाराञ्चिक कहते है—जो साधु मुखमैथुनी और गुदा-मैथुनी हो, वह 'अन्योऽन्यकुर्वाण पाराञ्चिक' है। ऐसे साधु को फिर से दीक्षा नहीं दी जाती है। यदि अतिशयज्ञानी गुरु महाराज को ऐसा अनुभव हो कि—यह फिर ऐसा नहीं करेगा, तब वे उससे पाराञ्चिकार्ह तप करा कर फिर से उसे दीक्षा दे।

विषयदुष्ट साधु यदि अपने दुष्कर्म से निवृत्त नहीं होता है तो वह लिङ्गपाराञ्चिक होता है, अर्थात् उसका साधुवेष ले लिया जाता है, और उसे गच्छ से निकाल दिया जाता है। जो विषयदुष्ट साधु अपने दुष्कर्म से निवृत्त हो जाता है, वह उपाश्रयादि क्षेत्र से ही पाराञ्चिक किया जाता है, अर्थात् वह अन्य प्रदेश में भेज दिया जाता है, उसका साधुवेष

---

જો તે શ્રાવકત્વ અથવા સમ્યક્ત્વનો સ્વીકાર કરવા ન ચાહે તો સંઘ તેનો સહવાસ કદી પણ કરે નહિ, સર્વદા માટે તેનો બહિષ્કાર કરી દે.

હવે અન્યોઽન્યકુર્વાણ-પારાંચિક કહે છે-જે સાધુ મુખમૈથુની અને ગુદા-મૈથુની હોય તે 'અન્યોઽન્યકુર્વાણ-પારાંચિક' છે. એવા સાધુને ફરીને દીક્ષા અપાતી નથી. જો અતિશયજ્ઞાની ગુરૂમહારાજને એવો અનુભવ થાય કે આ ફરીને એવું નહિ કરે, તો તેઓ તેની પાસે પારાંચિકાર્હ તપ કરાવીને ફરીને તેને દીક્ષા આપે.

વિષયદુષ્ટ સાધુ જો પોતાનાં દુષ્કર્મથી નિવૃત્ત ન થાય તો તેને લિંગ-પારાચિક કરાય છે, અર્થાત્ તેનો સાધુવેષ લઇ લેવાય છે, અને તેને ગચ્છથી કાઢી મૂકવામાં આવે છે. જે વિષયદુષ્ટ સાધુ પોતાના દુષ્કર્મથી નિવૃત્ત થઈ જાય છે તે ઉપાશ્રયાદિ ક્ષેત્રમાંથી જ પારાંચિક કરાય છે, અર્થાત્ તેને બીજા પ્રદેશમાં મોકલવામાં આવે છે તેનો સાધુવેષ લઇ લેવામાં આવતો નથી. વિષયદુષ્ટથી જુદા જે કષાયદુષ્ટ, પ્રમત્ત અને અન્યોઽન્યકુર્વાણ છે, એ ત્રણને નિયમપ્રમાણે લિંગપારાચિક કરવામાં આવે છે, અર્થાત્ તેમનો સાધુવેષ લઈ લેવાય છે.

यस्तु साधुः कर्मदोषात् पाराञ्चिकापत्तियोग्यात् उत्कृष्टमपराधपद प्राप्तः, स यदि भद्रकः 'पुनरेवं न करिष्यामी'-ति व्यवसितस्तदा स तपःपाराञ्चिकः-अर्थात् तपःसमाराधन-तत्परः पाराञ्चिकः क्रियते। तस्य तपःकरणयोग्यता यथा भवति तदुच्यते-वज्रऋषभनाराचं संहननं, वज्रकुडचसमानं वीर्य, सागरवद्गम्भीरता, मेरुवद्धीरता, आगमज्ञानं-जघन्येन नवम-पूर्वान्तर्गतमाचाराख्यं तृतीयं वस्तु, उत्कर्षतो दशमपूर्वं सम्पूर्णं, तच्च सूत्रतोऽर्थतश्च यदि परिचितं भवति। एतैः संहननादिभिः सम्पन्नः, तथा सिंहविक्रीडितादितपःकर्मभावितः, इन्द्रिय-कषायाणां निग्रहे समर्थः, प्रवचनरहस्यार्थज्ञानसम्पन्नश्च, तथा गच्छान्निःसारितस्यापि यस्य

नहीं छीना जाता है। विषयदुष्ट से भिन्न जो कषायदुष्ट, प्रमत्त और अन्योऽन्यकुर्वाण है, ये तीन नियमतः लिङ्गपाराञ्चिक किये जाते है, अर्थात् इनका साधुवेष ले लिया जाता है।

जिस दुष्कर्म से साधु पाराञ्चिक होता है, उस दुष्कर्म के कारण जो साधु उत्कृष्ट अपराधी हो गया हो, वह साधु यदि भद्रक हो और वह ऐसा नियम करे कि "मै अब फिर कभी भी ऐसा नहीं करूँगा" तब वह साधु तप पाराञ्चिक किया जाता है, अर्थात् उससे पाराञ्चिक तप कराया जाता है। पाराञ्चिक तप करने की योग्यता जैसे होती है सो कहते है-जो साधु वज्र-ऋषभ-नाराच-संहननवाला हो, वज्र की भींत के समान दृढ जिसका वीर्य=परा-क्रम हो, समुद्र के समान जिसमें गाम्भीर्य हो, मेरु के समान जिसमें धीरता हो, तथा जो आगम को जानने वाला हो अर्थात् जघन्य से नवमपूर्वान्तर्गत आचाराख्य तृतीय वस्तु को, उत्कृष्ट से सम्पूर्ण दशम पूर्व को सूत्र से और अर्थ से जानने वाला हो, सिंहविक्रीडित आदि तप कर चुका हो, इन्द्रिय और कषायों के निग्रह करने मे समर्थ हो, प्रवचन के गूढार्थ को जानने वाला हो, गच्छ से निकाले जाने पर भी जिसके मनमें 'मै गच्छ से निकाला

જે દુષ્કર્મથી સાધુ પારાંચિક થાય છે તે દુષ્કર્મના કારણે જે સાધુ ઉત્કૃષ્ટ અપરાધી થયો હોય તે સાધુ જો પ્રકૃતિભદ્રક હોય અને જો તે એવી પ્રતિજ્ઞા કરે કે 'હું હવે ફરીને કદી આવું નહિ કરૂ' તો તે સાધુ તપઃપારાંચિક કરાય છે, અર્થાત્ તેની પાસે પારાંચિક તપ કરાવવામા આવે છે. પારાંચિક તપ કરવાની યોગ્યતા કેવી હોય તે કહે છે-જે સાધુ વજ્રઋષભનારાચ-સંહનનવાળા હોય, વજ્રની ભીંતના જેવા દૃઢ જેનું વીર્ય-પરાક્રમ હોય, સમુદ્રની જેમ જેનામા ગાંભીર્ય હોય, મેરૂની પેઠે જેનામાં ધીરતા હોય, તથા જે આગમને જાણવાવાળા હોય અર્થાત્ જઘન્યથી નવમપૂર્વગત આચા-રાખ્ય ત્રીજી વસ્તુને, ઉત્કૃષ્ટથી સંપૂર્ણ દશમ પૂર્વને સૂત્રથી તથા અર્થથી જાણ-નારા હોય, સિંહવિક્રીડિત આદિ તપ કરી ચૂકયા હોય, ઇંદ્રિય અને કષાયોના નિગ્રહ કરવામાં સમર્થ હોય, પ્રવચનના ગૂઢાર્થને જાણવાવાળા હોય, ગચ્છ

## से किं तं विणए ? विणए सत्तविहे पण्णत्ते, तं जहा-

अहं गच्छान्निःसारितोऽस्मीत्यशुभो भावः स्वल्पतरोऽपि न विद्यते स एवंविधगुणसम्पन्न एव पाराञ्चिकं प्रायश्चित्त कर्तुमर्हति। यस्त्वेतद्गुणरहितस्तस्य पाराञ्चिकापत्तिं प्राप्तस्य मूलमेव प्रायश्चित्तं भवति।

आशातनापाराञ्चिको जघन्येन षण्मासान्, उत्कर्षतश्च द्वादश मासान् भवति, एतावन्तं कालं गच्छान्निर्यूढ (निष्कासित) स्तिष्ठति। प्रतिसेवनापाराञ्चिको जघन्येन संवत्सरमुत्कर्षतो द्वादश वर्षाणि निर्यूढ आस्ते। विस्तरस्तु—अन्यत्र द्रष्टव्यः। '**से तं पायच्छित्ते**' तदेतत्प्रायश्चित्तम्।

'**से किं तं विणए**' अथ कोऽसौ विनयः ? विनयः किंस्वरूप इति प्रश्नः। उत्तरमाह—'**विणए**' विनयः—विनयति—अपनयति अष्टविधकर्माणीति विनयः=अभ्युत्थानवन्दन-

---

गया हूँ' यह अशुभ भाव अणुमात्र भी न हो, इस प्रकार के गुणो से युक्त ही साधु पाराञ्चिक प्रायश्चित्त का अधिकारी है। जो साधु इन गुणों से रहित है, उससे पाराञ्चिकार्ह प्रायश्चित्त योग्य अपराध हो गया है, उसको मूलार्ह प्रायश्चित्त ही दिया जाता है।

आशातनापाराञ्चिक साधु जघन्य से छ मास तक और उत्कर्ष से बारह मास-तक गच्छ से बहिष्कृत रहता है। प्रतिसेवनापाराञ्चिक साधु जघन्य से एक वर्ष और उत्कर्ष से बारह वर्ष गच्छ से बहिष्कृत रहता है। इसका विस्तृत वर्णन अन्यत्र देखना चाहिये। (**से तं पायच्छित्ते**) ये दस प्रकार के प्रायश्चित्त है॥ सू० ३०॥

(**से किं तं विणए**) विनय का क्या स्वरूप है? (**विणए सत्तविहे पण्णत्ते**) विनय सात प्रकार का है। जो अष्टविध कर्मों को दूर करता है, वह विनय है।

---

માથી કાઢેલા છતાં પણ જેના મનમા 'હું ગચ્છથી બહિષ્કાર પામેલો છુ' એ અશુભ ભાવ અણુમાત્ર પણ ન હોય, એ પ્રકારના ગુણોવાળો જ સાધુ પારાંચિક પ્રાયશ્ચિત્તનો અધિકારી છે. જે સાધુ એ ગુણોથી રહિત છે તેનાથી પારાંચિકાર્હ પ્રાયશ્ચિત્ત યોગ્ય અપરાધ થઈ ગયો હોય તો તેને મૂલાર્હ પ્રાયશ્ચિત્ત જ અપાય છે. આશાતનાપારાંચિક સાધુ જઘન્યથી છ માસ સુધી અને ઉત્કર્ષથી બાર માસ સુધી ગચ્છથી બહિષ્કૃત રહે છે. પ્રતિસેવના-પારાંચિક સાધુ જઘન્યથી એક વર્ષ અને ઉત્કર્ષથી બાર વર્ષ સુધી ગચ્છથી બહિષ્કૃત રહે છે. તેનું વિસ્તૃત વર્ણન બીજેથી જોઈ લેવું જોઈએ. (से तं-पायच्छित्ते) આ દશ પ્રકારનાં પ્રાયશ્ચિત્ત છે. (સૂ૦ ૩૦)

(से किं तं विणए) વિનય તપનુ સ્વરૂપ શું છે? ઉત્તર—(विणए सत्तविहे पण्णत्ते) તે સાત

**णाणविणए १, दंसणविणए २, चरित्तविणए ३, मणविणए ४, वयविणए ५, कायविणए ६, लोगोवयारविणए ७। से किं तं णाणविणए? णाणविणए पंचविहे पण्णत्ते, तं जहा- आभिणिबोहियणाणविणए १, सुयणाणविणए २, ओहिणाणविणए ३,**

भक्त्यादिरूप, स '**सत्तविहे पण्णत्ते**' सप्तविधः प्रज्ञप्त.। '**तं जहा**' तद्यथा—१—'**णाणविणए**' ज्ञानविनयः, २—'**दंसणविणए**' दर्शनविनयः, ३—'**चरित्तविणए**' चारित्रविनयः, ४ '**मणोविणए**' मनोविनय, ५—'**वइविणए**' वाग्विनयः, ६ '**कायविणए**' कायविनय, ७—'**लोगोवयारविणए**' लोकोपचारविनयः। एप सप्तविधोऽपि विनयः क्रमेण स्वरूपतो भेदतश्च निरूप्यते—'**से किं तं णाणविणए**' अथ कोऽसौ ज्ञानविनयः? उत्तरमाह—'**णाणविणए**' ज्ञानविनयः '**पचविहे पण्णत्ते**' पञ्चविधः प्रज्ञप्तः, '**तं जहा**' तद्यथा—तत्पञ्चविधत्व दर्शयति—'**आभिणिबोहियणाणविणए**' आभिनिबोधिकज्ञानविनयः, '**सुयणाण-**

यह विनय गुरु आदि के आने पर खड़े हो जाना, तथा वंदना, शुश्रूषा, भक्ति आदि करना, इस रूप से शास्त्रों में प्रतिपादित किया गया है। (**तं जहा**) विनय के सात प्रकार ये है-(**णाणविणए, दंसणविणए, चरित्तविणए, मणविणए, वइविणए, कायविणए, लोगोवयारविणए**) ज्ञानविनय, दर्शनविनय, चारित्रविनय, मनोविनय, वचनविनय, कायविनय, और लोकोपचारविनय। अव यथाक्रम इनके स्वरूप और भेदों का वर्णन सूत्रकार करते है—(**से किं तं णाणविणए**) वह ज्ञानविनय क्या है? अर्थात् जिसमें ज्ञान का विनय किया जाता है ऐसा वह ज्ञानविनय कितने प्रकार का है?, (**णाणविणए पंचविहे पण्णत्ते**) ज्ञानविनय पांच प्रकार का कहा है। (**तं जहा**) वे पांच प्रकार ये है—(**आभिणिबोहियणाणविणए, सुय-**

પ્રકારના છે. જે આઠ જાતનાં કર્મોને દૂર કરે છે તે વિનય છે. આ વિનય તપ, ગુરુ આદિ પધારતા ઉભા થઈ જવુ, તથા વદના શુશ્રૂષા આદિ કરવાં, એ રૂપે શાસ્ત્રોમા પ્રતિપાદન કર્યુ છે. (तं जहा) વિનય તપના તે સાત પ્રકાર આ છે–(णाणविणए दंसणविणए चरित्तविणए मणविणए वयविणए कायविणए लोगोवयारविणए) ૧ જ્ઞાનવિનય, ૨ દર્શનવિનય, ૩ ચારિત્રવિનય, ૪ મનોવિનય, ૫ વચનવિનય, ૬ કાયવિનય, અને ૭ લોકોપચારવિનય. હવે તેનુ ક્રમવાર સ્વરૂપ તથા પ્રકારોનુ વર્ણન સૂત્રકાર કરે છે–(से कि तं णाणविणए) તે જ્ઞાનવિનય શુ છે? અર્થાત્ જેમા જ્ઞાનનો વિનય કરાય છે એવો તે જ્ઞાનવિનય કેટલા પ્રકારનો છે? (णाणविणए पंचविहे पण्णत्ते) જ્ઞાનવિનય પાચ પ્રકારનો કહેલો છે. (तं जहा) તે પાચ પ્રકાર આ છે–(आभिणिबोहियणाणविणए, सुयणाणविणए, ओहिणाणविणए,

**मणपज्जवणाणविणए ४, केवलणाणविणए ५। से किं तं दंसण-विणए? दंसणविणए दुविहे पण्णत्ते, तं जहा-सुस्सूसणाविणए १, अणच्चासायणाविणए २। से किं तं सुस्सूसणाविणए? सुस्सू-**

विणए' श्रुतज्ञानविनयः, '**ओहिणाणविणए**' अवधिज्ञानविनयः '**मणपज्जवणाण-विणए**' मनःपर्यवज्ञानविनयः, '**केवलणाणविणए**' केवलज्ञानविनयः। अथ दर्शनविनयं पृच्छति-'**से किं तं दंसणविणए**' अथ कोऽसौ दर्शनविनयः? '**दंसणविणए**' दर्शन-विनयः-दर्शनमोहनीयक्षयादिजनितस्तत्त्वश्रद्धानरूप आत्मपरिणामो दर्शनं, तत्सम्बन्धी विनयः दर्शनविनयः, स '**दुविहे पण्णत्ते**' द्विविधः प्रज्ञप्तः, द्वैविध्यं दर्शयति-'**तं जहा**' तद्यथा-'**सुस्सूसणाविणए**' शुश्रूषणाविनयः-विधिवत्सामीप्येन गुर्वादेः सेवनं शुश्रूषणा, तद्रूपो विनयः। '**अणच्चासायणाविणए**' अनत्याशातनाविनयः - 'अति=अतीव, आयः= सम्यक्त्वादिलाभः-अत्यायः, तस्य शातना=ध्वंसना-अत्याशातना, तन्निषेधरूपो विनयोऽनत्या-शातनाविनयः. गुर्वादेरवर्णवादादिनिवारणम्। पृषोदरादित्वात्सिद्धिः।

**णाणविणए, ओहिणाणविणए मणपज्जवणाणविणए केवलणाणविणए**) आभिनिबोधिक-ज्ञानविनय, श्रुतज्ञानविनय, अवधिज्ञानविनय, मनःपर्ययज्ञानविनय, एवं केवलज्ञानविनय। (**से किं तं दंसणविणए**) दर्शनविनय कितने प्रकार का है? (**दंसणविणए दुविहे पण्णत्ते**) दर्शनविनय दो प्रकार का है। (**तं जहा**) वे प्रकार ये हैं-(**सुस्सूसणा-विणए अणच्चासायणाविणए**) पहला-शुश्रूषाविनय-गुरु आदि के समीप रह कर विधि-पूर्वक सेवा करना। दूसरा-अनत्याशातनाविनय-सम्यक्त्वादिक के लाभ को जो नष्ट करता है वह अत्याशातना है, इसका निषेधरूप जो विनय है वह अनत्याशातनाविनय है। गुरु आदि के अवर्णवाद को दूर करना-निवारण करना, इसका नाम अनत्याशातनाविनय है।

मणपज्जवणाणविणए, केवलणाणविणए) १ આભિનિબોધિકજ્ઞાનવિનય, २ શ્રુતજ્ઞાન વિનય, ૩ અવધિજ્ઞાનવિનય, ૪ મનઃપર્યયજ્ઞાનવિનય, ૫ કેવલજ્ઞાનવિનય. પ્રશ્ન-(से किं तं दंसणविणए) દર્શનવિનય કેટલા પ્રકારનો છે? ઉત્તર-(दंसण-विणए दुविहे पण्णत्ते) દર્શનવિનય બે પ્રકારનો છે, (तं जहा) તે આ પ્રકારે છે-(सुस्सूसणाविणए अणच्चासायणाविणए) પહેલો-શુશ્રૂષાવિનય-ગુરુ આદિની પાસે રહીને વિધિપૂર્વક સેવા કરવી, બીજો અનત્યાશાતનાવિનય-સમ્યકત્વ આદિકના લાભનો જે નાશ કરે છે તે અત્યાશાતના છે, તેનો નિષેધરૂપ જે વિનય છે તે અનત્યાશાતનાવિનય છે. ગુરુ આદિના અવર્ણવાદને દૂર કરવો-તેનુ નિવારણ કરવું તેનુ નામ અનત્યાશાતનાવિનય છે. પ્રશ્ન-(से किं तं सुस्सूसणा-

सणाविणए अणेगविहे पण्णत्ते; तं जहा—अब्भुट्ठाणे इ वा १, आसणाभिग्गहे इ वा २, आसणप्पदाणे इ वा ३, सक्कारे इ वा ४, सम्माणे इ वा ५, किइकम्मे इ वा ६; अंजलिप्पग्गहे इ वा ७, एंत-

'से किं तं सुस्सूसणाविणए' अथ कोऽसौ शुश्रूषणाविनयः ?—'सुस्सूसणाविणए' शुश्रूषणाविनयः 'अणेगविहे पण्णत्ते' अनेकविधः प्रज्ञप्त -'तं जहा' तद्यथा—'अब्भुट्ठाणे इ वा' अभ्युत्थानमिति वा, 'इति' 'वा' इति पदद्वयं वाक्यालङ्कारे, एवमग्रेऽपि बोध्यम् । अभ्युत्थानम्—आचार्यादेरागतस्य अभिमुखम्—उत्थानम् अभ्युत्थानं—विनयाऽर्हस्य दर्शनादेवाऽऽसनत्यागः ।१। 'आसणाभिग्गहे इ वा' आसनाभिग्रह इति वा, आसनाभिग्रहः—गुर्वादिर्यत्र यत्रोपवेष्टुमिच्छति तत्र तत्राऽऽसनप्रापणम् ।२। 'आसणप्पदाणे इ वा' आसनप्रदान मिति वा, गुरौ समागते सति आसनदानम् ।३। 'सक्कारे इ वा' सत्कार इति वा—विनयाऽर्हस्य गुर्वादेः वन्दनादिनाऽऽदरकरणं-सत्कारः ।४। 'संमाणे इ वा' सम्मान इति वा, समानो वा—गुर्वादेः आहारवस्त्रादिप्रशस्त-वस्तुना समाननम् ।५। 'किइकम्मे इ वा' कृतिकर्म इति वा—कृतिकर्म=यथाविधि वन्दनम् ।६।

(से किं तं सुस्सूणाविणए) शुश्रूषणाविनय कितने प्रकार का—है ? (सुस्सूसणाविणए अणेगविहे पण्णत्ते) शुश्रूषणाविनय अनेक प्रकार का है, (तं जहा) जैसे-(अब्भुट्ठाणे इ वा) आये हुए आचार्य आदि के आने पर खडे होना। विनय के योग्य साधुजन को देखते ही आसन का परित्याग करना (१)। (आसणाभिग्गहे इ वा) गुर्वादिक जहां २ बैठना चाहे वहां २ आसन लेकर उपस्थित रहना, अथवा आसन पहुँचाना (२)। (आसणप्पदाणे इ वा) गुरुके आने पर आसन प्रदान करना (३) (सक्कारे इ वा) विनययोग्य गुर्वादिक का वन्दना आदि द्वारा सत्कार करना (४)। (संमाणे इ वा) गुर्वादिकों का आहार, वस्त्रादिक प्रशस्तवस्तुओ द्वारा सन्मान करना (५)। ( किइकम्मे इ वा ) यथाविधि वन्दना करना यह कृतिकर्म है, अर्थात्—गुर्वा-

विणए) શુશ્રૂષણાવિનય કેટલા પ્રકારનો છે ? ( सुस्सूसणाविणए अणेगविहे पण्णत्ते) શુશ્રૂષણાવિનય અનેક પ્રકારનો છે, (तं जहा) જેમ કે-( अब्भुट्ठाणे इ वा) અહીં "इ" "वा" એ બે શબ્દો વાકયાલંકારમાં વપરાયા છે. પધારેલા આચાર્ય આદિની સામે જવું, વિનયને યોગ્ય સાધુજનોને જોતા જ આસનનો પરિત્યાગ કરવો (૧). (आसणाभिग्गहे इ वा) ગુરુ આદિક જ્યાં જ્યા બેસવા ચાહે ત્યાં ત્યાં આસન લઇને હાજર રહેવુ, અથવા આસન પહોંચાડવું (૨). (आसणप्पदाणे इ वा) ગુરુ આવે ત્યારે આસન પ્રદાન કરવું (૩). (सक्कारे इ वा) વિનય યોગ્ય ગુરુ આદિકનો વંદના આદિ દ્વારા સત્કાર કરવો (૪). (संमाणे इ वा) ગુરુ આદિકનું આહાર-વસ્ત્રાદિક પ્રશસ્ત વસ્તુઓથી સન્માન કરવું (૫). (किइक-

स्स अणुगच्छणया ८, ठियस्स पज्जुवासणया ९, गच्छंतस्स पडिसंसाहणया १०, से तं सुस्सूसणाविणए। से किं तं अणच्चासायणाविणए? अणच्चासायणाविणए पणयालीसविहे पण्णत्ते; तं जहा-अरहंताणं अणच्चासायणया १, अरहंतपण्णत्तस्स धम्मस्स अण-

'अंजलिप्पग्गहे इ वा' अञ्जलिप्रग्रह इति वा-अञ्जलिप्रग्रहः=गुरुसम्मुखे अञ्जलीकरणम् ।७। 'एंतस्स अणुगच्छणया' आगच्छतोऽनुगमनता-गुर्वादिकम् आयान्तं प्रति संमुखे गमनम् ।८। 'ठियस्स पज्जुवासणया' स्थितस्य पर्युपासनता-उपविष्टस्य गुर्वादेरिच्छानुकूलसेवा ।९। 'गच्छंतस्स पडिसंसाहणया' गच्छतः प्रतिसंसाधनता=गच्छतो गुर्वादेः पश्चाद् गमनशीलता ।१०। 'से तं सुस्सूसणाविणए' स एष शुश्रूषणाविनयः । अनत्याशातनां पृच्छति-'से किं तं अणच्चासायणाविणए' अथ कोऽसौ अनत्याशातनाविनयः ? 'अणच्चासायणाविणए' अनत्याशातनाविनयः-'पणयालीसविहे पण्णत्ते' पञ्चचत्वारिंशद्विधः प्रज्ञप्तः । 'तं जहा' तद्यथा-'अरहंताणं अणच्चासायणया' अर्हतामनत्याशातनता-

दिकों की सविधि वन्दना करना (६)। (अंजलिप्पग्गहे इ वा) गुरु के सन्मुख दोनों हाथ जोडना (७)। (एंतस्स अणुगच्छणया) गुर्वादिक आ रहे हों तो उनके सन्मुख जाना (८)। (ठियस्स पज्जुवासणया) जब वे बैठे हों तो उनकी इच्छानुकूल सेवा करना (९)। (गच्छंतस्स पडिसंसाहणया) जब वे जाने लगे तो उनके पीछे २ चलना (१०)। (से तं सुस्सूसणाविणए) यह सब शुश्रूषणाविनय है। (से किं तं अणच्चासायणाविणए) अनत्याशातनाविनय कितने प्रकार का है? (अणच्चासायणाविणए पणयालीसविहे पण्णत्ते) अनत्याशातनाविनय पैंतालीस प्रकार का है, (तं जहा) वे प्रकार ये हैं-(अरहंताणं अणच्चासायणया) अर्हत भगवान् का अवर्णवाद आदि नहीं करना (१),

म्मे इ वा) યથાવિધિ વંદના કરવી એ કૃતિકર્મ છે, અર્થાત્ ગુરુ આદિકોની સવિધિ વંદના કરવી (૬). (अंजलिप्पग्गहे इ वा) ગુરુની સામે બને હાથ જોડવા (૭). (एंतस्स अणुगच्छणया) ગુરુ આદિ પધારતા હોય ત્યારે તેમની સામે જવું (૮). (ठियस्स पज्जुवासणया) જ્યારે તેઓ બેઠા હોય ત્યારે તેમની ઇચ્છાને અનુકૂળ સેવા કરવી (૯). (गच्छंतस्स पडिसंसाहणया) જ્યારે તેઓ જવા લાગે ત્યારે તેમની પાછળ પાછળ ચાલવું (૧૦). (से तं सुस्सूसणाविणए) એ બધા શુશ્રૂષણાવિનય છે. પ્રશ્ન-(से किं तं अणच्चासायणाविणए) અનત્યાશાતનાવિનય કેટલા પ્રકારનો છે? ઉત્તર-(अणच्चासायणाविणए पणयालीसविहे पण्णत्ते) અનત્યાશાતના વિનય પિસતાલીસ પ્રકારનો છે, (तं जहा) તે પ્રકાર આ છે-(अरहंताणं अणच्चासायणया) અર્હંત

**च्चासायणया २, आयरियाणं अणच्चासायणया ३, एवं उवज्झा-याणं ४, थेराणं ५, कुलस्स ६, गणस्स ७, संघस्स ८, किरि-याणं ९, संभोगस्स १०, आभिणिबोहियणाणस्स ११, सुयणाणस्स**

अर्हद्भगवतामवर्णवादादिनिवारणम् ।१। 'अरहंतपण्णत्तस्स धम्मस्स अणच्चासायणया' अर्हत्प्रज्ञप्तस्य धर्मस्य अनत्याशातनता—सर्वज्ञकथितधर्मस्याऽवर्णवादादिनिवारणम् ।२। 'आय-रियाणं अणच्चासायणया' आचार्याणामनत्याशातनता ।३। एवम्—'उवज्झायाणं' उपाध्या-यानाम् ।४। 'थेराणं' स्थविराणाम् ।५। 'कुलस्स' कुलस्य—एकाचार्यसन्ततिरूपस्य समानाऽऽ-चारसाधुसमूहस्य ।६। 'गणस्स' गणस्य—परस्परसापेक्षाऽनेककुलसाधुसमुदायस्य ।७। 'संघस्स' संघस्य-सम्यग्दर्शनादियुक्तसाधुसाध्वीश्रावकश्राविकारूपस्य ।८। 'किरियाणं' क्रियाणाम्—ईर्या-पथिकादीनाम् ।९। 'संभोगस्स' सम्भोगस्य—सम्=एकत्र भोगो=भोजनं—संभोग —समानसामा-चारी तया साधूनां परस्परमुपध्यादिदानग्रहणरूपव्यवहारस्तस्य, एकसामाचारिकताया इत्यर्थः।१०। 'आभिणिबोहियणाणस्स' आभिनिबोधिकज्ञानस्य ।११। 'सुयणाणस्स' श्रुतज्ञानस्य ।१२।

( अरहंतपण्णत्तस्स धम्मस्स अणच्चासायणया ) अर्हत भगवान् द्वारा प्रज्ञप्त धर्मका अवर्णवाद आदि नहीं करना (२), (आयरियाणं अणच्चासायणया) आचार्य महाराज का अवर्णवाद नहीं करना (३), इसी तरह ( उवज्झायाणं ) उपाध्याय का (४), ( थेराणं ) स्थविरों का (५), ( कुलस्स ) एक आचार्य के सन्ततिरूप समान आचार वाले साधुओं के समूह का (६), (गणस्स) परस्पर सापेक्ष अनेककुलवाले साधुसंप्रदाय का (७), (संघ-स्स) सम्यग्दर्शन आदि से युक्त साधु, साध्वी श्रावक, श्राविकारूप संघ का (८), (किरियाणं) ईर्यापथिक आदि क्रियाओं का (९), ( संभोगस्स ) संभोग—एकसामाचारिकता का (१०), (आभिणिबोहियणाणस्स) आभिनिबोधिक ज्ञान का (११). (सुयणाणस्स) श्रुतज्ञान का

ભગવાનનો અવર્ણવાદ ન બોલવો (૧), (अरहंतपण्णत्तस्स धम्मस्स अणच्चासा-यणया) અર્હંત ભગવાન દ્વારા પ્રજ્ઞપ્ત ધર્મનો અવર્ણવાદ ન બોલવો (૨),(आयरि-याणं अणच्चासायणया) આચાર્ય મહારાજનો અવર્ણવાદ ન બોલવો (૩). એ રીતે (उवज्झायाणं) ઉપાધ્યાયોનો (૪), (थेराणं) સ્થવિરોનો (૫), (कुलस्स) એક આચા-ર્યના સંતતિરૂપ સમાન આચારવાળા સાધુઓના સમૂહનો (૬), (गणस्स) પરસ્પર-સાપેક્ષ અનેક કુળવાળા સાધુસંપ્રદાયનો (૭), ( संघस्स ) સમ્યગ્દર્શન આદિથી યુક્ત સાધુ—સાધ્વી—શ્રાવક—શ્રાવિકા રૂપ સંઘનો (૮), (किरियाणं) ઇર્યાપથિક આદિ ક્રિયાઓનો (૯), (संभोगस्स) સંભોગ—એકસામાચારિકતાનો (૧૦), (आभिणिबोहियणाणस्स) આભિનિબોધિક જ્ઞાનનો (૧૧), (सुयणाणस्स) શ્રુતજ્ઞાનનો

**१२, ओहिणाणस्स १३, मणपज्जवणाणस्स १४, केवलणाणस्स १५, एएसिं चेव भत्तिवहुमाणे ३०, एएसिं चेव वण्णसंजलणया ४५, से तं अणच्चासायणाविणए। से किं तं चरित्तविणए?,**

'**ओहिणाणस्स**' अवधिज्ञानस्य ।१३। '**मणपज्जवणाणस्स**' मनःपर्यवज्ञानस्य ।१४। '**केवलणाणस्स**' केवलज्ञानस्य ।१५। '**एएसिं चेव भत्तिवहुमाणे**' एतेषाञ्चैव भक्तिवहुमानम्—भक्तियुक्तं वहुमानम् '**अरहंताणं**' इत्यारभ्य '**केवलणाणस्स**' इति—पर्यन्तानामनत्याशातनता पञ्चदशविधा, पुनरेतेषामेव अर्हदादीनां भक्तिवहुमानयोगे त्रिंशद्विधत्वम् । पुनः—'**एएसिं चेव वण्णसंजलणया**' एतेषामेव वर्णसञ्ज्वलनता=सद्भूतगुणोत्कीर्तनता, अत्रेदं बोध्यम्—अनत्याशातनाविनयो हि पञ्चचत्वारिंशद्विधः प्रोक्तः, तत्र—अर्हदादिविनयाः पञ्चदश, अर्हदादिभक्तिवहुमानानि पञ्चदश, अर्हदादीनां वर्णसञ्ज्वलनताश्च पञ्चदश, तदित्थमनत्याशातनाविनयः पञ्चचत्वारिंशद्विध इति । उपसंहरन्नाह—'**से तं अणच्चासायणाविणए**' स एषोऽनत्याशातनाविनयः । इति । '**से किं तं चरित्तविणए?**' अथ कोऽसौ चारित्र-

(१२), (**ओहिणाणस्स**) अवधिज्ञान का (१३), (**मणपज्जवणाणस्स**) मनःपर्यवज्ञान का (१४) और (**केवलणाणस्स**) केवलज्ञान का अवर्णवाद नहीं करना (१५)। (**एएसिं चेव भत्तिवहुमाणे**) तथा इन्हीं पन्द्रह भेदों का भक्तिपूर्वक वहुमान करना। इस प्रकार इन पन्द्रह भेदों को भक्तिवहुमान के साथ द्विगुणित करने से तीस भेद हो जाते है। पुनः (**एएसिं चेव वण्णसंजलणया**) इन्हीं के सद्भूत गुणों का उत्कीर्तन करना। इस तरह तीस में पन्द्रह वर्णसञ्ज्वलनता मिलाने से पैंतालीस भेद अनत्याशातनाविनय के होते है। इस प्रकार (**से तं अणच्चासायणाविणए**) यह सब अनत्याशातनाविनय है। प्रश्न—(**से किं तं चरित्तविणए**) चारित्रविनय कितने प्रकार का है? उत्तर—(**चरित्त-**

(૧૨), (ओहिणाणस्स) અવધિજ્ઞાનનો (૧૩), (मणपज्जवणाणस्स) મનઃપર્યવ જ્ઞાનનો (૧૪), અને (केवलणाणस्स) કેવલજ્ઞાનનો અવર્ણવાદ ન બોલવો (૧૫). (एएसिं चेव भत्तिवहुमाणे) તથા આ જ પંદર પ્રકારોનું ભક્તિપૂર્વક બહુમાન કરવાં. એ પ્રકારે પંદર પ્રકારના ભક્તિબહુમાનની સાથે બમણા કરવાથી તીસ પ્રકાર થઈ જાય છે. વળી (एएसिं चेव वण्णसंजलणया) તેમના સદ્ભૂત ગુણોનું ઉત્કીર્તન કરવું. એ રીતે તીસ માં પંદર વર્ણસંજવલનતા મેળવવાથી પિસતાલીસ પ્રકાર અનત્યશાતનાવિનયના થાય છે. (से तं अणच्चासायणाविणए) આ પ્રકારે એ બધા અનત્યાશાતનાવિનય છે. પ્રશ્ન–(से किं तं चरित्तविणए) ચારિત્રવિનય–કેટલા પ્રકારનો છે? ઉત્તર–(चरित्तविणए पंचविहे पण्णत्ते) ચારિત્રવિનય પાંચ પ્રકારનો

**चरित्तविणए पंचविहे पण्णत्ते; तं जहा—सामाइयचरित्तविणए १,**

विनयः[१]—अनेकजन्मसञ्चिताऽष्टविधकर्मसञ्चयस्य क्षयाय चरणं चारित्रं—सर्वविरतिलक्षणम्, तत्सम्बन्धी विनयश्चारित्रविनयः, स कतिविधः ?, इति प्रश्नः, उत्तरमाह—'**चरित्तविणए पंचविहे पण्णत्ते**' चारित्रविनयः पञ्चविधः प्रज्ञप्तः '**तं जहा**' तद्यथा—'**सामाइयचरित्तविणए**' सामायिकचारित्रविनयः—सर्वजीवेषु रागद्वेषविरहितो भावः समः, तस्य समस्य=प्रतिक्षणमपूर्वापूर्वकर्मनिर्जराहेतुभूताया विशुद्धेरायो लाभः समायः, स एव सामायिकम्—सावद्ययोगविरतिरूपम्, विनयादित्वात् स्वार्थे ठक्, तद्रूपं चारित्रं, तस्य विनयः—सामायिकचारित्रवि-

**विणए पंचविहे पण्णत्ते** ) अनेक जन्म में उपार्जित आठ प्रकार के कर्मों के क्षय के लिये जो आचरण किया जाय वह सर्वविरतिरूप चारित्र है । इस चारित्र का विनय करना सो चारित्रविनय है । वह पाँच प्रकार का है । (**तं जहा**) वे प्रकार ये हैं-(**सामाइयचरित्तविणए छेदोवट्ठावणियचरित्तविणए परिहारविसुद्धिचरित्तविणए सुहुम संपरायचरित्तविणए अहक्खायचरित्तविणए** ) सामायिकरूप चारित्र का विनय, छेदोपस्थापनीयचारित्र का विनय, परिहारविशुद्धिचारित्र का विनय, सूक्ष्मसम्परायचारित्र का विनय, एवं यथाख्यातचारित्र का विनय । समस्त जीवो में राग एवं द्वेष की परिणति का परिहार करना इसका नाम "सम" है । प्रतिक्षण अपूर्व अपूर्व कर्मनिर्जरा के कारण इस समरूप विशुद्धि का आय=लाभ होना इसका नाम 'समाय' है । "समाय" ही सामायिक है । यह सामायिक सर्वसावद्ययोगविरतिरूप है । इस प्रकार इस सर्वसावद्ययोगविरतिरूप सामायिकचारित्र का जो विनय है वह सामायिकचारित्रविनय है १। पूर्वदीक्षापर्याय का छेदन

છે. અનેક જન્મમાં ઉપાર્જિત આઠ પ્રકારના કર્મોના ક્ષયને માટે જે આચરણ કરાય છે તે સર્વવિરતિરૂપ ચારિત્ર છે. (तं जहा) તે પ્રકાર આ છે-(सामाइयचरित्तविणए छेदोवट्ठावणियचरित्तविणए परिहारविशुद्धिचरित्तविणए, सुहुमसंपरायचरित्तविणए, अहक्खायचरित्तविणए ) સામાયિકરૂપચારિત્રનો વિનય, છેદોપસ્થાપનીયચારિત્રનો વિનય, પરિહારવિશુદ્ધિચારિત્રનો વિનય, સૂક્ષ્મસંપરાયચારિત્રનો વિનય, તેમ જ યથાખ્યાતચારિત્રનો વિનય. સમસ્ત જીવોમાં રાગ તેમજ દ્વેષની પરિણતિનો પરિહાર (ત્યાગ) કરવો તેનુ નામ "सम" છે. પ્રતિક્ષણે અપૂર્વ અપૂર્વ કર્મનિર્જરાના કારણભૂત આ સમરૂપ વિશુદ્ધિનો લાભ થવો તેનુ નામ "आय" છે. सम અને आय એ બન્ને પદોને મેળવવાથી 'समाय' એવું પદ બની જાય છે. समाय એ જ સામયિક છે. આ સામાયિક સર્વસાવદ્યયોગવિરતિરૂપ છે. આ પ્રકારે આ સર્વસાવદ્યયોગવિરતિરૂપ

छेदोवट्ठावणियचरित्तविणए २, परिहारविसुद्धिचरित्तविणए ३, सुहुमसंपरायचरित्तविणए ४, अहक्खायचरित्तविणए ५, से तं

नयः ।१। 'छेदोवट्ठावणियचरित्तविणए' छेदोपस्थापनीयचारित्रविनयः—छेदेन=पूर्वपर्यायच्छेदेन उपस्थाप्यते=आरोप्यते यन्महाव्रतलक्षणं चारित्रं तच्छेदोपस्थापनीयम्, तच्च तच्चारित्रं च, तत्सम्बन्धी विनयः ।२। 'परिहारविसुद्धिचरित्तविणए' परिहारविशुद्धिचारित्रविनयः—परिहरणं—परिहारस्तपोविशेषः, तेन कर्मनिर्जरारूपा विशुद्धिर्यस्मिन् चारित्रे तत्परिहारविशुद्धि, तादृशं चारित्र, तत्सम्बन्धी विनयः ।३। 'सुहुमसंपरायचरित्तविणए' सूक्ष्मसंपरायचारित्रविनयः—सम्पर्येति संसारमनेनेति सम्परायः=कषायोदयः, सूक्ष्मो लोभांशावशेषः सम्परायो यत्र तत्सूक्ष्मसम्परायं, तद्रूपं यच्चारित्रं, तत्सम्बन्धी विनयः, ।४। 'अहक्खायचरित्तविणए' यथाख्यातचारित्रविनयः—याथातथ्येनाऽभिविधिना च यदाख्यातं

कर पुनः महाव्रतो का जिसमे आरोपण किया जाता है वह छेदोपस्थापनीयचारित्र है। इस चारित्रसंबंधी जो विनय है वह छेदोपस्थापनीयचारित्रविनय है २। "परिहरणं परिहारः" परिहरण अर्थात् गच्छ का परित्याग करने का नाम परिहार है, यह परिहार एक प्रकार का विशेष तप है। इससे कर्मो की निर्जरारूप विशुद्धि जिस चारित्र में होती है उसका नाम परिहारविशुद्धिचारित्र है, इस चारित्रसंबंधी जो विनय है वह परिहारविशुद्धिचारित्रविनय है ३। 'संपराय' शब्द का अर्थ कषाय है, क्यों कि इसीके वश में होकर जीव संसार में परिभ्रमण किया करता है। जिस चारित्र मे सूक्ष्म लोभ के अंश का सद्भाव पाया जाता है वह सूक्ष्मसंपरायचारित्र है। इस चारित्र के विनय करने का नाम सूक्ष्मसंपरायचारित्रविनय है ४। तीर्थंकर प्रभु ने जिस यथार्थता एवं अभिविधि के अनुसार चारित्र का प्रतिपादन किया

સામાયિક ચારિત્રનો જે વિનય તે સામાયિકચારિત્રવિનય છે. પૂર્વ દીક્ષા-પર્યાયનું છેદન કરી ફરીને મહાવ્રતોનુ જેમા આરોપણ કરાય છે તે છેદોપસ્થાપનીયચારિત્ર છે. આ ચારિત્રસંબંધી જે વિનય છે તે છેદોપસ્થાપનીય-ચારિત્રવિનય છે "परिहरणं परिहारः," પરિહરણ અર્થાત્ ગચ્છનો પરિત્યાગ કરવાનું નામ પરિહાર છે, આ પરિહાર એક પ્રકારનુ વિશેષ તપ છે. તેનાથી કર્મોની નિર્જરારૂપ વિશુદ્ધિ જે ચારિત્રમાં થાય છે તેનુ નામ પરિહારવિશુદ્ધિ-ચારિત્ર છે. આ ચારિત્રસંબંધી જે વિનય છે તે પરિહારવિશુદ્ધિચારિત્રવિનય છે. 'સંપરાય' શબ્દનો અર્થ કષાય છે, કેમકે એને જ વશ થઈને જીવ સંસારમાં પરિભ્રમણ કર્યા કરે છે. જે ચારિત્રમાં સૂક્ષ્મલોભના અંશનો સદ્ભાવ મળે છે તે સૂક્ષ્મસંપરાયચારિત્ર છે. આ ચારિત્રના વિનયનુ નામ સૂક્ષ્મસંપરાયચારિત્રવિનય

**चरित्तविणए। से किं तं मणविणए? मणविणए दुविहे पण्णत्ते, तं जहा-पसत्थमणविणए १, अप्पसत्थमणविणए २। से किं तं अप्पसत्थमणविणए? अप्पसत्थमणविणए-जे य मणे सावज्जे १,**

तीर्थकरैः कथितमकषायं चारित्रमिति तत् यथाख्यातचारित्रं, तस्य कषायरहितचारित्रस्य विनयः ।५। **'से तं चरित्तविणए'** स एष चारित्रविनयः। **'से किं तं मणविणए'** अथ कोऽसौ मनोविनयः? उत्तरमाह-**'मणविणए'**-मनोविनयः-मन्यते चिन्त्यतेऽनेनेति मनः, तत्सम्बन्धी विनयः, **'दुविहे पण्णत्ते'** द्विविधः प्रज्ञप्तः, **'तं जहा'** तद्यथा-**'पसत्थमणविणए'** प्रशस्तमनोविनयः-प्रशस्तम्=अवद्यरहितं मनोऽन्तःकरणं, तस्य विनयः ।१। **'अप्पसत्थमणविणए'** अप्रशस्तमनोविनयः-अप्रशस्तमनसो विनयः ।२। **'से किं तं अप्पसत्थमणविणए'** अथ कोऽसौ अप्रशस्तमनोविनयः? उत्तरमाह-**'अप्पसत्थमणविणए-जे**

है, इस रूप के चारित्र का नाम यथाख्यातचारित्र है। इस चारित्र का विनय करना सो यथाख्यातचारित्रविनय है ५। (**से तं चरित्तविणए**) यह सब चारित्रविनय है। प्रश्न-(**से किं तं मणविणए**) मन का विनय कितने प्रकार का है? उत्तर-(**मणविणए दुविहे पण्णत्ते**) मनोविनय दो प्रकार का कहा गया है, (**तं जहा**) जैसे-(**पसत्थमणविणए**) प्रशस्त मन का विनय-पापरहित मन को अपनाना प्रशस्तमनोविनय है। (**अप्पसत्थमणविणए**) अप्रशस्त मन का विनय करना सो अप्रशस्तमनोविनय है। प्रश्न-(**से किं तं अप्पसत्थमणविणए**) अप्रशस्तमनोविनय क्या है? उत्तर-(**अप्पसत्थमणविणए जे य मणे सावज्जे १, सकिरिए २, सकक्कसे ३, कडुए ४, णिट्ठुरे ५, फरुसे ६,**

છે. તીર્થંકર પ્રભુએ જે યથાર્થતા તેમજ અભિવિધિના અનુસાર ચારિત્રનું પ્રતિપાદન કર્યું છે તે રૂપના ચારિત્રનુ નામ યથાખ્યાતચારિત્ર છે. આ ચારિત્રનો વિનય કરવો તે યથાખ્યાતચારિત્રવિનય છે. (से तं चरित्तविणए) આ બધા ચારિત્રવિનય છે.

પ્રશ્ન-(से किं तं मणविणए) મનનો વિનય શું છે? કેટલા પ્રકારનો છે? ઉત્તર-(मणविणए दुविहे पण्णत्ते) મનોવિનય બે પ્રકારનો કહેલો છે. (तं जहा) જેમ કે-(पसत्थमणविणए) પ્રશસ્ત મનનો વિનય-પાપરહિત મનને અપનાવવું તે પ્રશસ્તમનોવિનય છે. (अप्पसत्थमणविणए) અપ્રશસ્ત મનનો વિનય કરવો તે અપ્રશસ્તમનોવિનય છે. પ્રશ્ન-(से किं तं अप्पसत्थमणविणए) અપ્રશસ્તમનોવિનય શું છે? ઉત્તર-(अप्पसत्थमणविणए-जे य मणे सावज्जे, सकिरिए, सकक्कसे, कडुए, णिट्ठुरे, फरुसे, अण्हयकरे, छेयकरे, भेयकरे परितावणकरे, उद्दवणकरे, भूओवघाइए)

**सकिरिए २, सकक्कसे ३, कडुए ४, णिट्ठुरे ५, फरुसे ६, अण्हयकरे ७, छेयकरे ८, भेयकरे ९, परितावणकरे १०, उद्दवणकरे ११, भूओवघाइए १२, तहप्पगारं मणो णो पहारेज्जा, से तं अप्पसय मणे'** यच्च मनः—'सावज्जे' सावद्यं--सपापम् ।१। **'सकिरिए'** सक्रियम्=प्राणातिपाताद्यारम्भक्रियायुक्तम् ।२। **'सकक्कसे'** सकार्कश्यम्=कर्कशतासहितम् ।३। **'कडुए'** कटुकम्—स्वस्य परस्य च कटुकरसवद् उद्वेजकम् ।४। **'णिट्ठुरे'** निष्ठुरं—दयारहितम् ।५। **'फरुसे'** परुषं—कठोरम् ।६। **'अण्हयकरे'** आस्रवकरम्=आस्रवकारि ।७। **'छेयकरे'** छेदकरम्=संयमसमाधिविनाशकम् ।८। **'भेयकरे'** भेदकरम्=समाधिविघातकम् ।९। **'परितावणकरे'** परितापनकरम्—प्राणिनां सन्तापजनकम् ।१०। **'उद्दवणकरे'** उपद्रवणकरम्—प्राणान्तकष्टकारकम् ।११। **'भूओवघाइए'** भूतोपघातिकम्-भूतानां=प्राणिनामुपघातो हिंसा, सोऽस्याऽस्तीति भूतोपघातिकम् ।१२।। **'तहप्पगारं मणो णो पहारेज्जा'** तथाप्रकारं=तादृशं मनो नो प्रधारयेत् =नो प्रवर्तयेत्—असंयमक्रियासु मनो नोदीरयेत्। **'से तं अप्पसत्थमणविणए'** स एषोऽप्रशस्तमनोविनय। **'से किं तं पसत्थमणविणए'** अथ कोऽसौ प्रशस्तमनोविनयः ?—

**अण्हयकरे ७, छेयकरे ८, भेयकरे ९, परितावणकरे १०, उद्दवणकरे ११, भूओवघाइए १२)**—जो मन सावद्य—पापसहित हो १, सक्रिय—प्राणातिपातादिक आरम्भक्रियायुक्त हो २, सकर्कश—प्रेमभाव से रहित हो ३, कटुक—अपने तथा पर के लिये कटुकरस के समान उद्वेजक हो ४, निष्ठुर—दयारहित हो ५, परुष—कठोर हो ६, आस्रवकर—आस्रवकारी हो ७, छेदकर—संयमरूपसमाधि का विध्वंसक हो ८, भेदकर—समाधिविघातक हो ९, परितापनकर—प्राणियों को सन्ताप का जनक हो १०, उपद्रवणकर—उपद्रव का कर्त्ता हो ११, एवं भूतोपघातिक—प्राणियोंका प्राणहर्त्ता हो १२, वह मन अप्रशस्त है। **(तहप्पगारं मणो णो पहारेज्जा)** ऐसे मन को असंयम क्रियाओं में प्रवृत्त नहीं करना। **(से तं अप्पसत्थमणविणए)** वह अप्रशस्तमनोविनय है। **(से किं तं पसत्थमणविणए)** प्रशस्तमनोविनय क्या है ? उत्तर—

જે મન સાવદ્ય—પાપસહિત હોય, સક્રિય—પ્રાણાતિપાતાદિક આરંભક્રિયાયુક્ત હોય, પ્રેમભાવથી રહિત હોય, પોતાના તથા પારકા માટે કડવા રસની પેઠે ઉપદ્રવજનક હોય, નિષ્ઠુર—દયારહિત હોય, પરુષ—કઠોર હોય, આસ્રવકારી હોય, સંયમરૂપ સમાધિનો વિધ્વંસક હોય, શરીરાદિકનું ભેદક હોય, પ્રાણિઓને સંતાપજનક હોય, ઉપદ્રવ કરનારું હોય, તેમ જ પ્રાણિઓનું પ્રાણ લેનારું હોય તે મન અપ્રશસ્ત છે. (तहप्पगारं मणो णो पहारेज्जा) એવાં મનને અસંયમ ક્રિયાઓમાં પ્રવૃત્ત ન કરવું, (से तं अप्पसत्थमणविणए) તે અપ્રશસ્તમનોવિનય છે. પ્રશ્ન—(से किं तं पसत्थमणविणए)

त्थमणविणए । से किं तं पसत्थमणविणए ? पसत्थमणविणए-तं चेव पसत्थं णेयव्वं। एवं चेव वइविणओवि एएहिं पएहिं चेव णेयव्वो। से तं वइविणए।

'पसत्थमणोविणए' प्रशस्तमनोविनयः 'तं चेव पसत्थं णेयव्वं' तदेव प्रशस्तं नेतव्यम्=अप्रशस्ते यद्विशेषणं तदेव प्रशस्तरूपेण परिवर्तनीयम्, यथा–प्राक् तत्र सावद्यमित्युक्तं, अत्र तु निरवद्यमिति वाच्यम्। इत्थ सर्वाणि विशेषणानि परिवर्तनीयानि, तथा सति प्रशस्तमनोविनयः। 'एवं चेव वइविणओवि एएहिं पएहिं चेव णेयव्वो' एवमेव वाग्-

(पसत्थमणविणए तं चेव पसत्थं णेयव्वं) अप्रशस्त मन के जो विशेषण हैं उनका प्रशस्तरूप में परिवर्तन करने से प्रशस्तमन होता है। जैसे–जो मन निरवद्य–पापरहित हो १, अक्रिय–प्राणातिपातादिक क्रिया से विरत हो २, अकर्कश–प्रेमसहित हो ३, अकटुक–स्वपर का उद्वेग करने वाला नहीं हो ४, अनिष्ठुर–दयायुक्त हो ५, अपरुप–कोमल हो ६, अनास्रवकर–संवरयुक्त हो ७, अच्छेदकर–छेदकर नहीं हो, अर्थात् संयमसमाधि से युक्त हो ८, अभेदकर–भेदकर नहीं हो, अर्थात् समाधियुक्त हो ९, अपरितापनकर–प्राणियो के लिये संतापकर नहीं हो, अर्थात् शान्तिजनक हो १०, अनुपद्रवकर–प्राणियों का उपद्रवकारी नहीं हो ११, और अभूतोपघातिक–प्राणियो का उपघात करनेवाला नहीं हो १२। ऐसा मन प्रशस्तमन कहा गया है। इसका जो विनय–आदर सो प्रशस्तमनोविनय है। (एवं चेव वइविणओवि एएहिं पएहिं चेव णेयव्वो) इसी प्रकार वचन का विनय भी प्रशस्त

પ્રશસ્તમનોવિનય શું છે? ઉત્તર–(पसत्थमणविणए–तं चेव पसत्थं णेयव्वं) અપ્રશસ્ત મનનાં જે વિશેષણો છે તેમનુ પ્રશસ્ત રૂપમા પરિવર્તન કરવાથી પ્રશસ્ત મન થાય છે. જેમકે–જે મન નિરવદ્ય–પાપરહિત હોય, અક્રિય–પ્રાણાતિપાતાદિક ક્રિયાઓથી વિરત હોય, અકર્કશ–પ્રેમસહિત હોય, અકટુક–સ્વપરનો ઉદ્વેગ કરવાવાળું ન હોય, અનિષ્ઠુર–દયાવાળું હોય, અપરુષ–કોમળ હોય, અનાસ્રવકર–સંવરવાળું હોય, અચ્છેદકર–છેદન કરવાવાળુ ન હોય અર્થાત્ સયમસમાધિથી યુક્ત હોય, અભેદકર–ભેદ કરનાર ન હોય, અર્થાત્ સમાધિયુક્ત હોય, અપરિતાપનકર-પ્રાણિઓને માટે સતાપકર ન હોય, અર્થાત્ શાંતિજનક હોય, અનુપદ્રવકર–પ્રાણિઓને ઉપદ્રવકારી ન હોય અને અભૂતોપઘાતિક–પ્રાણિઓનો ઉપઘાત કરનાર ન હોય, એવું મન પ્રશસ્તમન કહેવાય છે. તેનો જે વિનય–આદર તે પ્રશસ્તમનોવિનય છે. (एवं चेव वइविणओवि एएहिं पएहिं चेव णेयव्वो) એ જ

विनयोऽप्येतैः पदैरेव नेतव्यः–प्रथमं प्रशस्ताऽप्रशस्तभेदेन द्विविधं विधाय, ततः परम् अप्रशस्तवाग्विनये सावद्यादिविशेषणानि देयानि, प्रशस्तवाग्विनये निरवद्यादीनि विशेष-

और अप्रशस्त भेद से दो प्रकार का है। जो वचन सावद्य–पापसहित हो, सक्रिय–प्राणातिपातादिक की आरम्भक्रिया से युक्त हो, सकर्कश–कर्कशता से युक्त हो, कटुक–स्वपर को कटुकरस के समान उद्विग्न करने वाला हो, निष्ठुर–दयारहित हो, परुष–कठोर हो, आस्रवकर–आस्रवका उत्पादक हो, छेदकर–संयमसमाधि का विनाशक हो, भेदकर–समाधि का विघातक हो, परितापनकर–प्राणियो के लिये सन्तापजनक हो, उपद्रवणकर–प्राणियो के लिये उपद्रवकारी हो, तथा भूतोपघातिक–प्राणियों की हिंसा करने वाला हो, ऐसा वचन अप्रशस्तवचन है। इस तरह का वचन नहीं बोलना अप्रशस्तवचनविनय है। तथा–जो वचन निरवद्य–पापरहित हो, अक्रिय–प्राणातिपातादिक क्रिया से विरत हो, अकर्कश–प्रेमसहित हो, अकटुक–स्वपर के लिये उद्वेगजनक नहीं हो, अनिष्ठुर–दया–सहित हो, अपरुष–कोमल हो, अनास्रवकर–संवरयुक्त हो, अच्छेदकर–छेदकर नहीं हो अर्थात् संयमसमाधि से युक्त हो, अभेदकर–भेदकर नहीं हो, अर्थात् समाधियुक्त हो, अपरितापनकर–प्राणियों को सन्ताप देने वाला नहीं हो, अनुपद्रवणकर–प्राणियों के लिये उपद्रव करने वाला नहीं हो, और अभूतोपघातिक–प्राणियों की हिंसा करने वाला नहीं हो,

પ્રકારે વચનનો વિનય પણ પ્રશસ્ત અને અપ્રશસ્ત ભેદે કરીને બે પ્રકારનો છે. જે વચન સાવદ્ય–પાપસહિત હોય, સક્રિય–પ્રાણાતિપાતાદિકની આરંભ-ક્રિયાથી યુક્ત હોય, સકર્કશ–કર્કશતાવાળું હોય, કટુક–સ્વપરના કટુ (કડવા) રસની પેઠે ઉદ્વિગ્ન કરવાવાળું હોય, નિષ્ઠુર–દયારહિત હોય, પરુષ–કઠોર હોય, આસ્રવકર–આસ્રવનુ ઉત્પાદક હોય, છેદકર–સંયમ સમાધિનું વિનાશક હોય, ભેદકર–સમાધિનું વિઘાતક હોય, ઉપદ્રવણકર–પ્રાણિઓને માટે ઉપદ્રવકારી હોય, તથા ભૂતોપઘાતિક–પ્રાણીઓની હિંસા કરનારુ હોય, એવુ વચન અપ્ર-શસ્ત વચન છે. એવી જાતનું વચન બોલવું નહિ તે અપ્રશસ્તવચનવિનય છે. તથા જે વચન નિરવદ્ય–પાપરહિત હોય, અક્રિય–પ્રાણાતિપાતાદિક ક્રિયાથી વિરત હોય, અકર્કશ–પ્રેમસહિત હોય, અકટુક–સ્વપરના માટે ઉદ્વેગજનક ન હોય, અનિષ્ઠુર–દયાવાળું હોય, અપરુષ–કોમળ હોય, અનાસ્રવકર–સંવર-યુક્ત હોય, અચ્છેદકર–છેદકર ન હોય, અર્થાત્ સંયમ–સમાધિવાળું હોય, અભેદકર–ભેદકર ન હોય, અર્થાત્ સમાધિયુક્ત હોય, અપરિતાપનકર–પ્રાણિ-ઓને સંતાપ આપનાર ન હોય, અનુપદ્રવકર–પ્રાણિઓને માટે ઉપદ્રવ કરનારુ ન હોય અને અભૂતોપઘાતિક–પ્રાણિઓની હિંસા કરવાવાળું ન હોય એવાં

से किं तं कायविणए?, कायविणए दुविहे पण्णत्ते; तं जहा-पसत्थकायविणए १, अप्पसत्थकायविणए २। से किं तं अप्पसत्थकायविणए? अप्पसत्थकायविणए सत्तविहे पण्णत्ते; तं जहा-अणाउत्तं गमणे १, अणाउत्तं ठाणे २, अणाउत्तं

णानि योजनीयानि। 'से तं वइविणए' स एष वाग्विनयः।

कायविनयं पृच्छति-'से किं तं कायविणए' अथ कोऽसौ कायविनयः? उत्तरमाह-'कायविणए'-कायविनयः 'दुविहे पण्णत्ते' द्विविधः प्रज्ञप्तः, १ 'पसत्थकायविणए' प्रशस्तकायविनयः, २-'अप्पसत्थकायविणए' अप्रशस्तकायविनयः। 'से किं तं अप्पसत्थकायविणए' अथ कोऽसौ अप्रशस्तकायविनयः? 'अप्पसत्थकायविणए' अप्रशस्तकायविनयः 'सत्तविहे पण्णत्ते' सप्तविधः प्रज्ञप्तः। सप्तविधत्वं दर्शयति-'तं जहा' तद्यथा-'अणाउत्तं गमणे' अनायुक्तं गमनम्=ऐर्यापथिक्यामसावधानतया गमनम् ।१। 'अणाउत्तं ठाणे' अनायुक्तं स्थानम्=उपयोगाभावेन अवस्थानम्

ऐसे वचन को प्रशस्तवचन कहते है। ऐसे वचन का बोलना सो प्रशस्तवचनविनय है। (से तं वइविणए) सो यह पूर्वोक्त वचनविनय है। अब कायविनय क्या है? इस बात को शिष्य पूछता-है (से किं तं कायविणए) कायविनय क्या-कितने प्रकार का है? उत्तर-(कायविणए दुविहे पण्णत्ते) कायविनय दो प्रकार का है (पसत्थकायविणए अप्पसत्थकायविणए) एक प्रशस्तकायविनय और दूसरा अप्रशस्तकायविनय। 'से किं तं अप्पसत्थकायविणए?' अप्रशस्तकायविनय कितने प्रकार का है? 'अप्पसत्थकायविणए सत्तविहे पण्णत्ते' अप्रशस्तकायविनय सात प्रकार का है, (तं जहा) जैसे-(अणाउत्तं गमणे) अनुपयुक्त गमन-ईर्यापथ में विना उपयोग के गमन करना, (अणाउत्तं ठाणे) विना उपयोग के खडा होना, (अणाउत्तं निसीयणे)

વચનને પ્રશસ્ત વચન કહે છે. એવાં વચન બોલવા તે પ્રશસ્તવચનવિનય છે. હવે કાયવિનય શું છે? તે વાત શિષ્ય પૂછે છે-(से किं तं कायविणए) કાયવિનય શું છે-કેટલા પ્રકારના છે? ઉત્તર-(कायविणए दुविहे पण्णत्ते) કાયવિનય બે પ્રકારના છે-(पसत्थकायविणए अप्पसत्थकायविणए) એક-પ્રશસ્તકાયવિનય અને બીજો-અપ્રશસ્ત-કાયવિનય. (से किं तं अप्पसत्थकायविणए) અપ્રશસ્તકાયવિનય કેટલા પ્રકારના છે? (अप्पसत्थकायविणए सत्तविहे पण्णत्ते) અપ્રશસ્તકાયવિનય સાત પ્રકારના છે, (तं जहा) જેમ કે (अणाउत्तं गमणे) અનુપયુક્ત ગમન-ઈર્યાપથમાં વિના ઉપયોગનું ગમન કરવું, (अणाउत्तं ठाणे) વિના ઉપયોગનું ઉભા રહેવું. (अणाउत्तं निसीयणे)

निसीयणे ३, अणाउत्तं तुयट्टणे ४, अणाउत्तं उल्लंघणे ५, अणाउत्तं पल्लंघणे ६, अणाउत्तं सव्विंदियकायजोगजुंजणया ७, से तं अप्पसत्थकायविणए?। पसत्थकायविणए एवं चेव पसत्थं भाणियव्वं। से तं पसत्थकायविणए। से तं कायविणए। से किं

।२। 'अणाउत्तं निसीयणे' अनायुक्तं निषदनम्=अनुपयोगेनोपवेशनम् ।३। 'अणाउत्तं तुयट्टणे' अनायुक्तं त्वग्वर्तनम्=अनवधानतया त्वग्वर्तनं=संस्तारके पार्श्वपरिवर्तनम् ।४। 'अणाउत्तं उल्लंघणे' अनायुक्तमुल्लङ्घनम्=कर्दमादीनामतिक्रमणम् ।५। 'अणाउत्तं पल्लंघणे' अनायुक्तं प्रोल्लङ्घनम्=पुनः पुनरुल्लङ्घनम् ।६। 'अणाउत्तं सव्विंदियकायजोगजुंजणया' अनायुक्तं सर्वेन्द्रियकाययोगयोजनता=सर्वेषामिन्द्रियाणां काययोगस्य च योजनं=प्रवर्तनम्—असावधानतया सर्वेन्द्रियकाययोगव्यापारणम् ।७। 'से तं अप्पसत्थकायविणए' स एषोऽप्रशस्तकायविनयः। 'से किं तं पसत्थकायविणए' अथ कोऽसौ प्रशस्तकायविनयः? 'पसत्थकायविणए' प्रशस्तकायविनयः—'एवं चेव पसत्थं भाणियव्वं' एवमेव=अप्रशस्तवदेव प्रशस्तकायविनयो भणितव्यः=वक्तव्यः, यथा तत्राना-

विना उपयोग के बैठना, (अणाउत्तं तुयट्टणे) विना उपयोग के बिस्तर पर करवट बदलना, (अणाउत्तं उल्लंघणे) विना उपयोग के कीचड आदि का लांघना, (अणाउत्तं पल्लंघणे) विना उपयोग के वार वार कीचड आदिका उल्लंधन करना। (अणाउत्तं सव्विंदियकायजोगजुंजणया) विना उपयोग के समस्त इन्द्रियों की एवं काययोग की प्रवृत्ति करना, (से तं अप्पसत्थकायविणए) इन सभी अप्रशस्त क्रियाओं से काय को रोकना अप्रशस्तकायविनय है। प्रश्न—(से किं तं पसत्थकायविणए) प्रशस्तकायविनय क्या है? उत्तर—(पसत्थकायविणए एवं चेव भाणियव्वं से तं पसत्थकायविणए) इसी तरह प्रशस्तकायविनय है, अर्थात् अप्रशस्तकायविनय में अनुपयुक्त अवस्था से होने वाली गमनादिक क्रियाएँ रोकी

વિના ઉપયોગનું બેસવું, (अणाउत्तं तुयट्टणे) વિના ઉપયોગનું પથારીમાં પાસા બદલવાં, (अणाउत्तं उल्लंघणे) વિના ઉપયોગે કીચડ વગેરે ટપવું, (अणाउत्तं पल्लंघणे) ઉપયોગવગર વારંવાર કીચડ વિગેરેનું ઉલ્લંઘન કરવું, (अणाउत्तं सव्विंदियकायजोगजुंजणया) વિના ઉપયોગનું સમસ્ત ઇંદ્રિયોની તેમજ કાયયોગની પ્રવૃત્તિ કરવી, (से तं अप्पसत्थकायविणए) એ બધી અપ્રશસ્ત ક્રિયાઓથી કાયાને રોકવી તે અપ્રશસ્તકાયવિનય છે. પ્રશ્ન—(से किं तं पसत्थकायविणए) પ્રશસ્તકાયવિનય શું છે? ઉત્તર—(पसत्थकायविणए—एवं चेव भाणियव्व से तं पसत्थकायविणए) પ્રશસ્તકાયવિનય આ જ રીતે છે. અર્થાત્ અપ્રશસ્તકાયવિનયમાં અનુપયોગી અવ-

तं लोगोवयारविणए? लोगोवयारविणए सत्तविहे पण्णत्ते; तं जहा—अब्भासवत्तियं १, परच्छंदाणुवत्तियं २, कज्जहेओ ३, कयपडिकिरिया ४, अत्तगवेसणया ५, देसकालण्णुया ६, सव्वट्ठेसु अप्पडिलोमया ७, से तं लोगोवयारविणए। से तं विणए ॥ सू० ३० ॥

युक्तमुक्तम्, अत्र सोपयोग गमनादिकं वाच्यमित्यर्थः । 'से तं पसत्थकायविणए' स एष प्रशस्तकायविनयः । 'से तं कायविणए' स एष कायविनयः । 'से किं तं लोगोवयारविणए' अथ कोऽसौ लोकोपचारविनयः? लोकानामुपचरणं लोकोपचारः, तत्सम्बन्धी विनयो, लोकोपचारविनयः, लोकव्यवहारसाधको विनय इत्यर्थः, 'लोगोवयारविणए सत्तविहे पण्णत्ते' लोकोपचारविनयः सप्तविधः प्रज्ञप्तः,—'तं जहा' तद्यथा—'अब्भासवत्तियं' अभ्यासवृत्तिता=कलाचार्यादिसमीपस्थितिशीलता ।१। 'परच्छंदाणुवत्तियं' परच्छन्दानुवर्तिता=पराभिप्रायानुवर्तनम् ।२। 'कज्जहेओ' कार्यहेतोः=विद्यादिप्राप्तिनिमित्त—'श्रुत

जाती है और इस प्रशस्तकायविनय में ये सब ही कायसंबंधी क्रियाएँ उपयुक्त होकर की जाती है। प्रश्न—( से किं तं लोगोवयारविणए ) लोकोपचार विनय क्या—कितने प्रकार का है? उत्तर—(लोगोवयारविणए सत्तविहे पण्णत्ते) लोकव्यवहारसाधक यह लोकोपचारविनय सात प्रकार का कहा गया है, (तं जहा) वे सात सात प्रकार ये है—(अब्भासवत्तिय) अभ्यासवर्तिता—कलाचार्य आदि के समीप में स्थितिशीलता, अर्थात्—गुरु आदि के निकट रहने का स्वभाव होना, ( परच्छंदाणुवत्तिया ) परच्छन्दानुवर्तिता—गुरु आदि की आज्ञा के अनुकूल अपनी प्रवृत्ति रखना, ( कज्जहेओ ) विद्या आदि की प्राप्ति के निमित्त भक्तपान

સ્થાથી થવાવાળી ગમનઆદિક ક્રિયાઓને રોકાય છે અને આ પ્રશસ્તકાયવિનયમા તે બધી કાયસંબંધી ક્રિયાઓ ઉપયોગી અવસ્થાથી કરાય છે. પ્રશ્ન—(से किं तं लोगोवयारविणए) લોકોપચાર વિનય શું છે—કેટલા પ્રકારને છે? ઉત્તર—( लोगोवयारविणए सत्तविहे पण्णत्ते) લોકવ્યવહારસાધક આ લોકોપચારવિનય સાત પ્રકારને કહેલો છે, ( तं जहा ) તે સાત પ્રકાર આ છે—( अब्भासवत्तियं ) અભ્યાસવર્તિતા—કલાચાર્યઆદિના સમીપમા સ્થિતિશીલતા, અર્થાત્ ગુરુ આદિની પાસે રહેવાને સ્વભાવ હોવો, (परच्छंदाणुवत्तिया) પરચ્છન્દાનુવર્તિતા—ગુરુ આદિની આજ્ઞાને અનુકૂળ પોતાની પ્રવૃત્તિ રાખવી, ( कज्जहेओ ) વિદ્યા આદિની પ્રાપ્તિને નિમિત્તે

**मूलम्—से किं तं वेयावच्चे? वेयावच्चे दसविहे पण्णत्ते;**

प्रापितोऽहमनेने'-ति हेतोः शुश्रूषा। ३। 'कयपडिकिरिया' कृतप्रतिक्रिया "भक्तादिनोपचारे कृते सति प्रसन्ना गुरवो मे श्रुतदानरूपां प्रतिक्रियां-प्रत्युपकारं करिष्यन्ती"ति बुद्धया गुरूणां शुश्रूषाकरणम्।४। 'अत्तगवेसणया' आर्तगवेषणता-आर्तस्य=दुःखितस्य गवेषणता-औषधभैषज्यादिना पीडितस्योपकार इत्यर्थः।५। 'देसकालण्णुया' देशकालज्ञता=देशकालोचितार्थसम्पादनम्।६। 'सव्वट्ठेसु अप्पडिलोमया' सर्वार्थेषु अप्रतिलोमता=सर्वप्रयोजनेषु आनुकूल्यम्। 'से तं लोगोवयारविणए, से तं विणए' स एष लोकोपचारविनयः, स एष विनयः॥ सू० ३०॥

**टीका**—आभ्यन्तरतपसस्तृतीयभेदं वैयावृत्यं नाम तपः पृच्छति-'से किं तं वेयावच्चे' अथ किं तद् वैयावृत्त्यम्? साधूनामाहारौषधादिभिः साहाय्यकरणं वैयावृत्त्यम्, तत्

---

आदि लाकर देना, (कयपडिकिरिया) कृतप्रतिक्रिया-कृत उपकार का ध्यान रखकर प्रत्युपकार करने की भावना से प्रीतियुक्त व्यवहार करना, (अत्तगवेसणया) आर्त्तगवेषणता-रोगादि अवस्था से युक्त गुरु महाराज आदि का औषध-भेषज द्वारा उपचार करना, (देसकालण्णुया) देशकालज्ञता-देशकाल के अनुसार प्रवृत्ति करना, (सव्वट्ठेसु अप्पडिलोमया) सब कार्यों में अप्रतिकूलता अर्थात् अनुकूलता रखना। (से तं लोगोवयारविणए) यह सब लोकोपचारविनय है। (से तं विणए) इस प्रकार विनय तप का वर्णन जानना चाहिये॥ सू० ३०॥

'से किं तं वेयावच्चे'।

सूत्रकार अब आभ्यन्तर तप का जो तृतीय भेद वैयावृत्त्य तप है उसका

---

ખાન-પાન આદિ લાવી આપવું, (कयपडिकिरिया) કૃતપ્રતિક્રિયા-કરેલા ઉપકારને ધ્યાનમા રાખીને પ્રત્યુપકાર કરવાની ભાવનાથી પ્રીતિયુક્ત વ્યવહાર કરવો, (अत्तगवेसणया) આર્ત્તગવેષણતા-રોગાદિ અવસ્થાવાળા ગુરુમહારાજ આદિનો ઔષધ-ભેષજથી ઉપચાર કરવો, (देसकालण्णुया) દેશકાલજ્ઞતા-દેશ કાલને અનુસરીને પ્રવૃત્તિ કરવી, (सव्वट्ठेसु अप्पडिलोमया) બધાં કાર્યોમાં અપ્રતિકૂલતા અર્થાત્ અનુકૂળતા રાખવી. (से तं लोगोवयारविणए) એ બધા લોકોપચારવિનય છે. (से तं विणए) એ પ્રકારે વિનય તપનું વર્ણન જાણવુ જોઈએ. (સૂ. ૩૦)

'से किं तं वेयावच्चे' ઈત્યાદિ.

સૂત્રકાર હવે આભ્યન્તર તપનો જે ત્રીજો ભેદ વૈયાવૃત્ત્ય તપ છે તેનુ

**तं जहा—आयरियवेयावच्चे १, उवज्झायवेयावच्चे २, सेहवेयावच्चे ३, गिलाणवेयावच्चे ४, तवस्सिवेयावच्चे ५, थेरवेयावच्चे ६, साहम्मिय-**

'दसविहे पण्णत्ते' दशविधं प्रज्ञप्तम्, त जहा—तद्यथा 'आयरियवेयावच्चे' आचार्य-वैयावृत्यम्—आचार्यस्य वैयावृत्यम्=आहारादिभि शुश्रूषाकरणम् ।१। 'उवज्झायवेयावच्चे' उपाध्यायवैयावृत्यम् ।२। 'सेहवेयावच्चे' शैक्षवैयावृत्यम्—नवदीक्षितो बाल शैक्ष, तस्य संयमसाहाय्यदानम् ।३। 'गिलाणवेयावच्चे' ग्लानवैयावृत्यम्—ग्लानस्य=तपसा रुजया वा खिन्नस्य वैयावृत्यम् ।४। 'तवस्सिवेयावच्चे' तपस्विवैयावृत्यम्=निरन्तर चतुर्भक्तादि-करणशीलस्य मासक्षपणादिकरणशीलस्य वा वैयावृत्यम्, 'थेरवेयावच्चे' स्थविरवैयावृत्यम्—स्थवि-

वर्णन करते है । शिष्य पूछता है—हे भदन्त ! ( से किं तं वेयावच्चे ) वैयावृत्य तप क्या—कितने प्रकार का है? उत्तर—(वेयावच्चे दसविहे पण्णत्ते) यह वैयावृत्यतप दस प्रकार का है । आहार औषध आदि द्वारा सहायता करना वैयावृत्य है । ( तं जहा ) उसके वे दस भेद इस प्रकार से हैं—( **आयरियवेयावच्चे, उवज्झायवेयावच्चे, सेहवेयावच्चे, गिलाणवेयावच्चे, तवस्सिवेयावच्चे, थेरवेयावच्चे, साहम्मियवेयावच्चे, कुलवेयावच्चे, गणवेयावच्चे, संघवेयावच्चे, से तं वेयावच्चे** ) आचार्य महाराज का वैयावृत्य—आहार पानी आदि द्वारा सेवा करना, उपाध्याय का वैयावृत्य, शैक्ष—नवदीक्षित साधु का वैया-वृत्य, ग्लान—तपस्या से अथवा रोग से ग्लान साधु का वैयावृत्य, तपस्वी—निरन्तर चतुर्थभक्त आदि तपस्या करने वाले अथवा मासक्षपणादि की तपस्या करनेवाले तपस्वी महाराज का वैयावृत्य, स्थविर—जरा से जर्जरित अथवा ज्ञान से वृद्ध साधु का वैयावृत्य, साधर्मिक—समान

વર્ણન કરે છે. શિષ્ય પૂછે છે—હે ભદન્ત ! (से किं तं वेयावच्चे) વૈયાવૃત્ય તપ શું છે—કેટલા પ્રકારનું છે ? ઉત્તર—(वेयावच्चे दसविहे पण्णत्ते) આ વૈયાવૃત્ય તપ ૧૦ પ્રકારનું છે આહાર ઔષધ આદિ દ્વારા સહાયતા કરવી તે વૈયાવૃત્ય છે. (तं जहा) તેના એ દશ ભેદ આ પ્રકારે છે. (आयरियवेयावच्चे, उवज्झाय-वेयावच्चे, सेहवेयावच्चे, गिलाणवेयावच्चे, तवस्सिवेयावच्चे, थेरवेयावच्चे, साह-म्मियवेयावच्चे, कुलवेयावच्चे, गणवेयावच्चे, संघवेयावच्चे, से तं वेयावच्चे) આચાર્ય મહારાજનું વૈયાવૃત્ય—આહાર પાણી આદિ દ્વારા સેવા કરવી, ઉપાધ્યાયનું વૈયાવૃત્ય, શૈક્ષ—નવદીક્ષિત સાધુનું વૈયાવૃત્ય, ગ્લાન—તપસ્યાથી અથવા રોગથી ક્લાન્ત (દુર્બળ) સાધુનું વૈયાવૃત્ય, તપસ્વી—નિરંતર ચતુર્થભક્ત આદિ તપસ્યા કરવાવાળા અથવા માસક્ષપણ આદિની તપસ્યા કરવાવાળા તપસ્વી મહારાજનું વૈયાવૃત્ય, સ્થવિર—વૃદ્ધાવસ્થાથી જર્જરિત અથવા જ્ઞાનથી વૃદ્ધ સાધુનું વૈયા-

**वेयावच्चे ७, कुलवेयावच्चे ८, गणवेयावच्चे ९, संघवेयावच्चे १०, से तं वेयावच्चे। से किं तं सज्झाए? सज्झाए पंचविहे पण्णत्ते; तं जहा—वायणा १, पुच्छणा २, परियट्टणा ३, अणुप्पेहा ४,धम्म-**

रस्य=जराजीर्णस्य ज्ञानवृद्धस्य वा वैयावृत्यम् ।६। 'साहम्मियवेयावच्चे' साधर्मिकवैयावृत्यम्—समानधर्मणा वैयावृत्यम् ।७। 'कुलवेयावच्चे' कुलवैयावृत्यम्—एकाचार्यसन्ततिरूपं कुलं, तस्य वैयावृत्यम् ।८। 'गणवेयावच्चे' गणवैयावृत्यम्—कुलानां समूहो गणो—गच्छस्तस्य वैयावृत्यम् ।९। 'संघवेयावच्चे' सङ्घवैयावृत्यम्—गणानां समुदायः सङ्घः तस्य वैयावृत्यम्, ।१०। 'से तं वेयावच्चे' तदेतद् वैयावृत्यम्। 'से किं तं सज्झाए' अथ कः स स्वाध्यायः? स्वाध्यायः किंस्वरूपः कतिविधः? इति प्रश्ने—उत्तरमाह—'सज्झाए पंचविहे पण्णत्ते' स्वाध्यायः पञ्चविधः प्रज्ञप्तः, स्वाध्यायः—सु=सुष्ठु आ=मर्यादया कालवेलापरिहारेण पौरुष्यपेक्षया वा अध्यायः=श्रुतस्य अध्ययनं स्वाध्यायः। तत्पञ्चविधत्वं दर्शयति—'तं जहा' तद्यथा—'वायणा' वाचना—अध्यापनम्,

धर्मवालो का वैयावृत्य, कुल—एक आचार्य की संततिरूप मुनिजनो का वैयावृत्य, गण—कुलसमूहरूप गच्छ का वैयावृत्य और गण के समूहरूप संघका वैयावृत्य करना सो यह सब वैयावृत्य तप के भेद है। प्रश्न—(से किं तं सज्झाए) स्वाध्याय तप क्या—कितने प्रकार का है? उत्तर—(सज्झाए पंचविहे पण्णत्ते) स्वाध्याय तप पाच प्रकार का है। अकाल—वेला का परिहार करते हुए अपनी शक्ति के अनुसार श्रुत का अध्ययन करना स्वाध्याय है, उसके वे पांच प्रकार ये है-(वायणा, पुच्छणा, परियट्टणा, अणुप्पेहा, धम्मकहा) वाचना, प्रच्छना, परिवर्तना, अनुप्रेक्षा एवं धर्मकथा। (से तं सज्झाए) इस प्रकार स्वाध्याय पाच प्रकार का है। आचार्यादिक

वृत्त्य, साधर्मिक—समानधर्मवाळानु वैयावृत्त्य, कुळ—એક આચાર્યની સંતતિ રૂપ મુનિજનોનુ વૈયાવૃત્ત્ય, ગણ—કુળસમૂહરૂપ ગચ્છનું વૈયાવૃત્ત્ય, અને ગણના સમૂહરૂપ સંઘનુ વૈયાવૃત્ત્ય કરવુ, એ બધા વૈયાવૃત્ત્ય તપના ભેદ છે. પ્રશ્ન-(से किं तं सज्झाए) સ્વાધ્યાય તપ શું છે-કેટલા પ્રકારનુ છે? ઉત્તર-(सज्झाए पंचविहे पण्णत्ते) સ્વાધ્યાય તપ પાચ પ્રકારનું છે. અકાલવેળાનો ત્યાગ કરીને પોતાની શક્તિ અનુસાર શ્રુતનુ અધ્યયન કરવું તે સ્વાધ્યાય છે. તેના એ પાચ પ્રકાર આ છે-(वायणा, पुच्छणा, परियट्टणा, अणुप्पेहा, धम्मकहा) વાચના, પ્રચ્છના, પરિવર્તના, અનુપ્રેક્ષા તેમજ ધર્મકથા. (से तं सज्झाए) આ પ્રકારે સ્વાધ્યાય પાચ પ્રકારના છે. આચાર્ય આદિક પાસેથી સૂત્ર આદિક ગ્રહણ કરવાં તે 'વાચના' છે. સૂત્ર આદિને પૂછવાં તે 'પ્રચ્છના' છે. શીખાવેલાં સૂત્રનુ વિસ્મરણ ન થઇ જાય તે

**कहा ५, से तं सज्झाए। से किं तं झाणे? झाणे चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा–अट्टज्झाणे १, रुद्दज्झाणे २, धम्मज्झाणे ३, सुक्कज्झाणे ४।**

'**पुच्छणा**' प्रच्छना, ।२। '**परियट्टणा**' परिवर्तना=अधीतस्य सूत्रस्य 'मा भूद् विस्मरण'–मिति कर्मनिर्जरार्थं पुनः पुनः कस्मिंश्चिदेकस्मिन् वस्तुनि अन्तर्मुहूर्तमात्रकालं चित्तं स्थिरीकृत्य चिन्तनं, तत्पठनं, सूत्रस्य गुणनमित्यर्थः ।३। '**अणुप्पेहा**' अनुप्रेक्षा–सूत्रवदर्थेऽपि विस्मरणं सम्भवति, अतः सोऽपि परिभावनीय इत्यनुप्रेक्षणं–चिन्तनिकेत्यर्थः ।४। '**धम्मकहा**' धर्मकथा–धर्मस्य=श्रुतरूपस्य या कथा=व्याख्या सा ।५। '**से तं सज्झाए**' स एष स्वाध्यायः । '**से किं तं झाणे**' अथ किं तद् ध्यानम्? '**झाणे चउव्विहे पण्णत्ते**' ध्यानं चतुर्विधं प्रज्ञप्तम्, **तं जहा**–तद्यथा–१–'**अट्टज्झाणे**' आर्तध्यानम्–ऋत=दुःखं, तस्य निमित्तं, यद्वा–तत्र भवम्–आर्त्तं तच्च तद् ध्यानम्, आर्तस्य=दुःखितस्य वा ध्यानम्–आर्तध्यानम्–मनोज्ञामनोज्ञवस्तुसंयोगवियोगादिनिबन्धनचित्तवैक्लव्यरूपम्। **तथा चोक्तम्**—

से सूत्रादिक का ग्रहण करना '**वाचना**' है । सूत्र आदि का पूछना '**प्रच्छना**' है । अधीत सूत्र का विस्मरण न हो जाय, इस विचार से पुनः पुनः उसकी आवृत्ति करना '**परिवर्त्तना**' है। सूत्रार्थ का पुनः पुनः चिन्तन करना '**अनुप्रेक्षा**' है। तथा धर्म की कथा करना–'**धर्मकथा**' है । प्रश्न–(**से किं तं झाणे**) ध्यानका क्या स्वरूप है–वह कितने प्रकार है? उत्तर–(**झाणे चउव्विहे पण्णत्ते**) ध्यान के चार प्रकार है, (**तं जहा**) वे चार प्रकार ये है–(**अट्टज्झाणे, रुद्दज्झाणे, धम्मज्झाणे, सुक्कज्झाणे**) आर्त्तध्यान, रौद्रध्यान, धर्मध्यान, एवं शुक्लध्यान । इनमें दुःख के निमित्त अथवा दुःख में जो ध्यान होता है वह आर्त्तध्यान है, मनोज्ञ एवं अमनोज्ञ वस्तु के संयोग और वियोग में जो एक प्रकार की चित्त में विकलता होती है वह आर्त्तध्यान है। कहा भी है–

વિચારથી ફરી ફરીને તેની આવૃત્તિ કરવી તે 'પરિવર્ત્તના' છે. સૂત્રના અર્થનું ફરી ફરીને ચિંતન કરવું તે 'અનુપ્રેક્ષા' છે. તથા ધર્મની કથા કરવી 'ધર્મ-કથા' છે. પ્રશ્ન-(से कि तं झाणे) ધ્યાનનુ શું સ્વરૂપ છે? તે કેટલા પ્રકારનું છે? ઉત્તર-(झाणे चउव्विहे पण्णत्ते) ધ્યાનના ચાર પ્રકાર છે, (तं जहा) તે આ છે-(अट्टज्झाणे, रुद्दज्झाणे, धम्मज्झाणे, सुक्कज्झाणे,) આર્તધ્યાન, રૌદ્રધ્યાન, ધર્મ-ધ્યાન તેમજ શુકલધ્યાન. તેમા દુઃખને નિમિત્તે અથવા દુઃખને સમયે જે ધ્યાન થાય છે તે આર્ત્તધ્યાન છે, મનોજ્ઞ તેમજ અમનોજ્ઞ વસ્તુના સંયોગથી તેમજ વિયોગથી જે એક પ્રકારની ચિત્તમાં વિકળતા થાય છે તે આર્ત્તધ્યાન છે. કહ્યું પણ છે—

राज्योपभोगशयनासनवाहनेषु, स्त्रीगन्धमाल्यमणिरत्नविभूषणेषु ।
इच्छाभिलाषमतिमात्रमुपैति मोहाद्, ध्यानं तदार्त्तमिति संप्रवदन्ति तज्ज्ञाः ॥१॥

२–'रुद्दज्झाणे' रौद्रध्यानम्–रोदयत्यपरान् इति रुद्रः=प्राण्युपघातादिपरिणतो जीवस्तस्य कर्म रौद्रम्–हिंसाद्यतिक्रूरतारूपं, तद्रूपं ध्यानं रौद्रध्यानम् । तदुक्तम्—

संछेदनैर्दहनभञ्जनमारणैश्च, बन्धप्रहारदमनैर्विनिकृन्तनैश्च ।
यो याति रागमुपयाति च नानुकम्पां, ध्यानं तु रौद्रमिति तत्प्रवदन्ति तज्ज्ञाः ॥२॥ इति ।

---

राज्योपभोगशयनासनवाहनेषु, स्त्रीगन्धमाल्यमणिरत्नविभूषणेषु ।
इच्छाभिलाषमतिमात्रमुपैति मोहाद्, ध्यानं तदार्त्तमिति संप्रवदन्ति तज्ज्ञाः" ॥ १ इति॥

राज्य का उपभोग, पलङ्ग आदि सुकोमल शय्या, सुन्दर आसन, घोड़े हाथी आदि वाहन, मनोहारिणी स्त्रियाँ, इत्र आदि सुगन्धित वस्तुएँ, सुन्दर सुन्दर पुष्पो की सुलल्ति मालायें, तथा मणिरत्नमय आभूषण, इन सबो में मोह के कारण जो मनुष्य की उत्कट अभिलाषा है, उस अभिलाषा को विज्ञ जन '**आर्त्तध्यान**' कहते है ॥ १ ॥

"**रोदयति अपरान् इति रुद्रः**" जो दूसरों को रुलाता है वह रुद्र है, अर्थात् प्राणियों की उपघात आदि क्रिया में लवलीन जो जीव है वह रुद्र है, रुद्र का जो कर्म वह रौद्र है। उसका हिंसादिक अतिक्रूरतारूप जो ध्यान है वह रौद्रध्यान है ॥ कहा भी है—

**संछेदनैर्दहनभञ्जनमारणैश्च बन्धप्रहारदमनैर्विनिकृन्तनैश्च ।**
**यो याति रागमुपयाति च नानुकम्पां, ध्यानं तु रौद्रमिति तत्प्रवदन्ति तज्ज्ञाः ॥२॥**

---

राज्योपभोगशयनासनवाहनेषु स्त्रीगन्धमाल्यमणिरत्नविभूषणेषु ।
इच्छाभिलाषमतिमात्रमुपैति मोहाद्, ध्यानं तदार्त्तमिति संप्रवदन्ति तज्ज्ञाः ॥१॥

રાજ્યનો ઉપભોગ, પલંગ આદિ સુકોમલ શય્યા, સુંદર આસન, ઘોડા હાથી આદિ વાહન, મનોહારિણી સ્ત્રીઓ, અત્તર આદિ સુગંધિત વસ્તુઓ, સુંદર સુંદર પુષ્પોની બનાવેલી સુલલિત માળાઓ, તથા મણિરત્નમય આભૂષણો, આ બધાંમાં મોહને કારણે જે મનુષ્યની ઉત્કટ અભિલાષા છે તે અભિલાષાને વિદ્વાનો 'આર્ત્તધ્યાન' કહે છે. (૧)

"रोदयति अपरान् इति रुद्रः" જે બીજાંને રોવરાવે તે રુદ્ર છે, અર્થાત્ પ્રાણિઓની ઉપઘાત (મારવું) આદિ ક્રિયાઓમાં લવલીન રહેતો જે જીવ છે તે રુદ્ર છે, રુદ્રનું જે કર્મ તે રૌદ્ર છે. તેનું હિંસાદિક અતિક્રૂરતા-રૂપ જે ધ્યાન છે તે રૌદ્રધ્યાન છે. કહ્યું પણ છેઃ–

संछेदनैर्दहनभञ्जनमारणैश्च, बन्धप्रहारदमनैर्विनिकृन्तनैश्च ।
यो याति रागमुपयाति च नानुकम्पां, ध्यानं तु रौद्रमिति तत्प्रवदन्ति तज्ज्ञाः ॥२॥

३-'धम्मज्झाणे' धर्मध्यानम्-सर्वज्ञाऽऽज्ञाद्यनुचिन्तनम् । उक्तञ्च---

" सूत्रार्थसाधनमहाव्रतधारणेषु,
बन्धप्रमोक्षगमनागमनेषु चिन्ता ।
पञ्चेन्द्रियव्युपरमश्च दया च भूते,
ध्यानं तु धर्ममिति संप्रवदन्ति तज्ज्ञाः" ॥३॥ इति ।

---

जो मनुष्य छेदन, दहन अर्थात् जलाना, भञ्जन—तोडना-भांगना मारण—प्राणरहित करना, बाँधना, प्रहार करना, दमन करना, काटना आदि क्रियाओं में आनन्द मानता है, प्राणियों पर जिसको अनुकम्पा नहीं होती है, ऐसे मनुष्य की उन दुष्प्रवृत्तियों को विद्वान 'रौद्रध्यान' कहते है ॥ २ ॥

सर्वज्ञ की आज्ञा आदि का अनुचिन्तनरूप धर्मध्यान है । कहा भी है—

**सूत्रार्थसाधनमहाव्रतधारणेषु, बन्धप्रमोक्षगमनागमनेषु चिन्ता ।**
**पञ्चेन्द्रियव्युपरमश्च दया च भूते, ध्यानं तु धर्ममिति संप्रवदन्ति तज्ज्ञाः ॥३॥**

सूत्र और सूत्र के अर्थ का चिन्तन करना, साधन का चिन्तन करना, अर्थात् साधूपकरण की प्रतिलेखना करने में तत्परता रखना, महाव्रत धारण का चिन्तन करना अर्थात् महाव्रत जो धारण किये हे उनमें कोई अतिचार न लगे इसके लिये सर्वदा प्रयत्नशील होना , बन्ध और मोक्ष के स्वरूप का चिन्तन करना, 'चतुर्गतिक संसार में जीव का गमनागमन किस कारण से होता है' उसका चिन्तन करना, पाँचों इन्द्रियों का निग्रह करना,

---

જે મનુષ્ય છેદન, દહન અર્થાત્ બાળવું, ભંજન=તોડવું-ભાંગવું, મારણ-પ્રાણરહિત કરવું, બાંધવું, પ્રહાર કરવો, દમન કરવું, કાપવું આદિ ક્રિયાઓમાં આનંદ માને છે, પ્રાણિઓ ઉપર જેને દયા નથી આવતી એવા મનુષ્યના એ દુષ્પ્રવૃત્તિઓને વિદ્વાનો 'રૌદ્રધ્યાન' કહે છે. (૨)

સર્વજ્ઞની આજ્ઞા આદિનું અનુચિંતનરૂપ ધર્મધ્યાન છે. કહ્યું પણ છે -

सूत्रार्थसाधनमहाव्रतधारणेषु, बन्धप्रमोक्षगमनागमनेषु चिन्ता ।
पञ्चेन्द्रियव्युपरमश्च दया च भूते, ध्यानं तु धर्ममिति संप्रवदन्ति तज्ज्ञाः ॥३॥

સૂત્ર અને સૂત્રના અર્થનું ચિંતન કરવું, સાધનનું ચિંતન કરવું અર્થાત્ સાધુના ઉપકરણની પ્રતિલેખના કરવામાં તત્પરતા રાખવી, મહાવ્રત ધારણનું ચિંતન કરવું, અર્થાત્ મહાવ્રત જે ધારણ કર્યાં છે તેમાં કોઇ અતિચાર ન લાગે તે માટે સર્વદા પ્રયત્નશીલ રહેવું, બંધ અને મોક્ષના સ્વરૂપનું ચિંતન કરવું, ચતુર્ગતિક સંસારમાં જીવનું આવવા-જવાનું શું કારણથી થાય છે?

४-'सुक्कज्झाणे' शुक्लध्यानम्—शुच=शोकं क्लमयति=अपनयतीति शुक्लं- भवक्षयकारणं, शुक्लं च तद् ध्यानं शुक्लध्यानम्। तथा चोक्तम्—

"यस्येन्द्रियाणि विषयेषु पराङ्मुखानि,
संकल्पकल्पनविकल्पविकारदोषैः।
योगैः स च त्रिभिरहो निभृतान्तरात्मा,
ध्यानोत्तमं प्रवरशुक्लमिदं वदन्ति ॥ २ ॥ इति।

---

एवं सभी प्राणियों पर दया रखना, इस प्रकार की आत्मा की शुभ प्रवृत्ति को विज्ञ जन 'धर्मध्यान' कहते है ॥३॥

"शुचं-शोकं क्लमयतीति शुक्लं" शोक को जो नष्ट करे वह 'शुक्ल' है। "शुक्लं च तद् ध्यानं च शुक्लध्यानं" शुक्लरूप जो ध्यान वह शुक्लध्यान है। अर्थात् जो भवक्षय का कारण होता है अथवा जिससे शोक का अपनयन होता है, वह शुक्लध्यान है। कहा भी है—

**यस्येन्द्रियाणि विषयेषु पराङ्मुखानि, संकल्पकल्पनविकल्पविकारदोषैः।**
**योगैः स च त्रिभिरहो निभृतान्तरात्मा, ध्यानोत्तमं प्रवरशुक्लमिदं वदन्ति ॥**

जिनकी इन्द्रियां विषयप्रवृत्तियों से रहित है, जो संकल्प-विकल्प-जनित विकार-दोषों से वर्जित है, कायिक, वाचिक, मानसिक तीनों योगों को वश कर लेने के कारण जिनकी आत्मा निश्चल है, ऐसे महात्माओं की प्रशस्त परिणति को विज्ञ जन 'शुक्लध्यान' कहते है ॥४॥

---

तेनुं चिंतन करवुं, पांचेय इंद्रियोनो निग्रह करवो, तेम ज बधां प्राणिओ उपर दया राखवी, ए प्रकारनी आत्मानी शुभ प्रवृत्तिने विद्वानो 'धर्मध्यान' कहे छे.

"शुचं-शोकं क्लमयतीति शुक्लं" शोकनो जे नाश करे ते 'शुक्ल' छे. "शुक्लं च तद् ध्यानं च-शुक्लध्यानं" शुक्लरूप जे ध्यान ते शुक्लध्यान छे, अर्थात् जे भवक्षयनुं कारण होय छे अथवा जेनाथी शोकनुं अपनयन थाय छे ते शुक्लध्यान छे. कह्युं पण छे—

यस्येन्द्रियाणि विषयेषु पराङ्मुखानि, संकल्पकल्पनविकल्पविकारदोषैः।
योगैः स च त्रिभिरहो निभृतान्तरात्मा, ध्यानोत्तमं प्रवरशुक्लमिदं वदन्ति ॥१॥

जेनी इंद्रियो विषयप्रवृत्तिथी रहित छे, जे संकल्पविकल्पजनित विकारदोषोथी वर्जित छे, कायिक, वाचिक, मानसिक, त्रणेय योगोने वश करी लेवाना कारणे जेनो आत्मा निश्चल छे, एवा महात्माओनी प्रशस्त परिणतिने विद्वानो 'शुक्लध्यान' कहे छे (१).

# अट्टज्झाणे चउव्विहे पण्णत्ते; तं जहा—अमणुण्णसंपओग-संपउत्ते तस्स विप्पओगसइसमण्णागए यावि भवइ १, मणुण्ण-

एषु चतुर्विधेषु ध्यानेषु प्रथममार्तध्यान चतुर्विधमाह—'अट्टज्झाणे चउव्विहे पण्णत्ते' आर्तध्यानं चतुर्विधं प्रज्ञप्तम्, 'तं जहा' तद्यथा—१—'अमणुण्णसंपओगसंपउत्ते तस्स विप्पओगसइसमण्णागए यावि भवइ' अमनोज्ञसम्प्रयोगसम्प्रयुक्तस्तस्य विप्रयोगस्मृतिसमन्वागतश्चापि भवति—अमनोज्ञ'=अनिष्टो य' शब्दादि', तस्य सम्प्रयोगो=योगस्तेन सम्प्रयुक्तो यः स तथाविधः सन् तस्य अमनोज्ञशब्दादेः विप्रयोगस्मृतिः=वियोगचिन्ता, तया समन्वागत'=अनुगतश्चापि भवति, एतद् आर्तध्यानम्, ध्यानध्यानवतोरभेदोपचाराद् ध्यानवानपि ध्यान-मुच्यते, एवमग्रेऽपि बोध्यम् । २—मणुण्णसंपओगसंपउत्ते तस्स अविप्पओगसइस-

इन चार प्रकार के ध्यानों में प्रथम जो आर्त्तध्यान है, वह चार प्रकार का है, इसी बात को बताने के लिये सूत्रकार कहते है—(अट्टज्झाणे चउव्विहे पण्णत्ते) आर्त्तध्यान ४ प्रकार का कहा गया है। (तं जहा) वह इस प्रकार से—(अमणुण्णसंपओगसंपउत्ते तस्स विप्पओगसइसमण्णागए यावि भवइ) अमनोज्ञ—अनिष्ट शब्दादि के संबंध होने पर उसके विप्रयोग—दूर करने के लिये जो वारवार विचार किया जाता है वह अनिष्टसंयोगज आर्त्तध्यान है। यहां ध्याता को जो ध्यान कहा है वह ध्यान और ध्यान-वान् में अभेद के उपचार से जानना चाहिये। इसी तरह से आगे के ध्यानों में भी अभेद का उपचार जानना। (मणुण्णसंपओगसंपउत्ते तस्स अविप्पओगसइसमण्णागए यावि

આ ચારેય પ્રકારનાં ધ્યાનોમાથી પ્રથમ જે આર્ત્તધ્યાન છે તે ચાર પ્રકારનું છે, એ વાત કહેવા માટે સૂત્રકાર કહે છે-(अट्टज्झाणे चउव्विहे पण्णत्ते) આર્ત્તધ્યાન ચાર પ્રકારના કહેલા છે (तं जहा) તે આ પ્રકારે છે-(अमणुण्णसंपओगसंपउत्ते तस्स विप्पओगसइसमण्णागए यावि भवइ) અમનોજ્ઞ-અનિષ્ટ શબ્દાદિકનો સંબંધ થતાં તેને વિપ્રયોગ-દૂર કરવા માટે જે વારંવાર વિચાર કરવામાં આવે છે તે અનિષ્ટસંયોગજન્ય આર્ત્તધ્યાન છે. અહીં ધ્યાન કરનારને જે ધ્યાન કહેવામાં આવ્યું છે તે ધ્યાન અને ધ્યાનવાન્માં અભેદ (એકતા)ના ઉપચારથી થયો છે તેમ જાણવું જોઈએ, એ જ રીતે આગળના ધ્યાનોમાં પણ અભેદનો ઉપચાર જાણી લેવો. (मणुण्णसंपओगसंपउत्ते तस्स अविप्पओगसइसमण्णागए यावि भवइ) મનોજ્ઞ-ઇષ્ટ શબ્દાદિક વિષયોની

संपओगसंपउत्ते तस्स अविप्पओगसइसमण्णागए यावि भवइ २, आयंकसंपओगसंपउत्ते तस्स विप्पओगसइसमण्णागए यावि भवइ ३, परिजूसियकामभोगसंपउत्ते तस्स अविप्पओग-सइसमण्णागए यावि भवइ ४। अट्टस्स णं झाणस्स चत्तारि ल-

मण्णागए यावि भवइ' मनोज्ञसम्प्रयोगसम्प्रयुक्तस्तस्याऽविप्रयोगस्मृतिसमन्वागतश्चापि भवति–मनोज्ञः=इष्टो यः शब्दादिः, तस्य सम्प्रयोगः=संयोगस्तेन सम्प्रयुक्तः सन् तस्य=मनोज्ञशब्दादेरविप्रयोगस्मृतिः=अवियोगचिन्ता, तया समन्वागतः=संयुक्तश्चापि भवति। ३ – 'आयंकसंपयोगसंपउत्ते तस्स विप्पओगसइसमण्णागए यावि भवइ' आतङ्कसम्प्रयोगसम्प्रयुक्तस्तस्य विप्रयोगस्मृतिसमन्वागतश्चापि भवति–आतङ्को रोगः, तस्य सम्प्रयोगः=संयोगः, तेन सम्प्रयुक्तः सन् तस्याऽतङ्कस्य विप्रयोगस्मृतिः=वियोगचिन्ता, तया समन्वागतश्चापि भवति। ४–'परिजूसियकामभोगसंपओगसंपउत्ते तस्स अविप्पओग-सइसमण्णागए यावि भवइ' परिजुष्टकामभोगसम्प्रयोगसम्प्रयुक्तस्तस्याऽविप्रयोगस्मृति-समन्वागतश्चापि भवति, परि=समन्तात्, जुष्टः=सेवितः–प्रीतो वा यः कामभोगस्तस्य सम्प्रयोगेण सम्प्रयुक्तः सन्, तस्य कामभोगस्य अविप्रयोगस्मृतिः=अवियोगचिन्ता तया, समन्वागतः=संयुक्तश्चापि भवति। 'अट्टस्स णं झाणस्स चत्तारि लक्खणा पण्णत्ता' आर्तस्य खलु ध्या-

भवइ) मनोज्ञ–इष्ट शब्दादिक विषयों की सम्प्राप्ति होने पर उनके अविप्रयोग–वियोग न होने का वारवार चिन्तवन करना सो वह इष्टसंयोगज आर्त्तध्यान है। (आयंकसंपओग-संपउत्ते तस्स विप्पओगसइसमण्णागए यावि भवइ) आतंक–रोग के सम्प्रयोग–संयोग होने पर जो उसके वियोग होने का वारवार चिन्तवन करना है वह वेदनाजन्य आर्त्त-ध्यान है। (परिजूसियकामभोगसंपओगसंपउत्ते तस्स अविप्पओगसइसमण्णागए यावि भवइ) सेवित कामभोगों की प्राप्ति होने पर उनका कभी भी वियोग न हो ऐसा विचार करना सो यह चौथा आर्त्तध्यान है। (अट्टस्स णं जाणस्स चत्तारि लक्खणा

संप्राप्ति थता तेमनो अविप्रयोग-वियोग न थाय तेनु वारवार चिंतवन करवुं ते ईष्टसंयोगजन्य आर्त्तध्यान छे (आयंकसंपओगसंपउत्ते तस्स विप्पओग सइसमण्णागए यावि भवइ) आतंक-रोगनो संप्रयोग-संयोग थता जे तेनो वियोग थवानु वारंवार चिंतवन करे छे ते वेदनाजन्य आर्त्तध्यान छे. (परिजूसियकामभोगसंपओगसंपउत्ते तस्स अविप्पओगसइसमण्णागए यावि भवइ) सेवन करेल कामभोगोनी प्राप्ति थता तेमनो कदी पण वियोग न थाय

क्खणा पण्णत्ता; तं जहा—कंदणया १, सोयणया २, तिप्पणया ३, विलवणया ४। रुद्दज्झाणे चउव्विहे पण्णत्ते; तं जहा—हिंसाणुबंधी १, मोसाणुबंधी २, तेणाणुबंधी ३, सारक्खणा-

नस्य चत्वारि लक्षणानि प्रज्ञप्तानि, 'तं जहा' तद्यथा—१ 'कंदणया' क्रन्दनता=सशब्दाऽश्रुप्रक्षेपरूपा। २ 'सोयणया' शोचनता=मानसग्लानिरूपा। ३ 'तिप्पणया' तेपनता=निःशब्दाश्रुमोचनम्। ४ 'विलवणया' विलपनता=पुनः पुनः स्वकृताशुभकर्मणामुच्चारणम्, "कीदृश पूर्वजन्मनि मया दुष्कृतमाचरितं यत्फलमधुनेदृश मया लभ्यते" इत्यादिरूपम्। 'रुद्दज्झाणे चउव्विहे पण्णत्ते' रौद्रध्यान चतुर्विधं प्रज्ञप्तम्, 'तं जहा' तद्यथा—१ 'हिंसाणुबंधी' हिंसानुबन्धि—हिंसा=परप्राणहरणरूपामनुबध्नाति=करोतीति हिंसानुबन्धि, २—'मोसा-

पण्णत्ता) इस आर्तध्यान के ४ चार लक्षण बतलाए गये है, (तं जहा) वे इस प्रकार है—(कंदणया सोयणया तिप्पणया विलवणया) क्रन्दनता—शब्दसहित आंसुओं को निकालते हुए रोना (१)। शोचनता—मानसिक ग्लानि करना (२)। तेपनता—ऐसा रोदन हो कि जिसमें रोने की आवाज आवे नहीं, परन्तु आँसू निकलते रहे (३)। विलपनता-वारंवार अपने किये हुए कर्मों का जिसमें चिन्तवन करते हुए उच्चारण हो, जैसे—मैंने पूर्वजन्म मे कैसे पाप किये, जिसका फल मुझे भोगना पड रहा है, ये सब आर्तध्यान के लक्षण है। इन लक्षणों से आर्त्तध्यान की सत्ता जानी जाती है। (रुद्दज्झाणे चउव्विहे पण्णत्ते) रौद्रध्यान चार प्रकार का कहा गया है, जैसे—(हिंसाणुबंधी, मोसाणुबंधी, तेणाणुबंधी, सारक्खणाणुबंधी) जिस ध्यान मे हिंसा का अनुबंध हो वह हिंसानुबंधी रौद्रध्यान है।

એવો વિચાર કરવો તે આ ચોથુ આર્તધ્યાન છે (अट्टस्स णं झाणस्स चत्तारि लक्खणा पण्णत्ता) આ આર્તધ્યાનના ચાર લક્ષણ બતાવેલા છે, (तं जहा) તે આ પ્રકારે છે—(कंदणया सोयणया तिप्पणया विलवणया) ક્રન્દન—શબ્દ સાથે આંસુઓ પાડતા રડવુ (૧), શોચન—માનસિક ગ્લાનિ કરવી (૨), તેપન—એવુ રોદન થાય કે જેમા રોવાનો અવાજ આવે નહિ, પરતુ આસુ વહેતાં રહે (૩), વિલપન—વારંવાર પોતે કરેલા કર્મોનું ચિતવન કરતા મોટેથી વિલાપ કરવો, જેમકે—મે પૂર્વ જન્મમા કેવા પાપ કર્યા કે જેનુ ફળ મારે ભોગવવુ પડે છે આ બધા આર્તધ્યાનના લક્ષણ છે. એ લક્ષણોથી આર્તધ્યાનની સત્તા જાણી લેવાય છે. (रुद्दज्झाणे चउव्विहे पण्णत्ते) રૌદ્રધ્યાન ચાર પ્રકારનુ કહેલુ છે, (तं जहा) જેમ કે-(हिंसाणुबंधी, मोसाणुबंधी, तेणाणुबंधी, सारक्खणाणुबंधी)

**णुबंधी ४। रुद्दस्स णं झाणस्स चत्तारि लक्खणा पण्णत्ता, तं जहा- उसण्णदोसे १, बहुदोसे २, अण्णाणदोसे ३, आमरणंतदोसे**

**णुबंधी'** मृषानुबन्धि—मृषा=असत्यं, तदनुबध्नाति=करोतीति मृषानुबन्धि, असत्यवचनेन धर्मोपघातकुमार्गप्ररूपणानिन्दादिकारकमित्यर्थः। ३—**'तेणाणुबंधी'** स्तैन्यानुबन्धि=अदत्तादानकारकम्, ४ **'सारक्खणाणुबंधी'** सरक्षणानुबन्धि—विषयसाधनस्य धनादिकस्य संरक्षणं अनुबन्धः= सम्बन्धोऽस्यास्तीति तत् संरक्षणानुबन्धि। **'रुद्दस्स णं झाणस्स चत्तारि लक्खणा पण्णत्ता'** रौद्रस्य खलु ध्यानस्य चत्वारि लक्षणानि प्रज्ञप्तानि, **'तं जहा'** तद्यथा -**'उसण्णदोसे'** बाहुल्यदोषः—अनुपरततया बाहुल्येन=प्राचुर्येण दोषो हिंसाऽनृताऽदत्ताऽऽदानसंरक्षणानामन्यतमः—बाहुल्यदोषः। **'उसन्न'** इति बाहुल्यार्थे देशीयशब्दः ।१। तथा—**'बहुदोसे'** बहुदोषः—बहुषु हिंसादिषु प्रवृत्तिलक्षणो दोषो बहुदोषः ।२। **'अण्णाणदोसे'** अज्ञानदोषः—अज्ञानात्=कुशास्त्रादिसंस्कारात् हिंसादिषु अधर्मस्वरूपेषु धर्मबुद्ध्या प्रवृत्तिलक्षणो दोषोऽज्ञानदोषः।३।

जिस ध्यान में मृषा—झूठ का अनुबंध हो वह मृषानुबंधी रौद्रध्यान है। जिस ध्यान में चोरी करने का अनुबंध हो वह स्तैन्यानुबंधी रौद्रध्यान है। जिस ध्यान में विषय के साधनभूत धनादिक के संरक्षण का अनुबंध है वह संरक्षणानुबंधी रौद्रध्यान है। (**रुद्दस्स णं झाणस्स चत्तारि लक्खणा पण्णत्ता**) इस रौद्रध्यान के ४ लक्षण कहे हुए है, जैसे—(**उसण्णदोसे, बहुदोसे, अण्णाणदोसे आमरणंतदोसे**) हिंसा, झूठ, चोरी आदि पापकर्मों मे से किसी एक पापकर्म में जो बाहुल्येन प्रवृत्ति होना सो **उसन्नदोष** है। हिंसादिक सभी पाप कर्मों मे जो बाहुल्येन प्रवृत्ति होना सो **बहुदोष** है। कुशास्त्रादिक के संस्कारजन्य अज्ञान से हिंसादिको में धर्मबुद्धि से प्रवृत्त होना सो **अज्ञानदोष** है। मरणपर्यन्त पश्चात्ताप नहीं करते हुए हिंसा-

જે ધ્યાનમા હિંસાનો અનુબંધ હોય તે હિંસાનુબંધી રૌદ્રધ્યાન છે. જે ધ્યાનમાં મૃષા—જુઠાણાનો અનુબંધ હોય તે મૃષાનુબંધી રૌદ્રધ્યાન છે જે ધ્યાનમાં ચોરી કરવાનો અનુબંધ હોય તે સ્તૈન્યાનુબંધી રૌદ્રધ્યાન છે. જે ધ્યાનમાં વિષયના સાધનભૂત ધન આદિકના સંરક્ષણનો અનુબંધ છે તે સંરક્ષણાનુબંધી રૌદ્રધ્યાન છે. (रुद्दस्स णं झाणस्स चत्तारि लक्खणा पण्णत्ता) આ રૌદ્રધ્યાનના ચાર લક્ષણ કહેલા છે,(तं जहा) જેમ કે—(उसण्णदोसे, बहुदोसे, अण्णाणदोसे, आमरणंतदोसे) હિંસા, જુઠાણુ, ચોરી, આદિ પાપકર્મોમાથી કોઇ પણ એક પાપકર્મમા જે બળવાન પ્રવૃત્તિ થવી તે ઉસન્નદોષ છે. હિંસાદિક બધાં પાપકર્મોમાં જે બળવાન પ્રવૃત્તિ થવી તે બહુદોષ છે કુશાસ્ત્રાદિકના સંસ્કારજન્ય અજ્ઞાનથી હિંસાદિકમા ધર્મબુદ્ધિથી પ્રવૃત્તિ થવી તે અજ્ઞાનદોષ છે. મરણપર્યન્ત પશ્ચાત્તાપ કર્યા વગર હિંસાદિક કર્મોમા

४। धम्मज्झाणे चउव्विहे चउप्पडोयारे पण्णत्ते; तं जहा-आणा-

'आमरणंतदोसे' आमरणान्तदोषः-मरणमेव अन्तो मरणान्तः, मरणपर्यन्तम् असञ्जातानुतापस्य कालशौकरिकादेरिव या हिंसादिषु प्रवृत्तिः सा प्रवृत्तिरेव आमरणान्तदोषः ।४। एषु ध्यानेषु आर्तरौद्रे त्याज्ये धर्मशुक्ले तु ग्राह्ये । 'धम्मज्झाणे चउव्विहे चउप्पडोयारे पण्णत्ते' धर्मध्यानं चतुर्विधं चतुष्प्रत्यवतारं प्रज्ञप्तम् । धर्मध्यानं चतुर्विधं-चतस्रो विधाः=स्वरूपलक्षणालम्बनानुप्रेक्षारूपाः प्रकारा यस्मिन् तत् तथोक्तम् । चतुष्प्रत्यवतारं च-स्वरूपादिषु एकैकस्य चतुष्प्रकारतया प्रत्यवतारो=विचारणीयत्वेन अवतरणं यस्मिन् तत्, प्रत्येकं चतुर्विधमित्यर्थः, प्रज्ञप्तम् । तत्र स्वरूपस्य चातुर्विध्यमाह-तद्यथा-'आणाविचए' आज्ञाविचयम्-आज्ञा=जिनप्रवचनं, तस्या विचयः=पर्यालोचनं यत्र तत्तथा, आज्ञागुणाऽनुचिन्तनमित्यर्थः, आज्ञामेवं चिन्तयेत्-आज्ञा भगवतः सर्वज्ञस्य पूर्वापरविशुद्धा निरवशेषजीवकायहिताऽनवद्या महार्था महानुभावा निपुणजन-

दिकों में प्रवृत्तिशील रहना सो आमरणान्तदोष है । इन चार ध्यानों में आर्त्त-रौद्र-ध्यान छोड़ने योग्य है, और धर्मध्यान एवं शुक्लध्यान ये दो ध्यान ग्राह्य है । अब धर्मध्यान का भेद कहते है-(धम्मज्झाणे चउव्विहे चउप्पडोयारे पण्णत्ते) धर्मध्यान-स्वरूप, लक्षण, आलम्बन, एवं अनुप्रेक्षा के भेद से चार प्रकार का है, इन चारों में भी एक एक के चार चार भेद होते है । इस प्रकार कुल इसके १६ भेद हो जाते है । धर्मध्यान के चार स्वरूप ये है-(आणाविचए, अवायविचए, विवागविचए, संठाणविचए,) आज्ञाविचय, अपायविचय, विपाकविचय, और संस्थानविचय । तीर्थंकर प्रभु की आज्ञा का जिसमें विचार किया जाय वह आज्ञाविचय धर्मध्यान है। तीर्थंकर प्रभुकी आज्ञा का चिन्तवन इसमें इस प्रकार किया जाता है-भगवान् का आज्ञारूप प्रवचन पूर्वापर में निर्दोष है, निरवशेष जीवों का हितकर्त्ता

પ્રવૃત્તિશીલ રહેવું તે આમરણાંત દોષ છે આ ચારેય ધ્યાનોમાં આર્ત-રૌદ્ર-ધ્યાન છોડવા યોગ્ય છે અને ધર્મધ્યાન તેમજ શુક્લધ્યાન એ બે ધ્યાન ગ્રહણ કરવા યોગ્ય છે હવે ધર્મધ્યાનના પ્રકાર કહે છે-(धम्मज्झाणे चउव्विहे चउप्पडोयारे पण्णत्ते) ધર્મધ્યાન, સ્વરૂપ, લક્ષણ, આલંબન તેમજ અનુપ્રેક્ષાના ભેદથી ચાર પ્રકારનું છે. આ ચારમાં પણ એકએકના ચાર ચાર ભેદ થાય છે. એ રીતે કુલ તેના સોળ (૧૬) ભેદ થઈ જાય છે (तंजहा) ધર્મધ્યાનના ચાર ૪ સ્વરૂપ આ છે-(आणाविचए, अवायविचए, विवागविचए, संठाणविचए) આજ્ઞાવિચય, અપાયવિચય, વિપાકવિચય અને સંસ્થાનવિચય, તીર્થંકર પ્રભુની આજ્ઞાનો જેમાં વિચાર કરવામાં આવે તે આજ્ઞાવિચય ધર્મધ્યાન છે તીર્થંકર પ્રભુની આજ્ઞાનું ચિંતવન એમાં આ રીતે કરાય છે-ભગવાનનું આજ્ઞારૂપ પ્રવચન પૂર્વાપરમાં નિર્દોષ છે, તમામ જીવોને હિતકર્તા છે, અનવદ્ય છે,

विचए १, अवायविचए २, विवागविचए ३, संठाणविचए ४। धम्मस्स णं झाणस्स चत्तारि लक्खणा पण्णत्ता, तं जहा–आणा-

विज्ञेया द्रव्यपर्यायप्रपञ्चबोधिनी अनाद्यनन्ता भवप्रपञ्चमोचनी नरकनिगोदादिदुःखविध्वंसिनी कर्मग्रन्थिभेदिनी विद्यते। २–'अवायविचए' अपायविचयम्–अपायाः=रागद्वेषादिजन्या अनर्थास्तेषां विचयो यत्र तत्तथा, विषयदोषाऽनुचिन्तनमित्यर्थः। ३ 'विवागविचए' विपाकविचयम्–विपाकः=कर्मफलं, तस्य विचयो यत्र तत्तथा, कर्मफलाऽनुचिन्तनमित्यर्थः। ४–'संठाणविचए' संस्थानविचयम्–संस्थानानि=लोकद्वीपसमुद्राद्याकृतयः, तेषां विचयो यत्र तत् तथा, 'धम्मस्स णं झाणस्स चत्तारि लक्खणा पण्णत्ता' धर्मस्य खलु ध्यानस्य चत्वारि लक्षणानि प्रज्ञप्तानि, 'तं जहा' तद्यथा–१–'आणारुई' आज्ञारुचिः–आज्ञा=सर्वज्ञवचनरूपा, तथा

है, अनवद्य है, गंभीर है, प्रभावशाली है, निपुणजनविज्ञेय है, द्रव्य एवं पर्यायों का बोधक है, अनादि एवं अनन्त है, संसार का अन्त करने वाला है, नरक एवं निगोदादिक के दुःखों का विनाशक है और कर्मग्रन्थि का उच्छेदक है ॥१॥ **अपायविचय**–रागद्वेष आदि से जन्य अनर्थों का नाम अपाय है। इनका विचारना जिसमें होता है–अर्थात् शब्दादि विषयों के दोषों का अनुचिन्तन जिसमें किया जाता है वह अपायविचय धर्मध्यान है ॥२॥ **विपाकविचय**–कर्मफल का नाम विपाक है, इसका चिन्तन करना अर्थात् कर्म से बद्ध हो आत्मा चतुर्गतिक संसार में भ्रमण करता है ऐसा जो विचारना सो विपाकविचय है ॥३॥ **संस्थानविचय**–चौथा भेद है, संस्थानका अर्थ लोकद्वय एवं समुद्रादिक का आकार है, इनका विचार करना सो संस्थानविचय है ॥४॥ (धम्मस्स णं झाणस्स चत्तारि लक्खणा पण्णत्ता)

गंभीर छे, प्रભावशाली छे, निपुण લોકોથી જાણવા યોગ્ય છે, દ્રવ્ય તેમજ પર્યાયોનું બોધક છે, અનાદિ અનંત છે, સંસારનો અંત કરવાવાળુ છે, નરક તેમજ નિગોદ આદિકના દુઃખોનું વિનાશક છે, કર્મની ગ્રન્થિનુ ઉચ્છેદક છે (૧). અપાયવિચય–રાગદ્વેષ આદિથી થતા અનર્થોનુ નામ અપાય છે. તેનો વિચાર જેમાં કરાય છે અર્થાત્ શબ્દાદિ વિષયોના દોષોનુ અનુચિંતન જેમા કરાય છે તે અપાયવિચય ધર્મધ્યાન છે (૨) વિપાકવિચય–કર્મફલનું નામ વિપાક છે તેનું ચિંતન કરવુ, અર્થાત્ કર્મથી બંધાયેલો આત્મા ચતુર્ગતિક સંસારમા ભ્રમણ કરે છે. એમ જે વિચારવુ તે વિપાકવિચય છે (૩). સંસ્થાનવિચય ચોથો પ્રકાર છે. સંસ્થાનનો અર્થ લોક, દ્વીપ તેમજ સમુદ્રાદિકનો આકાર છે, તેનો વિચાર કરવો તે સંસ્થાનવિચય છે (૪). (धम्मस्स णं झाणस्स चत्तारि लक्खणा पण्णत्ता) ધર્મધ્યાનના ચાર લક્ષણ કહ્યાં છે.

रुई १, णिसग्गरुई २, उवएसरुई ३, सुत्तरुई ४। धम्मस्स णं झाणस्स चत्तारि आलंवणा पण्णत्ता; तं जहा—वायणा १, पुच्छणा

धर्मानुष्ठानगता रुचि =श्रद्धानम्। २—'णिसग्गरुई' निसर्गरुचि·=स्वभावतस्तत्त्वश्रद्धानम्। ३—'उवएसरुई' उपदेशरुचिः=साधूपदेशात्तत्त्वश्रद्धानम्। ४—'सुत्तरुई' सूत्ररुचि· सूत्रे=आगमे रुचिः=श्रद्धानम्। आज्ञाऽऽराधनविपया रुचि —आज्ञारुचि·'आज्ञा पूर्वापरविशुद्धाऽनवद्या'—एतद्रूपा याऽऽगमविपया रुचि· सा सूत्ररुचिरिति तयोर्भेद। 'धम्मस्स णं झाणस्स चत्तारि आलंवणा पण्णत्ता' धर्मस्य खलु ध्यानस्य चत्वार्यालम्बनानि प्रज्ञप्तानि—धर्मध्यानशिखरारोहणार्थं यान्यालम्ब्यन्ते=आश्रीयन्ते तान्यालम्बनानि चतुर्विधानि कथितानि, 'तंजहा' तद्यथा—१—'वायणा'

धर्मध्यान के चार लक्षण कहे गये है, (तं जहा) वे इस प्रकार से है—(आणारुई,णिसग्गरुई, उवएसरुई, सुत्तरुई) आज्ञारुचि, निसर्गरुचि, उपदेशरुचि, सूत्ररुचि। तीर्थंकर भगवान् की आज्ञा के आराधन करने में श्रद्धा का उत्पन्न होना आज्ञारुचि है १। स्वभाव से जिनप्ररूपित तत्त्वो में श्रद्धा होना निसर्गरुचि है २। साधु—मुनिराजों के उपदेश से तत्त्वों मे श्रद्धा होना उपदेशरुचि है ३। जैनागमो में श्रद्धा होना सूत्ररुचि है ४। आज्ञारुचि और सूत्ररुचि में क्या भेद है? इसका उत्तर यह है कि तीर्थंकर भगवान की आज्ञा का आराधन करना—आज्ञारुचि है, तथा तीर्थंकर भगवान् की आज्ञा पूर्वापरविशुद्ध है, अनवद्य है—इस प्रकार आगम के विषय में दृढश्रद्धा होना—सूत्ररुचि है। यही इन दोनों मे भेद है। (धम्मस्स णं झाणस्स चत्तारि आलंवणा पण्णत्ता) धर्मध्यान के आलंबन ४ चार है। ये आलंबन धर्मध्यान के शिखर पर चढने के लिये जीवों को सहारे का काम देते है, (तं जहा)

(तं जहा) ते आ प्रकारे छे—(आणारुई, णिसग्गरुई, उवएसरुई, सुत्तरुई) आज्ञारुचि, निसर्गरुचि, ઉપદેશરુચિ, સૂત્રરુચિ. તીર્થંકર ભગવાનની આજ્ઞાનુ આરાધન કરવામા શ્રદ્ધા ઉત્પન્ન થવી તે આજ્ઞારુચિ છે ૧, સ્વભાવથી જ જિનપ્રરૂપિત તત્ત્વોમાં શ્રદ્ધા થવી તે નિસર્ગરુચિ છે ૨, સાધુ મુનિરાજોના ઉપદેશથી તત્ત્વોમા શ્રદ્ધા થવી તે ઉપદેશરૂચિ છે ૩, જૈન આગમોમા શ્રદ્ધા થવી તે સૂત્રરૂચિ છે ૪, આજ્ઞારુચિ અને સૂત્રરુચિમા શુ ભેદ છે? તેનુ ઉત્તર આ છે કે—તીર્થંકર ભગવાનની આજ્ઞાનુ આરાધન કરવુ તે આજ્ઞારુચિ છે, તથા—તીર્થંકર ભગવાનની આજ્ઞા પૂર્વાપરવિશુદ્ધ છે, અનવદ્ય છે. એ પ્રકારે આગમના વિષયમા દૃઢ શ્રદ્ધા થવી તે સૂત્રરુચિ છે. આ જ એ બન્નેમા તફાવત છે. (धम्मस्स णं झाणस्स चत्तारि आलंवणा पण्णत्ता) ધર્મધ્યાનના આલંબન ચાર છે. તે આલંબન ધર્મધ્યાનના શિખર ઉપર ચડવા માટે જીવોને આશ્રય-આધારનુ કામ કરી દે

**२, परियट्टणा ३, धम्मकहा ४। धम्मस्स णं झाणस्स चत्तारि अणुप्पेहाओ पण्णत्ताओ, तं जहा-अणिच्चाणुप्पेहा १, असरणाणुप्पेहा २, एगत्ताणुप्पेहा ३, संसाराणुप्पेहा ४।**

वाचना, २ **'पुच्छणा'** प्रच्छना, ३-**'परियट्टणा'** परिवर्त्तना, ४-**'धम्मकहा'** धर्मकथा, **'धम्मस णं झाणस्स चत्तारि अणुप्पेहाओ पण्णत्ताओ'** धर्मस्य खलु ध्यानस्य चतस्रोऽनुप्रेक्षाः प्रज्ञप्ता 'तं जहा' तद्यथा-**'अणिच्चाणुप्पेहा'** अनित्यानुप्रेक्षा=अनित्यचिन्तनिका, तथा चोक्तम्-

"कायः संनिहितापायः, संपदः पदमापदाम्।
समागमाः सापगमाः, सर्वमुत्पादि भङ्गुरम्" ॥ १ ॥ इति ॥

वे इस प्रकार है-**(वायणा)** वाचना १, **(पुच्छणा)** प्रच्छना २, **(परियट्टणा)** परिवर्तना ३, **(धम्मकहा)** धर्मकथा ४। इनका स्वरूप पीछे कह दिया गया है। **(धम्मस्स णं झाणस्स चत्तारि अणुप्पेहाओ पण्णत्ताओ)** धर्मध्यान की चार अनुप्रेक्षा कही है, **(तं जहा)** वे ये है-**(अणिच्चाणुप्पेहा)** अनित्यानुप्रेक्षा-इसमे समस्त पौद्गलिक पदार्थों का अनित्यरूप से चिन्तवन किया जाता है, जैसे-

**कायः संनिहितापायः, संपदः पदमापदाम्।**
**समागमाः सापगमाः, सर्वमुत्पादि भङ्गुरम् ॥१॥**

इस शरीर के पीछे अपाय-रोगादि लगा हुआ है। इसलिये यह नष्ट होने वाला है। यह धनधान्यादि सम्पत्ति, आपत्तियों का स्थान है। क्यों कि इसीके कारण स्त्री, पुत्र, मित्र, स्वजन, परिजन और ग्रामजन आदि से शत्रुता होती है, लड़ाई होती है, अन्त में

છે, (तं जहा) તે આ પ્રકારે છે-(वायणा) વાચણા-વાંચવુ ૧, (प्रच्छना) પ્રચ્છના-પુછવુ ૨, (परियट्टणा) પરિવર્તના-આવૃત્તિ કરવી ૩, (धम्मकहा) ધર્મકથા ૪, એમનું સ્વરૂપ પાછળ કહેવાઇ ગયું છે. (धम्मस्स णं झाणस्स चत्तारि अणुप्पेहाओ पण्णत्ताओ) ધર્મધ્યાનની ચાર અનુપ્રેક્ષા કહી છે,(तं जहा) તે આ પ્રમાણે છે-(अणिच्चाणुप्पेहा) અનિત્યાનુપ્રેક્ષા-આમાં સમસ્ત પૌદ્ગલિક પદાર્થોનું અનિત્યરૂપથી ચિંતવન કરવામા આવે છે જેમકે—

कायः सनिहितापायः, संपदः पदमापदाम्।
समागमाः सापगमाः, सर्वमुत्पादि भङ्गरम्॥ १॥

આ શરીરની પાછળ અપાય-રોગ-આદિ લાગી રહેલા છે, તે માટે તે નાશ પામવાવાળુ છે. આ ધન-ધાન્યાદિ-સંપત્તિ આપત્તિઓનુ સ્થાન છે

'असरणाणुप्पेहा' अशरणाऽनुप्रेक्षा—अशरणत्वपर्यालोचना अस्यां संसृतौ न कोऽपि कस्यापि रक्षक एतद्रूपा, जन्मजरामरणभयैरभिद्रुते व्याधिवेदनाग्रस्ते जिनवरवचनादन्यन्नास्ति शरण क्वचिल्लोके—इत्येवमशरणस्य=अत्राणस्य अनुप्रेक्षा=पर्यालोचना ।

प्राण तक खोना पडता है । जिन जिन अभिलषित प्रिय स्त्री, पुत्र, धन आदि का समागम अर्थात् प्राप्ति होती है, वे सब बिछुड़ने वाले है । क्यों कि सयोग के बाद वियोग अवश्य होता है । अधिक क्या, जो जो उत्पन्न होता है, वह सब नियमतः नष्ट भी होता ही है, क्यों कि उत्पत्तिशील सभी पदार्थ विनश्वर अर्थात् नाशवान् होते है । ऐसे विनश्वर पदार्थों में फिर आसक्ति और प्रेम क्यों ! उचित यह है कि जो धर्म कभी भी नष्ट होने वाला नहीं है, उसी पर मुझे आकर्षण होना चाहिये, इन विनश्वर सांसारिक पदार्थों पर नही ! इस प्रकार सांसारिक समस्त पदार्थों के प्रति अनित्यत्व का चिन्तन करना अनित्यानुप्रेक्षा है ॥१॥

(असरणाणुप्पेहा) अशरणानुप्रेक्षा--ससार में इस जीव का कोई भी शरण नहीं है । जन्म, जरा एवं मरण के भय से व्याकुल हुए एव व्याधि और वेदना से ग्रस्त बने हुए इस प्राणी का यदि लोक में कोई शरण है तो वह एक जिनवर का धर्म ही है, और कोई नही ! इस प्रकार से इस अनुप्रेक्षा में विचार किया जाता है । कहा भी है—

કેમકે તેના જ કારણે સ્ત્રી, પુત્ર, મિત્ર, સ્વજન, પરિજન અને ગામના લોકો આદિ સાથે શત્રુતા થાય છે, લડાઇ (ઝગડા) થાય છે, આખરે પ્રાણ સુધી ખોવો પડે છે જે જે અભિલષિત પ્રિય સ્ત્રી, પુત્ર, ધન આદિનો સમાગમ અર્થાત્ પ્રાપ્તિ થાય છે તે બધા વિખૂટા પડનાર છે, કેમકે સંયોગ પછી વિયોગ અવશ્ય થાય છે, વધારે શું ? જે જે ઉત્પન્ન થાય છે તે બધું નિયમપ્રમાણે નાશ પણ પામે છે જ, કેમકે ઉત્પત્તિશીલ તમામ પદાર્થ વિનશ્વર અર્થાત નાશવાન હોય છે; તો એવા વિનશ્વર પદાર્થોમા વળી આસક્તિ અને પ્રેમ શા માટે ? ઉચિત તો એ છે કે-જે ધર્મ કદી પણ નાશ પામનાર નથી તે ઉપર જ મને આકર્ષણ થવું જોઇએ, આ વિનશ્વર સાસારિક પદાર્થો પર નહિ. એ પ્રકારે સાંસારિક તમામ પદાર્થો માટે અનિત્યપણાનું ચિંતન કરવુ તે અનિત્યાનુપ્રેક્ષા છે (૧). (असरणाणुप्पेहा) અશરણાનુપ્રેક્ષા—સંસારમાં આ જીવનુ કોઇ પણ શરણ નથી. જન્મ, જરા તેમજ મરણના ભયથી વ્યાકુળ થતાં તેમજ વ્યાધિ અને વેદનાથી ગ્રસ્ત બની જતાં આ પ્રાણીનું જો કોઇ શરણ (આશ્રય) હોય તો તે એકમાત્ર આ લોકમા જિનવરનો ધર્મ જ છે, બીજું કોઇ નહિ. આ પ્રકારના આ અનુપ્રેક્ષામા વિચાર કરવામા આવે છે. કહ્યુ પણ છે—

कलत्रमित्रपुत्रादि,–स्नेहग्रहनिवृत्तये ।
इति शुद्धमतिः कुर्यादशरण्यत्वभावनाम् ॥१॥

अशरणभावना चैवम्—

इन्द्रोपेन्द्रादयोऽप्येते यन्मृत्योर्यान्ति गोचरम् ।
अहो तदन्तकातङ्के कः शरण्यः शरीरिणाम् ॥१॥
पितुर्मातुः स्वसुर्भ्रातुस्तनयानां च पश्यताम् ।
अत्राणो नीयते जन्तुः कर्मभिर्यमसद्मनि ॥२॥

---

**कलत्रमित्रपुत्रादि,–स्नेहग्रहनिवृत्तये ।**
**इति शुद्धमतिः कुर्यादशरण्यत्वभावनाम् ॥१॥**

शुद्धबुद्धियुक्त भव्य प्राणी स्त्री, पुत्र, मित्र, स्वजन–सम्बन्धी आदिकों के स्नेह–बन्धन से मुक्त होने के लिये इस प्रकार से अशरणभावना की चिन्ता करे।

अशरणभावना इस प्रकार से करनी चाहिये—

**इन्द्रोपेन्द्रादयोऽप्येते, यन्मृत्योर्यान्ति गोचरम् ।**
**अहो! तदन्तकातङ्के, कः शरण्यः शरीरिणाम् ॥१॥**

ये महापराक्रमी अजेय इन्द्र, उपेन्द्र आदियो को भी जब कालने कवलित कर-लिया, तो, अरे! इस ससार में साधारण मनुष्य की फिर गणना ही क्या है? उस सर्वविजयी काल के आने पर मनुष्य का क्या कोई त्राण, शरण हो सकता है? कोई नहीं! ॥१॥

**पितुर्मातुः स्वसुर्भ्रातुस्तनयानां च पश्यताम् ।**
**अत्राणो नीयते जन्तुः, कर्मभिर्यमसद्मनि ॥२॥**

---

कलत्रमित्रपुत्रादि–स्नेहग्रहनिवृत्तये ।
इति शुद्धमतिः कुर्यादशरण्यत्वभावनाम् ॥१॥

શુદ્ધબુદ્ધિયુક્ત ભવ્ય પ્રાણી સ્ત્રી, પુત્ર, મિત્ર, સ્વજન, સંબંધી આદિના સ્નેહ-બંધનથી મુક્ત થવા માટે આ પ્રકારે અશરણભાવનાની ચિંતા કરે.

અશરણભાવના આ પ્રકારે કરવી જોઈએ—

इन्द्रोपेन्द्रादयोऽप्येते, यन्मृत्योर्यान्ति गोचरम् ।
अहो! तदन्तकातङ्के, कः शरण्यः शरीरिणाम् ॥१॥

એ મહાપરાક્રમી અજેય ઈન્દ્ર, ઉપેન્દ્ર આદિઓને પણ જ્યારે કાળ કોળિઓ કરી ગયો, તો અરે! આ સંસારમા સાધારણ મનુષ્યની વળી ગણત્રી જ શું છે? તે બધાનો વિજેતા એવો કાલ આવી જતા મનુષ્યનુ શું કોઈ રક્ષણ કે શરણ થઈ શકે છે? કોઇ જ નહિ (૧).

शोचन्ति स्वजनानन्त नीयमानान् स्वकर्मभिः ।
नेष्यमाणं न शोचन्ति स्वात्मानं मूढबुद्धयः ॥३॥
ससारे   दुःखदावाग्निज्वलज्ज्वालाकरालिते ।
वने मृगार्भकस्येव शरणं नास्ति देहिनः ॥४॥

---

असहाय जीव अपने कर्मों के द्वारा मृत्यु के समीप पहुँचाये जाते है। अर्थात्– माता, पिता, भाई, बहन, पुत्र, पुत्री, स्त्री आदि के देखते ही देखते जीव को उसका स्वकृत कर्म मृत्यु के लिये समर्पित कर देता है, उस समय उस जीव के त्राण करने में माता पिता आदि कोई भी समर्थ नहीं होते है, जीव अकेला ही मृत्यु प्राप्त कर स्वकृत कर्मानुसार फल भोगता है ॥२॥

**शोचन्ति स्वजनानन्तं, नीयमानान् स्वकर्मभिः ।**
**नेष्यमाण न शोचन्ति, स्वात्मानं मूढबुद्धयः ॥३॥**

अज्ञानी जीव स्वकृत कर्मों के द्वारा मरते हुए स्वजनों के लिये शोक करता है, परन्तु वह अज्ञानी जीव अपने लिये नहीं सोचता है, जो वह स्वयं अपने कर्म के द्वारा स्वयं मृत्यु के निकट पहुँच रहा है ॥३॥

**संसारे   दुःखदावाग्नि,–ज्वलज्ज्वालाकरालिते ।**
**वने मृगार्भकस्येव, शरणं नास्ति देहिनः ॥४॥**

---

पितुर्मातुः स्वसुर्भ्रातु–स्तनयानां च पश्यताम् ।
अत्राणो नीयते जन्तुः, कर्मभिर्यमसद्मनि ॥३॥

પિતા, માતા, બહેન, ભાઇ, પુત્ર આદિના જોતજોતામાં જ અસહાય જીવ પોતાના કર્મોદ્વારા મૃત્યુની સમીપે જાય છે, અર્થાત્–માતા, પિતા, ભાઇ, બહેન. પુત્ર, પુત્રી, સ્ત્રી આદિના જોતજોતામા જ જીવને તેનુ પોતાનુ કર્મ મૃત્યુને સમર્પણ કરી દે છે, તે સમયે તે જીવનુ રક્ષણ કરવામા માતા પિતા આદિ કોઈપણ સમર્થ થતા નથી. જીવ એકલો જ મૃત્યુ પ્રાપ્ત કરીને સ્વકૃત (પોતે કરેલાં) કર્માનુસાર ફળ ભોગવે છે (૨).

शोचन्ति स्वजनानन्तं, नीयमानान् स्वकर्मभिः ।
नेष्यमाणं न शोचन्ति, स्वात्मानं मूढबुद्धयः ॥२॥

અજ્ઞાની જીવ સ્વકૃત કર્મોદ્વારા મરી જતા સ્વજનો માટે શોક કરે છે, પરંતુ તે અજ્ઞાની જીવ પોતાને માટે નથી વિચાર કરતા કે તે પોતે પોતાના કર્મ દ્વારા મૃત્યુની પાસે પહોંચી રહ્યા છે (૩).

संसारे दुःखदावाग्नि–ज्वलज्ज्वालाकरालिते ।
वने मृगार्भकस्येव, शरणं नास्ति देहिनः ॥४॥

अन्यच्च—परलोकसहायार्थं पिता माता न तिष्ठत' ।
न पुत्रदारं न ज्ञातिर्धर्मस्तिष्ठति केवल' ॥१॥

३–'**एगत्ताणुप्पेहा**' एकत्वानुप्रेक्षा–आत्मन एकाकित्वचिन्तनम्; तथा चोक्तम्—

उत्पद्यते जन्तुरिहैक एव विपद्यते चैकक एव दुःखी ।
कर्मार्जयत्येकक एव चित्रम् आसेवते तत्फलमेक एव ॥१॥

---

जैसे प्रचण्ड दावाग्नि की ज्वाला से जलते हुए वन में मृग के बच्चे का कोई रक्षक नहीं होता है, उसी प्रकार दुःखरूपी दावाग्नि की प्रचण्ड ज्वाला से जलते हुए इस संसार में आत्मा का कोई रक्षक नहीं है ॥४॥ और भी कहा है—

**परलोकसहायार्थं, पिता माता न तिष्ठतः ।**
**न पुत्रदारं न ज्ञाति–र्धर्मस्तिष्ठति केवलः ॥**

माता–पिता परलोक में जीव को सहायता के लिये नहीं जाते है, न स्त्री, पुत्र, स्वजन–संबंधी आदि ही जाते है। मात्र एक धर्म ही परलोक में जीव के साथ जाता है ॥४॥

—इस प्रकार से चिन्तन करना सो अशरणानुप्रेक्षा है।

( **एगत्ताणुप्पेहा** ) एकत्वानुप्रेक्षा–आत्मा अकेला है। इस प्रकार से चिन्तन करना–एकत्वानुप्रेक्षा है। एकत्वानुप्रेक्षा का चिन्तन इस प्रकार से करना चाहिये, जैसे–कर्म के फलों को यह जीव अकेला ही भोगता है। माता पिता आदि कोई भी इस जीव को साथ नहीं देते है। सब अपने २ स्वार्थ के है। कहा भी है—

---

જેમ પ્રચણ્ડ દાવાગ્નિની જ્વાલાથી બળતા વનમાં મૃગનાં બચ્ચાંઓનો કોઈ રક્ષક થતો નથી, તેજ પ્રકારે દુઃખરૂપી દાવાગ્નિની પ્રચણ્ડ જ્વાલાથી બળતા આ સંસારમા આત્માનો કોઈ રક્ષક નથી (૪).

વળી પણ કહ્યુ છે—

परलोकसहायार्थं, पिता माता न तिष्ठतः ।
न पुत्रदारं न ज्ञाति,–र्धर्मस्तिष्ठति केवलः ॥५॥

માતા–પિતા પરલોકમાં જીવની સહાયતા માટે જતા નથી, ન સ્ત્રી, પુત્ર, સ્વજન, સંબધી આદિ પણ જાય છે. માત્ર એક ધર્મ જ પરલોકમા જીવની સાથે જાય છે. આ પ્રકારે ચિંતન કરવું તે અશરણાનુપ્રેક્ષા છે (૫)

(एगत्ताणुप्पेहा) એકત્વાનુપ્રેક્ષા–આત્મા એકલો છે એ પ્રકારે ચિંતન કરવુ તે એકત્વાનુપ્રેક્ષા છે. એકત્વાનુપ્રેક્ષાનું ચિંતન આ રીતે કરવું જોઈએ, જેમકે–કર્મના ફળને આ જીવ એકલો જ ભોગવે છે, માતા પિતા આદિ કોઇ પણ આ જીવને સાથ દેતા નથી. સૌ પોતપોતાના સ્વાર્થના છે.

यज्जीवेन धनं स्वयं बहुविधै: कष्टैरिहोपार्ज्यते,
तत्सभूय कलत्रमित्रतनयैर्भ्रात्रादिभिर्भुज्यते ।
तत्तत्कर्मवशाच्च नारकनरस्वर्वासितिर्यग्भवे-,
ष्वेक सैष मुदु:सहानि सहते दु:खान्यसंख्यान्यहो ॥२॥

उत्पद्यते जन्तुरिहैक एव, विपद्यते चैकक एव दुःखी ।
कर्माजत्येकक एव चित्रम्, आसेवते तत्फलमेक एव ॥१॥

जीव अकेला ही इस नसार में उत्पन्न होता है, अकेला ही अपार दु:ख का अनुभव करते हुए मृत्यु को प्राप्त होता है, अकेला ही वह नानाविध कर्मों का उपार्जन करता है, तथा अकेला ही उसका फल भोगता है ॥१॥

यज्जीवेन धनं स्वयं बहुविधैः कष्टैरिहोपार्ज्यते,
तत्संभूय कलत्रमित्रतनयैर्भ्रात्रादिभिर्भुज्यते ।
तत्तत्कर्मवशाच्च नारकनरस्वर्वासितिर्यग्भवे,—
ष्वेकः सैप सुदु:सहानि सहते दुःखान्यसह्यान्यहो ॥२॥

जीव जो अनेकविध कष्टों से स्वयं धनोपार्जन करता है, उस धन का उपभोग स्त्री, पुत्र, भाई-बन्धु, मित्र, स्वजन-सम्बन्धी आदि करते है। परन्तु धनोपार्जन करनेवाला वह जीव तो स्वकृत उन उन कर्मों के अनुसार देव मनुष्य-नारक तिर्यक् आदि-

કહ્યું પણ છે —

उत्पद्यते जन्तुरिहैक एव, विपद्यते चैकक एव दुःखी ।
कर्माजयत्येकक एव चित्रम्, आसेवते तत्फलमेक एव ॥१॥

જીવ એકલો જ આ સસારમા ઉત્પન્ન થાય છે, એકલો જ અપાર દુ:ખનો અનુભવ કરતો કરતો મૃત્યુને પ્રાપ્ત થાય છે, એકલો જ તે અનેક પ્રકારના કર્મોનું ઉપાર્જન કરે છે, તથા એકલો જ તેનું ફળ ભોગવે છે (૧).

यज्जीवेन धनं स्वयं बहुविधैः कष्टैरिहोपार्ज्यते,
तत्संभूय कलत्रमित्रतनयैर्भ्रात्रादिभिर्भुज्यते ।
तत्तत्कर्मवशाच्च नारक-नर-स्वर्वासितिर्यग्भवे-
ष्वेकः सैप सुदुःसहानि सहते दुःखान्यसह्यान्यहो ॥२॥

જીવ જે વિધવિધ અનેક કષ્ટોથી પોતે ધન ઉપાર્જન કરે છે તે ધનનો ઉપભોગ સ્ત્રી, પુત્ર, ભાઇ-બંધુ, મિત્ર, સ્વજન-સબંધી આદિ કરે છે પરંતુ ધનોપાર્જન કરવાવાળો તે જીવ તો પોતે કરેલા તે તે કર્મો અનુસાર દેવ મનુષ્ય નારક તિર્યંક્ આદિ ભવોમાં એકલો જ અતિદુઃસહ અનત

जीवो यस्य कृते भ्रमत्यनुदिशं दैन्यं समालम्बते,
धर्माद् भ्रश्यति वञ्चयत्यतिहितान् न्यायादपक्रामति ।
देहः सोऽपि सहात्मना न पदमप्येकः परस्मिन्भवे,
गच्छत्यस्य ततः कथं वदत भोः ! साहाय्यमाधास्यति ॥३॥
स्वार्थैकनिष्ठं स्वजनं स्वदेह,-मुख्यं ततः सर्वमवेत्य सम्यक् ।
सर्वस्य कल्याणनिमित्तमेकं, धर्मं सहायं विदधीत धीमान् ॥इति॥

भवों में अकेला ही अतिदुःसह अनन्त दुःखों को सहता रहता है। अहो ! इस संसार में कोई भी अपना नहीं है ॥ २ ॥ और भी कहा है—

**जीवो यस्य कृते भ्रमत्यनुदिनं दैन्यं समालम्बते,**
**धर्माद् भ्रश्यति वञ्चयत्यतिहितान् न्यायादपक्रामति ।**
**देहः सोऽपि सहात्मना न पदमप्येकः परस्मिन् भवे,**
**गच्छत्यस्य ततः कथं वदत भोः ! साहाय्यमाधास्यति ॥३॥**

जीव जिस शरीर के लिये चारो दिशाओ में घूमता-फिरता रहता है, दीनता प्रदर्शित करता है, धर्म से भ्रष्ट होता है, अपने अत्यन्त हितैषियों को भी ठगता है, न्यायमार्ग से चलित होता है, वह शरीर भी जीव के साथ परभव में एक पग भी नहीं साथ देता। हे भव्यो ! सोचो-विचारो ! यह शरीर तुम्हारी क्या सहायता कर सकता है, कुछ नहीं ॥३॥ और भी कहा है—

**स्वार्थैकनिष्ठं स्वजनं स्वदेह,-मुख्यं ततः सर्वमवेत्य सम्यक् ।**
**सर्वस्य कल्याणनिमित्तमेकं, धर्मं सहायं विदधीत धीमान् ॥४॥**

દુઃખોને સહન કરતો રહે છે અહો ! આ સંસારમા કોઈએ આપણું નથી (૨). બીજુ પણ કહ્યું છે—

जीवो यस्य कृते भ्रमत्यनुदिनं दैन्यं समालम्बते,
धर्माद् भ्रश्यति वञ्चयत्यतिहितान् न्यायादपक्रामति ।
देहः सोऽपि सहात्मना न पदमप्येकः परस्मिन् भवे,
गच्छत्यस्य ततः कथं वदत भोः! साहाय्यमाधास्यति ॥३॥

જીવ જે શરીરને માટે ચારેય દિશાઓમા ભટકતો ફરતો રહે છે, દીનતા બતાવે છે, ધર્મથી ભ્રષ્ટ થાય છે, પોતાના અત્યંત હિતેચ્છુઓને પણ ઠગે છે. ન્યાયમાર્ગથી ચલિત થાય છે, તે શરીર પણ જીવની સાથે પરભવમાં એક ડગલુંએ સાથ આપતું નથી. હે ભવ્યો ! સોચો-વિચારો ! આ શરીર તમારી શું સહાયતા કરી શકશે ? કાંઇ પણ નહિ !

४–'संसाराणुप्पेहा' संसारानुप्रेक्षा–संसारस्य चतसृषु गतिषु सर्वावस्थासु संसरणलक्षणस्य अनुप्रेक्षा–तथा चोक्तम्—

माता परभवे पुत्री सैव जन्मांतरे स्वसा।
पुनर्भार्या भवेत् सैव प्राणिनां गतिरीदृशी॥ १॥

माता, पिता, स्त्री, पुत्र, स्वजन, सबंधी आदि सभी भी स्वार्थ के है, अपना शरीर स्वार्थ का ही है, इसलिये बुद्धिमान् मनुष्य इन सभी विषयों पर अच्छी तरह विचार कर सभी का कल्याण करने वाले धर्म को ही सहायक बनावे ॥४॥

–इस प्रकार से चिन्तन करना एकत्वानुप्रेक्षा है

( **संसाराणुप्पेहा** ) संसारानुप्रेक्षा–चतुर्गतिकलक्षण संसार के विषय में चिन्तन करना–संसारानुप्रेक्षा है। कहा भी है—

**माता परभवे पुत्री, सैव जन्मान्तरे स्वसा।**
**पुनर्भार्या भवेत् सैव, प्राणिनां गतिरीदृशी ॥१॥**

इस भव में इस जीव की जो माता होती है, वह दूसरे भव में उसकी पुत्री हो जाती है, फिर भवान्तर में उसकी बहन हो जाती है, उसके बाद अन्य जन्म में फिर वह उसकी भार्या हो जाती है। अधिक क्या कहा जाय! संसार की कुछ ऐसी ही विचित्र दशा है ॥ १ ॥ और भी कहा है—

ફરી પણ કહ્યુ છે—

स्वार्थैकनिष्ठं स्वजन स्वदेह,–मुख्यं ततः सर्वमवेत्य सम्यक्।
सर्वस्य कल्याणनिमित्तमेकं, धर्मं सहायं विदधीत धीमान् ॥४॥

માતા, પિતા. સ્ત્રી, પુત્ર, સ્વજન–સબંધી આદિ બધા સ્વાર્થના છે. પોતાનુ શરીર પણ સ્વાર્થનુ જ છે, તેથી બુદ્ધિમાન્ મનુષ્ય એ બધા વિષયો ઉપર સારી રીતે વિચાર કરી સર્વનુ કલ્યાણ કરવવાળા ધર્મને જ સહાયક બનાવે. આ પ્રકારે ચિતન રવુ તે એકત્વાનુપ્રેક્ષા છે (૫).

(संसाराणुप्पेहा) સસારાનુપ્રેક્ષા–ચતુર્ગતિલક્ષણવાળા સસારના વિષયમા ચિતન કરવુ તે સસારાનુપ્રેક્ષા છે. કહ્યુ પણ છે—

माता परभवे पुत्री, सैव जन्मान्तरे स्वसा।
पुनर्भार्या भवेत् सैव, प्राणिनां गतिरीदृशी ॥१॥

આ ભવમા જે આ જીવની માતા હોય છે તે જ બીજા ભવમા તેની પુત્રી થઇ જાય છે વળી ભવાન્તરમા તેની બહેન થઈ જાય છે. ત્યાર પછી બીજા જન્મમા વળી તે તેની સ્ત્રી થઇ જાય છે વધારે શુ કહેવાય! સંસારની કોઇ એવી જ વિચિત્ર દશા છે. (૧) ફરી પણ કહ્યુ છે—

पिता परभवे पुत्र· स तु भ्राता भवान्तरे ।
पुनस्तात· पुन· पुत्र· प्राणिनां गतिरीदृशी ॥२॥
मातापितृसहस्राणि पुत्रदारशतानि च ।
संसारेष्वनुभूतानि यान्ति यास्यन्ति चापरे ॥३॥
कृच्छ्रेणामेध्यमध्ये नियमिततनुभि· स्थीयते गर्भवासे,
कान्ताविश्लेषदु·खव्यतिकरविषमे यौवने चोपभोग· ।

---

**पिता परभवे पुत्रः, स तु भ्राता भवान्तरे ।**
**पुनस्तातः पुनः पुत्रः, प्राणिना गतिरीदृशी ॥२॥**

इस ससार में जीव की पर्याय एकसी शाश्वत नहीं रहती है। जो इस भव में पिता होता है, वही परभव में पुत्र बन जाता है, एवं भवान्तर में भ्राता भी हो जाता है, पश्चात फिर पिता हो जाता है, फिर पुत्र हो जाता है। इस ससार में प्राणियो की ऐसी ही कुछ विचित्र गति है ॥२॥ और भी कहा है—

**मातापितृसहस्राणि, पुत्रदारशतानि च ।**
**संसारेष्वनुभूतानि, यान्ति यास्यन्ति चापरे ॥३॥**

इस ससार में इस जीव के हजारो माता और पिता बन चुके है, हजारों पुत्र-कलत्र हो चुके है। इस समय भी ये माता, पिता पुत्र और कलत्र इस जावके है, और आगे भी ये होंगे ॥३॥और भी कहा है—

**कृच्छ्रेणामेध्यमध्ये नियमिततनुभिः, स्थीयते गर्भवासे,**
**कान्ताविश्लेषदुःखव्यतिकरविषमे यौवने चोपभोगः ।**

---

पिता परभवे पुत्रः स तु भ्राता भवान्तरे ।
पुनस्तातः पुन पुत्रः, प्राणिनां गतिरीदृशी ॥२॥

આ સંસારમા જીવની પર્યાય એક જેવી કાયમ રહેતી નથી. જે આ ભવમાં પિતા હોય છે તે જ પરભવમાં પુત્ર થઇ જાય છે, તેમજ ભવાન્તરમાં ભાઇ પણ થઈ જાય છે.પછી પિતા થઈ જાય છે. વળી પુત્ર થઈ જાય છે. આ સંસારમા પ્રાણિઓની એવી જ કંઇ વિચિત્ર ગતિ છે (૨) ફરી પણ કહ્યું છે—

માતાપિતૃસહસ્રાણિ, પુત્રદારશતાનિ च ।
संसारेष्वनुभूतानि, यान्ति यास्यन्ति चापरे ॥३॥

આ સંસારમાં આ જીવના હજારો માતાપિતા થઇ ચુકયા છે હજારો પુત્ર-કલત્ર થઇ ચુકયા છે. આ સમયે પણ એ માતા, પિતા, પુત્ર અને કલત્ર આ જીવના છે, અને આગળ પણ આ માતા-પિતા આદિ આ જીવને થશે જ. (૩) વળી કહ્યું પણ છે.

**सुक्कज्झाणे चउव्विहे चउप्पडोयारे पण्णत्ते; तं जहा-**

नारीणामप्यवज्ञा विलसति नियतं वृद्धभावेऽप्यसाधु,
ससारे रे मनुष्या! वदत यदि सुखं स्वल्पमप्यस्ति किंचित् ॥४॥
—इद धर्मध्यानम् ॥

'सुक्कज्झाणे चउव्विहे चउप्पडोयारे पण्णत्ते' शुक्लध्यानं चतुर्विधं चतुष्प्र-

**नारीणामप्यवज्ञा विलसति नियत वृद्धभावेऽप्यसाधुः,**
**संसारे रे मनुष्याः! वदत यदि सुखं स्वल्पमप्यस्ति किंचित् ॥४॥**

अत्यन्त अपवित्र गर्भवास में रह कर यह जीव अनेक कष्टो को सहता रहता है। वहाँ इसका शरीर सिकुडा रहता है । यौवन अवस्था में यह जीव विषय भोग के समय स्त्रीवियोगजनित दुःख से अत्यन्त दुःखी होता है । स्त्री यदि जीवित रहे तो वृद्धावस्था में यह अपनी उसी स्त्री का असह्य, अपमान सहन करता है । फिर हे भव्यो! तुम ही कहो, इस ससार में किंचिन्मात्र भी सुख है? कुछ भी नहीं ॥५॥

इस प्रकार जीव को ससार के विषय में विचार करना चाहिये । इस प्रकार धर्मध्यान समझना चाहिये ।

अब शुक्लध्यान कहते है-(**सुक्कज्झाणे चउव्विहे चउप्पडोयारे पण्णत्ते**) शुक्लध्यान चार प्रकार का है, और यह स्वरूप लक्षण, आलबन एवं अनुप्रेक्षा के भेद से सोलह

कृच्छ्रेणामेध्यमध्ये नियमिततनुभिः स्थीयते गर्भवासे,
कान्ताविश्लेषदुःखव्यतिकरविषमे यौवने चोपभोगः ।
नारीणामप्यवज्ञा विलसति नियतं वृद्धभावेऽप्यसाधुः,
संसारे रे मनुष्याः! वदत यदि सुखं स्वल्पमप्यस्ति किंचित् ॥४॥

અત્યત અપવિત્ર ગર્ભવાસમા રહીને આ જીવ અનેક કષ્ટોને સહન કરતો રહે છે. ત્યા તેનું શરીર સંકોચાઈને રહે છે. જુવાન અવસ્થામા આ જીવ વિષયભોગના સમયે સ્ત્રીવિયોગથી ઉત્પન્ન થતા દુઃખથી બહુ જ દુઃખી થાય છે. સ્ત્રી જો જીવતી હોય તો પોતાની વૃદ્ધાવસ્થામા તે પોતાની તે જ સ્ત્રીનું અસહ્ય અપમાન સહન કરે છે. માટે હે ભવ્યો! તમે જ કહો, આ સંસારમા જરાપણ સુખ છે? જરાય નહિ. (૮)

આ પ્રકારે જીવને સંસારના વિષયમાં વિચાર કરવો જોઇએ. એ પ્રકારે ધર્મ-ધ્યાન સમજવુ જોઇએ

હવે શુકલધ્યાન કહે છે (સુક્કજ્ઝાણે ચઉવ્વિહે ચઉપ્પડોયારે પણ્ણત્તે) શુકલધ્યાન ચાર પ્રકારનુ છે, અને તે સ્વરૂપ લક્ષણ, આલ-

**पुहुत्तवियक्के सवियारी १, एगत्तवियक्के अवियारि २, सुहुमकिरिए अप्पडिवाई ३, समुच्छिन्नकिरिए अणियट्टी ४। सुक्कस्स णं झाणस्स**

---

त्यवतारं प्रज्ञप्तम् । यथा मलापगमेन शुचिताधर्माभिसम्बन्धात् पटः शुक्लः इत्युच्यते, तथा रागद्वेषमलापनयनाच्छुचिताधर्मसम्बन्धाद् ध्यानमपि शुक्लमित्युच्यते, तच्चतुर्विधं प्रज्ञप्तम्, तद् यथा–**'पुहुत्तवियक्के सवियारी'** पृथक्त्ववितर्कं सविचारि १, **'एगत्तवियक्के अवियारि'** एकत्ववितर्कमविचारि २, **'सुहुमकिरिए अप्पडिवाई'** सूक्ष्मक्रियमप्रतिपाति, ३, **'समुच्छिन्नकिरिए अणियट्टी'** समुच्छिन्नक्रियमनिवर्ति ४–इति ।

तत्र पूर्वगतश्रुतज्ञानानुसारेण ध्येयविशेषगतोत्पादादिनानापर्यायाणां द्रव्यार्थिक-पर्यायार्थिकादिनानानयैरर्थव्यञ्जनयोगसङ्क्रान्तिसहितानुचिन्तनं पृथक्त्ववितर्कसविचारम् ॥ १ ॥

---

प्रकार का कहा गया है। जिस तरह मैल के दूर होने से वस्त्र बिल्कुल साफ हो जाता है और **"शुक्लः पटः"** इस प्रकार कहा जाता है, उसी तरह रागद्वेषरूपी मैल के अपगमसे ध्यान भी शुद्ध हो जाता है और इसीसे वह शुक्लध्यान कहा जाता है। **(तं जहा)** इसके वे चार प्रकार ये है-**(पुहुत्तवियक्के सवियारी)** पृथक्त्वतर्कसविचार, **(एगत्तवियक्के अवियारि)** एकत्ववितर्क अविचार, **(सुहुमकिरिए अप्पडिवाई)** सूक्ष्मक्रिय–अप्रतिपाती, **(समुच्छिन्नकिरिए अणियट्टी)** समुच्छिन्नक्रिय–अनिवर्त्ति । इनका वर्णन इस प्रकार है–पूर्वगत श्रुतज्ञान के अनुसार ध्येयविशेषगत उत्पाद, व्यय एवं ध्रौव्य आदि पर्यायों का द्रव्यार्थिक एवं पर्यायार्थिक नयों से अर्थसक्रान्ति, व्यंजनसंक्रान्ति एवं योगसंक्रान्ति युक्त होकर विचार करना सो **पृथक्त्ववितर्कसविचार शुक्लध्यान** का प्रथम भेद है ॥१॥ जिस तरह सिद्धगारुडिक आदि

---

બન તેમજ અનુપ્રેક્ષાના ભેદથી સોળ પ્રકારનું કહેવાય છે. જેવી રીતે મેલ ધોવાઈ જવાથી વસ્ત્ર બિલકુલ સાફ થઇ જાય છે અને "शुक्लः पटः" એ પ્રકારે કહેવાય છે, એ જ રીતે રાગદ્વેષરૂપી મેલ દૂર થઇ જવાથી ધ્યાન પણ શુદ્ધ થઇ જાય છે, અને તે કારણથી તેને શુકલધ્યાન કહેવાય છે. (तं जहा) તેના ચાર પ્રકાર આ છે-(पुहुत्तवियक्के सवियारी) પૃથક્ત્વવિતર્ક-સવિચાર (एगत्तवियक्के अवियारि) એકત્વવિતર્ક-અવિચાર (सुहुमकिरिए अप्पडिवाई) સૂક્ષ્મક્રિય-અપ્રતિપાતી (समुच्छिन्नकिरिए अणियट्टी) સમુચ્છિન્નક્રિય-અનિવૃત્તિ.

પૂર્વગત શ્રુતજ્ઞાન અનુસાર ધ્યેયવિશેષથી થતા ઉત્પાદ, વ્યય તેમજ ધ્રૌવ્ય આદિ પર્યાયોના દ્રવ્યાર્થિક નયોથી, અર્થસંક્રાંતિ, વ્યંજનસંક્રાંતિ તેમજ યોગસંક્રાંતિથી યુક્ત થઇને વિચાર કરવો તે પૃથક્ત્વવિતર્કસવિચાર શુકલ-ધ્યાનનો પ્રથમ પ્રકાર છે (૧).

यथा सिद्धगारुडिकादिमन्त्रः सकलशरीरस्यापि विषमं विषं मन्त्रसामर्थ्येन सर्वावयवेभ्यः समाकृष्य दंशस्थाने समानीय संस्तम्भयति, तथा पूर्वगतश्रुतानुसारतोऽर्थव्यञ्जनयोगसंक्रान्तिराहित्येनाशेषविषयेभ्यः समाहृत्यैकस्मिन्नेव पर्याये योगस्य निर्वातस्थाने दीपशिखावत स्थिरीकरणम् एकत्ववितर्काऽविचारम् ॥२॥

यदा जघन्ययोगवतः संज्ञिपर्याप्तस्य मनोद्रव्याणि समये निरुन्धन् असंख्यातसमयैः संपूर्ण मनोयोगं तत्पश्चात् पर्याप्तद्वीन्द्रियस्य वाग्योगपर्यायतोऽसंख्यातगुणन्यूनवाग्योगपर्यायान् प्रतिसमयं निरुन्धन् असंख्यातसमयैः संपूर्णं वाग्योगं, ततश्च प्रथमसमयसमुत्पन्ननिगोदजीवस्य जघन्यकाययोगपर्यायतोऽसंख्यातगुणहीनकाययोगं प्रतिसमयं निरुन्धन्, असंख्यात-

---

मंत्रवाला पुरुष समस्त शरीर के अवयवों में व्याप्त विषम विष को मंत्र के प्रभाव से खेचकर काटे हुए स्थानपर स्तंभित कर देता है उसीतरह पूर्वगतश्रुतज्ञान के अनुसार अर्थ, व्यंजन एवं योगों की सक्रान्ति से रहित होने के कारण, अशेषविषयों से योगों को हटाकर एक ही पर्याय में योग का, वातरहित स्थान में दीपक की लौ की तरह, स्थिर करना सो **एकत्ववितर्क–अविचार–नामक शुक्लध्यान** का दूसरा भेद है ॥२॥ सूक्ष्मक्रिय–अप्रतिपाति शुक्लध्यान सिर्फ सूक्ष्मकाययोगवाले जीव को होता है। सूक्ष्मक्रिय-अप्रतिपाति शुक्लध्यान के सन्मुख हुआ जीव सर्वप्रथम मनोद्रव्यों का प्रतिसमय निरोध करता हुआ असंख्यातसमयप्रमाणकाल में समस्तमनोयोग का, इसीतरह प्रतिसमय वाग्योगपर्यायों का निरोध करता हुआ असंख्यातसमयप्रमाणकाल में समस्तवाग्योग का, एव प्रथम समयमें समुत्पन्न निगोदजीवकी जघन्य–अवगाहनास्वरूप काययोगपर्यायों से असंख्यात-

---

જેવી રીતે સિદ્ધ ગારુડિક આદિ મંત્રવાળો પુરુષ આખાં શરીરનાં અવયવોમાં પ્રસરેલાં વિષમ ઝેરને મંત્રના પ્રભાવથી ખેંચીને કરડેલા સ્થાન ઉપર સ્તંભિત કરી દે છે, તેવી જ રીતે પૂર્વગત શ્રુતજ્ઞાન અનુસાર અર્થ, વ્યંજન તેમજ યોગોની સંક્રાંતિથી રહિત હોવાને કારણે, બીજા વિષયોથી યોગોને હટાવીને એક જ પર્યાયમાં યોગને હવા વગરના સ્થાનમાં દીપકની જ્યોતની પેઠે સ્થિર કરવો તે શુકલધ્યાનના એકત્વવિર્તકઅવિચાર નામનો બીજો પ્રકાર છે. (૨)

સૂક્ષ્મક્રિય–અપ્રતિપાતિ શુકલધ્યાનને સન્મુખ થયેલો જીવ સર્વપ્રથમ મનોદ્રવ્યોના હરવખત નિરોધ કરતાં કરતાં અસંખ્યાત–સમય–પ્રમાણ કાલે સમસ્ત મનોયોગનો, તેમ જ વારંવાર વાગ્યોગપર્યાયોનો નિરોધ કરતાં કરતાં અસંખ્યાત–સમય–પ્રમાણે કાળે સમસ્ત વાગ્યોગનો, તેમ જ પ્રથમ સમયમાં સમુત્પન્ન નિગોદ જીવની જઘન્યઅવગાહનાસ્વરૂપ કાયયોગની પર્યાયોથી અસંખ્યાતગુણહીનકાયયોગનો વારવાર નિરોધ કરતાં

समयैर्बादरकाययोगं च सर्वथा निरुणद्धि, तदेदं सूक्ष्मक्रियाऽप्रतिपातिध्यानमुपक्रमते ॥३॥ तत्र श्वासोच्छ्वासस्वरूपं सूक्ष्ममपि काययोगं निरुध्य अयोगित्वं प्राप्य शैलेशीमवस्थां प्रतिपद्यते, मध्यमकालेन 'अ इ उ ऋ ऌ' इत्येवंरूपं पञ्चलघ्वक्षरोच्चारणसमकालस्थितिकं समुच्छिन्नक्रियमनिवर्ति ध्यानमनुभवति ॥४॥ दशवैकालिकसूत्रस्याचारमणिमञ्जूषाटीकायामस्माभिः सविस्तरं शुक्लध्यानवर्णनं कृतम्, अतस्ततोऽवगन्तव्यम् ।

तथा—तत् शुक्लध्यानं चतुष्प्रत्यवतारं प्रज्ञप्तम् । **'सुक्कस्स णं झाणस्स चत्तारि लक्खणा पण्णत्ता'** शुक्लस्य खलु ध्यानस्य चत्वारि लक्षणानि प्रज्ञप्तानि । **'तं जहा'** तद्यथा

---

गुणहीनकाययोग को प्रतिसमय में निरोध करता हुआ असंख्यातसमयप्रमाणकाल में बादरकाययोग का सर्वथा निरोध कर देता है, तब जाकर इसे सूक्ष्मक्रिय—अप्रतिपातिनामक शुक्लध्यान की प्राप्ति होती है, यह **सूक्ष्मक्रिय—अप्रतिपातिनामक** तीसरा भेद है ।३। इस अवस्थामें श्वासोच्छ्वासरूप सूक्ष्मकाययोगका भी निरोध कर, अयोगि—अवस्था को प्राप्त हो, शैलेशी अवस्था को प्राप्त कर लेता है, वहां **'अ इ उ ऋ ऌ'** इन पांच लघु अक्षरों के मध्यम काल से उच्चारण करने में जितना समय लगता है उतने समय तक वहां ठहर कर समुच्छिन्नक्रिय—अनिवर्त्तिनामक शुक्लध्यानका अनुभव करता है ।४। इस शुक्लध्यान का विशेष विस्तारपूर्वक वर्णन दशवैकालिक सूत्र के चौथे अध्ययन की 'आचारमणिमंजूषा' नामकी टीका में लिखा गया है, अतः विशेषार्थी को इसका विशेष वर्णन वहां से देख लेना चाहिये । **(सुक्कस्स णं झाणस्स चत्तारि लक्खणा पण्णत्ता)** इस शुक्लध्यान के चार लक्षण है, **(तं जहा)** वे इस प्रकार हैं—**(विवेगे)** विवेक—देह से आत्माको

---

કરતાં અસંખ્યાતસમયપ્રમાણ કાળે બાદરકાયયોગનો સર્વથા નિરોધ કરી દે છે, ત્યારે તેને સૂક્ષ્મક્રિય—અપ્રતિપાતિ નામક શુક્લધ્યાનની પ્રાપ્તિ થાય છે. આ સૂક્ષ્મક્રિય—અપ્રતિપાતિ નામે ત્રીજો પ્રકાર છે. (૩)

તે અવસ્થામાં શ્વાસોચ્છ્વાસરૂપ સૂક્ષ્મકાયયોગનો પણ નિરોધ કરી, અયોગિ-અવસ્થાને પ્રાપ્ત થઈ, શૈલેશી અવસ્થાને પ્રાપ્ત કરી લે છે. ત્યાં अ इ उ ऋ ऌ આ પાંચ લઘુ અક્ષરોનું મધ્યમકાલથી ઉચ્ચારણ કરવામાં જેટલો સમય લાગે તેટલા સમયસુધી રોકાઈને સમુચ્છિન્નક્રિય—અનિવર્તિ નામક શુક્લધ્યાનનો અનુભવ કરે છે (૪). આ શુક્લધ્યાનનું વિશેષ વિસ્તારપૂર્વક વર્ણન દશવૈકાલિકસૂત્રના ચોથા અધ્યયનની આચારમણિમંજૂષા નામની ટીકામાં લખવામાં આવ્યું છે. તેથી વિશેષ જાણવાવાળાને માટે તેનું વિશેષ વર્ણન ત્યાંથી જોઈ લેવું જોઈએ.

(सुक्कस्स णं झाणस्स चत्तारि लक्खणा पण्णत्ता) આ શુક્લધ્યાનનાં ચાર લક્ષણ છે. (तं जहा) તે આ પ્રકારે છે—(विवेगे) વિવેક—દેહથી આત્માને જુદો જાણવો,

**चत्तारि लक्खणा पण्णत्ता; तं जहा–विवेगे १, विउस्सग्गे २, अव्वहे ३, असम्मोहे ४। सुक्कस्स णं झाणस्स चत्तारि आलंवणा पण्णत्ता, तं जहा–खंती १, मुत्ती २, अज्जवे ३, मद्दवे ४। सुक्कस्स**

**'विवेगे'** विवेकः–पृथक्करणं,स च पृथक्कारः–देहादात्मनो बुद्धया विवेचनम्॥१॥ **'विउस्सग्गे'** व्युत्सर्गः–निस्सङ्गतया देहोपधित्यागः ॥२॥ **'अव्वहे'** अव्यथम्–देवाद्युपसर्गजनितं भयं व्यथा–तया रहितम् ॥३॥ **'असंमोहे'** असंमोहः–देवमायाजनितस्य मूढत्वस्य निषेधः ॥४॥ **'सुक्कस्स णं झाणस्स चत्तारि आलंवणा पण्णत्ता'** शुक्लस्य खलु ध्यानस्य चत्वार्यालम्बनानि प्रज्ञप्तानि, **'तं जहा'** तद्यथा–**'खंती'** क्षान्तिः–परकृताऽपकारसहनम् ॥१॥ **'मुत्ती'** मुक्तिः–निर्लोभता ॥२॥ **'अज्जवे'** आर्जवं–सरलता ॥३॥ **'मद्दवे'** मार्दवं–मृदुता ॥४॥ **'सुक्कस्स णं झाणस्स चत्तारि अणुप्पेहाओ पण्णत्ताओ'** शुक्लस्य

भिन्न जानना १। **(विउस्सग्गे)** व्युत्सर्ग–देह तथा उपधि का परित्याग करना २। **(अव्वहे)** अव्यथ–व्यथारहित होना–देवादिकृत उपसर्गजनित भय का नाम व्यथा है, इससे रहित का नाम अव्यथ है, अर्थात्–देवादिकृत उपसर्गों का निश्चल भावसे सहन करना ३। **(असंमोहे)** असंमोह–मोहरहित होना–देवादिक द्वारा प्रदर्शित मायाकी ओर आकृष्ट नहीं होना ४। **(सुक्कस्स णं झाणस्स चत्तारि आलंवणा पण्णत्ता)** शुक्लध्यान के चार आलंबन हैं, **(तं जहा)** वे इस प्रकार हैं–**(खंती)** क्षान्ति–परकृत अपकार का सहन करना १, **(मुत्ती)** मुक्ति–लोभका परित्याग करना २, **(अज्जवे)** आर्जव–चित्त में सरलता रखना ३, और **(मद्दवे)** मार्दव गुणका होना ४। **(सुक्कस्स णं झाणस्स चत्तारि अणुप्पेहाओ पण्णत्ताओ)** शुक्लध्यान की चार अनुप्रेक्षा है, **(तं जहा)** वे ये है–**(अवायाणुप्पेहा)** अपायानुप्रेक्षा–

(विउस्सग्गे) व्युत्सर्ग–देह तथा उपधिनो परित्याग करवो, (अव्वहे) अव्यथ–व्यथारहित होवुं–देवादिकृत उपसर्गथी थयेल भयनु नाम व्यथा छे, तेनाथी रहितनु नाम अव्यथ छे, अर्थात्–देवादिकथी कराएल उपसर्गोने निश्चळ भावथी सहन करवा. (असंमोहे) असंमोह-मोहरहित थवुं–देवादिकद्वारा प्रदर्शित माया तरफ आकर्षावुं नहि (सुक्कस्स णं झाणस्स चत्तारि आलंवणा पण्णत्ता) शुक्लध्याननां चार आलंबन छे, (तं जहा) ते आ प्रकारे छे–(खंती) क्षान्ति–बीजाए करेल अपकारने सहन करवो, (मुत्ती) मुक्ति–लोभनो परित्याग करवो, (अज्जवे) आर्जव-चित्तमां सरळता राखवी, अने (मद्दवे) मार्दव–मृदुता गुण थवुं. (सुक्कस्स णं झाणस्स चत्तारि अणुप्पेहाओ पण्णत्ताओ) शुक्लध्याननी चार अनुप्रेक्षा छे, (तं जहा) ते आ छे (अवायाणुप्पेहा)

**णं झाणस्स चत्तारि अणुप्पेहाओ पण्णत्ताओ; तं जहा–अवायाणुप्पेहा १ असुभाणुप्पेहा २ अणंतवत्तियाणुप्पेहा ३ विपरिणामाणुप्पेहा ४। से तं झाणे॥ सू० ३०॥**

खलु ध्यानस्य चतस्रोऽनुप्रेक्षाः प्रज्ञप्ताः, '**तं जहा**' तद्यथा–'**अवायाणुप्पेहा**' अपायानुप्रेक्षा–अपायानां प्राणातिपाताद्यास्रवद्वारजनितानाम् अनर्थानामनुचिन्तनम् ॥१॥ '**असुभाणुप्पेहा**' अशुभानुप्रेक्षा-संसारस्यैव अशुभस्वरूपतयाऽनुचिन्तनम् ॥२॥ '**अणंतवत्तियाणुप्पेहा**' अनन्तवृत्तिताऽनुप्रेक्षा–अनन्तवृत्तिता=तैलिकचक्रयोजितस्य वृषस्य मार्गाऽनवसानवत्कदाप्यसमाप्तिशीलता तस्या अनुप्रेक्षा–अनुचिन्तनम् ॥३॥ '**विपरिणामाणुप्पेहा**' विपरिणामानुप्रेक्षा–उत्पादव्ययध्रौव्यस्वभावानां पदार्थानां यो विपरिणामः–प्रतिक्षणं नवनवपर्यायरूपः तस्यानुचिन्तनम् ॥४॥ '**से तं झाणे**' तदेतद् ध्यानम् ॥ सू० ३० ॥

अपायों का अर्थात् प्राणातिपातादिक पाप, जो कर्मों के आस्रव के लिये द्वार जैसे है उनसे जनित अनर्थों का वारंवार विचार करना सो अपायानुप्रेक्षा है १। (**असुभाणुप्पेहा**) अशुभानुप्रेक्षा–संसार स्वयं अशुभस्वरूप है, ऐसा वारंवार विचार करना सो अशुभानुप्रेक्षा है २। (**अणंतवत्तियाणुप्पेहा**) अनन्तवर्त्तितानुप्रेक्षा–भवपरंपरा की अनंतवृत्ति का विचार करना, अर्थात् जिस प्रकार तेली का बैल कोल्हू में जोता जाने पर चक्कर काटता है उसी प्रकार इस जीव के भी, जबतक यह संसार में रहता है तबतक इसके भ्रमण की कभी भी समाप्ति नहीं होती है, इस प्रकार का अनुचिन्तन करना अनंतवर्तितानुप्रेक्षा है ३। (**विपरिणामाणुप्पेहा**) विपरिणामानुप्रेक्षा–प्रत्येक द्रव्य, उत्पाद, व्यय एवं ध्रौव्य स्वभाववाले हैं, अतः वस्तु प्रतिसमय

અપાયાનુપ્રેક્ષા–અપાયોનો અર્થાત્–પ્રાણાતિપાતાદિક પાપ જે કર્મોના આસ્રવને માટે દ્વાર જેવાં છે તેમનાથી થતા અનર્થોનો વારંવાર વિચાર કરવો તે અપાયાનુપ્રેક્ષા છે. (असुभाणुप्पेहा) અશુભાનુપ્રેક્ષા–સંસાર પોતે અશુભસ્વરૂપ છે, એવો વારવાર વિચાર કરવો તે અશુભાનુપ્રેક્ષા છે. (अणंतवत्तियाणुप्पेहा) અનંતવર્ત્તિતાનુપ્રેક્ષા–ભવપરંપરાની અનંતવૃત્તિતાનો વિચાર કરવો, અર્થાત્ જેવી રીતે ઘાંચીનો બળદ ઘાણીમાં જોડાઈને ચક્કરો–(આંટા) ફર્યા કરે છે એવી રીતે આ જીવ પણ જ્યાં સુધી સંસારમાં રહે છે ત્યાં સુધી તેના ભ્રમણની કદી પણ સમાપ્તિ થતી નથી, એ પ્રકારનું અનુચિંતન કરવું તે અનંતવર્તિતાનુપ્રેક્ષા છે. (विपरिणामाणुप्पेहा) વિપરિણામાનુપ્રેક્ષા–પ્રત્યેક દ્રવ્ય ઉત્પાદ, વ્યય તેમજ ધ્રૌવ્ય સ્વભાવવાળાં છે, તેથી હરવખત વસ્તુ પરિણમન

**मूलम्—से किं तं विउस्सग्गे ? विउस्सग्गे दुविहे पण्णत्ते; तं जहा–१ दव्वविउस्सग्गे, २ भावविउस्सग्गे य। से किं तं दव्वविउस्सग्गे ? दव्वविउस्सग्गे चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा–१ सरीर-**

**टीका**—आभ्यन्तरतपसः षष्ठभेदमाह–'**से किं तं विउस्सग्गे**' अथ कोऽसौ व्युत्सर्गः ? व्युत्सर्गः किंस्वरूपः कतिविधश्चेति प्रश्नः। व्युत्सर्गः–वि=विशेषेण, उत्=उत्कृष्ट-भावनया सर्गः=त्यागः। '**विउस्सग्गे दुविहे पण्णत्ते**' व्युत्सर्गो द्विविधः प्रज्ञप्तः, '**तं जहा**' तद्यथा १–'**दव्वविउस्सग्गे**' द्रव्यव्युत्सर्गः, २–'**भावविउस्सग्गे**' भावव्युत्सर्गः। '**से किं तं दव्वविउस्सग्गे ?**' अथ कोऽसौ द्रव्यव्युत्सर्गः ? '**दव्वविउस्सग्गे चउव्विहे पण्णत्ते**' द्रव्यव्युत्सर्गः–चतुर्विधः प्रज्ञप्तः, '**तं जहा**' तद्यथा–'**सरीरविउस्सग्गे**' शरीरव्युत्सर्गः।१।

परिणमती रहती है। इस प्रकार जो चिन्तन करना इसका नाम विपरिणामानुप्रेक्षा है। (**से तं झाणे**) इस प्रकार चार ध्यानका वर्णन हुआ ॥ सू० ३० ॥

'**से किं तं विउस्सग्गे**' इत्यादि,

अब आभ्यन्तर तपका जो छठा भेद व्युत्सर्ग है उसका वर्णन करते है–(**से किं तं विउस्सग्गे**) विशेष रीति से उत्कृष्ट भावनापूर्वक परित्याग करना व्युत्सर्ग है, वह व्युत्सर्गतप क्या–कितने प्रकार का है ? (**विउस्सग्गे दुविहे पण्णत्ते**) व्युत्सर्ग के दो भेद हैं, (**तं जहा**) वे ये है–(**दव्वविउस्सग्गे भावविउस्सग्गे**) १–द्रव्यव्युत्सर्ग और २–भावव्युत्सर्ग। (**से किं तं दव्वविउस्सग्गे**) द्रव्यव्युत्सर्ग क्या–कितने प्रकार का है ? (**दव्वविउस्सग्गे चउव्विहे पण्णत्ते**) द्रव्यव्युत्सर्ग चार प्रकार का है। (**तं जहा**) जैसे–

કરતી હોય છે, એક જ રૂપે કદી નથી રહેતી. એ પ્રકારે જે ચિંતન કરવું તેનું નામ વિપરિણામાનુપ્રેક્ષા છે. (से तं झाणे) એ પ્રમાણે ચાર ધ્યાનનું વર્ણન થયું. (સૂ૦ ૩૦)

'से किं तं विउस्सग्गे ?' ઈત્યાદિ

હવે સૂત્રકાર આભ્યન્તર તપનો જે છઠ્ઠો પ્રકાર વ્યુત્સર્ગ છે તેનું વર્ણન કરે છે–(से किं त विउस्सग्गे) વિશેષરીતિથી ઉત્કૃષ્ટભાવનાપૂર્વક પરિત્યાગ કરવો તે વ્યુત્સર્ગ છે. વ્યુત્સર્ગ તપ કેટલા પ્રકારનું છે ? (विउस्सग्गे दुविहे पण्णत्ते) એના બે પ્રકાર છે,–(तं जहा) તે આ છે–(दव्वविउस्सग्गे भावविउस्सग्गे य) ૧ દ્રવ્યવ્યુત્સર્ગ અને ૨ ભાવવ્યુત્સર્ગ. દ્રવ્યવ્યુત્સર્ગ શું–કેટલા પ્રકારનું છે ? (दव्वविउस्सग्गे चउव्विहे पण्णत्ते) એ દ્રવ્યવ્યુત્સર્ગ ચાર પ્રકારનું છે. (तं जहा)

विउस्सग्गे, २ गणविउस्सग्गे, ३ उवहिविउस्सग्गे, ४ भत्तपाणविउ-स्सग्गे। से तं दव्वविउस्सग्गे। से किं तं भावविउस्सग्गे? भावविउ-स्सग्गे तिविहे पण्णत्ते, तं जहा-१ कसायविउस्सग्गे, २ संसारविउस्स-

'**गणविउस्सग्गे**' गणव्युत्सर्गः ।२। '**उवहिविउस्सग्गे**' उपधिव्युत्सर्गः—उपधेरुपकरणस्य त्यागः ।३। '**भत्तपाणविउस्सग्गे**' भक्तपानव्युत्सर्गः—अन्नजलत्यागः ।४। '**से तं दव्व-विउस्सग्गे**' स एष द्रव्यव्युत्सर्गः । '**से किं तं भावविउस्सग्गे**' अथ कोऽसौ भावव्युत्सर्गः । '**भावविउस्सग्गे तिविहे पण्णत्ते**' भावव्युत्सर्गः त्रिविधः प्रज्ञप्तः, '**तं जहा**' तद्यथा—'**कसाय-विउस्सग्गे**' कषायव्युत्सर्गः ।१। '**संसारविउस्सग्गे**' संसारव्युत्सर्गः ।२। '**कम्मविउ-स्सग्गे**' कर्मव्युत्सर्गः ।३। '**से किं तं कसायविउस्सग्गे**' अथ कोऽसौ कषायव्युत्सर्गः ? '**कसाय-**

(**सरीरविउस्सग्गे १, गणविउस्सग्गे २, उवहिविउस्सग्गे ३, भत्तपाणविउस्सग्गे ४**) शरीरव्युत्सर्ग १, गणव्युत्सर्ग २, उपधिव्युत्सर्ग ३, और भक्तपानव्युत्सर्ग ४ । इनमें शरीर के ममत्व का त्याग करना सो शरीरव्युत्सर्ग है १ । पडिमा आदि आराधन करने के लिये गण—संप्रदाय से ममत्वका त्याग करना सो गणव्युत्सर्ग है २। वस्त्रादिक उपधि के ममत्व का त्याग करना सो उपधिव्युत्सर्ग है ३। भोजन एवं पानी का त्याग करना सो भक्तपानव्युत्सर्ग है ४। (**से तं दव्वविउस्सग्गे**) यह सब द्रव्यव्युत्सर्ग है। (**से किं तं भावविउस्सग्गे**) भावव्युत्सर्ग क्या—कितने प्रकार का है ? (**भावविउस्सग्गे तिविहे पण्णत्ते**) भावव्युत्सर्ग तीन प्रकार का है, (**तं जहा**) वे प्रकार ये है—(**कसायविउस्सग्गे १ संसारविउस्सग्गे २ कम्मविउस्सग्गे ३**) कषायव्युत्सर्ग १, संसारव्युत्सर्ग २, एवं कर्मव्युत्सर्ग ३ । (**से किं तं कसायविउस्सग्गे**) कषायव्युत्सर्ग क्या कितने प्रकारका है ? (**कसाय-**

જેમકે—(सरीरविउस्सग्गे गणविउस्सग्गे उवहिविउस्सग्गे भत्तपाणविउस्सग्गे) શરીર-વ્યુત્સર્ગ, ગણવ્યુત્સર્ગ, ઉપધિવ્યુત્સર્ગ અને ભક્તપાનવ્યુત્સર્ગ. તેમાં શરીરના મમત્વનો ત્યાગ કરવો તે શરીરવ્યુત્સર્ગ છે. પડિમા આદિ આરાધન કરવા માટે ગણ—સંપ્રદાયથી મમત્વનો ત્યાગ કરવો તે ગણવ્યુત્સર્ગ છે. વસ્ત્રાદિક ઉપધિથી મમત્વનો ત્યાગ કરવો તે ઉપધિવ્યુત્સર્ગ છે. ભોજન તેમજ પાણીનો ત્યાગ કરવો તે ભક્તપાનવ્યુત્સર્ગ છે. આ બધા દ્રવ્યવ્યુત્સર્ગ છે. (से किं तं भावविउस्सग्गे) ભાવવ્યુત્સર્ગ શું—કેટલા પ્રકારનો છે ?(भावविउस्सग्गे तिविहे पण्णत्ते) ભાવવ્યુત્સર્ગ ત્રણ પ્રકારનો છે, (तं जहा) તે આ પ્રકારે છે—(कसायविउस्सग्गे संसारविउस्सग्गे कम्मविउस्सग्गे) કષાયવ્યુત્સર્ગ, સંસારવ્યુત્સર્ગ તેમજ કર્મવ્યુત્સર્ગ.

ग्गे, ३ कम्मविउस्सग्गे। से किं तं कसायविउस्सग्गे,? कसायविउस्सग्गे चउव्विहे पण्णत्ते; तं जहा-कोहकसायविउस्सग्गे, २ माणकसाय विउस्सग्गे,३ मायाकसायविउस्सग्गे,४ लोहकसायविउस्सग्गे। से तं कसायविउस्सग्गे। से किं तं संसारविउस्सग्गे? संसारविउस्सग्गे चउव्विहे पण्णत्ते; तं जहा—१ णेरइयसंसारविउस्सग्गे, २ तिरि-

---

विउस्सग्गे चउव्विहे पण्णत्ते' कषायव्युत्सर्गःचतुर्विधः प्रज्ञप्त', 'तं जहा' तद्यथा-'कोहकसायविउस्सग्गे' क्रोधकषायव्युत्सर्गः ।१। 'माणकसायविउस्सग्गे' मानकषायव्युत्सर्गः। 'मायाकसायविउस्सग्गे' मायाकषायव्युत्सर्गः ।३। 'लोहकसायविउस्सग्गे' लोभकषायव्युत्सर्गः ।४। 'से तं कसायविउस्सग्गे' स एष कषायव्युत्सर्ग। 'से किं संसारविउस्सग्गे' अथ कोऽसौ संसारव्युत्सर्गः? 'संसारविउस्सग्गे चउव्विहे पण्णत्ते संसारव्युत्सर्गः चतुर्विधः प्रज्ञप्तः, 'तं जहा' तद्यथा—'णेरइयसंसारविउस्सग्गे' नैरयिकससार—व्युत्सर्ग ।१। 'तिरियसंसारविउस्सग्गे' तिर्यक्संसारव्युत्सर्गः ।२। 'मणुयसंसारविउ-

---

विउस्सग्गे चउव्विहे पण्णत्ते) कषायव्युत्सर्ग चार प्रकारका है। (तं जहा) वे चार प्रकार ये है—(कोहकसायविउस्सग्गे१, माणकसायविउस्सग्गे २, मायाकसायविउस्सग्गे ३, लोहकसायविउस्सग्गे ४) क्रोधकषायव्युत्सर्ग१, मानकषायव्युत्सर्ग२, मायाकषायव्युत्सर्ग ३ एवं लोभकषायव्युत्सर्ग ४। (से तं कसायविउसग्गे) इन क्रोधादि चार कषायोंका परित्याग करना यह कषायव्युत्सर्ग है। (से किं तं ससारविउस्सग्गे) ससारव्युत्सर्ग क्या—कितने प्रकार का है? (संसारविउस्सग्गे चउव्विहे पण्णत्ते) ससारव्युत्सर्ग चार प्रकार का है, (तं जहा) वे चार प्रकार ये है—(णेरइयसंसारविउस्सग्गे १ तिरियसंसारविउस्सग्गे २ मणुयसंसारविउस्स-

---

(से किं तं कसायविउस्सग्गे) કષાયવ્યુત્સર્ગ કેટલા પ્રકારનો છે? (कसायविउस्सग्गे चउव्विहे पण्णत्ते) કષાયવ્યુત્સર્ગ ચાર પ્રકારનો છે (तं जहा) જેમકે-(कोहकसायविउस्सग्गे माणकसायविउस्सग्गे मायाकसायविउस्सग्गे लोहकसायविउस्सग्गे) ક્રોધકષાયવ્યુત્સર્ગ, માનકષાયવ્યુત્સર્ગ, માયાકષાયવ્યુસર્ગ, તેમજ લોભકષાયવ્યુત્સર્ગ. (से तं कसायविउस्सग्गे) એ ક્રોધાદિ ચારેય કષાયોનો પરિત્યાગ કરવો તે આ કષાયવ્યુત્સર્ગ છે. (से किं तं संसारविउस्सग्गे) સંસારવ્યુત્સર્ગ કેટલા પ્રકારનો છે? (संसारविउस्सग्गे चउव्विहे पण्णत्ते) સંસારવ્યુત્સર્ગ ચાર પ્રકારનો છે, (तं जहा) તે ચાર પ્રકાર આ છે-(णेरइयसंसारविउस्सग्गे तिरियसंसारविउस्सग्गे मणुयसंसारविउस्सग्गे

यसंसारविउस्सग्गे, ३ मणुयसंसारविउस्सग्गे, ४ देवसंसारविउस्सग्गे। से तं संसारविउस्सग्गे। से किं तं कम्मविउस्सग्गे? कम्मविउस्सग्गे अट्ठविहे पण्णत्ते; तं जहा, १ णाणावरणिज्जकम्मविउस्सग्गे, २ दरिसणावरणिज्जकम्मविउस्सग्गे, ३ वेयणिज्जकम्मविउस्सग्गे, ४ मोहणिज्जकम्मविउस्सग्गे, ५ आउकम्मविउस्सग्गे, ६ णामकम्मविउस्सग्गे ७, गोयकम्मविउस्सग्गे ८, अंतरायकम्मविउस्सग्गे। से तं कम्मविउस्सग्गे। से तं भावविउस्सग्गे ॥ सू० ३० ॥

---

स्सग्गे' मनुजसंसारव्युत्सर्गः ।३। 'देवसंसारविउस्सग्गे' देवसंसारव्युत्सर्गः ।४। 'से तं संसारविउस्सग्गे' स एष संसारव्युत्सर्गः। 'से किं तं कम्मविउस्सग्गे' अथ कोऽसौ कर्मव्युत्सर्गः? 'कम्मविउस्सग्गे अट्ठविहे पण्णत्ते' कर्मव्युत्सर्गः अष्टविधः प्रज्ञप्तः। 'तं जहा' तद्यथा—'णाणावरणिज्जकम्मविउस्सग्गे' ज्ञानावरणीयकर्मव्युत्सर्गः ।१। 'दरिसिणावरणिज्जकम्मविउस्सग्गे' दर्शनाऽवरणीयकर्मव्युत्सर्गः ।२। 'वेयणिज्जकम्मविउस्सग्गे' वेदनीयकर्मव्युत्सर्गः ।३। 'मोहणिज्जकम्मविउस्सग्गे' मोहनीयकर्म-

---

ग्गे ३, देवसंसारविउस्सग्गे ४) नैरयिकसंसारव्युत्सर्ग, तिर्यक्संसारव्युत्सर्ग, मनुजसंसारव्युत्सर्ग, एवं देवसंसारव्युत्सर्ग, (से तं संसारविउस्सग्गे) इस प्रकार चारगतिरूप संसार का यह व्युत्सर्ग (परित्याग) संसारव्युत्सर्ग है। (से किं तं कम्मविउस्सग्गे) कर्मव्युत्सर्ग क्या-कितने प्रकार का है। (कम्मविउस्सग्गे अट्ठविहे पण्णत्ते) जिसमें आठ प्रकार के कर्मोंका व्युत्सर्ग—परित्याग हो वह कर्मव्युत्सर्ग आठ प्रकार का है, (तं जहा) जैसे (णाणावरणिज्जकम्मविउस्सग्गे १, दरिसणावरणिज्जकम्मविउस्सग्गे २, वेयणिज्जकम्मविउस्सग्गे ३, मोहणिज्जकम्मविउस्सग्गे

---

देवसंसारविउस्सग्गे) નૈરયિકસંસારવ્યુત્સર્ગ, તિર્યક્સંસારવ્યુત્સર્ગ, મનુજસંસારવ્યુત્સર્ગ તેમજ દેવસંસારવ્યુત્સર્ગ. (से तं संसारविउस्सग्गे) એ પ્રકારે ચારેય ગતિરૂપ સંસારનો આ વ્યુત્સર્ગ (પરિત્યાગ) તે સંસારવ્યુત્સર્ગ છે. (से किं तं कम्मविउस्सग्गे) કર્મવ્યુત્સર્ગ કેટલા પ્રકારનો છે? (कम्मविउस्सग्गे अट्ठविहे पण्णत्ते) જેમાં આઠેય પ્રકારનાં કર્મોનો વ્યુત્સર્ગ—પરિત્યાગ થઈ જાય છે એવો આ કર્મવ્યુત્સર્ગ આઠ પ્રકારનો છે, (तं जहा) જેમકે—(णाणावरणिज्जकम्मविउस्सग्गे, दरिसणावरणिज्जकम्मविउस्सग्गे, वेयणिज्जकम्मविउस्सग्गे, मोहणि-

मूलम्—तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स बहवे अणगारा भगवंतो अप्पेगइया आयारधरा

व्युत्सर्गः ।४। 'आउकम्मविउस्सग्गे' आयुष्कर्मव्युत्सर्गः । ।५। 'णामकम्मविउस्सग्गे' नामकर्मव्युत्सर्गः ।६। 'गोयकम्मविउस्सग्गे' गोत्रकर्मव्युत्सर्गः ।७। 'अंतरायकम्मविउस्सग्गे' अन्तरायकर्मव्युत्सर्गः ।८। 'से तं कम्मविउस्सग्गे' स एष कर्मव्युत्सर्गः, 'से तं भावविउस्सग्गे' स एष भावव्युत्सर्गः । इत्थमनशनादिभेदेन षड्विधं बाह्य प्रायश्चित्तादिभेदेन षड्विधमाभ्यन्तरं च तपो व्याख्यातम् ॥ सू० ३० ॥

टीका—'तेणं कालेणं तेणं समएणं' इत्यादि। तस्मिन् काले तस्मिन् समये 'समणस्स भगवओ महावीरस्स' श्रमणस्य भगवतो महावीरस्य 'बहवे अणगारा भगवंतो' बहवोऽनगारा भगवन्तः—वर्णिताः पुनर्वर्ण्यमानाः गिष्याः

४, आउकम्मविउस्सग्गे ५, णामकम्मविउस्सग्गे ६, गोयकम्मविउस्सग्गे, ७ अतरायकम्मविउस्सग्गे ८) ज्ञानावरणीयकर्मव्युत्सर्ग १, दर्शनावरणीयकर्मव्युत्सर्ग २, वेदनीयकर्मव्युत्सर्ग ३, मोहनीयकर्मव्युत्सर्ग ४, आयुकर्मव्युत्सर्ग ५, नामकर्मव्युत्सर्ग ६, गोत्रकर्मव्युत्सर्ग ७, एव अंतरायकर्मव्युत्सर्ग ८, (से तं भावविउस्सग्गे) ये सब भावव्युत्सर्ग है । इस तरह यहां तक अनशनादिक के भेद से छह प्रकार बाह्यतप का और प्रायश्चित्त आदि के भेद से छह प्रकार आभ्यंतर तप का वर्णन हुआ ॥ सू०३० ॥

'तेणं कालेणं तेणं समएणं' इत्यादि।

(तेणं कालेणं तेणं समएणं) उस काल और उस समय (समणस्स भगवओ महावीरस्स) श्रमण भगवान् महावीर प्रभु के, जो (बहवे अणगारा भगवंतो) बहुत

ज्जकम्मविउस्सग्गे, आउकम्मविउस्सग्गे, णामकम्मविउस्सग्गे, गोयकम्मविउस्सग्गे, अंतरायकम्मविउस्सग्गे ) જ્ઞાનાવરણીયકર્મવ્યુત્સર્ગ, દર્શનાવરણીયકર્મવ્યુત્સર્ગ, વેદનીયકર્મવ્યુત્સર્ગ, મોહનીય કર્મવ્યુત્સર્ગ, આયુકર્મવ્યુત્સર્ગ, નામકર્મવ્યુત્સર્ગ, ગોત્રકર્મવ્યુત્સર્ગ તેમજ અંતરાયકર્મવ્યુત્સર્ગ, (से तं कम्मविउस्सग्गे) આ પ્રકારે આ કર્મવ્યુત્સર્ગ આઠ પ્રકારનો છે. (से तं भावविउस्सग्गे) એ બધા ભાવવ્યુત્સર્ગ છે. એ રીતે અહીં સુધી અનશન આદિના ભેદથી છ પ્રકારનાં બાહ્યતપનુ અને પ્રાયશ્ચિત્ત આદિના ભેદથી છ પ્રકારના આભ્યંતર તપનું વર્ણન થયુ. (સૂ૦ ૩૦)

'तेण कालेणं तेणं समएणं' ઈત્યાદિ.

(तेणं कालेणं तेणं समएणं) તે કાલ અને તે સમયે (समणस्स भगवओ महावीरस्स) શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીર પ્રભુના જે (बहवे अणगारा भगवंतो) ઘણા

**जाव विवागसुयधरा तत्थ तत्थ तहिं तहिं देसे देसे गच्छागच्छिं गुम्मागुम्मिं फड्डाफड्डिं अप्पेगइया वायंति, अप्पेगइया पडि-**

बहुसंख्यका आसन्, तेषु शिष्येषु '**अप्पेगइया**' अप्येकके=केचित्–'**आयारधरा जाव विवागसुयधरा**' आचारधरा यावद् विपाकश्रुतधराः–आचाराङ्गादि–विपाकान्त–सर्वश्रुत-धारिण, इमे पूर्वं वर्णिताः, '**तत्थ तत्थ तहिं तहिं देसे देसे**' तत्र तत्र तस्मिन् तस्मिन् देशे देशे–अत्र वीप्सया स्थानबाहुल्यकथनात्साधूनामधिकता अप्रतिबन्धविचरणं च सूचितम्, तथा बहवो बहुविधग्रामनगरवनादिषु गता इति च गम्यते। '**गच्छागच्छिं**' गच्छागच्छि–एकाचार्यपरिवारो गच्छः–गच्छेन गच्छेन विभज्य वाचनादिकं प्रवृत्तम्, इति विग्रहे '**तत्र तेनेदमिति सरूपे**' इत्यनेन गच्छागच्छि, इत्यस्य साधुत्वम्। एवं '**गुम्मागुम्मिं**' गुल्मागुल्मि–गुल्मं=गच्छैकभागः, गुल्मेन गुल्मेन विभज्य इदं वाचनादिकं प्रवृत्तमिति गुल्मागुल्मि। '**फड्डाफड्डिं**' फड्डकाफड्डकि–फड्डकं=लघुतरो गच्छैकभागः, फड्डकेन फड्डकेन विभज्येदं वाचनादिकं प्रवृत्तम्, इत्यर्थे फड्डकाफड्डकि–एषु प्रयोगेषु समासे कृते पूर्वपदस्य दीर्घः समासान्त इच्–प्रत्ययश्च। '**अप्पेगइया वायंति**' अप्येकके

---

से अनगार भगवंत थे, उनमें (**अप्पेगइया**) कितनेक (**आयारधरा जाव विवागसुयधरा**) आचारांगसूत्र के धारक थे, 'यावत्' शब्द से कितनेक सूत्रकृताङ्ग से लेकर प्रश्नव्याकरण पर्यन्त सूत्रों में से एक २ सूत्र के धारक थे और कितनेक विपाकश्रुत के धारक थे, उपलक्षणसे कितनेक सबके भी धारक थे। (**तत्थ तत्थ तहिं तहिं देसे देसे**) वे उसी बगीचे में भिन्न २ जगह पर (**गच्छागच्छिं**) गच्छ गच्छरूप में विभक्त होकर, (**गुम्मागुम्मिं**) गच्छ के एक २ भाग में विभक्त होकर (**फड्डाफड्डिं**) फुटकर फुटकर रूप में विभक्त होकर विराजते थे। इनमें से (**अप्पेगइया वायंति**) कितनेक सूत्र की वाचना प्रदान करते थे–सूत्र पढाते

---

અનગાર ભગવંતો હતા, તેમનામાં (अप्पेगइया) કેટલાક (आयारधरा जाव विवाग-सुयधरा) આચારાંગ સૂત્રના ધારક હતા, 'यावत्' શબ્દથી કેટલાક સૂત્રકૃતાંગથી લઈને પ્રશ્નવ્યાકરણ સુધીના સૂત્રોમાંથી એક એક સૂત્રના ધારક હતા, અને કેટલાક વિપાકસૂત્રના ધારક હતા, ઉપલક્ષણથી કેટલાક બધા સૂત્રોના ધારક હતા. (तत्थ तत्थ तहिं तहिं देसे देसे) તે જ બગીચામાં જુદી જુદી જગ્યાએ (गच्छागच्छिं) ગચ્છ ગચ્છ-રૂપમાં વિભક્ત થઈને, (गुम्मागुम्मिं) ગચ્છના એક એક ભાગમાં વિભક્ત થઈને (फड्डाफड्डिं) છૂટા–છવાયા રૂપમાં વિભક્ત થઈને વિરાજતાં હતાં. તેમનામાંથી (अप्पेगइया वायंति) કેટલાક સૂત્રની વાચના આપતા હતા–સૂત્ર ભણાવતા

**पुच्छंति, अप्पेगइया परियट्टंति, अप्पेगइया अणुप्पेहंति, अप्पेगइया अक्खेवणीओ विक्खेवणीओ संवेयणीओ णिव्वेयणीओ**

वाचयन्ति–सूत्रवाचनां ददते–गच्छैकदेश गणावच्छेदकाधिष्ठित विधाय सूत्रवाचनां वाचयन्ति। '**अप्पेगइया पडिपुच्छंति**' अप्येकके प्रतिपृच्छन्ति=सूत्रार्थौ पृच्छन्ति, '**अप्पेगइया परियट्टंति**' अप्येकके परिवर्तयन्ति=सूत्रार्थौ पुनःपुनरभ्यस्यन्ति। '**अप्पेगइया अणुप्पेहंति**' अप्येकके अनुप्रेक्षन्ते=परिचिन्तयन्ति। '**अप्पेगइया अक्खेवणीओ विक्खेवणीओ संवेयणीओ णिव्वेयणीओ बहुविहाओ कहाओ कहंति**' अप्येकके आक्षेपणीः विक्षेपणीः संवेदिनीः निर्वेदिनीर्बहुविधाः कथाः कथयन्ति, मोहादपनीय तत्त्वं प्रति आक्षिप्यते=आकृष्यते प्राणी याभिस्ता आक्षेपण्यस्ताः–'कथा' इत्यस्य विशेषणम्। विक्षेपणीः–विक्षिप्यते=कुमार्गे प्रसक्तः प्राणी कुमार्गात्पृथक् क्रियते याभिस्ताः विक्षेपण्यस्ताः। संवेदिनीः–संवेद्यते=मोक्षसुखाभिलाषः क्रियते याभिस्ताः। निर्वेदिनी -निर्वेद्यते=संसाराद् निर्विण्णो

थे, (**अप्पेगइया**) कितनेक (**पडिपुच्छंति**) सूत्र और अर्थ को पूछते थे, (**अप्पेगइया**) कितनेक (**परियट्टंति**) सूत्र और अर्थ की आवृत्ति करते थे, (**अप्पेगइया**) कितनेक (**अणुप्पेहंति**) सूत्र–अर्थ की अनुप्रेक्षा–परिचिन्तन करते थे, (**अप्पेगइया**) कितनेक (**अक्खेवणीओ १, विक्खेवणीओ २, संवेयणीओ ३, णिव्वेयणीओ ४, बहुविहाओ कहाओ कहंति**) आक्षेपणी, विक्षेपणी, संवेदिनी, और निर्वेदिनी, इन अनेक प्रकार की कथाओं को कहते थे। मोह से दूर कराकर प्राणी जिस कथा के द्वारा तत्त्व के प्रति आकृष्ट किया जाता है उस कथा का नाम '**आक्षेपणी कथा**' है १, कुमार्ग में रत प्राणी जिस कथा से उस कुमार्ग की ओर से पृथक् किया जाता है उस कथा का नाम '**विक्षेपणी कथा**' है २,

હતા, (अप्पेगइया) કેટલાક (पडिपुच्छंति) સૂત્ર તથા અર્થ પૂછતા હતા. (अप्पेगइया) કેટલાક (परियट्टंति) સૂત્ર તથા અર્થની આવૃત્તિ કરતા હતા. (अप्पेगइया) કેટલાક (अणुप्पेहंति) સૂત્ર–અર્થની અનુપ્રેક્ષા–પરિચિંતન કરતા હતા. (अप्पेगइया) કેટલાક (अक्खेवणीओ, विक्खेवणीओ, संवेयणीओ णिव्वेयणीओ, बहुविहाओ कहाओ कहंति) આક્ષેપણી, વિક્ષેપણી, સંવેદની, અને નિર્વેદની, એ પ્રકારે અનેક પ્રકારની કથાઓ કરતા હતા. મોહથી દૂર કરીને જે કથા તત્ત્વના તરફ આકર્ષણ કરે છે તે કથાનું નામ 'આક્ષેપણી કથા' છે. કુમાર્ગમાં મગ્ન થયેલા પ્રાણીને જે કથાથી તે કુમાર્ગ તરફથી જુદો કરાવાય તે કથાનું નામ 'વિક્ષેપણી કથા' છે. જે કથા સાંભળવાથી પ્રાણી

**बहुविहाओ कहाओ कहंति, अप्पेगइया उड्ढजाणू अहोसिरा झाणकोट्ठोवगया संजमेण तवसा अप्पाणं भावेमाणा विहरंति ॥ सू० ३१ ॥**

=वैराग्यवान् विधीयते याभिरता', एतादृशी' बहुविधाः कथाः कथयन्ति=श्रावयन्ति। या विविधाः कथाः शृण्वन् श्रोता मोहं परित्यज्य तत्त्वं प्रति आक्षिप्तो भवति, तथा विक्षिप्त'=कुमार्गविमुखो भवति, एवं संवेदनीय =मोक्षसुखाभिलाषी, निर्विण्ण'=संसारादुद्विग्नो भवति। '**अप्पेगइया उड्ढजाणू अहोसिरा**' अप्येकके ऊर्ध्वजानव., अध'शिरसः=अधोमुखा-नोर्ध्वं तिर्यग् वा दत्तदृष्टय' '**झाणकोट्ठोवगया**' ध्यानकोष्ठोपगता'-ध्यानरूपो य' कोष्ठस्तमुपगताः, संयमेन तपसाऽऽत्मानं भावयन्तो विहरन्ति ॥ सू० ३१ ॥

जिस कथा के सुनने से प्राणी मोक्षसुख की अभिलाषावाला बन जाता है उस कथा का नाम '**संवेदनी कथा**' है ३, जिस कथा के सुनने से प्राणी संसार से विरक्त हो जाता है उस कथा का नाम '**निर्वेदनी** कथा' है ४। इन कथाओं का सुनने वाला श्रोता मोह का परित्याग कर तत्त्व के प्रति आकृष्ट होता है, कुमार्ग से विमुख होता है, मोक्ष सुखका अभिलाषी होता है और निर्विण्ण-संसारसे-उद्विग्न-होता है। (**अप्पेगइया उड्ढजाणू अहोसिरा झाणकोट्ठोवगया संजमेण तवसा अप्पाणं भावेमाणा विहरंति**) कितनेक मुनिजन दोनों घुटनों को ऊँचा कर नीचे मस्तक किये हुए-माथा झुकाये हुए-ध्यानरूपी कोष्ठ में प्राप्त थे। इस प्रकार संयम और तपसे अपनी आत्मा को भावित करते हुए साधुगण विचर रहे थे ॥सू० ३१॥

મોક્ષના સુખ માટે અભિલાષાવાળો બને છે તે કથાનુ નામ 'સંવેદની કથા' છે, જે કથા સાંભળવાથી પ્રાણી સંસારથી વિરક્ત થાય છે તે કથાનું નામ 'નિર્વેદની કથા' છે. આ કથાઓના સાંભળનાર શ્રોતા મોહનો પરિત્યાગ કરીને તત્ત્વના તરફ આકર્ષિત થાય છે, કુમાર્ગથી વિમુખ થાય છે, મોક્ષના સુખના અભિલાષવાળા થાય છે અને સંસારથી નિર્વિણ્ણ-ઉદ્વિગ્ન થાય છે. (अप्पेगइया उड्ढजाणू अहोसिरा झाणकोट्ठोवगया संजमेण तवसा अप्पाणं भावेमाणा विहरंति) કેટલાક મુનિજન બન્ને ઘુટણો ઉંચા રાખી, માથું નીચે રાખી-માથું નીચે કરીને-ધ્યાનરૂપી કોઠામાં પ્રાપ્ત હતા. એ પ્રકારે સંયમ અને તપથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા સાધુગણ વિચરતા હતા. (સૂ૦ ૩૧).

मूलम्—संसारभउव्विग्गा भीया जम्मण-जर-मरण-गंभीर-दुक्ख-पक्खुभिय-पउर-सलिलं संजोग-विओग-वीइ-

टीका—भगवतः श्रीमहावीरस्वामिनोऽनगाराः पुनः कीदृशाः? इत्याह—'संसारभउव्विग्गा' इत्यादि। संसारभयोद्विग्नाः—चतुर्गतिभ्रमणलक्षणसंसारभयादुद्विग्नाः=व्याकुलाः, 'केनोपायेन संसारसागरात् तरिष्याम' इतिचिन्ताजालाकुला इत्यर्थः। अत एव 'भीया'—भीताः=भययुक्ताः, अस्य तरन्तीत्यत्रान्वयः। सूत्रकारः संसारसागरं वर्णयति—'जम्मण-जर-मरण-करण-गंभीर-दुक्ख-पक्खुब्भिय-पउर-सलिलं' जन्म-जरा-मरण करण-गम्भीर-दुःख-प्रक्षुभित-प्रचुर-सलिलम्—जन्मजरामरणान्येव करणानि=साधनानि यस्य तत् तथा, तदेव गम्भीर-दुःखं=प्रगाढदुःखं, तदेव प्रक्षुभितं=प्रचलितम्, प्रचुरं=विपुलं सलिलं=जलं यस्मिन् स जन्म-जरा-मरण-करण-गम्भीर-दुःख-प्रक्षुभित-प्रचुरसलिलस्तं, पुनः कीदृशं संसारसागरम्? इत्या-

'संसारभउव्विग्गा' इत्यादि।

भगवान् महावीर के अनगार और भी कैसे थे? इस बातको प्रकट करने के लिये सूत्रकार इस सूत्रकी प्ररूपणा करते हुए कहते है कि—भगवान् महावीर स्वामी के ये अनगार (संसारभउव्विग्गा) चतुर्गति में भ्रमण करने रूप संसार के भय से उद्विग्न थे, 'किस उपाय से हम लोग इस अथाह संसारसागर से पार होंगे' इस प्रकार का चिन्तवन सर्वदा करते रहते थे। (भीया) इसलिये ये संसारभीरु थे। अब यहां से यह संसारसागर कैसा है? इस बात को नीचे लिखित विशेषणों द्वारा सूत्रकार स्पष्ट करते है—(जम्मण-जर-मरण करण-गंभीर-दुक्ख-पक्खुभिय-पउरसलिलं) जन्म, जरा और मरण, ये ही जिसके साधन है ऐसा प्रगाढ दुःख ही जिसमें उछलता हुआ अगाध जल भरा हुआ है, तथा

'संसारभउव्विग्गा' ઇત્યાદિ.

ભગવાન્ મહાવીરના અનગાર ફરીપણ કેવા હતા? તે વાતને પ્રકટ કરવા સૂત્રકાર આ સૂત્રની પ્રરૂપણા કરતાં કહે છે કે—ભગવાન્ મહાવીર સ્વામીના તે અનગાર (संसारभउव्विग्गा) ચતુર્ગતિમા ભ્રમણ કરાવવારૂપ સંસારના ભયથી ઉદ્વિગ્ન હતા, 'કયા ઉપાયથી અમે આ અગાધ સંસારસાગરથી પાર થઈએ' એ પ્રકારનું ચિંતવન સર્વદા કર્યા કરતા હતા. (भीया) એથી તેઓ સંસારભીરૂ હતા હવે અહીંથી આ સંસારસાગર કેવો છે? તે વાત નીચે લખેલા વિશેષણો દ્વારા સૂત્રકાર સ્પષ્ટ કરે છે—(जम्मण-जर-मरण-करण-गंभीर-दुक्ख-पक्खुब्भिय-पउरसलिलं) જન્મ, જરા અને મરણ, એ જ જેનાં સાધન છે એવા પ્રગાઢ દુઃખ જ જેમા વિસ્તારથી ઉછળતા પાણીના જેમ ભરેલા છે. તથા

चिंता-पसंग-पसरिय-वह-वंध-महल्ल-विउल-कल्लोल-कलुण-विलविय-लोभ-कलकलंत-बोलबहुलं अवमाणण-फेण-तिव्व-

काङ्क्षायामाह-'संजोग-विओग-वीइ-चिंता-पसंग-पसरिय वह-वंध-महल्ल-विउल-कल्लोल-कलुण-विलविय-लोभ-कलकलंत-बोल-बहुलं' सयोग-वियोग-वीचि-चिन्ताप्रसङ्ग-प्रसृत-वध-बन्ध-महाविपुल-कल्लोल-करुण-विलपित-लोभ-कलकलायमान-बोल-(ध्वनि)-बहुलम्-संयोग-वियोगाः=अप्रियशब्दादिसंयोग-प्रियशब्दादिवियोगा एव वीचयः=तरङ्गा यत्र सागरे स संयोग-वियोगवीचिः, चिन्ताप्रसङ्गः=पुनःपुनश्चिन्ताप्राप्तिः स एव प्रसृतं=प्रसरणं यस्य स तथा, वधाः=हननानि, बन्धाः=सयमनानि, त एव महान्तो=दीर्घा, विपुलाः=विस्तीर्णाः कल्लोलाः-महोर्मयो यत्र स वधवन्धमहाविपुलकल्लोलः, करुणानि=करुणरसजनकानि विल-पितानि=विलापवचनानि, लोभाः=लोभसम्भूताऽऽक्रोशाश्च त एव कलकलायमाना बोलाः=ध्वनयो बहुला यत्र स तथा, ततः संयोगवियोगवीचिश्चासौ चिन्ताप्रसङ्गप्रसृतश्च तथा वधवन्धमहा-विपुलकल्लोलश्चासौ करुणविलपितलोभकलकलबोलबहुलश्च स तथा, तं तादृशं, संयोगादितर-ङ्गतरङ्गितं चिन्ताविस्तीर्णं वधबन्धकल्लोलं करुणविलापलोभसम्भूताक्रोशप्रचण्डनादनादितमित्यर्थः। पुनः कथम्भूतम्? 'अवमाणणफेणतिव्वखिंसणपुलंपुलप्पभूयरोगवेयणपरिभवविणिवाय-

(संजोग-विओग-वीइ-चिंतापसग-पसरिय-वह-वंध-महल्ल-विउल-कल्लोल-कलुण-विल-विय-लोभ-कलकलंत-बोल-बहुलं) संयोग=अमनोज्ञ शब्दादिको का संबध, वियोग=मनोज्ञ शब्दादिकोंका अभाव, ये जिसमें वीचि-कल्लोल है, चिन्ता जिसका विस्तार है, वध एवं बंधन ही जिसमें विस्तृत तरगे है, करुणारसजनक विलापवचन एवं लोभ से उद्भूत आक्रोशवचन, ये दो जिसकी बहुल कलकलायमान ध्वनियां है-गर्जना है, (अवमाणण-फेण-तिव्व-खिंसण-पुलंपुल-प्पभूय-रोगवेयण-परिभव-विणिवाय-फरुस-धरिसणा-समावडिय-कढिण-कम्म-पत्थर-तरंग-रंगंत-निच्चमच्चुभय-तोयपट्टं) अपमान ही जिसमें फेनराशि है। दुःसहनिंदा, निर-

(संजोग-विओग-वीइ-चिंतापसग-पसरिय-वह वंध-महल्ल-विउल-कल्लोल-कलुण-विलविय-लोभ-कलकलंत-बोल-बहुलं) संयोग-मनने न गमे तेवा शब्द आदिकोनो संबंध, मनने गमे तेवा शब्द आदिकोनो वियोग, ए जेमा वीचि-लहेरो छे, चिंता जेनो विस्तार छे, वध तेमज बंधन ज जेमा मोटां मोजां छे, करुणारसजनक विलापवचन तेमज लोभथी उत्पन्न थयेल आक्रोशवचन ए बे जेनी मोटी कलकलाट ध्वनिओ छे-गर्जना छे, (अवमाणण-फेण-तिव्व-खिंसण-पुलंपुल-प्पभूय-रोगवेयण-परिभव-विणिवाय-फरुस - धरिसणा - समावडिय-कढिण-कम्म-पत्थर- तरंग-रंगंत-निच्चमच्चुभय-तोयपट्टं) अपमान ज जेमा फीणना

खिंसण-पुलंपुल (पलुंपण)—प्पभूयरोग-वेयण—परिभव—विणिवाय-फरुस—धरिसणा—समावडिय—कढिण-कम्म—पत्थर—तरंग -रंगंत-निच्चमच्चुभयतोयपट्ठं कसाय—पायाल—संकुलं भवसयसहस्स—

फरुसधरिसणासमावडियकढिणकम्मपत्थरतरंगरंगंतमच्चुभयतोयपट्ठं' अपमानन-फेन-तीव्र—खिसन—पुलम्पुल-प्रभूत-रोग-वेदना-परिभव-विनिपात-परुष-धर्षणा—समापतित—कठिनकर्म-प्रस्तर-तरङ्ग-रङ्गन्नित्यमृत्युभय-तोयपृष्ठम्—अपमाननमेव फेनो यत्र सोऽवमाननफेन', तथा—तीव्र-खिंसनम्=दु'सहनिन्दा, पुलम्पुलप्रभूता=निरन्तरसमुत्पन्ना या रोगवेदना' परिभवा'=अनादरा', विनिपाता'=नाशा', अथवा परिभवविनिपात'—परिभव'=पराभव' पराजयो हानिर्वा, तस्य विनिपात:=प्राप्तिः परुषधर्षणाः—निष्ठुरवचननिर्भर्त्सनानि, तथा—समापन्नानि=बद्धानि यानि कठिनानि=कठोरोदयानि कर्माणि=ज्ञानाऽऽवरणीयादीनि, एतान्येव प्रस्तराः—पाषाणास्तै' कृत्वा तत्सङ्घट्टनं प्राप्य समुत्थितै', तरङ्गै', रिङ्गत्=प्रचलत्, नित्यं=ध्रुवं यन्मृत्युभय=मरणभीतिः तदेव तोयपृष्ठं=जलोपरितनभागो यत्र स तथा तादृशम्; पुनः कीदृशं '**कसायपायालसंकुलं**' कषायपातालसङ्कुलम्—कषाया एव पाताला:=पातालकलशाः—अधस्तलानि तै' सङ्कुलः—व्याप्तम्। '**भवसयसहस्स—कलुस—जल—संचयं**' भवशतसहस्रकलुषजलसञ्चयम्—भवशतसह-

न्तर समुत्पन्न रोगवेदना, पराभव, विनिपात—विनाश, अथवा पराभव की प्राप्ति, निष्ठुर वचन, अपमान के वचन, एवं कठोर उदयवाले संचित ज्ञानावरणीय आदि आठ कर्म, ये ही जिसमें पाषाण है, और इन पाषाणों के संघट्टन से अनेक प्रकार की आधिव्याधिरूप तरङ्गे उत्पन्न होती है, इन तरंगों द्वारा चलायमान अवश्यंभावी मृत्युभय ही जिसमें तोय-पृष्ठ—जल का उपरितनभाग है, ऐसा यह संसारसागर है। तथा यह (**कसाय—पायाल-संकुलं**) कषायरूप पातालकलशों से व्याप्त है। (**भव-सयसहस्स-कलुस-जल-संचयं**) लाखों

ઢગલારૂપ છે, દુઃસહ નિંદા, નિરંતર થતી રોગવેદના, પરાભવ, વિનિપાત-વિનાશ, અથવા પરાભવની પ્રાપ્તિ, નિષ્ઠુર વચન, અપમાનનાં વચન, તેમજ કઠોર ઉદયવાળા સંચિત જ્ઞાનાવરણીય આદિ આઠ કર્મો, એ જ જેમા પાષાણ (ખડકો) છે, અને આ પાષાણો સાથે ભટકાવાથી જે અનેક પ્રકારનાં આધિ-વ્યાધિરૂપ મોજાં ઉત્પન્ન થતાં રહે છે અને તે દ્વારા ચલાયમાન અવશ્યભાવી મૃત્યુ-ભય જ જેમાં પાણીની સપાટીનો ભાગ છે, એવો આ સંસારસાગર છે. તથા આ (कसायपायालसंकुलं) કષાયરૂપ પાતાળકળશોથી વ્યાપ્ત છે. (भव-सयसहस्स-कलु-

कलुस-जल-संचयं पइभयं अपरिमिय-महिच्छ-कलुसमइ-वाउवेग-उद्धम्ममाण-दगरय-रयंधआर-वरफेण-पउर-आसा-

क्षाण्येव कलुषजलसञ्चयो यत्र स तथा तम्। 'पइभयं' प्रतिभयम्=महाभयङ्करम्, 'अपरिमिय-महिच्छ-कलुसमइ-वाउवेग-उद्धम्ममाण-दगरय-रयंधआर-वरफेण-पउर-आसा-पिवास-धवलं' अपरिमित-महेच्छ-कलुषमति-वायुवेगो-द्धूयमानो-दकरजोरयाऽन्धकार-वरफेन-प्रचुराऽऽशा-पिपासा-धवलम्-अपरिमिता=अत्यधिका ये महेच्छाः-तीव्राभिलाषवन्तो लोकाः, तेषां कलुषा=मलिना या मतिः सैव वायुवेगेन उद्धूयमानम्-उदकरजोरयः-जलकणसमूहः, तेन अन्धकार इव यत्र स तथा, वरफेनैरिव-आशापिपासाभिर्धवल इव धवलो यः स तथा तं, तत्राप्राप्तार्थानां प्राप्तिसंभावना आशा, धनसम्बन्धिन्यस्तीव्रलालसाः पिपासाः। 'मोहमहावत्तभोगभममाण गुप्प-माणुच्छलंतपच्चोणियत्तपाणियपमायचंडबहुदुट्ठसावयसमाहयुद्धायमाणपब्भार - घोर-कंदियमहारवरवंतभेरवरवं'-मोहमहावर्तभोगभ्राम्यद्गुप्यदुच्छलत्प्रत्यवनिपतत्पानीयप्रमादचण्ड-

भव रूप ही जिसमें कलुष-मलिन-जल का सञ्चय है, (पइभयं) महाभयङ्कर है। (अपरि-मिय-महिच्छ-कलुसमइ-वाउवेग-उद्धम्ममाण-दगरयरयंधयार-वरफेण-पउर-आसा-पिवास-धवलं) अपरिमित-अत्यधिक अभिलाषाशाली मनुष्यों की जो विविध प्रकार की बुद्धियां हैं ये ही मानो इसके वायुके झोंको से उडाये हुए जलकण हैं, इनसे यह संसारसमुद्र अंध-कार से युक्त जैसा हो रहा है। आशा एवं पिपासारूप प्रचुर फेन से यह धवलित हो रहा है। अप्राप्त अर्थ की प्राप्ति की संभावना का नाम आशा है, और धनसंबंधी तीव्र लालसा का नाम पिपासा है। (मोह-महावत्त-भोग-भममाण-गुप्पमाणु-च्छलंत-पच्चोणियत्त-पाणिय-पमाय-चंड-बहुदुट्ठ-सावयसमाहयुद्धायमाण-पब्भार-घोर-कंदिय-महारवरवंत-भेरव-रवं) इस संसार

स-जल-संचयं) લાખો ભવરૂપ જ જેમા કલુપ-મેલાં પાણીનો સંચય છે, (पइभयं) મહાભયકર છે (अपरिमिय-महिच्छ-कलुसमइ-वाउवेग-उद्धम्ममाण-दगरय-रयंध-यार-वरफेण-पउर-आसा-पिवास-धवलं) અપરિમિત-બહુ જ અભિલાષાવાળી મનુ-ષ્યોની જે વિવિધ પ્રકારની બુદ્ધિ છે તે જાણે તેના વાયુના ઝપાટાથી ઉડતાં જલકણો છે તેનાથી આ સંસારસમુદ્ર અધકારથી ભરેલ જેવો થઈ ગયો છે. આશા તેમજ પિપાસા (તૃષ્ણા) રૂપ પ્રચુર ફીણથી તે સફેદ થઇ રહેલો છે. અપ્રાપ્ત અર્થની પ્રાપ્તિની સંભાવનાનું નામ આશા છે અને ધન સબંધી તીવ્ર લાલસાનું નામ પિપાસા છે. (मोह-महावत्त-भोग-भममाण-गुप्पमाणु-च्छलत-पच्चोणियत्त-पाणिय-पमाय-चंड बहुदुट्ठ-सावय-समाहयुद्धायमाण-पब्भार-घोर-

**पिवास-धवलं मोहमहावत्त-भोग-भममाण-गुप्पमाण-च्छलंत-पच्चोणियत्त-पाणिय-पमाय-चंड-बहुदुट्ठ-सावय-समाहय-उद्धायमाण-पब्भार-घोर-कंदियमहारवरवंत-भेरवरवं अण्णाण-भमंतम-**

बहुदुष्टश्वापदसमाहतोद्धावत्प्राग्भारघोरक्रन्दितमहारवरुवद्भैरवरवम्–मोहरूपे महावर्ते भोग एव भ्राम्यत्–चक्राकारेण भ्रमत्, गुप्यत्=चपलीभवत्, उच्छलत्=उत्पतत्, **'पच्चोणिय'** प्रत्यवनिपतत्–अधःपतत्, पानीयं=जलं यत्र स तथा, प्रमादाः=मद्यादयस्त एव चण्डबहुदुष्टश्वापदाः–चण्डाः=क्रोधशीलाः बहुदुष्टाः=अतिदुष्टस्वभावाः, श्वापदाः–हिंसकजीवास्तैर्यें **'समाहय'** समाहताः=प्रहताः–आघातं प्राप्ताः **'उद्धायमाण'** उद्धावन्तः=उच्छलन्तः विविधचेष्टमाना वा समुद्रपक्षे मत्स्यादयः संसारपक्षे पुरुषादयः, तेषां 'पब्भार' प्राग्भारः–समूहो यत्र स तथा, तथा घोरो यः क्रन्दितमहारवः=रोदनमहाशब्दः स एव रुवन्–प्रतिनदन्–प्रतिध्वनिं कुर्वन् भैरवरवो=भयानकशब्दो यत्र स तथा, ततस्त्रयाणां पदानां कर्मधारयः, तम्–'**अण्णाण-भमंत-मच्छ-परिहत्थ-अणिहुयिंदिय-महामगर-तुरिय-चरिय-खोखुब्भमाण-नच्चंत-चवलचंचल-चलंत-घुम्मंत-जलसमूहं**' अज्ञान–भ्रमन्मत्स्य-परिहस्तानिभृतेन्द्रिय-

समुद्र के मोहरूप महा–आवर्त्त में भोगरूप जल चक्राकार से घूम रहा है, अत्यन्त चंचल हो रहा है, उछल रहा है, उछल कर फिर नीचे गिर रहा है। तथा–इस संसार समुद्र में प्रमाद आदि ही क्रोधी एवं अतिदुष्ट स्वभाव वाले हिंसक जीव है। इन के द्वारा आघात को प्राप्त होकर समस्त संसारी जीवों–पुरुष आदि (समुद्रपक्ष में मत्स्यादिक जलचर जीवों) का समूह इधर–उधर भागता फिरता है। उन्हीं संसारी जीवों के भयंकर आक्रन्दन की महाभीषण प्रतिध्वनि इस संसार समुद्र में हो रही है। तथा–(**अण्णाणभमंतमच्छपरिहत्थ-अणिहुयिंदिय-महासागर-तुरिय-चरिय-खोखुब्भमाणनच्चंत-चवल-चंचल-चलंत-घुम्मंत - जलसमूह**)

कंदिय–महारव–रवंत–भेरव–रवं) આ સંસાર સમુદ્રના મોહરૂપ મહા આવર્ત્તમાં ભોગરૂપ જલચક્રની પેઠે ઘૂમી રહ્યું છે. બહુ વેગ થઇ રહ્યો છે, ઉછળી રહ્યું છે. ઉછળીને પાછું નીચે પડે છે. તથા–આ સંસારસમુદ્રમાં પ્રમાદ આદિ જ ક્રોધી તેમજ અતિદુષ્ટ સ્વભાવવાળા હિંસક જીવ છે, તેમના દ્વારા આઘાત પામીને સમસ્ત સંસારી જીવો–પુરુષ આદિ (સમુદ્ર પક્ષમાં મત્સ્યાદિક જલચર જીવો)નો સમૂહ આમતેમ ભાગનાસ કરે છે. તે સંસારી જીવોનો ભયંકર આક્રંદનનો મહાભીષણ પડઘો આ સંસારસમુદ્રમાં પડે છે. તથા (अण्णाण–भमंत मच्छ परिहत्थ-अणिहुयिंदिय–महासागर–तुरिय चरिय-खोखु-

च्छपरिहत्थ-अणिहुयिंदिय-महामगर-तुरिय-चरिय- खोखुब्भमाण-नच्चंत-चवल-चंचल-चलंत-घुम्मंत-जल-समूहं अरइ-भय-विसाय-सोग-मिच्छत्त-सेल-संकडं अणाइसंताण-कम्मबंधण-किलेस-

---

महासकर-त्वरितचरित-चोक्षुभ्यमाण-नृत्यच्चपलाचञ्चल- चलद्-घूर्णजल-समूहम्-अज्ञानान्येव भ्रमन्तो मत्स्याः प्रतिहस्ता जलजन्तुविशेषाः, यस्मिन् संसारसागरे स तथा, अनिभृतानि-अनुपशान्तानि यानीन्द्रियाणि तान्येव महामकरास्तेषां यानि त्वरितानि=शीघ्राणि चेष्टितानि =चेष्टाः तैः-चोक्षुभ्यमाणः अत्यन्तमुच्छलन् नृत्यन्निव नृत्यन्, चपलावच्चञ्चलं यथा स्यात् तथा चलन्, घूर्णन्=विद्युत्समानवेगेन चलचक्राकारं भ्रमन् जलसमूहः, संसारपक्षे तु जडसमूहो=विवेक-ज्ञानरहितानां समूहो यत्र स तथा, ततः पदद्वयस्य कर्मधारयः, तं तादृशम् । 'अरइ-भय-विसाय-सोग-मिच्छत्त-सेल-संकडं' अरतिभयविशादशोकमिथ्यात्वशैलसङ्कटम्-अरतिः, भयं, विषादः,शोकः, मिथ्यात्वम् एतानि प्रतिरोधकतया शैला इव तैः सङ्कटः=अतिविकटः, तं तादृशम्, 'अणाइ-संताण-कम्म-बंधण-किलेस-चिक्खिल्ल-सुदुत्तारं' अनादि-सन्तान-कर्मबन्धनक्लेश-कर्दमसुदुस्तरम्-अनादिसन्तानम्=अनादिप्रवाहं यत्कर्मबन्धनं तच्च, क्लेशाश्च रागादयस्तल्लक्षणं यत्

---

इस संसार समुद्र में अज्ञान ही घूमते हुए मत्स्य एवं परिहस्त-जलजन्तुविशेष है। अनुपशान्त इन्द्रियां ही इसमें विकराल मगर है। इन इन्द्रियरूप महामकरो के चचल चेष्टाओं से इसमें अज्ञानियो का समूहरूप जलसमूह क्षुब्ध हो रहा है, नाच रहा है, विद्युद्वेग से चक्र-वत घूम रहा है। (अरइ-भय-विसाय-सोग-मिच्छत्त-सेल-संकडं) अरति-अप्रीति, भय-भीति, विषाद, शोक एवं मिथ्यात्वरूप पर्वतो से यह ससारसमुद्र अत्यत विकट बना हुआ है। (अणाइ-संताणकम्मबंधणकिलेस-चिक्खिल्ल-सुदुत्तारं) अनादिकाल से इस जीव के साथ

---

ब्भमाण-नच्चंत-चवलचंचल-चलंत-घुम्मंत-जल समूहं) આ સંસારસમુદ્રમાં અજ્ઞાન જ ઘુમતા માછલાં તેમજ પરિહસ્ત-જલજંતુવિશેષ છે. અનુપશાંત ઈંદ્રિયો જ એમાં વિકરાળ મગર છે. તે ઈંદ્રિયરૂપ મહામકરોની ચંચળ ચેષ્ટાઓથી તેમાં અજ્ઞાનીઓના સમૂહરૂપ જલસમૂહ ક્ષુબ્ધ થઈ રહ્યો છે, નાચી રહ્યો છે, વીજળીવેગે ચક્રની પેઠે ફરી રહ્યો છે. (अरइ-भय-विसाय-सोग-मिच्छत्त-सेल-संकडं) અરતિ-અપ્રીતિ, ભય-ભીતિ, વિષાદ-શોક, તેમજ મિથ્યાત્વ-રૂપ પર્વતોથી આ સંસારસમુદ્ર અત્યંત વિકટ બનેલો છે. (अणाइ-संताण-कम्म बंधण-किलेस-चिक्खिल्ल-सुदुत्तारं) અનાદિ કાળથી આ જીવની સાથે બંધન

चिक्खिल्ल-सुदुत्तारं अमर-णर-तिरिय-णरयगइ-गमण-कुडिल-परियत्त-विउलवेलं चउरंतं महंतमणवदग्गं रुद्दं संसारसागरं

'चिक्खल्लं'-कर्दम, तेन सुष्ठु दुस्तरः स तथा तम्। 'अमर-णर-तिरिय-णरय-गइ-गमण-कुडिल-परियत्तविउल-वेलं' अमर-नर तिर्यङ्नारक-गतिगमन-कुटिल-परिवर्त-विपुल-वेलम्, सुर-नर-तिर्यङ्नारक-गतिषु चतसृषु-गमनं तदेव कुटिलपरिवर्ता =वक्रसम्भ्रमास्त एव विपुला=विशाला वेला यस्मिन् स तथा तं-चतुर्गतिगमनरूपकुटिलावर्तविपुलतटम्। 'चउरंतं' चतुरन्तम्-दिग्भेदगतिभेदाभ्यां चतुर्विभागम्। 'महंतं' महान्तम्=विशालम्। 'अणवदग्गं' अनवदग्रम्-अपर्यवसानम्। 'रुद्दं' रौद्रम्-भयजनकम्। 'भीमदरिसणिज्जं' भीमदर्शनीयम्-भीमं यथा भवतीत्येव दृश्यते यः स भीमदर्शनीयस्तम्, यस्य दर्शनाद् भयमुत्पद्यते तमित्यर्थः।

बंधन अवस्था को प्राप्त-चला आ रहा जो कर्म एवं इनसे उद्भूत जो रागादिक परिणाम हैं, ये ही जहां चिकना कादव है। इसीसे इसका तिरना दुष्कर हो रहा है। (अमर-णर-तिरिय-णरयगइ-गमण-कुडिल-परियत्त-विउल-वेलं) देवगति, मनुष्यगति, तिर्यंचगति एवं नरकगति इन चार गतियों में जो निरन्तर जीव का परिभ्रमण है वही इसकी वक्र परिवर्द्धमान विस्तृत वेला है। (चउरंतं) चतुर्गतिरूप चार दिशाओं के चार विभागों से जो विभक्त है। (महंतं) जो बडी विशाल है। (अणवदग्गं) जिसका पार पाना बहुत ही कठिन है। (रुद्दं) जो बडा ही विकरालस्वरूप वाला है। (भीमदरिसणिज्जं) जिसके देखने मात्र से ही भय का संचार होता है। ऐसा यह संसारसमुद्र है। इसका पार पाना बिना संयमरूप जहाज के हो नहीं सकता है। अब यहां से संयमरूप जहाज का वर्णन सूत्रकार करते हैं-

અવસ્થાથી ચાલ્યા આવતા જે કર્મ તેમજ તેમનાથી પેદા થતા જે રાગાદિક પરિણામ છે તે જ ચીકણો કાદવ છે અને તેથી તેને તરવું મુશ્કેલ થાય છે. (अमर-णर-तिरिय णरय-गइ-गमण-कुडिल-परियत्त-विउल-वेलं) દેવગતિ, મનુષ્યગતિ, તિર્યગ્ગતિ તેમજ નરકગતિ આ ચાર ગતિઓમાં જે નિરંતર જીવનું પરિભ્રમણ છે તે જ તેની વાંકી, પરિવર્ધિત થતી વિશાળ વેલા છે (चउरंतं) ચતુર્ગતિરૂપ ચાર દિશાઓના ચાર વિભાગોથી જે વિભક્ત છે (महंतं) જે બહુ મોટી છે. (अणवदग्गं) જેનો પાર પામવો બહુ જ કઠણ છે (रुद्दं) જે બહુ જ વિકરાળ સ્વરૂપવાળો છે. (भीमदरिसणिज्जं) જેના દર્શન માત્રથી જ ભયનો સંચાર થાય છે. એવો આ સંસારસમુદ્ર છે તેનો પાર પામવો તે સંયમરૂપ નાવ વગર બની શકતો નથી. હવે અહીંથી સંયમરૂપ નાવ (વહાણ)નું વર્ણન

**भीमदरिसणिज्जं तरंति, धिइ-धणिय-निप्पकंपेण तुरिय-चवलं संवर-वेरग्ग-तुंगकूवय-सुसंपउत्तेणं णाण-सिय-विमल-मूसिएणं सम्मत्त-विसुद्ध-लद्ध-णिज्जामएणं धीरा संजमपोएण सीलक-**

'संसारसागरम् तरन्ति,—अस्य 'संयमपोतेन' इत्यग्रे वक्ष्यमाणेन सम्बन्ध । संसारभयोद्विग्ना संयमिनः संयमपोतेन तरीतुं पारयन्तीत्यर्थ । किम्भूतेन संयमपोतेनेत्याह—**'धिइधणियनिप्पकंपेण'** धृतिधनिकनिष्प्रकम्पेण—धृतिरूपेण रज्जुबन्धनेन धनिकम्=अत्यर्थं निष्प्रकम्पः=कम्पनरहितस्तेन संयमपोतेन, **'तुरियचवलं'** त्वरितचपलम्=अतिशीघ्रम्,—**'संवर-वेरग्ग-तुंग-कूवय-सुसंपउत्तेणं'** संवर-वैराग्य-तुङ्ग-कूपक—सु-सम्प्रयुक्तेन, तत्र संवर =प्राणातिपातादिविरतिरूपः, वैराग्यं=विषयानभिषङ्गः, एतद्रूपो यस्तुङ्ग =अत्युच्चः कूपक —पोतमध्यस्थित स्तम्भः, तेन सुष्ठु सम्प्रयुक्तः—सम्यक्तया सम्प्रयोजितस्तेन, **'णाण-सिय-विमल-मूसिएणं'** ज्ञान-सित-विमलोच्छ्रितेन, ज्ञानमेव सितं=श्वेतं वस्त्रं तदेव विमलम् उच्छ्रितं यत्र तेन, मूले मकारः प्राकृतत्वात् । पवनप्रकम्पितश्वेतपटमण्डलमण्डितपटाकर्षणेन नौका वेगगामिनी भवति । सति साधनोपेतेऽपि पोते कर्णधारेण भाव्यमित्याह—**'सम्मत्तविसुद्धलद्धणिज्जाम-**

**(धिइधणियणिप्पकंपेण)** धृतिरूप रज्जुबंधन से जो अत्यंत निष्प्रकंप है। **(तुरियचवलं)** गति जिसकी अत्यंत शीघ्रगामी है **(संवर-वेरग्ग-तुंग-कूवय-सुसंपउत्तेणं)** संवर—प्राणातिपातादि से निवृत्तिरूप विरति एवं वैराग्य—विषयों में अनभिष्वङ्गरूप वृत्ति—ये दोनो ही जिसके बीच में एक ऊँचा कूपक—स्तम्भ है। **(णाण-सिय-विमल-मूसिएणं)** ज्ञानरूपी सफेद-वस्त्र का जिसमें पाल तना हुआ है। नौका में एक लकडी का खंभ लगा रहता है जिस पर एक कपडा तना रहता है। इससे हवा की रुकावट होने से नौका बड़े वेग से चलती है। यही रूपक यहां घटित किया गया है। **( सम्मत्त-विसुद्ध-लद्ध-णिज्जामएणं )** जिसमें

સૂત્રકાર કહે છે-(धिइधणियणिप्पकपेण) ધૃતિરૂપ દોરડાંનાં બંધનથી જે બહુજ નિષ્પ્રકંપ (દૃઢ) છે (तुरियचवलं) ગતિ જેની અત્યંત વેગવાળી છે. (संवर-वेरग्ग-तुंग कूवय सुसंपउत्तेणं) સંવર-પ્રાણાતિપાતાદિથી નિવૃત્તિરૂપ વિરતિ તેમજ વૈરાગ્ય વિષયોમાં અનાસક્તિરૂપ વૃત્તિ-એ બન્ને જેના વચમાં એક ઉંચો-કૂપકસ્તંભ છે. (णाण-सिय-विमल मूसिएणं) જ્ઞાનરૂપી સફેદ વસ્ત્રનો જેમાં સઢ હોય છે. વહાણમાં એક લાકડાનો થાંભલો લાગેલો હોય છે જેના પર એક કપડું (સઢ) તાણેલો હોય છે. તેમાં હવા રોકાઈ જાય છે તેથી ભરાઈને વહાણ બહુ વેગથી ચાલે છે. આ જ રૂપક અહીં ઘટાવેલ છે. (सम्मत्त-विसुद्ध-लद्ध-णिज्जामएणं)

**लिया पसत्थज्झाण-तव-वाय-पणोल्लिय-पहाविएणं उज्जमववसाय-ग्गहिय-णिज्जरण-जयण-उवओग-णाण-दंसण-[चरित्त] विसुद्ध-**

**एणं'** सम्यक्त्वविशुद्धलब्धनिर्यामकेण -सम्यक्त्वरूपो विशुद्धो निर्दोषो लब्धः=प्राप्तो निर्यामकः= कर्णधारो--नौकावाहको यत्र स तथा तेन, सम्यक्त्वरूपकर्णधारयुक्तेनेत्यर्थः, 'धीरा'-स्थिरस्वभावा', **'संजमपोएण'** संयमपोतेन=संयमनौकया। **'सीलकलिया'** शीलकलिता =अष्टादश-सहस्रशीलाङ्गरथधारका'-शील युक्ता, **'पसत्थज्झाणतववायपणोल्लियपहाविएणं'** प्रशस्त-ध्यानतपोवातप्रणोदितप्रधावितेन-प्रशस्तं ध्यानं धर्मशुक्लादिकं तद्रूपं तपः तदेव वातो=वायुः, तेन प्रणोदितः=प्रेरितः, अतएव प्रधावितस्तेन, **'उज्जम-ववसाय-ग्गहिय-णिज्जरण-जयण-उवओगणाणदंसणचरित्तविसुद्धवयवरभंडभरियसारा'**-उद्यमव्यवसायगृहीतनिर्जरणयतनो-पयोगज्ञानदर्शनचारित्रविशुद्धव्रतवरभाण्डभृतसाराः'-उद्यमः=प्रमादपरित्यागः व्यवसायो=मोक्षप्राप्ति-निश्चयः-ताभ्यां मूल्यरूपाभ्यां यद्गृहीतं=क्रीतं निर्जरणयतनोपयोगज्ञानदर्शनचारित्रविशुद्धव्रतवरं=

विशुद्ध सम्यक्त्व ही निर्यामक-कर्णधार के स्थानापन्न है, अर्थात् विशुद्ध समकित का लाभ जिसमें खेवटिया के समान है। **(पसत्थ-ज्झाणतव-वाय-पणोल्लिय-पहाविएणं)** प्रशस्त ध्यान-रूप तपरूपी वायु से प्रेरित होकर जो आगे २ बढता रहता है। इस तरह इन पूर्वोक्त विशेषणों से विशिष्ट इस संयमरूपी जहाज के द्वारा इस संसाररूप अपार दुस्तर समुद्र को **(धीरा)** धीरवीर स्थिर स्वभाववाले मुनिजन ही **(तरंति)** पार करते हैं। अब यहां से मुनिजनों के लिये प्रयुक्त विशेषणों का अर्थ स्पष्ट किया जाता है-**(सीलकलिया)** ये मुनिजन-शील-१८ हजार शील के भेदों को धारण करने वाले हैं। **(उज्जम-ववसाय-ग्गहिय-णिज्जरण-जयण-उवओग-णाण-दंसण-[चरित्त]विसुद्धवयवरभंडभरियसारा)** उद्यम अर्थात्

જેમાં વિશુદ્ધ સમ્યકત્વ જ નિર્યામક-કર્ણધારને સ્થાને (સુકાની) છે, અર્થાત્ વિશુદ્ધ સમકિતનો લાભ જ જેમાં સુકાનીના સમાન છે. (पसत्थ-ज्झाण तव-वाय पणोल्लिय-पहाविएणं) પ્રશસ્ત ધ્યાનરૂપ તપરૂપી વાયુથી પ્રેરિત થઇને જે આગળ આગળ વધતો રહે છે. એ રીતે તે પૂર્વોક્ત વિશેષણોથી વિશિષ્ટ આ સંયમરૂપી વહાણદ્વારા સંસારરૂપ અપાર દુસ્તર સમુદ્રને ધીર વીર સ્થિર સ્વભાવ વાળા મુનિજનો જ (तरंति) પાર કરે છે. હવે અહીંથી મુનિજનો માટે લગાડેલા વિશેષણોના અર્થ સ્પષ્ટ કરવામા આવે છે-(सीलकलिया) એ મુનિજનો શીલ-૧૮ હજાર શીલના પ્રકારને ધારણ કરવાવાળા છે (उज्जम-ववसाय-ग्गहिय-णिज्ज-रण-जयण-उवओग-णाण-दंसण-[चरित्त]-विसुद्ध-वयवर-भंड-भरिय-सारा) ઉદ્યમ અર્થાત્

वयवर-भंड-भरियसारा जिणवर-वयणोवदिट्ठ-मग्गेण अकुडिलेण सिद्धिमहापट्टणाभिमुहा समणवर-सत्थवाहा सुसुइ-सुसंभास-

महाव्रतं तदेव भाण्ड=क्रयणीयवस्तुजातरूपं, भृतः=स्थापितः सारो=रत्नादिरूपः पदार्थो यैस्ते तथा, केन पथा प्रयान्तस्तरन्तीत्यत्राह-'जिणवरवयणोवदिट्ठमग्गेण' जिनवरवचनोपदिष्टमार्गेण जिनवरवचनम्=आगमरूपं तेन उपदिष्टः=कथितः-मार्गः=संयमपथः-तेन, 'अकुडिलेन' अकुटिलेन-कापट्यादिदोषरहितेन, 'सिद्धिपट्टणाभिमुहा' सिद्धिपत्तनाभिमुखाः-सिद्धिरेव पत्तनं वणिक्पुरं तदभिमुखाः-तस्य संमुखाः। 'समणवरसत्थवाहा' श्रमणवरसार्थवाहाः-श्रमण-

प्रमाद का परित्याग एवं व्यवसाय अर्थात् मोक्ष प्राप्त करने का दृढ निश्चय, इन दोनों मूल्यों से गृहीत-क्रीत वरव्रत-महाव्रतरूप-भाण्डों का-क्रयणीय वस्तुओं का-कि जो निर्जरा, यतना, उपयोग, ज्ञान, दर्शन एवं [चारित्र] से विशुद्ध हैं, जिनमें सार भरा हुआ है ऐसे मुनिजन इस संसाररूप महासमुद्र से पार होते हैं। किस मार्ग पर चलते हुए ये पार होते है? सो बताते है-(जिणवरवयणोवदिट्ठमग्गेण) जिनवर का जो वचन है-आगम है, उसके द्वारा उपदिष्ट जो संयमरूप मार्ग है, उस पर चलकर ही ये मुनिजन इस संसाररूप समुद्र को पार करते है। यह मार्ग कैसा है, इसके लिये सूत्रकार (अकुडिलेण) इस विशेषण से स्पष्ट करते है-यह मार्ग कपटता आदि दोषों से रहित है, अर्थात्-सरल है-आडा-टेढा नहीं है। ऐसे मार्ग से प्रयाण करने वाले ये मुनिजन पुनः कैसे होते है? यह अब यहां से स्पष्ट किया जाता है-(सिद्धिपट्टणाभिमुहा) इस प्रकार के मार्ग से प्रयाण करने वाले

પ્રમાદનો પરિત્યાગ તેમજ વ્યવસાય અર્થાત્ મોક્ષ પ્રાપ્ત કરવાનો દૃઢ નિશ્ચય, એ બન્ને મૂલ્ય (કિંમત) થી લીધેલ-વેચાતાં લીધેલ ૧૨ વ્રત-મહાવ્રતરૂપ વાસણોના-વેચાતી લીધેલી વસ્તુઓના કે જે નિર્જરા, યતના, ઉપયોગ, જ્ઞાન, દર્શન તેમજ ચારિત્રથી વિશુદ્ધ છે જેમા સાર ભરેલો છે. એવા મુનિજન આ સંસારરૂપ મહાસમુદ્રથી પાર થઈ જાય છે કયા માર્ગપર ચાલતા તેઓ પાર થાય છે? તે બતાવે છે- (जिणवरवयणोवदिट्ठमग्गेण) જિનવરનુ જે વચન છે-આગમ છે-તેના દ્વારા ઉપદેશાએલ જે સંયમરૂપ માર્ગ છે, તેના પર ચાલીને જ તે મુનિજનો આ સંસારરૂપ સમુદ્રને પાર કરે છે આ માર્ગ કેવો છે? તે માટે સૂત્રકાર (अकुडिलेण) આ વિશેષણથી સ્પષ્ટ કરે છે. આ માર્ગ કપટતા આદિ દોષોથી રહિત છે-અર્થાત્ સરળ છે, આડોટેડો નથી. એવા માર્ગથી પ્રયાણ કરનારા એ મુનિજનો વળી કેવા હોય છે તે બધુ અહીથી સ્પષ્ટ કરવામાં આવે છે. (सिद्धिपट्टणाभिमुहा) એ પ્રકારના માર્ગે પ્રયાણ કરવાવાળા મુનિજનો સિદ્ધિરૂપ

**सुपण्ह-सासा गामे गामे एगरायं णगरे णगरे पंचरायं दूइज्जंता**

श्रेष्ठाः-सार्थवाहाः-धीभूतव्यवसायिनः । 'सुसुइ-सुसंभास-सुपण्ह-सासा' सुश्रुति(सुशुचि) सुसम्भाषा-सुप्रश्न-स्वाशाः-सुष्ठु श्रुतयो येषां ते सुश्रुतयः-सम्यक्सूत्रग्रन्थाः-सत्सिद्धान्ताः, अथवा सुशुचयः-सम्यक्शुद्धिमन्तः । सुखः=सुखजनकः सम्भाषो येषां ते सुसम्भाषाः-कदाचिदपि कटूच्चारणं न कुर्वन्ति । शोभनाः प्रश्ना येषां ते सुप्रश्नाः-प्रमितसमुचितप्रश्नकारिणः, शोभना आशा येषां ते स्वाशाः-मुक्तिमात्रेच्छवः, चतुर्णामेषां कर्मधारये-सुश्रुतिसुसम्भाषासुप्रश्नस्वाशाः, एवंविधाः सन्तः-'गामे गामे एगरायं' ग्रामे ग्रामे-एकरात्रम्-प्रतिग्रामम् एकरात्रम्, अस्य 'दूइज्जंता' इत्यनेन सहान्वयः । 'णगरे णगरे पंचरायं' नगरे नगरे पञ्चरात्रम्-प्रतिनगरपञ्चरात्र, 'दूइज्जंता' द्रवन्तः=वसन्तः, धातूनामनेकार्थत्वात्, 'जिइंदिया' जितेन्द्रियाः 'णिब्भ-

मुनिजन सिद्धिरूप पट्टण-पत्तन के सन्मुख होते हैं। ( समणवरसत्थवाहा ) इनके साथी श्रमणश्रेष्ठरूप सार्थवाह-व्यवसायिजन होते हैं। (सुसुइ-सुसंभास-सुपण्हसासा) सत्सिद्धान्तों के ये पारंगत होते हैं, अथवा इनका सिद्धान्त समीचीन-निर्दोष होता है, अथवा ये विशिष्ट-शुद्धि-सम्पन्न होते हैं । भाषा इनकी बडी ही मनोमुग्धकारी होती है । कभी भी ये कटुक भाषा का उच्चारण नहीं करते हैं । ये जो भी प्रश्न करते हैं वह प्रमाणोपेत होता है-व्यर्थ के अक्षरों का उसमें समावेश नहीं रहता । सांसारिक पदार्थों में किसी में भी इनकी इच्छा जागृत नहीं होती, सिर्फ मुक्ति प्राप्त करने की भावना ही एक इनकी रहा करती है । ( गामे गामे एगरायं णयरे पंचरायं दूइज्जंता ) ये साधु ग्रामों में एक रात और नगरों में पांच रात निवास करते थे । ( जिइंदिया ) ये जितेन्द्रिय थे,

પટ્ટણ-પત્તનની સન્મુખ હોય છે. (समणवरसत्थवाहा) તેમના સાથી શ્રમણશ્રેષ્ઠરૂપ સાર્થવાહ-વ્યવસાયી જન હોય છે. (सुसुइसुसंभाससुपण्हसासा) સત્-સિદ્ધાંતોમાં તેઓ પારંગત હોય છે અથવા-તેઓના સિદ્ધાન્તો નિર્દોષ હોય છે, અથવા તેઓ વિશિષ્ટ શુદ્ધિસંપન્ન હોય છે. ભાષા તેમની બહુજ મનોમુગ્ધ કરવાવાળી હોય છે. કદીપણ તેઓ કડવીભાષાનો ઉચ્ચાર કરતા નથી. તેઓ જે કાંઈ પ્રશ્ન કરે છે તે પ્રમાણવાળો હોય છે-વ્યર્થ અક્ષરોનો તેમાં સમાવેશ રહેતો નથી. સાંસારિક પદાર્થોમાં કોઈમાં પણ તેમની ઇચ્છા જાગૃત થતી નથી માત્ર મુક્તિ પ્રાપ્ત કરવાની ભાવના જ એક તેમને રહ્યા કરે છે. (गामे गामे एगरायं णयरे णयरे पंचरायं दूइज्जंता) આ સાધુઓ ગામડાઓમાં એક રાત સુધી અને નગરોમાં પાંચ રાત સુધી નિવાસ કરતા હતા (जिइंदिया)

**जिइंदिया णिब्भया गयभया सचित्ताचित्तमीसिएसु दव्वेसु विरागयं गया संजया [विरता] मुत्ता लहुया णिरवकंखा साहू णिहुया चरंति धम्मं ॥ सू० ३२ ॥**

**या गयभया**' निर्भया गतभयाः, '**सचित्ताचित्तमीसिएसु दव्वेसु**' सचित्ताऽचित्तमिश्रितेषु द्रव्येषु=वस्तुषु '**विरागयं गया**' विरागतां गताः—वैराग्यं प्राप्ताः। '**संजया**' सयताः=संयमवन्तः। '**विरता**' विरताः=हिंसादिभ्यो निवृत्ताः, '**मुत्ता**' मुक्ताः-लोभरहिताः, '**लहुआ**' लघुकाः-स्वल्पोपधिधारितया लघुभूताः। '**णिरवकंखा**' निरवकाङ्क्षाः=उभयलोकसुखाभिलाषवर्जिताः, यतः पूर्वोक्तगुणविशिष्टाः, अतएव '**साहू**' साधवः—मोक्षसाधकाः। '**णिहुया**' निभृताः-विनीता जात्यादिमदवर्जिताः इत्यर्थः, '**धम्मं**' धर्म—श्रुतचारित्रलक्षणम्। '**चरंति**' चरन्ति=आराधयन्ति ॥ सू० ३२ ॥

(**णिब्भया गयभया**) निर्भय थे, इस हेतु इन्हे कहीं भी भय नहीं लगता था, (**सचित्ताचित्तमीसिएसु दव्वेसु विरागय गया**) सचित्त, अचित्त और सचित्ताचित्त द्रव्यों में ये वैराग्य युक्त थे, (**संजया विरता मुत्ता**) संयमशाली, हिंसादि-निवृत्त और लोभरहित थे, [**लहुया**] स्वल्प उपधि के धारक होने से ये लघु—लाघवगुण-संपन्न थे, (**णिरवकंखा**) इहलोक और परलोक के सुखों की अभिलाषा से रहित थे; अत एव ये मुनि गण (**साहू**) साधु, अर्थात् मोक्षसाधक थे। भगवान महावीरके ये साधु (**णिहुया**) निभृत—जात्यादि मद से रहित होनेके कारण विनीत होकर (**धम्मं**) श्रुत-चारित्रलक्षण धर्म की (**चरंति**) आराधना करते थे ॥ सू० ३२ ॥

આ સાધુઓ જિતેન્દ્રિય હતા, (णिब्भया गयभया) નિર્ભય હતા, તેથી તેમને કોઈ ઠેકાણે ભય લાગતું નહિ. તેઓ (सचित्ताचित्तमीसिएसु दव्वेसु विरागयं गया) સચિત્ત, અચિત્ત અને સચિત્તાચિત્ત દ્રવ્યોમાં વૈરાગ્યવાન હતા, (संजया विरता मुत्ता) સંયમશાલી, હિંસાદિથી નિવૃત્ત અને લોભરહિત હતા, (लहुया) સ્વલ્પ ઉપધિના ધારક હોવાથી તેઓ લઘુ—લાઘવગુણ-સંપન્ન હતા, (णिरवकंखा) ઈહલોક અને પરલોકના સુખોની અભિલાષાથી રહિત હતા. તેથી જ તે મુનિઓ (साहू) સાધુ એટલે મોક્ષસાધક હતા. ભગવાન મહાવીરના આ સાધુઓ (णिहुआ) નિભૃત—જાત્યાદિ મદથી રહિત હોવાને કારણે વીનીત થઈને (धम्मं) શ્રુતચારિત્રરૂપ ધર્મની (चरंति) આરા-ધના કરતા હતા. (સૂ. ૩૨)

मूलम्—तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स बहवे असुरकुमारा देवा अंतियं पाउब्भवित्था, काल-महानील-सरिस-णील-गुलिय-गवल-अयसिकुसुम-प्पगासा विय-

टीका—'तेणं कालेणं तेणं समएणं' इत्यादि। तस्मिन् काले तस्मिन् समये श्रमणस्य भगवतो महावीरस्य 'बहवे असुरकुमारा देवा अंतियं पाउब्भवित्था' बहवोऽसुरकुमारा देवा अन्तिकं प्रादुरभूवन्—भगवतः श्रीमहावीरस्वामिनोऽन्तिकं=समीपमागत्य प्रादुर्भूताः। असुरकुमाराणा वर्णनमाह—'काल-महानील-सरिस-णील-गुलिय-गवल-अयसिकुसुम-प्पगासा' काल-महानील-सदृश-नील-गुलिक-गवलाऽतसीकुसुम-प्रकाशाः—कालो यो महानीलो—मणिविशेष, तत्सदृशा वर्णतो ये ते तथा, पुनर्नीलो मणिविशेषः, गुलिका=नीली-गुटिका, गवल=माहिष शृङ्गम्, अतसीकुसुमं च, एतेषां प्रकाश इव प्रकाशो येषां ते तथा। 'वियसिय-सयवत्तमिव' विकसितशतपत्रमिव=प्रफुल्लेन्दीवरतुल्यं 'पत्तल-णिम्मला-ईसी-

'तेणं कालेणं तेणं समएणं' इत्यादि।

इस सूत्रद्वारा सूत्रकार श्रमण भगवान महावीर के निकट आये हुए असुरकुमार देवो का वर्णन करते है— (तेणं कालेणं तेणं समएणं) उस काल एवं उस समय में (समणस्स भगवओ महावीरस्स) श्रमण भगवान महावीर के (अंतियं) समीप (बहवे) अनेक (असुरकुमारादेवा) असुरकुमार देव (पाउब्भवित्था) प्रकट हुए। (काल-महानील-सरिस-णील-गुलिय-गवल-अयसिकुसुम-प्पगासा) कृष्ण महानील मणि, नीलमणि, गुलिका, भैस के सींग के अन्दरका भाग, अलसीका फूल; इन सबों के समान ये असुरकुमार कृष्णवर्ण थे। (वियसियसयवत्तमिव) विकसित शतपत्र के समान—अर्थात् इन्दीवर—कमल—के तुल्य

"तेणं कालेणं तेणं समएणं" ઇત્યાદિ.

આ સૂત્ર દ્વારા શ્રમણ ભગવાન મહાવીરની પાસે આવેલા અસુર-કુમાર દેવોનુ વર્ણન કરવામા આવે છે. (तेणं कालेणं तेणं समएणं) તે કાલ તે સમયને વિષે (समणस्स भगवओ महावीरस्स) શ્રમણ ભગવાન મહાવીરની (अंतियं) પાસે (बहवे) અનેક (असुरकुमारा देवा) અસુરકુમાર દેવ (पाउब्भवित्था) પ્રગટ થયા તેમનાં શરીરનો વર્ણ કહે છે-(काल—महानील—सरिस-णील-गुलिय—गवल-अयसिकुसुम—प्पगासा) કૃષ્ણ મહાનીલ મણિ, નીલમણિ, ગુલિકા, ભેંસનાં શીંગ-ડાંની અંદરનો ભાગ અને અળશીના ફૂલ, આ સર્વની સમાન તે અસુરકુમાર કૃષ્ણ વર્ણના હતા. (वियसियसयवत्तमिव) વિકસેલાં શતપત્રના સમાન, અર્થાત્

**सिय-सयवत्तमिव पत्तलनिम्मला-ईसी-सिय-रत्त-तंबणयणा गरुला-यय-उज्जु-तुंग-णासा ओयविय-सिलप्पवाल-बिंबफल-सण्णिभा-हरोट्ठा पंडुर-ससिसयल-विमल-णिम्मल-संख-गोखीर-फेण-दगरय-**

**सिय-रत्त-तंव-णयणा'** पत्रल-निर्मलेषत्सित-रक्त-ताम्र-नयना'—पत्रलानि=पक्ष्मवन्ति—सूक्ष्मरोमयुक्तानि, तथा निर्मलानि तथा ईषत् सितानि—श्वेतानि तथा ईषद्रक्तानि तथा ईषत्ताम्राणि=अरुणानि नयनानि येषां ते तथा—विकसितशतपत्रतुल्यकिञ्चिच्छुभ्ररक्तनेत्रा इत्यर्थः। **'गरुला—यय—उज्जु—तुंग—णासा'** गरुडाऽऽयतर्जुतुङ्गनासिकाः—गरुडस्येव आयता=दीर्घा, ऋज्वी=सरला तुङ्गा=उच्चा नासिका येषां ते तथा—सरलदीर्घसुन्दरनासिकावन्तः। **'ओयविय-सिलप्पवाल—विंवफल—सण्णिभा—हरोट्ठा'** उपचित—शिलाप्रवाल—बिम्बफल—सन्निभाऽधरोष्ठाः—उपचितः=पुष्टो यः शिलाप्रवालः=विद्रुमः, बिम्बफलम्—अतीवारुणं पुष्टं वनवल्लीफलम्, तत्सन्निभौ तुल्यौ अधरोष्ठौ—ओष्ठद्वयं येषां ते, तथा—विद्रुमबिम्बफलवत् अतीवरक्तोष्ठद्वयवन्तः, **'पंडुर—ससियल—विमल-णिम्मल-संख-गोखीर-फेण दगरय-मुणालिया-धवल-दंतसेढी'** पाण्डुर-शशिशकल-विमल-निर्मल-शङ्ख-गोक्षीर-फेन-दकरजो-मृणालिका-धवल-दन्तश्रेणयः, पाण्डुर-शशिशकलं=शुभचन्द्रखण्डः, तद्वद्विमलनिर्मलाः-विमलेष्वपि निर्मलाः-अतीवोज्ज्वलाः, अतएव-शङ्ख-

इनके नेत्र थे। **(पत्तल-णिम्मला-ईसी-सिय-रत्त-तंव-णयणा)** ये नेत्र पक्ष्मल थे-सूक्ष्म रोमयुक्त थे, निर्मल थे, कुछ श्वेत थे, ईषद्रक्त थे, और कुछ २ लाल भी थे। **(गरुला-यय-उज्जुतुंग-नासा)** गरुड़ के समान दीर्घ, ऋज्वी—सरल एवं ऊँची इनकी नासिका थी। **(ओयविय-सिलप्पवाल-विंवफल-सण्णिभा-हरोट्ठा)** पुष्ट शिलप्रवाल—विद्रुम (मूँगा), एवं अतीव अरुण बिम्बफल के समान लाल इनके दोनों ओष्ठ थे। **(पंडुर—ससि—सयल—विमल—णिम्मल—संख—गोखीर—फेण—दगरय—मुणालिया—धवल—दंतसेढी)** धवलचन्द्र के खंड के

ઈન્દીવર-કમલના જેવા એમનાં નેત્ર હતા. (पत्तल-णिम्मला-ईसी सिय रत्ततवणयणा) એ નેત્ર પક્ષ્મલ હતાં-સૂક્ષ્મ રોમ (વાળ) યુક્ત હતાં, નિર્મળ હતાં, કંઇક ધોળા હતાં, ઈષદ્રક્ત હતા, અને જરા જરા લાલ પણ હતાં. (गरुलायय-उज्जु-तुंग-नासा) ગરુડના જેવી લાંબી, સરલ અને ઊંચી એમની નાસિકા હતી. (ओयविय-सिलप्पवाल-विंवफल-सण्णिभा-हरोट्ठा) પુષ્ટ શિલપ્રવાલ-વિદ્રુમ (મૂગા) અને અતિશય લાલ વર્ણના બિમ્બફલના જેવા રાતા એમના બન્ને હોઠ હતા. (पंडुर-ससिसयल-विमल-णिम्मल-संख-गोखीर-फेण-दगरय-मुणालिया-धवल-दंतसेढी) સફેદ ચંદ્રખંડના

**मुणालिया-धवल-दंतसेढी, हुयवह-णिद्धंत-धोय-तत्ततवणिज्ज-रत्त-तल-तालुजीहा अंजण-घणकसिण-रुयग-रमणिज्ज-णिद्ध-केसा, वामेग-कुंडलधरा अद्द-चंदणा-णुलित्त-गत्ता ईसी-सिलिंध-पुप्फ-प्पगा-**

गोक्षीरफेनदकरजोमृणालिकावद् धवलाः दन्तश्रेणयो येषां ते तथा, तत्र दकरजः—जलकणः। '**हुतवह-णिद्धंत-धोय-तत्ततवणिज्ज-रत्ततल-तालुजीहा**' हुतवह-निर्ध्मात-धौत-तप्ततपनीयरक्ततलतालुजिह्वाः'—हुतवहेन=वह्निना निर्ध्मातं-प्रतापितं, धौतं—जलप्रमार्जितं तप्तं यत् तपनीय—सुवर्णं, तद्वद् रक्ततलम्-अरुणोपरिप्रदेशं तालुजिह्वं येषां ते तथा-अतिप्रतप्तसंमृष्टसुवर्णवर्णतालुजिह्वावन्तः। '**अंजण-घणकसिण-रुयग-रमणिज्जणिद्धकेसा**' अञ्जनघनकृष्णरुचकरमणीयस्निग्धकेशाः—अञ्जनं—कज्जलं, घनो—मेघः, एतत्सदृशाः कृष्णाः कृष्णवर्णाः, तथा रुचको—मणिविशेषः, तद्वत् स्निग्धाः—चिक्कणाः—केशा येषां ते तथा, '**वामेगकुंडलधरा**' वामैककुण्डलधराः—वामे कर्णे—एककुण्डलधारिणः, न तु दक्षिणे कर्णे. तज्जातीयस्वभावात् एकस्मिन्नेव कर्णे कुण्डलधारकाः दक्षिणे कर्णे त्वन्याभरणधारिण इतिभावः। '**अद्दचंदणाणुलित्तगत्ता**' आर्द्रचन्दनानुलिप्तगात्राः'-सद्यो-

समान शुभ्र, एवं शङ्ख, गोक्षीर, फेन, जलकण, और मृणाल के समान अत्यन्त निर्मल इनकी दन्तपङ्क्ति थी।(**हुतवह-णिद्धंत-धोय-तत्त-तवणिज्ज-रत्ततल-तालुजीहा**) पहिले वह्नि में तपाये गये पश्चात् तेजाब में धोये गये पुनः अग्नि में तपाकर उज्ज्वल किये गये सुवर्ण के समान रक्ततलवाले इनके तालु और जिह्वा थी। (**अंजण—घण—कसिण—रुयग—रमणिज्ज-णिद्ध—केसा**) इनके केश अंजन एव काले मेघ के समान काले तथा रुचक के समान चिकने थे। (**वामेगकुंडलधरा**) इनके वाम कर्ण में कुण्डल शोभित हो रहा था। इनमें ऐसी प्रथा है कि, ये लोग बाये कान में कुण्डल पहनते है और दाहिने कान में अन्य आभूषण। दाहिने कान में ये कभी भी कुण्डल नहीं पहनते है। (**अद्दचंदणाणुलित्तगत्ता**) आर्द्र चन्दन से

સમાન શુભ્ર અને શંખ, ગોક્ષીર (દૂધ), ફીણ, જલકણ અને મૃણાલ (કમળ-કંદ) ના જેવી અત્યન્ત નિર્મળ એમની દન્તપંક્તિઓ હતી. (हुतवह-णिद्धंत-धोय-तत्त-तवणिज्ज रत्ततल-तालु जीहा) પહેલા અગ્નિમા તપાવેલા પછી તેજાબમા ધોએલા સુવર્ણના જેવાં લાલ તળા વાળા એમના તાળવા અને જીભ હતા. (अंजण-घण-कसिण-रुयग-रमणिज्ज-णिद्ध-केसा) એમના વાળ આંજણ અને કાળા વાદળાં જેવા કાળા તથા રુચકના જેવા ચીકણા હતા. (वामेगकुंडलधरा) એમના ડાબા કાનમાં કુંડળ શોભી રહ્યાં હતાં. એઓમાં એવી પ્રથા છે કે એ લોક ડાબા કાનમાં કુંડળ પહેરે છે અને જમણા કાનમાં બીજું ઘરેણું. આ લોકો જમણા કાનમાં ક્યારે પણ કુંડળ પહેરતા નથી. (अद्दचंदणाणुलित्तगत्ता)

**साइं असंकिलिट्ठाइं सुहुमाइं वत्थाइं पवरपरिहिया, वयं च पढमं समइक्कंता विइयं च असंपत्ता भद्दे जोव्वणे वट्टमाणा, तलभंगय-**

घृष्टचन्दनचर्चितशरीराः । अथ वस्त्रविशेषणान्याह-'ईसी-सिलिंध-पुप्फ-प्पगासाइं' ईषत्-सिलीन्ध्रपुष्पप्रकाशानि-मनाक्सिलीन्ध्रकुसुमप्रभाणि—ईषत्सितानीत्यर्थः; सिलीन्ध्रकुसुमं—वर्षर्तौ भूमिं भित्त्वा छत्रकमिव बहिर्निस्सरति, मतान्तरे तु एतत्कुसुमं रक्तवर्णमेव ग्राह्य यतोऽसुरा रक्तवसनाः प्रायो भवन्तीति । पुनः कीदृशानि वस्त्राणि ? अत्राऽऽह **'सुहुमाइं'** सूक्ष्माणि। **'असंकिलिट्ठाइं'** असंक्लिष्टानि—दूषणरहितानि। **'वत्थाइं'** वस्त्राणि—**'पवरपरिहिया'** प्रवरपरिहिताः—प्रवरम्- उत्कृष्टं यथा तथा परिहिताः=परिधृतवन्तः । **'वयं च पढमं समइक्कंता'** वयश्च प्रथमम्=षोडशवर्षपर्य-

इनका समस्त शरीर लिप्त था । (इसी-सिलिंध-पुप्फ-प्पगसाइं) इन्होने जो वस्त्र पहिन रखे थे वे कुछ कम सफेद थे, जैसे सिलीन्ध्र पुष्पका प्रकाश होता है वैसा ही इनका प्रकाश था। वर्षाऋतु में जमीन को फोड कर छत्र के आकार जैसा जो पुष्प उत्पन्न होता है उसका नाम सिलीन्ध्र है । किन्हीं २ का मत है कि यह पुष्प रक्तवर्ण भी होता है । अतः इसके ग्रहण से उनके वस्त्र रक्तवर्ण के थे ऐसा ही समझना चाहिये । क्यों कि असुर जाति के देव प्रायः लालवस्त्र धारण करने वाले होते है । (सुहुमाइं) ये वस्त्र—जिन्हें इन्होने पहिन रखे थे, अत्यन्त सूक्ष्म—पतले थे, (असंकिलिट्ठाइं) और दोषरहित थे। (वत्थाइं पवरपरिहिया) ऐसे वस्त्र इन्होंने अच्छी तरह से अपने शरीर पर धारण कर रखे थे। (वयं च पढमं समइक्कंता) प्रथम वय को ये उल्लङ्घन कर चुके थे, अर्थात् ये सब सोलह वर्ष से ऊपर के जैसे मालूम होते

આર્દ્ર (ભીના) ચન્દન (સૂખડ) વડે તેમનાં આખા શરીર લિપ્ત હતાં (इसी-सिलिंध-पुप्फ-प्पगासाइं) તેઓએ જે વસ્ત્રો પહેર્યાં હતાં તે કંઇક ઓછાં સફેદ હતાં. જેવો સિલીન્ધ્ર પુષ્પનો પ્રકાશ હોય છે તેવો જ તેમનો પ્રકાશ હતો. વર્ષાઋતુમાં જમીનને ફાડીને છત્રના આકાર જેવાં જે પુષ્પ ઉત્પન્ન થાય છે તેનું નામ સિલીન્ધ્ર છે. કોઇ કોઈનો મત છે કે આ પુષ્પ લાલરંગનાં થાય છે. ત્યારે એ અર્થ ગ્રહણ કરવાથી તેમના વસ્ત્ર લાલરંગનાં હતા- એમ જ સમજવું જોઈએ. કેમકે અસુર જાતિના દેવ ઘણુ કરીને લાલવસ્ત્ર ધારણ કરવાવાળા હોય છે. (सुहुमाइं) આ વસ્ત્ર જે તેઓએ પહેર્યાં હતાં તે અત્યંત સૂક્ષ્મ-પાતળાં હતાં (असंकिलिट्ठाइं) અને દોષરહિત હતાં. (वत्थाइं पवर-परिहिया) એવાં વસ્ત્રો તેઓએ સારી રીતે પોતાના શરીરે ધારણ કર્યાં હતાં (वयं च पढमं समइक्कंता) પ્રથમ વયનું તેઓ ઉલ્લંઘન કરી ચૂકયા હતા, અર્થાત્

**तुडिय - पवर - भूसण - णिम्मल-मणि-रयण-मंडिय-भुया दसमुद्दा-मंडिय-ग्गहत्था चूलामणि-चिंध-गया सुरूवा महड्ढिया महज्जुइया**

न्तमतिक्रान्ता । 'विइयं च असंपत्ता' द्वितीयश्चाऽसम्प्राप्ताः—द्वितीयं—तरुणं वय , असम्प्राप्ताः=नाद्यापि प्राप्तवन्तः। अतएव—'भद्दे जोव्वणे वट्टमाणा' भद्रे यौवने वर्तमाना'—सदा यौवनवयोधारिणः।'तलभंगय-तुडिय-पवरभूसण-निम्मल-मणि-रयण-मंडिय-भुया' तलभङ्गक-त्रुटिक-प्रवरभूषण-निर्मल-मणि-रत्नमण्डित-भुजा.—तलभङ्गक=बाहवाभरणम् .त्रुटिकानि च बाहुरक्षकाणि, तान्येव भूषणानि तैर्निर्मलमणिरत्नैश्च मण्डिता भुजा येषां ते तथा—विविधवरभूषणमणिरत्नभूषित-भुजा इत्यर्थः, 'दसमुद्दामंडियग्गहत्था' दशमुद्रामण्डिताऽग्रहस्ता.-दशभिर्मुद्राभि =मुद्रिकाभि. मण्डिता'=भूषिता -अग्रहस्ता अङ्गुल्यो येषां ते तथा। 'चूलामणिचिंधगया' चूडामणिचिह्नगता - चूडामणिरूपचिह्नधारका इत्यर्थ । 'सुरूवा' सुरूपा'—सुन्दराऽऽकाराः 'महड्ढिया' महर्द्धिका=विशिष्टविमानपरिवारादियुक्ता । 'महज्जुइया ' महाद्युतिकाः—विशिष्टशरीराऽऽभरणादिप्रभाभा-

थे, (विइयं च असंपत्ता) और अभीतक ये तरुण अवस्था को जैसे प्राप्त नहीं हुए हों ऐसे दीखते थे । इसलिये ये सदा (भद्दे जोव्वणे वट्टमाणा) अभिनव यौवन अवस्थासे सम्पन्न थे । (तलभंगय-तुडिय-पवरभूषण-णिम्मल-मणि-रयण-मंडिय-भुया) इनकी भुजाएँ तल-भंगक—बाहु के एक आभरण एव त्रुटिक—बाहुरक्षक—भुजबंध इन उत्तम दोनों आभूषणों से और निर्मल मणिरत्नों से मण्डित थीं। (दसमुद्दा-मंडिय-ग्गहत्था) हाथ की सबकी सब अंगुलियाँ दस मुद्रिकाओं से मण्डित थीं. अर्थात्—हाथ की दसो अंगुलियों में मुद्रिकाये थीं। (चूडाम-णि-चिंध-गया) चूडामणिचिह्न के ये धारक थे। (सुरूवा) इनका रूप बडा ही सुन्दर था। (महड्ढिया) विशिष्ट विमान एवं परिवारादि रूप ऋद्धि के ये सभी देव धारक थे । (मह-

તેઓ બધા સોળ વર્ષથી ઉપરના હોય એવા દેખાતા હતા. (विइयं च असंपत्ता) અને હજુ સુધી તેઓએ તરુણ અવસ્થાને પ્રાપ્ત ન કરી હોય એવા તેઓ દેખાતા હતા, આથી તેઓ સદા (भद्दे जोव्वणे वट्टमाणा) અભિનવ યૌવન અવસ્થાથી સમ્પન્ન હતા. (तलभंगय-तुडिय-पवर-भूसण-णिम्मल मणि रयण मंडिय-भुया) તેમની ભુજાઓ તલભંગક—બાહુના આભરણ અને ત્રુટિક—બાહુરક્ષક—ભુજબંધ એ બન્ને ઉત્તમ આભૂષણોથી તથા નિર્મળ મણિરત્નોથી મંડિત હતી. (दस-मुद्दा-मंडिय-ग्गहत्था) હાથની તમામેતમામ આંગળીઓ દશ મુદ્રિકાઓથી (વીંટીઓથી) મંડિત હતી. અર્થાત્ હાથની દશેય આંગળીઓમાં મુદ્રિકાઓ હતી, (चूलामणि-चिंध गया) ચૂડામણિચિહ્નના ધારક તેઓ હતા (सुरूवा) તેમનાં રૂપ બહુજ સુંદર હતાં. (महड्ढिया) વિશિષ્ટ વિમાન અને પરિવાર આદિ રૂપ

**महब्बला महासोक्खा महानुभागा हार-विराइय-वच्छा कडग-तुडिय-थंभिय-भुया अंगय-कुंडल- मट्ठ - गंडयल - कण्णपीढधारी विचित्त-वत्था-भरणा विचित्त-माला-मउलि-मउडा कल्लाणग-पवर-**

स्वराः। 'महब्बला' महाबलाः—विशेषबलशालिनः। 'महायसा' महायशसः—विशालकीर्तिमन्तः, 'महासोक्खा' महासौख्याः—विशिष्टसुखसम्पन्नाः। 'महाणुभागा' महानुभागाः—अचिन्त्यप्रभावयुक्ताः। 'हारविराइयवच्छा' हारविराजितवक्षसः। 'कडगतुडियथंभियभुया' कटकत्रुटिकस्तम्भितभुजाः—कटकैः=वलयैः त्रुटिकैः—बाहुरक्षकभूषणविशेषैः स्तम्भिता—सज्जिता भुजा येषां ते तथा। 'अंगय-कुंडल-मट्ठ-गंडयल-कण्णपीढ-धारी' अङ्गद-कुण्डल-मृष्ट-गण्डतल-कर्णपीठ-धारिणः—अङ्गदानि=बाह्वाभरणानि कुण्डलमृष्टगण्डतलानि कर्णपीठानि—कर्णाभरणाविशेषान् धरन्ति तच्छीलाः। 'विचित्त—वत्था—भरणा'—विचित्र—वस्त्राभरणाः—विचित्राणि=

ज्जुइया) शरीर एवं आभरण आदि की विशिष्ट प्रभा से ये मण्डित थे। (महब्बला) विशेष शक्तिसम्पन्न थे। (महायसा) इनकी कीर्त्ति दिग्दिगन्त में फैली हुई थी। (महासोक्खा) विशिष्ट सुख के ये भोक्ता थे। (महाणुभागा) अचिन्त्य प्रभाव के धारक थे। (हार-विराइय-वच्छा) इनका वक्षःस्थल हार से शोभायमान था। (कडग-तुडिय—थंभिय-भुया) कटक, वलय एवं त्रुटिक—भुजबन्ध से इनकी भुजाये सज्जित थीं। (अंगय-कुंडल-मट्ठ-गंडयल—कण्णपीढ-धारी) अंगद-बाजूबन्ध, कुण्डल-कर्णाभरणविशेष कि जिससे इनके कपोल घर्षित-हो रहे है—इन दोनो को एवं और भी अन्य विशिष्ट कर्णाभरणों को ये धारण किये हुये थे। (विचित्तवत्थाभरणा) विविध प्रकार के वस्त्र एवं आभरणोंको ये पहने हुए थे। (विचित्त-

ઋદ્ધિથી આ સર્વ દેવો સંપન્ન હતા. (महज्जुइया) વિશિષ્ટ શરીર અને આભરણ આદિની પ્રભાથી તેઓ મંડિત હતા (महब्बला) વિશેષશક્તિસંપન્ન હતા. (महायसा) તેમની કીર્તિ ચોતરફ ફેલાઇ ગઈ હતી (महासोक्खा) વિશિષ્ટ સુખના તેઓ ભોક્તા હતા, (महाणुभागा) અચિન્ત્ય પ્રભાવના ધારક હતા. (हार-विराइय—वच्छा) તેમનું વક્ષસ્થલ (છાતી) હાર વડે શોભાયમાન હતું, (कडग-तुडिय-थंभिय-भुया) કટક—વલય અને ત્રુટિક—ભુજબન્ધથી તેમની ભુજાઓ સજ્જિત હતી. (अंगय-कुंडल मट्ठ-गंडयल-कण्णपीढधारी) અંગદ-બાજૂબન્ધ, કુંડલ—કાનોના આભરણ વિશેષ કે જેના વડે તેમના ગાલ ઘર્ષિત થતા હતા, એ બન્ને તથા તે ઉપરાંત બીજાં વિશિષ્ટ કર્ણ આભરણોને તેઓએ ધારણ કર્યાં હતા. (विचित्तवत्थाभरणा) વિવિધ પ્રકારનાં વસ્ત્ર તથા આભરણોને તેઓએ ધારણ કર્યાં હતા.

**वत्थ-परिहिया कल्लाणग-पवर-मल्ला-णुलेवणा भासुरबोंदी पलं-बवणमालधरा दिव्वेणं वण्णेणं दिव्वेणं गंधेणं दिव्वेणं रूवेणं**

विविधानि वस्त्राणि आभरणानि च येषां ते तथा, **'विचित्तमाला'** विचित्रमाला—विचित्राः= विविधाऽऽकारा मालाः पुष्पस्रजो येषां ते तथा, **'मउलिमउडा'** मौलिमुकुटाः—मौलिषु=मस्तकेषु मुकुटानि येषां ते तथा **'कल्लाणग-पवरवत्थ-परिहिया'** कल्याणक-प्रवरवस्त्र-परिहिताः-कल्याण-कानि=माङ्गलिकानि प्रवराणि=श्रेष्ठानि वस्त्राणि परिहिताः=परिधृतवन्तः-परिधृतमाङ्गलिकश्रेष्ठ-वस्त्राः। **'कल्लाणग—पवर—मल्ला-णुलेवणा'** कल्याणक-प्रवर-माल्यानुलेपनाः-कल्याणकारीणि प्रवराणि माल्यान्यनुलेपनानि च येषां ते तथा, माङ्गलिकमाल्यानुलेपनवन्तः। **'भासुरबोंदी'** भास्वरदेहाः—देदीप्यमानशरीराः **'पलंब—वणमाल—धरा'** प्रलम्बवनमालाधराः, प्रलम्ब.—झुम्बनकं तद्युक्ता वनमाला तस्या धराः, वनमाला कण्ठतो जानुपर्यन्तं लम्बमाना भवति तस्या धारकाः, **'दिव्वेणं वण्णेणं'** दिव्येन वर्णेन—**'दिव्वेणं गंधेणं'** दिव्येन गन्धेन—**'दिव्वेणं**

**माला)** इन्हो ने जो मालाये धारण कर रखी थीं वे विचित्र पुष्पों से गूँथी हुई थीं। अतः ये विचित्र—अनेक प्रकार की मालाओं को धारण किये हुए थे। **(मउलिमउडा)** इनके मस्तक मुकुटों से शोभित थे। **(कल्लाणग-पवर-वत्थ-परिहिया)** कल्याणकारी एवं विशेष कीमती वस्त्रों को इन्होने धारण कर रखाथा। **(कल्लाणग-पवर-मल्ला-णुलेवणा)** आनन्ददायक एवं सुन्दर आकार युक्त मालाओं से एवं विलेपनो से इनका शरीर सज्जित हो रहा था। **(भासुरबोंदी)** इनका शरीर विशिष्ट आभा से युक्त हो रहा था। **(पलंबवणमालधरा)** इन्होने जो वनमालायें धारण कर रखी थीं वे घुटनों तक लटक रही थीं। ये सब **(दिव्वेणं) रूवेणं एवं फासेणं संघाएणं संठाणेणं)** दिव्य वर्ण से, दिव्य गन्ध से, दिव्य स्वरूपसे, इसी प्रकार दिव्य स्पर्श से, दिव्य सहनन से, समचतुरस्र सस्थान से, तथा—**(दिव्वाए इड्ढीए**

(विचित्तमाला) તેઓએ જે માળાઓ ધારણ કરેલી હતી તે વિચિત્ર પુષ્પોથી ગુંથાએલી હતી. આમ તેઓએ વિચિત્ર—અનેક પ્રકારની માળાઓ ધારણ કરી હતી. (मउलिमउडा) તેમના મસ્તક મુકુટો વડે શોભી રહ્યા હતાં. (कल्लाणग-पवर-वत्थ परिहिया) કલ્યાણકારી અને વિશેષ કિંમતી વસ્ત્રો તેઓએ ધારણ કરી રાખેલા હતાં. (कल्लाणग—पवर—मल्ला—णुलेवणा) આનંદદાયક અને સુંદર આકાર-યુક્ત માળાઓથી તેમજ વિલેપનોથી તેમના શરીર સજ્જિત હતા. (भासु-रबोंदी) તેમના શરીર વિશિષ્ટ આભા વડે યુક્ત હતાં. (पलंब—वणमालधरा) તેઓએ જે વનમાલાઓ ધારણ કરી હતી. તે ઘુંટણ સુધી લટકી રહી હતી. આ બધા (दिव्वेणं वण्णेणं दिव्वेणं गंधेणं दिव्वेणं रूवेणं एवं फासेणं संघाएणं संठाणेणं)

**एवं फासेणं संघाएणं संठाणेणं दिव्वाए इड्ढीए जुईए पभाए छायाए अच्चीए, दिव्वेणं तेएणं दिव्वाए लेसाए दस दिसाओ उज्जोयमाणा पभासेमाणा समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं**

रूवेणं' दिव्येन रूपेण '**एवं फासेणं**' एवं स्पर्शेन '**संघाएणं**' संहननेन। '**संठाणेणं**' संस्थानेन—समचतुरस्रलक्षणेन। '**दिव्वाए इड्ढीए**' दिव्यया ऋद्ध्या—देवोचितया परिवारादिरूपया। '**दिव्वाए जुईए**' दिव्यया द्युत्या, '**दिव्वाए पभाए**' दिव्यया प्रभया—प्रभया=विमानदीप्त्या। '**दिव्वाए छायाए**' दिव्यया छायया—शोभया। '**दिव्वाए अच्चीए**' दिव्यया अर्चिषा—शरीरस्थरत्नादितेजोज्वालया। '**तेएणं**' तेजसा—शरीरसम्बन्धिरोचिषा, प्रभावेण वा। '**दिव्वाए लेसाए**' दिव्यया लेश्यया—शरीरकान्त्या '**दस दिसाओ उज्जोयमाणा**' दश दिशा उद्द्योतयन्तः प्रकाशकरणेन, '**पभासेमाणा**' प्रभासयन्तः—शोभयन्तः '**समणस्स भगवओ महावीरस्स**' श्रमणस्य भगवतो महावीरस्य '**अंतियं**' अन्तिकं—समीपम्—'**आगम्मागम्म**' आगत्याऽऽगत्य—वारंवारमुपेत्य। '**रत्ता**' रक्ताः—सानुरागाः '**समणं भगवं**

---

**जुईए पभाए छायाए अच्चीए दिव्वेणं तेएणं दिव्वाए लेसाए**) दिव्य ऋद्धि से, दिव्य द्युति से, दिव्य प्रभासे—विमान आदिकी दीप्ति से, दिव्य छाया से—शोभासे, शरीरस्थ रत्न आदि के दिव्य तेज से, दिव्य शारीरिक कान्ति से एवं दिव्यलेश्यासे (**दस दिसाओ उज्जोयमाणा**) दस दिशाओं को उद्द्योतयुक्त करते हुए (**समणस्स भगवओ**) श्रमण भगवान् (**महावीरस्स**) महावीर के (**अंतियं**) समीप (**आगम्मागम्म**) वारंवार आ आकर (**रत्ता**) बड़ी भक्ति के साथ (**समणं भगवं महावीरं**) श्रमण भगवान महावीर को (**तिक्खुत्तो**) तीन

---

દિવ્ય વર્ણ વડે, દિવ્ય ગંધ વડે, દિવ્ય સ્વરૂપ વડે, તે જ પ્રકારે દિવ્ય સ્પર્શ વડે, દિવ્ય સંહનન વડે, સમચતુરસ્ર-સમચોરસ-સંસ્થાન વડે, તથા-(दिव्वाए इड्ढीए जुईए पभाए छायाए अच्चीए दिव्वेणं तेएणं दिव्वाए लेसाए) દિવ્ય ઋદ્ધિ વડે, દિવ્ય દ્યુતિ વડે, દિવ્ય પ્રભા વડે—વિમાન આદિની દીપ્તિ વડે, દિવ્ય છાયા એટલે શોભા વડે, શરીર ઉપરનાં રત્ન આદિનાં દિવ્ય તેજ વડે, દિવ્ય શારીરિક કાંતિ વડે, અને દિવ્ય લેશ્યા વડે (दस दिसाओ उज्जोयमाणा) દશે દિશાઓને ઉદ્દ્યોત-યુક્ત (પ્રકાશિત) કરતા થયા (समणस्स भगवओ) શ્રમણ ભગવાન્ (महावीरस्स) મહાવીરની (अंतियं) પાસે (आगम्मागम्म) વારંવાર આવી આવીને (रत्ता) બહુ જ ભક્તિપૂર્વક (समणं भगवं महावीरं) શ્રમણ ભગવાન મહાવીરને (तिक्खुत्तो) ત્રણવાર (आयाहिण-पयाहिणं) અંજલિપુટ બાંધીને તેને

**आगम्मागम्म रत्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेंति, करित्ता वंदंति नमंसंति, वंदित्ता नमंसित्ता साइं साइं नामगोयाइं सावेंति, णच्चासण्णे णाइदूरे सुस्सूस-माणा नमंसमाणा अभिमुहा विणएणं पंजलिउडा पज्जुवासंति ॥ सू० ३३ ॥**

**महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेंति'** श्रमणस्य भगवतो महावीरस्य त्रिकृत्व आदक्षिणप्रदक्षिणम्—अञ्जलिपुटं बद्ध्वा तं बद्धाञ्जलिपुटं दक्षिणकर्णमूलत आरभ्य ललाटप्रदेशेन वामकर्णान्तिकेन चक्राकारं त्रिः परिभ्राम्य ललाटदेशे स्थापनरूपं कुर्वन्ति, कृत्वा **'वंदंति'** वन्दन्ते=स्तुवन्ति, **'नमंसंति'** नमस्यन्ति—नमस्कुर्वन्ति, **'वंदित्ता'** वन्दित्वा **'नमंसित्ता'** नमस्यित्वा **'साइं साइं णामगोयाइं सावेंति'** स्वानि स्वानि नामगोत्राणि श्रावयन्ति=कथयन्ति। **'णच्चासण्णे णाइदूरे'** नात्यासन्ने नातिदूरे **'सुस्सूसमाणा'** शुश्रूषमाणाः—सेवां कुर्वाणाः **'नमंसमाणा'** नमस्यन्तः=नमस्कुर्वन्तः **'अभिमुहा'** अभिमुखाः **'विणएणं'** विनयेन **'पंजलिउडा'** प्राञ्जलिपुटाः—बद्धाञ्जलयः **पज्जुवासंति'** पर्युपासते=सेवन्ते ॥सू० ३३॥ ॥

वार (**आयाहिणपयाहिणं**) अंजलिपुट बाँध कर उसे दक्षिण कान से लगा कर मस्तक के पास से बाये कान तक चक्राकार घुमाते हुए पुनः मस्तक पर (**करेंति**) रखते थे, (**करित्ता**) रखकर (**वंदंति नमंसंति**) वन्दना करते थे, नमस्कार करते थे, (**वंदित्ता नमंसित्ता**) वन्दना नमस्कार करके (**साइं साइं नामगोयाइं सावेंति**) अपने अपने नाम एवं गोत्रों का उच्चारण करते थे। (**णच्चासण्णे णाइदूरे सुस्सूसमाणा नमंसमाणा अभिमुहा विणएणं पंजलि-उडा पज्जुवासंति**) न अतिसमीप और न अति दूर ही, अर्थात्—भगवान से थोडी दूर पर भगवान के सामने बैठ कर विनयपूर्वक दोनो हाथ जोड कर सेवा करने लगे ॥ सू० ३३ ॥

જમણા કાનથી લઈને મસ્તકની પાસેથી ડાબા કાન સુધી ચક્રાકાર ફેરવીને, ફરીને મસ્તક પર (करेंति) રાખતા હતા. (करित्ता) રાખીને (वंदंति नमंसंति) વંદન કરતા હતા, નમસ્કાર કરતા હતા. (वंदित्ता नमंसित्ता) વંદના-નમસ્કાર કરીને (साइं साइं नामगायाइं सावेंति) પોત-પોતાનાં નામ એવં ગોત્રના ઉચ્ચારણ કરતા હતા. (णच्चासण्णे णाइदूरे सुस्सूसमाणा नमंसमाणा अभिमुहा विणएणं पंजलिउडा पज्जुवासंति) બહુ સમીપ નહિ, તેમ બહુ દૂર નહિ, અર્થાત્ ભગવાનથી થોડે જ દૂર ભગવાનની સામે બેસીને વિનયપૂર્વક બન્ને હાથ જોડી સેવા કરવા લાગ્યા. (સૂ. ૩૩)

**मूलम्—तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स बहवे असुरिंदवज्जिया भवणवासी देवा अंतियं पाउब्भ-**

टीका—अवशिष्टान् भवनवासिनो वर्णयन्नाह—'**तेणं कालेणं तेणं समएणं**' इत्यादि। तस्मिन् काले तस्मिन् समये '**समणस्स भगवओ महावीरस्स**' श्रमणस्य भगवतो महावीरस्य, '**बहवे असुरिंदवज्जिया भवणवासी देवा अंतियं**' बहवोऽसुरेन्द्रवर्जिता भवनवासिनो देवा अन्तिकं '**पाउब्भवित्था**' प्रादुर्बभूवुः—भगवतः श्रीमहावीरस्य समीपे प्रादुर्भूता इत्यर्थः। भवनवासिदेवानां जातिभेदमाश्रित्य दश भेदा भवन्ति, तथाहि—असुराः=असुरकुमाराः नागकुमारा सुपर्णकुमाराः विद्युत्कुमाराः अग्निकुमाराः द्वीपकुमाराः उदधिकुमारा दिशाकुमारा पवनकुमारा स्तनितकुमाराश्चेति। कुमारवत् क्रीडनपराश्चैते कुमारा उच्यन्ते। भवनेषु=पाताललोकदेवाऽऽवासविशेषेषु वसन्ति तच्छीला भवन-

भगवान के निकट आये हुए भवनवासी देवों के भेदस्वरूप असुरकुमारोंका वर्णन कर, अब सूत्रकार अविशिष्ट भवनवासी देवों का वर्णन करते है—'**तेणं कालेणं**' इत्यादि।

(**तेणं कालेण तेणं समएणं**) उस काल और उस समय में (**समणस्स भगवओ महावीरस्स**) श्रमण भगवान महावीर के (**अंतियं**) पास (**बहवे**) अनेक (**असुरिंदवज्जिया**) असुरेन्द्रों को छोडकर (**भवणवासी देवा**) भवनवासी देव (**पाउब्भवित्था**) प्रकटित हुए। इन भवनवासी देवों के दस भेद, जाति भेदको लेकर होते है। जैसे—असुरकुमार १, नागकुमार २, सुपर्णकुमार ३, विद्युत्कुमार ४, अग्निकुमार ५, द्वीपकुमार ६, उदधिकुमार ७, दिशाकुमार ८, पवनकुमार ९, स्तनितकुमार १०। कुमार की तरह ये क्रीडा करने में सदा तत्पर रहते है, इसलिये इनकी कुमार संज्ञा है। पाताल लोक में जो देवों के आवास-

ભગવાનની પાસે આવેલા ભવનવાસી દેવોના ભેદ—સ્વરૂપ અસુર કુમારોનું વર્ણન કરે છે.—'तेणं कालेणं' ઇત્યાદિ. (तेणं कालेणं तेणं समएणं) તે કાલ અને તે સમયમાં (समणस्स भगवओ महावीरस्स) શ્રમણ ભગવાન મહાવીરની (अंतियं) પાસે (बहवे) અનેક (असुरिंदवज्जिया) અસુરેન્દ્રો છોડીને બીજા (भवनवासी देवा) ભવનવાસી દેવો (पाउब्भवित्था) પ્રગટ થયા. આ ભવનવાસી દેવોના દશ ભેદ જાતિભેદને લઇને થાય છે, જેમકે—અસુરકુમાર ૧, નાગકુમાર ૨, સુપર્ણકુમાર ૩, વિદ્યુત્કુમાર ૪, અગ્નિકુમાર ૫, દ્વીપકુમાર ૬, ઉદધિકુમાર ૭, દિશાકુમાર ૮, પવનકુમાર ૯, સ્તનિતકુમાર ૧૦. કુમાર—બાળકની પેઠે તેઓ ક્રીડા કરવામાં સદા તત્પર રહે છે એ કારણથી તેમની કુમાર સંજ્ઞા છે. પાતાલ લોકમાં જે દેવોના આવાસ—વિશેષ છે તેમાં તેઓ રહે છે તે કારણથી તેઓ ભવનવાસી કહેવાય છે. સૂત્રકાર આવા

**विरथा-णागपइणो सुवण्णा विज्जू अग्गी य दीव उदही दिसाकुमारा य पवणा थणिया य भवणवासी णागफडा-गरुल-वइर-पुण्ण-**

वासिन इत्युच्यन्ते—भवनवासिनामेतेषु दशसु भेदेषु प्रथमभेदं परित्यज्य नव भेदानत्र दर्शयति—'णागपइणो' नागपतयो—नागकुमारा । 'सुवण्णा' सुपर्णकुमाराः । 'विज्जू'—विद्युत्कुमाराः 'अग्गी य' अग्निकुमाराश्च । 'दीवा' द्वीपकुमाराः । 'उदही' उदधिकुमाराः । 'दिसाकुमारा य' दिशाकुमाराश्च 'पवणा' पवनकुमाराः 'थणिया य' स्तनितकुमाराश्च । एते 'भवणवासी' भवनवासिनः । एतेषां नागकुमारादीनां नागफणादीनि चिह्नानि भवन्ति, तानि क्रमशो दर्शयन्नाह—'**णागफडा—गरुल—वइर—पुण्णकलस—सीह—हयवर-गयंक-मयरंक-वरमउड-वद्धमाण-णिज्जुत्त विचित्त-चिंधगया**' नागफणा-गरुड-वज्र-पूर्णकलश-सिंह-हयवर-गजाङ्क-मकराङ्क-वरमुकुट-वर्द्धमान-निर्युक्त-विचित्र-चिह्नगता-नागकुमाराणां मुकुटेषु नागफणाचिह्नानि, सुपर्णकुमाराणां मुकुटेषु गरुडचिह्नानि, विद्युत्कुमाराणां मुकुटेषु वज्रचिह्नानि, अग्निकुमाराणां मुकुटेषु पूर्णकलशचिह्नानि, द्वीपकुमाराणां मुकुटेषु सिंहचि-

---

विशेष है उनमें ये रहते है, इसलिये ये भवनवासी कहलाते है। सूत्रकार इन्हीं भवनवासियों के प्रथम भेदको छोडकर अन्य नौ भेदों को यहां बतला रहे है—(**णागपइणो**) नागपति—नागकुमार (**सुवण्णा**) सुपर्णकुमार (**विज्जू**) विद्युत्कुमार (**अग्गी य**) अग्निकुमार (**दीवा**) द्वीपकुमार (**उदही**) उदधिकुमार (**दीसाकुमारा य**) दिशाकुमार (**पवणा**) पवनकुमार (**थणिया य**) स्तनितकुमार (**भवणवासी**) ये इस प्रकार भवनवासी देवो के भेद है। इनमें (**णागफडा—गरुल—वइर—पुण्णकलस—सिंह—हयवर—गयंक—मयरंक—वरमउड—वद्धमाण—णिज्जुत्त—विचित्त—चिंध—गया**) नागकुमारों के मुकुटमे नागकी फणाका चिह्न है ॥१॥ सुपर्णकुमारों के मुकुटमें गरुडका चिह्न है ॥२॥ विद्युत्कुमारों के मुकुटो में वज्रका चिह्न है ॥३॥ अग्निकुमारों के मुकुटों में पूर्णकलशका चिह्न है ॥४॥ द्वीपकुमारों के मुकुटों

---

ભવનવાસિઓના પ્રથમ ભેદ છોડીને અહીં બીજા નવ ભેદોને બતાવે છે-(णागपइणो) નાગપતિ—નાગકુમાર (सुवण्णा) સુપર્ણકુમાર (विज्जू) વિદ્યુત્કુમાર (अग्गी य) અગ્નિકુમાર, (दीवा) દ્વીપકુમાર (उदही) ઉદધિકુમાર (दिसाकुमारा य) દિશાકુમાર (पवणा) પવનકુમાર (थणिया य) સ્તનિતકુમાર; (भवणवासी) આ દશ પ્રકારે ભવનવાસી દેવોના ભેદ છે. આમા (णागफडा-गरुल—वइर- पुण्णकलस—सिंह—हयवर—गयंक—मयरंक — वरमउड—वद्धमाण — णिज्जुत्त—विचित्त—चिंध—गया) નાગકુમારોના મુકુટમા નાગની ફણાનુ ચિહ્ન છે ૧. સુપર્ણકુમારોના મુકુટમા ગરુડનું ચિહ્ન છે ૨. વિદ્યુત્કુમારોના મુકુટમાં

**कलस-सीह-हयवर-गयंक-मयरंक-वर-मउड-वद्धमाण-णिज्जुत्त-वि-चित्त-चिंधगया सुरूवा महिड्डिया, सेसं तं चेव जाव पज्जुवा-संति ॥ सू० ३४ ॥**

ह्नानि, उदधिकुमाराणां मुकुटेष्वश्वचिह्नानि, दिशाकुमाराणां मुकुटेषु हस्तिचिह्नानि, पवन-कुमाराणां वरमुकुटेषु मकरचिह्नानि, तथा स्तनितकुमाराणां मुकुटेषु वर्धमानचिह्नानि भवन्ति, तानि नागफणादीनि वर्धमानान्तानि **'निजुत्त'** निर्युक्तानि-मुकुटेषु स्थितानि, **'विचित्त'** विचित्राणि-नाना-विधानि, **'चिंध'** चिह्नानि गताः=प्राप्ताः ये ते तथा, नागफणादीनि वर्द्धमानान्तानि यथा-स्थानस्थितानि विचित्ररूपाणि लक्षणानि तेषां मुकुटेषु भवन्तीत्यर्थः । **'सुरूवाः'** सुरूपाः-सुन्दराऽऽकाराः । **'महिड्ढिया'**-महर्द्धिकाः-महत्या ऋद्ध्या युक्ताः । **'सेसं तं चेव'** शेषं तदेव-शेषम्=अवशिष्टं तदेव=पूर्ववदेव वाच्यम्, कियदवधि वाच्यम् ? इत्याह-**'जाव पज्जुवासंति'** यावत् पर्युपासते-इति । ते नागकुमारादयः नवनिकायभवनवासिदेवाः असुर-कुमारवद् भगवन्तं सेवन्ते इति भावः ॥सू० ३४ ॥

में सिंहका चिह्न है ॥५॥ उदधिकुमारों के मुकुटों में अश्वका चिह्न है ॥६॥ दिशाकुमारों के मुकुटों में हाथीका चिह्न है ॥७॥ पवनकुमारों के उत्तम मुकुटों में मगरका चिह्न है ॥८॥ तथा स्तनितकुमारों के मुकुटों में वर्धमान (स्वस्तिक) का चिह्न है ॥९॥ ये सब चिह्न निर्युक्त-यथास्थान स्थित है, और विचित्र रूपवाले है । **(सुरूवा)** ये सब देव सुन्दर आकार संपन्न, एवं **(महिड्ढिया)** महती ऋद्धि से युक्त हैं । **(सेसं तं चेव जाव पज्जुवासंति)** ये सब भवनवासी देवो का नौ प्रकार के निकाय असुरकुमार देवोंकी तरह भगवान की सेवा करने लगे ॥ सू० ३४ ॥

વજ્રનું ચિહ્ન છે ૩. અગ્નિકુમારોના મુકુટમાં પૂર્ણ-કલશનું ચિહ્ન છે ૪. દ્વીપકુમારોના મુકુટમાં સિંહનું ચિહ્ન છે ૫. ઉદધિકુમારોના મુકુટોમાં અશ્વનું ચિહ્ન છે ૬ દિશાકુમારોના મુકુટમાં હાથીનું ચિહ્ન છે ૭. પવનકુમારોના મુકુટમાં મગરનુ ચિહ્ન છે ૮. તથા સ્તનિતકુમારોના મુકુ-ટમાં વર્ધમાન (સ્વસ્તિક)નું ચિહ્ન છે ૯. આ બધાં ચિહ્નો નિર્યુક્ત-યથાસ્થાન હોય છે. અને વિચિત્ર-રૂપવાળાં હોય છે. (सुरूवा) આ બધા દેવો સુંદર આકાર-સંપન્ન, એવં (महिड्ढिया) મહાન ઋદ્ધિથી યુક્ત હોય છે. (सेसं तं चेव जाव पज्जुवासंति) આ બધા ભવન-વાસી દેવોના નવ પ્રકારના નિકાય અસુર કુમાર દેવોની પેઠે ભગવાનની સેવા કરવા લાગ્યા. (સૂ. ૩૪).

मूलम्—तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स बहवे वाणमंतरा देवा अंतियं पाउब्भवित्था-पिसाय-भूया य जक्ख-

टीका-'तेणं कालेणं तेणं समएणं' इत्यादि। तस्मिन् काले तस्मिन् समये श्रमणस्य भगवतो महावीरस्य 'बहवे वाणमंतरा देवा अंतियं पाउब्भवित्था' बहवो व्यन्तरा देवा अन्तिके प्रादुर्बभूवु', तत्र-व्यन्तरा-अन्तरम्=अवकाशः, तच्चेहाश्रयरूपम्; विविधम् अन्तरं=पर्वतान्तरं कन्दरान्तरं वनान्तरं वा आश्रयरूपं येषां ते व्यन्तराः—देवविशेषाः, यद्वा-'वाणमन्तरा' इतिच्छाया। तत्रेयं व्युत्पत्तिः—वनानामन्तराणि वनान्तराणि, तेषु भवा' वानमन्तराः, पृषोदरादित्वान्मध्ये मकारागम। भगवन्महावीरस्वामिसन्निधौ समवसरणे व्यन्तरा देवाः प्रकटीभूता इत्यर्थ., ते कतिविधा' ? अत्राऽऽह—'पिसाय-भूया य' पिशाचा' १, भूताश्च

'तेणं कालेण' इत्यादि।

(तेणं कालेणं तेणं समएणं) उस काल और उस समय में (समणस्स भगवओ महावीरस्स) श्रमण भगवान महावीर के (अंतियं) समीप (बहवे) अनेक (वाणमंतरा देवा) व्यंतर देव (पाउब्भवित्था) आये। व्यन्तर इनका नाम इसलिये है कि इनका अन्तर=अवकाश अर्थात् निवासस्थान अनेक प्रकार के है, जैसे—पर्वत, गिरिकन्दरा, वन आदि। अथवा—'वाणमन्तर'की संस्कृत छाया 'वानमन्तर' भी होती है। वनान्तरों में—वनों के मध्य में—जिनका रहना हो वे वानमन्तर है। ये वानमन्तर भगवान महावीर के समवसरण में उपस्थित हुए। ये व्यन्तर देव कितने प्रकार के है ? इस प्रकार की आशंका होने पर सूत्रकार उसका समाधान करते हुए उनके भेदों को गिनाते हैं—(पिसाय—भूया य जक्ख-

'तेणं कालेण' ઇત્યાદિ.

(तेणं कालेणं तेणं समएणं) તે કાલ અને તે સમયને વિષે (समणस्स भगवओ महावीरस्स) શ્રમણ ભગવાન મહાવીરની (अंतियं) પાસે (बहवे) અનેક (वाणमंतरा देवा) વ્યંતર દેવો (पाउब्भवित्था) આવ્યા. વ્યંતર એવું તેમનું નામ એ કારણથી છે કે તેમનુ અન્તર-અવકાશ, અર્થાત્-નિવાસ સ્થાન, અનેક પ્રકારનું છે; જેમકે પર્વતો, પર્વતોની ગુફા, તથા વન આદિ. અથવા 'वाणमंतर'ની સંસ્કૃત છાયા 'वानमन्तर' થાય છે. વનાન્તરોમાં-વનોના મધ્યમાં-જેમનું રહેવાનુ થાય તે વાનમન્તર છે. આ વાનમન્તર ભગવાન મહાવીરના સમવસરણમાં ઉપસ્થિત થયા આ વ્યન્તર દેવ કેટલા પ્રકારના છે ? આવી શંકાનું સમાધાન કરતાં સૂત્રકાર તેના ભેદો કહે છે-( पियास-

**रक्खसा किंनर-किंपुरिस-भुयगपइणो य महाकाया गंधव्व-णिकाय-गणा णिउण-गंधव्वगीय-रइणो अणवण्णिय-पणवण्णिय-इसिवा-इय-भूयवाइय-कंदिय-महाकंदिया य कुहंड-पययदेवा चंचल-च-**

२, '**जक्ख–रक्खसा**' यक्षाः ३, राक्षसाः ४, '**किंनर–किंपुरिस–भुयगपइणो**' किन्नर–किंपुरुष-भुजगपतयः–किन्नराः ५, किम्पुरुषा ६, भुजगपतयः–महोरगाः ७, '**महाकाया**' महाकायाः=विशालशरीरधारिणः, ८, '**गंधव्व–णिकाय-गणा**' गन्धर्वनिकायगणाः–गन्धर्वसमूहगणाः, गन्धर्वजातय इत्यर्थः, '**णिउण-गंधव्व-गीय-रइणो**' निपुण-गान्धर्व-गीत-रतयः–निपुणं-प्रशस्तं, गान्धर्वं=नाट्योपेत गान, गीतञ्च नाट्यवर्जितगानं, तत्र रतिर्येषां ते तथा, '**अणवण्णिय-पणवण्णिय-इसिवाइय-भूयवाइय-कंदिय-महाकंदिया य कुहंड-पयय-देवा**' अप्रज्ञप्तिक-पञ्चप्रज्ञप्तिक-ऋषिवादिक-भूतवादिक-क्रन्दित-महाक्रन्दिताश्च कूष्माण्ड-पतगदेवाः–एतेऽष्टौ व्यन्तरा निकायविशेषभूता रत्नप्रभापृथिव्या उपरितनयोजन-

**रक्खसा किंनर–किंपुरिस–भुयगपइणो य महाकाया गंधव्वणिकायगणा**) पिशाच १, भूत २, यक्ष ३, राक्षस ४, किन्नर ५, किंपुरुष ६, भुजगपति ७, एवं विशाल शरीर धारण करनेवाला महोरग ८, गंधर्वनिकायगण, अर्थात्–गन्धर्व ९, ये व्यन्तर देव है। ये सब (**णिउण–गंधव्व–गीय–रइणो**) प्रशस्त नाटकीयगान में एवं नाट्यवर्जित गानविद्या में रति रखनेवाले होते हैं। (**अणवण्णिय–पणवण्णिय–इसिवाइय–भूयवाइय–कंदिय–महा-कंदिया य कुहंड–पययदेवा**) अप्रज्ञप्तिक, पञ्चप्रज्ञप्तिक, ऋषिवादिक, भूतवादिक, क्रन्दित, महाक्रन्दित, कूष्माण्ड और पतगदेव, ये भी आठ व्यन्तरनिकाय के देव है। इन सब का निवास रत्नप्रभापृथिवी के ऊपरी भाग में १०० योजन तक है। ये कैसे होते है? सो

भूया य जक्ख–रक्खसा किन्नर–किंपुरिस–भुयगपइणो य महाकाया गंधव्वणिकाय-गणा) પિશાચ ૧, ભૂત ૨, યક્ષ ૩. રાક્ષસ ૪, કિન્નર ૫, કિંપુરૂષ ૬, ભુજગપતિ ૭, એવં વિશાલ શરીર ધારણ કરવાવાળા મહોરગ ૮, ગંધર્વ નિકાયગણ અર્થાત્ ગંધર્વ ૯, એ વ્યન્તર દેવ છે. આ બધા (णिउण–गंधव्व–गीय–रइणो) પ્રશસ્ત નાટકીય ગાનમાં, તેમજ નાટ્ય–વર્જિત ગાનવિદ્યામાં પ્રેમ રાખવાવાળા હોય છે. (अणवण्णिय–पणवण्णिय–इसिवाइय–भूयवा-इय–कंदिय–महाकंदिया य कुहंड–पयय–देवा) અપ્રજ્ઞપ્તિક, પંચપ્રજ્ઞપ્તિક, ઋષિ-વાદિક, ભૂતવાદિક, ક્રન્દિત, મહાક્રન્દિત, કૂષ્માંડ અને પતગદેવ આ પણ આઠ વ્યન્તર નિકાયના દેવ છે. આ બધાનો નિવાસ રત્નપ્રભા પૃથ્વીના ઉપ-રના ભાગમાં ૧૦૦ યોજન સુધી છે. તેઓ કેવા હોય છે? તે કહે છે–(चंचल-

वल-चित्त-कीलण-दवप्पिया गंभीर-हसिय-भणिय-पीयगीय-णच्च-ण-रई वणमाला-मेल-मउड-कुंडल-सच्छंद-विउव्वियाहरण-चारु-

गतवर्त्तिनः, ते कीदृशाः? अत्राऽऽह—'चंचल-चवल-चित्त-कीलण-दवप्पिया' चञ्चल-चपल-चित्त-क्रीडन-द्रव-प्रियाः—चञ्चलादपि चपलानि चित्तानि येषां ते चञ्चलचपलचित्ताः=अतिचपल-मानसाः, क्रीडनं—क्रीडा, द्रवश्च परिहासः क्रीडाद्रवौ प्रियौ येषां ते क्रीडाद्रवप्रियाः, ततः पद-द्वयस्य कर्मधारयः। 'गंभीर-हसिय-भणिय-पीय-गीय-णच्चण-रई' गम्भीर-हसित-भणित-प्रिय-गीत-नर्तन-रतयः-गम्भीरम्=इतरैरज्ञेय हसितं—हास्यम्, भणितं—वाक्प्रयोगः, प्रियं येषां ते गम्भीर-हसित-भणित-प्रियाः, गीतनर्तनयो रतिर्येषां ते गीतनर्तनरतयः, ततः पदद्वयस्य कर्मधारयः। 'वणमाला-मेल-मउड-कुंडल-सच्छंद- विउव्विया-हरण-चारु-विभूसण-धरा' वनमाला-ऽऽमेल-मुकुट-कुण्डल-स्वच्छन्द-विकुर्विताऽऽभरण-चारु-विभूषण-धराः—वनमाला—रत्नादिमयाऽऽभरणविशेषः, आमेलः—पुष्परचितालङ्कारविशेषः, मुकुटं=सुवर्णमयं शिरोभूषणम्, कुण्डलं-कर्णाऽभरणम्, एतदतिरिक्तानि-स्वच्छन्दविकुर्वितानि=स्वाभिप्रायानुसारात्स्वयं प्रकटीकृतानि आभरणानि,

कहते है–(चंचल–चवल–चित्त–कीलण–दव–प्पिया) अति चपल चित्तवाले ये व्यन्तर देव, क्रीडा एव परिहास–प्रिय हुआ करते है। (गंभीर–हसिय–भणिय–पीय–गीय–णच्च–णरई) दूसरों द्वारा अज्ञेय ऐसे हसित–हँसने में तथा बोलने की चतुराई में ये विशेष निपुण होते है, अथवा हसित एवं भणित, ये दो बाते इन्हे विशेष प्रिय होती है। गीत और नर्तन में इन्हे विशेष अनुराग होता है। (वणमाला–मेल–मउड–कुंडल–सच्छंद–विउ-व्विया–हरण–चारु–विभूसण–धरा) वनमाला–रत्नादि द्वारा निर्मित आभरणविशेष, आमेलक–पुष्पों द्वारा रचित अलंकार विशेष, मुकुट–सुवर्णमयशिरोभूषण, कुंडल–कर्णाभरण, एवं अपनी इच्छानुसार निष्पादित और भी अन्य आभरण ये ही जिनके सुहावने आभूषण

चवल–चित्त–कीलण–दव–प्पिया) બહુ જ ચંચલ ચિત્તવાળા તે વ્યન્તર દેવ ક્રીડા એવં પરિહાસપ્રિય હોય છે. (गंभीर-हसिय–भणिय-पीय–गीय-णच्चण-रई) બીજાથી ન જાણી શકાય એવા હસિત–હસવામાં તેમ જ ભણિત–બોલવામાં તેઓ વિશેષ નિપુણ હોય છે. અથવા હસિત એવં ભણિત આ બે વાતો તેમને વિશેષ પ્રિય હોય છે. ગીત અને નાચમાં તેમને વિશેષ અનુરાગ હોય છે. (वणमाला-मेल मउड-कुंडल-सच्छंद-विउव्विया-हरण चारु-विभूसण-धरा) વનમાળા-રત્નાદિ દ્વારા નિર્મિત આભરણ વિશેષ, આમેલ–પુષ્પો દ્વારા રચિત અલંકાર વિશેષ, મુકુટ–સુવર્ણમય શિરોભૂષણ, કુંડલ–કર્ણાભરણ, તેમ જ પોતાની ઈચ્છા-નુસાર નિષ્પાદિત બીજા પણ આભરણો; એ જ જેમનાં સોહામણાં આભૂષણો છે

विभूसण-धरा सव्वोउय-सुरभि-कुसुम-सुरइय-पलंबसोभंत-कंत-वियसंत-चित्त-वणमाल-रइय-वच्छा कामगमा कामरूवधारी णाणाविह-वण्ण-राग--वरवत्थ--चित्त-चिल्लिय-णियंसणा विविह-देस-

तान्येव चारुविभूषणानि तेषां धरा:। 'सव्वोउय-सुरभि-कुसुम-सुरइय-पलंब-सोभंत-कंत--वियसंत-चित्त-वणमाल-रइय-वच्छा' सर्वर्तु-सुरभि-कुसुम-सुरचित-प्रलम्ब-शोभमान-कान्त-विकसच्चित्रवनमाला-रतिद-वक्षसः-सर्वेषु ऋतुषु सुरभीणि यानि कुसुमानि तैः सुरचिता प्रलम्बा च शोभमाना च कान्ता च विकसन्ती च चित्रा=विचित्रा चासौ वनमाला=पुष्पस्रक्, तथा रतिदानि=सुन्दराणि वक्षांसि येषां ते तथा, 'कामगमा' कामगामिनः--इच्छागामिनः। 'कामरूवधारी' कामरूपधारिणः--स्वेच्छानुसाररूपधारकाः। 'णाणाविह-वण्ण-राग-वरवत्थ-चित्त-चिल्लिय-णियंसणा' नानाविध-वर्ण-राग-वरवस्त्र-चित्र-देदीप्यमान-निवसनाः-नानाविध-वर्णो रागो येषु तानि-नानाविधवर्णरागाणि तानि तथाभूतानि वरवस्त्राणि चित्राणि--विचित्राणि 'चिल्लिय' देदीप्यमानानि, निवसनानि=परिधानानि येषां ते तथा, 'चिल्लिय' इतिदेशीयशब्दः; रक्तादिबहुविधपरिधानवसनानि परिदधाना इत्यर्थः। 'विविह-देसणेवच्छ-गहिय-वेसा' विविध-देश-नेपथ्य-गृहीत-वेषाः-विविधानाम्=अनेकेषां देशानां नेपथ्यैः=प्रसाधनविशेषैः गृहीतः

है। (सव्वोउय-सुरभि-कुसुम-सुरइय-पलंव-सोभंत-कंत-वियसंत-चित्त-वनमाल--रइय-वच्छा) इनके वक्षःस्थल, सदा समस्त ऋतुओं के सुरभित पुष्पों द्वारा रचित लंबी २ सुन्दर विकसित चित्र-विचित्र वनमालाओ द्वारा सुहावने रहा करते है। (कामगमा) इनका गमन इच्छानुसार हुआ करता है। (कामरूवधारी) इच्छानुसार ये रूपों को धारण करते रहते है। (णाणाविह-वण्ण-राग-वरवत्थ-चित्त-चिल्लिय-णियंसणा) अनेक प्रकार के रगवाले तथा चित्र-विचित्र प्रभावाले ऐसे चमकते हुए वस्त्रो को ये पहिरा करते है। (विविह-देसी-णेवच्छ-गहिय-वेसा) अनेक देशों

(सव्वोउय-सुरभि-कुसुम-सुरइय-पलंब-सोभत-कंत-वियसंत-चित्त-वनमाल-रइय-वच्छा) તેમનાં વક્ષસ્થલ હમેશા સમસ્ત ઋતુઓનાં સુંદર પુષ્પો દ્વારા બનાવેલી લાંબીલાંબી સુંદર વિકસિત ચિત્ર-વિચિત્ર વનમાલાઓથી શોભાયમાન રહે છે. (कामगमा) તેમનું ગમન ઇચ્છાનુસાર થતું હોય છે. (कामरूवधारी) ઇચ્છાનુસાર તેઓ રૂપ ધારણ કરતા રહે છે. (णाणाविह-वण्ण-राग-वरवत्थ-चित्त-चिल्लिय-णियंसणा) અનેક પ્રકારના રંગવાળાં તથા ચિત્રવિચિત્ર પ્રભાવાળાં એવાં ચમકદાર વસ્ત્રો તેઓ પહેરે છે. (विविह-देसी-णेव-च्छगहिय-वेसा) અનેક દેશોનો તેઓ પોશાક પહેરે છે. (पमुइय-कंदप्प-कलह-केली-कोलाहल-प्पिया) પ્રમુદિતોના

णेवच्छ-गहिय-वेसा पमुइय-कंदप्प-कलह-केली-कोलाहल-प्पिया हास-बोल-बहुला अणेग-मणि-रयण-विविह-णिज्जुत्त-विचित्त-चिंधगया सुरूवा महिड्ढिया जाव पज्जुवासंति ॥ सू० ३५ ॥

=कृत. वेष'=शरीरशोभाऽऽधायकप्रसाधनं यैस्ते तथा, तत्र नेपथ्यं-'पोशाक'-इतिभाषाप्रसिद्धम्, **'पमुइय-कंदप्प-कलह-केली-कोलाहल-प्पिया'** प्रमुदित-कन्दर्प-कलह-केलि-कोलाहल-प्रिया - प्रमुदितानां यः कन्दर्पप्रधानः कलहः केली=क्रीडा, तज्जन्यः कोलाहलः—कलकल' प्रियो येषां ते तथा, कामकलहक्रीडाकोलाहलपरायणा इत्यर्थः । **'हास-बोल-बहुला'** हासध्वनिबहुला. **'अणेग-मणि-रयण-विविह-णिज्जुत्त-विचित्त-चिंध-गया'** अनेक-मणि-रत्न-विविध-निर्युक्त-विचित्र-चिह्नगता.-अनेकानि-यानि मणिरत्नानि तानि विविधनिर्युक्तानि=विविधप्रकारेण यथास्थानस्थितानि, तान्येव विचित्रचिह्नानि तानि गता'=प्राप्ता । **'सुरूवा'** सुरूपा'—सुन्दराऽऽकारा'। **महिड्ढिया'** महर्द्धिका —महासम्पत्तियुक्ताः । **'जाव पज्जुवासंति'** यावत्पर्युपासते—आदक्षिणप्रदक्षिण-वन्दनादीनि पूर्ववत् कृत्वा भगवत' श्रीमहावीरस्याभिमुखे स्थिता' कृतप्राञ्जलिपुटा भगवन्त श्रीमहावीरं सेवन्ते-इति ॥ सू० ३५ ॥

की ये पोशाक धारण किये रहते है । **(पमुइय-कंदप्प-कलह-केली-कोलाहल-प्पिया)** प्रमुदितों का जो कन्दर्पप्रधान कलह एव क्रीडा होती है इससे जन्य जो कोलाहल होता है, वह इन्हे अधिक प्रिय रहा करता है। **(हास-बोल-बहुला)** ये हँसी-मजाक करने में बड़े चतुर होते है । **(अणेग-मणि-रयण-विविह-णिज्जुत्त-विचित्त-चिंध-गया)** अनेक मणिरत्न, जो कि विविध प्रकार से यथास्थान पर निवेशित रहा करते है वे ही जिनके विचित्र चिह्न है ऐसे, **(सुरूवा)** सुन्दर आकार विशिष्ट, **(महिड्ढिया)** एवं महाऋद्धियुक्त वे व्यन्तर देव **(जाव पज्जुवासंति)** पूर्ववर्णित असुरकुमारों की तरह दोनों हाथ जोडकर वंदना एव नमस्कार करके प्रभु महावीर की सेवा मे लग्न हुए ॥ सू० ३५ ॥

જે કન્દર્પપ્રધાન કલહ એવ ક્રીડા થાય છે તેમાથી જે કોલાહલ ઉત્પન્ન થાય છે તે તેમને અધિક પ્રિય લાગે છે. (हास-बोल-बहुला) હાસી-મજાક કરવામા આ બહુ જ ચતુર હોય છે (अणेग-मणि-रयण-विविह-णिज्जुत्त-विचित्त-चिंध-गया) અનેક મણિરત્ન કે જે વિવિધ પ્રકારે યથાસ્થાન નિવેશિત રહે છે તે જ જેઓના વિચિત્ર ચિહ્ન છે. એવા (सुरूवा) સુદર આકાર યુક્ત (महिड्ढिया) એવં મહા-ઋદ્ધિયુક્ત તે વ્યન્તરદેવ (जाव पज्जुवासति) પૂર્વે કહેલા અસુરકુમારોની પેઠે બન્ને હાથ જોડી વંદના તેમજ નમસ્કાર કરીને પ્રભુ મહાવીરની સેવામા લગ્ન થયા. (સૂ. ૩૫)

मूलम्—तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महा-वीरस्स जोइसिया देवा अंतियं पाउब्भवित्था—बिहस्सई चंद-सूर-सुक्क-सणिच्छरा राहू धूमकेतु-बुहा य अंगारका य तत्त-तवणिज्ज-

टीका—'तेणं कालेणं तेणं समएणं' इत्यादि। तस्मिन् काले तस्मिन् समये श्रमणस्य भगवतो महावीरस्य 'जोइसिया देवा अंतियं पाउब्भवित्था' ज्योतिष्का देवा अन्तिके प्रादुर्बभूवुः—श्रीमहावीरस्य समीपे प्रकटीभूताः। नामभिर्ज्योतिष्कान् कथयति—'विहस्सई' बृहस्पतयः—ज्योतिष्काणामसंख्यातत्वात् प्रत्येकं ते बहवः सन्ति-इति। 'चंद-सूर-सुक्क-सणिच्छरा' चन्द्रसूर्यशुक्रशनैश्चराः, 'राहू' राहवः, 'धूमकेउ-बुहा य' धूमकेतुबुधाश्च, 'अंगारका य' अङ्गारकाः—मङ्गलाश्च, किंवर्णा एते ? इत्याह—तत्त-तवणिज्ज—कणग-वण्णा' तप्त-तपनीय-कनक-वर्णाः—तप्ततनीयं=रक्तसुवर्णं, कनकं=पीतसुवर्णं तद्वद्वर्णो येषां ते तथा। केचिद्रक्ताः केचित्पीता इत्यर्थः, तथा—जे य गहा जोइसंमि चारं चरंति' ये च ग्रहा ज्योतिषे

'तेणं कालेणं' इत्यादि।

(तेणं कालेणं तेणं समएणं) उस काल एवं उस समय में (समणस्स भगवओ महावीरस्स) श्रमण भगवान् महावीर के (अंतियं) समीप (जोइसिया देवा) ज्योतिषी देव (पाउब्भवित्था) प्रकटित हुए। ज्योतिषी देवों के ये नाम है—(विहस्सई चंद—सूर—सुक्क—सणिच्छरा राहू, धूमकेतु—बुहा य अंगारका य) बृहस्पति, चंद्र, सूर्य, शुक्र, शनैश्चर, राहु, धूमकेतु, बुध और अंगारक—मंगल। (तत्त—तवणिज्ज—कणग—वण्णा) ये देव तप्ततपनीय—रक्त सुवर्ण और कनक—पीत सुवर्ण इनके समान वर्णवाले होते है। (जे य गहा जोइसंमि चारं चरंति) उक्त से अतिरिक्त

'तेणं कालेणं' ઇત્યાદિ.

(तेणं कालेणं तेणं समएणं) તે કાલ તેમજ તે સમયમા (समणस्स भगवओ महावीरस्स) શ્રમણ ભગવાન મહાવીરની (अंतियं) પાસે (जोइसिया देवा) જ્યોતિષી દેવ (पाउब्भवित्था) પ્રકટ થયા. જ્યોતિષી દેવોનાં નામ આ પ્રમાણે છે-(विहस्सई चंद-सूर-सुक्क-सणिच्छरा राहू धूमकेतु-बुहा य अंगारका य) બૃહસ્પતિ, ચંદ્ર, સૂર્ય, શુક્ર, શનૈશ્ચર, રાહુ, ધૂમકેતુ, બુધ અને અંગારક—મંગલ. (तत्त-तवणिज्ज-कणग-वण्णा) તે દેવો તપ્ત તપનીય—રક્ત સુવર્ણ અને કનક—પીળા સુવર્ણના જેવા વર્ણવાળા હોય છે. અર્થાત કેટલાએક લાલવર્ણવાળા તથા કેટલાએક પીળાવર્ણવાળા હોય છે. (जे य गहा जोइसंमि चारं चरंति) ઉક્ત-

**कणग-वण्णा, जे य गहा जोइसंमि चारं चरंति केऊ य गइरइया अट्ठावीसविहा य णक्खत्तदेवगणा णाणा-संठाण-संठियाओ य**

चारं चरन्ति–उक्तातिरिक्ता ये ग्रहा ज्योतिषे=ज्योतिश्चक्रे–चक्रवदवभासमाने ज्योतिर्मण्डले भ्रमणं कुर्वन्ति। बहुत्वाद् बहुवचनम्। '**केऊ य गइरइया**' केतवश्च गतिरचिताः–केतवो–जलकेत्वादयः, किम्भूताः? अत्राऽऽह–गतिरचिताः–मनुष्यलोकाऽपेक्षया गतिमन्तः। '**अट्ठावीसविहा य णक्खत्त-देव-गणा**' अष्टाविंशतिविधाश्च नक्षत्रदेवगणाः–अष्टाविंशतिर्नक्षत्रदेवताः। अत्र-प्रसङ्गादन्येषामपि ज्योतिष्कदेवानां सङ्ख्या उच्यन्ते–ज्योतिष्कदेवाः पञ्चविधाः भवन्ति, सूर्याः १, चन्द्रमसः २, ग्रहाः ३, नक्षत्राणि ४, प्रकीर्णतारकाश्च ५, तत्र द्वौ सूर्यौ जम्बूद्वीपे, लवणे चत्वारः, धातकीखण्डे द्वादश, कालोदधौ द्विचत्वारिंशत्, पुष्करार्द्धे द्विसप्ततिः–इत्येवं मनुष्यलोके द्वात्रिंशदधिकं शतं सूर्याः सन्ति, चन्द्रमसोऽपि

जो ग्रह ज्योतिश्चक्र में–चक्र की तरह प्रतिभासमान इस ज्योतिर्मण्डलमें–भ्रमण करते है वे (**केऊ य गइरइया**) जलकेतु आदि केतुग्रह, जो कि मनुष्यलोक की अपेक्षा ही सदा गतिविशिष्ट है। अर्थात् यह समस्त ज्योतिश्चक्र इस मनुष्यलोक रूप ढाई द्वीप में ही गति विशिष्ट है, अन्यत्र नहीं। (**अट्ठावीसविहा य णक्खत्तदेवगणा**) तथा जो अट्ठाईस (२८) प्रकार के नक्षत्र जाति के देवता है।

यहाँ पर प्रसंगवश अन्य ज्योतिषी देवों की भी सख्या कहते है। ज्योतिषी देव पाँच प्रकार के है–सूर्य १, चन्द्रमा २, ग्रह ३, नक्षत्र ४, और प्रकीर्ण तारा ५। इन सबों में प्रत्येक की सख्या इस प्रकार है–जम्बूद्वीप में दो सूर्य है, लवण समुद्र में चार सूर्य है, धातकीखण्ड में बारह सूर्य है, कालोदधि में बयालीस सूर्य है और पुष्करार्द्ध में बहत्तर सूर्य है। इस प्रकार मनुष्यलोक में सूर्य की सख्या एक सौ बत्तीस है। चन्द्रमा की सख्या

વર્ણવેલાથી બીજા જે ગ્રહો જ્યોતિશ્ચક્રમાં–ચક્રની પેઠે પ્રતિભાસિત આ જ્યોતિર્મંડલમાં-ભ્રમણ કરે છે તે (केऊ य गइरइया) જળકેતુ આદિ કેતુગ્રહ કે જે મનુષ્યલોકની અપેક્ષા જ હમેશાં ગતિ–વિશિષ્ટ છે. અર્થાત્–આ સમસ્ત જ્યોતિશ્ચક્ર આ મનુષ્યલોકરૂપ અઢી દ્વીપમા જ ગતિવિશિષ્ટ છે, બીજે નહિ (अट्ठावीसविहा य णक्खत्त-देवगणा) તથા જે ૨૮ પ્રકારના નક્ષત્ર જાતિના દેવતા છે.

અહીં પ્રસંગવશ બીજા જ્યોતિષી દેવોની પણ સંખ્યા કહે છે. જ્યોતિષી દેવ પાંચ પ્રકારના છે–સૂર્ય ૧ ચંદ્રમા ૨ ગ્રહ ૩ નક્ષત્ર ૪ તથા પ્રકીર્ણ-તારા ૫. આ બધામાં પ્રત્યેકની સંખ્યા આ પ્રકારે છે–જંબૂદ્વીપમા ૨ સૂર્ય છે. લવણ સમુદ્રમાં ચાર સૂર્ય છે. ધાતકીખંડમાં ૧૨ સૂર્ય છે. કાલોદધિમાં ૪૨ સૂર્ય છે. તથા પુષ્કરાર્દ્ધમાં ૭૨ સૂર્ય છે. આ પ્રકારે મનુષ્યલોકમાં

**पंचवण्णाओ ताराओ ठियलेसा चारिणो य अविस्सामगंडलगई पत्तेयं णामंकपागडियचिंधमउडा महिड्ढिया जाव पज्जुवासंति ॥ सू० ३६ ॥**

एतावत्संख्यका एव। नक्षत्रसंख्या उक्ता एव। अष्टाशीतिर्ग्रहाः। एकस्य खलु चन्द्रमसस्ताराः कोटीनां कोटयः एतावत्यो भवन्ति—षट्षष्टिसहस्राणि नव च शतानि पञ्चसप्तत्यधिकानि '**णाणा-संठाण-संठियाओ**' नाना-संस्थान-संस्थिताः, '**पंचवण्णाओ**' पञ्चवर्णाः, '**ताराओ**' ताराः, '**ठियलेसा**' स्थितलेश्या निश्चलप्रकाशाः। '**चारिणो य**' चारिण्यश्च—सञ्चरणशीलाः, '**अविस्साम-मंडल-गई**' अविश्राम-मण्डल-गतयः—निरन्तरसंचरणशीलाः, '**पत्तेयं**' प्रत्येकम्-पृथक् पृथक् '**णामंक-पागडिय—चिंध-मउडा**' नामाऽङ्क-प्रकटित-चिह्न-मुकुटाः-नामाङ्कानि=नामाङ्कितानि-नामाक्षरयुक्तानि प्रकटितचिह्नानि=स्पष्टचिह्नयुक्तानि मुकुटानि येषां ते तथा, '**महिड्ढिया**' महर्द्धिकाः—महर्द्धियुक्ताः सन्तो ज्योतिष्का देवाः '**जाव पज्जुवासंति**' यावत्=पूर्ववत्प्रदक्षिणवन्दनादिभिः पर्युपासते ॥ सू० ३६ ॥

---

भी इसी प्रकार समझनी चाहिये। ग्रह अट्ठासी है। नक्षत्र की संख्या ऊपर कही गयी है। प्रकीर्णतारकाओं में केवल चन्द्रमा के ही परिवार के तारे ६६९७५ (छियासठ हजार नौ सौ पचहत्तर) कोडाकोडी है। इसी तरह और के भी तारों के परिवार शास्त्रान्तर से समझना।

(**णाणा—संठाण—संठियाओ**) इन ताराओं का आकार एकसा निश्चित नहीं है; इनका आकार अनेक प्रकार का है। (**पंचवण्णाओ**) ये पाँच वर्णवाले है। (**ठियलेसा**) इनकी लेश्या स्थिर है—इनकी लेश्या में कोई परिवर्तन नहीं होता है। (**चारिणो य**) ये संचरण—शील है। अतः (**अविस्साम—मंडल—गई**) निरन्तर गमन

---

સૂર્યની સંખ્યા એકસોબત્રીસ છે. ચંદ્રમાની સંખ્યા પણ એટલી જ સમજી લેવી જોઇએ. ગ્રહ ૮૮ છે. નક્ષત્રની સંખ્યા ઉપર કહી છે. પ્રકીર્ણતારાઓમાં કેવળ ચંદ્રમાના પરિવારના તારા ૬૬૯૭૫ (છાસઠ હજાર નવસો પીંચોતેર) કોડાકોડી છે. એવી જ રીતે બીજા ચંદ્રમાના પણ તારા–પરિવાર શાસ્ત્રાન્તરથી સમજી લેવા.

(णाणा-संठाण-संठियाओ) આ તારાઓના આકાર એક જેવો નિશ્ચિત નથી. તેમના આકાર અનેક પ્રકારના છે. (पंचवण्णाओ) તેઓ પાંચ વર્ણવાળા છે. (ठियलेसा) તેમની લેશ્યા સ્થિર છે, તેમની લેશ્યામાં કોઈ ફેરફાર થતો નથી. (चारिणो य) તેઓ સંચરણશીલ છે. (अविस्साम-मंडल-गई) આમ નિરં-

मूलम्—तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महा-वीरस्स वेमाणिया देवा अंतियं पाउब्भवित्था, सोहम्मी-साण-सणं-कुमार-माहिंद-बंभ-लंतग-महासुक्क-सहस्सारा—णय—पाणया—रण-

टीका-'तेणं कालेणं तेणं समएणं' इत्यादि। तस्मिन् काले तस्मिन् समये श्रमणस्य भगवतो महावीरस्य 'वेमाणिया देवा अंतियं पाउब्भवित्था' वैमानिका देवा अन्तिके प्रादुर्बभूवुः। के ते वैमानिका देवाः? इत्याह—सोहम्मी-साण-सणंकुमार-माहिंद-बंभ-लंतय महासुक्क-सहस्सारा-णय-पाणया-रण-अच्चुयवई' सौधर्मे १-शान २-सनत्कुमार ३-माहेन्द्र ४, ब्रह्म ५-लान्तक ६-महाशुक्र ७-सहस्रारा-ऽऽनत ९-प्राणता १०ऽऽ-रणा ११ च्युतपतयः १२,

करते रहना यही इनका स्वभाव है। (पत्तेयं णामंक—पागडिय—चिंध—मउडा) प्रत्येक के मुकुट अपने अपने नामों से युक्त एवं स्पष्ट चिह्न वाले है। (महिड्ढिया) ये सब महाऋद्धि के धारी है। (जाव पज्जुवासंति) पूर्व में वर्णित असुरकुमारों की तरह ये सब ज्योतिषी देव भी भगवान् महावीर की सेवा करने लगे॥ सू० ३६॥

'तेणं कालेणं' इत्यादि।

(तेणं कालेणं तेणं समएणं) उस काल और उस समय में (समणस्स भगवओ महावीरस्स) श्रमण भगवान् महावीर के (अंतियं) समीप (वेमाणिया देवा) वैमानिकदेव (पाउब्भवित्था) प्रकट हुए। वैमानिक देव कौन हैं? सो कहते है—(सोहम्मी—साण—सणंकुमार—माहिंद—बंभ—लंतग—महासुक्क—सहस्सारा—णय—पाणया—रण—अच्चुय—वई) सौधर्म, ईशान, सनत्कुमार, माहेन्द्र, ब्रह्मलोक, लान्तक

तर गमन करता रहेवु ए ज तेमनो स्वभाव छे. (पत्तेयं णामंक-पागडिय-चिंध-मउडा) प्रत्येकना मुकुट पोतपोतानां नामोथी युक्त एवं स्पष्ट चिह्नवाळा छे. (महिड्ढिया) ए बधा महाऋद्धिना धारक छे. (जाव पज्जुवासंति) पूर्वे कहेल असुरकुमारोनी पेठे आ बधा ज्योतिषीदेव पण भगवान महावीरनी सेवा करवा लाग्या. (सू०३६)

'तेणं कालेणं' ईत्यादि

(तेणं कालेणं तेणं समएणं) ते काल अने ते समयमा (समणस्स भगवओ महावीरस्स) श्रमण भगवान महावीरनी (अंतियं) पासे (वेमाणिया देवा) वैमानिक देव (पाउब्भवित्था) प्रगट थया. ते वैमानिक देवो कोन छे? ते कहे छे—(सोहम्मी साण-सणंकुमार-महिंद-बंभ-लंतग-महासुक्क-सहस्सारा-णय-पाणया-रण-अच्चुय-वई) सौधर्म १, ईशान २, सनत्कुमार ३, माहेन्द्र ४, ब्रह्मलोक ५, लान्तक

**अच्चुयवई पहिट्ठा देवा जिण-दंसणु-स्सुया-गमण-जणिय-हासा पालग--पुप्फग-सोमणस-सिरिवच्छ-णंदियावत्त-कामगम-पीइगम-**

सौधर्मादच्युताऽन्ताः कल्पाः सन्ति, एषु वैमानिका देवा भवन्ति, अत एव सौधर्मादच्युतान्तानां देवलोकानां पतयः=स्वामिनः '**पहिट्ठा**' प्रहृष्टाः=अतिहर्षं प्राप्ताः देवाः=वैमानिकाः। '**जिण-दंसणु-स्सुया-गमण-जणिय-हासा**' जिन-दर्शनोत्सुका-ऽऽगमन-जनित-हासाः—जिनदर्शनार्थोत्सुकानाम् एषां; देवानामागमनं, तेन जनितो हासः=आनन्दो येषां ते तथा। जिनेन्द्रदर्शनोत्कण्ठाऽऽगमनजातप्रमोदाः। सौधर्मादिद्वादशकल्पानां दशसंख्यका इन्द्राः सन्ति, तत्र नवम-दशमयोरेक इन्द्रो भवति। शक्रादीनामच्युतान्तानां दशानामिन्द्राणां पालकादीनि सर्वतोभद्रान्तानि दश विमानानि भवन्ति, तान्याह—'**पालग १, पुप्फग २, सोमणस ३, सिरिवच्छ ४, णंदियावत्त ५, कामगम ६, पीइगम ७, मणोगम ८, विमल ९, सव्वओभद्द १० -सरिसणामधेज्जेहिं विमाणेहिं ओइण्णा**' पालक-पुष्पक-सौमनस-श्रीवत्स-नन्द्यावर्त--काम-गम--प्रीतिगम-मनोगम-विमल-सर्वतोभद्र-सदृशनामधेयैर्विमानैरवतीर्णाः=ते दश इन्द्राः पाल-

---

महाशुक्र, सहस्रार, आनत, प्राणत, आरण और अच्युत ये देवलोक है। ये सौधर्मादिक, वैमानिक देवताओ के रहने के स्थान है। ये देवलोक १२ है। इनकी कल्प संज्ञा है। ये वैमानिक देव इनके पति है। इन कल्पो में जो उत्पन्न होते है वे वैमानिक या कल्पवासी देव कहलाते हैं। (**पहिट्ठा**) अतिहर्ष को प्राप्त हुए (**देवा**) ये वैमानिक देवेन्द्र कि जिन्हे (**जिण-दंसणु-स्सुया-गमण-जनिय-हासा**) जिनेन्द्र के दर्शन के लिये उत्सुकतापूर्वक आगमन से अति आनंद हुआ है। (**पालग-पुप्फग-सोमणस-सिरिवच्छ-णंदियावत्त-कामगम-पीइगम-मणोगम-विमल-सव्वओभद्द-सरिस-णामधेज्जेहि विमाणेहिं**) वे दस वैमानिक देवेन्द्र अपने २ पालक, १ पुष्पक २ सौमनस, ३ श्रीवत्स,

---

६, મહાશુક્ર ૭, સહસ્રાર ૮, આનત ૯, પ્રાણત ૧૦, આરણ ૧૧, અને અચ્યુત ૧૨, આ દેવલોક છે. આ સૌધર્માદિક, વૈમાનિક દેવતાઓનાં રહે-વાનાં સ્થાન છે. તે દેવલોક ૧૨ છે. તેમની કલ્પ સંજ્ઞા છે. તેમના સ્વામી ૧૦ છે. આ કલ્પોમા જે ઉત્પન્ન થાય છે તે વૈમાનિક અથવા કલ્પવાસી દેવ કહેવાય છે. (पहिट्ठा) બહુ હર્ષ પ્રાપ્ત થતાં (देवा) આ વૈમાનિક દેવેન્દ્ર કે જેને (जिण-दंसणु-स्सुया-गमण-जनिय-हासा) જિનેન્દ્રના દર્શન માટે ઉત્સુકતાપૂર્વક આગમનથી અતિ આનંદ થયો છે. (पालग-पुप्फग-सोमणस-सिरिवच्छ-णंदिया-वत्त-कामगम-पीइगम-विमल-सव्वओभद्द-सरिसणामधेज्जेहिं विमाणेहिं) તે દશ

**विमल-सव्वओभद्द-सरिसणामधेज्जेहिं विमाणेहिं ओइण्णा वंदगा जिणिंदं मिग-महिस-वराह-छगल-दद्दुर-हय-गयवइ-भुयग-खग्ग-उसभंक-विडिम-पागडिय-चिंध-मउडा पसिढिल-वरमउड - तिरीड-**

कादिसर्वतोभद्रान्तनामकैः, तथा तत्सदृशनामकैः—पूर्णभद्र—सुभद्रादिनामकैश्चान्यैर्विमानैरन्येऽपि देवाः '**ओइण्णा**'=अवतीर्णाः=भुवमागताः। '**वंदगा जिणिंदं**' वन्दका जिनेन्द्रस्य =जिनेन्द्र वन्दितुकामा इत्यर्थः। '**मिग-महिस-वराह-छगल-दद्दुर-हय-गयवइ-भुयग-खग्ग-उसभंक-विडिम-पागडिय-चिंध-मउडा**' मृग-महिष-वराह-छगल-दर्दुर-हय-गजपति-भुजग-खड्ग-ऋषभाऽङ्क-विडिमप्रकटित-चिह्नमुकुटाः, मृगमहिषादि-ऋषभान्ता. अङ्काः—चिह्नानि विडिमेषु=विस्तीर्णभागेषु येषां मुकुटाना तानि मृगमहिषवराह-छगल-दर्दुरहयगजपतिभुजगखड्ग-ऋषभाङ्कविडिमानि, तानि अतएव प्रकटितचिह्नानि=रत्नादिदीप्त्यो प्रकाशितचिह्नयुक्तानि मुकुटा-

४ नंद्यावर्त, ५ कामगम, ६ प्रीतिगम, ७ मनोगम, ८ विमल, ९ सर्वतोभद्र १० इन नामवाले विमानों से और पूर्वोक्त विमानो से अतिरिक्त पूर्णभद्र सुभद्र आदि विमानों से दश देवेन्द्रों से भिन्न अन्य वैमानिक देव (**ओइण्णा**) पृथ्वी पर अवतरित हुए—आये, अर्थात्—इन पूर्वोक्त नामवाले विमानो द्वारा दस देवेन्द्र, तथा और भी अन्य देव अपने अपने विमानों द्वारा इस भूमण्डल पर अवतीर्ण हुए—उतरे। क्यों कि ये सब (**वंदगा जिणिंदं**) जिनेन्द्र की वन्दना करने की कामना वाले थे। (**मिग—महिस—वराह—छगल—दद्दुर—हय—गयवइ—भुयग—खग्ग—उसभंक—विडिम—पागडिय—चिंध—मउडा**) इनके मुकुटोंके विडिमों—विस्तीर्ण भागों में क्रमशः मृग, महिष, वराह, छगल—बकरा, दर्दुर—मेंढक,

વૈમાનિક દેવેન્દ્રો પોતપોતાના પાલક ૧, પુષ્પક ૨, સૌમનસ ૩, શ્રીવત્સ ૪, નંદ્યાવર્ત ૫, કામગમ ૬, પ્રીતિગમ ૭, મનોગમ ૮, વિમલ ૯, સર્વતોભદ્ર ૧૦, આ નામવાળાં વિમાનોથી, તથા પૂર્વોક્ત વિમાનોથી અતિરિક્ત પૂર્ણભદ્ર સુભદ્ર આદિ વિમાનોથી દશ દેવેન્દ્રોથી ભિન્ન બીજા વૈમાનિક દેવો (ओइण्णा) પૃથ્વી પર આવ્યા. અર્થાત્ આ પૂર્વોક્ત—નામવાળાં વિમાનો દ્વારા તે દેવેન્દ્ર તથા બીજા પણ દેવ પોતપોતાનાં વિમાનો દ્વારા આ ભૂમંડલ પર ઉતરી આવ્યા. કેમકે એ બધા (वंदगा जिणिंदं) જિનેન્દ્રની વંદના કરવાની કામનાવાળા હતા. (मिग—महिस—वराह—छगल—दद्दुर—हय—गयवइ—भुयग—खग्ग—उसभंक-विडिम-पागडिय-चिंध-मउडा) તેમના મુકુટોના વિડિમો—વિસ્તીર્ણ ભાગોમાં ક્રમશઃ મૃગ, મહિષ, વરાહ, છગલ—બકરા, દર્દુર—મેંડક [દેડકો], હય—ઘોડો, ગજ-

**धारी कुंडल-उज्जोविया-णणा मउड-दित्त-सिरया रत्ताभा पउम-पम्ह-**

नि येषां ते तथा। तत्र ऋषभो वृषभः, मृगमहिषादिचिह्नयुक्तमुकुटसहिताः **'पसिढिल-वर-मउड-तिरीड-धारी'** प्रशिथिल-वरकेशविन्यास-किरीटधारिणः, प्रशिथिला ये 'वरमउड' वरकेशविन्यासाः=प्रशस्तकेशविन्यासाः किरीटाश्च तान् धरन्ति ये ते तथा, 'मउड' इति केश-विन्यासार्थको देशीशब्दः। **'कुंडल-उज्जोविया-णणा'** कुण्डलो-द्योतिता-ननाः—कुण्डलेन उद्द्योतितं=प्रकाशितम् आननं=मुख येषां ते तथा, कुण्डलोद्भासितमुखा इत्यर्थः। **'मउड-दित्त-सिरया'** मुकुट-दीप्त-शिरोजाः—मुकुटेन रत्न-खचितेन दीप्ताः शिरोजाः=केशा येषां ते तथा, **'रत्ताभा'** रक्ताऽऽभाः=अरुणकान्तिमन्तः। **'पउम-पम्ह-गोरा'**

---

हय=घोड़ा, गजपति—गजेन्द्र, भुजग—सर्प, खड्ग और वृषभ इनके चिह्न[1] थे। (**पसिढिल—वर—मउड—तिरीड—धारी**) प्रशिथिल उत्तम मउड=केशविन्यास एवं किरीट—मुकुट को ये धारण किये हुए थे, अर्थात् भगवान् के दर्शन करते की त्वरा में इनके प्रशस्त केश-विन्यास और मुकुट शिथिल हो गये थे। (**कुंडल—उज्जोविया—णणा**) कुंडलो की विशिष्ट आभा से इनका मुखमण्डल प्रकाशित हो रहा था। (**मउड—दित्त—सिरया**)

---

(१) ये चिह्न १० है, देवलोक १२ है। पर इनके इन्द्र १० है—(१) सौधर्मका इन्द्र, (२) ईशानका इन्द्र, (३) सनत्कुमारका इन्द्र, (४) माहेन्द्र का इन्द्र, (५) ब्रह्मलोक का इन्द्र, (६) लान्तकका इन्द्र, (७) महाशुक्रका इन्द्र, (८) सहस्रारका इन्द्र, (९) आनत एवं प्राण-तका इन्द्र और (१०) आरण एवं अच्युत देवलोकका इन्द्र; इस प्रकार ये १० इन्द्र इन १२ कल्पों के है। इन इन्द्रों के ये क्रमशः पालकादिक १० विमान होते है। मृग महिष आदिके क्रमशः ये १० चिह्न मुकुटों में इनके होते है।

---

પતિ [હાથી], ભુજગ-સર્પ, ખડ્ગ અને વૃષભ [બળદ], એનાં ચિહ્ન[1] હતા. (पसिढिल—वर—मउड—तिरीड—धारी) પ્રશિથિલ ઉત્તમ મઉડ-કેશવિન્યાસ એવં કિરીટ-મુકુટ તેમણે ધારણ કર્યાં હતાં. અર્થાત્ ભગવાનનાં દર્શન કરવાની ઉતાવળમાં તેમના પ્રશસ્ત કેશ-વિન્યાસ અને મુકુટ શિથિલ થઇ ગયાં હતાં. (कुंडल—उज्जोविया—णणा) કુંડલોની વિશિષ્ટ આભા (પ્રકાશ)થી તેમનાં મુખ

---

(૧) આ ચિહ્ન ૧૦ છે, દેવલોક ૧૨ છે, પણ તેના ઇંદ્ર ૧૦ છે. (૧) સૌ-ધર્મનો ઇંદ્ર, (૨) ઈશાનનો ઇંદ્ર, (૩) સનત્કુમારનો ઇંદ્ર, (૪) માહેન્દ્રનો ઇંદ્ર, (૫) બ્રહ્મલોકનો ઇંદ્ર, (૬) લાંતકનો ઇંદ્ર, (૭) મહાશુક્રનો ઇંદ્ર, (૮) સહસ્રારનો ઇંદ્ર, (૯) આનત એવં પ્રાણતનો ઇંદ્ર, તથા (૧૦) આરણ એવં અચ્યુત દેવલોકનો ઇંદ્ર. આ પ્રકારે આ ૧૦ ઇંદ્ર આ ૧૨ કલ્પોના છે. આ ઇંદ્રોના ક્રમથી પાલક

**गोरा सेया सुभ-वण्ण-गंध-फासा उत्तमवेउव्विणो विविह-वत्थ-गंध-मल्ल-धारी महिड्ढिया महज्जुइया जाव पंजलिउडा पज्जुवासंति ॥ सू०३७ ॥**

पद्म-पक्ष्म-गौराः-पद्मकिञ्जल्कवद् गौरवर्णाः। **'सेया'** श्वेताः-शुभ्रकान्ति-शालिनः। **'सुभ-वण्ण-गंध-फासा'** शुभ-वर्ण-गन्ध-स्पर्शाः। **'उत्तम-वेउव्विणो'** उत्तम-विकुर्विण=उत्तमविकुर्वणाकारिण **'विविह-वत्थ-गंध-मल्ल-धारी'** विविध-वस्त्र-गन्ध-माल्य-धारिणः **'महिड्ढिया'** महर्द्धिकाः—महासम्पत्तिशालिनः। **'महज्जुइया'** महाद्युतिकाः—अतिशय-द्युतिमन्तः। **'जाव पंजलिउडा पज्जुवासंति'** यावत्प्राञ्जलिपुटाः पर्युपासते—यावच्छब्दात्-पूर्ववत् त्रिकृत्व., आदक्षिणप्रदक्षिण—वन्दन-नमनादयः सूच्यन्ते, प्राञ्जलिपुटाः=बद्धाऽञ्जलय पर्युपासते=समन्तादुपासनां कुर्वते ॥ सू०३७ ॥

मस्तक की केशपक्ति मुकुट की कांति से दीप्त हो रही थी। (**रत्ताभा**) इनकी कांति अरुण—लाल थी, (**पउम—पम्ह—गोरा**) पर इनका शरीर कमल के केशरो के समान गौर-वर्णवाला था। इसलिये (**सेया**) ये शुभ्रकांति से शोभित थे। (**सुभ—गंध—वण्ण—फासा**) इनके शरीर के गध, वर्ण और स्पर्श शुभ थे। (**उत्तमवेउव्विणो**) ये उत्तम वैक्रिय शरीर करनेवाले थे। (**विविह—वत्थ—गंध—मल्ल—धारी**) अनेक प्रकार के उत्तमोत्तम वस्त्रों को ये धारण किये हुए थे। गले में इनके सुगंधित पुष्पों की माला सुशोभित हो रही थी। तथा ये (**महिड्ढिया**) महर्द्धिक थे। एवं (**महज्जुइया**) महा-द्युतिधारी थे। (**जाव पंजलिउडा पज्जुवासंति**) ये पूर्ववर्णित असुरकुमारो की तरह तीन वार अंजलिपूर्वक सविधि वन्दना कर प्रभु की सेवा करने लगे ॥ सू० ३७॥

મંડળ પ્રકાશિત થઈ રહ્યા હતા. (मउड—दित्त—सिरया) મસ્તકની કેશપંક્તિ મુકુટની કાંતિથી દીપી ઉઠતી હતી. (रत्ताभा) તેમની કાંતિ અરુણ—લાલ હતી. (पउम—पम्ह—गोरा) પણ તેમનાં શરીર કમલના કેશરો જેવાં ગૌર વર્ણનાં હતા. આથી (सेया) તેઓ શુભ્રકાંતિથી શોભતા હતા. (सुभ—गंध—वण्ण—फासा) એમના શરીરના ગન્ધ, વર્ણ અને સ્પર્શ શુભ હતા. (उत्तमवेउव्विणो) તેઓ ઉત્તમ વૈક્રિય-શરીર ધારણ કરવાવાળા હતા. (विविह—वत्थ—गंध—मल्ल—धारी) અનેક પ્રકારના ઉત્તમોત્તમ વસ્ત્રો તેમણે ધારણ કર્યાં હતાં, તેમના ગળામા સુગંધિત પુષ્પોની માળા શોભી રહી હતી. તથા તેઓ (महिड्ढिया) મહર્દ્ધિક હતા. એવં (महज्जुइया) મહાદ્યુતિધારી હતા. (जाव पंजलिउडा पज्जुवासंति) તેઓ

આદિક ૧૦ વિમાન હોય છે. મૃગ મહિષ, આદિનાં અનુક્રમે તેઓના મુકુટમાં ચિહ્નો હોય છે.

**मूलम्—तए णं चंपाए णयरीए सिंघाडग-तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह-पहेसु महया जणसद्दे इ वा जणवूहे इ वा**

टीका—'तए णं' इत्यादि। ततः=तदनन्तरं—चतुर्निकायदेवानामागमनाऽनन्तरं, खलु 'चंपाए णयरीए' चम्पायां नगर्याम् 'सिंघाडग—तिग—चउक्क—चच्चर—चउम्मुह—महापह—पहेसु' शृङ्गाटक—त्रिक—चतुष्क—चत्वर—चतुर्मुख—महापथ—पथेषु—तत्र-शृङ्गाटकं—'सिंघाडा' इति भाषाप्रसिद्धं जलजं फलं, तदाकारं स्थानं, त्रिकोणमित्यर्थः; त्रिकं—मिलितत्रिमार्गस्थानम्, चतुष्कं—यत्र चत्वारो मार्गा मिलिताः सन्ति तत्—'चोराहा' इति भाषाप्रसिद्धं स्थानम्, चत्वरं=बहुमार्गसमेलनस्थानम्, चतुर्मुखं=चतुर्द्वारं स्थानम्—आगन्तुकादीनां विश्रामस्थानम्, महापथः—राजमार्गः, पन्थाः—रथ्यामात्रम्, तेषु सर्वेषु स्थानेषु यत्र 'महया जणसद्दे इ वा' महान् जनशब्दः—परस्पराऽऽलापादिरूपो भवति 'इकारो' वाक्यालङ्कारार्थः, 'वा'—प्रकारार्थः, तथा 'जणवूहे इ वा' जनव्यूहः—लोकसमूहः, 'जण-

'तए ण चंपाए णयरीए' इत्यादि।

(तए ण) चतुर्निकाय के देवों के आगमन के अनन्तर (चंपाए णयरीए) चंपा नगरी में (सिंघाडग—तिय—चउक्क—चच्चर—चउम्मुह—महापह—पहेसु) शृंगाटक—तीनकोनवाले स्थान पर, त्रिक—जहां पर तीन रास्ते आकर मिलते है ऐसे स्थान पर, चतुष्क—जहां पर चार मार्ग आकर मिले रहते है ऐसे चौराहे पर, चत्वर—अनेकमार्गोका समेलन जहाँ होता है ऐसे स्थान पर, चतुर्मुख—आगन्तुक जनों के विश्रामार्थ निर्मापित स्थान पर, महापथ—राजमार्ग पर, एवं पथ अर्थात् जहाँ से गली निकलती हो ऐसे स्थान पर, (महया जणसद्दे इ वा) महान् जन शब्द होने लगा—परस्पर मिलजुल कर लोग बातचीत करने लगे। (जणवूहे इ वा) एक मनुष्य दूसरे मनुष्य से पूछने लगा, अथवा—

પૂર્વે કહેલા અસુરકુમારોની પેઠે ત્રણવાર અંજલિપૂર્વક સવિધિ વંદના કરીને પ્રભુની સેવા કરવા લાગ્યા. (સૂ. ૩૭.)

'तए णं चंपाए णयरीए' ઈત્યાદિ.

(तए ण) ચતુર્નિકાયના દેવોના આગમન પછી (चपाए णयरीए) ચંપા-નગરીમા (सिंघाडग-तिय-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह-पहेसु) शृंगाटक—ત્રણ-કોણવાળા સ્થાન પર, त्रिक—જ્યાં ત્રણ રસ્તા આવીને મળે છે એવા સ્થાન પર, चतुष्क—જ્યાં ચાર માર્ગ આવીને મળે છે એવા ચૌટા પર, चत्वर—અનેક માર્ગોનું સંમેલન જ્યાં થાય છે એવા સ્થાન પર, चतुर्मुख—આવનાર માણસોના વિશ્રામ માટે મુકરર કરેલાં સ્થાન પર, महापथ—રાજમાર્ગ પર, એવં पथ—અર્થાત્ જ્યાંથી ગલી નીકળી હોય તેવાં સ્થાનો પર, (महया जणसद्दे इ वा) મહાન્ જન—શબ્દ થવા લાગ્યા—પરસ્પર મેલામલાપ કરી લોકો વાતચીત

**जणबोले इ वा जणकलकले इ वा जणुम्मी इ वा जणुक्कलिया इ वा जणसण्णिवाए इ वा; बहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ, एवं भासइ, एवं पण्णवेइ, एवं परूवेइ; एवं खलु देवाणुप्पिया!**

---

बोले इ वा' जनानामव्यक्तो ध्वनिर्वा, '**जणकलकले इ वा**' जनकलकलो—जनानां व्यक्तवर्णात्मको नादः '**जणुम्मी इ वा**' जनोर्म्मिः=जनसम्बाधः—तरङ्गवज्जनानामुपर्युपरि समागमनम्, '**जणुक्कलिया इ वा**' जनोत्कलिका वा—जनानां लघुतरः समुदायः, '**जणसण्णिवाए इ वा**' जनसन्निपातः—जनानां सघर्षरूपेण संमिलनं भवति, तत्र—'**बहुजणो**' बहुजनः '**अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ**' अन्योऽन्यमेवमाचष्टे—एकोऽपरं वदति सामान्यरूपेण, '**एवं भासइ**' एवं भाषते—वक्ष्यमाणप्रकारेण विशेषतः कथयति '**एवं पण्णवेइ**' प्रज्ञापयति—अपृष्टः सन् कथयति '**एवं परूवेइ**' एवं प्ररूपयति=पृष्टः सन् कथयति,

---

मनुष्यों का एकत्र जमघट्ट होने लगा। (**जणबोले इ वा**) मनुष्यों की अव्यक्तध्वनि होने लगी। (**जणकलकले इ वा**) प्रगट रूप में कहीं २ मनुष्यों का कलकल अर्थात् स्पष्ट ध्वनि सुनाई देने लगी। (**जणुम्मी इ वा**) समुद्र के तरंग समान ऊपर के ऊपर लोगों के झुंड आने लगे। कहीं २ पर (**जणुक्कलिया इ वा**) सामान्य रूप से जनसमुदाय एकत्रित हुआ। (**जणसण्णिवाए इ वा**) कहीं २ पर मनुष्यों का इतना अधिक संघट्ट हुआ कि वे सब परस्पर में एक दूसरे से संघृष्ट होने लगे। इन सब में (**बहुजणो**) अनेक मनुष्य (**अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ**) परस्पर में एक दूसरे से इस प्रकार सामान्यरूप में कहने लगे, (**एवं भासइ**) कोई २ इस प्रकार विशेषरूप से कहने लगे, (**एवं पण्णवेइ**) कोई

---

કરવા લાગ્યા. (जणवूहे इ वा) એક માણસ બીજાને પૂછવા લાગ્યો—અથવા માણસોનું ટોળું એકત્ર થવા લાગ્યું. (जणबोले इ वा) લોકોની અવ્યક્ત ધ્વનિ થવા લાગી. (जणकलकले इ वा) પ્રગટરૂપે ક્યાંક ક્યાંક મનુષ્યોની કલકલ અર્થાત સ્પષ્ટ ધ્વનિ સંભળાવા લાગી. (जणुम्मी इ वा) સમુદ્રનાં મોજાંની પેઠે ઉપરા-ઉપર લોકોના ટોળા આવવા લાગ્યા. (जणुक्कलिया इ वा) સામાન્યરૂપે જન-સમુદાય એકત્રિત થયો. (जणसण्णिवाए इ वा) કોઇ કોઈ સ્થાને મનુષ્યો એટલા એકઠા થયા કે તે બધા પરસ્પરમાં એક બીજાની સાથે અથડાવા લાગ્યા. આ બધામા (बहुजणो) અનેક મનુષ્ય (अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ) પરસ્પરમાં એક બીજાને આ પ્રકારે સામાન્યરૂપમાં કહેવા લાગ્યા. (एवं भासइ) કોઇ કોઇ આ પ્રકારે વિશેષરૂપમાં કહેવા લાગ્યા, (एवं पण्णवेइ) કોઈ કોઈ પૂછયા

**समणे भगवं महावीरे आइगरे तित्थगरे सयंसंबुद्धे पुरिसुत्तमे जाव संपाविउकामे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे इहमागए इह संपत्ते, इह समोसढे, इहेव चंपाए णयरीए बहिं**

किं कथयतीति सूत्रकार आह-'**एवं खलु देवाणुप्पिया**' इत्यादि। एवं खलु भो देवानुप्रियाः! श्रमणो भगवान् महावीरः, '**आइगरे तित्थयरे सयंसंबुद्धे**' आदिकरस्तीर्थकरः स्वयंसंबुद्धः, '**पुरिसुत्तमे**' पुरुषोत्तमः, '**जाव संपाविउकामे**' यावत्-सम्प्राप्तुकामः-सिद्धिगतिनामधेयं स्थानं सम्प्राप्तुकाम इति भावः। '**पुव्वाणुपुव्विं**' पूर्वानुपूर्वी-तीर्थंकरपरम्परागतमर्यादाम् '**चरमाणे**' चरन्-आचरन्, '**गामाणुग्गामं दूइज्जमाणे**' ग्रामानुग्रामं द्रवन्-प्रत्येकं ग्रामं गच्छन्-क्रमप्राप्तग्राममत्यजन्, '**इहमागए**' इहाऽऽगतः, इह=चम्पायामागत इति भावः, '**इह संपत्ते**' इह सम्प्राप्तः, इह पूर्णभद्रे

कोई विना पूछे ही दूसरे से इस प्रकार कहने लगे, (**एवं परूवेइ**) कोई कोई पूछे जाने पर दूसरे से इस प्रकार कहने लगे। क्या कहने लगे? इसको सूत्रकार कहते हैं-(**एवं खलु देवाणुप्पिया**) हे देवानुप्रियो! (**समणे भगवं महावीरे**) श्रमण भगवान् महावीर कि, (**आइगरे तित्थगरे सयंसंबुद्धे पुरिसुत्तमे जाव संपाविउकामे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे इहमागए इह संपत्ते इह समोसढे**) जो अपने शासन की अपेक्षा से धर्म के आदि कारक है, चतुर्विध संघ के संस्थापक हैं, स्वयंसंबुद्ध है, एवं पुरुषों में उत्तम है, यावत् मोक्ष प्राप्त करने के कामी है, वे अन्य तीर्थंकरों की परम्परा से आगत मर्यादा का संरक्षण करते हुए एवं ग्रामानुग्राम विचरण करते हुए आज यहाँ पधारे हुए है, यहां संप्राप्त हुए है, साधुसमाचारी के अनुसार यहाँ समवसृत

વગર જ બીજાથી આ પ્રકારે કહેવા લાગ્યા, (एवं परूवेइ) કોઈ કોઇ પૂછવા-પર બીજાઓથી કહેવા લાગ્યા. શું કહેવા લાગ્યા? આ વાતને સૂત્રકાર પ્રકટ કરે છે-(एवं खलु देवाणुप्पिया) હે દેવાનુપ્રિયો (समणे भगवं महावीरे) શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીર (आइगरे तित्थगरे सयंसंबुद्धे पुरिसुत्तमे जाव संपाविउकामे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे इहमागए इह संपत्ते इह समोसढे) જેઓ પોતાની શાસનની અપેક્ષાથી ધર્મના આદિકારક છે, ચતુર્વિધ સંઘના સંસ્થાપક છે, સ્વયંસંબુદ્ધ છે તેમજ પુરૂષોમાં ઉત્તમ છે, યાવત્ મોક્ષપ્રાપ્ત કરવાની કામનાવાળા છે, તેઓ અન્ય તીર્થંકરોની પરંપરાથી ચાલતી મર્યાદાનું સંરક્ષણ કરતાં કરતાં, એવં ગ્રામાનુગ્રામ વિચરતાં વિચરતાં આજે અહીં પધાર્યા છે. અહીં સંપ્રાપ્ત થયા છે, સાધુસમાચારીને અનુસાર અહીં

**पुण्णभद्दे चेइए अहापडिरूवं उग्गहं उग्गिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ। तं महप्फलं खलु भो देवाणुप्पिया! तहारूवाणं अरहंताणं णामगोयस्स वि सवणयाए, किमंग**

---

संप्राप्त इति भावः, '**इह समोसढे**' इह समवसृतः, साधुकल्प्यावग्रहे समवसृत इति भावः, तदेवाह–'**इहेव चंपाए णयरीए**' इत्यादि, इहैव चंपाया नगर्याः, '**वहिं**' वहिः–वहिर्भवे प्रदेशे, '**पुण्णभद्दे चेइए**' पूर्णभद्रे चैत्ये–पूर्णभद्रनामक उद्याने, '**अहापडिरूवं उग्गहं उग्गिण्हित्ता**' यथाप्रतिरूपमवग्रहमवगृह्य–संयमानुकूलमावासस्थानं याचित्वा, '**संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ**' संयमेन तपसाऽऽत्मानं भावयन् विहरति।

'**तं महप्फलं खलु भो देवाणुप्पिया!**' तन्महत्फलं खलु भो देवानुप्रिया! '**तहारूवाणं अरहंताणं भगवंताणं णामगोत्तस्सवि सवणयाए**' तथारूपाणामर्हतां भगवतां नामगोत्रयोरपि श्रवणतया=तादृशानां सर्वातिशयवतां भगवतां तीर्थङ्कराणां नामगोत्रश्रवणेनापि महत्फलं भवति, '**किमंग पुण अभिगमण–वंदण–णमंसण–पडिपुच्छण–पज्जुवासणयाए**' किमङ्ग पुनरभिगमन–वन्दन–नमस्यन–प्रतिप्रच्छन–पर्युपासनया–हे अङ्ग!=हे

---

हुए है, और (**इहेव चंपाए णयरीए वहिं पुण्णभद्दे चेइए अहापडिरूवं उग्गहं उग्गिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ**) इस चम्पा नगरी के बाहर पूर्णभद्र उद्यान में ठहरने के लिये वनपाल की आज्ञा लेकर संयम एवं तप से अपनी आत्मा को भावित करते हुए विचर रहे है। इसलिये (**भो देवाणुप्पिया**) हे देवानुप्रिय! जब (**तहारूवाणं अरहंताणं भगवंताणं णामगोयस्स वि सवणयाए**) तथारूप सर्वातिशयसंपन्न भगवान् तीर्थंकरो के नाम एव गोत्र के श्रवण से भी (**महप्फलं**) जीवों को महाफल प्राप्त होता है, तब (**किमंग! पुण अभिगमण–वंदण–णमंसण–पडिपुच्छण–पज्जु-**

---

समवसृत थया छे तथा तेओ। (इहेव चंपाणयरीए वहिं पुण्णभद्दे चेइए अहापडिरूवं उग्गहं उग्गिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ) आ चंपानगरीनी બહાર પૂર્ણભદ્ર ઉદ્યાનમાં ઉતરવા માટે વનપાલની આજ્ઞા લઈને સંયમ તેમજ તપથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતાં વિચરે છે. આ માટે (भो देवाणुप्पिया), હે દેવાનુપ્રિય! જ્યારે (तहारूवाणं अरहंताणं भगवंताणं णामगोयस्सवि सवणयाए) તથારૂપ સર્વાતિશયસંપન્ન ભગવાન તીર્થંકરોનાં નામ તેમજ ગોત્રના શ્રવણથી પણ (महप्फलं) જીવોને મહાફલ પ્રાપ્ત થાય છે, ત્યારે (किमंग पुण अभिगमण–वंदण–णमंसण–पडिपुच्छण–पज्जुवासणयाए) હે અંગ–આયુષ્મન્! તેમના સમીપ

**पुण अभिगमण–वंदण–णमंसण–पडिपुच्छण–पज्जुवासणयाए? एगस्सवि आयरियस्स धम्मियस्स सुवयणस्स सवणयाए, किमंग! पुण विउलस्स अट्ठस्स गहणयाए? तं गच्छामो णं**

आयुष्मन्! तेषामभिगमनेन, वन्दनेन=स्तवेन, नमस्यनेन=नमस्कारेण, प्रतिप्रच्छनेन=प्रतिप्रश्नेन, पर्युपासनया=सेवनया पुनः यत् फल भवति तत् कि वक्तव्यम, अकथितमपि सुबुद्धं भवतीतीति भावः। **'एगस्स वि आयरियस्स धम्मियस्स सुवयणस्स सवणयाए'** एकस्यापि आचार्यस्य धार्मिकस्य सुवचनस्य श्रवणतया–एकस्याऽपि आचार्यस्य–आचार्यप्रोक्तस्य, धार्मिकस्य=धर्मप्रयोजनस्य, अत एव सुवचनस्य=सदुपदेशस्य श्रवणतया=श्रवणेन महाफलं भवति, **'किमंग पुण विउलस्स अट्ठस्स गहणयाए'** किमङ्ग! पुनर्विपुलस्यार्थस्य ग्रहणतया–यावदुपदिष्टस्य अर्थस्य ग्रहणेन कि वक्तव्यम्, यावत्प्रोक्तार्थग्रहणेन सर्वथा कृतार्थो भवतीति भावः। **'तं'** तत्–तस्मात् खलु **'देवाणुप्पिया'** हे देवानुप्रियाः। **'गच्छामो'** गच्छामः=तदन्तिकं व्रजामः,

**वासणयाए)** हे अंग–आयुष्मन्! उनके समीप जाने से, उनको वन्दना करने से–उनकी स्तुति करने से, उन्हे नमन करने से, प्रश्न पूछने से और उनकी पर्युपासना करने से जीवों को किस अनुपम फल की प्राप्ति न होती होगी, अर्थात् सब कुछ फल की प्राप्ति होगी, इसमें सदेह के लिये अल्पमात्र भी स्थान नहीं है। **(एगस्सवि आयरियस्स धम्मियस्स सुवयणस्स सवणयाए, किमंग पुण विउलस्स अट्ठस्स गहणयाए)** जब तथारूप आचार्य अरिहन्त भगवन्त से कहे हुए धार्मिक सदुपदेशरूप एक भी वचन के सुनने से जीव महाफल का भागी होता है, तब हे आयुष्मन्! उनके द्वारा कथित विपुल अर्थों के ग्रहण करने से जो फल होता है उसके विषय में तो कहना ही क्या? **(तं गच्छामो णं देवा-**

જવાથી, તેમને વંદના કરવાથી, તેમની સ્તુતિ કરવાથી, તેમને નમસ્કાર કરવાથી, તેમને પ્રશ્ન પૂછવાથી તથા તેમની પર્યુપાસના કરવાથી જીવોને કયા અનુપમ ફલની પ્રાપ્તિ ન થઈ શકે? અર્થાત્ સર્વ ફલની પ્રાપ્તિ થશે. એમાં સંદેહ માટે અલ્પમાત્ર પણ સ્થાન નથી. (एगस्स वि आयरियस्स धम्मियस्स सुवयणस्स सवणयाए किमंग पुण विउलस्स अट्ठस्स गहणयाए) જ્યારે તથારૂપ અરિહન્ત ભગવન્ત તરફથી કહેવામાં આવતા ધાર્મિક સદુપદેશરૂપ એક પણ વચનને સાંભળવાથી જીવ મહાફલના ભાગી થાય છે ત્યારે હે આયુષ્મન્! તેમના દ્વારા કહેવામાં આવતા વિપુલ અર્થોનું ગ્રહણ કરવાથી જે ફલ થાય છે તે વિષયમા તો કહેવાનું જ શું? (तं गच्छामो णं देवाणुप्पिया) માટે હે

देवाणुप्पिया ! समणं भगवं महावीरं वंदामो णमंसामो सक्कारेमो सम्माणेमो कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं विणएणं पज्जुवासामो। एयं णे इहभवे पेच्चभवे य हियाए सुहाए खमाए निस्सेयसाए

'समणं भगवं महावीरं वदामो' श्रमणं भगवन्तं महावीरं वन्दामहे–स्तुमः गुणगानेन, 'णमंसामो' नमस्कुर्म पञ्चाङ्गनमनेन, 'सक्कारेमो' सत्कुर्मः अभ्युत्थानादिना, 'संमाणेमो' सम्मानयामः–परमादरेण–भक्तिबहुमानेनेत्यर्थः, 'कल्लाण मंगलं देवयं चेइयं विणएणं पज्जुवसामो' कल्याणं मङ्गलं दैवत चैत्यं विनयेन पर्युपास्महे–कल्याणं=कल्याणप्राप्तिकारणम्, मङ्गलं=दुरितदूरीकरणकारणम्, दैवतं=देवोचितप्रभावोपचितम्, चैत्यं=केवलज्ञानयुक्तं–चित्त-प्रसादहेतुं वा एतादृशं भगवन्तं पर्युपास्महे=विनयेन सेवामहे, 'एयं णे' एतन्नः–एतद्=भग-वद्वन्दनादि, नः–अस्माकम्, 'इहभवे पेच्चभवे य' इहभवे प्रेत्यभवे–परभवे च 'हियाए'

णुप्पिया) इसलिये हे देवानुप्रिय ! उनके पास अपने चलें, वहां जाकर (समणं भगवं महावीरं) श्रमण भगवान् महावीर को (वंदामो) वन्दना करे अर्थात् उनका गुणगान करे। (णमंसामो) पंचांग–नमन–पूर्वक नमस्कार करे। (सक्कारेमो) अभ्युत्थानादिक क्रियाओं द्वारा उनका सत्कार करे। (संमाणेमो) भक्ति बहुमान के साथ उनका सम्मान करे। (कल्लाणं) कल्याण प्राप्ति के कारणभूत, (मंगलं) पापों को दूर करने के लिये निमित्तरूप, (देवयं) देवाधिदेव के प्रभाव से युक्त, (चेइयं) केवलज्ञान युक्त, ऐसे श्री भग-वान् महावीर स्वामी की (विणएणं) विनयपूर्वक (पज्जुवासामो) सेवा करे। (एयं णे इहभवे पेच्चभवे य) यह भगवान का वन्दन और नमस्कार आदि इस भव में और पर-भव में (हियाए) आजीवन कल्याण के लिये (सुहाए) सुख के लिये अर्थात् भोगजनित

દેવાનુપ્રિય ! તેમની પાસે આપણે જઇએ, ત્યાં જઇને (समणं भगवं महावीरं) શ્રમણ ભગવાન મહાવીરને (वंदामो) વંદના કરીએ અર્થાત્ તેમનાં ગુણગાન કરીએ. (णमंसामो) પંચાંગ–નમનપૂર્વક નમસ્કાર કરીએ. (सक्कारेमो) અભ્યુત્થાન આદિ ક્રિયાઓ દ્વારા તેમનો સત્કાર કરીએ. (संमाणेमो) ભકિત બહુમાન સાથે તેમનું સન્માન કરીએ. (कल्लाणं) કલ્યાણ પ્રાપ્તિના કારણભૂત, (मंगलं) પાપોનો નાશ કરવા માટે નિમિત્તરૂપ, (देवयं) દેવાધિદેવના પ્રભાવથી યુક્ત, (चेइयं) કેવલજ્ઞાન યુક્ત, એવા શ્રી ભગવાન મહાવીર સ્વામીની (विणएणं) વિનયપૂર્વક (पज्जुवासामो) સેવા કરીએ. (एयं णे इहभवे पेच्चभवे य) આ ભગવાનને વંદન તથા નમસ્કાર આદિ આ ભવમા તથા પરભવમાં (हियाए) આજીવન કલ્યાણ

**आणुगामियत्ताए भविस्सइ–त्ति कट्टु बहवे उग्गा उग्गपुत्ता भोगा भोगपुत्ता, एवं दुपडोयारेणं राइण्णा खत्तिया माहणा भडा जोहा**

हिताय=जीवनादिनिर्वाहाय, **'सुहाए'** सुखाय=भोगजन्याद्यानन्दाय, **'खमाए'** क्षमाय=समुचितसुखसामर्थ्याय, **'णिस्सेयसाए'** निःश्रेयसाय=भाग्योदयाय, **'आणुगामियत्ताए'** आनुगामिकतायै=अनुगमनशीलत्वेन भवपरम्पराऽनुबन्धिसुखाय भविष्यति। **'त्तिकट्टु'** इति कृत्वा इति=एवं कृत्वा=आख्यानं भाषणं प्रज्ञापनां प्ररूपणां च अन्योऽन्यं कृत्वा **'बहवे'** बहवः, **'उग्गा उग्गपुत्ता'** उग्रा उग्रपुत्राः, तत्र-उग्राः–आदिदेवाऽवस्थापिताः रक्षकवंशजाः, उग्रपुत्राः–त एव कुमारावस्थासंपन्नाः, **'भोगा भोगपुत्ता'** भोगाः–भोगपुत्राः–भोगाः=आदिदेवावस्थापिताः गुरुवंशजाः, भोगपुत्राः–त एव कुमारावस्थासम्पन्ना, **'एवं दुपडोयारेणं'** एव द्विपदोच्चारणेन–ते च तत्पुत्राश्चेति द्विवारोच्चारणेन **'राइण्णा'** राजन्याः–भगवद्वयस्यवंशजाः,राजन्यपुत्राः–राज-

आनन्द प्राप्ति के लिये (**खमाए**) समुचित सुख देने के लिये (**णिस्सेयसाए**) निःश्रेयस अर्थात् भाग्योदय के लिये, तथा (**आणुगामियत्ताए**) जन्म–जन्मान्तर में सुख देने के लिये (**भविस्सइ**) होगा, (**त्तिकट्टु**) इस प्रकार विचार कर (**बहवे**) बहुत से (**उग्गा**) भगवान् आदिनाथ प्रभु द्वारा स्थापित रक्षकवंश में उत्पन्न **'उग्र'** कहलाते है, ऐसे उग्रवर्गीय लोग, और (**उग्गपुत्ता**) उन उग्रवंशीय लोगों के पुत्र, तथा बहुत से (**भोगा**) भगवान आदिनाथ प्रभु द्वारा स्थापित गुरुवंश में उत्पन्न **'भोग'** कहलाते है, ऐसे भोगवंशीय लोग और (**भोग-पुत्ता**) उन भोगवंशीय लोगों के पुत्र, (**एवं दुपडोयारेणं**) इसी तरह आगे के पदो का भी दुवारा उच्चारण करना चाहिये, जैसे–**'राइण्णा राइण्णपुत्ता'** इत्यादि। तथा–बहुत से (**राइण्णा**) राजन्य–अर्थात् भगवान आदिनाथ के मित्रो के वंशज एवं उनके पुत्र, (**खत्तिया**)

माटे, (सुहाए) सुख माटे अर्थात् भोगजनित आनंद प्राप्ति माटे, (खमाए) समुचित सुख देवा माटे (णिस्सेयसाए) निश्रेयस् अर्थात् भाग्योदयने माटे, तथा (आणुगामियत्ताए) जन्म–जन्मांतरमां सुख देवा माटे (भविस्सइ) थशे. (त्ति कट्टु) आ प्रकारे विचार करीने (बहवे) घणा लोको (उग्गा) भगवान आदिनाथ प्रभु द्वारा स्थापित रक्षकवंशमां उत्पन्न 'उग्र' कहेवाय छे, एवा उग्रवंशीय लोक, तथा (उग्गपुत्ता) ते उग्रवंशीय लोकोना पुत्र, (भोगा) भगवान आदिनाथ प्रभु द्वारा स्थापित गुरुवंशमां उत्पन्न 'भोग' कहेवाय छे, एवा भोगवंशी लोक, तथा (भोगपुत्ता) ते भोगवंशी लोकोना पुत्र, (एवं दुपडोयारेणं) ए रीते आगळना पदोना पण बीजीवार उच्चारण करवुं जोइए, जेमके–"राइण्णा, राइण्णपुत्ता" इत्यादि, तथा घणा (राइण्णा) राजन्य–अर्थात् भगवान आदिनाथना मित्रोना वंशज एवं तेमना पुत्र, (खत्तिया) क्षत्रिय

**पसत्थारो मल्लई लेच्छई लेच्छइपुत्ता अण्णे य बहवे राई-सर-तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाह-**

न्यकुमाराश्च, 'खत्तिया' क्षत्रियाः, क्षत्रियकुमाराश्च, 'माहणा' ब्राह्मणाः, ब्राह्मणकुमाराश्च, 'भडा' भटाः-भटकुमाराश्च, 'जोहा' योधाः-युद्धव्यवसायवन्तः, तेषां कुमाराश्च, 'पसत्थारो' प्रशास्तारः-धर्मशास्त्रपाठकाः, तेषां पुत्राश्च, 'मल्लई' मल्लकिनः=विशिष्टक्षत्रियजातीयाः, तेषां पुत्राश्च, 'लेच्छई' लेच्छकिनः-क्षत्रियजातिभेदवन्तः, 'लेच्छइपुत्ता' लेच्छकिपुत्राः, 'अण्णे य बहवे' अन्ये च बहवः 'राई-सर-तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाह-प्पभिइओ' राजे-श्वर-तलवर-माडम्बिक-कौटुम्बिके-भ्य-श्रेष्ठि-सेनापति-सार्थवाह-प्रभृतयः, तत्र-राजानो=माण्डलिकाः नरपतयः, ईश्वराः=ऐश्वर्यसंपन्ना युवराजाः, तलवराः=संतुष्ट-भूपालदत्तपट्टबन्धपरिभूषिता राजकल्पाः, माडम्बिकाः=ग्रामपञ्चशतीपतयः, यद्वा-सार्धक्रोशद्वय-परिमितप्रान्तरैर्विच्छिद्य विच्छिद्य स्थितानां ग्रामाणामधिपतयः, कौटुम्बिकाः=कुटुम्बभरणे तत्पराः,

क्षत्रिय और उनके पुत्र, ( **माहणा** ) ब्राह्मण और ब्राह्मणपुत्र, ( **भडा** ) भट और भटपुत्र, (**जोहा**) योधा-युद्ध के व्यवसायवाले व्यक्ति और उनके पुत्र, (**पसत्थारो**) धर्मशास्त्रपाठक और उनके पुत्र, ( **मल्लई** ) मल्लकी-मल्लकि जाति के क्षत्रिय और उनके पुत्र,( **लेच्छई** ) लेच्छकी-लेच्छकी जाति के क्षत्रिय और (**लेच्छइपुत्ता**) लेच्छकियों के पुत्र, तथा और भी बहुत से ( **राई-सर-तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाह-प्पभिइओ** ) राजा-मांडलिक नृपति, ईश्वर-ऐश्वर्यसपन्न युवराज, **तलवर**-सतुष्ट हुए नृपतिद्वारा प्रदत्त पट्टवध से परिभूषित राजा जैसे विशिष्ट व्यक्ति, **माडंबिक**-पांचसौ गांव के अधिपति, अथवा ढाई २ कोस पर बसे हुए ग्रामो के स्वामी, **कौटुम्बिक**-अपने कुटुम्ब का भरण-पोषण करने वाले, अथवा-बहुत कुटुम्ब का पालनपोषण करने वाले, **इभ्य**-

તથા તેમના પુત્ર, (माहणा) બ્રાહ્મણ તથા બ્રાહ્મણપુત્ર, (भडा) ભટ તથા ભટ-પુત્ર, (जोहा) યોદ્ધા-યુદ્ધમાં વ્યવસાયવાળા લોક તથા તેમના પુત્ર, (पसत्थारो) ધર્મશાસ્ત્રપાઠક તથા તેમના પુત્ર, (मल्लई) મલ્લ-મલ્લજાતિના ક્ષત્રિય અને તેના પુત્ર, (लेच्छई) લેચ્છકી-લેચ્છકી જાતિના ક્ષત્રિય તથા (लेच्छइपुत्ता) લેચ્છકિઓના પુત્ર તથા બીજા પણ ઘણા (राई-सर-तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाह-प्पभिइओ) **રાજા**-માંડલિક નૃપતિ, **ઈશ્વર**-ઐશ્વર્ય-સંપન્ન યુવરાજ, **તલવર**-સંતોષ પામેલા નૃપતિ દ્વારા પ્રદત્ત પટ્ટબંધથી પરિભૂષિત રાજા જેવા વિશિષ્ટ લોક, **માડંબિક**-પાંચસો ગામના અધિપતિ, અથવા અઢી ૨ કોસ પર વસેલાં ગામોના સ્વામી, **કૌટુંબિક**-પોતાના કુટુંબનાં ભરણ-પોષણ કરવાવાળા, અથવા ઘણાં કુટુંબનાં પાલન પોષણ કરવા-

यद्वा—बहुकुटुम्बपोषका', इभ्याः=इभो हस्ती, तत्प्रमाणं द्रव्यमर्हन्तीति तथा, ते च जघन्यमध्यमोत्कृष्टभेदात् त्रिप्रकारास्तत्र हस्तिपरिमितमणिमुक्ताप्रवालसुवर्णरजतादिद्रव्यराशिस्वामिनो जघन्या', हस्तिपरिमितवज्रहीरकमणिमाणिक्यराशिस्वामिनो मध्यमाः, हस्तिपरिमितकेवलवज्रहीरकराशिस्वामिन उत्कृष्टाः, हस्तिप्रमाणोच्छ्रितधनराशिस्वामिन इभ्या इत्यर्थ'। श्रेष्ठिनः = लक्ष्मीकृपाकटाक्षप्रत्यक्षलक्ष्यमाणद्रविणलक्षलक्षणविलक्षणहिरण्यपट्टसमलङ्कृतमूर्धानो नगरप्रधानव्यवहर्तार', सेनापतयः=चतुरङ्गसैन्यनायकाः, सार्थवाहाः=गणिम—धरिम—मेय—

---

हस्ति प्रमाण द्रव्यसम्पन्न धनिक जन, ये जघन्य, मध्यम एवं उत्कृष्ट के भेद से ३ प्रकार के होते है; इनमें जिनके पास हस्तिप्रमाणपरिमित मणि, मुक्ता, प्रवाल, सुवर्ण एवं रजत आदि द्रव्य की राशि होती है वे जघन्य इभ्य है, जिनके पास हस्तिप्रमाण परिमित वज्र हीरे, मणि, माणिक्य की राशि होती है वे मध्यम इभ्य है, परन्तु जिनके पास केवल हस्ति-प्रमाण—परिमित वज्र हीरों की राशि होती है वे उत्कृष्ट इभ्य है। श्रेष्ठी—लक्ष्मी की जिन पर पूरी २ कृपा हो, उस कृपाकोरके कारण जिनके लाखों के खजाने हो, तथा जिनके शिर पर उन्हीं को सूचित करने वाला चान्दी का विलक्षण पट्ट शोभायमान हो रहा हो, जो नगर के प्रधान व्यापारी हों, उन्हें श्रेष्ठी कहते है, ऐसे श्रेष्ठी जन, सेनापति=चतुरङ्ग सेना के नायक, सार्थवाह—जो **गणिम**=गिन कर खरीदने—वेचने योग्य नारियल, सुपारी, केला आदि वस्तुओं को, **धरिम**=तौलकर खरीदने—वेचने योग्य धान, जौ, नमक, शक्कर आदि वस्तुओं को, **मेय**=सरावा, आदि छोटे वर्तन आदि से माप कर खरीदने वेचने योग्य दूध,

---

વાળા, ઇભ્ય—હસ્તિ—પ્રમાણ—દ્રવ્ય—સંપન્ન ધનિક જનો, આ જઘન્ય, મધ્યમ તેમજ ઉત્કૃષ્ટના ભેદથી ૩ પ્રકારના હોય છે. તેમાં જેમની પાસે હસ્તિપ્રમાણ-પરિમિત મણિ, મુક્તા, પ્રવાલ, સુવર્ણ તેમજ ચાંદી આદિ દ્રવ્યના ઢગલા હોય તે જઘન્ય ઇભ્ય છે, જેની પાસે હસ્તિપ્રમાણપરિમિત વજ્ર, હીરા, મણિ, માણેકના ઢગલા હોય તે મધ્યમ ઇભ્ય છે. પરંતુ જેમની પાસે કેવલ હસ્તિ પ્રમાણપરિમિત વજ્ર હીરાના ઢગલા હોય તે ઉત્કૃષ્ટ ઇભ્ય જન છે. **શ્રેષ્ઠી**—લક્ષ્મીની જેમના પર પુરેપુરી કૃપા હોય, તે કૃપાના કારણે જેના લાખોના ખજાના હોય તથા જેમના માથા ઉપર તેનું સૂચન કરવાવાળાં ચાંદીનાં વિલક્ષણ પટ્ટ (પાઘડી) શોભી રહી હોય, જે નગરના મુખ્ય વ્યાપારી હોય તેમને શ્રેષ્ઠી કહેવાય છે એવા શ્રેષ્ઠીજન, **સેનાપતિ**—ચતુરંગ સેનાના નાયક, **સાર્થવાહ**—જે ગણિમ=ગણતરી કરીને ખરીદાય તથા વેચાય તેને યોગ્ય નારિયલ, સોપારી, કેળાં આદિ વસ્તુઓ, ધરિમ=તોળીને ખરીદવા, વેચવા યોગ્ય ધાન, જવ, મીઠું, સાકર આદિ વસ્તુઓ, મેય=પાવળું કે ડબો એવાં નાનાં વાસણથી

**प्पभिइओ अप्पेगइया वंदणवत्तियं अप्पेगइया पूयणवत्तियं एवं सक्कारवत्तियं सम्माणवत्तियं दंसणवत्तियं कोऊहलवत्तियं, अप्पे-**

परिच्छेद्यरूपक्रेयविक्रेयवस्तुजातमादाय लाभेच्छया देशान्तराणि व्रजतां सार्थं वाहयन्ति=योग-क्षेमाभ्यां परिपालयन्तीति, दीनजनोपकाराय मूलधनं दत्त्वा तान् समर्द्धयन्तीति तथा, एत-त्प्रभृतयः, एषु—'**अप्पेगइया**' अप्येकके—केचित्—'**वंदणवत्तियं**' वन्दनवृत्तिकम्—वन्दनाय वृत्तिः=प्रवृत्तिर्यस्मिन् कर्मणि तत् तथा, क्रियाविशेषणमिदं, वन्दनार्थमित्यर्थः, '**अप्पेगइया**' अप्येकके—केचित् '**पूयणवत्तियं**' पूजनवृत्तिकम्—सेवाकरणार्थम्, '**सक्कारवत्तियं**' सत्कारवृत्तिकम्—सत्कारार्थम्, '**सम्माणवत्तियं**' सम्मानवृत्तिकम्—सम्मानार्थम्, '**दंसण-वत्तियं**' दर्शनवृत्तिकम्—दर्शनार्थम्, '**कोऊहलवत्तियं**' कौतूहलवृत्तिकम्—कौतूहलार्थम्—

घी, तेल आदि वस्तुओं को, तथा—**परिच्छेद्य**=कसौटी आदि पर परीक्षा करके खरीदने वेचने योग्य मणि, मोती, मूंगा, गहना आदि वस्तुओं को लेकर नफा के लिये देशान्तर में जाने वाले सार्थ (समूह) को ले जाते है, तथा योग (नयी वस्तु की प्राप्ति) और क्षेम (प्राप्त वस्तु की रक्षा) के द्वारा उनका पालन करते है, गरीबों की भलाई के लिये उन्हे पूँजी देकर व्यापार द्वारा उन्हे धनवान वनाते है, वे सार्थवाह कहलाते हैं, ऐसे सार्थवाह लोग; इनमें से—(**अप्पेगइया**) कितनेक (**वंदणवत्तिय**) वन्दना करने के लिये (**अप्पेगइया**) कित-नेक (**पूयणवत्तियं**) सेवा करने के लिये, (**एवं**) इसी तरह (**सक्कारवत्तियं**) सत्कार करने के लिये, (**सम्माणवत्तियं**) सन्मान करने के लिये, (**दंसणवत्तियं**) दर्शन करने के लिये, (**कोऊहलवत्तियं**) पहिले कभी भी भगवान को नहीं देखे थे, अतः उनको देखने के लिये,

માપીને ખરીદવા વેચવા યોગ્ય દૂધ, ઘી, તેલ આદિ વસ્તુઓ તથા પરિચ્છેદ્ય =કસોટી આદિ ઉપર પરીક્ષા કરીને ખરીદવા વેચવા યોગ્ય મણિ, મોતી, પરવાળાં, ઘરેણાં આદિ વસ્તુઓ લઈને નફો કરવા માટે દેશાંતરમાં જવાવાળા સાર્થ (સમૂહ)ને લઇ જાય છે, તથા યોગ (નવી વસ્તુની પ્રાપ્તિ) અને ક્ષેમ (પ્રાપ્ત વસ્તુની રક્ષા) દ્વારા તેમનું પાલન કરે છે, ગરીબોના ભલાં માટે તેમને પુંજી દઈને વ્યાપાર દ્વારા ધનવાન બનાવે છે તે સાર્થવાહ કહેવાય છે. એવા એવા સાર્થવાહ લોક, એમાંના (**अप्पेगइया**) કેટલાક (**वंदणवत्तियं**) વંદના કરવા માટે (**अप्पेगइया**) કેટલાક (**पूयणवत्तियं**) સેવા કરવા માટે, (**एवं**) એવી રીતે (**सक्कारवत्तियं**) સત્કાર કરવા માટે (**सम्माणवत्तियं**) સન્માન કરવા માટે (**दंसण-वत्तियं**) દર્શન કરવા માટે (**कोऊहलवत्तियं**) પહેલાં કદી પણ ભગવાનને જોયેલા

**गइया अट्ठविणिच्छयहेउं अस्सुयाइं सुणेस्सामो सुयाइं निस्संकियाइं करिस्सामो, अप्पेगइया अट्ठाइं हेऊइं कारणाइं वागरणाइं पुच्छिस्सामो, अप्पेगइया सव्वओ समंता मुंडे भवित्ता**

अपूर्वदृष्टदर्शनार्थमित्यर्थः। '**अप्पेगइया**' अप्येकके-केचित् '**अट्ठ-विणिच्छय-हेउं**' अर्थविनिश्चयहेतु-अर्थानां=जीवाजीवादिभावानां यत् स्वरूपं तस्य विनिश्चयो हेतुर्यस्मिंस्तत्, जीवाजीवादिस्वरूपविनिश्चयार्थमित्यर्थः, '**अस्सुयाइं**' अश्रुतानि आगमरहस्यानि, '**सुणेस्सामो**' श्रोष्याम'-इत्याशया, '**सुयाइं निस्संकियाइं करिस्सामो**' श्रुतानि निश्शङ्कितानि करिष्याम'-इत्याशया, '**अप्पेगइया**' अप्येकके-केचित्-'**अट्ठाइं हेऊइं कारणाइं वागरणाइं**' अर्थान् हेतून् कारणानि व्याकरणानि, तत्र-अर्थान्-जीवाजीवादिनवतत्त्वरूपान भावान्, हेतून् – जीवादिस्वरूपसाधकान्, कारणानि=अन्यथाऽनुपपत्तिमात्ररूपाणि व्याकरणानि=परपृष्टार्थोत्तररूपाणि '**पुच्छिस्सामो**' प्रक्ष्यामः, '**अप्पेगइया**' अप्येकके, '**सव्वओ समंता मुंडे भवित्ता**' सर्वतः समन्ताद् मुण्डा भूत्वा-सर्वतः सावद्यव्यापार-

(**अप्पेगइया**) कितनेक (**अट्ठविणिच्छयहेउं**) जीव अजीव-आदि पदार्थों के स्वरूप को निश्चय करने के लिये, तथा (**अस्सुयाइं सुणेस्सामो**) आगम के रहस्य जो पहिले कभी सुनने में नहीं आये है उन्हे सुनेंगे, और (**सुयाइं निस्संकियाइं करिस्सामो**) जो आगम के रहस्य सुने है उन्हें शंका रहित करेंगे इस प्रकार की भावना से, (**अप्पेगइया**) और कितनेक (**अट्ठाइं हेऊइं कारणाइं वागरणाइं पुच्छिस्सामो**) जीव अजीव आदि नव तत्त्वरूप भावों को, जीवादिक के स्वरूप के साधकरूप हेतुओं को, अन्यथानुपपत्तिरूप कारणों को, एवं पर के द्वारा पूछे गये अर्थ के उत्तररूप व्याकरण को पूछेंगे इस प्रकार की भावना से, (**अप्पेगइया**) कितनेक (**सव्वओ समंता मुंडे भवित्ता आगाराओ अणगारियं पव्व-**

નહિ તેથી તેમને જોવા માટે, ( अप्पेगइया ) કેટલાક ( अट्ठविणिच्छयहेउं ) જીવ-અજીવ આદિ પદાર્થોનાં સ્વરૂપનો નિશ્ચય કરવાને માટે તથા (अस्सुयाइं सुणेस्सामो) આગમનાં રહસ્ય જે પહેલા કદી સાંભળ્યાં નહોતાં તે સાંભળશું, તથા (सुयाइं निस्संकियाइं करिस्सामो) જે આગમનું રહસ્ય સાંભળ્યું છે તેને શંકારહિત કરશું. એ પ્રકારની ભાવનાથી, (अप्पेगइया) તથા કેટલાક ( अट्ठाइं हेऊइं कारणाइं वागरणाइं पुच्छिस्सामो ) જીવ અજીવ આદિ નવતત્વરૂપ ભાવોને, જીવ આદિકનાં સ્વરૂપનાં સાધકરૂપ હેતુઓને, અન્યથાનુપપત્તિ રૂપ કારણોને તેમજ બીજા દ્વારા પૂછાતા અર્થના ઉત્તરરૂપ વ્યાકરણને પૂછશું-એ પ્રકારની ભાવનાથી, ( अप्पेगइया ) કેટલાક ( सव्वओ समंता मुंडे भवित्ता 'अगाराओ अणगा-

**अगाराओ अणगारियं पव्वइस्सामो, [अप्पेगइया] पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं दुवालसविहं गिहिधम्मं पडिवज्जिस्सामो, अप्पेगइया जीयमेयंति कट्टु ण्हाया कयबलिकम्मा कय-कोउय-मंगल-**

विरतिपूर्वक मुण्डिता'—कृतकेशलुञ्चना सम्पद्य '**अगाराओ अणगारियं पव्वइस्सामो**' अगाराद्=गृहाद् अनगारिकतां=साधुत्व प्रव्रजिष्याम'=प्राप्स्याम'—अनगारा भविष्याम', '**अप्पेगइया**' अप्येकके '**पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं दुवालसविहं गिहिधम्मं पडिवज्जिस्सामो**' पञ्चानुव्रतिक सप्तशिक्षाव्रतिक द्वादशविधं गृहिधर्मं प्रव्रजिष्याम', '**अप्पेगइया**' अप्येकके—'**जिण-भत्ति-रागेण**' जिनभक्तिरागेण, '**अप्पेगइया**' अप्येकके, '**जीयमेयंति कट्टु**' जीतमेतदिति कृत्वा—कुलाचारोऽयमिति मत्वा, '**ण्हाया**' स्नाता.—'**कयबलिकम्मा**' कृतबलिकर्माण', '**कय-कोउय-मंगल-पायच्छित्ता**' कृत-कौतुक-मङ्गल-प्रायश्चित्ता—

**इस्सामो**) सावद्य व्यापारों से सर्वथा विरत होकर, केशलुचनपूर्वक गार्हस्थिक अवस्था का परित्याग कर अनगार बनेंगे—इस प्रकार की भावना से, तथा कितनेक—(**पंचाणुव्वइयं सित्तसिक्खावइयं दुवालसविहं गिहिधम्मं पडिवज्जिस्सामो**) पांच अणुव्रत एवं सात शिक्षाव्रत के भेद से १२ भेदरूप गृहस्थ के धर्म को स्वीकार करेंगे—इस भावना से, (**अप्पेगइया**) कितनेक (**जिणभत्तिरागेणं**) जिनेन्द्र की भक्ति करेंगे इस प्रकार भक्ति के अनुराग से, (**अप्पेगइया,**) कितनेक (**जीयमेयंत्ति कट्टु**) यह हम लोगो का कुलाचार है—इस प्रकार मान कर, (**ण्हाया**) स्नान किये, (**कयबलिकम्मा**) काक आदि को अन्नादि दान रूप बलिकर्म किये, (**कय-कोउय-मंगल-पायच्छित्ता**) दुःस्वप्नादि निवारण के लिये

रियं पव्वइस्सामो) सावद्य व्यापारोथी सर्वथा विरत थईने केशलुंचनपूर्वक गार्हस्थिक अवस्थानो परित्याग करीने अनगार बनशुं—ए प्रकारनी भावनाथी, तथा केटलाक (पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं दुवालसविहं गिहिधम्म पडिवज्जिस्सामो) पांच अणुव्रत तेमज सात शिक्षाव्रतना भेदथी १२ भेद रूप गृहस्थना धर्मनो स्वीकार करशुं. एवी भावनाथी, (अप्पेगइया) केटलाक (जिणभत्तिरागेणं) जिनेन्द्रनी भक्ति करशुं ए प्रकारनी भक्तिना अनुरागथी, (अप्पेगइया) केटलाक (जीयमेयंति कट्टु) आ अमारो कुलाचार छे—ए प्रकारनी मान्यताथी, (ण्हाया) स्नान करी (कय-बलि-कम्मा) कागडा आदिने अन्न आदि दानरूप बलिकर्म करी, (कय-कोउय-मंगल-पायच्छित्ता) दुःस्वप्नादि निवारणने माटे मसी तिलक दहीं चोखा आदि धारण करी, (सिरसा कंठे

पायच्छित्ता, सिरसा कंठे मालकडा आविद्ध-मणि-सुवण्णा कप्पिय-हार-द्धहार-तिसर-पालंब-पलंबमाण-कडिसुत्त-सुकय -सोहा-भरणा पवर- वत्थ-परिहिया चंदणो-लित्त-गाय-सरीरा, अप्पे-

कृतं कौतुक=मषीपुण्ड्रादिकं, मङ्गलं-दध्यक्षतादि, एतदद्वयं प्रायश्चित्तं दुःस्वप्नादिप्रशमनत्वेनावश्यकरणीयत्वाद् यैस्ते तथा, कौतुकमङ्गलरूपं प्रायश्चित्तं कृतवन्त इत्यर्थ । **'सिरसा कंठे मालकडा'** शिरसि कण्ठे कृतमाला' **'आविद्ध-मणि-सुवण्णा'** आविद्ध-मणि-सुवर्णा'-परिधृतमणिकनकभूषणा, भूषणान्येव नामभिर्निर्दिशति-**'कप्पिय-हार-द्धहार-तिसर-पालंब-पलंबमाण-कडिसुत्त-सुकय-सोहाभरणा'** कल्पित-हारा-ऽर्द्धहार-त्रिसर-प्रालम्बप्रलम्बमान-कटिसूत्र-सुकृत-शोभाऽऽभरणाः, तत्र-हारः अर्द्धहारः त्रिसरकश्च प्रसिद्धः, तथा प्रालम्बः=झुम्बनकं स एव प्रलम्बमान' यत्र तत् कटिसूत्रं च तानि सुकृतशोभानि आभरणानि कल्पितानि-धृतानि यैस्ते तथा, विविधभूषणभूषितशरीरा इत्यर्थ', तथा-**'पवर-वत्थ-परिहिया'** प्रवरवस्त्रपरिहिताः-श्रेष्ठवस्त्रधारकाः, **'चंदणो-लित्त-गाय-सरीरा'** चन्दनो-लिप्त-गात्र-शरीरा'-चन्दनचर्चितशरीरा' । **'अप्पेगइया'** अप्येकके-**'हयगया एवं गयगया रहगया**

मषीतिलक दधि अक्षत आदि धारण किये, (**सिरसा कंठे मालकडा आविद्ध-मणि-सुवण्णा**) मस्तक एवं कठ में मालाएँ धारण किये, जिनमें मणि जड़े हुए हैं ऐसे सुवर्णों के आभूषण पहिने, तथा (**कप्पिय-हार-द्धहार-तिसर-पालंब-पलंबमाण-कडिसुत्त-सुकय-सोहा-भरणा**) शरीरशोभावर्द्धक अठारह लर के हार, ९ लर के अर्धहार, तीन लर के तिसरक, और नीचे की ओर लटकते हुए झूमके वाले कटिसूत्र पहिरे, (**पवर-वत्थ-परिहिया**) अच्छे २ सुन्दर वहुमूल्य वस्त्र पहिरे, (**चंदणो-लित्त-गाय सरीरा**) शरीर पर चन्दन लगाये, जव इस प्रकार वहाँ की जनता सज-धज कर तैयार हो चुकी तब उसमें से (**अप्पेगइया**) कितनेक (**चलने के लिये**), (**हयगया**) घोडों पर सवार हुए, (**एवं गयगया**)

मालकडा आविद्ध मणि-सुवण्णा ) મસ્તક તેમજ કંઠમા માલાઓ ધારણ કરી, જેમાં મણિ જડેલાં હોય એવા સુવર્ણનાં આભૂષણ પહેર્યાં, તથા (कप्पिय-हार-द्धहार-तिसर-पालंब-पलंबमाण-कडिसुत्त-सुकय-सोहाभरणा) શરીરશોભાવર્ધક અઢાર સર (લટ)ના હાર, ૯ સરના અર્ધહાર, ત્રણ સરના હાર, નીચેની તરફ લટકતાં જૂમખાવાળા કટિસૂત્ર પહેર્યાં, ( पवर-वत्थ-परिहिया ) સારા સારા સુન્દર બહુમૂલ્ય વસ્ત્રો પહેર્યાં, ( चंदणो-लित्त-गाय सरीरा ) શરીર પર ચદન લગાવ્યું. જ્યારે આ પ્રકારે ત્યાંની જનતા સજીધજીને તૈયાર થઇ ગઈ ત્યારે તેમાંથી ( अप्पेगइया ) કેટલાક ચાલવા માટે ( हयगया ) ઘોડા પર

गइया हयगया एवं गयगया रहगया सिवियागया संदमाणियागया, अप्पेगइया पाय-विहार-चारिणो पुरिस-वग्गुरा-परिक्खित्ता महया उक्किट्ठि-सीह-णाय-बोल-कलकल-रवेणं पक्खुभिय-महासमुद्द-रव-भूयं पिव करेमाणा चंपाए णयरीए मज्झं-

---

सिवियागया संदमाणियागया ' हयगता एवं गजगता रथगताः शिविकागताः स्यन्दमानिकागताः—तत्र शकटोपरि दत्ता शिविकैव स्यन्दमानिका, ' अप्पेगइया ' अप्येकके ' पाय-विहार-चारिणो ' पादविहारचारिणः ' पुरिसवग्गुरापरिक्खित्ता ' पुरुषवागुरापरिक्षिताः—पुरुषसमूहेन परिवेष्टिताः, 'महया' महता ' उक्किट्ठि-सीहणाय-बोल-कलकल-रवेणं ' उत्कृष्टि-सिंहनाद-बोल-कलकल-रवेण — उत्कृष्टिः=आनन्दमहाध्वनिः, सिंहनादः=प्रसिद्धः, बोलः=वर्णव्यक्तिसहितो ध्वनिः, कलकलः=वर्णव्यक्तिरहितो ध्वनिः, एषां समाहारः, तदेव यो रवः स तथा तेन, 'पक्खुभिय-महासमुद्द-रवभूयं पिव ' प्रक्षुभित-महासमुद्र-रवभूतमिव—प्रक्षुभितमहासमुद्रस्य यो रवभूतः=सजातशब्दस्तमिव=तद्वत् नगरं 'करेमाणा' कुर्वन्तः-

---

इसी प्रकार कितनेक हाथी पर आरूढ हुए, (रहगया) कितनेक रथों पर बैठे, (सिवियागया) कितनेक पालखियों में चढे, (संदमाणियागया) कितनेक बहेलियों—पालकीविशेष में बैठे, (अप्पेगइया) तथा कितनेक (पुरिस-वग्गुरा-परिक्खित्ता) पुरुषों के समूह से घिरे हुए होकर (पाय-विहार-चारिणो) पैदल ही निकले, ये सभी (महया) महान् (उक्किट्ठि-सीहणाय-बोल-कलकल-रवेणं) 'उक्किट्ठि'—उत्कृष्टि—अतिशय आनन्द जनित-ध्वनि से, (सीहणाय) सिंहनाद—सिंहनाद से, 'बोल'—व्यक्तवर्णयुक्त ध्वनिसे, तथा 'कलकलरव'—अव्यक्त ध्वनि से (पक्खुभिय-महासमुद्द-रवभूयं पिव) चम्पानगरी को प्रक्षु-

---

સવાર થયા. ( एवं गयगया ) આ પ્રકારે કેટલાક હાથીપર આરૂઢ થયા. (रहगया) કેટલાક રથ ઉપર બેઠા. ( सिवियागया ) કેટલાક પાલખીઓમાં ચડયા. ( संदमाणियागया ) કેટલાક પાલખીવિશેષોમા બેઠા, (अप्पेगइया) તથા કેટલાક ( पुरिस-वग्गुरा-परिक्खित्ता ) પુરૂષોનાં ટોળા સાથે ધીમે-ધીમે પગલે ( पाय-विहार-चारिणो ) પેદલજ નીકળ્યા, આ બધા (महया) મહાન્ (उक्किट्ठि-सीहणाय-बोल-कलकलरवेणं) 'उक्किट्ठि' ઉત્કૃષ્ટિ-અતિશય આનંદ જનિત ધ્વનિથી, (सीहणाय) સિંહનાદ-સિંહનાદથી, (बोल) વ્યક્તવર્ણયુક્ત ધ્વનિથી તથા (कलकलरव) અવ્યક્ત ધ્વનિથી (पक्खुभिय-महासमुद्द-रवभूयं पिव) ચંપા નગરીને

मज्झेणं णिग्गच्छंति, णिग्गच्छित्ता जेणेव पुण्णभद्दे चेइए तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अदूर-सामंते छत्ताईए तित्थयराइसेसे पासंति, पासित्ता जाणवाहणाइं ठवेंति, ठवित्ता जाणवाहणेहिंतो पच्चोरुहंति, पच्चोरुहित्ता जेणेव

---

चम्पानगरीं महाकोलाहलमयीं कुर्वन्तः, **'चंपाए णयरीए'** चम्पाया नगर्याः **'मज्झं-मज्झेणं'** मध्यमध्येन-सर्वतो मध्यमार्गेण **'णिग्गच्छंति'** निर्गच्छन्ति, **'णिग्गच्छित्ता'** निर्गत्य **'जेणेव पुण्णभद्दे चेइए'** यत्रैव पूर्णभद्रं चैत्यम्, **'तेणेव उवागच्छंति'** तत्रैवोपागच्छन्ति, **'उवागच्छित्ता'** उपागत्य, **'समणस्स भगवओ महावीरस्स अदूरसामंते'** श्रमणस्य भगवतो महावीरस्य अदूरसमीपे-**'छत्ताईए तित्थयराइसेसे पासंति'** छत्रादीन् तीर्थकरातिशेषान्=तीर्थकरातिशय-द्योतकानि कानिचिच्छत्रादीनि चिह्नानि पश्यन्ति, **'पासित्ता'** दृष्ट्वा **'जाणवाहणाइं ठवेंति'** यानवाहनानि स्थापयन्ति, **'ठवित्ता'** स्थापयित्वा **'जाणवाहणेहिंतो**

---

भित महासमुद्र के महाध्वनि से मानो युक्त करते हुए, **(चंपाए णयरीए)** उस चंपा नगरी के **(मज्झंमज्झेणं)** ठीक बीचो बीच के मार्ग से **(णिगच्छंति)** निकले, **(णिग्गच्छित्ता)** ये सब निकल कर **( जेणेव पुण्णभद्दे चेइए )** जहां पर वह पूर्णभद्र नामका उद्यान था **(तेणेव उवागच्छंति)** वहाँ पर पहुँचे, **(उवागच्छित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अदूरसामंते छत्ताईए तित्थयराइसेसे पासंति)** वहाँ पहुँच कर उन्होंने भगवान् महावीर के न अतिदूर और न अतिनिकट तीर्थकरों के अतिशय स्वरूप छत्र आदिकों को देखा, ये छत्रादिक तीर्थकरों के अतिशय द्योतक चिह्न माने गये हैं; **( पासित्ता जाणवाहणाइं ठवेंति)** इन चिन्हो के देखते ही उन सबों ने अपने २ यानवाहनादिकों को वहीं रोक

---

પ્રક્ષુભિત મહાસમુદ્રના મહાધ્વનિથી જેમ યુક્ત કરતાં હોય તેમ (चंपाए णयरीए) તે ચંપા નગરીની (मज्झंमज्झेणं) બરાબર વચ્ચોવચ્ચના માર્ગથી (णिगच्छंति) નીકળ્યા, (णिग्गच्छित्ता) તે બધા નીકળીને (जेणेव पुण्णभद्दे चेइए) જ્યાં તે પૂર્ણભદ્ર નામનું ઉદ્યાન હતું (तेणेव उवागच्छंति) ત્યાં પહોંચ્યા, (उवागच्छित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अदूरसामंते छत्ताईए तित्थयराइसेसे पासंति) ત્યાં પહોંચીને તેઓએ ભગવાન મહાવીરથી બહુ દૂર નહિ તેમ તીર્થંકરોના અતિશયસ્વરૂપ છત્ર આદિને જોયા, આ છત્ર આદિક તીર્થંકરોના અતિશયદ્યોતક ચિહ્ન મનાય છે, (पासित्ता जाणवाहणाइं ठवेंति) એ ચિહ્નોને જોતાં જ તે બધાંએ પોત-

**समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेंति, करित्ता वंदंति णमस्संति, वंदित्ता णमस्सित्ता णच्चासण्णे णाइदूरे सुस्सूसमाणा णमंसमाणा अभिमुहा विणएणं पंजलिउडा पज्जुवासंति ॥ सू० ३८ ॥**

पच्चोरुहंति' यानवाहनेभ्यः प्रत्यवरोहन्ति—अधस्तादवतरन्ति, '**पच्चोरुहित्ता**' प्रत्यवरुह्य, '**जेणेव समणे भगवं महावीरे**' यत्रैव श्रमणो भगवान् महावीरः [विराजते] '**तेणेव उवागच्छन्ति, उवागच्छित्ता**' तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य '**समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेंति**' श्रमणस्य भगवतो महावीरस्य त्रिकृत्व आदक्षिणं प्रदक्षिणं कुर्वन्ति—त्रिवारमादक्षिणप्रदक्षिणं कुर्वन्ति, '**करित्ता**' कृत्वा '**वंदंति**' वन्दन्ते—स्तुवन्ति, '**णमस्संति**' नमस्यन्ति=प्रणमन्ति, '**वंदित्ता णमस्सित्ता**' वन्दित्वा नमस्यित्वा '**णच्चासण्णे णाइदूरे**' नात्यासन्ने नातिदूरे '**सुस्सूसमाणा**' शुश्रूषमाणाः '**णमंसमाणा**' नमस्यन्तः '**अभिमुहा**' अभिमुखाः=सम्मुखाः, '**विणएणं पंजलिउडा**' विनयेन प्राञ्जलिपुटाः—विनय-विनम्रबद्धाञ्जलयः, '**पज्जुवासंति**' पर्युपासते—उपासनां कुर्वन्ति ॥ सू० ३८ ॥

दिये, (**ठवित्ता जाणवाहणेहिंतो पच्चोरुहंति**) जब वे अच्छी तरह रुक चुके तब वे सब-के-सब अपने २ वाहनों से नीचे उतरे, (**पच्चोरुहित्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छंति**) उतर कर फिर वे सब लोग जहाँ श्रमण भगवान महावीर विराजमान थे वहाँ पहुँचे, (**उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेंति**) बाद उन्होंने भगवान् महावीर को तीनवार हाथ जोडकर प्रदक्षिणा की, (**करित्ता**) प्रदक्षिणा

પોતાના યાનવાહનાદિકોને ત્યાંજ રોકી દીધા, (ठवित्ता जाणवाहणेहिंतो पच्चोरुहंति) જ્યારે તેઓ સારી રીતે રોકાઈ ગયા ત્યારે તે બધા પોતપોતાનાં વાહનોમાંથી નીચે ઉતર્યા, (पच्चोरुहित्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छंति) ઉતરીને પછી તે લોકો બધા જ્યાં શ્રમણ ભગવાન મહાવીર બિરાજમાન હતા ત્યા પહોંચ્યા. (उवागच्छित्ता समण भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेति) બાદ તેઓએ ભગવાન મહાવીરને ત્રણવાર હાથ જોડીને પ્રદક્ષિણા કરી. (करित्ता) પ્રદક્ષિણા કરી લીધા પછી વળી તે આવેલા જન

मूलम्—तए णं से पवित्तिवाउए इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे हट्ठ-तुट्ठ-जाव-हियए ण्हाए जाव अप्प-महग्घा-भरणा-

टीका—'तए णं से पवित्तिवाउए' इत्यादि ।

'तए णं से पवित्तिवाउए' ततः खलु स प्रवृत्तिव्यापृतः=भगवद्विहारादिवृत्तान्तनिवेदनेऽधिकृतः, 'इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे' अस्याः कथाया लब्धार्थः सन् 'हट्ठ-तुट्ठ-जाव-हियए' हृष्ट-तुष्ट-यावद्धृदयः 'ण्हाए जाव अप्प-महग्घा-भरणा-लंकिय-सरीरे' स्नातो यावदल्पमहार्घाभरणाऽलङ्कृतशरीरः 'सयाओ गिहाओ' स्वकाद् गृहात् 'पडिणि-

कर चुकने बाद फिर उस आगत जनसमूहने (वंदंति नमसंति) वन्दना एवं नमस्कार किया, (वंदित्ता णमंसित्ता णच्चासण्णे णाइदूरे सुस्सूसमाणा णमंसमाणा अभिमुहा विणएणं पंजलिउडा पज्जुवासंति) वंदना एवं नमस्कार करने के पश्चात् भगवान से न अतिसमीप में एवं न अतिदूर ही उनके सामने उचित स्थान पर बैठ कर वे सब विनयपूर्वक हाथ जोडकर सेवा करने लगे ॥ सू. ३८ ॥

'तए णं से पवित्तिवाउए' इत्यादि ।

(तए णं) इस के बाद (से पवित्तिवाउए) वह भगवान के विहार आदि के समाचार लाने में नियुक्त किया हुआ व्यक्ति, (इमीसे कहाए) इस कथासे—भगवान के आगमन के वृत्तान्त से (लद्धट्ठे समाणे) परिचित होकर, (हट्ठ-तुट्ठ-जाव-हियए) अपने अन्तःकरण में विशेषरूप से हर्षित एवं संतुष्ट हुआ, फिर उसने (ण्हाए जाव अप्प-महग्घा-भरणा-लंकिय-सरीरे) स्नान किया, पश्चात् थोडे

समूहे (वंदंति णमंसंति) वंदना तेमज नमस्कार कर्या, (वंदित्ता णमंसित्ता णच्चासण्णे णाइदूरे सुस्सूसमाणा णमंसमाणा अभिमुहा विणएणं पंजलिउडा पज्जुवासंति) वंदना तेमज नमस्कार कर्या पछी भगवानथी बहु दूर नहि तेम बहु समीप नहि એम तेमनी सामा उचित स्थान पर बेसीने ते बधा विनयपूर्वक हाथ जोडीने सेवा करवा लाग्या. (सू. ३८)

'तए णं से पवित्तिवाउए' ઇત્યાદિ.

(तए णं) त्यार पछी (से पवित्तिवाउए) ते भगवानना विहार आदिना समाचार लाववा माटे नियुक्त करेल माणुस (इमीसे कहाए) आ वातथी—भगवानना आगमनना वृत्तान्तथी (लद्धट्ठे समाणे) परिचित थईने (हट्ठ-तुट्ठ-जाव-हियए) पोताना अंतःकरणमां विशेषरूपथी हर्षित तेमज संतुष्ट थयो. पछी तेणे (ण्हाए जाव अप्प महग्घा-भरणा-लंकिय-सरीरे) स्नान कर्युं. पछी थोडा भारवाळां तथा

लंकिय-सरीरे सयाओ गिहाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता चंपाणयरिं मज्झंमज्झेणं जेणेव बाहिरिया सा चेव हेट्ठिल्ला वत्त-

क्खमइ पडिणिक्खमित्ता' प्रतिनिष्क्रामति, प्रतिनिष्क्रम्य, 'चंपाणयरिं मज्झंमज्झेणं' चम्पानगर्या मध्यमध्येन, 'जेणेव बाहिरिया' यत्रैव बाह्या उपस्थानशाला, 'सा चेव हेट्ठिला वत्तव्वया' सैवाऽधस्ताद् वक्तव्यता, अर्थात्—यत्रैव राज्ञ कोणिकस्य गृहं यत्रैव कोणिको राजा भम्भसारपुत्रस्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य करतलपरिगृहीतं शिरआवर्त्तं मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा जयेन विजयेन वर्धयति, वर्धयित्वा एवमवादीत् =भगवतः समवसरणं सविस्तरं निगदितवान्, तदनु भूपो भगवदागमनं श्रुत्वा हृष्टतुष्टः सन् सिंहासनादुत्थाय राजचिह्नानि परित्यज्य भगवदभिमुखं सप्ताष्टपदानि गत्वा

भार वाले तथा बहुमूल्य आभरणो से अलंकृतशरीर होकर (सयाओ गिहाओ पडिणिक्खमइ) अपने घर से निकला, (पडिणिक्खमित्ता) निकलकर (चंपाणयरिं मज्झंमज्झेणं) ठीक चंपा नगरी के बीचोबीच मार्ग से होता हुआ, (जेणेव बाहिरिया सा चेव हेट्ठिल्ला वत्तव्वया जाव णिसीयइ) जहां नीचे बाहिर की ओर वह उपस्थानशाला थी, एव जहां राजा कोणिक का गृह था, तथा जहां पर वे विराजमान थे, वहां पर वह पहुँचा, पहुँचकर दोनों हाथो को जोड़कर उसने कोणिक नरेशको सादर नमस्कार किया, पश्चात् 'आपकी जय हो और विजय हो—इस रूपसे उन्हे बधाई दी। बधाई दे चुकने के अनन्तर फिर उसने 'हे राजन्! आज श्रमण भगवान महावीर प्रभु चंपानगरी के पूर्णभद्र उद्यान में समवसृत हुए है'—इत्यादि विस्तृत रूप से भगवान् के समवसरण का वृत्तान्त कहा। राजा ने जब प्रभु के आगमन का वृत्तान्त सुना तब वे भी चित्त में अधिक प्रसन्न एवं सतुष्ट हुए। मारे हर्ष के

બહુ મૂલ્યવાળાં આભરણોથી શરીરને શણગારીને તે (सयाओ गिहाओ पडिणिक्खमइ) પોતાના ઘેરથી નીકળ્યો, (पडिणिक्खमित्ता) નીકળીને (चंपाणयरिं मज्झंमज्झेणं) બરાબર ચંપાનગરીની વચ્ચોવચ્ચને માર્ગે થઇને (जेणेव बाहिरिया सा चेव हेट्ठिल्ला वत्तव्वया जाव णिसीयइ) જ્યાં નીચે બહારની તરફ તે ઉપસ્થાનશાલા હતી તેમજ જ્યાં રાજા કોણિકનું ગૃહ હતુ તથા જ્યા તે વિરાજમાન હતા ત્યા પહોચ્યો, પહોચીને બન્ને હાથ જોડીને તેણે કોણિક નરેશને સાદર નમસ્કાર કર્યા. પછી આપની જય થાવો તથા વિજય થાવો એ રૂપે તેણે વધાઇ આપી. વધાઈ દઇ ચુકયા પછી તેણે કહ્યું, હે રાજન્! આજે શ્રમણ ભગવાન મહાવીર પ્રભુ ચંપાનગરીના પૂર્ણભદ્ર ઉદ્યાનમાં સમવસૃત થયા છે. આ પ્રકારે તેણે વિસ્તૃતરૂપથી ભગવાનના સમવસરણનો વૃત્તાન્ત કહ્યો. રાજાએ જ્યારે પ્રભુના આગમનો વૃતાન્ત સાભળ્યો ત્યારે તેઓ પણ મનમાં બહુ પ્રસન્ન તેમજ સતુષ્ટ થયા. આનંદમા આવી

ठवया जाव णिसीयइ, णिसीइत्ता तस्स पवित्तिवाउयस्स अद्ध-तेरस-सयसहस्साइं पीइदाणं दलयइ, दलइत्ता सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारित्ता सम्माणित्ता पडिविसज्जेइ ॥ सू०३९ ॥

तत्रोपविश्य यावत् 'नमोऽत्थु णं' पठति 'जाव' यावत् सिंहासने 'णिसीयइ' निषीदति=उपविशति, 'णिसीइत्ता' निषद्य=उपविश्य, 'तस्स पवित्तिवाउयस्स अद्धत्तेरससयसहस्साइं पीइदाणं दलयइ' तस्मै प्रवृत्तिव्यापृताय अर्द्धत्रयोदशशतसहस्राणि प्रीतिदानं ददाति-सार्द्धद्वादशशतसहस्राणि राजतमुद्राः प्रीतिदानं=पारितोषिकं समर्पयति । 'श्रमणो भगवान् महावीरस्वामी चम्पानगर्या उपनगरग्राममुपागतः चम्पानगरीं पूर्णभद्रचैत्यं समवसर्तुकामः' इति निवेदितं प्रवृत्तिव्यापृतेन, अतस्तदाऽष्टोत्तरैकलक्षसङ्ख्यकं राजतमुद्रारूपं प्रीतिदानं प्रदत्तम् । अत्र तु अस्यामेव चम्पानगर्याम् अतिसन्निकृष्टे स्थाने पूर्णभद्रचैत्ये समवसृत-इति वार्ता निवेदिता, अतो हर्षातिशयादेतद्वार्तानिवेदने सार्धद्वादशलक्षराजतमुद्रारूपं प्रीतिदानं प्रवृत्तिव्यापृताय दत्तम्-इति भावः । 'दलइत्ता सक्कारेइ सम्माणेइ' दत्त्वा सत्कारयति-वस्त्रादिदानेन, सम्मानयति-प्रियवचनेन, 'सक्कारित्ता सम्माणित्ता पडिविसज्जेइ' सत्कृत्य सम्मान्य प्रतिविसर्जयति ॥ सू०३९ ॥

वे एकदम सिंहासन से उठ के खडे हुए और नीचे उतरकर जिस दिशा में भगवान विराजमान थे, उस दिशा की ओर, सात आठ पग जाकर और बैठकर विधिपूर्वक "नमोत्थु णं" दिये। बाद सिंहासन पर बैठे, (णिसीइत्ता तस्स पवित्तिवाउयस्स अद्धत्तेरस-सय-सहस्साइं पीइदाणं दलयइ) बैठ कर उन्होंने उस सन्देशवाहक के लिये साढे बारह लाख चांदी की मुद्राओं का प्रीतिदान-पारितोषिक प्रदान किया, (दलइत्ता) प्रीतिदान देकर उन्होंने (सक्कारेइ) उसका सत्कार किया (सम्माणेइ) मधुर वचनों से सन्मान किया। इस प्रकार (सक्कारित्ता संमाणित्ता) सत्कार एवं सन्मान करके उन्हो ने उसे (पडिविसज्जेइ)

જઈ તેઓ એકદમ સિંહાસનેથી ઉઠીને ઉભા થયા તથા નીચે ઉતરીને જે દિશામાં ભગવાન વિરાજમાન હતા તે દિશાની તરફ સાત આઠ પગલાં જઇને તથા બેસીને વિધિપૂર્વક "નમોત્થુ ણં" દીધું. બાદ સિંહાસનપર બેઠા, (णिसीइत्ता तस्स पवित्तिवाउयस्स अद्धत्तेरससयसहस्साइं पीइदाणं दलयइ) બેસીને તેઓએ તે સંદેશવાહકને માટે સાડાબાર લાખ ચાંદીના સિક્કાઓનું પ્રીતિદાન-પારિતોષિક પ્રદાન કર્યું. (दलइत्ता) પ્રીતિદાન આપીને તેઓએ (सक्कारेइ) તેનો સત્કાર કર્યો, (सम्माणेइ) મધુર વચનોથી સન્માન કર્યું. આ પ્રકારે

**मूलम्—तए णं से कूणिए राया भंभसारपुत्ते बल-वाउयं आमंतेइ, आमंतित्ता एवं वयासी–खिप्पामेव भो देवाणु-**

टीका–'तए णं से' इत्यादि। 'तए णं' ततः खलु 'से कूणिए राया भंभसारपुत्ते' स कूणिको राजा भंभसारपुत्रः 'बलवाउयं' बलव्यापृतं=सैन्यव्यापारपरायणं–सेनापतिमित्यर्थः, 'आमंतेइ' आमन्त्रयति=आह्वयति, 'आमंतित्ता' आमन्त्र्य=आहूय, 'एवं वयासी'–एवम-वादीत्–'खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया' क्षिप्रमेव भो देवानुप्रिय ! 'आभिसेक्कं हत्थिरयणं

विदा किया। श्रमण भगवान् महावीर स्वामी चंपानगरी के उपनगरग्राम में पधारे हुए हैं और वे चंपानगरी के पूर्णभद्र उद्यान में पधारनेवाले हैं–इस प्रकार का समाचार कोणिक राजा को जब इस संदेशवाहक ने सुनाया था तब उस समय राजाने उसे पारितोषिक रूप में १ लाख चांदी की मुद्राएँ दी थीं। परतु जब उसने यह खबर दी कि प्रभु चंपानगरी के पूर्णभद्र उद्यान में पधार चुके है तब इस बात को सुनकर उन्हे अत्यंत हर्षका आवेग बढ़ा, और इस आवेग के प्रभाव से उन्होंने उसे १२॥ लाख चांदी की मुद्राएँ दीं ॥सू० ३९॥

'तए णं से कूणिए राया' इत्यादि।

(तए णं) इसके अनन्तर (भंभसारपुत्ते) भंभसार अर्थात् श्रेणिक का पुत्र (से कूणिए राया) उस कूणिक राजा ने (बलवाउयं) अपने बलव्यापृत–सेनापति को (आमंतेइ) बुलाया, (आमंतित्ता) बुलाकर (एवं वयासी) इस प्रकार कहा–(खिप्पा-

(सक्कारित्ता सम्माणित्ता) सत्कार तेमज सन्मान करीने तेमणे तेने (पडिविस-ज्जेइ) विदाय कर्यो. श्रमण भगवान महावीर स्वामी चंपानगरीना उपनगर ग्राममां पधार्या छे तथा तेओ चंपानगरीना पूर्णभद्र उद्यानमां पधारवाना छे–ए प्रकारना समाचार कोणिक राजाने ज्यारे आ संदेशवाहके संभळाव्या त्यारे ते समये राजाए तेने पारितोषिकरूपमां एकलाख आठ चांदीना सिक्काओ आप्या हता. परंतु ज्यारे तेणे आ खबर आपी के प्रभु चंपा-नगरीना पूर्णभद्र उद्यानमां पधारी चुकया छे त्यारे आ वात सांभळी तेमने अत्यंत हर्षनो आवेग वध्यो अने आवेगना प्रभावथी तेमणे तेने १२॥ लाख चांदीनी महोरो आपी. (सू. ३९)

'तए णं से कूणिए राया' इत्यादि.

(तए णं) त्यार पछी (भंभसारपुत्ते) भंभसार अर्थात् श्रेणिकना पुत्र (से कूणिए राया) ते कूणिक राजाए (बलवाउयं) पोताना बलव्यापृत–सेना-पतिने (आमंतेइ) बोलाव्या, (आमंतित्ता) बोलावीने (एवं वयासी) आ प्रकारे

प्पिया ! आभिसेक्कं हत्थिरयणं पडिकप्पेहि, हय-गय-रह-पवर-जोहकलियं च चाउरंगिणिं सेणं सण्णाहेहि, सुभद्दापमुहाण य देवीणं बाहिरियाए उवट्ठाणसालाए पाडियक्कपाडियक्काइं जत्ताभिमुहाइं जुत्ताइं जाणाइं उवट्ठवेहि; चंपं च णयरिं सब्भिं-

पडिकप्पेहि' आभिषेक्यं हस्तिरत्नं परिकल्पय—पट्टहस्तिरत्नं सज्जितं कुरु, 'हय-गय-रह-पवर-जोह-कलियं च चाउरंगिणिं सेणं सण्णाहेहि' हय—गज—रथ—प्रवरयोध—कलितां च चतुरङ्गिणीं सेनां सन्नाहय=सुसज्जितां कुरु, 'सुभद्दापमुहाण य देवीणं' सुभद्राप्रमुखानाञ्च देवीनाम् 'बाहिरियाए उवट्ठाणसालाए' बाह्यायामुपस्थानशालायाम्, 'पाडियक्कपाडियक्काइं' प्रत्येकप्रत्येकानि—सर्वासां पृथक् पृथक् 'जत्ताभिमुहाइं' यात्राभिमुखानि—गमनार्थमुद्यतानि, 'जुत्ताइं' युक्तानि—योजितबलीवर्दानि 'जाणाइं' यानानि=धार्मिकरथान् 'उवट्ठवेहि' उपस्थापय=सज्जीकृत्य समानय, 'चंपं च णयरिं सब्भिंतरबाहिरियं'

मेव भो देवाणुप्पिया) हे देवानुप्रिय ! शीघ्र ही (आभिसेक्कं हत्थिरयणं पडिकप्पेहि) तुम पट्टहस्तिरत्न को सज्जित करो, (हय-गय-रह-पवरजोह-कलियं च चाउरंगिणिं सेणं सण्णाहेहि) साथ में घोड़ों, हाथियों, रथों एवं उत्तम योधाओ से युक्त चतुरंगिणी सेना को भी सुसज्जित करना, तथा (सुभद्दापमुहाण य देवीणं बाहिरियाए उवट्ठाणसालाए) सुभद्राप्रमुख देवियों के लिये भी बाहिर उपस्थानशाला में (पाडियक्कपाडियक्काइं) अलग २ रूप में (जत्ताभिमुहाइं) चलने में अच्छे (जुत्ताइं) एवं अच्छे बैलों वाले (जाणाइं) धार्मिक रथों को (उवट्ठवेहि) सज्जित करके ले आओ। (चंपं च णयरिं सब्भिं-

કહ્યું-(खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया) હે દેવાનુપ્રિય ! શીઘ્ર જ (आभिसेक्कं हत्थिरयणं पडिकप्पेहि) તમે પટ્ટ હસ્તિરત્નને સજ્જિત કરો. (हय-गय-रह-पवर-जोह-कलियं च चाउरंगिणिं सेणं सण्णाहेहि) સાથમાં ઘોડા, હાથી, રથો, તેમજ ઉત્તમ યોદ્ધાઓથી યુક્ત ચતુરંગિણી સેનાને પણ સુસજ્જિત કરો. તથા (सुभद्दापमुहाण य देवीणं बाहिरियाए उवट्ठाणसालाए) સુભદ્રાપ્રમુખ દેવીઓને માટે પણ બાહરી ઉપસ્થાનશાલામા (पाडियक्क-पाडियक्काइं) અલગ અલગ રૂપમાં (जत्ताभिमुहाइं) ચાલવામાં સારા (जुत्ताइं) તેમજ સારા બળદવાળા (जाणाइं) ધાર્મિક રથોને (उवट्ठवेहि) સજ્જિત કરીને લઈ આવો. (चंपं च णयरिं सब्भिंतरबाहिरियं) ચંપાનગરીને અંદર તેમજ બહારથી (आसित्त-सित्त-

**तरबाहिरियं आसित्त-सित्त-सुइ-सम्मट्ठ-रत्थंतरा-वण-वीहियं मंचा-इमंच-कलियं णाणाविह-राग-उच्छिय-ज्झय-पडागा-इपडाग-मंडियं लाउल्लोइयमहियं गोसीस-सरस-रत्तचंदण-जाव-गंधवट्टिभूयं**

---

चम्पां च नगरीं साभ्यन्तरबाह्याम्, **'आसित्त-सित्त-सुइ-संमट्ठ-रत्थंतरावण-वीहियं'** आसिक्त-सिक्त-शुचि-समृष्ट-रथ्यान्तरा – ऽऽपण – वीथिकाम् —आसिक्तानि=ईषत् सिक्तानि, सिक्तानि=भूयसा जलेन धौतानि अतएव शुचीनि=पवित्राणि समृष्टानि=कचवरापनयनेन संशोधितानि रथ्यान्तराणि=रथ्यामध्यानि आपणवीथयश्च—हट्टमार्गा यस्यां सा आसिक्त-सिक्त-शुचि-संमृष्ट-रथ्याऽन्तराऽऽपण-वीथिका, ताम्, **'मंचा-इमंच-कलियं'** मञ्चा-तिमञ्च-कलिताम्-मञ्चाः=मालका -उपरिकजनोपवेशनयोग्याः, अतिमञ्चाः=मञ्चोपरिमञ्चाः, तैः कलिता—युक्ता ताम्, **'णाणाविह-राग-उच्छिय-ज्झय-पडागा-इपडाग-मंडियं'** नानाविध-रागो-च्छ्रित-ध्वज-पताकाऽतिपताका-मण्डिताम्-नानाविधरागाः=विविधवर्णा ये उच्छ्रिता ध्वजाः, पताकातिपताकाः – पताका – ध्वजाग्रवर्तिचेलाञ्चलानि, पताकामतिक्रान्ता अतिपताका =पताकोपरिवर्तिन्य पताका, ताभिर्मण्डिताम्=सुशोभिताम्—नानाविधवर्णसमुच्छ्रितध्वज-पताकाऽतिपताकाभिर्मण्डितामित्यर्थः । **'लाउ-ल्लोइय-महियं'** लाउल्लोइयमहिताम्—'लाउ-

---

तरबाहिरियं) चंपानगरी को भीतर एवं बाहिर से (**आसित्त-सित्त-सुइ-संमट्ठ-रत्थंतरावणवीहियं**) पहिले थोडे से जल से छिडकवा कर पीछे अधिक जल से छिडकवाकर गलियों के एव बजारो के रस्तों को साफ-सूफ करवाओ और जहां भी कूडा-कर्कट पड़ा हो उसे झडवाकर साफ करवाओ, (**मंचा-इमंच-कलियं णाणाविह-राग-उच्छिय-ज्झय-पडागा-इपडाग-मंडिय**) मार्ग मे आजू-बाजू मचों पर मंच जमवाकर लगवा दो, ताकि लोग उन पर अच्छी तरह से बैठ सके। अनेक रंगों की ऊँची २ ध्वजाएँ, पताकाएँ एवं अतिपताकाए नगर भर मे लगाओ, (**लाउल्लोइयमहियं**) जगह २ पर गोबर से जमीन को लिपवाओ

---

सुइ-संमट्ठ-रत्थंतरावण-वीहियं) પહેલા થોડાક પાણીનો છંટકાવ કરીને પછી વધારે પાણી છટાવીને ગલિયોના તેમજ બજારોના રસ્તાઓને સાફસૂફ કરાવો, અને જ્યાં પણ કૂડા-કર્કટ (કચરોપૂંજો) પડયો હોય તેને ઝાડુ મરાવી સાફ કરાવો. (मंचा-इमंच-कलियं णाणाविह-राग-उच्छिय-ज्झय-पडागा-इपडाग-मंडियं) માર્ગમાં આજુબાજુ મંચ ઉપર મંચ ગોઠવાવી દો જેથી લોકો તેમનાપર સારી રીતે બેસી શકે. અનેક રંગોની ઉંચી ઉંચી ધજાઓ, પતાકાઓ તેમજ અતિપતાકાઓ નગરભરમા લગાઓ. (लाउल्लोइयमहियं) જગા જગાપર છાણથી

**करेहि य कारवेहि य, करेत्ता य कारवेत्ता य एयमाणत्तियं पच्चप्पिणाहि, णिज्जाहिस्सामि समणं भगवं महावीरं अभिवंदिउं ॥ सू. ४० ॥**

लोइय' इति देशीयः शब्दः; गोमयादिना भूमौ यद् लेपनं सेटिकादिना कुड्यादिषु च यद् धवलनं तद् '**लाउल्लोइयं**' तेन महिताम्=सुसज्जिताम्, '**गोसीस-सरस-रत्तचंदण-जाव-गंधवट्टिभूयं करेहि य**' गोशीर्ष-सरस-रक्तचन्दन-यावद्-गन्धवर्तिभूतां कुरु—गोशीर्षैः=चन्दनविशेषैः सरसरक्तचन्दनेन यावद् गन्धवर्तिभूतां=समुपचितगन्धद्रव्यरूपां कुरु, '**कारवेहि य**' कारय च, अन्यानपि तथा कर्तुं प्रेरय, '**करेत्ता य कारवेत्ता य**' कृत्वा च कारयित्वा च, '**एयमाणत्तियं पच्चप्पिणाहि**' एतामाज्ञां प्रत्यर्पय, आज्ञापिताऽर्थान् सम्पाद्य मह्य कथय, '**णिज्जाहिस्सामि समणं भगवं महावीरं अभिवंदिउं**' निर्यास्यामि=निर्गमिष्यामि श्रमणं भगवन्तं महावीरमभिवन्दितुम् ॥ सू. ४० ॥

और भीतों को खड़ी से पुतवाओ, (**गोसीस-सरस-रत्तचंदण-जाव-गंधवट्टि-भूयं**) गोशीर्ष-चन्दन विशेष, एवं सरस रक्तचंदन से समस्त नगर को सुगधित बनवाओ ताकि वह सुगध-पुंज जैसा मालूम पडने लगे। (**करेहि य कारवेहि य**) यह सब काम स्वयं करो तथा दूसरों को भी इस तरह करने के लिये प्रेरित करो। (**करेत्ता य कारवेत्ता य**) करके एवं करवा करके (**एयमाणत्तियं पच्चप्पिणाहि**) इस मेरी आज्ञा को पुनः मुझे प्रत्यर्पित करो-आपकी आज्ञानुसार सब काम हो चुके है इसकी मुझे खबर दो। (**णिज्जाहिस्सामि समणं भगवं महावीरं अभिवंदिउं**) बाद में मैं श्रमण भगवान महावीर की वन्दना के लिये निकलूंगा ॥ सू. ४० ॥

જમીનને લીંપાવો અને ભીંતોને ખડીથી ધોળાવો. (गोसीस-सरस-रत्तचंदण-जाव-गंधवट्टि-भूयं) ગોશીર્ષ-ચન્દન વિશેષ તેમજ સરસ રક્તચંદનથી સમસ્ત નગરને સુગંધિત બનાવો જેથી તે સુગંધપુંજ જેવી જણાવા લાગે. (करेहि य कारवेहि य) આ બધું કામ જાતે કરો તથા બીજાને પણ એવી રીતે કરવા પ્રેરિત કરો, (करेत्ता य कारवेत्ता य) કરીને તેમજ કરાવીને (एयमाणत्तियं पच्चप्पिणाहि) આ મારી આજ્ઞાને પાછી મને પ્રત્યર્પિત કરો-આપની આજ્ઞાનુસાર બધું કામ થઈ ચૂક્યું છે એની મને ખબર દો. (णिज्जाहिस्सामि समणं भगवं महावीरं अभिवंदिउं) બાદ હું શ્રમણ ભગવાન મહાવીરની વંદના માટે નીકળીશ. (सू ४०)

**मूलम्—तए णं से बलवाउए कूणिएणं रण्णा एवं वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठ — जाव — हियए करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं सामित्ति आणाए विणएणं वयणं पडिसुणेइ, पडिसुणित्ता हत्थिवाउयं आमंतेइ, आमंतेत्ता एवं वयासी—**

---

टीका—'**तए णं**' इत्यादि। '**तए णं से बलवाउए**' ततः खलु स बलव्यापृतः—सेनापतिः '**कूणिएणं रण्णा एवं वुत्ते समाणे**' कूणिकेन राज्ञा एवमुक्तः सन्, '**हट्ठतुट्ठ-जाव-हियए**' हृष्टतुष्टयावद्धृदय '**करयलपरिग्गहियं**' करतलपरिगृहीतं—बद्धकरतलयुगलम्, '**सिरसावत्तं**' शिरआवर्त्त '**मत्थए अंजलिं कट्टु**' मस्तके अञ्जलिं कृत्वा '**एवं सामित्ति आणाए विणएण वयणं पडिसुणेइ**' एवं स्वामिन्! इति आज्ञाया विनयेन वचनं प्रतिशृणोति=एवं स्वामिन्! यद्यथाज्ञापयति देवस्तत्तथैव संपादयामि—इत्युक्त्वा आज्ञाया वचनं सविनयं प्रतिशृणोति=स्वीकरोति, प्रतिश्रुत्य=स्वीकृत्य '**हत्थिवाउयं**

---

'**तए णं से बलवाउए**' इत्यादि।

(**तए णं**) इसके बाद (**से बलवाउए**) वह सेनापति (**रण्णा एवंवुत्ते समाणे**) राजा के द्वारा इस प्रकार से आज्ञापित होता हुआ (**हट्ठ—तुट्ठ—जाव—हियए करयल—परिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं सामित्ति आणाए विणएणं वयणं पडिसुणेइ**) विशेष हर्षित एवं संतुष्ट हुआ, यावत् अन्तःकरण में प्रफुल्लित हो गया। दोनों हाथो को जोडकर मस्तकपर अंजलिरूप में उन्हे स्थापित करते हुए फिर वह इस प्रकार बोला कि हे स्वामिन्! आपने जिस प्रकार का आदेश प्रदान किया है वह मै उसी प्रकार से संपादित करूँगा। इस रीति से विनयपूर्वक उसने राजा के आदेश को स्वीकार कर लिया।

---

'तए णं से बलवाउए' ઈત્યાદિ.

(तए णं) ત્યાર પછી (से बलवाउए) તે સેનાપતિ (रण्णा एवं वुत्ते समाणे) રાજાના દ્વારા આ પ્રકારે આજ્ઞાપિત થતાં (हट्ठ—तुट्ठ—जाव—हियए करयल—परिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं सामित्ति आणाए विणएणं वयणं पडिसुणेइ) વિશેષ હર્ષિત તેમજ સંતુષ્ટ થયો, યાવત્ અંતઃકરણમાં પ્રફુલ્લિત થઈ ગયો. બન્ને હાથો જોડીને મસ્તક ઉપર અંજલિરૂપે તેમને સ્થાપિત કરી પછી તે આ પ્રકારે બોલ્યો કે હે સ્વામિન્! આપે જે પ્રકારનો આદેશ પ્રદાન કર્યો છે તે હું તેવીજ રીતે સંપાદિત કરીશ. આ રીતે વિનયપૂર્વક તેણે રાજાના

**खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! कूणियस्स रण्णो भंभसारपुत्तस्स आभिसेक्कं हत्थिरयणं पडिकप्पेहि, हय-गय-रह-पवरजोह-कलियं चाउरंगिणिं सेणं सण्णाहेहि, सण्णाहेत्ता एयमाणत्तियं पच्च-प्पिणाहि ॥ सू० ४१ ॥**

आमंतेइ' हस्तिव्यापृतमामन्त्रयति=महामात्रमाह्वयति, 'आमंतेत्ता' आमन्त्र्य-आहूय 'एवं वयासी' एवमवादीत्-'खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! 'कूणियस्स रण्णो भंभसारपुत्तस्स आभिसेक्कं हत्थिरयणं पडिकप्पेहि' क्षिप्रमेव भो देवानुप्रिय! कूणिकस्य राज्ञो भम्भसारपुत्रस्य आभिषेक्यं हस्तिरत्नं परिकल्पय, आभिषेक्यं हस्तिरत्नं=प्राप्ताभिषेकं, मुख्यं हस्तिरत्नं परिकल्पय=सुसज्जितं कुरु, 'हय-गय-रह-पवरजोह-कलियं' हय-गज-रथ-प्रवरयोध-कलिताम्, 'चाउरंगिणिं सेणं' चतुरङ्गिणीं सेनाम्, 'सण्णाहेहि' सन्नाहय-सन्नद्धां कुरु, 'एयमाणत्तियं पच्चप्पिणाहि' एतामाज्ञप्तिकां प्रत्यर्पय-इमां मदीयामाज्ञां सम्पाद्य मह्यं निवेदय-इत्थं राज्ञाऽऽज्ञप्तो बलव्यापृतो हस्तिव्यापृत-माज्ञापयामास ॥ सू० ४१ ॥

(पडिसुणित्ता हत्थिवाउयं आमंतेइ) राजा का आदेश प्रमाण कर उसने तुरंत ही हाथियों के अधिकारी को बुलाया, (आमंतेत्ता) बुलाकर (एवं) इस प्रकार (वयासी) वह बोला-(खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया) हे देवानुप्रिय! तुम शीघ्र ही (कूणियस्स रण्णो भंभसारपुत्तस्स आभिसेक्कं हत्थिरयणं पडिकप्पेहि) भंभसार अर्थात् श्रेणिक राजा के पुत्र कूणिक राजा के पट्टहस्ती को सुसज्जित करो। (हय-गय-रह-पवरजोह-कलियं चाउ-रंगिणिं सेणं सण्णाहेहि) साथ में हय-अश्व, गज-अन्यहाथी, रथ, प्रवरभट इनसे युक्त

આદેશનો સ્વીકાર કરી લીધો. (पडिसुणित्ता हत्थिवाउयं आमतेइ) રાજાના આદે-શને પ્રમાણ કરી તેણે તરતજ હાથીઓના અધિકારીને બોલાવ્યો. (आमंतेत्ता) બોલાવીને (एवं) આ પ્રકારે (वयासी) તેણે કહ્યું-(खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया) હે દેવાનુપ્રિય! તમે તુરત જ (कूणियस्स रण्णो भंभसारपुत्तस्स आभिसेक्क हत्थिरयणं पडिकप्पेहि) ભંભસાર અર્થાત્ શ્રેણિક રાજાના પુત્ર કૂણિક રાજાના પટ્ટહસ્તિને તૈયાર કરો. (हय-गय-रह-पवरजोह-कलियं चाउरंगिणिं सेणं सण्णा-हेहि) સાથે સાથે હય-ઘોડા, ગજ-બીજા હાથી, રથ, પ્રવરભટ એથી યુક્ત ચતુરંગિણી સેનાને પણ તૈયાર કરો. (सण्णाहेत्ता) સન્નદ્ધ કરીને (एयमाणत्तियं

मूलम्—तए णं से हत्थिवाउए बलवाउयस्स एयमट्ठं सोच्चा आणाए विणएणं वयणं पडिसुणेइ, पडिसुणित्ता छेयायरिय-उवएस-मइ-कप्पणा-विकप्पेहिं सुणिउणेहिं उज्जल-णेवत्थ-

टीका—'तए णं से' इत्यादि। 'तए णं' ततः=बलव्यापृताज्ञाऽनन्तरं खलु 'से हत्थिवाउए' स हस्तिव्यापृतः-महामात्रः, 'बलवाउयस्स एयमट्ठं सोच्चा' बलव्यापृतस्य एतमर्थं=सुसज्जितगजाऽऽनयनादिरूपं वचनं श्रुत्वा, 'आणाए विणएणं वयणं पडिसुणेइ' आज्ञाया विनयेन वचनं प्रतिशृणोति-विनयपूर्वकमाज्ञावचनं=सेनापतिनिदेशमङ्गीकरोति, 'पडिसुणित्ता' प्रतिश्रुत्य 'छेयायरिय-उवएस-मइ-कप्पणा-विकप्पेहिं' छेकाऽऽचार्यो-पदेश-मति-कल्पना-विकल्पैः-छेकाचार्यस्य=पटुतरशिल्पशिक्षकस्योपदेशाज्जाता या मतिः=बुद्धिः तया या कल्पना=सज्जना-हस्तिनां शृङ्गारसमारचना, तां विविधप्रकारेण कल्पयन्ति ये ते तथा तैः. सुशिक्षकोपदेशलब्धबुद्ध्या विशिष्टशिल्पकल्पनाकारकैरित्यर्थः, अतएव 'सुणिउणेहिं' सुनिपुणैः-गजादिशृङ्गाररचनाकुशलैः 'उज्जल-

चतुरंगिणी सेना को भी सुसज्जित करो। (सण्णाहेत्ता) सन्नद्ध करके (एयमाणत्तियं पच्चप्पिणाहि) बाद मे इस मेरी आज्ञा के यथावत् पालन करने की हमें पीछे खबर दो ॥सू. ४१॥

'तए णं से हत्थिवाउए' इत्यादि।

(तए णं) सेनापति के आदेश देने के बाद (से हत्थिवाउए) वह हाथियों का अधिकारी (बलवाउयस्स) सेनापति के (एयमट्ठं) इस बातको (सोच्चा) सुनकर (आणाए वयणं) आज्ञा के वचन को (विणएणं) विनयपूर्वक (पडिसुणेइ) स्वीकार किया। (पडिसुणित्ता) स्वीकार कर उसने (छेयायरिय-उवएस-मइ-कप्पणा विकप्पेहिं) छेकाचार्य-विशिष्टनिपुणशिल्पशिक्षक के उपदेश से उद्भूत बुद्धि द्वारा विविध प्रकारकी रचना से हाथि-

पच्चप्पिणाहि) પછી આ મારી આજ્ઞાને યથાવત્ પાળી તેની મને પાછી ખબર આપો. (सू ४१)

'तए णं से हत्थिवाउए' ઈત્યાદિ

(तए णं) સેનાપતિએ આદેશ દીધા પછી (से हत्थिवाउए) તે હાથીઓના અધિકારી (बलवाउयस्स) સેનાપતિની (एयमट्ठं) એ વાતને (सोच्चा) સાભળીને (आणाए वयणं) આજ્ઞાનાં વચનને (विणएणं) વિનયપૂર્વક (पडिसुणेइ) સ્વીકાર કર્યો, (पडिसुणित्ता) સ્વીકાર કરીને તેણે (छेयायरिय-उवएस-मइ-कप्पणा विकप्पेहिं) છેકાચાર્ય- વિશિષ્ટ નિપુણ શિલ્પ શિક્ષકના ઉપદેશથી ઉદ્ભવેલી બુદ્ધિ-

हव्व-परिवत्थियं सुसज्जं धम्मिय-सण्णद्ध-बद्ध-कवइय-उप्पी-लिय-कच्छ-वच्छ-गेवेय-बद्ध-गलवर-भूषण-विरायंतं अहिय-तेय-जुत्तं सललिय-वर-कण्णपूर-विराइयं पलंब-ओचूल-महुयर-

णेवत्थ-हव्व-परिवत्थियं' उज्ज्वल-नेपथ्य-शीघ्र-परिवस्त्रितम्-उज्ज्वलनेपथ्येन=निर्मल-वेषरचनया शीघ्रं, परिवस्त्रितं-आच्छादितम्, अलंकृतमित्यर्थः, अतएव 'सुसज्जं' कृतसन्नाहम्, 'धम्मिय-सण्णद्ध-वद्ध-कवइय-उप्पीलिय-कच्छ-वच्छ-गेवेय-वद्ध-गलवर-भूसण-विरायंतं' धार्मिक-सन्नद्ध-वद्ध-कवचिको-त्पीडित-कक्ष-वक्षो-ग्रैवेय-वद्ध-गलवर-भूषण-विराजमानम्, धार्मिक सन्नद्धं=सज्जीकृतं वद्ध यत् कवचं=सन्नाह-विशेष, तदस्यास्तीति-धार्मिकसन्नद्धवद्धकवचिकम्, उत्पीडिता=आकृष्य वद्धा, कक्षा=वन्धन-रज्जुः, वक्षसि=वक्षःस्थले यस्य तत् तथा, ग्रैवेयकं=ग्रीवाभूषणं, वद्धं गले=कण्ठे यस्य तत् तथा, वरभूषणैः = अन्यैर्गजस्य श्रेष्ठाभरणैर्विराजमानम्, 'अहियतेयजुत्तं' अधिकतेजोयुक्तम्=परमतेजस्वि, 'सललिय-वरकण्णपूर-विराइयं' सललित-वरकर्णपूर-

यों के शृंगार करने वाले (सुणिउणेहिं) निपुण व्यक्तियों से (उज्जल-णेवत्थ-हव्व-परि-वत्थियं) हाथीका शृंगार करवाया, इसमें सर्वप्रथम उन कुशल पुरुषों ने उसे निर्मल भूषणों की रचना से अलंकृत किया। (सुसज्जं) उस पर अच्छी तरह से झूलें वगैरह सजायीं। (धम्मिय-सण्णद्ध-वद्ध-कवइय-उप्पीलिय-कच्छ-वच्छ-गेवेय-वद्ध-गलवर-भूषण-विरायंतं) धार्मिक उत्सव के समय जैसा हाथी का शृंगार होता है ठीक वैसा ही शृंगार इसका किया गया। पेट या छाती पर इसके मजबूत कवच कसकर बांधा गया। गले मे इसके आभूषण पहिनाए गये। और इसके अंग-उपांगों में सुन्दर २ उसके योग्य आभूषण

द्वारा विविध प्रकारोथी हाथीओना शृंगार करवावाळा (सुणिउणेहिं) निपुण व्यक्तिओ द्वारा (उज्जल-णेवत्थ-हव्व-परिवत्थियं) हाथीना शणुगार कराव्या, तेमा सर्वथी प्रथम ते कुशळ पुरुषोए तेने सुन्दर अलंकारोनी रचनाथी अलंकृत कर्या, (सुसज्जं) तेना उपर सारी रीते झूलो वगेरे सजावी. (धम्मिय-सण्णद्ध-वद्ध-कवइय-उप्पीलिय-कच्छ-वच्छ-गेवेय-बद्ध- गलवर - भूषण - विरायंतं) धार्मिक उत्सवना समये जेवो हाथीनो शणुगार होय छे तेवो ज बराबर शणुगार तेनो कर्यो. पेट अथवा छाती उपर मजबूत कवच कसीने तेने बांध्युं. गळामा तेने आभूषणो पहेरावामां आव्यां. तेनां बीजां अंगो तथा उपांगोमां सुंदर सुंदर तेने योग्य आभूषणो पहेराव्यां. (अहिय-

कयंधयारं चित्त-परित्थोम-पच्छयं पहरणा-वरण-भरिय-जुद्ध-

विराजितम्—सललितौ=लालित्ययुक्तौ यौ वरकर्णपूरौ—प्रशस्तकर्णाभरणे ताभ्यां विराजितम्, 'पलंव-ओचूल-महुयर - कयंधयारं' प्रलम्बाऽवचूलमधुकरकृताऽन्धकारम् – प्रलम्बानि अवचूलानि=गजपृष्ठादधःप्रलम्बितशृङ्गारवस्त्रांगरूपाणि यस्य तत्तथा, तथा मधुकरैर्मदजलगन्ध-लुब्धै कृतः अन्धकारो यत्र तत्तथा, ततः—अनयोः कर्मधारयः, ततः, 'चित्त-परिच्छेय-पच्छयं' चित्र—परिच्छेक—प्रच्छदम्—चित्रो=विचित्रः परिच्छेको=लघुः प्रच्छदः—आच्छादन-वस्त्रविशेषो यस्य तत्तथा तत्, 'पहरणा-वरण-भरिय-जुद्ध-सज्जं' प्रहरणा—वरण—भृतयुद्ध-सज्जम्—प्रहरणावरणैरायुधकवचैर्भृतं=सम्भृतम्, अत एव युद्धसज्जं=युद्धाय समुद्यतम्, 'सच्छत्तं'

पहिरा दिये गये। (अहियतेयजुत्तं) इससे स्वाभाविकरूप से तेजःसंपन्न वह गजराज देखने में और अधिक तेजस्वी दीखने लगा। (सललिय-वर-कण्णपूर-विराइयं) इसके कान में जो आभूषण—कर्णपूर पहिराने में आये थे वे चलते समय इधर उधर जब हिलते थे तब उनके द्वारा यह गजराज बडा ही सुहावना लगता था। (पलंव-ओचूल-महुयर-कयंधयारं) इस पर जो झूल डाली गई थी वह पीठ से नीचे तक लटक रही थी। इसके कपोल स्थल से जो मदजल झर रहा था और उसकी सुगन्धि से जो भ्रमरसमूह उसके आसपास मंडरा रहा था वह ऐसा मालूम होता था कि मानो इसकी शरण में अंधकार ही आया है। (चित्त-परित्थोम-पच्छयं) इसकी पीठ पर झूल के ऊपर जो छोटा सा आ-च्छादकवस्त्र डाला गया था वह सुन्दर वेलबूटियों से युक्त था। (पहरणा-वरण-भरिय-जुद्ध-सज्जं) प्रहरण—शस्त्र और आवरण—कवच से सुसज्जित यह हाथी ऐसा मालूम पडता था कि मानो यह युद्ध के लिये ही सजाया गया है। (सच्छत्तं) यह छत्रसहित था।

तेयजुत्तं) આથી સ્વાભાવિક તેજથી સંપન્ન તે ગજરાજ વધારે તેજસ્વી દેખાતો હતો (सललिय-वर-कण्णपूर-विराइयं) તેના કાનમાં જે આભૂષણ-કર્ણપૂર પહેરાવવામાં આવ્યા હતા તે ચાલતી વખતે જ્યારે આમતેમ હાલતા હતા ત્યારે તેનાથી આ ગજરાજ બહુ જ શોભાયમાન લાગતો હતો. (पलंव-ओचूल-महुयर-कयंधयारं) તેના પર જે ઝૂલ રાખી હતી તે પીઠથી નીચે સુધી લટકી રહી હતી. તેના ગંડસ્થલથી જે મદજલ ઝરી રહ્યું હતું તથા તેની સુગંધથી જે ભમરાઓના સમૂહ તેની આસપાસ ફરતો રહેતો હતો તેથી એમ જણાતુ હતુ કે જાણે તેના શરણમા અંધકાર જ આવ્યો છે. (चित्त-परिच्छेय पच्छयं) તેની પીઠ પર ઝૂલ ઉપર જે નાનુ ઢાંકેલું વસ્ત્ર નાખ્યું હતું તે સુંદર વેલ-બૂટિયોથી યુક્ત હતુ (पहरणा-वरण-भरिय-जुद्ध-सज्जं) પ્રહરણ-શસ્ત્ર અને આવરણ-કવચથી સુસજ્જિત આ હાથી એવો લાગતો હતો કે

सज्जं सच्छत्तं सज्झयं सघंटं सपडागं पंचामेलय–परिमंडिया-भिरामं ओसारिय–जमल–जुयल–घंटं विज्जुपिणद्धं व कालमेहं उप्पाइयपव्वयं व चंकमंतं मत्तं गुलगुलंतं मण–पवण–जइण–वेगं

सच्छत्रम्–छत्रयुक्तम्, 'सज्झयं' सध्वजम्–ध्वजयुक्तम् 'सघंटं' सघण्टम्–घण्टाभूषितोभयपार्श्वम्, 'पंचामेलय–परिमंडिया–भिरामं' पञ्चामेलक–परिमण्डिताऽभिरामम्–पञ्चभिरामेलकैः=पञ्चवर्णाभिः पुष्पमालाभिः परिमण्डितम्–अतएव अभिरामं=सुन्दरं यत्तथा तत्, 'ओसारिय–जमल–जुयल–घंटं' अवसारित–यमल–युगल–घण्टम्–अवसारितम्=अधोऽवलम्बितं यमलं=समं युगलं=द्विकं घण्टयोर्यत्र तत् तथा तत्, 'विज्जुपिणद्धं' विद्युत्पिनद्धम्–विद्युद्विद्योतितं 'कालमेहं व' कालमेघमिव–गजस्य कृष्णवर्णत्वात् उच्चतया च मेघोपमा, 'उप्पाइय–पव्वयं व' औत्पातिकपर्वतमिव–अकस्मान्नूतनसमुद्भूतपर्वतमिव, 'चंकमंतं' चङ्क्रम्यमाणम्–अतिशयेन क्राम्यत्–स्वाभाविकपर्वतो हि न चङ्क्रम्यते इति भावः। 'गुलगुलंतं' ध्वनत्=महामेघवद् ध्वनिं कुर्वत्–इत्यर्थः, 'मण–पवण–जइण–वेगं'

(सज्झयं) ध्वजासहित था (सघंटं) घंटाओं से इसके उभयपार्श्व युक्त थे। (पंचामेलय–परिमंडिया–भिरामं) पांचवर्ण के पुष्पमाला पहनाने के कारण यह अत्यन्त सुन्दर लगता था। (ओसारिय–जमल–जुयल–घंटं) नीचे तक एक ही साथ लटकते हुए दो घंटों से यह शोभित था। (विज्जुपिणद्ध) इस पर जो भी आभरण सजाये गये थे वे बिजली के समान चमकते थे, अतः यह गजराज (कालमेहं व) कृष्णवर्ण होने से काला मेघ के जैसा ज्ञात होता था। (चकमतं उप्पाइयपव्वयं व) चलते समय यह औत्पातिक पर्वत के समान दिखायी देता था। (गुलगुलंतं) जब यह चिंघाडता था तो ऐसा प्रतीत होता

જાણે એ યુદ્ધને માટે જ સજાએલો છે. (सच्छत्तं) એ છત્રસહિત હતો. (सज्झयं) ધ્વજાસહિત હતો. (सघंटं) ઘંટાઓ બન્ને બાજુ લટકતી હતી. (पंचामेलय–परिमंडिया–भिरामं) પાંચ વર્ણની પુષ્પમાલા પહેરાવવાથી એ સુંદર લાગતો હતો. (ओसारिय–जमल–जुयल–घंटं) નીચે સુધી એક સાથે લટકતા બે ઘંટાઓથી તે શોભતો હતો. (विज्जुपिणद्धं) તેના પર જે કોઈ આભરણ સજાએલા હતાં તે વીજળીના જેવા ચમકતા હતા. આથી આ ગજરાજ (कालमेहं व) કૃષ્ણવર્ણ હોવાથી કાલા મેઘના જેવો જણાતો હતો. (चंकमंतं उप्पाइयपव्वयं व) ચાલતી વખતે એ ઔત્પાતિક પર્વતના જેવો દેખાતો હતો. (गुलगुलंतं) જ્યારે તે બરાડતો હતો ત્યારે એમ પ્રતીત થતું હતું કે જાણે

**भीमं संगामियाओज्जं आभिसेक्कं हत्थिरयणं पडिकप्पेइ, पडिकप्पित्ता हय – गय–रह – पवरजोह–कलियं चाउरंगिणीं सेणं सण्णाहेइ, जेणेव बलवाउए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता एयमाणत्तियं पच्चप्पिणइ ॥ सू० ४२ ॥**

मनःपवनजयिवेगं–गत्या मन पवनाधिकवेगयुक्त, '**भीमं**' भयङ्करम्, '**संगामियाओज्जं**' साग्रामिकाऽऽयोज्यम् सग्राम एव साग्रामिक तस्मिन् आयोज्यम्=आयोजनीय–संग्रामयोग्यमित्यर्थ ; '**आभिसेक्कं हत्थिरयण**' आभिषेक्यं हस्तिरत्नम् – अभिषेकार्हं हस्तिश्रेष्ठम, '**पडिकप्पेइ**' परिकल्पयति, '**पडिकप्पित्ता**' परिकल्प्य, '**हय-गय-रह-पवरजोह-कलियं**' हय–गज–रथ–प्रवरयोध–कलितां–हयैर्गजै रथै प्रवरयोधै महारथिभिर्युक्ताम्, '**चाउरंगिणिं सेणं**' चतुरङ्गिणीं सेनाम्=चतुरङ्गवर्ती सेनाम्, '**सण्णाहेइ**' संनाहयति, '**जेणेव बलवाउए**' यत्रैव बलव्यापृतः–सेनापति, '**तेणेव उवागच्छइ**' तत्रैवोपागच्छति, '**उवागच्छित्ता**' उपागत्य, '**एयमाणत्तियं**' एतामाज्ञामिकाम्–सेनापतेराज्ञाम् '**पच्चप्पिणइ**' प्रत्यर्पयति–तदीयामाज्ञां सम्पाद्य पश्चान्निवेदयति, भवदाज्ञानुसारेण सर्वं सपादितमस्माभिरिति ॥ ४२ ॥

कि मानो महामेघकी गर्जना हो रही है। (**मण–पवण–जइण–वेगं**) इसकी गति मन और पवन के वेग को जीतने वाली थी, (**भीमं**) देखने मे यह बडा भयंकर जैसा लगता था। (**संगामियाओज्जं**) इस के ऊपर जितनी भी सामग्रियाँ रखने में आई थीं वे सब सग्राम के योग्य थीं। (**आभिसेक्कं हत्थिरयणं**) इस प्रकार इस पट्टहस्ति को (**पडिकप्पेइ**) उन निपुण मतिवाले पुरुषो से सजवाया, (**पडिकप्पित्ता**) सजवाने के बाद फिर उस हाथी के अधिकारी ने उन निपुण पुरुषो से (**हय–गय–रह–पवरजोह–कलियं चाउरंगिणिं**

મહામેઘની ગર્જના થાય છે. (मण–पवण–जइण–वेगं) તેની ગતિ મન તથા પવનના વેગને જીતે એવી હતી (भीमं) જોવામા એ બહુ ભયંકર જેવો લાગતો હતો (सगामियाओज्जं) તેના ઉપર જેટલીએ સામગ્રીઓ રાખવામાં આવી હતી તે બધી સગ્રામને યોગ્ય હતી. (आभिसेक्कं हत्थिरयणं) આ પ્રકારે એ પટ્ટહસ્તિને (पडिकप्पेइ) તે નિપુણ બુદ્ધિવાળા પુરૂષોએ સજાવ્યો હતો (पडिकप्पित्ता) તૈયાર કરી લીધા પછી તે હાથીના આધકારીએ તે નિપુણ પુરૂષોદ્વારા (हय–गय- रह–पवर–जोहकलियं चाउरंगिणिं सेणं सण्णाहेइ) ઘોડા,

मूलम्—तए णं से बलवाउए जाणसालियं सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! सुभद्दा-पमुहाणं देवीणं बाहिरियाए उवट्ठाणसालाए पाडियक्कपाडियक्काइं

टीका—'तए णं से' इत्यादि। 'तए णं से बलवाउए' ततः खलु स बलव्यापृतः—तदनन्तरम्—चतुरङ्गिणीसेनासज्जीकरणानन्तरं स सेनापतिः 'जाणसालियं' यानशालिकं=यानशालाधिकृतम्, 'सद्दावेइ' शब्दयति=आह्वयति, 'सद्दावित्ता एवं वयासी' शब्दयित्वा एवमवादीत् 'खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया!' क्षिप्रमेव भो देवानुप्रिय! 'सुभद्दापमुहाणं देवीणं' सुभद्राप्रमुखानां=सुभद्रादीनां देवीनां 'बाहिरियाए उवट्ठाण-

सेणं सण्णाहेइ) घोडा, हाथी, रथ एवं सुभटों से युक्त चतुरंगिणी सेना सजवायी, सजवा कर (जेणेव बलवाउए) जहाँ पर सेनापति थे (तेणेव उवागच्छइ) वहाँ पर गया, (उवागच्छित्ता) पहुँचकर (एयमाणत्तियं पच्चप्पिणइ) उसने निवेदन किया कि आपने जो आज्ञा प्रदान की थी वह सब मैने आपकी आज्ञानुसार ठीक कर लिया है ॥ सू० ४२॥

'तए णं से बलवाउए' इत्यादि।

(तए णं) चतुरंगिणी सेना जब सजी जा चुकी तब (से बलवाउए) उस सेना-पतिने (जाणसालियं) यानशाला के अधिकारी को (सद्दावेइ) बुलाया, (सद्दावित्ता) बुलाकर (एवं वयासी) इस प्रकार कहा—(खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया) हे देवानुप्रिय! तुम शीघ्र ही (सुभद्दापमुहाणं देवीणं) सुभद्रा आदि देवियों के लिये (बाहिरियाए उवट्ठाणसालाए) बाहिर की उपस्थानशाला में (पाडियक्कपाडियक्काइं) एक एक रानी

હાથી, રથ તેમજ સુભટોથી યુકત ચતુરંગિણી સેના તૈયાર કરાવી. તૈયાર કરાવીને (जेणेव बलवाउए) જ્યાં સેનાપતિ હતા. (तेणेव उवागच्छइ) ત્યાં ગયા, (उवागच्छित्ता) તેણે ત્યાં પહોંચીને (एयमाणत्तियं पच्चप्पिणइ) નિવેદન કર્યું કે આપે જે આજ્ઞા આપી હતી તે બધું મેં આપની આજ્ઞાપ્રમાણે ઠીક કરી લીધું છે. (સૂ૦ ૪૨)

'तए णं से बलवाउए' ઈત્યાદિ.

(तए णं) ચતુરંગિણી સેના જ્યારે તૈયાર થઈ ચુકી ત્યારે (से बलवाउए) તે સેનાપતિએ (जाणसालियं) યાનશાલાના અધિકારીને (सद्दावेइ) બોલાવ્યો, (सद्दावित्ता) બોલાવીને (एवं वयासी) આ પ્રકારે કહ્યું—(खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया) હે દેવાનુપ્રિય! તમે જલદી (सुभद्दापमुहाणं देवीणं) સુભદ્રા આદિ દેવીઓ માટે (बाहिरियाए उवट्ठाणसालाए) બહારની ઉપસ્થાનશાલામાં (पाडियक्क-

जत्ताभिमुहाइं जुत्ताइं जाणाइं उवट्ठवेहि, उवट्ठवित्ता एयमणत्तियं पच्चप्पिणाहि ॥ सू० ४३ ॥

मूलम्—तए णं से जाणसालिए बलवाउयस्स एयमट्ठं

सालाए' बाह्यायामुपस्थानशालायाम्, 'पाडियक्कपाडियक्काइं' प्रत्येकं प्रत्येकम्=प्रत्येकाऽर्थम्, 'जत्ताभिमुहाइं' यात्राभिमुखानि=भगवद्दर्शनार्थगमनानुकूलानि 'जुत्ताइं' युक्तानि 'जाणाइं' यानानि 'उवट्ठवेहि' उपस्थापय—सज्जीकृत्य समानय, 'उवट्ठवित्ता' उपस्थाप्य 'एयमाणत्तियं पच्चप्पिणाहि' एतामाज्ञप्तिकां प्रत्यर्पय—मदीयामाज्ञां पश्चात् समर्पय—सर्वं सम्पादितम् इति ब्रूहि ॥ सू० ४३ ॥

टीका—'तए णं से' इत्यादि।

ततः खलु स 'जाणसालिए बलवाउयस्स एयमट्ठं' यानशालिको बलव्यापृतस्यैतमर्थम्=यानसज्जीकरणाऽऽनयनरूपं निदेशं श्रुत्वा, आज्ञाया विनयेन वचनं 'पडिसुणेइ'

के बैठने योग्य अलग २ रूप में (जत्ताभिमुहाइं) यात्रा के लायक—भगवान के दर्शन करने के लिये जिसमें बैठकर जाया जाता है ऐसे (जुत्ताइं) एवं अच्छे २ बैलों से युक्त (जाणाइं) रथादिक वाहनों को (उवट्ठवेहि) उपस्थित करो, (उवट्ठवित्ता) उपस्थित करके (एयमाणत्तियं पच्चप्पिणेहि) इस मेरी आज्ञा को यथावत् पालन करने की खबर पीछे मुझे बहुत जल्दी भेजो ॥ सू० ४३ ॥

'तए णं से जाणसालिए' इत्यादि।

(तए णं) सेनापति के आदेश देने के बाद (से जाणसालिए) उस यानशाला के अधिकारी ने (बलवाउयस्स) सेनापति के (एयमट्ठं) यान को सज्जित करके लानेकी

पाडियक्काइं) એક એક રાણીને બેસવા યોગ્ય અલગ અલગ રૂપમાં (जत्ताभिमुहाइं) યાત્રાને લાયક ભગવાનના દર્શન કરવા માટે જેમા બેસીને જવાય એવા, (जुत्ताइं) તેમજ સારા સારા બળદોથી યુક્ત (जाणाइं) રથ આદિક વાહનોને (उवट्ठवेहि) હાજર કરો. (उवट्ठवित्ता) હાજર કરીને (एयमाणत्तियं पच्चप्पिणेहि) આ મારી આજ્ઞાનું પાલન કરવાની ખબર પછી મને બહુ જલ્દી મોકલો. (સૂ० ૪૩)

"तए णं से जाणसालिए" ઈત્યાદિ.

(तए णं) સેનાપતિના આદેશ દીધા પછી (से जाणसालिए) તે યાનશાલાના અધિકારીએ (बलवाउयस्स) સેનાપતિની (एयमट्ठं) યાનને તૈયાર કરીને લાવ-

**आणाए विणएणं वयणं पडिसुणेइ, पडिसुणित्ता जेणेव जाण-साला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता जाणाइं पच्चुवेक्खेइ, पच्चु-वेक्खित्ता जाणाइं संपमज्जेइ, संपमज्जित्ता जाणाइं संवट्टेइ, संवट्टित्ता जाणाइं णीणेइ, णीणित्ता जाणाणं दूसे पवीणेइ, पवीणित्ता जाणाइं**

---

प्रतिशृणोति=स्वीकरोति, प्रतिश्रुत्य=आज्ञावचनं स्वीकृत्य यत्रैव यानशाला तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य '**जाणाइं पच्चुवेक्खेइ**' यानानि प्रत्युपेक्षते=सम्यक् पश्यति, प्रत्युपेक्ष्य=दृष्ट्वा '**जाणाइं संपमज्जेइ**' यानानि सम्प्रमार्जयति–विगतरजांसि कुरुते, सम्प्रमार्ज्य, '**जाणाइं संवट्टेइ**' यानानि संवर्त्तयति–एकस्मिन् स्थाने स्थापयति, '**संवट्टित्ता**' संवर्त्य '**जाणाइं णीणेइ**' यानानि नयति–शालातो बहिष्करोति, नीत्वा '**जाणाणं**' यानानां '**दूसे**' दूष्याणि=आच्छादनवस्त्राणि '**पवीणेइ**' प्रविनयति=अपसारयति, प्रविनीय–अपसार्य,

---

आज्ञाको सुनकर (**आणाए विणएणं वयणं**) उस आज्ञावचन को विनयपूर्वक (**पडिसुणेइ**) स्वीकार किया, (**पडिसुणित्ता**) स्वीकार करके फिर वह (**जेणेव जाणसाला**) जहां यानशाला थी (**तेणेव उवागच्छइ**) वहाँ पहुँचा, (**उवागच्छित्ता**) पहुँचकर (**जाणाइं पच्चुवेक्खेइ**) उसने वहां पहिले रथ आदि यानों को अच्छी तरह से देखा। (**पच्चुवेक्खित्ता**) देखकर (**जाणाइं संपमज्जेइ**) उसने उन्हे अच्छी तरह झाड–झूड कर साफ किया। (**संपमज्जित्ता जाणाइं संवट्टेइ**) साफ करने के बाद उसने फिर जितने चाहिये थे उतने यान एक जगह एकत्रित किये। (**संवट्टित्ता**) इकट्ठ करने के बाद (**जाणाइं णीणेइ**) वहां से उसने उन सब को बाहिर निकाला। (**णीणित्ता**) बाहिर

---

વાની આજ્ઞા સાંભળીને (आणाए विणएणं वयणं) તે આજ્ઞાવચનનો વિનયપૂર્વક (पडिसुणेइ) સ્વીકાર કર્યો. (पडिसुणित्ता) સ્વીકાર કરીને પછી તે (जेणेव जाणसाला) જ્યાં યાનશાલા હતી (तेणेव उवागच्छइ) ત્યાં પહોંચ્યો. (उवागच्छित्ता) પહોંચીને (जाणाइं पच्चुवेक्खइ) તેણે ત્યા પહેલાં રથ આદિ યાનોને સારી રીતે જોયા. (पच्चुवेक्खित्ता) જોઇને (जाणाइं संपमज्जेइ) તે તેણે સારી રીતે વાળી–ઝૂડી સાફ કર્યા. (संपमज्जिता जाणाइं संवट्टेइ) સાફ કરી લીધા પછી તેણે જેટલાં જોઈતાં હતાં તેટલાં યાન (વાહન) એક જગાએ એકઠાં કર્યાં (संवट्टिता) એકઠાં કરી લીધા પછી (जाणाइं णीणेइ) ત્યાંથી તેણે એ બધાંને બહાર કાઢયાં. (णीणित्ता) બહાર કાઢીને (जाणाणं दूसे

समलंकरेइ, समलंकरित्ता जाणाइं वरभंडगमंडियाइं करेइ, करित्ता जेणेव वाहणसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता वाहणसालं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता वाहणाइं पच्चुवेक्खेइ, पच्चुवेक्खित्ता वाहणाइं संपमज्जइ, संपमज्जित्ता वाहणाइं णीणेइ, णीणित्ता वाह-

'जाणाइं समलंकरेइ' यानानि समलङ्करोति=यन्त्रयोक्त्रादिभिः कृतालङ्काराणि करोति, समलङ्कृत्य 'जाणाइं वरभंडगमंडियाइं' यानानि वरभाण्डकमण्डितानि=वराभरणभूषितानि 'करेइ' करोति, कृत्वा यत्रैव वाहनशाला तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य, वाहनशालामनुप्रविशति, अनुप्रविश्य 'वाहणाइं पच्चुवेक्खेइ' वाहनानि प्रत्युपेक्षते, तेषामङ्गप्रत्यङ्ग-सौन्दर्यं पश्यति, दृष्ट्वा—वाहनानि 'संपमज्जइ' सम्प्रमार्जयति=निर्मलीकरोति, सम्प्रमार्ज्य वाह-

निकालकर (जाणाणं दूसे पवीणेइ) उनके ऊपर के वस्त्रों को उसने दूर किया। (पवीणित्ता) जब वस्त्र कि जिनसे ये ढके हुए थे दूर हो चुके तब उसने (जाणाइं समलंकरेइ) उन सब यानों को अलंकृत किया। (समलंकरित्ता) जब वे अच्छी तरह अलंकृत हो चुके तब (जाणाइं वरभंडगमंडियाइं करेइ) उन यानों को उसने अच्छी रीति से गादी–तकिया आदि उपकरणों से मंडित किया। (करित्ता) सुसज्जित कर (जेणेव वाहणसाला तेणेव उवागच्छइ) फिर वह जहां वाहनशाला थी वहाँ पहुँचा, (उवागच्छित्ता) पहुँच कर (वाहणसालं अणुपविसइ) वह उस वाहनशाला के भीतर प्रविष्ट हुआ। (अणुपविसित्ता) प्रविष्ट होकर (वाहणाइं पच्चुवेक्खेइ) उसने वाहनों को देखा (पच्चुवे-

पवीणेइ) तेमना उपरनां वस्त्रोने तेणे दूर मूक्या (पवीणित्ता) ज्यारे ते वस्त्रो के जेनाथी ते ढंकाया हता ते दूर थई गयां त्यारे तेणे (जाणाइं समलंकरेइ) ते बधा यानोने शणगार्या (समलंकरित्ता) ज्यारे ते सारी रीते अलंकृत थई चुक्या त्यारे (जाणाइं वरभंडगमंडियाइं करेइ) ते यानोने तेणे सारीरीतथी गादी तकिया आदि उपकरणोथी मंडित कर्यां. (करित्ता) सुसज्जित करीने (जेणेव वाहणसाला तेणेव उवागच्छइ) पछी ते ज्यां वाहनशाला हती त्यां पहोंच्या (उवागच्छित्ता) पहोंचीने (वाहणसालं अणुपविसइ) ते ए वाहनशालानी अंदर दाखल थया. (अणुपविसित्ता) दाखल थईने (वाहणाइं पच्चुवेक्खेइ) तेणे वाहनोने जोयां. (पच्चुवेक्खि[illegible]) (वाह-

णाइं अप्फालेइ, अप्फालित्ता दूसे पवीणेइ, पवीणित्ता वाहणाइं समलंकरेइ, समलंकरित्ता वाहणाइं वरभंडगमंडियाइं करेइ, करित्ता वाहणाइं जाणाइं जोएइ, जोइत्ता पओयलट्ठिं पओयधरए य

नानि 'णीणेइ' नयति=बहिष्करोति, नीत्वा वाहनानि 'अप्फालेइ' आस्फालयति=हस्तेन आस्फालयति, आस्फाल्य 'दूसे पवीणेइ' दूष्याणि प्रविनयति=आच्छादनवस्त्राण्यपनयति, प्रविनीय 'वाहणाइं समलंकरेइ' वाहनानि समलङ्करोति, समलङ्कृत्य वाहनानि 'वरभंडगमंडियाइं करेइ' वरभाण्डकमण्डितानि करोति, कृत्वा 'वाहणाइं जाणाइं जोएइ' वाहनानि यानेषु योजयति, योजयित्वा यानशालिकः 'पओयलट्ठिं' प्रतोदयष्टिं वाहनचालनार्थां यष्टिं 'पराणी' इति भाषाप्रसिद्धां 'पओयधरए य' प्रतोदधरान्=शकटवाहकान् समं=युगपत्—एकस्मिन् काले 'आडहइ' आहरति=एकस्मिन् स्थाने सवा-

क्खित्ता) देखकर (वाहणाइं संपमज्जइ) उसने उन्हे साफ किया। (संपमज्जित्ता) साफ-सूफ कर (वाहणाइं णीणेइ) वाहनों को उसने वहां से बाहिर निकाला, (णीणित्ता) बाहिर निकालकर (वाहणाइं अप्फालेइ) उसने फिर उनके पीठ पर हाथ फिराया, (अप्फालित्ता) हाथ फिराकर (दूसे पवीणेइ) फिर उसने उनकी खोलियों को अलग किया। (पवीणित्ता) जब खोलियां उनकी अलग हो चुकीं तब फिर उसने (वाहणाइं समलंकरेइ) उन वाहनोंको शृंगारित किया। (समलंकरित्ता) जब वे अच्छी तरह से सजा दिये गये तब (वाहणाइं वरभंडगमंडियाइं करेइ) उसने उनको उपकरणों से मंडित किया, (करित्ता) करने के बाद (वाहणाइं जाणाइं जोएइ) फिर उसने उन वाहनों—बैलों को रथों में जोते, (जोइत्ता) जोतने के बाद (पओयलट्ठिं पओयधरए य समं आडहइ) उसने

णाइं संपमज्जइ) તેણે તેમને સાફ કર્યાં. (संपमज्जित्ता) સાફ-સૂફ કરીને (वाहणाइं णीणेइ) વાહનોને તેણે ત્યાંથી બહાર કાઢયા. (णीणित्ता) બહાર કાઢીને (वाहणाइं अप्फालेइ) તેણે ફરીને તેમની પીઠ ઉપર હાથ ફેરવ્યો. (अप्फालित्ता) હાથ ફેરવીને (दूसे पवीणेइ) પછી તેણે તેમની ખોળોને જુદી કરી, (पवीणित्ता) જ્યારે ખોળો તેમની જુદી કરાઈ ગઈ ત્યાર પછી તેણે (वाहणाइं समलंकरेइ) તે વાહનોને શણગાર્યા, (समलंकरित्ता) જ્યારે તે સારી રીતે તૈયાર થઈ (સજાઈ) ગયાં ત્યારે (वाहणाइं वरभंडगमंडियाइं करेइ) તેણે તેમને ઉપકરણોથી મંડિત કર્યાં. (करित्ता) કર્યા પછી (वाहणाइं जाणाइं जोएइ) તેણે તે વાહનોના બળદોને રથોમાં જોડાવ્યા, (जोइत्ता) જોડાવ્યાં પછી (पओयलट्ठिं

समं आडहइ, आडहित्ता वट्टमग्गं गाहेइ, गाहित्ता जेणेव वलवाउए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता वलवाउयस्स एयमाणत्तियं पच्च-प्पिणइ ॥ सू० ४४ ॥

मूलम्—तए णं से वलवाउए णयरगुत्तियं आमंतेइ,

हनयानानि तेषु प्रतोदयष्टीः प्रतोदधरान्=शकटवाहकांश्च स्थापयति । 'आडहित्ता' आहृत्य, 'वट्टमग्गं' वर्तमार्गम्=शकटादिगम्यमार्गं—राजमार्गं 'गाहेइ' ग्राहयति, ग्राहयित्वा यत्रैव वलव्यापृतस्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य 'वलवाउयस्स एयमाणत्तियं पच्चप्पिणइ' वलव्यापृताय एतामाज्ञप्तिकां प्रत्यर्पयति=आज्ञां सम्पाद्य पश्चान्निवेदयतीत्यर्थः ॥ सू० ४४ ॥

टीका—'तए णं' इत्यादि । 'तए णं से वलवाउए' ततः खलु स वलव्यापृतो

उन यानों में हांकने की चावुकों एवं हांकने वालों को एक ही साथ स्थापित कर दिया, (आडहित्ता) चावुक लेकर हांकने वाले जब अच्छी तरह उन यानों पर जमकर बैठ चुके तब (वट्टमग्गं गाहेइ) उसने उन यानों को राजमार्ग पर उपस्थित किये । (गाहित्ता जेणेव वलवाउए तेणेव उवागच्छइ) उन्हें राजमार्ग पर उपस्थित कर फिर वह यान-शालाधिकारी जहां सेनापति थे वहां पहुंचा । (उवागच्छित्ता वलवाउयस्स एयमाणत्तियं पच्चप्पिणइ) पहुँचकर उसने कहा कि हे स्वामिन् ! आपके आज्ञानुसार सभी यान तैयार है ॥ सू० ४४ ॥

'तए णं से वलवाउए' इत्यादि ।

(तए णं) इसके बाद (से वलवाउए) उस सेनापतिने (णयरगुत्तियं) नगर की रक्षा

पओयधरए य समं आडहइ) तेणे ते यानोमां हांकवानी चाबुको तेमज हांकवावाळाने एक ज साथे स्थापित करी दीधा. (आडहित्ता) चाबुक लईने हांकवावाळा ज्यारे सारी रीते ते यानो उपर बेसी चुकया त्यारे (वट्टमग्गं गाहेइ) तेणे ते यानोने राजमार्ग पर हाजर कर्यां. (गाहित्ता जेणेव वलवाउए तेणेव उवागच्छइ) तेमने राजमार्ग पर हाजर करीने पछी ते यानशाळाधिकारी सेनापतिनी पासे पहोंच्यो. (उवागच्छित्ता वलवाउयस्स एयमाणत्तियं पच्चप्पिणइ) पहोंचीने तेणे कह्युं के हे स्वामिन् ! आपनी आज्ञाप्रमाणे बधा यान तैयार छे. (सू० ४४)

"तए णं से वलवाउए" ईत्यादि.

(तए णं) त्यार पछी (से वलवाउए) ते सेनापतिए (णयरगुत्तियं) नगरनी

आमंतित्ता एवं वयासी–खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! चंपं णयरिं सब्भिंतरबाहिरियं आसित्त जाव कारवेत्ता एयमाणत्तियं पच्चप्पिणाहि ॥ सू० ४५ ॥

'णयरगुत्तियं' नगरगुत्तिकं=नगरगोप्तारम् 'आमंतेइ' आमन्त्रयति=आह्वयति,–'आमंतित्ता 'एवं वयासी' आमन्त्र्यैवमवादीत् 'खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया' क्षिप्रमेव भो देवानुप्रिय! 'चंपं णयरिं' चम्पां नगरीं 'सब्भिंतरबाहिरियं' साभ्यन्तर-बाह्याम् 'आसित्त जाव कारवेत्ता' आसिक्तशुचिसम्मृष्टरथ्यान्तरापणवीथिकां यावद्गन्ध-वर्तिभूतां कुरु, कारय, कृत्वा, कारयित्वा 'एयमाणत्तियं' एतामाज्ञप्तिकां 'पच्चप्पिणाहि' प्रत्यर्पय ॥ सू० ४५ ॥

करनेवाले कोटवाल को (आमंतेइ) बुलाया, और (आमंतित्ता) बुलाकर (एवं वयासी) इस प्रकार कहा–(खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया) हे देवानुप्रिय! तुम शीघ्र ही (चंपं णयरिं) इस चंपा नगरी की (सब्भिंतरबाहिरियं) भीतर बाहिर से सफाई कराओ। पानी से इसमे छिड़काव कराओ। जगह २ इसे पानी से धुलवाओ। कहीं भी कूडा–करकट का नाम न मिले, इस तरह से इसकी सफाई हो जानी चाहिये। प्रत्येक गली एव बाजारों के मार्ग सब बहुत ही अच्छी तरह से साफसूफ किये जाये। जगह २ सुगंधित जल का, गोरोचन का एव सरस लाल चदन का छिड़काव हो, जिससे यह नगरी सुगंधित द्रव्य जैसी बन जावे। तुम से यही कहना है, जाओ और इस आदेश की शीघ्र से शीघ्र पूर्ति करो और उन कामों को पूरा कर के मुझे शीघ्र सूचित करो ॥ सू० ४५ ॥

રક્ષા કરવાળા કોટવાલને (आमंतेइ) બોલાવ્યા. અને (आमंतित्ता) બોલાવીને (एवं वयासी) આ પ્રકારે કહ્યું. (खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया) હે દેવાનુપ્રિય! તમે જલદીથી (चंपं णयरिं) આ ચંપાનગરીની (सब्भिंतरबाहिरियं) અંદર તથા બહારથી સફાઈ કરાવો, તેમા પાણીનો છંટકાવ કરાવો, ઠેક–ઠેકાણે તેને પાણીથી ધોવરાવો. ક્યાંય પણ કૂડાકરકટનુ નામ ન રહે એમ તેની સફાઈ થવી જોઇએ પ્રત્યેક ગલી તેમજ બજારના રસ્તા ખૂબજ સારી રીતે સાફસૂફ કરવા. ઠેકઠેકાણે સુગંધિત જલનો, ગોશીર્ષ–સુખડનો તેમજ સરસ રક્ત ચંદનનો છંટકાવ હોય, જેથી આ નગરી સુગંધિત ચીજ જેવી બની જાય. તમને એજ કહેવાનુ છે. જાઓ અને આદેશને જલ્દી પૂર્ણ કરો અને તે કામો પૂરા કરીને મને જલ્દી ખબર કરો. (સૂ० ૪૫)

मूलम्—तए णं से णयरगुत्तिए बलवाउयस्स एयमट्ठं (सोच्चा) आणाए विणएणं वयणं पडिसुणेइ, पडिसुणित्ता चंपं णयरिं सब्भिंतरबाहिरियं आसित्त जाव कारवेत्ता जेणेव

---

टीका—'तए णं' इत्यादि। 'तए णं से णयरगुत्तिए' ततः खलु स नगरगुप्तिको 'बलवाउयस्स एयमट्ठं' बलव्यापृतस्यैतमर्थं 'सोच्चा' श्रुत्वा 'आणाए विणएणं वयणं पडिसुणेइ' आज्ञाया विनयेन वचनं प्रतिशृणोति, 'पडिसुणित्ता चंपं णयरिं सब्भिंतरबाहिरियं आसित्त जाव कारवेत्ता' प्रतिश्रुत्य चम्पां नगरीं साभ्यन्तरबाह्यामासिच्य यावत् कारयित्वा 'जेणेव बलवाउए तेणेव उवागच्छइ' यत्रैव बलव्यापृतस्त-

---

'तए णं से णयरगुत्तिए' इत्यादि।

(तए णं) इसके बाद (से णयरगुत्तिए) उस नगररक्षक कोटवालने (बलवाउयस्स) सेनापति के (एयमट्ठं) नगर की सफाई कराने के आदेश को (सोच्चा) सुनकर (आणाए वयणं विणएणं) आज्ञा के वचन को बड़े विनय के साथ (पडिसुणेइ) स्वीकार किया। (पडिसुणित्ता चंपं णयरिं सब्भिंतरबाहिरियं) स्वीकार करने बाद ही उसने चंपानगरी के भीतर बाहिर सब तरफ से (आसित्त जाव कारवेत्ता) सफायी करवा दी। पहिले उसने उसे सब जगह पानी के छिड़काव से सिचवाया। गली-कूचों में जो कूडा—करकट पडा हुआ था उसकी सफाई करवाई। बाजारो के रास्तों को तथा नालियों को अच्छी तरह से झाड़—पोंछकर साफ करवाया, मतलब यह कि सफाई में किसी भी तरह की त्रुटि नहीं रखी। जब नगरी अच्छी तरह भीतर—बाहिर से साफ हो

---

"तए णं से णयरगुत्तिए" ઇત્યાદિ.

(तए णं) ત્યાર પછી (से णयरगुत्तिए) તે નગરરક્ષક કોટવાલે (बलवाउयस्स) સેનાપતિના (एयमट्ठं) નગરની સફાઇ કરાવવાના આદેશને (सोच्चा) સાંભળીને (आणाए वयणं विणएणं) આજ્ઞાનાં વચનોને બહુ વિનયપૂર્વક (पडिसुणेइ) સ્વીકાર કર્યો, (पडिसुणित्ता चंपं णयरिं सब्भितरबाहिरियं) સ્વીકાર કર્યા પછી જ તેણે ચંપાનગરીની અંદર અને બહાર બધી તરફથી (आसित्त जाव कारवेत्ता) સફાઇ કરાવી લીધી. પહેલાં તેણે તેમા બધી જગાએ પાણીના છટકાવ કરાવ્યા. ગલીકુંચીમાં જે કચરો-પૂંજો પડયો હતો તેની સફાઈ કરાવી. બજારોના રસ્તા સારી રીતે વાળઝુડ કરી સાફ કરાવ્યા. મતલબ એ કે સફાઇમા કોઇપણ પ્રકારની ત્રુટિ રાખી નહિ. જ્યારે નગરી સારી રીતે અંદર અને

बलवाउए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता एयमाणत्तियं पच्चप्पिणइ ॥ सू० ४६ ॥

मूलम्—तए णं से बलवाउए कोणियस्स रण्णो भंभसारपुत्तस्स आभिसेक्कं हत्थिरयणं पडिकप्पियं पासइ, हय—गय-

त्रैवोपागच्छति 'उवागच्छित्ता एयमाणत्तियं पच्चप्पिणइ' उपागत्य एतामाज्ञप्तिकां प्रत्यर्पयति ॥ सू० ४६ ॥

टीका—'तए णं' इत्यादि। 'तए णं से बलवाउए' ततः खलु स बलव्यापृतः 'कोणियस्स रण्णो भंभसारपुत्तस्स' कूणिकस्य राज्ञो भंभसारपुत्रस्य 'आभिसेक्कं हत्थिरयणं पडिकप्पियं' आभिषेक्यं हस्तिरत्नं परिकल्पितं 'पासइ' पश्यति, 'हयगय जाव सण्णाहियं' हय-गज-यावत् सन्नाहितां 'पासइ' पश्यति, अत्र यावच्छब्देन

चुकी तब फिर वह कोटवाल (जेणेव बलवाउए तेणेव उवागच्छइ) जहाँ सेनापति था वहाँ पर पहुँचा। पहुँच कर उसने नगरी साफ हो चुकी है इस बात की उसे खबर दी ॥ सू० ४६ ॥

'तए णं से बलवाउए' इत्यादि।

(तए णं) इसके बाद (से बलवाउए) उस सेनापतिने (भंभसारपुत्तस्स) भंभसार अर्थात् श्रेणिक के पुत्र (कोणियस्स रण्णो) कूणिक राजा के (आभिसेक्कं) अभिषिक्त-पट्ट (हत्थिरयणं) हस्तिरत्नको (पडिकप्पियं) अच्छी तरह से शृंगारित किया हुआ (पासइ) देखा। (हयगय जाव सण्णाहियं पासइ) तथा—हय—गज आदि से युक्त चतुरंगिणी सेना को भी सन्नद्ध देखा। (सुभद्दापमुहाणं देवीणं

બહારથી સાફ થઈ ત્યારે વળી તે કોટવાલ (जेणेव बलवाउए तेणेव उवागच्छइ) જ્યાં સેનાપતિ હતા ત્યાં પહોંચ્યો અને પહોંચીને તેણે નગરી સાફ થઈ ગઈ છે, એ વાતની તેને ખબર દીધી. (સૂ૦ ૪૬)

'तए णं से बलवाउए' ઇત્યાદિ.

(तए णं) ત્યારપછી [से बलवाउए] તે સેનાપતિએ [भंभसारपुत्तस्स] ભંભસાર અર્થાત્ શ્રેણિકના પુત્ર (कोणियस्स रण्णो) કૂણિક રાજાના [आभिसेक्कं] આભિષેક્ય-પટ્ટ (हत्थिरयणं) હાથીરત્નને (पडिकप्पियं) સારી રીતે શણગારેલો (पासइ) જોયો. (हयगय जाव सण्णाहियं पासइ) તથા—હય ગજ આદિથી યુક્ત ચતુરંગિણી

जाव-सण्णाहियं पासइ, सुभद्दापमुहाणं देवीणं पडिजाणाइं उवट्ठवियाइं पासइ, चंपं णयरिं सब्भितर जाव गंधवट्टिभूयं कयं पासइ, पासित्ता हट्ठतुट्ठचित्तमाणंदिए पीयमणे जाव हियए जेणेव कूणिए राया भंभसारपुत्ते तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता

'रथ-प्रवरयोध-कलिता च चतुरङ्गिणीं सेनाम्' इति द्रष्यम्, '**सुभद्दापमुहाणं देवीणं**' सुभद्राप्रमुखाणा=सुभद्रादीना देवीना '**पडिजाणाइं उवट्ठवियाइं**' प्रतियानानि=शकटानि उपस्थापितानि '**पासइ**' पश्यति, '**चंपं णयरिं सब्भितर जाव गंधवट्टिभूयं कयं पासइ**' चम्पा नगरीं साऽभ्यन्तरा यावद् गन्धवर्तिभूतां कृतां पश्यति, दृष्ट्वा '**हट्ठ-तुट्ठ-चित्त-माणंदिए**' हृष्टतुष्टचित्ताऽऽनन्दित '**पीयमणे जाव हियए**' प्रीतमना यावद् हृदयो '**जेणेव कूणिए राया भंभसारपुत्ते**' यत्रैव कूणिको राजा भंभसारपुत्र', '**तेणेव उवागच्छइ**' तत्रैवोपागच्छति, '**उवागच्छित्ता**' उपागत्य '**करयल जाव एवं वयासी**'

**पडिजाणाइं उवट्ठवियाइं पासइ**) सुभद्राप्रमुख देवियो के लिये आये हुए रथो को भी देखा। (**चंपं णयरिं सब्भितर जाव गंधवट्टिभूयं कयं पासइ**) और यह भी देखा कि चपानगरी भीतर बाहिर से अच्छी तरह से स्वच्छ हो चुकी है, एवं उससे सुगंधि की महक उठ रही है। (**पासित्ता हट्ठ-तुट्ठ-चित्त-माणदिए पीयमणे जाव हियए जेणेव कूणिए राया भंभसारपुत्ते तेणेव उवागच्छइ**) यह सब देखकर वह बहुत ही खुश हुआ हर्ष के मारे वह फूला नही समाया। प्रसन्न मन होकर वह शीघ्र ही जहा श्रेणिक के पुत्र कूणिक राजा थे वहां पहुँचा। (**उवागच्छित्ता करयल जाव एवं वयासी**) पहुँचकर उसने सर्वप्रथम राजा को दो हाथ जोडकर प्रणाम किया और

સેનાને પણ પાસેજ જોઈ (सुभद्दापमुहाणं देवीण पडिजाणाइ उवट्ठवियाइं पासइ) સુભદ્રાપ્રમુખ દેવીઓને માટે આવેલા રથોને પણ જોયા (चंपं णयरिं सब्भितर जाव गंधवट्टिभूयं कयं पासइ) અને એ પણ જોયુ કે ચંપાનગરી અદર અને બહારથી સારી રીતે સ્વચ્છ થઈ ગઈ છે, તેમજ તેમાથી સુગધીની મહક ચાલી રહી છે (पासित्ता हट्ठ-तुट्ठ-चित्त-माणंदिए पीयमणे जाव हियए जेणेव कूणिए राया भंभसारपुत्ते तेणेव उवागच्छइ) આ બધુ જોઈને તે બહુ જ ખુશ થયો અને અત્યત હર્ષિત થઈ ગયો મન પ્રસન્ન થવાથી તુરત જ જ્યા શ્રેણિકના પુત્ર કૂણિક રાજા હતા ત્યાં પહોંચ્યો (उवागच्छित्ता करयल जाव

**करयल जाव एवं वयासी–कप्पिए णं देवाणुप्पियाणं आभिसेक्के हत्थिरयणे, हय-गय-जाव-पवर-जोह-कलिया य चाउरंगिणी सेणा सण्णाहिया, सुभद्दापमुहाण य देवीणं बाहिरियाए उवट्ठाणसालाए पाडियक्कपाडियक्काइं जत्ताभिमुहाइं जुत्ताइं जाणाइं उवट्ठावियाइं,**

---

करतल यावदेवम् अवादीत्–'**कप्पिए णं देवाणुप्पियाणं आभिसेक्के हत्थिरयणे**' कल्पितं खलु देवानुप्रियाणामाभिषेक्यं हस्तिरत्नम् '**हयगयरहपवरजोहकलिया य**' हयगजरथप्रवरयोधकलिता च '**चाउरंगिणी सेणा सण्णाहिया**' चतुरङ्गिणी सेना सन्नाहिता, '**सुभद्दापमुहाणं य देवीणं**' सुभद्राप्रमुखानां च देवीनां '**बाहिरियाए उवट्ठाणसालाए**' बाह्यायामुपस्थानशालायां '**पाडियक्कपाडियक्काइं**' प्रत्येकं प्रत्येकं '**जत्ताभिमुहाइं जुत्ताइं जाणाइं उवट्ठावियाइं**' यात्राभिमुखानि युक्तानि यानानि उपस्थापितानि,

---

फिर इस प्रकार कहने लगा कि (**कप्पिए णं देवाणुप्पियाणं आभिसेक्के हत्थिरयणे**) हे देवानुप्रिय ! आपका आभिषेक्य हस्तिरत्न शृंगारित हो चुका है। (**हय–गय–रह–पवरजोह–कलिया य चाउरंगिणी सेणा सण्णाहिया**) घोडे, हाथी, रथ एव सुभटों से युक्त चतुरगिणी सेना भी सजा–वजाकर तैयार की जा चुकी है। (**सुभद्दापमुहाण य देवीणं बाहिरियाए उवट्ठाणसालाए पाडियक्कपाडियक्काइं जत्ताभिमुहाइं जुत्ताइं जाणाइं उवट्ठावियाइं** सुभद्राप्रमुख देवियों के भी बाहिर की उपस्थानशाला में अलग २ बैठने के लिये, यात्रा के योग्य एवं अच्छे २ बैलो से युक्त ऐसे रथ लाकर उपस्थित कर दिये

---

एवं वयासी) પહોચીને તેણે સર્વથી પહેલા રાજાને બન્ને હાથ જોડી પ્રણામ કર્યા અને પછી તે આ પ્રકારે કહેવા લાગ્યો કે (कप्पिए णं देवाणुप्पियाणं आभिसेक्के हत्थिरयणे) હે દેવાનુપ્રિય ! આપનો આભિષેક્ય હાથીરત્ન શણગારાઈ ગયો છે. (हय–गय–रह–पवरजोह–कलिया य चाउरंगिणी सेणा सण्णाहिया) ઘોડા, હાથી, રથ તેમજ સુભટોથી યુક્ત ચતુરંગિણી સેના પણ સજ્જ થઈ ગઈ છે. (सुभद्दापमुहाण य देवीणं बाहिरियाए उवट्ठाणसालाए पाडियक्कपाडियक्काइं जत्ताभिमुहाइं जुत्ताइं जाणाइं उवट्ठावियाइं) સુભદ્રાપ્રમુખ દેવીઓને માટે પણ બહારની ઉપસ્થાનશાલામાં અલગ અલગ બેસવાને સારૂ, યાત્રાને યોગ્ય તેમજ સારા સારા બળદથી યુક્ત એવા રથ લઈ આવી હાજર રાખેલા છે. (चंपा णयरी सब्भिंतरबाहिरिया आसित्त-जाव-गंधवट्टिभूया कया)

चंपा णयरी सब्भिंतरबाहिरिया आसित्त जाव गंधवट्टिभूया कया, तं णिज्जंतु णं देवाणुप्पिया ! समणं भगवं महावीरं अभिवंदिउं ॥ सू० ४७ ॥

मूलम्—तए णं से कूणिए राया भंभसारपुत्ते बल-

'चंपा णयरी सब्भितरबाहिरिया' चम्पा नगरी साऽभ्यन्तरबाह्या 'आसित्त जाव गंधवट्टि-भूया कया' आसिक्त यावद् गन्धवर्तिभूता कृता, 'तं णिज्जतु णं देवाणुप्पिया' तन्निर्यान्तु खलु देवानुप्रियाः! 'समणं भगवं महावीर अभिवंदिउं' भगवन्तं महावीरमभिवन्दितुम् ॥ सू० ४७ ॥

टीका—'तए ण' इत्यादि। 'तए णं' ततः=सेनापतिनिवेदनानन्तरं खलु 'से कूणिए राया भंभसारपुत्ते' स कूणिको राजा भंभसारपुत्रः 'बलवाउयस्स अंतिए' बलव्यापृतस्याऽन्तिके=बलव्यापृतमुखात् 'एयमट्ठं' एतमर्थं—'भवदाज्ञानुसारेण सर्वं सम्पा-

है। (चंपा णयरी सब्भितरबाहिरिया आसित्त जाव गंधवट्टिभूया कया) तथा चपानगरी भी भीतर बाहिर से अच्छी तरह झड़वाकर साफ करा दी गई है। उसमें जल भी छिडकवा दिया गया है, यावत् वह सुगंधित द्रव्य जैसी बन चुकी है, (तं देवाणुप्पिया) अतः हे देवानुप्रिय! (समणं भगवं महावीरं अभिवंदिउं णिज्जंतु) अब आप श्रमण भगवान् महावीर को वंदना करने के लिये पधारे ॥ सू० ४७ ॥

'तए णं से कूणिए राया भंभसारपुत्ते' इत्यादि।

(तए णं) इसके बाद (भंभसारपुत्ते से कूणिए राया) भंभसार अर्थात् श्रेणिक के पुत्र कूणिक राजा (बलवाउयस्स) सेनापति के मुख से (एयमट्ठं सोच्चा) हाथी आदि की

તથા ચંપાનગરી પણ અંદર-બહારથી સારી રીતે વાળીઝૂડી સાફ કરાવી દીધી છે. તેમાં પાણી પણ છંટાવ્યું છે. જેથી તે સુગંધિત દ્રવ્ય જેવી બની ગઇ છે (तं देवाणुप्पिया) માટે હે દેવાનુપ્રિય! (समणं भगवं महावीरं अभिवंदिउ णिज्जतु) હવે આપ શ્રમણ ભગવાન મહાવીરને વંદના કરવા સારૂ પધારો. (સૂ. ૪૭)

'तए णं से कूणिए राया भंभसारपुत्ते' ઇત્યાદિ

(तए णं) ત્યાર પછી (भंभसारपुत्ते से कूणिए राया) ભંભસાર અર્થાત્ શ્રેણિકના પુત્ર કૂણિક રાજા (बलवाउयस्स) સેનાપતિના મુખથી [एयमट्ठं सोच्चा] હાથી

वाउयस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म हट्ठतुट्ठ जाव हियए जेणेव अट्टणसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अट्टणसालं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता अणेग-वायाम-जोग्ग-वग्गण-वामद्दण-मल्लजुद्ध-करणेहिं संते परिस्संते सयपागसहस्सपागेहिं सुगंध-

---

दितम्'-एतद्रूपां वार्ता 'सोच्चा' श्रुत्वा 'णिसम्म' निशम्य-हृदि धृत्वा, 'हट्ठ-तुट्ठ जाव हियए' हृष्ट-तुष्ट-यावद्धृदय'-परमप्रसन्नमानस सन् 'जेणेव' यत्रैव 'अट्टणसाला' अट्टनशाला-व्यायामशाला 'तेणेव उवागच्छइ' तत्रैवोपागच्छति. 'उवागच्छित्ता' उपागत्य 'अट्टणसालं अणुप्पविसइ' अट्टनशालामनुप्रविशति. 'अणुप्पविसित्ता' अनुप्रविश्य 'अणेग-वायाम-जोग्ग-वग्गण-वामद्दण-मल्लजुद्ध-करणेहिं' अनेक-व्यायाम-योग्य-वल्गन-व्यामर्दन-मल्लयुद्ध-करणै'-अनेके ये व्यायामा'=शारीरिकपरिश्रमा तद्योग्यं=तदनुकूलं. वल्गनं=कूर्दनं, व्यामर्दन=परस्परबाह्वाद्यङ्गमोटन, मल्लयुद्धं-मल्लक्रीडनम्, करणानि=मुद्गरादिचालनानि तै सर्वै' 'संते' श्रान्त'-सामान्यत', 'परिस्संते'

---

पूरी तैयारी के समाचार को सुनकर (णिसम्म) एव अच्छी तरह से विचार कर (हट्ठ-तुट्ठ-जाव-हियए) अपने मनमे बहुत ही अधिक हर्षित हुए एव सतुष्ट हुए। (जेणेव अट्टणसाला तेणेव उवागच्छइ) पश्चात् वे जहां व्यायामशाला थी वहाँ पर पहुँचे। (उवागच्छित्ता अट्टणसालं अणुपविसइ) पहुँचते ही वे उसमे प्रविष्ट हुए। (अणुपविसित्ता अणेग-वायाम-जोग्ग-वग्गण-वामद्दण-मल्लजुद्ध-करणेहिं संते परिस्संते) प्रविष्ट होकर उन्होंने वहा पर अनेक प्रकार का व्यायाम-शारीरिक परिश्रम किया, शारीरिक परिश्रम के योग्य दौड़ना-कूदना प्रारभ किया। अपने अग उपांगोंका अच्छी तरह से मर्दन

---

આદિની પુરેપુરી તૈયારીના સમાચારને સાભળીને (णिसम्म) તેમજ સારી રીતે વિચાર કરીને (हट्ठ-तुट्ठ-जाव-हियए) પોતાના મનમા બહુજ હર્ષિત થયા, તેમજ સંતુષ્ટ થયા (जेणेव अट्टणसाला तेणेव उवागच्छइ) પછી તેઓ જ્યા વ્યાયામશાળા હતી ત્યા પહોચ્યા (उवागच्छित्ता अट्टणसालं अणुपविसइ) પહોંચતાજ તે તેમા દાખલ થયા. (अणुपविसित्ता अणेग-वायाम-जोग्ग-वग्गण-वामद्दण-मल्लजुद्ध-करणेहिं संते परिस्संते) દાખલ થઇને તેમણે ત્યા અનેક પ્રકારના વ્યાયામ-શારીરિક કસરત કરી. શારીરિક પરિશ્રમને યોગ્ય દોડવા-કૂદવાનો પ્રારભ કર્યો પોતાના અગ-ઉપાગોને આમ તેમ વાળ્યા મલ્લોની સાથે કુસ્તી કરી. ત્યા રાખવામા આવેલ મુદ્દગરો ફેરવ્યા. આ ક્રિયાઓથી તેઓ પહેલા

**तेल्लमाइएहिं पीणणिज्जेहिं दप्पणिज्जेहिं मयणिज्जेहिं विंहणिज्जेहिं सव्विंदियगायपल्हायणिज्जेहिं अब्भिंगेहिं अब्भिंगिए**

परिश्रान्त –अङ्गप्रत्यङ्गापेक्षया, '**सयपाग–सहस्सपागेहिं**' शतपाकसहस्रपाकै, शतकृत्व: पाको येषु ते शतपाका:, शतद्रव्यकौषधिमिश्रणेन वा पाको येषु ते, शतकार्षापणमूल्यक-द्रव्यमिश्रणेन वा पाको येषु ते शतपाकास्तैलविशेषा:, एव सहस्रपाका अपि, ततस्तयो द्वन्द्व:, तैस्तैलविशेषै:, सुगन्धितैलादिकै: '**पीणणिज्जेहिं**' प्रीणनीयै =रसरुधिरादिधातुसुखप्रदै., '**दप्पणिज्जेहिं**' दर्पणीयै =बलवर्द्धकै:, '**मयणिज्जेहिं**' मदनीयै =कामवर्द्धकै:, '**विंहणिज्जेहिं**' बृंहणीयै –मांसोपचयकारिभि:, '**सव्विंदिय-गाय-पल्हायणिज्जेहिं**' सर्वेन्द्रिय–गात्र–प्रह्लादनीयै, सर्वेषाम इन्द्रियाणाम्, गात्राणां प्रह्लादनीयै –प्रह्लादजनकै,

किया। मल्लों के साथ कुश्ती लडी। वहां पर रखे हुए मुद्गरों को भी फिराया। इन क्रियाओं से वह पहिले साधारण श्रान्त हुए एवं बाद में अधिक परिश्रान्त हुए। इस तरह जब अच्छी रीति से वे खूब व्यायाम कर चुके तब (**सयपागसहस्सपागेहिं**) उन्हों ने शत *पाकवाले एव सहस्रपाकवाले तैलों से (**पीणणिज्जेहिं दप्पणिज्जेहिं**) जो तेल प्रीणनीय–रस–रुधिर आदिवर्धक एवं दर्पणीय–बलवर्द्धक होते है, (**मयणिज्जेहि**) कामवर्द्धक होते हैं, (**विंह-णिज्जेहिं**) बृहणीय–मासबढानेवाले होते है, (**सव्विदिय–गाय–पल्हायणिज्जेहिं**) समस्त इन्द्रिय एव समस्त शरीर को आनन्द देनेवाले होते है ऐसे तेलो से तथा (**अब्भिंगेहिं**)

* सौ वार पकाये गये, अथवा सौ प्रकार की औषधियो को मिश्रित कर पकाये गये, अथवा सौ रुपये मूल्यवाली औषधियों को गलाकर पकाये गये ऐसे तैलों से। इसी प्रकार सहस्र-पाक में भी समझना चाहिये।

સાધારણ થાક્યા, તેમજ ત્યાર પછી વધારે થાક લાગ્યો આવી રીતે જ્યારે બહુ કસરત કરી લીધી ત્યારે (सयपागसहस्सपागेहि) [1] તેમણે, શતપાકવાળા તેમજ સહસ્રપાકવાળા તેલોથી કે જે તેલો (पीणणिज्जेहि दप्पणिज्जेहिं) પ્રીણનીય-રસ રૂધિર આદિ વર્ધક તેમજ દર્પણીય–બલવર્ધક હોય છે, (मयणिज्जेहि) કામવર્ધક હોય છે, (विंहणिज्जेहिं) બૃંહણીય–માંસવર્ધક હોય છે, (सव्वि-दिय–गाय–पल्हायणिज्जेहिं) સમસ્ત ઇંદ્રિયો તેમજ સમસ્ત શરીરને આનંદ

[1] સોવાર પકાવેલું અથવા સો પ્રકારની ઓષધીઓથી મિશ્રિત કરી પકાવેલું અથવા સો રૂપિયાની કિંમતની ઓષધોઓને ગાળીને પકાવેલ એવા તેલો આજ રીતે સહસ્રપાકમા પણ સમજવું જોઇએ.

**समाणे तेल्लचम्मंसि पडिपुण्ण-पाणि-पाय-सुउमाल-कोमल-तलेहिं पुरिसेहिं छेएहिं दक्खेहिं पट्ठेहिं कुसलेहिं मेहावीहिं निउण-**

'अब्भिगेहिं' अभ्यङ्गैः-स्नेहनैः 'अब्भिगिए समाणे' अभ्यङ्गितः-कृताभ्यङ्गः सन् 'तेल्लचम्मसि' तैलचर्मणा, अत्र तृतीयार्थे सप्तमी, तैलानुलिप्तशरीरस्य मर्दनसाधनरूपं चर्म 'तैलचर्म' इत्युच्यते, 'संवाहिए समाणे' संवाहितः सन्-इत्युत्तरेण अन्वयः, कैः संवाहित इत्याह-'पुरिसेहिं' पुरुषैः-अङ्गसंवाहननियुक्तभृत्यैः, तैः कीदृशैरित्याह- 'पडिपुण्ण-पाणिपाय-सुउमाल-कोमल-तलेहिं' प्रतिपूर्ण-पाणिपाद-सुकुमार-कोमल-तलैः-प्रतिपूर्णानाम्=अविकलानां, पाणिपादानां सुकुमारकोमलानि=अतिमृदुलानि तलानि येषां ते तथा तैः, 'छेएहिं' छेकैः=मर्दनकलानिपुणैः, 'दक्खेहिं' दक्षैः=अविलम्बित-कारिभिः, मर्दनकार्येऽग्रेसरैः, 'पट्ठेहिं' प्रष्ठैः, 'कुसलेहिं' कुशलैः=मर्दनविधिज्ञैः, 'मेहावीहिं' मेधाविभिः-प्रतिभाशालिभिः, 'निउण-सिप्पो-वगएहिं' निपुणशिल्पोपगतैः,

उबटनों से (अब्भिगिए समाणे) शरीर की खूब मालिश करवाई। *(तेलचम्मंसि) तैल-चर्मसे मालिस करनेवाले (पुरिसेहिं) पुरुषों ने कि जिनके (पडिपुण्ण-पाणि-पाय-सुउ-माल-तलेहिं) हाथ और पैर के तलवे अधिक सुकुमार थे, (छेएहिं) मर्दन करनेकी कला में जो अधिक निपुण थे, (दक्खेहिं) इसीलिये जो इस कला के जाननेवालों में सर्वप्रथम गिने जाते थे, (पट्ठेहिं) मर्दन करने की विधि क्या है और किस ढग से किस समय कैसा मर्दन करना चाहिये-इत्यादि बातो में जो विशेष पटु थे, (मेहावीहिं) नवीन २ रीति से

* यहां तृतीया के अर्थ में सप्तमी विभक्ति हुई है, तैल से चिकने हुए शरीर को मर्दन करने का साधनरूप चर्म तैलचर्म कहलाता है।

देवावाળा હોય છે, એવા તેલોથી, તથા (अब्भिगेहिं) ઉવટનોથી (अब्भिगिए समाणे) શરીરની ખૂબ માલિશ કરાવી [१](तेलचम्मंसि) તૈલચર્મથી માલિશ કરવાવાલા (पुरिसेहिं) પુરૂષો કે જેના (पडिपुण्ण-पाणि-पाय-सुउमाल-तलेहिं) હાથ તથા પગના તળા બહુ સુકુમાર કોમળ હતાં, (छेएहिं) મર્દન કરવાની કળામા જે બહુ નિપુણ હતા, (दक्खेहिं) આથી જે આ કળાના જાણકારમા સર્વપ્રથમ ગણાતા હતા, (पट्ठेहिं) મર્દન કરવાની વિધિ શું છે અને કેવી રીતે કેવા સમયે કેમ મર્દન કરવું જોઈએ-ઈત્યાદિ વાતોમા જે વિશેષ કુશળ હતા, (मेहावीहिं) નવી નવી રીતે જે મર્દન કરવાની કલાના આવિ-

[૨] અહીં તૃતીયાના અર્થમાં સપ્તમી વિભક્તિ થઇ છે. તેલથી ચીકણાં થયેલ શરીરને મર્દન કરવાનું સાધનરૂપ ચર્મ તૈલચર્મ કહેવાય છે.

**सिप्पो-वगएहिं अब्भिगण-परिमद्दणु-व्वलण-करणगुण-णिम्मा-एहिं अट्ठिसुहाए मंससुहाए तयासुहाए रोमसुहाए चउव्विहाए**

निपुणानि=सूक्ष्माणि यानि शिल्पानि=अङ्गमर्दनादीनि तान्युपगतानि=अधिगतानि यैस्ते तथा तैः, अङ्गमर्दनक्रियाज्ञानसम्पन्नैरित्यर्थः। '**अब्भिगण-परिमद्दणु-व्वलण-करण-गुण-णिम्मा-एहिं**' अभ्यञ्जन-परिमर्दनो-द्वलन-करण-गुण-निर्मातृभिः-अभ्यञ्जनम्=अभ्यङ्गः-तैलमर्दनम्, परिमर्दनम्=अङ्गसंवाहनम्, उद्वलनम्=उद्वर्तनम् तेषां करणे ये गुणाः शरीरस्वास्थ्यकान्तितुष्टिपुष्टिस्फूर्त्यादिरूपाः, तेषां निर्मातृभिः=विधायकैः, कया संवाहित? इत्यत्राऽऽह-'**अट्ठिसुहाए**' अस्थिसुखया=अस्थिसुखकारिण्या, '**मंससुहाए**' मांससुखया=मांससुखकारिण्या, '**तयासुहाए**' त्वक्सुखया, '**रोमसुहाए**' रोमसुखया, '**चउव्विहाए**' चतुर्विधया, '**संवाहणाए**'

जो मर्दन करने की कला के आविष्कारक थे, (**निउण-सिप्पो-वगएहिं**) सूक्ष्म से सूक्ष्म भी अंगमर्दन आदि क्रियाओं के जो पूर्णरूप से ज्ञाता थे, अथवा जिन्होंने इस क्रिया को निपुण कलाचार्य से सीखा था। (**अब्भिगण-परिमद्दणु-व्वलण-करण-गुण-निम्मा-एहिं**) अभ्यंगन-तैलमर्दन, परिमर्दन-अंग के संवाहन एवं उद्वलन-उवटन करने से जो शरीरस्वास्थ्य, कान्ति, तुष्टि-पुष्टि तथा हर एक कार्य में स्फूर्त्ति आदि गुण होते हैं, उन गुणों को वे अपने अभ्यङ्गन आदि कला के द्वारा प्रत्यक्ष कर देते थे। इनलोगों ने राजा का किस प्रकार से संवाहन किया सो कहते हैं-(**अट्ठिसुहाए**) हड्डियों में सुखकारी (**मंससुहाए**) मांस में सुखकारी (**तयासुहाए**) चमडी में सुखकारी (**रोमसुहाए**) रोम २ में सुखकारी, इस प्रकार अस्थिसुखजनक, मांससुखजनक, चर्मसुखजनक एवं रोमसुखजनक रूप से (**चउव्विहाए**) चार प्रकार की (**संवाहणाए**) मालिश क्रिया से (**संवाहिए समाणे**)

જીારક હતા, (निउण-सिप्पो-वगएहिं) સૂક્ષ્મમાં સૂક્ષ્મ પણ અંગમર્દન આદિ ક્રિયાઓના જે સંપૂર્ણ જ્ઞાતા હતા, અથવા જેઓ આ ક્રિયાઓ નિપુણ કલાચાર્ય પાસેથી શીખેલા હતા, (अब्भिगण-परिमद्दणु-व्वलण-करण-गुण-निम्माएहिं) અભ્યંગન-તૈલમર્દન, પરિમર્દન-અંગનું સંવાહન તેમજ ઉદ્વલન-ઉવટન કરવાથી જે શરીરસ્વાસ્થ્ય, કાંતિ, તુષ્ટિ-પુષ્ટિ તથા હરેક કાર્યમાં સ્ફૂર્તિ આદિ ગુણ હોય છે તે ગુણોને તેઓ પોતાના અભ્યંગન આદિ કલાઓ દ્વારા પ્રત્યક્ષ કરી દેતા હતા તે લોકોએ રાજાનું કેવા પ્રકારે સંવાહન કર્યું તે કહે છે-(अट्ठिसुहाए) હાડકામાં સુખકારી (मंससुहाए) માંસમાં સુખકારી (तयासुहाए) ચામડીમાં સુખકારી (रोमसुहाए) રોમ રોમમાં સુખકારી, એ રીતે અસ્થિસુખજનક, માંસસુખજનક, ચર્મસુખજનક તેમજ રોમસુખ-

संवाहणाए संवाहिए समाणे अवगय-खेय-परिस्समे अट्टण-सालाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता जेणेव मज्जणघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता मज्जणघरं अणुपविसइ, अणुप-विसित्ता समुत्त-जाला-उला-भिरामे विचित्तमणि-रयण-

संवाहनया=मर्दनेन **'संवाहिए समाणे'** संवाहितो=मर्दित: सन्, **'अवगय-खेय-परि-स्समे'** अपगत-खेद-परिश्रमः=समपनीतखेदपरिश्रम., **'अट्टणसालाओ'** अट्टनशा-लातः=व्यायामशालात: **'पडिनिक्खमइ'** प्रतिनिष्क्रामति, **'पडिणिक्खमित्ता'** प्रतिनि-ष्क्रम्य, **'जेणेव मज्जणघरं तेणेव उवागच्छइ'** यत्रैव मज्जनगृहं तत्रैवोपागच्छति, **'उवा-गच्छित्ता'** उपागत्य, **'मज्जणघरं अणुपविसइ'** मज्जनगृहमनुप्रविशति, **'अणुपविसित्ता'** अनुप्रविश्य **'समुत्त-जाला-उला-भिरामे'** समुक्त-जाल-ऽऽकुला-ऽभिरामे-समुक्त-जालेन=मुक्तासहितेन जालेन=गवाक्षेण आकुलो=व्याप्त:, अतएव अभिराम:=सुन्दरस्तस्मिन्, **'विचित्त-मणि-रयण-कुट्टिम-तले'** विचित्र-मणि-रत्न-कुट्टिम-तले-विचित्रमणिर-

राजा की खूब मालिश की। जब राजा की अच्छी तरह से मालिश हो चुकी तब वे (**अव-गय-खेय-परिस्समे**) परिश्रम एवं खेद से रहित हो (**अट्टणसालाओ**) उस व्यायाम-शाला से (**पडिणिक्खमइ**) बाहर निकले, (**पडिणिक्खमित्ता**) निकल कर (**जेणेव मज्जणघरे तेणेव उवागच्छइ**) जहां स्नान घर था वहाँ पहुँचे। (**उवागच्छित्ता मज्ज-णघरं अणुपविसइ**) पहुँच कर स्नानघर में प्रविष्ट हुए। (**अणुपविसित्ता**) वहाँ प्रविष्ट होकर (**समुत्त-जाला-उला-भिरामे**) मोतियों की लडियों वाले गोखलों से युक्त होने के कारण अति सुन्दर (**विचित्त-मणिरयण-कुट्टिम-तले**) तथा विविध मणियों से जटित

જનકરૂપી (चउव्विहाए) ચાર પ્રકારની (संवाहणाए) માલિશથી (संवाहिए समाणे) રાજાની ખૂબ માલિશ કરી. જ્યારે રાજાની સારી રીતે માલિશ થઇ રહી ત્યારે તેઓ (अवगय-खेय-परिस्समे) પરિશ્રમ તેમજ ખેદથી મુક્ત થઇ (अट्टण-सालाओ) તે વ્યાયામશાલામાંથી (पडिणिक्खमइ) બહાર નીકળ્યા. (पडिणिक्खमित्ता) નીકળીને (जेणेव मज्जणघरे तेणेव उवागच्छइ) જ્યાં સ્નાનઘર હતું ત્યાં પહોંચ્યા. (उवागच्छित्ता मज्जणघरं अणुपविसइ) પહોંચીને સ્નાનઘરમાં દાખલ થયા. (अणुपविसित्ता) તેમાં દાખલ થઇને (समुत्त-जाला-उला-भिरामे) મોતિઓની લટિઓવાળા ગોખલાઓથી યુક્ત હોવાના કારણે અતિસુંદર, (विचित्त-

कुट्टिमयले रमणिज्जे ण्हाणमंडवंसि णाणा-मणि-रयणभत्ति-चित्तंसि ण्हाणपीढंसि सुहणिसण्णे सुद्धोदएहिं गंधोदएहिं पुप्फोदएहिं सुहोदएहिं पुणो पुणो कल्लाणग-पवर-मज्जण-विहीए मज्जिए, तत्थ कोउयसएहिं बहुविहेहिं कल्लाणग-पवर-मज्जणा-

नैः खचित कुट्टिमतल=भूभागो यस्य स तथा तस्मिन्, 'रमणिज्जे' रमणीये=मनोहरे, 'ण्हाणमंडवंसि' स्नानमण्डपे, 'णाणा-मणि-रयण-भत्ति-चित्तंसि' नाना-मणि-रत्न-भक्ति-चित्रे=विविध-मणि-रत्न-रचनाविचित्रे, 'ण्हाणपीढंसि' स्नानपीठे 'सुहणिसण्णे' सुखनिषण्ण=सुखाऽऽसीनः, 'सुद्धोदएहिं' शुद्धोदकैः=निरवद्यजलैः 'गंधोदएहिं' गन्धोदकैः=श्रीखण्डादिमिश्रितैः जलैः, 'पुप्फोदएहिं' पुष्पोदकैः=पुष्पमिश्रितजलैः, 'सुओदएहिं' सुखोदकैः=नातिशीतोष्णैः 'पुणो पुणो' पुनः पुनः 'कल्लाणग-पवर-मज्जण-विहीए' कल्याणक-प्रवर-मज्जन-विधिना=कल्याणकारक-श्रेष्ठस्नान-विधानेन, 'मज्जिए' मज्जितः-स्नपितः, 'तत्थ' तत्र=स्नानावसरे, 'कोउयसएहिं' कौतुकशतैः, कौतुकानां=दृष्टिदोषनिवारणार्थं

अगन वाले (रमणिज्जे) मनोहर (ण्हाणमंडवंसि) स्नानमंडप में रक्खे हुए (णाणा-मणि-रयण-भत्ति-चित्तंसि) अनेक मणि और रत्नों की रचना से युक्त (ण्हाणपीढंसि) ऐसे स्नान करने के पीठ (बाजोट) पर (सुहणिसण्णे) सुख से बैठे, और वहां बैठ कर (सुद्धोदएहिं) शुद्ध-निर्मल जलसे, (गंधोदएहिं) गंधोदक-चन्दनमिश्रित जल से (पुप्फोदएहिं) पुष्पमिश्रितजल से, (सुहोदएहिं) किञ्चिदुष्ण जल से (पुणो पुणो) वारंवार (कल्लाणग-पवर-मज्जण-विहीए मज्जिए) उन्होंने कल्याणकारक श्रेष्ठ स्नानविधि से स्नान किया। (तत्थ कोउयसएहिं बहुविहेहिं) उस अवसर में विविध प्रकार के अनेक कौतुकों से-दृष्टि-

मणि रयण-कुट्टिम-तले) तथा विविध मणिओथी जडित आंगणावाळा, (रमणिज्जे) मनोहर (ण्हाणमंडवंसि) स्नानमंडपमां राखेला (णाणा-मणि-रयण-भत्ति-चित्तंसि) अनेकमणि तथा रत्नोनी बनावटथी युक्त (ण्हाणपीढंसि) एवी स्नान करवानी पीठ (बाजोठ) उपर (सुहणिसण्णे) सुखेथी बेठा. अने बेसीने (सुद्धोदएहिं) शुद्ध-निर्मळ जळ वडे, (गंधोदएहिं) गंधोदक-चंदन-मिश्रित जलवडे, (पुप्फोदएहिं) पुष्पमिश्रित जल वडे, (सुहोदएहिं) जरा उष्णु जलवडे, (पुणो पुणो) वारंवार (कल्लाणग-पवर-मज्जण-विहीए मज्जिए) तेमणे कल्याणकारक श्रेष्ठ स्नानविधिथी स्नान कर्युं. (तत्थ कोउयसएहिं

**वसाणे पम्हल-सुकुमाल-गंध-कासाइय-लूहियंगे सरस-सुरहि-गोसीस-चंदणा-णुलित्त-गत्ते अहय-सुमहग्घ-दूस-रयण-सुसंवुए**

रक्षाबन्धनादीनां शतैः=बहुविधैर्युक्तः '**कल्लाणग-पवर-मज्जणा-वसाणे**' कल्याणक-प्रवरमज्जनावसाने, स्नानानन्तरमित्यर्थः; '**पम्हल-सुकुमाल-गंध-कासाइय-लूहियंगे**' पक्ष्मल-सुकुमार-गन्धकाषायिका-रूक्षिताऽङ्गः, पक्ष्मला=उत्थितसूक्ष्मतन्तुसमूहयुक्ता, सा च सुकुमारा=सुकोमला गन्धवती च एतादृशी या काषायिका=कषायरक्तशाटिका-अङ्गप्रोञ्छनिका तया रूक्षिताङ्गः-निर्जलीकृतशरीरः, '**सरस-सुरहि-गोसीस-चंदणा-णुलित्त-गत्ते**' सरस-सुरभि-गोशीर्ष-चन्दना-नुलिप्त-गात्रः, तत्र-गोशीर्षचन्दनं=गोशीर्षनाम्ना प्रसिद्धं चन्दनम्। '**अहय-सुमहग्घ-दूस-रयण-सुसंवुए**' अहत-सुमहार्घ्य-दूष्य-रत्न-सुसंवृतः-अहतम्-अखण्डितं=कीटमूषिकादिभिरकर्तितं नूतनमिति भाव, सुमहार्घं=बहुमूल्यं यद् दूष्यरत्नं=प्रधानवस्त्रं तेन सुसंवृतः=सुष्ठु आच्छादितः, परिधृतनूतनबहुमूल्यवस्त्र इत्यर्थः।

---

दोष निवारणार्थ रक्षाबंधनादिकों के अनेक प्रकारों से युक्त उन राजा ने (**कल्लाणग-पवर-मज्जणा-वसाने**) जब उस कल्याणकारक श्रेष्ठ स्नान की समाप्ति हो चुकी तब (**पम्हल-सुकुमाल-गंध-कासाइय-लूहियंगे**) पक्ष्मल-उठे हुए कोमल तंतु वाले सुकुमार एवं सुगंधित कषाय रंग की तोलिया से अपने समस्त शरीर को पोंछा। पश्चात् (**सरस-सुरहि-गोसीसचंदणा-णुलित्त-गत्ते**) समस्त शरीर पर सरस सुगंधित गोशीर्षचंदन का लेप किया। (**अहय-सुमहग्घ-दूसरयण-सुसंवुए**) जब लेप अच्छी तरह से शुष्क हो चुका-तब अहत-कीटमूषक आदि से नहीं काटे गये, नवीन--ऐसे बहुमूल्य प्रधान वस्त्रों को उन्होंने शरीर पर धारण किया। (**सुइ-माला-वण्णग-विलेवणे**) पश्चात् शुद्धपुष्पों की माला

---

**बहुविहेहिं**) ते અવસરે વિવિધ પ્રકારના અનેક કૌતુકો વડે-દૃષ્ટિદોષ-નિવારણાર્થ રક્ષાબંધનાદિ અનેક પ્રકારયુક્ત તે રાજાએ (कल्लाणग-पवर-मज्जणा-**वसाने**) જ્યારે તે કલ્યાણકારક શ્રેષ્ઠ સ્નાનની સમાપ્તિ થઈ ચુકી ત્યારે (पम्हल सुकुमाल-गंधकासाइय-लूहियंगे) પક્ષ્મલ-ઉપસી આવેલા સુવાળા સુતરવાળા કોમળ તેમજ સુગંધિત કષાય રંગના ટુવાલ વડે પોતાનાં સમસ્ત શરીરને લુઈ નાખ્યું. પછી (सरस-सुरहि-गोसीस-चंदणा-णुलित्त-गत्ते) સમસ્ત શરીર પર સરસ તેમજ સુગંધિત ગોશીર્ષ ચંદનનો લેપ કર્યો. (अहय-सुमहग्घ-दूसरयण-**सुसंवुए**) જ્યારે લેપ સારી રીતે સુકાઈ ગયો ત્યારે અહત-કીટમૂષક (કીડા કે ઉંદર) આદિથી કપાયેલાં નહિ એવાં, નવીન-એવાં બહુકિંમતી વસ્ત્રોને તેમણે શરીર ઉપર ધારણ કર્યા. (सुइ-माला-वण्णग-विलेवणे) પછી શુદ્ધ પુષ્પોની

**सुइ-माला-वण्णग-विलेवणे आविद्ध-मणि-सुवण्णे कप्पिय-हार-द्धहार-तिसरय-पालंब-पलंबमाण-कडिसुत्त-सुकय-सोभे पिणद्ध-गेविज्ज-अंगुलिज्जग-ललियंगय-ललिय-कयाभरणे वर-**

'सुइ-माला-वण्णग-विलेवणे' शुचि-माला-वर्णक-विलेपनः-शुचि=शुद्धं यत् मालावर्णकविलेपन--तत्र-माला=पुष्पमाला, वर्णकः=अङ्गरागविशेषः तस्य विलेपनं, एतद्द्वयं यस्य स तथा, 'आविद्ध-मणि-सुवण्णे' आविद्ध-मणि-सुवर्णः=परिहितमणिकनक-भूषणः 'कप्पिय-हार-द्धहार-तिसरय-पालंब-पलंबमाण-कडिसुत्त-सुकय-सोभे' कल्पि-हारा-र्द्धहार-त्रिसरक-प्रालम्ब-प्रलम्बमान-कटिसूत्र-सुकृत - शोभः, कल्पितः=परिधृतः, हारः=अष्टादशसरिकः, अर्धहारः=नवसरिकः, त्रिसरिकश्च-'तिलडीहार' इति प्रसिद्धः येन स तथा, प्रालम्ब-झुम्बनकं, प्रलम्बमानो यस्मिन् कटिसूत्रे तत् तेन कटिसूत्रेण='कन्दोरा' इति भाषाप्रसिद्धेन सुकृता=सुष्ठु रचिता शोभा येन स तथा, पदद्वयस्य कर्मधारयः, हारादिधारणेन परमशोभासम्पन्न इत्यर्थः। 'पिणद्ध-गेविज्जग-अंगुलिज्जग-ललियंगय-ललिय-कयाभरणे' पिनद्ध-ग्रैवेयका-ङ्गुलीयक-ललिताऽ-ङ्गक-ललित-कृताऽऽभरणः, पिनद्धानि ग्रैवेयकाणि=ग्रीवाभूषणानि, अङ्गुलीयकानि च, येन स तथा, ललिताङ्गके=सुन्दरशरीरे ललितं यथा स्यात् तथा कृत=विन्यस्तमाभरणं येन स तथा,

पहनी, एव शुद्ध सुगधित द्रव्य का विलेपन किया। (आविद्ध-मणि-सुवण्णे) पुनः सुवर्ण के आभूषण कि जिनमें मणि जडे हुए थे पहिने। (कप्पिय-हार-द्धहार-तिसरय-पालंब-पलंबमाण-कडिसुत्त-सुकय-सोभे) अठारह लरका हार पहिरा, नव लर का हार पहिरा, तीन लर का हार पहिरा और लम्बा लटकता हुआ कटिसूत्र (कन्दोरा) पहिरा। (पिणद्ध-गेविज्जग-अंगुलिज्जग-ललियंगय-ललिय-कयाभरणे) गले में और भी सुन्दर आभूषण धारण किये। हाथों की अंगुलियों मे मुद्रिकाएँ पहिरी तथा शरीर पर उस समय के

માળા પહેરી તેમજ શુદ્ધ સુગંધિત દ્રવ્યનું વિલેપન કર્યું. (आविद्ध-मणि-सुवण्णे) વળી સુવર્ણનાં ઘરેણાં કે જેમાં મણિ જડેલા હતા તે પહેર્યા. (कप्पिय-हार-द्धहार-तिसरय-पालंब-पलंबमाण-कडिसुत्त-सुकय-सोभे) અઢાર સરનો હાર પહેર્યો, નવ સરનો હાર પહેર્યો, ત્રણ સરનો હાર પહેર્યો તથા લાંબો લટકતો કટિ-સૂત્ર (કંદોરો) કમરમાં ધારણ કર્યો. (पिणद्ध-गेविज्जग-अंगुलिज्जग-ललियंगय-ललिय-कयाभरणे) ગળામાં બહુ જ સુંદર આભૂષણ ધારણ કર્યાં. હાથોનાં આંગળામાં વીંટીઓ પહેરી તથા શરીર ઉપર તે સમયને ઉચિત બીજાં પણ

**कडग-तुडिय-थंभिय-भुए अहिय-रूव-सस्सिरीए मुद्दिया-पिंगलंगुलीए कुंडल-उज्जोविया-णणे मउड-दित्त-सिरए हारोत्थय-सुकय-रइय-वच्छे पालंब-पलंबमाण-पड-सुकय-उत्तरिज्जे णाणा-**

ततस्तयोः कर्मधारयः । यद्वा—पिनद्धानि यानि ग्रैवेयकाणि अङ्गुलीयकानि च तैर्ललिताङ्गकं, तत्र ललितं कृतमाभरणम्=अन्यद् भूषणजातं येन स तथा। 'वरकडग-तुडिय-थंभिय-भुए' वरकटक-त्रुटिक-स्तम्भित - भुजः, वरकटकत्रुटिकैः=श्रेष्ठवलयबाहुरक्षकाख्यैर्भूषणैर्भूषित-बाहुः, 'अहिय-रूव-सस्सिरीए' अधिकरूपसश्रीकः—अधिकसौन्दर्येण शोभासम्पन्नः, 'मुद्दिया-पिंगलं-गुलीए' मुद्रिका—पिङ्गला—ङ्गुलीकः—मुद्रिकाभिः=अङ्गुलीयकैः पिङ्गला अङ्गुल्यो यस्य स तथा, 'कुंडलउज्जोवियाणणे' कुण्डलोद्द्योतिताऽऽननः—कुण्डलदीप्त्या विद्योतितमुखः, 'मउड-दित्त-सिरए' मुकुट—दीप्त—शिरस्कः, 'हारो-त्थय-सुकय-रइय-वच्छे' हारा—वस्तृत—सुकृत—रतिद—वक्षाः—हारेण अवस्तृतम्=आच्छादितं सुकृतं=शोभनीकृतम् अतएव रतिदं=दृष्टिसुखदं वक्षो यस्य स तथा, 'पालंब-पलंबमाण-पड-सुकय-उत्तरिज्जे' प्रालम्ब - प्रलम्बमान - पट - सुकृतो - त्तरीयः - प्रालम्बेन=दीर्घेण

उचित और भी आभूषण धारण किये। (वर-कडग-तुडिय-थंभिय-भुए) दोनों हाथों में सुन्दर कड़े पहिरे एवं बाहुओं पर भुजबंध बांधे, (अहियरूवसस्सिरीए) इस प्रकार उनके शरीर की शोभा और भी अधिक द्विगुणित हो गई। (मुद्दिया-पिंगलं-गुलीए) उनने जो मुद्रिकाएँ अंगुलियों में पहिर रक्खी थीं उनसे उनकी अंगुलियां सब पीली झायीं से चमकने लगीं। (कुंडलउज्जोवियाणणे) कुण्डलों से मुख चमकने लगा। (मउड-दित्त-सिरए) मुकुट से मस्तक शोभित होने लगा। (हारोत्थय-सुकय-रइय-वच्छे) हार से अच्छादित उनका वक्षःस्थल बड़ा ही मनोहर मालूम होने लगा, अतः देखनेवालों को आनन्द होता था। (पालंब-पलंबमाण-पड-सुकय-उत्तरिज्जे) अधिक लंबे वस्त्र का इनने

આભૂષણુ ધારણુ કર્યા. (वर-कडग-तुडिय-थंभिय-भुए) બન્ને હાથમા સુંદર કડાં પહેર્યાં, તેમજ બાહુઓ ઉપર ભુજબંધ બાંધ્યા. (अहिय-रूव-सस्सिरीए) આ પ્રકારે તેના શરીરની શોભા બહુ વધારે થઇ ગઇ. (मुद्दिया-पिंगलं-गुलीए) તેમણે જે વીંટીઓ આંગળાંમાં પહેરી હતી તેનાથી તેમની બધી આંગળાઓ પીળી ઝાંઇથી ચમકવા લાગી. (कुंडल-उज्जोविया-णणे) કુંડળોથી મુખ ચમકવા લાગ્યું. (मउड-दित्त-सिरए) મુકુટથી મસ્તક શોભવા લાગ્યું. (हारोत्थय-सुकय-रइय-वच्छे) હારથી ઢંકાયેલ તેનું વક્ષસ્થલ (છાતી) બહુજ મનોહર દેખાતુ

**मणि-कणग-रयण-विमल-महरिह-णिउणो-विय-मिसिमिसंत-विर-इय-सुसिलिट्ठ-विसिट्ठ-लट्ठ-संठिय-पसत्थ-आविद्ध-वीर-वलए,**

प्रलम्बमानेन पटेन=वस्त्रेण सुकृतं=सुविन्यस्तम् उत्तरीयम्=उत्तरासङ्गवस्त्रं येन स तथा, 'णाणा-मणि-कणग-रयण-विमल-महरिह-णिउणो-विय-मिसिमिसंत-विरइय-सुसिलिट्ठ-विसिट्ठ-लट्ठ-संठिय-पसत्थ-आविद्ध-वीर-वलए' नाना-मणि-कनक-रत्न-विमल-महार्ह-निपुण-परिकर्मित-देदीप्यमान-विरचित-सुश्लिष्ट-विशिष्ट-लष्ट-सं-स्थित-प्रशस्ता-ऽऽविद्ध-वीर-वलयः-नानाविधानि मणिकनकरत्नानि=चन्द्रकान्तादिमणि-सुवर्ण-कर्केतनादि-रत्नानि यस्मिन् सः, अत एव विमलः=निर्मलः महार्हः=महतां योग्यश्च, तथा-निपुणपरिकर्मितदेदीप्यमानः-निपुणेन=शिल्पकलादक्षेण शिल्पिना 'उविय' परिकर्मितः=संस्कारमापादितः, तत एव 'मिसिमिसंत' देदीप्यमानः=दीप्तिसम्पन्नश्च, पुनः-विरचित-सुश्लिष्ट-विशिष्ट-संस्थितः-विरचितं=निर्मितं-सुश्लिष्टं, शोभनसन्धिकं विशिष्टम्=उत्कृष्टम् लष्टं=मनोहरं संस्थितं=संस्थानम्-आकारो यस्य स तथा, अत एव-प्रशस्तः=प्रशंसनीयः, एतादृशः आविद्धः=परिधृतः वीरवलयो=विजयवलयो येन

उत्तरासंग किया था। (णाणा-मणि-कणग-रयण-विमल-महरिह-निउणो-विय-मिसमिसंत-विरइय-सुसिलिट्ठ-विसिट्ठ-लट्ठ-संठिय-पसत्थ-आविद्ध-वीरवलये) देदीप्यमान तथा निपुण कारीगरों द्वारा सुसंस्कारित एवं बड़े भाग्यशालियों के धारण करने योग्य ऐसे निर्मल अनेक मणियों एवं रत्नों से युक्त सुवर्ण के बने हुए वीरवलय को कि जो सुसंधि से संपन्न, उत्कृष्ट, मनोहर और सुन्दर आकार से विशिष्ट तथा प्रशंसनीय था इनने धारण कर रक्खा था। जिस वलय (कड़े) को धारण कर शत्रु पर विजय प्राप्त की जाती है उस वलय का नाम वीरवलय है. अथवा-जो इस वलय को धारण करता है वह

હતુ, આથી જોનારને આનંદ થતો હતો. (पालंब-पलंबमाण-पड-सुकय-उत्तरिज्जे) ઘણા લાંબા વસ્ત્રનું તેમણે ઉત્તરાસંગ (પછેડી) કર્યું હતુ. (णाणा-मणि-कणग-रयण विमल महरिह-निउणो-विय मिसमिसंत-विरइय-सुसिलिट्ठ-विसिट्ठ-लट्ठ-संठिय-पसत्थ-आविद्ध-वीरवलये) દેદીપ્યમાન અને નિપુણ કારીગરો દ્વારા સુસંસ્કારિત, તેમજ ભાગ્યશાળીઓને ધારણ કરવા યોગ્ય એવાં નિર્મળ, અનેક મણિઓ તથા રત્નોવડે યુક્ત સોનાનું બનાવેલું વીરવલય જે સુસંધિથી સંપન્ન, ઉત્કૃષ્ટ, મનોહર અને સુંદર આકારથી વિશિષ્ટ તથા પ્રશંસનીય હતું તે તેણે ધારણ કર્યું હતુ. જે વલય (કડા)ને ધારણ કરવાથી શત્રુ ઉપર વિજય મેળવાય છે તે વલયનુ નામ વીરવલય છે. અથવા જે આ વલયને ધારણ

**किं बहुणा ! कप्परुक्खए चेव अलंकिय-विभूसिए णरवई सकोरंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं उभओ चउ-चामर-वाल-वीइ-**

स तथा, यं वलयं धृत्वा विजयते तादृग्वलयधारक इत्यर्थः । यद्वा-यदि कश्चिदस्ति वीरस्तदाऽसौ मां विजित्य मम हस्ताद्वहिष्करोत्वेतं वलयमिति स्पर्धयन् यं कटकं हस्ते परिधत्ते स वीरवलय इत्युच्यते । '**किं बहुणा**' किम्बहुना-किमधिकेन वर्णनेन ? '**कप्परुक्खए चेव अलंकियविभूसिए णरवई**' कल्पवृक्ष इवाऽलङ्कृतविभूषितो नरपतिः- अलङ्कृतो मणिरत्नाऽऽभूषणैः, विभूषितश्च महार्हपरिधानीयादिविचित्रवसनैः नरपतिः कूणिको राजा साक्षात्कल्पवृक्ष इव शोभते इति भावः । स नरपतिः '**सकोरंट-मल्ल-दामेण**' सकोरण्ट-माल्य-दाम्ना-कोरण्टस्य माल्यानि=कुसुमानि तेषां दामानि=मालास्तैः सहितेन '**छत्तेणं धरिज्जमाणेणं**' छत्रेण ध्रियमाणेन शोभमानः, '**उभओ चउ-चामर-वाल-वीइयंगे**' उभयतः चतुश्चामरवालवीजिताङ्गः, '**मंगल-जयसद्द-कया-लोए**' मङ्गल-जयशब्द-कृताऽऽलोकः-

इस बात की घोषणा करता है कि जो भी कोई वीर हो वह मेरे हाथ से इस वलय को खेंचे-छुडावे, इस प्रकार की स्पर्धा से वीरों द्वारा जो वलय धारण किया जाता है वह भी वीरवलय कहा गया है। (**किं बहुणा**) अधिक क्या कहा जाय ? (**अलंकिय-विभूसिए**) मणिरत्नादिक के आभूषणों से अलंकृत एवं बहुमूल्य अनेक प्रकार के सुंदर सुदर वस्त्रों से विभूषित (**णरवई**) वे राजा (**कप्परुक्खए चेव**) कल्पवृक्षकी तरह शोभित होने लगे। उनके ऊपर (**सकोरंट-मल्ल-दामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं**) कोरंट के पुष्पों की मालाओ से युक्त छत्र धरा हुआ था, एवं उनके ऊपर (**उभओ चउ-चामर-वाल-वीइयंगे**) दोनों ओर से चार चामर ढोरे जा रहे थे, (**मंगल-जयसद्द-कया-लोए**) तथा उनके देखते ही मनुष्यों ने 'मंगल हो, जय

કરે છે તે એ વાતની ઘોષણા કરે છે કે જે કોઈ પણ વીર હોય તે મારી પાસેથી હાથમાંથી આ વલયને ખેંચીને છોડાવી જાય આ પ્રકારની સ્પર્ધાથી વીરો દ્વારા જે વલય ધારણ કરવામા આવે છે તેને વીરવલય કહેવામાં આવે છે. (किं बहुणा) વધારે શું કહેવું હોય ! (अलंकिय-विभूसिए) મણિરત્નોયુક્ત આભૂષણોથી અલંકૃત તેમજ બહુમૂલ્ય (ઘણાં કિંમતી) અનેક પ્રકારનાં સુંદર વસ્ત્રોથી વિભૂષિત (णरवई) તે રાજા (कप्प-रुक्खए चेव) કલ્પવૃક્ષની પેઠે શોભવા લાગ્યા. તેમના ઉપર (सकोरंट-मल्ल-दामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं) કોરંટના પુષ્પોની માલા વડે યુક્ત છત્ર ધારણ કરાયેલ હતું. તેમજ તેમના ઉપર (उभओ चउ-चामर-वालवीइयंगे) બન્ને બાજુએ મળી ચાર ચામર ઢોળાઇ રહ્યાં હતાં. (मंगल-जयसद्द-कया-लोए) તથા તેમને

यंगे मंगल-जयसद्द-कयालोए मज्जणघराओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता अणेग-गणनायग-दंडनायग-राई-सर-तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाह-दूय-संधिवाल सद्धिं संपडिवुडे धवल-महामेह-णिग्गए इव गहगण-दिप्पंत-

मङ्गलरूपो जयशब्दः कृतो जनेन आलोके=दर्शने यस्य स तथा, 'मज्जणघराओ पडिणिक्खमइ' मज्जनगृहात्प्रतिनिष्क्रामति=बहिर्निर्गच्छति, 'पडिणिक्खमित्ता' प्रतिनिष्क्रम्य 'अणेग-गणनायग-दंडनायग-राई-सर-तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाह-दूय-संधिवाल सद्धिं संपडिवुडे' अनेक-गणनायक-दण्डनायक-राजेश्वर-तलवर-माडम्बिक-कौटुम्बिकेभ्य-श्रेष्ठि-सेनापति-सार्थवाह-दूत-सन्धिपालैः सार्द्धं सम्परिवृतः—अत्रत्यानि पदानि प्राग् व्याख्यातानि, मज्जनगृहान्निष्क्रान्तो नरपतिः क इव शोभते ? इत्याह—'धवल' इत्यादि। 'धवल-महामेह-णिग्गए इव' धवल-महामेघनिर्गत इव-धवलमहामेघतो निर्गतः=मेघावरणविनिर्मुक्त इव 'गहगण-दिप्पंत-रिक्ख-तारागणाण मज्झे

हो', इस प्रकार का शब्द करने लगे। इस प्रकार वे राजा (मज्जणघराओ पडिणिक्खमइ) स्नान घर से निकले। (पडिणिक्खमित्ता) निकलते ही (अणेग-गणनायग-दंडनायग-राई-सर-तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाह-दूय-संधिवाल सद्धिं संपडिवुडे) अनेक गणनायकों, अनेक दंडनायकों, राजा, ईश्वर, तलवर, माडंबिक, कौटुम्बिक, इभ्य, श्रेष्ठी, सेनापति, सार्थवाह, दूत एवं सन्धिपालों से घिरे हुए वे राजा (धवल-महामेह-णिग्गए इव) धवल महामेघ के आवरण से रहित (गहगण-दिप्पंत-रिक्ख-तारागणाण मज्झे ससिव्व) ग्रहगणों के बीच में वर्तमान तथा दीप्यमान ऐसे

જોતાંજ મનુષ્યો 'મંગલ હો જય હો' એ પ્રકારના શબ્દ બોલવા લાગ્યા. આવી રીતે તે રાજા (मज्जणघराओ पडिणिक्खमइ) સ્નાન ઘરમાંથી નીકળ્યા. (पडिणिक्खमित्ता) નીકળતા જ (अणेग-गणनायग-दंडनायग-राई-सर-तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाह-दूय-संधिवाल सद्धिं संपडिवुडे) અનેક ગણનાયકો, અનેક દંડનાયકો, રાજા, ઈશ્વર, તલવર, માડંબિક, કૌટુંબિક, ઈભ્ય, શ્રેષ્ઠી, સેનાપતિ, સાર્થવાહ, દૂત તેમજ સંધિપાલકોથી ઘેરાએલા (णरवई) તે રાજા (धवल-महामेह-णिग्गए इव) ધવલ મહામેઘના આવરણથી મુક્ત (गहगण-दिप्पंत-रिक्ख-तारागणाण मज्झे ससिव्व) ગ્રહગણોના વચમાં વર્તમાન તથા

रिक्ख-तारागणाण मज्झे ससिव्व पियदंसणे णरवई जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव आभिसेक्के हत्थिरयणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अंजण-गिरिकूड-सण्णिभं गयवइं णरवई दुरूढे ॥ सू० ४८ ॥

ससिव्व' ग्रहगण-दीप्यमान-ऋक्ष-तारागणानां मध्ये शशीव=दीप्यमानानाम् ऋक्षाणां=नक्षत्राणां तारागणानां च मध्ये चन्द्र इव, 'पियदंसणे' प्रियदर्शनः 'णरवई' नरपतिः 'जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला' यत्रैव बाह्योपस्थानशाला, 'जेणेव आभिसेक्के हत्थिरयणे' यत्रैवाऽभिषेक्यं=पट्ट हस्तिरत्नम्, 'तेणेव उवागच्छइ' तत्रैवोपागच्छति, 'उवागच्छित्ता' उपागत्य 'अंजणगिरि-कूड-सण्णिभं गयवइं णरवई दुरूढे' अञ्जनगिरिकूटसन्निभं गजपतिं नरपतिर्दूरूढ. = अञ्जनपर्वतशिखराऽऽकारं गजेन्द्रं नरेन्द्रो दूरूढः=आरूढवान् ॥ सू० ४८ ॥

नक्षत्र एवं तारागणों के मध्य में सुशोभित चंद्रमा के समान (पियदंसणे) देखने में बहुत ही सुन्दर मालूम होते थे। मतलब इसका यह है कि यहाँ पर राजा को चंद्रमा की और उनके स्नान घर को शुभ्र मेघों की, तथा गणनायक आदि को नक्षत्र और ताराओं की उपमा दी गई है। इस प्रकार से वे राजा (जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव आभिसेक्के हत्थिरयणे तेणेव उवागच्छइ) जहां पर बाहिर की ओर उपस्थानशाला थी और जहां वह आभिषेक्य हस्तिरत्न खडा हुआ था वहा पहुँचे। (उवागच्छित्ता अंजण-गिरि-कूड-संणिभं गयवइं णरवई दुरूढे) पहुँचते ही वे अंजनगिरि के शिखर के समान उस हाथी पर आरूढ हो गये ॥ सू० ४८ ॥

દીપ્યમાન એવા નક્ષત્ર તેમજ તારાગણોના મધ્યમાં સુશોભિત ચંદ્રમા જેવા (पियदंसणे) જોવામાં બહુજ સુંદર લાગતા હતા. મતલબ એ છે કે અહીં રાજાને ચંદ્રમાની અને તેમના સ્નાનઘરને શુભ્રમેઘોની તથા ગણનાયક આદિને નક્ષત્ર અને તારાઓની ઉપમા આપી છે. આ પ્રકારે તે રાજા (जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव आभिसेक्के हत्थिरयणे तेणेव उवागच्छइ) જ્યાં બહારની બાજુએ ઉપસ્થાનશાલા હતી અને જ્યાં તે આભિષેક્ય હાથીરત્ન ઉભો રહ્યો હતો ત્યા પહોંચ્યા. (उवागच्छित्ता अंजणगिरि-कूड-संनिभं गयवइं णरवई दुरूढे) પહોંચતાં જ અંજનગિરિના શિખરના જેવા તે હાથી ઉપર આરૂઢ થઇ ગયા (સૂ૦ ૪૮)

मूलम्—तए णं तस्स कूणियस्स रण्णो भंभसारपुत्तस्स आभिसेक्कं हत्थिरयणं दुरूढस्स समाणस्स तप्पढमयाए इमे अट्ठट्ठ मंगलया पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठिया, तंजहा-सोवत्थिय-

टीका—गजेन्द्राधिरूढो नरेन्द्रो भगवदभिमुख यियासतीति तस्य पुरतः प्रयातम् 'अष्टमङ्गलादिपदात्यनीकान्त कान्तं राजोचितवस्तुजात वर्णयति—'तए णं' इत्यादि। 'तए णं' ततः—तदनन्तरम्—सेनापतिसमानीतपट्टगजरत्नसमधिरोहणाऽनन्तर 'तस्स कूणियस्स रण्णो भंभसारपुत्तस्स आभिसेक्कं हत्थिरयणं दुरूढस्स समाणस्स' तस्य कूणिकस्य राज्ञो भंभसारपुत्रस्याऽऽभिषेक्यं हस्तिरत्नमधिरूढस्य सत 'तप्पढमयाए इमे अट्ठट्ठ मंगलया पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठिया' तत्प्रथमतया इमान्याष्टाष्ट मङ्गलानि पुरतो यथानुपूर्व्या सम्प्रस्थितानि, 'तंजहा'—तद्यथा—'सोवत्थिय—सिरिवच्छ—णंदियावत्त—वद्धमाणग—भद्दासण—कलस—मच्छ—दप्पणा'—सौवस्तिक—श्रीवत्स—नन्द्यावर्त — वर्द्धमानक—भद्रासन—कलश—मत्स्य—दर्पणा', तत्र—मत्स्य'—चित्रपटलिखितमत्स्यरूप'। एते

'तए णं तस्स कूणियस्स' इत्यादि।

(तए णं) इसके वाद (भंभसारपुत्तस्स) भभसार अर्थात् श्रेणिक के पुत्र (तस्स कूणियस्स रण्णो) उस कूणिक राजा के (आभिसेक्कं हत्थिरयणं) आभिषेक्य हस्तिरत्न के ऊपर (दुरूढस्स समाणस्स) सवार होते ही (तप्पढमयाए) सर्वप्रथम उनके (पुरओ) आगे आगे (इमे अट्ठट्ठ मंगलया अहाणुपुव्वीए संपट्ठिया) ये आठ आठ मांगलिक द्रव्य अनुक्रम से सप्रतिष्ठित हुए—चलने लगे, (तं जहा) वे मागलिक द्रव्य ये है, (सोवत्थिय—सिरिवच्छ—णंदियावत्त-वद्धमाणग—भद्दासण—कलस—मच्छ—दप्पणा) स्वस्तिक, श्रीवत्स, नन्द्यावर्त, वर्धमानक, भद्रासन, कलश, मत्स्य और दर्पण। इनमें से स्वस्तिक, श्रीवत्स, नन्द्यावर्त

"तए णं तस्स कूणियस्स" ઈત્યાદિ.

(तए णं) ત્યાર પછી (भंभसारपुत्तस्स) ભંભસાર અર્થાત્ શ્રેણિકના પુત્ર (तस्स कूणियस्स रण्णो) તે કૂણિક રાજાના (आभिसेक्कं हत्थिरयणं) આભિષેક્ય હસ્તિ-રત્નના ઉપર (दुरूढस्स समाणस्स) સવાર થઈ જતા જ (तप्पढमयाए) સર્વથી પહેલા તેમની (पुरओ) આગળ આગળ (इमे अट्ठट्ठ मंगलया अहाणुपुव्वीए संपट्ठिया) આ આઠ આઠ માગલિક દ્રવ્ય અનુક્રમથી ગોઠવામા આવ્યા, (तंजहा) તે માંગલિક દ્રવ્ય આ હતા. (सोवत्थिय—सिरिवच्छ—णंदियावत्त-वद्धमाणग-भद्दासण—कलस-मच्छ दप्पणा) ૧ સ્વસ્તિક, ૨ શ્રીવત્સ, ૩ નન્દ્યાવર્ત, ૪ વર્ધ-

**सिरिवच्छ-णंदियावत्त-वद्धमाणग-भद्दासण-कलस-मच्छ-दप्पणा । तयाणंतरं च णं पुण्ण-कलस-भिंगारं दिव्वा य छत्तपडागा सचामरा दंसण-रइय-आलोय-दरिसणिज्जा वाउ-द्धूय-विजय-**

माङ्गलिकतया यात्रायामुपयुक्ताः । तदनन्तरं च खलु 'पुण्ण-कलस-भिंगारं' पूर्ण-कलश-भृङ्गार,जलपरिपूर्णा घटा भृङ्गाराश्च, तत्र भृङ्गारः-'झारी' इति प्रसिद्धः, एते पुरः प्रस्थिताः । 'दिव्वा य' दिव्या-शोभना च 'छत्तपडागा' छत्रपताका-छत्रेण सहिता पताका-छत्र-पताका 'सचामरा' सचामरा=चामराभ्यां युक्ता च, 'दंसण-रइय-आलोय-दरिसणिज्जा' दर्शनरचिता-लोक-दर्शनीया-दर्शने=राज्ञो दृष्टिनिपथे रचिता=कृता, आ=समन्तात् लोकैः=जनैः दर्शनीया=दृश्या च, 'वाउ-द्धूय-विजय-वेजयंती य' वातो-द्धूत-विजय-वैजयन्ती च-वातोद्धूता = पवनप्रकम्पिता चासौ विजयवैजयन्ती च = विजयसूचिका ध्वजपताका

और वर्धमानक ये साथिये कहलाते हैं । मत्स्य से यहां चित्रपट में लिखित मत्स्य का ग्रहण किया हुआ समझना चाहिये। ये आठ मंगलस्वरूप होने से प्रस्थान में उपयुक्त गिने जाते हैं । **(तयाणंतरं च णं)** इसके बाद **(पुणकलसभिंगारं दिव्वा य छत्तपडागा सचामरा दंसण-रइय-आलोय-दरिसणिज्जा वाउ-द्धूय-विजय-वेजयंती य ऊसिया गगणतलमणु-लिहंती पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठिया)** कितनेक लोग पूर्णकलश=जल से भरे हुए कलश, तथा जल से भरी हुई झारियाँ लेकर आगे २ चलने लगे। कितनेक चामरसहित सुन्दर छत्र-पताकाओं को लेकर आगे २ चलने लगे ! और कितनेक तो राजा की दृष्टि में आ सके इस प्रकार से रखी हुई, देखने में सुंदर ऊँची अत एव आकाश को छूती हुई ऐसी विजय-

માનક, ૫ ભદ્રાસન, ૬ કલશ, ૭ મત્સ્ય અને ૮ દર્પણ. એમાંથી સ્વસ્તિક, શ્રીવત્સ, નન્દ્યાવર્ત અને વર્ધમાનક એ સાથિયા કહેવાય છે. મત્સ્ય એટલે અહીં ચિત્રપટમાં આળેખેલા માછલાંનું ચિત્ર સમજી લેવું. આ આઠ મંગલ-સ્વરૂપ હોવાથી પ્રસ્થાન (બહાર જતી વખતે) ઉપયોગી ગણાય છે. (तयाणतरं च णं) ત્યાર પછી (पुण्णकलसभिंगारं दिव्वा य छत्तपडागा सचामरा दंसण-रइय-आलोय-दरिसणिज्जा वाउ-द्धूय-विजय-वेजयंती य ऊसिया गगणतलमणुलिहंती पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठिया) કેટલાક લોક પૂર્ણ કલશ-જલથી ભરેલા કળશ તથા જલથી ભરેલી ઝારીઓ લઈને આગળ આગળ ચાલવા લાગ્યા. કેટલાક ચામર સહિત સુંદર છત્ર પતાકાઓને લઈને આગળ આગળ ચાલવા લાગ્યા, અને કેટલાક તો રાજાની નજર પડી શકે એમ રાખેલી, જોવામાં સુંદર

**वेजयंती य ऊसिया गगणतलमणुलिहंती पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठिया। तयाणंतरं च णं वेरुलिय-भिसंत-विमल-दंडं पलंब-कोरंट-मल्लदामो-वसोभियं चंदमंडलणिभं समूसियं विमलं आय-वत्तं पवरं सीहासणं वरमणिरयणपादपीढं सपाउयाजोयसमा-**

'ऊसिया' उच्छ्रिता-उत्थापिता, अतएव 'गगगतलमणुलिहन्ती' गगनतलमनुलिखन्ती=व्योमतल स्पृशन्ती-अत्युच्चा, पुरतो यथानुपूर्व्या सम्प्रस्थिता=प्रचलिता। छत्रं वर्णयन्नाह-'वेरुलिय' इत्यादि। तदनन्तरं खलु '**वेरुलिय-भिसंत-विमल-दंडं**' वैडूर्यभासमान-विमल-दण्डम्-वैडूर्यस्य=रत्नविशेषस्य भासमानो=दीप्यमानो विमलो दण्डो यत्र तत् तादृशम्,-'**पलंब-कोरंट-मल्ल-दामोवसोभियं**' प्रलम्बमान-कोरण्ट-माल्यदामोपशोभितम्' प्रलम्बमानेन कोरण्टाख्यमालेपयोगिकुसुमानां दाम्ना=मालया उपशोभितम्। अतएव-'**चंदमंडलणिभं**' चन्द्रमण्डलनिभं-चन्द्रमण्डलेन समानम्, '**समूसियं**' समुच्छ्रितम्=विस्तारितम्, '**विमलं आयवत्तं**' विमलम् आतपत्रम्, सिंहासनं वर्णयन्नाह-'**पवर-सीहासणं**' इति, प्रवर-सिंहासनम्, तत् कीदृशम्? इत्याह-'**वर-मणि-रयण-पाद-पीढं**' वर-मणि-रत्न-पाद-

वैजयन्ती-विजयध्वजों को लेकर आगे २ चलने लगे। (**तयाणंतरं च णं**) इसके बाद (**वेरुलिय-भिसंत-विमल-दंडं पलंब-कोरंट-मल्ल-दामो-वसोभियं चंदमंडलणिभं समूसियं विमलं आयवत्तं पवरं सीहासणं वर-मणि-रयण-पादपीठं सपाउयाजोयसमाउत्तं बहु-किंकर-कम्मकर-पुरिस-पायत्त-परिक्खित्तं पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठियं**) कितनेक लोग वैडूर्य मणि की प्रभा से प्रकाशित दण्डवाले, लटकती हुई कोरटमाला से सुशोभित, चद्रमण्डलसदृश तथा ऊँचे उठाये हुए ऐसे छत्र को लेकर आगे २ चले। तथा बहुत से नौकर-चाकर और सैनिक लोग श्रेष्ठ सिंहासनको तथा पादुकासहित, उत्तम मणि-

ઉંચી એટલે કે આકાશને અડતી હોય તેવી વિજયવૈજયન્તી-વિજયધ્વજાઓને લઈને આગળ આગળ ચાલવા લાગ્યા. (तयाणंतर च णं) ત્યાર પછી (वेरुलिय-भिसंत-विमल-दंडं पलंब-कोरंट-मल्ल-दामो-वसोभियं चंद-मंडल-णिभं समूसियं विमलं आयवत्तं पवरं सीहासणं वर-मणि-रयण-पाद-पीठं सपाउया-जोय-समाउत्तं बहु-किंकर-कम्मकर-पुरिस-पायत्त-परिक्खित्तं पुरओ अहापुणुव्वीए संपट्ठियं) કેટલાક લોક વૈડૂર્યમણિની પ્રભાથી પ્રકાશિત દંડવાળા, લટકતી કોરંટમાળાથી શોભતા, ચંદ્રમંડલ જેવા, તથા ઉંચે ઉપાડેલાં છત્રને લઈ

उत्तं बहु-किंकर-कम्मकर-पुरिस-पायत्त-परिक्खित्तं पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठियं। तयाणंतरं च णं बहवे लट्ठिग्गाहा कुंतग्गाहा चावग्गाहा चामरग्गाहा पासग्गाहा पोत्थयग्गाहा फलगग्गाहा पीढग्गाहा वीणग्गाहा कूवग्गाहा हडप्पयग्गाहा पुरओ अहाणुपुव्वीए संप-

---

पीठम्-श्रेष्ठ-मणि-रत्न-खचित-पादस्थापनपीठ-सहितम्, 'सपाउया-जोय-समाउत्तं' स्वपादुकायोग-समायुक्तम्-स्वपादुकयोर्यो योगः=संबन्धः, तेन समायुक्तम्, 'बहु-किंकर-कम्मकर-पुरिस-पायत्त-परिक्खित्तं' बहु-किङ्कर-कर्मकर-पुरुष-पादात-परिक्षिप्तम्-बहुभिः=अनेकैः किङ्करैः=स्वामिनं पृष्ट्वा कार्यकरैः, कर्मकरैः=भृत्यैः, पुरुषैः=साधारणजनैः, पादातेन=पदातिसमूहेन परिक्षिप्तम्=उत्थापितम्, पुरतो यथानुपूर्व्या सम्प्रस्थितम्। 'तयाणंतरं च णं' तदनन्तरञ्च खलु 'बहवे लट्ठिग्गाहा' बहवो यष्टिग्राहिणः, 'कुंतग्गाहा' कुन्तग्राहिणः=भल्लधारकाः 'चावग्गाहा' चापग्राहिणः=धनुर्धारिणः, 'चामरग्गाहा' चामरग्राहिणः, 'पासग्गाहा' पाशग्राहिणः-उद्धतगजाश्वादिबन्धनसाधनं पाशस्तस्य धारकाः। 'पोत्थयग्गाहा' पुस्तकग्राहिणः, 'फलगग्गाहा' फलकग्राहिणः-फलक='ढाल' इतिख्यातस्तस्य धारकाः, 'पीढग्गाहा' पीठग्राहिणः-पीठानि=आसनविशेषास्तेषां धारका इत्यर्थः। 'वीणग्गाहा' वीणाग्राहिणः-वीणा=वाद्य-

---

रत्नों के बने हुए पादपीठ को लेकर आगे २ चलने लगे। इसके बाद (बहवे लट्ठिग्गाहा) अनेक लाठीधारी चलने लगे। (कुंतग्गाहा) अनेक भल्लधारी (चावग्गाहा) धनुर्धारी (चामरग्गाहा) चामरधारी (पासग्गाहा) उद्धत हाथी और घोड़ों को जिसके द्वारा वश में किया जाये ऐसे पाश को धारण करने वाले, (पोत्थयग्गाहा) पुस्तकधारी, (फलगग्गाहा) ढाल को धारण करने वाले (पीढग्गाहा) आसनविशेष के धारी (वीणग्गाहा) वीणाधारी (कुतु-

---

આગળ આગળ ચાલ્યા, તથા ઘણા નોકર-ચાકર અને સૈનિક લોક શ્રેષ્ઠ સિંહાસનને તથા પાદુકાસહિત ઉત્તમ મણિરત્નોની બનેલી પાદપીઠને લઇને આગળ આગળ ચાલ્યા. ત્યાર પછી (बहवे लट्ठिग्गाहा) અનેક લાઠીધારી ચાલવા લાગ્યા (कुंतग्गाहा) અનેક ભાલાંધારી, (चावग्गाहा) ધનુર્ધારી, (चामरग्गाहा) ચામરધારી, (पासग्गाहा) ઉદ્ધત હાથી અને ઘોડાને જેના દ્વારા વશમાં લઇ શકાય એવા પાશને ધારણ કરવાવાળા, (पोत्थयग्गाहा) પુસ્તકધારી, (फलगग्गाहा) ઢાલને ધારણ કરવાવાળા, (पीढग्गाहा) આસન વિશેષના ધારણ કરવાવાળા, (वीणग्गाहा) વીણાધારી, (कुतुवग्गाहा) કુતુપ અર્થાત્ ચામડાનાં તેલ પાત્રને

ट्ठिया। तयाणंतरं च णं बहवे दंडिणो मुंडिणो सिहंडिणो जडिणो पि-च्छिणो हासकरा डमरुयकरा चाडुकरा वादकरा कंदप्पकरा दवकरा कोक्कुइया किड्डकरा य वायंता य गायंता य हसंता य णच्चंता य भासं-

विशेषस्तस्या धारका इत्यर्थः, 'कुतुवग्गाहा' कुतुपग्राहिणः-तैलादीनां चर्ममयं पात्रं कुतुपस्त-स्य धारकाः, 'हडप्पयग्गाहा' हडप्फग्राहिणः-ताम्बूलादिभाजनं हडप्फस्तस्य धारका इत्यर्थः, 'पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठिया' पुरतो यथानुपूर्व्या सम्प्रस्थिताः। 'तयाणंतरं च णं' तदनन्तरं च खलु 'बहवे' बहवो 'दंडिणो' दण्डिनः 'मुंडिणो' मुण्डिनः 'सिहंडिणो' शिखाण्डनः=शिखाविशेषधारिणः, 'जडिणो' जटिनः=जटावन्तः, 'पिच्छिणो'-पिच्छिनः=मयूरादिपिच्छवन्तः 'हासकरा' हास्यकराः 'डमरुयकरा' डमरुककराः='डुगडुगी'-तिप्रसिद्धवाद्यवादिनः, 'चाडुकरा' चाटुकारिणः=प्रियवचनवादिनः, 'वादकरा' वादकारिणः, 'कंदप्पकरा' कन्दर्पकारिणः=कामकथाकारिणः, 'दवकरा' द्रवकराः=परिहासकारिणः 'कोक्कुइया' कौतुकिकाः=कुतूहलकारिणः, 'कीड्डकरा' क्रीडाकराः, 'वायता य' वादयन्तश्च-मृदङ्गादिकं

वग्गाहा) कुतुप अर्थात् चमडे के तेलपात्र को धारण करने वाले, (हडप्पयग्गाहा) तथा हडप्फ-ताम्बूल पात्र को धारण करने वाले अनुक्रम से आगे २ चलने लगे। (तयाणंतरं च णं) इसके बाद (बहवे) बहुत से (दंडिणो) दंडी, (मुंडिणो) मुण्डी, (सिहंडिणो) शिखाधारी, (जडिणो) जटाधारी, (पिच्छिणो) मयूर आदि पिच्छ के धारी (हासकरा) हँसाने वाले (डमरुयकरा) डुगडुगी बजाने वाले, (चाडुकरा) प्रिय वचन बोलने वाले, (वादकरा) वादविवाद करने वाले, (कंदप्पकरा) कामकथा करने वाले, (दवकरा) हँसी-मजाक करने वाले, (कोकुइया) कुतुहल करने वाले, (किड्डकरा य) खेल-तमाशा करने वाले, (वायंता य) मृदंगादिक बाजे बजाने वाले, (गायंता य) गाना गाने वाले, (हंसंता य) विना कारण

(કુપીઓને) ધારણ કરવાવાળા, (हडप्पयग्गाहा) તથા હડપ્ફ (તાબૂલપાત્ર)ને ધારણ કરવાવાળા અનુક્રમથી આગળ આગળ ચાલવા લાગ્યા. (तयाणंतरं च णं) ત્યાર પછી (बहवे) અનેક (दंडिणो) દંડી (मुंडिणो) મુંડી (सिहंडिणो) શિખાધારી (जडिणो) જટાધારી (पिच्छिणो) મયૂર આદિ પીંછાના ધારણ કરનારા (हासकरा) હસાવનારા (વિદૂષકો) (डमरुयकरा) ડુગડુગી વગાડનારા (चाडुकरा) પ્રિયવચન બોલનારા, (वादकरा) વાદવિવાદ કરનારા, (कंदप्पकरा) કામકથા કરનારા, (दवकरा) હાસીમજાક કરનારા, (कोक्कुइया) કુતૂહલ કરનારા, (किड्डकरा) ખેલ તમાસા કરનારા, (वायंता य) મૃદંગાદિક (ઢોલ) વાજાં વગાડનારા, (गायंता य)

ता य सावेंता य रक्खंता य आलोयं च करेमाणा जयसद्दं पउंजमाणा पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठिया । तयाणंतरं च णं जच्चाणं तर-मल्लिहायणाणं हरिमेला-मउल-मल्लिय-च्छाणं चंचुच्चिय-ललिय-

नादयन्तः, 'गायंता' गायन्तः=गान्धर्वमनुतिष्ठन्तः, 'हसंता' हसन्तः, च-पुनः 'णच्चंता' नृत्यन्त, 'भासंता' भाषमाणा. 'सावेंता' श्रावयन्तः=भूत-भविष्यद्-वादिनः, 'रक्खंता' रक्षन्तः-राज्ञो देहरक्षां कुर्वन्तः, 'आलोयं च करेमाणा' आलोकं च कुर्वन्तः-राजादिदर्शनं कुर्वन्त., 'जयसद्दं पउंजमाणा' जयशब्दं प्रयुञ्जानाः=वदन्तः। 'पुरओ' पुरतः-अग्रतः, 'अहाणुपुव्वीए' यथानुपूर्व्या=क्रमेण 'संपट्ठिया' सम्प्रस्थिताः -प्रचलिताः । 'तयाणंतरं च णं' तदनन्तरञ्च खलु 'जच्चाणं' जात्यानाम्-उत्तमजाति-भवानाम्, 'तर-मल्लि-हायणाणं' तरोमल्लिहायनानां-तरो=वेगः तस्य मल्लिः=धारकः-'मल मल्ल धारणे' इति धातुपाठे स्थितान्मल्लधातोः कर्तरि इः, ततश्च तरोमल्लिः=वेगधारकः हायन=संवत्सरो येषां ते तरोमल्लिहायनाः-यौवनवयःस्थितास्तेषाम्, तुरगाणामित्यग्रेण अन्वयः, पुनः कीदृशानाम् ? अत्राऽऽह-'हरिमेला-मउल-मल्लिय-च्छाणं' हरिमेला-मुकुल-मल्लिका-क्षाणाम्-हरिमेला=वृक्षविशेषः तस्य मुकुलं=कलिका, मल्लिका=वसन्तजः

हँसने वाले, (णच्चंता य) नाचने वाले, (भासंता य) भाषण करने वाले, (सावेंता य) भूत-भविष्यत् कहने वाले, (रक्खंता य) राजा के आत्मरक्षक, (आलोयं च करेमाणा) राजा का दर्शन करने वाले पुरुष, तथा-(जयसद्दं पउंजमाणा) 'जय जय' शब्द करने वाले, ये सभी (पुरओ) आगे २ (अहाणुपुव्वीए) यथाक्रम से (संपट्ठिया) चलने लगे। (तयाणं-तरं च णं) इसके बाद (जच्चाणं तरमल्लिहायणाणं) उत्तम जाति के, वेगवाले नौजवान घोड़े चलने लगे। (हरिमेला-मउल-मल्लिय-च्छाणं) ये घोड़े हरिमेला-वृक्षविशेष की

ગાયન ગાનારા, (हसंता य) વિનાકારણ હસનારા, (णच्चंता य) નાચનારા, (भासंता य) ભાષણ કરનારા, (सावेंता य) ભૂત ભવિષ્ય કહેનારા, (रक्खंता य) રાજાના આત્મ-રક્ષક, (आलोयं च करेमाणा) રાજાના દર્શન કરનારા, તથા (जयसद्दं पउंजमाणा) 'જય જય' શબ્દ કરવાવાળા, એ બધા (पुरओ) આગળ આગળ (अहाणुपुव्वीए) યથાક્રમથી (संपट्ठिया) ચાલવા લાગ્યા. (तयाणंतरं च णं) ત્યાર પછી (जच्चाणं तरमल्लिहायणाणं) ઉત્તમ જાતિના વેગવાળા નવજુવાન ઘોડા ચાલવા લાગ્યા. (हरिमेला-मउल-मल्लिय-च्छाणं) આ ઘોડા હરિમેલા-વૃક્ષવિશેષની કળી તેમજ મલ્લિકાપુષ્પ-વેલાનાં ફૂલ જેવી આંખો-

**पुलिय-चल-चवल-चंचल-गईणं लंघण-वग्गण-धावण-धोरण-तिव-ई-जइण-सिक्खिय-गईणं ललंत-लाम-गललाय-वर-भूसणाणं मुह-**

कुसुमविशेष 'वेली' इतिख्यातस्तद्वदक्षिणी येषां ते तथा तेषां, **'चंचु-च्चिय-ललिय-पुलिय-चल-चवल-चंचल-गईणं'** चञ्चू-चित-ललित-पुलित-चल-चपल-चञ्चल-गतीनाम्, चञ्चुः=शुकचञ्चुः-तद्वद्वक्रतया उचित=चरणयोरुत्थापनं तेन ललितं=सविलासं यत् पुलितं=गमनविशेषः-एतद्रूपा-चलानां=गतिमतां चपलचञ्चला=अतिचञ्चला, यद्वा-चपला-विद्युत्, तद्वच्चञ्चला गतिर्येषा ते तथा तेषां, वक्रपदक्षेपगमनविशेषाऽतिशयचञ्चलगमनवताम्, **'लंघण-वग्गण-धावण-धोरण-तिवई-जइण-सिक्खिय-गईणं'** लङ्घन-वल्गन-धावन-धोरण-त्रिपदी-जयिनी-शिक्षित-गतीनाम् लङ्घनं-गर्त्तादिरुल्लङ्घनम्, वल्गनम्=उत्कूर्दनम्, धावन=शीघ्रमृजुगमनम्, धोरणं=गतिचातुर्यम्, त्रिपदी=भूमौ पदत्रयन्यासः, जयिनी=जयिन्याख्या अतितीव्रगतिः, एताः शिक्षिता=अभ्यस्ता गतयो यैरते तथा तेषाम्। **'ललंत-लाम-गल-लाय-वर-भूसणाणं'** लल-ल्लामद्-गललात-वर-भूषणानाम्-ललन्ति=दोलायमानानि, लामन्ति=रम्याणि, गललातानि=ग्रीवास्थितानि वरभूषणानि येषां ते तथा तेषां,-चञ्चलसुन्दरग्रीवाभरण-

कली एवं मल्लिकापुष्प-वेला के फूल-के समान आंखोंवाले थे। (**चंचु-च्चिय-ललिय-पुलिय-चल-चवल-चंचल-गईणं**) शुक की चंचु के समान वक्र पैर उठा कर सविलास चलने के कारण वे बहुत भले मालूम होते थे, तथा चलने में विजली के समान चंचल थे। (**लंघण वग्गण-धावण-धोरण-तिवई-जइण-सिक्खियगईणं**) लंघन-खड्डे आदि का लांघना, वल्गन-कूदना, धावन-शीघ्रतापूर्वक दौडना, धोरण-सूगर के समान नीचे सिर कर के दौडना, त्रिपदी-तीन पैरों से खडा होना, जयिनी-अतितीव्र चालका चलना,-इन सबों में ये अति-निपुण थे। (**ललंत-लाम-गललाय-वर-भूसणाणं**) इनके गले में जो आभूषण थे वे इधर उधर हिलते डुलते थे और बहुत ही सुन्दर थे। (**मुहभंडग-ओचूलग-थासग-अहि-**

વાળા હતા. (चंचु-चिय-ललिय-पुलिय-चल-चवल चंचल गईणं) પોપટની ચાંચની જેમ વાંકા પગ ઉપાડીને વિલાસ કરતા ચાલવાના કારણે તેઓ બહુ ભલા લાગતા હતા, તથા ચાલવામાં વિજળીની પેઠે ચંચળ હતા. (लंघण-वग्गण-धावण-धोरण-तिवई-जइण-सिक्खिय-गईणं) લંઘન-ખડ્ડ આદિને લાંઘવું (ટપવું). વલ્ગન-કૂદવું, ધાવન-ઝડપથી દોડવું, ધોરણ-સૂકરની પેઠે નીચું માથું રાખી દોડવું, ત્રિપદી-ત્રણ પગે ઉભા રહેવું, જયિની-અતિ ઝડપવાળા ચાલથી ચાલવું. આ બધામાં તેઓ નિપુણ હતા. (ललंत-लाम गललाय-वर-भूसणाणं) તેમના ગળામાં જે આભૂષણ હતા તે આમતેમ હાલતા-ડોલતા હતા અને

**भंडग-ओचूलग-थासग-अहिलाण-चामर-गंड - परिमंडिय - कडीणं किंकर-वर-तरुण-परिग्गहियाणं अट्ठसयं वरतुरगाणं पुरओ अहाणु-पुव्वीए संपट्ठियं। तयाणंतरं च णं ईसीदंताणं ईसीमत्ताणं ईसीतुंगाणं**

भूषितानाम्। **'मुहभंडग–ओचूलग–थासग–अहिलाण–चामरगंड–परिमंडिय-कडीणं'** मुखभाण्डकाऽवचूलक–स्थासका-भिलान-चामरगण्ड-परिमण्डित-कटीनाम्–मुखभाण्डकं=मुखाभरणम्, अवचूला'=प्रलम्बमानगुच्छाः, स्थासकाः=दर्पणाऽकारा अलङ्काराः, अभिलाना'=मुखबन्धविशेषाश्च, येषां ते, तथा चामरगण्डै'=चामरसमूहै', परिमण्डिता कटिर्येषां ते तथा, ततः पदद्वयस्य कर्मधारय., तेषां तथाभूतानाम्। **किंकर–वर–तरुण–परिग्गहियाणं'** किङ्कर-वरतरुण–परिगृहीतानाम्–किंकरवराश्च ते तरुणा–तरुणकिङ्करश्रेष्ठा', तैः परिगृहीतानाम्, **'अट्ठसयं वरतुरगाण'** अष्टशत वरतुरगाणां=श्रेष्ठहयानामष्टाऽधिक शतम्, **'पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठियं'** पुरतो यथानुपूर्व्या सम्प्रस्थितम्। **'तयाणंतरं च णं'** तदनन्तरं च खलु- **ईसीदंताणं'** ईषदन्तानाम्=अल्पदन्तवताम् **'ईसीमत्ताणं'** ईषन्मत्तानाम्=किञ्चिन्मदगालिनाम्,

**लाण–चामरगंड–परिमंडिय–कडीणं)** मुखभाण्डक–मुख का आभूषण, अवचूल–प्रलम्बमान गुच्छे जो मस्तक के ऊपर मुर्गे की कलंगी के समान लगाये जाते है, स्थासक–दर्पण के आकार जैसे आभरणविशेष, तथा–अहिलाण–मुखबन्धविशेष से ये शोभित हो रहे थे, तथा चामरगंड – चामरसमूह–से इनका कटिभाग विशेष अलंकृत हो रहा था। (**किंकर–वरतरुण–परिग्गहियाणं**) इनको पकड़ने वाले सईस उत्तम एवं तरुण अवस्था वाले थे। (**अट्ठसयं वर-तुरगाण पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठियं**) इस प्रकार १०८ घोड़े आगे आगे अनुक्रम से चलने लगे। (**तयाणंतरं च णं ईसीदंताणं ईसीमत्ताणं ईसीतुंगाणं**

બહુજ સુંદર હતાં. (मुहभंडग-ओचूलग-थासग-अहिलाण-चामरगंड-परिमंडिय-कडीणं) મુખભાંડક–મુખનુ આભૂષણ, અવચૂલ–પ્રલંબમાન ગુચ્છા જે મસ્તકના ઉપર કુકડાની કલંગીના જેમ લગાવાય છે, સ્થાસક–દર્પણના આકાર જેવાં આભરણ વિશેષ, તથા અહિલાણ–મુખબંધનવિશેષ, એ બધાથી તેઓ શોભિત થઈ રહ્યા હતા, અને ચામરગંડ–ચામરસમૂહથી તેમનો કેડનો ભાગ વિશેષ અલંકૃત થઇ રહ્યો હતો. (किंकर–वर–तरुण–परिग्गहियाणं) તેમને પકડનારા સઇસ ઉત્તમ તેમજ તરુણ અવસ્થાના હતા. (अट्ठ-सयं वर-तुरगाणं पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठियं) આ પ્રકારના ૧૦૮ ઘોડા અનુક્રમથી આગળ આગળ ચાલવા લાગ્યા. (तयाणंतरं च णं ईसीदंताणं ईसी-

**ईसी-उच्छंग-विसाल-धवल-दंताणं कंचण-कोसी-पविट्ठ-दंताणं कं-चण-मणि-रयण-भूसियाणं वर-पुरिसा-रोहग-संपउत्ताणं अट्ठसयं गयाणं पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठियं। तयाणंतरं च णं सच्छ-**

'ईसीतुंगाणं' ईषत्तुङ्गानाम्=मनागुन्नतानाम्, 'ईसी-उच्छंग-विसाल-धवल-दंताणं' ईप-दुत्सङ्ग-विशाल-धवल-दन्तानाम्-ईषदुत्सङ्गे=मध्यभागे विशालाः अल्पवयस्कत्वात्, तथा धवला दन्ता येषां ते धवलदन्ताः, ततः पदद्वयस्य कर्मधारयः, तेषाम्, 'कंचण-कोसी-पविट्ठ-दंताणं' काञ्चन-कोश-प्रविष्ट-दन्तानाम्, कंचण-मणि-रयण-भूसियाणं' काञ्चनमणि-रत्न-भूषितानाम्, 'वर-पुरिसा-रोहग-संपउत्ताणं' वर-पुरुषा-ऽऽरोहक-सम्प्रयुक्तानाम्-वर-पुरुषा =श्रेष्ठपुरुषाश्चामी-आरोहकाः तैः सम्प्रयुक्तानाम्=युक्तानाम्, एतादृशां-'गयाणं' गजा-नाम्=हस्तिनाम्, 'अट्ठसयं' अष्टशतम्=अष्टाधिकं शतम्, 'पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठियं' पुरतो यथानुपूर्व्या सम्प्रस्थितम्। अथ रथानां वर्णनमाह-'तयाणंतरं' इत्यादि। 'तयाणंतरं

**ईसी-उच्छंग-विसाल-धवल-दंताणं कंचण-कोसी-पविट्ठ-दंताण कंचण-मणि-रयण-भूसि-याणं वर-पुरिसा-रोहग-सपउत्ताणं अट्ठसयं गयाणं पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठियं)** इनके बाद आगे आगे १०८ हाथी चले, ये हाथी अल्पदंतवाले थे, पूरे दांत इनके बाहिर नहीं निकल पाये थे। किंचित् मदशाली थे। थोड़े ही ऊँचे थे, अधिक नहीं, इनका मध्यभाग भी अधिक विशाल नहीं था। दांत इनके अत्यंत धवल थे। इनके दांतों में सोने की खोलियाँ पहनायी गयी थीं। ये सुवर्ण एव मणिरत्नो से विभूषित हो रहे थे। इनके ऊपर श्रेष्ठ पुरुष बैठे हुए थे। **(तयाणंतरं च णं सच्छत्ताणं सज्झयाणं सघंटाण सपडागाणं सतोरणवराणं सणंदिघोसाणं स-खिंखिणी-जाल-परिक्खित्ताणं हेमवय-चित्त-**

मत्ताणं ईसीतुंगाणं ईसी-उच्छंग-विसाल-धवल-दंताणं कंचण-कोसी-पविट्ठ-दंताणं कचण-मणि-रयण-भूसियाणं वर-पुरिसा-रोहग-संपउत्ताणं अट्ठसयं गयाणं पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठियं) त्यारपछी આગળ આગળ ૧૦૮ હાથી ચાલ્યા. આ હાથી અલ્પ દાત-વાળા હતા-તેના દાત પૂરા બહાર નીકળેલા નહોતા. કિંચિત્ મદશાળી હતા. થોડાક ઉંચા હતા બહુ નહિ. તેમનો પીઠનો ભાગ વધારે પહોળો નહોતો. તેમના દાત બહુ ધોળા હતા. તેમના દાતમા સોનાની ખોળો પહેરાવી હતી. તેઓ સુવર્ણ તેમજ મણિરત્નો વડે વિભૂષિત બન્યા હતા. તેમના ઉપર શ્રેષ્ઠ પુરુષ બેઠા હતા. (तयाणंतरं च णं सच्छत्ताणं सज्झयाणं सघंटाणं सपडागाणं सतोरणवराणं सणंदिघोसाणं स-खिंखिणी-जाल-परिक्खित्ताणं हेमवय-चित्त-तिणिस-कणग-

**त्ताणं सज्झयाणं सघंटाणं सपडागाणं सतोरणवराणं सणंदि-**

**च णं'** तदन्तरञ्च खलु **'सच्छत्ताणं'** सच्छत्राणां=छत्रयुक्तानाम्, **'सज्झयाणं'** सध्वजानाम्-ध्वजयुक्तानाम् **'सघंटाणं'** सघण्टानाम्, **'सपडागाणं'** सपताकानाम्-ध्वजो गरुडादिचिह्न-युक्तस्तदन्या तु पताका तद्वताम्, **'सतोरणवराणं'** सतोरणवराणाम्=श्रेष्ठतोरणवताम्, **'सणंदिघोसाणं'** सनन्दिघोषाणाम्-नन्दी=द्वादशविधवाद्यनिर्घोषः, तद् यथा-१ भभा, २ मउंद, ३ मद्दल, ४ कडंव, ५ झल्लरि, ६ हुडुक्क, ७ कंसाला। ८ काहल, ९ तलिमा, १० वंसो, ११ संखो, १२ पणवो य बारसमो ॥ १ ॥ तत्र-**'भंभा'** भम्भा=भेरी १, **'मउंद'** मुकुन्दः=वाद्यविशेषः २, **'मद्दल'** मर्दलः=मृदङ्गः ३, **'कडंव'** कडम्बः=वाद्यविशेषः ४, **'झल्लरि'** झल्लरी-'झालर' इति ख्यातो वाद्यविशेषः ५, **'हुडुक्क'** हुडुक्क=वाद्यविशेषः, अयं देशीयः शब्दः ६, **'कंसाला'** कांस्यालः=वाद्यविशेषः ७, **'काहल'** काहलः=वाद्यविशेषः ८, **'तलिमा'** तलिमा=

---

**तिणिस-कणग-णिज्जुत्त-दारुयाणं कालायस-सुकय-णेमि-जंत-कम्माणं** ) इनके बाद आगे आगे १०८ रथ चल रहे थे, ये रथ छत्रसहित थे, ध्वजासहित थे, इनके ऊपर ध्वजाएँ फहरा रही थीं, इनमें घण्टे लटक रहे थे, जिससे चलते समय इनकी मधुर आवाज आती थी। पताकासहित थे। (गरुड आदि के चिह्नों से युक्त का नाम ध्वजा है और चिह्नरहित का नाम पताका है।) इन रथों पर तोरण वंधे हुए थे। ये रथ नन्दिघोष सहित थे। बारह प्रकार के वाद्यों का नाम नंदिघोष है, वे १२ बारह प्रकार के बाजे ये है-भंभा-भेरी, मउंद-मुकुंद (यह एक जात का वाजा होता है), मर्दल-मृदंग, कडंब-(यह भी एक जात का बाजा होता है), झल्लरी-झालर, हुडुक्क (यह भी एक जात का बाजा विशेष होता है), कंसाल-(यह भी एक जातका बाजाविशेष है), काहल-(यह भी एक जात का बाजा विशेष है), तलिमा-वाद्यविशेष, वंश-वाद्यविशेष, शख, एवं १२वां पवण-

---

णिज्जुत्त-दारुयाणं कालायस-सुकय-णेमि-जंत-कम्माणं ) त्यार पछी आगळ आगळ १०८ रथ चालता हता. आ रथ छत्रवाळा हता. ध्वजावाळा हता. तेमना उपर धजा फरकी रही हती. तेमां घंट लटकी रह्या हता जेथी चालती वखते तेमनो मधुर अवाज आवतो हतो. पताकावाळा हता. (गरुड आदिनां चिह्नो जेमां होय ते ध्वजा कहेवाय अने जे चिह्नविनानी होय ते पताका कहेवाय.) आ रथो उपर तोरण बांधेलां हतां. नंदिघोषवाळा हता. बार प्रकारनां वाद्यो (वाजां)ना नाम नंदिघोष छे. तेओ १२ बारनां नाम आ प्रमाणे छे-भंभा-भेरी, मउद-मुकुंद (आ एक जातनुं वाजुं होय छे) झल्लरी-झालर, हुडुक्क (आ पण एक अमुक जातनुं वाजुं होय छे) कंसाल-(आ पण एक जातनुं वाजुं विशेष छे.) काहल-आ पण एक अमुक जातनु वाजुं विशेष छे. तलिमा-

**घोसाणं सखिंखिणीजालपरिक्खित्ताणं हेमवय-चित्त-तिणिस-कणग-णिज्जुत्त-दारुयाणं कालायस-सुकय-णेमि-जंत-कम्माणं सुसि-**

वाद्यविशेष ९, 'वंसो' वंश=वाद्यविशेष १०, 'संखो' शङ्ख प्रसिद्धः, **'पणवो य बारसमो'** पणवश्च द्वादशः—तत्र पणव—पटह 'ढोल' इति प्रसिद्धः। **'स-खिंखिणी-जाल-परिक्खित्ताणं'** सकिङ्किणी-जाल-परिक्षिप्तानाम्-सह किङ्किणीभिः=क्षुद्रघण्टिकाभिः सहितं यज्जालकं=आभरणविशेषः तेन जालकेन परिक्षिप्ताः=सुशोभितास्तेषाम्, **'हेमवय-चित्त-तेणिस-कणग-णिज्जुत्त-दारुयाणं'** हैमवत-चित्र-तैनिश-कनक-निर्युक्त-दारुकाणाम्-हैमवतानि=हिमवद्गिरिसम्भूतानि, चित्राणि=विचित्राणि, तैनशानि=तिनशनामकतरुसम्बधीनि, कनकनिर्युक्तानि=सुवर्णखचितानि, दारुकाणि=काष्ठानि येषु रथेषु तेषाम्, **'कालायस-सुकय-णेमि-जंत-कम्माणं'** कालायस-सुकृत-नेमि-यन्त्र-कर्मणाम्-कालायसेन=कर्कशलौहेन-सुष्ठु कृतं नेमेः=चक्रधाराया यन्त्रकर्म=बन्धनक्रिया येषां ते तथा तेषां कर्कशलौहसम्पादितनेमिबन्धनबद्धानाम्, **'सुसिलिट्ठ-वत्त-मंडलधुराणं'** सुश्लिष्ट-वृत्त-मण्डल-धुराणाम्-सुष्ठु श्लिष्टा वृत्तमण्डला-अत्यन्तगोलाकारा धूर्येषां ते तथा तेषां दृढघटित-

पटह-ढोल। इन बारह प्रकार के वादित्रों से विशिष्ट ये रथ थे। इन पर जो जालक-आभरणविशेष सजाने में आये थे, अथवा इन रथों में जो जालियां थीं वे सब क्षुद्र-छोटी छोटी घंटियों से युक्त थीं। इनसे रथों की शोभा में अधिक वृद्धि हो रही थी। ये रथ जिस काष्ठ के बने हुए थे, वह काष्ठ तिनश नामका था। यह हिमवत गिरि से मंगाया गया था और बहुत सुन्दर था। इस काष्ठ के ऊपर सुवर्ण का काम किया हुआ था। ये रथ इन्हीं काष्ठों के बने हुए थे। इनके पहियो पर मजबूत लोहे के पट्टे चढाये हुए थे। (सुसिलिट्ठ-वत्त मंडल-धुराणं) इनकी धुराये बहुत ही मजबूत एवं गोल आकार की थीं।

વાદ્યવિશેષ-એક જાતનું વાજું, વંશ-વાંસનું વાદ્યવિશેષ, શંખ, અને બારમું પણવ-પટહ-ઢોલ આ બારેય પ્રકારનાં વાજિંત્રોથી વિશિષ્ટ આ રથ હતા. તેના ઉપર જે જાલક આભરણવિશેષ સજાવવામાં આવ્યાં હતાં, અથવા આ રથોમાં જે જાળીઓ હતી તે બધી ક્ષુદ્ર-નાની નાની ઘંટડીઓવાળી હતી. એનાથી રથોની શોભામા અધિક વૃદ્ધિ થતી રહેતી હતી. આ રથ જે લાકડાના બનાવ્યા હતા તે લાકડા તિનશ નામનાં હતા. એ હિમવંત ગિરિથી મંગાવેલાં હતાં અને બહુ જ સુંદર હતા. આ લાકડાની ઉપર સુવર્ણનું કામ કરવામા આવેલું હતુ. એ રથ આ જ લાકડાના બનાવ્યા હતા. તેમનાં પૈડાં ઉપર મજબૂત લોઢાના પટ્ટા ચડાવ્યા હતા. (सुसिलिट्ठ-वत्त-मंडल-धुराणं)

**लिट्ठ-वत्त-मंडल-धुराणं आइण्ण-वर-तुरग-संपउत्ताणं कुसल-नर-च्छेय-सारहि-सुसंपग्गहियाणं बत्तीस-तोण-परिमंडियाणं सकंकड-वडेंसगाणं सचाव-सर-पहरणा-वरण-भरिय-जुद्ध-सज्जाणं अट्ठसयं**

वृत्तमण्डलधुराणाम्। 'आइण्ण - वर - तुरग - संपउत्ताणं' आकीर्ण -वर-तुरग-सम्प्रयुक्तानाम् - योजितोत्तमजातिमद्घोटकानाम्, 'कुसल-नर-च्छेय-सारहि-सुसंपग्गहियाणं' कुशल-नर-च्छेक-सारथि-सुसम्प्रगृहीतानाम्-कुशलनराः=विज्ञपुरुषाः एव ये छेकाः=निपुणाः सारथयः तैः सुसम्प्रगृहीतानाम्=सञ्चारितानाम्। 'बत्तीस-तोरण-परिमंडियाणं' द्वात्रिंशत्तोरणपरिमण्डितानां-तोरणानि=अर्धवर्तुलाऽऽकाराणि द्वाराणि-तैर्द्वात्रिंशत्सङ्ख्यकैः तोरणैः=वन्दनवारैः परिमण्डितानां, प्रतिरथं द्वात्रिंशद्वन्दनवाराणि सन्तीति भावः। 'सकंकडवडेंसगाणं' सकङ्कटाऽवतंसकानाम्-कङ्कटाः=कवचाः, अवतंसकाः=शिरस्त्राणानि 'टोप' इति प्रसिद्धाः, तैः युक्ताः सकङ्कटावतंसकाः तेषाम्-'सचाव-सर-पहरणा-वरण-भरिय-जुद्ध-सज्जाना' सचाप-शर-प्रहरणा-ऽऽवरण- भृत - युद्ध-सज्जानाम्-चापैः सहिताः शराः, सचापशराः प्रहरणानि=खड्गादीनि, आवरणानि='ढाल'

(आइण्ण-वर-तुरग-संपउत्ताणं) इनमें जो घोड़े जोतने में आये थे वे बहुत ही उत्तम जाति के थे। (कुसल-नर-च्छेय-सारहि-सुसंपग्गहियाणं) इनके जो सारथी थे वे अश्व-चालन क्रिया में विशेष निपुण थे। ये ही इन्हें चला रहे थे। (बत्तीस-तोरण-परिमंडियाणं) प्रत्येक रथों पर बत्तीस २ वन्दनवारें बंधी हुई थीं। (सकंकडवडेंसगाणं) इनमें कवच और शिरस्त्राण-लोहे के टोप भी रखे हुए थे। (सचाव-सर-पहरणा-वरण-भरिय-जुद्ध-सज्जाणं) ये सब रथ चाप-धनुष, शर-बाण, प्रहरण-हथियार एवं आवरण-ढाल आदिकों से भरे हुए थे, अतः देखने वालों को ऐसे मालूम पडते थे कि मानो

તેમના ધોસરા બહુજ મજબૂત તેમજ ગોળ આકારના હતા. (आइण्णवरतुरग-संपउत्ताणं) તેમા જે ઘોડા જોડવામા આવ્યા હતા તે બહુજ ઉત્તમ જાતિના હતા. (कुसल-वर-च्छेय-सारहि-सुसंपग्गहियाणं) તેના જે સારથી હતા તે અશ્વસંચાલન ક્રિયામાં વિશેષ નિપુણ હતા, તેઓજ તેમને ચલાવતા હતા. (बत्तीस-तोरण-परिमंडियाणं) પ્રત્યેક રથોના ઉપર બત્રીસ બત્રીસ વંદનબારી બાંધી હતી. (सकंकडवडेंसगाणं) તેમા કવચ અને શિરસ્ત્રાણ-લોઢાના ટોપ પણ રાખેલા હતા. (स-चाव-सर-पहरणा-वरण-भरिय-जुद्ध-सज्जाणं) એ બધા રથ ચાપ-ધનુષ, શર-બાણ, પ્રહરણ-હથિયાર તેમજ આવરણ-ઢાલ આદિથી

**रहाणं पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठियं । तयाणंतरं च णं असि-सत्ति-कुंत-तोमर-सूल-लउल-भिंडिमाल-धणु-पाणि-सज्जं पायत्ताणीयं पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठियं ॥ सू० ४९ ॥**

इति प्रसिद्धानि, तैर्भृताः, अतएव युद्धाय इव सज्जास्तेषां **'रहाणं'** रथानाम् **'अट्ठसयं'** अष्टशतम्=अष्टाधिकशत **'पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठियं'** पुरतो यथानुपूर्व्या सम्प्रस्थितम् । अथ पदातिसैन्यवर्णनमाह-**'तयाणंतरं च णं'** इत्यादि। तदनन्तरञ्च खलु **'असि-सत्ति-कुंत-तोमर-मूल-लउल-भिंडिमाल-धणु-पाणि-सज्जं'** असि-शक्ति-कुन्त-तोमर-शूल-लकुट-भिन्दिपाल-धनुः-पाणि-सज्जम्-असिः=खड्ग, शक्तिः=अस्त्रविशेष, कुन्त=भल्ल, तोमर=बाणविशेष, शूलम्=एकशूलम्-'बरछी' इति प्रसिद्धम्, **'लउल'** लकुट=यष्टि, **'भिंडिमाल'** भिन्दिपाल-अस्त्रविशेष, 'गोफग' इति भाषाप्रसिद्ध, धनु-प्रसिद्धम्, एतानि पाणौ हस्ते यस्य तत् तथा, तच्च तत् सज्जं चेति समासः, तादृशम्, **'पायत्ताणीय'** पदात्यनीकम्=पदातिसैन्यम्, **'पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठियं'** पुरतो यथानुपूर्व्या सम्प्रस्थितम् ॥ सू० ४९ ॥

ये युद्ध के मैदान में जाने के लिये ही तैयार किये गये है, ऐसे **(रहाणं अट्ठसयं)** १०८ एक सौ आठ रथ **(पुरओ)** आगे २ **(अहाणुपुव्वीए)** यथाक्रम से **(संपट्ठियं)** चलने लगे। **(तयाणंतरं च णं असि-सत्ति-कुंत-तोमर-सूल-लउल-भिंडिमाल-धणु-पाणि-सज्जं पायत्ताणीयं पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठियं)** इनके आगे २ असि-तलवार, शक्ति-अस्त्रविशेष, कुन्त-भाला, तोमर-अस्त्रविशेष, शूल-बरछी, लकुट-लाठियाँ, भिंडिमाल-भिन्दिपाल-गोफग और धनुष ये सब जिनके हाथों मे थे, ऐसे पदातिसैन्य अनुक्रम से चलने लगे ॥सू.४९॥

ભરેલા હતા. આથી જોનારને એમજ લાગે કે જાણે યુદ્ધના મેદાનમા જવા માટે જ તૈયાર કર્યા છે. એવા (रहाणं अट्ठसय) એકસો આઠ ૧૦૮ રથ (पुरओ) આગળ આગળ (अहाणुपुव्वीए) યથાક્રમથી (संपट्ठिय) ચાલવા લાગ્યા. (तयाणंतरं च णं असि-सत्ति-कुत-तोमर-सूल-लउल-भिंडिमाल-धणु-पाणि-सज्जं पायत्ताणीयं पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठियं) તેમની આગળ આગળ અસિ-તલવાર, શક્તિ-અસ્ત્રવિશેષ, કુન્ત ભાલા, તોમર-અસ્ત્રવિશેષ, શૂલ-બરછી, લકુટ-લાકડીઓ, ભિંડિમાલ-ભિંદિપાલ-ગોફણ અને ધનુષ એ બધા જેના હાથોમા હતા એવા પદાતિસૈન્ય અનુક્રમે ચાલવા લાગ્યા. (સૂ. ૪૯.)

मूलम्—तए णं से कूणिए राया हारोत्थय-सुकय-रइय-वच्छे कुंडलउज्जोइयाणणे मउडदित्तसिरए णरसीहे णरवई णरिंदे णरवसहे मणुयरायवसहकप्पे अब्भहियं रायतेयलच्छी-

टीका—'तए णं से' इत्यादि। 'तए णं' ततस्तदनन्तरम्=अष्टमङ्गलगृह्णारितहयगजादिप्रस्थानानन्तरं खलु 'से कूणिए राया' स कूणिको राजा 'हारोत्थय-सुकय-रइय-वच्छे' हारावस्तृत-सुकृत-रतिद-वक्षाः-हारावस्तृतं=हारप्रावृतं, सुकृतं=सुरचितम् अतएव रतिदम्-प्रीतिप्रदं वक्षः=हृदयदेशो यस्य स तथा, 'कुंडल-उज्जोइया-णणे' कुण्डलोद्द्योतिताऽऽननः, मुकुटदीप्तशिरस्कः, 'णरसीहे' नरसिंहो, 'णरवई' नरपतिः, 'णरिंदे' नरेन्द्रः 'णरवसहे' नरवृषभः-अङ्गीकृतकार्यभारनिर्वाहकत्वात्। 'मणुय-

'तए णं से कूणिए राया' इत्यादि।

(तए णं) इसके बाद (से कूणिए राया) वह कूणिक राजा कि जिनका वक्षस्थल (हारोत्थय-सुकय-रइय-वच्छे) हारों से व्याप्त, सुरचित और रतिद-प्रीतिप्रद था, (कुंडल-उज्जोइया-णणे) जिनका मुख कुंडलो की आभा से अधिक दीप्तिसंपन्न हो रहा था। (मउड-दित्त-सिरए) मुकुट धारण करने से जिनका मस्तक सुशोभित हो रहा था। (णरसीहे) जो मनुष्यों में सिंह जैसे थे। (णरवई) जो मनुष्यों के स्वामी थे, क्यो कि हर तरह से उनका पालन-पोषण करते थे। इसीलिये (णरिंदे) जो नरों में इन्द्र जैसे थे। (णरवसहे) जो नरो में वृषभसमान थे, क्यों कि ये अपने ऊपर जो कार्य लेते थे उसे अवश्यमेव पूरा करते थे। (मणुयराय-वसह-कप्पे) मानवों के राजाओं के भी जो राजा-चक्रवर्ती-जैसे

'तए णं से कूणिए राया' ઇત્યાદિ.

(तए णं) ત્યાર પછી (से कूणिए राया) તે કૂણિક રાજા કે જેનું વક્ષઃ-સ્થલ (છાતી) (हारोत्थय-सुकय-रइय-वच्छे) હારોથી વ્યાપ્ત, સુરચિત અને પ્રીતિપ્રદ હતું. (कुंडल-उज्जोइया-णणे) જેમનું મુખ કુંડળોની આભા-પ્રકાશ વડે અધિક દીપ્તિસંપન્ન થઈ રહ્યું હતું. (मउड-दित्त-सिरए) મુકુટ ધારણ કરવાથી જેનું મસ્તક સુશોભિત થઈ રહ્યું હતું. (णरसीहे) જે મનુષ્યોમાં સિંહ જેવા હતા, (णरवई) જે મનુષ્યોના સ્વામી હતા, કેમકે હર તરેહથી તેમનું પાલન-પોષણ કરતા હતા. આથી (णरिंदे) તેઓ નરોનાં ઇંદ્ર જેવા હતા. (णरवसहे) જે પુરુષોમા વૃષભ-સમાન હતા, કેમકે તેઓ પોતાના ઉપર જે કાર્ય લેતા હતા તે અવશ્યમેવ પૂરૂં કરતા હતા. (मणुयराय-वसह-

ए दिप्पमाणे हत्थिक्खंधवरगए सकोरंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं सेयवरचामराहिं उद्धुव्वमाणीहिं २ वेसमणे चेव णरवई अमरवइसण्णिभाए इड्ढीए पहियकित्ती हय-गय-पवरजोहक-

राय-वसहकप्पे' मनुजराज-वृषभ-कल्पः-मनुराजानां=राज्ञां वृषभा=नायकाश्चक्रवर्तिनः तैस्तुल्यः-मनाङन्यूनतया समानः, उत्तरभरतार्धस्यापि साधने प्रवृत्तत्वादिति भावः। 'अब्भहियं' अभ्यधिकं-यथा स्यात् तथा-'राय-तेय-लच्छीए' राजतेजोलक्ष्म्या, 'दिप्पमाणे' दीप्यमानः, 'हत्थि-क्खंध-वर-गए' हस्ति-स्कन्ध-वर-गतः, 'सकोरंट-मल्ल-दामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं' सकोरण्ट-माल्य-दाम्ना छत्रेण ध्रियमाणेन, 'सेय-वर-चामराहिं उद्धुव्वमाणीहिं उद्धुव्वमाणीहिं' श्वेतवरचामरैरुद्धूयमानैरुद्धूयमानैः शोभमानः 'वेसमणे चेव' वैश्रवण इव=लोकपालः कुबेर इव 'णरवई' नरपतिः, 'अमरवइसण्णिभाए इड्ढीए' अमरपतिसन्निभया=इन्द्रसदृश्या ऋद्ध्या, 'पहियकित्ती'

थे। 'चक्रवर्ती जैसे थे'-इसका मतलब यह है कि उत्तर भरतार्ध के साधन मे प्रवृत्त होने से चक्रवर्ती जैसे थे। (अब्भहियं रायतेयलच्छीए दिप्पमाणे) जो राजसी तेज से और राजलक्ष्मी से अधिक देदीप्यमान थे। ऐसे ये कूणिक राजा (हत्थि-क्खंध-वर-गए) जब हाथी पर बैठे तब इन्हों ने अपने ऊपर (सकोरंट-मल्ल-दामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं) कोरंट पुष्पों की मालाओ से युक्त छत्र धारण किया, और इनके ऊपर (सेय-वर-चामराहिं उद्धुव्वमाणीहिं २) सफेद चमर ढुलने लगे। इनसे ये (णरवई) राजा (वेसमणे चेव) कुबेर के समान दिखने लगे। तथा (अमरवइसण्णिभाए इड्ढीए पहियकित्ती) इन्द्र के

कप्पे) માણુસોના રાજાઓના પણ રાજા-ચક્રવતી જેવા હતા. 'ચક્રવતી જેવા હતા'-એની મતલબ એ છે કે ઉત્તર ભરતાર્ધને સ્વાધીન કરવામાં પ્રવૃત્ત હોવાથી ચક્રવતી જેવા હતા. (अब्भहियं रायतेयलच्छीए दिप्पमाणे) જેઓ રાજસી તેજથી તથા રાજલક્ષ્મીથી અધિક દેદીપ્યમાન હતા. એવા આ કૂણિક રાજા (हत्थि-क्खंध-वरगए) જ્યારે હાથી ઉપર બેઠા ત્યારે તેમણે પોતાના ઉપર (सकोरंट-मल्ल-दामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं) કોરંટપુષ્પોની માળાઓથી યુક્ત છત્ર ધારણ કર્યું, અને તેમના ઉપર (सेयवरचामराहिं उद्धुव्वमाणीहिं २) સફેદ ચામર ઢોળાવા લાગ્યા. તેનાથી તેઓ (णरवई) રાજા (वेसमणे चेव) કુબેરના જેવા દેખાવા લાગ્યા તથા (अमरवइसण्णिभाए इड्ढीए पहियकित्ती) ઇંદ્રના જેવી ઋદ્ધિના કારણથી વિખ્યાત કીર્તિવાળા તેઓ (हय-

लियाए चाउरंगिणीए सेणाए समणुगम्ममाणमग्गे जेणेव पुण्णभद्दे चेइए तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥ सू० ५० ॥

मूलम्—तए णं तस्स कूणियस्स रण्णो भंभसारपुत्तस्स

प्रथितकीर्ति', 'हय-गय-पवर-जोह-कलियाए चाउरंगिणीए सेणाए' हयगजरथप्रवरयोधकलितया चतुरङ्गिण्या सेनया-हयैर्गजै रथै प्रवरयोधै रथिभिर्महारथिभि कलितया=युक्तया, चत्वारि अङ्गानि यस्यां सा चतुरङ्गिणी तया-हयगजरथपदातिरूपैश्चतुर्भिरङ्गैः समेतया सेनया 'समणुगम्ममाणमग्गे' समनुगम्यमानमार्गः-समनुगम्यमानो मार्गो यस्य स तथा, 'जेणेव पुण्णभद्दे चेइए' यत्रैव पूर्णभद्रं चैत्यं 'तेणेव' तत्रैव 'पहारेत्थ' प्रधारितवान् 'गमणाए' गमनाय=पूर्णभद्रोद्यान गन्तु मनसि निश्चयं कृतवान् ॥सू० ५०॥

'तए णं' इत्यादि। 'तए णं तस्स कूणियस्स रण्णो भंभसारपुत्तस्स पुरओ' ततः खलु तस्य कूणिकस्य राज्ञो भंभसारपुत्रस्य पुरत 'महं' महान्तः=उच्चाः, 'आसा' अश्वा =तुरङ्गमा', 'आसवरा' अश्ववरा-जात्या शृङ्गारेण च वराः=श्रेष्ठाः अश्वा

समान ऋद्धि के कारण विख्यात कीर्तिवाले ये (हय-गय-पवरजोह-कलियाए चाउरंगिणीए सेणाए समणुगम्ममाणमग्गे जेणेव पुण्णभद्दे चेइए तेणेव पहारेत्थ गमणाए) घोड़ा, हाथी और श्रेष्ठ योद्धाओ से युक्त चतुरंगिणी सेना से युक्त हो जहाँ पूर्णभद्र नामका उद्यान था उस ओर चले ॥ सू. ५० ॥

'तए णं तस्स कूणियस्स रण्णो' इत्यादि।

(तए णं) इसके वाद (तस्स कूणियस्स रण्णो भंभसारपुत्तस्स) भंभसार के पुत्र उन कूणिक राजा के (पुरओ) आगे आगे (महं आसा) वड़े ऊँचे २ घोडे एवं (आसवरा) जाति और शृंगार से उत्तम घोडे चलने लगे। (उभओ पासिं णागा णाग-

गय-पवरजोह-कलियाए चाउरंगिणीए सेणाए समणुगम्ममाणमग्गे जेणेव पुण्णभद्दे चेइए तेणेव पहारेत्थ गमणाए) घोडा, હાથી અને શ્રેષ્ઠ યોદ્ધાઓથી યુક્ત ચતુરંગિણી સેનાથી યુક્ત થઈ જ્યાં પૂર્ણભદ્ર નામનું ઉદ્યાન હતું તે તરફ ચાલ્યા (સૂ. ૫૦)

'तए णं तस्स कूणियस्स रण्णो' ઇત્યાદિ.

(तए णं) ત્યાર પછી (तस्स कूणियस्स रण्णो भंभसारपुत्तस्स) ભંભસારના પુત્ર તે કૂણિક રાજાની (पुरओ) આગળ આગળ (महं आसा) બહુ ઉંચા ઉંચા ઘોડા તેમજ (आसवरा) જાતિ તથા શણગારથી ઉત્તમ ઘોડા ચાલવા

पुरओ महं आसा आसवरा उभओ पासिं णागा णागवरा पिट्ठओ रहसंगेल्ली ॥ सू० ५१ ॥

मूलम्—तए णं से कूणिए राया भंभसारपुत्ते अब्भुगयभिंगारे पग्गहियतालयंटे ऊसविय-सेय-च्छत्ते पवीइय-

संप्रस्थिताः, 'उभओ पासिं' उभयोः पार्श्वयोः=वामदक्षिणयोः 'णागा' नागाः=महान्तो गजाः 'णागवरा' नागवराः=जात्या शृङ्गारेण च वराः=श्रेष्ठा गजाः संप्रस्थिताः, तथा—'पिट्ठओ' पृष्ठतः='रहसंगेल्ली' रथसंगेल्ली=रथसमूहः संप्रस्थितः। 'संगेल्ली' इति समूहवाचको देशीयः शब्दः ॥ सू० ५१ ॥

टीका—'तए णं से' इत्यादि। 'तए णं से कूणिए राया भंभसारपुत्ते' ततः खलु स कूणिको राजा भंभसारपुत्रः 'अब्भुग्गयभिंगारे' अभ्युद्गतभृङ्गारः—अभ्युद्गतः=पुरतः प्रस्थितः भृङ्गारः='झारी' इति प्रसिद्धं जलपात्रं यस्य स तथा 'पग्गहियतालयंटे' प्रगृहीततालवृन्तः—प्रगृहीतं तालवृन्तं यस्मै स प्रगृहीततालवृन्तः। 'ऊसविय-सेय-च्छत्ते' उच्छ्रितश्वेतच्छत्रः—'ऊसविय' उच्छ्रितम्=उपरि वितानितं श्वेतं=धवलं छत्र

वरा) तथा उनके दोनो तरफ बडे २ हाथी एवं जाति से और शृंगार से श्रेष्ठ गजराज चलने लगे, और (पिट्ठओ) उनके पीछे २ (रहसंगेल्ली) रथका समूह चला ॥ ५१ ॥

'तए णं से कूणिए राया' इत्यादि।

(तए णं) उसके बाद (से कूणिए राया भंभसारपुत्ते) भंभसार के पुत्र वे कूणिक राजा कि, जिनके आगे (अब्भुग्गयभिंगारे) जल से भरी हुई झारियाँ थीं, (पग्गहियतालयंटे) जिनके दोनो ओर पवनपंखे हो रहे थे, (ऊसविय-सेय-छत्ते) जिनके ऊपर श्वेत छत्र धरा हुआ था, तथा (पवीइय-वाल-वीयणीए) जिनके ऊपर वाल-व्यजन अर्थात् चमर ढोरा जा रहा था,

લાગ્યા. (उभओ पासि णागा णागवरा) તથા તેમની બન્ને તરફ મોટા મોટા હાથી તેમજ જાતિથી શણગારથી શ્રેષ્ઠ ગજરાજ ચાલવા લાગ્યા. તથા (पिट्ठओ) તેમની પાછળ પાછળ (रहसंगेल्ली) રથનો સમૂહ ચાલ્યો. (સૂ. ૫૧)

"तए णं से कूणिए राया" ઇત્યાદિ.

(तए ण) ત્યાર પછી (से कूणिए राया भंभसारपुत्ते) ભંભસારના પુત્ર તે કૂણિક રાજા કે જેના આગળ (अब्भुग्गयभिंगारे) જલથી ભરેલી ઝારીઓ હતી, (पग्गहियतालयंटे) જેની બન્ને બાજુએ પવનપંખા થઈ રહ્યા હતા, (ऊसविय-सेय-छत्त) જેના ઉપર શ્વેત છત્ર ધરેલું હતું, તથા (पवीइयवालवीय-

वाल-वीयणीए सव्विड्ढीए सव्वज्जुईए सव्वबलेणं सव्वसमुदएणं सव्वादरेणं सव्वविभूईए सव्वविभूसाए सव्वसंभमेणं सव्व-पुप्फ-गंध-मल्ला-लंकारेणं सव्व-तुडिय-सद्द-सण्णिणा-

यस्मै स तथा। 'पवीइय-वाल-वीयणीए' प्रवीजित-वाल-व्यजनिकः-प्रवीजिता=प्रचालिता वालव्यजनिका यस्मै स तथा, 'सव्विड्ढीए' सर्वर्द्ध्या=सर्वया ऋद्ध्या। 'सव्वज्जुईए' सर्वद्युत्या=सकलवस्त्राभरणानां प्रभया, 'सव्वबलेणं' सर्वबलेन=सर्वसैन्येन, 'सव्वसमुदएणं' सर्वसमुदयेन = सर्वपरिवारादिसमुदायेन, 'सव्वादरेणं' सर्वादरेण=सर्वप्रयत्नेन, 'सव्वविभूईए' सर्वविभूत्या=सर्ववैभवेन, 'सव्वविभूसाए' सर्वविभूषया = सर्वविधनेपथ्यादिधारणेन, 'सव्वसंभमेणं' सर्वसम्भ्रमेण = सर्वेण औत्सुक्येन=स्नेहमयेन चाञ्चल्येनेत्यर्थः, 'सव्व-पुप्फ-गंध-मल्ला-लंकारेण' सर्व-पुष्प-गन्ध-माल्या-ऽलङ्कारेण, 'सव्व-तुडिय-सद्द-सण्णिणाएणं' सर्व-त्रुटित-शब्द-सन्निनादेन-सर्वविधानां त्रुटितानां=वाद्यानां यो शब्दः तस्य सन्निनादेन=प्रतिध्वनिना। 'महया

ऐसे वे कूणिक राजा (सव्विड्ढीए) अपनी समस्त राज्य ऋद्धिसे (सव्वज्जुईए) समस्त वस्त्र और आभरणों की प्रभासे (सव्वबलेणं) अपनी समस्त सेनाओं से (सव्वसमुदएणं) अपने समस्त परिजनों से, (सव्वादरेण) आदरसत्काररूप सभी प्रयत्नों से (सव्वविभूईए) अपने समस्त ऐश्वर्य से (सव्वविभूसाए) सभी प्रकार के वस्त्राभरणों की शोभा से, (सव्वसंभमेणं) भक्तिजनित अत्यधिक उत्सुकता से (सव्व-पुप्फ-गंध-मल्ला-लंकारेणं) सब तरह के पुष्पों से, सब तरह के गन्ध द्रव्यों से, सब तरह की मालाओं से, एवं सब तरह के अलंकारों से (सव्व-तुडिय-सद्द-सण्णिणाएणं) सभी प्रकार के वादित्रों की मधुर ध्वनि से, तथा-(महया

णीए) જેના ઉપર વાળવ્યજન અર્થાત્ ચમર ઢોળાઈ રહ્યાં હતા, એવા તે કૂણિક રાજા (सव्विड्ढीए) પોતાની સમસ્ત રાજ્ય ઋદ્ધિથી, (सव्वज्जुईए) સમસ્ત વસ્ત્ર તથા આભરણોના પ્રભાવ વડે, (सव्वबलेणं) પોતાની સમસ્ત સેનાઓ વડે, (सव्वसमुदएणं) પોતાના સમસ્ત પરિજનો વડે, (सव्वादरेणं) આદર સત્કાર રૂપ સઘળા પ્રયત્નો વડે (सव्वविभूईए) પોતાના સમસ્ત ઐશ્વર્ય વડે, (सव्वविभूसाए) તમામ પ્રકારના વસ્ત્રાભરણોની શોભા વડે, (सव्वसंभमेणं) ભક્તિજનિત અત્યંત ઉત્સુકતા વડે, (सव्व-पुप्फ गंध-मल्ला-लंकारेणं) સર્વ પ્રકારના પુષ્પો વડે, સર્વ પ્રકારના ગંધદ્રવ્યો વડે, સર્વ પ્રકારની માળાઓ વડે તેમજ સર્વ પ્રકારના અલંકારો વડે, (सव्व-तुडिय-सद्द-सण्णिणाएणं) સર્વ પ્રકારનાં વાજિંત્રોના મધુર ધ્વનિ વડે, તથા (महया इड्ढीए) પોતાની વિશિષ્ટ

**एणं महया इड्ढीए महया जुईए महया बलेणं महया समुदएणं महया वर-तुडिय-जमगसमग-प्पवाइएणं संख-पणव-पडह-भेरि-झल्लरि-खरमुहि-हुडुक्क-मुरय-मुअंग-दुंदुहि-णिग्घोस-णाइय-रवेणं चंपाए णयरीए मज्झं-मज्झेणं णिग्गच्छइ ॥ सू० ५२ ॥**

इड्ढीए' महत्या ऋद्धया 'महया जुईए' महत्या द्युत्या, 'महया वलेणं' महता बलेन-विपुलसैन्येन, 'महया समुदएणं' महता समुदायेन=समूहेन। 'महया वर-तुडिय-जमग-समग-प्पवाइएणं' महता वर-त्रुटित-यमकसमक-प्रवादितेन-महता=बृहता, वरत्रुटितानां=श्रेष्ठविविधवाद्यानां-यमकसमकं=युगपत्प्रवादितेन 'संख-पणव-पडह-भेरि-झल्लरि-खरमुहि-हुडुक्क-मुरय-मुअंग-दुंदुहि-णिग्घोस-णाइय-रवेणं' शङ्ख-पणव-पटह-भेरी-झल्लरी-खरमुखी-हुडुक्क-मुरज-मृदङ्ग-दुन्दुभि-निर्घोष-नादित-रवेण-शङ्खादिदुन्दुभ्यन्तानां वाद्यविशेषाणां निर्घोषस्य नादितरवेण=प्रतिध्वनिना चम्पाया नगर्या मध्यमध्येन 'णिग्गच्छइ' निर्गच्छति ॥ सू. ५२ ॥

इड्ढीए) अपनी विशिष्ट ऋद्धि से, (महया जुईए) अपनी विशिष्ट द्युति से, (महया वलेणं) अपनी विशिष्ट सेना से (महया समुदएणं) अपने विशिष्ट परिजनों से (महया-वर-तुडिय-जमग-समग-पवाइएण) एक ही साथ बजने वाले बाजों की मनोहर महाध्वनि से, तथा (संख-पणव-पडह-भेरि-झल्लरि-खरमुहि-हुडुक्क-मुरय-मुअंग-दुंदुहि-णिग्घोस-णाइय-रवेणं) शख, पणव, पटह, भेरी, झल्लरी, खरमुखी, हुडुक्क, मुरज, मृदङ्ग एवं दुन्दुभि के निर्घोष की प्रतिध्वनि से शोभित होते हुए (चंपाए णयरीए मज्झंमज्जेणं णिग्गच्छइ) चम्पा नगरी के बीचो-बीच से होकर चले ॥ सू. ५२ ॥

ઋદ્ધિ વડે, (महया जुईए) પોતાની વિશિષ્ટ દ્યુતિ વડે, (महया बलेणं) પોતાની વિશિષ્ટ સેના વડે, (महया समुदएणं) પોતાના વિશિષ્ટ-પરિજનો વડે, (महया वर-तुडिय-जमगसमग-पवाइएणं) એકસાથે વગાડતા વાજાંના મનોહર મહાધ્વનિ વડે, તથા (संख-पणव-पडह-भेरी-झल्लरि-खरमुहि-हुडुक-मुरय-मुअग-दुंदुहि-णिग्घोस-णाइय-रवेणं) શંખ, પણુવ, પટહ, ભેરી, ઝલ્લરી, ખરમુખી, હુડુક્ક, મુરજ, મૃદંગ, તેમજ દુંદુભિના નિર્ઘોષની પ્રતિધ્વનિ વડે શોભતા (चंपाए णयरीए मज्झं-मज्झेणं णिगगच्छइ) ચંપા નગરીના વચ્ચો-વચ્ચ થઈને ચાલ્યા. (સૂ. ૫૨)

मूलम्—तए णं तस्स कूणियस्स रण्णो चंपाए णयरीए मज्झंमज्झेणं निग्गच्छमाणस्स बहवे अत्थत्थिया कामत्थिया भोगत्थिया लाभत्थिया किब्बिसिया कारोडिया कारवाहिया संखिया चक्किया नंगलिया मुहमंगलिया वद्धमाणा पूसमाणया

टीका—'तए णं' इत्यादि । 'तए णं' ततः=चम्पानगरीमध्येन निर्गमनाऽनन्तरं खलु 'तस्स कूणियस्स रण्णो' तस्य कूणिकस्य राज्ञः, 'चंपाए णयरीए मज्झंमज्झेणं निग्गच्छमाणस्स' चम्पाया नगर्या मध्यमध्येन निर्गच्छतः 'बहवे' बहवः=अनेके 'अत्थत्थिया' अर्थाऽर्थिकाः=धनार्थिकाः, 'कामत्थिया' कामार्थिकाः=सुखार्थिकाः। 'भोगत्थिया' भोगार्थिकाः, 'लाभत्थिया' लाभार्थिकाः=लाभाऽभिलाषिणः, 'किब्बिसिया' किल्विषिकाः=भाण्डचेष्टाकारिणः-हास्यकरा इत्यर्थः, 'कारोडिया' कापालिकाः, 'कारवाहिया' कारवाधिताः-कर एव कारः, तेन बाधिताः=राजकरपीडिताः, 'संखिया' शाङ्खिकाः=शङ्खवादकाः 'चक्किया' चाक्रिकाः=चक्रधारकाः 'नंगलिया'

---

'तए णं तस्स कूणियस्स' इत्यादि।

(तए णं) उसके बाद (तस्स कूणियस्स रण्णो) उस कूणिक राजा के (चंपाए णयरीए मज्झंमज्झेणं) चंपा नगरी के मध्यभाग से होकर निकलते समय (बहवे अत्थत्थिया कामत्थिया) अनेक धनार्थियों ने-सुखार्थियों ने-(भोगत्थिया लाभत्थिया) अनेक भोगार्थियों ने, अनेक लाभार्थियों ने, (किब्बिसिया) भण्डचेष्टा करने वालोंने-हँसी-मजाक करने वालो ने, (कारोडिया) अनेक कापालिकों ने-एक प्रकार के भिक्षुकोंने, (कारवाहिया) अनेक राजकरपीडितों ने, (संखिया) अनेक शंख बजाने वालो ने (चक्किया) अनेक चक्रधारियोंने, (नंगलिया) अनेक कृषकों ने, (मुहमंगलिया) अनेक शुभाशीर्वाद

---

'तए णं तस्स कूणियस्स' ઇત્યાદિ.

(तए णं) ત્યાર પછી (तस्स कूणियस्स रण्णो) તે કૂણિક રાજાના (चंपाए णयरीए मज्झंमज्झेणं) ચંપા નગરીના મધ્યભાગમાંથી નીકળતી વખતે (बहवे अत्थत्थिया कामत्थिया) અનેક ધનાર્થિઓએ, અનેક કામાર્થિઓએ-સુખાર્થિઓએ (भोगत्थिया लाभत्थिया) અનેક ભોગાર્થિઓએ, અનેક લાભાર્થિઓએ, (किब्बिसिया) ભંડચેષ્ટા કરવાવાળાઓએ-હાસી મજાક કરવાવાળાઓએ, (कारोडिया) અનેક કાપાલિકોએ-એક પ્રકારના ભિક્ષુઓએ, (कारवाहिया) અનેક રાજકરપીડિતોએ, (संखिया) અનેક શંખ બજાવવાવાળાઓએ, (चक्किया)

खंडियगणा ताहिं इट्ठाहिं कंताहिं पियाहिं मणुण्णाहिं मणामाहिं मणाभिरामाहिं हिययगमणिज्जाहिं वग्गूहिं जय–विजय–मंगल-सएहिं अणवरयं अभिणंदंता य अभित्थुणंता य एवं वयासी-

लाङ्गलिका =कर्षका 'मुहमंगलिया' मुखमङ्गलिका –मुखे मङ्गलं येषामस्ति ते मुखमङ्गलिका =शुभवचनवादका', 'वद्धमाणा' वर्द्धमाना.=स्कन्धेष्वारोपिता पुरुषा', 'पूसमाणवा' पुष्यमानवा =मागधा', 'खंडियगणा' खण्डिकगणा =छात्रसमुदायाः । एते सर्वे 'ताहिं' ताभि =विवक्षिताभि', 'इट्ठाहिं' इष्टाभिर्वाञ्छिताभि., 'कंताहिं' कान्ताभिः-कमनीयाभि, 'पियाहिं' प्रियाभि, 'मणुण्णाहिं' मनोज्ञाभि'=सुन्दरतया मनोऽनुकूलाभि, 'मणामाहिं' मनोऽमाभि –मनसा अम्यन्ते=गम्यन्ते इति मनोऽमास्ताभि –मनसाऽवगमनीयाभि –हृदयाह्लादकत्वात्. 'मणाभिरामाहिं' मनोऽभिरामाभिः, 'वग्गूहिं' वाग्भि, 'जय–विजय–मंगल–सएहिं' 'जय–विजय' इत्यादिभिर्मङ्गलकारकवचनशतै 'अणवरयं' अनवरतम्. 'अभिणंदंता य' अभिनन्दयन्तश्च, 'अभित्थुणंता य' अभिष्टुवन्तश्च ते पूर्वोक्ता अर्थाऽर्थिकादयो विरुदावलीपाठादिना राजान प्रसादयन्त 'एवं वयासी' एवमवादिषु –'जय जय णंदा' जय जय नन्द ! नन्दयति=आनन्दयति

देने वालों ने, (वद्धमाणा) कधों पर बैठे हुए अनेक पुरुषों ने, (पूसमाणया) विरुदावली बोलने वालों ने (खंडियगणा) छात्रगणोंने (ताहिं इट्ठाहिं कंताहिं पियाहिं मणुण्णाहिं मणामाहिं मणाभिरामाहिं) अपनी २ भाषा के अनुसार इष्ट, कमनीय, प्रिय, मनोज्ञ, हृदयाह्लादक, मनोभिराम (हिययगमणिज्जाहिं) एवं हृदयंगम (वग्गूहिं) वचनों से (जयविजयमंगलसएहिं) कि जिनमें जय और विजय के ही मंगलकारक शब्दों का समावेश था, (अणवरयं) अच्छी तरह (अभिणंदंता य अभित्थुणंता य एवं वयासी) अभिनंदन एवं स्तुति करते हुए इस प्रकार कहना प्रारंभ किया–(जय जय णंदा जय

અનેક ચક્રધારીઓએ (नंगलिया) અનેક ખેડૂતોએ (मुहमंगलिया) અનેક શુભાશીર્વાદ દેવાવાળાઓએ (वद्धमाणा) કાંધ ઉપર બેઠેલા અનેક પુરૂષોએ (पूसमाणया) બિરદાવલી બોલનારાઓએ (खंडियगणा) છાત્રગણોએ (ताहिं इट्ठाहिं कताहिं पियाहिं मणुण्णाहिं मणामाहिं मणाभिरामाहिं) પોતપોતાની ભાષા-અનુસાર ઇષ્ટ, કમનીય, પ્રિય, મનોજ્ઞ, હૃદયાહ્લાદક, મનોભિરામ, (हियय-गमणिज्जाहिं) તેમજ હૃદયંગમ (वग्गूहिं) વચનો દ્વારા (जय-विजय मंगलसएहिं) કે જેમાં જય અને વિજયના મંગલકારક શબ્દોનો સમાવેશ હતો, (अण-वरयं) સારી રીતે (अभिणंदंता य अभित्थुणंता य एवं वयासी) અભિનંદન તેમજ

**जय जय णंदा ! जय जय भद्दा ! भद्दं ते, अजियं जिणाहि, जियं च पालेहि, जियमज्झे वसाहि । इंदो इव देवाणं, चमरो इव असुराणं, धरणो इव नागाणं, चंदो इव ताराणं, भरहो इव**

जनान्–इति नन्द', तत्सम्बोधने हे नन्द ! जय जय=त्वं विजयवान् भव । **'जय जय भद्दा'** जय जय भद्र ! हे भद्र !=कल्याणस्वरूप ! विजयस्व । **'भद्द ते'** भद्रं तुभ्यमस्तु । **'अजियं जिणाहि'** अजितं जय=अजितं देशादिकं जय, **'जियं च पालेहि'** जितं च पालय, **'जियमज्झे वसाहि'** जितमध्ये वस । तथा त्वम् **'इंदो इव देवाणं'** इन्द्र इव देवानाम्, **'चमरो इव असुराणं'** चमर इव=एतन्नामक इन्द्र इव असुराणाम्=सुरविरोधिनाम्, **'धरणो इव नागाणं'** धरणेन्द्र इव नागानाम्, **'चंदो इव ताराणं'** चन्द्र इव तारागाम्, **'भरहो इव मणुयाणं'** भरत इव मनुजानाम्, **'बहूइं वासाइं'** बहूनि वर्षाणि, **'बहूइं वाससयाइं'** बहूनि वर्षशतानि, **'बहूइं वाससहस्साइं'** बहूनि वर्षसहस्राणि,

**जय भद्दा)** हे नन्द–मनुष्यो को अपार आनद प्रदान करनेवाले स्वामिन् ! आपकी जय हो जय हो । हे भद्र !–कल्याणस्वरूप ! आप सदा विजयशाली रहें। **(भद्द ते)** आपका सदा कल्याण हो ! **( अजियं जिणाहि )** आपने जिसको नहीं जीता हो, उस पर विजय करे । **(जियं च पालेहि)** जिसको आपने जीता है उसका पालन करे । **( जियमज्झे वसाहि)** जीते हुए प्रदेश में सदा आपका निवास रहे ! **(इंदो इव देवाणं, चमरो इव असुराणं, धरणो इव नागाणं, चंदो इव ताराणं, भरहो इव मणुयाणं)** देवो मे इन्द्र की तरह, असुरो में चमरेन्द्र की तरह, नागकुमारों मे धरणेन्द्र की तरह, ताराओ मे चंद्र की तरह और मनुष्यो में भरत की तरह आप **( बहूइं वासाइं बहूइं वाससयाइं बहूहिं**

સ્તુતિ કરતાં આ પ્રકારે કહેવાનો પ્રારંભ કર્યો. (जय जय णंदा जय जय भद्दा) હે નંદ–મનુષ્યોને અપાર આનંદ આપવાવાળા સ્વામિન્ ! આપની જય હો જય હો ! હે ભદ્ર !–કલ્યાણ સ્વરૂપ ! આપ સદા વિજયશાળી રહો ! (भद्दं ते) આપનું સદા કલ્યાણ હો. (अजियं जिणाहि) આપે જેને ન જીત્યા હોય તેના ઉપર વિજય મેળવો. ( जियं च पालेहि ) જેને આપે જીત્યા હોય તેમનું પાલન કરો. ( जियमज्झे वसाहि ) જીતેલા પ્રદેશમાં સદા આપનો નિવાસ રહે (इदो इव देवाणं, चमरो इव असुराणं, धरणो इव नागाणं, चंदो इव ताराणं, भरहो इव मणुयाणं) દેવોમાં ઇંદ્રની જેમ, અસુરોમાં ચમરેદ્રની જેમ, નાગકુમારોમાં ધરણેદ્રની જેમ, તારાઓમાં ચંદ્રની જેમ અને મનુષ્યોમા ભરતની જેમ, આપ (बहूइं वासाइं बहूइं वाससयाइं बहूइं वाससहस्साइं) ઘણા વરસો સુધી,

मणुयाणं, वहूइं वासाइं वहूइं वाससयाइं वहूइं वाससहस्साइं अणहसमग्गो हट्ठतुट्ठो परमाउं पालयाहि, इट्ठजणसंपडिवुडो चंपाए णयरीए अण्णेसिं च वहूणं गामा-गर-णयर-खेड-

'अणहसमग्गो' अनघसमग्र', अनघश्चासौ समग्रश्चेति विग्रहः, निष्पाप परिपूर्णसम्पत्तिपरिवारादिभि सम्पन्नश्च, यद्वा-अनघेन=पुण्येन समग्र'=पूर्ण., यद्वा-न अघसमग्रः=अनघसमग्र =सर्वविधपापरहित इत्यर्थ', 'हट्ठतुट्ठो' हृष्टतुष्टः सन् 'पालयाहि' पालय 'परमाउं' परमायु.-परमम्=उत्कृष्टम्-अपमृत्युवर्जितमखण्डितं पूर्णमायु., तथा-'इट्ठ-जण-संपरिवुडो' इष्टजनसम्परिवृत'=परिवारादिसमेत', चम्पाया नगर्या', 'अण्णेसि च वहूणं गामा-गर-णयर-खेड-कव्वड-दोणमुह-मडंव-पट्टण-आसम-निगम-संवाह - संनिवेसाणं' अन्येषाञ्च वहूनां ग्रामा-ऽऽकर-नगर-खेट-कर्वट-द्रोणमुख-मडम्ब-पट्टना-ऽऽश्रम-निगम-संवाह-सन्निवेशानाम्- तत्र-ग्राम'=साधारणजनवासस्थानम्, आकरः = लवणादिसम्भवस्थानम्, नगरम्=अविद्यमानकरम्, खेटं=धूलीप्राकारवेष्टितम्, कर्वट=कुनगरम्,

वाससहस्साइं) वहुत वर्षोतक, वहुत सैकडों वर्षों तक, वहुत हजार वर्षो तक (अणहसमग्गो) पूर्ण पुण्यशाली रहते हुए अथवा परिपूर्ण सम्पत्ति एव परिवार आदि से सम्पन्न अथवा सर्वविधपापरहित होते हुए (हट्ठतुट्ठो परमाउं पालयाहि) सदा आनंद और संतोष के साथ अखण्ड आयु भोगवे। (इट्ठ-जण-संपडिवुडो चंपाए णयरीए अण्णेसिं च वहूणं गामा-गर-णयर-खेड-कव्वड-दोणमुह-मडंव-पट्टण-आसम-निगम-संवाह-संनिवेसाणं आहेवच्चं पोरेवच्चं सामित्तं भट्टित्तं महत्तरगत्तं आणाईसरसेणावच्चं कारेमाणे पालेमाणे) इष्ट जनों से परिवृत होते हुए आप चंपानगरी के तथा और भी वहुत से गांवों के, आकर-लवण आदि के उत्पत्ति स्थानों के, नगरों-जिनमे कर नहीं लगता हो

घणा सेंकडो वरसो सुधी, घणा हजार वरसो सुधी (अणहसमग्गो) पूर्ण पुण्यशाली रहेतां अथवा परिपूर्ण संपत्ति तेमज परिवार आदिथी संपन्न अथवा सर्वरीते पापरहित रहेता (हट्ठतुट्ठो परमाउं पालयाहि) सदा आनंद तथा संतोषपूर्वक अखंड आयु भोगवो, (इट्ठजणसंपडिवुडो चंपाए णयरीए अण्णेसि च वहूणं गामा-गर-णयर-खेड-कव्वड-दोणमुह-मडंव-पट्टण-आसम-निगम-संवाह-संन्निवेसाणं आहेवच्चं पोरेवच्चं सामित्तं भट्टित्तं महत्तरगत्तं आणाईसर-सेणावच्चं कारेमाणे पालेमाणे) ईष्ट माणुसो वडे परिवृत (विंटायेला) आप चंपानगरीना तथा बीजा पण घणा गामोना, आकरोना-लवण आदिना उत्पत्तिस्थानोनां, नगरोना-जेमां कर न लेवातो होय एवी वस्तीओना

**कव्वड-दोणमुह-मडंब-पट्टण-आसम-निगम-संवाह-संनिवे-साणं आहेवच्चं पोरेवच्चं सामित्तं भट्टित्तं महत्तरगत्तं आणा-ई-**

द्रोणमुखं=जलस्थलपथोपेतम्, मडम्बम्=अविद्यमानासन्नग्रामान्तरम्, 'पट्टणं' पत्तनम्=जलपथेन स्थलपथेन वा निर्गमप्रवेशौ यत्र तत् पत्तनम्, यथा काञ्चीतो मुम्बापुरी, यद्वा-जलपथेनैव निर्गमप्रवेशौ न तु स्थलपथेन, यथा-भारताद् आंग्लराजधानी 'इंग्लेण्ड' इति प्रसिद्धा; तत्, किंच-स्थलपथेनैव निर्गमप्रवेशौ न तु जलपथेन तत्, एतत् सर्वं पत्तनमुच्यते। यद्वा-यत्र सर्वं वस्तु लभ्यते तत् पत्तनम्। आश्रमः=तापसाद्यावासः, निगमः=वाणिज्यप्रधानं नगरम्, संवाहः=कृषीवलानां धान्यरक्षणस्थानम्, संनिवेशः=सार्थकटकादीनामुत्तरणस्थानम्। तेषाम्-'आहेवच्चं' आधिपत्यम्, 'पोरेवच्चं' पौरोवृत्यम्=पुरोवर्तित्वम्-अग्रेसरत्वम् 'सा-

ऐसी बस्तियों के, खेटो के-धूलि के प्राकार से परिवेष्टित बस्तियों के, कर्बटों के-सामान्य नगरों के, द्रोणमुखों-जलमार्ग एवं स्थलमार्ग से युक्त प्रदेशों के, मडम्बों-जिनके आसपास दूसरे ग्राम नहीं होते है ऐसे प्रदेशों के, पत्तनों के-जहां जलपथ से भी एवं स्थलपथ से भी आना-जाना होता है; जैसे करॉची से बम्बई, अथवा जहां सिर्फ जलमार्ग से ही आना-जाना होता है; जैसे भारत से इङ्गलैन्ड, अथवा स्थलमार्ग से ही जहां आना-जाना होता है, ये सभी पत्तन कहलाते है। अथवा समस्त वस्तुओ का लाभ जहां होता है वह भी पत्तन है, ऐसे पत्तनों के. आश्रमो के अर्थात् तापस आदि के आवासों के, निगमों के अर्थात् व्यापारिक नगरों के, संवाहों के अर्थात् किसानों के धान्य आदि रखने के स्थलों के, तथा संनिवेशों के अर्थात् सार्थवाह और सेना आदि के उतरने के स्थानों के आधिपत्य को, पौरवृत्य को-अग्रेसरत्वको, स्वामित्व को-प्रभुत्व को, उनके भर्तृत्व को-पोषकत्व को, उनमें मह-

ખેટોના-ધૂળ (માટી)ના પ્રાકારથી પરિવેષ્ટિત વસ્તીઓના, કર્બટોના-સામાન્ય નગરોના, દ્રોણમુખોના-જલમાર્ગ તેમજ સ્થલમાર્ગથી યુક્ત પ્રદેશોના, મડંબોના-જેની આસપાસ બીજાં ગામો ન હોય તેવા પ્રદેશોના, પત્તનોના-જ્યાં જલમાર્ગથી તેમજ સ્થલમાર્ગથી પણ આવી જઇ શકાતું હોય જેમકે કરાંચીથી મુંબઇ, અથવા જ્યાં માત્ર જલમાર્ગથી જ આવી જઇ શકાય, જેમકે ભારતથી ઇંગલાંડ, અથવા માત્ર સ્થલ માર્ગથી જ જ્યાં જઇ આવી શકાય તે બધાં પત્તન કહેવાય છે, અથવા સમસ્ત વસ્તુઓની પ્રાપ્તિ જ્યાં થઈ શકે તે પણ પત્તન છે. એવાં પત્તનોના, આશ્રમોના અર્થાત્ તાપસ આદિના આવાસોના, નિગમોના અર્થાત્ વ્યાપારિક નગરોના, સંવાહોના અર્થાત્ ખેડુતોનાં ધાન્ય આદિ રાખવાનાં સ્થળોના, તથા સંનિવેશોના અર્થાત્ સાર્થવાહ અને સેના આદિના ઉતરવાના સ્થાનોના આધિપત્યને, પૌરવૃત્યને - અગ્રેસર-

सर-सेणावच्चं कारेमाणे पालेमाणे महया-हय-नट्ट-गीय-वाइय-तंती-तल-ताल-तुडिय-घण-मुअंग-पडु-प्पवाइय-रवेणं विउलाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहराहित्ति कट्टु जय जय सद्दं पउंजंति ॥ सू. ५३ ॥

मित्तं भट्टित्तं महत्तरगत्तं' स्वामित्वं=प्रभुत्वम्, भर्तृत्वम्=पोषकत्वम्, महत्तरकत्वम्=नायकत्वम्, 'आणा-ईसर-सेणावच्चं' आज्ञेश्वर-सेनापत्यम्-आज्ञेश्वरः=आज्ञाप्रदः सेनापतिपुयः स आज्ञेश्वरसेनापतिः, यस्याज्ञामुपादाय सेनापतिः स्वकार्ये प्रवर्तते स इत्यर्थः, तस्य भावस्तत्त्वं तत् 'कारेमाणे' कारयन् 'पालेमाणे' पालयन्=प्रजाजनान् रक्षन् 'महया-हय-नट्ट-गीय-वाइय-तंती-तल ताल-तुडिय-घण-मुअंग-पडु-प्पवाइय-रवेणं' महता अहत-नाटय-गीत-वादित्र-तन्त्री-तल-ताल-तौर्यिक-घन-मृदङ्ग-पटु-प्रवादित-रवेण-महता=दीर्घेण, अहतम्=अव्यवच्छिन्न यन्नाटयं=नाटकम् तत्र यद् गीतं=गेयम्, वादित्रं-वाद्यम्, तथा तन्त्री=वीणा, तलतालाः=हस्तास्फोटाः, तौर्यिकम्=शेषवाद्यसमुदायः, घनमृदङ्गः=मेघवद् ध्वनिकारको मर्दलः-एतत्सर्वं समुदितं पटुप्रवादितं=दक्षपुरुषप्रवादितं तस्य रवेण=नादेन-आनन्दित इति गम्यते, तथाभूतः सन् 'विउलाइं' विपुलानि=अत्यधि-

त्तरकत्व-नायकत्व को, एवं आज्ञेश्वरसेनापत्य को-सेनापतियों के आज्ञाप्रदत्वरूप अधिकार को (कारेमाणे पालेमाणे) कराते हुए, पालते हुए एवं सदा (महया-ऽहय-नट्ट-गीय-वाइय-तंती-तलताल-तुडिय-घणमुअंग-पडु-प्पवाइयरवेणं) व्यवधानरहित-अव्यवच्छिन्न-निरन्तर प्रवर्तित-नाटक में गाये गये गीतों के, चतुरपुरुषों द्वारा बजाये गये वादित्रों के, तथा तन्त्री-वीणा के, तलताल=हस्तस्फोटशब्द-तालियों के, तौर्यिक-और भी अवशिष्ट बाजों के समूह के, घनमृदंगों-मेघकी तरह गरजने वाले ढोलों के एवं मर्दलों के अविरल शब्दों से आनन्दित

त्वने, स्वामित्वने-प्रभुत्वने, भर्तृत्वने-पोषकत्वने, तेमा महत्तरकत्वने-नायकत्वने तेमज आज्ञेश्वरसेनापत्यने - सेनापतिओना आज्ञाप्रदत्वरूप अधिकारने (कारेमाणे पालेमाणे) करावता अने पालता थका, तेमज सदा (महयाऽहय-नट्ट-गीय-वाइय-तंती-तलताल-तुडिय-घणमुअंग-पडु-प्पवाइय-रवेणं) व्यवधानरहित-अव्यवच्छिन्न-निरंतर प्रवर्तित-नाटकमां गवाता गीतोना तेमज चतुर पुरुषो द्वारा वगाडाता वाजिंत्रोना, तथा तंत्री-वीणाना, तलताल-तालिओना, तौर्यिक-बीजा बाकीनां वाजाओना समूहना, घनमृदंगो-मेघनी पेठे गर्जनारा ढोलोना, तेमज मर्दलोना अविरल शब्दो द्वारा आनंदित थतां

मूलम्—तए णं से कूणिए राया भंभसारपुत्ते नयणमालासहस्सेहिं पेच्छिज्जमाणे पेच्छिज्जमाणे, हिययमालासहस्सेहिं

कानि, 'भोगभोगाइं' भोगभोगान् 'भुंजमाणे विहराहित्ति कट्टु' भुञ्जन् विहर इति कृत्वा—इत्युक्त्वा, 'जय जय सद्दं पउंजंति' जयजयशब्दं प्रयुञ्जते—जय जयेति शब्दानुच्चारयन्ति ॥ सू. ५३ ॥

टीका—'तए णं से' इत्यादि। 'तए णं से कूणिए राया भंभसारपुत्ते' ततः खलु स कूणिको राजा भंभसारपुत्रः 'नयणमालासहस्सेहिं पेच्छिज्जमाणे पेच्छिज्जमाणे' नयनमालासहस्रैः प्रेक्ष्यमाणः प्रेक्ष्यमाणः, बहुविधदर्शकजननयनपङ्क्तिभिर्वारं वारं निरीक्ष्यमाणः, 'हिययमालासहस्सेहिं अभिणंदिज्जमाणे अभिणंदिज्जमाणे' हृदयमालासहस्रैरभिनन्द्यमानः अभिनन्द्यमानः—धन्योऽयं कृतपुण्योऽयं सफलजन्माऽयमित्यादि-

होते हुए (विउलाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहराहि) विपुल—अत्यधिक-भोगभोगों को भोगते हुए अपना समय निर्विघ्नरीति से व्यतीत करें, (त्तिकट्टु) इस प्रकार (जय जय सद्दं पउंजंति) वे पूर्वोक्त अर्थाभिलाषी आदि समस्त जय जय शब्द बोलते थे ॥ सू० ५३ ॥

'तए णं से' इत्यादि।

(तए णं) इसके बाद (भंभसारपुत्ते) भंभसार के पुत्र (से) वे (कूणिए) कूणिक (राया) राजा (णयणमालासहस्सेहिं पेच्छिज्जमाणे पेच्छिज्जमाणे) हजारों दर्शकजनों की हजारों नयनपंक्तियों द्वारा निरीक्षित होते हुए, (हियमालासहस्सेहिं अभिणंदिज्जमाणे अभिणंदिज्जमाणे) हजारों मनुष्यो के हृदयसहस्रों द्वारा अभिनंदित होते हुए, अर्थात्-"इस राजा को धन्यवाद है, यह बड़ा पुण्यशाली है, इसका जन्म सफल है" इत्यादि—रीति से बार-

(विउलाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहराहि) विपुल—અતિશય ભોગભોગોને ભોગવતા આપનો સમય નિર્વિઘ્ન રીતે વ્યતીત કરો. (त्ति कट्टु) આ પ્રકારે (जय जय सद्दं पउंजंति) તે ઉપર કહેલા અર્થાભિલાષી આદિ બધા જય જય શબ્દ બોલતા હતા. (सू. ५३)

'तए णं से' ઇત્યાદિ.

(तए णं) ત્યાર પછી (भंभसारपुत्ते) ભંભસારના પુત્ર (से) તે (कूणिए) કૂણિક (राया) રાજા (णयणमालासहस्सेहिं पेच्छिज्जमाणे पेच्छिज्जमाणे) હજારો જોનારા લોકોની હજારો આંખો દ્વારા જોવાતા, (हिययमालासहस्सेहिं अभिणंदिज्जमाणे अभिणंदिज्जमाणे) હજારો મનુષ્યોનાં હજારો હૃદય દ્વારા અભિનંદિત થતા, અર્થાત્—"આ રાજાને ધન્યવાદ છે. તેઓ બહુ બહુ પુણ્યશાલી છે. તેમનો જન્મ સફલ છે." ઇત્યાદિ રીતથી વારંવાર હજારો લોકો દ્વારા હાર્દિક ભાવના-

अभिणंदिज्जमाणे अभिणंदिज्जमाणे, मणोरहमालासहस्सेहिं विच्छि-प्पमाणे विच्छिप्पमाणे, वयणमालासहस्सेहिं अभिथुव्वमाणे अभिथुव्वमाणे, कंति-दिव्व-सोहग्ग-गुणेहिं पत्थिज्जमाणे पत्थिज्ज-

रीत्याऽसकृत् सहस्राऽधिकजनहृदयैः स्तूयमानः, 'मणोरहमालासहस्सेहिं विच्छिप्पमाणे विच्छिप्पमाणे' मनोरथमालासहस्रैर्विस्पृश्यमानः विस्पृश्यमानः=हीनदीनरक्षणपूर्वकं सकलमनोरथपूरकत्वात्—जनानां मनोरथमालासहस्रैर्मुहुर्मुहुः स्पृश्यमानः—'नृपोऽयमस्माक-मापदुद्धारकः पालकश्च, अतोऽयं शतं वर्षाणि जीवतु' इत्यादि मनोरथसहस्रविषयीभवन्-इत्यर्थः । 'वयणमालासहस्सेहिं' वचनमालासहस्रैः—मञ्जुलोदारवचनरचनानिचयैः, 'अभिथुव्वमाणे अभिथुव्वमाणे' अभिष्टूयमानः अभिष्टूयमानः, 'कंति-दिव्व-सोह-ग्ग-गुणेहिं पत्थिज्जमाणे पत्थिज्जमाणे' कान्तिदिव्यसौभाग्यगुणैः प्रार्थ्यमानः प्रार्थ्य-मानः, कान्त्या=देहदीप्त्या, प्रशस्तसौभाग्यादिगुणैश्च हेतुना जनैः सातिशयम् अभिलष्यमाणः अभिलष्यमाणः, 'बहूणं नरनारीसहस्साणं दाहिणहत्थेणं अंजलिमालासहस्साइं

बार सहस्राधिक जनों द्वारा हार्दिक भावना से स्तुत होते हुए, (मणोरहमालासहस्सेहिं विच्छिप्पमाणे विच्छिप्पमाणे) हजारो जनों के मनोरथ सहस्ररूपी मालाओं द्वारा स्पृष्ट होते हुए, अर्थात्—हीनदीन जनो के रक्षापूर्वक समस्त मनोरथों का पूरक होने से ये राजा हम लोगों की आपत्ति से रक्षा करने वाले है, एवं पालक है, इसलिये ये सौ वर्ष तक जीवित रहें" इस प्रकार से जनों के हजारों मनोरथ का पात्र होते हुए, (वयणमालासहस्सेहिं अ-भिथुव्वमाणे अभिथुव्वमाणे) मंजुल एवं उदार वचनों की रचनाओं द्वारा अभिष्टुत होते हुए, (कंति—दिव्व—सोहग्ग—गुणेहिं पत्थिज्जमाणे पत्थिज्जमाणे) देह की दीप्ति से एवं दिव्य—असाधारण सौभाग्यादिक गुणों से जनों द्वारा प्रार्थित होते हुए, (बहूणं नरनारि-

पूर्वक स्तुति करता, (मणोरहमालासहस्सेहिं विच्छिप्पमाणे विच्छिप्पमाणे) हजारो લોકોના હજારો મનોરથરૂપી માલાઓ દ્વારા સ્પર્શાતા, અર્થાત્ હીનદીનજનોની રક્ષાપૂર્વક સમસ્ત મનોરથો પરિપૂર્ણ કરતા હોવાથી આ રાજા અમારી આપત્તિથી રક્ષા કરવાવાળા છે તેમજ પાલક છે, તેથી તેઓ સો વર્ષ સુધી જીવતા રહે—આ પ્રકારના લોકોના હજારો મનોરથોને પાત્ર થતા, (वयण-मालासहस्सेहिं अभिथुव्वमाणे अभिथुव्वमाणे) મંજુલ તેમજ ઉદાર વચનોની રચના દ્વારા અભિષ્ટુત થતા, (कंति-दिव्व-सोहग्ग-गुणेहिं पत्थिज्जमाणे पत्थिज्जमाणे) દેહની દીપ્તિથી તેમજ દિવ્ય—અસાધારણ સૌભાગ્ય આદિક ગુણોથી લોકો દ્વારા પ્રાર્થિત થતા, (बहूणं नरनारिसहस्साणं अंजलिमालासहस्साइं पडिच्छमाणे पडिच्छ-

**माणे; बहूणं नरनारीसहस्साणं दाहिणहत्थेणं अंजलिमालासहस्साइं पडिच्छमाणे पडिच्छमाणे, मंजुमंजुणा घोसेणं पडिबुज्झमाणे पडिबुज्झमाणे, भवणपंतिसहस्साइं समइच्छमाणे समइच्छमाणे, चंपाए नयरीए मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव पुण्णभद्दे चेइए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणस्स**

---

**पडिच्छमाणे पडिच्छमाणे'** बहूनां नरनारीसहस्राणां दक्षिणहस्तेनाञ्जलिमालासहस्राणि-बहूनां नरनारीसहस्राणां यानि अञ्जलिमालासहस्राणि=राज्ञः सत्काराय विरचितानि मालारूपाणि सहस्राणि प्राञ्जलिपुटानि तानि उत्थापितेन दक्षिणहस्तेन प्रतीच्छन् प्रतीच्छन्=वारंवारं स्वीकुर्वन्, **'मंजुमंजुणा घोसेणं पडिबुज्झमाणे पडिबुज्झमाणे'** मञ्जुमञ्जुना घोषेण=अतिकोमलेन शब्देन प्रतिबुध्यमानः २=अनुमोदयन् २, **'भवण-पंति-सहस्साइं समइच्छमाणे समइच्छमाणे'** भवनपङ्क्तिसहस्राणि समतिक्रामन् समतिक्रामन्, **'चंपाए नयरीए मज्झंमज्झेणं'** चम्पाया नगर्या मध्यमध्येन, **'निग्गच्छइ'** निर्गच्छति=निस्सरति, **'निग्गच्छित्ता'** निर्गत्य, **'समणस्स भगवओ महावीरस्स'** श्रमणस्य भगवतो महावीरस्य **'अदूरसामंते'**

---

**सहस्साणं दाहिणहत्थेणं अंजलिमालासहस्साइं पडिच्छमाणे पडिच्छमाणे)** हजारों नरनारियों की अंजलिरूप माला के सहस्रों को जो राजा के सत्कारार्थ विरचित हुई थीं; अपने दक्षिण (दाहिने) हाथ से स्वीकृत करते हुए, **(मजुमंजुणा घोसेणं पडिबुज्झमाणे पडिबुज्झमाणे)** अत्यन्त मधुर स्वर से उनलोगो के द्वारा किये हुए सत्कार-सम्मान का अनुमोदन करते हुए, **(भवण-पंति-सहस्साइं समइच्छमाणे समइच्छमाणे)** एवं हजारो महलों की पंक्ति को पार करते हुए **(चंपाए णयरीए मज्झं मज्झेणं निग्गच्छइ)** चंपा नगरी के बीचमार्ग से होकर निकले, **(निग्गच्छित्ता जेणेव पुण्णभद्दे चेइए तेणेव उवाग-**

---

माणे) હજારો નરનારીઓના હાથની હજારો અંજલીરૂપ માલાઓ જે રાજાના સત્કારાર્થ રચાઈ હતી તેનો પોતાના જમણા હાથથી સ્વીકાર કરતા, (मंजुमंजुणा घोसेणं पडिबुज्झमाणे पडिबुज्झमाणे) અત્યંત મધુર સ્વરથી તે લોકો દ્વારા કરેલા સત્કાર-સમ્માનનું અનુમોદન કરતા, (भवणपतिसहस्साइं समइच्छमाणे समइच्छमाणे) તેમજ હજારો મહેલોની હારને પસાર કરતા (चंपाए णयरीए मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ) ચંપા નગરીના વચ્ચેના માર્ગમાં થઈને નીકળ્યા. (निग्गच्छित्ता जेणेव पुण्णभद्दे चेइए तेणेव उवागच्छइ) નીકળીને જ્યાં પૂર્ણભદ્ર

**भगवओ महावीरस्स अदूरसामंते छत्ताईए तित्थयराइसेसे पासइ, पासित्ता अभिसेक्कं हत्थिरयणं ठवेइ, ठवित्ता आभिसेक्काओ हत्थिरयणाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता अवहट्टु पंच रायकउहाइं, तंजहा—खग्गं छत्तं उप्फेसं वाहणाओ वालवीयणिं; जेणेव समणे**

---

अदूरसमीपे=नातिदूरे नातिसमीपे, किंचिद्दूरे इत्यर्थ । 'छत्ताईए तित्थयराइसेसे' छत्रादिकान् तीर्थकरातिशेषान्=तीर्थकरातिशयान् 'पासइ' पश्यति, 'पासित्ता' दृष्ट्वा, 'आभिसेक्कं हत्थिरयणं' आभिषेक्यं हस्तिरत्नम् 'ठवेइ, ठवित्ता' स्थापयति, स्थापयित्वा, 'आभिसेक्काओ हत्थिरयणाओ' आभिषेक्यात् हस्तिरत्नात् 'पच्चोरुहइ' प्रत्यवरोहति=अवतरति, 'पच्चोरुहित्ता' प्रत्यवरुह्य, 'अवहट्टु पंच रायकउहाइं' अपहृत्य पञ्च राजककुदानि—त्यक्त्वा पञ्च राजचिह्नानि=राजाऽयमिति ज्ञापकानि चिह्नानि, 'तंजहा' तद्यथा—तानि चिह्नानि यथा—'खग्गं' खड्गम्, 'छत्तं' छत्रम्, 'उप्फेसं' मुकुटम् 'उप्फेस' इति

---

च्छइ) निकल कर जहाँ पूर्णभद्र उद्यान था वहाँ आये, (उवागच्छित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अदूरसामंते छत्ताईए तित्थयराइसेसे पासइ) आकर उन्होंने श्रमण भगवान् महावीर के न अतिसमीप और न अतिदूर—किन्तु कुछ ही दूर पर तीर्थकरों के अतिशयस्वरूप छत्रादिकों को देखा, (पासित्ता आभिसेक्कं हत्थिरयणं ठवेइ) देखते ही उन्होंने अपने हाथी को खडा करवाया, (ठवित्ता आभिसेक्काओ हत्थिरयणाओ पच्चोरुहइ) हाथी के खड़े होते ही वे उस हाथी से नीचे उतरे, (पच्चोरुहित्ता अवहट्टु पंच रायकउहाइं) नीचे उतरते ही उन्हो ने इन पांच राजचिह्नों का परित्याग किया, (तं जहा) वे पांच राजचिह्न ये है—(खग्गं छत्तं उप्फेसं वाहणाओ वालवीयणिं) खड्ग-

---

ઉદ્યાન હતુ ત્યા આવ્યા, (उवागच्छित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अदूरसामंते छत्ताइए तित्थयराइसेसे पासइ) આવીને તેઓએ શ્રમણ ભગવાન મહાવીરથી બહુ દૂર નહિ તેમ બહુ સમીપ નહિ, પણ જરા દૂરે, તીર્થંકરોના અતિશય સ્વરૂપ છત્રાદિકોને જોયાં, (पासित्ता आभिसेक्कं हत्थिरयणं ठवेइ) જોતાજ તેઓએ પોતાના હાથીને ઉભો રખાવ્યો, (ठवित्ता आभिसेक्काओ हत्थिरयणाओ पच्चोरुहइ) હાથી ઉભો રહેતા જ તેઓ તે હાથી ઉપરથી નીચે ઉતર્યા, (पच्चोरुहित्ता अवहट्टु पंच रायकउहाइं) નીચે ઉતરીને જ તેઓએ પાચ રાજચિહ્નોનો ત્યાગ કર્યો. (तंजहा) તે પાંચ રાજચિહ્નો આ છે-(खग्गं छत्तं उप्फेसं वाहणाओ वालवीयणिं) ખડ્ગ=તલવાર, છત્ર, ઉપ્ફેસ-મુકુટ, ઉપાનત્-

भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं पंचविहेणं अभिगमेणं अभिगच्छइ, तंजहा-(१) सचित्ताणं दव्वाणं विओसरणयाए, (२) अचित्ताणं दव्वाणं अविओसरणयाए, (३) एगसाडियं उत्तरासंगकरणेणं, (४)

---

देशीयः शब्दः, 'वाहणाओ' उपानहौ 'वालवीयणिं' वालव्यजनीम्-चामरम्, एतानि त्यक्त्वा, 'जेणेव समणे भगवं महावीरे' यत्रैव श्रमणो भगवान् महावीरः, 'तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता' तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य, 'समणं भगवं महावीरं' श्रमणं भगवन्त महावीर 'पंचविहेणं अभिगमेणं अभिगच्छइ' पञ्चविधेनाऽभिगमेनाभिगच्छति-पञ्चप्रकारेण अभिगमेन=सत्कारविशेषेण अभिमुख गच्छति, 'तंजहा' तद्यथा-तत्पञ्चविधाभिगमनं यथा-'सचित्ताणं दव्वाणं विओसरणयाए' सचित्तानां द्रव्याणां व्युत्सर्जनतया-' हरितफलकुसुमादीनां वस्तूनां त्यागेन १, 'अचित्ताणं दव्वाणं अविओसरणयाए' अचित्तानां द्रव्याणामव्युत्सर्जनतया, अचित्तानां वस्त्राभरणादीनाम् अत्यागेन २, 'एगसाडियमुत्त-

---

तलवार, छत्र, मुकुट, उपानत्-पगरखे, एवं वालव्यजनी-चामर। फिर वे (जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ) जहां श्रमण भगवान महावीर विराजमान थे वहाँ पर आये, (उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं पंचविहेणं अभिगमेणं अभिगच्छइ) जाते ही वे पांच प्रकार के अभिगमन-सत्कारविशेष से युक्त होकर प्रभु के सन्मुख पहुँचे। वे पांच प्रकार के सत्कारविशेष इस प्रकार है-(सचित्ताणं दव्वाणं विओसरणयाए) हरित फल फूल आदि सचित्त द्रव्यो का परित्याग करना, (अचित्ताणं दव्वाणं अविओसरणयाए) वस्त्र आभरण आदि अचित्त द्रव्यो का परित्याग नहीं करना, (एगसाडियमुत्तरासंगकरणेणं) भाषा की यतना के लिये अखण्ड अर्थात् जो सीया हुआ न हो

---

પગરખા, તેમજ બાલવ્યજની-ચામર. પછી તેઓ (जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ) જ્યાં શ્રમણ ભગવાન મહાવીર બિરાજતા હતા ત્યાં આવ્યાં. (उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं पंचविहेणं अभिगमेणं अभिगच्छइ) આવતાં જ તેઓ પાંચ પ્રકારનાં અભિગમન-સત્કારવિશેષથી યુક્ત થઈને પ્રભુના સન્મુખ પહોંચ્યા. તે પાંચ પ્રકારના સત્કારવિશેષ આ પ્રકારના છે-(सचित्ताणं दव्वाणं विओसरणयाए) લીલાં ફળ ફૂલ આદિ સચિત્ત દ્રવ્યોનો પરિત્યાગ કરવો, (अचित्ताणं दव्वाणं अविओसरणयाए) વસ્ત્ર-આભરણ આદિ અચિત્ત દ્રવ્યોનો પરિત્યાગ ન કરવો, (एगसाडियमुत्तरासंगकरणेणं) ભાષાની યતના

**चक्खुप्फासे अंजलिपग्गहेणं, (५) मणसो एगत्तभावकरणेणं, समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेइ, करित्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता तिविहाए पज्जुवासण-**

रासगकरणेणं' एकशाटिकोत्तराऽऽसङ्गकरणेन—भाषायतनार्थम् अस्यूतेन एकपटेन उत्तरासङ्गकरणं तेन ३, **'चक्खुप्फासे'** चक्षुःस्पर्शे—श्रीमहावीरे दृष्टिमागते, **'अंजलिपग्गहेणं'** अञ्जलिप्रग्रहेण=कृताऽञ्जलिपुटेन ४, **'मणसो एगत्तभावकरणेणं'** मनस एकत्रभावकरणेन—मनस चित्तस्यैकत्र=भगवद्विषये भावकरणेन=स्थिरीकरणेन, एवं पञ्चविधाभिगमेन **'समणं भगवं महावीरं'** श्रमणं भगवन्तं महावीरम् अभिगम्य, तस्य श्रमणस्य भगवतो महावीरस्य **'तिक्खुत्तो'** त्रिकृत्व. **'आयाहिणपयाहिणं'** आदक्षिणप्रदक्षिणम्=अञ्जलिपुटं वद्ध्वा, तं वद्धाञ्जलिपुट दक्षिणकर्णमूलत आरभ्य ललाटप्रदेशेन वामकर्णान्तिकेन चक्राकारं त्रिः परिभ्राम्य ललाटदेशे स्थानरूप, **'करेइ'** करोति, **'करित्ता'** कृत्वा **'वंदइ नमंसइ'** वन्दते नमस्यति—स्तौति नमस्करोति, **'वंदित्ता नमंसित्ता'** वन्दित्वा नमस्यित्वा, **'तिवि-**

ऐसे वस्त्र का उत्तरासङ्ग करना, (**चक्खुप्फासे अंजलिपग्गहेणं**) जब से भगवान दिखायी दे, तभी से दोनो हाथों को जोड़ना, और (**मणसो एगत्तभावकरणेणं**) मन को एकाग्र करके भगवान में लगाना। इस प्रकार इन पाँच अभिगमनो से युक्त होकर राजाने भगवान् महावीर प्रभु को तीन वार (**आयाहिणपयाहिणं**) आदक्षिणप्रदक्षिण-अञ्जलिपुट को दाहिने कान से लेकर शिर पर घुमाते हुए वाये कान तक ले जाकर फिर उसे घुमाते हुए दाहिने कान पर ले जाना और वाद में उसे अपने ललाट पर स्थापन करना—रूप आदक्षिणप्रदक्षिण (**करेइ**) किया, (**करित्ता**) आदक्षिणप्रदक्षिण कर के (**वंदइ नमंसइ**) वन्दना और नमस्कार किया। (**वंदित्ता नमंसित्ता**) वन्दना नमस्कार कर के (**तिविहाए पज्जुवासणाए पज्जुवासइ**)

માટે અખ ડ અર્થાત્ જે સીવેલાં ન હોય તેવાં વસ્ત્રનું ઉત્તરાસંગ કરવું, (चक्खुप्फासे अंजलिपग्गहेणं) જ્યારથી ભગવાન દેખાય ત્યારથી જ બન્ને હાથને જોડવા, અને (मणसो एगत्तभावकरणेणं) મનને એકાગ્ર કરીને ભગવાનમાં જોડવું. આ પ્રકારે આ પાંચ અભિગમનોથી યુક્ત થઇને રાજાએ ભગવાન મહાવીર પ્રભુને ત્રણ વાર (आयाहिणपयाहिणं) આદક્ષિણપ્રદક્ષિણ—અંજલિપુટને જમણા કાનથી લઈને શિર ઉપર ઘુમાવતાં ડાબા કાન સુધી લઈ જઈને પાછો તેને ઘુમાવીને જમણા કાને લઈ જવો અને પછી તેને પોતાના કપાળે સ્થાપન કરવારૂપ આદક્ષિણ-પ્રદક્ષિણ (करेइ) કર્યું, (करित्ता) આદક્ષિણ-પ્રદક્ષિણ કરીને (वंदइ नमंसइ) વંદના અને નમસ્કાર કર્યા. (वंदित्ता नमंसित्ता) વંદના

याए पज्जुवासइ, तंजहा-काइयाए वाइयाए माणसियाए। काइयाए-ताव संकुइयग्गहत्थपाए सुस्सूसमाणे णमंसमाणे अभिमुहे विणएणं पंजलिउडे पज्जुवासइ। वाइयाए-जं जं भगवं

हाए पज्जुवासणयाए पज्जुवासइ' त्रिविधया पर्युपासनया पर्युपास्ते-भगवतः पर्युपासनां विधत्ते, 'तंजहा' तद्यथा-तत् त्रिविधत्वं दर्शयति-'काइयाए वाइयाए माणसियाए' कायिक्या वाचिक्या मानसिक्या, पर्युपास्ते इति पूर्वेणान्वयः। तत्र कायिक्या पर्युपासनया तावत् 'संकुइयग्गहत्थपाए' सङ्कुचिताऽग्रहस्तपादः, 'सुस्सूसमाणे' शुश्रूषमाणः= सेवमानः; 'णमंसमाणे' नमस्यन्-अभिमुखे विनयेन प्राञ्जलिपुटः पर्युपास्ते, 'वाइयाए- जं जं भगवं वागरेइ' वाचिक्या पर्युपासनया-यद् यद् भगवान् व्याकरोति=व्याख्याति,

त्रिविध पर्युपासना से उनकी उपासना की। वह त्रिविध उपासना इस प्रकार है-(काइयाए वाइयाए माणसियाए) काय से उपासना करना, वचन से उपासना करना एवं मन से उपासना करना। (काइयाए ताव) कायिक उपासना इस प्रकार से उसने की-(संकुइयग्गहत्थपाए सुस्सूसमाणे णमंसमाणे अभिमुहे विणएणं पंजलिउडे पज्जुवासइ) प्रभु के समीप वे हाथपावों को संकुचित करके उचित आसन से बैठे। उनसे धर्म सुनने की इच्छा करने लगे, उन्हे बारंबार नमस्कार करने लगे, पुनः नम्र होकर प्रभु के सम्मुख दोनों हाथों को जोड़ते हुए प्रभु की सेवा करने लगे। (वाइयाए) वचन से उपासना उन्होंने इस प्रकार की-(जं जं भगवं वागरेइ) जो जो भगवान् कहते थे, उस पर राजा इस प्रकार कहते थे, हे भगवान्! (से जहेयं तुब्भे वदह) आप जैसा कहते है, (एवमेयं भंते!) हे

નમસ્કાર કરીને (तिविहाए पज्जुवासणाए पज्जुवासइ) ત્રિવિધ પર્યુપાસના વડે તેમની ઉપાસના કરી. તે ત્રિવિધ ઉપાસના આ પ્રકારે છે-(काइयाए वाइयाए माणसियाए) કાયાથી ઉપાસના કરવી, વચનથી ઉપાસના કરવી તેમજ મનથી ઉપાસના કરવી. (काइयाए ताव) કાયિક ઉપાસના તેણે આ પ્રકારે કરી-(संकुइयग्गहत्थपाए सुस्सूसमाणे णमंसमाणे अभिमुहे विणएणं पंजलिउडे पज्जुवासइ) પ્રભુની પાસે તેઓ હાથ-પગને સંકુચિત કરીને ઉચિત આસન પર બેઠા. તેઓ પાસેથી ધર્મ સાંભળવાની ઈચ્છા કરવા લાગ્યા, તેમને વારંવાર નમસ્કાર કરવા લાગ્યા, અને નમ્ર થઇને પ્રભુના સન્મુખ બન્ને હાથ જોડીને પ્રભુની સેવા કરવા લાગ્યા. (वाइयाए) વચનથી તેમણે આ પ્રમાણે ઉપાસના કરી-(जं जं भगवं वागरेइ) જે જે ભગવાન કહેતા હતા તે ઉપર રાજા આ પ્રકારે બોલતા હતા-હે ભગવાન્! (से जहेयं तुब्भे वदह) આપ જેમ કહો છો

वागरेइ, एवमेयं भंते ! तहमेयं भंते ! अवितहमेयं भंते ! असंदिद्धमेयं भंते ! इच्छियमेयं भंते ! पडिच्छियमेयं भंते ! इच्छियपडिच्छियमेयं भंते ! से जहेयं तुब्भे वदह—अपडिकूल-

तत्र तत्र—'एवमेयं भंते !' एवमेतद् भदन्त !=हे भगवन् ! यद् भवानुपदिशति तद् एवमेवास्ति, 'तहमेयं भंते !' तथैतद् भदन्त !=हे भगवन् ! भवता यदुपदिष्टं तत्तथैव। 'अवितहमेयं भंते !' अवितथमेतद् भदन्त !=हे भगवन् ! भवदुक्तमेतत् सर्वं सत्यमेव। 'असंदिद्धमेयं भंते !' असन्दिग्धमेतद् भदन्त !=हे भगवन् ! एतत् सन्देहरहितं=देशशङ्कासर्वशङ्कावर्जितम्। 'इच्छियमेयं भंते !' इष्टमेतद् भदन्त !=हे भगवन् ! एतद्भवद्वचनमस्माभिर्वाञ्छितमेव, 'पडिच्छियमेयं भंते !' प्रतीष्टमेतद् भदन्त !=हे भगवन् ! पुनःपुनरिष्टमेतद् भवद्वचनम्, 'इच्छियपडिच्छियमेयं भंते !' इष्टप्रतीष्टमेतद् भदन्त !=हे भगवन् ! एतद् वचनम् इष्टप्रतीष्टोभयरूपं वर्तते। 'से जहेयं तुब्भे वदह' तद्यथैतद् यूयं वदथ—तदेतद् यथा भवन्तः कथयन्ति तत्तथैवेति वदन् 'अपडिकूलमाणे पज्जुवासइ' अप्रतिकूलयन्=प्रतिकूलाचरणं वर्जयन् पर्युपास्ते। 'माणसियाए' मानसिक्या=मनः-

भगवन् ! यह ऐसा ही है, (तहमेयं भंते !) हे भगवन् ! यह वैसा ही है, (अवितहमेयं भंते !) हे भगवन् ! आपने जो कहा सो सत्य है, (असंदिद्धमेयं भंते !) हे भगवन् ! यह देशशङ्का और सर्वशङ्का से सर्वथा रहित है, (इच्छियमेयं भंते !) हे भगवन् ! आपका यह वचन हम लोगों के लिए सर्वदा वाञ्छनीय है, (पडिच्छियमेयं भंते !) हे भगवन् ! यह आपका वचन हम लोगो के लिये सर्वथा वाञ्छनीय है, (इच्छियपडिच्छियमेयं भंते !) हे भगवन् ! यह आपका वचन हम लोगो के लिये सर्वदा और सर्वथा वाञ्छनीय है। इस प्रकार राजा—(अपडिकूलमाणे) भगवान के साथ अनुकूल आचरण करते हुए (पज्जुवासइ) उनकी उपासना करने लगे। (माणसियाए) राजा ने भगवान् की मानसिक उपा-

(एवमेयं भंते !) હે ભગવન્ ! એ એમજ છે, (तहमेयं भंते !) હે ભગવન્ ! એ એમજ છે, (अवितहमेयं भंते !) હે ભગવન્ ! આપે જે કહ્યું તે સત્ય છે. (असंदिद्धमेयं भंते !) હે ભગવન્ ! આ તમારૂં વચન દેશશંકા અને સર્વ-શંકાઓથી સર્વથા રહિત છે. (इच्छियमेयं भंते !) હે ભગવન્ ! આપનાં આ વચન અમારા માટે સર્વદા વાંછનીય છે. (पडिच्छियमेयं भंते !) હે ભગવન્ ! આ આપના વચન અમારા માટે સર્વથા વાંછનીય છે, (इच्छिय-पडिच्छियमेयं भंते !) હે ભગવન્ ! આ આપનાં વચન અમારા માટે સર્વદા અને સર્વથા વાંછનીય છે. આ પ્રકારે રાજા (अपडिकूलमाणे) ભગવાનની સાથે અનુકૂલ

माणे पज्जुवासइ । माणसियाए-महयासंवेगं जणइत्ता तिव्वध-म्माणुरागरत्ते पज्जुवासइ ॥ सू० ५४ ॥

मूलम्—तए णं ताओ सुभद्दप्पमुहाओ देवीओ अंतो अंतेउरंसि ण्हायाओ जाव पायच्छित्ताओ सव्वालंकारविभूसि-

---

सम्बन्धिन्या पर्युपासनया, 'महयासंवेगं' महासंवेगं=महद्वैराग्यं 'जणइत्ता' जनयित्वा-'तिव्व-धम्मा-णुराग-रत्ते' तीव्र-धर्मा-नुराग-रक्तः सन् 'पज्जुवासइ' पर्युपास्ते, अनेन वीतरागाणं पुष्पधूपादिभिः सावद्यपूजा निराकृता ॥ सूत्र ५४ ॥

टीका—'तए णं ताओ' इत्यादि । 'तए णं' ततः खलु 'ताओ सुभद्दप्प-मुहाओ' ततः तदनन्तरम्-सुभद्राप्रमुखाः 'देवीओ' देव्यः=राज्यः 'अंतो अंतेउरंसि' अन्तरन्तःपुरस्य स्त्रीभवनमध्ये, 'ण्हायाओ जाव पायच्छित्ताओ' स्नाताः यावत् प्राय-

---

सना इस प्रकार की-(महयासंवेगं जणइत्ता तिव्व-धम्मा-णुराग-रत्ते पज्जुवासइ) प्रभु के मुख से धर्म का उपदेश सुन कर राजा के हृदय में परम वैराग्य उत्पन्न हुआ और धर्मानुराग से प्रेरित होकर वे प्रभु की उपासना करने लगे। इस सूत्र से वीतरागों की पुष्प-धूप आदि से सावद्य पूजा करना सर्वथा निषिद्ध है-यह सूचित होता है ॥ सू० ५४ ॥

'तए णं ताओ इत्यादि ।

(तए णं) इसके बाद (ताओ सुभद्दप्पमुहाओ देवीओ) वे सुभद्राप्रमुख देवियाँ भी (अंतो अंतेउरंसि) अंतःपुरस्थ स्त्रीभवन के मध्यवर्ती स्नानागार में (ण्हायाओ जाव

---

આચરણ કરતા (पज्जुवासइ) તેમની ઉપાસના કરવા લાગ્યા. (माणसियाए) રાજાએ ભગવાનની માનસિક ઉપાસના આ પ્રકારે કરી-(महयासंवेगं जणइत्ता तिव्व-धम्मा-णुराग-रत्ते पज्जुवासइ) પ્રભુના મુખથી ધર્મનો ઉપદેશ સાંભ-ળીને રાજાના હૃદયમાં પરમ વૈરાગ્ય ઉત્પન્ન થયું, અને ધર્માનુરાગથી પ્રેરિત થઈને તેઓ પ્રભુની ઉપાસના કરવા લાગ્યા. આ સૂત્રથી વીતરાગોની પુષ્પ ધૂપ આદિ વડે સાવદ્યપૂજા કરવી એ સર્વથા નિષિદ્ધ છે તે સૂચિત થાય છે. (સૂ૦ ૫૪.)

"तए णं ताओ" ઇત્યાદિ.

(तए णं) ત્યાર પછી (ताओ सुभद्दप्पमुहाओ देवीओ) તે સુભદ્રા પ્રમુખ દેવીઓ પણ (अंतो अंतेउरंसि) અંતઃપુરમાં સ્ત્રીભવનના મધ્યવર્તી સ્નાના-ગારમાં (ण्हायाओ जाव पायच्छित्ताओ) સ્નાન કરીને કૌતુક તથા બલિકર્મથી

याओ बहूहिं खुज्जाहिं चिलाईहिं वामणीहिं वडभीहिं वब्बरीहिं बउसियाहिं जोणियाहिं पल्हवियाहिं ईसणियाहिं चारुइणियाहिं

श्चित्ताः-यावत्-शब्दात्-'कृतवलिकर्माणः कृतकौतुकमङ्गलप्रायश्चित्ता.' इति सङ्ग्रहः, तथा 'सव्वालंकार-विभूसियाओ' सर्वा-ऽलङ्कार-विभूषिता -सर्वैरलङ्कारैरलङ्कृता : 'बहूहिं खुज्जाहिं' -बह्वीभिः कुब्जाभि -वक्रशरीराभिः 'कूवडी' इति प्रसिद्धाभि', 'चिलाईहिं' किरातीभिः=किरातदेशोत्पन्नाभिः, 'वामणीहिं' वामनाभिः-अतिहूस्व शरीराभिः, 'वडभीहिं' वटभिकाभिः=वक्राऽधःकायाभिः, 'बब्बरीहिं' वर्वरीभिः=वर्वरदेशोत्पन्नाभिः, 'वउसियाहिं' वकुशिकाभिः, 'जोणियाहिं' योनिकाभिः=योनिकदेशोत्पन्नाभिः, 'पल्हवियाहिं' पह्लविकाभि.=पह्लवदेशोत्पन्नाभिः, 'ईसिणियाहिं' 'ईसिन' नामकोऽनार्यदेशस्तत्रोत्पन्नाभिः 'चारुइणियाहिं' चारुकिनिकाभिः, 'चारुकिनिक' देशविशेषोत्पन्नाभिः, 'लासियाहिं' लासिकाभि =लासकदेशो-

पायच्छित्ताओ) स्नान करके कौतुक तथा वलिकर्म से निवृत्त होकर, (सव्वा-लंकार-विभूसियाओ) एवं समस्त अलंकारों को धारण कर (बहूहिं खुज्जाहिं चिलाईहिं ) अनेक कुबडी दासियों से, अनेक किरातिनियों-किरात देशमें उत्पन्न दासियों से, (वामणीहिं) अनेक वामनियोंसे-जिनका शरीर अत्यंत हूस्व-छोटा था ऐसी दासियों से, (वडभीहिं) अनेक वटभियों-जिनकी कमर बिल्कुल झुक गई थी ऐसी दासियों से, (वब्बरीहि) वर्व्वर देशोद्भव अनेक दासियों से, (वउसियाहिं) बकुश देश की दासियों से, (जोणियाहिं) यूनान देश की दासियों से, (पल्हवियाहिं) अनेक पह्लविकाओं-पह्लवदेश की दासियों से, (ईसिणियाहिं) इसिन नाम का एक अनार्यदेश है इस देश की दासियों से, (चारुइणियाहिं) चारुकिनिक देश की दासियों से, (लासियाहिं) लासकदेश की दासियों से, (लउसियाहिं)

निवृत्त थईने (सव्वालंकारविभूसियाओ) तेमज सर्व अलंकारोने धारण करीने (बहूहिं खुज्जाहिं चिलाईहिं) अनेक कुबडी दासीओथी, अनेक किरातीओ-किरात देशमां उत्पन्न थयेली दासीओथी, (वामणीहिं) अनेक वामनिओ-जेना शरीर अत्यंत नानां-(ठींगणा) हतां एवी दासीओथी, (वडभीहिं) अनेक वटभीओ-जेमनी कमर छेक वळी गई हती एवी दासीओथी( बव्वरीहिं ) बर्बर—देशोत्पन्न अनेक दासीओथी, (वउसियाहिं) बकुश देशनी दासीओथी, (जोणियाहिं) यूनान देशनी दासीओथी, (पल्हवियाहिं) अनेक पह्लविकाओ-पह्लव देशनी दासीओथी, (ईसिणियाहिं) ईसिन नामनो एक अनार्य देश छे ते देशनी दासीओथी, (चारुइणियाहिं) चारुकिनिक देशनी दासीओथी, (लासियाहिं) लासक देशनी दासीओथी, (लउसियाहिं) लकुशदेशनी दासीओथी (सिंहलीहिं) सिंहल देशनी

**लासियाहिं लउसियाहिं सिंहलीहिं दमलीहिं, आरबीहिं पुलिंदीहिं पक्कणीहिं बहलीहिं मरुंडीहिं सबरीहिं पारसीहिं णाणादेसीहिं विदेस–वेस–परिमंडियाहिं इंगिय–चिंतिय–पत्थिय–वियाणियाहिं सदेसणेवत्थ-ग्गहिय–वेसाहिं चेडिया–चक्कवाल-व-**

त्पन्नाभिः, **'लउसियाहिं'** लकुशिकाभिः=लकुशदेशोत्पन्नाभिः, **'सिंहलीहिं'** सिंहलीभिः= सिंहलदेशोत्पन्नाभिः **'दमिलीहिं'** द्रविडीभिः=द्रविडदेशोत्पन्नाभिः, **'आरबीहिं'** आरबीभिः= अरबदेशोत्पन्नाभिः, **'पुलिंदीहिं'** पुलिन्दीभिः=पुलिन्ददेशोत्पन्नाभिः, **'पक्कणीहिं'** पक्कणीभिः= पक्कणदेशोत्पन्नाभिः, **'बहलीहिं'** बहलीभिः=बहलनामकोऽनार्यदेशस्तत्रोत्पन्नाभिः, **'मुरुंडीहिं'** मुरुण्डीभिः=मुरुण्डदेशोत्पन्नाभिः, **'सबरीहिं'** शबरीभिः=शबरदेशोत्पन्नाभिः, **'पारसीहिं'** पारसीभिः=पारसदेशोत्पन्नाभिः, किरातादयः सर्वेऽनार्यदेशाः, **'णाणादेसीहिं'** नानादेशीयाभिः, **'विदेस-वेस-परिमंडियाहिं'** विदेश-वेष-परिमण्डताभिः=विविध-देशपरिमण्डनयुक्ताभिः, **'इंगिय-चिंतिय-पत्थिय–वियाणियाहिं'** इङ्गित-चिन्तित–प्रार्थित-विज्ञाभिः, इङ्गितम्=अभिप्रायानुरूप-

लकुशदेश की दासियों से, (**सिंहलीहिं**) सिंहलदेश की दासियों से, (**दमिलीहिं**) द्रविडदेश की दासियों से, (**आरबीहिं**) अरबदेश की दासियों से, (**पुलिंदीहिं**) पुलिन्ददेश की दासियों से, (**पक्कणीहिं**) पक्कणदेश की दासियों से, (**बहलीहिं**) बहल नाम के अनार्य देश की दासियो से, (**मुरुंडिहिं**) मुरुण्डदेश की दासियों से, (**सबरीहिं**) शबरदेश की दासियों से, (**पारसीहिं**) पारसदेश की दासियों से, (ये किरात आदि जितने भी देश है वे सब अनार्य देश हैं) इन (**णाणादेसीहिं**) अनेक देश की दासियाँ, जो (**विदेस–वेस–परिमंडियाहिं**) विदेशी वेष भूषा से सज्जित थीं, (**इंगिय–चिंतिय–पत्थिय–वियाणियाहिं**) इंगित को अर्थात् अभिप्राय के अनुरूप चेष्टा को, चिन्तित को अर्थात् मनोगत भावको,

દાસીઓથી, (दमिलीहिं) દ્રવિડ દેશની દાસીઓથી, (आरबीहिं) અરબ દેશની દાસીઓથી (पुलिंदीहिं) પુલિંદ દેશની દાસીઓથી (पक्कणीहि) પક્કણ દેશની દાસીઓથી, (बहलीहिं) બહલ નામના અનાર્ય દેશની દાસીઓથી, (मुरुंडीहिं) મુરુંડ દેશની દાસીઓથી, (सबरीहिं) શબર દેશની દાસીઓથી, (पारसीहिं) પારસ દેશની દાસીઓથી, આ કિરાત આદિ જેટલા દેશ છે તે બધા અનાર્ય દેશ છે, આ (णाणादेसीहिं) અનેક દેશની દાસીઓ જે (विदेस–वेस-परिमंडियाहि) વિદેશી વેષ ભૂષાથી સજ્જિત હતી, (इंगिय-चिंतिय-पत्थिय-वियाणियाहिं) ઇંગિતને એટલે અભિપ્રાયને અનુરૂપ ચેષ્ટાને, ચિન્તિતને એટલે મનોગત ભાવને,

रिसवर–कंचुइज्ज–महत्तर–वंद-परिक्खित्ताओ अंतेउराओ णिग्गच्छ न्ति,णिग्गच्छित्ता जेणेव पाडियक्कजाणाइं तेणेव उवागच्छंति,उवा- गच्छित्ता पाडियक्कपाडियक्काइं जत्ताभिमुहाइं जुत्ताइं जाणाइं दुरू-

चेष्टितम्, चिन्तितं=मनोगतं, प्रार्थितम्=अभिलषित तेषां विज्ञाभिः, 'सदेस–णेवत्थ–ग्गहिय–वेसाहिं' स्वदेश–नेपथ्य–गृहीत–वेषाभिः–स्वदेशस्य यानि नेपथ्यानि=वस्त्रभूषण- धारणरीतयः, तैर्गृहीता वेषा याभिः तास्तथा ताभिः, 'चेडिया–चक्कवाल–वरिसवर–कंचुइज्ज–महत्तर–वंद–परिक्खित्ताओ' चेटिका–चक्रवाल–वर्षवर–कञ्चुकीय–महत्तर–वृन्द- परिक्षिप्ताः–चेटिकानां=दासीनां चक्रवालं मण्डलम्, वर्षवराः=क्लीबाः, कञ्चुकीयाः=अन्त- पुरबहिःप्रदेशरक्षकाः, तदन्ये ये महत्तराः=प्रामाणिका अन्तःपुररक्षकाः, तेषां यद् वृन्दं तेन परिक्षिप्ताः=परिवेष्टिता यास्तास्तथा सुभद्राप्रमुखा देव्यो=राज्यः 'अंतेउराओ णिग्गच्छंति' अन्तःपुरात्–स्त्रीगृहान्निर्गच्छन्ति, 'णिग्गच्छित्ता' निर्गत्य, 'जेणेव पाडियक्कजाणाइं' यत्रैव प्रत्येकयानानि=पृथक् २ यानानि सन्ति, तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य 'पाडियक्क–पाडि-

प्रार्थित को अर्थात्–अभिलषित को जानने में विज्ञ थीं, (सदेस-णेवत्थ-ग्गहिय-वेसाहिं) अपने २ देश की रीति के अनुसार वेषभूषा धारण की हुई थीं, ऐसी इन विदेशी दासियों से, तथा–(चेडिया–चक्कवाल-वरिसवर–कंचुइज्ज–महत्तर–वंद–परिक्खित्ताओ) विदेशी दासियों से भिन्न दासियों के समूह से, वर्षवरों से-नपुंसकों से, कंचुकियों से तथा और भी अन्य प्रामाणिक अन्तःपुर रक्षकों से परिक्षित-घिरी हुई होकर (अंतेउराओ णिग्गच्छंति) अंतःपुर से निकलीं, (णिग्गच्छित्ता) निकलकर (जेणेव पाडियक्कजाणाइं) जहां अपने २ योग्य अलग २ यान रखे हुए थे, (तेणेव उवागच्छंति) वहां पर पहुँची, (उवागच्छित्ता पाडियक्कपाडियक्काइं जत्ताभिमुहाइं जुत्ताइं जाणाइं दुरूहंति) पहुँच कर उन पृथक् २

प्रार्थितने એટલે અભિલાષાને જાણી લેવામા નિપુણ હતી, (सदेसणेवत्थ- ग्गहियवेसाहि) જેઓએ પોતપોતાના દેશની રીત પ્રમાણે વેષ ધારણ કરેલો હતો એવી આ વિદેશી દાસીઓથી, તથા (चेडिया–चक्कवाल–वरिसवर–कंचुइज्ज–मह- त्तर–वद–परिक्खित्ताओ) વિદેશી દાસીઓથી જુદી દાસીઓના સમૂહથી, તથા વર્ષવર-નપુંસકોથી, કંચુકીઓથી, તથા બીજા પણ પ્રામાણિક અંતઃપુરરક્ષ- કોથી પરિક્ષિપ્ત-વીંટાએલી બનીને (अंतेउराओ णिग्गच्छंति) અંતઃપુરથી નીકળી, (णिग्गच्छित्ता) નીકળીને (जेणेव पाडियक्कजाणाइं) જ્યા પોતપોતાને યોગ્ય જુદાં જુદાં યાન (વાહનો) રાખવામાં આવ્યાં હતાં (तेणेव उवागच्छंति) ત્યાં પહોંચી. (उवागच्छित्ता पाडियक्कपाडियक्काइं जत्ताभिमुहाइं जुत्ताइं जाणाइं दुरू-

हंति, दुरूहित्ता णियग-परियाल सद्धिं संपरिवुडाओ चंपाए णयरीए मज्झंमज्झेणं णिग्गच्छंति, णिग्गच्छित्ता जेणेव पुण्णभद्दे चेइए तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अदूरसामंते छत्तादीए तित्थयराइसेसे पासंति,

यक्काइं' प्रत्येकप्रत्येकानि=पृथक् २ कल्पितानि 'जत्ताभिमुहाइं जुत्ताइं जाणाइं'-यात्राभिमुखानि युक्तानि यानानि-यात्राभिमुखानि=भगवद्दर्शनार्थगमनाय सज्जितानि युक्तानि=वलीवर्दै योजितानि, यानानि=रथान् 'दुरूहंति' अधिरोहन्ति, 'दुरूहित्ता' अधिरुह्य, 'णियग-परियाल सद्धिं' निजकपरिवारैः सार्द्धम्, 'संपरिवुडाओ' सम्परिवृता'=समन्ताद्वेष्टिताः, चम्पाया नगर्या मध्यमध्येन, 'णिग्गच्छंति' निर्गच्छन्ति, 'णिग्गच्छित्ता' निर्गत्य, 'जेणेव पुण्णभद्दे चेइए तेणेव उवागच्छंति' यत्रैव पूर्णभद्रं चैत्यं तत्रैवोपागच्छन्ति, 'उवागच्छित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अदूरसामंते' उपागत्य श्रमणस्य भगवतो महावीरस्यादूरसमीपे 'छत्तादीए तित्थयराइसेसे' छत्रादिकान् तीर्थकरातिशेषान्=तीर्थकरातिशयान्

यानों पर, जो भगवान के दर्शन के लिये ले जाने के निमित्त पहिले से सज्जित कर रखे हुए एवं वलीवर्द आदिको से युक्त थे, सवार हुईं। (दुरूहित्ता णियग-परियाल सद्धिं) सवार होकर अपने २ परिवारो के साथ (संपरिवुडाओ) परिवेष्टित होती हुई वे सब देवियां (चंपाए णयरीए मज्झंमज्झेणं) चंपा नगरी के ठीक वीचो वीच के मार्ग से होकर (णिग्गच्छंति) निकलीं, (णिग्गच्छित्ता) निकलकर (जेणेव पुण्णभद्दे चेइए तेणेव उवागच्छंति) जिस ओर पूर्णभद्र चैत्य (उद्यान) था, उस ओर आयीं, (उवागच्छित्ता) आकर (समणस्स भगवओ महावीरस्स अदूरसामंते छत्तादीए तित्थयराइसेसे पासंति) उन्होंने श्रमण भगवान् महावीर से कुछ दूर पर रहे हुए तीर्थंकरो के अतिशय

हंति) પહોંચીને તે જુદા જુદા યાનો-રથો પર જે ભગવાનનાં દર્શને લઇ જવા માટે પહેલાથી તૈયાર કરી રાખવામાં આવ્યાં હતાં તેમજ બળદો જોડી રાખેલાં હતાં તેમાં બેઠાં, (दुरूहित्ता णियग-परियाल सद्धिं) બેસીને પોતપોતાના પરિવારની સાથે (संपरिवुडाओ) યુક્ત થઇને તે બધી દેવીઓ (चंपाए णयरीए मज्झंमज्झेणं) ચંપાનગરીના બરોબર વચ્ચો-વચ્ચના માર્ગે થઇને (णिग्गच्छंति) નીકળી, (णिग्गच्छित्ता) નીકળીને (जेणेव पुण्णभद्दे चेइए तेणेव उवागच्छंति) જે તરફ પૂર્ણભદ્ર ચૈત્ય (ઉદ્યાન) હતું તે તરફ આવી, (उवागच्छित्ता) આવીને (समणस्स भगवओ महावीरस्स अदूरसामंते छत्तादीए तित्थयराइसेसे पासंति) તેમણે

पासित्ता पाडियक्कपाडियक्काइं जाणाइं ठवेंति, ठवित्ता जाणेहिंतो पच्चोरुहंति, पच्चोरुहित्ता, बहूहिं खुज्जाहिं जाव परिक्खित्ताओ जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं पंचविहेणं अभिगमेणं अभिगच्छंति;

'पासंति' पश्यन्ति, 'पासित्ता' दृष्ट्वा, 'पाडियक्क-पाडियक्काइं जाणाइं ठवेंति' प्रत्येकप्रत्येकानि यानानि स्थापयन्ति, स्थापयित्वा, 'जाणेहिंतो पच्चोरुहंति' यानेभ्यः प्रत्यवरोहन्ति=अवतरन्ति, 'पच्चोरुहित्ता' प्रत्यवरुह्य, 'बहूहिं खुज्जाहिं जाव परिक्खित्ताओ' बह्वीभिः कुब्जिकाभिर्यावत्परिक्षिप्ताः=परिवेष्टिताः, यावच्छब्दात्पूर्वोक्ता विविधदेशजातिसमुद्भूता ग्राह्याः, 'जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छंति' यत्रैव श्रमणो भगवान् महावीरस्तत्रैवोपागच्छन्ति, 'उवागच्छित्ता' उपागत्य 'समणं भगवं महावीरं पंचविहेणं अभिगमेणं अभिगच्छंति' श्रमणं भगवन्तं महावीरं पञ्चविधेनाऽभिगमेनाभिगच्छन्ति, पञ्चविधमभिगमनं स्फुटीकरोति—'तं जहा' तद्यथा

स्वरूप छत्रादिकों को देखा, (पासित्ता) देख कर उन सबोंने (पाडियक्कपाडियक्काइं जाणाइं ठवेंति) अपने २ (पृथक् २) यानों को रोक दिया और वे (जाणेहिंतो पच्चोरुहंति) उन यानो से नीचे उतरीं, (पच्चोरुहित्ता) उतर कर (बहूहिं खुज्जाहिं जाव परिक्खित्ताओ जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छति) उन अनेक कुब्जादिक दासियों से परिवृत होती हुई वे जहां श्रमण भगवान् महावीर थे वहां पर आयीं, (उवागच्छित्ता) आकर उन्हों ने (समणं भगवं महावीरं पंचविहेण अभिगमेणं अभिगच्छंति) प्रभु के निकट जाने के लिये पांच प्रकार के अभिगमनों को अच्छी तरह धारण किया। वे पॉच प्रकार के अभिगमन ये है—(सचित्ताणं दव्वाणं विओसरणयाए, अचित्ताणं दव्वाणं अवि-

શ્રમણ ભગવાન મહાવીરથી જરા દૂર રહેલા તીર્થંકરોના અતિશય સ્વરૂપ છત્રાદિકોને જોયાં, (पासित्ता) જોઈને બધી (पाडियक्कपाडियक्काइं जाणाइं ठवेंति) પોતપોતાના (જુદા જુદા) યાનો-રથોને રોકી દીધા, અને તેઓ (जाणेहिंतो पच्चोरुहंति) તે યાનોમાંથી નીચે ઉતરી, (पच्चोरुहित्ता) ઉતરીને (बहूहिं खुज्जाहिं जाव परिक्खित्ताओ जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छंति) તે અનેક કુબ્જા આદિક દાસીઓના પરિવાર સહિત જ્યા શ્રમણ ભગવાન મહાવીર હતા ત્યા આવી, (उवागच्छित्ता) આવીને તેઓએ (समणं भगव महावीरं पंचविहेणं अभिगमेणं अभिगच्छंति) પ્રભુની પાસે જવા માટે પાચ પ્રકારના અભિગમનોને સારી રીતે ધારણ કર્યા. તે પાચ પ્રકારના અભિગમન આ છે-(सचित्ताणं दव्वाणं

**तंजहा-१ सच्चित्ताणं दव्वाणं विओसरणयाए, २-अचित्ताणं दव्वाणं अविओसरणयाए, ३-विणओणयाए गायलट्ठीए, ४-चक्खुप्फासे अंजलिपग्गहेणं, ५-मणसो एगत्तीभावकरणेणं समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेंति,**

---

'सचित्ताणं दव्वाणं विओसरणयाए' सचित्तानां द्रव्याणां व्युत्सर्जनतया-सचित्तद्रव्य-त्यागेन,१, 'अचित्ताण दव्वाणं अविओसरणयाए' अचित्तानां द्रव्याणामव्युत्सर्जन-तया-अचित्तद्रव्याणां=वस्त्राभरणादीनामपरित्यागेन २, 'विणओणयाए गायलट्ठीए' विनयावनतया गात्रयष्ट्या ३, 'चक्खुप्फासे अंजलिपग्गहेणं' चक्षुःस्पर्शेऽञ्जलिप्रग्रहेण= श्रीवर्धमाने महावीरे चक्षुर्विषये सति अञ्जलिविरचनेन ४, 'मणसो एगत्तीभावकरणेणं' मनस एकत्रीभावकरणेन-मनसः=चित्तस्य एकत्रीभावकरणं-एकत्र=भगवद्विषये स्थिरीकरणं तेन ५, एतद्रूपेण पञ्चप्रकारेण अभिगमेन, 'समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेंति, करित्ता वंदंति णमंसंति, वंदित्ता णमंसित्ता' श्रमणस्य

---

ओसरणयाए, विणओणयाए गायलट्ठीए, चक्खुप्फासे अंजलिपग्गहेणं, मणसो एगत्ती-भावकरणेणं) सचित्त द्रव्यों का परित्याग करना-प्रभु के दर्शन करने के लिये जाते समय अपने पास सचित्त वस्तुओं को नहीं रखना, अचित्तवस्त्रादिकों का त्याग नहीं करना, विनय से अवनत गात्र-शरीर होना-विनयभार से नम्रीभूत होना, प्रभु के दिखते ही दोनो हाथों को जोड़ना, एवं प्रभु की भक्ति में मन को एकाग्र करना। इन पांच अभिगमनों से युक्त सपरिवार उन रानियों ने (समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेंति) श्रमण भगवान महावीर को तीन वार आदक्षिणप्रदक्षिण किया, (करित्ता वंदंति नमंसंति)

---

विओसरणयाए, अचित्ताणं दव्वाणं अविओसरणयाए, विणओणयाए गायलट्ठीए, चक्खु-प्फासे अंजलिपग्गहेणं, मणसो एगत्तीभावकरणेणं) સચિત્ત દ્રવ્યોનો પરિત્યાગ કરવો-પ્રભુ દર્શન કરવા માટે જતી વખતે પોતાની પાસે સચિત્ત વસ્તુઓ ન રાખવી ૧, અચિત્ત વસ્ત્રાદિકોનો ત્યાગ કરવો ૨, વિનયથી નમાવેલ ગાત્ર-શરીર રાખવું-વિનયભારથી નમ્રીભૂત થવું ૩, પ્રભુને જોતાંજ બન્ને હાથ જોડવા ૪, તેમજ પ્રભુની ભક્તિમાં મનને એકાગ્ર કરવું ૫, આ પાંચ અભિ-ગમનોથી યુક્ત સપરિવાર તે રાણીઓએ (समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आया-हिणपयाहिणं करेति) શ્રમણ ભગવાન મહાવીરને ત્રણવાર આદક્ષિણપ્રદક્ષિણ કર્યાં, (करित्ता वंदंति णमंसंति) પછી વંદના તેમજ નમસ્કાર કર્યાં,

करित्ता वंदंति णमंसंति, वंदित्ता णमंसित्ता कूणियरायं पुरओ कट्टु ठिइयाओ चेव सपरिवाराओ अभिमुहाओ विणएणं पंजलिउडाओ पज्जुवासंति ॥ सू० ५५ ॥

मूलम्—तए णं समणे भगवं महावीरे कूणियस्स रण्णो भंभसारपुत्तस्य सुभद्दापमुहाणं देवीणं तीसे य महइमहा-

भगवतो महावीरस्य त्रिकृत्व आदक्षिणप्रदक्षिणं कुर्वन्ति, कृत्वा वन्दन्ते नमस्यन्ति, वन्दित्वा नमस्यित्वा, **'कूणियरायं पुरओ कट्टु ठिइयाओ चेव'** कूणिकराजं पुरत कृत्वा स्थिता एव **'सपरिवाराओ'** सपरिवाराः—परिजनसमेता, **'अभिमुहाओ'** अभिमुखा भगवद्दृष्टिपथे, **'विणएणं पंजलिउडाओ पज्जुवासंति'** विनयेन प्राञ्जलिपुटाः=कृताञ्जलिपुटा पर्युपासते ॥ सू० ५५ ॥

**'तए णं'** इत्यादि । **'तए णं'** ततः=द्वादशविधपरिषदुपस्थितिसमनन्तरं खलु **'समणे भगवं महावीरे'** श्रमणो भगवान् महावीरः **'कूणियस्स रण्णो भंभसारपुत्तस्स'** कूणिकस्य राज्ञो भमसारपुत्रस्य **'सुभद्दापमुहाणं देवीणं'** सुभद्राप्रमुखाणां देवीनाम्—**'तीसे**

पश्चात् वंदना एव नमस्कार किया, (**वंदित्ता णमंसित्ता कूणियरायं पुरओ कट्टु ठिइयाओ चेव सपरिवाराओ अभिमुहाओ विणएणं पजलिउडाओ पज्जुवासंति**) वंदना नमस्कार कर चुकने के बाद फिर वे, कूणिक राजा को आगे कर के खड़ी खड़ी विनयपूर्वक हाथ जोड़ कर भगवान की सेवा करने लगीं ॥ सू. ५५ ॥

**'तए णं'** इत्यादि।

(**तए णं**) बारह प्रकार के परिषद जम जाने पर (**समणे भगवं महावीरे**) श्रमण भगवान् महावीर ने (**कूणियस्स रण्णो भंभसारपुत्तस्स**) भंभसार अर्थात् श्रेणिक

(वंदित्ता णमंसित्ता कूणियरायं पुरओ कट्टु ठिइयाओ चेव सपरिवाराओ अभिमुहाओ विणएणं पंजलिउडाओ पज्जुवासंति) वंदना नमस्कार करी लीधा पछी वळी ते कूणिक राजाने आगळ करीने ઉભી ઉભી विनयपूर्वक हाथ जोडीने भगवाननी सेवा करवा लागी. (सू. ५५)

"तए णं" ઇत्यादि.

(तए णं) બાર પ્રકારની પરિષદ ભરાઇ જતાં (समणे भगवं महावीरे) શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે (कूणियस्स रण्णो भंभसारपुत्तस्स) ભંભસાર અર્થાત્ શ્રેણિ-

**लियाए परिसाए इसिपरिसाए मुणिपरिसाए जइपरिसाए देव-परिसाए अणेगसयाए अणेगसयवंदाए अणेगसयवंदपरिवाराए**

**य महइमहालियाए'** तस्याश्च महातिमहत्याः **'परिसाए'** परिषदः=सभायाः, **'इसिपरिसाए'** ऋषिपरिषदः—ऋषन्ति=जानन्ति अवधिज्ञानादिनेति ऋषयः—अतिशयज्ञानवन्तः, तेषां परिषत्-सभा तस्याः, **'मुणिपरिसाए'** मुनिपरिषदः—मुणन्ति—मन्यन्ते वा=प्रतिजानन्ति सर्वसावद्य-व्यापारोपरतिम् इति मुणयो—मुनयो वा—सर्वविरतिमन्तः, तेषां परिषत् तस्या मुणिपरिषदो, मुनिपरिषदो वा, **'जइपरिसाए'** यतिपरिषदः—यतन्ते दशविधयतिधर्मे इति यतयः। तथा चोक्तम्—

**एवं यः शुद्धयोगेन, परित्यज्य गृहाऽऽश्रमान्।**
**संयमे रमते नित्यं, स यतिः परिकीर्तितः ॥ १ ॥**

इति तेषां यतीनां परिषत्—तस्याः, **'देवपरिसाए'** देवपरिषदः—देवानां=भवन-पत्यादिचतुर्विधदेवानां परिषत्—तस्याः, **'अणेगसयाए'** अनेकशतायाः—अनेकानि शतानि यस्यां साऽनेकशता तस्याः, **'अणेगसयवंदाए'** अनेकशतवृन्दायाः=अनेकशतानि वृन्दानि=समूहा यस्यां साऽनेकशतवृन्दा तस्याः, **'अणेगसयवंदपरिवाराए'** अनेकशतवृन्दपरि-

---

के पुत्र कूणिक राजा को, तथा—( **सुभद्दापमुहाणं देवीणं** ) सुभद्राप्रमुख राजरानियों को, ( **तीसे य महइमहालियाए** ) तथा उस बड़ी भारी ( **परिसाए** ) सभा को, ( **इसि-परिसाए** ) ऋषियों—अवधिज्ञान से पदार्थों को जानने वालों की सभा को, ( **मुणिपरिसाए** ) मुनियों—सर्वसावद्य व्यापारों के मन वचन एवं काय आदि से त्यागियों की सभा को, ( **जइपरिसाए** ) गृहाश्रम का परित्याग कर जो मन, वचन, काय के शुद्धयोग से संयम में अर्थात् दश प्रकार के यतिधर्म में नित्य यत्नवान होते है वे यति है, उनकी सभा को, ( **देवपरिसाए** ) भवनपति आदि चतुर्निकाय के देवों की सभा को, ( **अणेगसयाए** ) अनेकशतसंख्यावाली ( **अणेगसयवंदाए** ) अनेकशत वृन्द ( समूह ) वाली ( **अणेग-**

---

કના પુત્ર કૂણિક રાજાને, તથા—(सुभद्दापमुहाणं देवीणं) સુભદ્રા—પ્રમુખ રાજરાણી-ઓને (तीसे य महइमहालियाए) તથા તે બહુ મોટી (परिसाए) સભાને, (इसि परिसाए) ઋષિઓ—અવધિજ્ઞાનથી પદાર્થોને જાણવાવાળાઓની સભાને, (मुणि-परिसाए) મુનિઓ સર્વસાવદ્યવ્યાપારોને મન વચન તેમજ કાયા આદિથી ત્યાગ કરનારની સભાને, (जइपरिसाए) ગૃહસ્થાશ્રમનો પરિત્યાગ કરી જે મન, વચન, કાયના શુદ્ધયોગથી સંયમમાં અર્થાત્ દશ પ્રકારના યતિધર્મમાં નિત્ય યત્નવાન રહે છે તે યતિ છે તેમની સભાને, (देवपरिसाए) ભવનપતિ આદિ ચતુર્નિકાયના દેવોની સભાને, (अणेगसयाए) અનેક શત (સો) સંખ્યા-

**ओहबले अइबले महब्बले अपरिमिय-बल-वीरिय-तेय-माह-प्प-कंति-जुत्ते सारय-णवत्थणिय-महुर-गंभीर-कोंच-णि-**

वाराया'-अनेकशतवृन्द परिवारो यस्यां सा तथा तस्याः, इत्थम्भूताया विविधाया परिषदः, अत्र कर्मणः सम्बन्धमात्रविवक्षायां षष्ठी, 'ओहबले' ओघबल'=अप्रतिबद्धबलशाली,' अइ-बले' अतिबल=अतिशयबलवान्, 'महब्बले' महाबल'=अनुपमप्रशस्तशक्तिमान्, 'अप-रिमिय-बल-वीरिय-तेय-माहप्प-कंति-जुत्ते' अपरिमित-बल-वीर्य-तेजो-माहात्म्य-कान्ति-युक्त', अपरिमितम्=अत्यधिकं बलं=शारीरिकम्, वीर्यं=जीवसम्भूतम्, तेजो=दीप्ति', माहात्म्यम्=प्रभाव', कान्ति=सौन्दर्यम्, एतैर्युक्त', 'सारय-णव-त्थणिय-महुर-गंभीर-कोंच-णिग्घोस-दुंदुभि-स्सरे' शारद-नव-स्तनित-मधुर-गम्भीर-क्रौञ्च-निर्घोष-दुन्दुभि-स्वर-शारदं=शरत्कालिकं यन्नवस्तनितं-नवघनगर्जितं तद्वन्मधुरो गम्भीरश्च तथा क्रौञ्चनि-

सय-वंद-परिवाराए) अनेकशत-समूह-युक्त परिवार वाली उस सभा को, (अरहा) अर्हत प्रभु (धम्मं) श्रुतचारित्ररूप धर्म का (भासइ) उपदेश देते हैं-इस शाश्वत नियम के अनुसार (अद्धमागहाए भासाए) अर्धमागधी भाषा द्वारा (धम्मं) श्रुत-चारित्ररूप धर्म का (परिकहेइ) उपदेश दिया। भगवान् कैसे थे? सो कहते हैं-भगवान् महावीर प्रभु (ओहबले अइबले महब्बले अपरिमिय-बल-वीरिय-तेय-माहप्प-कंति-जुत्ते) अप्रतिबद्धबलशाली थे। अतिशयबलिष्ठ थे। अनुपम-प्रशस्त शक्ति-सम्पन्न थे। अपरिमित बल, वीर्य, तेज, माहात्म्य एवं कांति से युक्त थे। बल से यहां पर शारीरिक शक्ति का संग्रह हुआ है। वीर्य से जीव की असाधारण शक्ति का ग्रहण किया गया है। प्रभाव का नाम माहात्म्य है, शारीरिक सुन्दरता का नाम कांति है। (सारय-णव-

વાળી (अणेगसयवंदाए) અનેકશત વૃન્દ (સમૂહ) વાળી (अणेग सय-वंद-परिसाए) અનેક-શત-સમૂહ યુક્ત પરિવારવાળી તે સભાને, (अरहा) અર્હંત પ્રભુ (धम्म) શ્રુતચારિત્રરૂપ ધર્મનો (भासइ) ઉપદેશ આપે છે-આ શાશ્વત નિયમને અનુ-સરીને (अद्धमागहाए भासाए) અર્ધ-માગધી ભાષા દ્વારા (धम्मं) શ્રુતચારિત્ર રૂપ ધર્મનો (परिकहेइ) ઉપદેશ આપ્યો. ભગવાન કેવા હતા? તે કહે છે-ભગ-વાન મહાવીર પ્રભુ (ओहबले, अइबले, महब्बले, अपरिमिय-बल-वीरिय तेय-माह-प्प-कंति-जुत्ते) અપ્રતિબદ્ધ બલશાળી હતા, અતિશય બળવાન હતા. અનુપમ-પ્રશસ્ત-શક્તિ-સંપન્ન હતા. અપરિમિત બલ, વીર્ય, તેજ, માહાત્મ્ય તેમજ કાંતિથી યુક્ત હતા. બલથી અહીં શારીરિક શક્તિનો સંગ્રહ સમજવું. વીર્યથી જીવની અસાધારણ શક્તિનો અર્થ ગ્રહણ કર્યો છે. પ્રભાવનો અર્થ માહાત્મ્ય છે. શારીરિક સુંદરતા એટલે કાંતિ છે. (सारय-णव-त्थणिय-महुर-गंभीर-कोंच-

घोस-दुंदुभि-स्सरे उरे वित्थडाए कंठे वट्टियाए सिरे समाइ-ण्णाए अगरलाए अमम्मणाए सव्व-क्खर-सण्णिवाइयाए

घोषवत्-क्रौञ्चः=पक्षिविशेषस्तस्य मञ्जुलकूजनवत्, दुन्दुभिस्वरवच्च स्वरो यस्य स तथा-शारदजलधरध्वनिवत् क्रौञ्चकलकूजनवद् दुन्दुभिस्वरवन्मधुरगम्भीरदूरगामिध्वनियुक्त इत्यर्थः। 'उरे वित्थडाए' उरसि विस्तृतया-वक्षःस्थलस्य विस्तीर्णत्वात् तत्र विस्तारमुपगतया, 'कंठे वट्टयाए' कण्ठे वृत्ततया, स्वार्थे तल्, वृत्तया इत्यर्थः; कण्ठस्य वर्त्तुलत्वात् तत्र वृत्तरूपेण स्थितया, 'सिरे समाइण्णाए' शिरसि समाकीर्णया-शिरसि=मूर्ध्नि समाकीर्णया=व्याप्तया, ततः 'अगरलाए' अगरलया=व्यक्तया-मूर्ध्नः परावृत्य वक्रमागत्य ताल्वादितत्तत्स्थानं प्राप्य वर्णसमुदायस्वरूपं प्राप्तया इति भावः, 'अमम्मणाए' अमन्मनया=वर्णपदवैकल्यरहितया, 'सव्वक्खरसन्निवाइयाए' सर्वाक्षरसन्निपातिकया-सर्वे अक्षरसन्निपाताः=वर्णसंयोगाः सन्ति यस्यां सा तथा-सकलवाङ्मयस्वरूपा तया, भगवतः सर्वज्ञतया सर्वार्थवाचकशब्दप्रयोगकरणादिति भावः; 'पुण्णरत्ताए' पूर्णरक्तया-पूर्णा=स्वरकलादि-

त्थणिय-महुर-गंभीर-कोंच-णिग्घोस-दुंदुभि-स्सरे) भगवान् की ध्वनि शरत्कालीन नवीन मेघ की गर्जना जैसी मधुर एवं गंभीर थी। तथा क्रौंचपक्षी के मंजुल निर्घोष की तरह मीठी एवं दुंदुभि के स्वर की तरह बहुत दूर तक जानेवाली थी। (उरे वित्थडाए) वक्षस्थल के विस्तीर्ण होने से वहाँ पर विस्तार को प्राप्त हुई ऐसी (कंठे वट्टयाए) कंठ के वर्तुल होने के कारण वहाँ पर गोलरूप से स्थित, (सिरे समाइण्णाए) मस्तक में व्याप्त, (अगरलाए) मस्तक से वक्ररूप में आकर उन २ ताल्वादिकस्थानों में प्राप्त होकर वर्णसमुदायस्वरूप को प्राप्त, अत एव स्पष्ट उच्चारणवाली, (अमम्मणाए) मण-मण शब्द से रहित अर्थात् वर्ण एवं पद की विकलता से रहित, (सव्वक्खरसण्णिवाइयाए) सकलवाङ्मयस्वरूप-समस्त अक्षरों के संयोगवाली-सकल

णिग्घोस-दुंदुभि-स्सरे) ભગવાનનો ધ્વનિ, શરદ કાળના નવીન મેઘની ગર્જના જેમ મધુર તેમજ ગંભીર હોય તેવો હતો. તથા ક્રૌંચ પક્ષીના મંજુલ નિર્ઘોષના જેમ મીઠો તેમજ દુંદુભિના સ્વરના જેમ બહુ દૂર સુધી જાય તેવો હતો. (उरे वित्थडाए) વક્ષસ્થલ વિસ્તીર્ણ (પહોળું) હોવાથી ત્યાં વિસ્તારને પ્રાપ્ત થયેલી, (कंठे वट्टयाए) કંઠ ગોળ હોવાના કારણે ત્યાં ગોળ રૂપથી સ્થિત, (सिरे समाइण्णाए) મસ્તકમાં વ્યાપ્ત, (अगरलाए) મસ્તકથી વક્રરૂપમાં આવી તે તે તાલુ આદિક સ્થાન પ્રાપ્ત કરી વર્ણસમુદાયસ્વરૂપને પ્રાપ્ત હોવાથી સ્પષ્ટ ઉચ્ચારણ વાળી, (अमम्मणाए) મણ-મણ શબ્દ રહિત અર્થાત્ વર્ણ તેમજ પદની વિકલતાથી રહિત (सव्व-क्खर-सण्णिवाइयाए) સકલ વાઙ્મયસ્વરૂપ-સમસ્ત અક્ષ-

पुण्णरत्ताए सव्वभासाणुगामिणीए सरस्सईए जोयणणीहारिणा सरेणं अद्धमागहाए भासाए भासइ, अरिहा धम्मं परिकहेइ । तेसिं सव्वेसिं आरियमणारियाणं अगिलाए धम्मं आइक्खइ, सावि य णं अद्धमागहा भासा तेसिं सव्वेसिं आरिय-

भिरुपपन्ना रक्ता च गेयरागेण मालकोशाख्येन युक्ता च तया, 'सव्वभासाणुगामिणीए' सर्वभाषानुगामिन्या=सर्वभाषापरिणमनशीलया, 'सरस्सईए' सरस्वत्या=वाण्या, 'जोयणणीहारिणा' योजननिर्हारिणा=योजनप्रमाणदूरगामिना 'सरेणं' स्वरेण=ध्वनिना, अर्द्धमागध्या भाषया भाषते । 'अरिहा धम्मं परिकहेइ' अर्हन् धर्म परिकथयति । 'तेसिं सव्वेसिं आरियमणारियाण' तेषां सर्वेषामार्याऽनार्याणाम्—आर्याणाम्=आर्यदेशोत्पन्नाम्, अनार्याणाम्=अनार्यदेशोत्पन्नाम्, 'अगिलाए' अग्लायन्=ग्लानिरहितो 'धम्मं' धर्मं=श्रुतचारित्रलक्षणम्, 'आइक्खइ' आख्याति=कथयति । 'सावि य अद्धमागहा भासा' साऽपि च अर्द्धमागधी भाषा—प्राकृतभाषालक्षणबहुला, 'तेसिं सव्वेसिं आरियमणारियाणं' तेषां

भाषामय, (पुण्णरत्ताए) स्वर एव कलादिकों से उत्पन्न तथा मालकोश नामक गेयराग से युक्त, (सव्वभासाणुगामिणीए) और सर्वभाषापरिणमनस्वभाववाली ऐसी (सरस्सईए) सरस्वती—वाणी से, जो (जोयणणीहारिणा) एक योजन तक दूर जाने वाले स्वर से युक्त थी और जिसका दूसरा नाम अर्धमागधी भाषा था, (तेसिं सव्वेसिं आरियमणारियाणं अगिलाए धम्मं आइक्खइ) उन समस्त आर्यदेशोत्पन्न एवं अनार्यदेशोत्पन्न मानवो को श्रुतचारित्र रूप धर्म का विना किसी खेद के प्रभु ने उपदेश दिया। (सा वि य णं अद्धमागहा भासा तेसिं सव्वेसिं आरियमणारियाणं अप्पणो सभासाए परिणामेणं परिणमइ) प्रभु ने जिस अर्द्धमागधी भाषा द्वारा उन

રોના સંયોગવાળી—સકલભાષામય, (पुण्णरत्ताए) સ્વર તેમજ કલાદિકોથી ઉત્પન્ન માલકોશ નામક ગેયરાગથી યુક્ત, (सव्वभासाणुगामिणीए) સર્વભાષા—પરિણમન-સ્વભાવવાળી એવી (सरस्सईए) સરસ્વતી—વાણીથી, કે જે (जोयणणीहारिणा) એક યોજન સુધી દૂર જાય તેવા સ્વરથી યુક્ત હતી તથા જેનું બીજુ નામ અર્ધ-માગધી ભાષા હતું, (तेसि सव्वेसि आरियमणारियाणं अगिलाए धम्मं आइक्खइ) તે સમસ્ત આર્ય—અનાર્ય—દેશોત્પન્ન માનવોને શ્રુતચારિત્ર રૂપ ધર્મનો કંઈ પણ ખેદ વિના પ્રભુએ ઉપદેશ આપ્યો. (सा वि य णं अद्धमागहा भासा तेसिं सव्वेसिं आरियमणारियाणं अप्पणो सभासाए परिणामेणं परिणमइ) પ્રભુએ જે અર્ધમાગધી

**मणारियाणं अप्पणो सभासाए परिणामेणं परिणमइ। तंजहा- अत्थि लोए, अत्थि अलोए, एवं जीवा अजीवा बंधे मोक्खे पुण्णे**

सर्वेषाम् आर्याणामनार्याणाम्, 'अप्पणो' आत्मन.=स्वस्य, 'सभासाए' स्वभाषायाः, 'परिणामेणं परिणमइ' परिणामेन परिणमति, यादृशं धर्म कथयति त दर्शयति-'तं जहा' तद्यथा- 'अत्थि लोए' अस्ति लोक.-इत्यादि 'सफले कल्लाणपावए' इत्यन्तो ग्रन्थो धर्मस्वरूप-प्रदर्शक'। लोकः-पञ्चास्तिकायमयः। 'अत्थि अलोए' अस्त्यलोक -अलोक'=केवलाकाश-रूपः-एतयोरस्तित्वाभिधानं शून्यवादनिरासार्थम्। 'एवं जीवा' "अत्थि जीवा" सन्ति जीवा'-जीवाः=उपयोगलक्षणाः। इदं नास्तिकमतनिराकरणार्थम्। 'अस्ति अजीवा' सन्ति अजीवाः=जडलक्षणाः, एतत्कथनमद्वैतवादनिराकरणार्थम्। 'अत्थि बंधे' अस्ति बन्ध'-

समस्त आर्य और अनार्यों को श्रुतचारित्ररूप धर्म का उपदेश दिया वह प्रभु की भाषा, उन समस्त आर्य-अनार्यों की अपनी २ भाषा में परिणमित होने के स्वभाववाली थी। भगवान् ने जिस तरह धर्म का उपदेश दिया सूत्रकार उसे यहां प्रकट करते हैं—

(अत्थि लोए) पंच-अस्तिकायमय यह लोक अस्ति-स्वरूप है। (अत्थि अलोए) केवल आकाशस्वरूप अलोक भी अस्तिस्वरूप है। लोक और अलोक में अस्तित्वस्वरूपता का कथन बौद्धों द्वारा समत शून्यवाद के निराकरण करने के लिये जानना चाहिये। (एवं जीवा) इसी तरह उपयोगलक्षणवाला जीव भी अस्तित्वविशिष्ट है। जीव में अस्तित्वविधान नास्तिकमत के परिहारनिमित्त जानना चाहिये। (अजीवा) जिसका लक्षण जड है ऐसा अजीव पदार्थ भी भावस्वभावविशिष्ट है। अजीव पदार्थ की सत्ता का वह निरूपण अद्वैतवाद के निराकरण के लिये जानना चाहिये। (बंधे) जीव और कर्मोका संबंध

ભાષા દ્વારા તે સમસ્ત આર્ય અને અનાર્ય લોકોને શ્રુતચારિત્રરૂપ ધર્મનો ઉપદેશ આપ્યો, પ્રભુની તે ભાષા તે સમસ્ત આર્યો અનાર્યોની પોતપોતાની ભાષામાં પરિણામ પામવાવાળા (સમજાય તેવા)-સ્વભાવવાળી હતી. ભગવાને જેવી રીતે ધર્મનો ઉપદેશ દીધો તે અહીં સૂત્રકાર પ્રકટ કરે છે-(अत्थि लोए) પંચઅસ્તિકાયમય આ લોક અસ્તિસ્વરૂપ છે. (अत्थि अलोए) કેવલ આકાશ-સ્વરૂપ અલોક પણ અસ્તિસ્વરૂપ છે. લોક અને અલોકમાં અસ્તિસ્વરૂપતાનુ કથન બૌદ્ધો દ્વારા સંમત શૂન્યવાદનુ નિરાકરણ કરવા માટે જાણવું જોઈએ. (एवं जीवा) આ રીતે ઉપયોગલક્ષણવાળા જીવ પણ અસ્તિત્વ-વિશિષ્ટ છે. જીવમા અસ્તિત્વનુ વિધાન નાસ્તિકમતના પરિહારનિમિત્ત જાણવુ જોઈએ. (अजीवा) જેનું લક્ષણ જડ છે તેવા અજીવ પદાર્થ પણ ભાવ-સ્વભાવ-વિશિષ્ટ છે. અજીવ પદાર્થની સત્તાનું આ નિરૂપણ અદ્વૈતવાદના નિરાકરણ (પરિહાર)

कर्मणा जीवसम्बन्धोऽस्ति, बन्धन बन्धः=आत्मप्रदेशानां ज्ञानावरणीयादिकर्मपुद्गलानां च परस्परं क्षीरोदकवत् सम्बन्ध इत्यर्थः। एतत्कथनं सांख्यादिमतनिराकरणार्थम्। **'अत्थि मोक्खे'** अस्ति मोक्षः=जीवस्य अखिलकर्मक्षयो मोक्षः सोऽस्ति। सकलकर्मणां क्षयः=आत्मप्रदेशेभ्योऽपगमः, तथासति सकलकर्मविमुक्तस्य ज्ञानदर्शनोपयोगलक्षणस्यात्मनः स्वस्वरूपेऽवस्थानं मोक्ष इत्यर्थः। सकलकर्मक्षयसमकालमेव औदारिकशरीरात्यन्तवियुक्तस्यास्य मनुष्यजन्मनः समुच्छेदः, बन्धहेत्वभावाच्चोत्तरजन्मनः पुनरप्रादुर्भावः, आत्मा ज्ञानाद्युपयोगलक्षणः

स्वरूप बंध भी है। जिस प्रकार दूध और पानी का परस्पर एकक्षेत्रावगाहरूप संबंध होता है उसी प्रकार ज्ञानावरणीय आदि कर्मपुद्गलों का आत्मप्रदेशों के साथ एक क्षेत्रावगाहरूप जो संबंध है उसका नाम बंध है। बंध के अस्तित्व का विधान सदा आत्मा को एकान्त शुद्ध माननेवाले सांख्य आदि की मान्यता को निराकरण करने के लिये जानना चाहिये। **(मोक्खे)** मोक्ष है। जब बंध है तो उसके अत्यताभावस्वरूप जीव के समस्त कर्मोंका क्षयस्वरूप मोक्ष भी है। आत्मा जब समस्त कर्मों से बिल्कुल रिक्त हो जाता है तब ज्ञानदर्शनरूप अपने स्वरूप में इसका शाश्वतिक अवस्थान हो जाता है। इसीका नाम आत्मा की मुक्ति है। मतलब इसका यह है कि आत्मा से जिस समय शुक्लध्यान के प्रभाव से समस्त कर्मों का क्षय हो जाता है उसी समय इसके गृहीत औदारिक शरीर का अत्यन्त वियोग हो जाता है। इस औदारिक शरीरका अत्यन्त वियोग होना ही मनुष्यजन्मका समुच्छेद है। बन्ध के हेतुओंका अभाव होने से इस आत्मा को फिर उत्तरकाल मे जन्मकी प्राप्ति होती नहीं है।

માટે જાણવું જોઇએ. (बंधे) જીવ અને કર્મોના સબંધસ્વરૂપ બંધ પણ છે. જેવી રીતે દૂધ અને પાણીનો પરસ્પર એકક્ષેત્ર-અવગાહ રૂપ સંબંધ થાય છે તેજ પ્રકારે જ્ઞાનાવરણીય આદિ કર્મપુદ્ગલોના આત્મપ્રદેશોની સાથે એકક્ષેત્રાવગાહ રૂપ જે સંબંધ છે તેનું નામ બંધ છે. બંધના અસ્તિત્વનું વિધાન, સદા આત્માને એકાન્ત શુદ્ધ માનવાવાળા સાંખ્ય આદિની માન્યતાનું નિરાકરણ કરવા માટે જાણવું જોઇએ. (मोक्खे) મોક્ષ છે. જ્યારે બંધ છે ત્યારે તેના અત્યંત અભાવ સ્વરૂપ-જીવનાં સમસ્ત કર્મોના ક્ષય સ્વરૂપ મોક્ષ પણ છે. આત્મા જ્યારે સમસ્ત કર્મોથી બિલકુલ રિક્ત (મુક્ત) થઈ જાય છે ત્યારે જ્ઞાન-દર્શન-સ્વરૂપ પોતાના સ્વરૂપમાં શાશ્વતિક તેનું અવસ્થાન થઈ જાય છે. આનુંજ નામ આત્માની મુક્તિ છે. એની મતલબ એ છે કે આત્મામાંથી જે વખતે શુકલધ્યાનના પ્રભાવથી-સમસ્ત કર્મોનો ક્ષય થઇ જાય છે તેજ વખતે તેનાથી ગ્રહણ કરાયેલા ઔદારિક શરીરનો અત્યંત વિયોગ થઈ જાય છે. આ ઔદારિક શરીરનો અત્યંત વિયોગ થવો એ જ મનુષ્ય જન્મનો સમુચ્છેદ છે. બંધના હેતુઓનો અભાવ થવાથી આ આત્માને ઉત્તરકાળમા ફરી જન્મની પ્રાપ્તિ થતી નથી. આ માટે આ આત્મા, પોતાના-જ્ઞાન-દર્શન ઉપ-

# पावे आसवे संवरे वेयणा णिज्जरा अरिहंता चक्कवट्टी बलदेवा

केवलः शुद्धः इत्येषाऽवस्था मोक्ष इत्याख्यायते इति भावः। **'अत्थि पुण्णे'** अस्ति पुण्यम्— पूयते=पवित्रीक्रियते आत्मा अनेनेति, पुनाति आत्मानमिति वा पुण्यं=शुभकर्म, **'पूञ् पवने'** इत्यस्माद्धातोः **'पूञो यण्णुक् ह्रस्वश्च'** इत्यौणादिकसूत्रेण सिद्धिः, पुण्यं हि ससारपारावारोत्तरणे तरगिभूतम्। अनेनैवार्यजनपदाभिजनकुलबोधिवीजनिजधर्मादिप्राप्तिर्जायते। किं वहुना तीर्थकरगोत्रमपि पुण्येनैव बध्यते, यो हि पुण्यं सर्वथा हेयं मन्यमानस्तत् त्यजति, असौ समुपेक्षिततरिरिवाऽप्राप्तपरतीरो मध्येसमुद्रं मज्जन्नवसीदति। **'अत्थि पावे'** अस्ति पापम्—पातयति=शुभपरिणामाद् ध्वंसयत्यात्मानमिति पापम्, पापमेवाऽपचीयमानं सुखं जन-

इसलिये यह आत्मा अपने ज्ञानदर्शनोपयोगरूप स्वभाव में मग्न होता हुआ केवल शुद्ध अवस्थावाला हो जाता है। आत्माकी इसी अवस्थाका नाम मोक्ष है। (**पुण्णे**) पुण्य है। आत्मा जिसके द्वारा पवित्र किया जाय उसका नाम पुण्य है, अथवा जो आत्मा को पवित्र करे ऐसा जो शुभकर्म है उसका नाम पुण्य है। यह पुण्यकर्म जीव को ससाररूप पारावार से पार करने के लिये नौकास्वरूप है। इसीके प्रभाव से आर्यदेश, उच्चकुल में जन्म, बोधिवीज-इत्यादि समस्त उत्तमोत्तम वस्तु की प्राप्ति इस जीव को होती है। ज्यादा और क्या कहा जाय ? तीर्थकरगोत्रकर्म का वंध भी तो साक्षात् इसी पुण्य का फल है। जो व्यक्ति इस पुण्य कर्म को सर्वथा हेय समझकर उसका परित्याग कर देते है वे, जिसने दूसरे तीर को प्राप्त किये विना समुद्र के बीच में ही जहाज का परित्याग कर दिया है उस मनुष्य के समान है। (**पावे**) पाप है। जो इस जीव को शुभपरिणाम से गिरा देता है उसका नाम पाप है। शंका—पाप जब अपचीयमान होता जाता है तब इस जीव को सुख की

યોગરૂપ સ્વભાવમાં મગ્ન રહીને, કેવલ શુદ્ધ અવસ્થાવાળો થઇ જાય છે. આત્માની આ અવસ્થાનું જ નામ મોક્ષ છે. (पुण्णे) પુણ્ય છે. આત્મા જેના દ્વારા પવિત્ર કરાય તેનું નામ પુણ્ય છે. અથવા જે આત્માને પવિત્ર કરે એવાં જે શુભ કર્મ છે તેનું નામ પુણ્ય છે. આ પુણ્યકર્મ જીવને સંસારરૂપ પારાવાર (સમુદ્ર)થી પાર કરવા માટે હોડી રૂપ છે. તેના પ્રભાવ વડે જીવને આર્ય દેશ, ઉચ્ચ કુળમાં જન્મ, બોધિબીજ ઇત્યાદિ સમસ્ત ઉત્તમોત્તમ વસ્તુની પ્રાપ્તિ થાય છે. વધારે બીજું શું કહેવું, તીર્થંકરગોત્રકર્મનો બંધ પણ સાક્ષાત્ એજ પુણ્યકર્મનું ફલ છે. જે વ્યક્તિ આ પુણ્ય કર્મને સર્વથા હેય સમજીને તેનો પરિત્યાગ કરી દે છે તેઓ જેમ કોઈ સામે કાંઠે પહોંચ્યા વિનાજ સમુદ્રની વચ્ચમા વહાણનો પરિત્યાગ કરી દીએ એવા મનુષ્ય જેવા છે. (पावे) પાપ છે. જે આ જીવને શુભપરિણામથી પાડી દે છે તેનું નામ પાપ છે. શંકા—પાપ જ્યારે અપચીયમાન (સ્વલ્પ) થઈ જાય છે ત્યારે આ જીવને

यति, उपचीयमानं तदेव दुःखं जनयति न पुण्यं पृथगस्ति, अथवा पुण्यमेवोपचीयमानं सुखं जनयति, तदेवापचीयमानं दुःखं जनयति, न पापं विद्यते—इत्येवंवादिमतनिराकरणार्थं पुण्यपापयोः पृथगभिधानम्, केवलैकस्वभाववादिनिरासार्थं वा सर्वेषां पृथक् पृथगुक्तिः। 'अत्थि आसवे' अस्त्यास्रवः-आ=समन्तात् स्रवति=प्रविशति आत्मनि ज्ञानावरणीयाद्यष्टविधं कर्म येन स आस्रवः, आश्रव इतिच्छायापक्षे तु—आश्रीयते=समुपार्ज्यते कर्म येन सः, पृषोदरादित्वाद् यस्य वः, सर्वथा जीवतडागे कर्मसलिलप्रवेशाय नालिका—

प्राप्ति होती है एवं पाप जब उपचीयमान होता है तब दुःख की प्राप्ति होती है, इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि पाप के अपचय और उपचय के अधीन ही जीवों को सुख—दुःख की प्राप्ति होती है, अतः सुख का कारण पुण्य एवं दुःख का कारण पाप इस प्रकार से दो स्वतंत्र तत्त्व मानना ठीक नहीं है, या तो पुण्य ही मानो या पाप ही मानो, दोनों को एक साथ मत मानो। इसी तरह पुण्य का ह्रास जब होने लगता है तब जीवों को दुःख की प्राप्ति होती है और जब पुण्य का उपचय होता है तब जीवों को सुखकी प्राप्ति होती है। इस कथन से भी यही निष्कर्ष निकलता है कि सुखदुःख, पुण्य के उपचय और अपचय के आधीन है। अतः इनका कारण उसका ही उपचय एवं अपचय है। इससे यह एक पुण्य तत्व ही मानना चाहिये—सो ऐसा कहने वाले वादियों के मन्तव्य को निराकरण के लिये दोनों तत्त्वों की स्वतत्ररूप से सत्ता प्रतिपादित की है। अथवा जो वस्तुका एक ही स्वभाव मानते है उन वादियों के मत को निराकरण करने के लिये भिन्न २ रूप से समस्तपदार्थों का यह निरूपण हुआ है। (आसवे) आस्रव तत्त्व है। जिसके कारण से ज्ञानावरणीय

સુખની પ્રાપ્તિ થાય છે તેમજ પાપ જ્યારે ઉપચીયમાન (સંચિત) થાય છે ત્યારે દુઃખની પ્રાપ્તિ થાય છે આથી એ નિષ્કર્ષ (સાર) નીકળે છે કે પાપના અપચય અને ઉપચયને આધીન જીવોને સુખ દુઃખની પ્રાપ્તિ થાય છે. આથી સુખનું કારણ પુણ્ય તેમજ દુઃખનું કારણ પાપ આ પ્રકારનાં બે સ્વતંત્ર તત્ત્વ માનવાં ઠીક નથી. કાં તો પુણ્યને માનો અગર તો પાપને માનો બન્નેને એક સાથે ન માનો. આવી રીતે પુણ્યનો હ્રાસ જ્યારે થવા લાગે છે ત્યારે જીવોને દુઃખની પ્રાપ્તિ થાય છે, અને જ્યારે પુણ્યનો ઉપચય થાય છે ત્યારે જીવોને સુખની પ્રાપ્તિ થાય છે. આ કથનની પણ એજ નિષ્કર્ષ નીકળે છે કે સુખ દુઃખ, પુણ્યના ઉપચય અને અપચયને આધીન છે. આથી આનું કારણ તેનોજ ઉપચય તેમજ અપચય છે. તેથી એ એક પુણ્ય તત્ત્વજ માનવું જોઈએ. આમ કહેવાવાળા વાદિઓના મતવ્યના નિરાકારણને માટે બન્ને તત્ત્વોની સ્વતંત્ર રૂપે સત્તાનુ પ્રતિપાદન કર્યું છે. અથવા જે વસ્તુનો કેવળ એકજ સ્વભાવ માને છે તેવા વાદિઓના મતનું નિરાકરણ કરવા માટે જુદા જુદા રૂપથી સમસ્ત પદાર્થોનું આમ નિરૂપણ કર્યું છે. (आसवे) આસ્રવ તત્ત્વ છે. જેના

रूप इति यावत्। कर्मबन्धहेतुरास्रवः, स च मिथ्यात्वादिः। 'अत्थि संवरे' अस्ति संवरः=आस्रवनिरोधः, संव्रियते=निरुध्यते आस्रवत्=आगच्छत् कर्म येन सः—संवर, एष च द्रव्यभावभेदाभ्यां द्विविधः, तत्र द्रव्यतस्तथाविधद्रव्येण (चिक्कणमृदादिना) सलिलोपरि तरण्यादावनवरतप्रविशन्नीराणां निरोधः, भावतः आत्मतरण्यां प्रविशत्कर्मजलानां समितिगुप्तिप्रभृतिभिर्निरोधः। इह भावसंवरस्य ग्रहणम्। एतत्कथनं बन्धमोक्षयोर्निष्कारणत्वप्रति-

---

आदिक अष्ट—प्रकार का कर्म आत्मा में प्रविष्ट होता है उसका नाम आस्रव है। (आसवे) इस पद की 'आश्रव' जब इस प्रकार की संस्कृत छाया रखी जायगी तव इसका अर्थ होगा जिसके द्वारा जीव कर्मों का आश्रय—समुपार्जन करे वह आश्रव है। जिस प्रकार तालाव में पानीका आना नालों द्वारा होता है उसी प्रकार इस जीव में जिसके द्वारा कर्मरूपी पानी आता रहता है वह आस्रव है। यह आस्रव ही नवीन कर्मों के बन्ध का कारण होता है। यह आस्रव तत्त्व मिथ्यात्वादिक के भेद से अनेक प्रकार का है, क्यों कि ये जो मिथ्यात्वादिक है वे कर्मों के आगमन के कारण है। (संवरे) संवर तत्त्व हैं। आस्रव का रुकना इसका नाम संवर है। द्रव्यसंवर और भावसंवर इस प्रकार से संवर के दो भेद है। द्रव्यकर्मों के आगमन को रोकने में आत्मा का जो परिणाम कारण होता है वह परिणाम भावसंवर है, एवं जो कर्मपुद्गलो का रुकना है वह द्रव्यसंवर है। नौका में पानी के आगमन का रुकना इसे द्रव्यसंवर के स्थानापन्न, एवं जिस छिद्र से वह आता था उसका बंद कर

---

કારણે જ્ઞાનાવરણીય આદિક આઠ પ્રકારનાં કર્મ આત્મામાં પ્રવિષ્ટ થાય છે તેનું નામ આસ્રવ છે. (आसवे) આ પદની (आश्रव) આ પ્રકારની જો સંસ્કૃત છાયા રાખવામાં આવે તો એનો અર્થ એમ થાય કે જેના દ્વારા જીવ, કર્મોનો આશ્રય (સમુપાર્જન) કરે તે આશ્રવ છે. જેમ તળાવમાં પાણીનું આવવું નાળાં દ્વારા થાય છે તેમ આ જીવમા જેના દ્વારા કર્મરૂપી પાણી આવે છે તે આસ્રવ છે. આ આસ્રવ જ નવીન કર્મોના બંધનું કારણ થાય છે. એવું તે આસ્રવ તત્ત્વ મિથ્યાત્વ આદિકના ભેદથી અનેક પ્રકારનું છે, કેમકે આ જે મિથ્યાત્વ આદિક છે તે કર્મોના આગમનનું કારણ છે. (संवरे) સંવર તત્વ છે. આસ્રવને રોકવું તેનું નામ સંવર છે. દ્રવ્યસંવર અને ભાવસંવર આ પ્રકારના સંવરના બે ભેદ છે. દ્રવ્યકર્મોના આગમનને રોકવામાં આત્માનું જે પરિણામ કારણ હોય છે તે પરિણામ ભાવસંવર છે. તેમજ જે કર્મપુદ્ગલોને રોકે તે દ્રવ્યસંવર છે. વહાણમાં પાણીના આવવાને રોકવું એ દ્રવ્યસંવરનું સ્થાનાપન્ન તેમજ જે છિદ્રમાંથી તે આવતું હતું તેને બંધ કરી દેવું તે ભાવસંવરનું સ્થાનાપન્ન સમજવું જોઈએ. સમિતિગુપ્તિ આદિ એ બધા

पेधार्थम् । 'अत्थि वेयणा' अस्ति वेदना—वेदना=वेदनम्—स्वभावादुदीरणां कृत्वा वा उदयावलिकामनुप्रविष्टस्य कर्मणो योऽनुभवः=कर्मफलभूतसुखदुःखानुभवः, तत्स्वरूपा। 'अत्थि णिज्जरा' अस्ति निर्जरा—निर्जरा=देशतः कर्मक्षय, 'अत्थि अरिहंता' सन्त्यर्हन्तः, 'अत्थि चक्कवट्टी' सन्ति चक्रवर्तिनः, 'अत्थि वलदेवा' सन्ति वलदेवाः, 'अत्थि वासुदेवा' सन्ति वासुदेवाः—अर्हदादीनां चतुर्णामभिधानं तु तेषां भुवनातिशायित्व-प्रतिपादनार्थं तेषामतिशयत्वमश्रद्दधतां श्रद्धाविधानार्थं च। 'अत्थि नरगा' सन्ति नरकाः—

देना इसे भावसंवर के स्थानापन्न जानना चाहिये। समितिगुप्ति आदि ये सव भावसंवर के ही भेद है। इनसे ही आत्मा में आते हुए कर्म रुकते है[1]। यहां पर भावसंवर का ग्रहण हुआ है। भावसंवर का कथन वन्ध और मोक्ष को जो निष्कारणक मानने वाले हैं उनकी धारणा का प्रतिषेध करने के निमित्त समझना चाहिये। (वेयणा) वेदना है। कर्म की स्वभावतः उदीरणा करके अथवा उदयावलि में उसे लाकर उसके सुखदुःखादिक रूप फल का अनुभव करना इसका नाम वेदना है। (णिज्जरा) निर्जरा है। एकदेश से कर्मों का क्षय होना सो निर्जरा है। (अत्थि अरिहंता अत्थि चक्कवट्टी) अर्हंत है, चक्रवर्ती है। (अत्थि वलदेवा अत्थि वासुदेवा) वलदेव है, वासुदेव है। इन चार अर्हंत आदिका प्रतिपादन त्रिभुवन में इनकी सर्वोत्कृष्टता जाहिर करने के निमित्त है। अथवा जो इनमें अतिशयत्व नहीं मानते हैं, वे इस प्रतिपादन से उनके विषय में अपनी श्रद्धा जाग्रत करें इसके लिये भी यह अर्हंत आदि चार का प्रतिपादन किया गया जानना चाहिये। (अत्थि

ભાવસંવરના ભેદ છે. એનાથી જ આત્મામાં આવતા કર્મ [1]રોકાય છે. અહીં ભાવસંવરનું ગ્રહણ થયું છે. ભાવસંવરનું કથન બંધ અને મોક્ષને જેઓ નિષ્કારણક માને છે તેમની ધારણાનો પ્રતિષેધ કરવા નિમિત્તે સમજવું જોઇએ. (वेयणा) વેદના છે. કર્મની સ્વભાવતઃ ઉદીરણા કરીને અથવા ઉદયાવલિમા તે લાવીને તેનાં સુખ દુઃખ આદિક રૂપ ફલનો અનુભવ કરવો તેનું નામ વેદના છે. (णिज्जरा) નિર્જરા છે. એકદેશથી કર્મોનો ક્ષય થવો તે નિર્જરા છે. (अत्थि अरिहंता अत्थि चक्कवट्टी) અર્હંત છે. ચક્રવર્ત્તી છે. (अत्थि वलदेवा अत्थि वासुदेवा) બલદેવ છે, વાસુદેવ છે. આ ચાર અર્હંત આદિનુ પ્રતિપાદન, ત્રિભુવનમાં તેમની સર્વોત્કૃષ્ટતા જાહેર કરવાને નિમિત્તે છે. અથવા તેઓમાં જે અતિશયત્વ ન માનતા હોય તેઓ આ પ્રતિપાદનથી તેમના વિષયમાં પોતાની શ્રદ્ધા જાગ્રત કરે તે માટે પણ આ અર્હંત આદિ ચારનુ પ્રતિપાદન કરેલું

(१) चेदणपरिणामो जो कम्मस्सावणिरोहणे हेऊ।
सो भावसंवरो खलु दव्वासवरोहणे अण्णो ॥
वदसमिदीगुत्तीओ धम्माणुपिहा परीसहजओ य।
चारित्तं वहुभेयं णायव्वा, भावसवरविसेसा ॥ द्रव्यसंग्रह गाथा ३४–३५ ॥

**वासुदेवा नरगा णेरइया तिरिक्खजोणिया तिरिक्खजोणिणीओ माया पिया रिसओ देवा देवलोया सिद्धी सिद्धा परिणिव्वुया,**

अनेकविधनरकस्थानानि सन्ति। '**अत्थि णेरइया**' सन्ति नैरयिकाः=नरकनिवासिनः सन्ति, '**अत्थि तिरिक्खजोणिया**' सन्ति तिर्यग्योनिकाः, '**तिरिक्खजोणिणीओ**' सन्ति तिर्यग्योनिजाताः स्त्रियः, नरकनैरयिकादीनामदृश्यानां सत्तास्थापनाय कथनम्। '**अत्थि माया अत्थि पिया**' अस्ति माता अस्ति पिता, केचिदेवं मन्यन्ते—मातापितृव्यवहारो न वास्तविकः, यतो हि—यूकाकृमिगण्डोलकादयः स्वजनकं विनैवोत्पद्यन्ते, तन्मतनिराकरणार्थमिदं भगवता प्रोक्तमिति भावः। '**अत्थि रिसओ**' सन्ति ऋषयः—ऋषयः=अतीन्द्रियाऽर्थद्रष्टारः सन्ति। केचित्त्वेवं वदन्ति—अतीन्द्रियार्थस्य द्रष्टारो न संभवन्ति,

**नरगा अत्थि णेरइया अत्थि तिरिक्खजोणिया तिरिक्खजोणिणीओ**) अनेक विध नरकस्थान है और उनमें रहने वाले जीव नारकी है, तिर्यंचयोनि के जीव हैं, तिर्यंच योनि में उत्पन्न तिर्यञ्च स्त्रियां भी है। नरक एवं नारकी आदि अदृश्य जीवों का जो कथन किया है वह उनकी सत्ता प्रदर्शित करने के लिये जानना चाहिये। (**अत्थि माया अत्थि पिया**) माता है, पिता हैं। कोई २ ऐसे मानते है कि माता—पिता यह व्यवहार वास्तविक नही है, क्यों कि ऐसे भी कई जीव है कि जो माता—पिता के विना भी उत्पन्न होते रहते है। उनकी इस कल्पना को निराकरण करने के लिये भगवान् ने यह कहा है। (**अत्थि रिसओ**) अतीन्द्रिय अर्थ को देखने वाले ऋषिजन है। इस कथन का तात्पर्य यह है कि वहुत से वादी ऐसा कहते है कि अतीन्द्रियार्थ द्रष्टा कोई नहीं है, कारण कि पुरुष रागादि से कभी निर्मुक्त नहीं हो सकता। अतः जैसे हमलोग रागादिसम्पन्न होने से अतीन्द्रियार्थ के

જાણવું જોઈએ. (अत्थि नरगा अत्थि णेरइया अत्थि तिरिक्खजोणिया तिरिक्खजोणिणीओ) અનેકવિધ નરકસ્થાન છે, અને તેમાં રહેવાવાળા જીવ નારકી છે. તિર્યંચયોનિના જીવ છે, તિર્યંચયોનિમાં ઉત્પન્ન તિર્યંચ સ્ત્રીઓ પણ છે. નરક તેમજ નારકી આદિ અદૃશ્ય જીવોનું જે કથન કર્યું છે તે તેમની સત્તા પ્રદર્શિત કરવા માટે જાણવું જોઈએ. (अत्थि माया अत्थि पिया) માતા છે પિતા છે. કોઈ કોઇ એમ માને છે કે માતા પિતા એ વ્યવહાર વાસ્તવિક નથી, કેમકે એવા પણ કેટલાય જીવ છે કે જે માતાપિતા વિના પણ ઉત્પન્ન થતા રહે છે. તેમની આ કલ્પનાનું નિરાકરણ કરવા માટે ભગવાને એમ કહ્યું છે. તથા (अत्थि रिसओ) અતીંદ્રિય અર્થને જોવાવાળા ઋષિજન છે. આ કથનનું તાત્પર્ય એ છે કે ઘણા વાદિઓ એમ કહે છે કે અતીંદ્રિય–અર્થ–દ્રષ્ટા કોઈ છે નહિ, કારણ કે પુરુષ રાગાદિથી કદી પણ નિર્મુક્ત થઇ શકતો નથી.

पुरुषाणां रागादिदोषवत्त्वात् अस्मदादिवत् इति, तन्मतनिरासार्थमिदमुक्तम्। '**अत्थि देवा अत्थि देवलोया**' सन्ति देवाः=भवनपत्यादयः, सन्ति देवलोकाः—देवानां लोकाः= स्थानानि सौधर्मादीनि। यत्त्वाहुः—न सन्ति देवादयोऽप्रत्यक्षत्वात् इति, तन्मतव्युदासार्थमिद-मुक्तम्, '**अत्थि सिद्धी अत्थि सिद्धा**' अस्ति सिद्धिः, सन्ति सिद्धाः—सिद्धिः=सिध्यन्ति-निष्ठितार्था भवन्ति यस्यां सा तथा, सिद्धिमन्तः सिद्धाः। '**परिणिव्वाणे**' परिनिर्वाण-मस्ति—परिनिर्वाण=कर्मकृतसन्तापोपशान्त्या सुस्थत्वम्। निःशेषतः सकलकर्मक्षयजन्यमात्यन्तिकं सुखमित्यर्थः। '**अत्थि परिणिव्वुया**' सन्ति परिनिर्वृताः=अपुनरावृत्त्या सकलसन्ताप-

दर्शक नहीं हो सकते है उसी प्रकार कोई भी व्यक्ति रागादिक से विशिष्ट होने के कारण अतीन्द्रियार्थ पदार्थों का द्रष्टा नहीं हो सकता है। इस प्रकार जो यह मीमांसकों की मान्यता है उस मान्यता को दूर करने के लिये अतीन्द्रियार्थ द्रष्टा की यह स्थापना की है। (**अत्थि देवा अत्थि देवलोया**) पुण्यजनित अलौकिक क्रीडा का जो अनुभव करते है उनका नाम देव है। वे देव भवनपति आदि के भेद से ४ प्रकार के है। इनके रहने के स्थान भी हैं। जिन्हे स्वर्ग या देवलोक कहते हैं। जो यह कहते हैं कि अप्रत्यक्ष होने से देवादिक नहीं है उनके इस मन का निराकरण करने के लिये देवों का स्वरूप कहा है। (**अत्थि सिद्धी अत्थि सिद्धा**) सिद्धि है, और सिद्धि जिन्हे प्राप्त हो चुकी है ऐसे सिद्ध भी है। (**परिणि-व्वाणे**) परिनिर्वाण—मुक्ति है। कर्मकृत सन्ताप की उपशांति से उद्भूत सुस्थत्व का नाम परिनिर्वाण है। समस्त कर्मों के अत्यंत विनाश से जन्य जो आत्यंतिक सुख है उसका नाम सुस्थत्व है। (**अत्थि परिणिव्वुया**) अपुनरावृत्तिविशिष्ट होने से सकल सताप

આથી જેમ આપણે રાગ આદિ સંપન્ન હોવાથી અતીંદ્રિયાર્થના દર્શક બની શકતા નથી તેજ પ્રકારે કોઇ પણ વ્યક્તિ રાગ આદિકોથી વિશિષ્ટ હોવાના કારણે અતીદ્રિય પદાર્થોના દ્રષ્ટા બની શકે નહિ. એવી જે આ મીમાંસકોની માન્યતા છે તે માન્યતાને દૂર કરવાને માટે અતીદ્રિંયાર્થ દ્રષ્ટાની આ સ્થાપના કરી છે (अत्थि देवा अत्थि देवलोया) પુણ્યજનિત અલૌકિક ક્રીડાનો જે અનુ-ભવ કરે છે તેમનું નામ દેવ છે. તે દેવો ભવનપતિ આદિના ભેદથી ૪ પ્રકા-રના છે. તેમનાં રહેવાના લોક એટલે સ્થાન પણ છે જે એમ કહે છે કે અપ્રત્યક્ષ હોવાથી દેવ આદિક નથી. તેમના આ મતનું નિરાકરણ કરવા માટે દેવોનુ સ્વરૂપ કહેલું છે (अत्थि सिद्धी अत्थि सिद्धा) સિદ્ધિ છે. અને સિદ્ધિ જેને પ્રાપ્ત-થઇ ગઈ છે એવા સિદ્ધ પણ છે. (परि-णिव्वाणे) પરિનિર્વાણ-મુક્તિ છે. કર્મકૃત જે સંતાપ તેની ઉપશાંતિથી ઉત્પન્ન થતું જે સુસ્થત્વ તેનું નામ પરિનિર્વાણ છે. સમસ્ત કર્મોના અત્યંત વિના-શથી પેદા થતું જે આત્યંતિક સુખ છે તેનું નામ સુસ્થત્મ છે. (अत्थि परि-

१ पाणाइवाए, २ मुसावाए, ३ अदिण्णादाणे, ४ मेहुणे, ५

कलापपरिवर्जिताः। 'अत्थि पाणाइवाए' अस्ति प्राणातिपातः-प्राणाः=उच्छ्वास-निःश्वासादयस्तेषामतिपातः=वियोजनं-प्राणातिपातः-प्राणिहिंसनमिति यावत्, तदुक्तम्—

पञ्चेन्द्रियाणि त्रिविधं बलं च, उच्छ्वासनिःश्वासमथान्यदायुः।
प्राणा दशैते भगवद्भिरुक्ता-स्तेषां वियोगीकरणं तु हिंसा ॥ १ ॥ इति।

'अत्थि मुसावाए' अस्ति मृषावादः-मृषा=मिथ्या, वादः=वदनम्-असद्भूतार्थभाषणमिति यावत्। 'अदिण्णादाणे' अदत्ताऽऽदानमस्ति-न दत्तमदत्तम्=देवगुरुभूपगाथापति-साधर्मिकैरननुज्ञातं, तस्याऽऽदानं=ग्रहणम्। 'अत्थि मेहुणे' अस्ति मैथुनम्-मिथुनेन=स्त्री-पुंसाभ्यां निर्वृत्तं कर्म मैथुनं-कामक्रीडेत्यर्थः। 'अत्थि परिग्गहे' अस्ति परिग्रहः-परि=

के कलापों से परिवर्जित ऐसे जीव है। (अत्थि पाणाइवाए) प्राणिहिंसा पाप है, उच्छ्वास-नि.श्वास आदि प्राण है, इनका अतिपात करना अर्थात् प्राणियो के प्राण का वियोग करना प्राणातिपात है। कहा भी है—

"पञ्चेन्द्रियाणि त्रिविधं बलं च उच्छ्वासनिःश्वासमथान्यदायुः।
प्राणा दशैते भगवद्भिरुक्तास्तेषां वियोगीकरणं तु हिंसा ॥

शास्त्रों मे पांच इन्द्रिय, तीन बल, आयु, श्वासोच्छ्वास इस प्रकार से ये १० प्राण भगवानने बतलाये है। इनका वियोग करना इसका नाम हिंसा है। (अत्थि मुसावाए) मृषावाद पाप है। असद्भूत अर्थ का कथन करना इसका नाम मृषावाद है। (अदिण्णादाणे) अदत्तादान पाप है। देव, गुरु, भूप, गाथापति एवं साधर्मिक आदि की कोई वस्तु को उनकी आज्ञा के विना लेना सो अदत्तादान है। (अत्थि मेहुणे) मैथुन पाप है। (अत्थि परिग्गहे) परिग्रह भी पाप है। जो मूर्च्छापूर्वक ग्रहण किया जाय उसका नाम परिग्रह है, अर्थात्

णिव्वुया) અપુનરાવૃત્તિવિશિષ્ટ થવાથી તમામ સંતાપના કલાપોથી પરિવર્જિત એવા જીવ છે. (अत्थि पाणाइवाए) પ્રાણિહિંસા પાપ છે. ઉચ્છ્વાસનિઃશ્વાસ આદિ પ્રાણ છે. તેનો અતિપાત કરવો અર્થાત્ પ્રાણિઓનો પ્રાણથી વિયોગ કરવો પ્રાણાતિપાત છે. કહ્યું પણ છેઃ—

"पञ्चेन्द्रियाणि त्रिविधं बलं च उच्छ्वासनिःश्वासमथान्यदायुः।
प्राणा दशैते भगवद्भिरुक्तास्तेषां वियोगीकरणं तु हिंसा ॥

શાસ્ત્રોમાં પાંચ ઇંદ્રિય, ત્રણ બલ, આયુ, શ્વાસોચ્છ્વાસ આ પ્રકારથી ૧૦ પ્રાણ ભગવાને બતાવ્યા છે. તેનો વિયોગ કરવો તેનું નામ હિંસા છે. (अत्थि मुसावाए) મૃષાવાદ પાપ છે. અસદ્ભૂત અર્થનું કથન કરવું તે મૃષાવાદ છે. (अदिण्णादाणे) અદત્તાદાન પાપ છે. દેવ, ગુરુ, ભૂપ, ગાથાપતિ તેમજ સાધર્મિક આદિની કોઈ વસ્તુને તેમની આજ્ઞા વગર લેવી તે અદત્તાદાન છે.

**परिग्गहे, ६ अत्थि कोहे, ७ माणे, ८ माया, ९ लोभे, अत्थि**

सर्वतो भावेन गृह्यते=जन्मजरामरणादिदुःखैर्वेष्ट्यते आत्मा अनेनेति, यद्वा परिगृह्यते=समूर्च्छं स्वीक्रियत इति । **'अत्थि कोहे माणे माया लोभे'** अस्ति क्रोधः, अस्ति मानः, अस्ति माया, अस्ति लोभः । क्रोधः=क्रोधमोहनीयप्रकृत्युदयेन स्वपरचित्तप्रज्वलनरूपविकृतिजनकः आत्मनः परिणामविशेषः । मानः=स्वापेक्षयाऽन्यं हीनं मन्यते जनो येन सः, मानमोहनीयोदयसमुत्थोऽन्यहीनतामननलक्षण आत्मनः परिणामविशेषः । माया=मायामोहनीयोदयसमुत्थो जीवस्य वञ्चनपरिणतिविशेषः–स्वपरव्यामोहोत्पादकमाचरणमिति यावत् । **लोभः**=लोभप्रकृत्युदयवशात् द्रव्याद्यभिलाषलक्षणो जीवस्य परिणतिविशेषः । **'अत्थि जाव मिच्छादंस-**

जन्म, जरा एवं मरणादि दुःखों से जिसके द्वारा आत्मा वेष्टित होता है उसका नाम परिग्रह है । (ममेदं) भाव का नाम मूर्च्छा है । (**अत्थि कोहे माणे माया लोभे**) ये चार कषाय है–क्रोध, मान, माया और लोभ । क्रोधमोहनीय प्रकृति के उदय से स्व और पर की चित्तवृत्ति में प्रज्वलन रूप विकारजनक जो आत्मा का परिणामविशेष होता है, उसका नाम क्रोध है । मानमोहनीय के उदय से अन्य को हीन समझने का जो आत्मा का परिणामविशेष होता है वह मान है । इसके सद्भाव में जीव अपनी अपेक्षा अन्य जन को हीन समझता है । मायामोहनीय के उदय से पर को वंचित करने का जो आत्मा का परिणामविशेष होता है वह माया है । इसके वश में रहा हुआ जीव स्व और पर का व्यामोहक आचरण किया करता है । लोभप्रकृति के उदय के वश से द्रव्यादिक को चाहने की जो आत्मा की परिणतिविशेष है उसका नाम लोभ है ।

(अत्थि मेहुणे) મૈથુન પાપ છે. (अत्थि परिग्गहे) પરિગ્રહ પણ પાપ છે, જે મૂર્છાપૂર્વક ગ્રહણ કરાય તેનું નામ પરિગ્રહ છે, અર્થાત્ જન્મ જરા તેમજ મરણ આદિ દુઃખોથી આત્મા જેના દ્વારા વેષ્ટિત થઈ (વીંટળાઇ) જાય છે તેનું નામ પરિગ્રહ છે. મૂર્છાભાવનું નામ પણ પરિગ્રહ છે. (ममेदं) ભાવનું નામ મૂર્છા છે. (अत्थि कोहे माणे माया लोभे) આ ચાર કષાય છે–ક્રોધ, માન, માયા અને લોભ. ક્રોધમોહનીય પ્રકૃતિના ઉદયથી સ્વ અને પરની ચિત્ત-વૃત્તિમાં પ્રજ્વલનરૂપ વિકારજનક જે આત્માનું પરિણામ–વિશેષ હોય છે તેનું નામ ક્રોધ છે. માન–મોહનીયના ઉદયથી એક બીજાને હીન સમજવાનું જે આત્માનું પરિણામવિશેષ થાય છે તે માન છે. આના સદ્‌ભાવમાં જીવ પોતાના કરતાં બીજા માણસને હીન સમજે છે. માયામોહનીયના ઉદયથી બીજાની વંચના કરવાનું જે આત્માનું પરિણામવિશેષ થાય છે તે માયા છે, તેને વશ થયેલો જીવ સ્વ તથા પરનું વ્યામોહક આચરણ કર્યા કરે છે.

**जाव मिच्छादंसणसल्ले। अत्थि पाणाइवायवेरमणे मुसावाय-**

**णसल्ले'** अस्ति यावत् मिथ्यादर्शनशल्यम्, अत्र यावच्छब्दात्-**'पेज्जे, दोसे, कलहे, अब्भक्खाणे, पेसुण्णे, परपरिवाए, अरइरई, मायामोसे'** इत्येषां संग्रहः। अस्ति प्रेम-प्रेम=रागः-पुत्रकलत्रादिष्वभिष्वङ्गपरिणामविशेषः। **'अत्थि दोसे'** अस्ति द्वेषः-द्वेषः=आत्मनोऽप्रीतिलक्षणपरिणाम', अस्ति कलहः-कलः=आनन्दस्तं हन्तीति कलहः-वाचिकद्वन्द्व', **'अत्थि अब्भक्खाणे'** अस्त्यभ्याख्यानम्-अभ्याख्यानम्=असद्दोषारोपणम्। **'अत्थि पेसुण्णे'** अस्ति पैशुन्यम्-पैशुन्य=प्रच्छन्नतया परदोषाऽऽविष्करणम्, **'अत्थि परपरिवाए'** अस्ति परपरिवादः-परेषां काक्वादिभिर्दोषकथनम्, **'अत्थि अरइरई'** स्तः अरतिरती-अरति'=अरतिमोहनीयोदयाच्चित्तोद्वेगरूप आत्मनः परिणतिविशेषः, रतिः=-

(**जाव मिच्छादंसणसल्ले**) यावत् मिथ्यादर्शन आदि शल्य है। यहां "**यावत्**" शब्द से "**पेज्जे, दोसे, कलहे, अब्भक्खाणे, पेसुण्णे, परपरिवाए, अरइरई, मायामोसे**" इस पाठ का संग्रह हुआ है। पुत्रकलत्रादिकों में जो आसक्तिरूप परिणामविशेष है उसका नाम प्रेम है। अप्रीतिलक्षण जो आत्माका परिणाम है वह द्वेष है। आनंद जिससे नष्ट होता है उसका नाम कलह है। असत्य दोषोंका आरोपण करना इसका नाम अभ्याख्यान है। पीठ पीछे दूसरे के दोषोको प्रकट करना इसका नाम पैशुन्य है। दूसरे की निंदा करना इसका नाम परपरिवाद है। अरति एव रति ये दोनो पाप हैं। अरतिमोहनीय के उदय होने से संयम के अन्दर जो चित्तोद्वेग होता है उसको 'अरति' कहते है। सांसारिक विषयोंकी अभिलाषा को 'रति' कहते है। कपटसहित मिथ्याभाषण करना इसका नाम मायामृषा

લોભપ્રકૃતિના ઉદયને વશ થવાથી દ્રવ્યાદિકને ચાહવાની જે આત્માની પરિણતિ-વિશેષ છે તેનું નામ લોભ છે. (जाव मिच्छादंसणसल्ले) યાવત્ મિથ્યાદર્શન-શલ્ય છે. અહીં "यावत्" શબ્દથી "पेज्जे दोसे कलहे अब्भक्खाणे पेसुण्णे परपरिवाए अरइरई मायामोसे" આ પાઠનો સંગ્રહ કર્યો છે. તેમાં પુત્રકલત્ર આદિમાં જે આસક્તિરૂપ પરિણામવિશેષ છે તેનું નામ પ્રેમ છે. અપ્રીતિ-લક્ષણ જે આત્માનું પરિણામ છે તે દ્વેષ છે. આનંદ જેનાથી નષ્ટ થાય છે તેનું નામ કલહ છે, અને અસત્ય દોષોનું આરોપણ કરવું તેનું નામ અભ્યા-ખ્યાન છે. કોઇની ગેરહાજરીમાં (પીઠપાછળ) તેના દોષો પ્રકટ કરવા તેનુ નામ પૈશુન્ય (ચાડી) છે. બીજાની નિંદા કરવી તેનું નામ પરપરિવાદ છે. અરતિ તેમજ રતિ એ બન્ને પાપ છે. અરતિ-મોહનીયનો ઉદય થવાથી સંયમની અંદર જે ચિત્તને ઉદ્વેગ થાય છે તેને 'अरति' કહે છે. સાંસારિક વિષ-યોની અભિલાષાને 'रति' કહે છે. કપટવાળું મિથ્યાભાષણ કરવું તેનું નામ

**वेरमणे आदिण्णादाणवेरमणे मेहुणवेरमणे परिग्गहवेरमणे जाव मिच्छादंसणसल्लविवेगे। सव्वं अत्थिभावं अत्थित्ति वयइ,**

विषयाभिरुचि.। 'अत्थि मायामोसे' अस्ति मायामृषा–मायया सह मृषा–मायामृषा=सकपटमिथ्याभाषणम्, 'मिच्छादंसणसल्ले' मिथ्यादर्शनशल्यम्–मिथ्यादर्शनं शल्यमिव, प्रतिक्षण विविधव्यथाविधायकत्वात्। 'अत्थि पाणाइवायवेरमणे मुसावायवेरमणे अदिण्णादाणवेरमणे मेहुणवेरमणे परिग्गहवेरमणे' अस्ति प्राणातिपातविरमणम्, मृषावादविरमणम्, अदत्तादानविरमणम्, मैथुनविरमणम्, परिग्रहविरमणम्। केषाञ्चिन्मते प्राणातिपातादिविरमणस्याशक्यत्व प्रतिपादितं तन्निरासार्थं तत्सत्ताऽभिधानम्। 'जाव मिच्छादंसणसल्लविवेगे' यावन्मिथ्यादर्शनशल्यविवेक –मिथ्यादर्शनशल्यस्य विवेक=पृथग्भाव', तस्मान्निवृत्तिरित्यर्थ', सोऽप्यस्ति। 'सव्वं अत्थिभावं अत्थित्ति वयइ' सर्वमस्तिभावमस्तीति वदति–सर्वं=सफलम् अस्तिभावं–सत्तारूपक्रियासहितो भाव =वस्तुसत्वम्

है। तथा कुदेव कुगुरु कुधर्म मे श्रद्धा रखना मिथ्यादर्शन है। शल्य की तरह प्रतिक्षण अत्यन्त दुःखदायी होने के कारण यह मिथ्यादर्शन शल्य कहलाता है। (**अत्थि पाणाइवायवेरमणे परिग्गहवेरमणे जाव मिच्छादंसणसल्लविवेगे**) जो लोग हिंसादिक पांच पापों से विरक्त होने में अशक्यता प्रतिपादित करते है उनके लिये प्रभु कहते है कि ऐसी बात नही है, प्राणातिपात से जीव विरक्त होता है, मृषावाद से जीव विरक्त होता है, एवं परिग्रह से जीव विरक्त होता है, यावत् मिथ्यादर्शनशल्य से भी जीव विरक्त होता है। (**सव्वं अत्थिभावं अत्थित्ति वयइ सव्वं णत्थिभावं णत्थित्ति वयइ**) "अस्ति" यह पद सब को "अस्ति" इस रूपसे कहता है और "नास्ति" यह पद समस्त भाव को

'मायामृषा' છે, અને કુદેવ, કુગુરુ, કુધર્મમાં શ્રદ્ધા રાખવી તે મિથ્યાદર્શન છે, તે શલ્યની માફક પ્રતિક્ષણુ દુઃખદાયી હોવાથી 'मिथ्यादर्शनशल्य' કહેવાય છે. (अत्थि पाणाइवायवेरमणे, मुसावायवेरमणे, अदिण्णादाणवेरमणे, मेहुणवेरमणे, परिग्गहवेरमणे, जाव मिच्छादंसणसल्लविवेगे) જે લોક હિંસા આદિક પાંચ પાપોથી વિરક્ત હોવામા અશકયતા પ્રતિપાદિત કરે છે તેમના માટે પ્રભુ કહે છે કે એવી વાત કોઈ છે નહિ. પ્રાણુાતિપાતથી જીવ વિરક્ત થાય છે, મૃષાવાદથી જીવ વિરક્ત થાય છે, અદત્તાદાનથી જીવ વિરક્ત થાય છે, મૈથુનથી જીવ વિરક્ત થાય છે તેમજ પરિગ્રહથી જીવ વિરક્ત થાય છે, યાવત્ મિથ્યાદર્શનશલ્યથી પણુ જીવ વિરક્ત થાય છે (सव्वं अत्थिभावं अत्थित्ति वयइ सव्वं णत्थिभावं णत्थित्ति वयइ) "अस्ति" એ પદ બધાને અસ્તિ (છે) એ રૂપે કહે છે, અને "नास्ति" એ પદ

**सव्वं णत्थिभावं णत्थित्ति वयइ, सुचिण्णा कम्मा सुचिण्णफला भवंति, दुचिण्णा कम्मा दुचिण्णफला भवंति, फुसइ पुण्णपावे,**

'जीवोऽस्त्यजीवोऽस्ति, पुण्यमस्ति, पापमस्ति' इत्यादिरूपेण वस्तुयथार्थस्वरूपनिरूपणमिति यावत, तम् 'अस्ति' इति कृत्वा वदति, यथा जीवत्वे सति जीव', अजीवत्वे सति अजीव इत्यादि । '**सव्वं णत्थिभाव णत्थित्ति वयइ**' सर्वं नास्तिभावं नास्तीति वदति—सर्वं नास्तिभावम्—अजीवत्वे सति अजीव', अपटत्वे सति अपट इत्येवंरूपो भावो नास्तिभावस्तं नास्तीतिपदेन वदति । '**सुचिण्णा कम्मा सुचिण्णफला भवंति**' सुचीर्णानि कर्माणि सुचीर्णफलानि भवन्ति—सुचीर्णानि—सु=प्रशस्ततया चीर्णानि=सपादितानि कर्माणि=दानादीनि, सुचीर्णफलानि—सुचीर्णं फलं येषां तानि, सुचरितमूलकत्वात् पुण्यकर्मबन्धादिफलवन्तीत्यर्थः । '**दुचिण्णा कम्मा दुचिण्णफला भवंति**' दुश्चीर्णानि कर्माणि दुश्चीर्णफलानि भवन्ति—दुश्चीर्णानि=कुत्सितानीत्यर्थः, दुश्चीर्णफलानि=कुत्सितफलवन्ति—नरकनिगोदादिगमनादिरूपफलदायकानि भवन्तीत्यर्थः । '**फुसइ पुण्णपावे**' स्पृशति

"नास्ति" इस रूप से कहता है। स्वसत्तारूप क्रिया से युक्त का नाम अस्तिभाव है एवं पररूप से असत्ता का नाम नास्तिभाव है। मतलब इसका यह है कि प्रत्येक पदार्थ स्व—द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव की अपेक्षा से ही अस्तित्वविशिष्ट है और पर—द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव की अपेक्षा प्रत्येक द्रव्य नास्तित्वविशिष्ट है। इससे स्याद्वादसिद्धान्त का कथन किया गया है। (**सुचिण्णा कम्मा सुचिण्णफला भवंति**) प्रशस्तभावों से संपादित दानादिक सत्कर्म पुण्य कर्म के बन्ध करनेवाले होते हैं। पुण्यकर्म का बंध कराना ही इनका फल माना गया है। (**दुचिण्णा कम्मा दुचिण्णफला भवंति**) कुत्सितभावों से किये कार्य कुत्सित—नरकनिगोदादि—फलवाले होते है, अर्थात् कुत्सित कर्मों को करनेवाला

બધા ભાવને નાસ્તિ (નથી) એ રૂપે કહે છે. સ્વસત્તારૂપ ક્રિયાથી યુક્તનું નામ અસ્તિ-ભાવ છે તેમજ પરરૂપથી અસત્તાનું નામ નાસ્તિભાવ છે. આનો મતલબ એ છે કે પ્રત્યેક પદાર્થ સ્વ-દ્રવ્ય, ક્ષેત્ર, કાલ તથા ભાવની અપેક્ષાથી જ અસ્તિત્વવિશિષ્ટ છે અને પર-દ્રવ્ય, ક્ષેત્ર, કાલ અને ભાવની અપેક્ષા તેજ પદાર્થ નાસ્તિત્વવિશિષ્ટ છે. આથી સ્યાદ્વાદસિદ્ધાંતનું કથન કરવામાં આવેલું છે. (सुचिण्णा कम्मा सुचिण्णफला भवंति) પ્રશસ્તભાવોથી સંપાદિત દાન આદિક સત્કર્મ પુણ્ય કર્મનું બંધ કરવાવાળા થાય છે. પુણ્યકર્મનો બંધ કરવો એજ એનું ફળ કહેવામાં આવ્યું છે. (दुचिण्णा कम्मा दुचिण्णफला भवंति) કુત્સિત ભાવોથી કરેલું કાર્ય કુત્સિત-નરક-નિગોદ આદિ ફળવાળા થાય છે.

# पच्चायंति जीवा, सफले कल्लाणपावए। धम्ममाइक्खइ–इणमेव

पुण्यपापे–जीवः सुचरितक्रियाभिः पुण्यम्, असुचरितक्रियाभिः पापं च स्पृशति=बध्नाति। 'पच्चायंति जीवा' प्रत्यायान्ति जीवाः–तेनैव स्पृष्टेन=बद्धेन–शुभाऽशुभकर्मसन्तानेन पुनर्जीवा उत्पद्यन्ते, 'भस्मीभूतस्य देहस्य पुनरागमनं कुतः'–इति नास्तिकवचनं न सत्यम् इति भावः। तत उत्पत्तौ सत्याम् 'सफले कल्लाणपावए' सफले कल्याणपापके–सौभाग्य–दौर्भाग्यहेतुत्वात् पुण्यं पापञ्च शुभाशुभं कर्म सफलं भवतीति भावः। प्रकारान्तरेणापि धर्मोपदेशं भगवान् ददाति, तदेव संप्रत्याह–'धम्ममाइक्खइ' इत्यारभ्य 'पडिरूवे'

प्राणी नरकनिगोदादिक का पात्र बनता है। (फुसइ पुण्णपावे) जीव सुचरित क्रियाओं द्वारा पुण्य एवं असुचरित क्रियाओं द्वारा पाप का बंध करनेवाला होता है। (पच्चायंति जीवा) शुभाशुभ कर्मों से बद्ध हुआ जीव इस संसार में जन्ममरण के दुःखों को प्राप्त करता है, अर्थात् जबतक कर्मसंतति जीव में अस्तित्वविशिष्ट रहती है–जीव कर्मों से जबतक बंधा रहता है तबतक ही वह संसार में उत्पन्न होता रहता है। इस कथन से नास्तिक के इस वाद का कि–"भस्मीभूतस्य देहस्य पुनरागमनं कुतः" अर्थात् जब देह भस्मीभूत हो जाता है तो पुनः उसकी प्राप्ति नहीं होती है–निराकरण हो जाता है। (सफले कल्लाणपावए) सौभाग्य एवं दौर्भाग्य के हेतु होने से पुण्य और पाप सफल है।

प्रकारान्तर से भी प्रभुने श्रुतचारित्र रूप धर्म का उपदेश दिया–इस बात को सूत्रकार–'धम्ममाइक्खइ' से लेकर 'पडिरूवे' यहाँ तक के मूलपाठ से प्रदर्शित करते

कुत्सित कर्मो करवावाळा प्राणी नरक–निगोद आदिकना पात्र बने छे (फुसइ पुण्णपावे) जीव सुचरित क्रियाओ द्वारा पुण्य तेमज असुचरित क्रियाओ द्वारा पापना बंध करवावाळा थाय छे. (पच्चायंति जीवा) शुभाशुभ कर्मोथी बंधाएला जीव आ संसारमा जन्म–मरणना दुःखोने प्राप्त करे छे. अर्थात् ज्यां सुधी कर्मसंतति जीवमा अस्तित्वविशिष्ट रहेती होय छे–जीव ज्यां सुधी कर्मोथी बंधायेल रहे छे त्यां सुधी ज ते संसारमां उत्पन्न थया करे छे. आ कथनथी नास्तिकनो एवो वाद के "भस्मीभूतस्य देहस्य पुनरागमनं कुतः" अर्थात् ज्यारे देह भस्मीभूत थई जाय छे तो पछी वळी फरी तेनी प्राप्ति थती नथी. आनुं निराकरण थई जाय छे. (सफले कल्लाणपावए) सौभाग्य तेमज दौर्भाग्यना हेतुभूत होवाना कारणे पुण्य अने पाप सफळ (फळ आपनारां) छे.

बीजी रीते पण प्रभुए श्रुतचारित्ररूप धर्मनो उपदेश आप्यो–ए वातने सूत्रकार–'धम्ममाइक्खइ'थी लईने 'पडिरूवे' अहीं सुधीना मूळपाठ

**णिग्गंथे पावयणे सच्चे अणुत्तरे केवलिए संसुद्धे पडिपुण्णे णेया-**

इत्यन्तेन ग्रन्थेन। '**धम्ममाइक्खइ**' धर्ममाख्याति-'**इणमेव णिग्गंथे पावयणे सच्चे**' इदमेव नैर्ग्रन्थं प्रवचनं सत्यम्-इद=प्रत्यक्षतया विद्यमानं, नैर्ग्रन्थं-निर्ग्रन्थानां=द्रव्यभाव-ग्रन्थिरहितानां संयमिनां सम्बन्धि प्रवचनम्=आगमः, सत्यं=सद्भ्यो हितं वास्तविकञ्च। '**अणुत्तरे**' अनुत्तरम्-नास्त्युत्तरं यस्मात्, नास्मात्प्रधानतममन्यदस्तीति भाव, '**केवलिए**' कैवलिकं=केवलिप्रणीतम्-अद्वितीयं वा, '**संसुद्धे**' संशुद्धम्=कषादिभिः संशुद्धं सुवर्णमिव निर्दोषम्, '**पडिपुण्णे**' प्रतिपूर्णम्-सर्वथा समग्रं-सूत्रापेक्षया मात्राबिन्द्वादिभिः, अर्था-पेक्षया चाकाङ्क्षाऽध्याहारादिभिर्वर्जितम्, '**णेयाउए**' नैयायिकम्=न्यायानुगतं=प्रमाणा-ऽबाधितम्, '**सल्लकत्तणे**' शल्यकर्तनम्=मायादिशल्यच्छेदनक्षमम्-एतद्भावभावितानां

है। '**धम्माइक्खइ**' भगवान ने प्रकारान्तर से भी धर्मोपदेश किया। जैसे-(**इणमेव णिग्गंथे पावयणे सच्चे**) प्रत्यक्षतया विद्यमान यह निर्ग्रन्थों-द्रव्य एवं भावरूप ग्रन्थि से रहित संयमियो का प्रवचन-आगम सत्य-भव्यों का हितकारक एवं यथार्थ है। (**अणुत्तरे**) यह अनुत्तर है-इससे उत्तर-प्रधान और दूसरा कोई नहीं है। (**केवलिए**) कारण कि यह केवलज्ञानी द्वारा प्रणीत हुआ है; इसीलिये यह अद्वितीय है। (**संसुद्धे**) कषादिक द्वारा शुद्ध किये हुए सोने के समान यह शुद्ध है। (**पडिपुण्णे**) यह सर्वथा प्रतिपूर्ण है, न तो सूत्र की अपेक्षा से इसमें मात्रा एवं बिंदु आदि के अध्याहार की आवश्यकता है और न अर्थ की अपेक्षा से इसमें आकांक्षा आदि के अध्याहार की आवश्यकता है, अर्थात् सब प्रकार से यह पूर्ण है। (**णेयाउए**) इस भगवदुपदिष्ट आगम में किसी भी प्रमाण से बाधा नहीं आती है। (**सल्लकत्तणे**) मायामिथ्यात्व एवं निदान शल्यो का

દ્વારા પ્રદર્શિત કરે છે. 'धम्ममाइक्खइ' ભગવાને પ્રકારાન્તરથી પણ ધર્મોપદેશ કર્યો. જેમકે (इणमेव णिग्गंथे पावयणे सच्चे) પ્રત્યક્ષતયા (નજરની સામેજ) વિદ્યમાન (મોજુદ) આ નિર્ગ્રન્થો-દ્રવ્ય તેમજ ભાવ રૂપ ગ્રન્થિથી રહિત સંય-મીઓનાં પ્રવચન-આગમ સત્ય-ભવ્યોને માટે હિતકારક તેમજ યથાર્થ છે. (अणुत्तरे) આ અનુત્તર છે. આનાથી ઉત્તર-પ્રધાન (મુખ્ય) બીજુ કાંઇ નથી. (केवलिए) કારણ કે આ કેવળજ્ઞાની દ્વારા પ્રણીત થયેલું (રચાએલું) છે તે માટે આ અદ્વિતીય છે. (संसुद्धे) કષાદિક દ્વારા શુદ્ધ કરેલાં સોના જેવું તે શુદ્ધ છે. (पडिपुण्णे) એ સર્વદા પરિપૂર્ણ છે-સૂત્રની અપેક્ષાએ તેમાં માત્રા તેમજ બિંદુ આદિના અધ્યાહારની આવશ્યક્તા નથી અને અર્થની અપે-ક્ષાથી તેમાં આકાંક્ષા આદિના અધ્યાહારની પણ આવશ્યક્તા નથી. તમામ પ્રકારે એ પૂર્ણ છે. (णेयाउए) આ ભગવદ્-ઉપદિષ્ટ આગમમાં કોઇ પણ પ્રમાણથી

**उए सल्लकत्तणे सिद्धिमग्गे मुत्तिमग्गे णिज्जाणमग्गे अवितहम-विसंधि सव्वदुक्खप्पहीणमग्गे इहट्ठिया जीवा सिज्झंति बुज्झंति**

भावशल्यानि विच्छेदमायान्तीति । '**सिद्धिमग्गे**' सिद्धिमार्गः–सिद्धिः=कृतकृत्यता–तस्या मार्गः=उपाय, '**मुत्तिमग्गे**' मुक्तिमार्ग'=सकलकर्मवियोगस्य हेतुः, '**णिव्वाणमग्गे**' निर्वाणमार्ग'–निर्वाणस्य=सकलकर्मक्षयजन्यस्य पारमार्थिकसुखस्य मार्गः, '**णिज्जाणमग्गे**' निर्याणमार्गः–निर्याणम्=अपुनरावृत्त्या ससारात् प्रस्थानं तस्य मार्ग', '**अवितहं**' अवितथम्–वितथं=मिथ्या तद्विपरीतं–त्रिकालावाधितमित्यर्थ' । '**अविसंधि**' अविसन्धि=अव्यवच्छिन्नं–न कदाचिदपि विच्छेदमुपगतम् । '**सव्वदुक्खप्पहीणमग्गे**' सर्वदुःखप्रहीण-मार्ग'–सर्वाणि=जन्ममरणादीनि दु'खानि प्रहीणानि यत्र स सर्वदु'खप्रहीणो मोक्षस्तस्य

कर्त्तन (**छेदन**) इसी आगम से होता है । (**सिद्धिमग्गे**) यह आगम ही सिद्धि–कृत-कृत्यता का एक मार्ग है । (**मुत्तिमग्गे**) समस्त कर्मों के क्षय का यही एक उपाय है । (**णिव्वाणमग्गे**) समस्त कर्मों के क्षय से उद्भूत पारमार्थिक सुख का यही एक रास्ता है । (**णिज्जाणमग्गे**) ससार में जीव का पुन' आगमन न हो इस रूप से जो जीव का संसार से प्रस्थान होता है उसका प्रधान कारण एक यही आगम है। (**अवितहं**) यह आगम त्रिकाल में भी कुतर्कों द्वारा वाधित नहीं है। (**अविसंधि**) महाविदेह क्षेत्र की अपेक्षा से–न इसका कभी विच्छेद होता है, और न कभी विच्छेद होगा। (**सव्व-दुक्खप्पहीणमग्गे**) समस्त दु'खों का जिसमें सर्वथा अभाव है ऐसे मोक्ष का यही एक उत्तम मार्ग है। जिस लिये यह प्रभु द्वारा प्रतिपादित आगम पूर्वोक्त प्रकार से इन सद्गुणों

બાધા આવતી નથી. (सल्लकत्तणे) માયા, મિથ્યાત્વ તેમજ નિદાન શલ્યોનાં કર્તન (છેદન) આ આગમથી થાય છે. (सिद्धिमग्गे) આ આગમજ સિદ્ધિ–કૃત-કૃત્યતાનો એક માર્ગ છે (मुत्तिमग्गे) સમસ્ત કર્મોના ક્ષયનો આ એક ઉપાય છે. (णिव्वाणमग्गे) સમસ્ત કર્મોના ક્ષયથી ઉત્પન્ન થતા પારમાર્થિક સુખનો આજ એક રસ્તો છે. (णिज्जाणमग्गे) સંસારમાં જીવનું પુનઃ આગમન ન થાય એ રૂપથી જે જીવનુ સસારથી પ્રસ્થાન થાય છે તેનું પ્રધાન કારણ એક આજ આગમ છે. (अवितहं) આ આગમ ત્રણ કાળમાં પણ કુતર્કો દ્વારા બાધિત નથી. (अविसंधि) મહાવિદેહ ક્ષેત્રની અપેક્ષાથી નથી આનો કદી વિચ્છેદ થયો, નથી વિચ્છેદ થાતો અને નથી કદી વિચ્છેદ થવાનો. (सव्वदुक्खप्पहीणमग्गे) સમસ્ત દુઃખોનો જેમાં અભાવ છે એવા મોક્ષનો આ એક ઉત્તમ માર્ગ છે. જેથી પ્રભુ દ્વારા પ્રતિપાદન કરેલું આ આગમ પૂર્વોક્ત એવાં સદ્ગુણોથી યુક્ત

**मुच्चंति परिणिव्वायंति सव्वदुक्खाणमंतं करेंति। एगच्चा पुण**

मार्गः, यत एवं सद्गुणगुम्फितं नैर्ग्रन्थं प्रवचनम्, अतएव '**इहट्ठिया जीवा सिज्झंति**' इह स्थिता जीवाः सिध्यन्ति—इह=नैर्ग्रन्थप्रवचने स्थिताः=एतदाराधका जीवाः सिध्यन्ति=सिद्धिपदं प्राप्नुवन्ति, अणिमादिसिद्धिं वा '**बुज्झंति**' बुध्यन्ते—केवलज्ञानप्राप्त्या निःशेषविशेषं जानन्ति, '**मुच्चंति**' मुच्यन्ते—भवोपग्राहिणा कर्मणां निरंगनष्टत्वात्, '**परिणिव्वायंति**' परिनिर्वान्ति—कर्मजन्यसकलसन्तापविरहात्, वक्तव्यसारं वक्ति—'**सव्वदुक्खाणमंतं करेंति**' सर्वदुःखानामन्तं कुर्वन्ति—सर्वेषां शारीरिकमानसिकानां दुःखानाम् अन्तं=नाशं कुर्वन्ति।

'**एगच्चा पुण एगे भयंतारो**' एकार्चाः पुनरेके भदन्ताः — एकैव अर्चा=भविष्यन्ती मनुष्यतनुर्येषां ते एकार्चाः सन्तः, पुनरेके=केचिद् भदन्ताः=नैर्ग्रन्थप्रव-

से युक्त है। इसीलिये (**इहट्ठिया जीवा सिज्झंति**) जो जीव इसकी आराधना मे अपने जीवन का उत्सर्ग कर देते है वे नियमतः सिद्धिपद के प्रापक होते है, (**अणिमादि-सिद्धिं वा**) अथवा इस लोक में अणिमादि सिद्धि के धारक होते है। (**बुज्झंति**) केवलज्ञान की प्राप्ति से सभी वस्तुओं को जानते है। (**मुच्चंति**) भवोपग्राहिकर्मों का सम्पूर्णरूप से नाश होने के कारण वे मुक्त हो जाते है। (**परिणिव्वायंति**) कर्मजन्य समस्त संताप के विरह से वे शीतलीभूत हो जाते है। (**सव्वदुक्खाणमंतं करेंति**) शारीरिक एवं मानसिक समस्त दु.खों का वे ही अन्त करनेवाले होते है। (**एगच्चा पुण एगे भयंतारो**) इस निर्ग्रन्थ प्रवचन की आराधना करनेवाले भव्य जीव वर्तमान शरीर के छूट जाने के बाद मात्र एक बार मनुष्य शरीर धारण करते है, अर्थात् वे एकावतारी होते है। वे भव्य जीव इस शरीर के छूटने पर (**पुव्वकम्मावसेसेणं**) पूर्वकर्मों के बाँकी

છે તેથી જ (इहट्ठिया जीवा सिज्झंति) જે જીવ આની આરાધનામા પોતાના જીવનનો ઉત્સર્ગ કરી દે છે તેઓ નિયમતઃ—નિશ્ચયથી—સિદ્ધિપદને પ્રાપ્ત થાય છે, (अणिमादिसिद्धिं वा) આ લોકમાં અણિમાદિ—સિદ્ધિને પામે છે. (बुज्झंति) કેવળજ્ઞાનની પ્રાપ્તિથી બધી વસ્તુઓ જાણે છે. (मुच्चंति) ભવોપગ્રાહિ કર્મોનો સંપૂર્ણ રૂપે નાશ થવાના કારણે તેઓ મુક્ત થઇ જાય છે. (परिणिव्वायंति) કર્મ-જન્ય સમસ્ત સંતાપના વિરહથી (ત્યાગથી) તેઓ શીતલીભૂત બની જાય છે. (सव्वदुक्खाणमंतं करेंति) શારીરિક તેમજ માનસિક સમસ્ત દુઃખોના તેઓ અંત કરવાવાળા હોય છે. (एगच्चा पुण एगे भयंतारो) આ નિર્ગ્રન્થ પ્રવચનની આરા-ધના કરવાવાળા ભવ્ય જીવ વર્તમાન શરીર છૂટી જવા બાદ માત્ર એકવાર મનુષ્ય શરીરને ધારણ કરે છે. અર્થાત્ તેઓ એકાવતારી થાય છે. તે ભવ્ય

एगे भयंतारो पुव्वकम्मावसेसेणं अण्णयरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववत्तारो भवंति, महड्ढिएसु जाव महासुक्खेसु दूरंगइएसु चिरट्ठिइएसु। ते णं तत्थ देवा भवंति—महिड्ढिया जाव चिर-

चनस्याराधका भव्या', 'पुव्वकम्मावसेसेणं' पूर्वकर्माऽवशेषेण, 'अण्णयरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववत्तारो भवंति' अन्यतमेषु देवलोकेषु देवत्वेनोत्पत्तारो भवन्ति, 'महड्ढिएसु, जाव महासुक्खेसु दूरंगइएसु चिरट्ठिइएसु' महर्द्धिकेषु यावन्महासौख्येषु—अत्र यावच्छब्दात्='महज्जुइएसु, महाबलेसु, महायसेसु, महाणुभागेसु' इति द्रष्टव्यम्। प्राग्व्याख्यातमेतत्। दूरगतिकेषु=अनुत्तरविमानादिषु, चिरस्थितिकेषु—चिरा=बहुसागरोपमा स्थितिर्येषु तेषु। 'ते णं तत्थ देवा भवंति' ते खलु तत्र देवा भवन्ति, कीदृशा देवा भवन्तीत्यत्राऽऽह—'महिड्ढिया' महर्द्धिका=महर्द्धिसम्पन्ना', यावत्—'चिरट्ठिइया' चिर-

रहने के कारण (अण्णयरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववत्तारो भवंति महड्ढिएसु जाव महासुक्खेसु दूरंगइएसु चिरट्ठिइएसु) महर्द्धिक—विमान आदि महासम्पत्तिवाले, महाद्युतिक=विविध रत्न आदि की महाकान्तिवाले, महाबल—अत्यन्त स्थिर अर्थात् द्रव्यरूप से शाश्वत, महायशस्वी—शास्त्रों द्वारा प्रशंसित, महानुभाग—महाप्रभावशाली, महासौख्य—अत्यन्त सुख के निधानरूप, चिरस्थितिक—बहुत सागरोपमकी स्थितिवाले, दूरगतिक—मनुष्यलोक आदि से अत्यन्त दूरवर्त्ती, ऐसे अनुत्तर विमानादिक देवलोकों मे से किसी एक देवलोक मे उत्पन्न होते है। (ते णं तत्थ देवा) वे देव वहाँ पर (भवंति महिड्ढिया जाव चिरट्ठिइया) महर्द्धिक—विमान आदि की महासम्पत्तिवाले, महाद्युति—शरीर और आभरण की महा-

આ શરીર છૂટી જતાં (पुव्वकम्मावसेसेणं) પૂર્વ કર્મો બાકી રહેવાના કારણે (अण्णयरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववत्तारो भवंति महड्ढिएसु जाव महासुक्खेसु दूरंगइएसु चिरट्ठिइएसु) મહર્દ્ધિક-વિમાન આદિ મહાસંપત્તિવાળા, મહાદ્યુતિક-વિવિધ રત્નઆદિની મહાકાન્તિવાળા, મહાબલ-અત્યંત સ્થિર, અર્થાત્ દ્રવ્યરૂપથી શાશ્વત, મહાયશસ્વી-શાસ્ત્રો દ્વારા પ્રશંસિત, મહાનુભાગ-મહાપ્રભાવશાલી, મહાસૌખ્ય-અત્યંત સુખના નિધાન રૂપ, ચિરસ્થિતિક-ઘણા સાગરોપમની સ્થિતિવાળા, દૂરગતિક-મનુષ્ય લોક આદિથી અત્યંત દૂરવર્તી, એવા અનુત્તર વિમાનાદિક દેવલોકમાંના કોઇ એક દેવલોકમાં ઉત્પન્ન થાય છે. (ते णं तत्थ देवा) તે દેવ ત્યાં (भवंति महिड्ढिया जाव चिरट्ठिइया) મહર્દ્ધિક-વિમાન આદિની મહાસંપત્તિ વાળા, મહાદ્યુતિ-શરીર અને આભરણની મહાકાન્તિવાળા, મહાબલ-

**ट्ठिइया हार-विराइय-वच्छा जाव पभासमाणा कप्पोवगा गति-**

स्थितिकाः=चिरकालस्थितिकाः, 'हारविराइयवच्छा' हारविराजितवक्षस्काः=हारभूषितहृदयाः, 'जाव पभासमाणा' यावत् प्रभासमानाः–यावच्छब्दादिदं दृश्यम्–'कडय–तुडिय–थंभिय–भुया' कटक–त्रुटित–स्तम्भित–भुजाः 'अंगय–कुंडल–मट्ठ–गंडयल–कण्णपीढ–धारी' अङ्गद–कुण्डल–गण्डतल–कर्णपीठ–धारिणः 'विचित्त–वत्था–भरणा' विचित्र–वस्त्राऽऽभरणाः, 'विचित्तमाला' विचित्रमालाः, 'मउलिमउडा' मौलिमुकुटाः, 'कल्लाणग–पवर–वत्थ–परिहिया' कल्याणक–प्रवर–वस्त्र–परिहिताः, 'कल्लाणग–पवर–मल्ला–णुलेवणा' कल्याणक–प्रवर–माल्या–नुलेपनाः, 'भासुरबोंदी' भास्वरदेहाः, 'पलंब–वणमालधरा' प्रलम्बवनमालाधराः 'दिव्वेणं संघाएणं' दिव्येन संघातेन, 'दिव्वेणं संठाणेणं' दिव्येन संस्थानेन=सुन्दरेणाऽऽकारेण, 'दिव्वाए इड्ढीए' दिव्यया ऋद्ध्या, 'दिव्वाए जुईए' दिव्यया द्युत्या, 'दिव्वाए पभाए' दिव्यया प्रभया 'दिव्वाए छायाए' दिव्यया छायया, 'दिव्वाए अच्चीए' दिव्येन अर्चिषा=दिव्येन तेजसा, 'दिव्वाए लेसाए' दिव्यया लेश्यया, 'दस दिसाओ उज्जोयमाणा' दश दिशा उद्द्योतयन्तः–समन्तात्सर्वान् दिगाभोगान् विभासयन्तः इति। 'पभासमाणा' प्रभा-

कान्तिवाले, महाबल–शरीर से अत्यन्त बलवान्, महायशस्वी–अत्यन्त यशवाले, महानुभाग–अत्यन्त प्रभावशाली, महासौख्य–सुखपुंज को भोगनेवाले और चिरस्थितिक–अनेक सागरोपमस्थितिवाले होते हैं। इनका वक्षःस्थल सदा हारों की मालाओं से सुशोभित रहा करता है। (जाव पभासमाणा) यहाँ 'जाव' शब्द से (**कडय–तुडिय–थंभिय–भुया अंगय–कुंडल–गंडयल–कण्णपीढ–धारी विचित्त–वत्था–भरणा विचित्तमाला मउलिमउडा कल्लाणग–पवर–वत्थ–परिहिया कल्लाणग–पवर–मल्ला–णुलेवणा भासुरबोंदी पलंब–वणमाल–धरा दिव्वेणं संघाएणं दिव्वेणं संठाणेणं दिव्वाए इड्ढीए दिव्वाए जुईए दिव्वाए पभाए दिव्वाए छायाए दिव्वाए अच्चीए दिव्वाए**

શરીરે ઘણા બળવાન્, મહાયશસ્વી–અત્યંત યશવાળા, મહાનુભાગ–અત્યંત પ્રભાવશાળી, મહાસૌખ્ય–સુખપુંજને ભોગવવાવાળા અને ચિરસ્થિતિક–અનેક સાગરોપમ સ્થિતિવાળા થાય છે. એમનું વક્ષઃસ્થલ સદા હારોની માલાઓથી સુશોભિત રહ્યા કરે છે. (जाव पभासमाणा) અહીં 'जाव' શબ્દથી (कडय–तुडिय–थंभिय–भुया अंगय–कुंडल–गंडयल–कण्णपीढ–धारी विचित्त–वत्था–भरणा विचित्त–माला मउलिमउडा कल्लाणग–पवर–वत्थ–परिहिया कल्लाणग–पवर–मल्ला–णुलेवणा भासुर-बोंदी पलंब–वणमाल–धरा दिव्वेणं संघाएणं दिव्वेणं संठाणेणं दिव्वाए इड्ढीए दिव्वाए जुईए, दिव्वाए पभाए, दिव्वाए छायाए, दिव्वाए अच्चीए, दिव्वाए लेसाए दस-

**कल्लाणा ठिइकल्लाणा आगमेसिभद्दा जाव पडिरूवा। तमाइक्खइ-**

समानाः=प्रकर्षेण शोभमानाः '**कप्पोवगा**' कल्पोपगाः-कल्पः=इन्द्र-सामानिक-त्रायस्त्रिंश-पारिषद्या-त्मरक्ष-लोकपाला-नीक-प्रकीर्णका-भियोग्य-किल्विषिक-व्यवहारस्वरूप आचारस्तमुपगताः=प्राप्ताः, सौधर्मादिदेवलोकवासिवैमानिकदेवत्वं प्राप्ताः', '**गइकल्लाणा**' गतिकल्याणाः-कल्याणा गतिर्येषां ते तथा, अथवा-गत्या=चतुर्गतिकलोके देवगतिरूपया कल्याणाः=

**लेसाए दस दिसाओ उज्जोवेमाणा पभासमाणा**) इस पाठ का संग्रह हुआ है, इस का अर्थ इस प्रकार है-इनकी भुजाएँ कटक-कड़े और त्रुटित-भुजबन्ध इन आभूषणों से विभूषित रहा करती है। बाकी के इन समस्त पदों का अर्थ पीछे जहां पर देवों के आगमन का वर्णन किया गया है उस ३३वें सूत्र में लिखा जा चुका[1] है। (**कप्पोवगा**) इन्द्र, सामानिक, त्रायस्त्रिंश, पारिषद्य, आत्मरक्षक, लोकपाल. अनीकाधिपति, प्रकीर्णक, आभियोग्य, किल्विषिक, ये दश प्रकार के देव जहाँ होते है उन देवलोकों का नाम कल्प है। इन कल्पों में जो उत्पन्न होते है उनका नाम कल्पोपग है। सौधर्मादिक देवलोक से अच्युत देवलोक तक के देव कल्पोपग कहलाते है, क्यों कि यहीं तक इन्द्रादिक १० प्रकार के देवों का व्यवहार होता है, इनके बाद नहीं! (**गइकल्लाणा**) इनकी गति कल्याणकारी होती है, अथवा चतुर्गतिक इस लोक में ये देवगति में रहनेवाले होने के कारण उत्तम होते है, इस अपेक्षा ये गतिकल्याण कहे गये है। (**ठिइकल्लाणा**) अनेक पल्योपम-

(१) असुरकुमारों के वर्णन में इन समस्त पदों का अर्थ लिखा गया है।

दिसाओ उज्जोवेमाणा पभासमाणा) આ પાઠનો સંગ્રહ કર્યો છે. આનો અર્થ આ પ્રકારે છે. એમની ભુજાઓ કટક (કડાં) અને ત્રુટિત-ભુજબંધ એ આભૂષણોથી શણગારેલી રહે છે. બાકીનાં આ બધાં પદોનો અર્થ અગાઉ જ્યાં દેવોના આગમનનું વર્ણન કર્યું છે તે ૩૩માં સૂત્રમાં લખાઇ ગયું છે.[1] (कप्पोवगा) ઈંદ્ર, સામાનિક, ત્રાયસ્ત્રિંશ, પારિષદ્ય, આત્મરક્ષક, લોકપાલ, અનીકાધિપતિ, પ્રકીર્ણક, આભિયોગ્ય, કિલ્બિષિક, આ દશ પ્રકારના દેવ જ્યાં હોય છે તે દેવલોકનું નામ કલ્પ છે. આ કલ્પોમાં જે ઉત્પન્ન થાય છે તેમનાં નામ કલ્પોપગ છે. સૌધર્માદિક દેવલોકથી લઈને અચ્યુત દેવલોક સુધીના દેવ કલ્પોપગ કહેવાય છે. કેમકે અહીં સુધી ઇંદ્રાદિક ૧૦ પ્રકારના દેવોનો વ્યવહાર થાય છે. ત્યાર પછી નહિ. (गइकल्लाणा) તેમની ગતિ કલ્યાણકારી હોય છે. અથવા ચતુર્ગતિક આ લોકમા તેઓ દેવગતિમાં રહેવાવાળા હોવાને કારણે ઉત્તમ હોય છે. આ અપેક્ષાથી તેઓ ગતિકલ્યાણ કહેવાય છે.

(૧) અસુરકુમારોના વર્ણનમા આ બધા પદોનો અર્થ લખાઈ ગયો છે.

## एवं खलु चउहिं ठाणेहिं जीवा णेरइयत्ताए कम्मं पकरेंति,

भद्ररूपाः, 'ठिइकल्लाणा' स्थितिकल्याणाः=अनेकपल्योपमसागरोपमरूपचिरस्थितिकाः 'आगमेसिभद्दा' आगमिष्यद्भद्राः—आगमिष्यत्=आगामिकालभावि भद्रं=कल्याणं—निर्वाणरूपं येषां ते तथा, 'जाव पडिरूवा' यावत्प्रतिरूपाः=अतिरमणीयाऽऽकाराः, यावच्छब्दात्—'प्रासादीया दर्शनीया अभिरूपा' इति बोध्यम्। पुनरपि 'तमाइक्खइ' तदाचष्टे=तत्प्रवचनं कथयति—'एवं खलु चउहिं ठाणेहिं जीवा णेरइयत्ताए कम्मं पकरेंति' एवं खलु चतुर्भिः स्थानैर्जीवा नैरयिकतायाः कर्माणि प्रकुर्वन्ति, तत्र नैरयिकतायाः=नारकित्वस्य,

सागरोपम तक देवलोक में इनकी स्थिति होने के कारण ये देव स्थितिकल्याण कहे गये हैं। इनमें से आकर ही तो मनुष्यपर्याय लेकर जीव निर्वाण—मुक्ति का लाभ करते हैं; अतः वे (आगमेसिभद्दा) आगमिष्यद्भद्र कहे गये हैं। (जाव पडिरूवा) यहाँ पर 'यावत्' शब्द से "प्रासादीयाः, दर्शनीयाः, अभिरूपाः" इन पदों का भी संग्रह हुआ है। 'प्रासादीयाः' इन्हें देखने से मन प्रसन्न हो जाता है। अत एव ये 'दर्शनीयाः' दर्शनीय हैं। 'अभिरूपाः' इनके रूप की सुन्दरता प्रतिक्षण नवीन नवीन भाव से बढती रहती हो ऐसे ये मालूम होते हैं; इसलिये ये अभिरूप हैं। 'प्रतिरूपाः' इनके रूप की तुलना नहीं हो सकती है, क्यों कि इनका रूप असाधारण होता है, अर्थात् ये अनुपम सुन्दर होते हैं। अब इस प्रवचन का क्या फल है? इसको कहते हैं—

(एवं खलु चउहिं ठाणेहिं जीवा णेरइयत्ताए कम्मं पकरेंति) यह जीव चार कारणों द्वारा नरक में ले जानेवाले कर्मों को करते हैं, अब इस बात को प्रभु प्रकट

(ठिइकल्लाणा) અનેક પલ્યોપમ સાગરોપમ સુધી દેવલોકમાં તેમની સ્થિતિ હોવાના કારણે તે દેવો સ્થિતિકલ્યાણ કહેવાય છે. તેમાંથી આવીને જ મનુષ્યપર્યાય પ્રાપ્ત કરી જીવ નિર્વાણ-મુક્તિનો લાભ કરે છે, માટે તેઓ (आगमेसिभद्दा) આગમિષ્યદ્ભદ્ર કહેવાય છે. (जाव पडिरूवा) અહીં યાવત્ શબ્દથી 'प्रासादीयाः, दर्शनीयाः, अभिरूपाः' એ પદોનો પણ સંગ્રહ થયો છે. "प्रासादीयाः"- એમને જોતાં મન પ્રસન્ન થઇ જાય છે. આ માટે જ તેઓ 'दर्शनीयाः' દર્શનીય છે. 'अभिरूपाः' એમના રૂપની સુંદરતા પ્રતિક્ષણ નવીન નવીન ભાવથી વધતી જતી હોય તેમ તેઓ જણાય છે, તે માટે તેઓ અભિરૂપ છે. 'प्रतिरूपा' તેમના રૂપની તુલના ન થઇ શકે, કેમકે તેમનું રૂપ અસાધારણ હોય છે, અર્થાત્ તેઓ અનુપમ સુંદર હોય છે. હવે આ પ્રવચનનું શું ફલ છે? તે કહે છે—

(एवं खलु चउहिं ठाणेहिं जीवा णेरइयत्ताए कम्मं पकरेंति) આ જીવ ચાર

**णेरइयत्ताए कम्मं पकरेत्ता णेरइएसु उववज्जंति, तं जहा–महारंभयाए १ महापरिग्गहयाए २ पंचिंदियवहेणं ३ कुणिमाहारेणं ४, एवं एएणं अभिलावेणं। तिरिक्खजोणिएसु–१ माइल्लयाए**

'णेरइयत्ताए कम्मं पकरेत्ता णेरइएसु उववज्जंति' नैरयिकतायै कर्माणि प्रकृत्य=प्रकर्षेण विधाय नैरयिकेषु उत्पद्यन्ते=नारकजीवानां मध्ये जायन्ते, तंजहा–तद्यथा=येन प्रकारेण नैरयिकेषु जायन्ते तत् कथयति सूत्रकारः–१ 'महारंभयाए' महारम्भतया=सावद्याऽऽरम्भबाहुल्येन,–२ 'महापरिग्गहयाए' महापरिग्रहतया=परिग्रहाधिक्येन, ३ 'पंचिंदियवहेणं' पञ्चेन्द्रियवधेन=पञ्चेन्द्रियप्राणिनां हिंसया, ४ 'कुणिमाहारेणं' कुणपाहारेण=मांसाहारेण, 'एवं एएणं अभिलावेणं' एवमेतेनाभिलापेन=कथनेन 'तिरिक्खजोणिएसु' तिर्यग्योनिषु–तिरश्चां योनयः=उत्पत्तिस्थानानि तत्र, १–'माइल्लयाए णियडिल्लयाए' मायावितया निकृतिमत्तया–माया=परवञ्चना सैषामस्तीति मायाविनः तेषां भावस्तत्ता तया; निकृतिः–मायाच्छादनार्थं मायान्तरकरणं सैषामस्तीति निकृतिमन्तः, तद्भावो निकृतिमत्ता तया, २ 'अलियवयणेणं'

करते हैं–(तं जहा) वे चार कारण ये हैं–(महारंभयाए) महा–आरम्भ, (महापरिग्गहयाए) महापरिग्रह, (पंचिंदियवहेणं) पंचेन्द्रिय जीवों का वध करना, (कुणिमाहारेणं) मांस का आहार करना। इन चार कारणों से (णेरइयत्ताए कम्मं पकरेत्ता णेरइएसु उववज्जंति) नरक में ले जाने के योग्य कर्मों का उपार्जन होता है, इसलिये ये जीव नरक में उत्पन्न होते हैं। (एवं एएणं अभिलावेणं) इसी प्रकारका चार कारण रूप कथन (तिरिक्खजोणिएसु) तिर्यञ्च गति में उत्पन्न कराने वाले कर्मों का भी है। वे चार कारण ये हैं–(माइल्लयाए) मायाचारी करना (णियडिल्लयाए) एवं माया को स्ववरण करने के लिये और अधिक मायाचारी करना १, (अलियवयणेणं) असत्य-

કારણો દ્વારા નરકમાં લઈ જનારાં કર્મો કરે છે, (तंजहा) તે ચાર કારણ આ છે–(महारंभयाए) મહા આરંભ, (महापरिग्गहयाए) મહાપરિગ્રહ, (पंचिंदियवहेणं) પંચેન્દ્રિય જીવોનો વધ કરવો, (कुणिमाहारेणं) માંસનો આહાર કરવો. આ ચાર કારણોથી (णेरइयत्ताए कम्मं पकरेत्ता णेरइएसु उववज्जंति) નરકમાં લઈ જવા યોગ્ય કર્મોનું ઉપાર્જન થાય છે તેથી તે જીવ નરકમાં જાય છે. (एवं एएणं अभिलावेणं) આ પ્રકારનાં ૪ ચાર કારણ રૂપ કથન (तिरिक्खजोणिएसु) તિર્યંચ ગતિમા ઉત્પન્ન કરાવનારાં કર્મોનું પણ છે. તે ચાર કારણ આ છે–(माइल्लयाए) માયાચારી કરવું, (णियडिल्लयाए) તેમજ માયાનું સંવરણ કરવા માટે–ઢાંકવા માટે અન્ય માયાચારી કરવું (૧).

**णियडिल्लयाए, २ अलियवयणेण, ३ उक्कंचणयाए, ४ वंचणयाए। मणुस्सेसु-पगइभद्दयाए १, पगइविणीययाए २, साणुक्को-**

अलीकवचनेन=असत्यभाषणेन, ३ '**उक्कंचणयाए**' उत्कञ्चनतया-उत्कञ्चनता नाम कंचन सरलहृदयं वञ्चयितुं प्रवृत्तस्य परं चतुरतरं नरं पार्श्वस्थं विलोक्य क्षणं वञ्चनानिवृत्ततयाऽवस्थानं तया, कपटवृत्त्या, ४ '**वंचणयाए**' वञ्चनतया। एतैश्चतुर्भिः स्थानैर्जीवास्तिर्यग्योनिषु यान्ति। मनुष्यजीवेषु पुनः कैश्चतुर्भिः स्थानैरुत्पद्यन्ते? तद्दर्शयितुमाह-'**मणुस्सेसु**' इत्यादि। मनुष्येषु, '**पगइभद्दयाए**' प्रकृतिभद्रतया=स्वभावसरलतया १, '**पगइविणीययाए**' प्रकृतिविनीततया=स्वभावतो विनयशीलतया २, '**साणुक्कोसयाए**' सानुक्रोशतया-अनुक्रोशो=दया तेन सह वर्तते इति सानुक्रोशस्तस्य भावः सानुक्रोशता तया-सदयतया ४, '**अमच्छरियाए**' अमत्सरितया-मत्सरोऽन्यशुभद्वेषस्तदभावोऽमत्सरः=परगुणग्राहित्वं सोऽस्त्येषामित्यमत्सरिणस्तद्भावोऽमत्सरिता तया-ईर्ष्याराहित्येन। एतैश्चतुर्भिः

भाषण करना २, (**उक्कंचणयाए**) किसी सरल हृदयवाले व्यक्ति को ठगने के लिये प्रवृत्त हुए ठगिया-मायाचारी वाले का, उस सरल पुरुष के पास किसी चतुर पुरुष की स्थिति देखकर कुछ समयतक वंचनामय अपनी प्रवृत्ति को स्थगित कर ठहर जाना-कपटवृत्ति को रोक रखना ३, (**वंचणयाए**) दूसरों को ठगना ४। इन चार कारणों से जीव तिर्यचगति में ले जाने वाले कर्मों का उपार्जन करते है। (**मणुस्सेसु**) मनुष्यगति में जीव चार कारणों से जाते है। वे कारण ये है-(**पगइभद्दयाए**) प्रकृति से भद्र होना १, (**पगइविणीययाए**) प्रकृति से विनीत होना २, (**साणुक्कोसयाए**) दयालु होना ३, एवं (**अमच्छरियाए**) मत्सरभाव नहीं रखना अर्थात् गुणग्राही होना ४। इन चार कारणों से ये जीव मनुष्यगति में उत्पन्न

(अलियवयणेणं) અસત્ય ભાષણ કરવું (૨). (उक्कंचणयाए) કોઇ સરલ હૃદયવાળા માણસને ઠગવા-છેતરવા-માટે પ્રવૃત્ત થનારા ઠગ-માયાચારીવાળાનું, તે સરળ પુરુષની પાસે કોઇ ચતુર પુરુષની હાજરી જોઇ થોડા સમય માટે વંચનામય પોતાની પ્રવૃત્તિને સ્થગિત કરી રોકાઇ જવુ-પોતાની કપટવૃત્તિને રોકી રાખવું (૩). (वंचणयाए) બીજાને ઠગવા (૪). આ ચાર કારણોથી જીવ તિર્યંચ ગતિમાં લઈ જવા જેવાં કર્મોનું ઉપાર્જન કરે છે. (मणुस्सेसु) મનુષ્ય-ગતિમાં આ જીવ ૪ કારણોથી જાય છે. તે કારણો આ છે-(पगइभद्दयाए) પ્રકૃતિથી ભદ્ર હોવું (૧), (पगइविणीययाए) પ્રકૃતિથી વિનીત હોવું (૨), (साणुक्कोसयाए) દયાળુ હોવું (૩), તેમજ (अमच्छरियाए) મત્સરભાવ ન રાખવો અર્થાત્ ગુણગ્રાહી થવું (૪). આ ચાર કારણોથી આ જીવ મનુષ્ય

सयाए ३, अमच्छरियाए ४। देवेसु-सरागसंजमेणं १, संजमासंजमेणं २, अकामणिज्जराए ३, वालतवोकम्मेणं ४। तमाइक्खइ-

स्थानैर्जीवा मनुजत्वं प्राप्नुवन्ति । देवत्वप्राप्तिहेतुभूतानि चत्वारि स्थानानि दर्शयति-'देवेसु' इत्यादि। देवेषु-'सरागसंजमेणं' सरागसंयमेन-रागेण=आसक्त्या सहितः सरागः, स चासौ संयमश्च सरागसंयमस्तेन-सकषायचारित्रेण १, 'संजमासंजमेणं' संयमासंयमेन=देशसंयमेन २, 'अकामणिज्जराए' अकामनिर्जरया-अकामेन=अभिलाषमन्तरेण निर्जरा=क्षुधादिसहनं तया ३, 'वालतवोकम्मेणं' वालतपःकर्मणा=बाल्यादृग्याद् बाला= मिथ्यादृशः, तेषां तपःकर्म वालतपःकर्म, तेन ४, एतैः स्थानैर्जीवा देवभवं प्राप्नुवन्तीति भावः। पुनः प्रकारान्तरेण 'तमाइक्खइ' तदाख्याति=तत् कथयति 'जह णरगा गम्मंती'

कराने वाले कर्मों का उपार्जन करते हे। (देवेसु) चार कारणों से जीव देवगति में उत्पन्न होते है। वे चार कारण ये हे-(सरागसंजमेणं) सरागसंयम का पालन करना १, (संजमासंजमेणं) देशविरति पालन करना २, (अकामणिज्जराए) अकामनिर्जरा ३, एवं (वालतवोकम्मेणं) वाल तपस्या ४। जिस संयम में राग (आसक्ति) विद्यमान होता है उस का नाम सरागसंयम है। मतलब-कषायसहित चारित्र का पालना सरागसंयम है। १२ वारह व्रतों का-देशविरति का धारण करना इसका नाम संयमासंयम है। अभिलाषा-इच्छा के विना क्षुधा आदि का सहन करना इसका नाम अकामनिर्जरा है। मिथ्यादृष्टियों के तप का नाम वालतप है। इन कामों के करने से जीव देवगति में जाने योग्य कर्मों का उपार्जन करते है। (जह णरगा गम्मंती जे णरगा जा य वेयणा णरए। सारीरमाणसाइं दुक्खाइं

ગતિમા ઉત્પન્ન કરાવવાવાળાં કર્મોનુ ઉપાર્જન કરે છે. (देवेसु) ચાર કારણોથી જીવ દેવગતિમા ઉત્પન્ન થાય છે-(सरागसंजमेणं) સરાગ સંયમનું પાલન કરવુ ૧, (संजमासंजमेणं) દેશવિરતિનું પાલન કરવું ૨, (अकामणिज्जराए) અકામ-નિર્જરા ૩, તેમજ (वालतवोकम्मेणं) બાલ તપસ્યા૪. જે સંયમમાં રાગ-આસક્તિ વિદ્યમાન હોય છે તેનુ નામ સરાગ-સંયમ છે. મતલબ-કષાય સહિત ચારિત્રનું પાલન કરવું તે સરાગસંયમ છે (૧). ૧૨ બાર વ્રતો-દેશવિરતિ-ધારણ કરવાં તેનુ નામ સંયમાસયમ છે (૨). અભિલાષા-ઇચ્છા-વિના ભૂખ આદિ સહન કરવુ તેનું નામ અકામ નિર્જરા છે (૩). મિથ્યાદષ્ટિનાં તપનું નામ બાલતપ છે (૪). આ કામો કરવાથી જીવ દેવગતિમાં જવા યોગ્ય કર્મોનું

" जह णरगा गम्मंती, जे णरगा जा य वेयणा णरए।
सारीरमाणसाइं दुक्खाइं तिरिक्खजोणीए ॥ १ ॥
माणुस्सं च अणिच्चं, वाहि-जरा-मरण-वेयणा-पउरं।
देवे य देवलोए, देविड्ढिं देवसोक्खाइं ॥ २ ॥

इत्यादिगाथाभिः। 'जह णरगा गम्मंती' यथा नरका गम्यन्ते-जीवैर्येन प्रकारेण नरकाः=नरकस्थानानि गम्यन्ते=प्राप्यन्ते, 'जे णरगा' ये नरकाः-यद्रूपा नरकाः=नारकिणः सन्ति, 'जा य वेयणा णरए' याश्च वेदना नरके-याः=यादृश्यो वेदनाः=यातनाश्च नरके भवन्ति, तत्सर्वं कथयतीति पूर्वेणान्वयः। 'सारीरमाणसाइं दुक्खाइं तिरिक्खजोणीए' शारीरमानसानि दुःखानि तिर्यग्योन्याम्-यथा च शरीरसम्बन्धीनि मनःसम्बन्धीनि च दुःखानि भवन्ति प्राणिनामिति शेषस्तथा भगवान् परिकथयति ॥ १ ॥ एव 'माणुस्सं च अणिच्चं वाहि-जरा-मरण-वेयणा-पउरं' मानुष्यञ्चाऽनित्यं व्याधि-जरा-मरण-वेदना-प्रचुरम्-व्याधयो=ज्वरादयः जरा=वार्धकं,मरणं=प्रसिद्धं, वेदनाः=शीतोष्णादिस्वरूपा', प्रचुराः=विशदा यस्मिंस्तादृशम्, अतएव अनित्य=क्षणभङ्गुरं मानुष्यं=मनुष्यभवं परिकथयति। 'देवे य देवलोए देविड्ढिं देवसोक्खाइं' देवान् च देवलोकान् देवर्द्धिं देवसौख्यानि-तथा देवान्, च पुनः देवलोकान्, देवर्द्धिं=देवसमृद्धिं, देवसौख्यानि=देवसम्बन्धीनि सुखानि कथयतीति शेषः ॥ २ ॥ एतान्येव नरकादीनि

तिरिक्खजोणीए) जीव जिस प्रकार नरकों में जाते है, और वहां जैसे नारकी है, एवं उन्हे जिस प्रकार की वेदना भोगनी पड़ती है यह सब प्रभु ने (आइक्खइ) बतलाया। तिर्यग्गति में पहुँचने पर इस जीव को जितने भी शारीरिक एवं मानसिक कष्ट भोगने पड़ते है, यह भी भगवानने स्पष्ट किया। (माणुस्सं च अणिच्चं वाहि-जरा-मरण-वेयणा-पउरं) यह मानवपर्याय अनित्य है, व्याधि, जरा, मरण एवं वेदना से प्रचुर-भरी है। (देवे य

ઉપાર્જન કરે છે. (जह णरगा गम्मंती जे णरगा जा य वेयणा णरए। सारीरमाणसाइं दुक्खाइं तिरिक्खजोणीए) જીવ જે પ્રકારે નરકોમાં જાય છે, અને ત્યાં જેવા નારકી હોય છે, તેમજ તેમને જે પ્રકારની વેદના ભોગવવી પડે છે, એ બધું પ્રભુએ (आइक्खइ) બતાવ્યું. તિર્યંચ-ગતિમાં પહોંચતાં આ જીવને જેટલાં શારીરિક તેમજ માનસિક દુઃખ હોય છે તે બધા ભોગવવાં પડે છે, એ પણ ભગવાને સ્પષ્ટ કર્યું. (माणुस्सं च अणिच्चं वाहि-जरा-मरण-वेयणा-पउरं) આ

णरगं तिरिक्खजोणिं, माणुसभावं च देवलोगं च।
सिद्धे य सिद्धवसहिं, छज्जीवणियं परिकहेइ ॥ ३ ॥
जह जीवा बज्झंती मुच्चंती जह य संकिलिस्संति।
जह दुक्खाणं अंतं, करेंति केई अपडिबद्धा ॥ ४ ॥

सगृह्य ब्रूते—'णरगं' नरकं=नरकावास, 'तिरिक्खजोणिं' तिर्यग्योनिं, 'माणुसभावं' मनुष्यभावं=मनुष्यत्वं च 'देवलोगं' देवलोकञ्च कथयति। तथा 'सिद्धे य' सिद्धांश्च 'सिद्धवसहिं'—सिद्धवसतिं=सिद्धक्षेत्रं, 'छज्जीवणियं' षड्जीवनिकां परिकथयति ॥ ३ ॥ एवं 'जह जीवा बज्झंती' यथा जीवा बध्यन्ते=बन्ध प्राप्नुवन्ति, 'मुच्चंती' मुच्यन्ते=मुक्ता भवन्ति, 'जह य संकिलिस्संति' यथा च सक्लिश्यन्ति, 'जह दुक्खाणं अंतं करेंति केई अपडिबद्धा' यथा दुःखानामन्त कुर्वन्ति केऽपि अप्रतिबद्धाः—केऽपि=कतिचिज्जीवा अप्रतिबद्धा=प्रतिबन्धरहिता'—मुक्ता' सन्तो दुःखानामन्तं=नाशं कुर्वन्ति, तत्सर्वं

देवलोए देविड्ढिं देवसोक्खाइं) एव देवगति में देवताओं को देवसंबंधी अनेक ऋद्धियां एवं देवपर्यायसंबंधी अनेक सौख्यों की प्राप्ति होती है—यह सब भी प्रभुने अच्छी तरह स्पष्ट करके अपनी दिव्यध्वनि द्वारा प्रदर्शित किया। (णरगं तिरिक्खजोणिं माणुसभावं च देवलोगं च। सिद्धे य सिद्धवसहिं छज्जीवणिय परिकहेइ) इस प्रकार प्रभु ने नरक, तिर्यंच, मनुष्य एवं देवगति का कथन किया, साथ में यह भी बतलाया कि सिद्ध कैसे होते हैं और सिद्धस्थान कैसा है, एव षड्जीवनिकाय कौन २ हैं। (जह जीवा बज्झंती मुच्चंती जह य संकिलिस्संति। जह दुक्खाणं अंतं करेंति केई अपडिबद्धा) जीव जिस प्रकार कर्मों

માનવપર્યાય અનિત્ય છે. વ્યાધિ, જરા, મરણ તેમજ વેદનાથી પ્રચુર-ભરેલી છે. (देवे य देवलोए देविड्ढिं देवसोक्खाइं) તેમજ દેવગતિમા દેવતાઓને દેવ-સંબંધી અનેક ઋદ્ધિઓ તેમજ દેવપર્યાય-સંબંધી અનેક સૌખ્યની પ્રાપ્તિ થાય છે. એ બધું પણ પ્રભુએ સારી રીતે સ્પષ્ટ કરીને પોતાના દિવ્ય-ધ્વનિ દ્વારા પ્રદર્શિત કર્યું. (णरगं तिरिक्खजोणि माणुसभावं च देवलोयं च। सिद्धे य सिद्धवसहिं छज्जीवणियं परिकहेइ) આ પ્રકારે પ્રભુએ નરક, તિર્યંચ, મનુષ્ય તેમજ દેવગતિનું કથન કર્યું, તે સાથે એ પણ બતાવ્યું કે સિદ્ધ કેવા હોય છે, અને સિદ્ધસ્થાન કેવું છે, તેમજ ષડ્જીવનિકાય કોણ કોણ છે. (जह जीवा वज्झंतीं मुच्चंती जह य संकिलिस्संति। जह दुक्खाणं अंतं करेंति केई अपडिबद्धा) જીવ જે પ્રકારે કર્મોથી

अट्टा अट्टियचित्ता जह जीवा दुक्खसागरमुवेंति।
जह वेरग्गमुवगया कम्मसमुग्गं विहाडेंति ॥ ५ ॥
जह रागेण कडाणं कम्माणं पावगो फलविवागो।
जह य परिहीणकम्मा सिद्धा सिद्धालयमुवेंति ॥ ६ ॥सू० ५६॥

---

कथयति ॥ ४ ॥ '**अट्टा अट्टियचित्ता**' आर्तादार्तितचित्ता-आर्तात्=आर्तध्यानाद् आर्तितं=पीडितं चित्तं येषां ते तथा, '**जह जीवा**' यथा जीवा '**दुक्खसागरमुवेंति**' दुःखसागरं=दुःखरूपं समुद्रमुपयन्ति=प्राप्नुवन्ति, तत् कथयति। '**जह वेरग्गमुवगया कम्मसमुग्गं विहाडेंति**' यथा च वैराग्यमुपगताः=प्राप्ताः कर्मसमुद्गं-कर्मणां समुद्गं=मञ्जूषां कर्मराशिमिति यावत् विघाटयन्ति=त्रोटयन्ति-नाशयन्तीति यावत्, तत् कथयति। '**जह रागेण कडाणं कम्माणं पावगो फलविवागो**' यथा रागेग=पुत्रकलत्रादिष्वभिष्वङ्गरूपेण कृतानाम्=उपार्जितानां कर्मणां=ज्ञानावरणीयादीनां पापकः=पापमयः फलविपाकः=फलपरिणामो भवति।

---

से बंधते है और जिस प्रकार उनसे छूटते है तथा जिस प्रकार से अनेक सक्लेशों को भोगते है और फिर अप्रतिबद्ध होकर जिस प्रकार से कितनेक भव्यजीव समस्त प्रकार के दुःखों का विनाश करते है यह विषय भी प्रभु ने आगत जनता को अच्छी तरह समझाया। (**अट्टा अट्टियचित्ता जह जीवा दुक्खसागरमुवेंति। जह वेरग्गमुवगया कम्मसमुग्गं विहाडेंति**) प्रभु ने यह भी बतलाया कि आर्त्तध्यान से पीडित चित्तवाले प्राणी-जीव किस तरह दुःख सागर में गोते खाते रहते है और किस प्रकार से वैराग्य को प्राप्त कर जीव कर्मराशि को विनष्ट कर देते है। (**जह रागेण कडाणं कम्माणं पावगो फलविवागो।**

---

બંધાય છે, અને જે પ્રકારે તેથી છૂટે છે, તથા જે પ્રકારે અનેક સંક્લેશોને ભોગવે છે, અને પાછા અપ્રતિબદ્ધ થઈને જે પ્રકારે કેટલાક ભવ્ય જીવ સમસ્ત પ્રકારનાં દુઃખનો વિનાશ કરે છે. એ વિષય પણ પ્રભુએ આવેલ જનતાને સારી રીતે સમજાવ્યો. (अट्टा अट्टियचित्ता जह जीवा दुक्खसागरमुवेति। जह वेरग्गमुवगया कम्मसमुग्गं विहाडेति) પ્રભુએ એ પણ બતાવ્યું કે આર્ત્તધ્યાનથી પીડાતા ચિત્તવાળા પ્રાણી-જીવ કેવી રીતે દુઃખસાગરમાં ગોથા ખાધા કરે છે, અને કેવી રીતે વૈરાગ્ય પ્રાપ્ત કરીને જીવ કર્મરાશિનો નાશ કરે છે. (जह रागेण कडाणं कम्माणं पावगो फलविवागो। जह य परिहीणकम्मा सिद्धा सिद्धालयमुवेत्ति) પુત્ર-કલત્ર આદિમાં આસક્તિ રૂપ રાગથી ઉપા-

मूलम्—तमेव धम्मं दुविहं आइक्खइ, तं जहा—अगार-

'जह य' यथा च—येन प्रकारेण 'परिहीणकम्मा' परिहीनकर्माणः—परिहीणानि=विनष्टानि कर्माणि येषां ते, सिद्धाः—'सिद्धालयमुवेंति' सिद्धालयमुपयन्ति—लोकान्तक्षेत्रलक्षण स्थानं प्राप्नुवन्ति, तथा भगवान् परिकथयतीति पूर्वेणान्वयः ॥ सू० ५६ ॥

टीका—'तमेव' इत्यादि। 'तमेव धम्मं दुविहं आइक्खइ' तमेव= पूर्वोक्तमेव धर्मं द्विविधं=द्विप्रकारम्, आख्याति=कथयति, 'तं जहा' तद्यथा—'अगारधम्मं अणगारधम्मं च' अगारधर्मम्, अनगारधर्मं च—अगारं=गृहं तात्स्थ्यादगाराः गृहस्थाः, गृहा दारा इत्यादिवत्, यद्वा—अगारमस्त्येषामित्यर्थे 'अर्श आदिभ्योऽच्' इति मत्वर्थीयाच्-प्रत्ययः, तेषां धर्मः—वक्ष्यमाणस्वरूपस्तम्, तथा—अनगारधर्मं=न विद्यतेऽगारं—गृहं येषां तेऽनगाराः साधवस्तेषां धर्मस्तं च आख्याति। तत्र प्राधान्यात् प्रथम-

जह य परिहीणकम्मा सिद्धा सिद्धालयमुवेंति ) पुत्रकलत्रादिकों में आसक्तिरूप राग से उपार्जित ज्ञानावरणीय आदिक कर्मों का पापमय फल जैसे होता है और कर्मों को नष्ट कर जीव सिद्धावस्थापन्न हो सिद्धालय में जैसे पहुँचते है यह सब भी प्रभु ने अपनी देशना में स्पष्ट किया ॥ सू. ५६ ॥

'तमेव धम्मं दुविहं आइक्खइ' इत्यादि

प्रभु ने (तमेव धम्मं दुविहं आइक्खइ) इस धर्म को दो प्रकार से कहा है। ([1]अगारधम्मं अणगारधम्मं च) १ गृहस्थ का धर्म और दूसरा अनगार—मुनि का धर्म।

(१) 'अगार' नाम घर का है। परन्तु इस पद से यहाँ उनमें रहने वाले गृहस्थों का ग्रहण हुआ है, अथवा "अर्श आदिभ्योऽच्" इस सूत्र से अस्त्यर्थ में अच् प्रत्यय करने से भी उनमें रहने वाले गृहस्थो का ग्रहण हो जाता है।

र्जन करेला ज्ञानावरणीय आदिक कर्मोनां पापमय फल जेम थाय छे अने कर्मोनो नाश करी जीव सिद्ध—अवस्था प्राप्त करी सिद्धालय (मुक्ति स्थानमा) जेम पहोंचे छे ते बधुं पण प्रभुए पोतानी देशनामां स्पष्ट कर्युं. (सू. ५६)

"तमेव धम्मं दुविहं आइक्खइ" ईत्यादि.

प्रभुए (तमेव धम्मं दुविहं आइक्खइ) आ धर्म बे प्रकारनो कह्यो छे ([1]अगारधम्मं अणगारधम्मं च) १—गृहस्थना धर्म अने बीजा अनगार—मुनिना

(१) अगार एटले घर. परंतु आ पदथी अहीं तेमा रहेवावाळा गृहस्थो एवो अर्थ ग्रहण कर्यो छे, अथवा "अर्श आदिभ्योऽच्" आ सूत्रथी 'अस्ति' अर्थमा अच् प्रत्यय लगाडवाथी पण तेमां रहेवावाळा गृहस्थो—एवो अर्थ थाय छे.

**धम्मं अणगारधम्मं च। अणगारधम्मो ताव–इह खलु सव्वओ सव्वत्ताए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइयस्स सव्वाओ पाणाइवायाओ वेरमणं मुसावाय–अदिण्णादाण-मेहुण-परिग्गह-**

मनगारधर्ममेव व्याचष्टे–'**अणगारधम्मो ताव**' इति। अनगारधर्मस्तावत्–तावत्=प्रथमम् अनगारधर्म उच्यते–'**इह खलु सव्वओ सव्वत्ताए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइयस्स सव्वाओ पाणाइवायाओ वेरमणं**' इह खलु सर्वतः सर्वात्मना मुण्डो भूत्वाऽगारादनगारितां प्रव्रजितस्य सर्वस्मात्प्राणातिपाताद्विरमणम्–इह जगति खलु सर्वतः=द्रव्यतो भावतश्चेत्यर्थः, सर्वाऽऽत्मना=परमवैराग्येण मुण्डो भूत्वा–द्रव्यतो मुण्डो मस्तके लुञ्चितकेशः, भावतस्तु कषायाणामपनयनमिति मुण्डलक्षणधर्मयोगात्पुरुषो मुण्ड उच्यते, अत्र 'अर्श आदिभ्योऽच्' इत्यच्प्रत्ययः; तादृशो भूत्वेत्यर्थः; अगाराद्=गृहात्–गृहं

**(अणगारधम्मो ताव)** अनगार का धर्म वे ही जीव पालन करते है जो **(इह खलु सव्वओ सव्वत्ताए [2]मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइयस्स सव्वाओ पाणाइवायाओ वेरमणं मुसावाय–आदिण्णादाण-मेहुण–परिग्गह–राईभोयणवेरमणं)** यहां सर्व प्रकार से–द्रव्य एवं भावरूप से, सर्वात्मना–परमवैराग्य संपन्न होकर मुंडित हो जाते है। यह मुंडित अवस्था द्रव्य एवं भाव के भेद से दो प्रकार का है–केशों का लुंचन करना द्रव्यमुंडन है, एवं कषायों का त्याग करना भावमुंडन है, मुंडित होकर जो अपने गृह का परित्याग कर साधु की दीक्षा से दीक्षित हो जाता है। उसका नाम अनगार है। इस अनगार अवस्था में

(१) मुंड पद से मुंडित पुरुष का मत्वर्थीय अच्प्रत्यय करने से ग्रहण हुआ है।

धर्म. (अणगारधम्मो ताव) અનગારના ધર્મ તેજ જીવ પાલન કરે છે જે (इह खलु सव्वओ सव्वत्ताए [2]मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइयस्स सव्वाओ पाणाइवायाओ वेरमणं मुसावाय–अदिण्णादाण–मेहुण–परिग्गह–राईभोयण-वेरमणं) અહીં સર્વ પ્રકારથી–દ્રવ્ય તેમજ ભાવ રૂપથી સર્વ પ્રકારે પરમ-વૈરાગ્ય–સંપન્ન થઈ જાય છે. આ મુંડિત અવસ્થા દ્રવ્ય તેમજ ભાવ ના ભેદથી બે પ્રકારની છે–'કેશલુંચન કરવું' એ દ્રવ્યમુંડન છે, તેમજ કષાયોનો ત્યાગ કરવો' એ ભાવમુંડન છે. મુંડિત થઈ જે પોતાના ઘરનો ત્યાગ કરી સાધુની દીક્ષાથી દીક્ષિત થઈ જાય છે તેમનુ નામ અનગાર છે. આ અનગાર અવ-

(૧) मुंड શબ્દથી મુંડિત પુરુષનો મત્વર્થીય अच् પ્રત્યય લગાડવાથી ગ્રહણ કર્યો છે.

परित्यज्येत्यर्थ, अनगारितां=साधुत्वं प्रव्रजितस्य=प्रकर्षेण सम्यक्तया सर्वपरित्यागपूर्वकं स्वीकृतवतः, सर्वस्मात्=त्रिकरणत्रियोगतो जायमानात् अखिलात् प्राणातिपातात्-प्राणाः= स्पर्शेन्द्रियादयः सन्त्येषामिति प्राणाः-एकेन्द्रियादयो जीवास्तेषामतिपातो=वियोजनं-हिंसन-मित्यर्थस्तस्माद् विरमणं=निवर्त्तनम् ॥ १ ॥ '**मुसावाय-अदिण्णादाण-मेहुण-परिग्गह-राइभोयणाओ वेरमणं**' मृषावादा-ऽदत्ताऽऽदान-मैथुन-परिग्रह-रात्रिभोजनाद्विरमणम्-मृषावादः=असत्यभाषणं तस्माद् विरमणं=निवृत्तिः ॥ २ ॥ अदत्तादान-न दत्तमदत्तं=देव-गुरु-भूप-गाथापति-साधर्मिकैरननुज्ञातं, तस्यादानं=ग्रहणं तस्माद विरमणम्, ॥ ३ ॥ मैथुनं-मिथुनेन=स्त्रीपुंसाभ्यां निर्वृत्तं कर्म—कामक्रीडालक्षणं, तस्माद विरमणम् ॥ ४ ॥ परिग्रहः-परि=सर्वतो भावेन गृह्यते=जन्मजरामरणादिजनितैर्दुःखैर्वेष्ट्यत आत्मा अनेनेति,

कृत, कारित, अनुमोदना एवं मन, वचन और काय इस प्रकार त्रिकरण और त्रियोग से प्राणातिपातादिक पापों का सर्वथा त्याग कर दिया जाता है। प्राणातिपात का त्याग करना-इसीका नाम प्राणातिपातविरमण है। 'प्राण' शब्द से प्राणवाले एकेन्द्रियादिक जीवों का ग्रहण हुआ है। '**अतिपात**' शब्द का अर्थ वियोग करना है। एकेन्द्रियादिक प्राणियों की हिंसा से विरक्त-सर्वथा दूर-होना इसका नाम प्राणातिपातविरमण-अहिंसा-महाव्रत है। इसी तरह त्रियोग-त्रिकरण से मृषावाद से विरक्त होना इसका नाम मृषावादविरमण-सत्य-महाव्रत है। देव, गुरु, भूप, साधर्मिक एवं गाथापति द्वारा अदत्त का ग्रहण करना इसका नाम अदत्तादान है, उससे निवृत्त होना उसका नाम अदत्तादानविरमण महाव्रत है। तीन करण तीन योग से जो मैथुन से निवृत्त होना उसका नाम मैथुनविरमण महाव्रत है। जिसके ग्रहण से आत्मा, जन्म, जरा एवं मरण आदि जनित दुःखों से वेष्टित होती है उसका नाम परिग्रह है। धर्मोपकरण सिवाय अन्य सब धन-धान्यादिक को परिग्रह में परिगणित किया

સ્થામા કૃત, કારિત, અનુમોદના તેમજ મન, વચન અને કાય એ પ્રકારે ત્રિકરણ અને ત્રિયોગથી પ્રાણાતિપાત આદિક પાપોનો સર્વથા ત્યાગ કરાય છે. પ્રાણાતિપાતનો ત્યાગ કરવો એનુ જ નામ પ્રાણાતિપાત-વિરમણ છે. 'પ્રાણ' શબ્દથી પ્રાણવાળા એકેન્દ્રિયાદિક પ્રાણિઓની હિંસાથી વિરક્ત-સર્વથા દૂર થવું એનુ નામ પ્રાણાતિપાતવિરમણ-અહિંસામહાવ્રત છે. એવી જ રીતે ત્રિયોગત્રિકરણથી મૃષાવાદથી વિરક્ત થવું એનુ નામ મૃષાવાદવિરમણ-સત્ય મહાવ્રત છે દેવ, ગુરુ, ભૂપ, સાધર્મિક તેમજ ગાથાપતિ દ્વારા અદત્તનુ ગ્રહણ કરવું તેનું નામ અદત્તાદાન છે, તેથી નિવૃત્ત થવુ અદત્તાદાનવિરમણ મહા--વ્રત છે. ત્રણ કરણ ત્રણ યોગથી મૈથુનથી નિવૃત્ત રહેવું એનું નામ મૈથુન-વિરમણ મહાવ્રત છે જેના ગ્રહણથી આત્મા, જન્મ, જરા તેમજ મરણ આદિ દુઃખોથી ઘેરાઇ જાય છે તેનુ નામ પરિગ્રહ છે. ધર્મોપકરણ સિવાય અન્ય

**राइभोयण-वेरमणं। अयमाउसो! अणगारसामाइए धम्मे पण्णत्ते, एयस्स धम्मस्स सिक्खाए उवट्ठिए णिग्गंथे वा णिग्गंथी वा विहरमाणे आणाए आराहए भवति।**

अर्थात् परिगृह्यते=समूर्च्छं स्वीक्रियत इति परिग्रहः-धर्मोपकरणभिन्नं सर्वमित्यर्थस्तस्माद् विरमणम् ॥ ५ ॥ रात्रिभोजनं-रात्रौ भोजनं तस्माद् विरमणम् ॥ ६ ॥ '**अयमाउसो ? अणगारसामाइए धम्मे पण्णत्ते**' अयमायुष्मन् ? अनगारसामयिकः-अनगाराणां=साधूनां समये=सिद्धान्ते, यद्वा आचारे भवः, धर्मः प्रज्ञप्तः=कथितः। '**एयस्स धम्मस्स सिक्खाए उवट्ठिए**' एतस्य धर्मस्य शिक्षायाम्=आसेवने उपस्थितः=उद्युक्तः, '**णिग्गंथे वा**' निर्ग्रन्थः=साधुर्वा '**णिग्गंथी वा**' निर्ग्रन्थी वा उपस्थिता साध्वी वा-'**विहरमाणे**' विहरमाणः=विचरन् '**आणाए आराहए भवइ**' आज्ञाया=सर्वज्ञोपदेशस्य आराधको भवति। इत्थमनगारधर्ममुपदिश्य स्प्रत्यगारधर्ममुपदिशति, तदेवाह-'**अगारधम्मं**' इत्यादि।

गया है। क्यों कि प्राणियों को इनमें '**ममेदंभाव**' होता है। इस परिग्रह से विरक्त होना परिग्रहविरमण महाव्रत है। रात्रि में भोजन नहीं करना-इसका नाम रात्रिभोजनविरमण व्रत है। (**अयमाउसो! अणगारसामाइए धम्मे पण्णत्ते**) हे आयुष्मन्! सिद्धान्त में यह साधुओं का आचारजन्य धर्म प्रतिपादित किया गया है। (**एयस्स धम्मस्स सिक्खाए उवट्ठिए**)इस साधु के धर्म के आसेवन में उपस्थित (तत्पर) चाहे निर्ग्रन्थ-साधु हो, चाहे निर्ग्रन्थी-साध्वी हो, (**विहरमाणे**) जो इसे अपने आचरण में लाता है वह (**आणाए आराहए भवइ**) प्रभु सर्वज्ञ के आज्ञा का आराधक माना जाता है। इस प्रकार अनगार-धर्म की प्ररूपणा कर के प्रभुने 'गृहस्थ का क्या धर्म है?' इसकी प्ररूपणा इस प्रकार की

બધાં ધન ધાન્ય આદિકની, પરિગ્રહમાં ગણના થાય છે. કેમકે પ્રાણિઓને એમાં 'ममेदंभाव' થાય છે. એ પરિગ્રહથી વિરક્ત થવું એ પરિગ્રહ-વિરમણ મહાવ્રત છે. રાત્રિમાં ભોજન ન કરવું તેનું નામ રાત્રિભોજન વિરમણ વ્રત છે. (अयमाउसो! अणगारसामाइए धम्मे पण्णत्ते) હે આયુષ્યમાન્! સિદ્ધાંતમાં સાધુ-ઓના આચાર જન્ય આ ધર્મનું પ્રતિપાદન કરેલ છે. (एयस्स धम्मस्स सिक्खाए उवट्ठिए) સાધુના આ ધર્મને પાળવામાં ઉપસ્થિત-તત્પર, ચાહે તે નિર્ગ્રન્થ-સાધુ હોય કે ચાહે તે નિર્ગ્રન્થી-સાધ્વી હોય (विहरमाणे) જે આને આચરણમાં લાવે તે (आणाए आराहए भवइ) પ્રભુ સર્વજ્ઞની આજ્ઞાના આરાધક મનાય છે. આ પ્રકારે અનગાર ધર્મની પ્રરૂપણા કરીને પ્રભુએ 'ગૃહસ્થનો શું ધર્મ છે?' તેની

अगारधम्मं दुवालसविहं आइक्खइ, तं जहा-पंच अणुव्वयाइं १, तिण्णि गुणव्वयाइं २, चत्तारि सिक्खावयाइं ३। पंच अणुव्वयाइं, तं जहा-थूलाओ पाणाइवायाओ वेरमणं १,

'अगारधम्मं दुवालसविहं आइक्खइ' अगारधर्मं द्वादशविधमाख्याति, 'तं जहा' तद्यथा. 'पंच अणुव्वयाइं' पञ्चाऽणुव्रतानि 'तिण्णि गुणव्वयाइं' त्रीणि गुणव्रतानि 'चत्तारि सिक्खावयाइं' चत्वारि शिक्षाव्रतानि, शिक्षा=अभ्यासः-पुन पुनरभ्ययनं तत्प्रधानानि व्रतानि-शिक्षाव्रतानि। यद्यपि पुन· पुनरासेवनायोग्यानि शिक्षाव्रतानि पुरो वक्ष्यमाणानि चत्वार्येव, तथापि त्रयाणां गुणव्रतानां शिक्षाव्रतेष्वेवान्तर्भावात् सप्त शिक्षाव्रतानि इत्यप्युच्यते ३। स्वरूपख्यापनाय आह-'पंच अणुव्वयाइं' पञ्चाऽणुव्रतानि-'तं जहा' तद्यथा-'थूलाओ पाणाइवायाओ वेरमणं' स्थूलात्प्राणातिपाताद्विरमणम्-प्राणानां= प्राणिनामतिपातो=हिंसनं-तस्मात् स्थूलात् विरमणं=निवृत्ति., न तु सूक्ष्मात् ॥ १ ॥ 'थूलाओ

है-(अगारधम्मं दुवालसविहं आइक्खइ) प्रभुने कहा कि गृहस्थ धर्म १२ प्रकार का है, (तं जहा) उसके वे १२ प्रकार इस तरह से है-(पंच अणुव्वयाइं तिण्णि गुणव्वयाइं चत्तारि सिक्खावयाइ) ५ अणुव्रत, ३ गुणव्रत, एवं ४ शिक्षाव्रत। कहीं २ पर शिक्षाव्रत-सात भी कहे गये है सो उसका कारण यह है कि उनमें ३ गुणव्रतों को सम्मिलित कर लिया गया है। शिक्षाप्रधान व्रतों का नाम शिक्षाव्रत है। (पंच अणुव्वयाइं तं जहा) पांच अणुव्रत ये है-(थूलाओ पाणाइवायाओ वेरमणं) स्थूल प्राणातिपात से विरक्त होना सो अहिंसा अणुव्रत है। 'स्थूल' शब्द यहां यह बतलाता है कि सूक्ष्म से नहीं, किन्तु स्थूल प्राणा-

प्ररूपणा आ प्रकारे करी छे-(अगारधम्मं दुवालसविहं आइक्खइ) प्रभुए कह्यु के गृहस्थ धर्म १२ बार प्रकारना छे. (तंजहा) तेना ए १२ बार प्रकार आवी रीतना छे-(पंच अणुव्वयाइं तिण्णि गुणव्वयाइं चत्तारि सिक्खावयाइं) ५ अणुव्रत, ३ गुणव्रत, तेमज ४ शिक्षाव्रत. क्याक क्याक शिक्षाव्रत सात पण कहेवामा आव्या छे, तेनु कारण ए छे के तेमां त्रण गुणव्रतोने सम्मिलित करी लेवामा आव्या छे. शिक्षाप्रधान व्रतोनु नाम शिक्षाव्रत छे. (पंच अणुव्वयाइं तंजहा) पांच अणुव्रत आ छे-(थूलाओ पाणाइवायाओ वेरमणं) स्थूल प्राणातिपातथी विरक्त थवुं ते 'अहिंसा अणुव्रत' छे. 'स्थूल' शब्द अहीं ए बतावे छे के सूक्ष्मथी नहि पण स्थूल प्राणातिपातथी विरमण

**थूलाओ मुसावायाओ वेरमणं २, थूलाओ अदिण्णादाणाओ वेरमणं ३, सदारसंतोसे ४, इच्छापरिमाणे ५। तिण्णि गुणव्व-**

मुसावायाओ वेरमणं' स्थूलान्मृषावाद्विरमणम्=स्थूलासत्यवचनकथनान्निवृत्तिः। 'थूलाओ अदिण्णादाणाओ वेरमणं' स्थूलाददत्तादानाद्विरमणम्-अदत्तस्य आदानं=ग्रहण तस्माद्विरमण=निवृत्तिः ३। 'सदारसंतोसे' स्वदारसन्तोषः=परदारवेश्यादिवर्जनम् ॥४॥ 'इच्छापरिमाणे' इच्छापरिमाणः-इच्छाया'=धनाद्यभिलापरूपायाः परिमाणं=नियमनम्-इच्छापरिमाणम्-देशतः परिग्रहविरति', यद्वा-इच्छा=परिग्राह्यवस्तुविपया वाञ्छा तस्या' परिमाणम्=इयत्ता। इदमेतावदेव मया धार्यमुपार्जनीयं वेति नियमनमिच्छापरिमाणम् ॥५॥ 'तिण्णि गुणव्वयाइं'त्रीणि

तिपात से विरमण होना ही अहिंसा अणुव्रत है। (थूलाओ मुसावायाओ वेरमणं) स्थूल मृषावाद से विरक्त होना-स्थूल असत्य वचनों के कहने से दूर रहना-सो स्थूलमृषावाद-विरमण अणुव्रत है। (थूलाओ अदिण्णादाणाओ वेरमणं) स्थूल अदत्तादान से विरमण होना सो अचौर्य अणुव्रत है। (सदारसंतोसे) अपनी स्त्री में ही सन्तोष रखना-परदारा (परस्त्री) एवं वेश्या आदि का परित्याग कर देना-सो स्वदारसन्तोष अणुव्रत है। (इच्छापरिमाणे) धन एवं धान्यादिक की अभिलाषा रूप इच्छा का प्रमाण करना-एक देशसे परिग्रह का त्याग करना, अथवा परिग्राह्यवस्तुविषयक वाञ्छा का नाम इच्छा है, इसका परिमाण इस प्रकार करना कि मै अमुक वस्तु इतनी रखूंगा, इतनी कमाऊँगा, इससे अधिक नहीं। यह इच्छापरिमाण नामका अणुव्रत है (तिण्णि गुणव्वयाइं) गुणव्रत तीन है-ये गुणव्रत अणुव्रतों के

થવું એ જ 'અહિંસા અણુવ્રત' છે. (थूलाओ मुसावायाओ वेरमणं) સ્થૂલ-મૃષાવાદથી વિરક્ત થવું-સ્થૂલ અસત્ય વચનો કહેવાથી દૂર રહેવું તે 'સ્થૂલ-મૃષાવાદ-વિરમણ અણુવ્રત' છે. (थूलाओ अदिण्णादाणाओ वेरमणं) સ્થૂલ અદત્તાદાનથી વિરમણ થવું એ 'અચૌર્ય અણુવ્રત' છે. (सदारसंतोसे) પોતાની સ્ત્રીમાં જ સંતોષ રાખવો-પરદારા-પરસ્ત્રી તેમજ વેશ્યા આદિનો પરિત્યાગ કરી દેવો તે 'સ્વદાર-સંતોષ અણુવ્રત' છે. (इच्छापरिमाणे) ધન તેમજ ધાન્ય આદિકની અભિલાષા રૂપ ઈચ્છાનુ પ્રમાણ કરવું (હદ રાખવી)-દેશ થકી પરિગ્રહનો ત્યાગ કરવો. અથવા પરિગ્રહ કરવાની વસ્તુ બાબતની જે વાંછા તેનું નામ ઈચ્છા છે, તેનું પરિમાણ (માપ-મર્યાદા) આ પ્રકારે કરવું કે હુ અમુક વસ્તુ આટલી રાખીશ, આટલી કમાઈશ, આથી વધારે નહિ. આ ઈચ્છાપરિમાણ નામનુ અણુવ્રત છે. (तिण्णि गुणव्वयाइं) ગુણવ્રત ત્રણ છે. આ ગુણવ્રત અણુવ્રતોના ઉપકારક

याइं, तं जहा—अणत्थदंडवेरमणं ६, दिसिव्वयं ७, उवभोग-

गुणव्रतानि, 'तं जहा' तद्यथा 'अणत्थदंडवेरमणं' अनर्थदण्डविरमणम्—अर्थः=प्रयोजनं गृहस्थस्य क्षेत्र-वास्तु-धन-शरीरपरिपालनीयादिविषय, तदर्थो दण्ड =आरम्भ प्राण्युपमर्दोऽर्थदण्डः। दण्डो निग्रहो यातना विनाश इति पर्याया। दण्ड=निष्प्रयोजन हिंसादिकरणमित्यर्थः; तस्माद्विरमण=निवर्तनम् १, 'दिसिव्वयं' दिग्व्रतम्—दिशः पूर्वदक्षिणादय ऊर्ध्वमधश्चेति दशविधा, तत्र दिशां सम्बन्धि व्रत दिग्व्रतम्—एतावत्सु पूर्वादिदिग्विभागेषु मया गमनागमनं विधेयं न

उपकारक है, (तं जहा) वे तीन प्रकार ये है-(अणत्थदंडवेरमणं दिसिव्वयं उवभोगपरिभोगपरिमाणं) अनर्थदंडविरमण व्रत, दिग्व्रत, उपभोग—परिभोग—परिमाणव्रत। क्षेत्र, वास्तु, धन, धान्य, एवं शरीर के परिपालन आदि के निमित्त जो आरंभ किया जाता है, इसका नाम अर्थ है। इस आरंभ में प्राणिवध अवश्यभावी है। अतः इसमें जो दंड—प्राणियों का विनाश होता है उससे पाप का बंध जीव को होता है। अतः यह वध अर्थदंड है। अर्थात् प्रयोजन को लेकर जो प्राण्युपमर्दनरूप दंड किया जाता है उसका नाम अर्थदंड है। दण्ड, निग्रह, यातना एवं विनाश ये सब पर्यायवाची शब्द है। इससे जो विपरीत है उसका नाम अर्थदंड है। अर्थात् निष्प्रयोजन हिंसादिक पाप करना सो अनर्थदंड है। इससे विरक्त होना सो 'अनर्थदंडविरमण' है। दश दिशाओं मे आने—जाने का प्रमाण करना सो 'दिग्व्रत' है। चारदिशा और विदिशा तथा ऊर्ध्व एवं अध. इस प्रकार ये १० दिशाएँ है। मै अमुक दिशा की ओर इतनी दूर तक जाऊँगा और आऊँगा, इससे आगे बाहिर

છે; (तंजहा) તે ત્રણ પ્રકાર આ છે (अणत्थ-दंड-वेरमणं दिसिव्वयं उवभोगपरिभोगपरिमाणं) અનર્થદંડ–વિરમણ વ્રત, દિગ્વ્રત, ઉપભોગપરિભોગપરિમાણ વ્રત. ક્ષેત્ર, વાસ્તુ, ધન, ધાન્ય, તેમજ શરીરના પરિપાલન આદિના નિમિત્તે જે આરંભ કરવામા આવે છે તેનું નામ અર્થ છે. આ આરંભમાં પ્રાણિવધ અવશ્યંભાવી છે. આથી એમા જે દંડ–પ્રાણિઓનો વિનાશ થાય છે તેનાથી પાપનો બંધ જીવોને થાય છે. તેથી આ વધ અર્થદંડ છે, અર્થાત પ્રયોજનને લઇને જે પ્રાણિ–ઉપમર્દનરૂપ દંડ કરાય છે તેનું નામ અર્થદંડ છે. દંડ, નિગ્રહ, યાતના તેમજ વિનાશ એ બધા પર્યાયવાચી શબ્દો છે. તેનાથી જે વિપરીત (ઉલટા) છે તેનું નામ અનર્થદંડ છે. અર્થાત્ નિષ્પ્રયોજન હિંસા આદિ પાપ કરવાં તે અનર્થદંડ છે. તેનાથી વિરક્ત થવું તે અનર્થદંડ-વિરમણ છે. દશ દિશાઓમા આવવા–જવાનુ પ્રમાણ રાખવું તે દિગ્વ્રત છે. ચાર દિશા અને વિદિશા તથા ઉપર અને નીચે એ પ્રકારે આ દશ ૧૦ દિશાઓ છે. હું અમુક દિશા તરફ આટલે દૂર સુધી જઇશ કે આવીશ

**परिभोगपरिमाणं ८। चत्तारि सिक्खावयाइं, तं जहा—सामाइयं ९, देसावयासियं १०, पोसहोववासे ११, अतिहिसंविभागे,**

परतस्तदधिके इत्येवम्भूतं दिग्व्रतम् ॥ ७ ॥ '**उवभोग-परिभोग-परिमाणं**' उपभोग-परिभोग-परिमाणम्—उपभोगः=सकृद्भोगोऽशनपानानुलेपनादीनाम्, परिभोगस्तु पुनः पुनर्भोग आसनशयनवसनादीनाम्, तयोः परिमाणम् ॥ ८ ॥ '**सामाइयं**' सामायिकम्—समानां=ज्ञानदर्शनचारित्राणामायो=लाभः समायः—तत्र भवं सामायिकम् ॥ ९ ॥ '**देसावयासियं**' देशाऽवकाशिकम्—देशे=दिग्व्रतगृहीतदिक्परिमाणस्य विभागे अवकाशो=गमनाद्यवस्थानं

नहीं, इस प्रकार १० दिशाओं में आने-जाने की मर्यादा करना सो '**दिग्व्रत**' है। एक वार जो भोगने में आता है उसका नाम उपभोग है, जैसे—अशन, पान एवं अनुलेपन आदि। जो वार २ भोगने में आते हैं ऐसे आसन, शयन, वसन आदि को परिभोग कहा गया है। इन दोनों का प्रमाण करना सो '**उपभोग-परिभोग-परिमाण**' है। (**चत्तारि सिक्खावयाइं**) शिक्षाव्रत चार हैं, (**तं जहा**) वे ये है—(**सामाइयं देसावयासियं पोसहोपवासे अतिहिसंविभागे**) सामायिक, देशावकाशिक, पौषधोपवास एवं अतिथि-संविभाग। दर्शन, ज्ञान एवं चारित्र का नाम सम है। इस सम के आय (लाभ) का नाम समाय है। इसमें जो समतापरिणाम होता है उसका नाम सामायिक है। '**दिग्व्रत**' में जो मर्यादारूप से आने-जाने के लिये जीवनपर्यन्त दिशारूपी क्षेत्र रख लिया था, उसीके भीतर २ प्रतिदिन संकोच करना सो '**देशावकाशिक**' है, जैसे—मै आज इस दिशा के

એનાથી આગળ-બહાર નહિ. આ પ્રકારે ૧૦ દિશાઓમાં આવવા-જવાની મર્યાદા કરવી તે દિગ્વ્રત છે. એક વાર જે ભોગવવામાં આવે છે તેનુ નામ ઉપભોગ છે, જેમકે-અશન, પાન તેમજ અનુલેપન આદિ. જે વારંવાર ભોગ-વવામાં આવે છે એવાં આસન, શયન, વસન આદિને પરિભોગ કહેવાય છે. આ બન્નેનું પ્રમાણુ રાખવું તે 'ઉપભોગ-પરિભોગ-પરિમાણુ' છે. (चत्तारि सिक्खावयाइं) શિક્ષાવ્રત ચાર છે. (त जहा) તે આ છે-(सामाइयं देसावयासियं पोसहोपवासे अतिहिसंविभागे) સામાયિક ૧, દેશાવકાશિક ૨, પોષધોપવાસ ૩, તેમજ અતિથિસંવિભાગ ૪. દર્શન, જ્ઞાન તેમજ ચારિત્રનું નામ સમ છે. આ સમના આય (લાભ)નુ નામ સમાય છે. એમા જે સમતા-પરિણામ થાય છે તેનું નામ સામાયિક છે ૧. દિગ્વ્રતમાં જે મર્યાદારૂપથી આવવા-જવાને માટે જીવનપર્યંત દિશારૂપી ક્ષેત્ર રાખ્યું હતું તેમાંજ પ્રતિદિવસ ન્યૂનતા કરવી તે દેશાવકાશિક છે. જેમકે હુ આજ આ દિશામાં આ સ્થાન સુધી

अपच्छिमा–मारणंतिया–संलेहणा–झूसणा–राहणा १२। अय-

तेन निर्वृत्तं देशावकाशिकम्–दिग्व्रतगृहीतपरिमाणस्य प्रतिदिन संक्षेपकरणम् ॥ १० ॥ '**पोसहोपवासे**' पोषधोपवास'–पोषणं पोषः=पुष्टिरित्यर्थस्तं धत्ते=गृह्णातीति पोषधः, स चासावुपवासश्चेति पोषधोपवासः, एतत्तु अस्य व्युत्पत्तिमात्रम्, प्रवृत्तिनिमित्तं तु–आहारादि-चतुष्टयपरित्याग एवेति बोध्यम्, अष्टमीचतुर्दश्यमावास्यापौर्णमासीषु अनुष्ठेयो व्रतविशेष'। तदुक्तम्—

'आहार–तनुसत्कारा–ऽब्रह्म–सावद्य–कर्मणाम्।
त्यागः पूर्वचतुष्टय्यां, तद्विदुः पोषधव्रतम् ॥ ११ ॥ इति।

'**अतिहिसंविभागे**' अतिथि-विभागः–अतिथि'=साधुस्तस्मै सविभागः=स्वात्म-कल्याणभावनया समर्पणम् '**अपच्छिमा–मारणंतिया–संलेहणा–झूसणा–राहणा**' अपश्चिम–मारणान्तिक–संलेखना – जूषणा–ऽऽराधना=अपश्चिमा–पश्चिमैवाऽमङ्गलपरिहारार्थ-मपश्चिमेत्युच्यते, मरणं=प्राणत्यागलक्षणम्, तदेवान्तो मरणान्त', तत्र भवा मारणान्तिकी, संलिख्यते=कृशीक्रियतेऽनया शरीरकषायादि–इति संलेखना=तपोविशेषलक्षणा, एतत्पदत्रयस्य

---

इस स्थान तक जाऊँगा, इस गली तक जाऊँगा, आगे नहीं। इत्यादि। चारों प्रकार के आहार का परित्याग करना इसका नाम '**पोषधोपवास**' है। यह व्रत प्रत्येक महिने की प्रत्येक अष्टमी, चतुर्दशी, अमावस्या एवं पूर्णमासी के दिन किया जाता है। कहा भी है–पर्वचतुष्टय में–चारपर्वों में आहारका परित्याग, शारीरिक संस्कार का परित्याग, कुशील का परित्याग आदि सावद्य कर्मोंका जो त्याग है सो '**पोषधव्रत**' है। अतिथि नाम साधु का है। साधु के लिये जो सविभाग–अपनी आत्मा के कल्याण की भावना से आहार पानी आदि समर्पण करना–सो '**अतिथिसंविभाग**' है। (**अपच्छिमा–मारणंतिया–संले-हणा–झूसणा–राहणा**) संलेखना यद्यपि पश्चिम है–अर्थात्–अन्त में धारण की जाती है,

---

જઈશ, આ ગલી સુધી જઈશ. આગળ નહિ જાઉં! ઇત્યાદિ. ચારેય પ્રકારના આહારનો પરિત્યાગ કરવો તેનુ નામ પોષધોપવાસ છે. આ વ્રત પ્રત્યેક માસની પ્રત્યેક અષ્ટમી, ચતુર્દશી, અમાવાસ્યા તેમજ પૂર્ણિમાને દિવસ કરાય છે ૩. કહ્યું પણ છે–પર્વચતુષ્ટયમા–ચાર પર્વમા આહારનો પરિત્યાગ, શારીરિક સંસ્કારનો પરિત્યાગ, કુશીલનો પરિત્યાગ આદિ સાવદ્ય કર્મોનો જે ત્યાગ છે તે પોષધવ્રત છે. અતિથિ નામ સાધુનું છે. સાધુ માટે જે સંવિભાગ–પોતાના આત્માના કલ્યાણની ભાવનાથી આહાર પાણી આદિ સમર્પણ કરવું તે અતિથિસંવિ-ભાગ છે ૪. (अपच्छिमा–मारणंतिया–संलेहणा–झूसणा–राहणा) સંલેખના જો કે પશ્ચિમ હોય છે–અંતમાં ધારણ કરાય છે, તો પણ તેને અપશ્ચિમ કહેવાય

**माउसो! अगारसामाइए धम्मे पण्णत्ते। एयस्स धम्मस्स सिक्खाए उवट्ठिए समणोवासए वा समणोवासिया वा विहरमाणे आणाए आराहए हवइ ॥ सू० ५७ ॥**

---

कर्मधारये—अपश्चिममारणान्तिकसंलेखना, तस्याः जूषणा=सेवना—मरणकाले संलेखनानाम्ना तपसा शरीरस्य कषायादीनाञ्च कृशीकरणं, तस्या आराधना=निरवच्छिन्नतया संपादनम् ॥ १२ ॥ '**अयमाउसो**' अयमायुष्मन्! '**अगारसामाइए धम्मे पण्णत्ते**' अगारसामयिको धर्मः प्रज्ञप्तः '**एयस्स धम्मस्स सिक्खाए उवट्ठिए समणोवासए वा समणो-**

---

फिर भी यहां जो उसे अपश्चिम कहा है वह अमंगलपरिहार के निमित्त से जानना चाहिये। क्यों कि "अन्तक्रियाधिकरणं तपःफलं सकलदर्शिनः स्तुवते" तप का फल संलेखनापूर्वक प्राणों का विसर्जन करना प्रभुने बतलाया है, अतः यदि यह अन्तिम समय आचरित नहीं होती है तो जीवनभर की गई व्रताराधना तपस्या आदि एक प्रकार से निष्फल ही समझना चाहिये। अतः इस अपेक्षा से यह अपश्चिम—सर्वोत्कृष्ट कही गई है। यह संलेखना (**मारणान्तिकी**) मरण के समय धारण की जाती है। काय और कषाय आदि जिसके द्वारा अथवा जिसमें कृश किये जाते है उसका नाम संलेखना है। यह संलेखना भी एक तप—विशेष है। इसे प्रेम से धारण करना चाहिये इस अर्थ को द्योतित करने के लिये ही "**जूषणा**" यह पद दिया गया है। (**अयमाउसो!**) इस प्रकार हे आयुष्मन्! यह (**अगारसामाइए धम्मे पण्णत्ते**) गृहस्थ का धर्म सिद्धान्त में कहा गया है। (**एयस्स धम्मस्स सिक्खाए उवट्ठिए समणोवासए वा समणोवासिया वा विहरमाणे आणाए**

---

છે. તે અમંગલ પરિહારનું નિમિત્ત જાણવું જોઈએ. કેમકે "अन्तक्रियाधिकरणं तपःफलं सकलदर्शिनः स्तुवते" તપનું ફલ સંલેખના—પૂર્વક પ્રાણોનું વિસર્જન કરવું. એમ પ્રભુએ બતાવ્યું છે. આથી જો આ અંતિમ સમયે આચરવામાં નથી આવતી તો જીવનભર કરેલી વ્રત—આરાધના તપસ્યા આદિ એક પ્રકારે નિષ્ફલ જ માનવી જોઈએ. આમ આની અપેક્ષાએ આ અપશ્ચિમ—સર્વોત્કૃષ્ટ કહેલી છે. આ સંલેખના (मारणान्तिकी) મરણના સમયે ધારણ કરાય છે. કાય અને કષાય આદિ જેના દ્વારા અથવા જેમાં કૃશ કરાય છે તેનું નામ સંલેખના છે. આ સંલેખના પણ એક તપવિશેષ છે. તેને પ્રેમથી ધારણ કરવી જોઈએ. આ અર્થને દ્યોતિત (પ્રકાશિત) કરવા માટે જ "जूषणा" એ પદ આપેલું છે. (अयमाउसो) આ પ્રકારે હે આયુષ્મન્! આ (अगारसामा-

**तए णं सा महतिमहालिया मणूसपरिसा समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं सोच्चा णिसम्म हट्ठ-तुट्ठ-**

**वासिया वा** ' एतस्य धर्मस्य शिक्षायाम् उपस्थितः श्रमणोपासको वा श्रमणोपासिका वा, **'विहरमाणे'** विहरन् **'आणाए आराहए भवइ'** आज्ञाया आराधको भवति। अगारधर्मस्य विस्तरतो व्याख्या उपासकदशाङ्गसूत्रस्यागारधर्मसंजीवन्याख्यायां व्याख्यायां प्रथमाऽध्ययनेऽस्माभिः कृता ॥ सू० ५७ ॥

टीका—' **तए णं** ' इत्यादि। ' **तए णं** ' ततः खलु ' **सा महतिमहालिया** ' सा महातिमहती=अतिविशाला–' **मसणूपरिसा** ' मनुष्यपरिषद् ' **समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए** ' श्रमणस्य भगवतो महावीरस्याऽन्तिके=समीपे ' **धम्मं सोच्चा**

**आराहए हवइ** ) इस धर्म की शिक्षा में उपस्थित चाहे श्रमण का उपासक–गृहस्थ हो, चाहे श्रमण की उपासिका–श्राविका हो, कोई भी क्यों न हो, जो भी प्राणी इस धर्म की छत्रच्छाया में अपने आपको विसर्जित कर देता है, अर्थात्–इन व्रतों की आराधना करता है वह तीर्थंकर प्रभु की आज्ञा का आराधक माना गया है। अगारधर्म की विस्तृतरूप से व्याख्या उपासकदशांग सूत्र के ऊपर विरचित अगारधर्मसजीवनीनामकी टीका में प्रथम अध्ययन में की गई है। अतः विशेषार्थी विषय को वहां से विस्ताररूप में देख ले ॥ सू० ५७ ॥

**'तए णं सा महतिमहालिया'** इत्यादि।

(तए णं) तदन्तर (**सा महतिमहालिया**) वह अतिविशाल ( **मणूसपरिसा** ) मनुष्यों की सभा (**समणस्स**) श्रमण ( **भगवओ** ) भगवान ( **महावीरस्स** ) महावीर के

इए धम्मे पण्णत्ते) ગૃહસ્થના ધર્મ સિદ્ધાંતમાં કહેલા છે. ( एयस्स धम्मस्स सिक्खाए उवट्ठिए समणोवासए वा समणोवासिया वा विहरमाणे आणाए आराहए हवइ) આ ધર્મની શિક્ષામા ઉપસ્થિત, ચાહે શ્રમણના ઉપાસક–ગૃહસ્થ હોય, ચાહે શ્રમણની ઉપાસિકા–શ્રાવિકા હોય, જે કોઇ પણ પ્રાણી આ ધર્મની છત્ર-છાયામા પોતાની જાતનું વિસર્જન કરી દે છે–આ વ્રતોની આરાધના કરે છે, તે તીર્થંકર પ્રભુની આજ્ઞાના આરાધક મનાય છે. અગાર-ધર્મની વિસ્તૃતરૂપથી વ્યાખ્યા ઉપાસકદશાંગસૂત્રના ઉપર બનાવેલી અગારધર્મ-સંજીવની નામની ટીકામાં પ્રથમ અધ્યયનમાં કરવામાં આવેલી છે, માટે વિશેષ જિજ્ઞાસુઓએ આ વિષયને ત્યાંથી વિસ્તારરૂપે જોઈ લેવો. (સૂ૦ ૫૭)

'तए णं सा महतिमहालिया' ઇત્યાદિ.

(तए णं) ત્યાર પછી (सा महतिमहालिया) તે અતિવિશાલ (मणूस-

**जाव–हियया उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेइ, करित्ता वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता अत्थेगइया मुंडे भवित्ता अगाराओ अण-**

**णिसम्म** ' धर्म श्रुत्वा=आकर्ण्य, निगम्य=हृदि धृत्वा, '**हट्ठ-तुट्ठ–जाव–हियया**' हृष्ट–तुष्ट-यावद्–हृदया '**उट्ठाए उट्ठेइ**' उत्थया=उत्थानशक्त्या उत्तिष्ठति '**उट्ठित्ता**' उत्थाय, '**समणस्स भगवओ महावीरस्स**' श्रमणस्य भगवतो महावीरस्य '**तिक्खुत्तो**' त्रिकृत्वः, '**आयाहिणपयाहिणं करेइ**' आदक्षिणप्रदक्षिणं करोति, '**करित्ता**' कृत्वा, '**वंदइ णमंसइ**' वन्दते नमस्यति, '**वंदित्ता णमंसित्ता**' वन्दित्वा नमस्यित्वा, तत्र–'**अत्थेगइया**' सन्त्येकके=केचित् '**मुंडे भवित्ता**' मुण्डा भूत्वा '**अगाराओ**' अगाराद्=गृहात्-गृहं परित्यज्येत्यर्थः, '**अणगारियं**' अनगारितां=साधुतां प्रव्रजिता'=प्राप्ता', '**अत्थेगइया**'

(**अंतिए**) समीप (**धम्मं**) धर्म का व्याख्यान (**सोच्चा**) सुनकर, एवं अच्छी तरह उसे (**णिसम्म**) हृदयगम कर (**हट्ठ–तुट्ठ–जाव–हियया**) बहुत ही अधिक हर्षित एवं संतुष्ट-चित्त हुई, (**उट्ठाए उट्ठेइ**) पश्चात् अपने २ आसन से उठी, (**उट्ठित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेइ करित्ता वंदइ णमंसइ**) उठ कर फिर उसने श्रमण भगवान् महावीर को तीनवार आदक्षिणप्रदक्षिणपूर्वक वन्दन–नमस्कार किया, (**वंदित्ता णमंसित्ता अत्थेगइया मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइया**) वंदना–नमस्कार कर के कितनेक मनुष्योंने मुडित होकर, अपने २ घर को छोडकर उनके पास अनगार बने, अर्थात् दीक्षा धारण की। (**अत्थेगइया पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं दुवालसविहं गिहि-**

परिसा) મનુષ્યોની સભા (समणस्स) શ્રમણ (भगवओ) ભગવાન (महावीरस्स) મહાવીરના (अंतिए) સમીપે (धम्मं) શ્રુતચારિત્રરૂપ ધર્મની દેશના (सोच्चा) સાભળીને તેમજ સારી રીતે તેને (णिसम्म) હૃદયંગમ કરીને (हट्ठ–तुट्ठ–जाव-हियया) બહુજ હર્ષિત તેમજ સંતોષ પામી, (उट्ठाए उट्ठेइ) પછી પોતપોતાના આસનેથી ઉઠી, (उट्ठित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेइ, करित्ता वंदइ णमंसइ) ઉઠીને, પછી તેમણે શ્રમણ ભગવાન મહાવીરને ત્રણવાર આદક્ષિણ–પ્રદક્ષિણ–પૂર્વક વંદન નમસ્કાર કર્યા, (वंदित्ता णमंसित्ता अत्थेगइया मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइया) વંદના–નમસ્કાર કરીને કેટલાક મનુષ્યોએ મુંડિત થઇને પોતપોતાનાં ઘર છોડીને તેમના પાસે અનગાર થયા, અર્થાત્ દીક્ષા લીધી. (अत्थेगइया पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं दुवाल-

गारियं पव्वइया, अत्थेगइया पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं दुवालसविहं गिहिधम्मं पडिवण्णा ॥ सू० ५८ ॥

मूलम्—अवसेसा णं परिसा समणं भगवं महावीरं वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी–सुअक्खाए ते

---

सन्त्येकके '**पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं दुवालसविहं गिहिधम्मं पडिवण्णा**' पञ्चाणुव्रतिकं सप्तशिक्षाव्रतिकं द्वादशविधं गृहिधर्मं प्रतिपन्नाः ॥ सू०५८ ॥

टीका—'**अवसेसा णं परिसा**' इत्यादि । '**अवसेसा णं परिसा समणं भगवं महावीरं वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी**' अवशेषा=अवशिष्टा खलु परिषत् श्रमणं भगवन्तं महावीरं वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा नमस्यित्वा एवमवादीत्–'**सुअक्खाए ते भंते ! णिग्गंथे पावयणे**' स्वाख्यातं=सुष्ठु कथितं सामान्यतस्त्वया भदन्त ! निर्ग्रन्थं प्रवचनम्, '**एवं सुप्पण्णत्ते**' एवं सुप्रज्ञप्तम्–विशेषकथनात्, '**सुभासिए**'

---

**धम्मं पडिवण्णा**) कितनेकों ने पाँच अणुव्रत, सात शिक्षाव्रत–इस तरह १२ प्रकार का गृहस्थधर्म स्वीकार किया ॥ सू. ५८ ॥

'**अवसेसा णं परिसा**' इत्यादि ।

(**अवसेसा णं परिसा**) अवशिष्ट परिषत्ने (**समणं भगवं महावीरं**) श्रमण भगवान् महावीर को (**वंदइ णमंसइ**) वन्दना एवं नमस्कार किया, (**वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी**) वदना नमस्कार करने के बाद फिर उन्होंने इस प्रकार कहा-(**सुअक्खाए ते भंते! णिग्गथे पावयणे**) हे भदन्त ! आपने निर्ग्रन्थ प्रवचन बहुत अच्छा कहा, (**एवं सुप्पणत्ते**) और आपने इसका बहुत अच्छी तरह से प्ररूपण किया, (**सुभासिए**) आपने खूब

---

सविहं गिहिधम्मं पडिवण्णा) કેટલાકે પંચ અણુવ્રત સાત શિક્ષાવ્રત એમ ૧૨ પ્રકારનો ગૃહસ્થ ધર્મ સ્વીકાર કર્યો. (સૂ. ૫૮)

'अवसेसा णं परिसा' ઈત્યાદિ.

(अवसेसा णं परिसा) બાકીની પરિષદે (समणं भगवं महावीरं) શ્રમણ ભગવાન મહાવીરને (वंदइ णमंसइ) વંદના તેમજ નમસ્કાર કર્યા, (वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी) વંદના નમસ્કાર કર્યા પછી તેઓએ આ પ્રમાણે કહ્યું-(सुअक्खाए ते भंते ! णिग्गंथे पावयणे) હે ભદન્ત ! આપે નિર્ગ્રન્થ પ્રવચન બહુ સારૂં કહ્યું, (एवं सुप्पण्णत्ते) અને આપે તેનું બહુ સારી રીતે પ્રરૂપણ કર્યું. (सुभासिए)

भंते ! णिग्गंथे पावयणे, एवं सुप्पण्णत्ते, सुभासिए, सुविणीए, सुभाविए। अणुत्तरे ते भंते ! निग्गंथे पावयणे। धम्मं णं आइक्खमाणा तुब्भे उवसमं आइक्खह, उवसमं आइक्खमाणा विवेगं आइक्खह, विवेगं आइक्खमाणा वेरमणं आइक्खह, वेर-

---

सुभाषितम्—भावव्यञ्जनात्, **'सुविणीए'** सुविनीतम्—शिष्येषु सुष्ठु विनियोजितत्वात्, **'सुभाविए'** सुभावितम्=सुष्ठु भावितम्—तत्त्वकथनात्, **'अणुत्तरे'** अनुत्तरं—नास्त्युत्तरं यस्मात् तद्—अनुत्तरं—सर्वश्रेष्ठं, तव भदन्त निर्ग्रन्थं प्रवचनम्। **'धम्मं णं आइक्खमाणा तुब्भे उवसमं आइक्खह'** धर्मं खल्वाचक्षाणा यूयमुपशमम्=क्रोधादिनिरोधम् आख्याथ=कथयथ, **'उवसमं आइक्खमाणा विवेगं आइक्खह'** उपशममाचक्षाणा विवेकमाख्याथ, क्रोधादिनिरोधं कथयन्तो यूयं विवेकं=हेयोपादेयविवेचनं कथयथ, **'विवेगं आइक्खमाणा वेरमणं आइक्खह'**—विवेकमाचक्षाणा विरमणमाख्याथ, विरमणम्=प्राणातिपातादिनिवर्त-

---

सुन्दर रूप से पदार्थों के स्वरूप को प्रकट किया, **(सुविणीए)** आपने शिष्यों को खूब समझाया, **(सुभाविए)** जीवादि सभी तत्त्वो को आपने अच्छी तरह से समझाया। **(अणुत्तरे ते भंते ! णिग्गंथे पावयणे)** हे भदन्त ! आपका यह निर्ग्रन्थ प्रवचन सर्वोत्कृष्ट है। हे भदन्त ! **(धम्मं णं आइक्खमाणा तुब्भे उवसमं आइक्खह)** धर्मका उपदेश करते समय आप उपशम भाव क्रोधादिनिरोध का उपदेश करते है, **(उवसमं आइक्खमाणा विवेगं आइक्खह)** क्रोधादिक के निरोध का उपदेश करते समय हेयोपादेयरूप विवेक का उपदेश देते है, **(विवेगं आइक्खमाणा वेरमणं आइक्खह)** विवेक का उपदेश करते समय प्राणातिपातादिक से विरक्त होने का भी उपदेश करते है, **(वेरमणं आइक्खमाणा अकरणं पावाणं कम्माणं आइ-**

---

આપે ખૂબ સુંદર રૂપથી પદાર્થોના સ્વરૂપને પ્રકટ કર્યાં. (सुविणीए) આપે શિષ્યોને ખૂબ સમજાવ્યા. (सुभाविए) જીવાદિ બધાં તત્વોને સારી રીતે સમજાવ્યાં. (अणुत्तरे ते भंते ! णिग्गंथे पावयणे) હે ભદન્ત ! આપનું આ નિર્ગ્રન્થ પ્રવચન સર્વોત્કૃષ્ટ છે. હે ભદન્ત ! (धम्मं णं आइक्खमाणा तुब्भे उवसमं आइक्खह) ધર્મનો ઉપદેશ કરતી વખતે આપે ઉપશમભાવ—ક્રોધાદિનિરોધનો ઉપદેશ કર્યો છે. (उवसमं आइक्खमाणा विवेगं आइक्खह) ક્રોધાદિકના નિરોધનો ઉપદેશ કરતી વખતે હેય—ઉપાદેય રૂપ વિવેકનો ઉપદેશ કર્યો છે. (विवेगं आइक्खमाणा वेरमणं आइक्खह) વિવેકનો ઉપદેશ કરતી વખતે પ્રાણાતિપાતાદિકથી

**मणं आइक्खमाणा अकरणं पावाणं कम्माणं आइक्खह। णत्थि णं अण्णे केइ समणे वा माहणे वा जे एरिसं धम्ममाइक्खि-त्तए, किंमंग! एत्तो उत्तरतरं?, एवं वदित्ता जामेव दिसं पाउ-ब्भूया तामेव दिसं पडिगया ॥ सू०५९ ॥**

---

नम्, '**वेरमणं आइक्खमाणा अकरणं पावाणं कम्माणं आइक्खह**' विरमणमाच-क्षाणा अकरण पापानां कर्मणामाख्याथ=पापरूपाणां कर्मणामकरणम्=अनाचरणं कथयथ, '**णत्थि णं अण्णे केइ समणे वा माहणे वा जे एरिसं धम्ममाइक्खित्तए**' नास्ति खल्वन्य कोऽपि श्रमणो वा ब्राह्मणो वा य ईदृशं धर्ममाख्यायात्, '**किंमंग पुण एत्तो उत्तरतरं**' किमङ्ग! पुनरेतस्मात् उत्तरतरम्—अस्माद्धर्मोपदेशादुत्कृष्ट कथयिष्यतीति का सम्भावना! न कापीत्यर्थः, '**एवं वदित्ता जामेव दिसं पाउब्भूया तामेव दिसं पडि-गया**' एवम् उदित्वा यस्या एव दिशः प्रादुर्भूतास्तामेव दिशं प्रतिगताः ॥ सू०५९ ॥

---

क्खह) प्राणातिपातादिक के विरमण का उपदेश देते हुए आप पापरूप कर्मों को नहीं करने का उपदेश भी देते है। अत (**णत्थि णं अण्णे केइ समणे वा माहणे वा जे एरिसं धम्ममाइ-क्खित्तए**) इस संसार में हे नाथ! ऐसा और कोई दूसरा श्रमण वा ब्राह्मण उपदेष्टा नहीं है जो इस प्रकार के धर्म का उपदेश दे सके, (**किंमंग! पुण एत्तो उत्तरतरं**) फिर इससे उत्कृष्ट धर्म का उपदेश कौन दे सकता है? अर्थात् कोई नहीं। (**एवं वदित्ता जामेव दिसिं पाउब्भूया तामेव दिसं पडिगया**) इस प्रकार कह कर वे सब जिस दिशा से आये थे उसी दिशा की ओर चले गये ॥ सू. ५९ ॥

---

વિરક્ત થવાનો ઉપદેશ કર્યો છે (वेरमणं आइक्खमाणा अकरणं पावाणं कम्माणं आइक्खह) પ્રાણાતિપાતાદિકના વિરમણનો ઉપદેશ દેતી વખતે આપે પાપરૂપ કર્મો ન કરવાનો પણ ઉપદેશ કર્યો છે. માટે (णत्थि णं अण्णे केइ समणे वा माहणे वा जे एरिसं धम्ममाइक्खित्तए) આ સંસારમા, હે નાથ! એવો બીજો કોઈ શ્રમણ કે બ્રાહ્મણ ઉપદેષ્ટા નથી કે જે આ પ્રકારના ધર્મનો ઉપદેશ આપી શકે. (किंमंग! पुण एत्तो उत्तरतरं) તો પછી આનાથી ઉત્કૃષ્ટ ધર્મનો ઉપ-દેશ કોણ આપી શકે! અર્થાત્ કોઈ નહિ. (एवं वदित्ता जामेव दिसि पाउब्भूया तामेव दिसं पडिगया) આ પ્રકારે કહીને તે બધા જે દિશાએથી આવ્યા હતા તે જ દિશા તરફ પાછા ચાલ્યા ગયા. (સૂ. ૫૯)

**मूलम्—तए णं से कूणिए राया भंभसारपुत्ते समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं सोच्चा णिसम्म हट्ठ-तुट्ठ-जाव-हियए उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेइ, करित्ता वंदइ, णमंसइ,**

टीका—'तए णं से' इत्यादि। 'तए णं से कूणिए राया भंभसारपुत्ते' ततः खलु स कूणिको राजा भंभसारपुत्रः, '**समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं सोच्चा णिसम्म**' श्रमणस्य भगवतो महावीरस्याऽन्तिके धर्मं श्रुत्वा निशम्य, '**हट्ठ-तुट्ठ-जाव-हियए**' हृष्ट-तुष्ट-यावद्धृदयः '**उट्ठाए उट्ठेइ**' उत्थयोत्तिष्ठति, '**उट्ठित्ता**' उत्थाय श्रमणस्य भगवतो महावीरस्य '**तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेइ**' त्रिकृत्व आदक्षिणप्रदक्षिणं करोति, '**करित्ता**' कृत्वा '**वंदइ णमंसइ**' वन्दते नमस्यति, '**वंदित्ता**

---

'तए णं से कूणिए राया' इत्यादि।

(**तए णं**) अनन्तर (**से कूणिए राया भंभसारपुत्ते**) भंभसार के पुत्र उन कूणिक राजाने (**समणस्स भगवओ महावीरस्स**) श्रमण भगवान् महावीर के (**अंतिए**) पास में (**धम्मं सोच्चा**) धर्मोपदेश सुनकर, (**णिसम्म**) एवं उसका अच्छी तरह पूर्वापररूप से विचार कर, (**हट्ठ-तुट्ठ-जाव-हियए**) चित्त में अधिक से अधिक आनंद एवं संतोष प्राप्त किया, (**उट्ठाए उट्ठेइ**) बाद में अपने स्थान से उठे और (**उट्ठित्ता**) उठकर (**समणं भगवं महावीरं-तिक्खुत्तो अयाहिणपयाहिणं करेइ करित्ता वंदइ णमंसइ**) उन्होंने श्रमण भगवान महावीर की तीनवार आदक्षिणप्रदक्षिणपूर्वक वंदना एवं नमस्कार किया, (**वंदित्ता णमंसित्ता एवं**

---

"तए णं से कूणिए राया" ઇત્યાદિ.

(तए णं) ત્યાર પછી (से कूणिए राया भंभसारपुत्ते) ભંભસારના પુત્ર તે કૂણિક રાજાએ (समणस्स भगवओ महावीरस्स) શ્રમણ ભગવાન મહાવીરની (अंतिए) પાસે (धम्मं सोच्चा) ધર્મોપદેશ સાંભળીને, (णिसम्म) તેમજ તેને સારી રીતે પૂર્વાપરરૂપથી વિચાર કરીને, (हट्ठ-तुट्ठ-जाव-हियए) મનમાં બહુ જ આનંદ તેમજ સંતોષ પ્રાપ્ત કર્યો, (उट्ठाए उट्ठेइ) ત્યાર પછી પોતાના સ્થાનેથી ઉઠયા, અને (उट्ठित्ता) ઉઠીને (समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ करित्ता वंदइ णमंसइ) તેમણે શ્રમણ ભગવાન મહાવીરને ત્રણ-વાર આદક્ષિણ-પ્રદક્ષિણપૂર્વક વંદના તેમજ નમસ્કાર કર્યા. (वंदित्ता णमंसित्ता

वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी–सुअक्खाए ते भंते! णिग्गंथे पावयणे जाव किमंग! पुण एत्तो उत्तरतरं? एवं वदित्ता जामेव दिसं पाउब्भूए तामेव दिसं पडिगए ॥ सू०६० ॥

णमंसित्ता एवं वयासी' वन्दित्वा नमस्यित्वा एवमवादीत्- 'सुअक्खाए ते भंते! णिग्गंथे पावयणे जाव किमंग! पुण एत्तो उत्तरतरं' स्वाख्यातं तव भदन्त! निर्ग्रन्थ प्रवचनम् यावत् किमङ्ग! पुनरेतस्मादुत्तरतरम्' 'एवं वदित्ता जामेव दिसं पाउब्भूए तामेव दिसं पडिगए' एवम् उदित्वा यस्या एव दिशः प्रादुर्भूतः, तामेव दिशं प्रतिगतः ॥ सू० ६० ॥

वयासी) वंदना एवं नमस्कार कर फिर उन्होंने प्रभु से इस प्रकार कहा–(सुअक्खाए ते भंते! णिग्गंथे पावयणे) हे भदन्त! आपने निर्ग्रन्थ प्रवचन का उपदेश बहुत ही सुन्दर-पूर्वापरविरोधरहित–सर्वोत्कृष्ट किया है। (जाव किमंग पुण एत्तो उत्तरतरं) इस निर्ग्रन्थ प्रवचन में ऐसा कोई सा भी विषय बाकी नहीं बचा जिस पर आपने प्रकाश न डाला हो–अच्छी तरह से विवेचन नहीं किया हो। आपने सब कुछ एक ही साथ बहुत ही अच्छी तरह मीठे शब्दों में समझा दिया है, हमने तो ऐसा उपदेश आजतक नहीं सुना, कल्याण एवं जीवनके उपयोगी सब विषय आपने कहे हे।–इत्यादि। एवं वदित्ता जामेव दिसं पाउब्भूए तामेव दिसं पडिगए) इस प्रकार प्रभु की स्तुति रूप में कह कर कूणिक राजा जिस दिशा से आये थे उसी दिशा की ओर वहा से वापिस चले गये ॥ सू० ६० ॥

एवं वयासी) वंदना तेमज नमस्कार करीने पछी तेओ प्रभुने आ प्रकारे कह्युं–(सुअक्खाए ते भंते! णिग्गंथे पावयणे) हे भदन्त! आपणो आ निर्ग्रन्थ प्रवचनने उपदेश बहुज सुंदर–पूर्वापरविरोधरहित–सर्वोत्कृष्ट थयो छे. (जाव किमंग! पुण एत्तो उत्तरतरं) आ निर्ग्रन्थ प्रवचनमा एवो कोई पण विषय बाकी रह्यो नथी जेना उपर आपे प्रकाश न नाख्यो होय–सारी रीतथी विवेचन न कर्युं होय. आपे तमामे–तमाम एक साथेज बहुज सारी पेठे मीठा शब्दोमा समजावी दीधु छे. अमे तो एवो उपदेश आज सुधी सांभळ्यो नथी. कल्याणु तेमज जीवनमा उपयोगी बधा विषय आपे कह्या छे. ईत्यादि. (एवं वदित्ता जामेव दिसं पाउब्भूए तामेव दिसं पडिगए) आ प्रकारे प्रभुनी स्तुतिरूपमां कहीने कूणिक राजा जे दिशाएथी आव्या हता ते दिशा तरफ पाछा चाल्या गया (सू. ६०)

**मूलम्—तए णं ताओ सुभद्दापमुहाओ देवीओ समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं सोच्चा णिसम्म हट्ठ–तुट्ठ–जाव–हिययाओ उट्ठेंति, उट्ठित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेंति, करित्ता वंदंति णमंसंति,**

---

**टीका—'तए णं ताओ'** इत्यादि। **'तए णं ताओ सुभद्दापमुहाओ देवीओ'** ततः खलु ताः सुभद्राप्रमुखा देव्यः **'समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए'** श्रमणस्य भगवतो महावीरस्याऽन्तिके **'धम्मं सोच्चा णिसम्म हट्ठ–तुट्ठ–जाव–हिययाओ'** धर्मं श्रुत्वा निशम्य हृष्ट–तुष्ट यावद्धृदया **'उट्ठाए उट्ठेंति'** उत्थयोत्तिष्ठन्ति, **'उट्ठित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स'** उत्थाय श्रमणस्य भगवतो महावीरस्य **'तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिण करेति'** त्रिकृत्व आदक्षिणप्रदक्षिणं कुर्वन्ति, **'करित्ता वंदति णमंसंति'**

---

**'तए णं ताओ सुभद्दापमुहाओ'** इत्यादि।

**(तए णं)** इस के वाद **(ताओ सुभद्दापमुहाओ देवीओ)** वे सुभद्राप्रमुख देवियाँ भी **(समणस्स भगवओ महावीरस्स)** श्रमण भगवान महावीर के **(अंतिए)** समीप **(धम्मं सोच्चा)** धर्म श्रवण कर, एवं **(णिसम्म)** उसे हृदयंगम कर, **(हट्ठ–तुट्ठ–जाव–हिययाओ)** बहुत ही अधिक खुश एव सतुष्ट होती हुई जहाँ वे खडी थीं वहाँ से **(उट्ठाए उट्ठेंति)** चल कर भगवान के समीप आयीं, **(उट्ठित्ता)** आकर उन्होने **(समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण–पयाहिणं करेंति करित्ता वदंति णमंसंति)** श्रमण भगवान् महावीर की तीन-

---

"तए णं ताओ सुभद्दापमुहाओ" ઇત્યાદિ.

(तए णं) ત્યાર પછી (ताओ सुभद्दापमुहाओ देवीओ) તે સુભદ્રા–પ્રમુખ દેવીઓ પણ (समणस्स भगवओ महावीरस्स) શ્રમણ ભગવાન મહાવીરના (अंतिए) સમીપે (धम्मं सोच्चा) ધર્મ–શ્રવણ કરીને, તેમજ (णिसम्म) તેને હૃદયંગમ કરીને (हट्ठ–तुट्ठ–जाव–हिययाओ) બહુજ ખુશ તેમજ સતોષ પામતી જ્યાં તેઓ ઉભી હતી ત્યાંથી ( उट्ठाए उट्ठेति ) ચાલીને ભગવાનની પાસે આવી, (उट्ठित्ता) આવીને તેઓએ ( समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेति, करित्ता वदंति णमंसति) શ્રમણ ભગવાન મહાવીરને ત્રણવાર આદક્ષિણ-

**वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी–सुयक्खाए ते भंते ! निग्गंथे पावयणे जाव किमंग ! पुण एत्तो उत्तरतरं ?, एवं वंदित्ता जामेव दिसं पाउब्भूयाओ तामेव दिसं पडिगयाओ ॥ सू० ६१ ॥**

**॥ समोसरणं नाम पुव्वद्धं समत्तं ॥**

---

कृत्वा वन्दन्ते नमस्यन्ति, '**वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी**' वन्दित्वा नमस्यित्वैवमवादिषुः- '**सुयक्खाए ते भंते ! निग्गंथे पावयणे जाव किमंग ! पुण एत्तो उत्तरतरं ?**' स्वाख्यातं तव भदन्त ! निर्ग्रन्थ प्रवचनम् यावत् किमङ्ग ! पुनरेतस्मादुत्तरतरम् ? '**एवं**

---

बार आदक्षिणप्रदक्षिणपूर्वक वंदना एव नमस्कार किया, (**वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी**) वंदना नमस्कार करने के अनन्तर फिर वे प्रभु से इस प्रकार बोलीं कि (**सुयक्खाए ते भंते ! णिग्गंथे पावयणे**) आपने हे भदन्त ! इस निर्ग्रन्थ प्रवचन का उपदेश बहुत ही सुन्दर-पूर्वापरविरोधरहित–सर्वोत्कृष्टरूप से किया है। (**जाव किमंग ! पुण एत्तो उत्तरतर**) हे प्रभो ! आपने इस निर्ग्रन्थ प्रवचन मे सब ही विषयों को अच्छी तरह समझाया है। कोई भी विषय ऐसा नहीं रहा कि जिस पर आपकी वाणी का अविरल प्रवाह न बहा हो। सब कुछ आपने बहुत सरल भाषा में समझा दिया है। हमने तो आजतक इतना मार्मिक उपदेश नहीं सुना, इससे उत्तम उपदेश की बात ही कहाँ ? (**एवं वंदित्ता जामेव दिसं पाउब्भूयाओ**

---

પ્રદક્ષિણપૂર્વક વંદના તેમજ નમસ્કાર કર્યા, (वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी) વંદના–નમસ્કાર કરી લીધા પછી તેઓએ પ્રભુને આ પ્રકારે કહ્યું કે (सुयक्खाए ते भंते ! णिग्गंथे पावयणे) આપે હે ભદન્ત ! આ નિર્ગ્રન્થ પ્રવચનનો ઉપદેશ બહુજ સારીરીતે, પૂર્વાપરવિરોધરહિત તેમજ સર્વોત્કૃષ્ટ કર્યો છે. (जाव किमंग ! पुण एत्तो उत्तरतरं) હે પ્રભો ! આપે આ નિર્ગ્રન્થ પ્રવચનમા બધાએ વિષયોને સારી રીતથી સમજાવ્યા છે. કોઈ પણ વિષય એવો નથી રહ્યો કે જેના ઉપર આપની વાણીનો અવિરલ પ્રવાહ વહ્યો ન હોય, બધુ ય આપે બહુ સરલ ભાષામા સમજાવી દીધું છે. અમે તો આજ સુધીમાં આટલો માર્મિક ઉપદેશ સાંભળ્યો નથી. આથી ઉત્તમ ઉપદેશની તો વાત જ ક્યાં ? (एवं वंदित्ता

**वंदित्ता जामेव दिसं पाउब्भूयाओ तामेव दिसं पडिगयाओ** ' एवम् उदित्वा यस्या एव दिशः प्रादुर्भूता', तामेव दिश प्रतिगता' ॥ सू० ६१ ॥

इति श्री-विश्वविख्यात-जगद्वल्लभ - प्रसिद्धवाचक - पञ्चदशभाषाकलितललितकलापालापक-प्रविशुद्धगद्यपद्यनैकग्रन्थनिर्मापक-वादिमानमर्दक-श्रीशाहूछत्रपति-कोल्हापुरराज-प्रदत्त-जैनशास्त्राचार्य-पदभूषित-कोल्हापुरराजगुरु-बालब्रह्मचारि-जैनाचार्य-जैन-धर्मदिवाकर-पूज्यश्रीघासीलालव्रतिविरचितायाम् औपपातिकसूत्रस्य पीयूषवर्षिण्याख्यायां व्याख्यायां समवरणनामकं पूर्वार्द्ध सम्पूर्णम् ।

---

**तामेव दिसं पडिगयाओ)** इस प्रकार भक्तिभाव से प्रभु की स्तुति करके वे सब रानियाँ जहां से आई थीं वहीं वापिस चली गयीं ॥ सू० ६१ ॥

॥इति औपपातिक सूत्रका समवसरणनामक पूर्वार्द्ध सपूर्ण ॥

---

જામેવ દિસં પાઉબ્ભૂયાઓ તામેવ દિસં પડિગયાઓ) આ પ્રકારે ભક્તિભાવથી પ્રભુની સ્તુતિરૂપે નિવેદન કરીને તેઓ બધી રાણીઓ જ્યાંથી આવી હતી ત્યા પાછી ચાલી ગઇ (સૂ. ૬૧.)

ઇતિ ઔપપાતિક સૂત્રનું સમવસરણ નામક પૂર્વાર્દ્ધ સંપૂર્ણ



अथ उत्तरार्द्धम्—

**मूलम्—तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी इंदभूई णामं अणगारे गोयमगोत्ते णं**

**टीका**—'**तेणं कालेणं**' इत्यादि। ( **तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स** ) तस्मिन् काले तस्मिन् समये श्रमणस्य भगवतो महावीरस्य ( **जेट्ठे अंतेवासी इंदभूई णामं अणगारे** ) ज्येष्ठोऽन्तेवासीन्द्रभूतिनामा अनगारः, ज्येष्ठत्वमस्य संयमपर्यायेण सर्वश्रेष्ठत्वात्, अन्तेवासी=शिष्यः, इन्द्रभूतिरेतन्नामकः, अनगारः=साधुः, स कीदृशः? इत्याह—'**गोयमगोत्ते णं**' गौतमगोत्रः—गौतमं=गौतमाख्यं गोत्रं यस्य स तथा 'णं' इति वाक्यालंकारे, '**सत्तुस्सेहे**' सप्तोत्सेधः—सप्तहस्तः उत्सेधः=उच्छ्रयो यस्य स तथा, '**सम-चउरंस-संठाण-संठिए**' सम-चतुरस्र-संस्थान-संस्थितः—समं च तच्चतुरस्रं चेति

## उत्तरार्ध का अनुवाद प्रारंभ—

'**तेणं कालेणं**' इत्यादि।

(**तेणं कालेणं तेणं समएणं**) उस काल एवं उस समय में (**समणस्स भगवओ महावीरस्स**) श्रमण भगवान् के महावीर के (**जेट्ठे अंतेवासी**) [1]बड़े शिष्य (**गोयमगोत्ते णं**) गौतमगोत्री (**सम-चउरंस-संठाण-संठिए**) समचतुरस्रसंस्थानसंपन्न (**सत्तु-**

(१) जिसमें अंग एवं उपांग की रचना सम-प्रमाणोपेत (जिसका जितना प्रमाण होना चाहिये उस माफिक) होती है, कमती बढती नहीं होती, उसका नाम '**समचतुरस्र-संस्थान**' है। इसमें एक सौ आठ अंगुल के उच्छ्राय वाले अंग और उपांग होते है। आकार बड़ा ही सौम्य होता है।

## ઉત્તરાર્ધના અનુવાદનો પ્રારંભ—

'तेणं कालेणं' ઇત્યાદિ.

(तेणं कालेणं तेणं समएणं) તે કાલ તેમજ તે સમયમાં (समणस्स भगवओ महावीरस्स) શ્રમણ ભગવાન મહાવીરના (जेट्ठे अंतेवासी) મોટા શિષ્ય (गोयमगोत्ते णं) ગૌતમગોત્રી (समचउरंस-संठाण-संठिए) [1]સમચતુરસ્સ-

(૧) જેમાં અંગ તેમજ ઉપાંગની રચના સમ-પ્રમાણોપેત (જેવું જેટલું પ્રમાણ હોવું જોઈએ તે પ્રમાણે) હોય, વધુ ઘટુ ન હોય તેનું નામ 'સમચતુરસ્સ-સંસ્થાન' છે. આમાં એકસો આઠ આંગળ (તસુ) ના ઉચ્છ્રાયવાળાં અંગ તથા ઉપાંગ હોય છે. આકાર બહુજ સૌમ્ય હોય છે.

**सत्तुस्सेहे समचउरंस-संठाण-संठिए वइर-रिसह-णाराय-संघयणे कणग-पुलग-णिघस-पम्हगोरे उग्गतवे दित्ततवे**

समचतुरस्रम्-मानोन्मानप्रमाणानामन्यूनानधिकत्वात् अङ्गोपाङ्गानां चाविकलत्वात् ऊर्ध्वं तिर्यक् च तुल्यत्वात् सम, चतुरस्रं चाविकलावयवत्वात्, समं च तच्चतुरस्रं चेति समचतुरस्रं-स्वाङ्गुलाष्टगतोच्छ्रायाङ्गोपाङ्गयुक्त, युक्तिनिर्मितलेप्यकवद्वा, संस्थानम्=आकारविशेषः, तेन संस्थित=युक्त, '**वइर-रिसह-णाराय-संघयणे**' वज्र-र्षभ-नाराच-संहननः-वज्रं=कीलिका, ऋषभ=पट्टः, नाराच=मर्कटबन्धः-उभयपार्श्वयोरस्थिबन्धविशेषः, वज्रर्षभनाराचाः संहनने=अस्थ्नां बन्धविशेषे यस्य स वज्रर्षभनाराचसंहननः, '**कणग-पुलग-णिघस-पम्ह-गोरे**' कनक-पुलक-निकष-पद्मगौरः-कनकस्य=सुवर्णस्य पुलको=लवः-प्रफुल्लवर्तुल-कणरूप, तस्य निकष=कषपट्टे कृष्टो रेखारूपो लक्षणया लक्ष्यते, पुलकस्य सशुद्धतया निकषे कृष्टा रेखाऽतीव चाकचिक्ययुक्ता भवति, अतएव तेनोपमानेनोपमितः पद्मगौर-पद्मगर्भः=किञ्जल्कः, तद्वद्गौर=कमनीयकान्तिः, '**उग्गतवे**' उग्रतपाः, '**दित्ततवे**' दीप्ततपा-दीप्त=प्रदीप्तो

**स्सेहे**) सातहाथ की अवगाहनायुक्त (**वइर-रिसह-णाराय-संघयणे**) [1]वज्र-ऋषभ-नाराचसंहननधारी (**कणग-पुलग-णिघस-पम्हगोरे**) विशुद्ध सुवर्ण के खण्ड की शाण पर घसी हुई रेखा के समान चमकीली कान्ति वाले तथा कमल के केसर के समान गौरवर्ण (**इंदभूई णामं अणगारे**) ऐसे गौतम नाम से प्रसिद्ध इंद्रभूति नाम के अनगार गणधर थे। (**उग्गतवे दित्ततवे तत्ततवे घोरतवे उराले घोरे घोरगुणे घोरतवस्सी घोरबंभ-चेरवासी उच्छूढसरीरे संखित्तविउलतेयलेस्से**) इनकी तपस्या बड़ी उग्र थी।

(१) इस संहनन में वज्र की सी कीले, वज्र के से हाड एवं वज्र का सा पट्टबन्ध होता है।

संस्थान-संपन्न (सत्तुस्सेहे) સાત હાથની અવગાહનાયુક્ત (वइर-रिसह-णाराय-संघयणे) વજ્ર-[1]ઋષભ નારાચ-સંહનન ધારી (कणग-पुलग-णिघस-पम्हगोरे) વિશુદ્ધ સુવર્ણના ખંડની શાણ પર ઘસેલી રેખા જેવી ચમકીલી કાંતિવાળા તથા કમળના કેસરના જેવા ગૌરવર્ણ (इंदभूई णामं अणगारे) એવા ગૌતમનામથી પ્રસિદ્ધ ઇંદ્રભૂતિ નામના અનગાર ગણધર હતા. (उग्गतवे दित्ततवे तत्ततवे घोरतवे उराले घोरे घोरगुणे घोरतवस्सी घोरबंभ-चेरवासी उच्छूढसरीरे संखित्त-विउल-तेयलेस्से) તેમની તપસ્યા બહુ ઉગ્ર હતી. કર્મરૂપી વનને બાળવાવાળા હોવાથી તેમનું તપ અગ્નિના જેવુ બહુ

(૧) આ સંહનનમાં વજ્રના જેવા ખીલા, વજ્ર જેવાં હાડ તેમજ વજ્ર જેવાં પટ્ટબંધ હોય છે.

**तत्ततवे घोरतवे उराले घोरे घोरगुणे घोरतवस्सी घोरबंभचेरवासी**

हुताशन इव कर्मवनदाहकत्वेन जाज्वल्यमान तपो यस्य स तथा, 'तत्ततवे' तप्ततपा:—तप्त=सविधि सेवित तपो येन स तप्ततपा, '**महातवे**' महातपा:=बृहत्तपोयुक्त., '**घोरतवे**' घोरतपा.=अतिकठिनतपोयुक्त., '**उराले**' उदार, '**घोरे**' घोर:=भीम., अत्र कश्चिच्छङ्कते-य उदार' स भीम कथम्? अस्योत्तरमाह—अतिकष्ट तपः कुर्वन् अल्पशक्तिमतां भयानको भवतीति निसर्ग'। कश्चिद् वक्ति—उदार'=प्रधान, घोरस्तु परीषहेन्द्रियकषायाऽऽख्याना रिपूणां विनाशे कठोर'। केचिदात्मनिरपेक्षतया तपस्सु प्रवर्तमानत्वाद् घोरः इत्याहु'। '**घोरगुणे**'

कर्मरूपी वन को जलाने वाला होने से इनका तप अग्नि की तरह अधिक जाज्वल्यमान था। तपस्या की आराधना ये विधिपूर्वक बड़ी सावधानी से करते थे। ये महातपस्वी थे। दूसरे मुनिजन जिन तपों को करना अति कठिन मानते थे, उन तपों को ये तपते थे। ये उदार एव घोर अर्थात् भयानक थे। **प्रश्न**—उदारता और भयानकता ये दोनों धर्म परस्परविरोधी हैं, क्यों कि जो उदार होता है वह भयानक नहीं होता और जो भयानक होता है वह उदार नहीं होता, अत' इन दोनों बातों का यहा निर्वाह कैसे हो सकता है? **उत्तर**—ये अति-कठिन तपस्याओं को करते थे, अतः अल्पशक्ति वालों को ये देखने में बड़े भयानक–जैसे मालूम देते थे, अर्थात् अल्पशक्ति वालों को इनसे डर लगता था, इस अपेक्षा इन्हे भयानक कहा गया है। कोई २ ऐसा भी कहते है कि '**उदार**' शब्द का अर्थ '**प्रधान**' है, एवं '**घोर**' शब्द का अर्थ '**कठोर**' है। ये कठोर इसलिये थे कि परीषह, इन्द्रिय एवं कषाय इन

જાજ્વલ્યમાન હતું. તપસ્યાની આરાધના તેઓ વિધિપૂર્વક બહુ સાવધાનીથી કરતા હતા. તેઓ મહાતપસ્વી હતા. બીજા મુનિજનો જે તપોને કરવાનું બહુ કઠણુ માનતા હતા તેવા તપોને આ કરતા હતા. તેઓ ઉદાર તેમજ ઘોર અર્થાત્ ભયાનક હતા.

પ્રશ્ન—ઉદારતા અને ભયાનકતા એ બન્ને ધર્મ પરસ્પર વિરોધી છે; કેમકે જે ઉદાર હોય છે તે ભયાનક હોતા નથી અને જે ભયાનક હોય છે તે ઉદાર હોતા નથી, તો પછી આ બન્ને વાતોનો અહીં મેળ કેવી રીતે થઈ શકે?

ઉત્તર—આ અતિ કઠણુ તપસ્યાઓ કરતા હતા તેથી અલ્પશક્તિવાળાઓને તેઓ જોવામા ભયાનક જેવા દેખાતા હતા, અર્થાત્ અલ્પશક્તિ-વાળાઓને તેમનો ડર લાગતો હતો. આ અપેક્ષાથી તેમને ભયાનક કહેલા છે. કોઈ કોઈ એમ પણુ કહે છે કે 'ઉદાર' શબ્દનો અર્થ 'પ્રધાન' છે, તેમજ 'ઘોર' શબ્દનો અર્થ 'કઠોર' છે. તેઓ કઠોર એ માટે હતા કે પરિષહ,

# उच्छूढसरीरे संखित्त-विउल-तेयलेस्से समणस्स भगवओ

घोरगुणः-घोरा=अन्यैर्दुरुद्वहाः गुणाः=मूलगुणादयो यस्य स तथा। 'घोरतवस्सी' घोरतपस्वी=दुष्करतपश्चरणशीलः,पारणादौ नानाविधाभिग्रहधारकत्वात्, 'घोर-बंभचेर-वासी' घोर-ब्रह्मचर्य-वासी-घोरं=दारुणमल्पसत्त्वैर्दुर्वहत्वाद् यद् ब्रह्मचर्यं तत्र वसति तच्छीलः। 'उच्छूढसरीरे' उच्छूढशरीरः-उच्छूढम्=उज्झितमिव सत्कारपरित्यागात् शरीरं येन स उच्छूढशरीरः-शरीरसंस्कारं प्रति निःस्पृहत्वात् त्यक्तशरीरसंस्कारः। 'संखित्त-विउल-तेयलेस्से' संक्षिप्त-विपुल-तेजोलेश्यः-संक्षिप्ता=निजशरीराऽन्तर्निहिता, विपुला=

रिपुओं के विनाश करने में निरत थे। कठोर बने विना शत्रुओं का निवारण करना बड़ा ही मुश्किल होता है। कोई २ ऐसा भी कहते है कि तपस्याओं के तपने में ये अपनी निज आत्मा की परवाह ही नहीं करते थे, अतः घोर थे। 'घोरगुणवाले' ये इसलिये थे कि इनके द्वारा धृत मूलगुण आदि अन्यजनों के लिये दुर्धारणीय थे, 'घोरतपस्वी' ये इसलिये थे कि जिस दिन पारणा का अवसर होता था उस दिन ये अनेक प्रकार के अभिग्रहों को धारण करते थे। 'घोर-ब्रह्मचर्य-वासी' ये इसलिये थे कि ये अल्पशक्ति वाले प्राणियों द्वारा दुर्वह होने से कठिनतर ऐसे ब्रह्मचर्य की आराधना में पूर्णनिष्ठ हो चुके थे। 'उच्छूढशरीर' इन्हे इसलिये कहा है कि इन्हों ने अपने शरीर का सत्कार करना ही छोड़ दिया था। अतः उनका शरीर ऐसा ज्ञात होता था कि मानो इन्होंने इसका परित्याग जैसा कर रखा है। 'संक्षिप्त-विपुल-तेजोलेश्य' ये इसलिये थे कि यद्यपि विशिष्ट तपस्या की

ઈંદ્રિય તેમજ કષાય એ રિપુઓનો વિનાશ કરવામાં નિરત હતા. કઠોર બન્યા વિના શત્રુઓનું નિવારણ કરવું બહુજ મુશ્કેલ થાય છે. કોઇ કોઈ એમ પણ કહે છે કે તપસ્યા તપવામાં તેઓ ખુદ પોતાના આત્માની પરવાહ પણ કરતા નહોતા. આવી રીતે ઘોર હતા. 'ઘોરગુણવાળા' તેઓ એ કારણથી હતા કે તેમના દ્વારા ગ્રહણ કરાયેલા મૂલગુણ આદિ ગુણો બીજાજનો માટે દુર્ધારણીય (ગ્રહણ ન કરી શકાય એવા) હતા. 'ઘોરતપસ્વી' તેઓ એ માટે હતા કે જે દિવસે પારણાનો અવસર આવતો તે દિવસે તેઓ અનેક પ્રકારના અભિગ્રહોને ધારણ કરતા હતા. 'ઘોર-બ્રહ્મચર્ય-વાસી' તેઓ એ માટે હતા કે તેઓ અલ્પશક્તિવાળા પ્રાણિઓ દ્વારા દુર્વહ (સહન ન થાય એવા) હોવાથી બહુ કઠણ એવી બ્રહ્મચર્યની આરાધનામાં પૂર્ણનિષ્ઠ થઇ ચુકયા હતા. 'ઉચ્છૂઢશરીર' એમને એ માટે કહેતા કે તેમણે પોતાના શરીરના સંસ્કારો જ છોડી દીધા હતા. આથી તેમનું શરીર એવું જણાતું હતું કે જાણે તેઓએ તેનો પરિત્યાગ જ કરી નાખ્યો હોય. 'સંક્ષિપ્ત-

**महावीरस्स अदूरसामंते उड्ढजाणू अहोसिरे झाणकोट्ठोवगए संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥ सू. १ ॥**

अनेकयोजनप्रमाणक्षेत्राऽन्तर्वर्तिवस्तुदहनसमर्थत्वाद् विशाला तेजोलेश्या=विशिष्टतपः-सम्भूतलब्धिविशेषोद्भवा तेजोज्वाला यस्य स तथाभूतः सन्, '**समणस्स भगवओ महावीरस्स अदूरसामंते**' श्रमणस्य भगवतो महावीरस्याऽदूरसमीपे—अदूरसमीपे=नातिदूरे नातिसमीपे—उचितदेशे, '**उड्ढजाणू**' ऊर्ध्वजानु—ऊर्ध्वे जानुनी यस्य स ऊर्ध्वजानुः—उत्कुटुकाऽऽसनवान्, '**अहोसिरे**' अधःशिराः=अधोमुखो, नोर्ध्वं न तिर्यग् वा क्षिप्तदृष्टिः, '**झाण-कोट्ठो-वगए**' ध्यान-कोष्ठो-पगतः—ध्यानं कोष्ठ इव ध्यानकोष्ठस्तमुपगतः, यथा कोष्ठगत धान्यं विकीर्णं न भवति तथैव ध्यानगता इन्द्रियान्तःकरणवृत्तयो बहिर्न यान्तीति

आराधना से इन्हे तेजोलेश्या प्राप्त हो चुकी थी, जिसकी इतनी सामर्थ्य होती है कि अनेक-योजनप्रमाण क्षेत्र के भीतर रही हुई वस्तुओं को वह क्षणमात्र में दग्ध कर डालती है, परन्तु ऐसी विपुल तेजोलेश्या को भी इन्होंने अपने शरीर के भीतर ही अन्तर्हित कर रखी थी, उसका उपयोग नहीं करते थे, और ये (**समणस्स भगवओ महावीरस्स अदूर-सामंते**) श्रमण भगवान् महावीर के न अतिदूर और न अतिनिकट, किन्तु पास ही कुछ दूरी पर (**उड्ढजाणू**) घुटनों को ऊँचाकर (**अहोसिरे**) शिर को नीचे कर के (**झाण-कोट्ठो-वगए**) ध्यानरूपी कोठे में विराजमान थे, अर्थात् ध्यान में बैठे थे। ध्यान को जो कोष्ठ की उपमा दी है उसका हेतु यह है कि जिस प्रकार कोठे में रहा हुआ धान्यादिक इतस्ततः (इधर-उधर) नहीं बिखरता है उसी प्रकार ध्यानगत इन्द्रिय एवं अन्तःकरण की वृत्तियां

विपुलतेजोलेश्य' એ આથી હતા કે તેમને જો કે વિશિષ્ટ તપસ્યાની આરા-ધનાથી તેજોલેશ્યા પ્રાપ્ત થઇ ચૂકી હતી, જેનું એટલું સામર્થ્ય હોય છે કે અનેક યોજનના પ્રમાણ ક્ષેત્રની અંદર રહેલી વસ્તુઓને તેઓ ક્ષણ માત્રમાં બાળીને ભસ્મ કરી નાખે છે, પરંતુ એવી વિપુલ તેજોલેશ્યાને પણ તેઓએ પોતાના શરીરની અંદર જ અન્તર્હિત કરી રાખી હતી, તેનો ઉપયોગ કરતા નહોતા. (समणस्स भगवओ महावीरस्स अदूरसामंते) તેઓ શ્રમણ ભગવાન મહા-વીરની બહુ દૂર નહિ તેમ બહુ પાસે નહિ પણ તેમની પાસે જ થોડે જ દૂર પર (उड्ढजाणू) ઘુંટણો ઉંચા કરીને (अहोसिरे) શિરને નમાવીને (झाण-कोट्ठो-वगए) ધ્યાનરૂપી કોઠામા વિરાજમાન હતા—અર્થાત્ ધ્યાનમાં બેઠા હતા. ધ્યા-નને જે કોઠાની ઉપમા આપી છે તેનો હેતુ એ છે કે જેમ કોઠામાં ભરેલાં ધાન્ય આદિક આમતેમ વિખરાઇ જતા નથી તેમ ધ્યાનમાં ચોંટેલી ઇંદ્રિઓ

मूलम्—तए णं से भगवं गोयमे जायसड्ढे जायसंसए

भाव', नियन्त्रितचित्तवृत्तिमानित्यर्थः, 'संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ' संयमेन तपसाऽऽत्मानं भावयन्=वासयन् विहरति ॥ सू० १ ॥

टीका—'तए णं से' इत्यादि। 'तए णं से भगवं गोयमे' ततः खलु स भगवान् गौतमः 'जायसड्ढे' जातश्रद्धः—जाता=प्रागूभूता सम्प्रति सामान्येन प्रवृत्ता श्रद्धा=तत्त्वनिर्णयविषयिका वाञ्छा यस्य स जातश्रद्धः, वक्ष्यमाणतत्त्वपरिज्ञानेच्छावानित्यर्थः, 'जायसंसए' जातसंशयः—जातः=प्रवृत्तः संशयो यस्य स तथोक्तः, संशयोत्पत्तिप्रकारस्त्वित्थम्—औपपातिकसूत्रं हि—अचाराङ्गस्योपाङ्गम्, तेनाचाराङ्गप्रथमश्रुतस्कन्धस्य प्रथमाध्ययने प्रथमोद्देशके य आत्मन उपपात उक्तः, तस्मिन् विषये वक्ष्यमाणसंशयोत्पत्त्या जात-

वाहर इधर—उधर नहीं हो सकती है। मानसिक प्रत्येक वृत्तियां इस अवस्था में नियन्त्रित हो जाती हैं। ऐसे ये गौतम नामसे प्रसिद्ध इन्द्रभूति गणधर (संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ) संयम एवं तप से सदा अपनी आत्मा को भावित करते हुए विचरते थे ॥सू. १॥

'तए णं से' इत्यादि।

(तए णं) परिषत् चले जाने के बाद (से भगवं गोयमे) वे भगवान् गौतम (जायसड्ढे) कि जिनके चित्तमें तत्त्व को निर्णय करने के लिये वाञ्छा हुई, कारण कि इन्हे (जायसंसए) इस प्रकार का संशय उद्भूत हुआ था कि यह औपपातिक सूत्र, आचारांग सूत्र का उपांग है, आचारांग सूत्र के प्रथम अध्ययन के प्रथम उद्देशक में जो आत्मा का उपपात कहा है सो किस प्रकार से कहा है? (जायकोऊहल्ले) अतः भगवान् मेरे संशयित

તેમજ અંતઃકરણની વૃત્તિઓ બહાર આમતેમ જઈ શકતી નથી. માનસિક પ્રત્યેક વૃત્તિઓ આ અવસ્થામાં નિયંત્રિત થઇ જાય છે. એવા આ ગૌતમ નામે પ્રસિદ્ધ ઇંદ્રભૂતિ ગણધર (संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ) સંયમ તેમ જ તપથી સદા પોતાની આત્માને ભાવિત કરતા કરતા વિચરતા હતા. (સૂ. ૧)

'तए णं से' ઈત્યાદિ.

(तए णं) પરિષદ્ ચાલી ગયા પછી (से भगवं गोयमे) તે ભગવાન ગૌતમ (जायसड्ढे) કે જેના ચિત્તમાં તત્ત્વનો નિર્ણય કરવાની વાંછા થઇ, કારણ કે તેમને (जायसंसए) આ પ્રકારનો સંશય ઉત્પન્ન થયો હતો કે આ ઔપપાતિક સૂત્ર, આચારાંગ સૂત્રનું ઉપાંગ છે. આચારાંગ સૂત્રના પ્રથમ અધ્યયનના પ્રથમ ઉદ્દેશકમાં જે આત્માનો ઉપપાત વર્ણવ્યો છે તે કેવા પ્રકારથી કહ્યો છે? (जायकोऊहल्ले) હવે ભગવાન મારા આ સંશયના પ્રશ્નનો ઉત્તર ન જાણે

**जायकोऊहल्ले, उप्पण्णसड्ढे उप्पण्णसंसए उपण्णकोऊहल्ले, संजायसड्ढे संजायसंसए संजायकोऊहल्ले, समुप्पण्णसड्ढे समु-**

संशय इति भाव'। '**जायकोऊहल्ले**' जातकुतूहलः—जातं कुतूहलम्=औत्सुक्यं यस्य स जातकुतूहल', मत्कृतप्रश्नस्य कीदृशमुत्तरं भगवान् वक्ष्यति तच्छ्रोतुमौत्सुक्यवानित्यर्थ, '**उप्पण्णसड्ढे**' उत्पन्नश्रद्ध'—उत्पन्ना=विशेषेण जाता श्रद्धा यस्य स तथा, यद्वा—श्रद्धायाः स्वरूपस्य तिरोहितत्वे जातश्रद्ध', तस्याः स्वरूपस्य प्रादुर्भावे तु उत्पन्नश्रद्ध'—इति भाव'। '**उप्पण्णसंसए**' उत्पन्नसंशय', '**उप्पण्णकोऊहल्ले**' उत्पन्नकुतूहल', '**संजायसड्ढे**' संजातश्रद्धः, प्रकर्षादिवाचकः संशब्दः, ततश्च संजाता=विशेषतरेण उत्पन्ना श्रद्धा यस्य स संजातश्रद्ध', '**संजायसंसए**' संजातसंशयः, '**संजायकोऊहल्ले**' संजातकुतूहल', '**समुप्पण्णसड्ढे**' समुत्पन्नश्रद्धः—समुत्पन्ना=सर्वथा संजाता श्रद्धा यस्य स तथा,

प्रश्न का उत्तर न मालूम किस तरह का देंगे? इस बात को जानने की उत्कण्ठा उनके चित्त में बढ़ी, क्यों कि (उप्पण्णसड्ढे) भगवान के ऊपर ही उनके चित्त में अतिशय श्रद्धा थी, अत' उनसे ही निर्णय करने के लिये श्रद्धा उत्पन्न हुई। (**उप्पण्णसंसए उप्पण्णकोऊहल्ले संजायसड्ढे संजायसंसए संजायकोऊहल्ले समुप्पण्णसड्ढे समुप्पण्णसंसए समुप्पण्णकोऊहल्ले**) उत्पन्नसंसय, उत्पन्नकौतुहल'—इत्यादि पदों द्वारा वाच्यार्थ मे, अवग्रह, ईहा, अवाय, और धारणा ज्ञान की तरह उत्तरोत्तररूप से विशेषता द्योतन करने के लिए सूत्रकार ने '**जात, उत्पन्न, संजात, समुत्पन्न**' इन पदों का प्रयोग किया है। भगवान् गौतम को जो चित्त में तत्त्व के निर्णय करने की इच्छा जागृत हुई वह पहिले सामान्यरूप में ही हुई, कारण कि उन्हे संशय जो उत्पन्न हुआ था वह भी सामान्यरूप से ही हुआ था, इसी

કેવી રીતે આપશે? એ વાતને જાણુવાની ઉત્કંઠા તેમના ચિત્તમાં વધી, કેમકે (उप्पण्णसड्ढे) ભગવાનના ઉપરજ તેમના ચિત્તમાં અતિશય શ્રદ્ધા હતી, હવે તેમની જ પાસેથી નિર્ણય કરવા માટે શ્રદ્ધા ઉત્પન્ન થઈ. (उप्पण्णसंसए उप्पण्णकोऊहल्ले संजायसड्ढे संजायसंसए संजायकोऊहल्ले समुप्पण्णसड्ढे समुप्पण्णसंसए समुप्पण्णकोऊहल्ले) 'ઉત્પન્નસંશય ઉત્પન્નકૌતુહલ' ઇત્યાદિ પદો દ્વારા વાચ્યાર્થમાં, અવગ્રહ, ઈહા, અવાય અને ધારણા જ્ઞાનની પેઠે ઉત્તરોત્તરરૂપથી વિશેષતાનો પ્રકાશ લાવવામાટે સૂત્રકારે 'जात उत्पन्न संजात समुत्पन्न' એ પદોનો પ્રયોગ કર્યો છે. ભગવાન ગૌતમને જે ચિત્તમાં તત્ત્વનો નિર્ણય કરવાની ઇચ્છા જાગ્રત થઈ તે પહેલાં સામાન્યરૂપમાં જ થઈ હતી, કારણ તેમને જે સંશય

प्पण्णसंसए समुप्पण्णकोऊहल्ले उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठित्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेइ, करित्ता

'**समुप्पण्णसंसए**' समुत्पन्नसंशयः, '**समुप्पण्णकोऊहल्ले**' समुत्पन्नकुतूहलः, श्रद्धादयः शब्दा व्याख्याता एव। अत्रैवं श्रद्धादौ कार्यकारणभावः। प्रश्नवाञ्छारूपा श्रद्धा जाता, तस्याः कारणं-संशयः कुतूहलं चेति। '**उट्ठाए उट्ठेइ**' उत्थया=उत्थानशक्त्या स्वासनात् उत्तिष्ठति, उत्थाय, '**जेणेव समणे भगवं महावीरे**' यत्रैव श्रमणो भगवान् महावीरो विराजत इति शेषः, '**तेणेव उवागच्छइ**' तत्रैवोपागच्छति, '**उवागच्छित्ता**' उपागत्य, '**समणं भगवं महावीरं**' श्रमणस्य भगवतो महावीरस्य, '**तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेइ**' त्रिकृत्व आदक्षिणप्रदक्षिणं करोति, '**करित्ता**' कृत्वा '**वंदइ णमंसइ**'

तरह अपने प्रश्न के उत्तर को सुनने के लिये जो उनके चित्त में उत्कण्ठा जागृत हुई वह भी सामान्यरूप से ही। फिर वाद में '**उत्पन्नसड्ढे**' आदि पदो द्वारा जो सूत्रकार ने श्रद्धा को उत्पन्न आदिरूप में प्रकट किया है उससे श्रद्धा आदि में उत्तरोउत्तर विशेषता जाननी चाहिये। इस प्रकार के वे गौतमप्रभु (**उट्ठाए उट्ठेइ**) उत्थानशक्ति द्वारा अपने स्थान से उठे और (**उट्ठित्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ**) उठकर जहां प्रभु श्रमण भगवान् महावीर विराजमान थे वहाँ पहुँचे, (**उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेइ**) पहुँचते ही उन्होंने श्रमण भगवान् महावीर प्रभु को तीन वार आदक्षिण-प्रदक्षिण किया, (**करित्ता वंदइ णमंसइ**) फिर वाद में वदना एवं

ઉત્પન્ન થયો તે પણ સામાન્યરૂપથી જ થયો હતો. આવીજ રીતે પોતાના પ્રશ્નનો ઉત્તર સાંભળવાને માટે તેમના ચિત્તમાં જે ઉત્કંઠા જાગ્રત થઇ તે પણ સામાન્યરૂપનીજ હતી. પણ ત્યાર પછી (उप्पण्णसड्ढे) આદિ પદો દ્વારા જે સૂત્રકારે શ્રદ્ધાને ઉત્પન્ન આદિ રૂપથી પ્રકટ કરી છે તેથી શ્રદ્ધા આદિમાં ઉત્તરોત્તર વિશેષતા જાણવી જોઇએ. આ પ્રકારના તે ગૌતમ પ્રભુ (उट्ठाए उट्ठेइ) 'ઉત્થાનશક્તિ દ્વારા પોતાના સ્થાનથી ઉઠયા, અને (**उट्ठित्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ**) ઉઠીને જ્યાં પ્રભુ શ્રમણ ભગવાન મહાવીર બિરાજમાન હતા ત્યાં પહોંચ્યા. (**उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेइ**) પહોંચતાં જ તેમણે શ્રમણ ભગવાન મહાવીર પ્રભુને ત્રણ

**वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता नच्चासण्णे नाइदूरे सुस्सूसमाणे णमंसमाणे अभिमुहे विणएणं पंजलिउडे पज्जुवासमाणे एवं वयासी ॥ सू०२ ॥**

**मूलम्—जीवे णं भंते ! असंजए अविरए अ-प्पडि-**

---

वन्दते नमस्यति, '**वंदित्ता णमंसित्ता**' वन्दित्वा नमस्यित्वा, '**नच्चासण्णे नाइदूरे**' नात्यासन्ने नातिदूरे '**सुस्सूसमाणे णमंसमाणे**' शुश्रूषमाणो नमस्यन् '**अभिमुहे विणएणं पंजलिउडे पज्जुवासमाणे एवं वयासी**' अभिमुखे विनयेन प्राञ्जलिपुटः पर्युपासीन एवमवादीत । प्राग् व्याख्यातम् ॥ सू०२ ॥

**टीका**—अथात्मन उपपातस्य कर्मबन्धपूर्वकत्वात् कर्मबन्धविषये पृच्छति-'**जीवे णं भंते !**' इत्यादि । '**जीवे णं भंते !**' जीवः खलु भदन्त '=भगवन् ! '**असंजए**' असंयत'=असंयमवान्-सर्वसावद्यानुष्ठानयुक्त, '**अविरए**' अविरत'=प्राणातिपातादिविर-

---

नमस्कार किया, (**वंदित्ता णमंसित्ता नच्चासण्णे नाइदूरे सुस्सूसमाणे णमंसमाणे अभिमुहे विणएणं पंजलिउडे पज्जुवासमाणे एवं वयासी**) वंदना नमस्कार करने के बाद फिर वे प्रभु के निकट सामने ही, न उनसे अति दूर न उनके अतिनिकट ही, किन्तु उचित स्थान पर विनयावनत होकर दोनों हाथों को जोड़कर बैठ गये, पश्चात् इस प्रकार बोले ॥सू.२॥

'**जीवे णं भंते !**' इत्यादि ।

गौतमने भगवान् से क्या पूछा ? इस बात को इस सूत्र द्वारा सूत्रकार प्रदर्शित करते है-(**भंते**) हे भदन्त ! जो (**जीवे**) जीव (**असंजए**) असंयमी है-सर्व सावद्य

---

वार આદક્ષિણપ્રદક્ષિણ કર્યું, (करित्ता वंदइ णमंसइ) પછી વંદના નમસ્કાર કર્યા. (वंदित्ता णमंसित्ता नच्चासण्णे नाइदूरे सुस्सूसमाणे णमंसमाणे अभिमुहे विणएणं पंजलिउडे पज्जुवासमाणे एवं वयासी) વંદના નમસ્કાર કર્યા પછી તેઓ પ્રભુની પાસે સામે જ, ન બહુ દૂર કે ન બહુ પાસે પણ-ઉચિત સ્થાને, વિનયથી નમ્ર બનીને બન્ને હાથ જોડીને બેસી ગયા. પછી આ પ્રકારે બોલ્યા (સૂ.૨)

'जीवे णं भंते' ઈત્યાદિ.

ગૌતમે ભગવાનને શું પૂછયું ?-એ વાતને આ સૂત્રદ્વારા સૂત્રકાર પ્રદર્શિત કરે છે,-(भंते) હે ભદન્ત ! જે (जीवे) જીવ (असंजए) અસંયમી છે-

**हय-पच्चक्खाय-पावकम्मे सकिरिए असंवुडे एगंतदंडे एगंत-बाले एगंतसुत्ते पावकम्मं अण्हाइ ?, हंता ! अण्हाइ ॥ सू०३ ॥**

तिरहितः, तथा-'**अ-प्पडिहय-पच्चक्खाय-पावकम्मे**' अ-प्रतिहत-प्रत्याख्यात-पापकर्मा-प्रतिहतानि अतीतकालकृतानि निन्दाद्वारेण, प्रत्याख्यातानि भविष्यत्कालभावीनि निवृत्तिद्वारेण, पापकर्माणि=प्राणातिपातादिरूपाणि येन स प्रतिहत-प्रत्याख्यात-पापकर्मा, भूतभाविपापनिषेधाभावेन यस्तथा न भवति स -अ-प्रतिहत-प्रत्याख्यात-पापकर्मा, अतएव-'**सकिरिए**' सक्रियः=कायिक्यादिक्रियायुक्तः, '**असंवुडे**' असंवृतः=अनिरुद्धेन्द्रियः, '**एगंतदंडे**' एकान्तदण्ड.-एकान्तेनैव=सर्वथैव दण्ड- यत्यात्मानं परं वा पापप्रवृत्तितो यः स एकान्तदण्डः, '**एगंतबाले**' एकान्त-बाल -सर्वथा मिथ्यादृष्टिः, अतएव-'**एगंतसुत्ते**' एकान्तसुप्तः=सर्वथा मिथ्यात्वनिद्रया प्रसुप्तः, '**पावकम्मं**' पापकर्म=प्राणातिपातादिकर्म '**अण्हाइ**' आस्रवति=बध्नाति किम् ?, भगवानाह-'**हंता अण्हाइ**' हन्ताऽऽस्रवति-हन्त इति स्वीकारे, आस्रवति=बध्नाति-इदमुत्तरवाक्यम् ॥सू० ३॥

अनुष्ठान करने में लगा हुआ है, (**अविरए**) प्राणातिपातादिक से जिसने विरति धारण नहीं की है, तथा (**अ-प्पडिहय-पच्चक्खाय-पावकम्मे**) लगे हुए पापकर्मों का निंदा द्वारा तथा भविष्यत् काल में बंधनेवाले पापकर्मों का प्रत्याख्यान-निवृत्ति-द्वारा जिसने परित्याग नहीं किया है, (**सकिरिए**) कायिकी आदि क्रियाओं से जो युक्त है, इसीलिये (**असंवुडे**) असंवृत-अनिरुद्धेन्द्रिय बना हुआ है, (**एगंतदंडे**) अपने को अथवा परको जो पापमय प्रवृत्ति से दंडित-दुःखित करता रहता है, जो (**एगंतबाले**) एकान्तमिथ्यादृष्टि है और (**एगंतसुत्ते**) सर्वथा मिथ्यात्व की निद्रा में गाढ सुप्त बना हुआ है, वह (**पावकम्मं**) पापकर्म-प्राणातिपातादिक कर्मों का (**अण्हाइ**) बन्ध करता है क्या ? तब भगवान् ने कहा, (**हंता**) हां गौतम ! (**अण्हाइ**) बन्ध करता है।

સર્વ સાવદ્ય અનુષ્ઠાન કરવામાં તત્પર રહેલો છે, (अविरए) પ્રાણાતિપાત આદિકથી જેણે વિરતિ ધારણ કરી નથી, તથા (अ-प्पडिहय-पच्चक्खाय-पावकम्मे) લાગી રહેલાં પાપકર્મોનો નિંદા દ્વારા, તથા ભવિષ્ય કાળમા બંધાનારા પાપકર્મોનો પ્રત્યાખ્યાન-નિવૃત્તિ-દ્વારા, જેણે પરિત્યાગ કર્યો નથી, (सकिरिए) કાયિકી આદિ ક્રિયાઓથી જે યુક્ત છે, તેથી (असंवुडे) અસંવૃત-અનિરુદ્ધ ઇંદ્રિયોવાળો બન્યો છે, (एगंतदंडे) પોતાને અથવા પરને જે પાપમય પ્રવૃત્તિથી દંડિત-દુખિત કર્યા કરે છે એવો તે (एगंतबाले) એકાંત મિથ્યાદૃષ્ટિ કે જે (एगंतसुत्ते) સર્વથા મિથ્યાત્વની ઘોર નિદ્રામાં સુતેલો છે, તે (पावकम्मं) પાપકર્મ- પ્રાણાતિપાત આદિક કર્મોનો (अण्हाइ) બંધ કરે છે કે શું ? ત્યારે ભગવાને કહ્યું-(हंता) હા ગૌતમ ! (अण्हाइ) બંધ કરે છે.

**मूलम्—जीवे णं भंते ! असंजए जाव एगंतसुत्ते मोहणिज्जं पावकम्मं अण्हाइ ? हंता ! अण्हाइ ॥ सू०४ ॥**

टीका—'जीवे णं भंते !' इत्यादि। 'जीवे णं भंते !' जीवः खलु भदन्त ! 'असंजए जाव एगंतसुत्ते' असयतो यावदेकान्तसुप्त 'मोहणिज्जं पावकम्मं' मोहनीय पापकर्म 'अण्हाइ' आस्रवति=बध्नाति किम् ?—इति प्रश्ने, उत्तरमाह--'हंता ! अण्हाइ' हन्त ! आस्रवति=बध्नातीत्यर्थः ॥ सू० ४ ॥

**भावार्थ**—जो जीव असंयमी है, सावद्य अनुष्ठानों से निवृत्त नहीं हुआ है, पूर्वकृत पापकर्मों की जिसने निंदा नहीं की, तथा भविष्यत्—काल में मै ऐसे पापकर्म नहीं करूँगा—इस प्रकार अकरणभाव से जिसने उनका परित्याग नहीं किया, कायिकी आदि क्रियाओं में जो मग्न है, स्वयं दुःखित होता है और दूसरों को भी अपनी कुत्सित प्रवृत्ति से दुःखित करता रहता है ऐसा मिथ्यात्व की गाढ अंधेरी में रहा हुआ मिथ्यादृष्टि जीव पापकर्मों का बंधक होता है या नहीं ?—इस प्रकार गौतम के प्रश्न को सुनकर प्रभु ने कहा—हां ! होता है ॥ सू० ३ ॥

'जीवे णं भंते !' इत्यादि।

(**जीवे णं भंते ! असंजए जाव एगंतसुत्ते**) हे भदंत ! वही पूर्वोक्त असंयम आदि अवस्था से लेकर सर्वथा मिथ्यात्वरूपी गाढनिद्रा में प्रसुप्त असंयमी मिथ्यादृष्टि जीव (**मोहणिज्जं**) मोहनीय कर्म का (अण्हाइ) बंध करता है क्या ? (**हंता**) हां गौतम ! (**अण्हाइ**) बन्ध करता है ॥ सू. ४ ॥

ભાવાર્થ-જે જીવ અસંયમી છે, સાવદ્ય અનુષ્ઠાનોથી નિવૃત્ત થતો નથી, પૂર્વે કરેલાં પાપ કર્મોની જેણે નિંદા કરી નથી, તથા ભવિષ્ય કાલમાં એવાં પાપ કર્મ હું નહિં કરૂં-એ પ્રકારના અકરણભાવથી જેણે તેનો પરિત્યાગ કર્યો નથી, કાયિકી આદિ ક્રિયાઓમા જે મગ્ન છે, પોતે દુઃખિત થાય છે અને બીજાને પણ પોતાની કુત્સિત પ્રવૃત્તિથી દુઃખિત કરે છે એવા મિથ્યાત્વના ગાઢ અંધારામાં રહેલો એવો મિથ્યાદૃષ્ટિ જીવ પાપકર્મોનો બંધક થાય છે યા નહિ ? આ પ્રકારના ગૌતમનો પ્રશ્નને સાંભળીને પ્રભુએ કહ્યું—હા ! થાય છે. (સૂ. ૩)

'जीवे णं भंते' ઇત્યાદિ.

(जीवे णं भंते ! असंजए जाव एगंतसुत्ते) હે ભદન્ત ! ઉપર કહેલ અસંયમ આદિ અવસ્થાથી લઇને સર્વથા મિથ્યાત્વરૂપી ગાઢ નિદ્રામાં સુતેલા અસંયમી-મિથ્યાદૃષ્ટિ જીવ (मोहणिज्जं) મોહનીય કર્મનો (अण्हाइ) બંધ કરે છે શું ? (हंता) હા ગૌતમ ! (अण्हाइ) બંધ કરે છે. (સૂ. ૪)

**मूलम्—जीवे णं भंते ! मोहणिज्जं कम्मं वेदेमाणे किं मोहणिज्जं कम्मं बंधइ ?, वेयणिज्जं कम्मं बंधइ ? गोयमा ! मोहणिज्जं पि कम्मं बंधइ, वेयणिज्जं पि कम्मं बंधइ, णण्णत्थ चरिम-**

---

टीका—'जीवे णं भते !' इत्यादि। '**जीवे णं भते !**' जीवः खलु भदन्त ! '**मोहणिज्जं कम्मं वेदेमाणे**' मोहनीयं कर्म वेदयन्=अनुभवन् '**किं मोहणिज्जं कम्मं बंधइ**' किं मोहनीयं कर्म बध्नाति ?, अथवा—'**वेयणिज्जं कम्मं बंधइ ?**' वेदनीयं कर्म बध्नाति किम् ? इति प्रश्ने सत्युत्तरमाह—'**गोयमा ! मोहणिज्जं पि कम्मं बंधइ वेयणिज्जं पि कम्मं बंधइ**' गौतम ! मोहनीयमपि कर्म बध्नाति वेदनीयमपि कर्म बध्नाति, '**णण्णत्थ चरिममोहणिज्जं कम्मं वेदेमाणे**' केवलं चरममोहनीयं कर्म वेदयन्, '**णण्णत्थ**' इति नवरं—केवलमित्यर्थः, सूक्ष्मसम्परायदशमगुणस्थानके लोभमोहनीयसूक्ष्मकि-

---

**'जीवे णं भंते'** इत्यादि।

(**भंते**) हे भदंत ! (**मोहणिज्जं कम्मं**) मोहनीय कर्म का (**वेदेमाणे**) अनुभव करने वाला (**जीवे णं**) जीव (**किं**) क्या (**मोहणिज्जं कम्मं**) मोहनीय कर्म का (**बंधइ**) बंध करता है ? (**वेयणिज्जं कम्मं बंधइ**) अथवा वेदनीय कर्म का बंध करता है ? इन दो प्रश्नों का उत्तर प्रभु इस प्रकार देते है—(**गोयमा**) हे गौतम ! (**मोहणिज्जं पि कम्मं बंधइ वेयणिज्जं पि कम्मं बंधइ**) मोहनीय कर्म का अनुभव करनेवाला जीव मोहनीय कर्म का भी बंध करता है और वेदनीय कर्म का भी बंध करता है, (**णण्णत्थ चरिममोहणिज्जं कम्मं वेदेमाणे वेयणिज्जं कम्मं बंधइ**) केवल सूक्ष्मसंपराय नामके १० वें गुणस्थान में चरम—मोहनीय—सूक्ष्मलोभ—को वेदन करने वाला जीव वेदनीय कर्म का बंध करता है, क्यों कि अयोगी-

---

'जीवे णं भंते' ઇત્યાદિ.

(भते) હે ભદંત ! (मोहणिज्जं कम्मं) મોહનીય કર્મનો (वेदेमाणे) અનુભવ કરવાવાળો (जीवे) જીવ (किं) શું (मोहणिज्जं कम्मं) મોહનીય કર્મોનો (बंधइ) બંધ કરે છે ? (वेयणिज्जं कम्मं बंधइ) અથવા વેદનીય કર્મનો બંધ કરે છે? આ બે પ્રશ્નોના ઉત્તર પ્રભુ આ પ્રકારે આપે છે—(गोयमा) હે ગૌતમ ! (मोहणिज्जं पि कम्मं बंधइ वेयणिज्जं पि कम्मं बंधइ) મોહનીય કર્મનો અનુભવ કરનારા જીવ મોહનીય કર્મનો પણ બંધ કરે છે અને વેદનીય કર્મનો પણ બંધ કરે છે. (णण्णत्थ चरिममोहणिज्जं कम्मं वेदेमाणे वेयणिज्जं कम्मं बंधइ) કેવલ સૂક્ષ્મ સંપરાય નામના ૧૦ દશમા ગુણસ્થાનમાં ચરમ મોહનીય—સૂક્ષ્મલોભનું વેદન

**मोहणिज्जं कम्मं वेदेमाणे वेयणिज्जं कम्मं बंधइ, णो मोहणिज्जं कम्मं बंधइ ॥ सू०५ ॥**

ट्टिकारूप चरममोहनीयमित्युच्यते, तद्वेदयन् जीव', '**वेयणिज्जं कम्मं बंधइ**' वेदनीयं कर्म बध्नाति, यतो हि अयोगिन एव वेदनीयकर्मणो बन्धाभावः, '**णो मोहणिज्जं कम्मं बंधइ**' नो मोहनीयं कर्म बध्नाति—सूक्ष्मसपरायस्य मोहनीयायुष्कवर्जानां षण्णामेव प्रकृतीनां बन्धकत्वादिति ॥ सू० ५ ॥

नामक चौदहवे गुणस्थान में ही वेदनीय कर्म के बन्ध का अभाव है; (**णो मोहणिज्जं कम्मं बंधइ**) इसलिये सूक्ष्मसपराय वाला जीव मोहनीय एवं आयुकर्म को छोड़कर शेष ज्ञानावरणीयादि छ प्रकृतियों का बन्धक होता है ।

**भावार्थ**—प्रश्न इस प्रकार है कि मोहनीय कर्म का वेदन करने वाला जीव मोहनीय कर्म का बंध करता है कि वेदनीय कर्म का बन्ध करता है ? **उत्तर**—वेदनीय कर्म का भी बंध करता है और मोहनीय कर्म का भी बंध करता है, परन्तु अन्तिम मोहनीय—सूक्ष्मलोभ का क्षय करते समय (बारहवे गुणस्थान में) वेदनीय कर्म का तो बंध करता है परन्तु मोहनीय कर्म का बध नही करता । कारण कि मोहनीय कर्म का क्षय १० वें गुणस्थान में ही हो जाता है, आगे सिर्फ ११ वेदनीय कर्म का बंध होता है सो यह भी केवल तेरहवे गुणस्थान तक ही जानना चाहिये; क्यों कि १४ वें गुणस्थान में वेदनीय कर्म के बंध का अभाव है ॥ सू.५ ॥

કરનારા જીવ વેદનીય કર્મનો બંધ કરે છે. કેમકે અયોગી નામના ચૌદમા ગુણસ્થાનમાં જ વેદનીય કર્મના બંધનો અભાવ છે. (णो मोहणिज्जं कम्मं बंधइ) આ માટે સૂક્ષ્મસપરાયવાળા જીવ મોહનીય તેમજ આયુકર્મને છોડીને બાકીની જ્ઞાનાવરણીય આદિ છ પ્રકૃતિઓના બંધક થાય છે.

ભાવાર્થ-પ્રશ્ન એવા પ્રકારનો છે કે મોહનીયકર્મનું વેદન કરવાવાળા જીવ મોહનીય કર્મનો બંધ કરે છે કે વેદનીય કર્મનો બંધ કરે છે?

ઉત્તર-વેદનીય કર્મનોય બધ કરે છે અને મોહનીય કર્મનો પણ બંધ કરે છે. પરંતુ અતિમ મોહનીય સૂક્ષ્મલોભનો ક્ષય કરતી વખતે (બારમા ગુણસ્થાનમા) વેદનીય કર્મનો તો બધ કરે જ છે, પરંતુ મોહનીય કર્મનો બધ કરતા નથી, કારણ કે મોહનીય કર્મનો ક્ષય ૧૦ માં ગુણસ્થાનમાં જ થઈ જાય છે. આગળ માત્ર ૧ વેદનીય કર્મનો જ બંધ થાય છે, અને તે પણ કેવળ તેરમા ગુણસ્થાનં સુધી જ જાણવો જોઈએ, કેમકે ૧૪ માં ગુણસ્થાનમા વેદનીય કર્મના બધનો અભાવ છે. (સૂ. ૫)

**मूलम्—जीवे णं भंते ! असंजए जाव एगंतसुत्ते उस्सण्ण-तस-पाण-घाई कालं किच्चा णेरइएसु उववज्जइ ?, हंता ! उववज्जइ ॥ सू० ६ ॥**

**मूलम्—जीवे णं भंते ! असंजए अविरए अ-प्पडिहय-प-**

**टीका**—अथोपपातं पृच्छति-'**जीवे णं भंते !**' इत्यादि। '**जीवे णं भंते !**' जीवः खलु हे भदन्त ! '**असंजए जाव एगंतसुत्ते**' असंयतो यावदेकान्तसुप्तः-प्राग् व्याख्यातः, '**उस्सण्ण-तस-पाण-घाई**' प्रायस्त्रस-प्राण-घाती-'**उस्सण्ण**' इतिप्रायः= बाहुल्येन त्रसप्राणान्=त्रसप्राणिनो हन्ति तच्छीलः, '**कालमासे**' मरणसमये, '**कालं किच्चा**' कालं कृत्वा-मरणं विधाय, '**णेरइएसु उववज्जइ**' नैरयिकेषूत्पद्यते किम् ? इति प्रश्ने, उत्तरमाह भगवान्-'**हंता ! उववज्जइ**' हन्त ! उत्पद्यते=नारकेषु जायते ॥ सू० ६ ॥

**टीका**—'**जीवे णं भंते**' इत्यादि। '**जीवे णं भंते !**' जीवः खलु हे

'**जीवे णं भंते !**' इत्यादि !

गौतम उपपात के विषय में पूछते है-(**जीवे णं भंते ! असंजए जाव एगंतसुत्ते उस्सण्ण-तसपाण-घाई**) हे भदंत ! वही पूर्वोक्त असंयम आदि अवस्था से लेकर सर्वथा मिथ्यात्वरूपी गाढनिद्रा में प्रसुप्त मिथ्यादृष्टि जीव जो बहुलता से त्रसजीवो की हिंसा करने में लवलीन रहा करता है वह (**कालमासे**) मृत्यु के समय में (**कालं किच्चा**) मर कर (**णेरइएसु**) नारकियों में (**उववज्जइ**) उत्पन्न होता है क्या ? उत्तर-(**हंता**) हां गौतम ! (**उववज्जइ**) उत्पन्न होता है ॥ सू. ६ ॥

'जीवे णं भंते' ઇત્યાદિ.

ગૌતમ ઉપપાતના વિષયમાં પૂછે છે-(जीवे णं भंते ! असंजए जाव एगंतसुत्ते उस्सण्ण-तस-पाण-घाई) હે ભદંત ! ઉપર કહેલ અસંયમ આદિ અવસ્થાથી લઈને સર્વથા મિથ્યાત્વ રૂપી ગાઢનિદ્રામાં સુતેલો મિથ્યાદૃષ્ટિ જીવ જે ઘણોખરો ત્રસ જીવોની હિંસા કરવામાં મચ્યો રહે છે, તે (कालमासे) મૃત્યુ-સમયે (कालं किच्चा) મરીને (णेरइएसु) નારકીઓમાં (उववज्जइ) ઉત્પન્ન થાય છે શું ? ઉત્તર-(हंता) હા ગૌતમ ! (उववज्जइ) ઉત્પન્ન થાય છે. (सू. ६)

च्चक्खाय- पावकम्मे इओ चुए पेच्च देवे सिया?, गोयमा! अत्थेगइया देवे सिया, अत्थेगइया णो देवे सिया ॥ सू० ७॥

मूलम्—से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ—अत्थेगइया

---

भदन्त! 'असंजए अविरए अ–प्पडिहय–पच्चक्खाय–पावकम्मे' असंयतः अविरतः अ–प्रतिहत–प्रत्याख्यात–पापकर्मा–अप्रत्याख्यातपूर्वः, 'इओ चुए' इतः=मर्त्यलोकात्, च्युतः=मृतः, 'पेच्च देवे सिया' प्रेत्य देवः स्यात्–प्रेत्य=जन्मान्तरे देवः=देवगतिसमापन्नः स्यात् किम्? इति प्रश्ने भगवानुत्तरं कथयति–'गोयमा! अत्थेगइया देवे सिया' गौतम? अस्त्येककः देवः स्यात्–कश्चिद्देवः स्यात्, 'अत्थेगइया णो देवे सिया' अस्त्येकको नो देवः स्यात्–कश्चिद्देवगतिसमापन्नो न भवेत् ॥ सू० ७ ॥

टीका—'से केणट्ठेण भंते!' इत्यादि। 'से केणट्ठेणं भंते! 'एवं वुच्चइ–अत्थेगइया देवे सिया अत्थेगइया णो देवे सिया?' तत्केनार्थेन भदन्त! एवमुच्यते ऽस्त्ये-

---

'जीवे णं भंते!' इत्यादि।

(भंते) हे भदंत! (असंजए अविरए अ–प्पडिहय–पच्चक्खाय–पावकम्मे जीवे) जो जीव असयमी है, अविरतिसंपन्न है, पापकर्मों का जिसने निंदाद्वारा एवं विनिवृत्तिद्वारा प्रत्याख्यान नहीं किया है ऐसा वह जीव, (इओ चुए) इस मर्त्यलोक से मर कर (पेच्च) परलोक में–जन्मान्तर में (देवे सिया) क्या देवलोक में उत्पन्न हो सकता है? उत्तर–(गोयमा) हे गौतम! (अत्थेगइया देवे सिया अत्थेगइया णो देवे सिया) कितनेक जीव देवलोक में उत्पन्न होते है और कितनेक जीव देवलोक मे उत्पन्न नहीं भी होते है ॥ सू ७ ॥

---

'जीवे णं भंते' ઈત્યાદિ.

(भंते) હે ભદન્ત! (असंजए अविरए अ–प्पडिहय–पच्चक्खाय–पावकम्मे जीवे) જે જીવ અસયમી છે, અવિરતિસંપન્ન છે, પાપકર્મોનું જેણે નિંદા દ્વારા તેમજ વિનિવૃત્તિ દ્વારા પ્રત્યાખ્યાન કર્યું નથી એવા તે જીવ (इओ चुए) આ મર્ત્યલોકમાથી મરીને (पेच्च) પરલોકમાં–જન્માંતરમા (देवे सिया) શું દેવલોકમા ઉત્પન્ન થઇ શકે છે? (गोयमा) ઉત્તર–હે ગૌતમ! (अत्थेगइया देवे सिया अत्थेगइया णो देवे सिया) કેટલાક જીવ દેવલોકમાં ઉત્પન્ન થાય છે અને કેટલાક જીવ દેવલોકમાં ઉત્પન્ન નથી પણ થતા. (સૂ. ૭)

**देवे सिया, अत्थेगइया णो देवे सिया? गोयमा! जे इमे जीवा गा-मा–गर–णयर–णिगम–रायहाणि–खेड–कब्बड-मडंब-दोणमु-ह–पट्टणा–सम–संबाह सण्णिवेसेसु अकामतण्हाए अकाम-**

कको देवः स्यात्, अस्त्येकको न देवः स्यात्?—एव यदुच्यते यदेको देवो भवति एको न भवतीति किंनिमित्तकोऽयं भेदः? इति प्रश्नः, भगवानुत्तरमाह—'**गोयमा!** जे इमे जीवा **गामा–गर–णयर–णिगम–रायहाणि–खेड–कब्बड–मडंब–दोणमुह–पट्टणा-सम–संबाह–सण्णिवेसेसु**' गौतम! य इमे जीवा ग्रामा–ऽऽकर-नगर-निगम-राजधानी-खेट–कर्वट–मडम्ब–द्रोणमुख–पट्टनाऽऽश्रम–संवाध–सन्निवेशेषु–प्रागुक्त्याख्यातरूपेषु '**अकामतण्हाए**' अकामतृष्णया–अकामाना=निर्जराद्यनभिलाषिणां सतां तृष्णा=तृट्–अकामतृष्णा तया, 'अ-

'**से केणट्ठेणं भंते!**' इत्यादि।

प्रश्न–(भंते!) हे भदंत! (**से केणट्ठेणं एवं वुच्चइ अत्थेगइया देवे सिया अत्थेगइया देवे णो सिया**) आप ऐसा किस कारण से कहते है कि कितनेक जीव देवलोक में उत्पन्न हो सकते है और कितनेक नहीं हो सकते है? उत्तर—(**गोयमा**) गौतम! सुनो, (**जे इमे जीवा गामा–गर–णयर–णिगम–रायहाणि–खेड–कब्बड–मडंब–दोणमुह-पट्टणा–सम–संवाह–सण्णिवेसेसु अकामतण्हाए अकामछुहाए अकामबंभचेरवासेणं अकाम–अण्हाणग–सीया–यव–दंस-मसग–सेय–जल्ल–मल्ल–पंक–परितावेणं अप्पतरो वा भुज्जतरो कालं अप्पाणं परिकिलेसंति, परिकिलेसित्ता वा कालमासे कालं किच्चा अण्णयरेसु वाणमंतरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववत्तारो भवंति**) जो जीव प्रकोष्ट सहित ग्राम में, सुवर्णादिक की खानों में, कर-

'से केणट्ठेणं भंते!' ईत्यादि।

પ્રશ્ન—(भंते) હે ભદંત! (से केणट्ठेणं एवं वुच्चइ अत्थेगइया देवे सिया अत्थेगइया देवे णो सिया) આપ એમ શું કારણથી કહો છો કે કેટલાક જીવ દેવલોકમાં ઉત્પન્ન થઈ શકે છે અને કેટલાક નથી થઈ શકતા? ઉત્તર-(गोयमा) ગૌતમ! સાભળો (जे इमे जीवा गामा–गर–णयर–णिगम–रायहाणि–खेड कब्बड-मडंब–दोणमुह–पट्टणा–सम–संबाह–सण्णिवेसेसु अकामतण्हाए अकामछुहाए अकाम-बंभचेरवासेणं अकाम–अण्हाणग–सीया–यव दंस–मसग–सेय-जल्ल–मल्ल-पंक–परिता-वेणं अप्पतरो वा भुज्जतरो वा कालं अप्पाणं परिकिलेसंति, परिकिलेसित्ता कालमासे कालं किच्चा अण्णयरेसु वाणमंतरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववत्तारो भवंति) જે જીવ કોટ બાંધેલા ગામમાં, સુવર્ણની ખાણોમાં, કર વગરના નગરમાં, વ્યાપારીઓની વસ્તીવાળા નિગમમાં, રાજ-

छुहाए अकाम–बंभचेर–वासेणं अकाम–अण्हाणग–सीया–यव–दंस–मसग–सेय–जल्ल–मल्ल–पंक – परितावेणं अप्पतरो वा

कामछुहाए ’ अकामक्षुधया–अकामानां=निर्जराद्यनभिलाषिणां सतां क्षुधा–अकामक्षुधा तया, ‘ अकाम–बंभचेर–वासेणं ’ अकाम–ब्रह्मचर्य–वासेन–अकामानां=निर्जराद्यनपेक्षाणां–ब्रह्मचर्ये वासः तेन, ‘ अकाम–अण्हाणग–सीया–यव–दंस–मसग–सेय–जल्ल–मल्ल–पंक–परितावेणं ’ अकामा–ऽस्नानक–शीता–ऽऽतप–दंश–मशक–स्वेद–जल्ल–मल्ल–पङ्क–परितापेन–अकामानां=निर्जराद्यनपेक्षमाणानां यानि स्नानाऽभावादीनि पङ्कान्तानि तेषां परितापेन=सन्तापेन, ‘ अप्पतरो वा भुज्जतरो वा कालं अप्पाणं परिकिलेसंति ’ अल्पतरं वा

रहित नगर मे, व्यापारियों की वस्तीवाले निगम में, राजा की राजधानी में, धूल के कोट से युक्त खेडे में, कुत्सित जन की वस्तीवाले कर्वट में, नजदीक २ ग्रामवाले मडंव में, जल और स्थल इन दोनों प्रकार के मार्ग वाले द्रोणमुख (वदर) में, सर्ववस्तु जहां मिलती हों ऐसे पाटण में, तापसों के आश्रमों में, पर्वत के नजदीक वाले सवाध में, एव गोपालों की प्रधान वस्तीवाले सन्निवेश में, अकामनिर्जरासे–मनविना परवश हो कर खाने पीने की वस्तु न मिल सकने के कारण क्षुधा–तृषा सहन करने से, अकामब्रह्मचर्य से–इच्छा होने पर भी स्त्री आदि की अप्राप्ति से ब्रह्मचर्य पालन करने से, अकामस्नान से–इच्छा होने पर भी पानी न मिल सकने के कारण स्नान नहीं करने से, वस्त्रादिक न मिल सकने के कारण शीत–आतप जन्य दुःख सहने से, दशमशक के द्वारा काटे जाने का कष्ट सहन करने से, स्वेद, जल्ल, मल्ल एवं पक आदि को शरीर से दूर नहीं करने से, अर्थात् इन के द्वारा उत्पन्न परिताप के सहन करने

युक्त राजधानीमा, धूળना કોટવાળા ગામડામા, કુત્સિત જનોના નિવાસરૂપ કર્બટમા, પાસે પાસે ગામવાળા મડબમાં, જલ અને સ્થલ એ બન્ને પ્રકારના માર્ગવાળા દ્રોણુમુખ (બદર)મા, સર્વ વસ્તુ જ્યા મળતી હોય એવા પાટણમા, તપસ્વીઓના આશ્રમોમાં, પર્વતની પાસેના સબાધમા, તેમજ ગોવાળની મુખ્ય વસ્તીવાળા સન્નિવેશમાં, અકામનિર્જરાથી–મનવિના પરવશ થઈને–ખાવાપીવાની વસ્તુ મળી ન શકવાથી ભૂખતરસ સહન કરીને, અકામ–બ્રહ્મચર્યથી–ઇચ્છા હોવા છતા સ્ત્રી આદિની અપ્રાપ્તિથી બ્રહ્મચર્ય પાલન કરીને, અકામસ્નાનથી–ઇચ્છા હોવા છતા પાણી ન મળી શકવાના કારણે સ્નાન નહિ કરીને, વસ્ત્રાદિક ન મળી શકવાના કારણે ઠ ડી–ગરમીથી થતા દુ ખ સહન કરીને, દંશમશકથી કરડાઈ જવાનુ કષ્ટ સહન કરીને, સ્વેદ, જલ્લ, મલ્લ તેમજ પક આદિને શરીરથી દૂર નહિ કરીને એટલે, આથી ઉત્પન્ન થતા

**भुज्जतरो वा कालं अप्पाणं परिकिलेसंति, परिकिलेसित्ता कालमासे कालं किच्चा अण्णयरेसु वाणमंतरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववत्तारो भवंति, तहिं तेसिं गई, तहिं तेसिं ठिई, तेहिं तेसिं उववाए पण्णत्ते । तेसिं णं भंते! देवाणं केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ?, गोयमा ! दसवाससहस्साइं ठिई**

---

भूयस्तर वा कालमात्मानं परिक्लेशयन्ति—‘**अप्पतरो भुज्जतरो**’ इत्युभयत्र द्वितीयार्थे प्रथमा, ‘**परिकिलेसित्ता**’ परिक्लेश्य ‘**कालमासे**’ कालमासे=कालावसरे ‘**कालं किच्चा**’ काल कृत्वा ‘**अण्णयरेसु वाणमंतरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववत्तारो भवंति**’ अन्यतमेषु व्यन्तरेषु देवलोकेषु देवत्वेनोपपत्तारो भवन्ति—अन्यतमेषु=बहूनां मध्ये एकतरेषु देवलोकेषु उपपातं प्राप्नुवन्ति, ‘**तहिं तेसिं गई तहिं तेसिं ठिई तहिं तेसिं उववाए पण्णत्ते**’ तत्र=देवलोके तेषां गतिः, तत्र तेषां स्थितिः, तत्र तेषामुपपात प्रज्ञप्त । ‘**तेसिं णं भंते**’ **देवाणं केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता**’ तेषां खलु भदन्त ! देवानां कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ?, ‘**गोयमा ! दसवाससहस्साइं ठिई पण्णत्ता**’ हे गौतम ! दशवर्षसहस्राणि स्थिति प्रज्ञप्ता—वर्षाणां दशसहस्राणि

---

से; चाहे ये सब कष्ट जीव अल्पकाल तक सहे या बहुतकाल तक सहे, परन्तु इन कष्टों से जो अपनी आत्मा को क्लेशित करते है वे मरणकाल प्राप्त होने पर मर कर किसी एक व्यन्तर-देवो के देवलोक में देवरूप से उत्पन्न होते है, (**तहिं तेसिं गई तहिं तेसिं ठिई तहिं तेसिं उववाए पण्णत्ते**) इसलिये वहीं पर उनकी गति, वहीं पर उनकी स्थिति और वहां पर उनका उपपात होता है। (**तेसिं णं भंते ! देवाणं केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता**) हे भदंत ! वहां पर उन देवो की कितने काल तक की स्थिति होती है ? (**गोयमा ! दसवाससहस्साइं ठिई पण्णत्ता**) गौतम ! सुनो, वहां पर उनकी स्थिति दसहजार वर्ष की होती

---

परितापने सहन करीने—चाहे ते બધાં કષ્ટ જીવ થોડો વખત સહન કરે અથવા લાંબા કાળ સુધી સહન કરે પરંતુ આ કષ્ટોથી જે પોતાના આત્માને ક્લેશિત કરે છે તે મરણકાલ પ્રાપ્ત થતાં મરીને કોઈ એક વ્યન્તર દેવોના દેવલોકમાં દેવરૂપે ઉત્પન્ન થાય છે, (तहिं तेसिं गई तहिं तेसिं ठिई तहिं तेसिं उववाए पण्णत्ते) આથી ત્યાં તેમની ગતિ, ત્યાં તેમની સ્થિતિ, અને ત્યાંજ તેમનો ઉપપાત થાય છે. (तेसिं णं भंते ! देवाणं केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ?) હે ભદંત ! ત્યાં તે દેવોની કેટલો કાળ સ્થિતિ હોય છે ? (गोयमा ! दसवास-

**पण्णत्ता । अत्थि णं भंते ! तेसिं देवाणं इड्ढीइ वा जुईइ वा जसेइ वा बलेइ वा वीरिएइ वा पुरिसक्कार–परक्कमेइ वा ?, हंता ! अत्थि। ते णं भंते ? देवा परलोगस्स आराहगा ?, णो इणट्ठे समट्ठे ॥ सू० ८ ॥**

यावत् तत्र तेषां स्थितिः प्रज्ञप्ता । '**अत्थि णं भंते** ! **तेसिं देवाणं इड्ढीइ वा जुई-इ वा जसेइ वा बलेइ वा वीरिएइ वा पुरिसक्कारपरक्कमेइ वा ?**' अस्ति खलु हे भदन्त ! तेषां देवानामृद्धिरिति वा, द्युतिरिति वा, यश इति वा, बलमिति वा, वीर्यमिति वा, पुरुष-कारपराक्रम इति वा, ?, तेषां देवानामृद्ध्यादयो विद्यन्ते नवेति प्रश्नः, उत्तरमाह–'**हंता** ! **अत्थि**' हन्त ! अस्ति–तेषामृद्ध्यादयो वर्तन्ते इति भावः । पुनः–पृच्छति–'**ते णं भंते** ! **देवा परलोगस्स आराहगा ?**' ते खलु हे भदन्त ! देवाः परलोकस्याऽऽराधकाः=परलोकसा-धकाः सन्ति किम् ?, उत्तरमाह–'**णो इणट्ठे समट्ठे**' नाऽयमर्थः समर्थः=सङ्गतः–इत्युत्तरम्, अयमभिप्रायः–ये हि जीवाः सम्यग्दर्शनज्ञानपूर्वकानुष्ठानेन देवा भवन्ति, त एव नियमतयाऽऽनन्तर्येण पारम्पर्येण वा निर्वाणाकूलं भवान्तरं प्राप्नुवन्ति तदन्ये तु भाज्याः ॥ सू० ८ ॥

है। (**अत्थि णं भंते ! तेसिं देवाणं इड्ढीइ वा जुईइ वा जसेइ वा बलेइ वा वीरिएइ वा पुरिसक्कारपरक्कमेइ वा**) प्रभो ! वहां उन देवों मे परिवार आदि ऋद्धियाँ, शारीरिक कांति, यश, बल, वीर्य और पुरुषकार–पराक्रम ये सब बाते है या नहीं ?, (**हंता ! अत्थि**) उत्तर–हां हैं। (**ते णं भंते ! देवा परलोगस्स आराहगा**) हे भदंत ! वे देव परलोक के आराधक होते है क्या ? उत्तर–(**णो इणट्ठे समट्ठे**) यह अर्थ समर्थित नहीं है, क्योंकि जो जीव सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान एवं सम्यक्चारित्र–पूर्वक अनुष्ठान

सहस्साइं ठिई पण्णत्ता) ગૌતમ ! સાંભળો, ત્યાં તેમની સ્થિતિ દસ હજાર વર્ષની હોય છે. (अत्थि णं भंते ! तेसिं देवाणं इड्ढीइ वा जुईइ वा जसेइ वा बले-इ वा वीरिएइ वा पुरिसक्कारपरक्कमेइ वा) પ્રભો ! ત્યાં તે દેવોમાં પરિવાર આદિ ઋદ્ધિઓ, શારીરિક કાંતિ, યશ, બલ, વીર્ય અને પુરુષકાર–પરાક્રમ આ બધું હોય કે નહિ ? (हंता अत्थि) હા છે. (ते णं भंते ! देवा परलोगस्स आराहगा) હે ભદંત ! તે દેવો પરલોકના આરાધક હોય છે કે ? (णो इणट्ठे समट्ठे) આ અર્થ સમર્થિત નથી, કેમકે જે જીવ સમ્યગ્દર્શન સમ્યગ્જ્ઞાન

मूलम्—से जे इमे गामा–गर–णयर–णिगम–राय-हाणि–खेड–कब्बड–मडंब–दोणमुह–पट्टणा–सम–संबाह–स-ण्णिवेसेसु मणुया भवंति, तंजहा—अंडुबद्धगा णियलबद्धगा हडिब-

टीका—'से जे इमे' इत्यादि। 'से जे इमे' अथ य इमे 'गामा–गर–णयर–णिगम–रायहाणि–खेड–कब्बड–मडंब–दोणमुह–पट्टणा–सम–संबाह–स-ण्णिवेसेसु मणुया भवंति' ग्रामा–ऽऽकर–नगर–निगम–राजधानी–खेड–कर्वट–मडम्ब–द्रोणमुख–पट्टणाऽऽ–श्रम–सबाध–सन्निवेशेषु मनुजा भवन्ति–ग्रामादय. प्राग् व्याख्याता', तेषु य इमे मनुष्या भवन्ति, 'तंजहा' तद्यथा– 'अंडुबद्धगा' अण्डुबद्धकाः–अण्डूनि=अन्दु-

से देव होते है वे ही जीव आराधक होकर नियम से, आगामी एक ही मनुष्य भव से अथवा परम्परा से सात आठ भव से मुक्ति का लाभ करनेवाले होते है, अन्य नही। परन्तु जो अकामनिर्जरा करके देवता होते है वे सभी निर्वाणानुकूल भवान्तर प्राप्त करे ही यह नियम नहीं है ॥ सू० ८ ॥

'से जे इमे गामागर' इत्यादि।

(से जे इमे) जो ये जीव (गामा–गर–णयर–णिगम–रायहाणि–खेड-कब्बड–मडब–दोणमुह–पट्टणा–सम–संबाह–सण्णिवेसेसु मणुया भवंति) ग्राम में, आकर में, नगर मे, निगम में, राजधानी में, खेडे में, कर्वट मे, मडम्ब मे, द्रोणमुख में, पट्टण में, आश्रम में, सबाध में, एव सन्निवेश में मानव की पर्याय से उत्पन्न होते है और वे किसी अपराधवश (अंडुबद्धया) लोह एव काष्ठ के बधनो से हाथ पैरों को बांधकर

તેમજ સમ્યક્ચારિત્રપૂર્વક અનુષ્ઠાનથી દેવ થાય છે. તેજ જીવ આરાધક થઈને નિયમથી આગામી એક જ મનુષ્યના ભવથી અથવા પરંપરાથી સાત–આઠ ભવોથી મુક્તિનો લાભ મેળવનાર થાય છે. પરંતુ જે અકામનિર્જરા કરીને દેવતા થાય છે તે નિર્વાણ–અનુકૂલ ભવાંતર પ્રાપ્ત કરેજ એવો નિયમ નથી. (સૂ. ૮)

'से जे इमे गामागर–' ઇત્યાદિ.

(से जे इमे) જે આ જીવ (गामा–गर–णयर–णिगम–रायहाणि–खेड–कब्बड-मडंब–दोणमुह–पट्टणा–सम–संबाह–सण्णिवेसेसु मणुया भवंति) ગામમાં, આકરમાં, નગરમા, નિગમમાં, રાજધાનીમા, ખેડામાં, કર્બટમાં, મડંબમાં, દ્રોણમુખમાં, પાટણમાં, આશ્રમમાં, સંબાધમા, તેમજ સન્નિવેશમા માનવની પર્યાયમા ઉત્પન્ન

**द्धगा चारगबद्धगा हत्थच्छिण्णगा पायच्छिण्णगा कण्णच्छिण्णगा नक्कच्छिण्णगा ओट्ठच्छिण्णगा जिब्भच्छिण्णगा सीसच्छिण्णगा मुहच्छिण्णगा मज्झच्छिण्णगा वइकच्छच्छिण्णगा हियउप्पाडियगा**

कानि काष्ठमयानि लोहमयानि वा हस्तयोः पादयोर्वा बन्धनविशेषाः, तेषु बद्धकाः=बद्धा एव बद्धकाः, स्वार्थे कः, '**णिअलबद्धगा**' निगडबद्धकाः—निगडाः=लौहमया पादयोर्बन्धविशेषाः 'बेडी' इति प्रसिद्धाः तेषु बद्धकाः—निगडबद्धा इत्यर्थः, '**हडिबद्धगा**' हडिबद्धकाः—हडिः=खोटकः, तत्र बद्धकाः, '**चारगबद्धगा**' चारकबद्धकाः—चारकाः=कारागाराणि, तत्र बद्धकाः, '**हत्थच्छिण्णगा**' हस्तच्छिन्नकाः—हस्तौ छिन्नौ येषां ते तथा, '**पायच्छिण्णगा**' पादच्छिन्नकाः '**कण्णच्छिण्णगा**' कर्णच्छिन्नकाः, '**नक्कच्छिण्णगा**' नासिकाच्छिन्नकाः, '**ओट्ठच्छिण्णगा**' ओष्ठच्छिन्नकाः, '**जिब्भच्छिण्णगा**' जिह्वाच्छिन्नकाः, '**सीसच्छिण्णगा**' शीर्षच्छिन्नकाः, '**मुहच्छिण्णगा**' मुखच्छिन्नकाः, '**मज्झच्छिण्णगा**' मध्यच्छिन्नकाः, मध्यः=उदरदेशः, '**वइकच्छच्छिण्णगा**' वैकक्षच्छिन्नकाः—उत्तरासङ्गाऽऽकारेण वि-

एक स्थान पर रोककर रख दिये जाते है, (**णिअलबद्धगा**) बेडी से जकड दिये जाते है, (**हडिबद्धगा**) काष्ठ के खोडे मे पैर डलवाकर रोक दिये जाते है, (**चारगबद्धगा**) जेलखाने में बंद कर दिये जाते है, (**हत्थच्छिण्णगा**) तथा उनके दोनों हाथ काट दिये जाते है, (**पायच्छिण्णगा**) दोनों पैर छिन्नभिन्न कर दिये जाते है, (**कण्णच्छिण्णगा**) कान छेद दिये जाते है, (**नक्कच्छिण्णगा**) नाक छेद दी जाती है, (**ओट्ठच्छिण्णगा**) ओष्ठ छेद दिये जाते है, (**जिब्भच्छिण्णगा**) जिह्वा छेद दी जाती है, (**सीसच्छिण्णगा**) शिर छेद दिया जाता है, (**मुहच्छिण्णगा**) मुख छेद दिया जाता है, (**मज्झच्छिण्णगा**)

થાય છે અને તેઓ કોઇ અપરાધવશ (अंडुबद्धगा) લોઢાના તેમજ લાકડાના બંધનોથી હાથ–પગને બાધીને એક સ્થાન પર રોકી રખાય છે, (णिअलबद्धगा) બેડીથી જકડી દેવાય છે, (हडिबद्धगा) લાકડાના ખોડા (પકડ)માં પગ નખાવીને રોકી રખાય છે. (चारगबद्धगा) જેલખાનામાં પુરી દેવામાં આવે છે, (हत्थच्छिण्णगा) તથા તેમના બન્ને હાથ કાપી નાંખવામાં આવે છે, (पायच्छिण्णगा) બન્ને પગ છિન્ન ભિન્ન કરી નાખવામા આવે છે, (कण्णच्छिण्णगा) કાન છેદી નાખવામાં આવે છે. (नक्कच्छिण्णगा) નાક છેદી નખાય છે, (ओट्ठच्छिण्णगा) હોઠ છેદી નખાય છે. (जिब्भच्छिण्णगा) જીભ છેદી નખાય છે. (सीसच्छिण्णगा) શિર છેદી નખાય છે. (मुहच्छिण्णगा) મુખ છેદી નખાય છે. (मज्झच्छिण्णगा)

**णयणुप्पाडियगा दसणुप्पाडियगा वसणुप्पाडियगा गेवच्छिण्णगा तंडुलच्छिण्णगा कागणिमंसक्खावियगा ओलंवियगा लंबियगा**

दारिताः, '**हियउप्पाडियगा**' हृदयोत्पाटितका –उत्पाटितहृदया इत्यर्थः, '**णयणुप्पाडियगा**' नयनोत्पाटितका –उत्पाटितनयना=पृथक्कृतनेत्रा., '**दसणुप्पाडियगा**' दशनोत्पाटितका–उत्पाटितदशना=पृथक्कृतदन्ताः, '**वसणुप्पाडियगा**' वृषणोत्पाटितका–पृथक्कृताण्डकोशा., '**गेवच्छिण्णगा**' ग्रीवाच्छिन्नकाः=छिन्नग्रीवाप्रदेशा, '**तंडुलच्छिण्णगा**' तण्डुलच्छिन्नका–तण्डुलवत् कणशश्छिन्नाः, '**कागणिमंसक्खावियगा**' काकणीमांस–खादितकाः–काकणीमांसानि=देहोत्कृत्तमांसखण्डानि खादितानि येषां ते तथा, '**ओलंवियगा**' अवलम्बितका =रज्ज्वा बद्ध्वा कूपादौ पातिता, '**लंबियगा**' लम्बितका=तरुशाखादौ बद्ध्वा लम्बिता, '**घंसियगा**' घर्षितका=चन्दनवत् पाषाणादौ घृष्टाः, '**घोलि-**

मध्यभाग–पेट का भाग छेद दिया जाता है, ( **वइकच्छच्छिण्णगा** ) बायें कन्धे से लेकर दाहिने काँख के नीचे के भाग सहित मस्तक छेद दिया जाता है, ( **हियउप्पाडियगा** ) हृदय फाड़ दिया जाता है, ( **णयणुप्पाडियगा** ) दोनों आखे फोड़ दी जाती हैं, ( **दसणुप्पाडियगा** ) अडकोष निकाल लिये जाते है, ( **गेवच्छिण्णगा** ) गर्दन तोड–मरोड दी जाती है, ( **तंडुलच्छिण्णगा** ) तन्दुल की तरह कण२ करके उनके शरीर के खड २ कर दिये जाते हैं, ( **कागणि–मंस–क्खावियगा** ) उनकी देह से मांस काट २ कर कौओं को खिला दिया जाता है, ( **ओलंवियगा** ) रस्सी से बांधकर कुए में डाल दिये जाते हैं, ( **लंवियगा** ) वृक्ष की शाखा आदि पर बांधकर लटका दिये जाते है, ( **घंसियगा** ) चंदन की तरह पत्थर आदि पर घिसे जाते है, ( **घोलियगा** ) भाण्ड में स्थित दही की

મધ્યભાગ–પેટનો ભાગ છેદી નખાય છે (वइकच्छच्छिण्णगा) ડાબી કાંધથી લઇને જમણી-બગલના નીચેના ભાગ સહિત મસ્તક છેદી નખાય છે. (हियउप्पाडियगा) હૃદય ફાડી નખાય છે. (णयणुप्पाडियगा) બન્ને આંખો ફોડી દેવાય છે. (दसणुप्पाडियगा) દાંત પાડી નખાય છે. (वसणुप्पाडियगा) અંડકોષ કાઢી નખાય છે. (गेवच्छिण्णगा) ગર્દન તોડી–મરડી નખાય છે. (तंडुलच्छिण्णगा) તન્દુલની પેઠે કણુકણુ કરીને તેના શરીરના કટકે–કટકા કરી નાખવામાં આવે છે. (कागणि–मंस–क्खावियगा) તેના દેહમાંથી માંસ કાપી કાપીને કાગડાને ખવરાવાય છે. (ओलंवियगा) દોરડાંથી બાંધીને કૂવામાં નાખી દેવાય છે. (लंवियगा) ઝાડની ડાળીએ બાંધીને લટકાવવામાં આવે છે. (घंसियगा) ચંદનની પેઠે

**घंसियगा घोलियगा फालियगा पीलियगा सूलाइयगा सूलभि-ण्णगा खारवत्तिया वज्झवत्तिया सीहपुच्छियगा दवग्गिदड्ढगा पंकोसण्णगा पंके खुत्तगा वलयमयगा वसट्टमयगा णियाणम-**

---

यगा' घोलितका=भाण्डस्थितदधिवदूर्ध्वाऽधःक्रमेणाऽऽघूर्णिताः, 'फालियगा' स्फाटिताः-शुष्ककाष्ठवत्कुठारेण द्विधा कृताः, 'पीलियगा' पीडितकाः-यन्त्रक्षिप्तेक्षुयष्टिवत् पीडिताः, 'सूलाइयगा' शूलाचितकाः=शूले समारोपिताः, 'सूलभिण्णगा' शूलभिन्नकाः=शूलेन विदारिताः, 'खारवत्तिया' क्षारवर्तिताः=क्षारे क्षिप्ताः, 'वज्झवत्तिया' वध्यवर्तिताः=वध्यस्थाने पातिताः, 'सीहपुच्छियगा' सिंहपुच्छितकाः=छिन्नजननेन्द्रियकाः, यद्वा-सिंह-पुच्छे बद्ध्वा समाकृष्टाः 'दवग्गिदड्ढगा' दावाग्निदग्धकाः-दावाग्निना=वनाग्निना दग्धाः, 'पंकोसण्णगा' पङ्काऽवसन्नकाः=सर्वथा पङ्के निमग्नाः, 'पंके खुत्तगा' पङ्के निमग्नाः=उत्तरीतुमसमर्थाः, 'वलयमयगा' वलन्मृतकाः-संयमयोगाद् भ्रष्टानां परीषहाद्यसहनतया

---

तरह ऊँचे नीचे करके मथ दिये जाते हैं, अथवा घुमाये जाते हैं, (फालियगा) शुष्क-काष्ठ की तरह दो टुकडों के रूप में कर दिये जाते हैं, (पीलियगा) कोल्हू में क्षिप्त इक्षु की तरह पील दिये हैं, (सूलाइयगा) शूली पर चढा दिये जाते हैं, (सूलाभिण्णगा) शूल से विदारित कर दिये जाते हैं, (खारवत्तिया) क्षार में पटक दिये जाते हैं, (वज्झवत्तिया) वध्यस्थान में रख दिये जाते हैं, (सीहपुच्छियगा) उनका लिङ्ग काट दिया जाता है, अथवा वे सिंह की पूँछ में बाँधकर घसीटे जाते हैं, (दवग्गिदड्ढगा) दावाग्नि द्वारा दग्ध कर दिये जाते हैं, (पंकोसण्णगा) कीचड़ में बिलकुल धसा दिये जाते हैं, (पंके खुत्तगा) कीचड में इस प्रकार खडे कर दिये जाते हैं कि जिससे फिर

---

પત્થર ઉપર ઘસી નાખવામા આવે છે. (घोलियगा) વાસણમા રાખેલા દહીંની પેઠે ઉંચે-નીચે કરી મથન કરવામા આવે છે, અથવા ઘુમાવવામા આવે છે. (फालियगा) સુકેલાં લાકડાની પેઠે બે ટુકડાના રૂપમા કરી નાખવામા આવે છે. (पीलियगा) કોલૂમાં નાખવામાં આવતી શેરડીની પેઠે પીલી નખાય છે. (सूलाइयगा) શૂળી ઉપર ચડાવી દેવાય છે. (सूलाभिण्णगा) શૂલથી ફાડી નાખ-વામા આવે છે. (खारवत्तिया) ક્ષારમાં નાખી દેવાય છે. (वज्झवत्तिया) વધ-સ્થાનમાં રખાય છે (सीहपुच्छियगा) લિંગ કાપી નખાય છે, અથવા—સિંહની પુછડીમાં બાંધીને ઘસેડાય છે. (दवग्गिदड्ढगा) દાવાગ્નિ દ્વારા બાળી નખાય છે. (पंकोसण्णगा) કાદવમાં નાખી દેવાય છે તેથી ત્યાંજ મરી જાય છે, (पंके खुत्तगा)

**यगा अंतोसल्लमयगा गिरिपडियगा तरुपडियगा गिरिपक्खंदो-**

मरणं–वलन्मरण तद्वन्तो वलन्मृतकाः, यद्वा–बुभुक्षादिना आर्ता भूत्वा मृतास्ते वलन्मृतकाः, '**वसट्टमयगा**' वशार्तमृतकाः–इन्द्रियविषयवशगता आर्ताः सन्तः शब्दादिवशवर्तिमृगादिवन्मृता इत्यर्थः, '**णियाणमयगा**' निदानमृतकाः–ऋद्धिभोगादिप्रार्थना निदानं, तत्पूर्वकं मरणं निदानमरणम्, तद्वन्त इत्यर्थः, '**अंतोसल्लमयगा**' अन्तःशल्यमृतकाः–अन्तः-शल्याः=अनुद्धृतभावशल्या अन्तःस्थितभल्लादिशल्या वा मृताः, '**गिरिपडियगा**' गिरि-पतितकाः–गिरेः=पर्वतात्पतिताः, '**तरुपडियगा**' तरुपतितकाः=वृक्षात्पतिताः, '**मरुपडियगा**' मरुपतितकाः–मरौ=निर्जले देशे पतिताः, '**गिरिपक्खंदोलगा**' गिरिपक्षान्दोलकाः–गिरिपक्षे=पर्वतपार्श्वे आत्मानमान्दोलयन्ति ये ते तथा, गिरिपरिसरान्मरणायैव दत्तझम्पा

वे वहां से पार नहीं आ सके, (**वलयमयगा**) परीषह आदि को सहन करने में असमर्थ होने की वजह से गृहीत सयम से जो भ्रष्ट होना इसका नाम वलन्मरण है, अथवा दुःखित होकर जो मरना है उसका नाम भी वलन्मरण है, इस मरण से जो युक्त हों वे वलन्मृतक है, ऐसे जो वलन्मृतक है, (**वसट्टमयगा**) शब्दादिक के वशवर्ती मृग की तरह जो इन्द्रियों के विषयों में फँसकर दुरवस्था से प्राणों का त्याग करते है, (**णियाणमयगा**) जो इन्द्रिय-भोगादिकों की चाहनारूप निदान से मरण करते है, (**अंतोसल्लमयगा**) हृदय में शल्य धारण कर जो मरण करते है, अथवा भल्लादिक शस्त्रों से विदारित होकर जो मरण करते हैं, (**गिरिपडियगा**) पहाड से गिरकर जो मरण करते है, (**तरुपडियगा**) पेड़ से गिरकर जो मरण करते हैं, (**मरुपडियगा**) जो मरुस्थल में पड़ कर मर जाते हैं, (**गिरिपक्खंदोलगा**) पर्वत से जो झंपापात कर के मर जाते हैं, (**तरुपक्खंदोलगा**) वृक्षों से

ગારામાં એવી રીતે ઉભા કરી દેવાય છે કે જેથી પાછા તે ત્યાંથી નીકળી શકે નહિ. (वलयमयगा) પરિષહ આદિના સહન કરવામાં અસમર્થ હોવાથી લીધેલા સંયમથી ભ્રષ્ટ થવું તેનુ નામ વલન્મરણ છે આ મરણુથી જે યુક્ત હોય અથવા દુઃખી થઈને જે મરણુ થાય તેવા મરણુથી જે યુક્ત હોય તે વલન્મૃતક છે, (वसट्टमयगा) શબ્દ આદિકને વશ થઇ મૃગની પેઠે જે ઇંદ્રિયોના વિષયમાં ફસાઇ જઈ પ્રાણુનો ત્યાગ કરે છે, (णियाणमयगा) જે ઇંદ્રિયભોગ આદિકની ચાહના રૂપ નિદાનથી મરણુ પામે છે, (अतोसल्लमयगा) હૃદયમાં શલ્ય ધારણુ કરીને (છરી મારીને) જે મરણુ પામે છે, અથવા ભાલાં વિગેરે શસ્ત્રોથી જે મરણુ પામે છે, (गिरिपडियगा) પહાડ ઉપરથી પડીને જે મરણુ પામે છે, (तरुपडियगा) ઝાડેથી પડીને જે મરણુ પામે છે, (मरुपडियगा) જે મરુસ્થલમાં પડીને મરી જાય છે, (गिरिपक्खंदोलगा) પર્વત ઉપરથી

लगा तरुपक्खंदोलगा मरुपक्खंदोलगा जलपवेसी (जलणपवेसिगा) विसभक्खियगा सत्थोवाडियगा वेहाणसिया गेद्धपट्ठगा कंतारमयगा दुब्भिक्खमयगा असंकिलिट्ठपरिणामा ते कालमासे

मृताश्च तथाभिधीयन्ते, '**तरुपक्खंदोलगा**' तरुपक्षान्दोलका'=तरुपक्षाज्झम्पादानेन मृताः, '**मरुपक्खंदोलगा**' मरुपक्षान्दोलका'—मरुपक्षे=मरुभूमौ आत्मानमान्दोलयन्ति ये ते तथा, मरुभूमौ मृता इत्यर्थः, '**जलपवेसी**' जलप्रवेशिन—जले निमज्ज्य मृता इत्यर्थः, '**जलणपवेसिगा**' ज्वलनप्रवेशिका'—अग्नौ मृता इत्यर्थः, '**विसभक्खियगा**' विषभक्षितकाः—विषभक्षणेन मृता इत्यर्थः, '**सत्थोवाडियगा**' शस्त्रोत्पाटितका—शस्त्रेण=क्षुरिकादिना विदारिता' सन्तो मृताः, '**वेहाणसिया**' वैहायसिका—वृक्षशाखादावुद्बद्धत्वाद् विहायसि=आकाशे यन्मरणं भवति तद्वैहायस, तदस्ति येषां ते वैहायसिकाः, '**गेद्धपट्ठगा**' गृध्रस्पृष्टकाः—गृध्रैः=पक्षिविशेषैः स्पृष्टस्य=विदारितस्य करिकरभरासभादिमृतकलेवरस्याभ्यन्तरं गत्वा ये मृतास्ते गृध्रस्पृष्टका. '**कंतारमयगा**' कान्तारमृतका=अरण्ये मृता', '**दुब्भिक्खमयगा**' दुर्भिक्षमृतका'—दुर्भिक्षे मृता इत्यर्थः, '**असंकिलिट्ठपरिणामा**' असंक्लिष्टपरिणामा',

झंपापात कर के मर जाते है, (**मरुपक्खंदोलगा**) मरुस्थल में मार्ग भूलकर जो उसी में मर जाते है, (**जलपवेसी**) जल में डूब कर जो मर जाते है, (**जलणपवेसिगा**) अग्नि से जलकर जो मर जाते है, (**विसभक्खियगा**) विष खाकर जो मर जाते है, (**सत्थोवाडियगा**) शस्त्रों से आहत होकर जो मर जाते है, (**वेहाणसिया**) वृक्षों पर लटक कर जो मर जाते हैं, (**गेद्धपट्ठगा**) गृध्रों द्वारा विदारित ऐसे करि—हाथी एवं करभ—ऊँट आदि के कलेवर में प्रविष्ट होकर जो मरते हैं, (**कंतारमयगा**) जो जंगल में ही मर जाते है, (**दुब्भिक्खमयगा**) दुर्भिक्ष से पीडित होकर जो मौत के घाट उतर जाते है, (**असं-**

ઝંપાપાત કરીને (કૂદીને) મરણ પામે છે, (तरुपक्खंदोलगा) વૃક્ષ પરથી ઝંપાપાત કરીને જે મરણ પામે છે, (मरुपक्खंदोलगा) મરુસ્થલમા રસ્તો ભૂલીને તેમાજ જે મરી જાય છે, (जलपवेसी) જલમાં ડૂબીને જે મરણ પામે છે, (जलणपवेसिगा) અગ્નિથી બળીને જે મરી જાય છે, (विसभक्खियगा) ઝેર ખાઈને જે મરણ પામે છે, (सत्थोवाडियगा) શસ્ત્રોના ઘાતથી જે મરી જાય છે, (वेहाणसिया) વૃક્ષો પર લટકીને જે મરણ પામે છે, (गेद्धपट्ठगा) ગીધોદ્વારા વિદારિત હાથી તેમજ કરભ—ઉંટ આદિના શરીરમાં પ્રવિષ્ટ થઈને જે મરણ પામે છે, (कंतारमयगा) જે જંગલમાં જ મરણ પામે છે, (दुब्भिक्खमयगा) દુર્ભિક્ષથી પીડાઈને

**कालं किच्चा अण्णयरेसु वाणमंतरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववत्तारो भवंति, तहिं तेसिं गई तहिं तेसिं ठिई, तहिं तेसिं उववाए पण्णत्ते। तेसिं णं भंते! देवाणं केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता? गोयमा!**

संक्लिष्टपरिणामा महार्त्तरौद्रध्यानाऽऽवेशेन देवत्वं न लभन्ते, अत असंक्लिष्टपरिणामा इति विशिष्य प्रदर्शिता', ते कालमासे कालं कृत्वा, '**अण्णयरेसु वाणमंतरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववत्तारो भवंति**' अन्यतमेषु व्यन्तरेषु देवलोकेषु देवत्वेनोपपत्तारो भवन्ति, '**तहिं तेसिं गई**' तत्र तेषां गति', '**तहिं तेसिं ठिई**' तत्र तेषां स्थितिः, '**तहिं तेसिं उववाए पण्णत्ते**' तत्र तेषामुपपात प्रज्ञप्त । '**तेसिं णं भंते! देवाणं केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता?**' तेषां खलु भदन्त ! देवानां कियन्तं कालं स्थिति प्रज्ञप्ता ?, '**गोयमा! बार-**

[1]**किलिट्ठपरिणामा** ) और जिनके परिणाम संक्लिष्ट नहीं होते है, ऐसे जीव ( **अण्णयरेसु वाणमंतरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववत्तारो भवंति** ) किसी एक व्यन्तर देव की पर्याय से उत्पन्न होते है। (**तहिं तेसिं गई, तहिं तेसिं ठिई, तहिं तेसिं उववाए पण्णत्ते**) वहीं पर उनकी गति, वहीं पर उनकी स्थिति एवं वहीं पर उनका उपपात कहा गया है, ( **तेसिं णं भंते! देवाणं केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता** ) हे भदंत ! वहां उन जीवों की

(१) संक्लिष्टपरिणामों के सद्भाव में जीवो को देवगति का बंध नहीं होता है। महा आर्तरौद्रध्यान के परिणाम संक्लिष्ट परिणाम है, असंक्लिष्ट परिणाम ही देवगति की प्राप्ति में कारण है, इस बात को प्रदर्शित करने के लिये "**असंकिलिट्ठपरिणाम**" इस पद का प्रयोग किया है।

જે મોતને ભેટે છે, [1](असंकिलिट्ठपरिणामा) અને જેનુ પરિણામ-અંત સંક્લિષ્ટ ન થાય એવા જીવ (अण्णयरेसु वाणमंतरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववत्तारो भवंति) કોઈ એક વ્યંતર દેવલોકમા વ્યંતર-દેવની પર્યાયથી ઉત્પન્ન થાય છે. (तहिं तेसिं गई तहिं तेसिं ठिई तहिं तेसिं उववाए पण्णत्ते) ત્યા તેમની ગતિ, ત્યાં તેમની સ્થિતિ, તેમજ ત્યાં તેમના ઉપપાત કહેવામાં આવ્યો છે. (तेसिं णं भंते! देवाणं केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता) હે ભદંત ! ત્યાં તે જીવોની સ્થિતિ કેટલા કાળની બતાવી

(૧) સંક્લિષ્ટ પરિણામના સદ્ભાવમા જીવોને દેવગતિનો બંધ થતો નથી. મહા-આર્તરૌદ્રધ્યાનના પરિણામ સંક્લિષ્ટપરિણામ છે. અસંક્લિષ્ટ પરિણામ પણ દેવગતિની પ્રાપ્તિમાં કારણભૂત છે. એ વાત પ્રદર્શિત કરવા "असंकिलिट्ठपरिणाम" એ પદનો પ્રયોગ કર્યો છે.

**बारसवाससहस्साइं ठिई पण्णत्ता। अत्थि णं भंते! तेसिं देवाणं इड्ढीइ वा, जुईइ वा, जसेइ वा, बलेइ वा, वीरिएइ वा, पुरिसक्कारपरक्कमेइ वा?, हंता! अत्थि। ते णं भंते! देवा परलोगस्स आराहगा?, णो इणट्ठे समट्ठे॥ सू० ९॥**

---

**सवाससहस्साइं ठिई पण्णत्ता'** गौतम! द्वादशवर्षसहस्राणि स्थितिः प्रज्ञप्ता। **'अत्थि णं भंते! तेसिं देवाणं इड्ढीइ वा जुईइ वा जसेइ वा बलेइ वा वीरिएइ वा पुरिसक्कारपरक्कमेइ वा?'** अस्ति खलु भदन्त! तेषां देवानामृद्धिरिति वा द्युतिरिति वा यश इति वा बलमिति वा वीर्यमिति वा पुरुषकारपराक्रम इति वा? इति प्रश्ने भगवानुत्तरं वक्ति— **'हंता! अत्थि'** हन्त! अस्ति, **'ते णं भंते! देवा परलोगस्स आराहगा?'** ते खलु भदन्त! देवाः परलोकस्याऽऽराधका भवन्ति किम्? **'णो इणट्ठे समट्ठे'** नाऽयमर्थः समर्थः॥ सू० ९॥

---

स्थिति कितने काल की बतलाई गई है?, (**गोयमा! बारसवाससहस्साइं ठिई पण्णत्ता**) गौतम! उन जीवों की वहां स्थिति बारह हजार वर्ष की बतलाई गई है। (**अत्थि णं भंते! तेसिं देवाणं इड्ढीइ वा जुईइ वा जसेइ वा बलेइ वा वीरिएइ वा पुरिसक्कारपरक्कमेइ वा**) हे भदंत! वहां उन देवों में ऋद्धि, द्युति, कीर्ति, बल, वीर्य एव पुरुषकारपराक्रम है या नहीं? (**हंता अत्थि**) हां है। (**ते णं भंते देवा! परलोगस्स आराहगा**) हे भदंत! वे देव परलोक के आराधक होते है क्या? (**णो इणट्ठे समट्ठे**) हे गौतम! वे आराधक नहीं होते है।

भावार्थ—जो जीव ग्राम आदि में उत्पन्न होकर पूर्वोक्तरूप से प्रदर्शित विषम-

---

છે? (गोयमा! बारसवाससहस्साइं ठिई पण्णत्ता) હે ગૌતમ! તે જીવોની ત્યાં સ્થિતિ બાર હજાર વરસની બતાવી છે. (अत्थि णं भंते! तेसिं देवाणं इड्ढीइ वा जुईइ वा जसेइ वा बलेइ वा वीरिएइ वा पुरिसक्कार–परक्कमेइ वा) હે ભદંત! ત્યાં તે દેવોમાં ઋદ્ધિ, દ્યુતિ, કીર્તિ, બલ, વીર્ય, તેમજ પુરુષકાર–પરાક્રમ છે કે નહિ? (हंता अत्थि) હા છે. (ते णं भंते! देवा परलोगस्स आराहगा) હે ભદંત! આ દેવ પરલોકના આરાધક હોય છે શું? (णो इणट्ठे समट्ठे) હે ગૌતમ! આરાધક નથી હોતા.

ભાવાર્થ—જે જીવ ગામ આદિમાં ઉત્પન્ન થઈને પૂર્વોક્ત રૂપે બતાવેલી

**मूलम्—से जे इमे गामागर जाव संनिवेसेसु मणुया भ-वंति, तं जहा- पगइभद्दगा पगइउवसंता पगइ-पतणु—कोह-माण-**

टीका—'से जे इमे' इत्यादि। 'से जे इमे' अथ य इमे वक्ष्यमाणा 'गामागर जाव संनिवेसेसु मणुया भवंति' ग्रामाकर यावत्संनिवेशेषु मनुजा भवन्ति—ग्रामे आकरे नगरे निगमे यावत् सन्निवेशे मनुष्या भवन्ति, तान् वर्णयति—'तं जहा' तद्यथा 'पगइभद्दगा' प्रकृतिभद्रकाः—प्रकृत्या=स्वभावेन भद्रकाः=परोपकारपरायणाः, 'पगइउवसंता' प्रकृत्युपशान्ताः=क्रोधोदयाऽभावादुपशान्तिमुपगताः, 'पगइ—पतणु—कोह—माण—माया—लोहा' प्रकृति—प्रतनु—क्रोध—मान—माया—लोभाः—सत्यपि कषायोदये प्रकृत्या प्रतनुक्रोधादिभावाः, 'मिउ—मद्दव—संपण्णा' मृदु—मार्दव—सम्पन्नाः—मृदु यन्मार्दवं तत् सम्पन्नाः=प्राप्ताः, अत्य-

स्थिति को अकामनिर्जरा के बल से भोगते है वे जीव मरकर व्यन्तर पर्याय से उत्पन्न होते है। वहां पर उनकी स्थिति १२ हजार वर्ष की होती है, द्युति ऋद्धि आदि समस्त देवोचित गुणों से ये संपन्न रहते है। वे परलोक के आराधक नहीं होते हैं ॥ सू. ९ ॥

'**से जे इमे गामागर जाव**' इत्यादि।

(**से जे इमे**) जो जीव (**गामागर जाव संनिवेसेसु**) पूर्वोक्त ग्राम, आकर से लेकर सन्निवेश आदि स्थानों में (**मणुया भवंति**) मनुष्य होते है और उनमें जो (**पगइभद्दगा पगइउवसंता पगइ—पतणु—कोह—माण—माया—लोहा**) प्रकृति से भद्रक होते है, क्रोधादिक कषायों के उदय के अभाव से जिनके परिणाम शांतियुक्त बने रहते है, स्वभाव से ही जिनकी क्रोध, मान, माया एवं लोभ ये चार कषायें पतली रहा करती है,

વિષમ સ્થિતિને અકામનિર્જરાના બલથી ભોગવે છે તે જીવ મરી જઈને વ્યંતર-પર્યાયથી ઉત્પન્ન થાય છે. ત્યાં તેમની સ્થિતિ ૧૨ બાર હજાર વર્ષની હોય છે. દ્યુતિ, ઋદ્ધિ આદિ સમસ્ત દેવોચિત ગુણોથી તેઓ સંપન્ન રહે છે. તેઓ પરલોકના આરાધક હોતા નથી. (સૂ. ૯)

"से जे इमे गामागर जाव" ઈત્યાદિ.

(से जे इमे) જે જીવ (गामागर—जाव—संनिवेसेसु) પૂર્વે કહેલ ગામ, આકરથી લઈને સન્નિવેશ આદિ સ્થાનોમાં (मणुया भवंति) મનુષ્ય થાય છે. અને તેમાં જે (पगइभद्दगा पगइउवसंता पगइ—पतणु—कोह—माण—माया—लोहा) પ્રકૃતિથી ભદ્રક હોય છે, ક્રોધ આદિક કષાયોના ઉદયના અભાવથી જેના ફલરૂપે શાંતિયુક્ત રહ્યા કરે છે, સ્વભાવથી જ જેના ક્રોધ, માન, માયા

**बारसवाससहस्साइं ठिई पण्णत्ता । अत्थि णं भंते ! तेसिं देवाणं इड्ढीइ वा, जुईइ वा, जसेइ वा, बलेइ वा, वीरिएइ वा, पुरिसक्कारपरक्कमेइ वा ?, हंता ! अत्थि। ते णं भंते ! देवा परलोगस्स आराहगा ?, णो इणट्ठे समट्ठे ॥ सू० ९ ॥**

---

**सवाससहस्साइं ठिई पण्णत्ता'** गौतम ! द्वादशवर्षसहस्राणि स्थितिः प्रज्ञप्ताः । **'अत्थि णं भंते ! तेसिं देवाणं इड्ढीइ वा जुईइ वा जसेइ वा बलेइ वा वीरिएइ वा पुरिसक्कार-परक्कमेइ वा ?'** अस्ति खलु भदन्त ! तेषां देवानामृद्धिरिति वा द्युतिरिति वा यश इति वा बलमिति वा वीर्यमिति वा पुरुषकारपराक्रम इति वा ? इति प्रश्ने भगवानुत्तरं वक्ति— **'हंता ! अत्थि'** हन्त ! अस्ति, **'ते णं भंते ! देवा परलोगस्स आराहगा ?'** ते खलु भदन्त ! देवाः परलोकस्याऽऽराधकाः भवन्ति किम् ? **'णो इणट्ठे समट्ठे'** नाऽयमर्थः समर्थः ॥ सू० ९ ॥

---

स्थिति कितने काल की बतलाई गई है ?, (**गोयमा ! बारसवाससहस्साइं ठिई पण्णत्ता**) गौतम ! उन जीवों की वहां स्थिति बारह हजार वर्ष की बतलाई गई है। (**अत्थि णं भंते ! तेसिं देवाणं इड्ढीइ वा जुईइ वा जसेइ वा बलेइ वा वीरिएइ वा पुरिसक्कारपरक्कमेइ वा**) हे भदंत ! वहां उन देवों में ऋद्धि, द्युति, कीर्ति, बल, वीर्य एव पुरुषकारपराक्रम है या नहीं ? (**हंता अत्थि**) हां है। (**ते णं भंते देवा ! परलोगस्स आराहगा**) हे भदंत ! वे देव परलोक के आराधक होते है क्या ? (**णो इणट्ठे समट्ठे**) हे गौतम ! वे आराधक नहीं होते है।

भावार्थ—जो जीव ग्राम आदि में उत्पन्न होकर पूर्वोक्तरूप से प्रदर्शित विषम-

---

છે ? (गोयमा ! बारसवाससहस्साइं ठिई पण्णत्ता) હે ગૌતમ ! તે જીવોની ત્યાં સ્થિતિ બાર હજાર વરસની બતાવી છે. (अत्थि णं भंते ! तेसिं देवाण इड्ढीइ वा जुईइ वा जसेइ वा बलेइ वा वीरिएइ वा पुरिसक्कार-परक्कमेइ वा) હે ભદંત ! ત્યાં તે દેવોમા ઋદ્ધિ, દ્યુતિ, કીર્તિ, બલ, વીર્ય, તેમજ પુરુષકાર-પરાક્રમ છે કે નહિ ? (हंता अत्थि) હા છે. (ते णं भंते ! देवा परलोगस्स आराहगा) હે ભદંત ! આ દેવ પરલોકના આરાધક હોય છે શું ? (णो इणट्ठे समट्ठे) હે ગૌતમ ! આરાધક નથી હોતા.

ભાવાર્થ—જે જીવ ગામ આદિમા ઉત્પન્ન થઈને પૂર્વોક્ત રૂપે બતાવેલી

**मूलम्—से जे इमे गामागर जाव संनिवेसेसु मणुया भवंति, तं जहा- पगइभद्दगा पगइउवसंता पगइ-पतणु—कोह-माण-**

टीका—'से जे इमे' इत्यादि। 'से जे इमे' अथ य इमे वक्ष्यमाणा 'गामागर जाव संनिवेसेसु मणुया भवंति' ग्रामाकर यावत्सन्निवेशेषु मनुजा भवन्ति—ग्रामे आकरे नगरे निगमे यावत् सन्निवेशे मनुष्या भवन्ति, तान् वर्णयति—'तं जहा' तद्यथा 'पगइभद्दगा' प्रकृतिभद्रकाः—प्रकृत्या=स्वभावेन भद्रकाः=परोपकारपरायणाः, 'पगइउवसंता' प्रकृत्युपशान्ताः=क्रोधोदयाऽभावादुपशान्तिमुपगताः, 'पगइ—पतणु—कोह—माण—माया—लोहा' प्रकृति—प्रतनु—क्रोध—मान—माया—लोभाः—सत्यपि कषायोदये प्रकृत्या प्रतनुक्रोधादिभावाः, 'मिउ—मद्दव—संपण्णा' मृदु—मार्दव—सम्पन्नाः—मृदु यन्मार्दवं तत् सम्पन्नाः=प्राप्ताः, अत्य-

स्थिति को अकामनिर्जरा के बल से भोगते है वे जीव मरकर व्यन्तर पर्याय से उत्पन्न होते है। वहां पर उनकी स्थिति १२ हजार वर्ष की होती है, द्युति ऋद्धि आदि समस्त देवोचित गुणों से ये संपन्न रहते है। वे परलोक के आराधक नहीं होते है ॥ सू. ९ ॥

**'से जे इमे गामागर जाव'** इत्यादि।

(**से जे इमे**) जो जीव (**गामागर जाव संनिवेसेसु**) पूर्वोक्त ग्राम, आकर से लेकर सन्निवेश आदि स्थानों में (**मणुया भवंति**) मनुष्य होते है और उनमें जो (**पगइभद्दगा पगइउवसंता पगइ—पतणु—कोह—माण—माया—लोहा**) प्रकृति से भद्रक होते है, क्रोधादिक कषायों के उदय के अभाव से जिनके परिणाम शांतियुक्त बने रहते है, स्वभाव से ही जिनकी क्रोध, मान, माया एवं लोभ ये चार कषाये पतली रहा करती है,

વિષમ સ્થિતિને અકામનિર્જરાના બલથી ભોગવે છે તે જીવ મરી જઈને વ્યંતર-પર્યાયથી ઉત્પન્ન થાય છે. ત્યાં તેમની સ્થિતિ ૧૨ બાર હજાર વર્ષની હોય છે. દ્યુતિ, ઋદ્ધિ આદિ સમસ્ત દેવોચિત ગુણોથી તેઓ સંપન્ન રહે છે. તેઓ પરલોકના આરાધક હોતા નથી. (સૂ. ૯)

"से जे इमे गामागर जाव" ઈત્યાદિ.

(से जे इमे) જે જીવ (गामागर—जाव—संनिवेसेसु) પૂર્વે કહેલ ગામ, આકરથી લઈને સન્નિવેશ આદિ સ્થાનોમાં (मणुया भवंति) મનુષ્ય થાય છે. અને તેમાં જે (पगइभद्दगा पगइउवसंता पगइ—पतणु—कोह—माण—माया—लोहा) પ્રકૃતિથી ભદ્રક હોય છે, ક્રોધ આદિક કષાયોના ઉદયના અભાવથી જેના ફલરૂપે શાંતિયુક્ત રહ્યા કરે છે, સ્વભાવથી જ જેના ક્રોધ, માન, માયા

**माया-लोहा मिउ-मद्दव-संपण्णा अल्लीणा विणीया अम्मा-पिउ-सुस्सूसगा अम्मापिईणं अणइक्कमणिज्जवयणा अप्पिच्छा अप्पारंभा अप्पपरिग्गहा अप्पेणं आरंभेणं अप्पेणं समारंभेणं**

र्थमहङ्कारजयशीला इत्यर्थः, 'अल्लीणा' आलीनाः=गुरुमाश्रित्य वर्तनशीलाः, 'विणीया' विनीताः=विनयवन्तः, 'अम्मा-पिउ-सुस्सूसगा' अम्बा-पितृ-शुश्रूषकाः=मातापित्रोः सेवकाः, 'अम्मापिईणं अणइक्कमणिज्जवयणा' अम्बापित्रोरनतिक्रमणीयवचनाः=मातापित्रोर्नीतिवचनपरायणाः, 'अप्पिच्छा' अल्पेच्छाः=अल्पाभिलापवन्तः, 'अप्पारंभा' अल्पारम्भाः-अल्पः=स्वल्पः, आरम्भः=पृथिव्याद्युपमर्दनरूपो येषां तेऽल्पारम्भाः, 'अप्पपरिग्गहा' अल्पपरिग्रहाः-अल्पः परिग्रहो=धनधान्यादिरूपो येषां ते तथा; एतदेव वाक्यान्तरेणाऽऽह-'अप्पेणं आरंभेण अप्पेण समारंभेण' अल्पेनारम्भेण अल्पेन समारम्भेण-इहाऽऽरम्भः=प्राणिनामुपघातः,

(**मिउ-मद्दव-संपण्णा**) मृदुमार्दव से जिनकी आत्मा अत्यंत वासित होती है, अहंकार का सर्वथा जिनमें अभाव रहा करता है, (**अल्लीणा**) गुरु की आज्ञानुसार जो अपनी प्रकृति को सुचारु बनाये रहा करते है, (**विणीया**) जो प्रकृति से ही अत्यत विनीत होते है, (**अम्मा-पिउ-सुस्सूसगा**) मातापिता के जो सेवा करते हैं, (**अम्मा-पिईणं अणइक्कमणिज्जवयणा**) मातापिता के वचनों के अनुसार जो चलते है, (**अप्पिच्छा**) जिनकी इच्छाएँ-आवश्यकताएँ बहुत थोडी होती है, (**अप्पारंभा**) आरंभ जिनका अल्प होता है, (**अप्पपरिग्गहा**) धनधान्यादिरूप परिग्रह जिनका अल्प होता है, (**अप्पेणं आरंभेणं अप्पेणं समारंभेणं अप्पेणं आरंभसमारंभेणं वित्तिं कप्पेमाणा**) एव जो अल्प आरंभ से, अल्प समारम्भ से और अल्प आरंभ-समारंभ से आजीविका चलाया करते

તેમજ લોભ એ ચાર કષાયો નબળા રહ્યા કરે છે. (मिउ-मद्दव-संपण्णा) મૃદુ-માર્દવથી જેમનો આત્મા અત્યંત વાસિત (પ્રફુલ્લ) હોય છે, અહંકારનો જેમનામાં સર્વથા અભાવ રહ્યા કરે છે. (अल्लीणा) ગુરુની આજ્ઞા-અનુસાર જે પોતાની પ્રકૃતિને સુંદર બનાવ્યા કરે છે, (विणीया) જે પ્રકૃતિથી જ અત્યંત વિનીત હોય છે, (अम्मा-पिउ-सुस्सूसगा) માતા-પિતાની જે સેવા કરે છે, (अम्मापिईणं अणइक्कमणिज्जवयणा) માતાપિતાના વચનો અનુસાર જે ચાલે છે (વર્તે છે), (अप्पिच्छा) જેની ઈચ્છાઓ-આવશ્યકતાઓ બહુ જ થોડી હોય છે, (अप्पारंभा) આરંભ જેના અલ્પ હોય છે, (अप्पेणं आरंभेणं अप्पेणं समारंभेणं अप्पेणं आरंभसमारंभेणं वित्तिं कप्पेमाणा) તેમજ જે અલ્પ આરંભથી,

**अप्पेणं आरंभसमारंभेणं वित्तिं कप्पेमाणा बहूइं वासाइं आउयं पालेंति, पालित्ता कालमासे कालं किच्चा अण्णयरेसु वाणमंतरेसु, तंचेव सव्वं, णवरं ठिई चउद्दसवाससहस्साइं ॥ सू० १० ॥**

समारम्भस्तु तेषां परितापकरणम् '**अप्पेणं आरंभसमारंभेणं**' अल्पेन आरम्भसमारम्भेण–आरम्भश्च समारम्भश्चेति–आरम्भसमारम्भं तेन, अल्पेनारम्भेण अल्पेन समारम्भेण चेत्यर्थः, '**वित्तिं कप्पेमाणा**' वृत्तिं कल्पयन्तः=जीविकां कुर्वाणाः, '**बहूइं वासाइं आउयं पालेंति**' बहूनि वर्षाणि आयूंषि=जीवितानि पालयन्ति, '**पालित्ता**' पालयित्वा, '**कालमासे कालं किच्चा**' कालमासे कालं कृत्वा '**अण्णयरेसु वाणमंतरेसु**' अन्यतरेषु व्यन्तरेषु, अतोऽग्रे '**तं चेव सव्वं**' तदेव=पूर्ववदेव सर्वं वर्णनं ज्ञेयम्। '**णवरं**' नवरं=विशेषस्तु–'**ठिई चउद्दस–वास–सहस्साइं**' स्थितिश्चतुर्दशवर्षसहस्राणि–चतुर्दशवर्षसहस्राणि यावत् स्थितिः प्रज्ञप्ता ॥ सू० १० ॥

है, ऐसे जीव ( **बहूइं वासाइं आउयं पालेंति** ) बहुत वर्षोंतक जीवित रहा करते है, ( **पालित्ता कालमासे कालं किच्चा अण्णयरेसु वाणमंतरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववत्तारो भवंति** ) पश्चात् काल अवसर काल करके किसी एक व्यन्तरों के देवलोक में देवतारूप से उत्पन्न होते हैं। ( **तं चेव सव्वं** ) यहां पूर्ववर्णित प्रकार के अनुसार स्थिति आदि सब कुछ समझ लेना चाहिये। ( **णवरं** ) विशेषता सिर्फ इतनी ही है कि वहां पर उनकी स्थिति १२ हजार वर्ष की प्रतिपादित की गई है, और यहां पर उनकी ( **ठिई चउद्दसवाससहस्साइं** ) १४ हजार वर्ष की स्थिति जाननी चाहिये ॥ सू० १० ॥

અલ્પ સમારંભથી અને અલ્પ આરંભ–સમારંભથી પોતાની આજીવિકા ચલાવ્યા કરે છે. એવા જીવ (बहूइं वासाइं आउयं पालेंति) ઘણાં વરસો સુધી જીવતા રહ્યા કરે છે. (पालित्ता कालमासे कालं किच्चा अण्णयरेसु वाणमंतरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववत्तारो भवंति) પછી કાલ અવસરે કાલ કરીને કોઈ એક વ્યંતરોના દેવલોકમાં દેવતારૂપે ઉત્પન્ન થાય છે. (तं चेव सव्वं) અહીં અગાઉ વર્ણન કરેલા પ્રકાર અનુસાર સ્થિતિ આદિ બધું સમજી લેવું જોઇએ. (णवरं) વિશેષતા માત્ર એટલી જ છે કે ત્યાં તેમની સ્થિતિ ૧૨ બાર હજાર વરસની પ્રતિપાદિત કરેલી છે, અને અહીં તેમની (चउद्दस–वास–सहस्साइं) ૧૪ ચૌદ હજાર વરસની સ્થિતિ સમજવી જોઇએ, (सू० १०)

मूलम्—से जाओ इमाओ गामागर जाव संनिवेसेसु इत्थियाओ भवंति, तं जहा–अंतो अंतेउरियाओ गयपइयाओ मयपइयाओ बालविहवाओ छड्डियल्लियाओ माइरक्खियाओ

टीका–'से जाओ इमाओ' इत्यादि। 'से जाओ इमाओ' अथ या इमा =ईदृश्य 'गामागर जाव संनिवेसेसु इत्थियाओ भवंति' ग्रामाऽऽकर यावत् सनिवेशेपु स्त्रियो भवन्ति, 'तं जहा' तद्यथा–'अंतो अंतेउरियाओ' अन्तरन्तःपुरिकाः=अन्तःपुरान्तर्वर्तिन्यः, 'गयपइयाओ' गतपतिकाः–गताः=कापि प्रोषिताः पतयो यासां तास्तथा, 'मयपइयाओ' मृतपतिकाः–मृता पतयो यासा तास्तथा, विधवा इत्यर्थः, 'बालविहवाओ' बालविधवाः–बालाश्चामूः विधवाः–बाल्ये वैधव्यं गताः, 'छड्डियल्लियाओ' छर्दिताः=पत्यादिभिः परित्यक्ताः, 'माइरक्खियाओ' मातृरक्षिताः=अपररक्षकाभावाज्जनन्या रक्षिताः, मातृकृतरक्षया शीलरक्षणकारिका इत्यर्थः, एवमग्रेऽपि बोध्यम्, 'पियरक्खियाओ' पितृरक्षिताः, 'भायरक्खियाओ'

'से जाओ इमाओ' इत्यादि।

(से जाओ इमाओ) जो ये जीव (गामागर जाव संनिवेसेसु) ग्राम आकर आदि से लेकर सनिवेशतक के स्थानों में स्त्रीपर्याय से उत्पन्न होते है, जैसे कि उनमें कितनीक स्त्रियां तो (अंतो अंतेउरियाओ) राजा के अंतःपुर की रानियां होती है, कितनीक (गयपइयाओ) प्रोषितभर्तृका होती है, जिनके पति प्रवासी अर्थात् परदेश गये हों उनको प्रोषितभर्तृका कहते है, कितनीक (मयपइयाओ) विधवा होती है, (बालविहवाओ) बालविधवा होती है, (छड्डियल्लियाओ) कितनीक पतिद्वारा परित्यक्त होती है, कितनीक (माइरक्खियाओ) मातृरक्षिता होती है, (पियरक्खियाओ) कितनीक पिता से सुरक्षित होती

'से जाओ इमाओ' ઈત્યાદિ.

(से जाओ इमाओ) જે આ જીવ (गामागर जाव संनिवेसेसु) ગામ આકર આદિથી લઈને સંનિવેશ સુધીના સ્થાનોમાં સ્ત્રીપર્યાયથી ઉત્પન્ન થાય છે, જેમકે તેઓમાં કેટલીક સ્ત્રીઓ તો (अंतो अंतेउरियाओ) રાજાના અંતઃપુરની રાણીઓ હોય છે, કેટલીક (गयपइयाओ) પ્રોષિતભર્તૃકા હોય છે, (જેના પતિ પ્રવાસી અર્થાત્ પરદેશ ગયા હોય તેમને પ્રોષિતભર્તૃકા કહે છે), કેટલીક (मयपइयाओ) વિધવા હોય છે, કેટલીક (बालविहवाओ) બાલ–વિધવા હોય છે, (छड्डियल्लियाओ) કેટલીક પતિદ્વારા પરિત્યક્તા હોય છે, કેટલીક (माइरक्खियाओ) માતૃરક્ષિતા હોય છે, (पियरक्खियाओ) કેટ-

**पियरक्खियाओ भायरक्खियाओ पइरक्खियाओ कुलघररक्खियाओ ससुरकुलरक्खियाओ परूढ-णह-केस-कक्खरोमाओ ववगय-धूव-पुप्फ-गंध-मल्ला-लंकाराओ अण्हाणग-सेय-जल्ल-मल्ल-**

भ्रातृरक्षिता', 'पइरक्खियाओ' पतिरक्षिता', 'कुलघररक्खियाओ' कुलगृहरक्षिता'—कुलगृहे=पितृगृहे रक्षिता'—पितृवंशोद्भवैःपालिता इत्यर्थ', 'ससुरकुलरक्खियाओ' श्वशुरकुलरक्षिता', 'परूढ-णह-केस-कक्खरोमाओ' प्ररूढ-नख-केश-कक्षरोमाणः—प्ररूढानि=संजातानि नखकेशकक्षरोमाणि यासां तास्तथा, 'ववगय-धूव-पुप्फ-गंध-मल्ला-लंकाराओ' व्यपगत-धूप-पुष्प-गन्ध - माल्याऽ - लङ्कारा'—व्यपगताः=त्यक्ता' धूपपुष्पगन्धमाल्यानामलङ्कारा याभिस्तास्तथा, 'अण्हाणग-सेय-जल्ल-मल्ल-पंक-परितावियाओ' अस्नानक-

हुई अपने शील की रक्षा करती रहती हैं, (भायरक्खियाओ) कितनीक अपने भाइयों से सुरक्षित रहा करती है, (पइरक्खियाओ) कितनीक अपने २ पतिद्वारा सुरक्षित रहा करती है, (कुलघररक्खियाओ) कितनीक कुलगृह में पिता के वंशजों द्वारा पाली-पोषी जाकर सुरक्षित रहा करती है, (ससुर-कुल-रक्खियाओ) कितनीक ससुरपक्ष के लोगों द्वारा सुरक्षित की जाती है, (परूढ-णह-केस-कक्खरोमाओ) कितनीक ऐसी होती है कि जिनके केश, कांखरी के वाल एवं नख वढे रहा करते है, (ववगय-धूव-पुप्फ-गंध-मल्ला-लंकाराओ) कितनीक ऐसी होती है जो धूप-खूशबूदार तैल आदि के लेने से तथा पुष्पों एवं सुगंधित पुष्पो की मालारूप अलंकारों से सदा परित्यक्त रहा करती है, (अण्हाणग-सेय-जल्ल-मल्ल-पंक-परितावियाओ) कितनीक ऐसी होती है जो स्नान नहीं करने से

લીક પિતાથી સુરક્ષિત રહેતા પોતાના શીલની રક્ષા કરતી હોય છે, (भायरक्खियाओ) કેટલીક પોતાના ભાઈઓથી સુરક્ષિત રહ્યા કરે છે, (पइरक्खियाओ) કેટલીક પોતપોતાના પતિ દ્વારા સુરક્ષિત રહ્યા કરે છે, (कुलघररक्खियाओ) કેટલીક કુલગૃહમાં પિતાના વંશજો દ્વારા પાલન-પોષણ લઈ સુરક્ષિત રહ્યા કરે છે, (ससुरकुलरक्खियाओ) કેટલીક સાસરાં પક્ષના લોકો દ્વારા સુરક્ષિત કરાય છે, (परूढ-णह-केस-कक्खरोमाओ) કેટલીક એવી હોય છે કે જેના નખ, કેશ, તેમજ કાંખરી (બગલ)ના વાળ, વધતા જતા હોય છે, (ववगय-धूव-पुप्फ-गंध-मल्ला-लंकाराओ) કેટલીક એવી હોય છે કે જે ધૂપ-સુગંધિત તેલ આદિના લેપથી તથા પુષ્પો તેમજ સુગંધિત પુષ્પોની માલારૂપ અલંકારોથી સદા પરિત્યક્ત રહ્યા કરે છે, (अण्हाणग-सेय-जल्ल-मल्ल-पंक-

पंक-परितावियाओ ववगय-खीर-दहि-णवणीय-सप्पि-तेल्ल-गुल-लोण-महु-मज्ज-मंस-परिचत्त-कया-हाराओ अप्पिच्छाओ अप्पारंभाओ अप्पपरिग्गहाओ अप्पेणं आरंभेणं अप्पेणं समा-

स्वेद-जल्ल-मल्ल-पङ्क-परितापिता -अस्नानकेन=स्नानाऽभावेन हेतुना स्वेदजल्लमल्लपङ्कैः -स्वेदः= प्रस्वेदः, जल्लः=शुष्कः प्रस्वेदः, मल्लः=रजोमात्रं कठिनीभूतम्, पङ्कः=आर्द्रीभूतं रजः, तैः परितापिताः=क्लेशिताः-सम्भृता इत्यर्थः, 'ववगय-खीर-दहि-णवणीय-सप्पि-तेल्ल-गुल-लोण-महु-मज्ज-मंस-परिचत्त-कया-हाराओ' व्यापगत-क्षीर-दधि-नवनीत-सर्पि-स्तैल-गुड-लवण-मधु-मद्य-मांस-परित्यक्त-कृताऽऽहाराः-व्यपगतानि क्षीरदधिनवनीत-सर्पींषि यस्मात् स व्यपगतक्षीरदधिनवनीतसर्पिः, तैलगुडलवणमधुमद्यमांसैः परित्यक्तः, ततः पदद्वयस्य कर्मधारयः, क्षीरादिमांसपर्यन्तरहित इत्यर्थः, तादृशः कृतः=सेवितः आहारो याभि-स्तास्तथा, 'अप्पिच्छाओ' अल्पेच्छाः, 'अप्पारंभाओ' अल्पारम्भाः-अल्पः आरम्भः=पृथि-व्याद्युपमर्दनव्यापारो यासां तास्तथा, 'अप्पपरिग्गहाओ' अल्पपरिग्रहाः-अल्पधनधान्यसंग्रहाः, 'अप्पेणं आरंभेणं अप्पेणं समारंभेणं अप्पेणं आरंभसमारंभेणं' अल्पेनाऽऽरम्भेण अल्पेन

पसीना से लथपथ रहा करती है, एवं पसीना के शुष्क हो जाने से उस पर बैठी हुई धूलि, काले कठिन मैल के रूप में परिणमित होकर उनके शरीर को मलिन बनाये रहती हैं। (ववगय-खीर-दहि-णवणीय-सप्पि-तेल्ल-गुल-लोण-महु-मज्ज-मंस-परिचत्त-कया-हाराओ) कितनीक ऐसी होती हैं कि जो दूध, दही, मक्खन, सर्पि-घृत, तैल, गुड, नमक, मधु, मद्य, एवं मांस से वर्जित आहार किया करती है, (अप्पिच्छाओ) और जिनकी इच्छाएँ स्वभावतः अल्प हुआ करती है, (अप्पारंभाओ अप्पपरिग्गहाओ अप्पेणं आरं-भेणं अप्पेणं समारंभेणं अप्पेणं आरंभसमारंभेणं वित्तिं कप्पेमाणीओ) वे अल्प आरंभ से,

परितावियाओ) કેટલીક એવી હોય છે કે જે સ્નાન ન કરવાથી પસીનાથી લથપથ રહ્યા કરે છે, તેમજ પસીનો સુકાઇ જવાથી તેના પર ઉડીને પડેલી ધૂળ કાળા અને કઠણ મેલના રૂપે પરિણામ પામીને તેમના શરીરને મલિન બનાવ્યા કરે છે. (ववगय-खीर-दहि-णवणीय-सप्पि-तेल्ल-गुल-लोण-महु-मज्ज-मंस-परिचत्त-कया-हाराओ) કેટલીક એવી હોય છે કે જે દૂધ, દહી, માખણ, સર્પિ-ઘી, તેલ, ગોળ, મીઠું, મધ, મદ્ય, તેમજ માંસથી વર્જિત આહાર કર્યા કરે છે, (अप्पिच्छाओ) અને જેમની ઈચ્છાઓ સ્વભાવથી જ અલ્પ રહ્યા કરે છે. (अप्पारंभाओ अप्पपरिग्गहाओ अप्पेणं आरंभेणं अप्पेणं

**रंभेणं अप्पेणं आरंभसमारंभेणं वित्तिं कप्पेमाणीओ अकामबंभचेरवासेणं तामेव पइसेज्जं णाइक्कमंति। ताओ णं इत्थियाओ एयारूवेणं विहारेणं विहरमाणीओ बहूइं वासाइं, सेसं तं चेव, जाव चउसट्ठिं वाससहस्साइं ठिई पण्णत्ता ॥ सू० ११ ॥**

समारम्भेण अल्पेन आरम्भसमारम्भेण, **'वित्तिं कप्पेमाणीओ'** वृत्तिं कल्पयन्त्यः–वृत्तिः=जीविकां कुर्वाणाः, अकामब्रह्मचर्यवासेन-अकामानां=निर्जराद्यनपेक्षाणां ब्रह्मचर्ये वासस्तेन **'तामेव पइसेज्जं'** तामेव पतिशय्यां–पत्या सह सेवितां शय्यां-पतिशय्यां **'णाइक्कमंति'** नातिक्रामन्ति, परपुरुषपरिहारेण सर्वथा पतिव्रतधर्मपालिका इत्यर्थः, **'ताओ णं इत्थियाओ एयारूवेणं विहारेणं विहरमाणीओ'** ताः खलु स्त्रिय एतद्रूपेण विहारेण विहरन्त्यः, **'बहूइं वासाइं आउयं पालेंति'** बहूनि वर्षाणि आयुष्यं पालयन्ति, पालयित्वा, शेषं तदेव यावत्-अत्र यावच्छब्देनेदं दृश्यम् कालमासे कालं कृत्वाऽन्यतमेषु व्यन्तरेषु देवलोकेषु देवत्वेनोपपातं प्राप्ता भवन्ति, तत्र–देवलोके तासां

अल्प समारंभ से, और अल्प आरम्भ-समारंभसे अपनी आजीविका चलाती हैं, (**अकाम–बंभचेर–वासेणं तामेव पइसेज्जं णाइक्कमंति**) और परवशता से ब्रह्मचर्य का पालन करती हुई अपने पति की शय्या का उल्लंघन नहीं करती है-पातिव्रत्य धर्म के पालन में निरत रहा करती है, इस प्रकार जो स्त्रियां अपने जीवन को व्यतीत करती है, (**ताओ णं इत्थियाओ एयारूवेणं विहारेणं विहरमाणीओ बहूइं वासाइं आउयं पालेंति**) वे स्त्रियां इस प्रकार की अपनी नैतिक प्रवृत्ति से युक्त बनी रह कर बहुत वर्षों की आयु पालती है, (**सेसं तं चेव**) एवं जब उनका मरने का अवसर आ जाता है तब वे उस अवसर में मर कर अन्यतम व्य-

समारंभेणं अप्पेणं आरंभसमारंभेणं वित्तिं कप्पेमाणीओ) तेओ अल्प आरंभथी, अल्प समारंभथी अने अल्प आरंभ–समारंभथी पोतानी आजिविका चलावे छे. (अकामबंभचेरवासेणं तामेव पइसेज्जं णाइक्कमंति) अने परवशताथी ब्रह्मचर्यनु पालन करती थकी पोताना पतिनी शय्यानुं उल्लंघन करती नथी–पातिव्रत्य धर्मना पाळनमां निरत रह्या करे छे. आ प्रकारे जे स्त्रीओ पोताना जीवनने व्यतीत करे छे. (ताओ णं इत्थियाओ एयारूवेणं विहारेणं विहरमाणीओ बहूइं वासाइं आउयं पालेंति) ते स्त्रीओ आ प्रकारनी पोतानी नैतिक प्रवृत्ति करती रहीने घणां वरसोनी आयु भोगवे छे. (सेसं तं चेव) तेमज ज्यारे तेमना मरवानो अवसर आवे छे त्यारे ते अवसरमा मरीने बीजा व्यंतरोना

**मूलसूत्र—से जे इमे गामागर जाव सन्निवेसेसु मणुया भवंति, तं जहा—दगबिइया दगतइया दगसत्तमा दगएक्कारसमा**

गतिस्तासां स्थितिस्तासामुपपातः प्रज्ञप्तः, तासां खलु हे भदन्त! देवत्वं प्राप्तानां कियन्तं काल स्थितिः प्रज्ञप्ता? इति प्रश्ने भगवानाह—'**गोयमा**!' हे गौतम! इति। '**चउसट्ठिं वाससहस्साइं ठिई पण्णत्ता**' चतुःषष्टिं वर्षसहस्राणि स्थितिः प्रज्ञप्ता ॥ सू० ११ ॥

**टीका**—'**से जे इमे**' इत्यादि। '**से जे इमे**' अथ य इमे=ईदृशाः, '**गामागर-जाव सन्निवेसेसु मणुया भवंति**' ग्रामाऽऽकर यावत् सन्निवेशेषु-ग्रामाऽऽकर—नगर-निगम-राजधानी—खेट—कर्वट—पत्तन—मडम्ब—द्रोणमुखा—ऽऽश्रम—संबाध—सन्निवेशेषु प्रागुक्तव्याख्यात-स्वरूपेषु मनुजा भवन्ति, '**तं जहा**' तद्यथा—'**दगबिइया**' दकद्वितीया—ओदनापेक्षया दकम्=उदकं द्वितीयं भोजने येषां ते दकद्वितीयाः, '**दगतइया**' दकतृतीयाः—ओदनसूपरूपद्रव्य-द्वयाऽपेक्षया दकम्=उदक तृतीयं येषां ते दकतृतीयाः, '**दगसत्तमा**' दकसप्तमाः-ओदनादीनि

न्तरों के देवलोक में देवता की पर्याय से उत्पन्न होती है। वहीं पर उनकी गति, वहीं पर उनकी स्थिति एवं वहीं पर उनका उपपात होता है। हे भदन्त! वहाँ पर उनकी स्थिति कितनी है? हे गौतम। (**चउसट्ठिं वाससहस्साइं ठिई पण्णत्ता**) वहां उनकी स्थिति ६४ हजार वर्ष की है ॥ सू० ११ ॥

'**से जे इमे गामागर जाव**' इत्यादि।

(**से जे इमे गामागर जाव सन्निवेसेसु मणुया भवंति**) ये जो इन ग्राम आकर आदि पूर्वोक्त स्थानों में इस प्रकार के मनुष्य होते है, (**तं जहा**) जैसे कि (**दगबिइया**) जिनके आहार में अन्न एवं द्वितीय पानी ये दो ही द्रव्य हों, (**दगतइया**) अन्न—चावल, दाल एवं तृतीय पानी ये तीन द्रव्य हों, (**दगसत्तमा**) छह द्रव्य अन्न—चावल—दाल आदि हों

देवलोकमां देवतानी पर्यायथी उत्पन्न थाय छे. अहीं ज तेमनी गति, अही ज तेमनी स्थिति तेमज अहीं ज तेमनो उपपात थाय छे. हे भदन्त! त्यां तेमनी स्थिति केटली होय छे? हे गौतम! (चउसट्ठिं वाससहस्साइं ठिई पण्णत्ता) त्या तेमनी स्थिति ६४ चोसठ हजार वरसनी छे. (सू० ११)

'से जे इमे गामगर जाव' इत्यादि.

(से जे इमे गामगर जाव सन्निवेसेसु मणुया भवंति) जेओ आ गाम, आकर आदि उपर कहेला स्थानोमा आ प्रकारे मनुष्य थाय छे, (तं जहा) जेमके (दगविइया) जेना आहारमां अन्न तेमज बीजुं पाणी ए बे ज द्रव्य—पदार्थ होय, (दगतइया) अन्न—चोखा, दाळ, तेमज त्रीजुं पानी त्रण द्रव्य होय,

**गोयमा गोव्वइया गिहिधम्मा धम्मचिंतगा अविरुद्ध-विरुद्ध-वुड्ढ-**

षड्द्रव्याणि दकं च सप्तम भोजनं येषां ते दकसप्तमाः, **'दगएक्कारसमा'** दकैकादशाः—ओदनादीनि दश द्रव्याणि दकञ्चैकादशं पूरणाय भोजने येषां ते दकैकादशाः, **'गोयमा'** गौतमाः- वृषभं पुरस्कृत्य तत्क्रीडां दर्शयित्वा येऽन्नं याचन्ते, तेन च जीवनं निर्वाहयन्ति त इत्यर्थः। **'गोव्वइया'** गोव्रतिकाः—गोव्रतमस्ति येषां ते गोव्रतिकाः, ते हि गोषु ग्रामान्निर्गच्छन्तीषु निर्गच्छन्ति, चरन्तीषु चरन्ति, पिबन्तीषु पिबन्ति, आयान्तीषु आयान्ति, शयानासु च शेरते, उक्तञ्च—

"गावीहिं समं निग्गमपवेससयणासणाइं पकरेंति।
भुंजंति जहा गावी तिरिक्खवासं विहाविंता ॥ १ ॥"

तथा सातवां पानी हो, (**दगएक्कारसमा**) दस द्रव्य दाल भात आदि अन्य हों, एवं ११ वां पानी हो, (**गोयमा**) तथा जो बैल को आगे कर के जनता को उसकी क्रीडा दिखाकर उससे अन्न की याचना कर अपना जीवन निर्वाह करने वाले हों, (**गोव्रतिका**) [1]गोव्रती हों, (**गिहि-**

(१) गोव्रती पुरुष, जब गायें गांव से बाहर निकलती है तब अपने घर से बाहर निकलते है, जब वे चरती है तब वे भोजन करते है, जब वे पानी पीती है तब ही ये पानी पीते हैं। जब ये घर आती है तब येभी अपने घर आते है। और जब ये सोती है तब ये भी सो जाते हैं।

"गावीहिं समं निग्गमपवेससयणासणाइं पकरेंति। भुंजंति जहा गावी तिरिक्खवासं विहाविंता ॥ १ ॥

(दगसत्तमा) છ દ્રવ્ય (અન્ન)—ચોખા દાળ આદિ હોય તથા સાતમું પાણી હોય, (दगएक्कारसमा) દશ દ્રવ્ય—દાળ ભાત આદિ અન્ન હોય તેમજ ૧૧ મું પાણી હોય, (गोयमा) તથા જે બળદોને આગળ લાવીને લોકોને તેની ક્રીડા દેખાડીને તેમની પાસેથી અન્ન માગી પોતાનું જીવન નિર્વાહ કરવાવાળા હોય, (गोव्रतिका) [1]ગોવ્રતી હોય, (गिहिधम्मा) ગૃહસ્થ ધર્મને કલ્યાણકારક

(૧) ગોવ્રતી પુરુષ, જ્યારે ગાયો ગામથી બહાર નીકળે છે ત્યારે પોતાના ઘેરથી બહાર નીકળે છે. જ્યારે તેઓ ચરે છે ત્યારે તે ભોજન કરે છે, જ્યારે તેઓ પાણી પીએ છે ત્યારેજ તે પાણી પીએ છે. જ્યારે તેઓ ઘેર આવે છે ત્યારે તે પણ ઘેર આવે છે, અને જ્યારે તેઓ સુવે છે ત્યારે તે પણ સુઇ જાય છે.

"गावीहिं समं निग्गपवेससयणासणाइं पकरेति। भुंजंति जहा गावी तिरिक्खवासं विहाविता" ॥ १ ॥

**सावग-प्पभितयो, तेसिं णं मणुयाणं णो कप्पंति इमाओ नव रस-विगईओ आहारेत्तए, तं जहा--खीरं दहिं णवणीयं सप्पिं तेल्लं**

छाया—गोभि सम निर्गमप्रवेशशयनाऽऽशनादि प्रकुर्वन्ति ।

भुञ्जते यथा गावस्तिर्यग्वास विभावयन्त ॥ १ ॥ इति ।

'**गिहिधम्मा**' गृहिधर्मा ग –'गृहस्थधर्म एव श्रेयस्कर '- इति मत्वा दानादिधर्माराधका' '**धम्मचिंतगा**' धर्मचिन्तका'=धर्मशास्त्रपाठका', '**अविरुद्ध-विरुद्ध-वुड्ढसावग-प्पभितओ**' अविरुद्ध-विरुद्ध वृद्धश्रावक-प्रभृतय , अविरुद्धा वैनयिका', उक्तञ्च—

"**अविरुद्धो विणयकरो, देवाईणं पराए भत्तीए ।**

**जह वेसियायणसुओ, एवं अन्ने वि नायव्वा ॥ १ ॥**"

छाया—अविरुद्धो विनयकरो, देवादीनां परया भक्त्या ।

यथा वैश्यायनसुत, एवमन्येऽपि ज्ञातव्या ॥ १ ॥ इति ।

विरुद्धा =अक्रियावादिन', आत्माद्यनभ्युपगमेन बाह्याभ्यन्तरविरुद्धत्वात्, वृद्ध-श्रावका =ब्राह्मणा , एते प्रभृतिरादिर्येषां ते तथा । '**तेसिं णं मणुयाणं णो कप्पंति इमाओ नव रसविगईओ आहारेत्तए**' तेषा खलु मनुजाना नो कल्पन्ते इमा नव रसविकृतीराहर्तुम्,

**धम्मा**) गृहस्थ धर्म को श्रेयस्कर मानकर दानादिक धर्म के आराधक हों, (**धम्मचिंतगा**) धर्मशास्त्र के पाठक हों, (**अविरुद्ध-विरुद्ध-वुड्ढसावग-प्पभितयो**) [1]अविरुद्ध-वैनयिक हों, विरुद्ध-अक्रियावादी हों-आत्मादिक पदार्थों के नहीं मानने से बाह्य एव आभ्यन्तर क्रियाओं के विरोधी हों वृद्धश्रावक हों-ब्राह्मण हों-इत्यादि। (**तेसिं णं मणुयाण नो कप्पंति इमाओ नव रसविगईओ आहारेत्तए**) इन समस्त जनों को ये नवरस विकृतिया (**नौ वि-**

(१) अविरुद्धो विणयकरो देवाईण पराए भत्तीए । जह वेसियायणसुओ एवं अन्ने वि नायव्वा ॥ १ ॥

માનીને દાન-આદિક ધર્મના આરાધક હોય, (धम्मचिंतगा) ધર્મશાસ્ત્રના પાઠ કરનારા હોય, (अविरुद्ध-विरुद्ध-वुड्ढसावग-प्पभितयो) [1]અવિરુદ્ધ-વૈનયિક હોય, વિરુદ્ધ- અક્રિયાવાદી હોય-આત્મા-આદિક પદાર્થોને ન માનવાથી બાહ્ય તેમજ અભ્યન્તર ક્રિયાઓના વિરોધી હોય, વૃદ્ધશ્રાવક હોય-બ્રાહ્મણ હોય-ઇત્યાદિ. (तेसिं णं मणुयाणं णो कप्पंति इमाओ नव रसविगईओ आहारेत्तए) આ સમસ્ત લોકોને એ નવરસવિકૃતિઓ (નૌ વિગયો) ખાવા યોગ્ય

(१) अविरुद्धो विणयकरो देवाईणं पराए भत्तीए । जह वेसियायणसुओ एवं अन्ने वि नायव्वा ॥ १ ॥

**फाणियं महुं मज्जं मंसं, णो अण्णत्थ एक्काए सरिसवविगईए, ते णं मणुया अप्पिच्छा, तं चेव सव्वं, णवरं चउरासीइं वाससहस्साइं ठिई पण्णत्ता ॥ सू० १२ ॥**

ता इमा नवरसविकृतयः प्रदर्श्यन्ते—'**तं जहा**' तद्यथा—'**खीरं दहिं णवणीयं सप्पिं तेल्लं फाणियं महुं मज्जं मांसं**' क्षीरं दधि नवनीत सर्पिः तैलं फाणितं मधु मद्य मांसम्-तत्र-नवनीत='मक्खन' इति प्रसिद्धं, फाणितं=गुड, अन्यानि प्रसिद्धानि, आहर्तु न कल्पन्ते इत्यन्वयः। '**णो अण्णत्थ एक्काए सरिसवविगईए**' नो अन्यत्रैकस्याः सार्षपविकृतेः-सार्षपतैलरूपामेकां विकृतिं वर्जयित्वा अन्या उक्ता विकृतयो न कल्पन्तेऽभ्यवहर्तुमिति शेषः। '**ते णं मणुया अप्पिच्छा**' ते खलु मनुजा अल्पेच्छाः, '**सेस तं चेव**' शेषं तदेव= अवशिष्टं सर्वं पूर्ववदेव बोध्यम्। '**णवरं**' नवरं=विशेषस्तु—'**चउरासीइं वाससहस्साइं ठिई पण्णत्ता**' चतुरशीतिं वर्षसहस्राणि स्थितिः प्रज्ञप्ता—व्यन्तरेषु देवत्वेनोत्पन्नानां तेषां तत्रावस्थानं चतुरशीतिवर्षसहस्राणि यावत् ॥ सू० १२ ॥

**गय**) खाने योग्य नहीं है। वे विकृतियां ये है—(**खीरं दहिं णवणीयं सप्पिं तेल्लं फाणियं महुं मज्जं मांसं**) क्षीर, दधि, नवनीत, सर्पि, तैल, फाणित, मधु, मद्य, एवं मांस। गुड़ का नाम फाणित है। नवनीत नाम मक्खन का है। (**णो अण्णत्थ एक्काए सरिसवविगईए**) एक सरसों के तैलरूप विकृति का परिहार नहीं बतलाया गया है। नवरसरूप विकृति का परिहार करने वाले व्यक्ति सरसों का तैल खा सकते हैं। (**ते णं मणुया अप्पिच्छा, तं चेव सव्वं, णवरं चउरासीइं वाससहस्साइं ठिई पण्णत्ता**) ये मनुष्य अल्प-इच्छावाले होते है। अवशिष्ट समस्त पूर्व की तरह यहां जान लेना चाहिये। विशेषता

નથી. તે વિકૃતિઓ આ છે-(खीरं दहिं णवणीयं सप्पिं तेल्लं फाणियं महुं मज्जं मांसं) ક્ષીર (દૂધ), દહી, નવનીત, સર્પિ-(ઘૃત), તેલ, ફાણિત, મધ, મદ્ય, તેમજ માંસ. ગોળનું નામ ફાણિત છે. નવનીત એટલે માખણ. (णो अण्णत्थ एक्काए सरिसवविगईए) એક સરસવના તેલરૂપ વિકૃતિના પરિહાર નથી બતાવ્યો. નવરસરૂપ વિકૃતિને પરિહાર કરવાવાળા માણસ સરસવનું તેલ ખાઇ શકે છે. (ते णं मणुया अप्पिच्छा, तं चेव सव्वं, णवरं चउरासीइं वाससहस्साइं ठिई पण्णत्ता) આ મનુષ્યો અલ્પ-ઈચ્છાવાળા હોય છે. બાકીનું બધું પૂર્વ કહ્યા પ્રમાણે જાણી લેવું જોઇએ. વિશેષમાં વિશેષતા

**मूलम्—से जे इमे गंगाकूलगा वाणपत्था तावसा भवंति, तं जहा—होत्तिया पोत्तिया कोत्तिया जण्णई सड्ढई थालई हुंबउट्ठा दंतुक्खलिया उम्मज्जगा संमज्जगा निमज्जगा संपक्खालगा**

टीका—'से जे इमे' इत्यादि। 'से जे इमे' अथ ये इमे 'गंगाकूलगा' गङ्गाकूलका =गङ्गातटाश्रिता 'वाणपत्था' वानप्रस्थाः=वानप्रस्थाश्रमवर्तिनः 'तावसा भवंति' तापसा भवन्ति 'तं जहा' तद्यथा—'होत्तिया' होत्रिकाः=अग्निहोत्रिका', 'पोत्तिया' पोत्रिकाः=वस्त्रधारकाः, 'कोत्तिया' कौत्रिकाः=भूमिशायिनः, 'जण्णई' यज्ञकिनः=यज्ञकारका', 'सड्ढई' श्राद्धकिनः=श्राद्धकारकाः,'थालई' स्थालकिनः=भोजनपात्रधारकाः,'हुंबउट्ठा' कुण्डिकाधारिणाः,'हुंबउट्ठा' इति देशीयः शब्दः, 'दंतुक्खिलिया' दन्तोद्धखलिकाः=फलभोजिन','उम्मज्जगा' उन्मज्जकाः—उन्मज्जनमात्रेण=जलोपरि तरणमात्रेण ये स्नान्ति ते, 'सम्मज्जगा' समज्जकाः-उन्मज्जनस्यैवाऽसकृत् करणेन ये स्नान्ति ते, 'निमज्जगा' निमज्जका'—स्नानार्थं निमग्ना

---

सिर्फ यहां इतनी ही है कि ऐसे जीव जो व्यन्तर देवों में उत्पन्न होते है उनकी वहां स्थिति चौरासी हजार वर्ष की बतलाई गई है ॥ सू १२ ॥

'से जे इमे' इत्यादि

(से जे इमे) जो ये (गंगाकूलगा वणपत्था तावसा भवति) गगा के तट पर रहनेवाले वानप्रस्थ तापस हैं, जैसे (होत्तिया) अग्निहोत्रिक, (पोत्तिया) पोत्रिक-वस्त्रधारक, (कोत्तिया) कौत्रिक—भूमिशायी—भूमि पर सोने वाले, (जण्णई) यज्ञकारक, (सड्ढई) श्राद्धकारक, (थालई) भोजनपात्रधारक, (हुंबउट्ठा) कुण्डिकाधारी, (दंतुक्खलिया) फलभोजी, (उम्मज्जगा) एक वार पानी में डुबकी लगाकर स्नान करने वाले, (सम्मज्जगा) बार बार

---

માત્ર અહી એટલીજ છે કે જીવ જે વ્યન્તર દેવોમા ઉત્પન્ન થાય છે તેની ત્યાં સ્થિતિ ચોર્યાસી હજાર વરસની બતાવવામા આવી છે (સૂ ૧૨)

'से जे इमे' ઈત્યાદિ.

(से जे इमे) જે આ (गंगाकूलगा वाणपत्था तावसा भवंति) ગગાના તટ પર વસનારા વાનપ્રસ્થ તાપસ હોય છે, જેવા કે-(होत्तिया) અગ્નિહોત્રિક, (पोत्तिया) પોત્રિક-વસ્ત્રધારક, (कोत्तिया) કૌત્રિક-ભૂમિશાયી-ભૂમિ ઉપર સુવાવાળા, (जण्णई) યજ્ઞકારક, (सड्ढई) શ્રાદ્ધકારક, (थालई) ભોજનપાત્રધારક, (हुंबउट्ठा) કુંડિકાધારી, (दंतुक्खलिया) ફલભોજી, (उम्मज्जगा) એકવાર પાણીમાં ડુબકી મારીને સ્નાન કરવાવાળા, (सम्मज्जगा) વારવાર ડુબકી મારીને

**दक्खिणकूलगा उत्तरकूलगा संखधमगा कूलधमगा मिगलुद्धगा हत्थितावसा उद्दंडगा दिसापोक्खिणो वक्कवासिणो बिलवासिणो**

एव ये क्षण तिष्ठन्ति ते, '**संपक्खालगा**' सम्प्रक्षालकाः–ये मृत्तिकादिघर्षणपूर्वकमङ्गानि प्रक्षालयन्ति ते संप्रक्षालकाः, '**दक्खिणकूलगा**' दक्षिणकूलका –ये गङ्गायाः पूर्वाभिमुखगमनशीलाया दक्षिणतट एव वसन्ति ते, '**उत्तरकूलगा**' उत्तरकूलकाः–उत्तरतट एव ये वसन्ति ते, '**संखधमगा**' शङ्खध्मायकाः=शङ्खवादकाः–शङ्खं वादयित्वा ये भुञ्जते ते इत्यर्थ, '**कूलधमगा**' कूलध्मायका –ये कूले स्थित्वा शब्दं कृत्वा भुञ्जते ते, '**मियलुद्धगा**' मृगलुब्धकाः–व्याधवन्मृगमांसजीविनः, '**हत्थितावसा**' हस्तितापसाः–ये हस्तिन मारयित्वा तेनैव बहुकाल भोजनतो यापयन्ति ते, '**उद्दंडगा**' उद्दण्डकाः–उत्=ऊर्ध्वं दण्डा येषा ते उद्दण्डकाः, दण्डमूर्ध्वं कृत्वा ये सञ्चरन्ति ते इत्यर्थः, '**दिसापोक्खिणो**' दिशाप्रोक्षिणः=उदकेन दिशः प्रोक्ष्य ये फलपुष्पादि समुच्चिन्वन्ति ते, '**वक्कवासिणो**' वल्कवाससः–वल्कानि=तरुत्वच एव वासांसि येषां ते तथा, '**बिलवासिणो**' बिलवासिनः=

डुबकी लगाकर स्नान करनेवाले, (**निमज्जगा**) पानी में कुछ देर तक डूबकर स्नान करने वाले, (**संपक्खालगा**) मिट्टी आदि से अंग को घर्षण कर स्नान करने वाले, (**दक्खिणकूलगा**) गगा के दक्षिण तट पर वसने वाले, (**उत्तरकूलगा**) गंगा के उत्तर तट पर वसने वाले, (**संखधमगा**) शंखों को बजाकर भोजन करने वाले, (**कूलधमगा**) नदी के तट पर बैठ कर शब्द कर के भोजन करने वाले, (**मियलुद्धगा**) व्याधोकी तरह मृग के मांस को खाने वाले, (**हत्थितावसा**) हाथी को मारकर उसके मांस का भोजन करने वाले, (**उद्दंडगा**) दडे को ऊचा करके फिरने वाले, (**दिसापोक्खिणो**) दिशाओं को जल से सिंचन करने वाले, (**वक्कवासिणो**) वृक्षों की छाल को पहिरने वाले, (**बिलवासिणो**) भूमिगृह में निवास

સ્નાન કરવાળા, (निमज्जगा) પાણીમા થોડીવાર સુધી ડૂબીને સ્નાન કરવાવાળા, (संपक्खालगा) માટી આદિ વડે અગને ઘસીને સ્નાન કરવા વાળા, (दक्खिणकूलगा) ગંગાના દક્ષિણ તટ ઉપર વસવાવાળા, (उत्तरकूलगा) ગગાના ઉત્તર તટ ઉપર વસવાવાળા, (संखधमगा) શંખ વગાડીને ભોજન કરવાવાળા, (कूलधमगा) નદીના તટ ઉપર બેસીને શબ્દ કરતા કરતા (બોલતા બોલતા) ભોજન કરવાવાળા, (मियलुद्धगा) શિકારીની પેઠે મૃગનું માસ ખાવાવાળા, (हत्थितावसा) હાથીને મારીને તેના માસનું ભોજન કરવાવાળા, (उद्दंडगा) ડંડાને ઉંચો કરી ફરવાવાળા, (दिसापोक्खिणो) દિશાઓમા પાણી છાટવા વાળા, (वक्कवासिणो) વૃક્ષની છાલ પહેરવા વાળા, (बिलवासिणो) ભૂમિગૃહમાં

**जलवासिणो रुक्खमूलिया अंबुभक्खिणो वाउभक्खिणो सेवालभ-क्खिणो मूलाहारा कंदाहारा तयाहारा पत्ताहारा पुप्फाहारा वीयाहारा**

भूमिगृहवासिन', '**जलवासिणो**' जलवासिन'—ये जले प्रविष्टा एव निवसन्ति ते, '**रुक्खमूलिया**' वृक्षमूलका'—तरुतले ये निवसन्ति ते, '**अंबुभक्खिणो**' अम्बुभक्षिण'= जलाहारकारिण., '**वाउभक्खिणो**' वायुभक्षिण'=पवनाहारा', '**सेवालभक्खिणो**' शैवालभक्षिणः—शैवाल=जललतां भक्षन्ति तच्छीला'—जलोपरिस्थितहरितवनस्पतिविशेषभोजिन इत्यर्थः, '**मूलाहारा**' मूलाहारा'—मूलानि आहरन्ति तच्छीला. '**कंदाहारा**' कन्दाऽऽहारा = सूरणादिकन्दभक्षिणः, '**तयाहारा**' त्वगाहारा.=निम्बादित्वग्भक्षिणः, '**पत्ताहारा**' पत्रा-ऽऽहाराः=बिल्वादिपत्रभक्षिण', '**पुप्फाहारा**' पुष्पाऽऽहारा =कुन्दशोभाञ्जनादिपुष्पभक्षिण , '**वीयाहारा**' बीजाऽऽहारा'—कूष्माण्डादिबीजभोजिनः, '**परिसडिय-कंद-मूल-तय-पत्त-पुप्फ-फला-हारा**' परिशटित—कन्द—मूल—त्वक्—पत्र—पुष्प—फला—ऽऽहाराः— परिशटितं=केनचिदानीतं स्वय पतितं च परिशटितम्, तादृशं कन्दमूलत्वक्पत्रपुष्पफलम् आहरन्ति तच्छीला —केन चित् आनीतानि तरुभ्यः स्वय पतितानि वा पत्रपुष्पफलान्येव

---

करने वाले, (**जलवासिणो**) जल में खड़े रहने वाले, (**रुक्खमूलिया**) वृक्ष के नीचे निवास करने वाले, (**अंबुभक्खिणो**) मात्र जल का आहार करने वाले, (**वाउभक्खिणो**) मात्र वायु का ही आहार करने वाले, (**सेवालभक्खिणो**) मात्र शैवालका ही आहार करने वाले, (**मूलाहारा**) मात्र मूल का ही आहार करने वाले, (**कदाहारा**) सूरणादिक कंदों का आहार करने वाले, (**तयाहारा**) त्वक्—छालका आहार करने वाले, (**पत्ताहारा**) बिल्व आदि के पत्तों का आहार करने वाले, (**पुप्फाहारा**) पुष्पों का आहार करने वाले, (**परिसडिय-कंद-मूल-तय-पत्त-पुप्फ-फला-हारा**) तोड़ कर या स्वयं लाने हुए नहीं, किन्तु स्वय

---

નિવાસ કરવાવાળા, (जलवासिणो) જલમાજ ઉભા રહેવાવાળા, (रुक्खमूलिया) વૃક્ષની નીચે નિવાસ કરવાવાળા, (अंबुभक्खिणो) માત્ર પાણીના આહાર કર-વાવાળા, (वाउभक्खिणो) માત્ર વાયુનોજ આહાર કરવાવાળા, (सेवालभक्खिणो) માત્ર શૈવાળનોજ આહાર કરવાવાળા, (मूलाहारा) માત્ર મૂળના જ આહાર કરવાવાળા, (कंदाहारा) સૂરણ આદિ કદનો આહાર કરવાવાળા, (तयहारा) ત્વક્-છાલનો આહાર કરવાવાળા, (पत्ताहारा) બીલી આદિ પાનનો આહાર કરવા-વાળા, (पुप्फाहारा) પુષ્પોનો આહાર કરવાવાળા, (वीयाहारा) કૂષ્માંડ આદિના બીજનો આહાર કરવાળા, (परिसडिय-कंद-मूल-तय-पत्त-पुप्फ-फलाहारा) તોડીને અથવા પોતે લાવેલ ન હોય પરંતુ પોતાની મેળે પડી ગયેલા અથવા કોઈએ

**परिसडिय-कंद-मूल-तय-पत्त-पुप्फ-फलाहारा जला-भिसेय-कढिण-गायभूया आयावणाहिं पंचग्गितावेहिं इंगालसोल्लियं कंडुसोल्लियं पिव अप्पाणं करेमाणा बहूइं वासाइं परियागं पाउणंति, पाउणित्ता कालमासे कालं किच्चा उक्कोसेणं जोइ-**

---

भुञ्जते कन्दमूलत्वचामपि तथाविधानामेवोपयोगं कुर्वते ते, '**जलाभिसेय-कढिण-गाय-भूया**' जलाभिषेक-कठिन-गात्र-भूता -जलाभिषेकेण कठिनं यद् गात्रं तत् प्राप्ता ये ते तथा. '**आयावणाहि**' आतपनाभि -प्रखररविकराऽऽसेवनाभिः, '**पंचग्गितावेहि**' पञ्चाग्नितापै -चतसृषु दिक्षु प्रज्वालितैश्चतुर्भिरग्निभिः उपरिभागे सूर्यकिरणपञ्चमैर्ये तापास्तैः, '**इंगालसोल्लियं**' अङ्गारपक्वम्-प्राकृते-'**पच्**' धातोः स्थाने '**सोल्ल**' आदेशो भवति। अङ्गारैर्निर्धूमज्वलदनलपिण्डैरिव पक्वम्. '**कडुसोल्लिय**' कन्दुपक्वम्-कन्दुः=चणकादि-भर्जनपात्रं, तत्र पक्वम्, '**अप्पाणं करेमाणा**' आत्मानं=शरीरं कुर्वाणाः, '**बहूइं वासाइं परियाग पाउणंति**' बहूनि वर्षाणि पर्यायं=वानप्रस्थपर्यायं पालयन्ति, पालयित्वा,

---

गिरे हुए या किसी के द्वारा लाये गये कंद, मूल, त्वक्, पत्र, पुष्प एव फलों का आहार करने वाले, (**जलाभिसेय-कढिण-गाय भूया**) जलाभिषेक करने से जिनका शरीर कठिन हो गया है ऐसे, (**आयावणाहिं पंचग्गितावेहिं इंगालसोल्लियं कडुसोल्लियं पिव अप्पाणं करेमाणा**) तथा आतापना-प्रखर सूर्य की किरणो के सेवन से, पंचाग्नि के बीच बैठकर तापों के सहन करने से अगार में पक्व हुए जैसे एवं भाड में भूंजे हुए जैसे अपने सरीर को करने वाले ये वानप्रस्थ तापस जन (**बहूइं वासाइं परियागं पाउणंति**) बहुत वर्ष पर्यन्त वानप्रस्थ तापस की पर्याय का पालन करते हुए (**कालमासे कालं किच्चा**)

---

લાવી આપેલા કંદ, મૂલ, છાલ, પત્ર, પુષ્પ, તેમજ ફળનો આહાર કરવાવાળા, (जलाभिसेय-कढिण-गाय-भूया) જલનો અભિષેક કરવાથી જેના શરીર કઠણ થઈ ગયાં હોય એવા, (आयावणाहि पंचग्गितावेहिं इंगालसोल्लियं कंडुसोल्लियं पिव अप्पाणं करेमाणा) તથા આતાપના-પ્રખર સૂર્યના કિરણોના સેવનથી, પંચાગ્નિના વચ્ચે બેસીને તાપ સહન કરવાથી, અંગારમા પકાવેલ હોય તેવાં તેમજ હાંડલાંમા ભૂંજેલ જેવાં પોતાના શરીરને કરી નાખવાવાળા તે વાન-પ્રસ્થ તાપસજન (તપસ્વીઓ) (बहूइं वासाइं परियागं पाउणंति) ઘણા વરસો સુધી વાનપ્રસ્થ તાપસની પર્યાયનુ પાલન કરતા કરતા (कालमासे कालं किच्चा)

सिएसु देवेसु देवत्ताए उववत्तारो भवंति। पलिओवमं वास-सहस्समब्भहियं ठिई। आराहगा? णो इणट्ठे समट्ठे। सेसं तं चेव ॥ सू० १३ ॥

मूलम्—से जे इमे जाव सन्निवेसेसु पव्वइया समणा

'कालमासे कालं किच्चा' कालमासे काल कृत्वा 'उक्कोसेण जोइसिएसु देवेसु देवत्ताए उववत्तारो भवंति' उत्क्रोशेन ज्योतिपिकेपु देवेपु देवत्वेनोपपत्तारो भवन्ति· 'पलिओवमं वाससयसहस्समब्भहियं ठिई' पल्योपम वर्षशतसहस्राभ्यधिकं स्थिति·—वर्षशतसहस्राणि अभ्यधिकानि यत्र तत्—वर्षशतसहस्राभ्यधिकम्=एकलक्षवर्षाधिकं पल्योपमं स्थिति· प्रज्ञप्तेति। शिष्य· पृच्छति—एते ज्यौतिषिका देवा 'आराहगा?' आराधका·= परलोकस्याराधका भवन्ति किम्?, उत्तरमाह—'णो इणट्ठे समट्ठे' नाऽयमर्थ समर्थः=सगत·, परलोकस्याराधका न भवन्ति। अस्यार्थस्तु—अत्रैवोत्तरार्द्धेऽष्टमे सूत्रे व्याख्यातः ॥ सू० १३ ॥

टीका—'से जे इमे' इत्यादि। 'से जे इमे' अथ य इमे 'जाव सन्निवे-

मरण के अवसर में मृत्यु के वशवर्ती हो, (उक्कोसेणं जोइसिएसु देवेसु देवत्ताए उव-वत्तारो भवंति) उत्कृष्ट रूप से ज्योतिषी देवों में देवरूप से उत्पन्न हो जाते हैं। (पलि-ओवम वाससयसहस्समब्भहियं ठिई) वहां पर उनकी स्थिति १ लाख वर्ष अधिक एक पल्यप्रमाण होती है। गौतम पूछते है–हे नाथ। (आराहगा) ये परलोक के आराधक होते है या नही? उत्तर–(णो इणट्ठे समट्ठे) ये परलोक के आराधक नहीं होते है ॥ सू १३ ॥

'से जे इमे जाव' इत्यादि

(से जे इमे) जो ये (जाव सन्निवेसेसु) ग्राम नगर आदि स्थानों में (पव्वइया

કાલ અવસરે કાલ કરીને (उक्कोसेणं जोइसिएसु देवेसु देवत्ताए उववत्तारो भवंति) ઉત્કૃષ્ટરૂપથી જ્યોતિષી દેવોમા દેવરૂપે ઉત્પન્ન થઈ જાય છે. (पलिओवमं वास-सयसहस्समब्भहियं ठिई) ત્યા તેમની સ્થિતિ ૧ લાખ વરસ ઉપર એક પલ્ય–પ્રમાણ હોય છે ગૌતમ પૂછે છે કે હે નાથ! (आराहगा) તેઓ પરલોકના આરાધક હોય છે કે નહિ? ઉત્તર–(णो इणट्ठे समट्ठे) તેઓ પરલોકના આરા-ધક હોતા નથી. (સૂ ૧૩)

"से जे इमे जाव" ઇત્યાદિ.

(से जे इमे) જે (जाव सन्निवेसेसु) ગામ નગર આદિ સ્થાનોમા (पव्वइया

**भवंति, तं जहा–कंदप्पिया कुक्कुइया मोहरिया गीयरइप्पिया नच्चणसीला, ते णं एएणं विहारेणं विहरमाणा बहूइं वासाइं सामण्णपरियायं पाउणंति, पाउणित्ता तस्स ठाणस्स अणा-**

---

**सेसु पव्वइया समणा भवंति** ' यावत्सन्निवेशेषु प्रव्रजिताः श्रमणाः भवन्ति, ' **तं जहा** ' तद्यथा–' **कंदप्पिया** ' कान्दर्पिका –हास्यकारका भाण्डादयः, ' **कुक्कुइया** ', कौकुचिकाः– कुकुचेन=कुत्सितचेष्टया चरन्तीति कौकुचिकाः ये च भ्रूनयनवदनकरचरणाऽऽदिभि- र्भाण्डा इव तथा चेष्टन्ते यथा स्वयमहसन्त एव परान् हासयन्ति ते। ' **मोहरिया** ' मौखरिकाः=वाचालाः–नानाविधाऽसम्बद्धभाषिण इत्यर्थः। ' **गीय–रइ–प्पिया** ', गीत– रति–प्रियाः–गीतेन या रतिः=क्रीडा सा प्रिया येषां ते तथा, ' **नच्चणसीला** ' नर्तनशीलाः ' **ते णं एएणं विहारेणं विहरमाणा** ' ते खलु एतेन विहारेण विहरन्तः=उक्तमाचरण- माचरन्तः, ' **बहूइ वासाइं सामण्णपरियायं पाउणंति** ' बहूनि वर्षाणि श्रामण्यपर्यायं= चारित्रपर्यायं पालयन्ति, ' **पाउणित्ता** ' पालयित्वा ' **तस्स ठाणस्स** ' तस्य स्थानस्य=

---

**समणा)** प्रव्रजित श्रमण होते है, (**तं जहा**) जैसे–(**कंदप्पिया कुक्कुइया मोहरिया गीयर- इप्पिया**) कांदर्पिक–हास्यकारक भांड आदि, कौकुचिक–भ्रू, नयन, वदन, कर एवं चरण आदिकों से कुत्सित चेष्टाएँ करके भांडों की तरह स्वयं न हँसकर दूसरों को हँसाने वाले, गीतपूर्वक क्रीड़ा को अधिक पसंद करने वाले, (**नच्चणसीला**) नृत्य करने के स्वभाव वाले; ये सब (**एएणं विहारेणं विहरमाणा बहूइं वासाइं सामण्णपरियायं पाउणंति**) अपने २ पद के अनुसार उक्त आचरण को आचरण करते हुए बहुत वर्षों तक श्रमणपर्याय को पालते है, (**पाउणित्ता तस्स ठाणस्स अणालोइय–अपडिक्कंता कालमासे कालं**

---

**समणा)** પ્રવ્રજિત શ્રમણ થાય છે, (**तं जहा**) જેવાકે (**कंदप्पिया कुक्कुइया मोह- रिया गीय–रइ–प्पिया**) કાંદર્પિક–હાસ્યકારક (ભવાયા) આદિ, કૌકુચિક–ભ્રૂ, નયન, વદન, કર તેમજ પગ આદિ વડે કુત્સિત ચેષ્ટાઓ કરી ભવૈયાની પેઠે સ્વયં (પોતે) ન હસતાં બીજાને હસાવવાવાળા, મૌખરિક–અનેક પ્રકારના અસં- બદ્ધ પ્રલાપ કરવાવાળા, ગીતયુક્ત ક્રીડાને વધારે પસંદ કરવાવાળા, (**नच्च- णसीला**) નૃત્ય કરવાના સ્વભાવવાળા, આ બધા (**एएणं विहारेणं विहरमाणा बहूइं वासाइं सामण्णपरियायं पाउणंति**) પોત પોતાનાં પદ પ્રમાણે ઉક્ત આચર- ણને આચરતા આચરતાં ઘણાં વરસો સુધી શ્રમણ–પર્યાયને પાળે છે. (**पाउ- णित्ता तस्स ठाणस्स अणालोइय–अपडिक्कंता कालमासे कालं किच्चा उक्कोसेणं**

**लोइय–अपडिक्कंता कालमासे कालं किच्चा उक्कोसेणं सोहम्मे कप्पे कंदप्पिएसु देवेसु देवत्ताए उववत्तारो भवंति, तहिं तेसिं गई, सेसं तं चेव, णवरं पलिओवमं वाससयसहस्समब्भहियं ठिई ॥ सू० १४ ॥**

---

उक्तस्य पापस्थानस्य, '**अणालोइयअपडिक्कंता**' अनालोचिताऽप्रतिक्रान्ताः—अनालोचिताश्च ते अप्रतिक्रान्ताः—गुरूणां समीपे अकृताऽऽलोचनका अतएव दोषादनिवृत्ता इत्यर्थः। '**कालमासे कालं किच्चा**' कालमासे कालं कृत्वा, '**उक्कोसेणं सोहम्मे कप्पे कंदप्पिएसु देवेसु देवत्ताए उववत्तारो भवंति**' उत्कर्षेण सौधर्मे कल्पे कान्दर्पिकेषु=हास्यक्रीडाकारकेषु देवेषु देवत्वेनोपपत्तारो भवन्ति, '**तहिं तेसिं गई**' तत्र तेषां गतिः '**सेसं तं चेव**' शेषं तदेव=पूर्वोक्तमेव बोध्यम्। '**पलिओवमं वाससयसहस्समब्भहियं ठिई**' पल्योपमं वर्षशतसहस्राऽभ्यधिकं स्थितिः—लक्षवर्षाधिकं पल्योपमं स्थितिः ॥ सू० १४ ॥

---

**किच्चा उक्कोसेणं सोहम्मे कप्पे कंदप्पिएसु देवेसु देवत्ताए उववत्तारो भवंति**) पालन करते हुए अंत समय वे अपने उक्त पापस्थानों की गुरु के समीप आलोचना नहीं करके उनसे निवृत्त नहीं होते है, इसलिए जब वे काल–अवसर में काल करते हैं, तब अधिक से अधिक सौधर्मकल्प में जो हास्यक्रीडाकारक देव है उनमें देवरूप से उत्पन्न होते है। (**तहिं तेसिं गई सेसं तं चेव**) वहीं पर उनकी गति आदि बतलाई गई है। यहां पर और भी जो कुछ वक्तव्य है वह इसी आगमके उत्तरार्ध में आठवे सूत्र की तरह समझ लेना चाहिये। (**पलिओवमं वाससयसहस्समब्भहियं ठिई**) उस कल्प में उनकी स्थिति उस पर्याय में १ लाख वर्ष अधिक १ पल्य की जाननी चाहिये ॥ सू० १४ ॥

---

सोहम्मे कप्पे कंदप्पिएसु देवेसु देवत्ताए उववत्तारो भवंति) પાલન કરતાં કરતાં અંત સમયે તેઓ પોતાનાં ઉક્ત પાપસ્થાનોની ગુરુની પાસે આલોચના ન કરવાથી તેનાથી નિવૃત્ત થતા નથી. તેથી જ્યારે તેઓ કાલ અવસરે કાલ કરે છે ત્યારે વધારેમાં વધારે સૌધર્મ કલ્પમાં જે હાસ્યક્રીડાકારક દેવ છે તેમા દેવરૂપે ઉત્પન્ન થાય છે. (तहिं तेसिं गई सेसं तं चेव) ત્યા તેમની ગતિ આદિ બતાવવામાં આવેલ છે. અહી બીજું પણ જે કાંઈ વર્ણન છે તે આ આગમના ઉત્તરાર્ધના આઠમા સૂત્રની પેઠે સમજી લેવું જોઈએ. (पलिओवमं वाससयसहस्समब्भहियं ठिई) એ કલ્પમાં તેમની સ્થિતિ તે પર્યાયમાં ૧ લાખ વરસ ઉપરાંત ૧ પલ્યની જાણવી જોઈએ. ( સૂ. ૧૪ )

**मूलम्—से जे इमे जाव सन्निवेसेसु परिव्वायगा भवंति, तं जहा—संखा जोगी काविला भिउव्वा हंसा परमहंसा**

टीका—'से जे इमे' इत्यादि। 'से जे इमे' अथ य इमे=ईदृशाः 'जाव सन्निवेसेसु' यावत् सन्निवेशेषु, 'परिव्वायगा भवंति' परिव्राजकाः=संन्यासिनो भवन्ति, 'तं जहा' तद्यथा—'संखा जोगी काविला भिउव्वा हंसा परमहंसा बहुउदगा कुडिव्वया कण्हपरिव्वायगा' सांख्याः योगिनः कापिलाः भार्गवाः हंसाः परमहंसा बहूदकाः कुटीव्रताः कृष्णपरिव्राजकाः, तत्र सांख्याः=सांख्यमतानुयायिनः, योगिनः—योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः सोऽस्त्येषां ते योगिनः, 'कापिलं शास्त्रं सांख्यं द्विविधम्—सेश्वरं निरीश्वरं च। तत्र सेश्वरं सांख्यं भगवदवतारः कपिलः प्रणीतवान्, निरीश्वरं सांख्यं तु अग्न्यवतारः कपिल इति सांख्यशास्त्रानुयायिनः' इति वाचस्पत्याभिधानकोशः। निरीश्वरसांख्यमतानुयायिन इति भावः। '**भिउव्वा**'

'से जे इमे जाव' इत्यादि।

(**से जे इमे**) जो ये (**जाव सन्निवेसेसु**) ग्राम आकर आदिसे लेकर सन्निवेश तक के स्थानों में (**परिव्वायगा**) [1]परिव्राजक रहते हैं; जैसे (**संखा जोगी काविला भिउव्वा हंसा परमहंसा**) सांख्य—सांख्यमतानुयायी साधु, योगी—चित्तवृत्ति-निरोधरूप योग को पालन करने वाले साधु, कापिल—निरीश्वर सांख्यमतानुयायी साधु,

(१) सांख्य दो प्रकार के हैं—१ सेश्वरसांख्य, २ निरीश्वरसांख्य। सेश्वरसांख्य-ईश्वर को मानता है। निरीश्वर सांख्य ईश्वर को नहीं मानता है। वाचस्पत्याभिधानकोष में ऐसा लिखा है कि भगवदवतारस्वरूप कपिलने ईश्वरवादी सांख्य को, एवं अग्न्यवतारविशिष्ट उसी कपिलने निरीश्वरवादी सांख्य को रचा है।

"से जे इमे जाव" ઇત્યાદિ.

(से जे इमे) જેઓ (जाव सन्निवेसेसु) ગામ આકર આદિથી લઈને સન્નિવેશ સુધીનાં સ્થાનોમાં (परिव्वायगा) પરિવ્રાજક રહે છે, જેવા કે (संखा जोगी काविला भिउव्वा हंसा परमहंसा) સાંખ્ય—સાંખ્યમતના અનુયાયી સાધુ, યોગી—ચિત્તવૃત્તિનિરોધરૂપ યોગનું પાલન કરવાવાળા સાધુ, કાપિલ—નિરીશ્વર [1]સાંખ્યમત અનુયાયી સાધુ, ભાર્ગવ—ભૃગુ ઋષિના વંશજ, (हंसा) હંસ

(૧) સાંખ્ય બે પ્રકારનાં છે. ૧ સેશ્વરસાંખ્ય- ૨ નિરીશ્વરસાંખ્ય. સેશ્વર-સાંખ્ય ઈશ્વરને માને છે. નિરીશ્વરસાંખ્ય ઈશ્વરને માનતા નથી. વાચસ્પત્ય-અભિધાન કોષમાં એમ લખ્યું છે કે ભગવાનના અવતારસ્વરૂપ કપિલે ઈશ્વરવાદી સાંખ્યને તેમજ અગ્નિ—અવતાર—વિશિષ્ટ તેજ કપિલે નિરીશ્વરવાદી સાંખ્ય રચ્યુ છે.

**बहुउदगा कुडिव्वया कण्हपरिव्वायगा। तत्थ खलु इमे अट्ठ माहणपरिव्वायगा भवंति, तं जहा—**

**"कण्णे य करकंडे य, अंबडे य परासरे।**
**कण्हे दीवायणे चेव, देवगुत्ते य नारए ॥**

भार्गवा—भृगुर्लोकप्रसिद्ध ऋषिस्तद्वंशजा भार्गवा। 'हंसा'—हंसाः=पर्वतकुहरपथ्याऽऽश्रमाऽऽरामवासिनो भिक्षार्थं च ग्रामं प्रविशन्ति। 'परमहंसा' परमहंसाः, एतेषु नदीपुलिनसमागमप्रदेशेषु वसन्ति मरणसमये चीरकौपीनकुशांश्च त्यक्त्वा प्राणान् परित्यजन्ति। 'बहुउदगा' बहूदकाः, इमे तु ग्राम एकरात्रिका, नगरे पञ्चरात्रिका. प्राप्तभोगांश्च भुञ्जते इति। 'कुडिव्वया' कुटीव्रताः=कुटीचराः, ते च कुट्यां वर्तमाना व्यपगतक्रोधलोभमोहा अहङ्कारं वर्जयन्ति। 'कण्हपरिव्वायगा' कृष्णपरिव्राजकाः—परिव्राजकविशेषा एव, नारायणभक्तिका इति केचित्। 'तत्थ खलु इमे अट्ठ माहणपरिव्वायगा भवंति' तत्र खलु इमेऽष्टौ ब्राह्मणपरिव्राजका भवन्ति। 'तं जहा' तद्यथा—'कण्णे य करकंडे य अंबडे य

भार्गव—भृगु ऋषि के वंशज (शिष्य), हंस—पर्वतकी गुफा, आश्रम, देवमन्दिर तथा बगीचा आदि में निवास करने वाले साधु, जो सिर्फ भिक्षा के लिये ही ग्राम में आते है, (परमहंसा) नदी के तट पर नग्नरूप में रहने वाले साधु, जो मरण काल में चीर, कौपीन और कुशा को त्याग कर मरण करते है। (बहुउदगा) एक रात ग्राम में पाच राततक नगर में रहे तथा जो मिले सो खावें ऐसे बहूदक साधु, (कुडिव्वया) कुटीव्रत—कुटीचर—क्रोध, लोभ एवं मोह तथा अहंकार से रहित होकर पर्णकुटी में रहने वाले, (कण्हपरिव्वायगा) नारायण के भक्त परिव्राजक—अथवा कृष्ण के भक्त परिव्राजक, (तत्थ) इनमें (अट्ठ) आठ (इमे) ये (माहण-

पर्वतनी गुफा, आश्रम तथा बगीचा आदिमां निवास करवावाळा साधु, जे मात्र भिक्षा माटे ज गाममा आवे छे. (परमहंसा) नदीना तट उपर नग्नरूपमां रहेनारा साधु, जे मरणकालमां चीर, कौपीन (लंगोटी) अने कुशानो त्याग करी मरण पामे छे. (बहुउदगा) एक रात गाममां, पाच रात सुधी नगरमां रहे तथा जे मळे ते खाय एवा बहूदक साधु, (कुडिव्वया) कुटीव्रत—कुटीचर—क्रोध, लोभ तेमज मोह तथा अहंकारथी रहित थईने पर्णकुटीमां रहेवावाळा, (कण्हपरिव्वायगा) नारायणना भक्त परिव्राजक, अथवा कृष्णनां भक्त परिव्राजक, (तत्थ) एमा (अट्ठ) आठ (इमे) आ (माहणपरि-

तत्थ खलु इमे अट्ठ खत्तियपरिव्वायया भवंति। तं जहा–
सीलही ससिहारे नग्गई भग्गईति य ॥
विदेहे राया रामे बलेति य अट्ठमे ॥ सू० १५॥

मूलम्—ते णं परिव्वाया रिउवेय–यजुव्वेय–सामवेय-

परासरे। कण्हे दीवायणे चेव देवगुत्ते य नारए॥ कर्णश्च करकण्टश्च अम्बडश्च पराशरः। कृष्णो द्वैपायनश्चैव देवगुप्तश्च नारदः। एतेऽष्टौ ब्राह्मणपरिव्राजकाः। 'तत्थ खलु इमे अट्ठ खत्तियपरिव्वायगा भवंति' तत्र खल्विमेऽष्टौ क्षत्रियपरिव्राजका भवन्ति, 'तं जहा' तद्यथा–'सीलही ससिहारे नग्गई भग्गईति य। विदेहे राया रामेबलेति य अट्ठमे।' शीलधीः शशिधारो नग्नको भग्नक इति च। विदेहो राजा रामो बल इति च अष्टमः। एते षोडश परिव्राजका लोकतो ज्ञेयाः॥ सू० १५॥

टीका—'ते णं परिव्वाया' इत्यादि। 'ते णं परिव्वाया' ते खलु

परिव्वायगा भवंति) ब्राह्मण की जाति के परिव्राजक होते है–(तं जहा) सो जैसे (कण्णे य करकडे य अंवडे य परासरे। कण्हे दीवायणे चेव, देवगुत्ते य नारए) १ कर्ण, २ करकंड, ३ अबड, ४ पारासर, ५ कृष्ण, ६ द्वैपायन, ७ देवगुप्त एवं नारद। (तत्थ खलु इमे अट्ठ खत्तियपरिव्वायगा) तथा ये आठ क्षत्रिय जाति के परिव्राजक होते है, (तं जहा) सो जैसे–(सीलही ससिहारे य नग्गई भग्गई ति य। विदेहे राया रामे बलेति य अट्ठमे) शीलधी, शशिधार, नग्नक, भग्नक, विदेह, राजा राम और बल॥ सू. १५॥

'तेणं परिव्वाया रिउवेय' इत्यादि।

(ते णं परिव्वाया) ये १६ साधु–परिव्राजक–आठ ब्राह्मण जाति के आठ क्षत्रिय

व्वायगा भवंति) બ્રાહ્મણની જાતિના પરિવ્રાજક થાય છે, (तं जहा) જેમકે (कण्णे य करकंडे य अंवडे य परासरे। कण्हे दीवायणे चेव, देवगुत्ते य नारए) ૧ કર્ણ, ૨ કરકંડ, ૩ અંબડ, ૪ પારાસર, ૫ કૃષ્ણ, ૬ દ્વૈપાયન, ૭ દેવ-ગુપ્ત, તેમજ ૮ નારદ. (तत्थ खलु इमे अट्ठ खत्तियपरिव्वायगा भवंति) તથા આ આઠ ક્ષત્રિયજાતિના પરિવ્રાજક હોય છે. (तं जहा) જેમ કે (सीलही ससिहारे नग्गई भग्गईति य। विदेहे राया रामे वलेति य अट्ठमे) ૧ શીલધી, ૨ શશિધાર, ૩ નગ્નક, ૪ ભગ્નક, ૫ વિદેહ, ૬ રાજા, ૭ રામ તથા ૮ બલ. (सू. १५)

'तेणं परिव्वाया रिउवेय' ઇત્યાદિ.

(ते णं परिव्वाया) આ ૧૬ સાધુ–પરિવ્રાજક આઠ બ્રાહ્મણ જાતિ અને

**अहव्वणवेय–इतिहासपंचमाणं निघंटुछट्ठाणं संगोवंगाणं सर-हस्साणं चउण्हं वेदाणं सारगा पारगा धारगा सडंगवी सट्ठितंत-विसारया, संखाणे सिक्खाकप्पे वागरणे छंदे निरुत्ते जोइ-**

परिव्राजकाः--प्राग्वर्णिता अष्टौ ब्राह्मणपरिव्राजकाः, अष्टौ क्षत्रियपरिव्राजकाः. ते कीदृशाः? अत्राऽऽह–'**रिउवेय–यजुव्वेय–सामवेय–अहव्वणवेय–इतिहासपंचमाणं**' ऋग्वेद–यजुर्वेद–सामवेदाऽथर्ववेदेतिहासपञ्चमानाम्–ऋग्वेदादयश्चत्वारो वेदाः, तथा इतिहासः पञ्चमो येषां ते इतिहासपञ्चमाः तेषाम्, '**निघंटुछट्ठाणं**' निघण्टुषष्ठानाम्–निघण्टुर्नाम कोशः षष्ठः=षट्संख्यापूरको येषां तेषां '**संगोवंगाणं**' साङ्गोपाङ्गानाम्–अङ्गैरुपाङ्गैः सहितानाम्, '**सरहस्साणं**' सरहस्यानां=रहस्ययुक्तानाम्, '**चउण्हं**' चतुर्णाम्, '**वेदाणं**' वेदानाम्, '**सारगा**' सारकाः=अध्यापनद्वारेण प्रवर्तकाः, अथवा स्मारकाः=अन्येषां विस्मृतस्य स्मारणात्, '**पारगा**' पारगाः=सम्पूर्णवेदार्थज्ञानवन्तः, '**धारगा**' धारकाः=धारयितुं क्षमाः, '**सडंगवी**' षडङ्गविदः, '**सट्ठितंतविसारया**' षष्ठितन्त्रविशारदाः–षष्ठितन्त्रं=कपिलसिद्धान्तः–तत्र विशारदाः=पण्डिताः, '**संखाणे**' संख्याने=गणितविषये. '**सिक्खाकप्पे**' शिक्षाकल्पे–

जाति के (**रिउवेय–यजुव्वेय–सामवेय–अहव्वणवेय–इतिहासपंचमाणं निघंटुछट्ठाणं संगोवंगाणं सरहस्साणं चउण्ह वेदाणं**) ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद, इतिहास, निघटु इन छह शास्त्रों के तथा इन शास्त्रों के और भी जितने अग और उपांग हैं उनके एवं रहस्य सहित चार वेदों के (**सारगा**) पाठन द्वारा प्रचारक होते हैं, या दूसरों के लिये विस्मृत हुए इन के स्मारक होते हैं (**पारगा**) स्वयं भी इन सब शास्त्रों के ज्ञाता होते हैं, (**धारगा**) इन सबकी धारणा वाले होते हैं। इसलिये ये (**सडंगवी**) षडगवेदवित् कहे जाते हैं। ये (**सट्ठितंतविसारया**) षष्टितंत्र–कपिलशास्त्र के भी वेत्ता होते हैं, (**संखाणे सिक्खा-**

આઠ ક્ષત્રિય જાતિના (रिउवेय–यजुव्वेय–सामवेय–अहव्वणवेय–इतिहास–पंचमाणं निघंटुछट्ठाणं संगोवंगाणं सरहस्साणं चउण्हं वेदाणं) ઋગ્વેદ, યજુર્વેદ, સામવેદ, અથર્વવેદ, ઇતિહાસ, નિઘંટુ આ છ શાસ્ત્રોના, તથા આ શાસ્ત્રોનાં બીજાં પણ જેટલાં અંગ અને ઉપાગ છે તેમના, રહસ્યસહિત ચાર વેદોના (सारगा) પઠનદ્વારા પ્રચારક હોય છે, અથવા બીજાને વિસ્મરણ થયેલ હોય તો તેમને યાદ કરાવનારા હોય છે, (पारगा) પોતે પણ તે શાસ્ત્રો જાણનારા હોય છે, તેથી તેઓ (धारगा) આ બધાંની ધારણાવાળા હોય છે, તેથી તેઓ (सडंगवी) ષડ ગ-વેદવિત્ કહેવાય છે. તેઓ (सट्ठितंतविसारया) ષષ્ટિતંત્ર–કપિલશાસ્ત્રના પણ

**सामयणे अण्णेसु य बहूसु बंभण्णएसु य सत्थेसु सुपरिणिट्ठिया यावि होत्था ॥ सू० १६ ॥**

**मूलम्—ते णं परिव्वायगा दाणधम्मं च सोयधम्मं**

अक्षरस्वरूपनिरूपकं शास्त्रं शिक्षा, तथाविधसमाचारप्ररूपकं शास्त्रमेव कल्पस्तस्मिन्, '**वागरणे**' व्याकरणे=शब्दशास्त्रे, '**छंदे**' छन्दसि=वृत्तबोधके शास्त्रे, '**निरुत्ते**' निरुक्ते=शब्दार्थबोधके, '**जोइसामयणे**' ज्योतिषामयने ज्योतिश्शास्त्रे, '**अण्णेसु य बहुसु बंभण्णएसु य सत्थेसु**' अन्येषु च बहुषु ब्राह्मण्येषु च शास्त्रेषु—ब्राह्मणेभ्यो हितानि ब्राह्मण्यानि—वेदव्याख्यारूपाणि ब्राह्मणादीनि शास्त्राणि तेषु च बहुषु शास्त्रेषु, '**सुपरिणिट्ठिया यावि होत्था**' सुपरिनिष्ठिता=परिपक्वज्ञानाश्चापि भवन्ति ॥ सू० १६ ॥

टीका—'**ते णं परिव्वाया**' इत्यादि। '**ते णं परिव्वाया**' ते खलु परिव्राजकाः, '**दाणधम्मं च सोयधम्मं च तित्थाभिसेयं च**' दानधर्मं च शौचधर्मं च

**कप्पे वागरणे छंदे निरुत्ते जोइसामयणे अण्णेसु य बहूसु बंभण्णएसु य सत्थेसु सुपरिणिट्ठिया यावि होत्था**) तथा गणित के विषय में, शिक्षा—अक्षर के स्वरूप को निरूपण करने वाले शास्त्र में, कल्प में, व्याकरण शास्त्र में, छंद शास्त्र में, निरुक्त—शब्दार्थबोधक शास्त्र मे, एवं ज्योतिष शास्त्र में और भी अनेक बहुत से ब्राह्मणशास्त्रो में ये परिपक्व ज्ञानशाली होते है ॥ सू. १६ ॥

'**तेणं परिव्वायगा**' इत्यादि

(**ते णं परिव्वायगा**) ये समस्त परिव्राजक (**दाणधम्मं च सोयधम्मं च**) दानधर्म की, शौचधर्म की, (**तित्थाभिसेयं च**) तीर्थाभिषेक की (**आघवेमाणा**) जनता में

જાણુનારા હોય છે. (संखाणे सिक्खाकप्पे वागरणे छंदे निरुत्ते जोइसामयणे अण्णेसु य बहूसु बंभण्णएसु य सत्थेसु सुपरिणिट्ठिया यावि होत्था) તથા ગણિતના વિષયમાં, શિક્ષા-અક્ષરના સ્વરૂપને નિરૂપણ કરવાવાળા શાસ્ત્રમાં, કલ્પમાં, વ્યાકરણ શાસ્ત્રમાં, છંદ શાસ્ત્રમાં, નિરુક્ત-શબ્દાર્થબોધક શાસ્ત્રમાં, તેમજ જ્યોતિષ-શાસ્ત્રમાં અને બીજાં પણ અનેક બ્રાહ્મણ શાસ્ત્રોમાં તેઓ જ્ઞાનશાલી હોય છે. ( સૂ. ૧૬ )

'तेणं परिव्वायगा' ઇત્યાદિ.

(ते णं परिव्वायगा) આ સમસ્ત પરિવ્રાજક (दाणधम्मं च सोयधम्मं च) દાનધર્મની, શૌચધર્મની, (तित्थाभिसेयं च) તીર્થઅભિષેકની (आघवेमाणा)

च तित्थाभिसेयं च आघवेमाणा पण्णवेमाणा परूवेमाणा विहरंति। जं णं अम्हं किंचि असुई भवइ तं णं उदएण य मट्टियाए य पक्खालियं सुई भवइ। एवं खलु अम्हे चोक्खा चोक्खायारा सुई सुइसमायारा भवित्ता अभिसेयजलपूयप्पाणो अविग्घेणं सग्गं गमिस्सामो ॥ सू० १७ ॥

---

तीर्थाभिषेकञ्च, 'आघवेमाणा' आख्यान्तः=कथयन्तः, 'पण्णवेमाणा' प्रज्ञापयन्तः=बोधयन्तः, 'परूवेमाणा' प्ररूपयन्तः=उपपत्तिभिः स्वसिद्धान्तं स्थापयन्तो विहरन्ति। 'जं णं अम्हं किंचि असुई भवइ' यत् खल्वस्माकं किञ्चिदशुचि भवति, 'तं णं उदएण य मट्टियाए य पक्खालियं सुई भवइ' तत्खलु उदकेन च मृत्तिकया च प्रक्षालितं शुचि भवति=पवित्रं भवति, 'एवं खलु अम्हे' एवं खलु वयं, 'चोक्खा' चोक्षाः=कृतप्रमार्जनाः-विमलदेहनेपथ्याः, 'चोक्खायारा' चोक्षाचाराः=पवित्राचाराः, अतएव-'सुई'

---

पुष्टि करते हुए (पण्णवेमाणा) जनता को ये सब बातें अच्छी तरह समझाते हुए (परूवेमाणा विहरंति) जनता मे इनकी युक्तिपूर्वक प्ररूपणा करते हुए विचरते रहते हैं। (जं णं अम्हं किंचि असुई भवइ तं णं उदएण य मट्टियाए य पक्खालियं सुई भवइ) वे कहते है-कि जो कुछ भी हम लोगों की दृष्टि में अपवित्र ज्ञात होता है वह पानी से या मिट्टी से जब प्रक्षालित हो जाता है तब वह शुचि हो जाता है। (एवं खलु अम्हे चोक्खा चोक्खायारा सुई सुइसमायारा भवित्ता अभिसेयजलपूयप्पाणो अविग्घेण सग्गं गमिस्सामो) इस प्रकार हम लोग चोखे है और हमारा आचारविचार भी चोखा-पवित्र है।

---

જનતામા પુષ્ટિ (પ્રચાર) કરતા થકા, (पण्णवेमाणा) જનતાને આ બધી વાતો સારી રીતે સમજાવતા થકા, (परूवेमाणा विहरंति) જનતામા તેમની યુક્તિ-પૂર્વક પ્રરૂપણા કરતા થકા વિચરતા રહે છે. (जं णं अम्हं किंचि असुई भवइ तं णं उदएण य मट्टियाए य पक्खालियं सुई भवइ) તેઓ કહે છે કે જે કાંઈ પણ આપણી દૃષ્ટિમા અપવિત્ર જણાય છે તે પાણીથી અથવા માટીથી જો ધોવામાં આવે તો તે શુચિ- પવિત્ર થઈ જાય છે. (एवं खलु अम्हे चोक्खा चोक्खायारा सुई सुइसमयारा भवित्ता अभिसेयजलपूयप्पाणो अविग्घेणं सग्गं गमिस्सामो) આ પ્રકારે આપણે ચોકખા છીએ, અને આપણાં આચારવિચાર પણ ચોકખા-

मूलम्—तेसिं णं परिव्वायगाणं णो कप्पइ, अगडं वा तलायं वा नइं वा वाविं वा पुक्खरिणिं वा दीहियं वा गुंजालियं

शुचयः=शुद्धाः 'सुइसमायारा' शुचिसमाचारा =सर्वथा शुद्धाचाराः 'भवित्ता' भूत्वा 'अभिसेय-जल-पूय-प्पाणो' अभिषेक-जल-पूताऽऽत्मान'-अभिमन्त्रितजलैः पूताः= पवित्रा आत्मानो येषां ते तथा, 'अविग्घेणं सग्गं गमिस्सामो' अविघ्नेन स्वर्गं गमिष्यामः- अस्माकं स्वर्गगमनं निर्बाधमस्ति-इत्यर्थः ॥ सू० १७ ॥

टीका—'तेसि ण परिव्वायगाणं' इत्यादि। 'तेसिं णं परिव्वायगाणं' तेषां खलु परिव्राजकानाम्, 'णो कप्पइ अगडं वा तलायं वा नइं वा वाविं वा पुक्खरिणिं वा दीहियं वा गुंजालियं वा सरं वा सागर वा ओगाहित्तए' नो कल्पतेऽवटं वा तडाग वा नदीं वा वापीं वा पुष्करिणीं वा दीर्घिकां वा गुञ्जालिकां वा सरो

हम शुचि है और हमारा आचार-विचार भी शुचि है। इस तरह शुचि होकर, अभिमंत्रित जल से सर्वथा आत्मा को पवित्र कर हम लोग विना किसी विघ्न के स्वर्ग में जावेंगे—हम लोगों को स्वर्गप्राप्ति निर्बाध है ॥ सू. १७ ॥

'तेसिं णं परिव्वायगाणं' इत्यादि।

(तेसिं णं परिव्वायगाणं) इन परिव्राजकों को (णो कप्पइ) इतनी बातें कल्पित नहीं है-(अगड वा तलायं वा नइं वा वाविं वा पुक्खरिणिं वा दीहियं वा गुंजालियं वा सरं वा सागरं वा ओगाहित्तए) कूए में प्रवेश करना, तालाब में प्रवेश करना, नदी में प्रवेश करना, बावड़ी में प्रवेश करना, पुष्करिणी में प्रवेश करना, दीर्घिका में प्रवेश करना, गुंजालिका में प्रवेश करना, सरोवर में प्रवेश करना, एवं समुद्र में प्रवेश करना।

પવિત્ર છે. અમે શુચિ છીએ, અને અમારા આચારવિચાર પણ શુચિ છે. આવી રીતે શુચિ થઈને, અભિમંત્રિત જલથી સર્વથા આત્માને પવિત્ર કરીને અમે કોઈ જાતના વિઘ્ન વિના સ્વર્ગમાં જશું-અમને સ્વર્ગની પ્રાપ્તિ નિર્બાધ છે. (સૂ. ૧૭)

'तेसिं णं परिव्वायगाणं' ઇત્યાદિ.

(तेसिं णं परिव्वायगाणं) આ પરિવ્રાજકોની (णो कप्पइ) આટલી વાતો કલ્પિત નથી. (अगडं वा तलायं वा नइं वा वाविं वा पुक्खरिणिं वा दीहियं वा गुंजालियं वा सरं वा सागरं वा ओगाहित्तए) કૂવામાં પ્રવેશ કરવો, તળાવમાં પ્રવેશ કરવો, નદીમાં પ્રવેશ કરવો, વાવમાં પ્રવેશ કરવો, પુષ્કરિણીમાં પ્રવેશ કરવો, દીર્ઘિકામાં પ્રવેશ કરવો, ગુંજાલિકામાં પ્રવેશ કરવો, સરોવરમાં પ્રવેશ

**वा सरं वा सागरं वा ओगाहित्तए, णण्णत्थ अद्धाणगमणेणं। णो कप्पइ सगडं वा जाव संदमाणियं वा दुरूहित्ताणं गच्छित्तए।**

वा सागरं वाऽवगाहितुम्, तत्रावटः=कूपः, वापी=चतुष्कोणजलाशयविशेषः, पुष्करिणी= वर्तुलाकारजलाशयः, दीर्घिका=आयताकारजलाशयः, गुञ्जालिका=वक्रजलाशयः, सरः= कृत्रिमपद्मयुक्तजलाशय', तेषु प्रवेष्टुं मन्यासिनां न कल्पते, '**णण्णत्थ अद्धाणगमणेणं**' नान्यत्राध्वगमनात्=न इति यो निषेधः सोऽध्वगमनादन्यत्र, मार्गे जलाशयप्रवेशो न निषिद्ध इत्यर्थः। '**णो कप्पइ सगडं वा जाव संदमाणियं वा दुरूहित्ता णं गच्छित्तए**' नो कल्पते शकटं वा यावत् स्यन्दमानिकां वाऽधिरुह्य खलु गन्तुम्—शकटमधिरुह्य गन्तुं न कल्पते इत्यन्वयः, यावच्छब्दादिदं बोध्यम्—रथं वा यानं वा युग्यं वा गिल्लिं वा=पुरुषद्वयोत्क्षिप्त-दोल्लिकां वा 'झोल्लिकां वा' यानविशेषं वा प्रवहणं वा शिबिकाम् वा इति, थिल्लिं वा=अश्व-द्वयवाह्यं यानविशेषं वा, तथा—स्यन्दमानिकां=शिबिकाविशेषं वा, आरुह्य गन्तुं तेषां परि-

चार कोने वाले जलाशय का नाम बावड़ी, गोल मुहवाले जलाशय का नाम पुष्करिणी, एवं विस्तृत आकारवाले जलाशय का नाम दीर्घिका है, जो जलाशय टेडा होता है उसका नाम गुंजालिका है। इन सब में प्रवेश करना सन्यासियों के लिये निषिद्ध है। हां (**णण्णत्थ अद्धा-गमणेणं**) मार्ग में चलते समय यदि कोई तालाब नदी आदि जलाशय बीच में पड जाय तो अगत्या उसमें होकर जाना निषिद्ध नहीं है। (**णो कप्पइ सगडं वा जाव संदमाणियं वा दुरूहित्ता गच्छित्तए**) इसी तरह शकट-बैलगाडी पर चढ़कर भी जाना निषिद्ध है। यहां '**यावत्**' शब्द से-"**रथं वा यानं वा युग्यं वा गिल्लिं वा**" इत्यादि पाठ गृहीत हुआ है। इसका मतलब इस प्रकार है—रथ पर, यान पर, घोड़े पर, दो पुरुष जिसे लेकर चलते हैं ऐसी

કરવો, તેમજ સમુદ્રમાં પ્રવેશ કરવો. ચારે કોરેથી ઘેરાયેલું જલાશય હોય તેનું નામ વાવ, ગોળ મુખવાળું જલાશય હોય તે પુષ્કરિણી, તેમજ વિસ્તૃત આકારવાળાં જલાશયને દીર્ઘિકા કહે છે. જે જલાશય વાંકાચુંકાં હોય છે તેનું નામ ગુંજાલિકા છે. આ બધામાં પ્રવેશ કરવો એ સંન્યાસીઓને માટે નિષિદ્ધ છે. હા (णण्णत्थ अद्धाणगमणेणं) માર્ગમાં ચાલતી વખતે જો કોઇ તળાવ નદી આદિ જલાશય વચમાં આવી જાય તો અગત્યા તેમાં થઈને જવું નિષિદ્ધ નથી. (णो कप्पइ सगडं वा जाव संदमाणियं वा दुरूहित्ता गच्छित्तए) આવી જ રીતે શકટ—બળદનું ગાડું પર ચડીને પણ જવું નિષિદ્ધ છે. અહીં યાવત શબ્દથી "रथं वा यानं वा युग्यं वा गिल्लिं वा" ઈત્યાદિ પાઠ ગ્રહણ કર્યો છે. એની મતલબ એ છે કે—રથ પર, યાન પર, ઘોડા પર, બે માણસો જેને

**तेसिं णं परिव्वायगाणं णो कप्पइ आसं वा हत्थिं वा उट्टं वा गोणिं वा महिसं वा खरं वा दुरूहित्ता णं गमित्तए, णण्णत्थ बलाभिओगेणं। तेसिं णं परिव्वायगाणं णो कप्पइ नडपेच्छाइ वा जाव मागहपेच्छाइ वा पेच्छित्तए। तेसिं णं परिव्वायगाणं णो**

व्राजकानां न कल्पते इत्यन्वयः, '**तेसिं णं परिव्वायगाणं नो कप्पइ आसं वा हत्थिं वा उट्टं वा गोणिं वा महिसं वा खरं वा दुरूहित्ताणं गमित्तए णण्णत्थ बलाभिओगेणं**' तेषां खलु परिव्राजकानां न कल्पतेऽश्वं वा हस्तिनं वोष्ट्रं वा गां वा महिषं वा खरं वाऽधिरुह्य खलु गन्तुम्—नान्यत्र बलाऽभियोगात्—बलेन=बलात्कारेण यः अभियोगः=नियोजनं—बलवत्पारन्त्र्य-नियोग इत्यर्थः, तस्मात्, अन्यत्र तेषां परिव्राजकानां गन्तुं न कल्पते। '**तेसिं णं परि-व्वायगाणं णो कप्पइ नडपेच्छाइ वा जाव मागहपेच्छाइ वा पेच्छित्तए**' तेषां खलु परिव्राजकानां नो कल्पते नटप्रेक्षणमिति वा यावन्मागधप्रेक्षणमिति वा प्रेक्षितुम्—

डोली पर, अथवा झोल्लिका-यानविशेष पर, प्रवहण-पालकी पर, बग्घी पर, एवं स्यन्दमानिका-ताम-जाम पर चढ़कर भी जाना साधुओं के लिए वर्जित है। (**तेसिं णं परिव्वायगाणं णो कप्पइ आसं वा हत्थिं वा उट्टं वा, गोणिं वा, महिसं वा, खरं वा दुरूहित्ताणं गमित्तए**) उन परिव्राजकों को घोडे पर, हाथी पर, ऊँट पर, बैल पर, भैसा पर, एवं गधे पर चढ़ कर भी चलना वर्जित है, (**णण्णत्थ बलाभिओगेणं**) बलाभियोग को छोड कर। यदि कोई हठ करके अर्थात् जबर्दस्ती से बैठावे तो दोष नहीं है। (**तेसिं णं परिव्वायगाणं णो कप्पइ नडपेच्छाइ वा जाव मागहपेच्छाइ वा पेच्छित्तए**) उन परिव्राजकों को यह भी उचित नहीं है, अर्थात् उनके आचारके अनुसार यह भी उन्हें वर्जित है कि वे

લઇને ઉપાડીને ચાલે છે એવી ડોલી પર અથવા ઝોલ્લિકા નામના યાનવિશેષ પર, પ્રવહણ—પાલખી પર, બગ્ગી પર તેમજ સ્યન્દમાનિકા—તામજામ પર ચઢીને પણ જવું સાધુઓને માટે વર્જિત છે. (**तेसिं णं परिव्वायगाणं णो कप्पइ आसं वा हत्थिं वा उट्टं वा गोणिं वा महिसं वा खरं वा दुरूहित्ताणं गमित्तए**) તે પરિવ્રાજકોને ઘોડા પર, હાથી પર, ઊંટ પર, બળદ પર, ભેંસા પર, તેમજ ગધેડા પર ચઢીને ચાલવું વર્જિત છે.(**णण्णत्थ बलाभिओगेणं**) બલાભિયોગ છોડીને, જો કોઈ હઠ કરીને જબરદસ્તીથી બેસાડી દે તો દોષ નથી. (**तेसिं णं परिव्वा-यगाणं णो कप्पइ नडपेच्छाइ वा जाव मागहपेच्छाइ वा पेच्छित्तए**) તે પરિવ્રાજકોના

कप्पइ हरियाणं लेसणया वा घट्टणया वा थंभणया वा लूसणया वा उप्पाडणया वा करित्तए। तेसिं परिव्वायगाणं णो कप्पइ इत्थिकहाइ वा भत्तकहाइ वा देसकहाइ वा रायकहाइ वा चोर-

नटादीनां गीतनृत्यादिकानि प्रेक्षितुं तेषां परिव्राजकाना न कल्पते। 'तेसिं परिव्वायगाणं णो कप्पइ हरियाणं लेसणया वा घट्टणया वा थंभणया वा लूसणया वा उप्पाडणया वा करित्तए' तेषां खलु परिव्राजकानां नो कल्पते हरितानां=वनस्पतीनां श्लेषणता वा घट्टनता वा स्तम्भनता वा लूषणता वोत्पाटनता वा, श्लेषणतादौ सर्वत्र स्वार्थे तल्, श्लेषणादिकमित्यर्थः। श्लेषण=स्पर्शः, घट्टनता=घट्टनं-सघर्षणम्, स्तम्भनता=स्तम्भनं-हस्तादिनाऽवरोधः, शाखा-पल्लवादीनां मोटनम् ऊर्ध्वीकरणं च, लूषणता-लूषणं=हस्तादिना पनकादेः समार्जनम्, 'तेसिं परिव्वायगाणं णो कप्पइ इत्थिकहाइ वा भत्तकहाइ वा देसकहाइ वा रायकहाइ वा चोरकहाइ वा जणवयकहाइ वा अणत्थदंडं करित्तए' तेषां परि-व्राजकाना नो कल्पते-'स्त्रीकथा' इति वा, 'भक्तकथा' इति वा 'देशकथा' इति वा, 'राज-

नटों का एव मागध आदिकों का खेल-तमासा नहीं देखे और उनके गीत नृत्य आदि नहीं सुनें। (हरियाणं लेसणया वा घट्टणया वा थंभणया वा लूसणया वा उप्पाडणया वा करित्तए) हरितवनस्पति का स्पर्श करना, सघर्षण करना, हस्तादिक द्वारा अवरोध करना, शाखा एव उनके पत्ते आदिकों को ऊँचा करना अथवा उन्हे मोड़ना, हस्त आदि के द्वारा पनक आदि का समार्जन करना, ये सब बातें भी (तेसिं परिव्वायगाणं णो कप्पइ) उन परिव्राजकों के लिये कल्पित नहीं है (इत्थिकहाइ वा भत्तकहाइ वा देसकहाइ वा रायकहाइ वा) स्त्रीकथा, भक्तकथा, देशकथा, राजकथा (चोरकहाइ वा जणवयकहाइ

આચાર અનુસાર એ પણ તેમને વર્જિત છે, કે તેઓ નટોના તેમજ માગધ આદિકોના ખેલ-તમાસા જુએ નહીં, અને તેમનાં ગીત નૃત્ય આદિ સાંભળે નહીં. (हरियाणं लेसणया वा घट्टणया वा थंभणया वा लूसणया वा उप्पाडणया वा करित्तए) લીલી વનસ્પતિનો સ્પર્શ કરવો, સંઘર્ષણ કરવું, હાથેથી અવરોધ કરવો, શાખા તેમજ તેના પાંદડાં આદિકોને ઉંચા કરવા, અથવા મરડવાં, હાથ આદિથી લીલ-ફૂલ આદિનું સમાર્જન કરવું, આ બધી વાતો પણ (तेसिं परिव्वायगाणं णो कप्पइ) તે પરિવ્રાજકો માટે કલ્પિત નથી. (इत्थिकहाइ वा भत्तकहाइ वा देसकहाइ वा रायकहाइ वा) સ્ત્રીકથા, ભક્તકથા, દેશકથા, રાજકથા, (चोरकहाइ वा जणवयकहाइ वा) ચોરકથા તેમજ જનપદકથા (तेसिं णं परिव्वायगाणं

कहाइ वा जणवयकहाइ वा अणत्थदंडं करित्तए। तेसि णं परि-व्वायगाणं णो कप्पइ अयपायाणि वा तउयपायाणि वा तंब-पायाणि वा जसदपायाणि वा सीसगपायाणि वा रुप्पपायाणि वा सुवण्णपायाणि वा अण्णयराणि वा बहुमुल्लाणि धारित्तए,

कथा' इति वा, 'चोरकथा' इति वा, 'जनपदकथा' इति वाऽनर्थदण्डं कर्तुम्—स्त्र्यादीनां कथा कर्तुं न कल्पन्ते, तथा—अनर्थदण्डमपि कर्तुं न कल्पते। '**तेसिं णं परिव्वायगाणं णो कप्पइ अयपायाणि वा तउयपायाणि वा तंबपायाणि वा जसदपायाणि वा सीसगपायाणि वा रुप्पपायाणि वा सुवण्णपायाणि वा अण्णयराणि वा बहुमुल्लाणि धारित्तए**' तेषा खलु परिव्राजकानां नो कल्पन्ते—अयःपात्राणि वा त्रपुकपात्राणि वा ताम्र-पात्राणि वा जयःदपात्राणि वा सीसकपात्राणि वा रूप्यपात्राणि वा सुवर्णपात्राणि वा अन्यतराणि वा बहुमूल्यानि धारयितुम्, तत्र—अयःपात्राणि=लौहपात्राणि, त्रपुकपात्राणि,—त्रप्वेव त्रपुकं 'राँगा' इति ख्यातं तस्य पात्राणि, अन्यत् सर्वं सुगमम्। '**णण्णत्थ अलाउपाएण वा**

वा) चोरकथा एवं जनपदकथा, (**तेसिं णं परिव्वायगाणं णो कप्पइ**) ये कथाएँ भी उन परिव्राजकों के लिये कल्पित नहीं है; कारण कि इन कथाओं के करने से (**अणत्थदंडं करित्तए**) अनर्थदंड का बंध होता है—ये कथाएँ अनर्थदंड करानेवाली है। (**अयपायाणि वा तउयपायाणि वा तंबपायाणि वा जसदपायाणि वा सीसगपायाणि वा रुप्पपा-याणि वा सुवण्णपायाणि वा अण्णयराणि वा बहुमुल्लाणि धारित्तए तेसिं परिव्वा-यगाणं णो कप्पइ**) लोह के पात्र, त्रपु के पात्र, तांबे के पात्र, जसद के पात्र, सीसे के पात्र, चांदी के पात्र, सुवर्ण के पात्र. तथा और भी धातु के बहुमूल्य पात्र उन साधुओं को

णो कप्पइ) આ કથાઓ પણ તે પરિવ્રાજકોને માટે કલ્પિત નથી, કારણ કે એ કથાઓ કરવાથી (अणत्थदंडं करित्तए) અનર્થદંડનો બંધ થાય છે-આ કથાઓ અનર્થદંડ કરાવવાવાળી છે. (अयपायाणि वा तउयपायाणि वा तंब-पायाणि वा जसदपायाणि वा सीसगपायाणि वा रुप्पपायाणि वा सुवण्णपायाणि वा अण्णयराणि वा बहुमुल्लाणि धारित्तए तेसिं परिव्वायगाणं णो कप्पइ) લોઢાનું પાત્ર ત્રપુ (કાંસા)નુ પાત્ર, તાંબાનું પાત્ર, જસતનુ પાત્ર, સીસાનું પાત્ર, ચાંદીનુ પાત્ર, સુવર્ણનુ પાત્ર, તથા બીજી ધાતુનાં બહુમૂલ્ય પાત્ર રાખવાં એ સાધુ-ઓને પોતાના આહાર વિહાર માટે કલ્પિત નથી. (णण्णत्थ अलाउपाएण वा

णण्णत्थ अलाउपाएण वा दारुपाएण वा मट्टियापाएण वा। तेसिं णं परिव्वायगाणं णो कप्पइ अयबंधणाणि जाव बहुमुल्लाणि धारित्तए। तेसिं णं परिव्वायगाणं णो कप्पइ णाणाविहवण्णराग-रत्ताइं वत्थाइं धारित्तए, णण्णत्थ एगाए धाउरत्ताए। तेसिं णं परि-

---

दारुपाएण वा मट्टियापाएण वा' नाऽन्यत्राऽलाबुपात्राद् वा दारुपात्राद्वा मृत्तिकापात्राद्वा, 'न'इति पूर्वोक्तो निषेधः—तुम्बीपात्रात् काष्ठनिर्मितपात्रात्, मृत्तिकापात्राद्वाऽन्यत्र। तुम्बी—काष्ठ—मृत्तिकापात्राणि तु सन्यासिनां कल्पन्ते इति भावः। 'तेसिं णं परिव्वायगाणं णो कप्पइ अयबंधणाणि वा जाव बहुमुल्लाणि धारित्तए' तेषां खलु परिव्राजकानाम् अयोबन्धनानि=लौहबन्धनयुक्तानि पात्राणि, यावच्छब्दात्—त्रपुताम्रादिबन्धनयुक्तानि पात्राणि, तथा बहुमूल्यानि अन्यान्यपि बन्धनानि धारयितुं तेषां संन्यासिनां न कल्पन्ते। 'तेसिं णं परिव्वायगाणं णो कप्पइ णाणाविह-वण्ण-राग-रत्ताइं वत्थाइं धारित्तए' तेषां खलु परिव्राजकानां

---

अपने आहार—विहार आदि के लिये रखना कल्पित नहीं है। (णण्णत्थ अलाउपाएण वा मट्टियापाएण वा) तूंबड़ी, काष्ठनिर्मित कमण्डलु, अथवा मिट्टीका पात्र, ये ही उन्हें रखना कल्पता है। (अयबंधणाणि जाव बहुमुल्लाणि धारित्तए तेसिं णं परिव्वायगाणं णो कप्पइ) तथा—लौह के बधन से युक्त पात्र, त्रपु के बंधन से युक्त पात्र, तांबे के बंधन से युक्त पात्र, जसद के बंधन से युक्त पात्र, सीसे के बंधन से युक्त पात्र, चांदी के बंधन से युक्त पात्र, सुवर्ण के बंधन से युक्त पात्र तथा और भी बहुमूल्य बंधन से युक्त पात्र इन साधुओं को कल्पित नहीं बतलाया गया है। (तेसिं णं परिव्वायगाणं णो कप्पइ णाणा-विह—वण्ण—राग—रत्ताइं वत्थाइं धारित्तए णण्णत्थ एगाए धाउरत्ताए) अनेक प्रकार

---

दारुपाएण वा मट्टियापाएण वा) तूंબડી, લાકડાનું બનેલું કમંડળ અથવા માટીનું પાત્ર એજ તેઓએ રાખવું કલ્પિત છે. (अयबंधणाणि जाव बहुमुल्लाणि धारित्तए तेसिं णं परिव्वायगाणं णो कप्पइ) તથા લોઢાના બંધનથી યુક્ત પાત્ર, ત્રપુના બંધનથી યુક્ત પાત્ર, તાંબાના બંધનથી યુક્ત પાત્ર, જસતના બંધનથી યુક્ત પાત્ર, સીસાના બંધનથી યુક્ત પાત્ર, ચાંદીના બંધનથી યુક્ત પાત્ર, સુવર્ણના બંધનથી યુક્તપાત્ર તથા બીજી પણ બહુમૂલ્ય (કીમતી) ધાતુનાં બંધનથી યુક્ત પાત્ર સાધુઓને માટે કલ્પિત બતાવેલ નથી. (तेसिं णं परिव्वायगाणं णो कप्पइ णाणाविह—वण्णराग—रत्ताइं वत्थाइं धारित्तए, णण्णत्थ एगाए धाउरत्ताए)

व्वायगाणं णो कप्पइ हारं वा अद्धहारं वा एगावलिं वा मुत्तावलिं वा कणगावलिं रयणावलिं वा मुरविं वा कंठमुरविं वा पालंबं वा तिसरयं वा कडिसुत्तं वा दसमुद्दियाणंतगं वा कडयाणि वा

---

नो कल्पन्ते नानाविध—वर्ण—राग—रक्तानि वस्त्राणि धारयितुम्, 'णण्णत्थ एगाए धाउरत्ताए' नान्यत्रैकस्माद्धातुरक्तात्—केवलं गैरिकादिधातुरक्तं कल्पते इत्यर्थः, । 'तेसिं णं परिव्वायगाणं णो कप्पइ हारं वा अद्धहारं वा एगावलिं वा मुत्तावलिं वा कणगावलिं वा रयणावलिं वा मुरविं वा कंठमुरविं वा पालंबं वा तिसरयं वा कडिसुत्तं वा दसमुद्दियाणंतगं वा कडयाणि वा तुडियाणि वा अंगयाणि वा केऊराणि वा कुंडलाणि वा मउडं वा चूलामणिं वा पिणद्धित्तए' तेषां खलु परिव्राजकानां नो कल्पन्ते—हारं वाऽर्द्धहारं वा, एकावलिं वा, मुक्तावलीं वा, कनकावलीं वा, रत्नावलीं वा, मुरविं=कर्ण—भूषणविशेषं वा, कण्ठमुरविं=कण्ठभूषणविशेषं वा, प्रालम्बं वा, त्रिसरकं वा, कटिसूत्रं वा, दशमुद्रिकानन्तकं वा, रूढोऽयं शब्दस्तेन—हस्ताङ्गुलीमुद्रिकादशकमित्यर्थः; कटकानि वा,

---

के रंगों से रंजित वस्त्र भी इन्हे धारण करना उचित नहीं बतलाया गया है। सिर्फ एक गैरिक रंग से रंगा हुआ वस्त्र ही इन्हे धारण करना बतलाया है। (तेसिं णं परिव्वायगाणं णो कप्पइ हारं वा अद्धहारं वा एगावलिं वा मुत्तावलिं वा कणगावलिं वा रयणावलिं वा मुरविं वा कंठमुरविं वा तिसरयं वा कडिसुत्तं वा दसमुद्दियाणंतगं वा कडयाणि वा तुडियाणि वा अंगयाणि वा केऊराणि वा कुंडलाणि वा मउडं वा चूडामणिं वा पिणद्धित्तए, णण्णत्थ एगेणं तंबिएणं पवित्तएणं) हार, अर्द्धहार, एकावलि, मुक्तावलि, कनकावलि, रत्नावलि, मुरवी, कण्ठमुरवी. (ये कंठ के आभ-

---

અનેક પ્રકારના રંગથી રંગાએલાં વસ્ત્ર પણ તેઓએ ધારણ કરવાં ઉચિત નથી. માત્ર એક ગેરૂના રંગથી રંગાયેલ વસ્ત્ર જ તેમણે ધારણ કરવાનું બતાવ્યું છે. (तेसिं णं परिव्वायगाणं णो कप्पइ हारं वा अद्धहारं वा एगावलिं वा मुत्तावलिं वा कणगावलिं वा रयणावलिं वा मुरविं वा कंठमुरविं वा पालंबं वा तिसरयं वा कडिसुत्तं वा दसमुद्दियाणंतगं वा कडयाणि वा तुडियाणि वा अंगयाणि वा केऊराणि वा कुंडलाणि वा मउडं वा चूडामणिं वा पिणद्धित्तए, णण्णत्थ एगेणं तंबिएणं पवित्तएणं) હાર, અર્ધહાર, એકાવલિ, મુક્તાવલિ, કનકાવલિ, રત્નાવલિ, મુરવી, કંઠમુરવી, (આ બધા કંઠના આભરણો છે) પ્રાલંબ, ત્રણ સરનો

**तुडियाणि वा अंगयाणि वा केऊराणि वा कुंडलाणि वा मउडं वा चूलामणिं वा पिणद्धित्तए, णण्णत्थ एगेणं तंबिएणं पवित्तएणं। तेसिं णं परिव्वायगाणं णो कप्पइ गंथिमवेढिमपूरिमसंघाइमे चउव्विहे मल्ले धारित्तए, णण्णत्थ एगेणं कण्णपूरेणं। तेसिं णं**

त्रुटिकानि वा, अङ्गदानि=केयूरान् वा, कुण्डानि वा, मुकुटं वा, चूडामणिं वा पिनद्धुम्; हारादीनि तेषां परिव्राजकानां न कल्पन्ते परिधातुमित्यर्थः। '**णण्णत्थ एगेणं तंबिएणं पवित्तएणं**' नाऽन्यत्रैकस्मात्ताम्रमयात्पवित्रकात्—ताम्रमयमङ्गुलीयकं पवित्रकनामकं तु तेषां परिधर्तु कल्पत इति भाव'। '**तेसिं णं परिव्वायगाणं णो कप्पइ गंथिम-वेढिम-पूरिम-संघाइमे चउव्विहे मल्ले धारित्तए**' तेषां खलु परिव्राजकानां नो कल्पन्ते ग्रन्थिम-वेष्टिम-पूरिम-सङ्घातिमानि चतुर्विधानि माल्यानि धारयितुम्—ग्रन्थेन=ग्रन्थनेन निर्वृत्तं=निर्मितं मालारूपं ग्रन्थिमम्, वेष्टेन=वेष्टनेन निर्वृत्त वेष्टिमम्, पूरिमं=पूरणेन निर्वृत्तम्, संघातेन निर्वृत्त सङ्घातिमम्; एतानि चतुर्विधानि माल्यानि धारयितु न कल्पन्ते इत्यर्थ'; '**णण्णत्थ एगेणं कण्णपूरेणं**' नान्यत्रैकस्मात्कर्णपूरकात्—एकं पुष्पमयं कर्णपूरं तेषां न निषिद्धमिति भावः।

रण विशेष है), प्रालंब, तीन लरका हार, कटिसूत्र, दशमुद्रिकाएँ, कटक, त्रुटिक—बाजूबंध, अंगद, केयूर, कुंडल, मुकुट, चूड़ामणि, इनका पहिरना भी इन साधुओं को कल्पता नहीं है। एक तांबे की अंगूठी ही इन्हें हाथ की अंगुली में धारण करना कल्पता है। (**तेसिं णं परिव्वायगाणं णो कप्पइ गंथिम-वेढिम-पूरिम-संघाइमे चउव्विहे मल्ले धारित्तए, णण्णत्थ एगेणं कण्णपूरेणं**) इन परिव्राजकों को गूंथ कर बनाई गई, वेष्टित कर बनाई गई, एवं परस्पर दो फूलों को संयुक्त करके बनाई गई, ऐसी चार प्रकार की मालाओं का पहिरना भी कल्पता नहीं है। एक पुष्पों का रचित कर्णफूल ही कान में

હાર, કટિસૂત્ર, દશ મુદ્રિકાઓ (વીંટી), કટક, ત્રુટિક—બાજૂબંધ, અંગદ કેયૂર, કુંડલ, મુકુટ, ચૂડામણિ, એ પહેરવું પણ આ સાધુઓને કલ્પતું નથી. એક તાંબાની અંગૂઠી જ તેણે હાથની આંગળીમાં ધારણ કરવી કલ્પે છે. (तेसिं णं परिव्वायगाणं णो कप्पइ-गंथिम-वेढिम-पूरिम-संघाइमे चउव्विहे मल्ले धारित्तए णण्णत्थ एगेणं कण्णपूरेणं) આ પરિવ્રાજકોને ગુંથીને બનાવેલી, વેષ્ટિત કરીને બનાવેલી, સંચા ઉપર પૂરીને બનાવેલી તેમજ પરસ્પર બે પુલોને જોડીને બનાવેલી એવી ચાર પ્રકારની માલાઓ પહેરવી કલ્પતી નથી. સિર્ફ પુષ્પોનું એક કર્ણફૂલ જ તેમને કલ્પનીય છે. (तेसिं णं परिव्वायगाणं णो कप्पइ अंगलुएण वा

**परिव्वायगाणं णो कप्पइ अगलुएण वा चंदणेण वा कुंकुमेण वा गायं अणुलिंपित्तए, णण्णत्थ एक्काए गंगामट्टियाए ॥ सू० १८ ॥**

**मूलम्—तेसिं णं परिव्वायगाणं कप्पइ मागहए पत्थए**

'**तेसिं णं परिव्वायगाणं णो कप्पइ–अगलुएण वा चंदणेण वा कुंकुमेण वा गायं अणुलिंपित्तए**' तेषां खलु परिव्राजकानां नो कल्पतेऽगरुणा वा चन्दनेन वा कुङ्कुमेन वा गात्रमनुलेप्तुम्–सुगन्धितद्रव्येण गात्राऽनुलेपनं सन्यासिनां न कल्पते इत्यर्थः, '**णण्णत्थ एक्काए गंगामट्टियाए**' नाऽन्यत्रैकस्या गङ्गामृत्तिकायाः–एकां गङ्गामृत्तिकां वर्जयित्वाऽयं निषेध इत्यर्थः ॥ सू० १८ ॥

**टीका**—'**तेसिं णं**' इत्यादि। '**तेसिं णं**' तेषां खलु '**परिव्वायगाणं कप्पइ मागहए पत्थए जलस्स पडिग्गाहित्तए**' परिव्राजकानां कल्पते मागधं प्रस्थं जलस्य परिग्रहीतुम्, प्रस्थ परिमाणविशेषः, तथाहि–'**दो असईओ पसई, दोहिं पसईहिं**

उनके लिये पहिरना अवर्जित है। (**तेसिं णं परिव्वायगाणं णो कप्पइ अगलुएण वा चंदणेण वा कुंकुमेण वा गायं अणुलिंपित्तए णण्णत्थ एक्काए गंगामट्टियाए**) तथा उन परिव्राजकों के लिये अगुरु से, चंदन एवं कुंकुम से शरीर पर लेप करना भी निषिद्ध है। सिर्फ यदि वे लेप करना चाहे तो एक मात्र गंगा की मिट्टी का लेप कर सकते है॥ सू. १८॥

'**तेसिं णं**' इत्यादि।

(**तेसिं णं परिव्वायगाणं**) उन प्रत्येक परिव्राजकों को अपने उपयोग में लाने के वास्ते (**मागहए पत्थए जलस्स पडिग्गाहित्तए कप्पइ**) केवल मगधदेश–प्रचलित प्रस्थप्रमाणमात्र जल लेना कल्पता है। प्रस्थ एक माप का नाम है। कहा भी है–दो

चंदणेण वा कुंकुमेण वा गायं अणुलिंपित्तए णण्णत्थ एक्काए गंगामट्टियाए) तथा ते परिव्राजकोने माटे अगुरुथी, चंदनथी तेमज कंकुथी शरीर पर लेप करवो पण निषिद्ध छे. जो ते लेप करवा चाहे तो एकमात्र गंगानी माटीनो लेप करी शके छे. (सू. १८)

"तेसिं णं" ईत्यादि.

(तेसिं णं परिव्वायगाणं) ते प्रत्येक परिव्राजकोए पोताना उपयोगमां लेवा माटे (मागहए पत्थए जलस्स पडिग्गाहित्तए कप्पइ) मगध देशमां प्रचलित प्रस्थप्रमाणमात्र जल लेवुं कल्पे छे. 'प्रस्थ' एक मापनुं नाम छे.

**जलस्स पडिग्गाहित्तए, से वि य वहमाणे णो चेव णं अवह-माणे, से वि य थिमिओदए णो चेव णं कद्दमोदए, से वि य बहुप्पसण्णे णो चेव णं अबहुप्पसण्णे, से वि य परिपूए णो**

---

सेइया होइ। चउसेइओ उ कुलओ चउकुलओ पत्थओ होइ ॥ १ ॥ चउपत्थमाढयं तह चत्तारि य आढया भवे दोणो।' छाया—द्वे असती प्रसृतिः, द्वाभ्यां प्रसृतिभ्यां सेतिका भवति। चतुस्सेतिकस्तु कुलवश्चतुष्कुलवः प्रस्थो भवति ॥ १ ॥ चतुष्प्रस्थमाढकं तथा चत्वारि आढकानि भवेद् द्रोणः ॥ इति। मागधप्रस्थपरिमितं जलं संन्यासिनां परिग्रहीतुं कल्पते इत्यर्थः। '**से वि य वहमाणे णो चेव णं अवहमाणे**' तदपि च जलं वहमानं=नद्यादिस्रोतोवर्त्ति व्याप्रियमाण वा परिग्रहीतु कल्पते, नो चैवाऽवहमानम्। '**से वि य थिमिओदए णो चेव णं कद्दमोदए**' तदपि च स्तिमितोदकं नो चैव खलु कर्दमोदकम्, स्तिमितोदक=पङ्कसम्पर्करहितं कल्पते, यत्र तु कर्दमसम्पर्कोऽस्ति तज्जलं न कल्पते—इत्यर्थः, '**से वि य बहुप्पसण्णे णो चेव णं अबहुप्पसण्णे**' तदपि च जलं बहुप्रसन्नम्=अति-

---

असती की एक प्रसृति होती है। दो प्रसृति की एक सेतिका, चार सेतिकाओं का एक कुलव और चार कुलवों का एक प्रस्थ होता है। यह पहिले समय में काष्ठ का बनता था। चार प्रस्थो का एक आढक और चार आढकों का एक द्रोण होता है। इनके लिये प्रस्थप्रमाण जल उपयोग में लेने का विधान किया गया है (**से वि य वहमाणे णो चेव णं अवहमाणे**) वह भी वहती हुई नदी आदि का होना चाहिए, बिना वहता हुआ जल लेना उन्हें निषिद्ध है। (**से वि थिमिओदए णो चेव णं कद्दमोदए**) वह भी यदि स्वच्छ हो तब ही ग्रहण करने योग्य कहा गया है, कर्दम से मिश्रित नहीं। (**से वि य बहुप्प-सण्णे णो चेव ण अबहुप्पसण्णे**) स्वच्छ होने पर भी निर्मल हो तब ही ग्राह्य हो सकता

---

કહ્યુ પણ છે—બે અસતીની એક પ્રસૃતિ થાય છે. બે પ્રસૃતિની એક સેતિકા, ચાર સેતિકાઓના એક કુલવ અને ચાર કુલવનો એક પ્રસ્થ થાય છે. આ અગાઉના સમયમાં લાકડાંનો બનતો હતો. ચાર પ્રસ્થોનો એક આઢક અને ચાર આઢકોનો એક દ્રોણ થાય છે. પ્રસ્થપ્રમાણ જલના ઉપયોગનું વિધાન જે કરેલું છે (से वि य वहमाणे णो चेव णं अवहमाणे) તે જળ પણ વહેતી નદી આદિનું હોવુ જોઈએ, વિના વહેતું જલ લેવું તેમને નિષિદ્ધ છે. (से वि य थिमिओदए णो चेव णं कद्दमोदए) તે પણ જો સ્વચ્છ હોય તો જ ગ્રહણ કરવા યોગ્ય કહેલું છે, કર્દમથી મિશ્રિત નહિ. (से वि य बहुप्पसण्णे णो चेव णं

**चेव णं अपरिपूए, से वि य णं दिण्णे णो चेव णं अदिण्णे, से वि य पिबित्तए, णो चेव णं हत्थ-पाय-चरु-चमस-पक्खालणट्टाए सिणाइत्तए वा। तेसिं णं परिव्वायगाणं कप्पइ मागहए**

स्वच्छं कल्पते, नो चैव खलु अबहुप्रसन्नम्, '**से वि य परिपूए णो चेव णं अपरिपूए**' तदपि च जल परिपूतं=वस्त्रेण गालितं कल्पते, नो चैव खल्वपरिपूतम्, '**से वि य णं दिण्णे णो चेव णं अदिण्णे**' तदपि च खलु दत्तं कल्पते, न चैव खल्वदत्तम्, '**से वि य पिबित्तए णो चेव णं हत्थ–पाय–चरु–चमस–पक्खालणट्टाए सिणाइत्तए वा**' तदपि च पातुं कल्पते नो चैव खलु हस्तपादचरुचमसप्रक्षालनार्थम्, तत्र-हस्तौ पादौ च प्रसिद्धौ। चरुः= अन्नपात्र, यस्मिन् भिक्षान्नं स्थाप्यते। चमसो–दर्विका–परिवेषणपात्रं 'चमचा' इति प्रसिद्धम्,

है, अतिनिर्मल नहीं होने पर ग्राह्य नहीं हो सकता। (**से वि य परिपूए णो चेव णं अपरिपूए**) अतिनिर्मल होने पर भी वस्त्र से छाना जाने पर ही कल्पित कहा गया है, अनछना पानी अपने उपयोग में लाने का निषेध है। (**से वि य णं दिण्णे णो चेव णं अदिण्णे**) छना हुआ होने पर भी किसी दाता के द्वारा दिया गया ही ग्रहण करने के योग्य कहा है, विना दिया हुआ नहीं। (**से वि य पिबित्तए णो चेव हत्थ–पाय–चरु–चमस–पक्खालणट्टाए**) दिया गया भी जल का उपयोग केवल पीने के लिये ही करने की आज्ञा है, हाथ–पैर, चरु–भोजन पात्र एवं चमचा धोने के लिये उसका उपयोग विहित नहीं है, अर्थात् हाथ पैर आदि धोने के काम में उसको नहीं ला सकते, (**सिणाइत्तए वा**)

अवहुप्पसण्णे) સ્વચ્છ હોવા છતાં પણ અતિનિર્મળ હોય તો જ ગ્રાહ્ય થઈ શકે છે, અતિનિર્મળ ન હોય તો ગ્રાહ્ય થઈ શકતું નથી. (से वि य परिपूए णो चेव णं अपरिपूए) અતિનિર્મળ હોવા છતાં પણ વસ્ત્રથી ગળાએલું હોય તો જ કલ્પિત કહેલું છે. વગર ગળાયેલું પાણી પોતાના ઉપયોગમાં લેવાનું નિષિદ્ધ છે. (से वि य णं दिण्णे णो चेव णं अदिण्णे) ગાળેલું હોય છતાં પણ કોઈ દાતા દ્વારા અપાએલું જ ગ્રહણ કરવા યોગ્ય કહેવામાં આવ્યું છે, વગર દીધેલું નહિ. (से वि य पिबित्तए णो चेव हत्थ–पाय–चरु–चमस–पक्खालणट्टाए) આપેલું હોય તેવા જલનો ઉપયોગ પણ કેવળ પીવા માટે જ કરવાની આજ્ઞા છે, હાથ–પગ, ચરૂ–ભોજન પાત્ર, તેમજ ચમચા ધોવા માટે તેનો ઉપયોગ કરવો વિહિત નથી, અર્થાત્ હાથ પગ આદિ ધોવાના કામમાં તેનો ઉપયોગ કરી શકાય નહિ. (सिणाइत्तए वा) તેમજ તેનો ઉપયોગ સ્નાન

**आढए जलस्स पडिग्गाहित्तए, से वि य वहमाणे णो चेव णं अवहमाणे, जाव णं अदिण्णे, सेवि य हत्थपायचरुचमसपक्खालणट्ठयाए, णो चेव णं पिबित्तए सिणाइत्तए वा ॥सू० १९॥**

एतेषां प्रक्षालनार्थं स्नातुं वा न कल्पते इति। '**तेसि णं परिव्वायगाणं कप्पइ मागहए आढए जलस्स पडिग्गाहित्तए**' तेषां खलु परिव्राजकानां कल्पते मागधमाढक जलस्य परिग्रहीतुम्, '**से वि य वहमाणे णो चेव णं अवहमाणे जाव णं अदिण्णे**' तदपि च वहमानं नो चैव खल्ववहमान यावत्खलु अदत्तम्, यावच्छब्दात्कर्दमरहितं, स्वच्छं, वस्त्रगालितं च कल्पते, अवहमानादिकं तु न कल्पते इति बोध्यम्। '**से वि य हत्थ-पाय-चरु-चमस-पक्खालणट्ठयाए**' तदपि च हस्त-पाद-चरु-चमस-प्रक्षालनार्थम्, '**णो चेव णं पिबित्तए सिणाइत्तए वा**' नो चैव खलु पातु स्नातुं वा ॥ सू० १९ ॥

और न उसका उपयोग स्नान करने में ही किया जाता है। इसी प्रकार (**तेसिं णं परिव्वायगाणं कप्पइ मागहए आढए जलस्स पडिग्गाहित्तए से वि य वहमाणे णो चेव णं अवहमाणे जाव णं अदिण्णे, से वि य हत्थ-पाय-चरु-चमस-पक्खालणट्ठयाए, णो चेव णं पिवित्तए सिणाइत्तए वा**) इन साधुओं के लिये मगधदेशीय प्रस्थ प्रमाणमात्र जल ही हाथ, पैर, पात्र, चम्मच आदि धोने के लिये ग्राह्य बतलाया गया है। वह भी वहता हुआ ही होना चाहिये-स्थिर नहीं। उसमें भी वह अतिस्वच्छ, एवं वस्त्र से छना हुआ तथा दाता के द्वारा दिया गया होना चाहिये, इससे भिन्न नहीं। ऐसा जल ही हस्त, पाद, चरु एवं चमचा के धोने के काम में आ सकता है, अन्यथा नहीं। अतः

કરવામાં પણ કરી શકાય નહિ. એ પ્રકારે (तेसिं णं परिव्वायगाणं कप्पइ मागहए आढए जलस्स पडिग्गाहित्तए से वि य वहमाणे णो चेव णं अवहमाणे जाव णं अदिण्णे से वि य हत्थ-पाय-चरु-चमस-पक्खालणट्ठयाए णो चेव णं पिवित्तए सिणाइत्तए वा) આ સાધુઓને માટે મગધદેશીય પ્રસ્થપ્રમાણ માત્ર જલ જ હાથ પગ પાત્ર ચમચા આદિ ધોવાને માટે ગ્રાહ્ય બતાવવામા આવ્યુ છે. તે પણ વહેતું હોય તે જ હોવું જોઈએ, ન વહેતું હોય તે નહિ. તેમાં પણ તે અતિસ્વચ્છ તેમજ વસ્ત્રથી ગાળેલું તથા દાતા દ્વારા અપાએલું હોવું જોઈએ, તેનાથી બીજું નહિ. એવું જલજ હાથ, પગ, ચરૂ તેમજ ચમચાને ધોવાના કામમાં આવી શકે છે, બીજું નહિ. આમ એ નિમિત્તે પ્રાપ્ત કરા-

मूलम्—ते णं परिव्वायगा एयारूवेणं विहारेणं विहरमाणा बहूइं वासाइं परियायं पाउणंति, पाउणित्ता कालमासे कालं किच्चा उक्कोसेणं बंभलोए कप्पे देवत्ताए उववत्तारो भवंति।

टीका—'ते णं परिव्वायगा' इत्यादि। 'ते णं परिव्वायगा' ते खलु परिव्राजकाः 'एयारूवेणं विहारेणं विहरमाणा' एतद्रूपेण=उक्तरूपेण विहारेण विहरन्तः, 'बहूइं वासाइं परियायं पाउणंति' बहूनि वर्षाणि पर्यायं पालयन्ति, 'पाउणित्ता कालमासे कालं किच्चा' पालयित्वा कालमासे कालं कृत्वा 'उक्कोसेणं बंभलोए कप्पे देवत्ताए उववत्तारो भवंति' उत्क्रोशेन ब्रह्मलोके कल्पे देवत्वेनोपपत्तारो भवन्ति, 'तहिं

इस निमित्त प्राप्त किये गये जल को पीने अथवा स्नान के काम में लाने का निषेध है ॥ सू. १९ ॥

'ते णं परिव्वायगा' इत्यादि।

(ते णं परिव्वायगा) ये परिव्राजक (एयारूवेणं विहारेणं विहरमाणा) इस प्रकार के विहार से विचरण करते हुए अर्थात् इस प्रकार की परिस्थिति में रहते हुए (बहूइं वासाइं परियायं पाउणंति) अपने जीवन के बहुत वर्षों को इसी पर्याय का पालन करते २ जब व्यतीत करते है, तब (कालमासे कालं किच्चा) कालमास के उपस्थित होने पर मर कर वे (उक्कोसेणं) ज्यादा से ज्यादा (बंभलोए कप्पे देवत्ताए उववत्तारो भवंति) ब्रह्मलोक नामक पंचमकल्प में देवता की पर्याय से उत्पन्न हो जाते है। (तहिं तेसिं गई तहिं तेसिं ठिई) वही पर उनकी गति एवं वहीं पर उनकी स्थिति शास्त्रों में वर्णित की

યેલ જલને પીવા અથવા સ્નાન કરવાના કામમાં લેવાનો નિષેધ છે. (સૂ. ૧૯)

"ते णं परिव्वायगा" ઈત્યાદિ.

(ते णं परिव्वायगा) એ પરિવ્રાજક (एयारूवेणं विहारेणं विहरमाणा) આ પ્રકારના વિહારથી વિચરણ કરતાં કરતાં, અર્થાત્—આ પ્રકારની પરિસ્થિતિમા રહેતાં (बहूइं वासाइं परियायं पाउणंति) પોતાના જીવનનાં ઘણાં વરસોને એજ પર્યાયના પાલનમાં વ્યતીત કરે છે. ત્યારે (कालमासे कालं किच्चा) કાળ અવસરે કાળ કરીને તેઓ (उक्कोसेणं) વધારેમાં વધારે (बंभलोए कप्पे देवत्ताए उववत्तारो भवंति) બ્રહ્મલોક નામના પાંચમા કલ્પમાં દેવતાની પર્યાયથી ઉત્પન્ન થઇ જાય છે, (तहिं तेसिं गई तहि तेसि ठिई) ત્યાં તેમની ગતિ તેમજ ત્યાં

तहिं तेसिं गई, तहिं तेसिं ठिई। दससागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता। सेसं तं चेव ॥ सू० २० ॥

मूलम्—तेणं कालेणं तेणं समएणं अम्मडस्स परिव्वायगस्स सत्त अंतेवासिसयाइं गिम्हकालसमयंसि जेट्ठामूलमासंमि गंगाए महानईए उभओकूलेणं कंपिल्लपुराओ णयराओ

---

तेसिं गई, तहिं तेसिं ठिई' तत्र तेषां गतिः, तत्र तेषां स्थितिः। 'दस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता' दश सागरोपमानि स्थितिः प्रज्ञप्ता, 'सेसं तं चेव' शेषं तदेव॥ सू० २० ॥

टीका—तेणं कालेणं तेणं समएणं' इत्यादि। 'तेणं कालेणं समएणं' तस्मिन् काले तस्मिन् समये 'अम्मडस्स परिव्वायगस्स सत्त अंतेवासिसयाइं' अम्बडस्य परिव्राजकस्य सप्तान्तेवासिशतानि=सप्तशतसंख्यका अन्तेवासिनः-शिष्याः, 'गिम्हकालसमयंसि जेट्ठामूलमासंमि' ग्रीष्मकालसमये ज्येष्ठामूलमासे=ज्येष्ठानक्षत्रे मूलनक्षत्रे वा पूर्णिमा यस्मिन् तस्मिन्, ज्येष्ठमासे इत्यर्थः। 'गंगाए महाणईए उभओ-

---

गई है। इस स्थिति का प्रमाण (दस सागरोवमाइं) वहां १० दस सागर है, (सेसं तं चेव) यावत् ये आराधक नहीं होते है॥ सू० २० ॥

'तेणं कालेणं तेणं समएणं' इत्यादि।

(तेणं कालेणं समएणं) उस काल में एव उस समय में (अम्मडस्स परिव्वायगस्स) अम्बड नामक परिव्राजक (संन्यासी) के (सत्त अंतेवासिसयाइं) सात सौ शिष्य (गिम्हकालसमयंसि) ग्रीष्म काल के समय (जेट्ठामूलमासंमि) ज्येष्ठ मास में (गंगाए

---

તેમની સ્થિતિ શાસ્ત્રોમા વર્ણન કરેલી છે. આ સ્થિતિનું પ્રમાણ (दस सागरोवमाइं) ત્યા ૧૦ દસ સાગરનું છે. (सेसं तं चेव) યાવત્ તેઓ આરાધક હોતા નથી. (સૂ ૨૦)

"तेणं कालेणं तेणं समएणं" ઈત્યાદિ.

(तेणं कालेणं तेणं समएणं) તે કાળમાં તેમજ તે સમયમા (अम्मडस्स परिव्वायगस्स) અમ્બડ નામના પરિવ્રાજક (સંન્યાસી)ના (सत्त अंतेवासिसयाइं) સાતસો શિષ્ય (गिम्हकालसमयंसि) ગ્રીષ્મ કાળના સમયમાં (जेट्ठामूलमासंमि) જેઠ મહિનામા (गंगाए महाणईए उभओ कूलेणं) ગંગા નદીના બન્ને તટ

पुरिमतालं णयरं संपट्ठिया विहाराए ॥ सू० २१ ॥

मूलम्—तए णं तेसिं परिव्वायगाणं तीसे अगामियाए छिण्णोवायाए दीहमद्धाए अडवीए कंचि देसंतरमणुपत्ताणं

कूलेणं' गंगाया महानद्या उभयतः कूलेन=उभयतटाभ्याम्, 'कंपिल्लपुराओ णयराओ पुरिमतालं णयरं संपट्ठिया विहाराए' काम्पिल्यपुरान्नगरात्पुरिमतालं नगरं सम्प्रस्थिता विहाराय=विहर्त्तुम् ॥ सू० २१ ॥

टीका—'तए णं' इत्यादि। 'तए णं' तत खलु 'तेसिं परिव्वायगाणं' तेषां परिव्राजकानाम्, 'तीसे अगामियाए' तस्या अग्रामिकाया =ग्रामसम्बन्धरहितायाः—ग्रामादूरवर्तिन्या इत्यर्थे, 'छिन्नोवायाए' छिन्नावपाताया=जनागमनिर्गमरहिताया—निर्जनाया इत्यर्थ.; 'दीहमद्धाए' दीर्घाऽध्वाया=दीर्घमार्गाया—प्रान्तरावस्थिताया इत्यर्थः; 'अडवीए' अटव्या=वनस्य 'कंचि देसंतरमणुपत्ताणं' किञ्चिद्देशान्तरमनुप्राप्तानाम्=

महाणईए उभओ कूलेणं) गंगा नदी के दोनो तटो से होकर, (कंपिल्लपुराओ णयराओ पुरिमतालणयरं संपट्ठिया) कांपिल्यपुर नगर से पुरिमताल नगर की ओर विहार के लिये निकले ॥ सू० २१ ॥

'तए णं' इत्यादि।

(तए णं) इसके वाद (तेसिं परिव्वायगाणं) उन परिव्राजकों का (तीसे अगामियाए अडवीए) जव कि वे चलते २ एक भयंकर अटवी में आ पहुँचे, जो ग्राम के सम्बंध से सर्वथा रहित थी—ग्राम से वहुत दूर थी, (छिन्नोवायाए) इसलिये यहां पर मनुष्यों का सचार विलकुल ही नहीं था, अर्थात् वह अटवी निर्जन थी, (दीहमद्धाए) रास्ते इसके वड़े विकट थे, (कंचि देसंतरमणुप्पत्ताणं) इसका थोडा सा ही भाग इन्होने तय कर पाया

ઉપર થઇને (कंपिल्लपुराओ णयराओ पुरिमतालणयरं संपट्ठिया) કાંપિલ્યપુર નગરથી પુરિમતાલ નગરની તરફ વિહાર માટે નીકળ્યા. (સૂ. ૨૧)

" तए णं " ઇત્યાદિ.

(तए णं ) ત્યાર પછી (तेसिं परिव्वायगाणं) તે પરિવ્રાજકો, (तीसे अगामियाए अडवीए) જ્યારે ચાલતા ચાલતાં એક ભયંકર અટવી (વન)માં આવી પહોંચ્યા કે જે વન ગામના સંબંધથી સર્વથા રહિત હતું—ગામથી બહુ દૂર હતું. (छिन्नोवायाए) તેથી અહીં મનુષ્યોનો સંચાર બિલકુલ જ નહોતો એટલે કે તે વન નિર્જન હતું. (दीहमद्धाए) તેના રસ્તા બહુ વિકટ હતા. (कंचि

से पुव्वग्गहिए उदए अणुपुव्वेणं परिभुंजमाणे झीणे ॥ सू० २२॥

मूलम्—तए णं ते परिव्वायगा झीणोदगा समाणा तण्हाए पारब्भमाणा २ उदगदायारमपस्समाणा अण्णमण्णं सद्दावेंति, सद्दावित्ता एवं वयासी ॥ सू० २३ ॥

कंचित् प्रदेशमागतानां 'से' तत् 'पुव्वग्गहिए' पूर्वगृहीतम् 'उदए' उदकम् 'अणुपुव्वेणं' आनुपूर्व्येण 'परिभुंजमाणे' परिभुज्यमानं 'झीणे' क्षीणं=क्षयं प्राप्तम् ॥ सू० २२ ॥

टीका—'तए णं ते परिव्वाया' इत्यादि। 'तए णं ते परिव्वाया' ततः खलु ते परिव्राजकाः 'झीणोदगा समाणा' क्षीणोदकाः सन्तः, 'तण्हाए' तृष्णया=पिपासया, 'पारब्भमाणा २' प्रारभ्यमाणाः २=पीड्यमानाः २—व्याकुलीभवन्तः, व्याकुलीभावेहेतुगर्भविशेषणमाह—'उदगदायारमपस्समाणा' उदकदातारमपश्यन्तः, तेषामदत्ताग्राहित्वादिति भावः, 'अण्णमण्णं सद्दावेंति' अन्योऽन्यं शब्दयन्ति=परस्परमाह्वयन्ति, शब्दयित्वा=आहूय 'एवं वयासी' एवमवादिषुः—एवं=वक्ष्यमाणप्रकारेण वदन्ति स्म ॥ सू० २३ ॥

था कि इतने में (से पुव्वग्गहिए उदए अणुपुव्वेणं परिभुंजमाणे झीणे) चलते समय अपने स्थान से लाया हुआ जल क्रमशः पीते २ खतम हो गया ॥ सू० २२ ॥

'तए णं से परिव्वाया' इत्यादि।

(तए णं) इस के बाद (ते परिव्वाया झीणोदगा समाणा) वे परिव्राजक कि जिनका पानी बिलकुल समाप्त हो चुका है, (तण्हाए पारब्भमाणा २) पुनः तृषा से अत्यंत पीडित—व्याकुल होते हुए (उदगदायारमपस्समाणा) उस समय किसी पानी दाता को

देसंतरमणुपत्ताणं) તેના થોડો ભાગ જ તેઓ ચાલ્યા કે એટલામાં (से पुव्वग्गहिए उदए अणुपुव्वेणं परिभुंजमाणे झीणे) ચાલતી વખતે પોતાના સ્થાનેથી લાવેલ જલ હળવે હળવે પીતા પીતા પૂરૂં થઇ ગયુ. (સૂ. ૨૨)

" तए णं ते परिव्वाया " ઇત્યાદિ.

(तए णं) ત્યાર પછી (ते परिव्वाया झीणोदगा समाणा) તે પરિવ્રાજકો કે જેમના પાણી બિલકુલ સમાપ્ત થઇ ચૂકયાં છે, (तण्हाए पारब्भमाणा २) તેઓ તરસથી બહુ જ પીડિત—વ્યાકુળ થઇને (उदगदायारमपस्समाणा) તે સમયે કોઈ પાણીના દાતાને ન જોવાથી (अण्णमण्णं सद्दावेंति) પરસ્પર એક બીજાને

मूलम्—एवं खलु देवाणुप्पिया! अम्हं इमीसे अगामियाए जाव अडवीए कंचि देसंतरमणुपत्ताणं से उदए जाव झीणे, तं सेयं खलु देवाणुप्पिया! अम्हं इमीसे अगामियाए

टीका—ते परिव्राजकाः परस्परं यदवादिषुस्तन्निर्दिशति–'एवं खलु देवाणुप्पिया' इत्यादि। 'एवं खलु देवाणुप्पिया!' एवं खलु हे देवानुप्रियाः! 'अम्हं इमीसे अगामिआए जाव अडवीए' अस्माकमस्या अग्रामिकाया यावदटव्याः, 'कंचि-देसंतरमणुपत्ताणं से उदए जाव झीणे' किञ्चिद्देशान्तरमनुप्राप्तानां तत् उदकं यावत् क्षीणम्, 'तं सेयं खलु देवाणुप्पिया' तत्=तस्मात् श्रेयः खलु हे देवानुप्रियाः? 'अम्हं इमीसे अगामियाए जाव अडवीए' अस्माकमस्यामग्रामिकायां यावदटव्याम्,

नहीं देखकर, (अण्णमण्णं सद्दावेंति) परस्पर में एक दूसरे का आह्वान करने लगे, (सद्दा-वित्ता एवं वयासी) और आह्वान करके इस प्रकार बोले ॥ सू० २३ ॥

एवं खलु देवाणुप्पिया!' इत्यादि।

(एवं खलु देवाणुप्पिया!) हे देवानुप्रियो! यह बात बिलकुल ठीक है कि (अम्हं इमीसे अगामियाए जाव अडवीए कंचिदेसंतरमणुपत्ताणं से उदए जाव झीणे) हम लोगों का, इस अग्रामिक अटवी में कि अभी जिसे थोड़ी ही तय की है, वह अपने २ स्थान से लाया हुआ जल अब समाप्त हो चुका है, (तं सेयं खलु देवाणुप्पिया! अम्हं इमीसे अगामियाए जाव अडवीए उदगदायारस्स सव्वओ समंता मग्गणगवेसणं करित्तए) ऐसी हालत में हमारे-तुम्हारे लिये यही एक कल्याणकारक मार्ग है कि हम इस अग्रामिक एवं निर्जन अटवी में सर्व प्रकार से चारों ओर किसी जल-

બોલાવવા લાગ્યા, (सद्दावित्ता एवं वयासी) અને બોલાવી આ પ્રકારે કહેવા લાગ્યા. (સૂ૦ ૨૩)

"एवं खलु देवाणुप्पिया!" ઇત્યાદિ.

(एवं खलु देवाणुप्पिया!) હે દેવાનુપ્રિયો! એ વાત બિલકુલ ઠીક છે કે (अम्हं इमीसे अगामियाए जाव अडवीए कंचि देसंतरमणुपत्ताणं से उदए जाव झीणे) આપણે આ વનમાં થોડીક દૂર ચાલીને આવ્યા છીએ, અને હમણાં જરાક જ રોકાયા છીએ, ત્યાં તો પોતાના સ્થાનેથી લાવેલું પાણી સમાપ્ત થઈ ગયું. (तं सेयं खलु देवाणुप्पिया! अम्हं इमीसे अगामियाए जाव अडवीए उदगदायारस्स सव्वओ समंता मग्गणगवेसणं करित्तए) એવી હાલતમાં અમારા

जाव अडवीए उदगदायारस्स सव्वओ समंता मग्गणगवेसणं करित्तए–त्ति कट्टु अण्णमण्णस्स अंतिए एयमट्ठं पडिसुणेंति, पडिसुणित्ता तीसे अगामियाए जाव अडवीए उदगदायारस्स सव्वओ समंता मग्गणगवेषणं करेंति, करित्ता उदगदायार-

'उदगदायारस्स सव्वओ समंता मग्गणगवेसणं करित्तएत्ति कट्टु' उदकदातुः सर्वतः समन्तात् मार्गणगवेषणं कर्तुम् इति कृत्वा, 'अण्णमण्णस्स अंतिए एयमट्ठं पडिसुणेंति' अन्योऽन्यस्य अन्तिके एतमर्थं प्रतिशृण्वन्ति=स्वीकुर्वन्ति, 'पडिसुणित्ता' प्रतिश्रुत्य 'तीसे अगामियाए जाव अडवीए उदगदायारस्स सव्वओ समंता मग्गणगवेसणं करेंति' तस्याम् अग्रामिकायां यावदटव्याम् उदकदातुः सर्वतः समन्ताद् मार्गणगवेषण कुर्वन्ति, 'करित्ता' कृत्वा, 'उदगदायारमलभमाणा' उदकदातारम् अलभमानाः, 'दोच्चंपि

दाता की मार्गणा एवं गवेषणा करे, (त्ति कट्टु अण्णमण्णस्स अंतिए एयमट्ठं पडिसुणेंति) इस प्रकारकी की गई सलाह सबने एकमत होकर मान ली। (पडिसुणित्ता तीसे अगामियाए जाव अडवीए उदगदायारस्स सव्वओ समंता मग्गणगवेसणं करेंति) पश्चात् उस सलाह के अनुसार वे सब उस अग्रामिक अटवी में सर्व प्रकार से चारों ओर पानी के देने वाले दाता की गवेषणा करने में संलग्न हो गये। (करित्ता उदगदायारमलभमाणा दोच्चंपि अण्णमण्णं सद्दावेंति सद्दावित्ता एवं वयासी) गवेषणा करते २ जब उन्हे कोई

तमारा माटे એ જ એક કલ્યાણકારક માર્ગ છે કે આપણે આ અગ્રામિક તેમજ નિર્જન વનમા સર્વ પ્રકારથી ચારે કોરે કોઇ જલના દાતારની માર્ગણા તેમજ શોધ કરીએ. (त्ति कट्टु अण्णमण्णस्स अंतिए एयमट्ठं पडिसुणेंति) આ પ્રકારની કરેલી સલાહ બધાએ એકમત થઇને માની લીધી. પછી (पडिसुणित्ता तीसे अगामियाए जाव अडवीए उदगदायारस्स सव्वओ समंता मग्गणगवेसणं करेंति) તે સલાહને અનુસરીને તે બધા તે અગ્રામિક અટવી (વન)માં સર્વ પ્રકારથી ચારે કોર પાણી દેવાવાળા દાતારની શોધ કરવામા સંલગ્ન થઇ ગયા. (करित्ता उदगदायारमलभमाणा दोच्चंपि अण्णमण्णं सद्दावेंति सद्दावित्ता एव वयासी) શોધ કરતાં કરતાં પણ તેમને જ્યારે કોઇ પણ પાણીનો

मलभमाणा दोच्चंपि अण्णमण्णं सद्दावेंति, सद्दावित्ता एवं वयासी ॥ सू० २४ ॥

मूलम्—इह णं देवाणुप्पिया! उदगदातारो णत्थि, तं णो खलु कप्पइ अम्हं अदिण्णं गिण्हित्तए, अदिण्णं साइ-

---

अण्णमण्णं सद्दावेंति' द्वितीयमपि=द्वितीयवारमपि अन्योऽन्यं शब्दयन्ति, 'सद्दावित्ता' शब्दयित्वा 'एवं वयासी' एवमवादिषुः ॥ सू० २४ ॥

टीका—'इह णं देवाणुप्पिया!' इत्यादि। 'इह णं देवाणुप्पिया!' इह खलु हे देवानुप्रियाः! 'उदगदातारो णत्थि' उदकदातारो न सन्ति। 'तं णो खलु कप्पइ अम्हं अदिण्णं गिण्हित्तए' तत्=तस्मात् नो खलु कल्पतेऽस्माकमदत्तम् उदकं ग्रहीतुम्, 'अदिण्णं साइज्जित्तए' अदत्तम् उदकं स्वादयितुं=पातुम्, 'तं मा णं अम्हे इयाणिं' तन्मा खलु वयमिदानीम्, 'आवइकालंपि' आयतिकालमपि=आगामिनि

---

भी पानी का दाता नहीं मिला तब उन्होंने द्वितीयवार भी परस्पर में एक-दूसरे का आह्वान किया, और आह्वान करके इस प्रकार बोले ॥ सू० २४ ॥

'इह णं देवाणुप्पिया' इत्यादि।

(इह णं देवाणुप्पिया! उदगदायारो णत्थि) हे देवानुप्रियो! प्रथम तो इस अटवी में एक भी उदकदातार नहीं है, (तं णो खलु कप्पइ अम्हं अदिण्णं गिण्हित्तए) दूसरे-हम लोगों को अदत्त जल ग्रहण करना उचित नहीं है, (अदिण्णं साइज्जित्तए) कारण कि अदत्त जल का पान करना हम लोगों की मर्यादा से सर्वथा विरुद्ध है। (तं मा णं अम्हे इयाणिं आवइकालं पि अदिण्णं गिण्हामो अदिण्णं साइज्जामो मा णं

---

દાતાર મળ્યો નહિ ત્યારે તેઓએ બીજી વાર પણ પરસ્પર એકબીજાને બોલાવ્યા, બોલાવીને આ પ્રકારે કહેવા લાગ્યાં (સૂ૦ ૨૪)

"इह णं देवाणुप्पिया" ઇત્યાદિ.

(इह णं देवाणुप्पिया) હે દેવાનુપ્રિયો! પ્રથમ તો આ અટવીમાં એકેય પાણીનો દાતાર નથી, (तं णो खलु कप्पइ अम्हं अदिण्णं गिण्हित्तए) બીજું આપણને અદત્ત જલ ગ્રહણ કરવું ઉચિત નથી. (अदिण्णं साइज्जित्तए) કારણ કે અદત્ત જલને પીવું તે આપણી મર્યાદાથી સર્વથા વિરુદ્ધ છે. (तं मा णं अम्हे इयाणि आवइकालंपि अदिण्णं गिण्हामो अदिण्णं साइज्जामो मा

**ज्जित्तए, तं मा णं अम्हे इयाणिं आवइकालं पि अदिण्णं गिण्हामो, अदिण्णं साइज्जामो, मा णं अम्हं तवलोवे भविस्सइ। तं सेयं खलु अम्हं देवाणुप्पिया ! तिदंडं, कुंडियाओ य, कंच-**

समयेऽपि '**अदिण्णं गिण्हामो**' अदत्तं गृह्णीम'=अदत्तमुदकं न स्वीकुर्मः, '**अदिण्णं साइज्जामो**' अदत्तं स्वादयामः=अदत्तं जलं मा स्वादयाम इत्यन्वयः, '**मा णं अम्हं तवलोवे भविस्सइ**' मा खलु अस्माक तपोलोपो भविष्यति, अदत्तस्याग्रहणेऽनास्वादने चास्माकं तपोलोपो न भविष्यतीत्यर्थः। '**तं सेयं खलु अम्हं देवाणुप्पिया !**' तत्=तस्मात श्रेयः खलु अस्माक हे देवानुप्रियाः ! '**तिदंडयं**' त्रिदण्डकं '**कुंडियाओ य**' कुण्डिकाश्च=कमण्डलून्, '**कंचणियाओ य**' काञ्चनिकाश्च=रुद्राक्षमालिकाः, '**करोडियाओ**

**अम्हं तवलोवे भविस्सइ**) तथा हम सब लोगों का यह भी दृढ निश्चय है कि आगामी काल में भी हम सब विना दिया हुआ जल न ग्रहण करें और न उसे पियें, क्यों कि इस प्रकार के आचरण से हमारी तपस्या का लोप हो जायगा, अतः वह भी सुरक्षित रहे इस अभिप्राय से हममें से किसी को भी अदत्त जल ग्रहण नहीं करना चाहिये और न उसे पीना ही चाहिये। (**तं सेयं खलु अम्हं देवाणुप्पिया ! तिदंडं कुंडियाओ य, कंचणियाओ य, करोडियाओ य, भिसियाओ य, छण्णालए य, अंकुसए य, केसरियाओ य, पवित्तए य, गणेत्तियाओ य, छत्तए य, वाहणाओ य, पाउयाओ य, धाउरत्ताओ य, एगंते एडित्ता गंगं महानइं ओगाहित्ता**) इसलिये हे देवानुप्रियो ! अब हम सब की भलाई इसी में है कि हम सब त्रिदण्डों को, कमण्डलुओं को, रुद्राक्ष की मालाओ को, करोटिकाओं-

णं अम्हं तवलोवे भविस्सइ) तथा આપણે દૃઢનિશ્ચયી છીએ કે ભવિષ્યકાળમાં પણ દીધેલું ન હોય એવું જલ ગ્રહણ કરવું નહિ અને પીવું નહિ, કેમકે એ પ્રકારના આચરણથી આપણી તપસ્યાનો લોપ થઈ જશે. માટે તે સુરક્ષિત રહે એવા અભિપ્રાયથી આપણામાંના કોઈએ પણ અદત્ત જલ ગ્રહણ ન કરવું જોઈએ અને તે પીવું પણ ન જોઈએ. (तं सेयं खलु अम्हं देवाणुप्पिया ! तिदंडं, कुंडियाओ य, कंचणियाओ य, करोडियाओ य, केसरियाओ य, पवित्तए य, गणेत्तियाओ य, छत्तए य, वाहणाओ य, पाउयाओ य, धाउरत्ताओ य एगंते एडित्ता गंगं महानइं ओगाहित्ता) એ માટે હે દેવાનુપ્રિયો ! હવે આપણી ભલાઈ એમાં જ છે કે આપણે ત્રિદંડોને, કમંડલુઓને, રુદ્રાક્ષની

णियाओ य, करोडियाओ य, भिसियाओ य, छण्णालए य, अंकुसए य, केसरियाओ य, पवित्तए य, गणेत्तियाओ य, छत्तए य, वाहणाओ य, पाउयाओ य, धाउरत्ताओ य एगंते एडित्ता, गंगं महाणइं ओगाहित्ता, वालुयासंथारए संथरित्ता, संलेहणा-

य' करोटिकाश्च=मृण्मयभाजनविशेषान्, 'भिसियाओ य' वृषिकाश्च=उपवेशनपट्टिकाः, 'छण्णालए य' षण्णालिकानि च=त्रिकाष्ठिका', 'अंकुसए य' अङ्कुशकांश्च=आकर्षणिकाः—वृक्षपल्लवाद्याकर्षणसाधनविशेषान्, देवार्चने पत्रपुष्पफलानां सग्रहार्थमङ्कुशका उपयुज्यन्ते, 'केसरियाओ य' केशरिकाश्च=प्रमार्जनार्थानि वस्त्रखण्डानि, 'पवित्तए य' पवित्रकाणि=ताम्रमयमुद्रिका', 'गणेत्तियाओ य' हस्तधार्या रुद्राक्षमाला', 'गणेत्तिया' इति हस्तधार्यरुद्राक्षमालार्थे देशीयशब्द'; 'छत्तए य' छत्राणि च 'वाहणाओ य' उपानहश्च, 'पाउयाओ य' पादुकाश्च=काष्ठपादुका', 'धाउरत्ताओ य' धातुरक्ताश्च=गैरिकोपरञ्जिताः, शाटिका.=सन्यासिपरिधानीयवस्त्राणि, एतानि सर्वाणि 'एगंते एडित्ता' एकान्ते त्यक्त्वा, 'गंगं महाणइं ओगाहित्ता' गङ्गामहानदीमवगाह्य=गङ्गायां महानद्यामवतीर्य—'वालुयासंथारए संथरित्ता' वालुकासंस्तारकान् सस्तीर्य, 'संलेहणाझूसियाणं' सलेखना-

मिट्टी के बने हुए पात्रविशेषों को, वृषिकाओं—बैठने के पाटियों को, तिपाइयों को, देवों की पूजा के लिये पत्र—पुष्पादिकों के गिराने के वास्ते सदा पास में रहनेवाली छोटी सी अंकुशिका को, केशरिका को—प्रमार्जन करने के काम में आनेवाले वस्त्र के खंडों को, तामे की मुंदरियो को, सुमरिनियों को, छत्रों को, जूतो को, काष्ठ की पादुकाओं को एव गैरिकधातु से रक्त पहिरने की धोतियों को एकान्त मे छोडकर महानदी गंगा को पारकर (वालुयासंथारए संथरित्ता) उसके तट पर बालुका का मथारा बिछावे और उस पर

माळाओने, करोटिकाओ—माटीना बनेलां पात्र विशेषोने, वृषिकाओ—बेसवाना पाटलाओने, त्रिपाईओने (घोडीने), देवोने पूजा निमित्त पत्र, पुष्प आदि राखवा माटे सदा पासे रहेवावाळी नानी सरखी अंकुशिकाने, केशरिकाओने—प्रमार्जन करवाना काममां आववावाळा वस्त्रना कटकाओने, तांबानी मुंदरिओने, सुमरिनिओने, छत्रोने, जोडाने, लाकडानी पादुकाओने, तेमज गेरु रंगेलां पहेरवानां धोतियांओने एक ठेकाणे राखी दईने महानदी गंगाने उतरीने (वालुयासंथारए संथरित्ता) तेना तट उपर रेतीना

झूसियाणं भत्तपाणपडियाइक्खियाणं पाओवगयाणं कालं अणवकंखमाणाणं विहरित्तए त्ति कट्टु अण्णमण्णस्स अंतिए एयमट्ठं पडिसुणेंति, पडिसुणित्ता तिदंडए य जाव एगंते एडेंति, एडित्ता गंगं महाणइं ओगाहेंति, ओगाहित्ता वालुआसंथारए संथरंति,

---

जुष्टानाम्--तपसा शरीरस्य कृशीकरणं सलेखना तया जुष्टानां=सेवितानां–युक्तानाम्, 'भत्त-पाण-पडियाइक्खियाणं' भक्तपान–प्रत्याख्यातानाम्' 'पाओवगयाणं' पादपोपगतानाम्=छिन्नवृक्षवन्निष्पन्दतयाऽवस्थितानाम्, 'कालं अणवकंखमाणाणं विहरित्तए त्ति कट्टु' कालमानवकाङ्क्षतां=मरणमनिच्छतां विहर्तुमिति कृत्वा, 'अण्णमण्णस्स अंतिए एयमट्ठं पडिसुणेंति' अन्योऽन्यस्याऽन्तिके एतमर्थं प्रतिशृण्वन्ति=स्वीकुर्वन्ति, 'पडिसुणित्ता' प्रतिश्रुत्य 'तिदंडए य जाव एगंते एडेंति' त्रिदण्डकांश्च यावत् सर्वोपकरणानि एकान्ते त्यजन्ति, 'गंगं महाणइ ओगाहेंति' गङ्गां महानदीमवगाहन्ते=अवतरन्ति, 'ओगाहित्ता' अवगाह्य=

---

( भत्तपाणपडियाइक्खियाणं ) भक्तपान का प्रत्याख्यान कर ( पाओवगयाणं ) छिन्न-वृक्ष की तरह निश्चेष्ट होते हुए ( कालं अणवकंखमाणाणं ) मरण की इच्छा से रहित होकर ( संलेहणाझूसियाणं विहरित्तए ) सलेखनापूर्वक मरण को प्रेम के साथ सेवन करे। ( त्तिकट्टु ) इस प्रकार विचारकर ( अण्णमण्णस्स अंतिए एयमट्ठं पडिसुणेंति ) उन लोगोंने इस निर्धारित वात को स्वीकार कर लिया, ( पडिसुणित्ता ) स्वीकार करने के वाद ( तिदंडए य जाव एगंते एडेंति ) फिर उन सबने अपने २ त्रिदंड आदि उपकरणों को एकान्त में परित्यक्त कर दिया, ( एडित्ता गंगं महाणइं ओगाहेंति ) परित्यक्त कर चुकने पर फिर वे सव के सव उस महानदी गंगा में प्रविष्ट हुए, ( ओगा-

---

સંથારા બિછાવીએ, અને તેના પર (भत्तपाण-पडियाइक्खियाणं) ભક્તપાનનાં પ્રત્યાખ્યાન કરીને (पाओवगयाणं) પાદપોપગમન સથારા કરીને (कालं अणवकंखमाणाणं) મરણની ઇચ્છાથી રહિત થઇને (संलेहणाझूसियाणं विहरित्तए) સંલેખના-પૂર્વક મરણનુ પ્રેમથી સેવન કરીએ. (त्ति कट्टु) આ પ્રકારનો વિચાર કરી (अण्णमण्णस्स अंतिए एयमट्ठं पडिसुणेति) તે લોકોએ આ નિર્ધાર કરેલી વાતનો સ્વીકાર કરી લીધો. (पडिसुणित्ता) સ્વીકાર કર્યા પછી (तिदंडए य जाव एगंते एडेंति) તે બધાએ પોતપોતાના ત્રિદંડ આદિ ઉપકરણોને એકાન્ત સ્થાનમાં પરિત્યક્ત કરી દીધાં. (एडित्ता गंगं महाणइं ओगाहेंति) છોડી દીધા પછી તે

**संथरित्ता वालुयासंथारयं दुरूहिंति, दुरूहित्ता पुरत्थाभिमुहा संपलियंकनिसण्णा करयल जाव कट्टु एवं वयासी ॥ सू० २५ ॥**

**मूलम्—नमोत्थु णं अरहंताणं जाव संपत्ताणं, नमोत्थु णं**

---

अवतीर्य 'वालुयासंथारए' वालुकासंस्तारकान् 'संथरंति' संस्तृणन्ति, 'संथरित्ता' संस्तीर्य 'वालुयासंथारयं' वालुकासंस्तारकं 'दुरूहिंति' दूरोहन्ति=आरोहन्ति, 'दुरूहित्ता' दूरुह्य=आरुह्य 'पुरत्थिमाभिमुहा' पौरस्त्याभिमुखाः=पूर्वदिङ्मुखाः, 'संपलियंकनिसण्णा' सम्पर्यङ्कनिषण्णाः—सपर्यङ्क=पद्मासनं तेन निषण्णाः—पद्मासनेनोपविष्टाः, 'करयल जाव कट्टु एवं वयासी' करतल यावत्कृत्वा=मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा एवमवदन् ॥ सू० २५ ॥

टीका—'नमोत्थु णं' इत्यादि। 'नमोत्थु णं अरहंताणं जाव संपत्ताणं' नमोऽस्त्वर्हद्भ्यो यावत् सम्प्राप्तेभ्यः, यावच्छब्दात्—आदिकरेभ्यः, तीर्थङ्करेभ्यः स्वयं सम्बुद्धेभ्यः—इत्यादीनि विशेषणानि पूर्वार्धगतविंशतिसंख्यकसूत्राद् बोध्यानि। सिद्धगतिनामधेयं स्थानं सम्प्राप्तेभ्यः।

---

हित्ता वालुआसंथारए संथरंति) उसे पार कर उन लोगोंने वालुकाका संथारा बिछाया, (संथरित्ता वालुयासंथारयं दुरूहिंति) बिछाकर उसपर वे फिर चढ गये, (दुरूहित्ता) चढकर (पुरत्थाभिमुहा संपलियंकनिसण्णा करयल जाव कट्टु एवं वयासी) पूर्व दिशा की ओर मुँह कर पर्यङ्कासन से बैठ गये और दोनो हाथों को जोडकर मस्तक पर लगा इस प्रकार कहने लगे ॥ सू० २५ ॥

'णमोत्थु णं अरिहंताणं जाव संपत्ताणं' इत्यादि।

(णमोत्थु णं अरिहंताणं जाव संपत्ताणं) यावत् मुक्ति प्राप्त हुए श्री अर्हतप्रभु को नमस्कार हो। (समणस्स भगवओ महावीरस्स जाव संपाविउकामस्स नमोत्थु णं)

---

બધાય તે મહાનદી ગંગામાં પ્રવિષ્ટ થયા. (ओगाहित्ता वालुआसंथारए संथरंति) તેને પાર કરીને તેઓએ બાલુકા (રેતી) ના સંથારા બિછાવ્યા. (संथरित्ता वालुयासंथारयं दुरूहिंति) બિછાવીને તેના ઉપર તેઓ બેઠા. (दुरूहित्ता) બેસીને (पुरत्थाभिमुहा संपलियंकनिसण्णा करयल जाव कट्टु एवं वयासी) પૂર્વ દિશાની તરફ મોઢાં રાખી પર્યંક—આસનથી બેસી ગયા અને બન્ને હાથોને જોડીને મસ્તક ઉપર રાખીને આ પ્રકારે કહેવા લાગ્યા. (સૂ. ૨૫)

'णमोत्थु णं अरिहंताणं जाव संपत्ताणं' ઇત્યાદિ.

(णमोत्थु णं अरिहंताणं जाव संपत्ताणं) મુક્તિને પ્રાપ્ત થયેલા શ્રી અર્હંત પ્રભુને નમસ્કાર હો. (समणस्स भगवओ महावीरस्स जाव संपाविउकामस्स नमो-

समणस्स भगवओ महावीरस्स जाव संपाविउकामस्स, नमोत्थु णं अम्मडस्स परिव्वायगस्स अम्हं धम्मायरियस्स धम्मोवदेसगस्स। पुव्विं णं अम्हेहिं अम्मडस्स परिव्वायगस्स अंतिए थूलगपाणाइवाए पच्चक्खाए जावज्जीवाए, सव्वे मुसावाए अदिण्णादाणे पच्चक्खाए जावज्जीवाए, सव्वे मेहुणे पच्चक्खाए जाव-

---

'नमोत्थु णं समणस्स भगवओ महावीरस्स जाव संपाविउकामस्स' नमोऽस्तु खलु श्रमणाय भगवते महावीराय यावत् सम्प्राप्तुकामाय, 'नमोत्थु णं अम्मडस्स परिव्वायगस्स अम्हं धम्मायरियस्स धम्मोवदेसगस्स' नमोऽस्तु खल्वम्बडाय परिव्राजकाय अस्माकं धर्माचार्याय धर्मोपदेशकाय। धर्माचार्यत्वं प्रकटयति-'पुव्विं णं अम्हेहिं अम्मडस्स परिव्वायगस्स अंतिए थूलगपाणाइवाए पच्चक्खाए जावज्जीवाए' पूर्वं खल्वस्माभिरम्बडस्य परिव्राजकस्याऽन्तिके स्थूलप्राणातिपातः प्रत्याख्यातो यावज्जीवम्-जीवनपर्यन्तं स्थूलप्राणातिपातविरमणमस्माभिरङ्गीकृतम्। 'मुसावाए अदिण्णादाणे पच्चक्खाए जावज्जीवाए'

---

श्रमण भगवान् महावीर को जो मुक्ति प्राप्त करने के कामी है नमस्कार हो। (धम्मोवदेसगस्स धम्मायरियस्स अम्हं परिव्वायगस्स अम्मडस्स नमोत्थु णं) धर्म के उपदेशक धर्माचार्य ऐसे हमारे गुरु अम्मड परिव्राजक को नमस्कार हो। (पुव्विं णं अम्हेहिं अम्मडस्स परिव्वायगस्स अंतिए थूलगपाणाइवाए जावज्जीवाए पच्चक्खाए) पहिले हम लोगों ने अम्बड परिव्राजक के समीप स्थूलप्राणातिपातका यावज्जीव प्रत्याख्यान किया है। (सव्वे मुसावाए अदिण्णादाणे पच्चक्खाए जावज्जीवाए सव्वे मेहुणे पच्चक्खाए जावज्जीवाए थूलपरिग्गहे पच्चक्खाए जावज्जीवाए) इसी तरह

---

त्थु णं) શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીર કે જે મુક્તિ પ્રાપ્ત કરવાની કામનાવાળા છે તેમને નમસ્કાર હો. (धम्मोवदेसगस्स धम्मायरियस्स अम्हं परिव्वायगस्स अम्मडस्स नमोत्थु णं) ધર્મના ઉપદેશક ધર્માચાર્ય એવા અમારા ગુરુ અમ્મડ પરિવ્રાજકને નમસ્કાર હો. (पुव्विं णं अम्हेहिं अम्मडस्स परिव्वायगस्स अंतिए थूलगपाणाइवाए जावज्जीवाए पच्चक्खाए) પહેલાં અમે લોકોએ અમ્બડ પરિવ્રાજકની પાસે સ્થૂલ પ્રાણાતિપાતનું યાવજ્જીવ પ્રત્યાખ્યાન કર્યું છે, (सव्वे मुसावाए अदिण्णादाणे पच्चक्खाए जावज्जीवाए, सव्वे मेहुणे पच्चक्खाए जावज्जीवाए, थूलपरिग्गहे

जीवाए, थूलए परिग्गहे पच्चक्खाए जावज्जीवाए, इयाणिं अम्हे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए सव्वं पाणाइवायं पच्चक्खामो जावज्जीवाए, एवं जाव सव्वं परिग्गहं पच्चक्खामो जावज्जीवाए, सव्वं कोहं माणं मायं लोहं पेज्जं दोसं कलहं अब्भक्खाणं

---

मृपावादोऽदत्ताऽऽदानं प्रत्याख्यात यावज्जीवम्, 'सव्वे मेहुणे पच्चक्खाए जावज्जीवाए सर्वं मैथुनं प्रत्याख्यातं यावज्जीवम्, 'थूलए परिग्गहे पच्चक्खाए जावज्जीवाए' स्थूलः परिग्रहः प्रत्याख्यातो यावज्जीवम्। 'इयाणि अम्हे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए सव्वं पाणाइवायं पच्चक्खामो जावज्जीवाए' इदानीं वय श्रमणस्य भगवतो महावीरस्याऽन्तिके सर्वं प्राणातिपातं प्रत्याख्यामो यावज्जीवम्, 'एवं जाव सव्वं परिग्गहं पच्चक्खामो जावज्जीवाए' एवं यावत् सर्वं परिग्रहं प्रत्याख्यामो यावज्जीवम्, 'सव्वं कोहं माणं मायं लोहं पेज्जं दोसं कलहं अब्भक्खाणं पेसुण्णं परपरिवायं अरइरइं मायामोसं

---

समस्त मृषावाद का समस्त अदत्तादान का जीवनपर्यन्त परित्याग कर दिया है, समस्त मैथुन का यावज्जीवन परित्याग कर दिया है। स्थूल परिग्रह का भी यावज्जीवन परित्याग कर दिया है। (इयाणिं अम्हे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए सव्वं पाणाइवायं पच्चक्खामो जावज्जीवाए) अव इस समय हम सव लोग श्रमण भगवान् महावीर के समीप पुनः समस्त प्राणातिपात का जीवनपर्यन्त प्रत्याख्यान करते हैं, (एवं जाव सव्वं परिग्गहं पच्चक्खामो जावज्जीवाए) इसी तरह समस्त परिग्रह आदि का भी जीवनपर्यन्त प्रत्याख्यान करते है, (सव्वं कोहं माणं मायं लोहं पेज्जं दोसं कलहं

---

पच्चक्खाएं जावज्जीवाए) એવી રીતે સમસ્ત મૃષાવાદનો અને સમસ્ત અદત્તાદાનનો જીવનપર્યન્ત પરિત્યાગ કરી દીધો છે, સમસ્ત મૈથુનનો જીવનપર્યન્ત પરિત્યાગ કરી દીધો છે. સ્થૂલ પરિગ્રહનો પણ યાવજ્જીવન પરિત્યાગ કરી દીધો છે. (इयाणिं अम्हे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए सव्वं पाणाइवायं पच्चक्खामो जावज्जीवाए) હવે આ સમયે અમે બધાય લોકો શ્રમણ ભગવાન મહાવીરની પાસે વળી પાછા સમસ્ત પ્રાણાતિપાતનું જીવનપર્યન્ત પ્રત્યાખ્યાન કરીએ છીએ. (एवं जाव सव्वं परिग्गहं पच्चक्खामो जावज्जीवाए) એવી જ રીતે સમસ્ત પરિગ્રહ આદિનું પણ જીવનપર્યન્ત પ્રત્યાખ્યાન કરીએ છીએ. (सव्वं कोहं माणं मायं लोहं पेज्जं दोसं कलहं अब्भक्खाणं पेसुण्णं परपरिवायं अरइ-

**पेसुण्णं परपरिवायं अरइरइं मायामोसं मिच्छादंसणसल्लं अकरणिज्जं जोगं पच्चक्खामो जावज्जीवाए, सव्वं असणं पाणं खाइमं साइमं चउव्विहंपि आहारं पच्चक्खामो जावज्जीवाए, जं पि य इमं**

**मिच्छादंसणसल्लं अकरणिज्जं जोगं पच्चक्खामो जावज्जीवाए'** सर्वं क्रोधं मानं मायां लोभं प्रियं द्वेषं कलहम् अभ्याख्यानं पैशुन्य परपरिवादम् अरतिरती मायामृषा मिथ्यादर्शनशल्यमकरणीयं योग प्रत्याख्यामो यावज्जीवम्—अत्रत्यानि सर्वाणि पदानि प्राग् व्याख्यातानि। **'सव्वं असणं पाणं खाइमं साइमं चउव्विहंपि आहारं पच्चक्खामो जावज्जीवाए'** सर्वमशनं पानं खाद्य स्वाद्य चतुर्विधमपि आहारं प्रत्याख्यामो यावज्जीवम्। **'जंपि य इमं सरीरं इट्ठं कंतं पिय मणुण्णं मणामं पेज्जं थेज्जं वेसासियं संमयं बहुमयं अणुमयं भंडकरंडगसमाणं, मा णं सीयं मा णं उण्हं मा णं खुहा मा णं पिवासा मा णं वाला मा णं**

**अब्भक्खाणं पेसुण्णं परपरिवायं अरइरइं )** इसी तरह उन्हीं की साक्षीपूर्वक समस्त क्रोध का, समस्त मान का, समस्त माया का, समस्त लोभ का, समस्त प्रिय का, समस्त द्वेष का, कलह का, अभ्याख्यान का, पैशुन्य का, परपरिवाद का, अरति–रति का (**मायामोसं**) मायामृषा का, (**मिच्छादंसणसल्लं**) मिथ्यादर्शन शल्य का, (**अकरणिज्जं जोगं**) एवं अकरणीय योग का (**पच्चक्खामो जावज्जीवाए**) यावज्जीव प्रत्याख्यान करते हैं। (**सव्वं असणं पाणं खाइमं साइमं चउव्विहंपि आहारं पच्चक्खामो जावज्जीवाए**) समस्त, अशन, पान, खाद्य, स्वाद्य इन चार प्रकार के आहारों का यावज्जीव प्रत्याख्यान करते है। (**जं पि य इमं सरीरं इट्ठं कंतं पियं मणुण्णं मणामं पेज्जं थेज्जं वेसासियं संमयं बहुमयं अणुमयं भंडकरंडगसमाणं, मा णं सीयं मा णं उण्हं मा णं खुहा मा णं**

रइं) એવી રીતે તેમની જ સાક્ષીપૂર્વક સમસ્ત ક્રોધનું, સમસ્ત માનનુ, સમસ્ત માયાનું, સમસ્ત લોભનુ, સમસ્ત પ્રિયનું, સમસ્ત દ્વેષનું, કલહનું અભ્યાખ્યાનનુ (આળનું), પૈશુન્યનું, પરપરિવાદનું, અરતિનું, રતિનું, (मायामोसं) માયામૃષાનું, (मिच्छादंसणसल्लं) મિથ્યાદર્શનશલ્યનું, (अकरणिज्जं जोगं) તેમજ અકરણીય યોગનું (पच्चक्खामो जावज्जीवाए) જીવનપર્યન્ત પ્રત્યાખ્યાન કરીએ છીએ. (सव्वं असणं पाणं खाइमं साइमं चउव्विहंपि आहारं पच्चक्खामो जावज्जीवाए) સમસ્ત અશન, પાન, ખાદ્ય, સ્વાદ્ય વગેરે ચાર પ્રકારના આહારોનું યાવજ્જીવન પ્રત્યાખ્યાન કરીએ છીએ. (जं पि य इमं सरीरं इट्ठं कंतं पियं मणामं मणुण्णं पेज्जं थेज्जं वेसासियं समयं बहुमयं अणुमयं भंडकरंडग-

**सरीरं इट्ठं कंतं पियं मणुण्णं मणामं पेज्जं थेज्जं वेसासियं संमयं बहुमयं अणुमयं भंडकरंडगसमाणं, मा णं सीयं मा णं उण्हं मा णं**

चोरा मा णं दंसा मा णं मसगा मा णं वाइयपित्तियसिंभियसंनिवाइय विविहा रोगायंका परिसहोवसग्गा फुसंतु' इदं=पुरतो वर्तमानं शरीरम् इष्टं=वल्लभम्, कान्तं=कमनीयम्, प्रियं=सदा प्रेमाऽऽस्पदम्, मनोज्ञं=सुन्दरम्, मनोऽमं=मनसाऽम्यते=प्राप्यते पुनः पुनः संस्मरणतो यत्तन्मनोऽमम्, प्रेयः=सर्वपदार्थेष्वतिशयेन प्रियमिति प्रेयः, अथवा कालान्तरनयनात्प्रेर्यम्, स्थैर्यं=स्थैर्यवत्–स्थिरम् इत्यर्थः, वैश्वासिकम्–विश्वासः प्रयोजनम्-अस्येति वैश्वासिकम्–प्राणिनां परशरीरमेव प्राचुर्येणाऽविश्वासहेतुः, निजशरीरं तु प्रतीतिपात्रमेव भवति, समत–तत्कृतकार्याणां सम्मतत्वात्, बहुमतं-बहुशो बहूनां वा मध्ये मतम्-इष्टं यत्तद्बहुमतम्, अनुमतं=वैगुण्यदर्शनेऽपि अनु=पश्चात्=मतम्-अनुमतम्, अतएव भाण्डकरण्डकसमानं-भाण्डानाम्=भूषणानां करण्डकसमानं–भूषणमञ्जूषातुल्यमुपादेयमित्यर्थः, एतादृशं शरीरं मा शीतं=शैत्यं स्पृशतु, मा-

**पिवासा मा णं वाला मा णं चोरा मा णं दंसा मा णं मसगा मा णं वाइयपित्तिय-सिंभियसंनिवाइय विविहा रोगायंका परीसहोवसग्गा फुसंतु)** यहां पर सर्वत्र "मा" शब्द निषेध अर्थ में, एवं "णं" शब्द वाक्यालंकार में प्रयुक्त हुआ समझना चाहिये। इष्ट–वल्लभ; कान्त–कमनीय, प्रिय–सदा प्रेमास्पद, मनोज्ञ–सुन्दर, मनोम–समस्त की अपेक्षा अत्यंत प्रिय, स्थैर्य–स्थिरतायुक्त, वैश्वासिक–पर शरीर की अपेक्षा जीवों को अपना शरीर अतिशय प्रीति का स्थान होता है इस अपेक्षा अतिशय प्रीतिका पात्र, शारीरिक कार्यों के संमत होने से संमत, बहुत करके अथवा बहुतों के मध्य में इष्ट होने से बहुमत, अनुमत–विगुणता के दिखने पर भी प्रेम का स्थानभूत, जिस प्रकार भूषणों का करंडक प्रिय

**समाणं मा णं सीयं मा णं उण्हं मा णं खुहा मा णं पिवासा मा णं वाला मा णं चोरा मा णं दंसा मा णं मसगा मा णं वाइयपित्तियसिंभियसनिवाइय विविहा रोगायंका परीसहोवसग्गा फुसंतु)** અહીં સર્વત્ર 'मा' શબ્દ નિષેધના અર્થમાં તેમજ 'णं' શબ્દ વાક્યાલંકારમાં વાપરેલો સમજવો જોઇએ. ઇષ્ટ–વલ્લભ, કાન્ત–કમનીય, પ્રિય–સદા પ્રેમાસ્પદ, મનોજ્ઞ–સુંદર, મનોમ–સમસ્તની અપેક્ષા અત્યંત પ્રિય, સ્થૈર્ય–સ્થિરતાયુક્ત, વૈશ્વાસિક–બીજાનાં શરીરની અપેક્ષાએ જીવોને પોતાનાં શરીર અતિશય પ્રીતિનું સ્થાન હોય છે–એ દૃષ્ટિએ અતિશય પ્રીતિને પાત્ર, શારીરિક કાર્યો માટે સંમત હોવાથી સંમત, ઘણું કરીને અથવા ઘણાઓની વચમાં ઇષ્ટ તેથી બહુમત, અનુમત–વિગુણતા જોવા છતાં પણ પ્રેમના સ્થાનભૂત, જે પ્રકારે ઘરેણાંનો કરંડીયો પ્રિય હોય છે તેવી રીતે પ્રિય હોવાને

खुहा मा णं पिवासा मा णं वाला मा णं चोरा मा णं मसगा मा णं वाइयपित्तियसिंभियसंनिवाइय विविहा रोगायंका परिसहोवसग्गा फुसंतु-त्ति कट्टु एयंपि णं चरमेहिं ऊसासणीसासेहिं वोसि-

शब्दो निषेधार्थः, 'णं' शब्दो वाक्यालङ्कारार्थः; शीत कर्तृ शरीरकर्मकं स्पर्शनं न करोतु, एवमेवोष्ण-क्षुधा-पिपासा-व्याल-चौर-दंश-मशक-वातिक-पैत्तिक-श्लैष्मिक-सान्निपातिकादयो विविधा रोगा-तङ्काः परीषहा उपसर्गाश्चैतच्छरीरं न स्पृशन्तु। अत्र व्यालाः=सर्पाः, रोगाः=महाव्याधयः, आतङ्काः=सद्योघातिनो रोगा एव, परीषहाः क्षुधादयो द्वाविंशतिः, उपसर्गाः=दिव्यादयः, अन्यत् सुगमम्। 'त्तिकट्टु' इति कृत्वा 'एयं पि णं चरमेहिं ऊसासणीसासेहिं वोसिरामि त्तिकट्टु' एतदपि खलु चरमैरुच्छ्वासनिःश्वासैर्व्युत्सृजामि--एतदपि शरीरं त्यजामि इति कृत्वा= इत्थं विचार्य 'संलेहणाझूसणाझूसिया' संलेखना-जूषणा-जुष्टाः-संलेखनायां=कषाय-

होता है उसी प्रकार से प्रिय होने कारण भाण्डकरण्डक के तुल्य (इमं) इस मेरे (सरीरं) शरीरको शीत स्पर्श न करे, उष्ण स्पर्श न करे, क्षुधा स्पर्श न करे, पिपासा स्पर्श न करे, व्याल-सर्प स्पर्श न करे, चोर उपद्रव न करे, दंस-डांस स्पर्श न करे, मशक-मच्छर स्पर्श न करे, वातसंबंधी, पित्तसंबंधी, कफसंबंधी, सन्निपातसंबंधी आदि विविध रोग-महाव्याधियां, आतंक-सद्य-प्राणहर रोग, परीषह-क्षुधाआदि एवं उपसर्ग-देवादिक कृत उपद्रव, कोई भी इस शरीर को स्पर्श न करे, (त्तिकट्टु) इस प्रकार की विचारधारा को (चरमेहिं ऊसासणीसासेहिं वोसिरामि) अब चरम उच्छ्वासनिश्वास तक छोड़ते है। (त्तिकट्टु) इस तरह करके (संलेहणाझूसणाझूसिया) संलेखना में-कषाय एवं शरीर के कृश करने में प्रीति से युक्त वे

કારણે ભાંડકરંડકના તુલ્ય (इमं) આ મારાં (सरीरं) શરીરને ઠંડી સ્પર્શ ન કરે, ગરમી સ્પર્શ ન કરે, ભૂખ સ્પર્શ ન કરે, તરસ સ્પર્શ ન કરે, વ્યાલ-સર્પ સ્પર્શ ન કરે, ચોર ઉપદ્રવ ન કરે, દંશ-ડાંસ સ્પર્શ ન કરે, મશક-મચ્છર સ્પર્શ ન કરે, વાતસંબંધી, પિત્તસંબંધી, કફસંબંધી, સન્નિપાત-સંબંધી આદિ વિવિધ રોગ-મહાવ્યાધિઓ, આતંક-તીવ્રપ્રાણહર રોગ, પરી-ષહ-ક્ષુધાઆદિ તેમજ ઉપસર્ગ-દેવાદિકકૃત ઉપદ્રવ, એવું કાંઈ પણ આ શરીરને સ્પર્શ ન કરે. (त्ति कट्टु) આ પ્રકારની વિચારધારાને (चरमेहिं ऊसासणीसासेहिं वोसिरामि) હવે ચરમ ઉચ્છ્વાસનિ:શ્વાસ સુધી છોડુ છું. (त्तिकट्टु) આવી રીતે કરીને (संलेहणाझूसणाझूसिया) સંલેખનામાં-કષાય તેમજ શરીરને કૃશ કરવામાં પ્રીતિથી યુક્ત, તે બધા (भत्तपाणपडियाइक्खिया) ભક્ત તેમજ

**रामि–त्ति कट्टु संलेहणाझूसणाझूसिया भत्तपाणपडियाइक्खिया पाओवगया कालं अणवकंखमाणा विहरंति ॥ सू० २६ ॥**

**मूलम्—तए णं ते परिव्वायगा बहूइं भत्ताइं अणसणाए छेदेंति, छेदित्ता आलोइयपडिक्कंता समाहिपत्ता कालमासे कालं**

---

शरीरकृशीकरणे या जोषणा=प्रीतिः तया जुष्टाः=सेविताः, '**भत्तपाणपडियाइक्खिया**' प्रत्याख्यातभक्तपानाः, '**पाओवगया**' पादपोपगताः=वृक्षवन्निष्पन्दतया स्थिताः, '**कालं अणवकंखमाणा**' कालमनवकाङ्क्षन्तः, केचिद् वेदनाविकला मरणमिच्छन्ति तेषां निषेधार्थमेतद्वाक्यम्, एवम्भूता विहरन्ति–अम्बडपरिव्राजकशिष्या इति ॥ सू० २६ ॥

**टीका**—'**तए णं ते परिव्वायगा**' इत्यादि । '**तए णं ते परिव्वायगा**' ततः खलु ते परिव्राजकाः–अम्बडशिष्याः कृतकायोत्सर्गाः–'**बहूइं भत्ताइं अणसणाए छेदेंति**' बहूनि भक्तानि अनशनेन छिन्दन्ति, '**छेदित्ता**' छित्वा '**आलोइयपडिकंता**' आलोचितप्रतिक्रान्ताः=गुरुजनस्य समीपे कृताऽऽलोचनाः, प्रतिक्रान्ताः–पापस्थानात्पश्चा-

---

सब के सब (**भत्तपाणपडियाइक्खिया**) भक्त एवं पान का प्रत्याख्यान करके (**पाओवगया**) वृक्ष की तरह निश्चेष्ट होकर (**कालं अणवकंखमाणा विहरंति**) मरने की इच्छा नहीं करते हुए स्थित हो गये ॥ सू० २६ ॥

'**तए णं ते परिव्वायगा**' इत्यादि ।

(**तए णं**) इसके बाद (**ते परिव्वायगा**) उन समस्त परिव्राजकोंने (**बहूइं भत्ताइं**) चारों प्रकार के आहार का (**अणसणाए**) अनशन द्वारा (**छेदेंति**) छेद कर दिया, (**छेदित्ता**) छेद करने के बाद (**आलोइयपडिकंता**) अपने अतिचारों की

---

पाननुं प्रत्याख्यान करीने (पाओवगया) वृक्षनी पेठे निश्चल थईने (कालं अणवकंखमाणा विहरंति) मरवानी ईच्छा नहीं करता स्थित थई गया. (सू. २६)

'तए णं ते परिव्वायगा' ईत्यादि.

(तए णं) त्यार पछी (ते परिव्वायगा) ते बधा परिव्राजकोए (बहूइं भत्ताइं) चारेय प्रकारना आहारना (अणसणाए) अनशन द्वारा (छेदेंति) छेद करी दीधो. (छेदित्ता) छेद करी दीधा पछी (आलोइयपडिकंता) पोताना अतिचारोनी आलोचना करी, पछी तेओ तेनाथी निवृत्त थया. (समाहिपत्ता)

किच्चा बंभलोए कप्पे देवत्ताए उववण्णा। तहिं तेसिं गई। दस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता, परलोगस्स आराहगा, सेसं तं चेव ॥ सू० २७ ॥

मूलम्—बहुजणे णं भंते ! अण्णमण्णस्स एवमाइ-

त्परावृत्ता', 'समाहिपत्ता' समाधिप्राप्ता'=उपशान्तहृदया', 'कालमासे कालं किच्चा' कालमासे काल कृत्वा, 'बंभलोए कप्पे देवत्ताए उववण्णा' ब्रह्मलोके कल्पे देवत्वेनोपपन्ना, देशविरतिफल त्वेषां परलोकाऽऽराधकत्वमेव। परिव्राजकक्रियाफलं ब्रह्मलोकगमनम्। 'तहिं तेसिं गई' तत्र तेषां गतिः, 'दस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता' दशसागरोपमाणि स्थितिः प्रज्ञप्ता, 'परलोगस्स आराहगा' परलोकस्याऽऽराधकाः सन्तीत्यर्थः, 'सेसं तं चेव' शेषं तदेव ॥ सू० २७ ॥

टीका—'बहुजणे ण भंते !' इत्यादि। बहुजनः=जनसमूहः खलु हे भदन्त !

आलोचना की, पश्चात् वे उनसे परावृत्त हुए। फिर (समाहिपत्ता) समाधि प्राप्त कर (कालमासे कालं किच्चा बंभलोए कप्पे देवत्ताए उववण्णा) काल–अवसर में काल करके ब्रह्मलोक कल्प में देव की पर्याय से उत्पन्न हुए। (तहिं तेसिं गई, दससागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता, परलोगस्स आराहगा, सेसं तं चेव) वहीं पर उनकी गति प्ररूपित करने में आई है। स्थिति इनकी १० सागर प्रमाण है। ये परलोक के नियम से आराधक कहे गये है। शेष पहिले की तरह समझना चाहिये ॥ सू. २७ ॥

'बहुजणे णं भंते' इत्यादि।

पुन गौतमस्वामी ने भक्तिपूर्वक प्रभु से पूछा कि (भंते) हे भगवन् ! (बहु-

અને સમાધિ પ્રાપ્ત કરીને (कालमासे कालं किच्चा बंभलोए कप्पे देवत्ताए उववण्णा) કાલ–અવસરે કાલ કરીને બ્રહ્મલોક કલ્પમાં દેવની પર્યાયથી ઉત્પન્ન થયા. (तहिं तेसिं गई, दससागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता, परलोगस्स आराहगा, सेसं तं चेव) ત્યાં જ તેમની ગતિ પ્રરૂપિત કરવામાં આવી છે તેમની સ્થિતિ ૧૦ સાગર પ્રમાણુ છે. તેઓને નિશ્ચિતરૂપથી પરલોકના આધારક કહેવામાં આવ્યા છે. બાકીનું અગાઉની પેઠે સમજી લેવું જોઈએ. (સૂ. ૨૭)

'बहुजणे णं भंते' ઇત્યાદિ.

વળી ગૌતમ સ્વામીએ ભક્તિપૂર્વક પ્રભુને પૂછ્યું કે (भंते !) હે ભગવન્ !

क्खइ एवं भासइ एवं पन्नवेइ एवं परूवेइ । एवं खलु अम्मडे परिव्वायए कंपिल्लपुरे णयरे घरसए आहारमाहारेइ, घरसए वसहिं उवेइ । से कहमेवं भंते ! एवं ॥ सू० २८ ॥

मूलम्—गोयमा ! जं णं से बहुजणे अण्णमण्णस्स

'अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ' अन्योन्यमेवमाख्याति=हे भगवन् ! जनसमूह. परस्परमित्थं वक्ति, 'एवं भासइ' एवं भाषते, 'एवं पन्नवेइ' एवं प्रज्ञापयति, 'एवं परूवेइ' एवं प्ररूपयति, 'एवं खलु अम्मडे परिव्वायए कंपिल्लपुरे णयरे' एवं खल्वम्बडः परिव्राजक' काम्पिल्यपुरे नगरे, 'घरसए आहारमाहारेइ' गृहशतादाहारमाहरति=भिक्षा गृह्णाति, 'घरसए वसहिं उवेइ' गृहशते वसतिमुपैति, 'से कहमेयं भंते एवं' तत् कथमेतद् भगवन् ! एवम्-इति भगवन्त प्रति शिष्यप्रश्न' ॥ सू० २८ ॥

टीका—भगवानाह-'गोयमा !' इत्यादि । 'जं णं से बहुजणे अण्णमण्ण-

जणे णं) बहुत से लोग (अण्णमण्णस्स) परस्पर जो (एवमाइक्खइ) इस प्रकार कहते हैं, (एवं भासइ) इस प्रकार भाषण करते है, (एवं पन्नवेइ) इस प्रकार अच्छी तरह ज्ञापित करते हैं, (एवं परूवेइ) इस प्रकार प्ररूपित करते है कि (एवं खलु अम्मडे परिव्वायए कंपिल्लपुरे णयरे घरसए आहारमाहारेइ) ये अम्बडपरिव्राजक कंपिल्लपुर नगर मे सौ घरों मे आहार करते है, एवं (घरसए वसहिं उवेइ) सौ घरों मे निवास करते हैं; (से) सो (भंते !) हे भदंत ! (कहमेयं) यह बात कैसे है ? ॥ सू० २८ ॥

'गोयमा ! जं णं से बहुजणे' इत्यादि ।

प्रभु गौतम के प्रश्न का उत्तर देते हुए कहते हे कि (गोयमा !) हे गौतम !

(बहुजणे णं) घणा લોકો (अण्णमण्णस्स) પરસ્પર જે (एवमाइक्खइ) આ પ્રકારે કહે છે, (एवं भासइ) આ પ્રકારે ભાષણ કરે છે, (एवं पन्नवेइ) આ પ્રકારે સારી રીતે જ્ઞાપિત કરે છે (જણાવે છે), (एवं परूवेइ) આ પ્રકારે પ્રરૂપિત કરે છે કે (एवं खलु अम्मडे परिव्वायए कंपिल्लपुरे णयरे घरसए आहार-माहारेइ) અમ્બડ પરિવ્રાજક કંપિલ્લપુર નગરમાં સો ઘરમાં આહાર કરે છે તેમજ (घरसए वसहिं उवेइ) સો ઘરોમાં નિવાસ કરે છે, (से) તો (भंते !) હે ભદન્ત ! (कहमेयं) આ વાત કેવી છે? (સૂ. ૨૮)

'गोयमा ! जं णं से बहुजणे' ઇત્યાદિ.

પ્રભુ ગૌતમના પ્રશ્નનો ઉત્તર આપતાં કહે છે કે (गोयमा !) હે

एवमाइक्खइ जाव एवं परूवेइ—एवं खलु अम्मडे परिव्वायए कंपिल्लपुरे जाव घरसए वसहिं उवेइ। सच्चे णं एसमट्ठे, अहंपि णं गोयमा! एवमाइक्खामि जाव एवं परूवेमि—एवं खलु अम्मडे परिव्वायए जाव वसहिं उवेइ ॥ सू० २९ ॥

स्स एवमाइक्खइ' हे गौतम! यत्खलु स बहुजनोऽन्योऽन्यम् एवमाख्याति, यावदेवं प्ररूपयति, 'एवं खलु अम्मडे परिव्वायए कंपिल्लपुरे जाव घरसए वसहिं उवेइ' एवं खल्वम्बडः परिव्राजकः काम्पिल्यपुरे यावद् गृहशते वसतिमुपैति—इति यत्त्वया पृच्छ्यते। 'सच्चे णं एसमट्ठे' सत्यः खल्वेषोऽर्थः। 'अहंपि णं गोयमा! एवमाइक्खामि' अहमपि खलु गौतम! एवमाख्यामि, 'जाव एवं परूवेमि' यावदेवं प्ररूपयामि=प्ररूपणां करोमि, 'एवं खलु अम्मडे परिव्वायए जाव वसहिं उवेइ' एवं खलु अम्बडः परिव्राजको यावद् वसतिमुपैति—गृहशताद् भिक्षां गृह्णाति, गृहशते वसतिं करोति, इति ॥ सू० २९ ॥

(जं) जो (से) वे (बहुजणे) बहुत से लोग (अण्णमण्णस्स) परस्पर दूसरे से (एवमाइक्खइ जाव परूवेइ) इस प्रकार कहते है यावत् इस प्रकार प्ररूपित करते है कि (एवं खलु अम्मडे परिव्वायए कंपिल्लपुरे) ये अम्बड परिव्राजक कंपिल्लपुर नगर में (जाव घरसए वसहिं उवेइ) सौ घरो में भिक्षा लेते है और सौ घरों में निवास करते हैं; सो (सच्चे णं एसमट्ठे) यह बात बिलकुल ठीक है। (अहं पि णं गोयमा! एवमाइक्खामि) गौतम! मै भी इसी तरह कहता हू (जाव एवं परूवेमि) यावत् इसी तरह प्ररूपित करता हूं कि (एवं खलु अम्मडे परिव्वायए जाव वसहिं उवेइ) ये अम्बड परिव्राजक सौ घरों मे आहार करते है और सौ घरों में निवास करते है ॥ सू० २९ ॥

ગૌતમ! (जं) જે (से) તેઓ (बहुजणे) ઘણા લોકો (अण्णमण्णस्स) પરસ્પર એક બીજાને (एवमाइक्खइ जाव परूवेइ) આ પ્રકારે કહે છે યાવત્ આ પ્રકારે પ્રરૂપિત કરે છે કે (एवं खलु अम्मडे परिव्वायए कंपिल्लपुरे) તે અમ્બડ પરિવ્રાજક કંપિલ્લપુર નગરમા (जाव घरसए वसहिं उवेइ) સો ઘરોથી ભિક્ષા લે છે અને સો ઘરોમા નિવાસ કરે છે તો (सच्चे णं एसमट्ठे) આ વાત બિલકુલ ઠીક છે. (अहंपि णं गोयमा! एवमाइक्खामि) ગૌતમ! હું પણ એજ રીતે કહુ છુ. (जाव एव परूवेमि) યાવત્ એવી જ રીતે પ્રરૂપિત કરૂં છું કે (एवं खलु अम्मडे परिव्वायए जाव वसहिं उवेइ) એ અમ્બડ પરિવ્રાજક સો ઘરોમા આહાર કરે છે અને સો ઘરોમાં નિવાસ કરે છે. (સૂ. ૨૯)

खओवसमेणं ईहावूहामग्गणगवेसणं करेमाणस्स वीरियलद्धी वेउव्वियलद्धी ओहिणाणलद्धी समुप्पण्णा। तए णं से अम्मडे परिव्वायगे तीए वीरियलद्धीए वेउव्वियलद्धीए ओहीणाणलद्धीए

खओवसमेणं' तदावरणीयानां=कर्मणां वीर्यवैक्रियलब्ध्यवधिज्ञानावरणीयानां क्षयोपशमेन, 'ईहा-वूहा-मग्गण-गवेसणं करेमाणस्स' ईहा-व्यूह-मार्गण-गवेषणं कुर्वतः-तत्र-ईहा=मतिज्ञानभेदः-नामजात्यादिविशेषकल्पनारहितसामान्यज्ञानोत्तरं विशेषनिश्चयार्थं विचारणा इत्यर्थः, व्यूह'=अपोह -सामान्यज्ञानोत्तरकालं विशेषनिश्चयार्थं विचारणायां प्रवृत्तायां तदनु गुणदोष-विचारणाजनितो निश्चयः। मार्गणं=जीवादिपदार्थस्य यथावस्थितस्वरूपान्वेषणम्, गवेषणं=मार्गणानन्तरमनुपलभ्यस्य जीवादिपदार्थस्य सर्वतः परिभावनम्, एषां समाहारस्तत् तथा, तत् कुर्वत' अम्बडस्य परिव्राजकस्येत्यन्वयः। 'वीरियलद्धी' वीर्यलब्धिः, 'वेउव्वियलद्धी' वैक्रियलब्धिः 'ओहिणाणलद्धी समुप्पण्णा' अवधिज्ञानलब्धिश्च समुत्पन्ना। 'तए णं

आवरण कर्मों के (खओवसमेणं) क्षयोपशम से (ईहा-वूहा-मग्गण-गवेसणं करेमाणस्स) ईहा-नाम एवं जात्यादिरूप कल्पना से रहित सामान्य ज्ञान के बाद विशेषरूप से निश्चय करने की चेष्टा-विचारधारा, व्यूह-सामान्य ज्ञान के बाद विशेष निश्चय के लिये विचारणा करने पर गुणदोष के विचार से होनेवाला निश्चय-अवायरूप ज्ञान, मार्गण-यथावस्थित जीवादिक पदार्थ के स्वरूपका अन्वेषण, एवं गवेषण-मार्गण के बाद अनुपलभ्य जीवादिक पदार्थों के सभी प्रकार से निर्णय करने की तरफ तत्परतारूप गवेषण (करेमाणस्स) करने से (वीरियलद्धी वेउव्वियलद्धी ओहिणाणलद्धी समुप्पण्णा) वीर्यलब्धि, वैक्रियलब्धि, तथा अवधिज्ञानलब्धि उत्पन्न हो गई। (तए णं से

આવરણ કર્મોના (खओवसमेणं) ક્ષયોપશમથી (ईहा-वूहा-मग्गण-गवेसणं करेमाणस्स) ઇહા-નામ તેમજ જાતિ આદિની કલ્પનાથી રહિત સામાન્ય જ્ઞાન થયા પછી વિશેષરૂપથી નિશ્ચય કરવાની ચેષ્ટા-વિચારધારા, વ્યૂહ-સામાન્યજ્ઞાન બાદ વિશેષ નિશ્ચય કરવા માટે વિચારણા કર્યા પછી ગુણદોષના વિચારથી થવાવાળા નિશ્ચય-અવાયરૂપ જ્ઞાન, માર્ગણ-યથાવસ્થિત જીવ-આદિક પદાર્થના સ્વરૂપનું અન્વેષણ, તેમજ ગવેષણ-માર્ગણ પછી અનુપલભ્ય જીવ આદિક પદાર્થોનો સર્વ પ્રકારથી નિર્ણય કરવાની તરફ તત્પરતારૂપ ગવેષણ (करेमाणस्स) કરવાથી (वीरियलद्धी वेउव्वियलद्धी ओहिणाणलद्धी समुप्पण्णा) વીર્યલબ્ધિ, વૈક્રિયલબ્ધિ, તથા અવધિજ્ઞાનલબ્ધિ

**समुप्पण्णाए जणविम्हावणहेउं कंपिल्लपुरे णयरे घरसए जाव वसहिं उवेइ। से तेणट्ठेणं गोयमा! एवं वुच्चइ-अम्मडे परिव्वायए कंपिल्लपुरे णयरे घरसए जाव वसहिं उवेइ ॥ सू० ३१ ॥**

से अम्मडे परिव्वायगे' ततः खलु स अम्बडः परिव्राजकः', 'तीए वीरियलद्धीए वेउव्वियलद्धीए ओहिणाणलद्धीए समुप्पण्णाए' तया वीर्यलब्ध्या वैक्रियलब्ध्याऽवधिज्ञानलब्ध्या च समुत्पन्नया 'जणविम्हावणहेउं' जनविस्मापनहेतोः, 'कंपिल्लपुरे णयरे घरसए जाव वसहिं उवेइ' काम्पिल्यपुरे नगरे गृहशते यावद्वसतिमुपैति, 'से तेणट्ठेणं गोयमा! एवं वुचइ' तत् तेनार्थेन गौतम! एवमुच्यते—' अम्मडे परिव्वायए कंपिल्लपुरे णयरे घरसए जाव वसहिं उवेइ' अम्बडः परिव्राजकः काम्पिल्यपुरे नगरे गृहशते यावद्वसतिमुपैति ॥ सू० ३१ ॥

अम्मडे परिव्वायगे तीए वीरियलद्धीए वेउव्वियलद्धीए ओहिणाणलद्धीए समुप्पणाए) इसके बाद उत्पन्न हुई उन वीर्यलब्धि, वैक्रियलब्धि एवं अवधिज्ञानलब्धि द्वारा यह (जणविम्हावणहेउं) मनुष्यों को आश्चर्यचकित करने के लिये (कंपिल्लपुरे णयरे घरसए जाव वसहिं उवेइ) कंपिल्ल नगर में सौ घरो से भिक्षा करता है, एवं उन्हीं मे विश्राम करता है। (से तेणट्ठेणं गोयमा! एवं वुचइ) इस आशय से, हे गौतम! मै ऐसा कहता हूं (अम्मडे परिव्वायए कंपिल्लपुरे णयरे घरसए जाव वसहिं उवेइ) कि अम्बड परिव्राजक कंपिल्लपुर नगर में सौ घरों में आहार करता है और सौ घरों में निवास करता है ॥ सू० ३१ ॥

ઉત્પન્ન થઈ. (तए णं से अम्मडे परिव्वायगे तीए वीरियलद्धीए वेउव्वियलद्धीए ओहिणाणलद्धीए समुप्पणाए) ત્યાર પછી ઉત્પન્ન થયેલી તે વીર્યલબ્ધિ, વૈક્રિયિકલબ્ધિ તેમજ અવધિજ્ઞાનલબ્ધિ દ્વારા એ (जणविम्हावणहेउं) મનુષ્યોને આશ્ચર્યચકિત કરવા માટે (कंपिल्लपुरे णयरे घरसए जाव वसहि उवेइ) કંપિલ્લપુરનગરમાં સો ઘરોથી ભિક્ષા કરે છે તેમજ તેમાં જ વિશ્રામ કરે છે, (से तेणट्ठेणं गोयमा! एवं वुच्चइ) આ આશયથી હે ગૌતમ! હું એમ કહું છું (अम्मडे परिव्वायए कंपिल्लपुरे घरसए जाव वसहि उवेइ) કે અમ્બડ પરિવ્રાજક કંપિલ્લપુર નગરમાં સો ઘરોમાં આહાર કરે છે અને સો ઘરોમાં નિવાસ કરે છે. (સૂ૦ ૩૧)

**मूलम्**—से केणट्टेणं भंते! एवं वुच्चइ–अम्मडे परिव्वायए जाव वसहिं उवेइ ॥ सू० ३० ॥

**मूलम्**—गोयमा! अम्मडस्स णं परिव्वायगस्स पगइभद्दयाए जाव विणीययाए छट्ठंछट्ठेणं अनिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं

---

टीका—पुनर्गौतमः पृच्छति–'**से केणट्टेणं**' इत्यादि। '**से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ**' तत् केनार्थेन हे भदन्त! एवमुच्यते–'**अम्मडे परिव्वायए जाव वसहिं उवेइ**' अम्बडः परिव्राजको यावद् वसतिमुपैति, गृहशतादभिक्षां करोति, गृहशते वसतिं स्वीकरोति, इति ॥ सू० ३० ॥

टीका—भगवानाह–'**गोयमा!**' इत्यादि। हे गौतम! '**अम्मडस्स णं परिव्वायगस्स पगइभद्दयाए**' अम्बडस्य खलु परिव्राजकस्य प्रकृतिभद्रतया–प्रकृतेः=स्वभावस्य भद्रतया=सरलतया '**जाव विणीययाए**' यावद्विनीततया–यावच्छब्दादिदं दृश्यं–प्रकृत्युपशान्ततया प्रकृतितनुक्रोधमानमायालोभतया मृदुमार्दवसम्पन्नतयाऽऽलीनतया इति,

---

'**से केणट्टेणं**' इत्यादि।

(**भंते**) हे भदन्त! (**से केणट्ठेणं एवं वुच्चइ**) आप यह किस आशय से कहते है कि–(**अम्मडे परिव्वायए जाव वसहिं उवेइ**) अम्बड परिव्राजक सौ घरों में आहार करते है और सौ घरो में निवास करते है ॥ सू. ३० ॥

'**गोयमा! अम्मडस्स णं**' इत्यादि।

(**गोयमा**) हे गौतम! यह अम्बड परिव्राजक (**पगइभद्दयाए जाव विणीययाए**) प्रकृति से भद्र है, अल्प क्रोध, मान, माया एवं लोभ–कषायवाला है, स्वभावतः

---

'से केणट्ठेणं' ઇત્યાદિ.

(भंते!) હે ભદન્ત! (से केणट्ठेणं एवं वुच्चइ) આપ એ કયા હેતુથી કહો છો કે—(अम्मडे परिव्वायए जाव वसहिं उवेइ) અમ્બડ પરિવ્રાજક સો ઘરમાં આહાર કરે છે અને સો ઘરમાં નિવાસ કરે છે? (સૂ. ૩૦)

'गोयमा! अम्मडस्स णं' ઇત્યાદિ.

(गोयमा!) હે ગૌતમ! આ અમ્બડ પરિવ્રાજક (पगइभद्दयाए जाव विणीययाए) પ્રકૃતિથી ભદ્ર છે, અલ્પ ક્રોધ, માન, માયા, તેમજ લોભ કષાયવાળા છે, સ્વભાવતઃ મૃદુ–માર્દવ ગુણથી યુક્ત છે, તથા અત્યંત વિનીત

उड्ढं बाहाओ पगिज्झिय २ सूराभिमुहस्स आयावणभूमीए आया-वेमाणस्स सुभेणं परिणामेणं पसत्थेहिं अज्झवसाणेहिं पसत्थाहिं लेसाहिं विसुज्झमाणीहिं अन्नया कयाइं तदावरणिज्जाणं कम्माणं

विनयशीलतया, 'छट्ठंछट्ठेण अनिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं' षष्ठषष्ठेन अनिक्षिप्तेन तपः-कर्मणा-मुहुर्दिनद्वयाऽनशनरूपेण अविश्रान्तेन तपोरूपेण कर्मणा, 'उड्ढं बाहाओ पगि-ज्झियर' ऊर्ध्वं बाहू प्रगृह्य२=बाहू ऊर्ध्वं कृत्वा 'सूराभिमुहस्स आयावणभूमीए आयावेमाणस्स' सूर्याभिमुखस्याऽऽतापनाभूमावातापयतः 'सुभेणं परिणामेणं' शुभेन परिणामेन=शुभ-रूपयाऽऽत्मपरिणत्या, 'पसत्थेहिं अज्झवसाणेहिं' प्रशस्तैरध्यवसानैः-उत्तममनोविशेषैः, 'पसत्थाहिं लेसाहिं विसुज्झमाणीहिं' प्रशस्ताभिर्लेश्याभि-र्विशुध्यमानाभिः 'अन्नया कयाइं' अन्यदा कदाचित् 'तदावरणिज्जाणं कम्माणं

मृदुमार्दव गुण से युक्त है, तथा अत्यंत विनीत भी है। (अनिक्खित्तेणं) तथा लगातार (छट्ठं छट्ठेणं तवोकम्मेणं) छठ छठ-वेला-की तपस्या करनेवाला है। एवं (उड्ढं बाहाओ पगिज्झियर) बाहुओं को ऊपर उठा कर, (सूराभिमुहस्स) सूर्य के सन्मुख (आयावणभूमीए आयावेमाणस्स) आतापना के योग्य प्रदेश मे आतापना लेता है। अतः (अम्मडस्स परिव्वायगस्स) इस अम्बड परिव्राजक को (सुभेणं परिणामेणं) शुभ परिणाम से-शुभरूप आत्मा की परिणति से, (पसत्थेहिं अज्झवसाणेहिं) प्रशस्त अध्यवसानों से-उत्तम विचारधाराओं से, (पसत्थाहिं लेस्साहिं विसुज्झमाणीहिं) प्रशस्त लेश्याओं की विशुद्धि होने से, (अण्णया कयाइं) किसी एक समय (तदावर-णिज्जाणं कम्माणं) तदावरणीय कर्मों-वीर्य के, वैक्रियलब्धि के एवं अवधि ज्ञान के

પણ છે. (अनिक्खित्तेणं) તથા લગાતાર (छट्ठंछट्ठेणं तवोकम्मेणं) છઠ છઠ-બેલા-ની તપસ્યા કરવાવાળા છે. તેમજ (उड्ढं बाहाओ पगिज्झियर) હાથને ઉંચા કરીને (सूराभिमुहस्स) સૂર્યની સન્મુખ (आयावणभूमीए आया-वेमाणस्स) આતાપનાને યોગ્ય પ્રદેશમા આતાપના લે છે આથી (अम्मडस्स परिव्वायगस्स) એ અમ્બડ પરિવ્રાજકને (सुभेणं परिणामेणं) શુભ પરિણામથી, શુભરૂપ આત્માની પરિણતિથી, (पसत्थेहिं अज्झवसाणेहि) પ્રશસ્ત અધ્યવ-સાનોથી-ઉત્તમ વિચારધારાઓથી, (पसत्थाहिं लेस्साहि विसुज्झमाणीहि) પ્રશસ્ત લેશ્યાઓની વિશુદ્ધિ થવાથી (अण्णया कयाइं) કોઈ એક સમય (तदावरणि-ज्जाणं कम्माणं) તદાવરણીય કર્મો-વીર્ય, વૈક્રિયલબ્ધિ અને અવધિજ્ઞાનના

मूलम्—अम्मडस्स णं परिव्वायगस्स थूलए पाणाइवाए पच्चक्खाए जावज्जीवाए जाव परिग्गहे, णवरं सव्वे मेहुणे पच्चक्खाए जावज्जीवाए ॥ सू० ३४ ॥

मूलम्—अम्मडस्स णं परिव्वायगस्स णो कप्पइ

---

टीका—'अम्मडस्स णं परिव्वायगस्स' इत्यादि। 'अम्मडस्स णं परिव्वायगस्स' अम्बडस्य खलु परिव्राजकस्य 'थूलए पाणाइवाए पच्चक्खाए जावज्जीवाए जाव-परिग्गहे' स्थूलः प्राणातिपातः प्रत्याख्यातो यावज्जीवम्, यावत्पदेन मृषावादः, अदत्तादानं च गृह्येते; परिग्रहश्च प्रत्याख्यातः, 'णवरं' नवरं 'सव्वे' सर्वं=सर्वविधं 'मेहुणे' मैथुनमपि 'पच्चक्खाए जावज्जीवाए' प्रत्याख्यातं यावज्जीवम् ॥ सू० ३४ ॥

टीका—'अम्मडस्स णं परिव्वायगस्स' इत्यादि। 'अम्मडस्स णं परि-

---

'अम्मडस्स णं परिव्वायगस्स' इत्यादि।

(अम्मडस्स णं परिव्वायगस्स) इस अम्बड परिव्राजक ने (थूलपाणाइवाए पच्चक्खाए जावज्जीवाए) स्थूल प्राणातिपात का यावज्जीव परित्याग किया है, (जाव परिग्गहे) इसी तरह स्थूल मृषावाद का, स्थूल अदत्तादान का, स्थूल परिग्रह का भी यावज्जीव परित्याग किया है। (णवरं) परंतु (सव्वे मेहुणे पच्चक्खाए जावज्जीवाए) स्थूलरूप से ही मैथुन का परित्याग नहीं किया है, किन्तु इसका तो उसने समस्त प्रकार से जीवनपर्यन्त परित्याग किया है ॥ सू. ३४ ॥

'अम्मडस्स णं परिव्वायगस्स' इत्यादि।

(अम्मडस्स णं परिव्वायगस्स) इस अम्बड परिव्राजक के लिये विहार करते

---

'अम्मडस्स णं परिव्वायगस्स' ઇત્યાદિ.

(अम्मडस्स णं परिव्वायगस्स) આ અમ્બડ પરિવ્રાજકે (थूलपाणाइवाए पच्चक्खाए जावज्जीवाए) સ્થૂલ પ્રાણાતિપાતનો યાવજ્જીવ પરિત્યાગ કર્યો છે. (जाव परिग्गहे) તેવી જ રીતે સ્થૂલ મૃષાવાદનો, સ્થૂલ અદત્તાદાનનો, સ્થૂલ પરિગ્રહનો પણ યાવજ્જીવ પરિત્યાગ કર્યો છે. (णवरं) પરંતુ (सव्वे मेहुणे पच्चक्खाए जावज्जीवाए) સ્થૂલરૂપથી જ મૈથુનનો પરિત્યાગ નથી કર્યો પરન્તુ તેનો તો તેમણે સમસ્ત પ્રકારથી જીવનપર્યન્ત પરિત્યાગ કર્યો છે. (સૂ૦ ૩૪)

"अम्मडस्स णं परिव्वायगस्स" ઇત્યાદિ.

(अम्मडस्स णं परिव्वायगस्स) આ અમ્બડ પરિવ્રાજકને માટે વિહાર

**अक्खसोयप्पमाणमेत्तंपि जलं सयराहं उत्तरित्तए, णण्णत्थ अद्धाणगमणेणं। अम्मडस्स णं णो कप्पइ सगडं वा एवं तं चेव भाणियव्वं णण्णत्थ एगाए गंगामट्टियाए। अम्मडस्स णं परिव्वायगस्स**

व्वायगस्स' अम्बडस्य खलु परिव्राजकस्य, 'णो कप्पइ अक्खसोयप्पमाणमेत्तंपि जलं सयराहं उत्तरित्तए' अक्षस्रोतःप्रमाणमात्रमपि—अक्षस्रोतः=चक्रधूःप्रवेशरन्ध्रं तदेव प्रमाणं तेन प्रमाणेन मात्रा=परिमाणम् अवगाहनतो यस्य तत्तथा तत्, चक्रस्य छिद्रपर्यन्तं जलमपि 'सयराहं' शीघ्रं, 'सयराहं' इतिदेशीयशब्दः, 'उत्तरित्तए' उत्तरीतुं नो कल्पते=तत्र प्रवेष्टुं न कल्पते, तस्मान्न्यूनपरिमाणं जलमुत्तरीतुं कल्पत इति भावः। 'णण्णत्थ अद्धाणगमणेणं' नाऽन्यत्राऽध्वगमनात्—अध्वगमनादन्यत्राऽयं निषेधः—अध्वगमने तु जलमुत्तरीतुं कल्पते, 'अम्मडस्स णं णो कप्पइ सगडं वा एवं तं चेव भाणियव्वं जाव' अम्बडस्य खलु नो कल्पते शकटं वा एव तदेव भणितव्यं यावत्, यावच्छब्देन 'संदमाणियं वा दुरूहित्ताणं गच्छित्तए'-इत्यारभ्य 'कुंकुमेण वा गायं अणुलिंपित्तए' इति पर्यन्तः पाठोऽस्यैवोत्तरार्धगताष्टादशसूत्रगतोऽनुसन्धेय इति। 'णण्णत्थ एगाए गंगामट्टियाए'

---

समय मार्ग मे (सयराहं) अकस्मात् (अक्खसोयप्पमाणमेत्तंपि) गाड़ी की धुरा प्रमाण जल आ जाय तो भी उसमें (उत्तरित्तए णो कप्पइ) उतरना नहीं कल्पता है। (णण्णत्थ अद्धाणगमणेणं) परंतु विहार करते हुए अन्य रास्ता नहीं हो तो बात अलग! (अम्मडस्स णं णो कप्पइ सगडं वा एवं तं चेव भाणियव्वं जाव) इसी तरह इस अम्बड परिव्राजक को शकट आदि पर चढना भी कल्पता नहीं है। यहां 'यावत्' शब्द से 'संदमाणियं वा दुरूहित्ता णं गमित्तए' यहां से लेकर 'कुंकुमेण वा गायं अणुलिंपित्तए' यहां तक का पाठ इसी आगम के उत्तरार्ध के अठारहवे सूत्र से समझ लेना

---

કરતી વખતે માર્ગમા (सयराहं) અકસ્માત (अक्खसोयप्पमाणमेत्तंपि) ગાડીના ધોંસરાના પ્રમાણુ જેટલું જલ આવી જાય તો પણ તેમાં (उत्तरित्तए णो कप्पइ) ઉતરવુ કલ્પતું નથી. (णण्णत्थ अद्धाणगमणेणं) પરંતુ વિહાર કરતાં કરતાં બીજો રસ્તો ન હોય તો વાત જુદી. (अम्मडस्स णं णो कप्पइ सगडं वा एवं तं चेव भाणियव्वं जाव) એવી રીતે તે અમ્બડ પરિવ્રાજકને શકટ (ગાડા) આદિ પર ચઢવું પણ કલ્પતું નથી. અહીં (यावत्) શબ્દથી 'संदमाणियं दुरूहित्ता णं गच्छित्तए' અહીંથી લઇને 'कुंकुमेण वा गायं अणुलिंपित्तए' અહીં સુધીનો પાઠ આ આગમના ઉત્તરાર્ધના અઢારમાં સૂત્રથી જાણી લેવો જોઇએ. (णण्णत्थ

मूलम्—पहू णं भंते ! अम्मडे परिव्वायए देवाणुप्पियाणं अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए ॥ सू० ३२ ॥

मूलम्—णो इणट्ठे समट्ठे गोयमा ! अम्मडे णं परि-

---

गौतमः पृच्छति-'पहू णं भंते' इत्यादि। 'भंते !' हे भदन्त ! 'अम्मडे परिव्वायए देवाणुप्पियाणं अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए' अम्बडः परिव्राजको देवानुप्रियाणामन्तिके मुण्डः=लुञ्चितकेशो भूत्वाऽगारादनगारितां=साधुत्वं प्रव्रजितुं=प्राप्तुं 'प्रभू णं' प्रभुः=समर्थः किम् ? 'णं' इति वाक्यालङ्कारे ॥ सू० ३२ ॥

टीका—भगवानाह-'णो इणट्ठे समट्ठे गोयमा !' इत्यादि। 'णो इणट्ठे समट्ठे गोयमा !' नाऽयमर्थः समर्थो गौतम ! 'अम्मडे णं परिव्वायए समणोवासए' अम्बडः खलु

---

'पहू णं भंते ! अम्मडे परिव्वायए' इत्यादि।

(भंते) हे भदन्त ! (अम्मडे परिव्वायए) यह अम्बड परिव्राजक (देवाणुप्पियाणं अंतिए) आप के पास (मुंडे भवित्ता) मुंडित होकर (अगाराओ) आगार अवस्था से (अणगारियं) अनगार अवस्था को (पव्वइत्तए) धारण करने के लिये (पहू णं) समर्थ है क्या ? ॥ सू० ३२ ॥

'णो इणट्ठे समट्ठे' इत्यादि।

प्रभु ने कहा-(गोयमा) हे गौतम ! (णो इणट्ठे समट्ठे) यह अर्थ समर्थ नहीं है। क्यों कि (अम्मडे णं परिव्वायए) यह अम्बड परिव्राजक (समणोवासए) श्रमणोपासक

---

'पहू णं भंते ! अम्मडे परिव्वायए' ઈત્યાદિ.

(भंते) હે ભદન્ત ! (अम्मडे परिव्वायए) આ અમ્બડ પરિવ્રાજક (देवाणुप्पियाणं अंतिए) આપની પાસે (मुंडे भवित्ता) મુંડિત થઇને (अगाराओ) અગાર અવસ્થાથી (अणगारियं) અનગાર અવસ્થાને (पव्वइत्तए) ધારણ કરવાને માટે (पहू णं) સમર્થ છે કે કેમ ? (સૂ૦ ૩૨)

"णो इणट्ठे समट्ठे" ઈત્યાદિ.

પ્રભુએ કહ્યું (गोयमा) હે ગૌતમ ! (णो इणट्ठे समट्ठे) આ અર્થ સમર્થ નથી. કેમકે (अम्मडे णं परिव्वायए) આ અમ્બડ પરિવ્રાજક (समणो-

**व्वायए समणोवासए अभिगयजीवाऽजीवे जाव अप्पाणं भावेमाणे विहरइ, णवरं ऊसियफलिहे अवंगुदुवारे चियत्तंतेउर-घरदारपवेसी एयं णं वुच्चइ ॥ सू० ३३ ॥**

परिव्राजक श्रमणोपासकः, '**अभिगयजीवाऽजीवे**' अभिगतजीवाऽजीव =जीवाजीवतत्त्वज्ञः, '**जाव**' यावत्—अत्र यावच्छब्दादिदं दृश्यम्—उपलब्धपुण्यपापः, आस्रवसंवरनिर्जरा-क्रियाऽधिकरणबन्धमोक्षकुशलः इति, '**अप्पाणं भावेमाणे**' आत्मानं भावयन् विहरति=विचरति। '**णवरं**'—अयमत्र विशेषः—'**ऊसियफलिहे**' उच्छ्रितस्फटिकः=स्फटिकराशिरिव निर्मलः, '**अवंगुदुवारे**' अपावृतद्वारः—'**अवंगु**' इतिदेशीयः शब्दः, उद्घाटितकपाट द्वारः—अतिधार्मिकतयाऽस्य प्रवेशकाले जनैः कपाट उद्घाट्यते इति भाव । '**चियत्तंतेउरघर-दारपवेसी**' त्यक्ताऽन्तःपुरगृहद्वारप्रवेशः—त्यक्तः=प्रीत्या जनैर्दत्तः अन्तःपुरगृहद्वारेषु प्रवेशो यस्य स तथा, अतिधार्मिकतया सर्वत्र प्रवेशोऽनाशङ्कनीय इति भावः। '**एयं णं वुच्चइ**' एवं खलूच्यते=एतादृशः सोऽम्बड उच्यते ॥ सू० ३३ ॥

होकर (**अभिगयजीवाजीवे जाव अप्पाणं भावेमाणे विहरइ**) जीव, अजीव, पुण्य, पाप, आस्रव, संवर, निर्जरा, बंध एवं मोक्ष इनका ज्ञाता होता हुआ अपनी आत्मा को भावित करता हुआ विचर रहा है। (**णवरं**) परन्तु (**एवं ण वुच्चइ**) इतना मैं अवश्य कहता हू कि यह अम्बड परिव्राजक (**ऊसियफलिहे**) स्फटिकमणि की राशि के समान निर्मल, (**अवंगुदुवारे**) जिसके लिये सभी के घरो का दरवाजा हर वख्त खुला रहता है, ऐसा है, और (**चियत्तंतेउरघरदारपवेसी**) यह विश्वस्त होने के कारण राजाके अन्तः-पुर में भी वे-रोकटोक आता जाता है ॥ सू० ३३ ॥

वासए) श्रमणोपासक थईने (अभिगयजीवाजीवे जाव अप्पाणं भावेमाणे विहरइ) જીવ, અજીવ, પુણ્ય, પાપ, આસ્રવ, સંવર, નિર્જરા તેમજ બંધ, મોક્ષ એના જ્ઞાતા થઈને પોતાના આત્માને ભાવિત કરતાં વિચરે છે. (णवरं) પરન્તુ (एवं णं वुच्चइ) એટલું તો હું અવશ્ય કહું છું કે આ અમ્બડ પરિવ્રાજક (ऊसियफलिहे) સ્ફટિકમણિની રાશિ (ઢગલાની)) પેઠે નિર્મલ (अवंगुदुवारे) જેના માટે બધાના ઘરના દરવાજા હર વખત ખુલ્લા રહે છે એવા છે, અને (चियत्ततेउरघरदारपवेसी) એ વિશ્વાસુ હોવાના કારણે રાજાના અંતઃપુરમા પણ કોઈ જાતની રોકટોક વિના આવે જાય છે. (સૂ૦ ૩૩)

**णो कप्पइ आहाकम्मिए वा उद्देसिए वा मीसजाए इ वा अज्झो-यरए इ वा पूइकम्मे इ वा कीयगडे इ वा पामिच्चे इ वा अणिसि-**

नान्यत्रैकस्या गङ्गामृत्तिकायाः—एका गङ्गामृत्तिका कल्पते ग्रहीतुमित्यर्थः। '**अम्मडस्स णं परिव्वायगस्स णो कप्पइ आहाकम्मिए वा**' अम्बडस्य खलु परिव्राजकस्य नो कल्पते— आधाकर्मिकं=षट्कायोपमर्दनपूर्वकं साध्वर्थकृतमशनादिकं वा. '**उद्देसिए वा**' औद्देशिकं= साधुमुद्दिश्य यत् कृतं तद् वा न कल्पते, '**मीसजाए इ वा**' मिश्रजातं—मिश्रेण=गृहस्थ- साध्वादिप्रणिधानलक्षणभावेन निष्पन्नं=पाकादिभावमुपगतं मिश्रजातमन्नाद्येव, तदपि न कल्पते, '**इ वा**' इति सर्वत्र वाक्यालङ्कारे, '**अज्झोयरए इ वा**' अध्यवरतम्=साध्वर्थम- धिकप्रक्षेपणेन निष्पादितम्, एतदप्यकल्पनीयम्, '**पूइकम्मे इ वा**' पूतिकर्म—आधाकर्माघ- विशुद्धलेशसपृक्तभक्तादि, तदपि न कल्पते, '**कीयगडे इ वा**' क्रीतकृतम्—क्रातं=क्रयणं—सा-

चाहिये। (**णण्णत्थ एगाए गंगामट्टियाए**) इसे सिर्फ एक गगा की मिट्टी ही कल्पित है। (**अम्मडस्स णं परिव्वायगस्स**) इस अम्बड परिव्राजक के लिये (**णो कप्पइ आहाकम्मिए वा उद्देसिए वा मीसजाए इ वा अज्झोयरए इ वा पूइकम्मे इ वा कीयगडे इ वा पामिच्चे इ वा अणिसिट्ठे इ वा अभिहडे इ वा**) षट्कायोपमर्दनपूर्वक साधु के निमित्त निष्पादित आधाकर्मिक एवं औद्देशिक—साधु के उद्देश्य करके बनाया गया अशनादिक ग्रहण करना परिवर्जित है। तथा मिश्रजात—साधु एवं गृहस्थ के उद्देश्य से तैयार किया गया अन्नादिक का भी ग्रहण करना निषिद्ध है। इन पदों में "इ" "वा" ये दोनों वर्ण वाक्यालंकार में प्रयुक्त हुए है। इसी तरह अध्यवरत—साधु के लिये अधिक मात्रा में बनाया गया आहार, पूतिकर्म—आधाकर्मिक आहार के अंश से मिश्रित

एगाए गंगामट्टियाए) તેને માટે માત્ર એક ગંગાની માટીજ કલ્પિત બતાવી છે. (अम्मडस्स णं परिव्वायगस्स) આ અંબડ પરિવ્રાજકને માટે (णो कप्पइ आहाकम्मिए वा उद्देसिए वा मीसजाए इ वा अज्झोयरए इ वा पूइकम्मे इ वा कीयगडे- इ वा पामिच्चे इ वा अणिसिट्ठे इ वा अभिहडे इ वा) ષટ્ (છ) કાયા ઉપમર્દનપૂર્વક સાધુને નિમિત્ત નિષ્પાદિત આધાકર્મિક તેમજ ઔદ્દેશિક—સાધુને ઉદ્દેશ્ય કરીને બનાવેલું અશન આદિક ગ્રહણ કરવું પરિવર્જિત છે. તથા મિશ્રજાત—સાધુ તેમજ ગૃહસ્થના ઉદ્દેશ્યથી તૈયાર કરેલાં અન્ન—આદિકનું ગ્રહણ કરવું પણ નિષિદ્ધ છે. આ પદોમાં 'इ' અને 'वा' એ બન્ને વર્ણ વાક્યાલંકારમાં વપરાયેલા છે. તેવી જ રીતે અધ્યવરત—સાધુને માટે અધિક માત્રામાં બનાવેલા આહાર, પૂતિકર્મ—આધાકર્મિક આહારના અંશથી મિશ્રિત આહાર, ક્રીતકૃત—

**ट्ठे इ वा अभिहडे इ वा ठइत्तए वा रइत्तए वा, कंतारभत्त इ वा दुब्भिक्खभत्ते इ वा गिलाणभत्ते इ वा वद्दलियाभत्ते इ वा पाहुण-**

स्वादिनिमित्तं तेन कृतं=निष्पादितम्, तदपि न कल्प्यम्। '**पामिच्चे इ वा**' प्रामित्यम्= यदन्नवस्त्रादिक साध्वर्थमुच्छिद्यानीयते तत् प्रामित्यम्। '**अणिसिट्टे इ वा**' अनिसृष्टम्- सर्वैं स्वामिभि साधवे दातु न निसृष्टं=नानुज्ञातं यत् तदनिसृष्टम्, यदा द्वित्राणां पुरुषाणां साधारणे आहारे एकोऽन्याननापृच्छ्य साधवे ददाति, तदा तदन्नमनिसृष्ट, तदपि न कल्पते। '**अभिहडे इ वा**' अभ्याहृतम्—साधु ममुखमानीतं न कल्पते। '**ठइत्तए वा**' स्थापितं—स्वनिमित्तं स्थापित न कल्पते। '**रइत्तए वा**' रचितम्—औद्देशिकभेद:, तच्च मोदकचूर्णादि पुनर्मोदकतया रचितं, तदपि न कल्यम्। '**कंतारभत्ते इ वा**' कान्तारभक्तम्— कान्तारम्=अरण्यम्—तत्समुल्लङ्घनार्थं नीयमानं भक्तम्। यद्वा अरण्ये भिक्षुकाणां निर्वाहाय यत् मस्क्रियते तत् कान्तारभक्तम्—तदप्यकल्पनीयम्। '**दुब्भिक्खभत्ते इ वा**' दुर्भिक्षभक्तमिति वा—दुर्भिक्षे भिक्षुकाणां कृते यत् सस्क्रियते तदप्यकल्पनीयम्। '**गिलाणभत्ते इ वा**' ग्लान-

आहार, क्रीतकृत—मोल लाकर दिया गया आहार, प्रामित्य-उधार लेकर अथवा किसी दूसरे से झपट कर दिया हुआ आहार, अनिसृष्ट—जिस आहार के ऊपर अनेक का स्वामित्व है उन सभी को पूछे विना सिर्फ एक के द्वारा दिया गया आहार, अभ्याहृत—साधु के ममुख लाकर दिया गया आहार, स्थापित—साधु के निमित्त रखा हुआ आहार, रचित—मोदकचूर्ण आदि को फोडकर पुनः मोदकरूप में बनाया गया आहार, कान्तारभक्त—अटवी को उल्लंघन करने के लिये घर से लाया हुआ पाथेयस्वरूप आहार, अथवा जंगल में भिक्षुकों के निर्वाह के लिये तैयार करवाया गया आहार, दुर्भिक्षभक्त—दुर्भिक्ष के समय भिक्षुकों को देने के लिये बनवाया गया आहार, ग्लानभक्त—रोगी के लिये बनाया गया आहार, वार्दलिका-

वेचातो लईने दीधेलो आहार, प्रामित्य—उधार लईने अथवा कोई बीजा पासेथी झुटवी लइने दीधेलो आहार, अनिसृष्ट—जे आहारना उपर अनेकनु स्वामित्व होय एवा बधाने पूछया विना मात्र एकना द्वारा अपायेलो आहार, अभ्याहृत-साधुनी सामे लई आवीने आपेलो आहार, स्थापित—साधुना निमित्ते राखी मुकेलो आहार, रचित लाडुने तोडीने भूका करी पछी ते भूकामांथी लाडु-रूपमा बनावेलो आहार, कान्तारभक्त—अटवीने उल्लंघन करवा माटे घरथी लावी राखेलो पाथेयस्वरूप आहार, अथवा जंगलमा भिक्षुकोना निर्वाहने माटे तैयार करावेलो आहार, दुर्भिक्षभक्त—दुष्काळ ना समयमा भिक्षुकोने देवा माटे बनावेलो आहार, ग्लानभक्त—रोगीने माटे बनावेलो

**गभत्ते इ वा भोत्तए वा पाइत्तए वा। अम्मडस्स णं परिव्वायगस्स णो कप्पइ मूलभोयणे वा जाव बीयभोयणे वा भोत्तए वा पाइत्तए वा ॥ सू० ३५ ॥**

---

भक्तम्-ग्लानः सन् निजाऽऽरोग्याय यत्प्रदीयते तद्-ग्लानभक्तम्, '**वद्दलियाभत्ते इ वा**' वार्दलिकाभक्तम्-वृष्टौ यद्दातुं क्रियते एतदप्यकल्प्यम्। '**पाहुणगभत्ते इ वा**' प्राघुणकभक्तम्-प्राघुणकः=कोऽपि कस्य चिद् गृहे समागतः तस्य कृते यत् क्रियते तत् प्राघुणकभक्तम्, एतदप्यकल्पनीयम्। एतत्पूर्वोक्तम्-'**भोत्तए वा पाइत्तए वा**' भोक्तुं वा पातुं वा न कल्पते इत्युक्तमेव। '**अम्मडस्स णं परिव्वायगस्स णो कप्पइ मूलभोयणे वा जाव बीयभोयणे वा भोत्तए वा पाइत्तए वा**' अम्बडस्य खलु परिव्राजकस्य न कल्पते मूलभोजनं वा यावद् बीजभोजनं वा भोक्तुं वा पातुं वा-मूलानि कमलादीनां, यावच्छब्दात्कन्दभोजन फलभोजनं हरितभोजनमेतानि त्रीणि पदानि गृह्यन्ते, तत्र-कन्दाः=सूरणादय', फलानि=आम्रफलादीनि, हरितानि=मधुरतृणादीनि, बीजानि=शाल्यादीनि, एतानि भोक्तुं न कल्पन्ते, तथा-आधाकर्मादिपानकानि पातुं न कल्पन्ते इति ॥ सू. ३५ ॥

---

भक्त-वृष्टि में देने के लिये बनाया गया आहार, प्राघुणकभक्त-पाहुनों के लिये रांधा गया आहार, उस अम्बड परिव्राजक के लिये नहीं कल्पता है, और इसी प्रकार का पेय भी उसे नहीं कल्पता है। (**अम्मडस्स णं परिव्वायगस्स णो कप्पइ मूलभोयणे वा जाव वीयभोयणे वा भोत्तए वा पाइत्तए वा**) इसी प्रकार इस अम्बड परिव्राजक के लिये कमलादिकों के मूल, सूरणादिक कन्द, आम्र आदि फल का भोजन एव अपक्व शाल्यादिक एवं मधुर तृण आदि हरित सचित्त वस्तु का भोजन भी अकल्पित है ॥ सू. ३५ ॥

---

આહાર, વાર્દલિકાભક્ત-વૃષ્ટિમાં દેવા માટે બનાવેલો આહાર, પ્રાઘુણકભક્ત-પરોણાઓને માટે રંધાવવામાં આવેલો આહાર તે અમ્બડ પરિવ્રાજકને માટે નથી કલ્પતો, અને આવા પ્રકારનું પેય પણ તેને નથી કલ્પતું. (अम्मडस्स णं परिव्वायगस्स णो कप्पइ मूलभोयणे वा जाव बीयभोयणे वा भोत्तए वा पाइत्तए वा) આ પ્રકારે એ અમ્બડ પરિવ્રાજકને માટે કમળ આદિકનાં મૂળ, સૂરણ આદિક કંદ, આમ્ર આદિક ફળનું ભોજન તેમજ અપક્વ શાલિ આદિક તેમજ મધુર તૃણ આદિ લીલી સચિત્ત વસ્તુનું ભોજન પણ અકલ્પિત છે. (સૂ. ૩૫)

**मूलम्**—अम्मडस्स णं परिव्वायगस्स चउव्विहे अणट्ठादंडे पच्चक्खाए जावज्जीवाए; तं जहा—अवज्झाणायरिए पमायायरिए हिंसप्पयाणे पावकम्मोवएसे ॥ सू० ३६ ॥

टीका—'अम्मडस्स णं' इत्यादि।

'**अम्मडस्स णं परिव्वायगस्स**' अम्बडस्य खलु परिव्राजकस्य '**चउव्विहे अणट्ठादंडे पच्चक्खाए जावज्जीवाए**' चतुर्विधः अनर्थदण्डः—अर्थः=प्रयोजनं गृहस्थस्य क्षेत्रवास्तुधनधान्यं शरीरपरिपालनादिविषयं—तदर्थं आरम्भो=भूतोपमर्दोऽर्थदण्डः। दण्डो निग्रहो यातना विनाश इति पर्यायाः। अर्थेन=प्रयोजनेन दण्डोऽर्थदण्डः, स चैवंभूत उपमर्दनलक्षणो दण्डः क्षेत्रादिप्रयोजनमपेक्षमाणोऽर्थदण्ड उच्यते, तद्विपरीतोऽनर्थदण्डः प्रत्याख्यातो यावज्जीवम्। अयमनर्थदण्डः किंस्वरूपः? इति बोधयितुमाह—'**तं जहा**' तद्यथा—'**अवज्झाणायरिए**' अपध्यानाऽऽचरितः—अपध्यानम्=आर्तरौद्ररूपं, तेनाचरितः=आसेवितो योऽनर्थदण्डः स तथा। '**पमायायरिए**' प्रमादाऽऽचरितः—प्रमादेन=मद्यविषय-

'**अम्मडस्स णं परिव्वायगस्स**' इत्यादि।

(**अम्मडस्स णं परिव्वायगस्स**) इस अम्बड परिव्राजक के (**चउव्विहे**) चारों प्रकार के (**अणट्ठादंडे**) अनर्थ दंडों को (**जावज्जीवाए पच्चक्खाए**) जीवनपर्यन्त परित्याग है। वे चार अनर्थदंड इस प्रकार हैं—(**अवज्झाणायरिए पमायायरिए हिंसप्पयाणे पावकम्मोवएसे**) अपध्यानाचरित, प्रमादाचरित, हिंसाप्रदान, एव पापकर्मोपदेश। विना प्रयोजन जीवो का उपमर्दन जिन कार्यों के करने से होता है उसका नाम अनर्थदंड है। आर्त्तरौद्ररूप ध्यान का नाम अपध्यान है। इस ध्यानसे उद्भूत अथवा क्रियमाण दंड का नाम अपध्यानाचरित अनर्थ दंड है। मद्य, विषय, कषाय, निद्रा एव विकथारूप प्रमाद से

"अम्मडस्स णं परिव्वायगस्स" ઇત્યાદિ.

(अम्मडस्स णं परिव्वायगस्स) આ અમ્બડ પરિવ્રાજકને (चउव्विहे) ચારેય પ્રકારના (अणट्ठादंडे) અનર્થ દંડોનો (जावज्जीवाए पच्चक्खाए) જીવનપર્યન્ત પરિત્યાગ છે. એ ચાર અનર્થદંડ આ પ્રકારના છે. (अवज्झाणायरिए पमायायरिए हिंसप्पयाणे पावकम्मोवएसे) અપધ્યાનાચરિત, પ્રમાદાચરિત, હિંસાપ્રદાન—હિંસાકારક શસ્ત્ર કોઇને દેવુ, તેમજ પાપકર્મનો ઉપદેશ. વિના પ્રયોજન જીવોનુ ઉપમર્દન જે કાર્યો કરવાથી થાય તેનુ નામ અનર્થદંડ છે. આર્ત—રૌદ્રરૂપ ધ્યાનનુ નામ અપધ્યાન છે. આ ધ્યાનથી ઉદ્‌ભવેલા અથવા થનારા દંડનું નામ અપધ્યાનાચરિત—અનર્થદંડ છે. મદ્ય, વિષય, કષાય, નિંદ્રા તેમજ

**मूलम्—अम्मडस्स णं परिव्वायगस्स कप्पइ मागहए अद्धाढए जलस्स परिग्गाहित्तए, से वि य वहमाणए णो चेव**

कषायनिद्राविकथालक्षणेन आचरित' '**हिंसप्पयाणे**' हिंसाप्रदानम्—हिंसाहेतुत्वादग्निविष-शस्त्रादिकं हिंसोच्यते, कारणे कार्योपचारात्, तत्प्रदानमन्यस्मै क्रोधाभिभूताय अनभिभूताय वा। यद्वा—हिंस्रप्रदानमितिच्छाया—हिंस्रं=हिंसाकारि शस्त्रादिं, तत्प्रदानं=परेषां समर्पणम्, अयं तृतीयोऽनर्थदण्ड', '**पावकम्मोवएसे**' पापकर्मोपदेश'—पातयति नरकादाविति पापम्, तत्प्रधानं कर्म पापकर्म, तस्योपदेश', कृष्यादिसावद्यव्यापारे प्रवर्तनम्, अयं चतुर्थः ॥ सू० ३६ ॥

**टीका**—'**अम्मडस्स**' इत्यादि।

'**अम्मडस्स णं परिव्वायगस्स कप्पइ**' अम्मडस्य खलु परिव्राजकस्य कल्पते '**मागहए अद्धाढए जलस्स परिग्गाहित्तए**' मागधमर्धाढक जलस्य परिग्रहीतुम्, '**से वि य**

किये गये कार्य का नाम प्रमादाचरित अनर्थदंड है। हिंसा के हेतु होने से अग्नि, विष एवं शस्त्र आदि, कारण में कार्य के उपचार से हिंसास्वरूप कहे गये है। इन हिंसा के कारणों को किसी क्रोधयुक्त व्यक्ति के लिये अथवा क्रोधरहित व्यक्ति के लिये देना सो हिंसाप्रदान नाम का अनर्थदंड है। आत्मा को जो नरक में डाले उसका नाम पाप है, इस पापप्रधान कर्म करने का उपदेश देना अथवा स्वयं भी कृष्यादि सावद्यरूप व्यापार में प्रवृत्ति करना सो पापोपदेश नामका अनर्थदंड है ॥ सू ३६ ॥

'**अम्मडस्स णं परिव्वायगस्स**' इत्यादि।

(**अम्मडस्स णं परिव्वायगस्स**) इस अम्बड परिव्राजक को (**मागहए अद्धाढए**) मगधदेश प्रसिद्ध अर्ध—आढक—प्रमाण (**जलस्स परिग्गाहित्तए कप्पइ**) जल

विકથારૂપ પ્રમાદથી આચરેલાં-કરેલા કાર્યનું નામ પ્રમાદાચરિત-અનર્થદંડ છે. હિંસાના હેતુ થાય તેવા અગ્નિ, વિષ તેમજ શસ્ત્ર આદિ, કારણમા કાર્યનો ઉપચાર થવાથી હિંસાસ્વરૂપ કહેવાય છે. આ હિંસાના કારણોને કોઈ ક્રોધાયમાન વ્યક્તિને કે વિના ક્રોધવાળા વ્યક્તિને માટે આપવાં તે હિંસાપ્રદાન નામનો અનર્થદંડ છે. આત્માને જે નરકમાં નાખે તેનું નામ પાપ છે. આ પાપપ્રધાન કર્મ કરવાનો ઉપદેશ દેવો અથવા પોતે પણ કૃષિ આદિ સાવદ્યરૂપ વ્યાપારમા પ્રવૃત્તિ કરવી તે પાપોપદેશ નામનો અનર્થદંડ છે. (સૂ. ૩૬)

'अम्मडस्स णं परिव्वायगस्स' ઇત્યાદિ.

(अम्मडस्स णं परिव्वायगस्स) આ અંબડ પરિવ્રાજકે (मागहए अद्धाढए) મગધદેશપ્રસિદ્ધ અર્ધઆઢક પ્રમાણ (जलस्स परिग्गाहित्तए कप्पइ)

णं अवहमाणए, एवं थिमिए पसन्ने जाव से वि य परिपूए णो चेव णं अपरिपूए, से वि य सावज्जे त्ति काउं णो चेव णं अणवज्जे, से वि य जीवत्ति काउं णो चेव णं अजीवे, से वि

वहमाणए णो चेव णं अवहमाणए' तदपि च वहमानं नो चैव खलु अवहमानम्, 'एवं थिमिए पसन्ने जाव' एव स्तिमितं प्रसन्नं यावत् 'से वि य परिपूए णो चेव णं अपरिपूए' तदपि च परिपूतं नो चैव खलु अपरिपूतम्, कस्मात् कारणात् परिपूतं गृह्णातीत्यत आह—'से वि य सावज्जे त्ति काउं' तदपि च सावद्यमिति कृत्वा—इति। इदं जलं सावद्यमस्तीति ज्ञात्वा वस्त्रगालितं कृत्वा गृह्णातीति भाव। 'णो चेव णं अणवज्जे' न चैव खलु अनवद्यम्—न तु निरवद्यमिति कृत्वा परिपूत करोति। सावद्यमित्यपि कथं ज्ञातम्? इत्यत आह—'से वि य जीवत्ति काउ' तदपि च जीवा इति कृत्वा, इह पुतरकादिजीवा' सन्तीति कृत्वेति भाव', 'णो चेव णं अजीवे त्ति काउं' नो चैव खलु अजीवं=जीवरहितम् इति कृत्वा, 'से वि य दिण्णे णो चेव णं अदिण्णे' तदपि च दत्तं नो चैव खल्वदत्तम्,

ग्रहण करना कल्पता है। (से वि य वहमाणए णो चेव णं अवहमाणए) जितना अर्ध—आढक—प्रमाण जल लेना इसे कल्पता है सो भी बहता हुआ ही कल्पता है, अबहता हुआ नहीं। (एवं थिमिए पसन्ने जाव से वि य परिपूए णो चेव णं अपरिपूए) वह भी कर्दम से रहित, स्वच्छ, प्रसन्न—निर्मल यावत् परिपूत—छाना हुआ ही कल्पता है, इससे विपरीत नहीं। (से वि य सावज्जेत्ति काउं णो चेव णं अणवज्जे) सोभी सावद्य समझ कर छाना हुआ ही कल्पता है, निरवद्य समझ कर नहीं। (से वि य जीवत्ति काउं णो चेव णं अजीवे) सावद्य भी उसे वह जीवसहित समझकर ही मानता है, अजीव समझकर नहीं। (से वि य दिण्णे णो चेव णं अदिण्णे)

જલ ગ્રહણ કરવું કલ્પે છે (से वि य वहमाणए णो चेव णं अवहमाणए) જેટલું અર્ધઆઢક પ્રમાણ જલ લેવું તેને કલ્પે છે તે પણ વહેતું હોય તેવું જ કલ્પે છે, ન વહેતું હોય તે નહિ. (एवं थिमिए पसन्ने जाव से वि य परिपूए णो चेव णं अपरिपूए) તે પણ કર્દમ (કચરા)થી રહિત, સ્વચ્છ, પ્રસન્ન-નિર્મળ યાવત્ પરિપૂત—ગાળેલું જ કલ્પે છે, તે વિનાનું નહિ (તેનાથી ઉલટુ નથી કલ્પતુ). (से वि य सावज्जेत्ति काउं णो चेव णं अणवज्जे) તે પણ સાવદ્ય સમજીને ગાળેલુ જ કલ્પે છે, નિરવદ્ય સમજીને નહિ. (से वि य जीवत्ति काउं णो चेव णं अजीवे) સાવદ્ય પણ તેને તે જીવસહિત સમજીને જ માને છે, અજીવ સમજીને નહિ. (से वि य दिण्णे णो चेव णं अदिण्णे) તે પણ કોઈએ આપેલું હોય તે જ કલ્પે છે. દીધા વગરનું નહિ. (से वि

य दिण्णे णो चेव णं अदिण्णे, से वि य हत्थ-पाय-चरु-चमस-पक्खालणट्ठयाए पिवित्तए वा, णो चेव णं सिणाइत्तए। अम्मडस्स णं परिव्वायगस्स कप्पइ मागहए य आढए जलस्स पडिग्गाहित्तए, से वि य वहमाणए जाव णो चेव णं अदिण्णे,

'से वि य हत्थ-पाय-चरु-चमस-पक्खालणट्ठयाए पिवित्तए वा' तदपि च हस्त-पाद-चरु-चमस-प्रक्षालनार्थाय पातुं वा, चरुः पात्रविशेष, 'णो चेव णं सिणाइत्तए' नो चैव खलु स्नातुम्। 'अम्मडस्स णं परिव्वायगस्स कप्पइ' अम्बडस्य खलु परिव्राजकस्य कल्पते 'मागहए य आढए जलस्स पडिग्गाहित्तए' मागधं चाढकं जलस्य प्रतिग्रहीतुम्, 'से वि य वहमाणए जाव णो चेव णं अदिण्णे' तदपि वहमानं यावत् नो चैव खल्वदत्तम्, 'से वि य सिणाइत्तए' तदपि च स्नातुम्, 'णो चेव णं हत्थ-पाय-चरु-चमस-

वह भी दिया हुआ ही कल्पता है, विना दिया हुआ नही। (से वि य हत्थ-पाय-चरु-चमस-पक्खालणट्ठयाए पिवित्तए वा) दिया हुआ भी वह जल हस्त, पाद, चरु (पात्र विशेष) एवं चमस के प्रक्षालन के लिये अथवा पीने के लिये ही कल्पता है, (णो सिणाइत्तए) स्नान के लिये नहीं। (अम्मडस्स णं परिव्वायगस्स कप्पइ मागहए य आढए जलस्स पडिग्गाहित्तए) इस अम्बड परिव्राजक को मगधदेशसंबंधी आढकप्रमाण जल ग्रहण करना कल्पता है (से वि य वहमाणए जाव णो चेव णं अदिण्णे) वह भी वहता हुआ यावत् दिया हुआ ही कल्पता है, विना दिया हुआ नहीं। (से वि य सिणाइत्तए णो चेव णं हत्थ-पाय-चरु-चमस-पक्खालणट्ठयाए) वह भी स्नान के लिये

य हत्थ-पाय-चरु-चमस-पक्खालणट्ठयाए पिवित्तए वा) दीधेलुं होय ते पण पाणी, हाथ पग, चरु, तेमज चमसने धोवा माटे अथवा पीवा माटे ज कल्पे छे. (चरु, चमस ए पात्रविशेषना नामो छे.) (णो सिणाइत्तए) स्नान माटे नहि. (अम्मडस्स णं परिव्वायगस्स कप्पइ मागहए य आढए जलस्स पडिग्गाहित्तए) आ अंबड परिव्राजकने मगधदेश-संबंधी आढकप्रमाण जल ग्रहण करवुं कल्पे छे. (से वि य वहमाणए जाव णो चेव णं अदिण्णे) ते पण वहेतुं होय तेज कल्पे छे, (यावत्) आपेलुं होय ते कल्पे छे आपेलुं न होय तेवुं नहि. (से वि य सिणाइत्तए णो चेव णं हत्थ-पाय-चरु-चमस-पक्खालणट्ठयाए) ते पण स्नान माटे ज कल्पे छे.

से वि य सिणाइत्तए, णो चेव णं हत्थ-पाय-चरु-चमस-पक्खालणट्ठयाए पिबित्तए वा ॥ सू० ३७ ॥

मूलम्—अम्मडस्स णो कप्पइ–अण्णउत्थिया वा अण्णउत्थियदेवयाणि वा अण्णउत्थियपरिग्गहियाणि वा चेइयाइं

पक्खालणट्ठयाए पिवित्तए वा' नो चैव खलु हस्त–पाद–चरु–चमस–प्रक्षालनाऽर्थं पातु वा, शेषपदव्याख्याऽस्यैवागमस्योत्तरार्धे एकोनविंशतितमे सूत्रे प्रदर्शिता, अत्र सूत्रे जलस्य परिमाणं प्रदर्शितमस्ति ॥ सू ३७ ॥

टीका—'अम्मडस्स णो कप्पइ' इत्यादि।

'अम्मडस्स णो कप्पइ' अम्बडस्य न कल्पते, अस्य 'वन्दितुम्' इत्यत्रान्वयः। कान् वन्दितुं न कल्पते? अत्राऽऽह–'अण्णउत्थिया वा' अन्ययूथिकान् वा–अन्यत्=तीर्थकरसघापेक्षया भिन्नं यद् यूथं=सघस्तदन्ययूथं तदस्त्येषामित्यन्ययूथिका=शाक्यादिभिक्षवः तान्, 'अण्णउत्थियदेवयाणि वा' अन्ययूथिकदैवतानि वा–अन्ययूथिकानां दैवतानि अन्ययूथिकदैवतानि–अर्हद्भिन्नान् देवान वा, 'अण्णउत्थियपरिग्गहियाणि वा चेइयाइं'

ही कल्पता है, हाथ, पैर, चरु एवं चमचा को धोने के लिये नहीं, और न पीने के लिये ही। 'आढक' आदि का अर्थ इसी आगम के उत्तरार्ध मे उन्नीसवे सूत्र की व्याख्या मे प्रदर्शित किया गया है ॥ सू. ३७ ॥

'अम्मडस्स णो कप्पइ' इत्यादि।

(अम्मडस्स) इस अम्बड को (अण्णउत्थिया) अन्ययूथिक–तीर्थकरसघ की अपेक्षा शाक्यादिक भिक्षुओं का सघ, एवं (अण्णउत्थियदेवयाणि वा) अन्यसघ द्वारा उपास्यरूप से ममत अर्हंत–प्रभु सिवाय दूसरे देवता, (अण्णउत्थियपरिग्गहिया-

હાથ, પગ, ચરુ તેમજ ચમચા ધોવા માટે નહિ અને પીવા માટે પણ નહિ 'આઢક' આદિનો અર્થ એજ આગમના ઉત્તરાર્ધમા ઓગણુવીશમા સૂત્રની વ્યાખ્યામા કરવામા આવ્યો છે. (સૂ. ૩૭)

'अम्मडस्स णो कप्पइ' ઈત્યાદિ.

(अम्मडस्स) એ અમ્બડને (अण्णउत्थिया) બીજા યૂથવાળા–તીર્થંકરસઘની અપેક્ષા શાકય ભિક્ષુઓના સંઘ, તેમજ (अण्णउत्थियदेवयाणि वा) બીજા સંઘ દ્વારા ઉપાસ્યરૂપથી સમત અર્હંત પ્રભુ સિવાય બીજા દેવ, (अण्ण-उत्थियपरिग्गहियाणि वा चेइयाइं) તથા બીજા યૂથમા ભળી ગયેલા જૈન સાધુ

**वंदित्तए वा णमंसित्तए वा जाव पज्जुवासित्तए वा, णण्णत्थ अरिहंते वा अरिहंतचेइयाइं वा ॥ सू० ३८ ॥**

**मूलम्---अम्मडे णं भंते ! परिव्वायए कालमासे कालं**

अन्ययूथिकपरिगृहीतान् वा चैत्यान्, आर्षत्वात् क्लीवनिर्देशः, चितिः=ज्ञानं, तत्र साधवः= कुशलाः चित्याः=अर्हत्साधवः, त एव चैत्याः, प्रज्ञादित्वात् स्वार्थेऽण्; तान्, अयमत्र पिण्डितोऽर्थः, तैर्थिकान्तरसाधून् वा तैर्थिकान्तरदेवान् वा, यथाकथंचित्तैर्थिकान्तरसमिलितान् जिनसाधून् वा '**वंदित्तए वा**' वन्दितुं=स्तोतुं वा, '**णमंसित्तए वा**' नमस्यितुं=नमस्कर्तुं वा '**जाव पज्जुवासित्तए वा**' यावत् पर्युपासितुम्=आराधयितुं वा, '**णण्णत्थ अरिहंते वा अरिहंतचेइयाइं वा**' नाऽन्यत्र अर्हतो वा अर्हच्चैत्यान् वा । अयं निषेधोऽर्हद्विषये, अर्हत्साधुविषये वा न घटते, किन्तु ततोऽन्यत्राऽय निषेध इति भावः । 'चैत्य' शब्दस्य विस्तृतोऽर्थ 'उपासकदशाङ्ग'-सूत्रस्यागारधर्मसंजीवनीटीकायां मया प्रदर्शितः स ततोऽवसेयः ॥ सू. ३८ ॥

**टीका**---गौतमः पृच्छति-'**अम्मडे णं भंते ! परिव्वायए**' इत्यादि ।

'**भंते**' हे भदन्त ! '**अम्मडे णं परिव्वायए**' अम्बडः खलु परिव्राजकः

**णि वा चेइयाइं**) तथा अन्य यूथ में सम्मिलित जैन साधु भी (**वंदित्तए वा णमंसित्तए वा जाव पज्जुवासित्तए वा**) वंदना करने, नमस्कार करने एवं पर्युपासना करने के लिये (**णो कप्पइ**) कल्पते नहीं है। (**णण्णत्थ अरिहंते वा अरिहंतचेइयाइं वा**) परंतु यदि नमस्कार आदि के लिये उसे कोई कल्पते है तो वे एकमात्र अरिहंत एवं अरिहंत के साधुजन ही कल्पते है। 'चैत्य' शब्द का विस्तृत अर्थ, जिज्ञासुओ को 'उपासकदशांग' की अगारधर्मसंजीवनी टीका में देखना चाहिये ॥ सू. ३८ ॥

'**अम्मडे णं भंते**' इत्यादि ।

(**भंते**) हे भदंत! (**अम्मडे णं परिव्वायए**) यह अम्बड परिव्राजक (**कालमासे**

પણ (वंदित्तए वा णमंसित्तए वा जाव पज्जुवासित्तए वा) વંદના કરવા, નમસ્કાર કરવા તેમજ પર્યુપાસના કરવા માટે (णो कप्पइ) નથી કલ્પતા. (णण्णत्थ अरिहंते वा अरिहंतचेइयाइं वा) પરંતુ નમસ્કાર આદિ યોગ્ય જો કોઈ એને માટે હોય તો તે એકમાત્ર અરિહંત તેમજ અરિહંતના સાધુજન જ છે. 'चैत्य' શબ્દનો વિસ્તૃત અર્થ જિજ્ઞાસુઓએ 'उपासकदशांग'ની અગારધર્મસંજીવની ટીકામાં જોવો જોઈએ (સૂ. ૩૮)

"अम्मडे णं भंते !" ઇત્યાદિ.

(भंते) હે ભદન્ત ! (अम्मडे णं परिव्वायए) આ અમ્મડ પરિવ્રાજક (काल-

**किच्चा कहिं गच्छिहिति? कहिं उववज्जिहिति? गोयमा! अम्मडे णं परिव्वायए उच्चावएहिं सील-व्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहो-ववासेहिं अप्पाणं भावेमाणे बहूइं वासाइं**

'कालमासे कालं किच्चा कहिं गच्छिहिति? कहिं उववज्जिहिति?' कालमासे कालं कृत्वा कुत्र गमिष्यति? कुत्रोत्पत्स्यते? भगवानाह—'**गोयमा! अम्मडे णं परिव्वायए**' हे गौतम! अम्बडः खलु परिव्राजकः '**उच्चावएहिं**' उच्चावचैः=नानाविधैः, '**सील-व्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासेहिं**' शील-व्रत-गुण-विरमण-प्रत्याख्यान-पोपधोपवासैः, शीलानि—"शील समाधौ" अस्माद् घञ्, नपुंसकत्वं लोकात्, शीलति—आत्मचिन्तनरूपं समाधिं प्राप्नोति एभिस्तानि शीलानि। तानि चत्वारि—सामायिक-देशावकाशिक-पोषधा-तिथिसंविभागाख्यानि, व्रतानि—पञ्चाणुव्रतानि, गुणाः—त्रीणि गुणव्रतानि, विरमणं-मिथ्यात्वान्निवर्तनम्, प्रत्याख्यानं—पर्वदिनेषु त्याज्यानां परित्यागः, पोषधोपवासः—पोषं=पुष्टिं धर्मस्य वृद्धिमिति यावद् धत्ते इति पोषधः, पोषधशब्दो रूढ्या पर्वसु वर्तते, पर्वाणि चाष्टमी-चतुर्दशी-पौर्णमास्यमावास्यातिथयः, पूरणात् पर्वेत्युच्यते, पूरणत्वं धर्मवृद्धिकारकत्वात्, पोषधे उप-

कालं किच्चा) काल अवसर में काल करके (कहिं गच्छहिति) कहां जायगा? (कहिं उववज्जिहिति) कहां उत्पन्न होगा? प्रभु ने कहा-(गोयमा) हे गौतम! (अम्मडे णं परिव्वायए उच्चावएहिं सील-व्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासेहिं) यह अम्बड परिव्राजक अनेक प्रकार के शीलव्रत-जिनके द्वारा आत्मा के चिन्तन रूप समाधि जीव प्राप्त करता है उनका नाम शीलव्रत है, गुणव्रत, मिथ्यात्वविरमण, प्रत्याख्यान-पर्वदिनों में त्याग करने योग्य वस्तुओं का त्याग करना, पोषधोपवास-अष्टमी, चतुर्दशी, पौर्णमासी एवं अमावास्या ये तिथियाँ धर्म का पोषण करती है इसलिये ये पौषध है, इनमें चतुर्विध आहार का

मासे कालं किच्चा) કાલ અવસરે કાલ કરીને (कहिं गच्छिहिति) ક્યાં જશે? (कहिं उववज्जिहिति) ક્યાં ઉત્પન્ન થશે? પ્રભુએ ઉત્તરમાં કહ્યુ-(गोयमा) હે ગૌતમ! (अम्मडे ण परिव्वायए उच्चावएहिं सील-व्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासेहिं) એ અંબડ પરિવ્રાજક, અનેક પ્રકારનાં શીલવ્રત (જેના દ્વારા આત્માના ચિન્તનરૂપ સમાધિ જીવ પ્રાપ્ત કરે છે તેનું નામ શીલવ્રત છે), ગુણવ્રત, વેરમણ-મિથ્યાત્વવિરમણ, પ્રત્યાખ્યાન-પર્વના દિવસોમા ત્યાગ કરવા યોગ્ય વસ્તુઓનો ત્યાગ કરવો, પોષધોપવાસ-અષ્ટમી, ચતુર્દશી, પૌર્ણમાસી તેમજ અમાવાસ્યા એ તિથિઓ ધર્મનું પોષણ કરે છે તે માટે

**समणोवासगपरियायं पाउणिहिति, पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए अप्पाणं झूसित्ता, सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदित्ता,**

वासः=नियमविशेषः पोषधोपवासः, स चतुर्विधः–आहारशरीरसत्कारत्यागब्रह्मचर्यसावद्यव्यापारपरित्यागभेदात् । एषां शीलादिपोषधोपवासान्तानामितरेतरयोगद्वन्द्वस्तैस्तथोक्तैः '**अप्पाणं भावेमाणे बहूइं वासाइं समणोवासयपरियायं पाउणिहिति**' आत्मानं भावयन् बहूनि वर्षाणि श्रमणोपासकपर्यायं पालयिष्यति, '**पाउणित्ता**' पालयित्वा '**मासियाए संलेहणाए अप्पाणं झूसित्ता**' मासिक्या संलेखनयाऽऽत्मानं जुषित्वा=सेवित्वा, '**सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदित्ता**' षष्टिं भक्तानि अनशनेन छित्त्वा, '**आलोइयपडिक्कंते**'

त्याग करना । इन सबका भेद इस प्रकार है, शीलव्रत का भेद–सामायिक, देशावकाशिक, पौषध और अतिथिसंविभाग इस प्रकार से ४ है। गुणव्रत तीन है। पौषधोपवास भी ४ प्रकार का है–आहार का त्याग, शारीरिक सत्कार का त्याग, ब्रह्मचर्य का पालन एवं सावद्य व्यापार नहीं करना। इन सब नियमों–व्रतों से (**अप्पाणं भावेमाणे**) अपनी आत्मा को भावित करता हुआ (**बहूइं वासाइं समणोवासगपरियायं पाउणिहिति**) अनेक वर्षों तक श्रमणोपासक – श्रावक की पर्याय का पालन करेगा। (**पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए अप्पाणं झूसित्ता**) इस प्रकार श्रावक की पर्याय को पालन करके फिर वह १ मास की संलेखना से अपनी आत्मा को युक्त कर–अर्थात् एक मास की संलेखना धारण कर (**सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदित्ता**) साठ भक्त का अनशन से छेदकर (**आलोइयपडिक्कंते**) पापकर्मों की आलोचना–प्रतिक्रमण करके (**समाहिपत्ते**) समाधि

એ પોષધ છે. તેમાં ઉપવાસ એટલે વસવું એ પોષધોપવાસ કહેવાય છે. એ બધાનો ભેદ આ પ્રકારે છે, શીલવ્રતના ભેદ–સામાયિક, દેશાવકાશિક, પોષધ, અને અતિથિસંવિભાગ, આ ચાર પ્રકારનાં છે. ગુણવ્રત ત્રણ પ્રકારનાં છે. પોષધોપવાસ ચાર ૪ પ્રકારના છે–આહારનો ત્યાગ, શારીરિક સત્કારનો ત્યાગ, બ્રહ્મચર્યનું પાલન તેમજ સાવદ્ય વ્યાપાર ન કરવો. આ બધા નિયમો–વ્રતોથી (अप्पाणं भावेमाणे) પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા થકા (बहूइं वासाइं समणोवासगपरियायं पाउणिहिति) અનેક વરસો સુધી શ્રમણોપાસક–શ્રાવકની પર્યાયનુ પાલન કરશે. (पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए अप्पाणं झूसित्ता) આ પ્રકારે શ્રાવકની પર્યાયનું પાલન કરીને પછી તે એક માસની સંલેખના ધારણ કરીને (सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदित्ता) સાઠ ભક્તનુ અનશનથી છેદન કરીને (आलोइयपडिक्कंते) પાપ કર્મોની

आलोइयपडिक्कंते समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा बंभलोए कप्पे देवत्ताए उववज्जिहिति। तत्थ णं अत्थेगइयाणं देवाणं दस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता। तत्थ णं अम्मडस्स वि देवस्स दस सागरोवमाइं ठिई ॥ सू० ३९ ॥

मूलम्--से णं भंते! अम्मडे देवे ताओ देवलोगाओ

आलोचितप्रतिक्रान्तः=प्रतिनिवृत्तः, '**समाहिपत्ते**' समाधिप्राप्तः, '**कालमासे कालं किच्चा**' कालमासे कालं कृत्वा '**बंभलोए कप्पे देवत्ताए उववज्जिहिति**' ब्रह्मलोके कल्पे देवत्वेनोत्पत्स्यते, '**तत्थ णं अत्थेगइयाणं देवाणं दस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता**' तत्र खलु अस्ति एकेषां=केषांचिद् देवानां दश सागरोपमानि स्थितिः प्रज्ञप्ता। '**तत्थ णं अम्मडस्स वि देवस्स दस सागरोवमाइं ठिई**' तत्र खलु अम्मडस्याऽपि देवस्य दश सागरोपमानि स्थितिः ॥ सू० ३९ ॥

**टीका**—गौतमः पृच्छति-'**से णं भंते?**' इत्यादि।

'**से णं भंते! अम्मडे देवे**' स खलु भदन्त! अम्बडो देवः, '**ताओ देव-**

को प्राप्त करेगा। पश्चात् (**कालमासे कालं किच्चा**) काल अवसर में काल कर के (**बंभलोए कप्पे देवत्ताए उववज्जिहिति**) ब्रह्मलोक नामक पांचवे देवलोक में उत्पन्न होगा। (**तत्थ णं अत्थेगइयाणं देवाणं दससागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता**) वहां कितनेक देवों की स्थिति १० सागर की है। (**तत्थ णं**) वहां पर (**अम्मडस्स वि देवस्स दस सागरोवमाइं ठिई**) इस अम्बड देव की भी दश सागर प्रमाण स्थिति होगी ॥ सू. ३९ ॥

'**से णं भंते अम्मडे देवे**' इत्यादि।

गौतम पूछते है-(**भंते**) हे भदंत! (**से अम्मडे देवे**) वह अम्बड देव (**ताओ**

આલોચના તથા પ્રતિક્રમણ કરીને (समाहिपत्ते) સમાધિને પ્રાપ્ત કરશે. પછી-(कालमासे कालं किच्चा) કાલ-અવસરે કાલ કરીને (बंभलोए कप्पे देवत्ताए उववज्जिहिति) બ્રહ્મલોક નામના પાંચમાં દેવલોકમાં ઉત્પન્ન થશે. (तत्थ ण अत्थेगइयाणं देवाणं दससागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता) ત્યાં, કેટલાક દેવોની સ્થિતિ દશ ૧૦ સાગરની છે, (तत्थ णं) ત્યાં (अम्मडस्स वि देवस्स दससागरोवमाइं ठिई) આ અમ્બડદેવની પણ દશ સાગર પ્રમાણ સ્થિતિ થશે. (સૂ૦ ૩૯)

'से णं भंते! अम्मडे देवे' ઈત્યાદિ.

ગૌતમ પૂછે છે-(भंते) હે ભદંત! (से णं अम्मडे देवे) તે અમ્બડ દેવ

आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्खएणं अणंतरं चयं चइत्ता कहिं गच्छिहिइ, कहिं उववज्जिहिइ ? ॥ सू० ४० ॥

मूलम्—गोयमा ! महाविदेहे वासे जाइं कुलाइं

लोगाओ' तस्माद्देवलोकात् 'आउक्खएणं' आयुःक्षयेण=देवसम्बन्ध्यायुःकर्मदलिक-निर्जरणेन, 'भवक्खएणं' भवक्षयेण=देवभवहेतुगत्यादिकर्मनिर्जरणेन, 'ठिइक्खएणं' स्थिति-क्षयेण=ब्रह्मलोके दशसागरोपमस्थितिक्षयेण 'अणंतरं' अनन्तरं चयं=शरीरं 'चइत्ता' त्यक्त्वा, 'कहिं गच्छिहिइ' कुत्र गमिष्यति, 'कहिं उववज्जिहिइ' कुत्रोत्पत्स्यते ? ॥ सू. ४० ॥

टीका—गौतमेन पृष्टः सन् भगवानाह—'गोयमा !' इत्यादि ।

'गोयमा !' हे गौतम ! 'महाविदेहे वासे जाइं कुलाइं भवंति' महाविदेहे वर्षे यानि कुलानि भवन्ति=सन्ति, कानि तानि ? इत्याह—'अड्ढाइं' आढ्यानि=समृद्धानि,

देवलोगाओ) उस देवलोक से (आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्खएणं) आयु के क्षय—देवसंबंधी आयुकर्म के दलिकों की निर्जरा से, भव के क्षय—देवभव के हेतु गत्यादिक कर्म की निर्जरा से तथा स्थिति के क्षय—ब्रह्मलोक संबधी १० सागर की स्थिति के समाप्त होने से (चयं चइत्ता) देवपर्याय से च्यवकर (अणंतरं) इसके बाद (कहिं गच्छिहिइ कहिं उववज्जिहिइ) कहां जायगा ? कहां उत्पन्न होगा ? ॥ सू. ४० ॥

'गोयमा ! महाविदेहे वासे' इत्यादि ।

गौतमस्वामीने पूर्वोक्त प्रकार से जब प्रभु से पूछा तब उन्होंने कहा—(गोयमा) हे गौतम ! (महाविदेहे वासे) महाविदेह क्षेत्र मे (जाइं) जितने (अड्ढाइं दित्ताइं वित्ताइं) आढ्य—समृद्ध दीप्त—उज्ज्वल तथा प्रशंसित, एवं वित्त—प्रसिद्ध, (कुलाइं भवंति)

(ताओ देवलोगाओ) ते देवलोकथी (आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्खएणं) आयुनो क्षय—देवसंबंधी आयुकर्मदलिकोनी निर्जराथी, भवनो क्षय—देवभवना हेतु गति आदिक कर्मनी निर्जराथी तथा स्थितिनो क्षय—ब्रह्मलोक संबंधी दश सागरनी स्थिति समाप्त होवाथी (चयं चइत्ता) देवपर्यायथी च्युत थईने (अणंतरं) त्यार पछी (कहिं गच्छिहिइ कहिं उववज्जिहिइ ?) क्यां जशे ? क्यां उत्पन्न थशे ? (सू० ४०)

"गोयमा ! महाविदेहे वासे" ईत्यादि.

गौतमे उपर कह्या प्रकारे ज्यारे प्रभुने पूछ्यु त्यारे तेओए कह्युं-(गोयमा) हे गौतम ! (महाविदेहे वासे) महाविदेह क्षेत्रमां (जाइं) जेटला (अड्ढाइं दित्ताइं वित्ताइं) आढ्य—समृद्ध, दीप्त—उज्जवळ तथा प्रशंसित, तेमज वित्त—प्रसिद्ध, (कुलाइं भवंति) कुळो छे. (वित्थिण्ण—विउल—भवण—सयणा—सण—जाण—

**भवंति अड्ढाइं दित्ताइं वित्ताइं वित्थिण्ण-विउल-भवण-सयणा-सण-जाण-वाहणाइं बहुधण-जायरूव-रययाइं आओग-पओग-संपउत्ताइं विच्छड्डिय-पउर-भत्तपाणाइं बहु-दासी-**

'दित्ताइं' दीप्तानि=उज्ज्वलानि-प्रशंसितानि, 'वित्ताइं' वित्तानि=प्रसिद्धानि 'वित्थिण्ण-विउल-भवण-सयणा-सण-जाण-वाहणाइं' विस्तीर्ण-विपुल-भवन-शयना-ऽऽसन-यान-वाहनानि-विस्तीर्णानि=विस्तृतानि विपुलानि=विशालानि भवनानि शयनादीनि च येषु कुलेषु तानि तथा, 'बहुधण-जायरूव-रययाइं' बहुधन-जातरूप-रजतानि-बहूनि धनानि जातरूपाणि=सुवर्णानि रजतानि च येषु तानि तथा, 'बहु-दासी-दास-गो-महिस-गवेलग-प्पभूयाइं' बहु-दासी-दास-गो-महिष-गवेलक-प्रभूतानि-बह्व्यो दास्यः बहवो दासाः, गाव=वृषभा धेनवश्च, महिषाः=महिषा महिष्यश्च, गवेलकाः=मेषाः तै प्रभूतानि=सहितानि, 'आओग-पओग-संपउत्ताइं' आयोग-प्रयोग-सम्प्रयुक्तानि-विविधदानाऽऽ-

कुल है। जो कि (वित्थिण्ण-विउल-भवण-सयणा-सण-जाण-वाहणाइं) विस्तृत एवं विपुल भवनों के अधिपति है। जिनके पास अनेक प्रकार के शयन, आसन एवं यान-वाहनादिक है। (बहुधनजायरूवरययाइं) जो बहुत अधिक धन के स्वामी है। सोने एवं चांदीकी जिनके पास कमी नहीं है। (आओग-पओग-संपउत्ताइं) आदान-प्रदान अर्थात् लाभ के लिये लेन-देन का काम करते हैं, (विच्छड्डिय-पउर-भत्त-पाणाइं) याचक आदि जनों के लिये जो प्रचुरमात्रा में भक्तपान आदि देते है, (बहु-दासी-दास-गो-महिस-गवेलग-प्पभूयाइं) जिनकी सेवामें रातदिन अनेक दासी एवं दास उपस्थित रहा करते है, जिनकी गोशालाएँ अनेक बैलोंसे, गायों से, महषियों से, महिषों से, एवं मेषों से, सदा भरपूर रहा करती है, (बहुजणस्स अपरिभूयाइं) और जो किसी के द्वारा भी पराभव

वाहणाइं) જે વિશાળ તેમજ વિપુળ ભવનોના અધિપતિ છે, જેમની પાસે અનેક પ્રકારના શયન, આસન, તેમજ યાન-વાહન આદિક છે, (बहु-धन-जायरूव-रययाइं) જે બહુજ ધનના સ્વામી છે, સુવર્ણ તેમજ ચાંદી જેમની પાસે ઓછી નથી, (आओग-पओग-संपउत्ताइं) આદાન-પ્રદાન અર્થાત્ લાભને માટે લેણદેણનુ કામ કરે છે, (विच्छड्डिय-पउर-भत्त-पाणाइं) યાચક આદિ જનોને માટે જે પ્રચુર માત્રામાં ભક્ત-પાન આદિ આપે છે, (बहु-दासी-दास-गो-महिस-गवेलग-प्पभूयाइं) જેની સેવામાં રાતદિવસ અનેક દાસી દાસ ઉપસ્થિત રહ્યા કરે છે. જેમની ગૌશાળાઓ અનેક બેલોથી, ગાયોથી ભેંસોથી, પાડાઓથી, તેમજ ઘેટાથી સદા ભરપૂર રહ્યા કરે છે, (बहुजणस्स

**दास-गो-महिस-गवेलगप्पभूयाइं बहुजणस्स अपरिभूयाइं तहप्पगारेसु कुलेसु पुमत्ताए पच्चायाहिइ ॥ सू. ४१ ॥**

**मूलम्--तए णं तस्स दारगस्स गब्भत्थस्स समाणस्स अम्मापिईणं धम्मे दढा पइण्णा भविस्सइ ॥ सू. ४२ ॥**

---

दान-कर्मोपयुक्तानि, '**विच्छड्डिय-पउर-भत्तपाणाइं**' विच्छर्दित-प्रचुर-भक्तपानानि-विच्छर्दितानि=दत्तानि प्रचुराणि भक्तानि पानानि=पेयानि यैः कुलैस्तानि तथा, '**बहुजणस्स अपरिभूयाइं**' बहुजनस्याऽपरिभूतानि, कैरप्यपराजितानीत्यर्थ. । '**तहप्पगारेसु**' तथाप्रकारेषु=तादृशेषु कुलेषु, '**पुमत्ताए**' पुंस्तया=पुरुषतया, '**पच्चायाहिइ**' प्रत्यायास्यति=उत्पत्स्यत इत्यर्थ ॥ सू. ४१ ॥

**टीका**--'**तए णं**' इत्यादि ।'**तए णं**' ततः खलु-तत्पश्चात् '**तस्स दारगस्स**' तस्य दारकस्य=वालस्य '**गब्भत्थस्स चेव**' गर्भस्थस्यैव=गर्भाऽऽगतस्यैव सत पुण्यशालितया तत्प्रभावात् '**अम्मापिईणं धम्मे**' मातापित्रोर्धर्मे '**दढा पइण्णा**' दृढा प्रतिज्ञा '**भविस्सइ**' भविष्यति-धर्माराधनाय दृढनिश्चयो भविष्यतीत्यर्थ. ॥ सू. ४२ ॥

---

नहीं पा सकते हैं, (**तहप्पगारेसु कुलेसु पुमत्ताए पच्चायाहिइ**) ऐसे विशिष्ट कुलों में से किसी एक कुल में यह अम्बड परिव्राजक पुरुषरूप से उत्पन्न होगा ॥ सू० ४१ ॥

'**तए णं तस्स दारगस्स**' इत्यादि ।

(**तए णं**) इसके पश्चात् (**तस्स दारगस्स**) उस लड़के के (**गब्भत्थस्स समाणस्स**) गर्भ में आते ही पुण्य के प्रभाव से (**अम्मापिईणं**) मातापिता को (**धम्मे दढा पइण्णा भविस्सइ**) धर्म में दृढ आस्था उत्पन्न होगी ॥ सू० ४२ ॥

---

अपरिभूयाइं) અને જે કોઇથી પણ પરાભવ પામતા નથી. (तहप्पगारेसु कुलेसु पुमत्ताए पच्चायाहिइ) એવાં વિશિષ્ટ કુળોમાંથી કોઇ એક કુળમાં એ અમ્બડ પરિવ્રાજક પુરુષરૂપથી ઉત્પન્ન થશે. (सू. ४१)

'तए णं तस्स दारगस्स' ઇત્યાદિ.

(तए णं) ત્યાર પછી (तस्स दारगस्स) તે છોકરાના (गब्भत्थस्स समाणस्स) ગર્ભમાં આવતાં જ પુણ્યના પ્રભાવ વડે (अम्मापिईणं) માતા-પિતાની (धम्मे दढा पइण्णा भविस्सइ) ધર્મમા દૃઢ આસ્થા ઉત્પન્ન થશે. (सू. ४२)

मूलम्——से णं तत्थ णवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं अद्धट्ठमाण राइंदियाणं वीइक्कंताणं सुकुमालपाणिपाए जाव ससिसोमाकारे कंते पियदंसणे सुरूवे दारए पयाहिए ॥ सू. ४३ ॥

मूलम्——तए णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो पढमे

टीका—'से णं तत्थ' इत्यादि। 'से णं तत्थ' स खलु तत्र 'णवण्हं मासाणं' नवसु मासेषु, अत्र सप्तम्यर्थे षष्ठी, एवमग्रेऽपि, 'बहुपडिपुण्णाणं' बहुप्रतिपूर्णेषु=सर्वथा व्यतीतेषु, 'अद्धट्ठमाणं' अर्धाष्टमेषु—सार्धसप्तसु 'राइन्दियाणं' रात्रिन्दिवेषु 'वीइक्कंताणं' व्यतिक्रान्तेषु=व्यतीतेषु 'जाव ससिसोमाकारे' यावत् शशिसौम्याकारः=चन्द्रवत्सुन्दरः, 'कंते' कान्तः=कमनीयः, 'पियदंसणे' प्रियदर्शनः, 'सुरूवे' सुरूपः, 'दारए' दारकः=पुत्रः 'पयाहिए' प्रजनिष्यते=उत्पत्स्यते ॥ सू. ४३ ॥

टीका—'तए णं' इत्यादि।

'तए णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो पढमे दिवसे' ततः खलु तस्य दारकस्य अम्बापितरौ प्रथमे दिवसे 'ठिइवडियं' स्थितिपतितं=कुलमर्यादाप्राप्त—पुत्रजन्मोत्सवं

'से णं तत्थ णवण्हं मासाणं' इत्यादि।

(तत्थ) गर्भ में (णवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं अद्धट्ठमाणं राइंदियाणं वीइक्कंताणं) नौ महीने साढे सात दिनरात वीतने पर (सुकुमालपाणिपाए जाव ससिसोमाकारे कंते पियदंसणे सुरूवे दारए पयाहिइ) यह सुकुमार पाणिपादवाला यावत् चन्द्रमा के समान सौम्य आकारवाला, कांत, प्रियदर्शन एवं सुन्दररूप से विशिष्ट ऐसा पुत्र उत्पन्न होगा ॥ सू. ४३ ॥

'तए णं तस्स दारगस्स' इत्यादि।

(तए णं) इसके बाद (तस्स दारगस्स) इस बालक के (अम्मापियरो) माता-

'से णं तत्थ णवण्हं मासाणं' ઈત્યાદિ.

(तत्थ) ગર્ભમાં (णवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं अद्धट्ठमाण राइंदियाणं वीइक्कंताणं) નવ મહિના અને સાડા સાત દિનરાત વીત્યા પછી (सुकुमाल–पाणि–पाए जाव ससिसोमाकारे कंते पियदंसणे सुरूवे दारए पयाहिइ) એ સુકુમાર હાથપગવાળો, યાવત્ ચંદ્રમા જેવો સૌમ્ય આકારવાળો, કાંત, પ્રિયદર્શન, તેમજ સુંદર રૂપથી વિશિષ્ટ એવો પુત્ર ઉત્પન્ન થશે. (સૂ. ૪૩)

'तए णं तस्स दारगस्स' ઈત્યાદિ.

(तए णं) ત્યાર પછી (तस्स दारगस्स) આ બાલકનો (अम्मापियरो) માતા-

दिवसे ठिइवडियं काहिंति, बिइयदिवसे चंदसूरदंसणियं काहिंति, छट्ठे दिवसे जागरियं काहिंति, एक्कारसमे दिवसे वीइक्कंते णिव्वत्ते असुइ-जाय-कम्मकरणे संपत्ते बारसाहे दिवसे अम्मापियरो इमं एयारूवं गोणं गुणणिप्फण्णं णामधेज्जं काहिंति-

'काहिंति' करिष्यतः, 'विइयदिवसे' द्वितीयदिवसे 'चंदसूरदंसणियं' चन्द्रसूर्यदर्शनिकानामकं पुत्रजन्मोत्सवविशेषं करिष्यतः, 'छट्ठे दिवसे' षष्ठे दिवसे 'जागरियं' जागरिकां=रात्रिजागरिकां-सुतजन्मोत्सवरूपां करिष्यतः, 'एक्कारसमे दिवसे' एकादशे दिवसे 'वीइक्कंते' व्यतिक्रान्ते=व्यतीते, 'णिव्वते' निवृत्ते=व्यतीते 'असुइजायकम्मकरणे' अशुचिजातकर्मकरणे-अशुचीनाम्=अशौचवताम् जातकर्मणो=जातकर्मसंस्कारस्य यत् करणं=विधानं तस्मिन्, निवृत्ते सतीति पूर्वेणान्वयः 'संपत्ते बारसाहे दिवसे' सम्प्राप्ते द्वादशाहे दिवसे=द्वादशाहरूपे दिने समागते इत्यर्थः, 'अम्मापियरो इमं एयारूवं गोणं गुणणिप्फण्णं नामधेज्जं काहिंति' अम्बापितरौ इदं=वक्ष्यमाणम् एतद्रूपं=वक्ष्यमाणस्वरूपं गौणं=

पिता (पढमे दिवसे) प्रथम दिवस में (ठिइवडियं) अपनी स्थिति के अनुसार पुत्र-जन्म के उत्सव को (काहिंति) मनावेंगे। (बिइयदिवसे चंदसूरदंसणियं काहिंति) द्वितीय दिवसमें पुत्र-जन्म के उत्सव के अवसर पर मनाये जाने वाले 'चंद्रसूर्यदर्शनिका' नाम के उत्सव को करेंगे। (छट्ठे दिवसे जागरियं काहिंति) छठवें दिन जागरण करेंगे, (एक्कारसमे दिवसे वीइक्कंते णिव्वत्ते असुइजायकम्मकरणे संपत्ते बारसाहे दिवसे) ग्यारहवे दिवस जननाशौच समाप्त होने पर फिर बारहवे दिवस के लगने पर (अम्मापियरो) इसके मातापिता (इमं एयारूवं गोणं गुणणिप्फण्णं णामधेज्ज काहिंति) इसका गुणसबंधयुक्त एवं सार्थक

પિતા (पढमे दिवसे) પહેલા દિવસે (ठिइवडियं) પોતાની સ્થિતિ અનુસાર પુત્રજન્મનો ઉત્સવ (काहिंति) મનાવશે, (बिइयदिवसे चंदसूरदंसणियं काहिंति) બીજે દિવસે પુત્રજન્મના ઉત્સવ અવસરે મનાવવામાં આવતો 'ચંદ્રસૂર્ય-દર્શનિકા' એ નામનો ઉત્સવ કરશે, (छट्ठे दिवसे जागरियं काहिंति) છટ્ઠા દિવસે જાગરણ કરશે. (एक्कारसमे दिवसे वीइक्कंते णिवत्ते असुइजायकम्मकरणे संपत्ते बारसाहे दिवसे) અગીયારમે દિવસે જન્મ-અશૌચ (સૂતક) સમાપ્ત થઈ ગયા પછી બારમો દિવસ થતાં (अम्मापियरो) તેના માતાપિતા (इमं एयारूवं गोणं गुणणिप्फण्णं णामधेज्जं काहिंति) તેના ગુણસંબંધને અનુલક્ષીને તેમજ

जम्हा णं अम्हं इमंसि दारगंसि गब्भत्थंसि चेव समाणंसि धम्मे दढपइण्णा, तं होउ णं अम्हं दारए दढपइण्णे णामेणं। तए णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो णामधेज्जं करेहिंति-दढपइण्णत्ति ॥ सू. ४४ ॥

मूलम्--तं दढपइण्णं दारगं अम्मापियरो साइरेगट्ठ-

---

गुणसम्बन्धयुक्त, गुणनिष्पन्नं-गुणैः=धर्मविषयकदार्ढ्यादिगुणैर्निष्पन्नं=सिद्ध नामधेयं करिष्यतः। 'जम्हा णं अम्हं इमंसि दारगंसि गब्भत्थंसि चेव समाणंसि' यस्मात्खल्वावयोरस्मिन दारके गर्भस्थ एव सति 'धम्मे' धर्मे=धर्माराधने 'दढपइण्णा' दृढप्रतिज्ञा=दृढनिश्चयो जातः, 'तं होउ णं अम्हं दारए दढपइण्णे णामेणं' तद् भवतु खल्वावयोर्दारको दृढप्रतिज्ञो नाम्ना-तस्मादस्य बालकस्य 'दृढप्रतिज्ञ' इति नामास्तु-इत्यर्थः। 'तए णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो णामधेज्जं करेहिंति दढपइण्णेत्ति' ततः खलु अम्बापितरौ तस्य दारकस्य नामधेयं करिष्यतो दृढप्रतिज्ञ इति ॥ सू. ४४ ॥

टीका--'तं दढपइण्णं' इत्यादि। 'तं दढपइण्णं' तं दृढप्रतिज्ञ=दृढप्रतिनामकं

---

नामकरणसंस्कार करेंगे। वह इस बात को विचार कर इसका नाम रखेंगे कि (जम्हा णं अम्हं इमंसि दारगंसि गब्भत्थंसि चेव समाणंसि धम्मे दढपइण्णा, तं होउ णं अम्हं दारए दढपइण्णे नामेणं) हमारा यह बालक जब गर्भ मे आया था तब से ही हम लोगों की प्रतिज्ञा-आस्था धर्म में दृढ हुई, अतः हमारे इस बालक का नाम दृढप्रतिज्ञ हो। (तए णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो णामधेज्जं करेहिंति दढपइण्णत्ति) उस समय उस बालक के मातापिता उसका नाम दृढप्रतिज्ञ रखेंगे ॥ सू ४४ ॥

---

સાર્થક નામકરણસંસ્કાર કરશે. તેઓ એ વાતનો વિચાર કરીને તેનું નામ રાખશે કે (जम्हा णं अम्हं इमंसि दारगंसि गब्भत्थंसि चेव समाणंसि धम्मे दढपइण्णा तं होउ णं अम्हं दारए दढपइण्णे नामेणं) અમારો આ બાળક જ્યારે ગર્ભમાં આવ્યો હતો ત્યારથીજ અમારા લોકોની પ્રતિજ્ઞા-આસ્થા ધર્મમાં દૃઢ થઇ, તેથી અમારા આ બાળકનું નામ દૃઢપ્રતિજ્ઞ રહો. (तए णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो णामधेज्जं करेहिंति दढपइण्णत्ति) તે સમયે તે બાળકના માતા-પિતા તેનું નામ દૃઢપ્રતિજ્ઞ રાખશે. (સૂ ૪૪)

**वासजायगं जाणित्ता सोभणंसि तिहिकरणदिवसणक्खत्तमुहुत्तं-सि कलायरियस्स उवेणहिंति ॥ सू. ४५ ॥**

**मूलम्—तए णं से कलायरिए तं दढपइण्णं दारगं लेहाइयाओ**

'दारयं' दारकं=कुमारम्, 'अम्मापियरो' अम्बापितरौ 'साइरेगट्ठवासजायगं' सातिरेकाष्टवर्षजातकं=किंचिदधिकाष्टवर्षाणि जातानि यस्य स तथा तं, किंचिदधिकाष्टवर्षवयस्कमित्यर्थः; 'जाणित्ता' ज्ञात्वा 'सोभणंसि'=शोभने-शुभकारके 'तिहिकरणदिवसनक्खत्तमुहुत्तंसि' तिथिकरणदिवसनक्षत्रमुहूर्त्ते 'कलायरिस्स' कलाचार्यस्य 'उवणेहिंति' उपनेष्यतः—द्वासप्तति कलाज्ञानप्राप्तये कलाशिक्षकस्य समीपं नेष्यत इत्यर्थः ॥ सू० ४५ ॥

टीका—'तए णं' इत्यादि। 'तए णं से कलायरिए' ततः खलु स कलाचार्यः 'तं दढपइण्णं' तं दृढप्रतिज्ञं दृढप्रतिज्ञनामकं 'दारगं' दारकं 'लेहाइयाओ' लेखादिकाः,

'तं दढपइण्णं दारगं' इत्यादि।

(तं दढपइण्णं दारगं) पश्चात् उस दृढप्रतिज्ञ नामक बालक को (अम्मापियरो) उसके माता-पिता (साइरेगट्ठवासजायगं जाणित्ता) जब आठ वर्ष से कुछ अधिक वय का जानेंगे तब वे उसे (सोभणंसि तिहि-करण-दिवस-णक्खत्त-मुहुत्तंसि कलायरियस्स उवणेहिंति) शुभ तिथि, शुभ करण, शुभ नक्षत्र एवं शुभ मुहूर्त में कलाचार्य के पास ७२ कलाओं का ज्ञान प्राप्त कराने के निमित्त ले जावेंगे ॥ सू. ४५ ॥

'तए णं से कलायरिए' इत्यादि।

(तए णं) इसके बाद (से कलायरिए) वह कलाचार्य (तं दढपइण्णं

'तं दढपइण्णं दारगं' ઇત્યાદિ.

(तं दढपइण्णं दारगं) ત્યાર પછી તે દૃઢપ્રતિજ્ઞ નામના બાળકને (अम्मापियरो) તેનાં માતા-પિતા (साइरेग-ट्ठवास-जायगं जाणित्ता) જ્યારે આઠ વરસથી કંઈક વધારે ઉમરનો જાણશે ત્યારે તેઓ તેને (सोभणंसि तिहि-करण-दिवस-णक्खत्त-मुहुत्तंसि कलायरियस्स उवणेहिंति) શુભતિથિ, શુભ કરણ, શુભ દિવસ, શુભ નક્ષત્ર, તેમજ શુભ મુહૂર્તમાં કલાચાર્યની પાસે ૭૨ કળાઓનું જ્ઞાન પ્રાપ્ત કરાવવા નિમિત્તે લઈ જશે. (સૂ. ૪૫)

'तए णं से कलायरिए' ઇત્યાદિ.

(तए णं) ત્યાર પછી (से कलायरिए) તે કલાચાર્ય (तं दढपइण्णं दारगं)

गणियप्पहाणाओ सउणरुयपज्जवसाणाओ बावत्तरिकलाओ सुत्त-ओ य अत्थओ य करणओ य सेहाविहिति सिक्खाविहिति, तं जहा–लेहं १, गणियं २, रूवं ३, णट्टं ४, गीयं ५, वाइयं ६, सर-

'गणियप्पहाणाओ' गणितप्रधानाः, 'सउणरुयपज्जवसाणाओ' शकुनरुतपर्यवसानाः, 'बावत्तरिकलाओ' द्वासप्ततिकलाः, 'सुत्तओ य' सूत्रतः=सूत्रस्थपदपाठनात्, 'अत्थओ य' अर्थतः=पदार्थबोधनात्, 'करणओ य' करणतः=प्रयोगतः–कलाव्यापारप्रदर्शनात्, 'सेहाविहिति' साधयिष्यति=प्रापयिष्यति, 'सिक्खाविहिति' शिक्षयिष्यति=अभ्यासं कारयिष्यति।

ताः कला नामतः प्रदर्शयति– 'तं जहा' तद्यथा–'लेहं' लेख–लेखनं लेखः–अक्षरविन्यासस्तद्विषयकलाविज्ञानं लेख एवोच्यते तम्, 'गणियं' गणितं=सङ्ख्यानं सङ्कलिताद्यनेकभेदम् २, 'रूवं' रूपं=लेप्यशिलासुवर्णमणिवस्त्रचित्रादिषु रूपनिर्माणम् ३, 'णट्टं' नाट्यं=साभिनयनिरभिनयपूर्वकं नर्तनम् ४, 'गीयं' गीतं=गान्धर्वकलाज्ञानविज्ञानम् ५, 'वाइयं' वाद्यं=वीणापटहादिवादनकलाज्ञानम् ६, 'सरगय' स्वरगतं=गीतमूलभूतानां षड्जऋषभादि-

दारगं) उस दृढप्रतिज्ञ कुमार को (लेहाइयाओ गणियप्पहाणाओ) लिखने आदि की, गणित की, तथा पक्षी के शब्द आदि जानने की (बावत्तरिकलाओ) ७२ कलाओं में (सुत्तओ य) सूत्ररूप से (अत्थओ य) एव अर्थरूप से तथा (करणओ य) प्रयोगरूप से (सेहाविहिति) प्राप्त करायेगा, (सिक्खाविहिति) अभ्यास करायेगा। (तं जहा) बहत्तर कलाओं के नाम ये है– (१ लेह) लेख लिखने की, (२ गणियं) गणित की, (३ रूवं) रूप की–अर्थात् लेप्य, शिला, सुवर्ण, मणि, वस्त्र एव चित्र इत्यादिको में रूपनिर्माण करने की, (४ णट्टं) नृत्य की-साभिनय एवं निरभिनयपूर्वक नाचने की, (५ गीयं) गाने की, (६ वाइयं) वीणा एवं पटह–ढोल आदि बाजे बजाने की, (७ सरगयं)

ते दृढप्रतिज्ञ कुमारने (लेहाइयाओ गणियप्पहाणाओ) लेखन आदिनी, गणितनी तथा पक्षीना शब्द आदि जाणवानी (बावत्तरिकलाओ) ७२ कळाओ (सुत्तओ य) सूत्ररूपथी (अत्थओ य) तेमज अर्थ रूपथी, तथा (करणओ य) प्रयोग रूपथी (सेहाविहिति) प्राप्त करावशे, (सिक्खाविहिति) अभ्यास करावशे. (तं जहा बउंतेर कळाओनां नाम आ प्रमाणे छे–१ (लेहं) लेख लखवानी, २ (गणियं) गणितनी, ३ (रूवं) रूपनी अर्थात् लेप्य, शिला, सुवर्ण, मणि, वस्त्र तेमज चित्र इत्यादिमा रूप निर्माण करवानी, ४ (णट्टं) नृत्यनी–साभिनय तेमज निरभिनय–पूर्वक नाचवानी, ५ (गीयं) गावानी, ६ (वाइयं) वीणा तेमज पटह ढोल आदि वाजित्र वगाडवानी, ७ (सरगयं) स्वरोनी–गीतना मूळभूत

**गयं ७, पुक्खरगयं ८, समतालं ९, जूयं १०, जणवायं ११, पासगं १२, अट्ठावयं १३, पोरेकव्वं १४, दगमट्टियं १५, अण्णविहिं १६, पाणविहिं १७, आभरणविहिं १८, सयणविहिं १९, अज्जं २०,**

स्वराणा परिज्ञानम् ७, **'पोक्खरगयं'** पुष्करगतं=मृदङ्गविषयकं विज्ञानम् , वाद्यान्तर्गतत्वेऽपि मृदङ्गादे पृथक्कथन परमसंगीताङ्गत्वबोधनार्थम् ८, **'समतालं'** समतालं—गीतादिमानकालस्ताल स सम=न्यूनाधिकमात्रारहितो ज्ञायते यस्मात् तत् समतालविज्ञानम् ९, **'जूयं'** द्यूतं—**'जुगार'** इति भाषायाम् १०, **'जणवायं'** जनवादं=जनेषु वादप्रतिवादकरणरूपम् ११, **'पासयं'** पाशकं=द्यूतोपकरणविशेषं, 'पाशा' इति भाषायाम् १२, **'अट्ठावयं'** अष्टापदं—द्यूतविशेषखेलनम् १३, **'पोरेकव्वं'** पुरःकाव्य=पुरत पुरत काव्यं—काव्यरूपवाणीनि सारणं =शीघ्रकवित्वमित्यर्थ १४, **'दगमट्टियं'** दकमृत्तिकाम्=उदकयुक्तमृत्तिकाप्रयोगविधिः दकमृत्तिका=कुम्भकारविधेत्यर्थः, ताम् १५, **'अन्नविहिं'** अन्नविधिम्=अन्ननिष्पादनविज्ञानम् । **'अन्नविहिं'** इत्यत्र समवायाङ्गोक्तस्य 'मधुसित्थ' इत्यस्य समावेश १६, **पाणविहिं'** पानविषयविज्ञानम् १७, **'आभरणविहिं'** आभरणविधिम्=भूषणनिर्माणधारणविज्ञानम् ।

स्वरों की—गीत के मूलभूत षड्ज—ऋषभ आदि स्वरों की, (८ **पुक्खरगय**) मृदंग बजाने की (९ **समतालं**) समताल की-तान के अनुसार ताल बजाने की, (१० **जूयं**) जुआ खेलने की, (११ **जणवायं**) लोकों के साथ प्रतिवाद करने की, (१२ **पासगं**) पासा फेंकने की, (१३ **अट्ठावयं**) अष्टापद—चौपड खेलने की, (१४ **पोरेकव्वं**) आशुकवि होने की, (१५ **दगमट्टियं**) मिट्टी से अनेक प्रकार के वर्त्तन बनाने की, (१६ **अण्णविहिं**) धान्य आदि को बो कर अन्नादिक उत्पन्न करने की—भोजन बनाने की, समवायाङ्ग में उक्त **'मधुसित्थं'**—मधुसिक्थ का इसीमें समावेश किया गया है, (१७ **पाणविहि**) पेयपदार्थ की विधि जानने

षड्ज—ऋषभ आदि स्वरोनी, ८ (पुक्खरगयं) मृदंग वगाडवानी, ९ (समतालं) समतालनी—तानने अनुसार ताल बजाववानी, १० (जूयं) जुगार रमवानी, ११ (जणवायं) लोकोनी साथे प्रतिवाद करवानी, १२ (पासगं) पासा फेंकवानी, १३ (अट्ठावयं) अष्टापद—चोपाट रमवानी, १४ (पोरेकव्वं) आशुकवि थवानी, १५ (दगमट्टियं) माटीमाथी अनेक प्रकारना ठाम बनाववानी, १६ (अण्णविहिं) धान्य आदिने वावीने अन्न आदिकने उत्पन्न करवानी—भोजन बनाववानी, समवायांगमां उक्त 'मधुसित्थं' मधुसिकथनो समावेश अहीं ज करवामा आव्यो छे, १७ (पाणविहिं) पीवाना पदार्थनी विधि जाणवानी, १८

**पहेलियं २१, मागहियं २२, गाहं २३, गीइयं २४, सिलोयं २५,**

'**आभरणविहिं**' इत्यत्र समवायाङ्ग—ज्ञाता—राजप्रश्नीय—जम्बूद्वीपप्रज्ञप्तिवर्णितस्य '**वत्थविहिं**' इत्यस्य, तथा ज्ञाता—राजप्रश्नीय—जम्बूद्वीपप्रज्ञप्तिकथितस्य '**विलेवणविहिं**' इत्यस्य च समावेश १८, '**सयणविहिं**' शयनविधि=शय्यापर्यङ्कादिविधिज्ञानम् १९, '**अज्जं**' आर्यां=मात्राछन्दोरूपां, मात्रासमेलनेन छन्दोनिर्माणविज्ञानम् २०, '**पहेलियं**' प्रहेलिकां = गूढाशयगद्यपद्यमयीं रचनाम् २१, '**मागहियं**' मागधिकां=मगध—देशीयभाषाकवित्वम् २२, '**गाहं**' गाथां=संस्कृतेतरभाषानिबद्धामार्यामेव, कलिङ्गादिदेशभाषा-निबद्धकवित्वविज्ञानं वा २३, '**गीइयं**' गीतिका=पूर्वार्धसदृशोत्तरार्धलक्षणरूपाम् २४, '**सिलोयं**' श्लोकम्=अनुष्टुबादिलक्षणम् २५, '**हिरण्णजुत्तिं**' हिरण्ययुक्तिं=रजतनिर्माण-

की, (**१८आभरणविहिं**) आभरण आदि को बनाने एवं उन्हे यथास्थान धारण करने की, समवायाङ्ग, ज्ञाता, राजप्रश्नीय और जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति मे उक्त '**वत्थविहिं**' वस्त्रविधि का, ज्ञाता, राजप्रश्नीय तथा जम्बूद्वीप में उक्त '**विलेवणविहिं**' विलेपनविधि का समावेश यहीं पर हो जाता है, (**१९ सयणविहिं**) शय्या आदि बनाने की, (**२० अज्जं**) आर्याछन्द-मात्रिक छंदों को रचने की, (**२१ पहेलियं**) प्रहेलिका की, अर्थात् गूढ आशयवाली गद्यपद्यमयी रचना करने की, (**२२ मागहियं**) मागधिकाकी अर्थात मगध—देशकी भाषा में कविता रचने की, (**२३ गाहं**) संस्कृत से भिन्न भाषा में मात्रिक छन्दों में कविता रचने की, अथवा कलिंग आदि देशो की भाषा में निबद्ध कविता के विज्ञान की, (**२४ गीइयं**) पूर्वार्ध के सदृश उत्तरार्ध लक्षणरूप गीतिका छन्द मे काव्य रचने की, (**२५ सिलोयं**) अनुष्टुप् आदि छन्दों मे श्लोकों को रचने की, (**२६ हिरण्णजुत्ति**) चाँदी बनाने की विधि की (**२७ सुव-**

(आभरणविहि) આભરણ આદિ બનાવવાની, સમવાયાગ, જ્ઞાતા, રાજપ્રશ્નીય અને જંબૂદ્વીપ પ્રજ્ઞપ્તિમા ઉક્ત 'वत्थविहि' વસ્ત્રવિધિનો, અને જ્ઞાતા, રાજ-પ્રશ્નીય અને સમવાયાગમા ઉક્ત 'विलेवणविहि' વિલેપનવિધિનો સમાવેશ અહીં જ કરવામા આવ્યો છે. ૧૯ (सयणविहिं) શય્યા આદિ બનાવવાની, ૨૦ (अज्जं) આર્યા છંદ—માત્રિક—છંદો રચવાની, ૨૧ (पहेलियं) પ્રહેલિકાની અર્થાત્ ગૂઢ આશયવાળી ગદ્યપદ્યમયી રચના કરવાની, ૨૨ (मागहियं) માગધી અર્થાત્ મગધ દેશની ભાષામા કવિતા રચવાની, ૨૩ (गाहं) સંસ્કૃતથી જુદી ભાષામા માત્રિક છંદોમાં કવિતા રચ-વાની, અથવા કલિગ આદિ દેશોની ભાષામાં રચિત કવિતાના વિજ્ઞાનની, ૨૪ (गीइयं) પૂર્વાર્ધના જેમ ઉત્તરાર્ધલક્ષણ-રૂપ ગીતિકા છંદમાં કાવ્ય રચવાની, ૨૫ (सिलोयं) અનુષ્ટુપ આદિ છંદોમા શ્લોકો રચવાની, ૨૬ (हिर-

**हिरण्णजुत्तिं २६, सुवण्णजुत्तिं २७, गंधजुत्तिं २८, चुण्णजुत्तिं २९, तरुणीपडिकम्मं ३०. इत्थिलक्खणं ३१, पुरिसलक्खणं ३२, हय-लक्खणं ३३, गयलक्खणं ३४, गोणलक्खणं ३५, कुक्कुडलक्खणं**

विधिम् २६, 'सुवन्नजुत्तिं' सुवर्णयुक्तिं=सुवर्णनिर्माणोपायम् २७, 'गंधजुत्तिं' गन्धयुक्तिं=गन्धद्रव्यनिर्माणविधिम् २८, 'चुन्नजुत्तिं' चूर्णयुक्तिं=वशीकरणान्तर्धानार्थं तत्तदुचितद्रव्याण्येकत्रीकृत्य तत्पिष्टीकरणविधिम् २९, 'तरुणीपडिकम्मं' तरुणीपरिकर्म=युवतीरूपशोभापरिवर्धनविधिम् ३०, 'इत्थिलक्खणं' स्त्रीलक्षणम्=पद्मिनीहस्तिन्यादियुवतीना लक्षणम् ३१. 'पुरिसलक्खणं' पुरुषलक्षणम्=उत्तममध्यमादिपुरुषाणां लक्षणविज्ञानम् ३२, 'हयलक्खण' हयलक्षण-दीर्घग्रीवाक्षिकूटादिलक्षणविज्ञानम्, 'हयलक्खणं' इत्यत्र समवायाङ्गोक्तस्य 'आससिक्खं' इत्यस्य समावेश ३३, 'गयलक्खणं' गजलक्षण=हस्तिशुभाऽशुभलक्षणविज्ञानम्, 'गयलक्खणं' इत्यत्र समवायाङ्गोक्तस्य 'हत्थिसिक्खं' इत्यस्य समावेश ३४, 'गोणलक्खणं' गोलक्षणं- सास्नाविकला अतिरूक्षा मूषिकनयनाश्च न शुभदा गाव' इत्यादिविज्ञानम् ३५, 'कुक्कुडलक्खणं' कुक्कुटलक्षणम्, 'कुक्कुडलक्खणं

न्नजुत्तिं) सुवर्णनिर्माण करने की विधि की, (२८ गंधजुत्तिं) गंधद्रव्य को बनाने की विधि की, (२९ चुन्नजुत्तिं) वशीकरण आदि चूर्ण को बनाने वाली औषधियों को एकत्रित कर उनकी पिण्टी करने की विधि की (३० तरुणीपडिकम्मं) युवती के रूप की शोभा बढ़ाने की विधि की, (३१ इत्थिलक्खणं) पद्मनी, हस्तिनी आदि युवतियों को जानने के लक्षणों की, (३२ पुरिसलक्खणं) पुरुषों को पहिचानने के लक्षणों की, (३३ हयलक्खणं) अश्वों के लक्षणों को जानने की तथा उनको चलाने की (३४ गयलक्खणं) हाथी के लक्षणों को जानने की, यहाँ पर समवायांग में उक्त 'हत्थिसिक्खं' हस्तिशिक्षा कला का समावेश हुआ है, (३५ गोणलक्खणं) गाय के लक्षणों को जानने की, (३६ कुक्कुडलक्खणं) कुक्कुट-

ण्णजुत्तिं) ચાંદી બનાવવાની વિધિની, ૨૭ (सुवन्नजुत्तिं) સુવર્ણ નિર્માણ કરવાની વિધિની, ૨૮ (गंधजुत्तिं) ગન્ધદ્રવ્ય બનાવવાની વિધિની, ૨૯ (चुन्नजुत्तिं) વશીકરણ આદિ ચૂર્ણ બનાવવાની ઔષધીઓને એકઠી કરી તેને પીસવા (વાટી નાખવા)ની વિધિની, ૩૦ (तरुणीपडिकम्मं) યુવતીના રૂપની શોભા વધારવાની વિધિની, ૩૧ (इत्थिलक्खणं) 'પદ્મિની, 'હસ્તિની' આદિ યુવતીઓને જાણવાના લક્ષણોની, ૩૨ (पुरिसलक्खणं) પુરુષોને જાણવાના લક્ષણોની, ૩૩ (हयलक्खणं) ઘોડાના લક્ષણો જાણવાની તથા તેમને ચલાવવાની, ૩૪ (गयलक्खणं) હાથીના લક્ષણો જાણવાની, અહીં સમવાયાંગમાં ઉક્ત 'हत्थि-

**३६, चक्कलक्खणं ३७, छत्तलक्खणं ३८, चम्मलक्खणं ३९, दंडलक्खणं ४०, असिलक्खणं ४१, मणिलक्खणं ४२, कागणिलक्खणं ४३, वत्थुविज्जं ४४, खंधारमाणं ४५, नगरमाणं ४६, चारं**

इत्यत्र समवायाङ्गोक्तस्य '**मिढयलक्खणं**' इत्यस्य समावेशः, उपस्करादौ मेषाणां सादृश्यात्. ३६, '**चक्कलक्खणं**' चक्रलक्षणं=चक्ररत्नगुणदोषविज्ञानम् ३७. '**छत्तलक्खणं**' छत्रलक्षण=छत्रस्य शुभाशुभविज्ञानम् ३८. '**चम्मलक्खणं**' चर्मलक्षण. चर्म—ढाल इति प्रसिद्धं तस्य शुभाशुभलक्षणज्ञानम् ३९, '**दंडलक्खणं**' दण्डलक्षणम्=दण्डस्य शुभाशुभलक्षणविज्ञानम् ४०, '**असिलक्खणं**' असिलक्षणम्='अङ्गुलीशतार्धं उत्तम खड्ग' इत्यादिविज्ञानम ४१, '**मणिलक्खणं**' मणिलक्षणं=रत्नपरीक्षाविज्ञानम ४२, '**कागणिलक्खणं**' काकणीलक्षणम्—चक्रवर्तिनो रत्नविशेषः काकणी, तस्या विषापहरणमानोन्मानादियोगप्रवर्तकत्वादिज्ञानम् ४३, '**वत्थुविज्जं**' वास्तुविद्याम्—वसति अस्मिन्निति वास्तु=गृहादिकं तस्य विद्या=वास्तुशास्त्रप्रसिद्ध गृहभूमिगतदोषगुणविज्ञानम्, '**वत्थुविज्जं**' इत्यत्र समवायाङ्गोक्तयोः '**वत्थुमाणं**' '**वत्थुनिवासं**' इत्यनयोः समावेशः ४४, '**खंधारमाणं**'

मुर्गे के लक्षणों को जानने की, समवायाङ्ग में उक्त '**मिंढयलक्खणं**' (मेंढेका लक्षण) का **समावेश** यहीं हो जाता है। (**३७ चक्कलक्खणं**) चक्ररत्न के गुणदोष जानने की, (**३८ छत्तलक्खणं**) छत्र के शुभाशुभ जानने की, (**चम्मलक्खणं**) ढाल के खोटे—खरे लक्षणों को जानने की, (**४० दंडलक्खणं**) दंड के अच्छे—बुरे लक्षणों को जानने की, (**४१ असिलक्खणं**) तलवार के लक्षणों की, (**४२ मणिलक्खणं**) मणिलक्षण जानने की—रत्नकी परीक्षा करने की, (**४३ कागणीलक्खणं**) चक्रवर्ती के काकणी रत्न को जानने की, (**४४ वत्थुविज्जं**) वास्तु (घर) शास्त्र की, समवायाङ्ग मे उक्त '**वत्थुमाणं**' वास्तुमान और '**वत्थुनिवेशं**' वास्तुनिवेश इन दोनों का यहीं **समावेश** होता है, (**४५ खंधारमाणं**) शत्रु को

सिक्खं' હસ્તિશિક્ષા કળાનો સમાવેશ થયો છે. ૩૫ (**गोणलक्खणं**) ગાયના લક્ષણો જાણવાની, ૩૬ (**कुक्कुडलक्खणं**) કુકકુટ—કુકડાના લક્ષણો જાણવાની, સમવાયાગમા ઉક્ત '**मिंढयलक्खणं**' (ઘેટાનુ લક્ષણનો સમાવેશ અહીં થાય છે. ૩૭ (**चक्कलक्खणं**) ચક્રરત્નના ગુણદોષ જાણવાની, ૩૮ (**छत्तलक्खणं**) છત્રનાં શુભ અશુભ જાણવાની, ૩૯ (**चम्मलक्खणं**) ઢાલનાં ખોટા તથા ખરાં લક્ષણો જાણવાની, ૪૦ (**दंडलक्खणं**) દંડના સારા—નરસા લક્ષણો જાણવાની, ૪૧ (**असिलक्खणं**) તરવારનાં લક્ષણોની, ૪૨ (**मणिलक्खणं**) મણિનાં લક્ષણો જાણવાની, ૪૩ (**कागणीलक्खणं**) ચક્રવતીના કાકણી રત્નને જાણવાની, ૪૪ (**वत्थुविज्जं**)

४७, पडिचारं ४८, वूहं ४९, पडिवूहं ५०, चक्कवूहं ५१, गरुलवूहं

स्कन्धावारमानं-शत्रुं विजेतुं कदा कियत्परिमितं सैन्यं निवेशनीयमिति प्रमाणविज्ञानम्। '**खंधारमाणं**' इत्यत्र समवायाङ्गोक्तस्य '**खंधावारणिवेसं**' इत्यस्य समावेशः '**नगरमाणं**' नगरमानम्-अस्मिन् प्रदेशे कीदृशमायामदैर्ध्योपलक्षितं नगरं निर्मापणीयं, येन विजयशाली भवेयम्, कस्य वर्णस्य कस्मिन् स्थाने निवेशः श्रेष्ठ इति विज्ञानम्, '**नगरमाणं**' इत्यत्र समवायाङ्गोक्तस्य '**नगरणिवेसं**' इत्यस्य समावेशः ४६, '**चारं**' चारं=ज्योतिश्चारविज्ञानम्। '**चारं**' इत्यत्र समवायाङ्गोक्तानां '**चंदलक्खणं**' **सूरचरियं, राहुचरियं, गहचरियं**' इत्येतेषां चतुर्णां समावेशः ४७, '**पडिचारं**' प्रतिचारं=प्रतिवर्त्तितचारम्-इष्टानिष्टफलजनकशान्तिकर्मादिक्रियाविशेषविज्ञानम्, '**पडिचारं**' इत्यत्र '**सोभागकरं, दोभागकरं, विज्जागयं, मंतगयं, रहस्सगयं, समासंचारं**' इत्येतेषां समवायाङ्गोक्तानां षण्णां समावेशः ४८, '**वूहं**' व्यूहं-शकटयाकृतिसैन्यरचनम् ४९, '**पडि-**

जीतने के लिये कितनी सेना होनी चाहिये इस प्रकार सेना के परिमाण को जानने की, यहाँ पर समवायाङ्ग में उक्त '**खंधावारणिवेसं**' स्कन्धावारनिवेश का समावेश होता है। (**४६ नगरमाणं**) इस प्रदेश में कितना लंबा कितना चौड़ा नगर वसाना चाहिये जिससे मै विजयशाली हो सकूं तथा किस वर्ण को किस स्थान में वसाना श्रेष्ठ होगा इन सब बातो के विज्ञान की, समवायाङ्ग में उक्त '**नगरनिवेसं**' नगरनिवेश का अन्तर्भाव यहीं पर हो जाता है। (**४७ चारं**) ज्योतिश्चक्र की, समवायाङ्ग में कथित (**चंदलक्खणं**) चंद्रमा के लक्षण, (**सूरचरियं राहुचरियं गहचरियं**) सूर्य की चाल, राहु की चाल एवं ग्रहो की चाल, इन सबों का समावेश 'चार' में समझना चाहिए। (**४९ पडिचारं**) इष्टानिष्टफलजनक शान्तिकर्म आदि क्रियाविशेषों के विज्ञान की, यहाँ समवायांग कथित "**सोभागकरं दोभागकरं विज्जागयं मंत-**

વાસ્તુ (ઘર) શાસ્ત્રની, સમવાયાંગમાં ઉક્ત "वत्थुमाणं वत्थुनिवेसं" વાસ્તુમાન તેમજ વાસ્તુનિવેશનો સમાવેશ અહીં થાય છે. ૪૫ (खंधारमाणं) શત્રુને જીતવા માટે કેટલી સેના હોવી જોઈએ, એ રીતે સેનાના પરિમાણને (ગણતરી) જાણવાની, સમવાયાંગમાં ઉક્ત 'खंधावारनिवेसं' સ્કંધાવારનિવેશનો અહીં પર સમાવેશ થાય છે; ૪૬ (नगरमाणं) આ પ્રદેશમાં કેવડું લાંબું અને કેટલું પહોળું નગર વસાવવું જોઈએ કે જેથી હું વિજયશાળી થઇ શકું તથા કયા વર્ણ (જાત) ને કયાં સ્થાનમાં વસાવવું શ્રેષ્ઠ થશે એ બધી વાતોના વિજ્ઞાનની, સમવાયાંગમા ઉક્ત 'नगरनिवेसं' નગરનિવેશકળાનો સમાવેશ અહીં થયો છે. ૪૭ (चारं) જ્યોતિશ્ચક્રની, સમવાયાગમા કહેલ

५२, सगडवूहं ५३, जुद्धं ५४, निजुद्धं ५५, जुद्धाइजुद्धं ५६, मुट्ठि-

वूहं' प्रतिव्यूहम्=व्यूहप्रतिपक्षिभूतं व्यूहं—सैन्यरचनाविशेषम् ५०, 'चक्कवूहं' चक्रव्यूहम्=सैन्यस्य चक्राकाररचनाविशेषम् ५१, 'गरुलवूहं' गरुडव्यूहं=गरुडाकृतिसेनानिवेशपरिज्ञानम् ५२, 'सगडवूहं' शकटव्यूहं=शकटाकृतिसैन्यरचनम् ५३, 'जुद्धं' युद्धं=संग्रामम्, 'जुद्धं' इत्यत्र ज्ञाता—समवायाङ्गोक्तस्य 'अट्ठिजुद्धं' इत्यस्य, तथा—समवायाङ्गोक्तस्य 'दंडजुद्धं' इत्यस्य, तथा जम्बूद्वीपप्रज्ञप्तिकथितस्य 'दिट्ठिजुद्धं' इत्यस्य, तथा—राजप्रश्नीयसूत्रोक्तस्य 'असिजुद्धं' इत्यस्य च समावेशः ५४, 'निजुद्धं' नियुद्धं=मल्लयुद्धम् ५५, 'जुद्धाइजुद्धं' युद्धातियुद्धम्=खड्गादिप्रक्षेपपूर्वकं महायुद्धम् ५६, 'मुट्ठिजुद्धं' मुष्टियुद्धम्, योधयोः परस्परं मुष्ट्या हननम् ५७, 'बाहुजुद्धं' बाहुयुद्धम् ५८, 'लयाजुद्धं' लतायुद्धं-

गयं रहस्सगयं सभासंचारं" इस पाठ का समावेश हुआ है। (४९ वूहं) शकट आदि के आकार में सैन्य स्थापित करने की, (५० पडिवूहं) व्यूह के प्रतिपक्षी व्यूह की रचना करने की, (५१ चक्कवूहं) चक्रव्यूह की—सैन्य को चक्राकर रचने की, (५२ गरुलव्वूहं) गरुडव्यूह की—गरुड़ की आकृति के समान सैन्य को रचने की, (५३ सगडवूहं) शकट की आकृति के समान सैन्य को रचने की, (५४जुद्धं) संग्राम करने की, यहाँ पर ज्ञाता, समवायाङ्ग में कथित (अट्ठिजुद्धं) अस्थियुद्ध का, (दंडजुद्धं) दंडयुद्ध का, तथा जंबूद्वीपप्रज्ञप्ति में प्रतिपादित (दिट्ठिजुद्धं) दृष्टियुद्ध का और राजप्रश्नीयसूत्र में बताया गया (असिजुद्धं) तलवार से युद्ध करने का समावेश हुआ है, (५५ निजुद्धं) मल्लयुद्ध की, (५६ जुद्धाइजुद्धं) खड्गादिप्रक्षेपपूर्वक महायुद्ध करने की, (५७ मुट्ठिजुद्धं) मुष्टियुद्ध करने की, (५८ बाहुजुद्धं) बाहु से युद्ध करने की, (५९ लयाजुद्धं) लतायुद्ध की, जिस प्रकार लता

'चंदलक्खणं' ચંદ્રમાના લક્ષણ 'सूरचरियं राहुचरियं गहचरियं' સૂર્યની ચાલ, રાહુની ચાલ તેમજ ગ્રહોની ચાલ એ બધાનો સમાવેશ 'चार' માં સમજવો જોઈએ. ૪૮ (पडिचारं) ઇષ્ટ—અનિષ્ટ ફળજનક શાંતિકર્મ આદિ ક્રિયાવિશેષના વિજ્ઞાનની, અહીં સમવાય અંગમા કહેલ "सोभागकरं, दोभागकरं, विज्जागयं, मंतगयं, रहस्सगयं, सभासंचारं" આ પાઠનો સમાવેશ થયો છે, ૪૯ (वूहं) શકટ [ગાડું] આદિના આકારમાં સૈન્ય સ્થાપિત કરવાની, ૫૦ (पडिवूहं) વ્યૂહના પ્રતિપક્ષી વ્યૂહની રચના કરવાની, ૫૧ (चक्कवूहं) ચક્રવ્યૂહની—સૈન્યને ચક્રાકાર રચવાની, ૫૨ (गरुलवूहं) ગરુડવ્યૂહની—ગરુડની આકૃતિના જેવી સૈન્યરચના કરવાની, ૫૩ (सगडवूहं) શકટની આકૃતિ ના સમાન સૈન્ય રચવાની, ૫૪ (जुद्धं) સંગ્રામ કરવાની, અહીં 'ज्ञाता અને समवायांग' માં કહેલ (अट्ठिजुद्धं) અસ્થિયુદ્ધનો, (दंडजुद्धं) દંડયુદ્ધનો તથા जंबुद्वीप

**जुद्धं ५७, बाहुजुद्धं ५८, लयाजुद्धं ५९, ईसत्थं ६०, छरुप्पवायं ६१, धणुव्वेयं ६२, हिरण्णपागं ६३, सुवण्णपागं ६४, सुत्तखेडं ६५,**

यथा लता वृक्षमारोहन्ती आमूलमाशिरो वृक्षमावेष्टयति, तथा यत्र योधः प्रतियोधशरीरं गाढं निपीडच भूमौ पातयति तल्लतायुद्धम् ५९, '**ईसत्थं**' इषुशास्त्रं=नागबाणादिदिव्यास्त्रसूचकं शास्त्रम्, '**ईसत्थं**' इति प्राकृतशैल्या इषुशास्त्रम् ६०, '**छरुप्पवायं**' क्षुरप्रपातम्, क्षुरः='**क्षुरा**' इति प्रसिद्धः छेदनशस्त्रविशेषः, तस्य प्रपातः=पातनम् ६१, '**धणुव्वेयं**' धनुर्वेदं=धनुशास्त्रम् ६२, '**हिरण्णपागं**' हिरण्यपाकं=रजतसिद्धिं ६३, '**सुवण्णपागं**' सुवर्णपाकं=कनकसिद्धिम्, '**सुवण्णपागं**' इत्यत्र समवायाङ्गराजप्रश्नीयसूत्रोक्तयोः '**मणिपागं धातुपागं**' इत्यनयोः समावेशः ६४, '**सुत्तखेडं**' सूत्रखेलं=सूत्रक्रीडाम् ६५, '**वट्टखेडं**' वृत्तखेलम् ६६, एतत्कलाद्वयं लोकतो बोध्यम्। '**वट्टखेडं**' इत्यत्र '**चम्मखेडं**' चर्मखेलम्—इत्यस्य समवायाङ्गोक्तस्य समावेशः।

वृक्ष पर चढ कर नीचे से ऊपर तक वृक्ष को लपेट लेती है उसी प्रकार योधा जिस युद्ध में प्रतियोधा के शरीर को अत्यन्त पीड़ित कर जमीन पर पटक देते है और उसके ऊपर चढ बैठते है वह लतायुद्ध है उसकी, (६० **ईसत्थं**) इषुशास्त्र की, '**ईसत्थं**' यहां पर प्राकृतशैली से इषुशास्त्र समझना चाहिये। नागबाण आदि दिव्य अस्त्र आदि का सूचक जो शास्त्र है उसका नाम इषुशास्त्र है उस की, (६१ **छुरप्पवायं**) छुरा से युद्ध करने की, (६२ **धणुव्वेयं**) धनुर्वेद की, (६३ **हिरण्णपागं**) रजतसिद्धि की, (६४ **सुवण्णपागं**) सुवर्णसिद्धि की, राजप्रश्नीय एव समवायांग में कथित मणिपाक और धातुपाक का समावेश यहीं करना चाहिये। (६५ **सुत्तखेडं**) सूत्र—डोरा से खेलने की, (६६ **वट्टखेडं**) वर्त्त-रस्सी पर खेलने की, यहाँ पर समवायाङ्गोक्त—(**चम्मखेडं**) चमड़ा से खेलना—इसका भी समावेश

प्रज्ञप्ति માં પ્રતિપાદન કરેલ (दिट्ठिजुद्धं) દષ્ટિયુદ્ધનો અને 'राजप्रश्नीय' સૂત્રમાં બતાવેલ (असिजुद्धं) તલવારથી યુદ્ધ કરવાનો સમાવેશ થયેલો છે. ૫૫ (निजुद्धं) મલ્લયુદ્ધની, ૫૬ (जुद्धाइजुद्धं) ખડ્ગ આદિ પ્રક્ષેપપૂર્વક [ઘા મારીને] મહાયુદ્ધ કરવાની, ૫૭ (मुट्ठिजुद्धं) મુષ્ટિયુદ્ધ કરવાની, ૫૮ (बाहुजुद्धं) બાહુથી યુદ્ધ કરવાની, ૫૯ (लयाजुद्धं) લતાયુદ્ધની, જે રીતે લતા [વેલ] વૃક્ષ ઉપર ચડીને નીચેથી ઉપર સુધી વૃક્ષને લપેટી લે છે તેવી જ રીતે યોધા જે યુદ્ધમાં સામેના યોધાના શરીરને ગાઢરૂપથી પીડા કરી જમીન ઉપર પાડી દે છે અને તેના ઉપર ચડી બેસે છે તે લતાયુદ્ધ છે, તેની; ૬૦ (ईसत्थं) ઈષુશાસ્ત્રની, 'ईसत्थं' અહીં પ્રાકૃત શૈલીથી ઈષુશાસ્ત્ર સમજી લેવું જોઈએ. નાગબાણ આદિ દિવ્ય અસ્ત્ર આદિનું સૂચક જે શાસ્ત્ર છે તેનું નામ ઈષુશાસ્ત્ર છે. તેની, ૬૧ (छुरप्पवायं) છરાથી યુદ્ધ કરવાની, ૬૨ (धणुव्वेयं) ધનુર્વેદની, ૬૩ (हिरण्णपागं) રજતસિદ્ધિની, ૬૪ (सुवण्णपागं) સુવર્ણસિદ્ધિની, 'राजप्रश्नीय'

**वट्टखेडं ६६, णालियाखेडं ६७, पत्तच्छेज्जं ६८, कडच्छेज्जं ६९, सज्जीवं ७०, निज्जीवं ७१, सउणरुय ७२-मिति बावत्तरिकलाओ सेहावित्ता सिक्खावेत्ता अम्मापिईणं उवणेहिति ॥ सू० ४६ ॥**

**'नालियाखेडं'** नालिकाखेलम्=द्यूतविशेषम्—मा भूदिष्टदायाद् विपरीतपाशकनिपतनमिति नालिकायां यत्र पाशक पात्यते। यद्यपि द्यूते एवास्य समावेशो भवितुमर्हति तथापि नालिकाखेलप्राधान्यज्ञापनार्थं भेदेन ग्रहणम् ६७, **'पत्तच्छेज्जं'** पत्रच्छेद्यम्=अष्टोत्तरशतपत्राणां मध्ये विवक्षितसंख्याकपत्रच्छेदने हस्तलाघवम् ६८, **'कडच्छेज्जं'** कडच्छेद्यम्—कट (चटाई)-वत् क्रमाच्छेद्यं वस्तु यत्र विज्ञाने तत्तथा तत् ६९, **'सज्जीवं'** सजीवं=सजीवकरणं—मृतधात्वादीनां सहजस्वरूपापादनम् ७०, **'निज्जीवं'** निर्जीवं=निर्जीवकरणम्—हेमादिधातुमारणं पारदमारणं वा ७१, **'सउणरुयं'** शकुनरुतम्, अत्र शकुनपदं रुतपदं चोपलक्षणम्, तेन सर्वशकुनसंग्रहः, गतिचेष्टादिशवलोकनादिपरिग्रहश्च ७२, **'इति बावत्तरिकलाओ'** इति द्वासप्ततिकलाः=द्वासप्ततिपुरुषकलाः **'सेहावित्ता सिक्खावेत्ता'** सेधयित्वा शिक्षयित्वा च **'अम्मापिईणं उवणेहिति'** मातापित्रोरुपनेष्यति=समर्पयिष्यति ॥ सू. ४६ ॥

हुआ है। (६७ **नालियाखेडं**) द्यूतविशेष खेलने की—नालिका में पाशे डालकर जुआ खेलने की, (६८ **पत्तच्छेज्जं**) पत्र छेदन करने की, १०८ पत्रों में से विवक्षित पत्र को छेदन करने में हाथ की कुशलता की, (६९ **कडच्छेज्जं**) कट की अर्थात् चटाई की तरह क्रम २ से छेदन करने की, (७० **सज्जीवं**) मारी हुई धातुओं को पुनः प्रकृतिस्थ करने की, (७१ **निज्जीवं**) निर्जीव करने की—हेमादिक धातुओं को मारने की, अथवा पारे को मारने की, (७२ **सउणरुयं**) पक्षियों के शब्द पहिचानने की उनकी गति, चेष्टा एवं अवलोकन आदि जानने की कला, (**इति बावत्तरिकलाओ सेहावित्ता सिक्खावेत्ता अम्मापिईणं**

તેમજ 'समवायांग'માં કહેલ મણિપાક અને ધાતુપાકનો સમાવેશ અહીં કરવો જોઈએ. ६५ (सुत्तखेडं) સૂત્ર—દોરાથી રમવાની, ६६ (वट्टखेडं) વર્ત—દોરડા પર રમવાની, અહીં સમવાયાંગમાં કહેલ (चम्मखेडं) 'ચામડાથી ખેલવું' એનો પણ સમાવેશ કર્યો છે ६७ (नालियाखेडं) દ્યૂતવિશેષ રમવાની—નાલિકામાં પાસા નાખીને જુગાર રમવાની, ६८ (पत्तच्छेज्जं) પત્ર કાપવાની, १०८ પત્રોમાંથી વિવક્ષિત પત્રો કાપવામાં હાથની કુશળતા ની, ६९ (कडच्छेज्जं) કટની—અર્થાત્ ચટાઈની પેઠે ક્રમક્રમથી છેદન કરવાની, ७० (सज्जीवं) મારેલી ધાતુઓને ફરીને પ્રકૃતિસ્થ કરવાની, ७१ (निज्जीवं) નિર્જીવ કરવાની—હેમ આદિક ધાતુઓને મારવાની, અથવા પારાને મારવાની ७२ (सउणरुयं) પક્ષિઓના શબ્દ સમજવાની, તેમની ગતિ, ચેષ્ટા તેમજ અવલોકન આદિ જાણવાની કળા. (इति बावत्तरिकलाओ सेहावित्तां सिक्खावित्ता

**मूलम्—तए णं तस्स दढपइण्णस्स दारगस्स अम्मा-पियरो तं कलायरियं विउलेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं वत्थ-गंध-मल्ला-लंकारेण य सक्कारेहिंति सम्माणेहिंति, सक्का-**

टीका—'तए णं' इत्यादि। '**तए णं तस्स दढपइण्णस्स दारगस्स अम्मापियरो तं कलायरियं**' ततः खलु तस्य दृढप्रतिज्ञस्य दारकस्य अम्बापितरौ तं कलाचार्यं '**विउलेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं**' विपुलेनाऽशनपानखाद्यस्वाद्येन '**वत्थ-गंध-मल्ला-लंकारेण य सक्कारेहिंति सम्माणेहिंति**' वस्त्रगन्धमाल्यालङ्कारेण च सत्कारयिष्यतः सम्मानयिष्यतः—सुगमानि पदानि वाक्यानि च। '**सक्कारित्ता सम्माणित्ता**' सत्कृत्य समान्य '**विउलं जीवियारिहं पीइदाणं दलइस्संति**' विपुलं जीवि-

उवणेहिंति) ये ७२ कलायें पुरुषकी हैं, इन कलाओं की शिक्षा कलाचार्य उसे देगा, पश्चात् वह उसे उसके मातापिता के पास लाकर सौप देगा ॥ सू. ४६ ॥

'**तए णं तस्स**' इत्यादि।

(**तए णं**) इसके बाद (**तस्स दढपइण्णस्स दारगस्स**) उस दृढ प्रतिज्ञकुमार के (**अम्मापियरो**) मातापिता (**तं कलायरियं**) उस कलाचार्य का (**विउलेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं वत्थ-गंध-मल्ला-लंकारेण य सक्कारेहिंति**) विपुल, अशन, पान, खादिम, स्वादिम, वस्त्र, गंध, एवं माला तथा अलंकारो के प्रदान से खूब सत्कार करेंगे। (**सम्माणेहिंति**) खूब सन्मान करेंगे। (**सक्कारित्ता सम्माणित्ता**) सत्कार एवं सन्मान करके पश्चात् वे उसे (**विउलं जीवियारिहं पीइदाणं दलइस्संति**)

अम्मापिईणं उवणेहिंति) આ ૭૨ કળાઓ પુરુષની છે. એ કળાઓની કલાચાર્ય તેને શિક્ષા આપશે. પછી તે તેને તેના માતાપિતાની પાસે લાવીને સોપી દેશે (સૂ૦ ૪૬)

'तए णं तस्स' ઇત્યાદિ.

(तए णं) ત્યાર પછી (तस्स दढपइण्णस्स दारगस्स) તે દઢપ્રતિજ્ઞ કુમારના (अम्मापियरो) માતાપિતા (तं कलायरियं) તે કલાચાર્યને (विउलेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं वत्थ-गंध-मल्ला-लंकारेण य सक्कारेहिंति) વિપુલ અશન, પાન, ખાદિમ, સ્વાદિમ, વસ્ત્ર, ગંધ તેમજ માલા તથા અલંકારો આપીને ખૂબ સત્કાર કરશે, (सम्माणेहिंति) ખૂબ સન્માન કરશે. (सक्कारित्ता सम्माणित्ता) સત્કાર તેમજ સન્માન કરીને પછી તેઓ તેને (विउलं जीवियारिहं पीइदाणं

रित्ता सम्माणित्ता विउलं जीवियारिहं पीइदाणं दलइस्संति, दल-इत्ता पडिविसज्जेहिंति ॥ सू० ४७ ॥

मूलम्—तए णं से दढपइण्णे दारए बावत्तरिकला-पंडिए नवंगसुत्तपडिबोहिए अट्ठारसदेसभासाविसारए गीयरई

काऽऽर्हं प्रीतिदानं दास्यतः, 'दलइत्ता' दत्त्वा 'पडिविसज्जेहिंति' प्रतिविस-र्जयिष्यत. ॥ सू० ४७ ॥

टीका—'तए णं' इत्यादि। 'तए णं से दढपइण्णे दारए' ततः खलु स दृढप्रतिज्ञो दारकः 'बावत्तरिकलापंडिए' द्वासप्ततिकलापण्डितः 'नवंगसुत्तपडि-बोहिए' नवाङ्गसुप्तप्रतिबोधितः-नवाङ्गानि=द्वे श्रोत्रे, द्वे नेत्रे, द्वे घ्राणे, एका च जिह्वा, त्वगेका, मनश्चैकमिति, तानि सुप्तानीव सुप्तानि—बाल्यादव्यक्तचेतनानि तानि प्रतिबोधितानि=यौवनेन व्यक्तचेतनावन्ति कृतानि यस्य स तथा। 'गीयरई' गीतरतिः=गानप्रियः, 'गंधव्व-णट्ट-

विपुल रूप में जीविका के योग्य प्रीतिदान देंगे, (दलइत्ता पडिविसज्जेहिंति) और देकर उसे विसर्जित कर देंगे ॥ सू. ४७ ॥

'तए णं से दढपइण्णे दारए' इत्यादि।

(तए णं) इस के बाद (से) वह (दढपइण्णे) दृढप्रतिज्ञ (दारए) कुमार (बावत्तरिकलापंडिए) बहत्तर कलाओं में पडित (नवंगसुत्तपडिबोहिए) एवं सुप्त नवांगों—२ कान, २ नेत्र, २ नासिका के छिद्र, १ जिह्वा, १ स्पर्शन इन्द्रिय और मन के प्रतिबोध—जागृति से युक्त—यौवनावस्था सपन्न होकर, (अट्ठारसदेसभासाविसारए) १८ देशों की भाषा का ज्ञाता होगा, (गीयरई गंधव्वणट्टकुसले) यह कुमार गीत में

दलइस्सति) વિપુલ રૂપમાં જીવિકાને યોગ્ય પ્રીતિદાન આપશે. (दलइत्ता पडिवि-सज्जेहिंति) અને આપીને તેમનું વિસર્જન કરી દેશે. (सू. ४७)

'तए णं से दढपइण्णे दारए' ઈત્યાદિ.

(तए णं) ત્યાર પછી (से) તે (दढपइण्णे) દૃઢપ્રતિજ્ઞ (दारए) કુમાર (बावत्तरिकलापंडिए) બોઉંતેર કળાઓમાં પંડિત (नवंगसुत्तपडिबोहिए) તેમજ સુપ્ત નવ અંગો—૨ કાન, ૨ નેત્ર, ૨ નાસિકાનાં છિદ્ર, ૧ જીભ ૧ સ્પ-ર્શન ઇંદ્રિય અને મનના પ્રતિબોધ—જાગૃતિથી યુક્ત—યૌવનાવસ્થા સપન્ન થઈને (अट्ठारसदेसभासाविसारए) ૧૮ દેશોની ભાષાનો જ્ઞાતા થશે. (गीयरई

गंधव्वणट्टकुसले हयजोही गयजोही रहजोही बाहुजोही बाहुप्पमद्दी वियालचारी साहसिए अलं भोगसमत्थे यावि भविस्सइ ॥ सू० ४८ ॥

मूलम्---तए णं दढपइण्णं दारगं अम्मापियरो बाव-

कुसले' गान्धर्व-नाट्यकुशलः-गान्धर्वे=गीतविद्यायां नाट्ये=नाट्यशास्त्रे च कुशलः=निपुणः, 'अट्ठारस-देसभाषा-विसारए' अष्टादश-देश-भाषा-विशारदः, 'हयजोही' हयजोधी-हयेन=अश्वेन युध्यते तच्छीलो हययोधी, एवं 'गयजोही रहजोही बाहुजोही' गजयोधी रथयोधी बाहुयोधी-ज्ञातव्य 'बाहुप्पमद्दी' बाहुप्रमर्दी-बाहुभ्यां प्रमृद्नाति तच्छीलो बाहुप्रमर्दी, 'वियालचारी' विकालचारी-निर्भयत्वाद्विकाले रात्रावपि चरति तच्छीलो विकालचारी, अत एव 'साहसिए' साहसिक'=अतिशूर', 'अलं भोगसमत्थे' अलम्भोगसमर्थ'--अलम्=अत्यर्थं भोगानुभवसमर्थः 'यावि भविस्सइ' चापि भविष्यति ॥ सू० ४८ ॥

टीका—'तए णं' इत्यादि। 'तए णं दढपइण्णं दारयं' तत खलु दढ-

अनुराग वाला तथा गान्धर्वविद्या में और नृत्यकला में कुशल होगा। (हयजोही गयजोही रहजोही बाहुजोही) यह अश्वयोधी, गजयोधी, रथयोधी और बाहुयोधी होगा। (बाहुप्पमद्दी वियालचारी साहसिए) यह बाहुप्रमर्दी होगा और अति शूर होगा; इस लिये इसे विकाल रात्रि में भी आने-जाने में कोई भय नहीं होगा। (अलं भोगसमत्थे यावि भविस्सइ) तथा यह भोगसमर्थ भी होगा ॥ सू. ४८ ॥

'तए णं दढपइण्णं दारगं' इत्यादि।

(तए णं) बाद में (दढपइण्णं दारगं) इस अपने दढप्रतिज्ञ बालक को

गंधव्व-णट्ट-कुसले) એ કુમાર ગીતમાં, ગાંધર્વવિદ્યામા અને નૃત્યકળામા કુશળ થશે. (हयजोही गयजोही रहजोही बाहुजोही) એ અશ્વયોધી, ગજયોધી, રથયોધી, અને બાહુયોધી થશે. (बाहुप्पमद्दी वियालचारद्दी साहसिए) એ બાહુપ્રમર્દી થશે અને અતિ શૂરવીર થશે. આ માટે તેને વિકાળ રાત્રિમા પણ આવવા-જવામાં કોઈ જાતનો ભય થશે નહિ. (अलं भोगसमत्थे यावि भविस्सइ) તથા આ ભોગસમર્થ પણ થશે. (સૂ. ૪૮)

'तए णं दढपइण्णं दारगं' ઇત્યાદિ.

(तए णं) ત્યાર પછી (दढपइण्णं दारगं) આ પોતાના દઢપ્રતિજ્ઞ બાળકને

त्तरिकलापंडियं जाव अलं भोगसमत्थं वियाणित्ता विउलेहिं अण्णभोगेहिं पाणभोगेहिं वत्थभोगेहिं सयणभोगेहिं उवणिमंतेहिंति ॥ सू० ४९ ॥

मूलम्—तए णं से दढपइण्णे दारए तेहिं विउलेहिं अण्ण-

---

प्रतिज्ञं दारकम् 'अम्मापियरो' मातापितरौ 'बावत्तरिकलापंडियं' द्वासप्ततिकलापण्डितं 'जाव' यावत्—अत्र—यावच्छब्दाद्—अष्टादशदेशभाषाविशारदं गीतरतिं गान्धर्वनाट्यकुशलं हययोधिनम्—इत्यादीनि विशेषणानि द्वितीयैकवचनान्तानि ज्ञेयानि। 'अलं भोगसमत्थं' अलं भोगसमर्थम्—अलम्=अत्यर्थं भोगानुभवसमर्थं 'वियाणित्ता' विज्ञाय 'विउलेहिं अण्णभोगेहिं' विपुलैरन्नभोगैः 'पानभोगेहिं' पानभोगैः 'लेणभोगेहिं' लयनभोगैः—चित्रशालाद्यावासनवनवाभोगैः 'वत्थभोगेहिं' वस्त्रभोगैः, 'सयणभोगेहिं' शयनभोगैः 'उवणिमंतेहिंति' उपनिमन्त्रयिष्यतः=भोगान् भुङ्क्ष्व—इति कथयिष्यतः ॥ सू० ४९ ॥

टीका—'तए णं' इत्यादि। 'तए णं से दढपइण्णे दारए' ततः खलु

---

(अम्मापियरो) मातापिता (बावत्तरिकलापंडियं जाव अलंभोगसमत्थं) ७२ कलाओ में पारंगत तथा नवयौवनशाली एवं भोग भोगने में समर्थ जानकर उसे (विउलेहिं) विपुल (अण्णभोगेहिं) अन्न के भोगों से, (पाणभोगेहिं) पान करने योग्य द्रव्यों के भोगों से, (लेणभोगेहिं) विविध चित्रों से सुशोभित प्रासाद के भोगों से, (वत्थभोगेहिं) सुन्दर २ वस्त्रों को इच्छानुसार पहरने रूप भोगों से एवं (सयणभोगेहिं) शय्या आदि के भोगों से (उवणिमंतेहिंति) आमंत्रित करेंगे, अर्थात् 'भोगों को भोगो' ऐसा उससे कहेंगे ॥ सू. ४९ ॥

---

(अम्मापियरो) માતાપિતા (बावत्तरिकलापंडियं जाव अलं भोगसमत्थं) ७२ કળાઓમાં પારંગત અને નવયૌવનશાળી તેમજ ભોગ ભોગવવામાં સમર્થ જાણીને તેને (विउलेहिं) વિપુલ (अण्णभोगेहिं) અન્નના ભોગોથી (पाणभोगेहिं) પાન કરવાને યોગ્ય દ્રવ્યના ભોગોથી (लेणभोगेहिं) વિવિધ ચિત્રોથી સુશોભિત પ્રાસાદ (મહેલ)ના ભોગોથી (वत्थभोगेहिं) સુંદર સુંદર વસ્ત્રોને ઇચ્છાનુસાર પહેરવા-રૂપ ભોગોથી તેમજ (सयणभोगेहिं) શય્યા આદિના ભોગોથી (उवणिमंतेहिंति) આમંત્રિત કરશે, અર્થાત્ 'ભોગોને ભોગવો' એમ તેને કહેશે. (સૂ. ૪૯)

भोगेहिं जाव सयणभोगेहिं णो सज्जिहिति, णो रज्जिहिति, णो गिज्झिहिति, णो मुज्झिहिति, णो अज्झोववज्जिहिति ॥ सू० ५० ॥

मूलम्—से जहाणामए उप्पले इ वा पउमे इ वा कुसु-

स दृढप्रतिज्ञो दारकः 'तेहिं विउलेहिं अण्णभोगेहिं जाव सयणभोगेहिं' तैर्विपुलैरन्नभोगैर्यावच्छयनभोगैः—अत्र यावच्छब्दात्पानलयनवस्त्रभोगैरिति ग्राह्यम्, 'णो सज्जिहिति' नो सङ्क्ष्यति—न सङ्गं=सम्बन्धं करिष्यति, 'णो रज्जिहिति' नो रङ्क्ष्यति—न रागं=प्रेम भोगसम्बन्धहेतुं करिष्यति, 'णो गिज्झिहिति' नो गर्धिष्यते=नो गृद्धिभावं करिष्यति, 'णो मुज्झिहिति' नो मोहिष्यति=मोहं न करिष्यति. 'णो अज्झोववज्जिहिति' नो अध्युपपत्स्यते=न तदेकाग्रमना भविष्यति ॥ सू० ५० ॥

टीका—'से जहाणामए' इत्यादि। 'से जहाणामए' अथ यथा नाम

'तए णं से दढपइण्णे' इत्यादि।

(तए णं) माता–पिता के इन वचनों को सुनने के वाद (से दढपइण्णे दारए) वह दृढप्रतिज्ञ कुमार (तेहिं विउलेहिं अण्णभोगेहिं जाव सयणभोगेहिं णो सज्जिहिति) उन अन्न आदि विपुल भोगों में बिलकुल ही आसक्तचित्त नहीं होगा। (णो रज्जिहिति) अनुरक्त नहीं होगा। (णो गिज्झिहिति) उनमें गृद्ध नहीं होगा, (णो मुज्झिहिति) मूर्च्छित नहीं होगा, और (णोअज्झोववज्जिहिति) न उनमें सर्वथा एकाग्रमन ही होगा ॥ सू. ५० ॥

'से जहाणामए' इत्यादि।

इस सूत्र में "इ वा" ये शब्द वाक्यालंकार में प्रयुक्त हुए है। (से जहाणा-

'तए णं से दढपइण्णे' ઇત્યાદિ.

(तए णं) માતાપિતાનાં એવાં વચન સાંભળ્યા પછી, (से दढपइण्णे दारए) તે દૃઢપ્રતિજ્ઞ કુમાર (तेहिं विउलेहिं अण्णभोगेहिं जाव सयणभोगेहि णो सज्जिहिति) તે અન્ન આદિ વિપુલ ભોગોમાં બિલકુલ જ મનની આસક્તિ રાખશે નહિ, (णो रज्जिहिति) અનુરક્ત થશે નહિ, (णो गिज्झिहिति) તેમાં ગૃદ્ધ થશે નહિ, (णो मुज्झिहिति) મૂર્ચ્છિત થશે નહિ અને તેમાં (णोअज्झोववज्जिहिति) સર્વથા એકાગ્રમન પણ થશે નહિ. (સૂ. ૫૦)

'से जहाणामए' ઈત્યાદિ.

આ સૂત્રમાં "इ वा" એ શબ્દ વાકયાલંકારરૂપે વપરાયો છે. (से जहा-

मे इ वा नलिणे इ वा सुभगे इ वा सुगंधे इ वा पोंडरीए इ वा महापोंडरीए इ वा सयसपत्ते इ वा सहस्सपत्ते इ वा सयसहस्सपत्ते इ वा पंके जाए जले संवुड्ढे णोवलिप्पइ पंकरएणं, णोवलिप्पइ

'उप्पले इ वा' उत्पलं—रक्तकमलम्, 'इवा' इति वाक्यालङ्कारे 'पउमे इ वा' पद्मम्—कमलमेव, 'कुसुमे इ वा' कुसुमम्, 'नलिणे इ वा' नलिनम्, 'सुभगे इ वा' सुभगं—कमलविशेषः 'सुगधे इ वा' सुगन्धम्=सन्ध्याविकासिकमलविशेषः, 'पोंडरीए इ वा' पुण्डरीकं=श्वेतकमलम्, 'महापोंडरीए इ वा' महापुण्डरीकं=विशाल श्वेतकमलम्, 'सयपत्ते इ वा' शतपत्रम्=कमलम्, 'सहस्सपत्ते इ वा' सहस्रपत्रम्, 'सयसहस्सपत्ते इ वा' शतसहस्रपत्रम्, एतानि सर्वाणि कमलजातीयान्येव। एतत्प्रत्येकम्—'पंके जाये' पङ्के जातम्=कर्दमे समुत्पन्नं 'जले संवुड्ढे' जले संवृद्धम्, 'णोवलिप्पइ पंकरएणं' नोपलिप्यते पङ्करजसा—पङ्कः=कर्दम स एव रजो रेणुतुल्यत्वात्, तेन नोपलिप्यते=उपलिप्तं न भवतीत्यर्थः। 'णोवलिप्पइ जल-

मए) जैसे (उप्पले इ वा) रक्त कमल, (पउमे इ वा) पद्मकमल (कुसुमे इ वा) कुसुम—पुष्प, (नलिणे इ वा) नलिन—कमलविशेष, (सुभगे इ वा) सुभग कमल, (सुगंधे इ वा) सुगंधकमल—सन्ध्याकालविकासी सौगन्धिक कमल, (पोंडरीए इ वा) पुण्डरीक—श्वेतकमल, (महापोंडरीए इ वा) महापुंडरीक—विशाल श्वेतकमल, (सयपत्ते इ वा) शतपत्र कमल, (सहस्सपत्ते इ वा) सहस्रपत्र कमल, (सयसहस्सपत्ते इ वा) लक्षपत्र कमल, ये सब कमल की जातियां हैं। (पंके जाए) ये कीचड़ उत्पन्न होते है, (जले संवुड्ढे) तथा जल में बढते है, तो भी (णोवलिप्पइ पंकरएणं णोवलिप्पइ जलरएणं) पंक की रज से वे लिप्त नहीं होते है और न जल की रज से—बिन्दुओं से लिप्त

णामए) જેમકે (उप्पले इ वा) રક્ત કમળ, (पउमे इ वा) પદ્મ કમળ, (कुसुमे इ वा) કુસુમ-પુષ્પ, (नलिणे इ वा) નલિન—કમળવિશેષ, (सुभगे इ वा) સુભગ કમળ, (सुगंधे इ वा) સુગંધ કમળ—સંધ્યાકાળે વિકાસ પામે તેવુ સુગંધવાળું કમળ, (पोंडरीए इ वा) પુંડરીક—શ્વેત કમળ, (महापोंडरीए इ वा) મહાપુંડરીક—વિશાળ-શ્વેત કમળ (सयपत्ते इ वा) શતપત્ર કમળ, (सहस्सपत्ते इ वा) સહસ્રપત્ર કમળ, (सयसहस्सपत्ते इ वा) લક્ષપત્ર કમળ, એ બધી કમળની જાતિઓ છે. (पंके जाए) તે કીચડમાં ઉત્પન્ન થાય છે, (जले संवुड्ढे) તથા જલમાં વધે છે, તે પણ (णोवलिप्पइ पंकरएणं व णालिप्पइ जलरएणं) કીચડની રજથી તેઓ લિપ્ત થતા નથી, તેમજ જલનાં ટીપાથી એ લિપ્ત થતા નથી, (एवामेव से दढप-

जलरएणं, एवामेव दढपइण्णेवि दारए कामेहिं जाए भोगेहिं संवुड्ढे णोवलिप्पिहिति कामरएणं, णोवलिप्पिहिति भोगरएणं, णोवलिप्पिहिति मित्तणाइणियगसयणसंबंधिपरिजणेणं ॥ सू० ५१ ॥

मूलम्—से णं तहारूवाणं थेराणं अंतिए केवलं

रएणं' नोपलिप्यते जलरजसा 'एवामेव दढपइण्णेवि दारए' एवमेव दढप्रतिज्ञोऽपि दारकः, 'कामेहिं जाए भोगेहिं संवुड्ढे' कामैर्जातो भोगैः संवृद्धः 'णोवलिप्पिहिति' नोपलेप्स्यते, 'कामरएणं' कामरजसा—कामः=शब्दो रूपं च, स एव रजः कामरजस्तेन, 'णोवलिप्पिहिति' नोपलेप्स्यते 'भोगरएणं' भोगरजसा—भोगः=गन्धो रसः स्पर्शश्च, स एव रजो भोगरजस्तेन, 'णोवलिप्पिहिति मित्त–णाइ–णियग–सयण–संबंधि–परिजणेणं' नोपलेप्स्यते मित्र–ज्ञाति–निजक–स्वजन–सम्बन्धि–परिजनेन–मित्राणि=सुहृदः, ज्ञातयः=सजातीयाः, निजकाः=भ्रातुष्पुत्रादयः, स्वजनाः=मातुलादयः, सम्बन्धिनः=श्वशुरादयः, परिजनाः=भृत्यादयः, एतैर्न लिप्तो भविष्यति ॥ सू. ५१ ॥

होते हैं; (एवामेव से दढपइण्णे वि दारए) इस तरह वह दृढप्रतिज्ञ कुमार भी (कामेहिं) कामों से—काम सेवन से (जाए) उत्पन्न होगा, (भोगेहिं संवुड्ढे) भोगों से वृद्धिंगत होगा, तो भी वह (कामरएणं) काम रजसे (णोवलिप्पिहिति) उपलिप्त नहीं होगा, (भोगरएणं णोवलिप्पिहिति) भोगरज से उपलिप्त नहीं होगा। गंध, रस, स्पर्श इन गुणों का नाम भोग है। शब्द तथा रूप का नाम काम है। भोगरज एवं कामरज, इनमें रूपकालंकार है। (णोवलिप्पिहिति मित्त–णाइ–णियग–सयण–संबंधि–परिजणेणं) इसी तरह वह मित्र–सुहृद्, ज्ञाति–सजातीय, निजक–भतीजा आदि, स्वजन–मामा आदि, संबंधी–श्वशुर आदि एवं परिजन–भृत्य आदि परिकरों के साथ भी मोह को प्राप्त नहीं होगा ॥ सू. ५१ ॥

इण्णे वि दारए) तेवीज रीते ते दृढप्रतिज्ञ कुमार पण (कामेहिं) कामोथी–काम सेवनथी (जाए) उत्पन्न थशे, (भोगेहिं संवुड्ढे) भोगोथी वृद्धिंगत थशे, तो पण ते (कामरएणं) कामरजथी (णोवलिप्पिहिति) उपलिप्त थशे नहि. (भोगरएणं णोवलिप्पिहिति) भोगरजथी उपलिप्त थशे नहि. गंध, रस, स्पर्श ए गुणोनुं नाम भोग छे. शब्द तथा रूपनुं नाम काम छे. भोगरज तेमज कामरज एमां रूपक–अलंकार छे. (णोवलिप्पिहिति मित्त–णाइ–णियग–सयण–संबंधि–परिजणेणं) आवी रीते ते मित्र–सुहृद, ज्ञाति–सजातीय, निजक–भ्रातृपुत्र (भत्रीजो) आदि, स्वजन–मामा आदि, संबंधी–श्वशुर आदि तेमज परिजन–नोकर आदि परिकरो–परिवारो साथे पण मोहने प्राप्त करशे नहि. (सू. ५१)

बोहिं बुज्झिहिति, बुज्झित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइ-हिति ॥ सू० ५२ ॥

मूलम्—से णं भविस्सइ अणगारे भगवंते ईरियास-मिए जाव गुत्तबंभयारी ॥ सू० ५३ ॥

टीका—'से णं' इत्यादि। 'से णं' स दृढप्रतिज्ञः खलु 'तहारूवाणं' तथारूपाणां=सम्यग्ज्ञानादिसम्पन्नानां 'थेराणं' स्थविराणाम्, 'अंतिए' अन्तिके=समीपे 'केवलं बोहिं' केवलां बोधिं=विशुद्धं सम्यगदर्शनं 'बुज्झिहिति' भोत्स्यते=ज्ञास्यति, अनुभविष्यतीत्यर्थः, 'बुज्झित्ता' बुद्ध्वा 'अगाराओ' अगारात्=गृहात्—गृहं परित्यज्येत्यर्थः, 'अणगारियं' अनगारितां=साधुत्वं 'पव्वइहिति' प्रव्रजिष्यति=प्राप्स्यति ॥ सू. ५२ ॥

टीका—'से णं' इत्यादि। 'से णं' स खलु दृढप्रतिज्ञो दारकः 'भविस्सइ अणगारे' अनगारो भविष्यतीत्यन्वयः, स कीदृशो भविष्यतीत्याह 'भगवंते' भगवान्=अतिशयधारी, 'ईरियासमिए' ईर्यासमितः=गमनक्रियायां यतनायुक्तः, 'जाव' यावत्—यावच्छब्दात्—भाषासमितः, एषणासमितः, इत्यादि पञ्चसमितियुक्तः, 'गुत्तबंभयारी' गुप्तब्रह्मचारी=गुप्तब्रह्मचर्यवान् ॥ सू. ५३ ॥

'से णं तहारूवाणं' इत्यादि।

(से णं) वह दृढप्रतिज्ञ कुमार नियम से (तहारूवाणं थेराणं) तथारूप-सम्यग्ज्ञान आदि गुणों से युक्त स्थविरों के (अंतिए) पास (केवलं बोहिं) केवल बोधि को—विशुद्ध सम्यग्दर्शन को (बुज्झिहिति) प्राप्त करेगा—उसका अनुभव करेगा, (बुज्झित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइहिति) अनुभव करने के बाद फिर वह अगार—अवस्था से विरक्त हो कर साधु अवस्था को प्राप्त करने वाला होगा ॥ सू. ५२ ॥

'से णं भविस्सइ' इत्यादि।

(से णं) वह दृढप्रतिज्ञ कुमार (अणगारे भगवंते) अनगार भगवन्त

'સે ણં તહારૂવાણં' ઇત્યાદિ.

(સે ણં) તે દૃઢપ્રતિજ્ઞ કુમાર નિયમથી (तहारूवाणं थेराणं) તથારૂપ સમ્યગ્જ્ઞાન આદિ ગુણોથી યુક્ત સ્થવિરોની (अंतिए) પાસે (केवलं बोहिं) એક કેવળ વિશુદ્ધ સમ્યગ્દર્શનને (बुज्झिहिति) પ્રાપ્ત કરશે—તેનો અનુભવ કરશે, (बुज्झित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइहिति) અનુભવ કરી લીધા પછી તે અગાર—અવસ્થાથી વિરક્ત થઈને સાધુ—અવસ્થાને પ્રાપ્ત કરવાવાળો થશે. (સૂ. ૫૨)

'से णं भविस्सइ' ઇત્યાદિ.

(સે ણં) તે દૃઢપ્રતિજ્ઞ કુમાર (अणगारे भगवंते) અનગાર ભગવન્ત (भवि-

**मूलम्—तस्स णं भगवंतस्स एएणं विहारेणं विहरमाणस्स अणंते अणुत्तरे णिव्वाघाए निरावरणे कसिणे पाडपुण्णे केवलवरणाणदंसणे समुप्पज्जिहिति ॥ सू० ५४॥**

टीका—'तस्स णं' इत्यादि । '**तस्स णं भगवंतस्स**' तस्य खलु भगवतो दृढप्रतिज्ञस्याऽनगारस्य, '**एएणं विहारेणं विहरमाणस्स**' एतेन विहारेण विहरतः— '**अणंते**' अनन्तम्=अनन्तार्थविषयम्, '**अणुत्तरे**' अनुत्तरं=सर्वोत्तमम्, '**णिव्वाघाए**' निर्व्याघातं=व्याघाताद्बहिर्भूतम्—अप्रतिहतमित्यर्थः, '**निरावरणं**' क्षायिकत्वादावरणरहितम्, '**कसिणे**' कृत्स्नं=सकलार्थग्राहकम्, '**पडिपुण्णे**' प्रतिपूर्णं=सकलस्वकीयांशयुक्तम्, '**केवलवरणाणदंसणे**' केवलवरज्ञानदर्शनम्—केवलम्=असहायम् अतएव वरं=श्रेष्ठं ज्ञानं

---

(**भविस्सइ**) होगा, अर्थात् उत्कृष्ट मुनिराज बनेगा, वह (**इरियासमिए जाव गुत्तबंभयारी**) ईर्यासमिति आदि पांच समितियो और तीन गुप्तियों का आराधक एवं यावत् गुप्तब्रह्मचारी होगा ॥ सू० ५३ ॥

'**तस्स णं भगवंतस्स**' इत्यादि ।

(**तस्स णं भगवंतस्स**) उन अतिशय प्रभावविशिष्ट दृढप्रतिज्ञ मुनि को (**एएणं विहारेणं विहारमाणस्स**) इस प्रकार के विहार से विचरते हुए (**अणंते**) अनन्त पदार्थों के युगपत् जानने के साधक होने से अनन्त, (**अणुत्तरे**) सर्वोत्कृष्ट, (**णिव्वाघाए**) निर्व्याघात, (**णिरावरणे**) आवरणरहित, (**कसिणे**) ज्ञान के पूर्ण विकास से सकलार्थग्राहक, (**पडिपुण्णे**) तथा अपने समस्त अविभागी अंशो में से किसी

---

स्सइ) थशे, અર્થાત્ ઉત્કૃષ્ટ મુનિરાજ બનશે, તે (इरियासमिए जाव गुत्तबंभयारी) ઇર્યાસમિતિ આદિ પાંચ સમિતિઓ અને ત્રણ ગુપ્તિઓના આરાધક તેમજ ગુપ્તબ્રહ્મચારી થશે. (સૂ. ૫૩)

'तस्स णं भगवंतस्स' ઇત્યાદિ.

(तस्स णं भगवंतस्स) તે અતિશય-પ્રભાવ-વિશિષ્ટ દૃઢપ્રતિજ્ઞ મુનિને (एएणं विहारेणं विहरमाणस्स) એ પ્રકારના વિહારથી વિચરતાં (अणंते) અનંત પદાર્થોને એકી સાથે જાણવામાં સાધક હોવાથી અનંત, (अणुत्तरे) સર્વોત્કૃષ્ટ, (णिव्वाघाए) નિર્વ્યાઘાત, (णिरावरणे) આવરણરહિત, (कसिणे) જ્ઞાનના વિકાસથી સકળ અર્થોને જાણવા વાળા, (पडिपुण्णे) તથા પોતાના સમસ્ત અવિભાગી અંશોમાંથી કોઇ પણ અંશથી હીન નહિ એવા (केवलवरणाणदंसणे)

मूलम्—तए णं दढपइण्णे केवली बहूइं वासाइं केवलिपरियागं पाउणिहिति, पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए अप्पाणं झूसित्ता, सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदित्ता, जस्सट्ठाए कीरइ नग्गभावे मुंडभावे अण्हाणए अदंतवणए केसलोए

---

च दर्शनं चेति ज्ञानदर्शनं, तत्र ज्ञानं विशेषाऽवबोधरूपम्, दर्शनं सामान्याववोधरूपं **'समुपज्जिहिति'** समुत्पत्स्यते=उदेष्यति ॥ सू० ५४ ॥

**टीका**—**'तए णं'** इत्यादि। **'तए णं से दढपइण्णे केवली'** ततः खलु स दृढप्रतिज्ञः केवली **'बहूइं वासाइं केवलिपरियायं'** बहूनि वर्षाणि केवलिपर्यायं **'पाउणिहिति'** पालयिष्यति, **'पाउणित्ता'** पालयित्वा, **'मासियाए संलेहणाए अप्पाणं झूसित्ता'** मासिक्या संलेखनयाऽऽत्मानं जूषित्वा=सेवित्वा **'सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेइत्ता'** षष्टिं भक्तानि अनशनेन छित्वा **'जस्सट्ठाए'** यस्यार्थाय=यन्निमित्तं **'कीरइ'**

---

भी अंश से हीन नहीं ऐसे (**केवलवरणाणदंसणे**) इन्द्रियों की सहायता आदि से रहित होने के कारण केवल–असहाय उत्तम ज्ञान एवं उत्तमदर्शन उत्पन्न होंगे ॥सू० ५४॥

**'तए णं से दढपइण्णे केवली'** इत्यादि।

(**तए णं**) इस के बाद (**से दढपइण्णे केवली**) वे दृढप्रतिज्ञ केवली भगवान् (**बहूइं वासाइं**) बहुत वर्षों तक (**केवलिपरियागं**) केवलिपर्याय का (**पाउणिहिति**) पालन करेंगे, (**पाउणित्ता**) पालन करके (**मासियाए संलेहणाए अप्पाणं झूसित्ता**) एक मास की संलेखना से आत्मा को झोंसकर (**सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदित्ता**) एवं साठ भक्तों का अनशन से छेदकर (**जस्सट्ठाए**) जिसके निमित्त (**नग्गभावे**) नग्न-

---

ઈંદ્રિઓની સહાયતા આદિથી રહિત હોવાને કારણે કેવળ–અસહાય એવા ઉત્તમ જ્ઞાન તેમજ દર્શન ઉત્પન્ન થશે. (સૂ. ૫૪)

'तए णं से दढपइण्णे केवली' ઇત્યાદિ.

(तए णं) ત્યાર પછી (से दढपइण्णे केवली) તે દૃઢપ્રતિજ્ઞ કેવલી ભગવાન (वहूइं वासाइं) ઘણાં વરસો સુધી (केवलिपरियागं) કેવલીપર્યાયનું (पाउणिहिति) પાલન કરશે, (पाउणित्ता) પાલન કરીને (मासियाए संलेहणाए अप्पाणं झूसित्ता) એક માસની સંલેખનાથી આત્માને સેવીને, (सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदित्ता) તેમજ સાઠ ભક્તોને અનશનથી છેદન કરીને (जस्सट्ठाए) જેના નિમિત્ત

**बंभचेरवासे अच्छत्तगं अणोवाहणगं भूमिसेज्जा फलहसेज्जा कट्ठसेज्जा परघरपवेसो लद्धावलद्धं, परेहिं हीलणाओ खिंसणाओ**

क्रियते, '**नग्गभावे**' नग्नभावः '**मुंडभावे**' मुण्डभावः, '**अण्हाणए**' अस्नानम्=स्नानवर्जनम्, '**अदंतवणए**' अदन्तधावनम्=दन्तधावनवर्जनम्, '**केसलोए**' केशलोचः=केशानां लुञ्चनम्, '**बंभचेरवासे**' ब्रह्मचर्यवासः=ब्रह्मचर्यपालनं, '**अच्छत्तगं**' अच्छत्रकम्=छत्रधारणवर्जनम्, '**अणोवाहणगं**' अनुपानत्कं=पादत्राणराहित्यं, अश्वशिबिकादिवाहनराहित्यं च, '**भूमिसेज्जा**' भूमिशय्या, '**फलहसेज्जा**' फलकशय्या, '**कट्ठसेज्जा**' काष्ठशय्या, '**परघरपवेसो**' परगृहप्रवेशः—भिक्षाद्यर्थमित्यध्याहार्यमित्यर्थः, '**लद्धावलद्धं**' लब्धापलब्धम्—सत्कारादिना लब्धं=लाभः—प्राप्तिः, अपलब्धम्—अपमानेन प्राप्तिः क्रियते इति पूर्वेण सम्बन्धः। तथा—'**परेहिं हीलणाओ**' परेषां हेलनाः=अवज्ञाः—परकृता जन्मकर्ममर्मोद्घाटनाः, यथा-

भाव, (**मुंडभावे**) मुण्डभाव, (**अण्हाणए**) स्नान का परित्याग, (**अदंतवणए**) दाँतो के प्रक्षालन करने का परित्याग, (**केसलोए**) केशों का लोच करना, (**बंभचेरवासे**) ब्रह्मचर्य का पालन, (**अच्छत्तगं**) छत्र धारण नहीं करना, (**अणोवाहणगं**) विना जूतों के चलना, अश्व पर, शिविका पर, वाहन पर नही बैठना, (**भूमिसेज्जा**) भूमि पर शयन करना, (**फलहसेज्जा**) काष्ठ के पाटिये पर सोना, (**कट्ठसेज्जा**) साधारण काष्ठ पर सोना, (**परघरपवेसो**) दूसरों के घर भिक्षावृत्ति के लिये जाना, (**लद्धावलद्धं**) मान और अपमान-पूर्वक प्राप्त भिक्षा में समभाव रखना, ये सब (**कीरइ**) किये जाते है, और जिसके निमित्त (**परेहिं हीलणाओ**) परकृत अवज्ञाओं को—जैसे 'अरे! तू जारजात (दोगला) है' इस प्रकार के अनादर वचनों का, (**खिंसणाओ**) लोगों के द्वारा खिजाने का—लोकों

(नग्गभावे) नग्नभाव, (मुंडभावे) मुंडभाव, (अण्हाणए) स्नाननो परित्याग, (अदंतवणए) દાંતોનું પ્રક્ષાલન કરવાનો પરિત્યાગ, (केसलोए) કેશોનું લુંચન કરવું, (बंभचेरवासे) બ્રહ્મચર્યનું પાલન કરવું, (अच्छत्तगं) છત્ર ધારણ ન કરવું, (अणोवाहणगं) જોડા પહેર્યા વિના ચાલવું, અશ્વપર, શિબિકાપર (પાલખી પર), વાહન પર ન બેસવું, (भूमिसेज्जा) ભૂમિપર શયન કરવું, (फलहसेज्जा) લાકડાંના પાટિયાં પર સુવું, (कट्ठसेज्जा) સાધારણ લાકડાં પર સુવું, (परघरपवेसो) બીજાને ઘેર ભિક્ષાવૃત્તિ માટે જવું, (लद्धावलद्धं) માન-અપમાનમાં સમભાવ રાખવો, એ બધું (कीरइ) કરવામાં આવે છે, અને જેના નિમિત્તે (परेहि हीलणाओ) બાજાએ કરેલી અવજ્ઞાઓ જેવી કે 'અરે! તું જારજાત છે' આ પ્રકારનાં અનાદરનાં વચનો, (खिंसणाओ) લોકોના

**निंदणाओ गरहणाओ तालणाओ तज्जणाओ परिभवणाओ पव्वहणाओ उच्चावया गामकंटगा बावीसं परिसहोवसग्गा अहि-**

'जारजातोऽसि' इत्यादिरूपा इत्यर्थः । '**खिंसणाओ**' खिसना'=लोकसमक्षं मर्मोद्घाटनम्, '**निंदणाओ**' निन्दनाः=मनसा जुगुप्सा', '**गरहणाओ**' गर्हणा'=समक्षे क्रियमाणा जुगुप्साः, '**तालणाओ**' ताडना'=चपेटादिदानानि, '**तज्जणाओ**' तर्जनाः=अङ्गुल्यादि-प्रदर्शनपूर्वकं कटुवचनकथनानि, '**परिभवणाओ**' परिभावनास्तिरस्काराः, '**पव्वहणाओ**' प्रव्यथनाः=पीडोत्पादना', '**उच्चावया**' उच्चावचा'=अनेकविधा', '**गामकंटगा**' ग्राम-कण्टका'—ग्रामः=समूहः, स चेन्द्रियाणामिह प्रकरणवशाद् गृह्यते, इन्द्रियाणां प्रतिकूलाः शब्दादय इत्यर्थः, '**बावीसं परीसहोवसग्गा**' द्वाविंशति परीषहोपसर्गा' '**अहियासिज्जंति**' अधिसहिष्यन्ते, '**तमट्ठमाराहित्ता**' तमर्थमाराध्य=आत्मकल्याणरूपं तमर्थं साधयित्वा '**चरिमेहिं उस्सासणिस्सासेहिं**' चरमैरुच्छ्वासनिःश्वासैः '**सिज्झिहिति**' सेत्स्यति=

के समक्ष अपने मर्मों के उद्घाटनों का, (**णिंदणाओ**) अपने प्रति लोगों के मानसिक घृणाओं का, (**गरहणाओ**) लोगों द्वारा प्रत्यक्षरूप से की गयी घृणाओं का, (**ताल-णाओ**) थप्पड आदि की ताड़ना का, (**तज्जणाओ**) अंगुली–निर्देश–पूर्वक कहे हुए कटु वचनों का, (**परिभवणाओ**) तिरस्कारो का, (**पव्वहणाओ**) पीडाजनक परिस्थितियों का, (**उच्चावया**) अनेक प्रकार के, (**गामकंटगा**) इन्द्रियों के प्रतिकूल शब्दादिकों का, (**बावीसं परीसहोवसग्गा**) बाईस प्रकार के परीषहों का, एवं परकृत उपसर्गों का (**अहियासिज्जंति**) सहन किया जाता है, (**तमट्ठमाराहित्ता**) वे दृढप्रतिज्ञ केवली भग-वान् उस आत्मकल्याण रूप अर्थ को आराधित करके (**चरिमेहिं उस्सासणिस्सासेहिं**)

દ્વારા થતી ખીજવણીનુ–લોકો સમક્ષ પોતાની માર્મિક વાતોનો પ્રકાશ થાય તેનું, (णिंदणाओ) પોતાના પ્રતિ લોકોની માનસિક ઘૃણાઓનું, (गरहणाओ) લોકોથી પ્રત્યક્ષરૂપે કરાયેલી ઘૃણાઓનુ, (तालणाओ) થપ્પડ–આદિથી માર ખાવાનું, (तज्जणाओ) આંગળી ચીંધીને કહેલા કટુ વચનોનુ (परिभवणाओ) તિરસ્કારોનું, (पव्वहणाओ) પીડાજનક પરિસ્થિતિઓનું, (उच्चावया) અનેક પ્રકારના (गामकंटगा) ઇંદ્રિયોને પ્રતિકૂળ શબ્દ આદિનું, તથા (बावीसं परीसहोवसग्गा) બાવીસ પ્રકારના પરીષહોનું તેમજ બીજાએ કરેલા ઉપસર્ગોનું (अहियासिज्जंति) સહન કરાય છે. (तमट्ठमाराहित्ता) તે દૃઢપ્રતિજ્ઞ કેવલી ભગ-વાન તે આત્મકલ્યાણરૂપ અર્થને આરાધિત કરીને (चरमेहि उस्सास–णिस्सा-सेहिं) અન્તિમ ઉચ્છ્વાસ–નિઃશ્વાસોથી (सिज्झिहिति) કૃતકૃત્ય થઈ જશે.

यासिज्जंति, तमट्ठमाराहित्ता चरिमेहिं उस्सासणिस्सासेहिं सिज्झिहिति, बुज्झिहिति, मुच्चिहिति, परिणिव्वाहिति, सव्वदुक्खाणमंतं करेहिति ॥ सू० ५४ ॥

मूलम्—से जे इमे गामा-गर-जाव-सण्णिवेसेसु पव्वइया समणा भवंति, तं जहा-आयरियपडिणीया उवज्झाय-

---

कृतकृत्यो भविष्यति, 'बुज्झिहिति' भोत्स्यते=समस्तानर्थान् केवलज्ञानेन ज्ञास्यति, 'मुच्चिहिति' मोक्ष्यते-सकलकर्मांशैः, 'परिणिव्वाहिति' परिनिर्वास्यति=कर्मकृतसन्तापाऽभावेन शीतलीभविष्यति, 'सव्वदुक्खाणमंतं करेहिति' सर्वदुःखानाम्=शारीरमानसानां सकलदुःखानामन्तं करिष्यतीति ॥ सू० ५५ ॥

टीका—'से जे इमे' इत्यादि। 'से जे इमे' अथ य इमे 'गामा-गर-जाव-सण्णिवेसेसु' ग्रामाऽऽकर-यावत्-सन्निवेशेषु, 'पव्वइया समणा भवंति' प्रव्रजिताः श्रमणा भवन्ति, ते कीदृशाः सन्तीत्यत्राऽऽह-'तंजहा' तद्यथा-'आयरियपडिणीया' आचार्यप्रत्यनीकाः=आचार्यविरोधिनः, 'उवज्झायपडिणीया' उपाध्यायप्रत्यनीकाः,

---

अन्तिम उच्छ्वासनिःश्वासों से (सिज्झिहिति) कृतकृत्य हो जायेंगे, (बुज्झिहिति) समस्त चराचर पदार्थों को केवलज्ञानरूपी आलोक-प्रकाश से जान जायेंगे, (मुच्चिहिति) समस्त कर्मांशों से छूट जायेंगे, (परिणिव्वाहिति) कर्मकृत सन्ताप के अभाव से शीतलीभूत हो जायेंगे, (सव्वदुक्खाणमंतं करेहिति) समस्त शारीरिक, मानसिक दुःखो का अन्त कर देंगे ॥ सू. ५५ ॥

'से जे इमे' इत्यादि।

(से जे इमे) वे जो (गामा-गर-जाव सन्निवेसेसु) ग्राम, आकर से लेकर सन्निवेश तक के स्थानों में (पव्वइया समणा) प्रव्राजित साधु होते है, जैसे-(आयरियपडिणीया) आचार्य के प्रत्यनीक-विरोधी, (उवज्झायपडिणीया) उपाध्याय के विरोधी,

---

(मुच्चिहिति) समस्त કર્મોના અંશોથી છૂટી જશે, (परिणिव्वाहिति) કર્મથી થતા સંતાપના અભાવથી શીતલીભૂત થઈ જશે, (सव्वदुक्खाणमंतं करेहिति) સમસ્ત શારીરિક, માનસિક દુઃખોનો અન્ત કરી દેશે. (सू. ૫૫)

'से जे इमे' ઇત્યાદિ.

(से जे इमे) તેઓ કે જે (गामा-गर-जाव-सन्निवेसेसु) ગામ આકર આદિથી લઈને સન્નિવેશ સુધીનાં સ્થાનોમાં (पव्वइया समणा) પ્રવ્રજિત સાધુ હોય છે, જેવા કે (आयरियपडिणीया) આચાર્યના પ્રત્યનીક-વિરોધી,

**पडिणीया कुलपडिणीया गणपडिणीया आयरियउवज्झायाणं अयसकारगा अवण्णकारगा अकित्तिकारगा बहूहिं असब्भावुब्भावणाहिं मिच्छत्ताभिणिवेसेहि य अप्पाणं च परं च तदुभयं च वुग्गाहेमाणा वुप्पाएमाणा विहरित्ता बहूइं वासाइं सामण्ण-**

---

'**कुलपडिणीया**' कुलप्रत्यनीकाः, '**गणपडिणीया**' गणप्रत्यनीकाः, '**आयरियउवज्झायाणं अयसकारगा**' आचार्योपाध्यायानामयशस्कारकाः, '**अवण्णकारगा**' अवर्णकारकाः=निन्दकाः '**अकित्तिकारगा**' अकीर्तिकारकाः, '**बहूहिं असब्भावुब्भावणाहिं मिच्छत्ताभिणिवेसेहि य**' बह्वीभिरसद्भावोद्भावनाभिः मिथ्यात्वाभिनिवेशैश्च—असद्भावानाम्=अविद्यमानार्थानाम् असद्भावना=आरोपणास्ताभिः, तथा च—मिथ्यात्वाभिनिवेशैश्च=आशातनाजनितैर्मिथ्यात्वग्रहैः, '**अप्पाणं च परं च तदुभयं च वुग्गाहेमाणा**' आत्मानं च परञ्च तदुभयञ्च व्युद्ग्राहयन्तः=आशातनारूपे पापे नियोजयन्तः, '**वुप्पाएमाणा**' व्युत्पादयन्तः=आशातनारूपं पापमुपार्जयन्तः, '**विहरित्ता**' विहृत्य, '**बहूइं वासाइं सामण्ण-**

---

(**कुलपडिणीया**) कुल के प्रत्यनीक, (**गणपडिणीया**) गण के प्रत्यनीक, (**आयरिय–उवज्झायाणं अयसकारगा अवण्णकारगा**) आचार्य एवं उपाध्यायों के अयशस्कारक, तथा अवर्णवादकारक—निंदाकरने वाले, (**अकित्तिकारगा**) अकीर्तिकारक, (**बहूहिं असब्भावुब्भावणाहिं मिच्छत्ताभिणिवेसेहि य**) अनेक असद्भावों की उद्भावना—दोषों के अभाव में भी दोषों को उनमें प्रकट करने—से, मिथ्यात्व के अभिनिवेशों—आशातनाजनित मिथ्याग्रहों—से (**अप्पाणं परं च तदुभयं च वुग्गाहेमाणा वुप्पाएमाणा**) अपने आपको एवं दूसरों को तथा साथ में दोनों को आशातनारूप पाप में नियोजित करते हुए, स्वयं आशातना रूप

---

(उवज्झायपडिणीया) ઉપાધ્યાયના વિરોધી, (कुलपडिणीया) કુલના વિરોધી, (गणपडिणीया) ગણુના વિરોધી, (आयरियउवज्झायाणं अयसकारगा अवण्णकारगा) આચાર્ય તેમજ ઉપાધ્યાયોના અયશકારક, અવર્ણવાદકારક—નિંદા કરવાવાળા, (अकित्तिकारगा) અકીર્તિકારક, તેઓ (बहूहिं असब्भावुब्भावणाहिं मिच्छत्ताभिणिवेसेहि य) અનેક અસદ્‌ભાવોની ઉદ્‌ભાવનાથી—દોષો ન હોય તેમાં પણ દોષો પ્રકટ કરવાથી, મિથ્યાત્વના અભિનિવેશોથી—આશાતનાજનિત મિથ્યા—આગ્રહોથી, (अप्पाणं च परं च तदुभयं च वुग्गाहेमाणा वुप्पाएमाणा) પોતે પોતાને તેમજ બીજાને તથા બન્નેને સાથે જ આશાતનારૂપ પાપમાં નિયોજિત કરતાં કરતાં,

**परियागं पाउणंति, पाउणित्ता तस्स ठाणस्स अणालोइय-अप्पडिक्कंता कालमासे कालं किच्चा उक्कोसेणं लंतए कप्पे देवकिब्बिसिएसु देवकिब्बिसियत्ताए उववत्तारो भवंति, तहिं तेसिं गई,**

---

**परियायं पाउणंति, पाउणित्ता'** बहूनि वर्षाणि श्रामण्यपर्यायं पालयन्ति, पालयित्वा **'तस्स ठाणस्स'** तस्य स्थानस्य=तस्य प्रत्यनीकतादिजातस्य पापस्थानस्य, **'अणालोइय-अप्पडिक्कंता'** अनालोचिताऽप्रतिक्रान्ताः=गुरुसमीप आलोचनायाः प्रतिक्रमणस्य चाकरणेन दोषादनिवृत्ताः सन्तः **'कालमासे कालं किच्चा'**, कालमासे कालं कृत्वा **'उक्कोसेणं लंतए कप्पे देवकिब्बिसिएसु'** उत्कर्षेण लान्तके कल्पे=लान्तकनामके षष्ठे देवलोके देवकिल्बिषिकेषु **'देवकिब्बिसियत्ताए उववत्तारो भवंति'** देवकिल्बिषिकतया उत्पत्तारो

---

पाप का उपार्जन करते हुए (विहरित्ता बहूइं वासाइं) इस भूमंडल पर विचरण करते रहते हैं, और इतस्ततः उसका प्रचार करते २ ही अनेक वर्षों तक उस साधुपर्याय को पालते है, वे (**तस्स ठाणस्स अणालोइय-अप्पडिक्कंता**) उन पापस्थानों की आलोचना नहीं कर के, उन पापस्थानों का प्रतिक्रमण नहीं करके (**कालमासे कालं किच्चा**) काल अवसर में काल कर (**उक्कोसेणं**) उत्कृष्ट (**लंतए कप्पे देवकिब्बिसिएसु देवकिब्बिसियत्ताए उववत्तारो भवंति**) लान्तक नामके छठवे देवलोक में किल्बिषिक देवो में किल्बिषिक जाति के देव होते हैं। इनको जो देवपर्याय मिलती है वह विशिष्ट श्रामण्यजन्य है, अर्थात् बालतप के प्रभाव से प्राप्त होती है, परंतु वहां किल्बिषिक देवो में जो जन्म होता है यह तो आचार्यादिक की प्रत्यनीकता के फल से होता है। जिस प्रकार लोक में चांडाल आदि हुआ करते है उसी

---

(विहरित्ता बहूइं वासाइं) આ ભૂમંડળ ઉપર વિચરણુ કરતા રહે છે, અને આમ-તેમ તેનો પ્રચાર કરતા કરતા જ અનેક વરસો સુધી તે સાધુપર્યાયનું પાલન કરે છે, તેઓ (तस्स ठाणस्स अणालोइय-अप्पडिक्कंता) તે પાપ-સ્થાનોની આલોચના ન કરતાં, તે પાપસ્થાનનું પ્રતિક્રમણુ ન કરતાં (काल-मासे कालं किच्चा) કાલ અવસરે કાલ કરીને (उक्कोसेणं) ઉત્કૃષ્ટ (लंतए कप्पे देवकिब्बिसिएसु देवकिब्बिसियत्ताए उववत्तारो भवंति) લાન્તક નામના છઠ્ઠા દેવ-લોકમાં કિલ્બિષિક દેવોમાં કિલ્બિષિક જાતિના દેવ થાય છે. તેમને જે દેવ-પર્યાય મળે છે, તે વિશિષ્ટ શ્રમણુ ધર્મ પાળવાથી જ મળે છે, અર્થાત્ બાલ-તપના પ્રભાવથી પ્રાપ્ત થાય છે; પરંતુ ત્યાં જે કિલ્બિષિક દેવોમાં જન્મ થાય છે એ તો આચાર્ય આદિકની પ્રત્યનીકતાનાં ફળથી થાય છે.

**तेरस सागरोवमाइं ठिई, अणाराहगा, सेसं तं चेव ॥ सू० ५६ ॥**

**मूलम्—से जे इमे सण्णि-पंचिंदिय-तिरिक्ख-जोणिया पज्जत्तया भवंति, तं जहा-जलयरा थलयरा खहयरा,**

भवन्ति=उत्पद्यन्ते, एतेषां विशिष्टश्रामण्यजन्यं देवत्वं, 'प्रत्यनीकताजन्यं किल्बिषिकत्वं, तेन ते देवेषु चाण्डालतुल्या भवन्ति। '**तहिं तेसिं गई**' तत्र तेषां गतिः, '**तेरस सागरोवमाइं ठिई**' त्रयोदश सागरोपमाणि स्थितिः। '**अणाराहगा**' अनाराधका भवन्ति। '**सेसं तं चेव**' शेषं तदेव ॥ सू० ५६ ॥

**टीका**—'**से जे इमे**' इत्यादि। '**से जे इमे**' अथ य इमे '**सण्णि-पंचिंदिय-तिरिक्खजोणिया पज्जत्तया भवंति**' संज्ञि-पञ्चेन्द्रिय-तिर्यग्योनिकाः पर्याप्ता भवन्ति, के ते? इत्याह-'**तं जहा**' तद्यथा-'**जलयरा थलयरा खहयरा**' जलचराः स्थलचराः खेचराः. '**तेसिं णं अत्थेगइयाणं सुभेणं परिणामेणं पसत्थेहिं अज्झ-**

प्रकार देवों में किल्बिषिक जाति के देव होते है। (**तहिं तेसिं गई**) वहीं पर उनकी गति होती है। वहां (**तेरस सागरोवमाइं ठिई**) १३ सागर की उनकी स्थिति होती है, (**अणाराहगा सेसं तं चेव**) ये जीव अनाराधक होते हैं। इस विषयमें अवशिष्ट पूर्ववत् समझना चाहिये ॥ सू. ५६ ॥

'**जे इमे**' इत्यादि।

(**जे इमे सण्णि-पंचिंदिय-तिरिक्ख-जोणिया**) जो ये संज्ञि-पंचेन्द्रिय-तिर्यञ्च-योनि के पर्याप्त जीव है, (**तं जहा**) जैसे-(**जलयरा थलयरा खहयरा**) जलचर, स्थलचर और खेचर। (**तेसिं णं अत्थेगइयाणं सुभेणं परिणामेणं पसत्थेहिं अज्झवसाणेहिं**)

જેવી રીતે લોકમાં ચાંડાલ આદિ હોય છે તેવી જ રીતે દેવોમાં કિલ્બિષિક જાતિના દેવ હોય છે. (तहिं तेसिं गई) ત્યાં તેમની ગતિ હોય છે. ત્યાં (तेरस सागरोवमाइं ठिई) ૧૩ સાગરની તેમની સ્થિતિ હોય છે. (अणाराहगा सेसं तं चेव) આ વિષયમાં બાકીનું બધું અગાઉ પ્રમાણે સમજવું જોઈએ એ જીવ અનારાધક હોય છે. (સૂ. ૫૬)

'से जे इमे' ઈત્યાદિ.

(से जे इमे सण्णि-पंचिंदिय-तिरिक्ख-जोणिया) જે આ સંજ્ઞી-પંચેન્દ્રિય-તિર્યંચ-યોનિના પર્યાપ્ત જીવો છે, (तं जहा) જેવા કે (जलयरा थलयरा खहयरा) જલચર, સ્થલચર અને ખેચર. (तेसिं णं अत्थेगइयाणं सुभेणं परिणामेणं

तेसिं णं अत्थेगइयाणं सुभेणं परिणामेणं पसत्थेहिं अज्झवसाणेहिं लेस्साहिं विसुज्झमाणीहिं तयावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमेणं ईहा-वूह-मग्गण-गवेसणं करेमाणाणं सण्णि-पुव्वजाई-सरणे समुप्पज्जइ ॥ सू० ५७ ॥

मूलम्—तए णं समुप्पण्णजाइसरणा समाणा सयमेव

---

वसाणेहिं लेस्साहिं विसुज्झमाणीहिं' तेषां खलु अस्ति एकेषां शुभेन परिणामेन प्रशस्तैरध्यवसानैर्लेश्याभिर्विशुद्ध्यमानाभि', तदावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमेणं' तदावरणीयानां कर्मणां क्षयोपशमेन, अतएव 'ईहा-वूह-मग्गण-गवेसणं करेमाणाणं' ईहा-व्यूह-मार्गण-गवेषण कुर्वताम्, एषां पदानां व्याख्या अत्रैवोत्तरार्धे एकत्रिंशत्तमसूत्रे गता। 'सण्णिपुव्वजाईसरणे' संज्ञिपूर्वजातिस्मरणं=पूर्वसंज्ञिभवस्मरणं, 'समुप्पज्जइ' समुत्पद्यते ॥ सू० ५७ ॥

टीका—'तए णं' इत्यादि। 'तए णं समुप्पण्णजाइसरणा समाणा'

---

उनमें कितनेक जीव, शुभ परिणामों से, प्रशस्त अध्यवसायो से, (विसुज्झमाणीहिं लेस्साहिं) विशुद्ध लेश्याओ-लेश्या की विशुद्धि से, तथा-(तयावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमेणं) तदावरणीय-ज्ञानावरणीय एवं वीर्यान्तराय कर्म के क्षयोपशम से (ईहा-वूह-मग्गण-गवेसणं करेमाणाणं) ईहा, व्यूह, मार्गण एवं गवेषण करते है, करते करते, (सण्णि-पुव्व-जाई-सरणे समुप्पज्जइ) संज्ञित्व अवस्था के पूर्वभवों की स्मृति-जाति-स्मरण ज्ञान-पाते है। (ईहा) आदि पदों की व्याख्या यहीं उत्तरार्ध के एकतीसवें सूत्र में देखें ॥ सू. ५७ ॥

---

पसत्थेहिं अज्झवसाणेहिं) तेमां केटलाक જીવોને કે જે શુભ પરિણામોથી, પ્રશસ્ત અધ્યવસાયોથી (विसुज्झमाणीहिं लेस्साहिं) વિશુદ્ધ લેશ્યાઓ-લેશ્યાઓની પવિત્રતાથી, તથા (तयावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमेणं) તદાવરણીય-જ્ઞાનાવરણીય તેમજ વીર્યાન્તરાય કર્મના ક્ષયોપશમથી, (ईहा-वूह-मग्गण-गवेसणं करेमाणाणं) ઈહા, વ્યૂહ, માર્ગણ તેમજ ગવેષણ કરતાં કરતા (सण्णिपुव्वजाईसरणे समुप्पज्जइ) સંજ્ઞિત્વ અવસ્થાના પૂર્વ ભવોની સ્મૃતિ-જાતિસ્મરણજ્ઞાન-ઉત્પન્ન થાય છે. 'ईहा' આદિ પદોનો અર્થ એ જ સૂત્રના ઉત્તરાર્ધમાં એકત્રીશમાં સૂત્રમાં જુઓ. (સૂ. ૫૭)

पंचाणुव्वयाइं पडिवज्जंति, पडिवज्जित्ता बहूहिं सीलव्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहो-ववासेहिं अप्पाणं भावेमाणा बहूइं वासाइं आउयं पालेंति, पालित्ता भत्तं पच्चक्खंति, बहूइं भत्ताइं

ततः खलु समुत्पन्नजातिस्मरणाः सन्तः 'सयमेव' स्वयमेव, 'पंचाणुव्वयाइं' पञ्चाणुव्रतानि 'पडिवज्जंति' प्रतिपद्यन्ते=स्वीकुर्वन्ति, 'पडिवज्जित्ता' प्रतिपद्य 'सीलव्वय-गुण-विरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासेहिं' शीलव्रत-गुण-विरमण-प्रत्याख्यान-पोषधोपवासैः, 'अप्पाणं भावेमाणा' आत्मानं भावयन्तः, 'बहूइं वासाइं' बहूनि वर्षाणि 'आउयं' आयुष्कं 'पालेंति' पालयन्ति, 'पालित्ता' पालयित्वा 'भत्तं' भक्तं 'पच्चक्खंति' प्रत्याख्यान्ति, 'बहूइं भत्ताइं' बहूनि भक्तानि 'अणसणाए' अनशनेन 'छेदेंति'

'तए णं समुप्पण्णजाइसरणा' इत्यादि ।

(तए णं) तब (समुप्पण्णजाइसरणा समाणा) जातिस्मरणज्ञानयुक्त वे जीव, उस ज्ञान के प्रभाव से (सयमेव) स्वयं ही (पंचाणुव्वयाइं) पांच अणुव्रतों को स्वीकार कर लेते है। (पडिवज्जित्ता बहूहिं सीलव्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहो-ववासेहिं) स्वीकार कर शीलव्रतों से, गुणव्रतों से, हिंसादिक पापों के त्याग से, प्रत्याख्यानों से एवं पोषधोपवासों से (अप्पाणं भावेमाणा) अपनी आत्मा को भावित करते हुए (बहूइं वासाइं) अनेक वर्षों तक (आउयं पालेंति) आयुष पालते है, (पालित्ता) आयुष पालकर वे (भत्तं पच्चक्खंति) भक्तप्रत्याख्यान करते है। (बहूइं भत्ताइं अणसणाए छेदेंति) अनशन से अनेक भक्तों का छेदन करते है, (छेदित्ता आलोइयपडिकंता समाहिपत्ता कालमासे

'तए णं समुप्पण्णजाइसरणा' ઇત્યાદિ.

(तए णं) ત્યારે (समुप्पण्णजाइसरणा समाणा) જાતિ-સ્મરણ-જ્ઞાનયુક્ત તે જીવ એ જ્ઞાનના પ્રભાવ વડે (सयमेव) પોતે જ (पंचाणुव्वयाइं) પાંચ અણુવ્રતોનો સ્વીકાર કરી લે છે. (पडिवज्जित्ता बहूहिं सीलव्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहो-ववासेहिं) સ્વીકાર કરીને શીલવ્રતોથી, ગુણવ્રતોથી, હિંસા આદિક પાપોના ત્યાગથી, પ્રત્યાખ્યાનોથી તેમજ પૌષધોપવાસોથી (अप्पाणं भावेमाणा) પોતાના આત્માને ભાવિત કરતાં કરતાં (बहूइं वासाइं) અનેક વરસો સુધી (आउयं पालेंति) આયુષ્ય પાળે છે, (पालित्ता) આયુષ્ય પાળીને તેઓ (भत्तं पच्चक्खंति) ભક્તપ્રત્યાખ્યાન કરે છે, (बहूइं भत्ताइं अणसणाए छेदेंति) અનશનથી અનેક ભક્તોનું છેદન કરે છે, (छेदित्ता आलोइयपडिक्कंता समाहि-

**अणसणाए छेदेंति, छेदित्ता आलोइयपडिक्कंता समाहिपत्ता कालमासे कालं किच्चा उक्कोसेणं सहस्सारे कप्पे देवत्ताए उववत्तारो भवंति, तहिं तेसिं गई, अट्ठारस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता, परलोयस्स आराहगा, सेसं तं चेव ॥ सू० ५८ ॥**

**मूलम्—से जे इमे गामागर जाव संनिवेसेसु आजी-**

---

छिन्दन्ति, '**छेदित्ता**' छित्वा '**आलोइयपडिक्कंता**' आलोचितप्रतिक्रान्ताः, '**समाहिपत्ता**' समाधिप्राप्ताः, '**कालमासे कालं किच्चा**' कालमासे=कालावसरे कालं कृत्वा, '**उक्कोसेणं**' उत्कर्षेण '**सहस्सारे कप्पे**' सहस्रारे कल्पे-सहस्रारनामके अष्टमे देवलोके '**देवत्ताए**' देवत्वेन '**उववत्तारो भवंति**' उपपत्तारो भवन्ति=उत्पद्यन्ते, '**तहिं तेसिं गई**' तत्र तेषां गतिः, '**अट्ठारस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता**' अष्टादश सागरोपमाणि स्थितिः प्रज्ञप्ता, '**परलोगस्स आराहगा**' परलोकस्याराधकाः, '**सेसं तं चेव**' शेषं तदेव ॥ सू० ५८ ॥

**टीका**—'**से जे इमे**' इत्यादि। '**से जे इमे**' अथ य इमे '**गामा-गर-**

---

**कालं किच्चा**) छेदन कर वे अपने पापो की आलोचना करते है, प्रतिक्रमण करते है, समाधि को प्राप्त होते है। तथा काल अवसर काल कर के (**उक्कोसेणं सहस्सारे कप्पे देवत्ताए उववत्तारो भवंति**) उत्कृष्ट आठवे देवलोक सहस्रार कल्प में देवरूप से उत्पन्न होते है। (**तहिं तेसिं गई**) वहीं पर उनकी गति कही गयी है। (**अट्ठारस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता**) इस आठवे देवलोक में १८ सागर की स्थिति है। (**परलोगस्स आराहगा, सेसं तं चेव**) ये परलोक के आराधक होते है। अवशिष्ट पूर्ववत् समझना चाहिये ॥ सू. ५८ ॥

---

पत्ता कालमासे कालं किच्चा) छेदन करीने तेओ पोते करेलां पापोनी आलोचना करे छे, प्रतिक्रमण करे छे, समाधिने प्राप्त थाय छे, तथा काल अवसरे काल करीने (उक्कोसेणं सहस्सारे कप्पे देवत्ताए उववत्तारो भवंति) उत्कृष्ट आठमा सहस्रार देवलोकमां देवरूपथी उत्पन्न थाय छे. (तहिं तेसिं गई) त्यां तेमनी गति बताववामां आवी छे. (अट्ठारस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता) आ आठमा देवलोकमां १८ सागरनी उत्कृष्ट स्थिति छे. (परलोगस्स आराहगा, सेसं तं चेव) एओ परलोकना आराधक होय छे. बाकीनुं बधुं पूर्वप्रमाणे समजी लेवुं जोईए. (सू. ५८)

वियां भवंति, तं जहा–दुघरंतरिया तिघरंतरिया सत्तघरंतरिया उप्पलवेंटिया घरसमुदाणिया विज्जुयंतरिया उट्टियासमणा, ते

जाव–संनिवेसेसु ' ग्रामाऽऽ–कर–यावत्संनिवेशेषु ' आजीविया भवंति ' आजीविका:=गोशालकमताऽनुवर्तिनो भवन्ति । ते किंस्वरूपा: ? अत्राऽऽह–' तं जहा ' तद्यथा–' दुघरंतरिया ' द्विगृहाऽन्तरिका:–एकस्मिन् गृहे भिक्षां गृहीत्वा अभिग्रहविशेषेण गृहद्वयमतिक्रम्य पुनर्भिक्षां गृह्णन्ति, न निरन्तरं न एकान्तरं वा भिक्षां गृह्णन्तीति भाव:, ' तिघरंतरिया ' त्रिगृहाऽन्तरिका:–त्रीन् गृहानतिक्रम्य भिक्षां गृह्णन्तीति त्रिगृहाऽन्तरिका:, एवं ' सत्तघरंतरिया ' सप्तगृहान्तरिका:–सप्तगृहान् परित्यज्य भिक्षां गृह्णन्तीति, ' उप्पलवेंटिया ' उत्पलवृन्तिका:–उत्पलवृन्तानि नियमविशेषात् ग्राह्यतया भैक्षत्वेन येषां ते उत्पलवृन्तिका:, ' घरसमुदाणिया ' गृहसमुदानिका:–गृहसमुदानम्=अनेकगृहे भिक्षा येषां ते गृहसमुदानिका:, ' विज्जुयंतरिया ' विद्युदन्तरिका:–विद्युत्सम्पातेऽन्तरं=भिक्षाग्रहणस्यावरोधो येषां ते विद्युदन्तरिका:, विद्युति दीप्यमानायां भिक्षार्थं नाटन्तीति भाव:, ' उट्टियासमणा ' उष्ट्रिकाश्रमणा:–उष्ट्रिका=मृत्तिकामयो भाजनविशेष:, तत्र प्रविष्टा ये श्राम्यन्ति=तपस्यन्ति त

'से जे इमे' इत्यादि ।

(से जे इमे) ये जो (गामा–गर–जाव–संनिवेसेसु) ग्राम आकर आदि स्थानों से लेकर संनिवेश तक में (आजीविया) गोशालक के मतानुयायी (भवंति) होते हैं, (तं जहा) जैसे–(दुघरंतरिया) दो घर के अन्तर से जो भिक्षा लेते हैं, (तिघरंतरिया) तीन घर के अन्तर से जो भिक्षा लेते हे, (सत्तघरंतरिया) सात घरों के अन्तर से जो भिक्षा लेते है, (उप्पलवेंटिया) कमल के नालों की जो भिक्षा करते है, (घरसमुदाणिया) बहुत घरों से जो भिक्षा लेते है, (विज्जुयंतरिया) बिजली चमकने पर जो भिक्षा नहीं लेते हैं, (उट्टियासमणा) मिट्टी के किसी बड़े बर्तन–नाँद आदि में प्रविष्ट हो कर जो तपश्चर्या करते

'से जे इमे' ઈત્યાદિ.

(से जे इमे) तेओ के जे (गामा–गर–जाव–संनिवेसेसु) ગામ આકર આદિ સ્થાનોથી લઇને સંનિવેશ સુધીમાં (आजीविया) ગોશાલકના મતાનુયાયી (भवंति) હોય છે, (तंजहा) જેવાકે (दुघरंतरिया) બે ઘરને અંતર રાખી જે ભિક્ષા લે છે, (तिघरंतरिया) ત્રણ ઘરને અંતર રાખી જે ભિક્ષા લે છે. (सत्तघरंतरिया) સાત ઘરોના અંતરથી જે ભિક્ષા લે છે. (उप्पलवेंटिया) કમળના નાળની જે ભિક્ષા કરે છે, (घरसामुदाणिया) ઘણા ઘરોથી જે ભિક્ષા લે છે, (विज्जुयंतरिया) વિજળી ચમકે ત્યારે જે ભિક્ષા લેતા નથી, (उट्टियासमणा) માટીના

**णं एयारूवेणं विहारेणं विहरमाणा बहूइं वासाइं परियायं पाउणित्ता कालमासे कालं किच्चा उक्कोसेणं अच्चुए कप्पे देवत्ताए उववत्तारो भवंति। तहिं तेसिं गई, बावीसं सागरोवमाइं ठिई, अणाराहगा, सेसं तं चेव ॥ सू० ५९ ॥**

---

उष्ट्रिकाश्रमणाः; '**ते णं एयारूवेणं विहारेणं विहरमाणा**' ते खलु एतद्रूपेण विहारेण विहरन्तः, '**बहूइं वासाइं परियायं पाउणित्ता**' बहूनि वर्षाणि पर्यायं पालयित्वा, '**कालमासे कालं किच्चा**' कालमासे कालं कृत्वा, '**उक्कोसेणं अच्चुए कप्पे देवत्ताए उववत्तारो भवंति**' उत्कर्षेण अच्युते कल्पे देवत्वेनोत्पत्तारो भवन्ति, '**तहिं तेसिं गई**' तत्र तेषां गतिः, '**बावीसं सागरोवमाइं ठिई**' द्वाविंशति सागरोपमानि स्थितिः। '**अणाराहगा**' अनाराधकाः, '**सेसं तं चेव**' शेषं तदेव ॥ सू० ५९ ॥

---

हैं, इस प्रकार जो अभिग्रह वाले हैं, (**ते णं एयारूवेणं विहारेणं विहरमाणा बहूइं वासाइं परियायं पाउणित्ता कालमासे कालं किच्चा उक्कोसेणं अच्चुए कप्पे देवत्ताए उववत्तारो भवंति**) ये सब इस प्रकार विहार करते हुए बहुत वर्षों तक इस पर्याय को पालकर काल अवसर में काल करके उत्कृष्ट बारहवे देवलोक अच्युत कल्प में देव की पर्याय से उत्पन्न होते है। (**तहिं तेसिं गई**) वहीं पर उनकी गति होती है। (**बावीसं सागरोवमाइं ठिई**) २२ सागर की इनकी स्थिति वहां होती है। (**अणाराहगा**) ये सब अनाराधक होते है। (**सेसं तं चेव**) अवशिष्ट पूर्ववत् समझना चाहिये ॥ सू. ५९ ॥

---

કોઈ મોટાં વાસણ-કોઠી આદિમાં પ્રવિષ્ટ થઈને જે તપશ્ચર્યા કરે છે, આ પ્રકારના અભિગ્રહવાળા જે છે, (ते णं एयारूवेणं विहारेणं विहरमाणा बहूइं वासाइं परियायं पाउणित्ता कालमासे कालं किच्चा उक्कोसेणं अच्चुए कप्पे देवत्ताए उववत्तारो भवंति) આ બધા આ પ્રકારે વિહાર કરતાં કરતાં ઘણાં વરસો સુધી આ પર્યાયને પાળીને કાલ અવસરે કાલ કરીને ઉત્કૃષ્ટ બારમા અચ્યુત કલ્પમાં દેવની પર્યાયથી ઉત્પન્ન થાય છે. (तहिं तेसिं गई) ત્યાં તેમની ગતિ થાય છે, (बावीसं सागरोवमाइं ठिई) બાવીશ સાગરની તેમની સ્થિતિ ત્યાં હોય છે. (अणाराहगा) આ બધા અનારાધક હોય છે. (सेसं तं चेव) બાકીનું બધું પૂર્વ પ્રમાણે સમજવું જોઈએ. (સૂ. ૫૯)

मूलम्—से जे इमे गामागर जाव सण्णिवेसेसु पव्वइया समणा भवंति, तं जहा—अत्तुक्कासिया परपरिवाइया भूइकम्मिया भुज्जो भुज्जो कोउयकारगा, ते णं एयारूवेणं विहारेणं विहर-

टीका—'से जे इमे' इत्यादि। 'से जे इमे गामागर जाव सण्णिवेसेसु पव्वइया समणा भवंति' अथ य इमे ग्रामाऽऽकर यावत्सन्निवेशेषु प्रव्रजिताः श्रमणा भवन्ति। तद्भेदान् दर्शयितुमाह—'तं जहा' तद्यथा 'अत्तुक्कासिया' आत्मोत्कर्षिकाः—आत्मन उत्कर्षः=श्रेष्ठत्वं सोऽस्त्येषामित्यात्मोत्कर्षिकाः—आत्मगौरवदर्शकाः, 'परपरिवाइया' परपरिवादिकाः—परेषां परिवादो=निन्दाऽस्ति येषां ते परपरिवादिकाः—परनिन्दका इत्यर्थः, 'भूइकम्मिया' भूतिकर्मिकाः—भूतिकर्म=ज्वरितानां बाधाप्रशमनार्थं भस्मदानं तदस्ति येषां ते भूतिकर्मिकाः, 'भुज्जो भुज्जो कोउयकारगा' भूयोभूयःकौतुककारकाः—भूयोभूयः= पुनः पुनः कौतुक=परेषां सौभाग्यादिनिमित्त स्नपनादि तत्कर्त्तार, यद्वा—कुतूहलकारकाः। 'ते णं एयारूवेणं विहारेणं विहरमाणा' ते खल्वेतद्रूपेण विहारेण विहरन्तः 'बहूइं

'से जे इमे गामागर' इत्यादि।

(से जे इमे) जो ये (गामागर–जाव संनिवेसेसु) ग्राम आकर आदि से लेकर सनिवेश तक के स्थानों में प्रव्रजित सयमी श्रमण है, जैसे–(अत्तुक्कासिया) अपनी आत्मा के गौरव को दिखाने वाले, (परपरिवाइया) स्वमत को अच्छा समझकर दूसरों की निंदा करने वाले, (भूइकम्मिया) भूतिकर्म करने वाले–ज्वरित व्यक्तियों की बाधा को शमन करने के लिये भस्म को देने वाले, (भुज्जो २ कोउयकारगा) पुनः पुनः अनेक प्रकार के कौतुक करने वाले, (ते णं एयारूवेणं विहारेणं विहरमाणा) वे सब इस प्रकार के आचार में रहते हुए (बहूइं वासाइं सामण्णपरियागं पाउणंति) बहुत वर्षों तक श्राम-

'से जे इमे गामागर' ઈત્યાદિ.

(से जे इमे) આ કે જેઓ (गामा–गर–जाव–संनिवेसेसु) ગામ આકર આદિથી લઈને સનિવેશ સુધીના સ્થાનોમાં પ્રવ્રજિત સંયમી શ્રમણ છે; જેવા કે–(अत्तुक्कासिया) પોતાના આત્માના ગૌરવને દેખાડવાવાળા, (परपरिवाइया) પોતાના મતને સારો સમજીને બીજાની નિંદા કરવાવાળા, (भूइकम्मिया) ભૂતિ-કર્મ કરવાવાળા–જ્વરથી પીડાતા માણસોનાં દુઃખ શમન કરવા માટે ભસ્મ આપવાવાળા, (भुज्जो भुज्जो कोउयकारगा) વારંવાર અનેક પ્રકારનાં કૌતુક કરવા-વાળા, (ते णं एयारूवेणं विहारेणं विहरमाणा) તેઓ બધા આવા પ્રકારના

माणा बहूइं वासाइं सामण्णपरियागं पाउणंति, पाउणित्ता तस्स ठाणस्स अणालोइयपडिक्कंता कालमासे कालं किच्चा उक्कोसेणं अच्चुए कप्पे आभिओगिएसु देवेसु देवत्ताए उववत्तारो भवंति, तहिं तेसिं गई, बावीसं सागरोवमाइं ठिई, परलोगस्स अणाराहगा, सेसं तं चेव ॥ सू० ६० ॥

---

वासाइं सामण्णपरियागं पाउणंति' बहूनि वर्षाणि श्रामण्यपर्यायं पालयन्ति 'पाउणित्ता' पालयित्वा 'तस्स ठाणस्स अणालोइयपडिक्कंता' तस्य स्थानस्य अनालोचितप्रतिक्रान्ताः 'कालमासे कालं किच्चा' कालमासे कालं कृत्वा 'उक्कोसेणं अच्चुए कप्पे आभिओगिएसु देवेसु देवत्ताए उववत्तारो भवंति' उत्कर्षेणाच्युते कल्पे आभियोगिकेषु—अभियोगे=आज्ञाकर्मणि नियुक्ता अभियोगिकास्तेषु—आज्ञाकारिषु देवेषु देवत्वेनोपपत्तारो भवन्ति, एतेषां देवत्वं चारित्राराधकत्वेन, आभियोगिकत्वं चात्मोत्कर्षादिख्यापनात्; 'तहिं तेसिं गई' तत्र तेषां गतिः, 'बावीसं सागरोवमाइं ठिई' द्वाविंशति सागरोपमानि स्थितिः, 'परलोगस्स अणाराहगा' परलोकस्याऽनाराधकाः 'सेसं तं चेव' शेषं तदेव ॥ सू० ६० ॥

---

ण्यपर्याय को पालते है, (पाउणित्ता) पालकर (तस्स ठाणस्स अणालोइयपडिक्कंता) उन पापस्थानों की आलोचना एवं प्रतिक्रमण किये विना (कालमासे कालं किच्चा) काल अवसर में कालकर (उक्कोसेणं अच्चुए कप्पे आभिओगिएसु देवेसु देवत्ताए उववत्तारो भवंति) अधिक से अधिक अच्युतदेवलोक के आभियोगिक देवो में—जो इन्द्र आदि के आज्ञाकारी होते है, उत्पन्न हो होते है, । चारित्र की आराधना करने वाले होने से ये देवपर्याय तो पालते है, परंतु आत्मोत्कर्ष आदि ख्यापन करने के कारण इन्हे आभियोगिक

---

આચારમાં રહીને (बहूइं वासाइं सामण्णपरियागं पाउणंति) ઘણાં વરસો સુધી શ્રામણ્ય-પર્યાયને પાળે છે, (पाउणित्ता) પાળીને (तस्स ठाणस्स अणालोइयपडिक्कंता) તે પાપસ્થાનોની આલોચના તેમજ પ્રતિક્રમણ કર્યા વગર (कालमासे कालं किच्चा) કાલ અવસરમાં કાલ કરીને (उक्कोसेणं अच्चुए कप्पे आभिओगिएसु देवेसु देवत्ताए उववत्तारो भवंति) વધારેમાં વધારે અચ્યુત દેવલોકના આભિયોગિક દેવોમાં, જે ઇંદ્ર આદિના આજ્ઞાકારી હોય છે, ઉત્પન્ન થાય છે. ચારિત્રની આરાધના કરવાવાળા હોવાથી તેઓ દેવપર્યાય તો પામે છે, પરંતુ આત્મોત્કર્ષ

सूलम्—से जे इमे गामागर जाव सण्णिवेसेसु णिण्हगा भवंति, तं जहा–बहुरया १, जीवपएसिया २, अव्वत्तिया

टीका—'से जे इमे' इत्यादि। 'से जे इमे गामागर जाव सण्णिवेसेसु' अथ य इमे ग्रामाकर यावत्–सनिवेशेषु 'णिण्हगा' निह्नवाः–निह्नुवते=अपलपन्ति=अन्यथा प्ररूपयन्तीति निह्नवा=मिथ्याभिनिवेशाज्जिनोक्तार्थस्यापलापका इत्यर्थः, यथा जमाल्यादयः, ते कतिविधा भवन्ति? इत्याकाङ्क्षायां दर्शयति–'तं जहा' तद्यथा–'बहुरया' बहुरताः–बहुषु समयेषु रताः=आसक्ताः–बहुभिरेव समयैः कार्यं सम्पद्यते, नैकेन समयेन–

जाति के देवों में जन्म धारण करना पडता है। (तहिं तेसिं गई) वहीं पर इनकी गति, एव (बावीसं सागरोवमाइं ठिई) स्थिति २२ सागर की कही गई है। (परलोगस्स अणाराहगा) ये परलोक के अनाराधक कहे गये हे। (सेसं तं चेव) अवशिष्ट पूर्ववत् समझना चाहिये॥ सू. ६०॥

'से जे इमे गामागर' इत्यादि।

(से जे इमे) जो ये (गामागर–जाव–सण्णिवेसेसु) ग्राम आकर आदि स्थानों से लेकर सनिवेश तक कथित स्थानों में रहने वाले (णिण्हगा भवंति) जमालि आदि निह्नव–मिथ्यात्व के अभिनिवेश से जिनोक्त अर्थ के अपलापक होते है; जैसे–(बहुरया जीवपएसिया अव्वत्तिया सामुच्छेइया दोकिरिया तेरासिया अबद्धिया इच्चेते सत्तपवयणणिण्हगा) बहुरत–बहुरतो का ऐसा सिद्धान्त है कि कार्य अनेक समयों में ही होता

આદિ ખ્યાપન કરવાના કારણે તેમને આભિયોગિક જાતિના દેવોમાં જન્મ ધારણ કરવો પડે છે. (तहिं तेसिं गई) ત્યાં તેમની ગતિ, તેમજ (बावीसं सागरोवमाइं ठिई) સ્થિતિ ૨૨ સાગરની કહેલી છે. (परलोगस्स अणाराहगा) તેઓ પરલોકના અનારાધક કહેવાય છે. (सेसं तं चेव) બાકીનું બધું પૂર્વ પ્રમાણે સમજવું જોઈએ. (સૂ. ૫૯)

'जे इमे गामागर' ઇત્યાદિ.

(जे इमे) તેઓ કે જે (गामागर जाव सण्णिवेसेसु) ગામ, આકર આદિ સ્થાનોથી લઈને સંનિવેશ સુધીનાં કહેલાં સ્થાનોમાં રહેવાવાળા (णिण्हगा भवंति) જમાલિ જેવા નિહ્નવ–મિથ્યાત્વના અભિનિવેશથી જિન ભગવાને કહેલા અર્થના અપલાપક હોય છે, જેવા કે–(बहुरया जीवपएसिया अव्वत्तिया सामुच्छेइया दोकिरिया नेरासिया अवद्धिया इच्चेते सत्त पवयणणिण्हगा) (૧) बहुरत–બહુરતોનો એવો સિદ્ધાંત છે કે કાર્ય અનેક સમયોમાં જ થાય છે એક

३, सामुच्छेइया ४, दोकिरिया ५, तेरासिया ६, अबद्धिया ७,

इत्येवंवादिनो वहुरताः—जमालिमतानुयायिनः १, 'जीवपएसिया' जीवप्रदेशिकाः—एक एव चरमप्रदेशो जीव इत्यभ्युपगमाज्जीवप्रदेशो विद्यते येषां ते तथा, एकेनाऽपि प्रदेशेन न्यूनो जीवो न भवति, अतो येनैकेन प्रदेशेन पूर्णः सन् जीवो भवति, स एवैकः प्रदेशो जीवो भवतीत्येवं-विधवादिनः तिष्यगुप्ताचार्यमतानुयायिनः २, 'अव्वत्तिया' अव्यक्तिकाः—अव्यक्तं समस्त-मिदं जगत्, साध्वादिविषये श्रमणोऽयं देवो वाऽयम् इत्यादिविविक्तप्रतिभासोदयाऽभावात्, ततश्चाऽव्यक्तम्=अस्फुटं वस्तु—इति मतमस्ति येषां तेऽव्यक्तिकाः, अथवा अविद्यमाना साध्वादि-व्यक्तिरेषामित्यव्यक्तिकाः, आषाढाचार्यशिष्यमताऽन्तर्वर्तिनः ३, 'सामुच्छेइया' सामुच्छे-दिकाः—प्रतिक्षणं नारकादिभावानां समुच्छेदं=क्षयं वदन्तीति सामुच्छेदिकाः—क्षणक्षयिभाव-प्ररूपका अश्वमित्रमतानुयायिनः ४; 'दोकिरिया' द्वैक्रियाः—द्वेक्रिये=शीतवेदनोष्णवेदनादि-

है, एक समय में नहीं। ये जमालिमत के अनुयायी होते है १। जीवप्रदेशिक का ऐसा कहना है कि जीव एक चरमप्रदेशस्वरूप ही है। जीव यदि एक भी प्रदेश से न्यून हो तो वह जीवसंज्ञा प्राप्त नहीं कर सकता; अतः जिस एक प्रदेश से परिपूर्ण होकर वह जीव कहलाता है वह उस एकप्रदेशस्वरूप ही है। ये तिष्यगुप्त आचार्य के मतानुयायी होते हैं २। **अव्यक्तिक** का यह कहना है कि यह समस्त जगत साधु आदि के विषय में सर्वथा अव्यक्त है, क्यों कि ये देव है, ये श्रमण है—इस प्रकार का भिन्न २प्रतिभास नहीं होता है। इसलिए वास्तविक क्या है यह सव अव्यक्त—अस्फुट है। अथवा ये अव्यक्तिक जन किसी को भी साधुव्यक्ति नहीं मानते है। ये आषाढाचार्य के शिष्यो के मत के अन्तर्वर्ती माने जाते हैं ३। **सामुच्छेदिक**—मतवादी प्रत्येक पदार्थ को क्षणविनश्वर मानते हैं। ये अश्वमित्र के मत के अनुयायी है ४। **द्वैक्रिय**—मतवादी की ऐसी मान्यता है कि एक ही समय में

સમયમાં નહિ. આ જમાલિમતના અનુયાયી હોય છે. (૨) जीवप्रदेशिक—એમનું એવું કહેવું છે કે જીવ એક ચરમ–પ્રદેશ–સ્વરૂપ જ છે. જીવ જો એક પ્રદે-શથી ન્યૂન (કમ) હોય તો તે જીવસંજ્ઞા પ્રાપ્ત કરી શકે નહિ. આથી જે એક પ્રદેશથી પરિપૂર્ણ હોય તે જીવ કહેવાય છે, તે એક પ્રદેશસ્વરૂપ જ છે. આ તિષ્યગુપ્ત આચાર્યના મતાનુયાયી હોય છે. (૩) अव्यक्तिक—એમનું એમ કહેવું છે કે આ સમસ્ત જગત સાધુ આદિના વિષયમાં સર્વથા અવ્યક્ત છે. કેમકે તેઓ દેવ છે, આ શ્રમણ છે, આ પ્રકારનો જુદો જુદો પ્રતિભાસ હોતો નથી. એથી વાસ્તવિક શું છે એ બધું અવ્યક્ત–અસ્ફુટ છે. અથવા આ અવ્યક્તિક જનો કોઈને પણ સાધુ વ્યક્તિ મનતા નથી. આ અષાઢાચા-ર્યના શિષ્યોના મતના અંતર્વર્ત્તી મનાય છે. (૪) सामुच्छेदिक—આ પ્રત્યેક પદાર્થને ક્ષણભંગુર માને છે. તેઓ અશ્વમિત્રના મતના અનુયાયી છે.

**इच्चेते सत्त पवयणणिण्हगा केवलं चरियालिंगसमाणा मिच्छा-**

स्वरूपे एकस्मिन् समये जीवोऽनुभवति इत्येवं वदन्ति ये ते द्वैक्रियाः=क्रियाद्वयानुभवप्ररूपिणो गङ्गाचार्यमतानुयायिनः ५, '**तेरासिया**' त्रैराशिकाः—त्रीन् राशीन्—जीवाऽजीव—नोजीवरूपान् वदन्ति ये ते त्रैराशिकाः—राशित्रयाख्यापका इत्यर्थः—रोहगुप्ताचार्यमतानुसारिणः ६; '**अबद्धिया**' अबद्धिकाः—जीवः कर्मणा बद्धो न भवति, किन्तु कञ्चुकवत्स्पृष्टो भवति—इत्येवं वदन्ति ये तेऽबद्धिकाः, गोष्ठामाहिलमतावलम्बिनः ७, उपलक्षणं चैतद्—वान्तसम्यक्त्वानामन्येषामपि । '**इच्चेते सत्त पवयणणिण्हगा**' इत्येते सप्त प्रवचननिह्नवाः—प्रवचनं=जिनागमं निह्नुवते=अपलपन्ति, अन्यथा तदेकदेशस्य चाऽभ्युपगमात् ते प्रवचननिह्नवाः, केवलं—'**चरियालिंगसमाणा**' चर्यालिङ्गसमानाः—चर्यया=भिक्षाटनादिक्रियया लिङ्गेन=रजोहरणादिना च समानाः=साधुतुल्याः, ते पुनः कीदृशाः ?

एक जीव दो विरुद्ध क्रियाओं का भी अनुभव करता है। शीतवेदना एवं उष्णवेदना ये दो परस्पर में एक समय में विरुद्ध हैं। इन्हें जीव एक समय में भोगता है। ये गंगाचार्य के मत के अनुयायी होते हैं ५। **त्रैराशिक** मतवालेका ऐसा कहना हैं कि जीवों की तीन राशियाँ हैं—(१) जीव, (२) अजीव एवं (३) नोजीव। ये रोहगुप्त के मत के अनुयायी हैं ६। **अबद्धिक** लोग ऐसी प्ररूपणा करते हैं कि जीव और कर्म का बंध नहीं होता है। सिर्फ जीव के साथ कर्म कंचुक की तरह स्पृष्ट रहा करते है। ये गोष्ठमाहिल के मत को मानने वाले होते हैं ७। यह उपलक्षणस्वरूप है, इससे सम्यक्त्वरहित क्रिया करने वालों का भी ग्रहण हुआ है। इस प्रकार ये सात प्रवचन—जिनागम के निह्नव हैं। (**केवल चरियालिंगसमाणा**) मात्र चर्या—भिक्षा याचना आदि क्रिया तथा लिङ्ग—रजोहरणादि साधु के चिह्नों की अपेक्षा इनमें समानता

(५) द्वैक्रिय—એમની એવી માન્યતા છે કે એકજ સમયમાં એક જીવ બે વિરુદ્ધ ક્રિયાઓના પણ અનુભવ કરે છે. शीतवेदना—તેમજ उष्णवेदना આ બે પરસ્પરમાં એક સમયમાં વિરુદ્ધ છે. તેમને જીવ એક સમયમાં ભોગવે છે. તેઓ ગંગાચાર્યના મતના અનુયાયી હોય છે. (६) त्रैराशिक—તેઓ એમ કહે છે કે જીવોની ૩ રાશિઓ છે, (१) જીવ (२) અજીવ તેમજ (३) નોજીવ. તેઓ રોહગુપ્તના મતના અનુયાયી છે. (६) अवद्धिक—તેઓ એમ પ્રરૂપણા કરે છે કે જીવ અને કર્મનો બંધ થતો નથી. માત્ર જીવની સાથે કર્મ કંચુકની પેઠે સ્પૃષ્ટ રહેલાં (ચોટી રહેલાં—લાગી રહેલાં) છે. આ ગોષ્ઠમાહિલના મતને માનવાવાળા હોય છે. આ ઉપલક્ષણસ્વરૂપ છે, માટે સમ્યક્ત્વરહિત ક્રિયા કરવાવાળાનું પણ ગ્રહણ થાય છે. આ પ્રકારે આ સાત પ્રવચન—જિનાગમના નિહ્નવ છે. (केवलं चरियालिंगसमाणा) માત્ર ચર્યા—ભિક્ષા યાચના આદિ ક્રિયા તથા

**दिट्ठी बहूहिं असब्भावुब्भावणाहिं मिच्छत्ताभिणिवेसेहि य अप्पाणं च परं च तदुभयं च वुग्गाहेमाणा वुप्पाएमाणा विहरित्ता बहूइं वासाइं सामण्णपरियागं पाउणंति, पाउणित्ता कालमासे**

---

इत्यत्राह-' **मिच्छादिट्ठी** ' मिथ्यादृष्टयः-मिथ्या=विपरीता दृष्टिः=मतं येषां ते तथा, एते सप्त निह्नवकाः ' **बहूहिं** ' बहुभिः ' **असब्भावुब्भावणाहिं** ' असद्भावोद्भावनाभिः-असद्भावानाम्=अविद्यमानार्थानाम् उद्भावनाः=उत्प्रेक्षणानि-आरोपणानि, ताभिः, ' **मिच्छत्ताभिणिवेसेहि य** ' मिथ्यात्वाभिनिवेशैश्च-मिथ्यात्वोदये अभिनिवेशाः=स्वमतस्थापनाऽऽग्रहास्तैः ' **अप्पाणं च परं च तदुभयं च** ' आत्मानञ्च परञ्च तदुभयञ्च ' **वुग्गाहेमाणा** ' व्युद्ग्राहयन्तः=स्वमते स्थापयन्तः, ' **वुप्पाएमाणा** ' व्युत्पादयन्तः=जिनवचनविरुद्धप्ररूपणाजनितपापमुपार्जयन्तः, ' **विहरित्ता** ' विहृत्य, ' **बहूइं वासाइं** ' बहूनि वर्षाणि ' **सामण्णपरियागं** ' श्रामण्यपर्यायं ' **पाउणंति** ' पालयन्ति, ' **पाउणित्ता** ' पालयित्वा ' **कालमासे**

---

है। (**मिच्छादिट्ठी**) ये सातों ही निह्नव मिथ्यादृष्टि है। (**बहूहिं असब्भावुब्भावणाहिं मिच्छत्ताभिनिवेसेहि य अप्पाणं च परं च तदुभयं च वुग्गाहेमाणा वुप्पाएमाणा**) ये अनेक प्रकार के असद्भावो की उद्भावनाओ से-अविद्यमान पदार्थों की कल्पनाओं से, तथा मिथ्यात्वादिक में अभिनिवेशों से-अपने मत को स्थापन करने रूप आग्रहों से अपनी आत्मा को, दूसरों को तथा स्व-पर इन दोनों को अपने मत में स्थापित करते हुए एवं जिनमत के विरुद्ध प्ररूपणा करने से उत्पन्न पाप का उपार्जन करते हुए (**विहरित्ता**) विचरते है। इस

---

લિંગ-રજોહરણ આદિ સાધુનાં ચિહ્નોની અપેક્ષાએ તેઓમાં સમાનતા છે. (मिच्छादिट्ठी) એ સાતેય નિહ્નવ મિથ્યાદષ્ટિ છે. (बहूहिं असब्भावुब्भावणाहिं मिच्छत्ताभिनिवेसेहि य अप्पाणं च परं च तदुभयं च वुग्गाहेमाणा वुप्पाएमाणा) તેઓ અનેક પ્રકારના અસદ્ભાવોની ઉદ્ભાવનાથી-અવિદ્યમાન પદાર્થોની કલ્પનાઓ કરવાથી તથા મિથ્યાત્વ આદિકમાં અભિનિવેશોથી-પોતાના મતનું સ્થાપન કરવા રૂપી આગ્રહોથી, પોતાના આત્માને, બીજાઓને તથા પોતાના ઉપરાંત આ બન્નેને પોતાના મતમા સ્થાપિત કરતાં તેમ જ જિનમતની વિરુદ્ધ પ્રરૂપણા કરવાથી ઉત્પન્ન થતાં પાપનું ઉપાર્જન કરતાં (विहरित्ता) વિચરે છે. આ પ્રકારે તે (बहूइं वासाइं सामण्णपरियायं पाउणंति) અનેક વરસો સુધી આવાજ પ્રકારના આચાર-વિચારોમાં તન્મય બનીને શ્રામણ્યપર્યાયનું પાલન

कालं किच्चा उक्कोसेणं उवरिमेसु गेवेज्जेसु देवत्ताए उववत्तारो भवंति। तहिं तेसिं गई, एक्कतीसं सागरोवमाइं ठिई, परलोगस्स अणाराहगा, सेसं तं चेव ॥ सू० ६१ ॥

मूलम्—से जे इमे गामागार जाव सण्णिवेसेसु मणुया

कालं किच्चा' कालमासे कालं कृत्वा 'उक्कोसेणं' उत्कर्षेण 'उवरिमेसु गेवेज्जेसु' उपरितनेषु ग्रैवेयकेषु 'देवत्ताए उववत्तारो भवंति' देवत्वेनोपपत्तारो भवन्ति। 'तहिं तेसिं गई' तत्र तेषां गतिः, 'एक्कतीसं सागरोवमाइं ठिई' एकत्रिंशत्सागरोपमानि स्थितिः, 'परलोगस्स अणाराहगा' परलोकस्याऽनाराधकाः, 'सेसं तं चेव' शेषं तदेव ॥ सू० ६१ ॥

टीका—'से जे इमे' इत्यादि। 'से जे इमे' अथ य इमे 'गामा-गर-जाव-सण्णिवेसेसु' ग्रामाऽऽकर-यावत्सन्निवेशेषु 'मणुया भवंति' मनुजा भवन्ति,

इस प्रकार ये (बहूइं वासाइं सामण्णपरियायं पाउणंति) अनेक वर्षों तक इसी प्रकार के आचार-विचारों में तन्मय बने हुए श्रामण्यपर्याय का पालन करते रहते हैं। (पाउणित्ता कालमासे कालं किच्चा उक्कोसेणं उवरिमेसु गेवेज्जेसु देवत्ताए उववत्तारो भवंति) पालकर काल अवसर काल करके अधिक से अधिक उपरिम ग्रैवेयकों में देव की पर्याय से उत्पन्न होते हैं। (तहिं तेसिं गई, एकतीसं सागरोवमाइं ठिई, परलोगस्स अणाहारगा, सेसं तं चेव) वहीं पर उनकी गति एवं ३१ सागर प्रमाण स्थिति होती है। ये परलोक के अनाराधक कहे गये हैं। अवशिष्ट सब पूर्ववत् समझना चाहिये ॥ सू. ६१ ॥

'से जे इमे' इत्यादि।

(से जे इमे) जो ये (गामा-गर-जाव-सण्णिवेसेसु मणुया भवंति) ग्राम आकर यावत् सन्निवेशों में मनुष्य रहते हैं, (तं जहा) जैसे-(अप्पारंभा अप्पपरिग्गहा

ક્ર્યા કરે છે. (पाउणित्ता कालमासे कालं किच्चा उक्कोसेणं उवरिमेसु गेवेज्जेसु देवत्ताए उववत्तारो भवंति) પાળીને કાલ અવસરે કાલ કરીને વધારેમાં વધારે ઉપરિમ ગ્રૈવેયકોમાં દેવની પર્યાયથી ઉત્પન્ન થાય છે. (तहिं तेसिं गई एक्कतीसं सागरोवमाइं ठिई परलोगस्स अणाहारगा सेसं तं चेव) ત્યાં તેમની ગતિ, તેમજ ૩૧ સાગર પ્રમાણુ સ્થિતિ હોય છે. તેઓ પરલોકના અનારાધક કહેવાય છે. બાકીનું બધું પૂર્વ પ્રમાણે સમજવું જોઈએ. (સૂ. ૬૦)

'से जे इमे' ઇત્યાદિ.

(से जे इमे) તેઓ કે જે (गामागर जाव सण्णिवेसेसु मणुया भवंति)

**भवंति; तं जहा—अप्पारंभा अप्पपरिग्गहा धम्मिया धम्माणुया धम्मिट्ठा धम्मक्खाई धम्मप्पलोई धम्मपलज्जणा धम्मसमुदायारा**

'**तं जहा**' तद्यथा—'**अप्पारंभा**' अल्पारम्भाः—अल्प आरम्भः=कृष्यादिना पृथिव्यादिजीवोपमर्दो येषां ते तथा, '**अप्पपरिग्गहा**' अल्पपरिग्रहाः अल्पः—परिग्रहः=धनधान्यादिस्वीकाररूपो येषां ते तथा, '**धम्मिया**' धार्मिकाः—धर्मेण=प्राणातिपातादिविरमणरूपेण चरन्ति ये ते धार्मिकाः, '**धम्माणुया**' धर्मानुगाः—धर्ममनुगच्छन्ति ये ते धर्माऽनुगाः, कुत इत्थम्? अत्राऽऽह—'**धम्मिट्ठा**' धर्मेष्टाः—धर्म एवेष्टो=वल्लभो येषां ते धर्मेष्टाः। अथवा—धर्मिष्ठाः=धर्मोऽस्ति येषां ते धर्मिणः, त एवातिशययुक्ता धर्मिष्ठाः। '**धम्मक्खाई**' धर्मख्यातयः—धर्मात् ख्यातिः=प्रसिद्धिर्येषां ते धर्मख्यातयः। अथवा धर्माऽऽख्यायिनः—धर्ममाख्यान्ति=भव्येभ्यः प्रतिपादयन्तीति धर्माख्यायिनः। '**धम्मप्पलोई**' धर्मप्रलोकिनः।

**धम्मिया धम्माणुया**) अल्प आरंभी—जो पृथिव्यादिक जीवों के उपमर्दन वाले कृष्यादिक रूप आरंभ को अल्प करते है वे, अल्पपरिग्रही **अर्थात्** जिनके धनधान्यादिक के स्वीकाररूप ममत्वभाव अल्प होता है वे, धार्मिक—प्राणातिपातादिक विरमणरूप धर्म से जो युक्त होते है वे, तथा—धर्मानुग—धर्मपद्धति के अनुसार जो चलते हैं वे, (**धम्मिट्ठा धम्मक्खाई धम्मप्पलोई धम्मपलज्जणा धम्मसमुदायारा**) **धर्मेष्ट**—धर्म ही जिन्हे प्रिय है वे, अथवा **धर्मिष्ठ**—धर्म के अतिशय से जो युक्त है वे, **धर्मख्याति**-धर्म से जिनकी ख्याति हुई है वे, अथवा-**धर्मख्यायी**-भव्यजनों के लिये जो श्रुतचारित्ररूप धर्म का कथन करने वाले होते है वे, **धर्मप्रलोकी** धर्म को जो उपादेयरूप से मानते है वे, **धर्मप्रञ्जन**—धर्म के सेवन करने में जो अधिक

ગામ, આકર તેમજ સન્નિવેશોમાં મનુષ્ય રહે છે, (तं जहा) જેવા કે (अप्पारंभा अप्पपरिग्गहा धम्मिया धम्माणुया) અલ્પ આરંભી—જે પૃથિવી આદિક જીવોને દુઃખ દેવાવાળા કૃષિ આદિક રૂપ આરંભને અલ્પ (ઓછાં) કરે છે તેઓ, અલ્પ પરિગ્રહી—જેના ધન ધાન્ય આદિકના સ્વીકાર રૂપ મમત્વભાવ અલ્પ હોય છે તેઓ, ધાર્મિક—પ્રાણાતિપાતઆદિકના વિરમણરૂપ ધર્મથી જે યુક્ત હોય છે તેઓ, તથા ધર્માનુગ—ધર્મપદ્ધતિને અનુસરીને જે ચાલે છે તેઓ, (धम्मिट्ठा धम्मक्खाई, धम्मप्पलोई, धम्मपलज्जणा धम्मसमुदायारा) ધર્મેષ્ટ—ધર્મ જ જેમને ઈષ્ટ—પ્રિય છે તેઓ, અથવા ધર્મિષ્ઠ—ધર્મના અતિશયથી જેઓ યુક્ત છે તેઓ, ધર્મખ્યાતિ—ધર્મથી જેઓની ખ્યાતિ (પ્રસિદ્ધિ) થઈ છે તેઓ, અથવા ધર્મખ્યાયી—ભવ્ય જનોને માટે જે શ્રુતચારિત્ર રૂપ ધર્મનું કથન કરવાવાળા હોય છે તેઓ, ધર્મપ્રલોકી—ધર્મને જે ઉપાદેયરૂપથી માને છે તેઓ, ધર્મ-

**धम्मेणं चेव वित्तिं कप्पेमाणा सुसीला सुव्वया सुप्पडियाणंदा साहूहिं एगच्चाओ पाणाइवायाओ पडिविरया जावज्जीवाए, एगच्चाओ अपडिविरया, एवं जाव पडिग्गहाओ, एगच्चाओ कोहाओ**

'**धम्मपलज्जणा**' धर्मप्ररञ्जनाः–धर्मे प्ररज्यन्ति=आसजन्ति–परायणा भवन्ति ये ते धर्मप्ररञ्जनाः । '**धम्मसमुदायारा**' धर्मसमुदाचारा.–धर्म: समुदाचारः=सदाचारो येषां ते धर्मसमुदाचाराः । '**धम्मेणं चेव वित्तिं कप्पेमाणा**' धर्मेणैव वृत्तिं कल्पयन्तः–धार्मिक–जीविकया निर्वहन्तः, '**सुसीला**' सुशीलाः=शोभनाचारवन्तः '**सुव्वया**' सुव्रताः=शोभनव्रतवन्तः '**सुप्पडियाणंदा**' सुप्रत्यानन्दाः–सुष्ठु प्रत्यानन्दः=चित्ताऽऽह्लादो येषां ते तथा, '**साहूहिं**' साधुभ्यः=साधुसमीपात्–साध्वन्तिके प्रत्याख्याय '**एगच्चाओ**' एकस्मात्=स्थूलरूपात् न तु सर्वस्मात् '**पाणाइवायाओ**' प्राणातिपातात्=परप्राणव्यपरोपणत', '**पडिविरया**' प्रतिविरताः=निवृत्ताः, '**जावज्जीवाए**' यावज्जीवं–जीवनपर्यन्तमित्यर्थः, '**एगच्चाओ अपडिविरया**' एकस्मात्=सूक्ष्मरूपात् अप्रतिविरताः=अनिवृत्ता' । '**एवं जावपरिग्गहाओ**' एवं

अनुराग सपन्न होते है वे, **धर्मसमुदाचार**–धर्म ही जिनका उत्तम आचार है वे, (**धम्मेणं चेव वित्तिं कप्पेमाणा**) तथा जो धर्म से ही अपनी जीविका चलाते है वे, (**सुसीला सुव्वया सुप्पडियाणंदा**) शोभन आचार जिनका है वे, सुव्रत–निरतिचार व्रतों के जो पालन करने वाले है वे, सुप्रत्यानन्द–जिनका चित्त सदा अच्छी तरह से आनंदसपन्न रहा करता है वे, तथा जो (**साहूहिं एगच्चाओ**) साधु के समीप प्रत्याख्यान लेकर केवल एक (**पाणाइवायाओ**) स्थूल प्राणातिपातरूप से (**जावज्जीवाए पडिविरया**) जीवनपर्यन्त प्रतिविरत –निवृत्त रहते हैं, (**एगच्चाओ अपडिविरया**) परंतु सूक्ष्मरूप प्राणातिपात से विरक्त नहीं रहते हैं वे, (**एवं जाव**

પ્રરંજન–ધર્મનું સેવન કરવામાં જે અધિક અનુરાગસંપન્ન હોય છે તેઓ, ધર્મસમુદાચાર–ધર્મજ જેમનો ઉત્તમ આચાર છે તેઓ, (धम्मेणं चेव वित्तिं कप्पेमाणा) તથા જે ધર્મથી જ પોતાનું જીવન ચલાવે છે તેઓ, (सुसीला सुव्वया सुप्पडियाणंदा) શોભન આચાર જેના છે તેઓ, સુવ્રત–નિરતિચાર વ્રતોનું જેઓ પાલન કરવાવાળા છે તેઓ, સુપ્રત્યાનંદ–જેમનું ચિત્ત હંમેશાં સારી રીતે આનંદસંપન્ન રહ્યા કરે છે તેઓ, તથા જેઓ (साहूहि एगच्चाओ) સાધુની પાસે પ્રત્યાખ્યાન લઇને કેવલ એક (पाणाइवायाओ) સ્થૂલપ્રાણાતિપાતરૂપ પાપથી (जावजीवाए पडिविरया) જીવનપર્યન્ત પ્રતિવિરત–નિવૃત્ત રહે છે, (एगच्चाओ अपडिविरया) પરંતુ સૂક્ષ્મ પ્રાણાતિપાતથી વિરક્ત રહેતા નથી તેઓ, (एवं जाव

माणाओ मायाओ लोहाओ पेज्जाओ दोसाओ कलहाओ अब्भक्खाणाओ पेसुण्णाओ परपरिवायाओ अरइरईओ मायामोसाओ मिच्छादंसणसल्लाओ पडिविरया जावज्जीवाए, एगच्चाओ अपडिविरया, एगच्चाओ आरंभसमारंभाओ पडिविरया जावज्जीवाए,

---

यावत्परिग्रहात्, यावच्छब्देन–मृषावादाऽदत्तादान–मैथुनानि बोद्धव्यानि। 'एगच्चाओ' एकस्मात्=स्थूलात् 'कोहाओ' क्रोधात्, 'माणाओ' मानात्, 'मायाओ' मायायाः, 'लोहाओ' लोभात्, 'पेज्जाओ' प्रेयसः, 'दोसाए' द्वेषात् 'कलहाओ' कलहात् 'अब्भक्खाणाओ' अभ्याख्यानात्=पैशुन्यात, 'परपरिवायाओ' परपरिवादात् 'अरइरईओ' अरतिरतिभ्याम् 'मिच्छादंसणसल्लाओ' मिथ्यादर्शनशल्यात् 'पडिविरया' प्रतिविरताः= भावतो विरताः 'जावज्जीवाए' यावज्जीवं=जीवनपर्यन्तम्, 'एगच्चाओ अपडिविरया' एकस्मात्–सूक्ष्मात् अप्रतिविरताः 'एगच्चाओ आरंभसमारंभाओ पडिविरया जावज्जीवाए एगच्चाओ अपडिविरया' एकस्मादारम्भसमारम्भात्प्रतिविरता यावज्जीवमेकस्मादप्रति-

---

पडिग्गहाओ) तथा इसी तरह स्थूल मृषावाद, स्थूल अदत्तादान, स्थूल मैथुन एवं स्थूल परिग्रह से विरक्त रहते हैं वे, (एगच्चाओ कोहाओ माणाओ मायाओ लोहाओ पेज्जाओ दोसाओ कलहाओ अब्भक्खाणाओ पेसुण्णाओ परपरिवायाओ अरइरईओ मायामोसाओ मिच्छादंसणसल्लाओ पडिविरया जावज्जीवाए) इसी प्रकार स्थूल क्रोध, मान, माया, लोभ, राग, द्वेष, कलह, अभ्याख्यान, पैशुन्य, परपरिवाद, अरति, रति, मायामृषा, एवं मिथ्यादर्शनशल्य से जीवनपर्यन्त प्रतिविरत रहा करते है, (एगच्चाओ अपडिविरया) किन्तु सूक्ष्म क्रोधादिकों से प्रतिविरत नहीं रहते है, (एगच्चाओ आरंभसमारंभाओ पडि-

---

पडिग्गहाओ) तथा એવી જ રીતે સ્થૂલ મૃષાવાદ, સ્થૂલ અદત્તાદાન, સ્થૂલ મૈથુન, તેમજ સ્થૂલ પરિગ્રહથી જે વિરક્ત રહે છે તેઓ, (एगच्चाओ कोहाओ माणाओ मायाओ लोहाओ पेज्जाओ दोसाओ कलहाओ अब्भक्खाणाओ पेसुण्णाओ परपरिवायाओ अरइरईओ मायामोसाओ मिच्छादंसणसल्लाओ पडिविरया जावज्जीवाए) એજ પ્રકારે સ્થૂલ ક્રોધ, માન, માયા, લોભ, રાગ, દ્વેષ, કલહ, અભ્યાખ્યાન, પૈશુન્ય, પરપરિવાદ, અરતિ, રતિ, માયામૃષા, તેમજ મિથ્યાદર્શન–શલ્યથી જીવનપર્યન્ત પ્રતિવિરત રહ્યા કરે છે, (एगच्चाओ अपडिविरया) પરંતુ સૂક્ષ્મ ક્રોધ આદિકોથી પ્રતિવિરત રહેતા નથી. (एगच्चाओ आरंभ-

**एगच्चाओ अपडिविरया, एगच्चाओ करणकारावणाओ पडिविरया जावज्जीवाए, एगच्चाओ अपडिविरया, एगच्चाओ पयणपयावणाओ पडिविरया जावज्जीवाए, एगच्चाओ पयणपयावणाओ अपडिविरया, एगच्चाओ कोट्टण-पिट्टण-तज्जण-तालण-वह-**

विरताः '**एगच्चाओ करणकारावणाओ**' एकस्मात्करणकारणात्=स्वयमनुष्ठानं करणं, प्रेरणया परहस्तात्कारणम्, तयोःसमाहारः, तस्मात् '**पडिविरया**' प्रतिविरताः, '**जावज्जीवाए**' यावज्जीवम्, '**एगच्चाओ अपडिविरया**' एकस्मादप्रतिविरताः=राज्ञामाज्ञादिभिः कारणैः । '**एगच्चाओ पयणपयावणाओ पडिविरया जावज्जीवाए**' एकस्मात्पचनपाचनात्-पचनं=स्वहस्तात्पाककरणं, पाचनं=परद्वारेण, तस्मात्प्रतिविरताः यावज्जीवं, '**एगच्चाओ पयणपयावणाओ अपडिविरया**' एकस्मात् पचनपाचनादप्रतिविरताः। '**एगच्चाओ कोट्टण-पिट्टण-तज्जण-तालण-वह-बंध-परिकिलेसाओ**' एकस्मात्कुट्टन-पिट्टन-तर्जन-ताडन

**विरया जावज्जीवाए** ) ऐसे ही वे स्थूल आरंभ-समारंभ से ही जीवनपर्यंत विरक्त रहते हैं, सूक्ष्म आरंभसमारंभ से नहीं। (**एगच्चाओ करणकारावणाओ पडिविरया**) कोई ऐसे है जो केवल स्वयं करने से एवं दूसरों से कराने से जीवनपर्यन्त विरत रहते है, (**एगच्चाओ अपडिविरया**) कोई ऐसे है जो राजाकी आज्ञा-आदि के कारण इनसे प्रतिविरत नहीं है, (**एगच्चाओ पयण-पयावणाओ पडिविरया जावज्जीवाए**) कोई २ ऐसे हैं जो पचन-पाचन क्रिया से जीवन पर्यन्त विरन है। (**एगच्चाओ पयणपयावणाओ अपडिविरया**) कोई २ ऐसे है जो इन पचन-पाचनादि क्रियाओं से विरत नहीं है। ( **एगच्चाओ**

समारंभाओ पडिविरया जावज्जीवाए) તેમજ તેઓ સ્થૂલ આરંભ-સમારંભથી પણ જીવનપર્યન્ત વિરક્ત રહે છે, સૂક્ષ્મ આરંભ-સમારંભથી વિરક્ત નથી રહેતા. (एगच्चाओ करणकारावणाओ पडिविरया) કોઈ એવા છે કે જે કરવા-કરાવવાથી જીવનપર્યંત વિરત હોય છે. (एगच्चाओ अपडिविरया) કોઈ એવા છે કે જે રાજાની આજ્ઞા આદિના કારણે તેનાથી પ્રતિવિરત હોતા નથી, (एगच्चाओ पयणपयावणाओ पडिविरया जावज्जीवाए) કોઈ કોઈ એવા છે કે જે પચન-પાચન ક્રિયાથી જીવનપર્યંત વિરત છે. (एगच्चाओ पयणपयावणाओ अपडिविरया) કોઈ કોઈ એવા છે કે જે આ પચન-પાચન આદિ ક્રિયાઓથી વિરત નથી. (एगच्चाओ कोट्टण-पिट्टण-तज्जण-तालण-वह-बंध-परिकिलेसाओ पडिविरया

**बंध-परिकिलेसाओ पडिविरया जावज्जीवाए, एगच्चाओ अपडिविरया, एगच्चाओ ण्हाण-मद्दण-वण्णग-विलेवण-सद्द-फरिस-रस-रूव-गंध-मल्ला-लंकाराओ पडिविरया जावज्जीवाए, एगच्चाओ**

---

-वध-बन्ध-परिक्लेशात्-तत्र कुट्टनम्=छेदनम्, पिट्टनं=वस्त्रादेरिव मुद्गरादिना हननम्, तर्जनम्='ज्ञास्यसि रे जाल्म!' एतद्रूपं भर्त्सनं, ताडनं=चपेटादिना हननम्, वधः=प्राणव्यपरोपणं, बन्धः=रज्जुपाशादिना बन्धनम्, परिक्लेशो=बाधोत्पादनं तेषां समाहारः तस्मात् '**पडिविरया**' प्रतिविरताः=निवृत्ता '**जावज्जीवाए**' यावज्जीवम्, '**एगच्चाओ अपडिविरया**' एकस्मात् अप्रतिविरताः=अनिवृत्ताः। '**एगच्चाओ ण्हाण-मद्दण-वण्णग-विलेवण-सद्द-फरिस-रस-रूव-गंध-मल्ला-लंकाराओ पडिविरया जावज्जीवाए**' एकस्मात् स्नान-मर्दन-वर्णक-विलेपन-शब्द-स्पर्श-रस-

---

**कोट्टण-पिट्टण-तज्जण-तालण-वह-बंध-परिकिलेसाओ पडिविरया जावज्जीवाए**) कोई २ ऐसे है जो कुट्टन-छेदन, पिट्टन-पीटना-वस्त्रादिक का जिस प्रकार मुद्गरादिक से कूटना होता है उसी प्रकार मुद्गर-मूसल आदि से पीटना-कूटना, तर्जन-खोटे वचनों द्वारा भर्त्सना करना, ताडन-चपेटा थप्पड-आदि मारना, वध-प्राणव्यपरोपण करना, वन्ध-रज्जुपाश आदि से किसी को वांधना, एवं परिक्लेश-किसी को बाधा आदि उत्पन्न करना, इन सब कार्यो से यावज्जीवन प्रतिविरत है, (**एगच्चाओ अपडिविरया**) कोई २ ऐसे है जो इन क्रियाओं से प्रतिविरत नहीं हैं। (**एगच्चाओ ण्हाण-मद्दण-वण्णग-विलेवण-सद्द-फरिस-रस-रूव-गंध-मल्ला-लंकाराओ पडिविरया जावज्जीवाओ**)

---

જાવજ્જીવાએ) કોઈ કોઈ એવા છે કે જે કુટ્ટન-છેદન, પિટ્ટન-પીટવું-વસ્ત્રાદિને જે પ્રકારે મુદ્ગર આદિથી કૂટે છે તે પ્રકારે મુદ્ગર (ધોકા) મૂસલ (સાંબેલાં) આદિથી પીટવા-કૂટવા, તર્જન-ખોટાં ખરાબ વચનો દ્વારા ભર્ત્સના કરવી, તાડન-તમાચા કે થપ્પડ આદિ મારવું, વધ-પ્રાણવ્યપરોપણ કરવું (મારી નાખવું), બંધ-દોરડાંના પાશ આદિથી કોઈને બાંધવું, તેમજ પરિક્લેશ-કોઈને બાધા (દુઃખ) આદિ પહોંચાડવું. આ બધાં કાર્યોથી જીવનપર્યન્ત પ્રતિવિરત છે. (एगच्चाओ अपडिविरया) કોઈ કોઈ એવા છે કે જે આ ક્રિયાઓથી પ્રતિવિરત નથી. (एगच्चाओ ण्हाण-मद्दण-वण्णग-विलेवण-सद्द-फरिस-रस-रूव-गंध-मल्ला-लंकाराओ

**अपडिविरया, जे यावण्णे तहप्पगारा सावज्जजोगोवहिया कम्मंता परपाणपरियावणकरा कज्जंति तओ वि एगच्चाओ पडिविरया जावज्जीवाए, एगच्चाओ अपडिविरया ॥ सू० ६२ ॥**

रूप–गन्ध–माल्याऽ–लङ्कारात्प्रतिविरता यावज्जीवम्, '**एगच्चाओ अपडिविरया**' एकस्मादप्रतिविरताः–तत्र वर्णकः=अङ्गरागः, अन्यत् स्पष्टम्। तथा–'**जे यावण्णे तहप्पगारा**' ये यावन्तस्तथाप्रकाराः '**सावज्जजोगोवहिया**' सावद्ययोगौपधिकाः–सावद्ययोगाः=सावद्ययोगयुक्ताश्च ते औपधिकाः=मायाप्रयोजनाश्चेति तथा, '**पर–पाण–परियावणकरा**' परप्राणपरितापनकराः '**कम्मंता**' कर्मान्ताः=कृष्यादिव्यापारांशाः '**कज्जंति**' क्रियन्ते, '**तओ वि एगच्चाओ पडिविरया**' ततोऽपि एकस्मात् प्रतिविरताः=प्रतिनिवृत्ताः, '**एगच्चाओ अपडिविरया**' एकस्मात् अप्रतिविरताः=अनिवृत्ताः सन्ति ॥ सू० ६२ ॥

कोई २ ऐसे है जो जीवनपर्यन्त स्नान से, मर्दन से, विलेपन से, शब्द, रूप, गंध, रस, स्पर्श इन इन्द्रियों के भोगों से, माला एवं अलंकार आदि से निवृत्त हैं। (**एगच्चाओ अपडिविरया**) कोई २ ऐसे भी है जो इनसे बिलकुल ही प्रतिविरत नहीं हैं। (**जे यावण्णे तहप्पगारा सावज्जजोगोवहिया कम्मंता परपाणपरियावणकरा कज्जंति**) इसी प्रकार के और भी जितने सावद्ययोगोपधिक अर्थात्–सावद्ययोगयुक्त और मायाकषायजन्य तथा–दूसरों के प्राणों को परिताप पहुँचाने वाले जो कृष्यादि व्यापार है, (**तओ वि**) उनसे भी कितनेक ऐसे मनुष्य है जो (**एगच्चाओ पडिविरया जावज्जीवाए**) एकान्ततः

पडिविरया जावज्जीवाओ) કોઈ કોઈ એવા હોય છે કે જે જીવનપર્યંત સ્નાનથી, મર્દનથી, અંગરાગથી, વિલેપનથી, શબ્દ–સ્પર્શ–રૂપ–ગંધ–રસ એ ઇંદ્રિયોના ભોગોથી અને માળા તેમજ અલંકાર આદિથી નિવૃત્ત છે. (एगच्चाओ अपडिविरया) કોઈ કોઈ એવા પણ છે કે જે તેનાથી બિલકુલ જ પ્રતિવિરત હોતા નથી. (जे यावण्णे तहप्पगारा सावज्जजोगोवहिया कम्मंता परपाणपरियावणकरा कज्जंति) એજ પ્રકારે બીજા પણ જેટલા સાવદ્યયોગૌપધિક એટલે સાવદ્યયોગયુક્ત અને માયાકષાયજનિત તથા બીજા જીવોના પ્રાણોને પરિતાપ પહોંચાડનાર જે કૃષિ આદિ વ્યાપાર છે, (तओवि) તેનાથી પણ બીજા કેટલાક એવા મનુષ્ય છે કે જે (एगच्चाओ पडिविरया जावज्जीवाए) જીવનપર્યન્ત

मूलम्—तं जहा-समणोवासगा भवंति, अभिगय-जीवाजीवा उवलद्धपुण्णपावा आसव-संवर-निज्जर-किरिया-अहिगरण-बंध-मोक्ख-कुसला असहेज्जा देवा-सुर-नाग-

टीका—ये पूर्वं सामान्येन कथितास्त एव विशेषेण कथ्यन्ते-'तं जहा' तद्यथा-ते मनुजाः, 'समणोवासगा भवंति' श्रमणोपासकाः=साधुसेवकाः-श्रावकाः भवन्ति, ते कीदृशाः सन्ति? अत्राऽऽह-'अभिगयजीवाजीवा' अभिगतजीवाजीवाः-अभिगताः-यथावस्थितस्वरूपेण ज्ञाता जीवा अजीवाश्च यैस्ते तथा, जीवाजीवतत्त्वज्ञानवन्त इत्यर्थः; 'उवलद्धपुण्णपावा' उपलब्धपुण्यपापाः-उपलब्धे=यथावस्थितस्वरूपेण विज्ञाते पुण्यपापे यैस्ते तथा, तत्त्वतो विज्ञातपुण्यपापस्वरूपा इत्यर्थः; 'आसव-संवर-निज्जर-किरिया-अहिगरण-बंध-मोक्ख-कुसला' आस्रव-संवर-निर्जरा-क्रिया-धिकरण-बन्ध-मोक्ष-कुशलाः-तत्रास्रवः-आस्रवति=प्रविशति अष्टविधं कर्मसलिलं येन आत्मसरसि स आस्रवः=

जीवनपर्यंत प्रतिविरत है, तथा कितनेक ऐसे है जो (एगच्चाओ अपडिविरया) इनसे प्रतिविरत नहीं है॥ सू० ६२॥

'तं जहा समणोवासगा' इत्यादि।

(तं जहा) इसी प्रकार (समणोवासगा भवंति) अन्य श्रमणोपासक होते है; जो कि (अभिगयजीवाजीवा) जीव और अजीव के यथार्थ स्वरूप के ज्ञाता होते है, (उवलद्धपुण्णपावा) पुण्य एवं पाप का यथावस्थित स्वरूप जिन्होंने अच्छी तरह जान लिया है, (आसव-संवर-निज्जर-किरिया-अहिगरण-बंध-मोक्ख-कुसला) आस्रव, संवर, निर्जरा, क्रिया, अधिकरण, बंध, मोक्ष इनमें हेय कौन २ है और उपादेय कौन २ हैं: इस प्रकार हेय और उपादेय के ज्ञान से जिनका भाव परिपक्व हो चुका है।

પ્રતિવિરત છે, તથા કેટલાક એવા છે કે જે (एगच्चाओ अपडिविरया) તેનાથી પ્રતિવિરત નથી. (સૂ. ૬૨)

'तं जहा समणोवासगा' ઇત્યાદિ.

(तं जहा) એજ રીતે (समणोवासगा भवंति) જે શ્રમણોપાસક હોય છે, (अभिगयजीवाजीवा) જે જીવ અને અજીવના યથાર્થ સ્વરૂપના જ્ઞાતા હોય છે, (उवलद्धपुण्णपावा) પુણ્ય તેમજ પાપનું યથાવસ્થિત સ્વરૂપ જેઓએ સારી રીતે સમજી લીધેલું છે, (आसव-संवर-निज्जर-किरिया-अहिगरण-बंध-मोक्ख-कुसला) આસ્રવ, સંવર, નિર્જરા, ક્રિયા, અધિકરણ, બંધ, મોક્ષ, તેમાં હેય

मिथ्यात्वाविरतिप्रमादकषाययोगरूपः, संवरः—संवियते=निरुध्यते आस्रवत्कर्म येन परिणामेन स संवरः, समितिगुप्तिप्रभृतिभिरात्मसरसि आस्रवत्कर्मसलिलानां स्थगनमित्यर्थः; निर्जरा—निर्जरणं=कर्मणां जीवप्रदेशेभ्यः परिशटनं-विशरणं, सा च—देशतः कर्मक्षयरूपा, क्रिया=कायिक्यादिका, अधिकरणम्-अधिक्रियते नरकगतियोग्यतां प्राप्यते आत्माऽनेनेत्यधिकरणम्—द्रव्यतो गन्त्रीयन्त्रादि, भावतः क्रोधादिकम्, बन्धः—जीवस्य कर्मपुद्गलसम्बन्धः; मोक्षः—

जिस प्रकार नौका में छिद्रों द्वारा जल का प्रवेश होता रहता है इसी प्रकार इस आत्मारूप सरोवर में जिसके द्वारा अष्टविध कर्मरूप जल का आगमन होता है उसका नाम आस्रव है। मिथ्यादर्शन, अविरति, प्रमाद, कषाय एवं योग के भेद से यह आस्रव अनेक प्रकार का है। छिद्रों के बंद करने से जिस प्रकार नौका में पानी का आना रुक जाता है उसी प्रकार जिन परिणामों से आते हुए कर्म रुक जाते है उन परिणामों का नाम संवर है। गुप्ति, समिति एवं परीषह आदि के भेद से यह संवर अनेक प्रकार का बतलाया गया है। जीव-प्रदेश से कर्मों के एकदेश का नाश होना इसका नाम निर्जरा है। काय आदि संबंधी व्यापारों का नाम क्रिया है। नरकगति में जाने की योग्यता जीव जिसके द्वारा प्राप्त करता है वह अधिकरण है। द्रव्य और भाव के भेद से यह दो प्रकार का है। यहां पर भाव अधिकरण का कथन है, अतः वह क्रोधादिक कषायरूप जानना चाहिये। जीव का एवं कर्मपुद्गलों का परस्पर में एकक्षेत्रावगाहरूप संबध का नाम बंध है। समस्त कर्मों के

શું છે અને ઉપાદેય શું છે આવી રીતે હેય અને ઉપાદેયના જ્ઞાનથી જેના ભાવ પરિપક્વ થઇ ગયા હોય છે. જેવી રીતે નૌકામાં છિદ્રો દ્વારા જળનો પ્રવેશ થયા કરે છે તેવી જ રીતે આ આત્મારૂપ સરોવરમાં જેના દ્વારા આઠ પ્રકારનાં કર્મરૂપી જલનું આગમન થાય છે તેનું નામ આસ્રવ છે. મિથ્યાદર્શન, અવિરતિ, પ્રમાદ, કષાય તેમજ યોગના ભેદથી આ આસ્રવ અનેક પ્રકારના થાય છે. છિદ્રોને બંધ કરવાથી જેવી રીતે નૌકામાં પાણીનું આવવું રોકાઈ જાય છે તેવી જ રીતે જે પરિણામોથી આવનારાં કર્મ રોકાઈ જાય એવાં પરિણામોનુ નામ સંવર છે. ગુપ્તિ, સમિતિ તેમજ પરીષહ આદિના ભેદથી આ સંવર અનેક પ્રકારના બતાવવામાં આવ્યા છે. જીવ-પ્રદેશથી કર્મોનો એક દેશ નષ્ટ થાય તેનું નામ નિર્જરા છે. કાય આદિ સંબંધી વ્યાપારોનું નામ ક્રિયા છે. નરકગતિમાં જવાની યોગ્યતા જીવ જેના દ્વારા પ્રાપ્ત કરે છે તે અધિકરણ છે. દ્રવ્ય તથા ભાવના ભેદથી તે બે પ્રકારના છે. અહીં ભાવ-અધિકરણનું કથન છે તેથી તે ક્રોધ આદિક કષાયરૂપ જાણવું જોઈએ. જીવનો તેમજ કર્મપુદ્ગલોનો પરસ્પરમા એકક્ષેત્રાવગાહરૂપ સબંધ છે, તેનું નામ બંધ છે. સમસ્ત કર્મોના અત્યંત-આત્યંતિક ક્ષયનું નામ મોક્ષ છે.

सकलकर्मक्षये सति जीवस्य कर्मसंयोगापादितरूपरहितस्य साद्यपर्यवसानम् अव्याबाधमवस्थानम्, उक्तं च—

**नीसेसकम्मविगमो मुक्खो जीवस्स सुद्धरूवस्स।**
**साइणपज्जवसाणं अव्वाबाहं अवत्थाणं ॥ १ ॥**

छाया—निश्शेषकर्मविगमो मोक्षो जीवस्य शुद्धरूपस्य।
साद्यपर्यवसानम् अव्याबाधम् अवस्थानम् ॥ इति ॥

तेषां द्वन्द्वः, तत्र कुशलाः, आस्रवादीनां हेयोपादेयतास्वरूपज्ञानिन इत्यर्थः, '**असहेज्जा**' असाहाय्याः—अविद्यमानं साहाय्यं=देवादिसाहाय्यं स्वस्यैव धर्मजनितसामर्थ्यातिशयात् येषां ते तथा, यद्वा—स्वयं कृतं कर्म स्वयमेव भोक्तव्यमिति ज्ञात्वा मनोदौर्बल्याभावात् परसाहाय्यानपेक्षा इत्यर्थः। '**देवा-सुर-नाग-जक्ख-रक्खस-किंनर-किंपुरिस-गरुल-गंधव्व-महोरगाइएहिं देवगणेहिं**' देवा-सुर-नाग-यक्ष-राक्षस-

---

अत्यन्त—आत्यन्तिक—क्षय का नाम मोक्ष है। समस्त कर्मों के क्षय होने पर उनके संयोग से आपादित मूर्तित्व का शीघ्र ही पर्यवसान जीव में हो जाता है, इससे अमूर्तित्वरूप स्वभाव का प्राचुर्य होने से उसका अव्याबाधरूप से अवस्थान हो जाता है। कहा भी है—समस्त कर्मों का विगम ही मोक्ष है और वही जीव का शुद्ध स्वरूप है, इस स्वरूप के प्राप्त होते ही जीव का अवस्थान अव्याबाधरूप से आत्मा में हो जाता है। जो "**असाहाय्या**" है अर्थात् धर्मजनित सामर्थ्य के अतिशय से देवादिको की सहायता की स्वप्न में भी इच्छा नहीं रखते हैं; अथवा अपने द्वारा कृत शुभाशुभ कर्म आत्मा स्वयं ही भोग करता है दूसरों की सहायता इसमें कार्यकारी नहीं हो सकती—इस प्रकार की मानसिक दृढता के कारण जो दूसरों की सहायता की थोडी सी भी पर्वाह नहीं करते हैं। (**देवा-सुर-नाग-जक्ख-**

---

સમસ્ત કર્મોના ક્ષય થવાથી તેમના સંયોગથી આપાદિત મૂર્તિત્વનું તરત જ પર્યવસાન જીવમાં થઈ જાય છે તેથી અમૂર્તિત્વરૂપ પોતાના સ્વભાવનું પ્રાચુર્ય થવાથી તેનું અવ્યાબાધરૂપથી અવસ્થાન થઈ જાય છે. કહ્યું પણ છે-સમસ્ત કર્મોનું વિગમ એજ મોક્ષ છે, અને એજ જીવનું શુદ્ધ સ્વરૂપ છે. આ સ્વરૂપને પ્રાપ્ત થતાં જ જીવનું અવસ્થાન અવ્યાબાધ રૂપથી આત્મામાં થઇ જાય છે. 'असाहाय्या' છે અર્થાત્ ધર્મથી ઉત્પન્ન થતા સામર્થ્યના અતિશયથી દેવ આદિકોની સહાયતાની સ્વપ્નમા પણ ઇચ્છા રાખતા નથી. અથવા પોતાના દ્વારા કરાયેલા શુભ અશુભ કર્મ આત્મા પોતે જ ભોગવે છે, બીજાની સહાયતા એમા કામ આવી શકતી નથી. આ પ્રકારની માનસિક દૃઢતાના કારણે જે બીજાની સહાયતાની જરા પણ પરવાહ કરતા નથી. (देवा-सुर-नाग-जक्ख-रक्खस-किन्नर-किंपुरिस-गरुल-गंधव्व-महोरगाइएहि देवगणेहि निग्गंथाओ

**जक्ख-रक्खस-किन्नर-किंपुरिस-गरुल-गंधव्व-महोरगाइएहिं देवगणेहिं निग्गंथाओ पावयणाओ अणइक्कमणिज्जा, निग्गंथे पावयणे णिस्संकिया णिक्कंखिया निव्वितिगिच्छा लद्धट्ठा गहियट्ठा**

किंनर-किंपुरुष-गरुड-गन्धर्व-महोरगादिकैः-तत्र देवाः=वैमानिकाः असुराः=असुरकुमाराः, नागाः=नागकुमाराः, असुरा नागा इमे उभये भवनपतयः; यक्षाः राक्षसाः किंनराः किंपुरुषाः-एते चत्वारो व्यन्तरविशेषाः, गरुडाः-गरुडध्वजाः-सुपर्णकुमाराः भवनपतिविशेषाः, गन्धर्वाः महोरगाश्च व्यन्तरविशेषाः, तत्प्रभृतिभिः देवगणैः '**निग्गंथाओ पावयणाओ**' नैर्ग्रन्थात् प्रवचनात् '**अणइक्कमणिज्जा**' अनतिक्रमणीयाः =अचालनीयाः-निर्ग्रन्थप्रवचनात् तान् चालयितुं देवादयोऽप्यसमर्था इति भावः। '**निग्गंथे पावयणे**' नैर्ग्रन्थे प्रवचने '**निस्संकिया**' निःशङ्किताः=शङ्कारहिताः, '**निक्कंखिया**' निष्काङ्क्षिताः=परमतानभिलाषिणः, '**निव्वितिगिच्छा**' निर्विचिकित्साः-फलं प्रति सदेहवर्जिताः, '**लद्धट्ठा**' लब्धार्थाः-अर्थश्रवणात्, '**गहियट्ठा**' गृहीतार्थाः-अर्थावधारणात्, '**पुच्छि-**

**रक्खस-किंनर-किंपुरिस-गरुल-गंधव्व-महोरगाइएहिं देवगणेहिं निग्गंथाओ पावणयाओ अणइक्कमणिज्जा**) देव, असुरकुमार, नागकुमार, यक्ष, राक्षस, किंनर, किंपुरुष, गरुड, सुपर्णकुमार, गन्धर्व एवं महोरग इत्यादिक देवगणों द्वारा भी जो निर्ग्रन्थ प्रवचन से एक वाल भी विचलित नहीं किये जा सकते है, (**निग्गंथे पावयणे णिस्संकिया णिक्कंखिया णिव्वितिगिच्छा लद्धट्ठा गहियट्ठा पुच्छियट्ठा अभिगयट्ठा**) निर्ग्रन्थप्रवचन में जिनकी श्रद्धा निःशकित है, निष्कांक्षित है-परमत की ओर जिनके हृदय में जाने की अथवा उसे सराहने आदि की थोड़ी सी भी अभिलाषा नहीं है, निर्विचिकित्सागुण से जो भरपूर है, फल के प्रति जिनकी श्रद्धा सदेह से सर्वथा रिक्त है, जो लब्धार्थ है, गृहीतार्थ

पावणयाओ अणइक्कमणिज्जा) દેવ, અસુરકુમાર, નાગકુમાર, યક્ષ, રાક્ષસ, કિંનર, કિંપુરુષ, ગરુડ, સુપર્ણકુમાર, ગંધર્વ તેમજ મહોરગ ઇત્યાદિક દેવગણો દ્વારા પણ જે નિર્ગ્રંથ પ્રવચન વડે એક વાળ જેટલા પણ વિચલિત કરી શકાતા નથી, (निग्गंथे पायवणे णिस्संकिया, णिक्कंखिया णिव्वितिगिच्छा लद्धट्ठा गहियट्ठा पुच्छियट्ठा अभिगयट्ठा) નિર્ગ્રન્થ પ્રવચનમાં જેમની શ્રદ્ધા નિઃશંકિત છે, કાંક્ષા વગરના છે-પરમતની તરફ જવાની જેમના હૃદયમાં અભિલાષા જરા પણ નથી, અથવા પરમતની પ્રશંસા આદિ કરવાની કિંચિત પણ અભિલાષા નથી, નિર્વિચિકિત્સા-ગુણથી જે ભરપૂર છે. ફળના તરફ

पुच्छियट्ठा अभिगयट्ठा विणिच्छियट्ठा अट्ठि-मिंज-पेमा-णुराग-रत्ता, अयमाउसो! निग्गंथे पावयणे अट्ठे, अयं परमट्ठे, सेसं अणट्ठे, ऊसियफलिहा अवंगुयदुवारा चियत्त-तेउर-घरप्पवेसा बहूहिं

यट्ठा' पृष्टार्थाः-सन्दिग्धार्थस्य प्रश्नकरणात्, 'अभिगयट्ठा' अभिगतार्थाः-पृष्टार्थस्याभिगमात् 'विणिच्छियट्ठा' विनिश्चितार्थाः-पदार्थानां विनिश्चयात्, 'अट्ठि-मिंज-पेमा-णुराग-रत्ता' अस्थिमज्जाप्रेमानुरागरक्ताः अस्थीनि='हड्डी' इति प्रसिद्धानि, मज्जा-अस्थां मध्यगतो धातुविशेषः, तासु अस्थिमज्जासु प्रवचनस्य प्रेमानुरागेण=प्रेमरूपेणानुरागेण रक्ता ये ते तथा, ते श्रावकाः पुत्रादीन् सबोध्य वदन्ति 'अयमाउसो' इत्यादि। इदं हे आयुष्मन्! 'निग्गंथे पावयणे' नैर्ग्रन्थं प्रचनम्, 'अट्ठे' अर्थः=मोक्षस्य कारणम्, अतएव-'अयं परमट्ठे' इदं परमार्थः=सारभूत', 'सेसे अणट्ठे' शेषमनर्थम्-शेषं=नैर्ग्रन्थप्रवचनभिन्नं कुप्रवचनं धनधान्यपुत्रकलत्रादिकं च अनर्थ=व्यर्थम्, 'ऊसियफलिहा' उच्छ्रितस्फटिका'-उच्छ्रितम्=उन्नतं स्फटिक=स्फटिकमिव चित्तं येषां ते तथा, स्फटिकवन्निर्मलहृदया इत्यर्थः;

है, पृष्टार्थ है, अभिगतार्थ है, (विणिच्छियट्ठा) विनिश्चितार्थ है, (अट्ठि-मिंज-पेमा-णुराग-रत्ता) प्रवचन के प्रति अनुराग जिनकी नश-नश में भरा हुआ है। ऐसे ये श्रावक जन वार्तालाप के प्रसग में अपने २ पुत्रादिको को अथवा अन्यजनो को इस प्रकार कह कर समझाते-बुझाते हैं-(अयमाउसो! निग्गंथे पावयणे अट्ठे अयं परमट्ठे सेसे अणट्ठे) हे आयुष्मन्! यह निर्ग्रन्थ प्रवचन ही मोक्ष का कारण है इसलिए यही परमार्थभूत है। इससे भिन्न जो कुप्रवचन है-मिथ्यादृष्टियो द्वारा उपदिष्ट प्रवचन है वह, तथा धन, धान्य, पुत्र एवं कलत्रादि, अनर्थ के कारण है। इन व्यक्तियों का (ऊसियफलिहा) हृदय स्फटिक

જેમની અસંદિગ્ધ શ્રદ્ધા છે, જે લબ્ધાર્થ છે, ગૃહીતાર્થ છે, પૃષ્ટાર્થ છે, અભિગતાર્થ છે, (विणिच्छियट्ठा) વિનિશ્ચતાર્થ છે, (अट्ठि-मिंज-पेमा-णुराग-रत्ता) જેની નસે-નસમાં પ્રવચન પ્રતિ અનુરાગ ભરેલો હોય છે. એવા એ શ્રાવક જન વાર્તાલાપના પ્રસંગમાં પોતપોતાના પુત્રાદિકોને અથવા બીજા લોકોને આ પ્રકારે કહીને સમજાવે-બુઝાવે છે-(अयमाउसो! निग्गंथे पावयणे अट्ठे, अयं परमट्ठे, सेसे अणट्ठे) હે આયુષ્મન્! આ નિર્ગ્રન્થ પ્રવચન જ મોક્ષનું કારણ છે. માટે એજ પરમાર્થભૂત છે. તેનાથી બીજાં જે કાંઈ પ્રવચન છે તે મિથ્યા-દૃષ્ટિઓ દ્વારા ઉપદેશાયેલાં પ્રવચન છે, તે, તથા ધન, ધાન્ય, પુત્ર તેમજ કલત્ર આદિ, અનર્થનાં કારણ છે. આ વ્યક્તિઓનાં હૃદય (ऊसियफलिहा) સ્ફટિક

**सील-व्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहो-ववासेहिं चउद्द-सट्ठमुद्दिट्ठपुण्णमासिणीसु पडिपुण्णं पोसहं सम्मं अणुपालेत्ता**

'अवंगुयदुवारा' अपावृतद्वाराः=दानार्थमर्थिभ्य उद्घाटितद्वारा इत्यर्थ, 'अवंगुय' इति देशीयः शब्दः, 'चियत्तंतेउरघरप्पवेसा' त्यक्तान्तःपुरगृहप्रवेशाः-त्यक्त'=प्रीत्या प्रदत्तः, अन्तःपुरे वा गृहे वा प्रवेशो येषां ते तथा, अतिधार्मिकतया सर्वत्रानाशङ्कनीया इत्यर्थः। ते कथंभूता विहरन्तीत्याह-'चउद्दस-ट्ठमु-द्दिट्ठ-पुण्णमासिणीसु' चतुर्दश्यष्टम्युद्दिष्टापौर्णमासीषु 'बहूहिं' बहुभिः, 'सील-व्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहो-ववासेहिं' शील-व्रत-गुण-विरमण-प्रत्याख्यान-पोषधो-पवासैः-अस्य व्याख्याऽत्रैवोत्तरार्धे त्रिषष्टितमे सूत्रेऽवलोकनीया। चतुर्दश्यष्टम्युद्दिष्टापौर्णमासीषु-इह-'उद्दिष्टा' इत्यनेन अमावास्या गृह्यते।

मणि के समान निर्मल रहा करता है। (अवंगुयदुवारा) इनके घर के दरवाजे सदा दान-के लिये खुले रहा करते है, (चियत्तं-तेउर-घर-प्पवेसा) राजा के अंतःपुर में भी इनको आने-जाने की कोई भी रोक-टोक नहीं होती है। (बहूहिं सील-व्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासेहिं चउदसट्ठमुदिट्ठपुण्णमासिणीसु) 'शील' शब्द से सामा-यिक, देशावकाशिक, पोषध, अतिथिसंविभाग ये चार लिये जाते हैं। 'व्रत' से पांच अणु-व्रत, गुण से तीन गुणव्रत लिये जाते हैं। विरमण-मिथ्यात्व से निवृत्त होना, प्रत्याख्यान-पर्वदिनों में निषिद्धवस्तुका त्याग करना। पोषधोपवास-(पोषं धत्ते) इस व्युत्पत्ति से धर्म की वृद्धि को जो करता है वह पोषध कहलाता है, अर्थात् चतुर्दशी, अमावास्या, अष्टमी, पूर्णिमा, ये पोषध कहलाते है; इन पर्वदिनों में आहार, शरीरसत्कार, अब्रह्मचर्य, और सावद्यव्यापार इन चारों

મણિના જેવાં નિર્મળ રહ્યા કરે છે, (अवंगुयदुवारा) તેમના ઘરના દરવાજા સદા દાન માટે ઉઘાડા રહ્યા કરે છે. (चियत्तंतेउरघरप्पवेसा) રાજાના અંતઃ-પુરમાં પણ તેમને આવવા-જવાની કોઈ પણ જાતની રોક-ટોક થતી નથી, (बहूहिं सील-व्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासेहिं चउद्दसट्ठमुद्दिट्ठपुण्ण-मासिणीसु) 'શીલ' શબ્દથી સામાયિક, દેશાવકાશિક, પોષધ, અતિથિસંવિ-ભાગ, એ ચાર સમજવાના છે. 'વ્રત'થી પાંચ અણુવ્રત, 'ગુણ'થી ત્રણ ગુણ-વ્રત લેવાનાં છે, વિરમણ-મિથ્યાત્વથી નિવૃત્ત થવું, પ્રત્યાખ્યાન-પર્વના દિવ-સોમાં નિષિદ્ધ વસ્તુનો ત્યાગ કરવો. પોષધોપવાસ-(पोषं धत्ते) આ વ્યુત્પત્તિથી ધર્મની વૃદ્ધિને જે કરે છે તે પોષધ કહેવાય છે, અર્થાત્ ચતુર્દશી, અમા-વાસ્યા, અષ્ટમી, પૂર્ણિમા, એ પોષધ કહેવાય છે. આ દિવસોમાં-પર્વદિવસોમાં આહાર, શરીરસત્કાર, અબ્રહ્મચર્ય અને સાવદ્યવ્યાપાર એ ચારેયનો ત્યાગ

**समणे निग्गंथे फासुएसणिज्जेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं वत्थ-पडिग्गह-कंबल-पायपुंछणेणं ओसहभेसज्जेणं पाडिहारिएण य पीढ-फलग-सेज्जा-संथारएणं पडिलाभेमाणा विहरंति, विह-**

चतुर्दश्यादिषु तिथिपु 'पडिपुण्णं' प्रतिपूर्ण 'पोसहं' पोषधं, 'सम्मं' सम्यक् 'अणुपालेत्ता' अनुपाल्य 'समणे निग्गंथे' श्रमणान् निर्ग्रन्थान् 'फासुएसणिज्जेणं' प्रासुकैषणीयेन, 'असण-पाण-खाइम-साइमेणं' अशन-पान-खाद्य-स्वाद्येन, 'वत्थ-पडिग्गह-कंबल-पायपुंछणेणं' वस्त्रपतद्ग्रहकम्बलपादप्रोञ्छनेन, तत्र पतद्ग्रहः=पात्रं, पादप्रोञ्छनं=रजोहरणम्, 'ओसहभेसज्जेणं' औषधभैषज्येन 'पाडिहारिएण य पीढ-फलग-सेज्जा-संथारएणं' प्रातिहारिकेण च पीठफलकशय्यासंस्तारकेण-तत्र पीठम्=आसन, फलकम्=अवष्टम्भनफलकं, शय्या=वसतिः, यद्वा वृहत्संस्तारकः, संस्तारकः=लघुतरः, एषां समाहारद्वन्द्वः, ततस्तेन, 'पडिलाभेमाणा' प्रतिलम्भयन्तः=ददतः, 'विहरंति'

का त्याग करना पोषधोपवास है, इस तरह बारह प्रकार के श्रावक धर्म को (**सम्मं अणुपालेत्ता**) अच्छी तरह पालन करते है। (**समणे निग्गंथे**) श्रमणनिर्ग्रन्थों को (**फासुएसणिज्जेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं**) प्रासुक-एषणीय अशन, पान, खाद्य तथा स्वाद्य ऐसे चारो प्रकार के आहारो से (**वत्थ-परिग्गह-कंबल-पायपुंछणेणं ओसहभेसज्जेणं**) एवं वस्त्र, पात्र, कम्बल, रजोहरण, औषध, (**पाडिहारिएण य पीढफलगसेज्जा-संथारएणं पडिलाभेमाणा विहरंति**) एवं प्रातिहारिक (पडिहारा) पीठ (बाजोट) फलक (पाट) शय्या (वसति) और संस्तारक आदि से, मुनियो को प्रतिलाभित करते हुए विचरते है, अर्थात् उन्हें इन पूर्वोक्त वस्तुओं को आवश्यकतानुसार प्रदान करते हैं, (**विहरित्ता भत्तं**

કરવો તે પોષધોપવાસ છે. આ રીતે બાર પ્રકારનાં શ્રાવક ધર્મને (**सम्मं अणुपालेत्ता**) સારી રીતે પાલન કરે છે. (**समणे निग्गंथे**) શ્રમણ નિર્ગ્રંથોને (**फासुएसणिज्जेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं**) પ્રાસુક-એષણીય અશન, પાન, ખાદ્ય તથા સ્વાદ્ય એવા ચારેય પ્રકારના આહારથી, (**वत्थ-परिग्गह-कंबल-पाय-पुंछणेणं ओसहभेसज्जेणं**) તેમજ વસ્ત્ર, પાત્ર, કંબલ, રજોહરણ, ઔષધ, ભેષજ, (**पाडिहारिएण य पीठ-फलग-सेज्जा-संथारएणं पडिलाभेमाणा विहरंति**) તેમજ પ્રાતિહારિક (પડિહારા) પીઠ (બાજોઠ) ફલક-પાટ, શય્યા (વસતિ) અને સંસ્તારક આદિથી મુનિયોને પ્રતિલાભિત કરતા વિચરે છે, અર્થાત્ તેઓ આ ઉપર કહેલી વસ્તુઓને આવશ્યકતા પ્રમાણે પ્રદાન કરે છે. (**विहरित्ता भत्तं पच्चक्खंति**)

रित्ता भत्तं पच्चक्खंति, ते बहूइं भत्ताइं अणसणाए छेदेंति, छेदित्ता आलोइयपडिक्कंता समाहिपत्ता कालमासे कालं किच्चा उक्कोसेणं अच्चुए कप्पे देवत्ताए उववत्तारो भवंति, तहिं तेसिं गई, बावीसं सागरोवमाइं ठिई, आराहगा, सेसं तहेव ॥ सू० ६३ ॥

विहरन्ति, 'विहरित्ता' विहृत्य 'भत्तं पच्चक्खंति' भक्तं प्रत्याख्यान्ति=परित्यजन्ति, 'अणसणाए छेदेंति' अनशनया छिन्दन्ति, 'छेइत्ता' छित्वा 'आलोइयपडिक्कंता' आलोचितप्रतिक्रान्ताः, 'समाहिपत्ता' समाधिप्राप्ताः, 'कालमासे' कालमासे 'कालं किच्चा' कालं कृत्वा 'उक्कोसेणं अच्चुए कप्पे' उत्कर्षतोऽच्युते कल्पे 'देवत्ताए उववत्तारो भवंति' देवत्वेन उपपत्तारो भवन्ति। 'तहिं तेसिं गई' तत्र तेषां गतिः, 'बावीसं सागरोवमाइं ठिई' द्वाविंशतिं सागरोपमानि स्थितिः, 'आराहगा' आराधकाः, 'सेसं तहेव' शेषं तथैव ॥ सू० ६३ ॥

पच्चक्खंति) पश्चात् अन्तिम समय में भक्तप्रत्याख्यान करते है, (ते बहूइं भत्ताइं अणसणाए छेदेंति) वे अनेक भक्तों का अनशन द्वारा छेदन करते है, (छेदित्ता आलोइय-पडिक्कंता सामाहिपत्ता कालमासे कालं किच्चा) छेदन कर अपने पापस्थानों की आलोचना एवं प्रतिक्रमण करके वे समाधिसहित काल अवसर में काल कर (उक्कोसेणं अच्चुए कप्पे देवत्ताए उववत्तारो भवंति) जघन्य पहले देवलोक उत्कृष्ट बारहवें देवलोक अच्युतकल्प में देवपर्याय से उत्पन्न होते है। (तहिं तेसिं गई, बावीसं सागरोवमाइं ठिई, आरहगा, सेसं तहेव) प्रथम देवलोक में इनकी उत्कृष्ट दो सागरोपम और बारहवें देवलोक

પછી અંત સમયે ભક્ત-પ્રત્યાખ્યાન કરે છે. (ते बहूइं भत्ताइं अणसणाए छेदेंति) તેઓ અનેક ભક્તોનું અનશન દ્વારા છેદન કરે છે. (छेदित्ता आलोइयपडिक्कंता समाहिपत्ता कालमासे कालं किच्चा) છેદન કરીને પોતાનાં પાપસ્થાનોની આલોચના તેમજ પ્રતિક્રમણ કરીને તેઓ સમાધિ-સહિત કાલ અવસરમાં કાલ કરીને (उक्कोसेणं अच्चुए कप्पे देवत्ताए उववत्तारो भवंति) જઘન્ય પહેલા દેવલોક, ઉત્કૃષ્ટ બારમા દેવલોક અચ્યુત કલ્પમાં દેવપર્યાયથી ઉત્પન્ન થાય છે. (तहिं तेसिं गई, बावीसं सागरोवमाइं ठिई, आराहगा, सेसं तहेव) પ્રથમ દેવલોકમાં તેમની ઉત્કૃષ્ટ બે સાગરોપમ અને બારમા દેવલોકમાં ઉત્કૃષ્ટ

**मूलम्—से जे इमे गामागर जाव सण्णिवेसेसु मणुया भवंति, तं जहा-अणारंभा अपरिग्गहा धम्मिया जाव कप्पेमाणा**

**टीका—'से जे इमे'** इत्यादि। **'से जे इमे गमागर जाव सण्णिवेसेसु'** अथ य इमे ग्रामाऽऽकर यावत् सन्निवेशेषु **'मणुया भवंति'** मनुजा भवन्ति, **'तं जहा'** तद्यथा-**'अणारंभा अपरिग्गहा धम्मिया जाव कप्पेमाणा'** अनारम्भाः अपरिग्रहा धार्मिका यावत् कल्पयन्तः, अत्र-यावच्छब्देन **'धम्माणुया, धम्मिट्ठा, धम्मक्खाई, धम्मप्पलोई, धम्मपलज्जणा, धम्मसमुदायारा, धम्मेणं चेव वित्तिं'** धर्मानुगा धर्मिष्ठा धर्माख्यायिनो धर्मप्रलोकिनो धर्मप्ररञ्जना धर्मसमुदाचारा धर्मेणैव वृत्तिम्-इति पाठो

---

में उत्कृष्ट बाईस सागरोपम स्थिति कही गयी है। अवशिष्ट पहले के समान समझना चाहिये ॥ सू. ६३ ॥

'से जे इमे' इत्यादि।

(से जे इमे) जो ये (**गामागर जाव सण्णिवेसेसु**) ग्राम आकर आदि निवास स्थानो से लेकर सन्निवेश तक के निवासस्थानों में (**मणुया भवंति**) मनुष्य निवास करते है और उनमें जो कई एक मनुष्य (साहू) साधु होते है वे (**अणारंभा**) आरंभ से रहित होते है, (**अपरिग्गहा**) परिग्रहवर्जित होते है, (**धम्मिया**) धार्मिक होते है, (**जाव धम्मेणेव वित्तिं कप्पेमाणा**) एवं निर्दोष भिक्षा से अपनी संयमयात्रा का निर्वाह करते है। यहाँ 'जाव' शब्द से "**धम्माणुया, धम्मिट्ठा, धम्मक्खाई, धम्मपलोई, धम्मपलज्जणा, धम्मसमुदायारा, धम्मेणं चेव वित्तिं**" इस पाठ का ग्रहण हुआ है। इसकी

---

બાવીસ સાગરોપમ સ્થિતિ કહેવાય છે. બાકી બધું પહેલાં પ્રમાણે સમજવું જોઈએ. (સૂ. ૬૩)

'से जे इमे' ઈત્યાદિ.

(से जे इमे) તેઓ જે (गामागर जाव सण्णिवेसेसु) ગામ આકર આદિ નિવાસસ્થાનોથી લઈને સન્નિવેશ સુધીનાં નિવાસસ્થાનોમાં (मणुया भवंति) મનુષ્ય નિવાસ કરે છે અને તેમાં જે કેટલાએક મનુષ્ય (साहू) સાધુ હોય છે તેઓ (अणारंभा) આરંભથી રહિત હોય છે, (अप्पपरिग्गहा) પરિગ્રહવર્જિત હોય છે, (धम्मिया) ધાર્મિક હોય છે. (जाव धम्मेणेव वित्तिं कप्पेमाणा) તેમજ નિર્દોષ-ભિક્ષાવડે પોતાની સંયમયાત્રાનો નિર્વાહ કરે છે. અહીં 'जाव' શબ્દથી "धम्माणुया, धम्मिट्ठा, धम्मक्खाई, धम्मपलोई, धम्मपलज्जणा, धम्मसमुदायारा, धम्मेणं चेव वित्तिं" આ પાઠને ગ્રહણ કરવામાં આવ્યો છે. આની વ્યાખ્યા

**सुसीला सुव्वया सुपडियाणंदा साहू सव्वाओ पाणाइवायाओ पडिविरया जाव सव्वाओ परिग्गहाओ पडिविरया, सव्वाओ कोहाओ माणाओ मायाओ लोहाओ जाव मिच्छादंसणसल्लाओ**

---

ऽनुसन्धेयः। सर्वेषां व्याख्याऽत्रैव द्विषष्टितमे सूत्रे गताः। नवरं—धर्मेणैव वृत्तिं कल्पयन्तः—निरवद्यभिक्षया स्वयमयात्रारूपां वृत्तिं निर्वहन्तः इत्यर्थो बोध्यः। शेषपदानामपि व्याख्या तस्मिन्नेव सूत्रे कृताऽस्माभिः। **'सुसीला सुव्वया'** सुशीलाः सुव्रताः **'सुपडियाणंदा'** सुप्रत्यानन्दाः—सुष्ठु प्रत्यानन्दश्चित्ताह्लादो येषां ते तथा, आज्ञाविचयधर्मध्यानानन्दयुक्ताः **'साहू'** साधवः, **'सव्वाओ पाणाइवायाओ पडिविरया जाव सव्वाओ परिग्गहाओ पडिविरया'** सर्वस्मात् प्राणातिपातात्प्रतिविरता यावत्सर्वस्मात् परिग्रहात्प्रतिविरताः, **'सव्वाओ कोहाओ माणाओ लोभाओ जाव मिच्छादंसणसल्लाओ पडिविरया'** सर्वस्मात् क्रोधान्मानान्मायाया लोभाद् यावन्मिथ्यादर्शनशल्यात्प्रतिविरताः, **'सव्वाओ आरं-**

---

व्याख्या इसी उत्तरार्ध के बासठवे (६२) सूत्र में की जा चुकी है। **(सुसीला)** ये सुशील तथा **(सुव्वया)** निर्दोष रीति से व्रतों की आराधना करने वाले होते है। **(सुपडियाणंदा)** आज्ञाविचयनामक धर्मध्यान के ध्याने से इनका चित्त सदा अह्लादयुक्त बना रहता है। ये सब **(सव्वाओ पाणाइवायाओ पडिविरया)** सर्व प्रकार के प्राणातिपात से विरक्त रहते हैं, **(जाव सव्वाओ परिग्गहाओ पडिविरया)** यावत् समस्त परिग्रह से विरक्त रहा करते हैं, **(सव्वाओ कोहाओ)** समस्त प्रकार के क्रोध से, **(माणाओ)** मान से, **(मायाओ)** माया से, **(लोहाओ)** लोभ से, **(जाव मिच्छादंसणसल्लाओ)** यावत् मिथ्यादर्शन शल्य से, **(पडिविरया)** विरक्त रहा करते है, **(सव्वाओ आरंभसमारंभाओ पडिविरया)** समस्त

---

આ આગમના ઉત્તરાર્ધના બાસઠ (૬૨)મા સૂત્રમાં કરવામાં આવી છે. (सुसीला) સુશીલ તથા (सुव्वया) નિર્દોષ રીતિથી વ્રતોની આરાધના કરવાવાળા હોય છે. (सुपडियाणंदा) આજ્ઞાવિચય નામના ધર્મધ્યાન ધ્યાવવાથી તેમનાં ચિત્ત સદા આનંદી બનેલા રહે છે. તે બધા (सव्वाओ पाणाइवायाओ पडिविरया) સર્વ પ્રકારના પ્રાણાતિપાતથી વિરક્ત રહે છે. (जाव सव्वाओ परिग्गहाओ पडिविरया) તેમજ સમસ્ત પરિગ્રહથી વિરક્ત રહ્યા કરે છે. (सव्वाओ कोहाओ). સમસ્ત પ્રકારના ક્રોધથી, (माणाओ) માનથી, (मायाओ) માયાથી, (लोहाओ) લોભથી, (जाव मिच्छादंसणसल्लाओ) તેમજ મિથ્યાદર્શન શલ્યથી (पडिविरया) વિરક્ત રહ્યા કરે છે. (सव्वाओ आरंभ—समारंभाओ पडिविरया) સમસ્ત આરંભસમા-

पडिविरया, सव्वाओ आरंभसमारंभाओ पडिविरया, सव्वाओ करणकारावणाओ पडिविरया, सव्वाओ पयणपयावणाओ पडि-विरया, सव्वाओ कोट्टण–पिट्टण–तज्जण–तालण–वह–बंध–किलेसाओ पडिविरया, सव्वाओ ण्हाण–मद्दण–वण्णग–विले-वण–सद्द–फरिस–रस–रूव–गंध–मल्ला–लंकाराओ पडिविरया,

भसमारंभाओ पडिविरया' सर्वस्मादारम्भसमारम्भात्प्रतिविरताः 'सव्वाओ करणकारा-वणाओ पडिविरया' सर्वस्मात्करणकारणात्प्रतिविरताः, 'सव्वाओ पयणपयाणवाओ पडिविरया' सर्वस्मातपचनपाचनात्प्रतिविरता', 'सव्वाओ कुट्टण–पिट्टण–तज्जण–तालण–वह–बंध–परिकिलेसाओ पडिविरया' सर्वस्मात्कुट्टन–पिट्टन–तर्जन–ताडन–वध–बन्ध–परिक्लेशात्प्रतिविरताः, 'सव्वाओ ण्हाण–मद्दण–वण्णग–विलेवण–सद्द–फरिस–रस–रूव–गंध–मल्ला–लंकाराओ पडिविरया' सर्वस्मात् स्नान–मर्दन–वर्णक–विलेपन–शब्द–स्पर्श–रस–रूप–गन्ध–माल्याऽ–लङ्कारात्प्रतिविरताः, तथा 'जे यावण्णे

आरंभसमारंभ से प्रतिविरत होते है, (सव्वाओ करणकारावणाओ पडिविरया) समस्त करण एवं करावणसे–करने–कराने से विरक्त होते है, (सव्वाओ पयणापयावणाओ पडि-विरया) सर्व प्रकार की पचन एवं पाचन क्रिया से प्रतिविरत होते है, (सव्वाओ कोट्टण-पिट्टण–तज्जण–तालण–वह–बंध–परिकिलेसाओ पडिविरया) समस्त प्रकार के कुट्टण, पिट्टण, तर्जन, ताडन, वध, बंध, परिक्लेश से विरक्त होते है, (सव्वाओ ण्हाण–मद्दण–वण्णग–विलेवण–सद्द–फरिस–रस–रूव–गंध–मल्ला–लंकाराओ पडिविरया) संपूर्ण स्नान, मर्दन, वर्णक, विलेपन, शब्द, रूप, गंध, रस, स्पर्श, माल्य एवं अलंकारो से रहित

રંભથી પ્રતિવિરક્ત હોય છે. (सव्वाओ करणकारावणाओ पडिविरया) સમસ્ત કરણ તેમજ કરાવણથી–કરવા–કરાવવાથી વિરક્ત હોય છે. (सव्वाओ पयणपया-वणाओ पडिविरया) સર્વપ્રકારની પચન તેમજ પાચન ક્રિયાથી વિરક્ત હોય છે. (सव्वाओ कोट्टण–पिट्टण–तज्जण–तालण–वह–बंध–परिकिलेसाओ पडिविरया) સમસ્ત પ્રકારના કુટ્ટણ, પિટ્ટણ, તર્જન, તાડન, વધ, બંધ, પરિક્લેશથી વિરક્ત હોય છે. ( सव्वाओ ण्हाण–मदण–वण्णग–विलेवण–सद्द–फरिस–रस–रूव–गंध–मल्ला–लं-काराओ पडिविरया) સંપૂર્ણ સ્નાન, મર્દન, વર્ણક, વિલેપન, શબ્દ, સ્પર્શ, રસ,

जे यावण्णे तहप्पगारा सावज्जजोगोवहिया कम्मंता परपाणपरियावणकरा कज्जंति तओ वि पडिविरया जावज्जीवाए ॥ सू० ६४ ॥

मूलम्—से जहानामए अणगारा भवंति—ईरियासमिया भासासमिया जाव इणमेव निग्गंथं पावयणं पुरओ काउं विहरंति ॥ सू० ६५ ॥

---

तहप्पगारा' ये यावन्तस्तथाप्रकाराः, 'सावज्जजोगोवहिया' सावद्ययोगौपधिकाः—सावद्ययोगाः=सावद्ययोगयुक्ताश्च ते औपधिकाः=मायाप्रयोजनाश्चेति तथा, 'परपाणपरियावणकरा' परप्राणपरितापनकराः, 'कम्मंता' कर्मांशाः=व्यापारांशाः 'कज्जंति' क्रियन्ते 'तओ वि पडिविरया जावज्जीवाए' ततोऽपि प्रतिविरता यावज्जीवम् ॥ सू. ६४ ॥

टीका—'से जहानामए' इत्यादि। 'से जहानामए अणगारा भवंति' अथ यथानाम केचित् अनगारा भवन्ति, कीदृशास्तेऽनगारा? इत्याह 'ईरियासमिया' ईर्यास-

---

होते है, (जे यावण्णे तहप्पगारा सावज्जजोगोवहिया कम्मंता परपाणपरियावणकरा कज्जंति तओ वि पडिविरया जावज्जीवाए) तथा इसी प्रकार के और भी जो सावद्ययोगवाले मायाकषायजनित कार्य है कि जिनमें प्राणियों के प्राणों को परिताप जन्य कष्ट भोगना पडता है उन सब से ये प्रतिविरत होते है ॥ सू. ६४ ॥

'से जहानामए' इत्यादि ।

(से जहानामए अणगारा भवंति) ये जो अनगार होते है, वे (ईरियासमिया भासासमिया जाव इणमेव निग्गंथं पावयणं पुरओ काउं विहरंति) ईर्यासमिति, भाषा-

---

રૂપ, ગંધ, માલા તેમજ અલંકારોથી રહિત હોય છે. (जे यावण्णे तहप्पगारा सावज्जजोगोवहिया कम्मंता पर–पाण–परियावण–करा कज्जंति तओ वि पडिविरया जावज्जीवाए) તથા એ પ્રકારનાં બીજાં પણ જે સાવદ્યયોગવાળાં માયાકષાયજનિત કાર્ય છે કે જેમાં પ્રાણિયોના પ્રાણોને પરિતાપજનિત કષ્ટ ભોગવવા પડે છે, તેવા બધા કાર્યોથી તેઓ વિરક્ત હોય છે. (સૂ. ૬૪)

'से जहानामए' ઇત્યાદિ.

(से जहानामए अणगारा भवंति) આ જે અનગાર હોય છે, તેઓ (ईरियासमिया भासासमिया जाव इणमेव निग्गंथं पावयणं पुरओ काउं विहरंति) ઈર્યાસમિતિ,

**मूलम्—तेसि णं भगवंताणं एएणं विहारेणं विहरमाणाणं अत्थेगइयाणं अणंते जाव केवलवरनाणदंसणे समुप्पज्जइ। ते बहूइं वासाइं केवलिपरियागं पाउणंति, पाउणित्ता भत्तं पच्च-**

मिताः=गमनागमनादिषु समितियुक्ताः '**भासासमिया**' भाषासमिताः सन्तः, यावच्छब्दाद् गुप्तिगुप्ताः इति दृश्यम्; '**इणमेव**' इदमेव '**णिग्गंथं पावयणं**' नैर्ग्रन्थ प्रवचन '**पुरओ-काउं**' पुरस्कृत्य=प्रधानीकृत्य '**विहरंति**' विहरन्ति ॥ सू० ६५ ॥

**टीका**—'**तेसि णं**' इत्यादि। '**तेसि णं भगवंताणं**' तेषां खलु भगवताम्=अनगारभगवताम् '**एएणं**' एतेन पूर्वोक्तेन '**विहारेणं विहरमाणाणं**'- विहारेण विहरताम् '**अत्थेगइयाणं**' अस्त्येकेषाम्, '**अणंते**' अनन्तम्=अन्तरहितं '**जाव**' यावत् '**केवलवरणाणदंसणे**' केवलवरज्ञानदर्शनं '**समुप्पज्जइ**' समुत्पद्यते=अचिरेण प्रादुर्भवति। '**ते बहूइं वासाइं**' ते अनगारा भगवन्तो बहूनि वर्षाणि '**केवलिपरियायं**' केवलिपर्यायं

समिति आदि समितियों को तथा तीन गुप्तियों को पालन करते है। एवं इन समस्त क्रिया-स्वरूप जो निर्ग्रन्थप्रवचन है उसके अनुसार ही अपनी समस्त प्रवृत्ति चलाते हैं ॥ सू. ६५ ॥

'**तेसिं णं भगवंताणं**' इत्यादि।

(**तेसिं णं भगवंताणं एएणं विहारेणं विहरमाणाणं**) इस प्रकार के इन अनगार भगवन्तों में जो निर्ग्रन्थ प्रवचन को आगे करके विचरते है, (**अत्थेगइयाणं**) उन में से कितनेक अनगार भगवन्तो को (**अणंते जाव केवलवरनाणदंसणे समुप्पज्जइ**) अनंत केवलज्ञान एवं अनंत केवलदर्शन उत्पन्न होता है। (**ते बहूइं वासाइं केवलिपरियागं पाउणंति**) वे इसी पर्याय में बहुत वर्षों तक इस पृथ्वीमंडल को पावन करते है,

ભાષાસમિતિ આદિ સમિતિઓનું તથા ત્રણ ગુપ્તિઓનું પાલન કરે છે. તેમજ સમસ્ત ક્રિયાસ્વરૂપ જે નિર્ગ્રન્થ પ્રવચન છે તેને અનુસરીને જ પોતાની સમસ્ત પ્રવૃત્તિઓ ચલાવે છે. (સૂ. ૬૫)

'तेसिं णं भगवंताणं' ઇત્યાદિ.

(तेसिं णं भगवंताणं एएणं विहारेणं विहरमाणाणं) આ પ્રકારના આ અનગાર ભગવાનોમાં જે નિર્ગ્રન્થ પ્રવચનને મુખ્ય કરીને વિચરે છે, (**अत्थेगइयाणं**) તેમાંથી કેટલાક અનગાર ભગવાનોને (अणंते जाव केवल–वर–नाण–**दंसणे समुप्पज्जइ**) અનંત કેવળજ્ઞાન તેમજ અનંત કેવળદર્શન ઉત્પન્ન થાય છે. (ते बहूइं वासाइं केवलिपरियागं पाउणंति) તેઓ આ જ પર્યાયમાં ઘણાં

क्खंति, पच्चक्खित्ता बहूइं भत्ताइं अणसणाए छेदंति, छेदित्ता जस्सट्ठाए कीरइ नग्गभावे जाव अंतं करंति ॥ सू० ६६ ॥

मूलम्—जेसिं पि य णं एगइयाणं णो केवलवरनाण-दंसणे समुप्पज्जइ ते बहूइं वासाइं छउमत्थपरियागं पाउणंति,

'पाउणंति' पालयन्ति, 'पाउणित्ता' पालयित्वा, 'भत्तं पच्चक्खंति' भक्तं प्रत्याख्यान्ति, 'भत्तं पच्चक्खित्ता' भक्तं प्रत्याख्याय 'बहूइं' बहूनि 'भत्ताइं अणसणाए' भक्तानि अनशनया 'छेदंति' छिन्दन्ति, 'छेदित्ता' छित्वा 'जस्सट्ठाए' यस्मै अर्थाय 'कीरइ' क्रियते 'नग्गभावो' नग्नभावः=आकिञ्चन्यं क्रियते इत्यन्वय', 'जाव अंतं' यावत्—सर्वदुःखनामन्तं 'करंति' कुर्वन्ति ॥ सू० ६६ ॥

'जेसिं पि य णं' इत्यादि । 'जेसिं पि य णं एगइयाणं णो केवलवर-नाणदंसणे समुप्पज्जइ' येषामपि च खलु एकेषां नो केवलवरज्ञानदर्शनं समुत्पद्यते=

(पाउणित्ता भत्तं पच्चक्खंति) इस पर्याय को प्राप्त कर वे भक्त का प्रत्याख्यान कर देते है । (पच्चक्खित्ता बहूइं भत्ताइं अणसणाए छेदंति) प्रत्याख्यान करके अनेक भक्तों का अनशन द्वारा छेदन कर देते है । (छेदित्ता जस्सट्ठाए कीरइ नग्गभावे जाव अंतं करेंति) छेदन करके जिस प्रयोजन के लिये नग्नभाव उन्होंने धारण किया था वे उस प्रयो-जन को प्राप्त करते हैं, अर्थात् समस्त दुःखों का अंत करते है ॥ सू. ६६ ॥

'जेसिं पि य णं' इत्यादि ।

(जेसिं पि य णं) इन साधुओं में से भी (एगइयाणं) जिन किन्हीं साधु मुनि-राजों को (णो केवलवरनाणदंसणे समुप्पज्जइ) निर्मल केवलज्ञान एवं केवल दर्शन का

वरसो सुधी આ પૃથ્વીમંડળને પાવન કરે છે. (पाउणित्ता भत्तं पच्चक्खंति) આ પર્યાયને પ્રાપ્ત કરીને ભક્તપ્રત્યાખ્યાન કરી દે છે. (पच्चक्खित्ता बहूइं भत्ताइं अणसणाए छेदंति) પ્રત્યાખ્યાન કરીને અનેક ભક્તોનુ અનશન દ્વારા છેદન કરે છે. (छेदित्ता जस्सट्ठाए कीरइ नग्गभावे जाव अंतं करेत्ति) છેદન કરીને જે પ્રયોજન માટે નગ્નભાવ તેમણે ધારણ કરેલો હતો તે પ્રયોજનને પ્રાપ્ત કરે છે, અર્થાત્ સમસ્ત દુઃખોનો અંત કરે છે. (સૂ. ૬૬)

'जेसिं पि य णं' ઈત્યાદિ.

(जेसिं पि य णं) આ સાધુઓમાંથી પણ (एगइयाणं) જે કોઈ સાધુ મુનિ-રાજોને (णो केवलवरनाणदंसणे समुप्पज्जइ) નિર્મળ કેવળજ્ઞાન તેમજ કેવળ

पाउणित्ता आबाहे उप्पण्णे वा अणुप्पण्णे वा भत्तं पच्चक्खंति। ते बहूइं भत्ताइं अणसणाए छेदेंति, छेदित्ता जस्सट्ठाए कीरइ नग्गभावे जाव तमट्ठमाराहित्ता चरमेहिं ऊसासणीसासेहिं

---

प्रादुर्भवति, 'ते बहूइं वासाइं' तेऽनगारा भगवन्तो बहूनि वर्षाणि 'छउमत्थपरियायं पाउणंति' छद्मस्थपर्यायं पालयन्ति=छद्मस्थावस्थां पालयन्ति, 'पाउणित्ता' पालयित्वा 'आबाहे' आबाधायां=रोगादिबाधायाम् 'उप्पण्णे वा अणुप्पण्णे वा' उत्पन्नायां वा अनुत्पन्नायां वा सत्यां 'भत्तं पच्चक्खंति' भक्तं प्रत्याख्यान्ति, 'ते बहूइं भत्ताइं अणसणाए छेदेंति' ते बहूनि भक्तानि अनशनया छिन्दन्ति, 'छेदित्ता' छित्वा 'जस्सट्ठाए' यस्मै अर्थाय 'कीरइ नग्गभावे' क्रियते नग्नभावः—अकिञ्चन्यं क्रियते, 'जाव तमट्ठमाराहित्ता' यावत् तमर्थमाराध्य, 'चरमेहिं ऊसासणीसासेहिं' चरमैरुच्छ्वासनिःश्वासैः 'अणंतं' अनन्तम्=अन्तरहितम्, 'अणुत्तरं' अनुत्तरम्=उत्कृष्टम्,

---

लाभ शीघ्र नहीं होता है, (ते बहूइं वासाइं छउमत्थपरियागं पाउणित्ता) वे अनगार भगवान् छद्मस्थ पर्याय को ही बहुत वर्षों तक पालते रहते है, (पाउणित्ता) और उस पर्याय के पालन करते २ भी यदि (आबाहे उप्पण्णे वा अणुप्पण्णे वा) किसी प्रकार की चाहे उन्हें रोगादिक बाधा उत्पन्न हो, चाहे न भी हो तो भी वे, (भत्तं पच्चक्खंति) भक्तप्रत्याख्यान करते हैं। (ते बहूइं भत्ताइं अणसणाए छेदेंति) वे अनेक भक्तों का अनशन द्वारा छेदन करते है, (छेदित्ता जस्सट्ठाए कीरइ नग्गभावे जाव तमट्ठमाराहित्ता) छेदन करके उन्होंने जिस की प्राप्ति के लिये नग्नभाव धारण किया था, उस प्रयोजन की सिद्धि प्राप्त कर (चरमेहिं ऊसासणीसासेहिं अणंतं अणुत्तरं णिव्वाघायं निरावरणं कसिणं पडिपुण्णं

---

દર્શનનો લાભ જલદી મળતો નથી, (ते बहूइं वासाइं छउमत्थपरियागं पाउणंति) તે અનગાર ભગવાન છદ્મસ્થપર્યાયનું જ ઘણાં વરસો સુધી પાલન કરે છે, (पाउणित्ता) અને તે પર્યાયનું પાલન કરતાં કરતાં પણ જો (आबाहे उप्पण्णे वा अणुप्पण्णे वा) કોઇ પ્રકારની રોગ આદિકની પીડા ઉત્પન્ન થાય કે ચાહે ન પણ થાય તો પણ તેઓ (भत्तं पच्चक्खंति) ભક્તપ્રત્યાખ્યાન કરે છે. (ते बहूइं भत्ताइं अणसणाए छेदेंति) તેઓ અનેક ભકતોનું અનશન-દ્વારા છેદન કરે છે. (छेदित्ता जस्सट्ठाए कीरइ नग्गभावे जाव तमट्ठमाराहित्ता) છેદન કરીને તેઓએ જેની પ્રાપ્તિ માટે નગ્નભાવ ધારણ કર્યો હતો તે પ્રયોજનની સિદ્ધિ પ્રાપ્ત કરીને (चरमेहिं ऊसासणीसासेहिं अणंतं अणुत्तरं णिव्वा-

अणंतं अणुत्तरं निव्वाघायं निरावरणं कसिणं पडिपुण्णं केवलवरनाणदंसणं उप्पादेंति, तओ पच्छा सिज्झिहिंति जाव अंतं करेहिंति ॥ सू० ६७ ॥

**मूलम्—एगच्चा पुण एगे भयंतारो पुव्वकम्मावसेसेणं**

'**निव्वाघायं**' निर्व्याघातं=सूक्ष्मव्यवहितविप्रकृष्टविषयेषु अप्रतिहतं, '**निरावरणं**' निरावरणं=कर्मावरणरहितं '**कसिणं**' कृत्स्नं=सकलं, '**पडिपुण्णं**' प्रतिपूर्णं=संपूर्णं, '**केवलवरनाणदंसणं**' केवलवरज्ञानदर्शनम् '**उप्पादेंति**' उत्पादयन्ति, '**तओ पच्छा सिज्झिहिंति**' ततः पश्चात् सेत्स्यन्ति, '**जाव अंतं**' यावत् अन्तं=सर्वदुःखानामन्तं '**करेहिंति**' करिष्यन्ति ॥ सू० ६७ ॥

'**एगच्चा**' इत्यादि । '**एगच्चा**' एकाऽर्चाः—एका=असाधारणगुणत्वात् अद्वितीया—

केवलवरनाणदंसणं उप्पादेंति) चरम उच्छ्वास—निःश्वासों में अन्तरहित, अनुपम, निर्व्याघात—सूक्ष्म, व्यवहित एवं विप्रकृष्ट विषय को हस्तामलकवत् जानने के लिये समर्थ, निरावरण—कर्मावरणरहित, कृत्स्न—सकल, एवं प्रतिपूर्ण—सपूर्ण केवलज्ञान एवं केवलदर्शन की उत्पत्ति से विशिष्ट हो जाते है । (तओ पच्छा सिज्झिहिंति जाव अंतं करेहिंति) इसके पश्चात् वे सिद्ध हो जाते है और उस अवस्था में उनके समस्त दुःखों का एवं उनके कारणभूत कर्मों का सर्वथा अभाव हो जाता है ॥ सू० ६७ ॥

'**एगच्चा पुण**' इत्यादि ।

इन अनगार भगवन्तों के बीच (**एगे**) कितनेक ऐसे भी अनगार भगवान होते

घायं निरावरणं कसिणं पडिपुण्णं केवलवरनाणदंसणं उप्पादेंति) ચરમ ઉચ્છ્વાસ—નિઃશ્વાસોમા અંતરહિત, અનુપમ, નિર્વ્યાઘાત—સૂક્ષ્મ, વ્યવહિત તેમજ વિપ્રકૃષ્ટ વિષયને હસ્તામલકવત્ જાણવા માટે સમર્થ, નિરાવરણ—કર્માવરણરહિત, કૃત્સ્ન—સકળ, તેમજ પરિપૂર્ણ—સંપૂર્ણ કેવળજ્ઞાન તેમજ કેવળદર્શનની ઉત્પત્તિથી વિશિષ્ટ થઈ જાય છે. (तओ पच्छा सिज्झिहिंति जाव अंतं करेहिंति) ત્યાર પછી તેઓ સિદ્ધ થઇ જાય છે, અને તે અવસ્થામાં તેમનાં સમસ્ત દુઃખોનો તેમજ તેમનાં કારણભૂત કર્મોનો સર્વથા અભાવ થઇ જાય છે. (સૂ. ૬૭)

'एगच्चा पुण' ઇત્યાદિ.

આ અનગાર ભગવન્તોની વચમાં (एगे) કેટલાક એવા પણ અનગાર

**कालमासे कालं किच्चा, उक्कोसेणं सव्वट्ठसिद्धे महाविमाणे देवत्ताए उववत्तारो भवंति, तहिं तेसिं गई, तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिई, आराहगा, सेसं तं चेव ॥ सू० ६८ ॥**

मनुजभवभाविनी वा अर्चा=तनुर्येषां त एकार्चाः **'पुण'** पुनः, अत्र पुनःशब्द उक्तार्थापेक्षया वैलक्षण्यद्योतनार्थः, **'एगे'** एके-अन्ये तु **'भयंतारो'** भक्तारः=संयमसेविनः, 'भयंतारो' इत्यत्रानुस्वार आर्षत्वात् **'पुव्वकम्मावसेसेणं'** पूर्वकर्मावशेषेण पूर्वकृतकर्मणामवशेषेण **'कालमासे कालं किच्चा'** कालमासे कालं कृत्वा-**'उक्कोसेणं सव्वट्ठसिद्धे महाविमाणे'** उत्कर्षेण सर्वार्थसिद्धे महाविमाने **'देवत्ताए'** देवत्वेन **'उववत्तारो भवंति'** उपपत्तारो भवन्ति=उत्पद्यन्ते, **'तहिं तेसिं गई तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिई'** तत्र तेषां गतिः, त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमानि स्थितिः। **'आराहगा'** आराधकाः=परलोकस्याऽऽराधकाः, **'सेसं तं चेव'** शेषं तदेव ॥ सू. ६८॥

है कि जिन्हे उसी भव से केवलज्ञान एवं केवलदर्शन का लाभ नहीं होता है तो ऐसे वे अनगार भगवान् (**एगच्चा**) एकभवावतारी होते है। ये (**भयंतारो**) सयम की आराधना करते २ ही (**पुव्वकम्मावसेसेणं**) पूर्वकर्म के अवशिष्ट होने के कारण (**कालमासे कालं किच्चा**) काल अवसर में काल कर (**उक्कोसेणं**) उत्कर्ष से (**सव्वट्ठसिद्धे महाविमाणे देवत्ताए उववत्तारो भवंति**) सर्वार्थसिद्ध नामके महाविमान में देवपर्याय से उत्पन्न हो जाते है। (**तहिं तेसिं गई, ठिई तेत्तीसं सागरोवमाइं**) वहीं पर उनकी गति और स्थिति होती है। इनकी स्थिति वहाँ पर तेतीस सागर प्रमाण है। (**आराहगा सेसं तं चेव**) ये नियम से परलोक के आराधक होते हैं। अवशिष्ट पूर्ववत् समझना चाहिये॥ सू. ६८॥

ભગવાન હોય છે કે જેમને તેજ ભવમાં કેવળજ્ઞાન તેમજ કેવળદર્શનનો લાભ મળતો નથી તો એવા તે અનગાર ભગવાન (एगच्चा) એકભવાવતારી હોય છે. તેઓ (भयंतारो) સંયમની આરાધના કરતાં કરતાં જ (पुव्वकम्मावसेसेणं) પૂર્વકર્મના બાકી રહેવાનાં કારણે (कालमासे कालं किच्चा) કાલ-અવસરે કાલ કરીને (उक्कोसेणं) ઉત્કર્ષ વડે (सव्वट्ठसिद्धे महाविमाणे देवत्ताए उववत्तारो भवंति) સર્વાર્થસિદ્ધ નામના મહાવિમાનમાં દેવપર્યાયથી ઉત્પન્ન થાય છે. ત્યાં તેમની ગતિ અને સ્થિતિ હોય છે. તેમની ત્યાં સ્થિતિ તેત્રીસ સાગર પ્રમાણ છે. (आराहगा सेसं तं चेव) તેઓ નિયમથી પરલોકના આરાધક હોય છે, બાકી બધું અગાઉ પ્રમાણે સમજવું જોઈએ. (સૂ. ૬૮)

मूलम्—से जे इमे गमागर जाव सण्णिवेसेसु मणुया भवंति, तं जहा–सव्वकामविरया सव्वरागविरया सव्वसंगा-तीता सव्वसिणेहाइक्कंता अक्कोहा निक्कोहा खीणक्कोहा एवं माण-

टीका—'से जे इमे' इत्यादि। 'से जे इमे गामागर जाव सण्णिवेसेसु मणुया भवंति' अथ य इमे ग्रामाऽऽकर यावत् सन्निवेशेषु मनुजा भवन्ति, 'तं जहा' तद्यथा 'सव्वकामविरया' सर्वकामविरता – सर्वकामेभ्यः=समस्तशब्दादिविषयेभ्यो विरताः=निवृत्ताः, शब्दादिविषयेषु वा विरता=विगतौत्सुक्याः, 'सव्वरागविरया' सर्वरागविरताः–सर्वरागात्–समस्ताद् विषयाभिमुखहेतुभूताऽऽत्मपरिणामविशेषात् निवृत्ताः, 'सव्वसंगातीता' सर्वसङ्गाऽतीता –सर्वसङ्गात्=मातापित्रादिसम्बन्धादतीताः=विनिर्गताः–सर्वसङ्गरहिता इत्यर्थः, 'सव्वसिणेहाइक्कंता' सर्वस्नेहातिक्रान्ताः=स्नेहरहिताः, 'अक्कोहा' अक्रोधाः,

'से जे इमे' इत्यादि।

(से जे इमे गामागर जाव सण्णिवेसेसु) ये जो ग्राम आकर आदि से लेकर सन्निवेश तक के निवासस्थानों में (मणुया भवंति) मनुष्य रहते हैं, (तं जहा) जैसे (सव्वकामविरया सव्वरागविरया सव्वसंगातीता सव्वसिणेहाइक्कंता) जो समस्त शब्दादिक विषयों से निवृत्त हैं, अथवा शब्दादिक विषयों में जिन्हे उत्सुकता नहीं है, समस्त विषयों की ओर झुकाने वाले आत्माके रागरूप परिणाम से जो निवृत्त है, माता-पिता आदि समस्त संबंधिजनो से अथवा समस्तप्रकार के परिग्रह से जो दूर हो चुके है, जिन्हों ने सम्पूर्णप्रकार का स्नेहभाव परिवर्जित कर दिया है। (अक्कोहा णिक्कोहा खीण-

'से जे इमे' ઈત્યાદિ.

(से जे इमे) આ કે જે (गामागर जाव सण्णिवेसेसु) ગામ આકર આદિથી લઇને સન્નિવેશ સુધીનાં નિવાસસ્થાનોમાં (मणुया भवंति) મનુષ્ય રહે છે, (तं जहा) જેવા કે–(सव्वकामविरया सव्वरागविरया सव्वसंगातीता सव्वसिणेहाइक्कंता) જેઓ સમસ્ત શબ્દાદિક વિષયોથી નિવૃત્ત છે, અથવા શબ્દાદિક વિષયોમા જેમને ઉત્સુકતા નથી હોતી, સમસ્ત વિષયોની તરફ ખેંચવાવાળા આત્માના રાગરૂપ પરિણામથી જેઓ નિવૃત્ત છે, માતાપિતા આદિ સમસ્ત સંબંધી જનોથી અથવા સમસ્ત પ્રકારના પરિગ્રહોથી જેઓ દૂર થઇ ગયેલા છે, જેઓએ સંપૂર્ણ પ્રકારના સ્નેહભાવને પરિવર્જિત કરી દીધેલ છે, (अक्कोहा णिक्कोहा खीणक्कोहा एवं माणमायालोहा) જેમનો ક્રોધ નષ્ટ થઇ

मायालोहा अणुपुव्वेणं अट्ठकम्मपयडीओ खवेत्ता उप्पिं लोयग्गपइट्ठाणा भवंति ॥ सू० ६९ ॥

**मूलम्—अणगारे णं भंते! भावियप्पा केवलिसमु-**

**'णिक्कोहा'** निष्क्रोधा =क्रोधान्निष्क्रान्ताः, **'खीणकोहा'** क्षीणक्रोधाः–क्रोध. क्षीणो येषां ते क्षीणक्रोधाः–मोहनीयकर्मणां क्षयीकरणात् क्षीणक्रोधमोहनीयकर्माणः, **'एवं माणमायालोहा'** एवं मानमायालोभाः=एवं क्षीणमानमायालोभा', **'अणुपुव्वेणं'** आनुपूर्व्या=क्रमशो यथाबद्धम्, **'अट्ठकम्मपयडीओ'** अष्टकर्मप्रकृतीः **'खवेत्ता'** क्षपयित्वा **'उप्पिं लोयग्गपइट्ठाणा'** उपरि लोकाग्रप्रतिष्ठानाः=लोकाग्रावस्थिता **'भवंति'** भवन्ति ॥ सू. ६९ ॥

**टीका—'अणगारे णं भंते'** इत्यादि । **'अणगारे णं भंते !'** अनगारः खलु हे भदन्त ! **'भावियप्पा'** भावितात्मा=कृताऽऽत्मसाक्षात्कारः, **'केवलिसमुग्घाएणं'** केवलि-

**कोहा एवं माणमायालोहा** ) जिनका क्रोध नष्ट हो गया है, अत एव जो निष्क्रोध है, मोहनीय कर्म नष्ट हो जाने के कारण क्रोध जिनकी आत्मा से क्षीण हो चुका है, इसी तरह से मान, माया एवं लोभ भी जिनकी आत्मा से सर्वथा नष्ट हो चुके है, वे (**अणुपुव्वेणं अट्ठ कम्मपयडीओ खवेत्ता उप्पिं लोयग्गपइट्ठाणा भवंति** ) क्रम २ से पूर्वबद्ध अष्टकर्मों की प्रकृति को सर्वथा नष्ट कर नियमसे लोक के अग्रभागमें निवास करनेवाले होते है, अर्थात् मोक्षको प्राप्त करते है ॥ सू. ६९ ॥

**'अणगारे णं भंते !' इत्यादि ।**

(**भंते !**) हे भगवन् ! (**भावियप्पा अणगारे णं**) भावितात्मा अनगार (साधु) (**केवलिसमुग्घाएणं** ) केवलिसमुद्घात द्वारा (**समोहणित्ता**) आत्मप्रदेशों को शरीर से

ગયેલો છે, તેથી જેઓ ક્રોધરહિત છે, મોહનીય કર્મ નષ્ટ થઈ જવાના કારણથી ક્રોધ જેમના આત્મામાંથી ક્ષીણ થઈ ગયેલો છે, તેવી જ રીતે માન, માયા તેમજ લોભ પણ જેમના આત્મામાંથી સર્વથા નષ્ટ થઇ ગયેલાં છે, તેઓ ( अणुपुव्वेण अट्ठ कम्मपयडीओ खवेत्ता उप्पि लोयग्गपइट्ठाणा भवंति ) અનુક્રમથી પૂર્વબદ્ધ આઠ કર્મોની પ્રકૃતિને સર્વથા નષ્ટ કરીને નિયમથી લોકના ઉપરના ભાગમાં નિવાસ કરવાવાળા થાય છે, અર્થાત્ મોક્ષને પ્રાપ્ત કરે છે.(સૂ. ૬૯)

'अणगारे णं भंते !' ઈત્યાદિ.

( भंते ! ) હે ભગવન્ ! ( भावियप्पा अणगारे णं ) ભાવિતાત્મા અનગાર ( સાધુ ) ( केवलिसमुग्घाएणं ) કેવલિસમુદ્ઘાત દ્વારા ( समोहणित्ता ) આત્મ-

**ग्घाएणं समोहणित्ता केवलकप्पं लोयं फुसित्ता णं चिट्ठइ?, हंता! चिट्ठइ ॥ सू० ७० ॥**

समुद्घातेन, तत्र प्रथमं समुद्घातस्वरूपमुच्यते—यथास्वभावस्थितानामात्मप्रदेशानां समुद्घातनं=समन्तादुद्घातनं—स्वभावादन्यभावेन परिणमनं समुद्घातः, स च सप्तविधः—वेदनासमुद्घातः १, कषायसमुद्घातः २, मरणसमुद्घातः ३, वैक्रियसमुद्घातः ४, तैजससमुद्घातः ५, आहारकसमुद्घातः ६, केवलिसमुद्घातश्च ७। एषु सप्तसु समुद्घातेषु चरमः केवलिसमुद्घातः। तत्र को नाम केवलिसमुद्घातः? उच्यते—यस्यान्तर्मुहूर्तकाले परमपद भावि, तस्मिन् केवलिनि भवः समुद्घात केवलिसमुद्घातस्तेन, **'समोहणित्ता'** समवहत्य=आत्मप्रदेशान् प्रसार्य **'केवलकप्पं'** केवलकल्पं=सम्पूर्णं **'लोयं'** लोकं **'फासित्ता णं'** स्पृष्ट्वा खलु **'चिट्ठइ'** तिष्ठति किम्?। उत्तरमाह—**'हंता'** इत्यादि। **'हन्त'** इतिपदं कोमलाऽऽमन्त्रणपूर्वकस्वीकारार्थकम्, **'चिट्ठइ'** तिष्ठति ॥ सू. ७० ॥

बाहर निकालकर (**केवलकप्पं लोयं**) क्या समस्त लोकका (**फुसित्ता**) स्पर्श करके (**चिट्ठइ**) ठहरते है? उत्तर—(**हंता! चिट्ठइ**) हां! ठहरते है। यथास्वभाव से स्थित आत्मप्रदेशों का अन्य भाव में परिणमन करना उसका नाम समुद्घात है। समुद्घात ७ प्रकार का है—वेदनासमुद्घात १, कषायसमुद्घात २, मरणसमुद्घात ३, वैक्रियसमुद्घात ४, तैजससमुद्घात ५, आहारकसमुद्घात ६, केवलिसमुद्घात ७। इनमें अन्तिम समुद्घात केवलिसमुद्घात है। जिसको अन्तर्मुहूर्तकाल में निर्वाण पदकी प्राप्ति होती है ऐसे केवली भगवान का दण्ड, कपाट, मन्थान और लोकपूरण क्रिया द्वारा आत्मप्रदेशों का मूल शरीर को न छोड़कर शरीर से बाहर फैलना इसका नाम केवलिसमुद्घात है ॥ सू. ७० ॥

પ્રદેશોને શરીરથી બહાર કાઢીને (केवलकप्पं लोयं) શું સમસ્ત લોકનો (फुसित्ता) સ્પર્શ કરીને (चिट्ठइ) રહે છે?. (हंता! चिट्ठइ) હા! રહે છે. યથાસ્વભાવમાં રહેલા આત્મપ્રદેશોને અન્યભાવમાં ફેરવી નાખવું તેનું નામ સમુદ્ઘાત છે. સમુદ્ઘાત ૭ પ્રકારના છે—૧ વેદનાસમુદ્ઘાત, ૨ કષાયસમુદ્ઘાત, ૩ મરણસમુદ્ઘાત, ૪ વૈક્રિયસમુદ્ઘાત, ૫ તૈજસસમુદ્ઘાત, ૬ આહારકસમુદ્ઘાત, ૭ કેવલિસમુદ્ઘાત. તેમાં છેલ્લો સમુદ્ઘાત કેવલિસમુદ્ઘાત છે. જેને અન્તર્મુહૂર્ત કાળમાં નિર્વાણપદની પ્રાપ્તિ થાય છે એવા કેવલી ભગવાનના દંડ, કપાટ, મન્થાન, અને લોકપૂરણ ક્રિયાદ્વારા આત્મપ્રદેશોનો, મૂળ શરીરને નહિ છોડતાં શરીરથી બહાર ફેલાવો થવો તેનું નામ કેવલિસમુદ્ઘાત છે. (સૂ. ૭૦)

**मूलम्—से नूणं भंते! केवलकप्पे लोए तेहिं निज्जरापोग्गलेहिं फुडे? हंता! फुडे ॥ सू० ७१ ॥**

**मूलम्—छउमत्थे णं भंते! मणुस्से तेसिं णिज्जरापोग्गलाणं किंचि वण्णेणं वण्णं, गंधेणं गंधं, रसेणं रसं, फासेणं**

---

**टीका—'से नूणं भंते!'** इत्यादि। **'से नूणं भंते!'** अथ नूनं हे भदन्त! **'केवलकप्पे लोए'** केवलकल्पो लोकः, **'तेहिं'** तैः **'निज्जरापोग्गलेहिं'** निर्जरापुद्गलैः—निर्जरा प्रधानाः पुद्गला निर्जरापुद्गलाः—जीवेन अकर्मतामापादिताः कर्मपुद्गलास्तैः **'फुडे'** स्पृष्टः=व्याप्तः किम्? इति प्रश्नः। उत्तरमाह **'हंता! फुडे'** हन्त! स्पृष्टः ॥ सू. ७१ ॥

**टीका—'छउमत्थे णं भंते!'** इत्यादि। **'छउमत्थे णं भंते!'** छद्मस्थः खलु भदन्त!'=हे भदन्त! छद्मस्थः खलु मनुष्यः, छद्मस्थ इह निरतिशयज्ञानयुक्तो ज्ञेयः, यतश्छद्मस्थोऽपि विशिष्टावधिज्ञानयुक्तो निर्जरापुद्गलान् जानात्येव। **'तेसिं णिज्जरापोग्गलाणं'** तेषां निर्जरापुद्गलानां **'किंचि'** किञ्चिद् **'वण्णेणं'** वर्णेन—वर्णतया यथावस्थितस्वरूपेण **'वण्णं'** वर्ण=

---

**'से नूणं भंते!'** इत्यादि।

(**से नूणं भंते!**) हे भदंत! क्या अवश्यतया (**तेहिं निज्जरापोग्गलेहिं**) उनके निर्जराप्रधान पुद्गलों द्वारा (**केवलकप्पे लोए**) यह समस्त लोग (**फुडे**) स्पृष्ट होता है? (**हंता! फुडे**) हाँ! स्पृष्ट होता है ॥ ॥ सू. ७१ ॥

**'छउमत्थे णं'** इत्यादि।

(**छउमत्थे णं भंते! मणुस्से**) हे भदन्त! विशिष्टज्ञानी छद्मस्थ मनुष्य (**तेसिं णिज्जरापोग्गलाणं**) उन निर्जराप्रधान पुद्गलों को (**किंचि**) किंचित् (**वण्णेणं वण्णं**

---

'से नूणं भंते!' ઇત્યાદિ.

(से नूणं भंते!) હે ભદંત! શું અવશ્યતયા (तेहिं निज्जरापोग्गलेहिं) તેમનાં નિર્જરાપ્રધાન પુદ્ગલો દ્વારા (केवलकप्पे लोए) આ સમસ્ત લોકને (फुडे) સ્પર્શ થાય છે? (हंता! फुडे) હા! થાય છે. (सू. ७१)

'छउमत्थे णं' ઇત્યાદિ.

(छउमत्थे णं भंते! मणुस्से) હે ભદંત! વિશિષ્ટજ્ઞાની છદ્મસ્થ મનુષ્ય (तेसि णिज्जरापोग्गलाणं) તે નિર્જરાપ્રધાન પુદ્ગલોને (किंचि) કિંચિત્ (वण्णेणं वण्णं गंधेणं गंधं रसेणं रसं फासेणं फासं जाणइ पासइ) વર્ણથી

**फासं जाणइ पासइ ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे ॥ सू० ७२ ॥**

**मूलम्—से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ–छउमत्थे णं मणुस्से तेसिं णिज्जरापोग्गलाणं णो किंचि वण्णेणं वण्णं जाव जाणइ पासइ ? ॥ सू० ७३ ॥**

---

कालादिरूप, **'गंधेन गंधं'** गन्धेन गन्धम्, **'रसेन रसं'** रसेन रसम्, **'फासेणं फासं'** स्पर्शेन स्पर्श **'जाणइ'** जानाति विशेषतः, **'पासइ'** पश्यति सामान्यतः किम् ?, उत्तरमाह– **'गोयमा'** हे गौतम ! **'णो इणट्ठे समट्ठे'** नायमर्थः समर्थः=संगतः, कर्मपुद्गलानां साऽतिशयज्ञानगम्यत्वात् । अत्र छद्मस्थशब्देनातिशयज्ञानरहितस्य विवक्षितत्वादिति भाव' । एवं गन्धादयोऽपि ज्ञेयाः ॥ सू० ७२ ॥

**टीका—'से केणट्ठेणं भंते !'** इत्यादि ! **'से केणट्ठेणं भंते !'** अथ केनाऽर्थेन भदन्त ! **'एवं वुच्चइ'** एवमुच्यते–**'छउमत्थे णं मणुस्से'** छद्मस्थ' खलु मनुष्यः **'तेसिं णिज्जरापुग्गलाणं'** तेषां निर्जरापुद्गलानां **'णो किंचि वण्णेणं वण्णं जाव जाणइ पासइ'** नो किञ्चिद्वर्णेन वर्ण यावज्जानाति पश्यति ॥ सू० ७३ ॥

---

**गंधेणं गंधं रसेणं रसं फासेणं फासं जाणइ पासइ )** वर्ण से वर्ण को, गंध से गंध को, रस से रस को और स्पर्श से स्पर्श को जानता है देखता है ? उत्तर–(**गोयमा** !) हे गौतम ! (**णो इणट्ठे समट्ठे** ) यह अर्थ सिद्धान्त से समर्थित नहीं है। अर्थात् छद्मस्थ केवली भगवान् के निर्जराप्रधान पुद्गलों के रूप, रस, गध, और स्पर्श को किंचिन्मात्र भी नहीं जान सकता है, न देख सकता है ॥ सू ७२ ॥

**'से केणट्ठेणं भंते !'** इत्यादि ।

( **भते !** ) हे भदंत ! ( **से** ) यह बात ( **केणट्ठेणं एवं वुच्चइ** ) किस–कारण ऐसी कही

---

वर्णने, गंधथी गंधने, रसथी रसने अने स्पर्शथी स्पर्शने जाणे छे ? जुओ छे ? उत्तर–( गोयमा ! ) हे गौतम ! ( णो इणट्ठे समट्ठे ) आ अर्थ सिद्धांतथी समर्थन पामेलो नथी, अर्थात् छद्मस्थ पुरुष केवली भगवानना निर्जराप्रधान पुद्गलोनां रूप, रस, गध तथा स्पर्शने किंचित मात्र पण जाणी शकता नथी, तेम जोइ शकता पण नथी. (सू. ७२)

'से केणट्ठेणं भंते !' इत्यादि.

( भंते ! ) हे भदन्त ! ( से ) आ वात ( केणट्ठेणं एवं वुच्चइ ) शा

**मूलम्—गोयमा! अयं णं जंबुद्दीवे दीवे सव्वदीव-समुद्दाणं सव्वब्भंतराए सव्वखुड्डाए वट्टे तेल्लापूय-संठाण-संठिए**

**टीका**—भगवानाह-'**गोयमा**' इत्यादि। '**गोयमा! अयं णं जंबुद्दीवे दीवे**' हे, गौतम! अय खलु जम्बूद्वीपो द्वीपः '**सव्वदीवसमुद्दाणं सव्वब्भंतराए**' सर्वद्वीपसमुद्राणां सर्वाभ्यन्तरकः=सर्वद्वीपसमुद्रमध्यवर्ती, '**सव्वखुड्डाए**' सर्वक्षुल्लकः=सर्वद्वीपसमुद्रापेक्षया लघुः, '**वट्टे**' वृत्तः=गोलाकारः, मोदकवद् घनवृत्तोऽपि भवेत् तद्व्यवच्छेदार्थं प्रतरवृत्ततामाह-'**तेल्लापूय-संठाण-संठिए**' तैलाऽपूप-सस्थान-सस्थितः- तैलमिति घृतस्योपलक्षणम्, तेन तैलादिपकाऽपूपाऽऽकारसस्थितः, '**वट्टे**' वृत्तः, '**रहचक्कवाल-संठाण-संठिए**' रथचक्रवाल-

---

जाती है कि (**छउमत्थे णं मणुस्से तेसिं णिज्जरापोग्गलाणं णो किंचि वण्णेणं वण्णं जाव जाणइ पासइ**) छद्मस्थ मनुष्य, उन केवली भगवान् के उन निर्जराप्रधान पुद्गलों के वर्ण गंध रस स्पर्श को न जान सकता है? न देख सकता है? ॥ सू. ७३ ॥

'**गोयमा। अयं णं**' इत्यादि।

(**गोयमा!**) हे गौतम! (**अयं णं जंबुद्दीवे दीवे**) यह जंबूद्वीप नामका द्वीप (**सव्वदीवसमुद्दाणं**) समस्त द्वीप और समुद्रों का (**सव्वब्भंतराए**) सर्वप्रकार से मध्य-वर्ती है। अतः यह (**सव्वखुड्डाए**) सब से छोटा है। (**वट्टे**) यह वलय के समान वृत्ताकार-गोल है। (**तेल्ला-पूय-संठाण-संठिए**) तैलपक्क पुआ के आकार जैसा गोल है। (**वट्टे रहचक्कवाल-संठाण-संठिए**) रथके पहिये जैसा गोल है। (**वट्टे पुक्खर-**

---

કારણુથી એમ કહેવાય છે કે (छउमत्थे णं मणुस्से तेसिं णिज्जरापोग्गलाणं णो किंचि वण्णेणं वण्णं जाव जाणइ पासइ) છદ્મસ્થ મનુષ્ય તે કેવલી ભગવાનના તે નિર્જરાપ્રધાન પુદ્ગલોના વર્ણ, ગંધ, રસ, સ્પર્શને નથી જાણી શકતા કે નથી દેખી શકતા? (સૂ. ૭૩)

'गोयमा। अयं णं' ઈત્યાદિ.

(गोयमा!) હે ગૌતમ! (अयं णं जंबुद्दीवे दीवे) આ જમ્બૂદ્વીપ નામનો દ્વીપ (सव्वदीवसमुद्दाणं) સમસ્ત દ્વીપો અને સમુદ્રોની (सव्वब्भंतराए) સર્વ પ્રકારથી મધ્યવર્તી છે. આથી તે (सव्वखुड्डाए) બધાથી નાનો છે. (वट्टे) તે વલયના (બંગડી) જેવો વૃત્તાકાર ગોળ છે. (तेल्लापूय-सठाण संठिए) પુડલાના આકાર જેવો ગોળ છે (वट्टे रहचक्कवाल-संठाण-संठिए) રથના પૈડાં જેવો ગોળ છે. (वट्टे पुक्खरकण्णिया-संठाण-संठिए) કમળની કર્ણિકા જેવો ગોળ છે. (वट्टे पडिपुण्ण-चंद-संठाण-संठिए) પૂર્ણચન્દ્રમંડળ

वट्टे रहचक्कवाल-संठाण-संठिए वट्टे पुक्खर-कण्णिया-संठाण-संठिए वट्टे पडिपुण्ण-चंद-संठाणसंठिए एक्कं जोयणसयसहस्सं आयामविक्खंभेणं तिण्णि जोयणसयसहस्साइं सोलस सहस्साइं दोण्णि य सत्तावीसे जोयणसए तिण्णि य कोसे अट्ठावीसं च धणुसयं तेरस य अंगुलाइं अद्धंगुलियं च किंचि विसेसाहिए परिक्खेवेणं पण्णत्ते ॥ सू० ७४ ॥

संस्थान-संस्थित'-चक्रवालं=मण्डलं, मण्डलत्वधर्मयोगाच्च रथचक्रमपि रथचक्रवालं, तत्संस्थानेन संस्थितः-रथचक्राऽऽकारसंस्थित इत्यर्थः 'वट्टे' वृत्तः 'पुक्खर-कण्णिया-संठाण-संठिए वट्टे', पुष्करकर्णिका-संस्थान-संस्थितः-पद्मबीजकोशसदृशाकारयुक्तः, 'एक्कं जोयणसयसहस्सं आयामविक्खंभेणं' एकं योजनशतसहस्रम् आयामविष्कम्भेण=दैर्ध्यपरिणाहाभ्यामेकलक्षयोजनप्रमाणः, 'वट्टे' वृत्तः, 'पडिपुण्ण-चंद-संठाण संठिए' प्रतिपूर्ण-चन्द्र-संस्थान-संस्थितः, 'तिण्णि जोयणसयसहस्साइं' त्रीणि योजनशतसहस्राणि=त्रीणि लक्षाणि योजनानि, 'सोलस सहस्साइं' षोडश सहस्राणि, 'दोण्णि य सत्तावीसे जोयणसए' द्वे च सप्तविंशे योजनशते= सप्तविंशत्यधिके द्वे शते योजनानि 'तिण्णि य कोसे' त्रींश्च क्रोशान् 'अट्ठावीसं च धणुसयं' अष्टाविंशं च धनुश्शतम्=अष्टाविंशत्यधिकशतधनूंषि, 'दस य अंगुलाइं' त्रयोदश चाङ्गुलानि 'अद्धंगुलियं च' अर्द्धाङ्गुलिकञ्च 'किंचि विशेषाहिए' किञ्चिद्विशेषाऽधिकं 'परिक्खेवेणं' परिक्षेपेण=परिधिना 'पण्णत्ते' प्रज्ञप्तम् ॥ सू० ७४

कण्णिया-संठाण-संठिए ) कमलकी कर्णिका के जैसा गोल है। ( वट्टे पडिपुण्ण-चंद-संठाण-संठिए ) पूर्णचंद्रमंडल के जैसा गोल है। ( एक्कं जोयणसयसहस्सं आयामविक्खभेणं तिण्णि जोयणसयसहस्साइं सोलससहस्साइं दोण्णि य सत्तावीसे जोयणसए तिण्णि य कोसे अट्ठावीसं च धणुसयं तेरस य अंगुलाइं अद्धंगुलियं च किंचि विसेसाहिए परिक्खेवेणं पण्णत्ते ) यह जबूद्वीप एक लाख योजनका आयाम एवं

જેવો ગોળ છે. ( एक्कं जोयण- सयसहस्सं आयामविक्खंभेणं तिण्णि जोयण-सयसहस्साइं सोलससहस्साइं दोण्णि य सत्तावीसे जोयणसए तिण्णि य कोसे अट्ठावीस च धणुसयं तेरस य अंगुलाइं अद्धंगुलियं च किंचिविसेसाहिए परिक्खेवेणं पण्णत्ते ) આ જંબૂદ્વીપ ૧ લાખ યોજનના આયામ તેમજ વિષ્કંભવાળો લાંબો-

**मूलम्—देवे णं महड्ढिए महज्जुइए महब्बले महाजसे महासोक्खे महाणुभावे सविलेवणं गंधसमुग्गयं गिण्हइ, गिण्हित्ता तं अवदालेइ, अवदालित्ता जाव इणामेवत्ति कट्टु केवल-**

टीका—'देवे णं' इत्यादि। 'देवे णं' देवः खलु 'महड्ढिए' महर्द्धिकः=विपुलैश्वर्ययुक्तः, 'महज्जुइए' महाद्युतिकः=महातेजस्वी, 'महब्बले महाजसे' महाबलो महायशाः 'महासोक्खे' महासौख्यः=महासुखी, 'महाणुभावे' महानुभावः, 'सविलेवणं' सविलेपनं 'गंधसमुग्गयं' गन्धसमुद्गकं=गन्धसपुटकं 'गिण्हइ' गृह्णाति, 'गिण्हित्ता' गृहीत्वा तं=गन्धसमुद्गकम् 'अवदालेइ' अवदालयति=उद्घाटयति, 'अवदालित्ता' अवदाल्य=उद्घाट्य, 'जाव इणामेवत्ति कट्टु' यावत् इदमेवमिति कृत्वा, इह यावच्छब्दः परिमाणार्थकस्तावदित्यस्य सापेक्षः, इदं=गमनम्, एवम्=छोटिकात्रयं यावता कालेन भवति तावत्का-

विष्कंभवाला है। इसकी परिधि तीन लाख सोलह हजार दो सौ सत्ताईस योजन तीन कोश एकसौ अट्ठाईस धनुष साढ़े तेरह अंगुल से कुछ अधिक है। उससे यह परिवेष्टित है ॥ सू. ७४ ॥

'देवे णं महड्ढिए' इत्यादि।

(महड्ढिए) महाऋद्धि का धारी (महब्बले) महाबलिष्ठ (महाजसे) अतिशय यशस्वी (महासोक्खे) अत्यन्तसौख्यवाले (महाणुभावे) एवं अत्यंत प्रभावशाली ऐसा कोई (देवे णं) देव (सविलेवणं गंधसमुग्गयं) विलेपनसहित एक गंध के समुद्गक (पेटी) को (गिण्हइ) लेवे, (गिण्हित्ता) और लेकर उसे (अवदालेइ) वहीं पर खोले, (अवदालित्ता) खोलकर (जाव इणामेवत्ति कट्टु केवलकप्पं जंबुद्दीवं दीवं)

પોળો છે. તેનો પરિધ ત્રણ લાખ સોળ હજાર બસો સત્તાવીશ યોજન ત્રણ કોશ એકસો અટ્ઠાવીસ ધનુષ અને સાડા તેર આંગળથી જરા વધારે છે. તે એટલા ઘેરાવામાં છે. (સૂ. ૭૪)

'देवे णं महड्ढिए' ઈત્યાદિ.

(महड्ढिए) મહાઋદ્ધિના ધારી (महब्बले) મહાબલિષ્ઠ (महाजसे) અતિશય યશસ્વી (महासोक्खे) અત્યંત સૌખ્યવાળા (महाणुभावे) તેમજ અત્યંત પ્રભાવશાળી એવા કોઈ (देवे णं) દેવ (सविलेवणं गंधसमुग्गयं) વિલેપન સહિત એક ગંધસમુદ્ગક (સુગંધદ્રવ્યની પેટી) ને (गिण्हइ) લીએ, (गिण्हित्ता) અને લઈને તેને (अवदालेइ) ત્યાંજ ઉઘાડે, (अवदालित्ता) ઉઘાડીને (जाव इणामेवत्ति कट्टु केवलकप्प जंबुद्दीवं दीवं) તે સમસ્ત જંબૂદ્વી

कप्पं जंबुद्दीवं दीवं तिहिं अच्छराणिवाएहिं तिसत्तखुत्तो अणुपरियट्टित्ता णं हव्वमागच्छेज्जा ॥ सू० ७५ ॥

मूलम्—से णूणं भंते! से केवलकप्पे जंबुद्दीवे दीवे तेहिं घाणपोग्गलेहिं फुडे? हंता! फुडे ॥ सू० ७६ ॥

---

लिकम्—सत्वरमित्यर्थः, इति कृत्वा, 'केवलकप्पं' केवलकल्पं=संपूर्ण, 'जंबुद्दीवं' जम्बूद्वीप 'दीवं' द्वीपं 'तिहिं' त्रिभिः 'अच्छराणिवाएहिं' अच्छराशब्दो देशीयश्छोटिकावाचक, छोटिकाभिरित्यर्थः, 'तिसत्तखुत्तो' त्रिसप्तकृत्वः=एकविंशतिवारान् 'अणुपरियट्टित्ता णं' अनुपर्यट्य=परिभ्रम्य खलु 'हव्वमागच्छज्जा' शीघ्रमागच्छेत्। छोटिकात्रयकालसमकाले एव संपूर्ण जम्बूद्वीपमेकविंशतिवारान् परिभ्रम्य शीघ्रमागच्छेदित्यर्थः ॥ सू०७५ ॥

टीका—गौतमः पृच्छति—'से णूणं भंते!' इत्यादि। 'से णूणं भंते!' अथ नूनं हे भदन्त! 'से केवलकप्पे जंबुदीवे दीवे' स केवलकल्पे जम्बूद्वीपे द्वीपे 'तेहिं' तैः, 'घाणपोग्गलेहिं' घ्राणपुद्गलैः=गन्धपुद्गलैः 'फुडे' स्पृष्टः किम्?; भगवानाह—'हंता! फुडे' हन्त! स्पृष्टः ॥ सू. ७३ ॥

---

उस समस्त जंबूद्वीप की (तिहिं अच्छराणिवाएहिं) तीन चुटकी वजाने में जितना समय लगे उतने समय में (तिसत्तखुत्तो) तीनगुणित सात—इक्कीस वार (अणुपरियट्टित्ता) प्रदक्षिणा देकर (हव्वमागच्छेज्जा) वहीं पर शीघ्र आजावे ॥ सू. ७५ ॥

'से णूणं भंते!' इत्यादि।

गौतम पूछते है—(से णूणं भंते! से केवलकप्पे जंबुदीवे दीवे) हे भदन्त! वह समस्त जंबूद्वीप (तेहिं घाणपोग्गलेहिं फुडे?) क्या उन समस्त सुगंधित पुद्गलों से स्पृष्ट हो जाता है? उत्तर—(हंता! फुडे) हां! हो जाता है ॥ सू. ७६ ॥

---

પની (तिहिं अच्छराणिवाएहिं) ત્રણ ચપટી વગાડવામાં જેટલો સમય લાગે તેટલા સમયમાં (तिसत्तखुत्तो) એકવીસવાર (अणुपरियट्टित्ता) પ્રદક્ષિણા દઈને (हव्वमागच्छेज्जा) ત્યાં પાછો જલ્દી આવી જાય. (સૂ. ૭૫)

'से णूणं भंते!' ઇત્યાદિ.

ગૌતમ પૂછે છે—(से णूणं भंते! से केवलकप्पे जंबुदीवे दीवे) હે ભદન્ત! આ સમસ્ત જંબૂદ્વીપ (तेहिं घाणपोग्गलेहिं फुडे) શું તે સમસ્ત સુગંધિત પુદ્ગલોથી સ્પૃષ્ટ થઈ જાય છે? ઉત્તર—(हंता! फुडे) હા, થઈ જાય છે. (સૂ. ૭૬)

**मूलम्—छउमत्थे णं भंते ! मणुस्से तेसिं घाणपोग्गलाणं किंचि वण्णेणं वण्णं जाव जाणइ पासइ ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे ॥ सू० ७७ ॥**

**मूलम्—से तेणट्ठेणं गोयमा! एवं वुच्चइ—छउमत्थे**

---

टीका—पुनर्गौतमः पृच्छति—'**छउमत्थे णं**' इत्यादि ! '**भंते !**' हे भदन्त ! '**छउमत्थे णं मणुस्से**' छद्मस्थः खलु मनुष्यः, '**तेसिं घाणपोग्गलाणं**' तेषां घ्राणपुद्गलानां '**किंचि वण्णेणं वण्णं जाव जाणइ पासइ**' किञ्चिद्वर्णेन वर्णं यावज्जानाति पश्यति किम् ? भगवानाह—'**गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे**' गौतम ! नाऽयमर्थः समर्थः ॥ सू. ७७ ॥

टीका—'**से तेणट्ठेणं**' इत्यादि । '**से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ**' अथ

---

'**छउमत्थे णं भंते ! मणुस्से**' इत्यादि ।

पुन. गौतम ने पूछा—(**छउमत्थे णं भंते ! मणुस्से**) हे भदन्त ! क्या छद्मस्थ मनुष्य, (**तेसिं घाणपुग्गलाणं**) उन सुगंधित पुद्गलों को (**किंचि वण्णेणं वण्णं जाव**) वर्ण से यावत् गंध स्पर्शादि से थोडा भी (**जाणइ पासइ**) जान सकता है ? देख सकता है ? प्रभु ने कहा कि (**गोयमा !**) हे गौतम ! (**णो इणट्ठे समट्ठे**) यह अर्थ समर्थ नहीं है ॥ सू. ७७ ॥

'**से तेणट्ठेणं**' इत्यादि ।

(**से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ**) हे गौतम ! छद्मस्थ उन निर्जरापुद्गलों को गंधादिगुणों द्वारा थोड़ा भी नहीं जान सकता है—यह जो बात कही गई है सो इसलिये

---

'छउमत्थे णं भंते ! मणुस्से' ઇત્યાદિ.

વળી ગૌતમે પૂછયુ -(छउमत्थे णं भंते ! मणुस्से) હે ભદન્ત ! શું છદ્મસ્થ મનુષ્ય, (तेसिं घाणपोग्गलाणं) તે સુગંધિત પુદ્ગલોને વર્ણથી તેમજ ગંધ સ્પર્શ આદિથી જરા પણ (जाणइ पासइ) જાણી શકે છે ? જોઇ શકે છે ? પ્રભુએ કહ્યું કે (गोयमा !) હે ગૌતમ ! (णो इणट्ठे समट्ठे) આ અર્થ સમર્થ નથી. (सू. ७७)

'से तेणट्ठेणं' ઇત્યાદિ.

(से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ) હે ગૌતમ ! છદ્મસ્થ, તે નિર્જરા-પુદ્ગલોને ગંધ આદિ-ગુણો દ્વારા જરા પણ જાણી શકતો નથી એમ જે

**णं मणुस्से तेसिं निज्जरापोग्गलाणं णो किंचि वण्णेणं वण्णं जाव जाणइ पासइ ॥ सू० ७८ ॥**

**मूलम्—एए सुहुमा णं ते पोग्गला पण्णत्ता, समणा-**

तेनाऽर्थेन हे गौतम ! एवमुच्यते—'**छउमत्थे णं मणुस्से**' छद्मस्थः खलु मनुष्यः '**तेसिं णिज्जरापोग्गलाणं**' तेषां निर्जरापुद्गलानां '**न किंचि वण्णेणं**' न किञ्चिद् वर्णेन '**वण्णं**' वर्णं '**जाव जाणइ पासइ**' यावज्जानाति पश्यति। तस्य छद्मस्थस्य सातिशयज्ञानाभावात्स यथावस्थितस्वरूपेण वर्णादिकं न जानातीत्यर्थः ॥ सू. ७८ ॥

**टीका**—'**एए सुहुमा**' इत्यादि। '**एए**' एते वर्णादयस्तथा '**सहुमा**' सूक्ष्माः सन्ति यत् तान् यथावस्थितस्वरूपेण छद्मस्थो न जानाति, तथा '**ते पोग्गला**' ते पुद्गलाः=निर्जरापुद्गला अतिसूक्ष्माः '**पण्णत्ता**' प्रज्ञप्ताः। '**समणाउसो**' हे श्रमण ! हे आयुष्मन् ! अथवा—श्रमणश्चासावायुष्मांश्चेति समासस्तस्यामन्त्रणं हे श्रमणायुष्मन् ! हे गौतम !

कही गई है कि (**छउमत्थे णं मणुस्से**) उस छद्मस्थ के सातिशय ज्ञान का अभाव है, अतः वह यथावस्थित रूप से (**तेसिं णिज्जरापोग्गलाणं**) उन निर्जरित पुद्गलों के (**णो किंचि वण्णेणं वण्णं जाव जाणइ पासइ**) वर्णादिक को थोड़ा भी नहीं जान सकता है, न देख सकता है ॥ सू. ७८ ॥

'**एए सुहुमा ण**' इत्यादि।

(**एए सुहुमा णं ते पोग्गला पण्णत्ता**) उन निर्जरपुद्गलों को छद्मस्थ यथावस्थित रूपसे इस कारण से भी नहीं जान सकता है कि उन पुद्गलों के वर्णादिक गुण सूक्ष्म हैं, अतः (**समणाउसो ! सव्वलोयं पि य णं ते फुसित्ता णं चिट्ठंति**) हे आयु-

વાત કહી છે તે એ માટે કહેલી છે કે (छउमत्थे णं मणुस्से) તે છદ્મસ્થને સાતિશય જ્ઞાનનો અભાવ છે. તેથી તે યથાવસ્થિતરૂપથી (तेसिं णिज्जरापोग्गलाणं) તે નિર્જરિત પુદ્ગલોના (णो किंचि वण्णेणं वण्णं जाव जाणइ पासइ) વર્ણ આદિકને જરા પણ જાણી શકતો નથી, જોઈ પણ શકતો નથી. (સૂ. ૭૮)

'एए सुहुमा णं' ઇત્યાદિ

(एए सुहुमा णं ते पोग्गला पण्णत्ता) તે નિર્જરાપુદ્ગલોને છદ્મસ્થ યથાવસ્થિતરૂપથી એ કારણથી પણ જાણી શકતો નથી કે તે પુદ્ગલોનાં વર્ણ આદિક ગુણ સૂક્ષ્મ છે. તેથી (समणाउसो ! सव्वलोयं पि य णं फुसित्ता णं चिट्ठंति) હે આયુષ્મન્ શ્રમણ ! જેવી રીતે છદ્મસ્થ ગંધ આદિક ગુણો દ્વારા

**उसो ! सव्वलोयं पि य णं ते फुसित्ता णं चिट्ठंति ॥ सू० ७९ ॥**

**मूलम्—कम्हा णं भंते ! केवली समोहणंति? कम्हा णं केवली समुग्घायं गच्छंति? गोयमा ! केवलीणं चत्तारि कम्मंसा**

---

यथाऽतिसूक्ष्मत्वाद् गन्धपुद्गलान्न जानात्येवं निर्जरापुद्गलानपीति दृष्टान्तप्रदर्शनम् । '**सव्वलोयं पि य णं**' सर्वलोकमपि च खलु ते=निर्जरापुद्गलाः '**फुसित्ता णं**' स्पृष्ट्वा खलु '**चिट्ठंति**' तिष्ठन्ति ॥ सू. ७९ ॥

**टीका**—गौतमः पृच्छति—'**कम्हा णं भंते !**' इत्यादि । '**कम्हा णं भंते !**' कस्मात्खलु भदन्त !=हेभदन्त ! कस्मात् खलु '**केवली**' केवलिनः '**समोहणंति**' समुद्घ्नन्ति=कस्मै प्रयोजनाय केवलिनः समुद्घातं कुर्वन्तीत्यर्थः, उक्तमर्थ—पुनः सुखबोधार्थमाह—'**कम्हा णं केवली**' कस्मात् खलु केवलिनः, '**समुग्घायं**' समुद्घातम्=आत्मप्रदेशप्रसारकतां गच्छन्ति=प्राप्नुवन्ति, भगवानुत्तरमाह—'**गोयमा !**' गौतम ! '**केवलीणं चत्तारि कम्मंसा**' केवलिनां चत्वारः

---

ष्मन् श्रमण ! जिस प्रकार छद्मस्थ गंधादिक गुणों द्वारा अत्यंत सूक्ष्म रूप से परिणत गंध पुद्गलों को यथावस्थित रूपसे नहीं जान सकता है उसी प्रकार वह अत्यंत सूक्ष्मरूप से परिणत होने के कारण उन निर्जरापुद्गलो को भी गंधादिक गुणद्वारा न जान सकता है, न देख सकता है। इस दृष्टान्त से यह बात स्फुट हो जाती है ॥ सू. ७९ ॥

'**कम्हा णं भंते !**' इत्यादि ।

गौतम ने पुनः प्रश्न किया—(**भंते !**) हे भदन्त ! (**कम्हा णं**) किस कारण से (**केवली**) केवली भगवान् (**समोहणंति**) समुद्घात करते है? अर्थात्—केवलियों को समुद्घात किस प्रयोजन के लिये करना पड़ता है? उत्तर—(**गोयमा !**) हे गौतम ! (**केवलीणं चत्तारि कम्मंसा अपलिक्खीणा भवंति**) केवलियों के चार कर्म अवशिष्ट रहते

---

અત્યંત સૂક્ષ્મરૂપમાં પરિણામ પામેલાં ગંધપુદ્‌ગલોને યથાવસ્થિતરૂપથી જાણી શકતા નથી, તેવીજ રીતે અત્યંત સૂક્ષ્મરૂપમાં પરિણામ પામેલાં હોવાને કારણે તે નિર્જરાપુદ્‌ગલોને પણ ગંધ આદિક ગુણ દ્વારા જાણી શકતા નથી, તેમ જોઈ શકતા નથી. આ દૃષ્ટાંતથી એ વાત સ્પષ્ટ થઈ જાય છે. (સૂ. ૭૯)

'कम्हा णं भंते ! केवली समोहणंति' ઇત્યાદિ.

ગૌતમે વળી પાછો પ્રશ્ન કર્યો— (भंते !) હે ભદન્ત ! (कम्हा णं) કયા કારણથી (केवली) કેવલી ભગવાન્ (समोहणंति) સમુદ્‌ઘાત કરે છે, અર્થાત્— કેવલીઓને સમુદ્‌ઘાત કયા પ્રયોજનને માટે કરવો પડે છે? ઉત્તર—(गोयमा !) હે ગૌતમ ! (केवलीणं चत्तारि कम्मंसा अपलिक्खीणा भवंति) કેવળીઓનાં ચાર

अपलिक्खीणा भवंति, तंजहा-(१) वेयणिज्जं (२) आउयं ३ णामं गोत्तं सव्वबहुए से वेयणिज्जे कम्मे भवइ, सव्वत्थोवे से आउए कम्मे भवइ। विसमं समं करेइ बंधणेहिं ठिईहि य, विसमसमकरणयाए बंधणेहिं ठिईहि य। एवं खलु केवली समोहणंति, एवं खलु केवली समुग्घायं गच्छंति ॥ सू० ८० ॥

---

कर्माणि 'अपलिक्खीणा' अपरिक्षीणाः=अवशिष्टा 'भवंति' भवन्ति=सन्ति, 'तं जहा' तद्यथा-'वेयणिज्जं' वेदनीयम्, 'आउयं' आयुः, 'णामं' नाम, 'गोत्तं' गोत्रम्, 'सव्वबहुए से वेयणिज्जे कम्मे भवइ' सर्वबहुलं तद् वेदनीयं कर्म भवति, 'सव्वत्थोवे से आउए कम्मे भवइ' सर्वस्तोकं तद् आयुः कर्म भवति, 'विसमं समं करेइ बंधणेहिं ठिईहि य' विषमं समं करोति बन्धनैः-प्रदेशबन्धानुभागबन्धावाश्रित्येति भावः, स्थितिभिश्च=स्थितिबन्धविशेषैश्च, 'विसमसमकरणयाए बंधणेहिं ठिईहि य एवं खलु केवली समोहणंति' अत्रैव पदयोजना-एवं खलु विषमसमकरणाय=विषमकर्मणां समीकरणार्थं बन्धनैः स्थितिभिश्च केवलिनः 'समोहणंति' समुद्घ्नन्ति-समुद्घातं कुर्वन्ति 'एवं खलु केवली समुग्घायं गच्छंति' एवं खलु केवलिनः समुद्घातं गच्छन्ति ॥ सू. ८० ॥

---

है, (तं जहा) वे ये है-(वेयणिज्ज आउयं णाम गोत्तं) वेदनीय, आयु, नाम और गोत्र। (सव्वबहुए से वेयणिज्जे कम्मे भवइ) केवली में सबसे अधिक स्थितिवाला उस समय वेदनीय कर्म रहता है। (सव्वत्थोवे से आउए कम्मे भवइ) तथा सबसे स्तोक आयुकर्म रहता है। (विसम सम करेइ बंधणेहिं ठिईहि य विसमसमकरणयाए बंधणेहिं ठिईहि य) इस विषमता को सम करने के लिये अर्थात् आयुकर्म की स्थिति के समान वेदनीयादिक कर्मों की स्थिति करने के लिये केवली भगवान् समुद्घात करते हैं। अन्य

---

કર્મ બાકી રહે છે, (तं जहा) તે આ છે. (वेयणिज्जं आउयं णामं गोत्तं) વેદનીય, આયુ, નામ અને ગોત્ર. (सव्वबहुए से वेयणिज्जे कम्मे भवइ) કેવળીમાં સર્વથી વધારે સ્થિતિવાળાં તે સમય વેદનીય કર્મ રહે છે. (सव्वत्थोवे से आउए कम्मे भवइ) તથા સર્વથી સ્તોક આયુકર્મ રહે છે. (विसमं समं करेइ बंधणेहिं ठिईहि य, विसमसमकरणयाए बंधणेहिं ठिईहि य) આ વિષમતાને સમ કરવા માટે અર્થાત આયુકર્મની સ્થિતિ બરાબર વેદનીય

**मूलम्—सव्वे वि णं भंते ! केवली समुग्घायं गच्छंति ? णो इणट्ठे समट्ठे ।**

**अकित्ताणं समुग्घायं, अणंता केवली जिणा ।**
**जरामरणविप्पमुक्का, सिद्धिं वरगइं गया ॥ सू० ८१ ॥**

टीका—गौतमः पृच्छति–'सव्वे वि णं' इत्यादि । 'सव्वे वि णं भंते !' सर्वेऽपि खलु भदन्त !=हे भदन्त ! सर्वेऽपि खलु 'केवली' केवलिनः 'समुग्घायं' समुद्घातं 'गच्छंति' गच्छन्ति किम् ? भगवानाह 'णो इणट्ठे समट्ठे' नाऽयमर्थः समर्थः ।

"अकित्ता णं समुग्घायं, अणंता केवली जिणा ।
जरामरणविप्पमुक्का, सिद्धिं वरगइं गया ॥ १ ॥"

---

कर्मों का स्थितिबंध, अनुभागबंध एवं प्रदेशबंध, समुद्धात करने से आयुकर्म के स्थितिबंध, अनुभागबंध एवं प्रदेशबंध के बराबर हो जाते है। (**एवं खलु केवली समोहणंति, एवं खलु केवली समुग्घायं गच्छंति**) इस प्रकार केवलियो के समुद्धात करने का यह प्रयोजन है। इस प्रकार वे केवली समुद्धात करते है ॥ सू. ८० ॥

'**सव्वे वि णं भंते !** इत्यादि ।

प्रश्न-(**भंते !**) हे भदन्त ! क्या (**सव्वे वि णं केवली**) समस्त केवली भगवान् (**समुग्घायं गच्छंति**) समुद्धात करते है। (**णो इणट्ठे समट्ठे**) हे गौतम ! यह अर्थ समर्थित नहीं है, अर्थात्–समस्त केवली भगवान् समुद्धात करे ऐसा कोई नियम

---

આદિક કર્મોની સ્થિતિ કરવા માટે કેવલી ભગવાન સમુદ્‌ઘાત કરે છે. બીજાં કર્મોનાં સ્થિતિબંધ, અનુભાગબંધ તેમજ પ્રદેશબંધ, સમુદ્‌ઘાત કરવાથી આયુ-કર્મના સ્થિતિબંધ, અનુભાગબંધ તેમજ પ્રદેશબંધના બરાબર થઈ જાય છે. (एवं खलु केवली समोहणंति एवं खलु केवली समुग्घायं गच्छंति) આ પ્રકારે કેવલીઓને સમુદ્‌ઘાત કરવાનું આ પ્રયોજન છે. આ પ્રકારે તે કેવલી સમુ-દ્‌ઘાત કરે છે. (સૂ. ૮૦)

'सव्वे वि णं भते ! केवली' ઈત્યાદિ.

પ્રશ્ન—(भंते !) હે ભદન્ત ! શું (सव्वेवि णं केवली) વધા કેવલી ભગવાન્ (समुग्घायं गच्छंति) સમુદ્‌ઘાત કરે છે? (णो इणट्ठे समट्ठे) હે ગૌતમ ! આ અર્થ સમર્થિત નથી, અર્થાત્ સમસ્ત કેવલી ભગવાન સમુદ્‌ઘાત

मूलम्—कइसमए णं भंते! आउज्जीकरणे पण्णत्ते? गोयमा! असंखेज्जसमइए अंतोमुहुत्तिए पण्णत्ते ॥ सू० ८२॥

अकृत्वा खलु समुद्घातम्, अनन्ताः केवलिनो जिनाः। जरामरणविप्रमुक्ताः, सिद्धिं वरगतिं गताः ॥ १ ॥ अयभावः—षण्मासायुषि अवशिष्टे सति येषां केवलं ज्ञानमुत्पन्नं ते नियमतः समुद्घातं कुर्वन्ति, अन्ये तु समुद्घातं कुर्वन्ति न वा कुर्वन्तीति ॥ सू० ८१ ॥

टीका—गौतमः पृच्छति—'कइसमए णं' इत्यादि। 'कइसमए णं भंते!' कतिसमयं खलु भदन्त! 'आउज्जीकरणे पण्णत्ते' आवर्जीकरणं प्रज्ञप्तम्। आवर्ज्यतेऽभिमुखीक्रियते मोक्षोऽनेनेति—आवर्जस्तस्य करणविवक्षायां च्विप्रत्ययः। केवलिसमुद्घातात् पूर्वं क्रिय-

---

नहीं है। क्यों कि (समुग्घायं अकित्ता) समुद्घात को नहीं भी करके (अणंता केवली) अनंत केवली (जिणा) जिन (जरामरणविप्पमुक्का) जन्म, जरा एवं मरण से रहित होकर (वरगइं) सिद्धिस्वरूप सर्वोत्कृष्ट गति को प्राप्त हुए है। भावार्थ—जिनकी आयु ६ मास की बाकी बची है और अब उन्हे केवलज्ञान प्राप्त हुआ है तो ऐसी स्थिति में वे नियम से केवलिसमुद्घात करते है। बाकी के लिये ऐसा कोई नियम नहीं है कि समुद्घात करे हीं। ॥ सू. ८१ ॥

'कइसमए णं भंते!' इत्यादि।

प्रश्न—(भंते!) हे भदंत! (कइसमए णं आउज्जीकरणे पण्णत्ते) मोक्षप्राप्ति का आवर्जीकरण कितने समय का होता है? उत्तर—(असंखेज्जसमए अंतोमुहुत्तिए पण्णत्ते) असंख्यात समय का अंतर्मुहूर्त कहा है। जिसके द्वारा जीव मोक्ष के

---

કરે એવો કોઈ નિયમ નથી; કેમકે (समुग्घायं अकित्ता) સમુદ્ઘાત ન પણ કરીને (अणंता केवली) અનંત કેવલી (जिणा) જિન (जरामरणविप्पमुक्का) જન્મ, જરા તેમજ મરણથી રહિત થઈને (वरगइं) સિદ્ધિસ્વરૂપ સર્વોત્કૃષ્ટ ગતિને પ્રાપ્ત થયા છે. ભાવાર્થ—જેમની આયુ છ માસ બાકી રહે છે અને હવે તેમને કેવળજ્ઞાન પ્રાપ્ત થયું છે, તો એવી સ્થિતિમાં તેઓ નિયમથી કેવલિસમુદ્ઘાત કરે છે. બાકીને માટે એવો કોઈ નિયમ નથી કે સમુદ્ઘાત કરે જ. (सू. ८१)

'कइसमए णं भंते!' ઈત્યાદિ.

પ્રશ્ન—(भंते!) હે ભદન્ત! (कइसमए णं आउज्जीकरणे पण्णत्ते) મોક્ષપ્રાપ્તિનું આવર્જીકરણ કેટલા સમયમાં થાય છે. ઉત્તર—(असंखेज्जसमए अंतोमुहुत्तिए पण्णत्ते) અસંખ્યાત સમયનું અંતર્મુહૂર્ત કહેલું છે. જેના દ્વારા

मूलम्—केवलिसमुग्घाए णं भंते! कइसमइए पण्णत्ते? गोयमा! अट्ठसमइए पण्णत्ते; तं जहा—पढमे समए दंडं करेइ,

माणं यत् मोक्षं प्रत्यात्मनोऽभिमुखीकरणं तत्, तच्च उदयावलिकायां कर्मपुद्गलप्रक्षेपव्यापाररूप उदीरणाविशेषः। केवलिसमुद्घातं कुर्वन् केवली प्रथममेवाऽऽवर्जीकरणं करोति। भगवानाह—'गोयमा!' हे गौतम! 'असंखेज्जसमइए अंतोमुहुत्तिए पण्णत्ते' असंख्येयसमयिकम् आन्तर्मौहूर्तिकं प्रज्ञप्तम् ॥ सू० ८२ ॥

टीका—गौतमः पृच्छति—'केवलिसमुग्घाए णं' इत्यादि। 'केवलिसमुग्घाए णं भंते!' केवलिसमुद्घातः खलु भदन्त!—हे भदन्त! केवलिसमुद्घातः 'कइसमइए पण्णत्ते' कतिसमयिकः प्रज्ञप्तः?, भगवानाह—'गोयमा' हे गौतम! 'अट्ठसमइए पण्णत्ते' अष्टसमयिकः प्रज्ञप्तः। अन्तर्मुहूर्तभाविपरमपदे केवलिनि यः समुद्घातो भवति स केवलिसमुद्घातः, स चाष्टसु समयेषु भवतीत्यर्थः। तदेवाह—'तंजहा' तद्यथा 'पढमे समए

अभिमुख किया जाता है उसका नाम आवर्जीकरण है। यह केवलिसमुद्घात के पहिले होता है। उदयावलिका में कर्मपुद्गल का प्रक्षेप करने—रूप व्यापार का यह नामान्तर है॥ सू. ८२ ॥

'केवलिसमुग्घाए णं भंते!' इत्यादि।

प्रश्न—(भंते!) हे भगवन्! (केवलिसमुग्घाए णं कइसमइए पण्णत्ते) केवलिसमुद्घात कितना समय का कहा गया है? उत्तर—(गोयमा) हे गौतम! (अट्ठसमइए पण्णत्ते) इसका काल ८ समय का कहा गया है। अन्तर्मुहूर्त में परमपद का लाभ जिनको होने वाला है ऐसे केवलियों द्वारा जो समुद्घात किया जाता है उसका नाम केवलिसमुद्घात है। इसका काल ८ समय का है। (तंजहा) वह समुद्घात इस प्रकार से होता है—(पढमे समए दंडं करेइ) प्रथम समय में केवली के

જીવ મોક્ષની સામે કરવામાં આવે છે તેનું નામ આવર્જીકરણ છે. તે કેવલિસમુદ્ઘાતની પહેલાં થાય છે. ઉદયાવલિકામાં કર્મપુદ્ગલોને પ્રક્ષેપ કરવા રૂપ વ્યાપારનું આ નામાંતર છે. (સૂ. ૮૨)

"केवलिसमुग्घाए णं भंते!" ઇત્યાદિ.

प्रश्न—(भंते!) હે ભગવાન્! (केवलिसमुग्घाए णं कइसमइए पण्णत्ते) કેવલિસમુદ્ઘાતના કેટલા સમય કહેલા છે? ઉત્તર—(गोयमा!) હે ગૌતમ! (अट्ठसमइए पण्णत्ते) તેનો કાળ ૮ સમયનો કહેલો છે. અંતર્મુહૂર્તમાં પરમપદનો લાભ જેમને થવાનો હોય છે એવા કેવળીઓ દ્વારા જે સમુદ્ઘાત કરવામાં આવે છે તેનું નામ કેવલિસમુદ્ઘાત છે. તેનો કાલ ૮ સમયનો છે. (तंजहा)

बिईए समए कवाडं करेइ, तइए समए मंथं करेइ, चउत्थे

दंडं करेइ' प्रथमे समये दण्डं करोति=प्रथमे समये ऊर्ध्वाधोलोकान्तं यावत्प्रसारितैरात्मप्रदेशैर्दण्डाकारतां कुरुते। 'बिईए समए कवाडं करेइ' द्वितीये समये कपाटं करोति= द्वितीये समये पूर्वपश्चिमयोर्दिशोर्विस्तृतैरात्मप्रदेशैरेव कपाटाकारतां कुरुते। 'तइए समए मंथं करेइ' तृतीये समये मन्थानं करोति=तृतीये समये दक्षिणोत्तरयोर्दिशोरप्यात्मप्रदेशैः कपाटाकारविस्तृतैर्मन्थानाकारता कुरुते। 'चउत्थे समए लोयं पूरेइ' चतुर्थे समये लोकं पूरयति=चतुर्थे समये तदन्तरालपूरणेन सर्वलोकस्य पूरणं कुरुते। एव समुद्घातं कुर्वन् केवली चतुर्भिः समयैर्विश्वव्यापी भवति।

एवं केवली स्वात्मप्रदेशानां विस्तारणेन कर्मलेशान् समीकृत्य विपरीतक्रमेण समु-

आत्मप्रदेश दण्डाकार होते है, अर्थात् प्रथम समय मे उर्ध्वलोक एवं अधोलोक के अन्त तक प्रसारित होकर आत्मप्रदेश दंडाकारता को धारण करते है। ( बिईए समए कवाडं करेइ ) द्वितीय समय में वे ही आत्मप्रदेश पूर्व और पश्चिम दिशा में विस्तृत होकर कपाटाकारता को धारण करते है। ( तइए समए मंथं करेइ ) तृतीय समय में दक्षिण और उत्तरदिशा में विस्तृत होकर मन्थान के आकार हो जाते है। ( चउत्थे समए लोयं करेइ ) चतुर्थ समय में इनके अन्तराल की पूर्ति करते हुए वे समस्त लोक को पूरण कर देते हैं, अर्थात् समस्त लोक में फैल जाते है। इसका नाम लोकपूरणसमुद्घात है। इस प्रकार आत्मप्रदेशों को फैलाने–रूप समुद्घात करते हुए वे केवली ४ चार समयों में विश्वव्यापी बन जाते है, पश्चात् प्रसारित उन आत्मप्रदेशों को सकुचित करते है। इस क्रिया में भी उन्हे

તે સમુદ્ઘાત આ પ્રકારે થાય છે, ( पढमे समए दडं करेइ ) પ્રથમ સમયમાં કેવળીના આત્મપ્રદેશ દંડાકાર હોય છે, અર્થાત્ પ્રથમ સમયમા ઉર્ધ્વલોક તેમજ અધોલોકના અંત સુધી ફેલાઇ જઇને આત્મપ્રદેશ દંડાકારતાને ધારણ કરે છે. ( बिईए समए कवाडं करेइ ) બીજા સમયમાં તે જ આત્મપ્રદેશ પૂર્વ અને પશ્ચિમ દિશામાં વિસ્તાર પામીને કપાટના આકારને ધારણ કરે છે. ( तइए समए मंथं करेइ ) ત્રીજા સમયમાં દક્ષિણ તથા ઉત્તર દિશામાં વિસ્તાર પામીને મન્થાનનો આકાર ધારણ કરે છે. ( चउत्थे समए लोयं पूरेइ ) ચોથા સમયમાં તેના અંતરાલની પૂર્તિ કરતાં કરતાં તે સમસ્ત લોકને પૂરણ કરી દીએ છે, અર્થાત્ સમસ્ત લોકમાં ફેલાઈ જાય છે. આનું નામ લોકપૂરણ-સમુદ્ઘાત છે. આ પ્રકારે આત્મપ્રદેશોના ફેલાવા રૂપ સમુદ્ઘાત કરતાં કરતાં તે કેવલી ૪ સમયોમાં વિશ્વવ્યાપી બની જાય છે, પછી પ્રસારેલા તે આત્મપ્રદેશોને સંકુચિત કરે છે. આ ક્રિયામાં પણ તેને ૪ સમય લાગે છે. માટે તે

**समए लोयं पूरेइ, पंचमे समए लोयं पडिसाहरइ, छट्ठे समए मंथं पडिसाहरइ, सत्तमे समए कवाडं पडिसाहरइ, अट्ठमे समए दंडं पडिसाहरइ, पच्छा सरीरत्थे भवइ ॥ सू० ८३ ॥**

**मूलम्--से णं भंते! तहा समुग्घायं गए किं मणजोगं**

---

द्घातेन प्रसारितान् आत्मप्रदेशान् संहरति, तदाह-'पंचमे समये' इत्यादि। '**पंचमे समए लोयं पडिसाहरइ**' पञ्चमे समये लोकं प्रतिसंहरति=चतुर्भिः समयैर्जगत्पूरणं कृत्वा पञ्चमे समये आत्मप्रदेशान् अन्तरालावस्थितान् उपसंहरति। '**छट्ठे समए मंथं पडिसाहरइ**' षष्ठे समये मन्थानं प्रतिसहरति। '**सत्तमे समए कवाडं पडिसाहरइ**' सप्तमे समये कपाटं प्रतिसंहरति। '**अट्ठमे समए दंडं पडिसाहरइ**' अष्टमे समये दण्डं प्रतिसहरति। '**तओ पच्छा सरीरत्थे भवइ**' ततः पश्चात् शरीरस्थो भवति ॥ सू. ८३ ॥

**टीका--'से णं भंते!'** इत्यादि। '**से णं भंते!**' अथ खलु भदन्त! '**तहा**

---

४ चार समय लगते है। सो ये सर्वप्रथम (**पंचमे समए लोयं पडिसाहरइ**) पंचम समय में अन्तराल में स्थित उन आत्मप्रदेशों को उपसहृत करते है। (**छट्ठे समए मंथं पडिसाहरइ**) छठे समय में मंथाकाररूप से स्थित उन आत्मप्रदेशों को सकोचते हैं। (**सत्तमे समए कवाडं पडिसाहरइ**) ७ वें समय में कपाटाकारता को और (**अट्ठमे समए दंडं पडिसाहरइ**) आठवें समय में दंडाकारता को सकुचित करते है। (**तओ पच्छा सरीरत्थे भवइ**) उसके वाद आत्मस्थ हो जाते है ॥ सू० ८३ ॥

'**से णं भंते!**' इत्यादि।-

(**से णं भंते! तहा समुग्घायं गए किं मणजोगं जुंजइ**) हे भदंत! इस

---

सहुथी पहेलां (पंचमे समए लोयं पडिसाहरइ) पांचम समयमां, अंतरालमां रहेला ते आत्मप्रदेशोनो उपसंहार करे छे. (छट्ठे समए मंथं पडिसाहरइ) छठ्ठा समयमां मंथाकाररूपथी स्थित (रहेला) ते आत्मप्रदेशोने संकोचे छे. (सत्तमे समए कवाडं पडिसाहरइ) सातमा समयमां कपाटाकारताने, अने (अट्ठमे समए दंडं पडिसाहरइ) आठमा समयमां दंडाकारताने संकुचित करे छे. (तओ पच्छा सरीरत्थे भवइ) त्यारपछी आत्मस्थ थई जाय छे. (सू. ८३)

'से णं भंते!' इत्यादि.

(से णं भंते! तहा समुग्घायं गए किं मणजोगं जुंजइ?) हे भदन्त!

**जुंजइ ?, वयजोगं जुंजइ ?, कायजोगं जुंजइ ?। गोयमा ! णो मणजोगं जुंजइ, णो वयजोगं जुंजइ, कायजोगं जुंजइ ॥ सू० ८४॥**

**मूलम्—कायजोगं जुंजमाणे किं ओरालियसरीर-**

समुग्घायं गए' तथा समुद्घातं गतः केवली '**किं मणजोगं जुंजइ?**' किं मनोयोगं युनक्ति ? '**वयजोगं जुंजइ ?**' वाग्योगं युनक्ति किम् ? '**कायजोगं जुंजइ**' काययोगं युनक्ति किम् ?, भगवानाह–'**गोयमा !**' हे गौतम ! '**णो मणजोगं जुंजइ**' नो मनोयोगं युनक्ति, '**णो वयजोगं जुंजइ**' नो वाग्योगं युनक्ति, '**कायजोगं जुंजइ**' काययोगं युनक्ति ॥ सू. ८४ ॥

**टीका**—गौतम पृच्छति–'**कायजोगं**' इत्यादि। '**कायजोगं जुंजमाणे किं ओरालियसरीरकायजोगं जुंजइ ?**' काययोगं युञ्जानः किमौदारिकशरीरकाययोगं युङ्क्ते ?

प्रकार समुद्घात अवस्था में रहनेवाला वह आत्मा कितने योगों को प्रयुक्त करता है ?, क्या मनोयोग को प्रयुक्त करता है ? (**वयजोगं जुंजइ**) क्या वचनयोग को प्रयुक्त करता है ? (**कायजोगं जुंजइ**) क्या काययोग को प्रयुक्त करता है ? भगवान् ने कहा (**गोयमा !**) हे गौतम ! (**णो मणजोगं जुंजइ, णो वयजोगं जुंजइ, कायजोगं जुंजइ**) वह न मनोयोग को प्रयुक्त करता है और न वचनयोग को प्रयुक्त करता है, किन्तु एक कायजोग को ही प्रयुक्त करता है ॥ सू० ८४ ॥

'**कायजोगं जुंजमाणे**' इत्यादि।

गौतम ने पुनः प्रभु से पूछा कि हे प्रभु ! (**कायजोगं जुंजमाणे**) केवली काययोग को योजित करते हुए (**किं ओरालियसरीरकायजोगं जुंजइ ?**) क्या औदा-

આ પ્રકારે સમુદ્ઘાત અવસ્થામાં રહેવાવાળા તે આત્મા કેટલા યોગોને પ્રયુક્ત કરે છે? શું મનોયોગને પ્રયુકત કરે છે? (वयजोगं जुंजइ) શું વચન-યોગને પ્રયુકત કરે છે? (कायजोगं जुंजइ) શું કાયયોગને પ્રયુકત કરે છે? ભગવાને કહ્યું-(गोयमा !) હે ગૌતમ! (णो मणजोगं जुंजइ, णो वयजोगं जुंजइ, कायजोगं जुंजइ) તે નથી મનોયોગને પ્રયુકત કરતા, તથા નથી વચન-યોગને પ્રયુકત કરતા, પરંતુ એક કાયયોગને જ પ્રયુકત કરે છે. (સૂ. ૮૪)

'कायजोगं जुंजमाणे' ઇત્યાદિ.

ગૌતમે વળી પાછું પ્રભુને પૂછયુ કે હે પ્રભુ! (कायजोगं जुंजमाणे) કેવલી કાયયોગને યોજિત કરતાં કરતાં (किं ओरालियसरीरकायजोगं जुंजइ ?)

**कायजोगं जुंजइ?, ओरालियमिस्ससरीरकायजोगं जुंजइ?, वेउव्वियसरीरकायजोगं जुंजइ?, वेउव्वियमिस्ससरीरकायजोगं जुंजइ?, आहारगसरीरकायजोगं जुंजइ?, आहारगमिस्ससरीरकायजोगं जुंजइ?, कम्मसरीरकायजोगं जुंजइ?। गोयमा!**

---

'**ओरालियमिस्ससरीरकायजोगं जुंजइ?**' औदारिकमिश्रशरीरकाययोगं युङ्क्ते? '**वेउव्वियसरीरकायजोगं जुंजइ**' वैक्रियशरीरकाययोगं युङ्क्ते?, '**वेउव्वियमिस्ससरीरकायजोगं जुंजइ?**' वैक्रियमिश्रशरीरकाययोगं युङ्क्ते? '**आहारगसरीरकायजोगं जुंजइ?**' आहारकशरीरकाययोगं युङ्क्ते? '**आहारगमिस्ससरीरकायजोगं जुंजइ**' आहारकमिश्रशरीरकाययोगं युङ्क्ते? '**कम्मसरीरकायजोगं जुंजइ**' कार्मणशरीरकाययोगं युङ्क्ते?, भगवानाह-'**गोयमा!**' गौतम! '**ओरालियसरीरकायजोगं जुंजइ**' औदारिक-

---

रिकशरीररूपी काययोग को काममें लाते है? अथवा (**ओरालियमिस्ससरीरकायजोगं जुंजइ**) औदारिकमिश्रशरीरकाययोग को काम में लाते हैं? (**वेउव्वियसरीरकायजोगं जुंजइ? वेउव्वियमिस्ससरीरकायजोगं जुंजइ? आहारगसरीरकायजोगं जुंजइ? आहारगमिस्ससरीरकायजोगं जुंजइ? कम्मसरीरकायजोगं जुंजइ?**) या वैक्रियिकशरीरकाययोगरूपी काययोग को काम में लाते है? या वैक्रियिकमिश्रशरीर को काम में लाते हैं? अथवा आहारकशरीररूपी काययोग को काम में लाते है?, या आहारकमिश्रशरीरकाययोग को काम में लाते है?, या कार्मणशरीरकाययोग को काम में लाते है?। भगवान कहते है-(**गोयमा!**) हे गौतम! (**ओरालियसरीरकायजोगं जुंजइ ओरालियमिस्ससरीरकायजोगं जुंजइ**)

---

શું ઔદારિકશરીરરૂપી કાયયોગને કામમાં લીએ છે?, અથવા (ओरालियमिस्ससरीरकायजोगं जुंजइ ?) ઔદારિકમિશ્રશરીરકાયયોગને કામમાં લીએ છે? (वेउव्वियसरीरकायजोगं जुंजइ? वेउव्वियमिस्ससरीरकायजोगं जुंजइ? आहारगसरीरकायजोगं जुंजइ? आहारगमिस्ससरीरकायजोगं जुंजइ? कम्मसरीरकायजोगं जुंजइ?) અથવા વૈક્રિયશરીરરૂપી કાયયોગને કામમાં લાવે છે? અથવા વૈક્રિયમિશ્રશરીરકાયયોગને કામમાં લાવે છે? અથવા આહારકશરીરરૂપી કાયયોગને કામમાં લાવે છે? અથવા આહારકમિશ્રશરીરકાયયોગને કામમાં લાવે છે? અથવા કાર્મણશરીરકાયયોગને કામમાં લાવે છે? ભગવાન કહે છે-(गोयमा!) હે ગૌતમ! (ओरालियसरीरकायजोगं जुंजइ ओरालियमिस्सकायजोगं जुंजइ) કેવલી

ओरालियसरीरकायजोगं जुंजइ, ओरालियमिस्ससरीरकायजोगं पि जुंजइ, णो वेउव्वियसरीरकायजोगं जुंजइ, णो वेउव्वियमिस्ससरीरकायजोगं जुंजइ, णो आहारगमिस्ससरीरकायजोगं जुंजइ, कम्मसरीरकायजोगंपि जुंजइ। पढमट्ठमेसु समएसु

शरीरकाययोग युङ्क्ते, 'ओरालियमिस्ससरीरकायजोगं जुंजइ, औदारिकमिश्रशरीर–काययोगमपि युङ्क्ते, 'णो वेउव्वियसरीरकायजोगं जुंजइ' 'नो वैक्रियशरीरकाययोगं युङ्क्ते, 'णो वेउव्वियमिस्ससरीरकायजोगं जुंजइ' नो वैक्रियमिश्रशरीरकाययोगं युङ्क्ते, 'णो आहारगसरीरकायजोगं जुंजइ' नो आहारकशरीरकाययोगं युङ्क्ते, 'णो आहारगमिस्ससरीरकायजोगं जुंजइ' नो आहारकमिश्रशरीरकाययोगं युङ्क्ते, 'कम्मसरीरकायजोगं जुंजइ' कार्मणशरीरकाययोगमपि युङ्क्ते। 'पढमट्ठमेसु समएसु ओरालियसरीरकायजोगंपि जुंजइ' प्रथमाऽष्टमयोः समययोरौदारिकशरीरकाययोगमपि युङ्क्ते, 'बिइयछट्ठसत्तमेसु

केवली भगवान् औदारिकशरीरकाययोग को काम में लाते है, तथा औदारिकमिश्रशरीरकाययोग को भी काम में लाते है। (णो वेउव्वियसरीरकायजोगं जुंजइ, णो वेउव्वियमिस्ससरीरकायजोगं जुंजइ, णो आहारगसरीरकायजोगं जुंजइ, णो आहारगमिस्ससरीरकायजोगं जुंजइ, कम्मसरीरकायजोगंपि जुंजइ) वैक्रियशरीरकाययोग, वैक्रियमिश्रशरीरकाययोग, आहारकशरीरकाययोग, आहारकमिश्रशरीरकाययोग इनको काम में नहीं लाते। परन्तु कार्मणशरीरकाययोग को वे काम में लाते है। (पढमट्ठमेसु समएसु ओरालियसरीरकायजोगं जुंजइ बिइयछट्ठसत्तमेसु समएसु ओरालियमिस्सासरीरकायजोगं जुंजइ, तइयचउत्थपंचमेहिं कम्मसरीरकायजोगं जुंजइ) प्रथम और आठवें समय में तो

ભગવાન ઔદારિકશરીરકાયયોગને કામમા લાવે છે તથા ઔદારિકમિશ્રશરીરકાયયોગને પણ કામમાં લાવે છે. (णो वेउव्वियसरीरकायजोगं जुंजइ, णो वेउव्वियमिस्ससरीरकायजोगं जुंजइ, णो आहारगसरीरकायजोगं जुंजइ, णो आहारगमिस्ससरीरकायजोगं जुंजइ, कम्मसरीरकायजोगंपि जुंजइ) વૈક્રિયશરીરકાયયોગને, વૈક્રિયમિશ્રશરીરકાયયોગને, આહારકશરીરકાયયોગને, આહારકમિશ્રશરીરકાયયોગને કામમાં લાવતા નથી, પરંતુ કાર્મણશરીરકાયયોગને તેઓ કામમાં લાવે છે. (पढमट्ठमेसु समएसु ओरालियसरीरकायजोगं जुंजइ, बिइयछट्ठसत्तमेसु समएसु ओरालियमिस्ससरीरकायजोगं जुंजइ, तइयचउत्थपंचमेहिं कम्मसरीरकायजोगं जुंजइ)

**ओरालियसरीरकायजोगं जुंजइ, बिइयछट्ठसत्तमेसु समएसु ओरालियमिस्ससरीरकायजोगं जुंजइ, तइयचउत्थपंचमेहिं कम्मसरीरकायजोगं जुंजइ ॥ सू० ८५ ॥**

**मूलम्—से णं भंते! तहा समुग्घायगए सिज्झइ**

---

ओरालियमिस्ससरीरकायजोगं जुंजइ' द्वितीयषष्ठसप्तमेषु समयेषु औदारिकमिश्रशरीर-काययोगं युङ्क्ते, मिश्रत्वं चात्र कार्मणेनैव सहौदारिकस्यावस्थानात्। 'तइयचउत्थपंचमेहिं कम्मसरीरकायजोगं जुंजइ' तृतीयचतुर्थपञ्चमेषु समयेषु कार्मणशरीरकाययोगं युङ्क्ते ॥ सू. ८५ ॥

टीका—'से णं भंते' इत्यादि। 'से णं भंते! तहा समुग्घायगए' स खलु भदन्त!

---

औदारिकशरीररूपी काययोग को वे काम में लाते है, दूसरे, छठे एवं सातवें समय में औदारिकमिश्रशरीरकाययोग को काम में लाते है, एवं तीसरे, चौथे एवं पंचम समय में कार्मणशरीररूपी काययोग को काम में लाते है ॥

भावार्थ—काययोग ७ प्रकार का है। उनमें औदारिकशरीरकाययोग, औदारिकमिश्रशरीर-काययोग एवं कार्मणशरीरकाययोग ये ३ तीन योग केवली के होते हैं। बाकी के ४ काययोग केवली के नहीं होते है। प्रथम और आठवें समय में औदारिकशरीरकाययोग होता है, द्वितीय, छठवें और सातवे समय में औदारिकमिश्रशरीरकाययोग होता है और तीसरे, चौथे एवं पांचवे समय में उनके समुद्घात अवस्था में कार्मणशरीररूपी काययोग होता है ॥ सू० ८५ ॥

---

પ્રથમ તથા આઠમા સમયમાં તો ઔદારિકશરીરરૂપી કાયયોગને તેઓ કામમાં લાવે છે. બીજા, છઠ્ઠા તેમજ સાતમા સમયમાં ઔદારિકમિશ્રશરીરકાયયોગને કામમાં લાવે છે, તેમજ ત્રીજા, ચોથા અને પાંચમા સમયમાં કાર્મણશરીરરૂપી કાયયોગને કામમાં લાવે છે.

ભાવાર્થ—કાયયોગ ૭ પ્રકારના છે, તેમાં ઔદારિકશરીરકાયયોગ, ઔદારિક-મિશ્રશરીરકાયયોગ, તેમજ કાર્મણશરીરકાયયોગ, આ ત્રણ યોગ કેવલીના હોય છે. બાકીના ૪ કાયયોગ કેવલીના હોતા નથી. પ્રથમ અને આઠમા સમયમાં ઔદારિકકાયયોગ હોય છે. બીજા, છઠ્ઠા અને સાતમા સમયમાં ઔદારિક-મિશ્રશરીરકાયયોગ હોય છે, અને ત્રીજા, ચોથા તેમજ પાંચમા સમયમાં તેમની સમુદ્ઘાત-અવસ્થામાં કાર્મણશરીરરૂપી કાયયોગ હોય છે. ( સૂ. ૮૫ )

**बुज्झइ मुच्चइ परिणिव्वाइ सव्वदुक्खाणं अंतं करेइ ? णो इणट्ठे समट्ठे ! से णं तओ पडिणियत्तइ, पडिणियत्तित्ता इहमागच्छइ, तओ पच्छा मणजोगंपि जुंजइ, वयजोगंपि जुंजइ, कायजोगंपि जुंजइ ॥ सू० ८६ ॥**

---

तथा समुद्घातगतः—हे भदन्त ! स खलु तथा समुद्घातगतः=कृतसमुद्घातः केवली **'सिज्झइ बुज्झइ मुच्चइ परिणिव्वाइ सव्वदुक्खाणमंतं करेइ ?'** सिध्यति, बुध्यते, मुच्यते, परिनिर्वाति, सर्वदुःखानामन्तं करोति किम् ?, भगवानाह—**'णो इणट्ठे समट्ठे'** नाऽयमर्थः समर्थः । **'से णं'** स खलु **'तओ'** ततः=समुद्घातात् **'पडिणियत्तइ'** प्रतिनिवर्तते, **'पडिणियत्तित्ता'** प्रतिनिवर्त्य **'इहमागच्छइ'** इहाऽऽगच्छति=शरीरस्थो भवति । **'तओ पच्छा'** ततः पश्चात्, **'मणजोगंपि जुंजइ'** मनोयोगमपि युङ्क्ते, **'वयजोगंपि जुंजइ'** वाग्योगमपि युङ्क्ते **'कायजोगं पि जुंजइ'** काययोगमपि युङ्क्ते ॥ सू० ८६ ॥

---

**'से णं भंते !'** इत्यादि ।

(**भंते !**) हे भदंत ! (**से णं तहा समुग्घायगए**) समुद्घात अवस्था में केवली भगवान् (**सिज्झइ बुज्झइ मुच्चइ परिणिव्वाइ**) सिद्ध, बुद्ध, मुक्त एवं परिनिर्वाण हो (**सव्वदुक्खाणं अंतं करेइ**) क्या समस्त दुःखों का अंत करते है ? प्रभु ने उत्तर दिया कि (**गोयमा !**) हे गौतम ! (**णो इणट्ठे समट्ठे**) यह अर्थ समर्थित नहीं है । (**से णं तओ पडिणियत्तइ, पडिणियत्तित्ता इहमागच्छइ, आगच्छित्ता तओ पच्छा मणजोगं पि जुंजइ, वयजोगं पि जुंजइ, कायजोगं पि जुंजइ**) किन्तु जब वे समुद्घात कर चुकते है

---

'से णं भंते !' ઇત્યાદિ.

( भंते ! ) હે ભદંત ! ( से णं समुग्घायगए ) સમુદ્ઘાત અવસ્થામાં કેવલી ભગવાન્ ( सिज्झइ, बुज्झइ, मुच्चइ, परिणिव्वाइ ) સિદ્ધ, બુદ્ધ, મુક્ત તેમજ પરિનિર્વાણ થઈને ( सव्वदुक्खाणं अंतं करेइ ) શું સમસ્ત દુઃખોનો અંત કરે છે ? પ્રભુએ ઉત્તર આપ્યો કે ( गोयमा ! ) હે ગૌતમ ! ( णो इणट्ठे समट्ठे ) આ અર્થ સમર્થિત નથી. ( से णं तओ पडिणियत्तइ, पडिणियत्तित्ता इहमागच्छइ, आगच्छित्ता तओ पच्छा मणजोगं पि जुंजइ, वयजोगंपि जुंजइ, कायजोगं पि जुंजइ ) પરંતુ જ્યારે સમુદ્ઘાત કરી ચુકે છે અર્થાત્ તે ક્રિયાથી નિવૃત્ત થઈ જાય છે અને પૂર્વ પ્રમાણે શરીરમાં સ્થિત થઇ જાય છે ત્યારે

**मूलम्—मणजोगं जुंजमाणे किं सच्चमणजोगं जुंजइ? मोसमणजोगं जुंजइ?, सच्चामोसमणजोगं जुंजइ?, असच्चामो-**

**टीका**—गौतमः पृच्छति-"**मणजोगं**" इत्यादि। '**मणजोगं जुंजमाणे किं सच्चमणजोगं जुंजइ**' मनोयोगं युञ्जानः किं सत्यमनोयोगं युङ्क्ते? '**मोसमणजोगं जुंजइ?**' मृषामनोयोगं युङ्क्ते? '**सच्चामोसमणजोगं जुंजइ**' सत्यमृषामनोयोगं युङ्क्ते किम्?, भगवा-

अर्थात् उस क्रिया से निवृत्त हो चुकते है और पूर्ववत् शरीर में स्थित हो जाते हैं तब मनोयोग को भी प्रयुक्त करते है, वचनयोग को भी प्रयुक्त करते है तथा काययोग को भी प्रयुक्त करते है। समुद्घात-अवस्था में मरण नहीं होता। अतः मुक्ति की प्राप्ति उस समय नहीं होती॥ सू० ८६॥

'**मणजोगं जुंजमाणे**' इत्यादि।

प्रश्न—हे भदंत! आपने जो अभी यह बात कही है कि समुद्घात से निवृत्त होने पर केवली भगवान् मनोयोग को प्रयुक्त करते है सो इस विषय में यह पूछता हूं कि वे भगवान् (**मणजोगं जुंजमाणे**) मनोयोग को प्रयुक्त करते हुए चार मनोयोगो में से कौन से मनोयोग को प्रयुक्त करते है? (**किं सच्चमणजोगं जुंजइ, मोसमणजोगं जुंजइ, सच्चामोसमणजोगं जुंजइ, असच्चामोसमणजोगं जुंजइ?**) सत्यमनोयोग को प्रयुक्त करते है, या असत्यमनोयोग को प्रयुक्त करते है, अथवा मिश्रमनोयोग को प्रयुक्त करते है, असत्यमृषामनोयोग को प्रयुक्त करते हैं? अर्थात् व्यवहारमनोयोग को प्रयुक्त करते है?। (**गोयमा!**) हे गौतम! (**सच्च-**

મનોયોગને પણ પ્રયુક્ત કરે છે, વચનયોગને પણ પ્રયુક્ત કરે છે તથા કાયયોગને પણ પ્રયુક્ત કરે છે. સમુદ્ઘાત અવસ્થામા મરણ થતું નથી. તેથી મુક્તિની પ્રાપ્તિ તે સમયે થતી નથી. (સૂ. ૮૬)

'મણજોગં જુંજમાણે' ઈત્યાદિ.

પ્રશ્ન—હે ભદન્ત! આપે જે હમણાં એ વાત કહી છે, કે સમુદ્ઘાતથી નિવૃત્ત થતાં કેવલી ભગવાન મનોયોગને પ્રયુક્ત કરે છે. માટે એ વિષયમાં એ પૂછું છું કે તે ભગવાન (મણજોગં જુંજમાણે) મનોયોગને પ્રયુક્ત કરતાં ચાર મનોયોગ-માંથી કયા મનોયોગને પ્રયુકત કરે છે? (किं सच्चमणजोगं जुंजइ? मोसमणजोगं जुंजइ? सच्चामोसमणजोगं जुंजइ? असच्चामोसमणजोगं जुंजइ?) શું સત્ય-મનોયોગને પ્રયુકત કરે છે? અથવા અસત્યમનોયોગને પ્રયુકત કરે છે? અથવા મિશ્રમનોયોગને પ્રયુકત કરે છે? કે અસત્યમૃષામનોયોગને પ્રયુકત કરે છે અર્થાત્ વ્યવહારમનોયોગને પ્રયુકત કરે છે? ઉત્તર—(ગોયમા!) હે

सम्मणजोगं जुंजइ? गोयमा! सच्चमणजोगं जुंजइ, णो मोसमण-जोगं जुंजइ, णो सच्चामोसमणजोगं जुंजइ, असच्चामोसमणजोगं पि जुंजइ ॥ सू० ८७ ॥

मूलम्—वयजोगं जुंजमाणे किं सच्चवइजोगं जुंजइ?

---

नाह—'गोयमा! सच्चमणजोगं जुंजइ' गौतम! सत्यमनोयोगं युङ्क्ते, 'णो मोसमणजोगं जुंजइ' नो मृषामनोयोगं युङ्क्ते 'णो सच्चामोसमणजोगं जुंजइ' नो सत्यमृषामनोयोगं युङ्क्ते, 'असच्चामोसमणजोगंपि जुंजइ' असत्याऽमृषामनोयोगमपि युङ्क्ते ॥ सू० ८७ ॥

टीका—गौतमःपृच्छति—'वयजोगं' इत्यादि। 'वयजोगं जुंजमाणे किं सच्च-वइजोगं जुंजइ' वाग्योगं युञ्जानः किं सत्यवाग्योगं युङ्क्ते? 'मोसवइजोगं जुंजइ' मृषावा-

---

मणजोगं जुंजइ) वे केवली सत्यमनोयोग को प्रयुक्त करते है, (णो मोसमणजोगं जुंजइ णो सच्चामोसमणजोगं जुंजइ, असच्चामोसमणजोगं जुंजइ) असत्यमनोयोग एवं मिश्रमनोयोग को प्रयुक्त नहीं करते है, किन्तु असत्यामृषामनोयोग को प्रयुक्त करते है, अर्थात् व्यवहार मनोयोग को प्रयुक्त करते है। सत्यमनोयोग एवं व्यवहारमनोयोग को वे केवली प्रयुक्त करते हैं, अन्य दो को नहीं ॥ सू० ८७ ॥

'वयजोगं जुंजमाणे' इत्यादि।

प्रश्न—हे भगवन्! वे केवली जो (वयजोगं जुंजमाणे किं) वचनयोग को प्रयुक्त करते है सो क्या (सच्चवइजोगं जुंजइ, मोसवइजोगं जुंजइ, सच्चामोसवइजोगं जुंजइ, असच्चामोसवइजोगं जुंजइ) सत्यवचन योग को प्रयुक्त करते हैं, या असत्यवचन-

---

ગૌતમ! (सच्चमणजोगं जुंजइ) તે કેવળી સત્યમનોયોગને પ્રયુક્ત કરે છે. (णो मोसमणजोगं जुंजइ, णो सच्चामोसमणजोगं जुंजइ, असच्चामोसमणजोगं जुंजइ) અસત્યમનોયોગ તેમજ મિશ્રમનોયોગને પ્રયુક્ત કરતા નથી; પરંતુ અસત્યામૃષામનોયોગને પ્રયુક્ત કરે છે અર્થાત્ વ્યવહારમનોયોગને પ્રયુક્ત કરે છે. સત્યમનોયોગ તેમજ વ્યવહારમનોયોગને તે કેવલી પ્રયુક્ત કરે છે. બીજા બેને નહિ. (સૂ. ૮૭)

'वयजोगं जुंजमाणे' ઇત્યાદિ.

પ્રશ્ન—હે ભગવન્! તે કેવલી કે જે (वयजोगं जुंजमाणे) વચનયોગને પ્રયુક્ત કરે છે, તે શું (सच्चवइजोगं जुंजइ, मोसवइजोगं जुंजइ, सच्चामो-

**मोसवइजोगं जुंजइ? सच्चामोसवइजोगं जुंजइ? असच्चामोस-वइजोगं जुंजइ? सच्चवइजोगं जुंजइ, णो मोसवइजोगं जुंजइ, णो सच्चामोसवइजोगं जुंजइ, असच्चामोसवइजोगं पि जुंजइ ॥सू० ८८॥**

**मूलम्—कायजोगं जुंजमाणे आगच्छेज्ज वा चिट्ठेज्ज**

ग्योग युङ्क्ते? **'सच्चामोसवइजोगं जुंजइ'** सत्यमृषावाग्योगं युङ्क्ते? **'असच्चामोसवइजोगं जुंजइ'** असत्याऽमृषावाग्योगं युङ्क्ते किम्? भगवानाह—**'गोयमा! सच्चवइजोगं जुंजइ?'** गौतम! सत्यवाग्योगं युङ्क्ते, **'णो मोसवइजोगं जुंजइ'** नो मृषावाग्योगं युङ्क्ते, **णो सच्चामोसवइ-जोगं जुंजइ'**नो सत्यमृषावाग्योगं युङ्क्ते, **'असच्चामोसवइजोगं पि जुंजइ'** असत्याऽमृषा-वाग्योगमपि युङ्क्ते ॥ सू० ८८ ॥

**टीका—'कायजोगं'** इत्यादि। **'कायजोगं जुंजमाणे आगच्छेज्ज वा चिट्ठेज्ज वा'** काययोगं युञ्जान आगच्छति वा तिष्ठति वा, **'णिसीएज्ज वा'** निषीदति=उपविशति वा,

योग को प्रयुक्त करते है, अथवा मिश्रवचनयोग को प्रयुक्त करते है, या असत्यामृषावचनयोग को प्रयुक्त करते है? उत्तर-(**गोयमा!**) हे गौतम! (**सच्चवइजोगं जुंजइ**) वे केवली सत्यवचनयोग को प्रयुक्त करते हैं, (**णो मोसवइजोग जुंजइ णो सच्चामोसवइजोगं जुंजइ**) असत्यवचनयोग को एवं मिश्रवचनयोग को प्रयुक्त नहीं करते है। (**असच्चामोस-वइजोगंपि जुंजइ**) परन्तु असत्यामृषावचनयोग को प्रयुक्त करते है। चार वचनयोगों में से केवली के सत्यवचनयोग एवं असत्यामृषावचनयोग दो ही वचनयोग होते है, बांकी के दो नहीं ॥ सू० ८८ ॥

सवइजोगं जुंजइ, असच्चामोसवइजोगं जुंजइ) सत्यवचनयोगने प्रयुक्त करे छे, अथवा असत्यवचनयोगने प्रयुक्त करे छे, अथवा मिश्रवचनयोगने प्रयुक्त करे छे, अथवा असत्यामृषावचनयोगने प्रयुक्त करे छे? उत्तर—(गोयमा!) हे गौतम! (सच्चवइजोगं जुंजइ) ते केवली सत्यवचनयोगने प्रयुक्त करे छे. (णो मोसवइजोगं जुंजइ णो सच्चामोसवइजोगं जुंजइ) असत्यवचनयोगने तेमज मिश्रवचनयोगने प्रयुक्त करता नथी, (असच्चामोसवइजोगंपि जुंजइ) परन्तु असत्यामृषावचनयोगने प्रयुक्त करे छे. चार वचनयोगोमांथी केवलीना सत्य-वचनयोग तेमज असत्यामृषावचनयोग बे ज मात्र वचनयोग होय छे. बाकीना बे नहि. (सू. ८८)

**वा णिसीएज्ज वा तुयट्टेज्ज वा उल्लंघेज्ज वा पल्लंघेज्ज वा उक्खेवणं वा पक्खेवणं वा तिरियक्खेवणं वा करेज्जा, पाडिहारियं वा, पीढफलगसेज्जासंथारगं पच्चप्पिणेज्जा ॥ सू० ८९ ॥**

**'तुयट्टेज्ज वा'** त्वग्वर्तयति=शयनं करोति वा **'उल्लंघेज्ज वा'** उल्लङ्घयति–गर्तादिकं वा, **'पल्लंघेज्ज वा'** प्रोल्लङ्घयति वा, **उक्खेवणं वा'** उत्क्षेपणम्=ऊर्ध्वगमनं वा, **'पक्खेवणं वा'** प्रक्षेपणं=नीचैर्गमनं वा, **'तिरियक्खेवणं वा'** तिर्यक्क्षेपणं=तिर्यग्गमन वा **'करेज्जा'** करोति, **'पाडिहारियं वा पीढ–फलग–सेज्जा–संथारगं पच्चप्पिणेज्जा'** प्रतिहार्यं वा पीठफलकशय्यासस्तारकं प्रत्यर्पयति ॥ सू० ८९ ॥

**'कायजोगं जुंजमाणे'** इत्यादि ।

हे गौतम (**कायजोगं जुंजमाणे आगच्छेज्ज वा चिट्ठेज्ज वा णिसीएज्ज वा तुयट्टेज्ज वा उल्लंघेज्ज वा पल्लंघेज्ज वा**) इस काययोग को प्रयुक्त करते हुए वे आते हैं, जाते है, ठहरते है, उठते है, वैठते है, सोते है, करवट वदलते है, उल्लघन करते है, प्रलघन करते है, (**उक्खेवणं वा पक्खेवणं वा तिरियक्खेवणं वा करेज्जा**) उत्क्षेपण करते हैं. प्रक्षेपण–हाथ-पैर को ऊपर–नीचे करते है, तिरछे गमन करते है, (**पाडिहारियं वा पीढफलगसेज्जा-संथारगं पच्चप्पिणेज्जा**) काम निकल जाने के वाद प्रातिहार्यक पीठ, फलक, शय्या, एवं संथारे को पीछे देते है ॥ सू० ८९ ॥

"कायजोगं जुजमाणे" ઈત્યાદિ.

હે ભદન્ત ! કાયયોગ પ્રયુક્ત કરતા કેવળી ભગવાન્ શું શું કામ કરે છે? હે ગૌતમ ! ( (कायजोगं जुंजमाणे आगच्छेज्ज वा चिट्ठेज्ज वा णिसीएज्ज वा तुयट्टेज्ज वा उल्लंघेज्ज वा पल्लंघेज्ज वा ) એ કાયયોગને પ્રયુક્ત કરતા તેઓ આવે છે, જાય છે, રોકાય છે, ઉઠે છે, બેસે છે, સુવે છે, કરવટ બદલે છે, ઉલ્લંઘન કરે છે, પ્રલંઘન કરે છે. ( उक्खेवणं वा पक्खेवणं वा तिरियक्खेवणं वा करेज्जा ) ઉત્ક્ષેપણુ કરે છે, પ્રક્ષેપણુ–હાથપગ ઉંચા–નીચા કરે છે, તિરછા ( આડું–અવળું ) ગમન કરે છે, ( पाडिहारियं वा पीढ–फलग–सेज्जा–संथारगं पच्चप्पिणेज्जा ) કામ થઈ ગયા પછી પ્રાતિહાર્યક પીઠ, ફલક,શય્યા, તેમજ સંથારાને પાછા મુકી દે છે. ( સૂ. ૮૯ )

**मूलम्—से णं भंते ! तहा सजोगी सिज्झइ जाव अंतं करेइ ? णो इणट्ठे समट्ठे ॥ सू० ९० ॥**

**मूलम्— से णं पुव्वामेव सण्णिस्स पंचिंदियस्स पज्ज-**

टीका—गौतम पृच्छति-**'से णं भंते !'** इत्यादि। **'से णं भंते ! तहा सजोगी'** स खलु भदन्त! तथा सयोगी **'सिज्झइ'** सिध्यति किम् **'जाव'** यावत् **'सव्वदुक्खाणमंतं करेइ'** सर्वदुःखानामन्त करोति किम् ? । भगवानाह-**'णो इणट्ठे समट्ठे'** नाऽयमर्थः समर्थः ॥ सू० ९० ॥

टीका—**'से णं पुव्वामेव'** इत्यादि। **'से णं'** स केवली खलु **'पुव्वामेव'** पूर्वमेव= योगनिरोधावस्थाया आदावेव **'संण्णिस्स पंचिंदियस्स'** संज्ञिनः पञ्चेन्द्रियस्य, अत्र पञ्चेन्द्रियस्येति विशेषणं संज्ञिस्वरूपप्रदर्शनार्थं, पञ्चेन्द्रियस्यैव संज्ञित्वात्; **'पज्जत्तगस्स'** पर्याप्तकस्य= मनःपर्याप्त्या पर्याप्तस्येत्यर्थः, अन्यपर्याप्तस्य मनसोऽभावात्। स च मध्यमादिमनोयोगोऽपि

**'से णं भंते !' इत्यादि।**

(**भंते !**) हे भदंत ! (**से तहा सजोगी**) वे केवली ऐसी सयोगी अवस्था में रहते हुए (**सिज्झइ जाव अंतं करेइ**) सिद्ध, बुद्ध, मुक्त एवं परिनिर्वाण हो समस्त दुःखों का अन्त करते है क्या ? उत्तर-हे गौतम ! (**णो इणट्ठे समट्ठे**) यह अर्थ समर्थित नहीं है। अर्थात् सयोगिकेवली कर्मो का अन्त नहीं करते ! ॥ सू० ९० ॥

**'से णं पुव्वामेव' इत्यादि।**

(**से णं**) ये सयोगी केवली भगवान् (**पुव्वामेव**) पहिले (**सण्णिस्स पंचिंदियस्स पज्जत्तगस्स**) संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तक के (**जहण्णजोगस्स हेट्ठा**) जघन्यमनोयोग से भी नीचे

'से णं भंते !' ઈત્યાદિ.

(भंते !) હે ભદન્ત ! (से तहा सजोगी) તે કેવલી એવી સયોગી-અવસ્થામાં રહેતા (सिज्झइ जाव अंतं करेइ) સિદ્ધ, બુદ્ધ, મુક્ત, તેમજ પરિનિર્વાણ થઈ સમસ્ત દુઃખનો શું અંત કરે છે ? ઉત્તર—હે ગૌતમ ! (णो इणट्ठे समट्ठे) આ અર્થ સમર્થિત નથી, અર્થાત્ સયોગી કેવલી કર્મોનો અંત કરતા નથી. (સૂ. ૯૦)

"से णं पुव्वामेव" ઈત્યાદિ.

(से णं) તે સયોગી કેવલી ભગવાન્ (पुव्वामेव) પહેલાં (सण्णिस्स पंचिंदियस्स पज्जत्तगस्स) સંજ્ઞી પંચેન્દ્રિય પર્યાપ્તકના (जहण्णजोगस्स हेट्ठा)

त्तगस्स जहण्णजोगस्स हेट्ठा असंखेज्जगुणपरिहीणं पढमं मणजोगं निरुंभइ, तयाणंतरं च णं बिंदियस्स पज्जत्तगस्स जहण्णजोगस्स हेट्ठा असंखेज्जगुणपरिहीणं बिइयं वयजोगं निरुंभइ, तयाणंतरं च णं सुहुमस्स पणगजीवस्स अप्पज्जत्तगस्स जहण्णजोगस्स हेट्ठा असंखेज्जगुणपरिहीणं तइयं कायजोगं णिरुंभइ॥ सू० ९१ ॥

स्यादित्यत आह–'जहण्णजोगस्स' इति। 'जहण्णजोगस्स' जघन्ययोगस्य=जघन्यमनोयोगवतः, 'हेट्ठा' अधः, यो मनोयोगो भवतीति गम्यते, जघन्यमनोयोगसमानो यो न भवतीत्यर्थः। योगाश्च-मनोद्रव्याणि तद्व्यापारश्चेति। जघन्यमनोयोगाधोभागवर्तित्वमेव दर्शयन्नाह-'असंखेज्जगुणपरिहीणं' इति। असंख्येयगुणपरिहीनम्–असख्यातगुणेन परिहीनो यः स तथा तम्, असंख्यातभागमात्रया समये समये क्रमेण तं मनोयोगं निरुन्धानः सर्वमनोयोगं निरुणद्धि अनुत्तरेणाचिन्त्येन अकरणवीर्येणेति तदाह–'पढमं' इत्यादि। प्रथमं–शेषवागादियोगापेक्षया प्राथम्येन, 'मणजोगं' मनोयोगं 'निरुंभइ' निरुणद्धि। 'तयाणंतरं च णं' तदनन्तरं च खलु 'बिंदियस्स' द्वीन्द्रियस्य 'पज्जत्तगस्स' पर्याप्तकस्य 'जहण्णजोगस्स' जघन्ययोगस्य 'हेट्ठा' अधः, 'असंखेज्जगुणपरिहीणं' असंख्येयगुणपरिहीणं 'बिइयं' द्वितीयं 'वयजोगं' वाग्योगं 'निरुंभइ' निरुणद्धि। 'तयाणंतरं च णं' तदनन्तरं च खलु 'सुहुमस्स पणगजीवस्स'

के (असंखेज्जगुणपरिहीणं पढमं मणजोगं निरुंभइ) असंख्यात गुणहीन प्रथम मनोयोग का निरोध करते है, (तयाणंतरं च णं बिंदियस्स पज्जत्तगस्स जहण्णजोगस्स हेट्ठा) तदनन्तर पर्याप्त द्वीन्द्रिय के जघन्य वचनयोग के नीचे के (असंखेज्जगुणपरिहीण बिइयं वयजोगं) असंख्यात–गुण–हीन दूसरे वचनयोग का (निरुंभइ) निरोध करते है। (तयाणंतरं च णं सुहुमस्स पणगजीवस्स अप्पज्जत्तगस्स जहण्णजोगस्स हेट्ठा असंखेज्ज-

જઘન્ય મનોયોગથી પણ નીચેના (असंखेज्जगुणपरिहीणं पढमं मणजोगं निरुंभइ) અસંખ્યાતગુણહીન પ્રથમ મનોયોગનો નિરોધ કરે છે. (तयाणंतरं च णं बिंदियस्स पज्जत्तगस्स जहण्णजोगस्स हेट्ठा) ત્યાર પછી પર્યાપ્ત દ્વીન્દ્રિયના જઘન્ય વચનયોગની નીચેના (असंखेज्जगुणपरिहीणं बिइयं वयजोगं) અસંખ્યાત-ગુણહીન બીજા વચનયોગનો (निरुंभइ) નિરોધ કરે છે. (तयाणंतरं च णं सुहुमस्स पणगजीवस्स अप्पज्जत्तगस्स जहण्णजोगस्स हेट्ठा असंखेज्जगुणपरिहीणं

**मूलम्—से णं एएणं उवाएणं पढमं मणजोगं निरुंभइ, निरुंभित्ता वयजोगं निरुंभइ, निरुंभित्ता कायजोगं निरुंभइ, निरुंभित्ता जोगणिरोहं करेइ, करित्ता अजोगत्तं पाउणइ, पाउणित्ता ईसिं-**

---

सूक्ष्मस्य पनकजीवस्य, 'अपज्जत्तगस्स' अपर्याप्तकस्य 'जहण्णजोगस्स हेट्ठा असंखेज्ज-गुणपरिहीणं' जघन्ययोगस्याधोऽसंख्येयगुणपरिहीन 'तइयं' तृतीयं 'कायजोगं' काययोगं 'निरुंभइ' निरुणद्धि ॥ सू. ९१ ॥

टीका—'से णं' इत्यादि । 'से णं' स केवली खलु 'एएणं उवाएणं पढमं मणजोगं निरुंभइ' एतेनोपायेन प्रथमं मनोयोगं निरुणद्धि, 'निरुंभित्ता' मनोयोगं निरुध्य, 'वयजोगं निरुंभइ' वाग्योगं निरुणद्धि, 'निरुंभित्ता' वाग्योगं निरुध्य 'कायजोगं निरुंभइ' काययोग निरुणद्धि, 'निरुंभित्ता' काययोगं निरुध्य, 'जोगणिरोहं करेइ' योगनिरोधं करोति, 'करित्ता' योगनिरोधं कृत्वा 'अयोगत्तं पाउणइ'

---

गुणपरिहीण कायजोगं णिरुंभइ) पश्चात् सूक्ष्म अपर्याप्त पनक (निगोद) जीव के जघन्य से नीचे के असंख्यातगुणहीन तृतीय काययोग का निरोध करते है ॥ सू० ९१ ॥

'से णं एएणं उवाएणं' इत्यादि ।

(एएणं उवाएणं) इस प्रकार के उपाय से (से णं) वह केवली भगवान् (पढमं मणजोगं) प्रथम मनोयोग का (निरुंभइ) निरोध करते हैं, (निरुंभित्ता) उसका निरोध हो चुकने के बाद (वयजोगं निरुंभइ) वचनयोग का निरोध करते है, (निरुंभित्ता) इसके बाद (कायजोगं निरुंभइ) कायजोग का निरोध करते है। इस रीति से (निरुंभित्ता जोगनिरोहं करेइ) समस्त योगों का वे निरोध जब करते है तब (अजोगत्तं पाउ-

---

कायजोगं णिरुंभइ) પછી સૂક્ષ્મ અપર્યાપ્ત પનક (નિગોદ) જીવના જઘન્યથી નીચેના અસંખ્યાત ગુણહીન ત્રીજા કાયયોગનો નિરોધ કરે છે. (સૂ ૯૧)

'से णं एएणं उवाएणं' ઇત્યાદિ.

(एएणं उवाएणं) આ પ્રકારના ઉપાયથી (से णं) તે કેવલી ભગવાન્ (पढमं मणजोगं) પ્રથમ મનોયોગનો (निरुंभइ) નિરોધ કરે છે, (निरुंभित्ता) તે નિરોધ થઈ રહ્યા પછી (वयजोगं निरुंभइ) વચનયોગનો નિરોધ કરે છે. (निरुंभित्ता) ત્યાર પછી (कायजोगं निरुंभइ) કાયજોગનો નિરોધ કરે છે, આ રીતથી (निरुंभित्ता जोगनिरोहं करेइ) સમસ્ત યોગોનો તેઓ નિરોધ જ્યારે કરે છે, ત્યારે (अजोगत्तं पाउणइ) અયોગી-અવસ્થાને પ્રાપ્ત થઈ જાય

**हस्सपंचक्खरुच्चारणद्धाए असंखेज्जसमइयं अंतोमुहुत्तियं सेलेसिं पडिवज्जइ, पुव्वरइयगुणसेढीयं च णं कम्मं तीसे सेलेसिमद्धाए**

अयोगत्वं प्राप्नोति, '**अयोगत्तं पाउणित्ता**' अयोगत्वं प्राप्य, '**ईसिंहस्सपंचक्खरुच्चारणद्धाए**' ईषद्ध्रस्वपञ्चाऽक्षरोच्चारणाऽद्धायाम्-ईषत्=अल्पानि यानि ह्रस्वानि पञ्चाक्षराणि तेषां यदुच्चारणं तस्य याऽद्धा=कालः सा तथा तस्याम्, इदमुच्चारणं न द्रुतं न विलम्बितं किन्तु मध्यममेव गृह्यते, '**असंखेज्जसमइयं**' असंख्येयसमयिकाम्, '**अंतोमुहुत्तियं**' आन्तर्मौहूर्तिकीं '**सेलेसिं**' शैलेशीं-शैलानामीशः शैलेशो मेरुः, तस्येव या स्थिरता=साम्याद्यवस्था सा शैलेशी ताम्, अथवा-शीलेशः=सर्वसंवररूपचारित्रवान्, तस्येयमवस्था योगनिरोधरूपा शैलेशी तां, शैलेश्यवस्थायां केवली वेदनीयादिकर्मचतुष्टयं क्षपयति, तत्प्रकारमाह-'**पुव्वरइय**' इत्यादि। '**पुव्वरइयगुणसेढीयं च णं कम्मं**' पूर्वरचितगुणश्रेणिकं च कर्म, पूर्वं=शैलेश्यवस्थायाः प्राग् रचिता गुणश्रेणी यस्य तत्तथा, का नाम गुणश्रेणी ? उच्यते-

णइ) अयोगि-अवस्था को प्राप्त हो जाते है, (**पाउणित्ता ईसिं-हस्स-पंचक्खरु-च्चारण-द्धाए असंखेज्जसमइयं अंतोमुहुत्तियं**) अयोगी-अवस्था को प्राप्त हो जाने के बाद ह्रस्व पांच अक्षर के उच्चारण काल-प्रमाण समय में, अर्थात् असंख्यात समय के अंतर्मुहूर्त जैसे काल में (**सेलेसिं पडिवज्जइ**) वे शैलेशी-अवस्था को प्राप्त करते हैं, अथवा सर्व कर्मों के संवररूप चारित्र वाले की अवस्था को-योगनिरोधरूप अवस्था को प्राप्त करते है। इस शैलेशी-अवस्था में केवली किस प्रकार से वेदनीय आदि चार अघातिया कर्मों को क्षय करते है, इस बात को प्रगट करते हुए सूत्रकार कहते है कि (**पुव्वरइयगुणसेढीयं च णं कम्मं तीसे सेलेसिमद्धाए असंखेज्जाहिं गुणसेढीहिं अणंते कम्मंसे खवयंते**) शैलेशी-अवस्था के पहिले जिन कर्मों की गुणश्रेणी रची जाय वे गुणश्रेणिक कर्म है। गुण-

છે. (પાउणित्ता ईसिंहस्सपंचक्खरुच्चारणद्धाए असंखेज्जसमइयं अंतोमुहुत्तियं) અયોગી-અવસ્થાને પ્રાપ્ત થઇ ગયા પછી હ્રસ્વ પાચ અક્ષરના ઉચ્ચારણકાલ-પ્રમાણ સમયમાં, અર્થાત અસંખ્યાત સમયના અંતર્મુહૂર્ત જેવા કાલમાં (सेलेसिं पडिवज्जइ) તેઓ શૈલેશી અવસ્થાને પ્રાપ્ત કરે છે, અથવા સર્વ-કર્મોના સંવરરૂપ ચારિત્રવાળાની અવસ્થાને-યોગનિરોધરૂપ અવસ્થાને પ્રાપ્ત કરે છે. આ શૈલેશી અવસ્થામાં કેવલી કેવા પ્રકારથી વેદનીય આદિ ચાર અઘાતિયા કર્મોનો ક્ષય કરે છે? એ વાતને પ્રકટ કરતાં સૂત્રકાર કહે છે કે (पुव्वरइयगुणसेढीयं च णं कम्मं तीसे सेलेसिमद्धाए असंखेज्जाहिं गुणसेढीहिं अणंते कम्मंसे खवयंते) શૈલેશી અવસ્થાની પહેલા જે કર્મોની ગુણશ્રેણી રચી

यत् केवलिनो वेदनीयादिकं चतुर्विधं कर्म कालान्तरवेद्यं स्थितं वर्तते, तस्य शीघ्रतरक्षपणार्थं तस्यैव कर्मणो दलिकं क्रमेण प्रतिसमयं पूर्वपूर्वापेक्षया उत्तरोत्तरमसंख्यातगुणवृद्धया गुणीकृत्य स्वल्पं, बहु, बहुतरं, बहुतमम्-इति श्रेणीरूपेण स्थितिखण्डं रचयति। इदमत्र स्पष्टीकरणम्-गुणश्रेणीरचनायाः प्रथमसमये कर्मदलिकं स्वल्पं गृह्यते, द्वितीयसमये पूर्वापेक्षया असंख्यातगुणितं दलिकं गृह्यते, तृतीयसमये ततोऽप्यसंख्यातगुणितं कर्मदलिकं गृह्यते, एवमुत्तरोत्तरमसंख्यातगुणवृद्धया कर्मदलिकं रचयति। एवं कर्मदलिकरचनं तावद्वाच्यं, यावदन्तर्मुहूर्तं चरमसमयम्। तच्चान्तर्मुहूर्तमपूर्वकरणानिवृत्तिकरणकालाभ्यां स्तोकाभ्यधिकं वेदितव्यम्। अयं कर्मपुद्गलाना रचनाविशेषो "गुणश्रेणी"-त्युच्यते। 'तीसे

---

श्रेणी किसे कहते है ? इस बात को प्रकट किया जाता है-कालान्तर में वेदन करने योग्य जो वेदनीयादिक चार कर्म अभी अवशिष्ट है उन्हें शीघ्रतर क्षपण करने के निमित्त उनके दलियो को क्रम से प्रतिसमय पूर्व पूर्व को अपेक्षा उत्तरोत्तर असंख्यात गुणवृद्धि से गुणित कर स्वल्प, बहु, बहुतर एवं बहुतम-इस श्रेणीरूप में विभाजित करते हुए स्थिति का खंडन करना सो गुणश्रेणी है। मतलब इसका यह है कि गुणश्रेणीरचना के प्रथम समय में कर्मदलिक स्वल्प ग्रहण किये जाते है, द्वितीय समय में पूर्व की अपेक्षा असंख्यातगुणित दलिक ग्रहण किये जाते है, तृतीय समय में इससे भी असंख्यातगुणे कर्मदलिये ग्रहण किये जाते है। इस प्रकार उत्तरोत्तर असंख्यातगुणित कर्मदलियों को वहांतक ग्रहण किया जाता है कि जबतक अन्तर्मुहूर्तका अन्तिमसमय पूर्ण नहीं हो जाता। अपूर्वकरण और अनिवृत्तिकरण के काल से यह अन्तर्मुहूर्त कुछ अधिक समझना चाहिये। इस प्रकार कर्मपुद्ग-

---

શકાય તે ગુણશ્રેણિકકર્મ છે. ગુણશ્રેણી કોને કહેવાય? એ વાત પ્રગટ કરાય છે-કાલાન્તરમાં વેદન કરવા યોગ્ય જે વેદનીય આદિક ચાર કર્મ હજુ બાકી છે તેમને જલદી ખપાવવા-ક્ષપણ કરવા-નિમિત્ત તેમના દલિઓમાં ધીમે-ધીમે ક્રમપૂર્વક પ્રતિસમય પૂર્વપૂર્વની અપેક્ષા ઉત્તરોત્તર અસંખ્યાત ગુણવૃદ્ધિથી ગુણિત કરીને સ્વલ્પ, બહુ, બહુતર તેમજ બહુતમ આમ શ્રેણીરૂપમાં વિભાજિત કરતાં કરતા સ્થિતિનું ખંડન કરવું એને ગુણશ્રેણી કહે છે. એની મતલબ એ છે કે ગુણશ્રેણીરચનાના પ્રથમ સમયમા કર્મદલિક સ્વલ્પ ગ્રહણ કરવામાં આવે છે, બીજા સમયમાં પ્રથમની અપેક્ષા અસંખ્યાતગુણિત દલિક ગ્રહણ કરવામાં આવે છે. ત્રીજા સમયમાં તેનાથી પણ અસંખ્યાતગુણાં કર્મદલિક ગ્રહણ કરાય છે. આ પ્રકારે ઉત્તરોત્તર અસંખ્યાતગુણિત કર્મદલિઓને ત્યાં સુધી ગ્રહણ કરવામાં આવે છે કે જ્યાંસુધી અન્તર્મુહૂર્તનો અંતિમ સમય પૂરો થઈ ન જાય. અપૂર્વકરણ અને અનિવૃત્તિકરણના કાળથી આ અન્તર્મુહૂર્ત કંઇ અધિક સમજવું જોઇએ. આ પ્રકારે કર્મપુદ્ગલોની રચનાની

**असंखेज्जाहिं गुणसेढीहिं अणंते कम्मंसे खवयंते वेयणिज्जाउय-णामगोए इच्चेते चत्तारि कम्मंसे जुगवं खवेइ, खवित्ता ओरालि-**

**सेलेसिमद्धाए** ' तस्या शैलेश्यद्धायाम् "क्षपयन्"–इति पदमत्याहृत्य योजना करणीया, '**असंखेज्जाहिं गुणसेढीहिं**' असंख्येयाभिर्गुणश्रेणिभिः, '**अणंते कम्मंसे खवयंते**' अनन्तान् कर्मांशान् क्षपयन्, '**वेयणिज्जाउयणामगोए**' वेदनीयायुर्नामगोत्राणि, '**इच्चेते चत्तारि कम्मंसे**' इत्येतांश्चतुरः कर्मांशान् '**जुगवं खवेइ**' युगपत् क्षपयति। अयमत्र समुदायार्थः—एवं पूर्वं गुणश्रेणीं कृत्वा विशुद्धपरिणामवशादसंख्यातसमयवत्यामान्तर्मौहूर्तिक्यां शैलेश्यवस्थायां कर्म क्षपयन् केवली स्वरचिताभिरसंख्यातगुणश्रेणीभिः शीघ्रतरक्षपणक्रियाया साधनभूताभिरनन्तपुद्गलरूपत्वादनन्तान् कर्मांशान् क्षपयन् २ वेदनीयादिकांश्चतुरः कर्मांशान्

लोंकी रचना की विशेषताका नाम गुणश्रेणी है। इस प्रकार वे केवली भगवान् प्रथम–रचित गुणश्रेणिककर्मको उस शैलेशी के काल मे नष्ट करते हुए असंख्यात गुणश्रेणियो द्वारा अनंत कर्मांशोंका क्षय कर देते है। ( **वेयणिज्जा–उय–णाम–गोए इच्चेते चत्तारि कम्मंसे जुगवं खवेइ** ) वेदनीय, आयु, नाम एव गोत्र इन चार कर्मांशोको एक साथ क्षय करते है। मतलब इसका यह है–इस प्रकार गुणश्रेणी करके विशुद्ध हुए परिणामों के वश से असंख्यातसमयप्रमाण अन्तर्मुहूर्त कालकी इस शैलेशी अवस्था मे वे केवली प्रभु, कर्मको क्षपित करते हुए, कर्मों की शीघ्रतर क्षपण क्रिया मे साधनभूत असंख्यात गुणश्रेणियो द्वारा अनन्तपुद्गलस्वरूप कर्मांशोंका क्षय करते २ वेदनीयादिक चार अघातिया कर्मांशोंका एक ही साथ क्षय कर देते है। (**खवेत्ता उरालिय–तेय–कम्माइं सव्वाहिं विप्पजह-**

વિશેષતાનું નામ ગુણશ્રેણી છે. આવી રીતે તે કેવલી ભગવાન પ્રથમ રચેલ ગુણશ્રેણિક કર્મને તે શૈલેશીના કાળમાં નષ્ટ કરતા કરતા અસંખ્યાત ગુણ-શ્રેણિઓ દ્વારા અનંત કર્મના અંશોનો ક્ષય કરી દે છે. ( वेयणिज्जाउयणामगोए इच्चेते चत्तारि कम्मंसे जुगवं खवेइ ) વેદનીય, આયુ, નામ તેમજ ગોત્ર એ ચાર કર્માંશોનો એક સાથે ક્ષય કરે છે. એની મતલબ એ છે કે–આ પ્રકારે ગુણશ્રેણી કરીને વિશુદ્ધ થયેલા પરિણામને વશ થઈ અસંખ્યાત–સમય–પ્રમાણ અન્તર્મુહૂર્ત કાળની આ શૈલેશી અવસ્થામાં તે કેવલી પ્રભુ કર્મને ક્ષપિત કરતાં કરતાં કર્મોની બહુજ ઉતાવળી ક્રિયામાં સાધનભૂત અસંખ્યાત ગુણશ્રે-ણીઓ દ્વારા અનંતપુદ્ગલસ્વરૂપ કર્માંશોનો ક્ષય કરતાં કરતાં વેદનીય આદિક ચાર (૪) અઘાતિયા કર્માંશોનો એકસાથે જ ક્ષય કરી નાખે છે ( खवेत्ता उरालिय–तेय–कम्माइं सव्वाहिं विप्पजहणाहिं विप्पजहइ ) ક્ષપણ

**यतेयकम्माइं सव्वाहिं विप्पजहणाहिं विप्पजहइ, विप्पजहित्ता उज्जुसेढीपडिवण्णे अफुसमाणगई उड्ढं एक्कसमएणं अविग्गहेण गंता सागारोवउत्ते सिज्झइ ॥ सू० ९२ ॥**

---

युगपत् क्षपयतीति । '**खवित्ता**' क्षपयित्वा '**ओरालियतेयकम्माइं**' औदारिकतैजसकर्माणि '**सव्वाहिं**' सर्वाभिः=अशेषाभिः, '**विप्पजहणाहिं**' विप्रहाणिभिः-विशेपेण=प्रकर्षतो हानयः=त्यागास्ताभिः, अत्र व्यक्त्यपेक्षया बहुवचनम्, '**विप्पजहइ**' विप्रजहाति=सर्वथा परिशाटयति, '**विप्पजहित्ता**' विप्रहाय=परित्यज्य, '**उज्जुसेढीपडिवण्णे**' ऋजुश्रेणिप्रतिपन्नः-ऋजुः=अवक्रा, श्रेणिः=आकाशप्रदेशपङ्क्तिस्तामाश्रितः '**अफुसमाणगई**' अस्पृशद्गतिः-अस्पृशन्ती सिद्ध्यन्तरालप्रदेशान् गतिर्यस्य स तथा, '**एक्कसमएणं**' एकसमयेन, अन्तरालप्रदेशस्पर्शने हि नैकेन समयेन सिद्धिः स्यात्, इष्यते तु तत्रैक एव समयः, य एव चायुष्कादिकर्मणां क्षयसमयः स एव निर्वाणसमयः । अतोऽन्तराले समयान्तरस्यासद्भावादन्तरालप्रदेशानामसस्पर्शनं भवति । भावतोऽयं सूक्ष्मोऽर्थः केवलिगम्यः । '**अविग्गहेणं**' अविग्रहेण=अवक्रेण-वक्र एव हि समयान्तरं लगति प्रदेशान्तरं च स्पृशति । '**उड्ढं**' ऊर्ध्वं '**गंता**' गत्वा '**सागारोवउत्ते**' साकारोपयुक्तः=ज्ञानोपयोगवान्, '**सिज्झइ**' सिद्ध्यति=सिद्धो भवति ॥ सू० ९२ ॥

---

**णाहिं विप्पजहइ** ) क्षपण करने के बाद औदारिक, तैजस एवं कार्मण इन शरीरोको विशिष्टरूप से समस्त हानियों द्वारा सर्वथा छोड़ देते है। ( **विप्पजहित्ता उज्जुसेढी-पडिवण्णे अफुसमाणगई ऊड्ढं एक्कसमएणं अविग्गहेण गंता सागारोवउत्ते सिज्झइ** ) छोडने के बाद ऋजु-अवक्र आकाशके प्रदेशोंकी पंक्तिस्वरूप श्रेणीको आश्रित करते हुए, अर्थात् श्रेणीके अनुसार सिद्धिके अन्तराल के प्रदेशोंको नहीं स्पर्शते वे केवली भगवान् एक समय में विग्रहरहित गति से-सीधी गति से होकर सिद्धगति में विराजमान हो जाते है। यहां उनका उपयोग साकार होता है, अर्थात् ज्ञानोपयोग से वे विशिष्ट रहते है।

---

કર્યા પછી ઔદારિક, તૈજસ તેમજ કાર્મણ એ શરીરોને વિશિષ્ટરૂપથી સકળ હાનિઓ દ્વારા સર્વથા છોડી દીએ છે. ( विप्पजहित्ता उज्जुसेढीपडिवण्णे अफुसमाणगई उड्ढं एक्कसमएणं अविग्गहेण गंता सागारोवउत्ते सिज्झइ ) છોડી દીધા પછી ઋજુ-અવક્ર આકાશના પ્રદેશોની પંક્તિસ્વરૂપ શ્રેણીને આશ્રિત કરતાં, અર્થાત્ શ્રેણીને અનુસાર સિદ્ધિના અંતરાલપ્રદેશોને સ્પર્શ ન કરતાં તે કેવલી ભગવાન એક સમયમાં વિગ્રહરહિત ગતિથી-સીધી ગતિથી થઈને સિદ્ધિગતિમાં વિરાજમાન થઈ જાય છે. અહીં તેમનો ઉપયોગ સાકાર હોય

मूलम्—ते णं तत्थ सिद्धा हवंति, साइया अपज्जवसिया

टीका—अत्रोत्तरार्द्धे एकोनसप्ततितमे सूत्रे यदवोचत् 'से जे इमे गामागरजाव सन्निवेसेसु मणुया हवंति सव्वकामविरया' इत्यारभ्य 'अट्ठकम्मपयडीओ खवइत्ता उप्पिं लोयग्ग-

भावार्थ—इस उपाय से योगोंका निरोध करते समय प्रथम मनोयोगका निरोध करते है, फिर वचनयोगका और फिर वाद में काययोगका। योगोंके निरोध हो जाने से वे अयोगी—अवस्थाको प्राप्त कर ह्रस्व अकारादि के, अर्थात् अ, इ, उ, ऋ, लृ—इन पांच अक्षरो के उच्चारण करने में जितना काल लगता है उतने काल तक उस अयोगी—अवस्था में रहते हुए शैलेशी—अवस्थाको प्राप्त करने के पश्चात् असंख्यातगुणश्रेणी से अनंत कर्मांगोका क्षय कर देते है। फिर वेदनीय, आयु, नाम एवं गोत्र इन चार अघातिया कर्मोंको युगपत् विनष्ट कर वे भगवान्, औदारिक, तैजस एवं कार्मण शरीरको क्षपित करते है। इस प्रकार कर्मों और शरीरों से सर्वथा रहित बने हुए वे प्रभु आकाशकी प्रदेशपंक्ति के अनुसार १ समय प्रमाणवाली अविग्रहगति से गमन कर सिद्धिगति में जाकर विराजमान हो जाते है। यहां वे साकार—उपयोगविशिष्ट रहा करते है ॥ सू. ९२ ॥

'ते णं तत्थ' इत्यादि।

इसी आगम के उत्तरार्धका ६९ वॉ सूत्र जो (से जे इमे गामागर जाव सन्निवे-

છે. જ્ઞાનોપયોગથી તેઓ વિશિષ્ટ રહે છે

ભાવાર્થ—આ ઉપાયથી યોગોનો નિરોધ કરતી વખતે પ્રથમ મનોયોગનો તે કેવલી નિરોધ કરે છે. પછી વચનયોગના અને ત્યાર પછી કાયયોગના નિરોધ થઈ ગયા પછી તેઓ અયોગી—અવસ્થા પ્રાપ્ત કરીને હ્રસ્વ અકાર આદિનુ, અર્થાત્—अ, इ, उ, ऋ, लृ.—આ પાંચ અક્ષરોનુ ઉચ્ચારણુ કરવામા જેટલો કાળ લાગે એટલા કાલ સુધી તેઓ તે અયોગી—અવસ્થામાં રહેતાં શૈલેશી—અવસ્થાને પ્રાપ્ત કરીને પછી અસખ્યાત ગુણશ્રેણીથી અનંત કર્માંશોનો ક્ષય કરી દે છે. પછી વેદનીય, આયુ, નામ તેમજ ગોત્ર એ ચાર અઘાતિયા કર્મોને યુગપત્ નાશ કરીને તે ભગવાન્ ઔદારિક, તૈજસ તેમજ કાર્મણ શરીરને ક્ષપિત કરે છે. આ પ્રકારે કર્મો અને શરીરોથી સર્વથા રહિત બનેલા તે પ્રભુ આકાશની પ્રદેશપંકિત અનુસાર ૧ સમયપ્રમાણુવાળી અવિગ્રહ-ગતિથી ગમન કરીને સિદ્ધિગતિમા જઇ વિરાજમાન થઈ જાય છે. અહીં તેઓ સાકાર—ઉપયોગ—વિશિષ્ટ રહ્યા કરે છે. (સૂ. ૯૨)

'ते णं तत्थ' ઈત્યાદિ.

એ જ આગમના ઉત્તરાર્ધનું ઓગણુસિત્તેરમું સૂત્ર જે (से जे इमे गामागर जाव

# असरीरा जीवघणा दंसणनाणोवउत्ता निट्ठियट्ठा निरेयणा

**पइट्ठाणा हवंति**' इति, तत्र ते लोकाग्रप्रतिष्ठानाः सन्तः कीदृशा भवन्तीति जिज्ञासायामाह– '**ते णं**' इत्यादि । '**ते णं**' ते=पूर्वनिर्दिष्टा मनुष्याः खलु '**तत्थ**' तत्र लोकाग्रे प्रतिष्ठानं प्राप्ताः सन्तः, '**सिद्धा हवंति**' सिद्धा भवन्ति । ते कीदृशा भवन्तीत्याह–'**साइया**' सादिकाः= आदिसहिताः, '**अपज्जवसिया**' अपर्यवसिताः=अन्तरहिताः–अविनाशिन इत्यर्थः '**असरीरा**' अशरीराः=पञ्चविधशरीररहिताः, अन्ये वदन्ति–सशरीरोऽपि सिद्धो भवतीति तन्मतनिराकरणार्थ-

---

**सेसु मणुया हवंति सव्वकामविरया**) यहाँ से लेकर (**अट्ठ कम्मपगडीओ खवइत्ता उप्पिं लोयग्गपइट्ठाणा हवंति**) यहाँ तक है। इस सूत्र में यह जो कहा गया है कि वे सिद्ध भगवान् लोक के अग्रभाग में प्रतिष्ठित हो जाते है, उसी विषय में अब इस सूत्र द्वारा यह बताया जाता है कि वे सिद्ध भगवान् लोक के अग्रभाग में रहते हुए कैसे होते है। वह इस प्रकार है–(**ते णं तत्थ सिद्धा हवंति**) वे पूर्वनिर्दिष्ट मनुष्य, लोक के अग्रभाग में प्रतिष्ठित होते हुए सिद्ध कहे जाते है, वे (**साइया अपज्जवसिया**) सादि और पर्यवसानरहित होते है, अर्थात्–वहां से फिर उन्हे संसार में पीछे जन्म धारण नहीं करना पड़ता है, एतदर्थ उन्हे अपर्यवसित कहा है। अनादिकाल से लगे हुए कर्मों का क्षय करके वे सिद्ध हुए है, अतः इस अपेक्षा वे सादि कहे गये है। (**असरीरा**) औदारिक आदि पांच शरीरों से वे सर्वथा रहित होते है। कितनेक ऐसा कहते है कि सशरीर भी प्राणी सिद्ध होता है, उनके इस सिद्धान्त को दूर करते हुए भगवान ने सिद्धों का (**असरीरा**) यह विशेषण दिया है।

---

सन्निवेसेसु मणुया हवंति सव्वकामविरया) અહીંથી લઈને (अट्ठ कम्मपगडीओ खवइत्ता उप्पिं लोयग्गपइट्ठाणा हवंति) અહીં સુધી છે. આ સૂત્રમાં જે આ કહેવામાં આવ્યું છે કે તે સિદ્ધ ભગવંતો લોકના અગ્રભાગમાં પ્રતિષ્ઠિત થઇ જાય છે, તે જ વિષયમાં આ સૂત્ર દ્વારા એમ બતાવવામાં આવે છે કે તેઓ સિદ્ધ ભગવંતો લોકના અગ્રભાગમાં રહેતાં કેવા થાય છે. તે આ પ્રકારે છે–( ते णं तत्थ सिद्धा हवंति ) તેઓ પૂર્વે બતાવેલા મનુષ્ય, લોકના અગ્રભાગમાં પ્રતિષ્ઠિત થઈ જતાં સિદ્ધ કહેવાય છે. તેઓ ( साइया अपज्जवसिया ) સાદિ અને અંત ( જન્મ–મરણ )–રહિત થાય છે. ત્યાંથી પાછો તેઓને સંસારમાં જન્મ ધારણ કરવો પડતો નથી, તે અર્થમાં તેમને અપર્યવસિત કહેવામાં આવે છે. અનાદિકાળથી લાગેલાં કર્મોનો ક્ષય કરીને તેઓ સિદ્ધ થયા છે, આથી એ અપેક્ષાએ તેમને સાદિ કહે છે. ( असरीरा ) ઔદારિક આદિ પાંચ શરીરોથી તેઓ સર્વથા રહિત થાય છે. કેટલાક એમ કહે છે કે સશરીર પણ પ્રાણી સિદ્ધ હોય છે, તેઓનાં આ સિદ્ધાંતને દૂર કરતાં ભગવાને સિદ્ધોને 'असरीरा' એ વિશે-

**नीरया णिम्मला वितिमिरा विसुद्धा सासयमणागयद्धं कालं चिट्ठंति ॥ ९३ ॥**

मिदं विशेषणम्, '**जीवघणा**' जीवघनाः—जीवाश्च ते घना जीवघनाः—अन्तररहितत्वेन जीवप्रदेशमयाः, योगनिरोधकाले रन्ध्रपूरणेन त्रिभागोनावगाहनायाः सद्भावादित्यर्थः, '**दंसणनाणोवउत्ता**' दर्शनज्ञानोपयुक्ता— दर्शनम्=अनाकारं, ज्ञानं=साकारं, तयोरुपयुक्ताः, '**निट्ठियट्ठा**' निष्ठितार्थाः=कृतकृत्याः—समाप्तसर्वप्रयोजना इत्यर्थः । '**निरेयणा**' निरेजनाः=निश्चलाः—स्थिरा इत्यर्थः, '**नीरया**' नीरजसः=बध्यमानकर्मरहिता इत्यर्थः, यद्वा—नीरया इतिच्छाया, रयो, वेगस्तद्रहिताः=निरुद्वेगाः —निरौत्सुक्या इत्यर्थः । '**णिम्मला**' निर्मलाः=पूर्वबद्धकर्म- निर्मुक्ताः, '**वितिमिरा**' वितिमिराः=विगताज्ञानाः, '**विसुद्धा**' विशुद्धाः=कर्मविशुद्धप्रकर्षमुपगताः,

इससे भगवान का यह अभिप्राय प्रगट होता है कि शरीरसहित जीव कभी भी मुक्त नहीं होता है। (**जीवघणा**) अन्तररहित होने से वे भगवान जीवप्रदेशमय रहते है। अन्त के शरीर की अवगाहना से उनकी सिद्ध—अवस्था में अवगाहना कुछ कम रहती है। योगनिरोधकाल में शरीर के छेदों के पूरण हो जाने से त्रिभाग—ऊन उनकी अवगाहना बतलाई गई है। (**दंसणणाणोवउत्ता**) दर्शन एवं ज्ञान से वे उपयुक्त रहा करते है। अनाकार ज्ञान का नाम दर्शन एवं साकार ज्ञान का नाम ज्ञान कहा गया है। (**निट्ठियट्ठा**) समस्त मनोरथ सिद्ध हो जाने से एवं कुछ भी कार्य करने के लिये बाकी नहीं रहने से वे भगवान् कृतकृत्य कहे जाते है। तथा (**निरेयणा**) ये निश्चल, (**नीरया**) बध्यमान कर्मों से रहित, अथवा निरुद्वेग, (**णिम्मला**) निर्मल—पूर्वबद्धकर्मों से निर्मुक्त, (**वितिमिरा**) अज्ञानरूप तिमिर से अतीत,

પણ આપ્યુ છે. આથી ભગવાનનો આ અભિપ્રાય પ્રગટ થાય છે કે શરીર-સહિત જીવ કદી પણ મુકત થતો નથી. (जीवघणा) અંતરરહિત હોવાથી તે ભગવાન જીવપ્રદેશમય રહે છે. અંતના શરીરની અવગાહનાથી તેમની સિદ્ધ—અવસ્થામાં અવગાહના જરા ઓછી રહે છે. યોગ—નિરોધ કાળમાં શરીરના છેદોના પૂરણ થઈ જવાથી ત્રિભાગન્યૂન તેમની અવગાહના બતાવેલી છે. (दंसणणाणोवउत्ता) દર્શન તેમજ જ્ઞાનથી તેઓ ઉપયુકત રહ્યા કરે છે. અનાકાર જ્ઞાનનું નામ દર્શન તેમજ સાકાર જ્ઞાનનું નામ જ્ઞાન કહેવાય છે. (निट्ठियट्ठा) સમસ્ત મનોરથ સિદ્ધ થઈ જવાથી તેમજ કાંઇ પણ કાર્ય કરવાનું બાકી ન રહેવાથી તે ભગવાન કૃત-કૃત્ય કહેવાય છે. તથા (निरेयणा) તઓ નિશ્ચળ, (नीरया) બધ્યમાન કર્મોથી રહિત, અથવા નિરુદ્વેગ, (णिम्मला) નિર્મળ—પૂર્વબદ્ધ કર્મોથી નિર્મુકત, (वितिमिरा) અજ્ઞાનરૂપ તિમિર—અંધકારથી અતીત, (विसुद्धा) કર્મોના વિનાશથી થતી

मूलम्—से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ—ते णं तत्थ सिद्धा भवंति सादीया अपज्जवसिया जाव चिट्ठंति? गोयमा! से जहा णामए बीयाणं अग्गिदड्ढाणं पुणरवि अंकुरुप्पत्ती ण भवइ,

'सासयमणागयद्धं कालं चिट्ठंति' शाश्वतम् अनागताद्ध कालं=भविष्यत्कालं 'चिट्ठंति' तिष्ठन्ति ॥ सू० ९३ ॥

टीका—गौतमः पृच्छति—'से केणट्ठेणं भंते'! इत्यादि। 'भंते!' हे भदन्त! 'से केणट्ठेणं' अथ केनाऽर्थेन=केन कारणेन 'एवं वुच्चइ' एवमुच्यते 'ते णं तत्थ सिद्धा भवंति' ते खलु तत्र सिद्धा भवन्ति, 'सादीया' सादिका 'अपज्जवसिया' अपर्यवसिता 'जाव चिट्ठंति' यावत् तिष्ठन्ति ? भगवानाह—'गोयमा!' हे गौतम! 'से जहा णामए' तद् यथा नाम 'बीयाणं अग्गिदड्ढाणं' बीजानामग्निदग्धानां 'पुणरवि' पुनरपि 'अंकुरुप्पत्ती ण भवइ' अङ्कुरोत्पत्तिर्न भवति, 'एवामेव सिद्धाणं कम्मबीए

(विसुद्धा) कर्मों के विनाश से उद्भूत आत्मविशुद्धि से युक्त हो कर (सासयमणागयद्धं कालं चिट्ठंति) भविष्यत्काल में शाश्वतरूप से सिद्धावस्था से सपन्न रहा करते है। अर्थात्—सिद्ध भगवान् सादि—अनंत रहा करते हैं, एवं शुद्ध आत्मगुणों के पूर्ण विकास से वे सिद्ध—अवस्था में अनंतकालतक विराजित रहते है ॥ सू० ९३ ॥

'से केणट्ठेणं' इत्यादि।

प्रश्न—(भंते!) हे भदंत! (से केणट्ठेणं एवं वुच्चइ) "वे सादि अपर्यवसित होते है" यह आप किस कारण से कहते है? उत्तर—(गोयमा!) हे गौतम! सुनो! (से जहा णामए बीयाणं अग्गिदड्ढाणं पुणरवि अंकुरुप्पत्ती ण भवइ) जिस प्रकार अग्नि

આત્મવિશુદ્ધિથી યુકત થઇને (सासयमणागयद्धं कालं चिट्ठंति) ભવિષ્યકાળમાં શાશ્વત-રૂપથી સિદ્ધાવસ્થાથી યુકત રહ્યા કરે છે. અર્થાત્—સિદ્ધ ભગવાન સાદિ અનંત રહ્યા કરે છે, તેમજ શુદ્ધ આત્મગુણોના પૂર્ણ વિકાસથી તેઓ સિદ્ધ અવસ્થામાં અનંતકાળ સુધી વિરાજમાન રહે છે. (સૂ. ૯૩)

'से केणट्ठेणं' ઈત્યાદિ.

પ્રશ્ન—(भंते!) હે ભદંત! (से केणट्ठेणं एवं वुच्चइ) "તેઓ સાદિ અપર્યવસિત હોય છે" એમ આપ શું કારણથી કહો છો.? ઉત્તર—(गोयमा!) હે ગૌતમ! સાંભળો. (से जहा णामए बीयाणं अग्गिदड्ढाणं पुणरवि अंकुरुप्पत्ती ण भवइ) જે પ્રકારે અગ્નિથી બળેલાં બીમાં ફરીને અંકુર ઉત્પન્ન કરવાની

एवामेव सिद्धाणं कम्मबीए दड्ढे पुणरवि जम्मुप्पत्ती न भवइ, से तेणट्ठेणं गोयमा! एवं वुच्चइ–ते णं तत्थ सिद्धा भवंति सादीया अपज्जवसिया जाव चिट्ठंति ॥ सू० ९४ ॥

सूलम्—जीवा णं भंते! सिज्झमाणा कयरंमि संघयणे

---

दड्ढे' एवमेव सिद्धानां कर्मबीजे दग्धे सति 'पुणरवि' पुनरपि 'जम्मुप्पत्ती न भवइ' जन्मोत्पत्तिर्न भवति=जन्मनः प्रादुर्भावो न भवति, 'से तेणट्ठेणं' तत्तेनाऽर्थेन, 'गोयमा' हे गौतम! 'एवं वुच्चइ' एवमुच्यते–'ते णं सिद्धा भवंति सादीया अपज्जवसिया' ते खलु सिद्धा भवन्ति सादिका अपर्यवसिता 'जाव चिट्ठंति' यावत्तिष्ठन्ति ॥सू० ९४॥

टीका—गौतमः पृच्छति–'जीवा णं भंते!' इत्यादि। 'भंते!' हे भदन्त! 'जीवा णं' जीवाः खलु 'सिज्झमाणा' सिद्ध्यन्त 'कयरंमि' कतरस्मिन्=षट्सु संहननेषु कस्मिन् 'संघयणे' संहनने 'सिज्झंति' सिध्यन्ति। भगवानाह–'गोयमा'

---

से दग्ध बीजों में पुनः अंकुर को उत्पन्न करनेकी शक्ति नहीं रहती है, (एवामेव सिद्धाणं कम्मबीए दड्ढे पुणरवि जम्मुप्पत्ती ण भवइ) उसी तरह सिद्ध भगवान् के भी कर्मरूपी संसारका बीज नष्ट हो जाने पर पुनः जन्मकी उत्पत्ति नहीं होती है। (से तेणट्ठेणं गोयमा! एवं वुच्चइ) इसलिये हे गौतम! ऐसा कहा है कि (ते णं सिद्धा भवंति सादीया अपज्जवसिया) वे सिद्ध सादि अपर्यवसित होते है॥ सू. ९४ ॥

'जीवा ण भंते!' इत्यादि।

प्रश्न—(भंते!) हे भदंत! (जीवा णं सिज्झमाणा) जीव सिद्ध होते हुए (कयरंमि संघयणे सिज्झंति) छह संहननों में से कौन से संहनन में सिद्ध होते है?

---

શકિત રહેતી નથી, (एवामेव सिद्धाणं कम्मबीए दड्ढे पुणरवि जम्मुप्पत्ती ण भवइ) તેવીજ રીતે સિદ્ધ ભગવાનને પણ કર્મરૂપી સંસારનાં બીજ નષ્ટ થઈ જવાથી ફરીને જન્મની ઉત્પત્તિ થતી નથી. (से तेणट्ठेणं गोयमा! एवं वुच्चइ) એટલા માટે હે ગૌતમ! એમ કહ્યું છે કે (ते णं सिद्धा भवंति सादिया अपज्जवसिया) તે સિદ્ધો સાદિ-અપર્યવસિત હોય છે. (સૂ. ૯૪)

'जीवा णं भंते। सिज्झमाणा' ઈત્યાદિ.

પ્રશ્ન-(भंते!) હે ભદન્ત! (जीवा णं सिज्झमाणा) જીવ સિદ્ધ થઈ (कयरंमि संघयणे सिज्झंति?) ૭ સંહનનોમાંથી કયા સંહનનમા સિદ્ધ

**सिज्झंति? गोयमा! वइरोसभणारायसंघयणे सिज्झंति ॥ सू० ९५॥**

**मूलम्—जीवा णं भंते! सिज्झमाणा कयरंमि संठाणे सिज्झंति? गोयमा! छण्हं संठाणाणं अण्णयरे संठाणे सिज्झंति ॥ ९६ ॥**

---

हे गौतम! '**वइरोसभणारायसंघयणे**' वज्रर्षभनाराचसंहनने '**सिज्झंति**' सिद्ध्यन्ति ॥सू० ९५॥

**टीका**—गौतमः पृच्छति—'**जीवा णं भंते!**' इत्यादि। '**भंते!**' हे भदन्त != हे भगवन्! '**जीवा णं सिज्झमाणा कयरम्मि संठाणे सिज्झंति?**' जीवाः खलु सिध्यन्तः कतरस्मिन् संस्थाने सिध्यन्ति? भगवानाह—'**गोयमा**' हे गौतम! '**छण्हं संठाणाणं अण्णयरे संठाणे सिज्झंति**' षण्णां संस्थानानामन्यतरस्मिन् कस्मिंश्चिदेकस्मिन् संस्थाने सिध्यन्ति ॥ सू० ९६ ॥

---

उत्तर—(**गोयमा!**) हे गौतम! (**वइरोसभणारायसंघयणे सिज्झंति**) वज्रऋषभनाराच-संहनन से वे सिद्ध होते है। वज्रऋषभनाराचसंहननवाला जीव ही मुक्ति को पाता है ॥सू. ९५॥

'**जीवा णं भंते!**' इत्यादि।

प्रश्न—(**भंते!**) हे भदंत! (**जीवा णं सिज्झमाणा**) जो जीव सिद्ध होते है वे (**कयरंसि संठाणे सिज्झंति**) कौन से संस्थान से सिद्ध होते है? उत्तर—(**गोयमा!**) हे गौतम! (**छण्हं संठाणाणं अण्णयरे संठाणे सिज्झंति**) छह संस्थानों में से किसी भी एक संस्थान से जीव सिद्धिगतिका लाभकर सकते है ॥ सू. ९६ ॥

---

થાય છે? ઉત્તર—(गोयमा!) હે ગૌતમ! (वइरोसभणारायसंघयणे सिज्झंति) વજ્રઋષભનારાચસંહનનથી તેઓ સિદ્ધ થાય છે. વજ્રઋષભનારાચ-સંહનનવાળા જીવજ મુક્તિને મેળવે છે. (સૂ ૯૫)

'जीवा णं भंते!' ઇત્યાદિ.

પ્રશ્ન-(भंते!) હે ભદંત! (जीवा णं सिज्झमाणा) જે જીવો સિદ્ધ થાય છે તેઓ (कयरंमि संठाणे सिज्झंति?) કયા સંસ્થાનથી સિદ્ધ થાય છે? ઉત્તર—(गोयमा! छण्हं संठाणाणं अण्णयरे संठाणे सिज्झंति) હે ગૌતમ! છ સંસ્થાનોમાંથી કોઇ પણ એક સંસ્થાનથી જીવ સિદ્ધિગતિનો લાભ કરી શકે છે. (સૂ. ૯૬)

मूलम्—जीवा णं भंते! सिज्झमाणा कयरम्मि उच्चत्ते सिज्झंति? गोयमा! जहण्णेणं सत्तरयणीए, उक्कोसेणं पंचधणुसइए सिज्झंति ॥सू० ९७॥

---

टीका—गौतमः पृच्छति-'जीवा णं भंते!' इत्यादि। 'भंते!' हे भदन्त! 'जीवा णं सिज्झमाणा कयरम्मि उच्चत्ते सिज्झंति?' जीवाः खलु सिध्यन्त कतरस्मिन्=कियति उच्चत्वेऽवगाहनेन सिध्यन्ति? भगवानाह-'गोयमा!' हे गौतम! 'जहण्णेणं' जघन्येन 'सत्तरयणीए' सप्तरत्निके=सप्तहस्तपरिमिते 'उक्कोसेणं' उत्कर्षेण 'पंचधणुसइए' पञ्चधनु-शतिके=पञ्चशतधनुःपरिमिते उच्चत्वे, 'सिज्झंति' सिध्यन्ति। चतुर्हस्तपरिमाणविशेषो धनुरित्युच्यते। इह जघन्यं तीर्थकरापेक्षया कथितम्। अतो द्विहस्तप्रमाणेन कूर्मापुत्रेण न विरोधः। ॥ सू० ९७ ॥

---

'जीवा णं भंते!' इत्यादि।

प्रश्न—(जीवा णं भंते! सिज्झमाणा कयरम्मि उच्चत्ते सिज्झंति?) हे भदंत! जो जीव सिद्ध होते है वे कितनी अवगाहना से सिद्ध होते है? उत्तर—(गोयमा! जहण्णेणं सत्तरयणीए उक्कोसेणं पंचधणुसइए सिज्झंति) हे गौतम! कम से कम ७ हाथ प्रमाणवाली अवगाहना से और उत्कृष्ट से ५०० धनुषकी अवगाहना से सिद्ध होते है। ४ हाथका एक धनुष होता है। जघन्य कथन तीर्थंकर की अपेक्षा से जानना चाहिये। अतः दो हाथकी अवगाहना वाले कूर्मीपुत्र से इसमें कोई विरोध नहीं आता है ॥सू. ९७॥

---

'जीवा णं भंते! ईत्यादि.

प्रश्न—(जीवा णं भंते! सिज्झमाणा कयरम्मि उच्चत्ते सिज्झंति?) હે ભદંત! જે જીવ સિદ્ધ થાય છે તે કેટલી અવગાહનાથી સિદ્ધ થાય છે? ઉત્તર—(गोयमा! जहण्णेणं सत्तरयणीए उक्कोसेणं पंचधणुसइए सिज्झंति) હે ગૌતમ! ઓછામા ઓછી ૭ હાથ-પ્રમાણવાળી અવગાહનાથી અને ઉત્કૃષ્ટથી (વધારેમા વધારે) ૫૦૦ ધનુષની અવગાહનાથી સિદ્ધ થાય છે. ૪ હાથનુ એક ધનુષ થાય છે. જઘન્ય કથન તીર્થંકરની અપેક્ષાએ જાણવું જોઈએ. આથી બે હાથની અવગાહનાવાળા કૂર્મીપુત્રથી આમા કોઈ વિરોધ આવતો નથી. (સૂ. ૯૭)

**मूलम्—जीवा णं भंते! सिज्झमाणा कयरम्मि आउए सिज्झंति? गोयमा! जहण्णेणं साइरेगट्ठवासाउए, उक्कोसेणं पुव्वकोडियाउए सिज्झंति ॥ सू० ९८ ॥**

टीका—गौतमः पृच्छति-'**जीवा णं भंते !**' इत्यादि । '**भंते !**' हे भदन्त ! '**जीवा णं सिज्झमाणा कयरम्मि आउए सिज्झंति ?**' जीवाः खलु सिध्यन्तः कतरस्मिन् आयुषि सिध्यन्ति ? भगवानाह-'**गोयमा !**' हे गौतम ! '**जहण्णेणं साइरेगट्ठवासाउए**' जघन्येन सातिरेकाऽऽष्टवर्षाऽयुषि, '**उक्कोसेणं**' उत्कर्षेण '**पुव्वकोडियाउए**' पूर्वकोट्यायुषि '**सिज्झंति**' सिध्यन्ति । पूर्व इति चतुरशीतिलक्षाणां चतुरशीतिलक्षैर्गुणने कृते या संख्योपलभ्यते तावत्संख्यकवर्षपरिमितः काल उच्यते ॥ सू० ९८ ॥

'**जीवा णं भंते**' इत्यादि ।

प्रश्न—(**जीवा णं भंते ! सिज्झमाणा कयरम्मि आउए सिज्झंति ?**) हे भदंत ! जो जीव सिद्ध होते है वे कितनी आयुवाले सिद्ध होते है ? अर्थात् कितनी आयु-तक के जीव सिद्धिगतिका लाभ कर सकते है ? उत्तर-(**गोयमा ! जहण्णेणं साइरेगट्ठवासाउए उक्कोसेणं पुव्वकोडियाउए सिज्झंति**) कम से कम आठ वर्ष से कुछ अधिक आयु वाले जीव सिद्ध हो सकते है और ज्यादा से ज्यादा एक पूर्वकोटि आयुवाले जीव सिद्ध हो सकते है। ८४००००० चौरासी लाख वर्षका पूर्वाङ्ग होता है और ८४००००० चौरासी लाख पूर्वाङ्गका एक पूर्व होता है ॥ सू. ९८ ॥

'जीवा णं भंते !' ઇત્યાદિ.

પ્રશ્ન—(जीवा णं भंते ! सिज्झमाणा कयरम्मि आउए सिज्झंति ?) હે ભદંત ! જે જીવ સિદ્ધ થાય છે તે કેટલી આયુષ્યવાળા સિદ્ધ થાય છે ? અર્થાત્ કેટલી આયુષ્ય સુધીના જીવ સિદ્ધિગતિનો લાભ કરી શકે છે? ઉત્તર—(गोयमा ! जहण्णेणं साइरेगट्ठवासाउए उक्कोसेणं पुव्वकोडियाउए सिज्झंति) ઓછામાં ઓછા ૮ વરસથી થોડી વધારે આયુ (ઉમર) વાળા જીવ સિદ્ધ થઇ શકે છે, અને વધારેમાં વધારે ૧ પૂર્વકોટી આયુષ્યવાળા જીવ સિદ્ધ થઈ શકે છે. ૮૪૦૦૦૦૦ ચોર્યાસી લાખ વર્ષનું એક પૂર્વાંગ થાય છે, અને ૮૪૦૦૦૦૦ ચોર્યાસી લાખ પૂર્વાંગનું એક પૂર્વ થાય છે. (સૂ. ૯૮)

मूलम्—अत्थि णं भंते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए अहे सिद्धा परिवसंति ? णो इणट्ठे समट्ठे ! एवं जाव अहे सत्तमाए ॥ सू० ९९ ॥

अत्थि णं भंते ! सोहम्मस्स कप्पस्स अहे सिद्धा परि-

---

टीका—'ते णं तत्थ सिद्धा हवंति'–इति पूर्वोक्तवचनात् यद्यपि लोकाग्रं सिद्धानां स्थानमिति निश्चीयते, तथापि मुग्धशिष्यस्य विविधलोकाग्रकल्पनानिराकरणार्थं लोकाग्र-स्वरूपं विशेषेण बोधयितुं च प्रश्नोत्तरसूत्रमाह–'अत्थि णं' इत्यादि। गौतमः पृच्छति–'अत्थि णं भंते !' अस्ति खलु भदन्त ! 'अत्थि णं' इति वाक्योपन्यासे, 'इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए अहे सिद्धा परिवसंति ?' अस्या रत्नप्रभायाः पृथिव्या अधः सिद्धाः परिवसन्ति किम् ?, भगवानुत्तरमाह–'णो इणट्ठे समट्ठे' नायमर्थः समर्थः, 'एवं जाव अहे सत्तमाए' एवं यावदधः सप्तम्याः, न परिवसन्तीत्यर्थः ॥ सू० ९९ ॥

टीका—'अत्थि णं' इत्यादि। गौतम पृच्छति– 'अत्थि णं भंते !' अस्ति खलु भदन्त ! 'सोहम्मस्स कप्पस्स अहे सिद्धा परिवसंति ?' सौधर्मस्य कल्पस्याऽध सिद्धाः परिवसन्ति किम् ? भगवानाह–' णो इणट्ठे समट्ठे' नायमर्थः समर्थः ! 'एवं सव्वेसिं

---

'अत्थि णं भंते !' इत्यादि।

प्रश्न–(अत्थि णं भंते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए अहे सिद्धा परिवसंति ?) हे भदंत ! क्या सिद्ध भगवान् इस रत्नप्रभा पृथिवी के नीचे रहते हैं ? उत्तर–हे गौतम ! (णो इणट्ठे समट्ठे) यह अर्थ समर्थ नहीं है, अर्थात्–रत्नप्रभा पृथिवी के नीचे सिद्ध नहीं रहते हैं। (एवं जाव अहे सत्तमाए) इसी प्रकार शर्कराप्रभासे लेकर तमंतमा तक के नीचे भी सिद्ध नहीं रहते है, क्यो कि ये सभी नरकलोक है ॥ सू० ९९ ॥

---

'अत्थि णं भंते !' ઇત્યાદિ.

પ્રશ્ન—( अत्थि णं भंते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए अहे सिद्धा परिवसंति ?) હે ભદંત ! શું સિદ્ધ ભગવાન આ રત્નપ્રભા પૃથિવીની નીચે રહે છે ? ઉત્તર–હે ગૌતમ ! ( णो इणट्ठे समट्ठे ) આ અર્થ સમર્થ નથી, અર્થાત્–રત્નપ્રભા પૃથિવીની નીચે સિદ્ધ રહેતા નથી. ( एवं जाव अहे सत्तमाए ) આ પ્રકારે શર્કરાપ્રભાથી લઇને તમતમા સુધીની નીચે પણ સિદ્ધ રહેતા નથી. કેમકે આ બધા નરકલોક છે. ( સૂ૦ ૯૯ )

वसंति ? णो इणट्ठे समट्ठे ! एवं सव्वेसिं पुच्छा, ईसाणस्स सणंकुमारस्स जाव अच्चुयस्स गेवेज्जविमाणाणं अणुत्तरविमाणाणं ॥ सू० १०० ॥

मूलम्—अत्थि णं भंते ! ईसीपब्भाराए पुढवीए अहे सिद्धा परिवसंति ?, णो इणट्ठे समट्ठे ॥ सू० १०१ ॥

---

पुच्छा' एवं सर्वेषां पृच्छा, 'ईसाणस्स सणंकुमारस्स जाव अच्चुयस्स गेवेज्जविमाणाणं अणुत्तरविमाणाणं' ईशानस्य सनत्कुमारस्य यावत्-अच्युतस्य ग्रैवेयकविमानानाम्, अनुत्तरविमानानाम् ॥ सू० १०० ॥

टीका- 'अत्थि' इत्यादि । गौतमः पृच्छति-'अत्थि णं भंते !' अस्ति खलु

---

'अत्थि णं भंते !' इत्यादि ।

प्रश्न-(भंते !) हे भदंत ! (अत्थि णं सोहम्मस्स कप्पस्स अहे सिद्धा परिवसंति) क्या सिद्ध भगवान् सौधर्म कल्प के नीचे रहते है ? उत्तर-(गोयमा !) हे गौतम ! (णो इणट्ठे समट्ठे) यह अर्थ समर्थ नहीं है। (एवं सव्वेसिं पुच्छा ईसाणस्स सणंकुमारस्स जाव अच्चुयस्स गेवेज्जविमाणाणं अणुत्तरविमाणाणं) इसी तरह गौतम की पृच्छा, ईशान, सनत्कुमार आदि से लेकर अच्युत देवलोक तक के ग्रैवेयक विमानो एवं अनुत्तरविमानो के विषय में भी जाननी चाहिये, और प्रभु का निषेधात्मक उत्तर भी इसी प्रकार समझ लेना चाहिये ॥ सू० १०० ॥

---

'अत्थि णं भंते !' ઇત્યાદિ.

પ્રશ્ન—( भंते ! ) હે ભદંત ! ( अत्थि णं सोहम्मस्स कप्पस्स अहे सिद्धा परिवसंति ) શું સિદ્ધ ભગવાન સૌધર્મકલ્પની નીચે રહે છે ? ઉત્તર-(गोयमा !) હે ગૌતમ ! ( णो इणट्ठे समट्ठे ) આ અર્થ સમર્થ નથી. ( एवं सव्वेसि पुच्छा ईसाणस्स सणंकुमारस्स जाव अच्चुयस्स गेवेज्जविमाणाणं अणुत्तरविमाणाणं) એવી રીતે ગૌતમના પ્રશ્નો ઇશાન, સનત્કુમાર આદિથી લઇને અચ્યુત દેવલોક સુધીના ગ્રૈવેયક વિમાનો તેમજ અનુત્તર વિમાનોના પણ જાણવા જોઇએ, અને પ્રભુના નિષેધાત્મક ઉત્તરો પણ એજ પ્રકારે સમજી લેવા જોઈએ. ( સૂ૦ ૧૦૦ )

मूलम्—से कहिं खाइ णं भंते ! सिद्धा परिवसंति ?। गोयमा ! इमीसे रयणप्पहाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ

भदन्त ! 'ईसीपब्भाराए' ईषत्प्राग्भाराया:—ईषत्=अल्पः प्राग्भारो=महत्त्वं यस्या सा तथा तस्याः—सिद्धशिलाया: 'पुढवीए' पृथिव्या 'अहे' अधः 'सिद्धा परिवसंति ?' सिद्धाः परिवसन्ति किम् ?, भगवानाह—'णो इणट्ठे समट्ठे' नाऽयमर्थः समर्थः ॥ सू० १०१ ॥

टीका—'से कहिं' इत्यादि। गौतमःपृच्छति—'से कहिं खाइ णं भंते ! सिद्धा परिवसंति ?' अथ कस्मिन् पुनः खलु भदन्त ! सिद्धाः परिवसन्ति ? 'खाइं' इतिदेशीय. शब्दः पुनरर्थवाचकः। भगवानाह—'गोयमा !' हे गौतम ! 'इमीसे रयणप्पहाए पुढवीए'

'अत्थि णं भंते !' इत्यादि।

प्रश्न—(भंते !) हे भदंत ! (अत्थि णं ईसीपब्भाराए पुढवीए अहे सिद्धा परिवसंति ?) क्या सिद्ध भगवान् ईषत्प्राग्भारा—सिद्धशिला के नीचे रहते हैं ? उत्तर—हे गौतम ! (णो इणट्ठे समट्ठे) यह अर्थ समर्थ नहीं है ॥ सू० १०१ ॥

'से कहिं खाइ णं' इत्यादि।

गौतम ने पुनः प्रभु से पूछा—(भंते !) हे भदंत ! (से कहिं खाइ[1] णं सिद्धा परिवसंति) सिद्ध लोग इन पूर्वोक्त स्थानों में नहीं रहते तो फिर वे कहाँ रहते हैं ? तब प्रभु ने कहा—(गोयमा !) हे गौतम ! (इमीसे रयणप्पहाए पुढवीए) इस रत्नप्रभापृथिवी

१—'खाइ' यह देशीय शब्द है, यह 'पुनः' शब्द के अर्थ का द्योतक है। 'णं' शब्द वाक्यालंकार में प्रयुक्त हुआ है।

'अत्थि णं भंते !' ઇત્યાદિ.

પ્રશ્ન—(भंते !) હે ભદંત ! (अत्थि णं ईसीपब्भाराए पुढवीए अहे सिद्धा परिवसंति) શું સિદ્ધ ભગવાન્ ઇષત્પ્રાગ્ભારા—સિદ્ધશિલાની નીચે રહે છે ? ઉત્તર—હે ગૌતમ ! (णो इणट्ठे समट्ठे) આ અર્થ સમર્થ નથી. (સૂ૦ ૧૦૧)

'से कहि खाइ णं' ઇત્યાદિ.

ગૌતમે ફરીને પ્રભુને પૂછ્યું—(भंते !) હે ભદંત ! (से कहि खाइ[1] णं सिद्धा परिवसंति) સિદ્ધ લોક આ પૂર્વોક્ત સ્થાનોમાં નથી રહેતા તો પછી તેઓ ક્યાં રહે છે ? ત્યારે પ્રભુએ કહ્યું—(गोयमा !) હે ગૌતમ ! (इमीसे

૧—'खाइ' એ શબ્દ દેશી શબ્દ છે, આ શબ્દ 'पुनः' શબ્દના અર્થનો સૂચક છે. 'णं' શબ્દ વાક્યાલંકારમાં છે.

भूमिभागाओ उड्ढं चंदिमसूरियग्गहगणणक्खत्तताराभवणाओ बहूइं जोयणाइं, बहूइं जोयणसयाइं, बहूइं जोयणसहस्साइं, बहूइं जोयणसयसहस्साइं, बहूओ जोयणकोडीओ, बहूओ जोयणकोडाकोडीओ उड्ढतरं उप्पइत्ता सोहम्मी-साण-सणंकुमार-

---

अस्या रत्नप्रभायाः पृथिव्याः 'बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ' बहुसमरमणीयाद् भूमिभागात् 'उड्ढं' ऊर्ध्वं 'चंदिम-सूरिय-ग्गहगण-णक्खत्त-ताराभवणाओ' चन्द्र-सूर्य-ग्रहगण-नक्षत्र-ताराभवनात् 'बहूइं जोयणाइं' बहूनि योजनानि, 'बहूइं जोयणसयाइं' बहूनि योजनशतानि, 'बहूइं जोयणसहस्साइं' बहूनि योजनसहस्राणि, 'बहूइं जोयणसयसहस्साइं' बहूनि योजनशतसहस्राणि, 'बहूओ जोयणकोडीओ' बह्व्यो योजनकोट्यः 'बहूओ जोयणकोडीकोडीओ' बह्व्यो योजनकोटिकोट्यः 'उड्ढतरं उप्पइत्ता' ऊर्ध्वतरमुत्पत्य 'सोहम्मी-साण-सणंकुमार-माहिंद-बंभ-लंतग-महासुक्क-सहस्सार-आणय-पाणय-आरण-अच्चुए' सौधर्मे-शान-सनत्कुमार-माहेन्द्र-ब्रह्म-लान्तक-महाशुक्र-

---

के (बहुसमरणिज्जाओ भूमिभागाओ) बहुसमरमणीय भूमिभाग से (उड्ढं) ऊँचे-ऊपर (चंदिम-सूरिय-ग्गहगण-णक्खत्त-ताराभवणाओ) चंद्रमा, सूर्य, ग्रह, नक्षत्र एवं ताराओं के भवनों से (बहूइं जोयणाइं बहूइं जोयणसयाइं बहूइं जोयणसहस्साइं बहूइं जोयणसयसहस्साइं बहूओ जोयणकोडीओ बहूओ जोयणकोडीकोडीओ) बहुत योजन, बहुत सैकड़ों योजन, बहुत हजारों योजन, बहुत लाखों योजन, बहुत करोडो योजन एवं अनेक कोटाकोटी योजन (उड्ढतरं उप्पइत्ता) ऊपर जाने पर (सोहम्मी-साण-सणंकुमार-माहिंद-बंभ-लंतग-महासुक्क-सहस्सार-आणय-पाणय-आरण-अच्चुए तिण्णि य अट्ठारे गेविज्ज-

---

रयणप्पहाए पुढवीए) આ રત્નપ્રભા પૃથિવીના (बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ) બહુસમરમણીય ભૂમિભાગથી (उड्ढं) ઉંચે-ઉપર (चंदिमसूरियगहगणणक्खत्तताराभवणाओ) ચંદ્રમા, સૂર્ય, ગ્રહ, નક્ષત્ર તેમજ તારાઓનાં ભવનોથી (बहूइं जोयणसयाइं बहूइं जोयणसहस्साइं बहूइं जोयणसयसहस्साइं बहूओ जोयणकोडीओ बहूओ जोयणकोडीकोडीओ) ઘણા લાખો યોજન, ઘણા સેકડો યોજન, હજારો યોજન, ઘણા લાખો યોજન, ઘણા કરોડો યોજન તેમજ અનેક કોટાકોટી યોજન (उड्ढतरं उप्पइत्ता) ઉપર જતાં (सोहम्मी-साण-सणंकुमार-माहिंद-बंभ-लंतग-महासुक्क-सहस्सार-आणय-पाणय-आरण-अच्चुए

माहिंद-बंभ-लंतग-महासुक्क-सहस्सार-आणय-पाणय-आरण-अच्चुए तिण्णि य अट्ठारे गेविज्जविमाणावाससए वीईवइत्ता विजय-वेजयंत-जयंत-अपराजिय-सव्वट्ठसिद्धस्स य महाविमाणस्स सव्वउवरिल्लाओ थूभियग्गाओ दुवालसजोयणाइं अबाहाए एत्थ णं ईसीपब्भारा णाम पुढवी पण्णत्ता, पणयालीसं जो-

---

सहस्रारा-ऽऽनत-प्राणताऽऽ-रणाऽच्युतानि, 'तिण्णि य अट्ठारे गेविज्जविमाणावाससए' त्रीणि च अष्टादश ग्रैवेयविमानावासशतानि-ग्रैवयकविमानावासानाम् अष्टादशाधिकशतत्रयं 'वीईवइत्ता' व्यतिव्रज्य=व्यतीत्य-उल्लङ्घ्य, तत्र- प्रथमत्रिकस्य एकादशाधिकशतं (१११), द्वितीय-त्रिकस्य सप्तोत्तरशतं (१०७), तृतीयत्रिकस्य शतं (१००) ग्रैवेयकविमानावासान् व्यतिक्रम्येत्यर्थः। 'विजय-वेजयंत-जयंत-अपराजिय-सव्वट्ठसिद्धस्स य महाविमाणस्स' विजय-वैजयन्त-जयन्ताऽ-पराजित-सर्वार्थसिद्धस्य च महाविमानस्य 'सव्व-उवरिल्लाओ' सर्वोपरितनात्, 'थूभियग्गाओ' स्तूपिकाग्रात्=शिखराग्रभागात् 'दुवालस

---

विमाणावाससए ) सौधर्म, ईशान, सनत्कुमार, माहेन्द्र, ब्रह्म, लान्तक, महाशुक्र, सहस्रार, आनत, प्राणत, आरण, अच्युत ये १२ देवलोक, एवं प्रथमत्रिक के १११, दूसरे त्रिकके १०७, एवं तीसरे त्रिकके १०० इस प्रकार तीनसौ अठारह ग्रैवेयक विमानों को (वीईवइत्ता) पार करने के बाद जो ( विजय-वेजयंत-जयंत-अपराजिय-सव्वट्ठसिद्धस्स य महाविमाणस्स सव्वउवरिल्लाओ थूभियग्गाओ ) विजय, वैजयन्त, जयंत, अपराजित एवं सर्वार्थसिद्ध ये पांच अनुत्तर विमान आते है, इन महाविमानों के शिखर के अग्र-

---

तिण्णि य अट्ठारे गेविज्जविमाणावाससए ) સૌધર્મ, ઈશાન, સનત્કુમાર, માહેન્દ્ર, બ્રહ્મ, લાંતક, મહાશુક્ર, સહસ્રાર, આનત, પ્રાણત, આરણ, અચ્યુત આ ૧૨ દેવલોક, તેમજ પ્રથમ ત્રિકનાં ૧૧૧, બીજા ત્રિકના ૧૦૭, તેમજ ત્રીજા ત્રિકનાં ૧૦૦, એ રીતે ત્રણસો અઢાર (૩૧૮) ગ્રૈવેયક વિમાનોને (वीईवइत्ता) પાર કર્યા પછી જે (विजय-वेजयंत-जयंत-अपराजिय-सव्वट्ठसिद्धस्स य महाविमाणस्स सव्वउवरिल्लाओ थूभियग्गाओ )વિજય, વૈજયન્ત, જયંત, અપરાજિત, તેમજ સર્વાર્થસિદ્ધ એ પાંચ અનુત્તર વિમાન આવે છે, એ મહાવિમાનના શિખરના અગ્રભાગથી ( दुवालसजोयणाइं अबाहाए) ૧૨ યોજન દૂર જતાં

यणसयसहस्साइं आयामविक्खंभेणं, एगा जोयणकोडी बायालीसं च सयसहस्साइं तीसं च सहस्साइं दोण्णि य अउणापण्णे जोयणसए किंचिविसेसाहिए परिरएणं ॥ सू० १०२ ॥

मूलम्—ईसीपब्भाराए णं पुढवीए बहुमज्झदेसभाए

जोयणाइं' द्वादश योजनानि 'अबाहाए' अबाधया=अन्तरेण-दूरेण ततोऽप्युपरीत्यर्थः, 'एत्थ णं' अत्र खलु 'ईसीपब्भारा णाम' ईषत्प्राग्भारा=सिद्धशिला नाम 'पुढवी पण्णत्ता' पृथिवी प्रज्ञप्ता, 'पणयालीसं जोयणसयसहस्साइं आयामविक्खंभेणं' पञ्चचत्वारिंशत् योजनशतसहस्राणि आयामविष्कम्भेण—आयामेन विष्कम्भेण च, 'एगा जोयणकोडी' एका योजनकोटिः 'बायालीसं च' द्वाचत्वारिंशच्च 'सयसहस्साइं' शतसहस्राणि 'तीसं च सहस्साइं' त्रिंशच्च सहस्राणि, 'दोण्णि य अउणापण्णे जोयणसए' द्वे चैकोनपञ्चाशे योजनशते, 'किंचि विसेसाहिए' किञ्चिद्विशेषाधिके 'परिरयेणं' परिरयेण=परिधिना ॥ सू० १०२ ॥

टीका—'ईसीपब्भाराए' इत्यादि। 'ईसीपब्भाराए णं पुढवीए' ईषत्प्राग्भारायाः खलु पृथिव्या 'बहुमज्झदेसभाए अट्ठजोयणिए खेत्ते अट्ठ जोयणाइं बाहल्लेणं'

भाग से (दुवालस जोयणाइं अबाहाए) बारह योजन दूर जाने पर, अर्थात् इन पांच अनुत्तर विमानोंके शिखरों के अग्रभाग से १२ योजन ऊपर (एत्थ णं ईसीपब्भारा णाम पुढवी पण्णत्ता) ईषत्प्राग्भारा पृथिवी अर्थात् सिद्धशिला है। (पणयालीसं जोयणसय-सहस्साइं आयामविक्खंभेणं, एगा जोयणकोडी बायालीसं च सयसहस्साइं तीसं च सहस्साइं दोण्णि य अउणापण्णे जोयणसए किंचि विसेसाहिए पडिरएणं) यह पैंतालीस लाख योजनकी लंबी-चौड़ी और एक करोड बयालीस लाख, तीन हजार, दो सौ उंचास योजन से कुछ अधिक परिधिवाली है ॥ सू. १०२ ॥

અર્થાત એ પાંચ અનુત્તરવિમાનોનાં અગ્રભાગથી ૧૨ યોજન ઉપર (एत्थ णं ईसीपब्भारा णाम पुढवी पण्णत्ता) ઈષત્પ્રાગ્ભારા પૃથિવી-અર્થાત્ સિદ્ધશિલા છે. (पणयालीसं च जोयणसयसहस्साइं आयामविक्खंभेणं, एगा जोयणकोडी बायालीसं च सयसहस्साइं, तीसं च सहस्साइं, दोण्णि य अउणापण्णे जोयणसए किंचि विसेसाहिए पडिरएणं) આ પીસ્તાલીસ લાખ યોજનની લાંબી-પહોળી અને એક કરોડ બેતાલીસ લાખ ત્રીસ હજાર બસો ઓગણપચાસ યોજનથી જરા વધારે પરિધિવાળી છે. (સૂ૦ ૧૦૨)

अट्ठजोयणिए खेत्ते अट्ठ जोयणाइं बाहल्लेणं, तयाणंतरं च णं मायाए२ परिहायमाणी २ सव्वेसु चरिमपेरंतेसु मच्छियपत्ताओ तणुयतरा अंगुलस्स असंखेज्जइभागं बाहल्लेणं पण्णत्ता ॥ सू० १०३ ॥

---

बहुमध्यदेशभागेऽष्टयोजनिकं क्षेत्रम् अष्ट योजनानि बाहल्येन, 'तयाणंतरं च णं' तदनन्तरञ्च खलु 'मायाए' २ मात्रया २ 'परिहायमाणी' २ परिहीयमाना २ 'सव्वेसु चरिमपेरंतेसु' सर्वेषु चरमप्रान्तेषु 'मच्छियपत्ताओ तणुयतरा' मक्षिकापक्षात्तनुकतरा 'अंगुलस्स असंखेज्जइभागं' अङ्गुलस्याऽसङ्ख्येयभागं 'बाहल्लेणं' बाहल्येन 'पण्णत्ता' प्रज्ञप्ता ॥ सू० १०३ ॥

---

'इसीपब्भाराए णं पुढवीए' इत्यादि।

इस (इसीपब्भाराए णं पुढवीए) ईषत्प्रागभारा पृथिवीका अर्थात् सिद्धशिलाका (बहुमज्झदेसभाए अट्ठजोइणिए खेत्ते) जो बहुमध्यदेशभागस्थित आठ योजनका क्षेत्र है, उसका (अट्ठजोयणाइं बाहल्लेणं) आठ योजन बाहल्य है, अर्थात् सिद्धशिला बीच में आठ योजन जाड़ी है। (तयाणंतरं च णं मायाए २ परिहायमाणी २) उस मध्यभाग से क्रमशः कम होती हुई यह (सव्वेसु चरिमपेरंतेसु) सभी चरम प्रदेशों में (मच्छियपत्ताओ तणुयतरा) मक्खी के पाख से भी अधिक पतली है, (अंगुलस्स असंखेज्जइभागं बाहल्लेणं पण्णत्ता) अतः यह बारीकी में अंगुल के असख्यातवे भाग जाननी चाहिये ॥ सू. १०३ ॥

---

'ईसीपब्भाराए णं पुढवीए' ઇત્યાદિ.

આ (ईसीपब्भाराए णं पुढवीए) ઇષત્પ્રાગ્ભારા પૃથિવીના, અર્થાત્ સિદ્ધશિલાના (बहुमज्झदेसभाए अट्ठजोयणिए खेत्ते) બહુ-મધ્યદેશ-ભાગમાં રહેલું જે આઠ યોજન પ્રમાણવાળું ક્ષેત્ર છે, તેનાં (अट्ठजोयणाइं बाहल्लेणं) આઠ યોજન બાહલ્ય છે, અર્થાત્ સિદ્ધશિલા વચમાં આઠ યોજન જાડી છે. (तयाणंतरं च णं मायाए २ परिहायमाणी २) તે મધ્યભાગથી ક્રમશઃ ધીમે-ધીમે ઓછી થતાં થતાં આ, (सव्वेसु चरिमपेरंतेसु) બધા ચરમ પ્રદેશોમા (मच्छियपत्ताओ तणुयतरा) માખીની પાંખથી પણ વધારે પાતળી છે. (अंगुलस्स असंखेज्जइभागं बाहल्लेणं पण्णत्ता) આમ તે બારીકાઈમાં આંગળીના અસંખ્યાતમા ભાગની જાણવી જોઇએ. (સૂ० १०३)

मूलम्——ईसीपब्भाराए णं पुढवीए दुवालस णामधेज्जा पण्णत्ता, तं जहा—ईसीइ वा ईसीपब्भाराइ वा तणूइ वा तणुतणूइ वा सिद्धीइ वा सिद्धालएइ वा मुत्तीइ वा मुत्तालएइ वा लोयग्गेइ वा लोयग्गथूभिगाइ वा लोयग्गपडिबुज्झणाइ वा सव्व—पाण—भूय—जीव—सत्त—सुहावहाइ वा ॥ सू० १०४ ॥

टीका——'ईसीपब्भाराए' इत्यादि । 'ईसीपब्भाराए णं पुढवीए दुवालस णामधेज्जा पण्णत्ता' ईषत्प्राग्भाराया खलु पृथिव्या द्वादश नामधेयानि प्रज्ञप्तानि, 'तं जहा' तद्यथा—'ईसीइ वा' ईषत् इति वा१, 'ईसीपब्भाराइ वा' ईषत्प्राग्भारा इति वा२, 'तणूइ वा' तनुरिति वा३, 'तणुतणूइ वा' तनुतनुरिति वा४, 'सिद्धीइ वा' सिद्धिरिति वा५, 'सिद्धालएइ वा' सिद्धालय इति वा ६, 'मुत्तीइ वा' मुक्तिरिति वा ७, 'मुत्तालएइ वा' मुक्तालय इति वा ८, 'लोयग्गेइ वा' लोकाग्रमिति वा ९, 'लोयग्गथूभिगाइ वा' लोकाग्रस्तूपिकेति वा १०, 'लोयग्गपडिबुज्झणाइ वा' लोकाग्रप्रतिबोधनेति वा ११; 'सव्व—पाण—भूय—जीव—सत्त—सुहावहाइ वा' सर्व—प्राण—भूत—जीव—सत्त्व—सुखावहेति वा १२ ॥ सू० १०४ ॥

'ईसीपब्भाराए णं पुढवीए' इत्यादि ।

(ईसीपब्भाराए णं पुढवीए दुवालस णामधेज्जा भवंति) ईषत्प्रागभारा पृथिवी के १२ नाम हैं, (तं जहा) जैसे-१—(ईसीइ वा) ईषत्, २—(ईसीपब्भाराइ वा) ईषत्प्राग्भारा, ३—(तणूइ वा) तनु, ४—(तणुतणू इ वा) तनुतनु, ५—(सिद्धी इ वा) सिद्धि, ६—(सिद्धालए इ वा) सिद्धालय, ७—(मुत्ती इ वा) मुक्ति, ८—(मुत्तालए इ वा) मुक्तालय, ९—(लोयग्गे इ वा) लोकाग्र, १०—(लोयग्गथूभिगा इ वा) लोकाग्रस्तूपिका, ११—(लोयग्गपडिबुज्झणा

'ईसीपब्भाराए णं पुढवीए' ઇત્યાદિ.

( ईसीपब्भाराए णं पुढवीए दुवालस णामधेज्जा पण्णत्ता ) આ ઇષત્પ્રાગ્ભારા પૃથિવીના ૧૨ નામો છે, ( तं जहा ) જેમકે ૧—(ईसी इ वा) ઇષત્, ૨—(ईसीपब्भारा इ वा) ઇષત્પ્રાગ્ભારા, ૩—(तणू इ वा) તનુ, ૪—(तणुतणू इ वा) તનુતનુ, ૫—(सिद्धी इ वा) સિદ્ધિ, ૬—(सिद्धालए इ वा) સિદ્ધાલય, ૭—(मुत्ती इ वा) મુક્તિ, ૮—(मुत्तालए इ वा) મુક્તાલય, ૯—(लोयग्गे इ वा) લોકાગ્ર, ૧૦—(लोयग्गथूभिगा इ वा) લોકાગ્રસ્તૂપિકા, ૧૧—(लोयग्गपडिबुज्झणा इ वा) લોકાગ્રપ્રતિબોધના, ૧૨—(सव्व—पाण

मूलम्—ईसीपब्भारा णं पुढवी सेया संखतल–विमल–सोल्लिय–मुणाल–दगरय–तुसार–गोक्खीर–हार–वण्णा उत्ताणय–छत्त–संठाण–संठिया सव्वज्जुणसुव्वण्णयमई अच्छा सण्हा

टीका—'ईसीपब्भारा' इत्यादि। 'ईसीपब्भारा णं पुढवी' ईषत्प्राग्भारा खलु पृथिवी 'सेया' श्वेता 'संखतल–विमल–सोल्लिय–मुणाल–दगरय–तुसार–गोक्खीर–हार–वण्णा' शङ्खतल-विमल-शौल्य-मृणाल-दकरज-स्तुषार-गोक्षीर-हार-वर्णा—तत्र—शङ्खतलं=शङ्खस्याधस्तनो भाग, विमलं=निर्मलं शौल्यं=श्वेतकुसुमविशेष, मृणालं=कमलस्य कन्दः, तुषार'=हिमं—'बर्फ' इति प्रसिद्धम्, हार'=मुक्ताहार', शङ्खादिहारान्तानां वर्ण इव वर्णो यस्याः सा तथा, 'उत्ताणय-छत्त–संठाण–संठिया' उत्तानकच्छत्र–संस्थान–संस्थिता—उत्तानकम्=ऊर्ध्वमुखं—विस्फारित यत् छत्रं तस्य संस्थानमिव संस्थानं तेन संस्थिता=युक्ता, 'सव्वज्जुण–

इ वा) लोकग्रप्रतिबोधना, १२–(सव्व–पाण–भूय–जीव–सत्त–सुहावहा इ वा) सर्वप्राणभूतजीवसत्त्वसुखावहा॥ सू० १४ ॥

'ईसीपब्भारा णं पुढवी' इत्यादि।

(ईसीपब्भारा णं पुढवी) यह ईषत्प्राग्भारा नामकी पृथिवी (सेया) सफेद है। इसकी उज्ज्वलता (संखतल-विमल-सोल्लिय मुणाल दगरय–तुसार-गोक्खीर-हार–वण्णा) शंख के तलभागके समान, शुभ्रपुष्पके समान, मृणालके समान, कमलके समान, पानीकी बिन्दुओं के समान, बर्फ के समान, दुग्ध के समान, एवं मुक्ताहार के समान है। ये सब चीजे जिस प्रकार शुभ्र होती है उसी प्रकार यह भी शुभ्र है। (उत्ताणय–छत्त–संठाण–संठिया) शिर पर ताने हुए छत्र के समान इसका आकार है। (सव्वज्जुण–सुवण्णयमई

–भूय–जीव–सत्त–सुहावहा इ वा) सर्व-प्राणु-भूत-જીવ-સત્ત્વ-સુખાવહા. (સૂ० १०४)

'ईसीपब्भारा णं पुढवी' ઇત્યાદિ.

( ईसीपब्भारा णं पुढवी ) આ ઇષત્પ્રાગ્ભારા પૃથિવી ( सेया ) સફેદ છે. તેની ઉજ્જવળતા ( संखतल–विमल–सोल्लिय–मुणाल–दगरय–तुसार–गोक्खीर–हार–वण्णा ) શંખના તળીયાંના ભાગ જેવી ઉજ્જવળ, શુભ્ર પુષ્પ સમાન, કમલના મૃણાલ જેવી, પાણીનાં બિંદુઓના જેવી, બરફના જેવી, દૂધના જેવી, તેમજ મોતીના હાર જેવી ઉજ્જવળ છે. આ બધી ચીજો જેવી શુભ્ર ( ધોળી ) હોય છે તેવીજ રીતે આ પણ શુભ્ર છે. ( उत्ताणय–छत्त–संठाण–संठिया ) શિર ઉપર ઓઢેલાં છત્ર સમાન તેનો આકાર છે. ( सव्वज्जुण–

**लण्हा घट्ठा मट्ठा णीरया णिम्मला णिप्पंका णिक्कंकडच्छाया समरीचिया सुप्पभा पासादीया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा ॥ सू० १०५ ॥**

**सुवण्णयमई'** सर्वार्जुनसुवर्णकमयी–सर्वेण=सर्वावयवावच्छेदेन अर्जुनसुवर्णकमयी=श्वेतकाञ्चनमयी, तथा–**'अच्छा'** अच्छा आकाशस्फटिकवत्, **'सण्हा'** श्लक्ष्णा=शुभपरमाणुस्कन्धरचिततया श्लक्ष्णा–सूक्ष्मतन्तुनिर्मितवस्त्रवत् सूक्ष्मा, **'लण्हा'** श्लक्ष्णा–घुण्टितवस्त्रवन्मसृणा, **'लट्ठा'** लष्टा=सुन्दराकृतिका, **'घट्ठा'** घृष्टा=घृष्टेव–खरशाणया शोधितपाषाणवत्, **'मट्ठा'** मृष्टा=मृष्टेव–कोमलशाणया शोधितपाषाणवत्, **'णीरया'** नीरजाः, **'णिम्मला'** निर्मला, **'णिप्पंका'** निष्पङ्का=कर्दमरहिता, **'णिक्कंकडच्छाया'** निष्कङ्कटच्छाया=आवरणरहिता **'समरीचिया'** समरीचिका=किरणसमूहयुक्ता, **'सुप्पभा'** सुप्रभा=शोभासम्पन्ना, **'पासाईया'** प्रासादीया–प्रसादः=प्रमोदः स एव प्रासादः, स प्रयोजनं यस्याः सा तथा, **'दरिसणिज्जा'** दर्शनीया–दर्शनाय हिता, तां पश्यच्चक्षुर्न श्राम्यतीत्यर्थः, **'अभिरूवा'** अभिरूपा=

---

**अच्छा सण्हा लण्हा घट्ठा मट्ठा णीरया णिम्मला णिप्पंका णिक्कंकडच्छाया समरीचिया सुप्पभा पासादीया, दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा)** तथा–यह सपूर्ण श्वेतकांचनमय है, आकाश एवं स्फटिक के समान स्वच्छ है, शुद्धपरमाणुस्कन्धो से रचित होने के कारण सूक्ष्मतन्तुओं से निर्मित वस्त्र के समान सूक्ष्म है, घुटे हुए वस्त्र के समान चिकनी है, घृष्ट है–खर शाण से घिसे हुए पत्थर के जैसी है, मृष्ट है, अर्थात्–कोमलशाण से घिसे हुए पत्थर के समान चिकनी है। नीरज–निर्मल है। कर्दमरहित है। आवरणरहित है। किरणों के समुदाय से सुरम्य है। शोभासे संपन्न है। प्रमोद प्रदान करने वाली है। दर्शनीय है।

---

सुवण्णयमई अच्छा सण्हा लण्हा घट्ठा मट्ठा णीरया णिम्मला णिप्पंका णिक्कंकडच्छाया समरीचिया सुप्पभा पासादीया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा) तथा એ સંપૂર્ણ શ્વેત કાંચનમય છે, આકાશ તેમજ સ્ફટિકના સમાન સ્વચ્છ છે. શુદ્ધ પરમાણુસ્કંધોથી નિર્મિત હોવાને કારણે સૂક્ષ્મતંતુઓથી નિર્મિત વસ્ત્ર-સમાન સૂક્ષ્મ છે, ઘુંટિત–માંડ વિગેરેથી ઘસાયેલા વસ્ત્રની માફક ચીકણી છે, ઘૃષ્ટ છે–ખરશાણુથી ઘસાયેલા પત્થરના જેવી છે, મૃષ્ટ છે—અર્થાત્ કોમળશાણુથી ઘસેલા પત્થરના જેવી ચીકણી છે, નીરજ–નિર્મળ છે, કર્દમ (કાદવ) થી રહિત છે, શોભા–સંપન્ન છે, પ્રમોદ (આનંદ) આપવા વાળી છે, દર્શનીય છે, એને જોવાવાળાનાં નેત્ર એને જોતા જોતાં ધરાતાંજ નથી, એ

**मूलम्—ईसीपब्भराए णं पुढवीए सेयाए जोयणंमि लोगंते। तस्स जोयणस्स जे से उवरिल्ले गाउए, तस्स णं गाउयस्स जे से उवरिल्ले छब्भागे, तत्थ णं सिद्धा भगवंतो सादिया**

कमनीया, 'पडिरूवा' प्रतिरूपा—दर्शने प्रतिक्षणं नव नवमिव प्रतिभासमानं रूपं यस्याः सा तथा ॥ सू० १०५ ॥

**टीका—'ईसीपब्भाराए'** इत्यादि। **'ईसीपब्भराए णं'** ईषत्प्राग्भारायाः=सिद्धशिलायाः खलु **'पुढवीए सेयाए'** पृथिव्या श्वेतायाः **'जोयणंमि लोगंते'** योजने लोकान्त=योजनपरिमित क्षेत्रमुपरि गत्वा लोकान्तो वर्त्तते। अत्र योजनम्—उत्सेधाङ्गुलयोजनं ग्राह्यम्, तदीयस्यैव हि क्रोशषड्भागस्य सत्रिभागत्रयस्त्रिंशदधिकधनुःशतत्रयीप्रमाणत्वादिति। **'तस्स जोयणस्स'** तस्य योजनस्य, **'जे से'** य स **'उवरिल्ले'** उपरितनः **'गाउए'** देशीयोऽयं शब्दः क्रोशार्थे, स च द्विसहस्रधनुःप्रमाणं क्षेत्रम्, उक्तं च—**" चउहत्थं पुण धनुहं दुन्नि सहस्साइ गाउयं तेसिं "** ॥ इति। **'तस्स णं'** तस्य खलु **'गाउयस्स'** क्रोशस्य, **'जे से उवरिल्ले'** यः स उपरितनः **'छब्भाए'** षड्भागः=षष्ठो भाग, **'तत्थ णं सिद्धा भगवंतो**

इसे देखने वालों के नेत्र इसे देखते २ थकते नहीं है। यह बड़ी ही कमनीय है। इसे ज्यों ज्यों देखा जाता है त्यों २ यह नवीन२ जैसी प्रतीत होती है ॥ सू० १०५ ॥

**'ईसीपब्भाराए णं पुढवीए'** इत्यादि।

इस **(ईसीपब्भाराए णं पुढवीए सेयाए)** शुभ्र ईषत्प्राग्भारा पृथिवी से **(जोयणमि)** ऊपर १ योजन में **(लोगंते)** लोक का अंत है। **(तस्स जोयणस्स जे से उवरिल्ले गाउए, तस्स णं गाउयस्स जे से उवरिल्ले छब्भागे, तत्थ णं सिद्धा भगवंतो सादिया अपज्जवसिया)** उस योजनपरिमित लोक के अत मे ३३३ धनुष और ३२ अगुल जितनी जगह रही है, उसमें अर्थात् उस योजन के ऊपर के कोस के छठवे भाग में सिद्ध भगवान्

બહુ જ કમનીય છે, તેને જેમ જેમ જોવાય તેમ તેમ તે નવીન નવીન જેવી પ્રતીત થાય છે (સૂ૦ ૧૦૫)

'ईसीपब्भाराए णं पुढवीए' ઇત્યાદિ.

આ (ईसीपब्भाराए णं पुढवीए सेयाए) શુભ્ર ઇષત્પ્રાગ્ભારા પૃથિવીથી (जोयणंमि) ઉપર ૧ યોજનમા (लोगंते) લોકનો અંત છે (तस्स जोयणस्स जे से उवरिल्ले गाउए, तस्स णं गाउयस्स जे से उवरिल्ले छब्भागे, तत्थ णं सिद्धा भगवंतो सादिया अपज्जवसिया चिट्ठंति) તે યોજનપરિમિત લોકના અંતમા ૩૩૩ ધનુષ અને ૩૨ આગળ જેટલી જગા રહી છે, તેમાં અર્થાત્

**अपज्जवसिया अणेगजाइ–जरा–मरण–जोणि–वेयणं संसार–कलंकलीभाव–पुणब्भव–गब्भवास–वसही–पवंचं अइक्कंता सासयमणागयद्धं चिट्ठंति ॥ सू० १०६ ॥**

**मूलम्—कहिं पडिहया सिद्धा ?, कहिं सिद्धा पडिट्ठिया ? कहिं बोंदिं चइत्ता णं, कत्थ गंतूण सिज्झइ ? ॥ सू० १०७ ॥**

---

**सादिया अपज्जवसिया'** तत्र खलु सिद्धा भगवन्तः सादिका अपर्यवसिताः **'अणेग–जाइ–जरा–मरण–जोणि–वेयणं'** अनेक–जाति–जरा–मरण–योनि–वेदनम्–अनेकजातिजरा-मरणप्रधानयोनिषु वेदना यत्र स तथा तं, **'संसार–कलंकलीभाव–पुणब्भव–गब्भवास–वसही–पवंचं** संसार–कलङ्कलीभाव–पुनर्भव–गर्भवास–वसति–प्रपञ्चं – ससारे कलङ्कलीभावेन =असमञ्जसत्वेन ये पुनर्भवाः=पौनःपुन्येन उत्पादाः, गर्भवासवसतयः=गर्भाश्रयनिवासाश्च तासां य प्रपञ्चो=विस्तरः स तथा तम् **'अइक्कंता'** अतिक्रान्ताः=निस्तीर्णाः, **'सासयं'** शाश्वतम् **'अणागयद्धं'** अनागताद्धां=भविष्यत्कालं **'चिट्ठंति'** तिष्ठन्ति ॥ सू० १०६ ॥

**टीका**—**'कहिं पडिहया'** इति। गौतमः पृच्छति–**'कहिं पडिहया सिद्धा'** क्व प्रतिहताः सिद्धाः=सिद्धाः कुत्र प्रतिरुद्धाः, तथा **'कहिं सिद्धा पडिट्ठिया'** क्व सिद्धाः प्रति-

---

सादि–अपर्यवसित स्थिति में विराजमान है। **(अणेग–जाइ–जरा–मरण–जोणि–वेयणं संसार–कलंकलीभाव–पुणब्भव–गब्भवास–वसही-पवंचमइक्कंता)** ये सिद्ध भगवान् अनेक जाति, जरा एवं मरण की वेदना से, तथा असमंजसपूर्ण जो बार बार जन्म लेना, गर्भ में वास करना आदि दुःख है उनसे युक्त सांसारिक प्रपंचो से रहित होकर **(सासयमणागयद्धं चिट्ठंति)** सदा शाश्वतिकरूप से वहाँ पर विराजते रहते है ॥ सू० १०६ ॥

---

તે યોજનની ઉપરના કોસના છઠ્ઠા ભાગમાં સિદ્ધ ભગવાન સાદિ–અપર્યવસિત સ્થિતિમાં વિરાજમાન છે. (अणेग–जाइ–जरा–मरण–जोणि–वेयणं संसार–कलंक-लीभाव–पुणब्भव–गब्भवास–वसही–पवंचमइक्कंता) એ સિદ્ધ ભગવાન અનેક જન્મો, જરા તેમજ મરણની વેદનાથી તથા અસમંજસપૂર્ણ જે વારંવાર જન્મ લેવો, ગર્ભમાં વાસ કરવો–આદિ દુઃખ છે તેનાથી યુકત સાંસારિક પ્રપંચોથી રહિત થઈને (सासयमणागयद्धं चिट्ठंति) સદા શાશ્વતિકરૂપથી ત્યાંજ વિરાજતા રહે છે. (સૂ૦ ૧૦૬)

मूलम्—अलोगे पडिहया सिद्धा, लोयग्गे य पडिट्ठिया।
इह बोंदिं चइत्ता णं, तत्थ गंतूण सिज्झइ ॥ सू०१०८॥

ष्ठिताः=व्यवस्थिताः ? तथा—'कहिं बोंदिं चइत्ता णं' क्व शरीरं त्यक्त्वा खलु 'कत्थ गंतूण' क्व गत्वा 'सिज्झइ' सिध्यन्ति ?। 'बोंदी' इति शरीरार्थको देशीशब्दः। 'सिज्झइ' इत्यत्रार्षत्वाद् बहुत्वे एकत्वम् ॥ सू० १०७॥

टीका—'अलोगे' इत्यादि। 'अलोगे' अलोके=अलोकाकाशास्तिकाये 'सिद्धा' सिद्धाः 'पडिहया' प्रतिहताः=प्रतिरुद्धाः, तथा 'लोयग्गे य' लोकाग्रे=पञ्चास्तिकायलक्षण-लोकशिरोभागे च 'पडिट्ठिया' प्रतिष्ठिताः=अपुनरावृत्तिरूपेण व्यवस्थिताः, तथा 'इह' इह

---

'कहिं पडिहया सिद्धा' इत्यादि।

गौतम पूछते है कि हे भदंत! (कहिं पडिहया सिद्धा) सिद्ध भगवान किस स्थान पर अटके है ?, (कहिं सिद्धा पडिट्ठिया) वे कहां प्रतिष्ठित है ?, (कहिं बोंदिं चइ-त्ता णं) इस शरीर को छोड़कर (कत्थ गंतूण सिज्झइ) वे कहां जा कर सिद्ध होते है ? ॥ सू. १०७॥

'अलोगे पडिहया' इत्यादि।

उत्तर—हे गौतम! (अलोगे पडिहया सिद्धा लोयग्गे य पडिट्ठिया) सिद्ध भगवान् लोक के अग्रभाग में रहते हैं, इसलिये वे अलोक में जाने से अटके हुए है। लोक के अग्रभाग में उनकी स्थिति है। (इह बोंदिं चइत्ता णं) इस मनुष्यलोक में वे शरीर का

---

'कहिं पडिहया सिद्धा ?' ઈત્યાદિ.

ગૌતમ પૂછે છે કે હે ભદંન્ત! (कहिं पडिहया सिद्धा) સિદ્ધ ભગવાન કયા સ્થાને અટકયા છે ?, (कहिं सिद्धा पडिट्ठिया) તેઓ કયાં પ્રતિષ્ઠિત છે ?, (कहिं बोंदिं चइत्ता णं, कत्थ गंतूण सिज्झइ) આ શરીરને છોડીને તેઓ કયાં જઈને સિદ્ધ થાય છે? (સૂ.૦ ૧૦૭)

'अलोगे पडिहया' ઈત્યાદિ.

ઉત્તર-હે ગૌતમ! (अलोगे पडिहया सिद्धा) સિદ્ધ ભગવાન લોકના અગ્રભાગમાં રહે છે તેથી તેઓ અલોકમાં જવાથી અટકેલા હોય છે. (लोयग्गे य पडिट्ठिया) લોકના અગ્રભાગમાં તેમની સ્થિતિ છે. (इह बोंदिं चइत्ता णं) આ મનુષ્યલોકમાં તેઓ શરીરનો પરિત્યાગ કરીને (तत्थ गंतूण सिज्झइ)

**मूलम्—जं संठाणं भवं, चयंतस्स चरिमसमयंमि।**
**आसीय पएसघणं, तं संठाणं तहिं तस्स ॥ सू० १०९ ॥**
**मूलम्—दीहं वा हस्सं वा, जं चरिमभवे हवेज्ज संठाणं।**
**तत्तो तिभागहीणं, सिद्धाणोगाहणा भणिया ॥ सू० ११० ॥**

---

मनुष्यक्षेत्रे **'बोंदिं'** शरीरं **'चइत्ता णं'** त्यक्त्वा खलु **'तत्थ'** तत्र=लोकाग्रे **'गंतूण'** गत्वा **'सिज्झइ'** सिध्यन्ति ॥ सू. १०८ ॥

**टीका—'जं संठाणं'** इत्यादि। **'भवं'** भवं=संसारं **'चयंतस्स'** त्यजतः सिद्धस्य **'चरिमसमयंमि'** चरमसमये=मोक्षगमनसमये **'इहं तु'** इह तु=मनुष्यक्षेत्रे तु **'जं संठाणं'** यत् संस्थानम् **'आसीय'** आसीत्, **'तं सठाणं'** तत् संस्थानं **'तस्स'** तस्य सिद्धस्य **'तहिं'** तत्र सिद्धक्षेत्रे **'पएसघणं'** प्रदेशघनं तृतीयभागेन रन्ध्रपूरणाद् भवति ॥ सू. १०९ ॥

**टीका—'दीहं वा'** इत्यादि। **'दीहं वा'** दीर्घं=पञ्चधनुःशतमानं वा, **'हस्सं वा'**

---

परित्याग करके **(तत्थ गंतूण सिज्झइ)** सिद्धस्थान में जाकर सिद्ध होते हैं ॥ सू. १०८ ॥

**'जं संठाणं'** इत्यादि।

**(भवं चयंतस्स)** संसार का परित्याग करते हुए सिद्ध का **(चरिमसमयंमि)** मोक्षगमन समय में **(इहं तु)** इस मनुष्यक्षेत्र में **(जं संठाणं)** जो संस्थान था, **(तस्स)** उस सिद्धका **(तं संठाणं)** वह संस्थान **(तहिं)** उस सिद्ध क्षेत्र में **(पएसघणं)** कान, चक्षु आदि इन्द्रियों के रिक्त स्थान भर जाने के कारण प्रदेशघनरूप होता है ॥ सू. १०९ ॥

**'दीहं वा हस्सं वा'** इत्यादि।

**(दीहं वा)** चाहे संस्थान दीर्घ—५०० धनुष का हो, **(हस्सं वा)** चाहे ह्रस्व—२हाथ

---

સિદ્ધ સ્થાનમાં જઈને તેઓ સિદ્ધ થાય છે. (સૂ. ૧૦૮)

'जं संठाणं' ઇત્યાદિ.

(भवं चयंतस्स) સંસારનો પરિત્યાગ કરતી વખતે સિદ્ધનું (चरिमसमयंसि) મોક્ષગમન સમયમાં (इहं तु) આ મનુષ્ય-ક્ષેત્રમાં (जं संठाणं) જે સંસ્થાન હતું, (तस्स) તે સિદ્ધનું (तं संठाणं) તે સંસ્થાન (तहिं) તે સિદ્ધક્ષેત્રમાં (पएसघणं) કાન, આંખ આદિ ઇંદ્રિયોના રિક્ત સ્થાનો પરિપૂર્ણ થવાને કારણે પ્રદેશઘનરૂપ થાય છે. (સૂ. ૧૦૯)

'दीहं वा हस्सं वा' ઇત્યાદિ.

(दीहं वा) ચાહે સંસ્થાન દીર્ઘ (લાંબુ)-૫૦૦ ધનુષનું હોય, (हस्सं वा)

मूलम्–तिण्णि सया तेत्तीसा, धणुत्तिभागो य होइ बोद्धव्वो।
एसा खलु सिद्धाणं, उक्कोसोगाहणा भणिया॥ सू० १११॥

ह्रस्व वा=हस्तद्वयमानं वा, वा-शब्दान्मध्यमं चापि ग्राह्यं 'जं चरिमभवे संठाणं हवेज्ज' यच्चरमभवे संस्थानं भवेत् 'तत्तो' ततः=तस्मात्, 'तिभागहीणं' त्रिभागहीन=त्रिभागेन–तृतीयभागेन रन्ध्रपूरणात् त्रिभागहीनं यथा स्यात्तथा 'सिद्धाणोगाहणा' सिद्धानामवगाहना 'भणिया' भणिता=कथिता जिनैरिति शेषः ॥ सू. ११० ॥

टीका—'तिण्णि' इत्यादि । 'तिण्णि सया तेत्तीसा' त्रीणि शतानि त्रयस्त्रिंशद्धनूंषि, तथा 'धणुत्तिभागो य' धनुस्त्रिभागश्च–धनुषः=एकस्य धनुषस्त्रिभागः=तृतीयो भागः-द्वात्रिंशदङ्गुलानि,तेन त्रयस्त्रिंशदधिकशतत्रय-३३३-धनूंषि द्वात्रिंशदङ्गुलानि चेत्यर्थः, अयं सिद्धानामुत्कर्षतोऽवगाहनाप्रमाणो 'बोद्धव्वो' बोद्धव्यो=ज्ञातव्यो भवति । अमुमेवार्थमाह-'एसा खलु सिद्धाणं उक्कोसोगाहणा भणिया' एषा खलु सिद्धानाम् उत्कर्षाऽवगाहना भणितेति। इयमवगाहना पञ्चधनुश्शतप्रमाणशरीराणां भवतीति बोध्यम् ॥ सू० १११ ॥

का हो,अथवा मध्य–अवगाहना के विकल्पों वाला हो, (जं चरिमभवे हवेज्ज संठाणं) अन्तिम भव–समय में जैसी अवगाहनावाला शरीर होगा, (तत्तो तिभागहीणं सिद्धाणोगाहणा भणिया) उससे तृतीय भाग–हीन अवगाहना सिद्धों की सिद्धिगति में होती है ॥सू. ११० ॥

'तिण्णि सया तेत्तीसा' इत्यादि ।

(तिण्णि सया तेत्तीसा) तीन सौ तेंतीस धनुष, तथा (धणुत्तिभागो य होइ बोद्धव्वो) एक धनुष का तीसरा भाग, अर्थात् ३२ अंगुल, (एसा खलु सिद्धाणं उक्कोसोगाहणा भणिया ) इतनी उत्कृष्ट अवगाहना सिद्ध भगवान् की जानना चाहिये। यह अवगाहना, जिनका शरीर ५०० धनुष का होता है उनकी अपेक्षा कही गई है ॥ सू. १११ ॥

ચાહે હ્રસ્વ–ઠુંકું–૨ હાથનું હોય, અથવા મધ્ય અવગાહનાના વિકલ્પોવાળું હોય, (जं चरिमभवे हवेज्ज संठाणं) અંતિમ ભવ–સમયમાં જેવી અવગાહનાવાળું શરીર હશે (तत्तो तिभागहीणं सिद्धाणोगाहणा भणिया) તેનાથી ત્રીજા ભાગની ઓછી અવગાહના સિદ્ધોની સિદ્ધિગતિમાં હોય છે. (સૂ. ૧૧૦)

'तिण्णिसया तेत्तीसा' ઈત્યાદિ.

(तिण्णि सया तेत्तीसा) ત્રણસો તેંત્રીસ ધનુષ, તથા (धणुत्तिभागो य होइ बोद्धव्वो) એક ધનુષનો ત્રીજો ભાગ, અર્થાત્ ૩૨ આંગળ, (एसा खलु सिद्धाणं उक्कोसोगाहणा भणिया) એટલી ઉત્કૃષ્ટ અવગાહના સિદ્ધ ભગવાનની જાણવી.

मूलम्—चत्तारि य रयणीओ, रयणितिभागूणिया य बोद्धव्वा।
एसा खलु सिद्धाणं, मज्झिमओगाहणा भणिया॥ सू० ११२॥

मूलम्—एक्का च होइ रयणी, साहीया अंगुलाइ अट्ठ भवे।
एसा खलु सिद्धाणं, जहण्णओगाहणा भणिया॥ सू० ११३॥

टीका—'चत्तारि' इत्यादि। 'चत्तारि य रयणीओ' चतस्रश्च रत्नयः, 'रयणितिभागूणिया य' रत्नित्रिभागोनिका च सिद्धानां मध्यमाऽवगाहना 'बोद्धव्वा' बोद्धव्या। अमुमेवार्थमाह– 'एसा खलु सिद्धाणं मज्झिमओगाहणा भणिया' एषा खलु सिद्धानां मध्यमाऽवगाहना भणिता। षोडशाङ्गुलाधिकचतुर्हस्तप्रमाणा सिद्धानां मध्यमावगाहनेत्यर्थः। इयं सप्तहस्तप्रमाणशरीरधारिणां सिद्धानाम् ॥ सू० ११२ ॥

टीका—'एक्का' इत्यादि। सिद्धानां जघन्याऽवगाहनायाम् 'एक्का च होइ

'चत्तरि य रयणीओ' इत्यादि।

(चत्तारि य रयणीओ) चार हाथ और (रयणितिभागूणिया य बोद्धव्वा) एक हाथ का तीसरा भाग, अर्थात् १६ अंगुल की मध्यम अवगाहना होता है। (एसा खलु सिद्धाणं मज्झिमओगाहणा भणिया) सिद्धों की यह मध्यम अवगाहना ७ हाथ शरीरवालों की अपेक्षा से जाननी चाहिये ॥ सू. ११२ ॥

'एक्का च होइ रयणी' इत्यादि।

(एक्का च होइ रयणी साहीया अंगुलाइ अट्ठ भवे) कुछ अधिक एक हाथ,

આ અવગાહના, જેનું શરીર ૫૦૦ ધનુષનું હોય છે તેની અપેક્ષાએ કહેલી છે. (સૂ. ૧૧૧)

'चत्तारि य रयणीओ' ઇત્યાદિ.

(चत्तारि य रयणीओ) ચાર હાથ અને (रयणितिभागूणिया य बोद्धव्वा) ૧ હાથનો ત્રીજો ભાગ, અર્થાત્ ૧૬ આંગળની મધ્યમ અવગાહના હોય છે. (एसा खलु सिद्धाणं मज्झिम-ओगाहणा भणिया) સિદ્ધોની આ મધ્યમ અવગાહના ૭ હાથ શરીરવાળાની અપેક્ષાથી જાણવી જોઈએ. (સૂ. ૧૧૨)

'एक्का च होइ रयणी' ઇત્યાદિ.

(एक्का च होइ रयणी साहीया अंगुलाइ अट्ठ भवे) એક હાથથી થોડી

रयणी साहीया' एका च भवति रत्निः साधिका। कियता प्रमाणेनाधिका भवतीत्याह- 'अंगुलाइ' इत्यादि। 'अंगुलाइ अट्ठ भवे' अङ्गुलानि अष्ट भवन्ति। अष्टाङ्गुलाधिकैक-हस्तप्रमाणा सिद्धानां जघन्यावगाहना भवतीत्यर्थः। अमुमेवार्थमाह-'एसा खलु सिद्धाणं जहण्णओगाहणा भणिया' एषा खलु सिद्धानां जघन्यावगाहना भणितेति। इयं द्विहस्तप्रमाणशरीराणाम्। इयं त्रिविधाऽप्यवगाहना शरीरोर्ध्वमानमाश्रित्य गृह्यते, अन्यथोपविष्टानां सिध्यतां मानं विसदृशमपि भवेत्। नन्वेवमूर्ध्वमानाङ्गीकारे नाभिकुलकरस्य भार्याया मरुदेव्याः कथं सिद्धिस्थानप्राप्तिः, नाभिकुलकरो हि पञ्चविंशत्यधिक-पञ्चशतधनुःप्रमाण आसीत्, तद्भार्याऽपि मरुदेवी तत्प्रमाणैव, तथाचोक्तम्-"संघयणं संठाणं उच्चत्तं चेव कुलगरेहिं समं" इति। अतस्तदवगाहना उत्कृष्टावगाहनातोऽधिकतरा १,

---

अर्थात् एक हाथ ८ अंगुल, (एसा खलु सिद्धाणं जहण्णओगाहणा भणिया) यह जघन्य अवगाहना सिद्ध भगवान् की जाननी चाहिये। यह अवगाहना २ हाथ की अवगाहनावाले जीवों की अपेक्षा कही गई समझना चाहिये। यह तीनों प्रकार की अवगाहना शरीर की ऊँचाई की अपेक्षा कही गई है। बैठकर सिद्ध होने वालों का मान तो विसदृश भी होना चाहिये। **प्रश्न**-इस तरह ऊर्ध्वमान को आश्रित करने पर नाभिकुलकर की भार्या मरुदेवी को सिद्धिस्थान की प्राप्ति कैसे हो सकती है, क्यों कि नाभिकुलकर ५२५ धनुष प्रमाण अवगाहनावाले थे तो उनकी धर्मपत्नी भी उतनी ही अवगाहनावाली होंगी। क्यों कि ऐसा कहा है कि संहनन और संस्थान कुलकरों की महिलाओं का कुलकरों के समान होता है। इसलिये उनकी अवगाहना उत्कृष्ट अवगाहना से अधिकतर हो जाती है १। **उत्तर**-प्रश्न ठीक है, परंतु इसका समाधान इस प्रकार है, यद्यपि कुलकर जैसी उच्चता उनकी पत्नियों में

---

વધારે, અર્થાત્ એક હાથ ૮ આંગળ, (एसा खलु सिद्धाणं जहण्णओगाहणा भणिया) સિદ્ધ ભગવાનની આ જઘન્ય અવગાહના જાણવી. આ અવગાહના ૨ હાથની અવગાહનાવાળા જીવોની અપેક્ષાએ કહેલી છે એમ સમજવું. એ ત્રણેય પ્રકારની અવગાહના શરીરની ઉંચાઈની અપેક્ષાએ કહેલી છે. નહિં તો બેસીને સિદ્ધ થવાવાળાઓનુ માન (પ્રમાણ) વિસદૃશ (જુદું) પણ હોવું જોઈએ. પ્રશ્ન—આ રીતે ઉર્ધ્વ (ઉંચા) માનને આશ્રિત કરવાથી નાભિકુલકરના ધર્મપત્ની મરુદેવીને સિદ્ધિસ્થાનની પ્રાપ્તિ કેવી રીતે થઈ શકે ?, કેમ કે નાભિકુલકર ૫૨૫ ધનુષ્યપ્રમાણ અવગાહનાવાળા હતા તો, તેમના ધર્મપત્ની પણ એટલી જ અવગાહનાવાળી હશે. કેમકે એમ કહ્યું છે કે કુલકરોની મહિલાઓનું સંહનન અને સંસ્થાન કુલકરોના સમાન હોય છે. આથી તેમની અવગાહના, ઉત્કૃષ્ટ અવગાહનાથી વધારે થઈ જાય છે. ઉત્તર-પ્રશ્ન ઠીક છે, પરંતુ તેનુ સમાધાન આ પ્રકારે છે, જોકે કુલકર જેવી ઉચ્ચતા તેમની પત્ની-

**मूलम्–ओगाहणाए सिद्धा, भवत्तिभागेण होंति परिहीणा।**
**संठाणमणित्थत्थं, जरामरणविप्पमुक्काणं ॥ सू० ११४ ॥**
**जत्थ य एगो सिद्धो, तत्थ अणंता भवक्खयविमुक्का।**

अत्रोच्यते–यद्यपि कुलकरतुल्यमुच्चत्व तत्पत्नीनामित्युक्तं, तथापि पञ्चशतधनुर्मानिता तस्या वार्द्धक्येन शरीरसकोचात् सजातेति नास्ति विरोधः ॥ सू० ११३ ॥

**टीका**—'**ओगाहणाए**' इत्यादि। '**ओगाहणाए**' अवगाहनया=स्वावगाहनया '**सिद्धा**' सिद्धाः, '**भवत्तिभागेण**' भवत्रिभागेन–भवस्य=चरमभवशरीरस्य–चरमशरीरसम्बन्धिन्या अवगाहनाया', त्रिभागेन=तृतीयभागेन '**परिहीणा**' परिहीनाः '**होंति**' भवन्ति। तेषां '**जरामरणविप्पमुक्काणं**' जरामरणविप्रमुक्तानां सिद्धानाम् '**अणित्थत्थं**' अनित्थंस्थम्–अमुना प्रकारेणेतीत्थम्, तत्र तिष्ठतीति–इत्थस्थम्, न इत्थंस्थम्–अनित्थंस्थम्–न केनचित्परिमण्डलादिलौकिकसस्थानेन स्थितं '**सठाणं**' संस्थानं भवति ॥ सू० ११४ ॥

**टीका**—तत्र सिद्धक्षेत्रे सिद्धा देशभेदेन उतैकस्मिन् देशे तिष्ठन्तीत्याशङ्कायामाह–'**जत्थ**' इति। '**जत्थ य**' यत्र च=यत्रैव देशे, '**एगो सिद्धो**' एकः सिद्धस्तिष्ठति,

---

होती है तो भी उनमें ५०० धनुप–प्रमाणता उनके वृद्ध अवस्था में शरीर के संकोच से घटित हो जाती है। अत कोई विरोध नहीं है ॥ सू ११३ ॥

'**ओगाहणाए सिद्धा**' इत्यादि।

(**ओगाहणाए सिद्धा भवत्तिभागेण होंति परीहीणा**) सिद्ध अपने अंतिम-शरीर–सबधी अवगाहना के तृतीय भाग से हीन अवगाहनावाले होते है। (**संठाणमणित्थत्थं जरामरणविप्पमुक्काणं**) उनका आकार किसी परिमंडल आदि लौकिक आकार से स्थित नहीं है, वे जन्म, जरा एवं मरण से सदा के लिये रहित हो जाते है ॥ सू ११४ ॥

---

ओमां होय छे तो पण तेओमां ५०० धनुषप्रमाणता तेमनी वृद्धावस्थामां शरीरना संकोचावाथी घटीने थई जाय छे. तेथी कोई विरोध नथी. (सू० ११३)

'ओगाहणाए सिद्धा' इत्यादि.

(ओगाहणाए सिद्धा भवत्तिभागेण होंति परिहीणा) सिद्ध पोतानी अवगाहनाथी अंतिमशरीरसंबंधी अवगाहनाना त्रीजा भागथी ओछा थाय छे. (संठाणमणित्थत्थं जरामरणविप्पमुक्काणं) तेमनो आकार कोई परिमंडल आदि लौकिक आकारथी स्थित नथी. तेओ जन्म, जरा तेमज मरणथी सदायने माटे रहित थई जाय छे. (सू० ११४)

**अण्णोण्णसमोगाढा, पुट्ठा सव्वे य लोगंते ॥ सू० १५१ ॥**

**मूलम्—फुसइ अणंते सिद्धे, सव्वपएसेहि णियमसा सिद्धो।**

**'तत्थ'** तत्र देशे **'अणंता'** अनन्ताः-अविद्यमानोऽन्तो येषां तेऽनन्ताः, **'भवक्खयविमुक्का'** भवक्षयविमुक्ताः-भवक्षये सति विप्रमुक्ताः, अनेन स्वेच्छयाऽवतरणशक्तिमत्सिद्धव्यवच्छेदमाह। **'अण्णोण्णसमोगाढा'** अन्योऽन्यसमवगाढाः=परपरस्परं सम्यक् अवगाढाः-धर्मास्तिकायादिवत् समिलिताः, **'सव्वे य'** सर्वे च **लोगंते'** लोकान्ते =लोकाग्रभागे अलोकेन **'पुट्ठा'** स्पृष्टाः=सलग्नाः, प्रतिरुद्धत्वात्, तत्र धर्मास्तिकायाभावादिति। अत एव-**'लोकाग्रे च प्रतिष्ठिता'** इत्युक्तम् ॥ सू० ११५ ॥

**टीका—'फुसइ'** इत्यादि। **'सिद्धे'** सिद्धः=एक सिद्धः **'णियमसा'** नियमेन

**'जत्थ य एगो सिद्धो'** इत्यादि।

( **जत्थ य एगो सिद्धो** ) जिस सिद्धक्षेत्र में एक सिद्ध भगवान विराजते है, (**तत्थ अणंता**) उसी सिद्धक्षेत्र में अनत सिद्ध विराजमान रहते है। (**भवक्खयविमुक्का**) उनके भवका क्षय सर्वथा हो चुका है। (**अण्णोण्णसमोगाढा पुट्ठा**) जिस प्रकार एक ही स्थान पर धर्मादिक द्रव्य परस्पर अवगाढरूप में स्थित होकर रहते है उसी प्रकार ये सिद्ध आत्मा भी एक ही स्थान पर परस्पर में अवगाढरूप से रहते है। फिर भी अपने २ चैतन्यस्वरूप का परित्याग नहीं करते है। (**सव्वे य लोगंते**) धर्मास्तिकायका अभाव होने से ये लोक के अग्रभाग में स्पृष्ट रहते है॥ सू. ११५ ॥

**'फुसइ अणते सिद्धे'** इत्यादि।

(**फुसइ अणंते सिद्धे सव्वपएसेहि णियमसा सिद्धो**) एक सिद्ध

'जत्थ य एगो सिद्धो' ઇત્યાદિ.

( जत्थ य एगो सिद्धो ) જે સિદ્ધક્ષેત્રમાં એક સિદ્ધ ભગવાન બિરાજે છે, ( तत्थ अणंता ) તેજ સિદ્ધક્ષેત્રમાં અનંત સિદ્ધ વિરાજમાન હોય છે. ( भवक्खयविमुक्का ) તેમના ભવનો ક્ષય સર્વથા થઇ ચૂકયો છે. ( अण्णोण्ण समोगाढा पुट्ठा ) જે પ્રકારે એક જ સ્થાન પર ધર્માદિક દ્રવ્ય પરસ્પર અવગાઢરૂપમાં સ્થિત થઈ રહે છે તેજ પ્રકારે તે સિદ્ધ આત્મા પણ એકજ સ્થાન પર પરસ્પરમા અવગાઢરૂપથી રહે છે. છતા પણ પોતપોતાના ચૈતન્યસ્વરૂપનો પરિત્યાગ કરતા નથી ધર્માસ્તિકાયનો અભાવ હોવાથી તેઓ લોકના અગ્રભાગમાં સ્પૃષ્ટ (લાગી) રહે છે. ( સૂ. ૧૧૫ )

' फुसइ अणंते सिद्धे ' ઇત્યાદિ.

( फुसइ अणंते सिद्धे सव्वपएसेहि णियमसा सिद्धो ) એક સિદ્ધ ભગવાન્

**ते वि असंखेज्जगुणा, देसपएसेहिं जे पुट्ठा ॥सू०॥ ११६ ॥**

**'सव्वपएसेहिं'** सर्वप्रदेशैः=आत्मनोऽसंख्यातप्रदेशैः, **'अणंते सिद्धे'** अनन्तान् सिद्धान् **'फुसइ'** स्पृशति । तथा **'ते वि'** तेऽपि=ते सर्वे सिद्धा अपि **'असंखेज्जगुणा'** असंख्येयगुणा वर्तन्ते, **'जे'** ये सिद्धा **'देसपएसेहिं'** देशप्रदेशैः-देशैः=असंख्यातदेशैः प्रदेशैः=असंख्यातप्रदेशैश्च **'पुट्ठा'** स्पृष्टाः । तेषां सर्वेषां सिद्धानां प्रत्येकं स्वस्वव्यतिरिक्तसिद्धैरसंख्यातदेशप्रदेशवद्भिः संमिलितत्वेन गुणितत्वमङ्गीकृत्य "असंख्येयगुणाः" इत्युक्तम् । अयं भावः—सर्वात्मप्रदेशैस्तावदनन्ताः सिद्धाः स्पृष्टाः, एकसिद्धाऽवगाहनायामनन्तानामवगाढत्वात् । तथैकैक—देशेनाऽप्यनन्ताः, एवमेकैकप्रदेशेनाप्यनन्ता एव । तत्र देशो—द्व्यादिप्रदेशसमुदायः, प्रदेशस्तु—निर्विभागोंऽश इति । एकैकसिद्धश्चाऽसंख्येयदेशप्रदेशात्मकः, ततश्च मूलाऽनन्तकेऽसंख्येयैर्देशाऽनन्तकैरसंख्येयैरव च प्रदेशाऽनन्तकैर्गुणिते यावती सख्या भवेत् सा केवलिगम्यैवेति ॥ सू. ११६ ॥

भगवान् नियम से आत्मा के असंख्यातप्रदेशों द्वारा अनंत सिद्धों का स्पर्श करते है. और **(ते वि असंखेज्जगुणा)** वे सब सिद्ध असख्यातप्रदेशों से स्थित है। **(देसपएसेहिं जे पुट्ठा)** देश से एवं प्रदेशों से भी वे सिद्ध असख्यातगुणित है । मतलब इसका यह है कि समस्त आत्मप्रदेशों से वे अनंत सिद्ध स्पृष्ट हैं । एक सिद्ध की आत्मा में अनंत सिद्धों की अवगाहना होने से, तथा एक एक देश से, एवं प्रदेश से वे सिद्ध अनत है । द्व्यादिक प्रदेश के समुदाय का नाम देश, एवं अविभागी अंश का नाम प्रदेश है । एक एक सिद्ध असख्यात देश और प्रदेशात्मक है । इसलिये मूल अनत को असख्यात एवं अनंत देश और प्रदेशों से गुणा करने पर कितनी राशि होगी यह बात सिर्फ केवली भगवान् द्वारा ही जानी जा सकती है ॥ सू. ११६ ॥

નિયમથી આત્માના અસંખ્યાત પ્રદેશો દ્વારા અનંત સિદ્ધોનો સ્પર્શ કરે છે, અને ( ते वि असंखेज्जगुणा ) તે બધા સિદ્ધ અસંખ્યાત પ્રદેશોથી સંસ્થિત છે. ( देसपएसेहिं जे पुट्ठा ) દેશથી તેમજ પ્રદેશોથી પણ તે સિદ્ધો અસંખ્યાત-ગણા છે. એની મતલબ એવી છે કે સમસ્ત આત્મપ્રદેશોથી તે અનંત-સિદ્ધો સ્પર્શાયેલા છે. એક સિદ્ધના આત્મામાં અનંત સિદ્ધોની અવગાહના હોવાથી, તથા એક એક દેશથી, તેમજ પ્રદેશથી તે સિદ્ધો અનત છે. દ્વિ-આદિક પ્રદેશના સમુદાયનુ નામ દેશ, તેમજ અવિભાગી અંશનું નામ પ્રદેશ છે. એક એક સિદ્ધ અસંખ્યાત દેશ અને પ્રદેશાત્મક છે. તે માટે મૂલ અનંતને અસંખ્યાત તેમજ અનંત દેશ તથા પ્રદેશોથી ગુણાકાર કરવાથી કેટલી રાશિ ( જથ્થા ) થશે તે વાત તો માત્ર કેવળી ભગવાન દ્વારાજ જાણી શકાય છે. ( સૂ૦. ૧૧૬ )

**मूलम्—असरीरा जीवघणा, उवउत्ता दंसणे य णाणे य।**
**सागारमणागारं, लक्खणमेयं तु सिद्धाणं ॥ सू० ११७ ॥**

**मूलम्—केवलणाणुवउत्ता, जाणंति सव्वभावगुणभावे ।**
**पासंति सव्वओ खलु, केवलदिट्ठीहि णंताहिं ॥ सू० ११८ ॥**

---

**टीका—'असरीरा'** इत्यादि। अशरीरा जीवघना उपयुक्ता दर्शने च ज्ञाने च। साकारमनाकारं लक्षणमेतत्तु सिद्धानाम् ॥ एतेषां पदानां व्याख्याऽस्यैवागमस्य उत्तरार्द्धे त्रिसप्ततितमसङ्ख्याके सूत्रे पूर्वमुक्ता ॥ सू. ११७ ॥

**टीका—**यदुक्तम्—**'उवउत्ता दसणे य णाणे य'** इति, तत्र ज्ञानदर्शनयोः सर्वविषयतामुपदर्शयन्नाह—**'केवलणाणुवउत्ता'** इत्यादि। **'केवलणाणुवउत्ता'** केवल–

---

**'असरीरा जीवघणा'** इत्यादि।

**(असरीरा जीवघणा उवउत्ता दंसणे य णाणे य)** सिद्धों का लक्षणनिर्देश इस सूत्र में कहा गया है। औदारिक आदि शरीर से रहित एव घनरूप आत्मप्रदेशवाले वे सिद्ध भगवान् केवलज्ञान एवं केवलदर्शन से सदा उपयुक्त है। **(सागारमणागारं)** केवल ज्ञान की अपेक्षा वे साकार उपयोग से युक्त है, एव केवल दर्शन की अपेक्षा निराकारस्वरूप दर्शन से युक्त हे। **(लक्खणमेयं तु सिद्धाणं)** यही सिद्धो का लक्षण है ॥ सू. ११७ ॥

**'केवलणाणुवउत्ता'** इत्यादि।

**(केवलणाणुवउत्ता जाणंति सव्वभावगुणभावे)** केवलज्ञानरूप उपयोग से युक्त वे सिद्ध भगवान् समस्त वस्तुओं के अनतगुण, एव उनकी अनंतपर्यायो को युगपत् जानते

---

'असरीरा जीवघणा' ઇત્યાદિ.

( असरीरा जीवघणा उवउत्ता दंसणे य णाणे य ) સિદ્ધોના લક્ષણનો નિર્દેશ આ સૂત્રમા કહેવામા આવ્યો છે. ઔદારિક આદિ શરીરથી રહિત તેમજ ઘનરૂપ આત્મપ્રદેશવાળા તે સિદ્ધ ભગવાન્ કેવળજ્ઞાન તેમજ કેવળદર્શનથી સદા ઉપયુક્ત છે ( सागारमणागारं ) કેવળજ્ઞાનની અપેક્ષાએ તેઓ સાકાર ઉપયોગથી યુક્ત છે, તેમજ કેવળદર્શનની અપેક્ષાએ નિરાકારસ્વરૂપ દર્શનથી યુક્ત છે. ( लक्खणमेयं तु सिद्धाणं ) આ જ સિદ્ધોનાં લક્ષણ છે. ( સૂ. ૧૧૭ )

'केवलणाणुवउत्ता' ઇત્યાદિ.

( केवलणाणुवउत्ता जाणंति सव्वभावगुणभावे ) કેવળજ્ઞાનરૂપ ઉપયોગથી

**मूलम्——ण वि अत्थि माणुसाणं, तं सोक्खं ण वि य सव्वदेवाणं। जं सिद्धाणं सोक्खं, अव्वाबाहं उवगयाणं ॥सू० ११९ ॥**

ज्ञानोपयुक्ताः सन्तस्ते सिद्धाः **'सव्वभावगुणभावे'** सर्वभावगुणभावान्=समस्तवस्तुगुणपर्यायान् **'जाणंति'** जानन्ति, तत्र—गुणाः—सहवर्तिनः, पर्यायास्तु—क्रमवर्तिन इति । तथा **'णंताहिं'** अनन्ताभिः **'केवलदिट्ठीहिं'** केवलदृष्टिभिः, अनन्तैः केवलदर्शनैरित्यर्थः, **'सव्वओ'** सर्वतः सर्वभावान् खलु=निश्चयेन **'पासंति'** पश्यन्ति ॥ सू० ११७ ॥

**टीका**—सिद्धानां सुखं वर्णयति—**'ण वि'** इत्यादि। **'अव्वाबाहं'** अव्याबाधं=सकल दुःखवर्जितं मोक्षस्थानम् **'उवगयाणं'** उपगतानां=प्राप्तानां, **'सिद्धाणं'** सिद्धानाम् **'जं'** यत् **'सोक्खं'** सौख्यम् **'अत्थि'** अस्ति, **'तं'** तत् **'सोक्खं'** सौख्य **'ण वि माणुसाणं'** नापि मनुष्याणामस्ति, **'ण वि य सव्वदेवाणं'** नापि च सर्वदेवानाम् ॥ सू० ११९ ॥

है। **(पासंति सव्वओ खलु केवलदिट्ठीहिं णंताहिं)** अनंतकेवलदृष्टिस्वरूप अनतदर्शन से युक्त वे सिद्ध भगवान्, युगपत् समस्त भावो को उनकी गुणपर्यायो सहित देखते है। वस्तु में त्रिकाल उसके साथ रहने वाले गुण होते है। एवं क्रमवर्ती पर्याय होती है॥ सू. ११७ ॥

**'णवि अत्थि'** इत्यादि ।

**( जं सिद्धाणं सोक्खं अव्वावाहं उवगयाण )** सकल दुःखो से वर्जित ऐसे मोक्षस्थान मे प्राप्त हुए सिद्धो को जो सुख है, **( ण वि अत्थि माणुसाणं तं सोक्खं ण वि य सव्वदेवाणं )** वह सुख त्रैलोक्य में न तो मनुष्य को है, और न सर्व देवो को है ॥ सू. ११९ ॥

युक्त ते सिद्ध भगवान् समस्त वस्तुओना अनंतगुण, तेमज तेमनी अनंत पर्यायोने એકીસાથે જાણે છે. ( पासंति सव्वओ खलु केवलदिट्ठीहिं णंताहिं ) અનંત કેવળદષ્ટિસ્વરૂપ અનંતદર્શનથી યુક્ત તે સિદ્ધ ભગવાન એકીસાથે સમસ્ત ભાવોને તેમની ગુણ-પર્યાયો-સહિત જુએ છે. વસ્તુમા ત્રિકાળ તેની સાથે રહેવાવાળા ગુણ હોય છે, તેમજ ક્રમવર્તી પર્યાય હોય છે. (સૂ. ૧૧૮)

' णवि अत्थि ' ઈત્યાદિ.

(जं सिद्धाणं सोक्खं अव्वावाहं उवगयाणं) સકલ દુઃખોથી વર્જિત એવા મોક્ષસ્થાન પ્રાપ્ત કરેલા સિદ્ધોને જે સુખ છે, (ण वि अत्थि माणुसाणं तं सोक्खं ण वि य सव्वदेवाणं) તે સુખ ત્રણ લોકમાંય નથી કોઈ મનુષ્યને કે નથી સર્વ દેવોને હોતું. (સૂ. ૧૧૯)

**मूलम्—जं देवाणं सोक्खं , सव्वद्धापिंडियं अणंतगुणं।**
**ण य पावइ मुत्तिसुहं, णंतेहिं वग्गवग्गेहिं ॥ सू० १२० ॥**

टीका—कस्मादेवं सुखं भवतीत्यत आह—'**जं देवाणं**' इत्यादि। '**जं**' यद् '**देवाणं**' देवानाम्=अनुत्तरसुरान्तानां '**सोक्खं**' सौख्यं=त्रैकालिकसुखं, तद्यदि '**सव्वद्धापिंडियं**' सर्वाद्धापिण्डितम्—सर्वाऽद्धया=अतीताऽनागतवर्तमानकालेन पिण्डितम्=गुणितं, तथा '**अणंतगुणं**' अनन्तगुणमिति, तदेवं प्रमाणं किलाऽसत्कल्पनया एकैकाऽऽकाशप्रदेशे स्थाप्यते, इत्येवं सकललोकाकाशानन्तप्रदेशपूरणेनाऽनन्तं भवति, एवंभूतं देवसुखं '**ण य पावइ मुत्तिसुहं**' न च प्राप्नोति मुक्तिसुखं=नैव मुक्तिसुखसमानतां लभते, अनन्ताऽनन्तत्वात् सिद्धसुखस्य। किंविधं देवसुखमित्याह—'**णंतेहिं वग्गवग्गेहिं**' अनन्तैर्वर्ग-

'**जं देवाण सोक्खं**' इत्यादि।

(**जं देवाणं सोक्ख सव्वद्धापिंडियं अणंतगुणं**) जो सर्व देवों का त्रैकालिक सुख है उसे अनन्तगुणा किया जाय तो भी वह (**ण य पावइ मुत्तिसुहं णंतेहिं वग्गवग्गेहिं**) सिद्ध भगवान् के एक क्षणोद्भव सुख की बराबरी नहीं कर सकता है। इसे यों समझना चाहिये कि सर्वदेवों का त्रैकालिक सुख एक २ आकाश के—प्रदेश पर स्थापित करते २ आकाश के अनंत प्रदेश उस सुख से जब भर जाये तब उन समस्त—प्रदेशस्थ सुखों का परस्पर में गुणा करो। इस प्रकार वह देवसुख अनंतगुणित हो जाता है। यह अनंतगुणित सुख भी सिद्धों के एक क्षण में होनेवाले सुख की समता नहीं कर सकता। कारण कि उनका सुख अनंतानंत है। देवों का सुख अनंतवर्गों से वर्गित बतलाया गया है। वर्ग

'जं देवाणं सोक्खं' ઈત્યાદિ.

(जं देवाणं सोक्खं सव्वद्धापिंडियं अणंतगुणं) જે સર્વ દેવોનું ત્રણ કાળનુ સુખ છે. તેને અનંતગણું કરવામાં આવે તો પણ તે, (ण य पावइ मुत्तिसुहं णंतेहिं वग्गवग्गेहिं) સિદ્ધ ભગવાનના એક ક્ષણથી ઉત્પન્ન થતા સુખની બરાબરી કરી શકતું નથી. આથી એમ સમજવું જોઈએ કે સર્વદેવોનુ ત્રણ કાળનુ સુખ એક એક આકાશના પ્રદેશ ઉપર સ્થાપિત્ત કરો. એ રીતે સ્થાપિત કરતાં કરતાં આકાશના અનંત પ્રદેશ તે સુખથી જ્યારે ભરાઈ જાય ત્યારે તે સમસ્ત પ્રદેશમાં રહેલાં સુખોનો પરસ્પરમાં ગુણાકાર કરો. એ પ્રકારે તે દેવસુખ અનંતગણાં થઈ જાય છે. આ અનંતગણા સુખ પણ સિદ્ધોનાં એકક્ષણમાં થવાવાળા સુખની બરાબરી કરી શકતાં નથી. કારણ કે તેમનાં સુખ અનંતાનંત છે. દેવોનાં સુખ અનંત વર્ગોથી વર્ગિત બતાવ્યાં

**मूलम्-सिद्धस्स सुहो रासी, सव्वद्धापिंडिओ जइ हवेज्जा।**
**सोऽणंतवग्गभइओ, सव्वागासे ण माएज्जा ॥ सू० १२१ ॥**

वर्गैः=अनन्तैरपि वर्गवर्गैः, तत्र तद्गुणो वर्गो, यथा द्वयोर्वर्गश्चत्वारः, तस्यापि वर्गो वर्गवर्गो, यथा षोडश, एवमनन्तशो वर्गितमपीत्यर्थः ॥ सू. १२० ॥

टीका—'**सिद्धस्स**' इत्यादि। '**सिद्धस्स**' सिद्धस्य '**सुहो**' सुखः=सुखसम्बन्धी '**रासी**' राशिः=समूहः, स च—'**सव्वद्धापिंडिओ**' सर्वाद्धापिण्डितः—सर्वाद्धाभिः=सर्वकालसमयैः पिण्डितो=गुणितो '**जइ हवेज्जा**' यदि भवेत्, '**सो**' स पुनः '**अणंतवग्गभइओ**' अनन्तवर्गभक्तः=अनन्तवर्गैर्विभागीकृतः, '**सव्वागासे**' सर्वाऽऽकाशे=लोकाऽलोकरूपे '**ण माएज्जा**' न मायात्—न स्थातुं शक्नुयात्। अयं भावः—इह किल निरुपमं सुखं गृह्यते, ततश्च यत आरभ्य लोके सुखशब्दप्रवृत्तिः, तदवधीकृत्य एकैकगुणवृद्धितारतम्येन तावत् तत् सुखं

---

के वर्ग करने का नाम वर्गवर्ग है। जिस प्रकार दो का वर्ग ४, और चार का वर्ग १६ होता है। १६ वर्गवर्ग है ॥ सू. १२० ॥

'**सिद्धस्स सुहो रासी**' इत्यादि।

( **सिद्धस्स सुहो रासी सव्वद्धापिंडिओ जइ हवेज्जा** ) सिद्ध भगवान् के सुख की जो राशि है वह सर्वकाल के समयो से यदि गुणित की जाय, और ( **सोऽणंतवग्ग-भइओ** ) उस उत्पन्न महाराशि में अनन्त वर्गो से भाग दिया जाय, तो भी ( **सव्वागासे ण माएज्जा** ) वह सिद्धों के सुखो की विभक्त सुखराशि समस्त आकाश में नहीं समा सकती है। मतलब इसका यह है कि लोक में जो सुख—शब्द से कहा जाता है उस सुख में एक-एक गुण की क्रमिक वृद्धि से जब वह सुख अनन्तगुण वृद्धि पाकर अपनी अन्तिम अवधि

---

છે. વર્ગનો વર્ગ કરે તેનું નામ વર્ગવર્ગ છે. જે પ્રકારે ૨ નો વર્ગ ૪, અને ચારનો વર્ગ ૧૬ થાય છે. ૧૬ વર્ગ—વર્ગ છે. (સૂ. ૧૨૦)

'सिद्धस्स सुहो रासी' ઇત્યાદિ.

( सिद्धस्स सुहो रासी सव्वद्धापिंडिओ जइ हवेज्जा ) સિદ્ધ ભગવાનના સુખની જે રાશિ છે તેને સર્વકાળના સમયોથી જો ગુણવામાં આવે અને ( सोऽणंतवग्गभइओ ) તેનાથી ઉત્પન્ન થયેલી તે મહારાશિને અનંત વર્ગથી ભાગી દેવામાં આવે તો પણ ( सव्वागासे ण माएज्जा ) તે સિદ્ધોના સુખોની ભાગલબ્ધ સુખરાશિ સમસ્ત આકાશમાં સમાઇ શકતી નથી. આનો અભિપ્રાય એ છે કે લોકમાં જે સુખ—શબ્દથી કહેવાય (સમજાય) છે તે સુખમાં એક એક ગુણની ક્રમિક વૃદ્ધિથી જ્યારે તે સુખ અનન્તગુણ વૃદ્ધિ

**मूलम्--जह णाम कोइ मिच्छो, नगरगुणे बहुविहे वियाणंते। न चएइ परिकहेउं, उवमाए तहिं असंतीए॥ सू० १२२॥**

विशिष्यते यावदनन्तगुणवृद्धया चरमावधिं प्राप्त भवति । ततश्च तदत्यन्तनिरुपममौत्सुक्य-वृत्तिविरहितं प्रशान्तमहोदधितुल्यं चरमाह्लादस्वरूपम् । तस्माच्चरमाह्लादात् पूर्वं प्रथमाच्चानन्त-रमपान्तरालवर्त्तिनो ये तातरम्येनाह्लादविशेषास्ते सर्वाकाशप्रदेशराशेरपि भूयांसो भवन्तीत्यत. किलोक्तम्--'**सव्वागासे ण माएज्जा**' इति, अन्यथा प्रतिनियतदेशावस्थितिः कथं तेषामिति सूरयोऽभिदधतीति ॥ सू. १२१ ॥

**टीका**--'**जह णाम**' इत्यादि । '**जह णाम**' यथानाम=यथादृष्टान्तम्-दृष्टान्त-मनुसृत्य कथयामीत्यर्थ., '**कोइ मिच्छो**' कश्चिन्म्लेच्छो '**बहुविहे**' बहुविधान् '**नगरगुणे**' नगरगुणान् '**वियाणंते**' विजानन्नपि '**परिकहेउं**' परिकथयितुं=वर्णयितु '**न चएइ**' न शक्नोति, कथं न शक्नोति ? इत्याह --'**उवमाए**' इत्यादि । '**उवमाए तहिं**

को प्राप्त होता है, तब वह अत्यन्त अनुपम, उत्कण्ठा की वृत्ति से रहित, और प्रशान्त समुद्र के समान गम्भीर चरमसुखरूप हो जाता है । उस चरम सुख से पहले और प्रथम सुख के बाद के जो मध्यवर्त्ती तरतमता से युक्त सुखविशेष है, वे सभी सर्वाकाशप्रदेशों से भी अधिक है । इसीलिये कहा गया है- '**सव्वागासे ण माएज्जा**' अर्थात् सिद्धों का अनन्तवर्ग-विभक्त भी सुख, समस्त आकाश मे नहीं समा पाता है ॥ सू १२१ ॥

'**जह णाम कोइ मिच्छो**' इत्यादि ।

दृष्टान्त देकर इसी विषय को स्पष्ट करते है-(**जह णाम कोइ मिच्छो नगरगुणे बहुविहे वियाणंते**) जैसे कोई म्लेच्छ बहुत प्रकार के नगरगुणों को जानता हुआ भी ( **न**

પામીને પોતાની અંતિમ અવધિને પ્રાપ્ત થાય છે, ત્યારે તે અત્યન્ત અનુપમ, ઉત્કંઠાની વૃત્તિથી રહિત અને પ્રશાન્ત સમુદ્ર સમાન ગંભીર ચરમસુખરૂપ થાય છે. તે ચરમ સુખથી પૂર્વ અને પ્રથમ સુખની પછી મધ્યવર્તી, તારતમ્યથી યુક્ત જે સુખવિશેષ છે, તે સુખો સઘળા આકાશ પ્રદેશોની અપેક્ષાએ પણ અધિક છે. એ માટે જ કહેવામા આવ્યુ છે કે 'सव्वागासे ण माएज्जा' એટલે સિદ્ધોના અનંતવર્ગવિભક્ત સુખ પણ સઘળા આકાશ પ્રદેશોમાં સમાઈ શકતુ નહિ (સૂ ૧૨૧)

'जह णाम कोइ मिच्छो' ઇત્યાદિ.

દૃષ્ટાન્ત દઇને એજ વિષય સ્પષ્ટ કરે છે ( **जह णाम कोइ मिच्छो नगर-गुणे बहुविहे वियाणंते** ) જેમ કોઇ એક મ્લેચ્છ બહુ પ્રકારના નગરગુણોને

**असंतीए'** उपमाया.=सादृश्यस्य तत्र वने असत्त्वात्=असद्भावादिति । एवमत्र कथानकम्–कश्चिन्नरपतिर्दुष्टाऽश्वारूढ. सन् पवनसेवनार्थं वन जगाम, तत्र चाश्वस्य दुर्जातिकत्वेन परिश्रान्तो वनेऽश्वादवतीर्ग. । तत्रैकेन वनवासिना म्लेच्छेन भूपति' सत्कृत । ततौऽसौ नृपतिस्त म्लेच्छ निजराजधानीमानोय विशिष्टभोगभूतिभोजन कृतवान् । एकदाऽसौ म्लेच्छ प्रावृषि प्राप्ताया मनोहरं मेघध्वनिं श्रुत्वा वनं गन्तुमुत्कण्ठितोऽभवत् । राज्ञा सम्मानपूर्वक विसर्जित. सन्नसौ वने

---

**य चएइ परिकहेउं** ) उसका वर्णन वन में नहीं कर सकता है, क्योंकि ( **उपमाए तहिं असंतीए** ) उपमा का वहां अभाव है ।

यहाँ इस प्रकारकी एक कथा है।

कोई एक राजा वायु सेवन के लिये घोडे पर सवार हुआ। वह घोडा महादुर्दान्त था। इसलिये चलते २ उसे यह भय लग रहा था कि कहीं यह मुझे पटक न दे, अतः उसे रोकते २ वह थक गया और किसी जंगल में जाकर वह उससे नीचे उतर पडा । इतने में एक भील ने उसे देखा और सहसा पास आकर उसने थके हुए राजा की सेवा-शुश्रूषा से थकावट दूर की। राजा बड़ा खुश हुआ, और उसे अपने साथ लेकर वह अपनी राजधानी को वापिस लौट आया। वहां राजा ने राजसी ठाटबाट के अनुसार उसे खूब आनन्द से रखा। खाने-पीने के लिये उसे ऐसे २ भोज्य पदार्थ दिये कि जो उसने अपने जावन में कभी देखे तक भी नहीं थे। रहते २ जब कुछ समय व्यतीत हो गया तब वर्षाकाल के आने पर उसे अपने स्थान पर जाने की उत्कंठा जगी।

---

જાણતો થકો પણ (न य चएइ परिकहेउं) તેનું વર્ણન વનમાં કરી શકતો નથી, કેમકે ( उवमाए तहि असंतीए ) ઉપમાનો ત્યા અભાવ છે.

અહીં આ પ્રકારની એક વાર્તા છે.

કોઈ એક રાજા વાયુસેવન (ફરવા) માટે ઘોડા ઉપર સવાર થઈને મહેલમાંથી બહાર નીકળ્યો. જે ઘોડા ઉપર તે સવાર થયો હતો તે મહા દુર્દાન્ત (મુશ્કેલીથી વશ થાય તેવો) હતો. તેથી ચાલતાં ચાલતા તેને એ ભય લાગતો હતો કે ક્યાંક આ મને પાડી તો નહિ દે ?, આથી તેને રોકતાં રોકતા તે થાકી ગયો, અને કોઈ જંગલમાં જઈને તેના ઉપરથી તે નીચે ઉતર્યો. એટલામાં એક ભીલે તેને જોયો અને તરત જ પાસે આવીને તેણે થાકેલા રાજાની સેવા-શુશ્રૂષા કરી થાક ઉતાર્યો રાજા બહુ ખુશી થયો અને તેને પોતાની સાથે લઈને તે પોતાની રાજધાનીએ પાછો આવ્યો. ત્યા રાજાએ પોતાના રાજસી ઠાઠમાઠપૂર્વક તેને ખૂબ આનંદથી રાખ્યો. ખાવા-પીવાને માટે તેને એવા એવા તો ભોજ્ય પદાર્થ આપ્યા કે જે તેણે તેની જીંદગીમા કદીએ જોયા પણ નહોતા. આમ રહેતાં રહેતા કેટલોક સમય વીતી ગયો અને વરસાદનો સમય આવ્યો ત્યારે તેને પોતાનાં સ્થાન પર જવાની ઉત્કંઠા

**मूलम्—इय सिद्धाणं सोक्खं, अणोवमं णत्थि तस्स ओवम्मं।**

स्ववासस्थानमागतः। अथ स्वपरिवारस्तं पृच्छति स्म—हे तात! कीदृशम् तद् भूपनगरम्? इति। स म्लेच्छस्तस्य भूपनगरस्य सर्वान् बहुविधान् नगरगुणान् विजानन्नपि तान् वक्तु कृतोद्यमोऽपि तत्र वने नगरसादृश्यस्याभावाद् वर्णयितुं नाशक्नोदिति ॥ सू० १२२ ॥

**टीका**—'इय' इत्यादि। इय' इति=एवम्—अनेन प्रकारेण' **सिद्धाणं**' सिद्धानां '**सोक्खं**' सौख्यम्, '**अणोवमं**' अनुपमं वर्तते, कुतः? यतस्तस्य '**ओवम्मं णत्थि**' औपम्यं

राजा को जब यह ज्ञात हुआ तब उसने उसको खूब आदर—सत्कार के साथ बिदा किया। चलते २ यह अपने घर पर आ गया। सब कुटुम्बी जन इससे मिलने को आने लगे। लोगों ने पूछा, कहो भाई! राजा के निकट कैसे रहे?, राजा का वह नगर कैसा है?। भील ने जो कि उस राजा के नगर की सब प्रकार की श्री से परिचित हो चुका था, राजधानी का वर्णन करने का उद्यम तो किया, परन्तु वह अपने उन भील—भाइयों के समक्ष यथावत् उसका वर्णन नहीं कर सका। कारण कि उस वन में नगर के वर्णन से मिलनेवाली उपमेय वस्तुओ का अभाव था। इस दृष्टान्त का भाव इस प्रकार समझना चाहिये कि वह भील नगर में अनुभवित आनन्दका अपने अन्य भाइयो के समक्ष उस जंगल में उस प्रकार की वस्तु के अभाव से वर्णन नहीं कर सका। उस सुख की कुछ भी उपमा नही बता सका ॥ सू १२२ ॥

જાગૃત થઇ. જ્યારે આ વાત રાજાના જાણવામાં આવી ત્યારે તેણે તેને ખૂબ આદર—સત્કારની સાથે વિદાયગિરી આપી. ચાલતાં ચાલતાં તે પોતાને ઘેર પહોંચ્યો. બધા કુંટુબી માણસો તેને મળવાને આવવા લાગ્યાં. લોકોએ પૂછ્યું કે, કહો ભાઈ, રાજાની પાસે તમે કેવી રીતે રહ્યા હતા?, રાજાનું તે નગર કેવુ છે?. ભીલ જો કે તે રાજાના નગરની બધી જાતની શ્રી (વૈભવ શોભા) થી પરિચિત થઇ ગયો હતો, અને રાજધાનીનું વર્ણન કરવાનો તેણે ઉદ્યમ (પ્રયત્ન) તો કર્યો, પરંતુ તે પોતાના ભીલ ભાઇઓની સમક્ષ યથાવત્ (જોઇએ તેવું) તેનું વર્ણન કરી શકયો નહિ; કારણ કે તે વનમા નગરના વર્ણન સાથે મેળખાય જેવી ઉપમા આપવા યોગ્ય વસ્તુઓનો અભાવ હતો. આ દૃષ્ટાંતનો ભાવ એવી રીતે સમજવો જોઈએ કે તે ભીલ જે પ્રકારે અનુભવેલ આનંદને પોતાના બીજા ભાઈઓની સમક્ષ વર્ણન કરવા જતા પણ તે જંગલમા એવા પ્રકારની વસ્તુઓના અભાવથી પોતે ભોગવેલા આનંદનો અનુભવ કરાવી શકયો નહિ. તે સુખની કોઈ પણ ઉપમા બતાવી શકયો નહિ. (સૂ. ૧૨૨)

**किंचि विसेसेणेत्तो, ओवम्ममिणं सुणह वोच्छं ॥ सू० १२३ ॥**

**मूलम्—जह सव्वकामगुणियं, पुरिसो भोत्तूण भोयणं कोई। तण्हाछुहाविमुक्को, अच्छेज्ज जहा अमियतित्तो ॥ सू० १२४ ॥**

नास्ति, तथापि वालानां वोधार्थमाह—'**किंचि**' इत्यादि । '**किंचि विसेसेण**' किञ्चिद्विशेषेण '**एत्तो**' इतः=अतः परम् '**ओवम्मं**' औपम्यम्=उपमानम् '**इणं**' इदं=वक्ष्यमाणं '**सुणह**' शृणुत, '**वोच्छं**' वक्ष्ये—अहं कथयिष्यामीत्यर्थः ॥ सू. १२३ ॥

**टीका**—'जह' इत्यादि । 'जह' यथा '**कोई पुरिसो**' कोऽपि पुरुषः, '**सव्व-कामगुणियं**' सर्वकामगुणितं=सर्वाभिलषणीयरसादिसंपन्नं, '**भोयणं**' भोजनम्=अशनादि-कम्, '**भोत्तूण**' भुक्त्वा, '**तण्हाछुहाविमुक्को**' तृष्णाक्षुधाविमुक्तः=पिपासाबुभुक्षारहितः '**अमि-**

'**इय सिद्धाण सोक्खं**' इत्यादि ।

(**इय सिद्धाणं सोक्खं**) इसी प्रकार सिद्धों का सुख यद्यपि (**अणोवमं**) अनुपम है, अतः (**णत्थि तस्स ओवम्मं**) उसकी किसी भी सांसारिक पदार्थ के साथ उपमा नहीं दी जा सकती है, तो भी (**किंचि विसेसेणेत्तो ओवम्ममिण सुणह वोच्छं**) वालजीवों को बोधन करने के लिये कुछ विशेषरीति से सिद्धों के इस सुख को उपमा देकर समझाया जाता है ॥ सू. १२३ ॥

'**जह सव्वकामगुणियं**' इत्यादि ।

(**जह सव्वकामगुणियं पुरिसो भोत्तूण भोयणं कोई**) कोई पुरुष पांचो इन्द्रियों को तृप्त करनेवाले काम—शब्द, रूप, और भोग—गंध, रस, स्पर्श आदि विषयों को यथेच्छरीति से भोगकर (**तण्हाछुहाविमुक्को**) पिपासा एवं बुभुक्षा से रहित (**अमियतित्तो**

'इय सिद्धाणं सोक्खं' ઇત્યાદિ.

(इय सिद्धाणं सोक्खं) આ પ્રકારે સિદ્ધોનુ સુખ જો કે (अणोवमं) અનુપમ છે, તેથી (णत्थि तस्स ओवम्मं) તેની ઉપમા કોઇ પણ સાસારિક પદાર્થના સુખની સાથે આપી શકાતી નથી. તો પણ (किंचि विसेसेणेत्तो ओवम्ममिणं सुणह वोच्छं) બાલજીવોને બોધન કરવા માટે કંઈક વિશેષ રીતથી સિદ્ધોના આ સુખની ઉપમા દઈ ને સમજાવવામાં આવે છે. (સૂ.૧૨૩)

'जह सव्वकामगुणियं' ઇત્યાદિ.

(जह सव्वकामगुणियं पुरिसो भोत्तूण भोयणं कोई) જેમ કોઈ પુરુષ પાંચેય ઈંદ્રિયોને તૃપ્ત કરવા વાળા કામ—શબ્દ, રૂપ, અને ભોગ—ગંધ, રસ, સ્પર્શ

**मूलम्**—इय सव्वकालतित्ता, अउलं निव्वाणमुवगया सिद्धा।
सासयमव्वाबाहं, चिट्ठंति सुही सुहं पत्ता ॥ सू० ॥ १२५
**मूलम्**—सिद्धत्ति य बुद्धत्ति य, पारगयत्ति य परंपरगयत्ति।

---

यतित्तो' अमृततृप्तो 'जहा' यथा=इव, 'अच्छेज्ज' आसीत=तिष्ठेत ॥ सू. १२४ ॥

**टीका**—'इय' इत्यादि। 'इय' इति=एवं 'सव्वकालतित्ता' सर्वकालतृप्ताः-अपुनरावृत्तिस्थान प्राप्तत्वात्, 'निव्वाण' निर्वाण=मोक्षम 'उवगया' उपगता 'सिद्धा' सिद्धाः, 'अउलं' अतुलम्=अनुपमम् 'सासय' शाश्वतं=सार्वकालिकम्, 'अव्वाबाहं' अव्याबाध=सर्वदुःखविवर्जित 'सुहं' सुख 'पत्ता' प्राप्ता, अत 'सुही चिट्ठंति' सुखिनस्तिष्ठन्ति, ननु 'सुखं प्राप्ता' इत्युक्ते 'सुखिन' इति किमर्थम् ?, अत्रोच्यते—केचिन्मन्यन्ते दुःखाभावमात्रं मुक्तिरिति, तन्मतनिराकरणार्थं मोक्षस्य वास्तविकसुखस्वरूपताप्रतिबोधनार्थं च 'सुख प्राप्ताः सुखिनस्तिष्ठन्ती'-त्युक्तम् ॥ सू १२५ ॥

**टीका**—साम्प्रतं वस्तुत सिद्धपर्यायशब्दान् प्रतिबोधयन्नाह—'सिद्धत्ति' इत्यादि।

---

जहा ) अमृतपान से तृप्त के समान ( अच्छेज्ज ) रहता है ॥ सू. १२४ ॥

'इय सव्वकालतित्ता' इत्यादि।

( इय सव्वकालतित्ता ) अपुनरावृत्तिस्वरूप मुक्तिस्थान को प्राप्त होने के कारण सर्वकाल तृप्त हुए ( निव्वाणमुवगया सिद्धा ) वे सिद्ध भगवान्, शारीरिक एवं मानसिक दुःखो से सर्वथा रहित होकर ( अउलं अव्वाबाहं चिट्ठंति सुही सुहं पत्ता ) अनुपम, शाश्वत एव अव्याबाध सुख को भोगते हुए उस मुक्तिस्थान मे सदाकाल—अनन्तकाल तक सुखी ही सुखी रहते है ॥ सू. १२५ ॥

---

આદિ વિષયોને યથેચ્છરૂપે ભોગવીને ( तण्हाछुहाविमुक्को ) પિપાસા તેમજ બુભુક્ષા ( ભૂખ-તરસ ) થી રહિત ( असियतित्तो जहा ) અમૃતપાનથી તૃપ્તની જેમ ( अच्छेज्ज ) રહે છે ( સૂ. ૧૨૪ )

'इय सव्वकालतित्ता' ઇત્યાદિ.

( इय सव्वकालतित्ता ) અપુનરાવૃત્તિસ્વરૂપ મુકિતસ્થાનને પ્રાપ્ત થવાના કારણે સર્વકાલ તૃપ્ત થયેલા ( निव्वाणमुवगया सिद्धा ) તે સિદ્ધ ભગવાન શારીરિક તેમજ માનસિક દુઃખોથી સર્વથા રહિત થઇને ( अउलं अव्वाबाहं चिट्ठंति सुही सुहं पत्ता ) અનુપમ, શાશ્વત તેમજ અવ્યાબાધ સુખને ભોગવતા તે મુકિત સ્થાનમાં સદાકાલ-અનંતકાલ સુધી સુખી રહે છે. ( સૂ. ૧૨૫ )

उमुक्ककम्मकवया, अजरा अमरा असंगा य ॥सू० १२६ ॥

मूलम्---णिच्छिण्णसव्वदुक्खा, जाइजरामरणबंधणविमुक्का ।

**'सिद्धत्ति य'** सिद्धा इति च–तेषां नाम, कृतकृत्यत्वात्, **'बुद्धत्ति य'** बुद्धा इति च–केवलज्ञानेन विश्वाववोधात, **'पारगयत्ति य'** पारगता इति च–भवसागरपारगमनात, **'परंपरगयत्ति य'** परंपरगता'=मिथ्यात्वादिचतुर्दशगुणस्थानकानां मनुष्यादिसुगतीनां च पारंपर्येण भवसिन्धुपार प्राप्ता इति, **'उम्मुक्ककम्मकवया'** उन्मुक्तकर्मकवचाः=कर्मकवचवर्जिता' **'अजरा'** अजरा.–वयसोऽभावात्, **'अमरा'** अमराः–आयुषोऽभावात्, **'असंगा य'** असङ्गाश्च सकलक्लेशरहितत्वात् ॥ सू. १२६ ॥

**टीका—'णिच्छिण्ण'** इत्यादि । **'णिच्छिण्णसव्वदुक्खा'** निस्तीर्णसर्वदु खाः–

**'सिद्धत्ति य बुद्धत्ति य'** इत्यादि ।

(**सिद्धत्ति य**) कृतकृत्य होने से वे सिद्ध कहे जाते है । (**बुद्धत्ति य**) केवल ज्ञान से सकल लोकालोक के ज्ञाता होने से वे बुद्ध कहे जाते है । (**पारगयत्ति य**) भवरूप समुद्र से पारंगत हो जाने के कारण वे पारगत कहे जाते है। (**परंपरगयत्ति य**) मिथ्यात्व–आदि चौदह गुणस्थानकों और मनुष्य–आदि सुगतियो की परम्परा से भवसिन्धु को पार करने के कारण वे परंपरगत कहे जाते है । (**उम्मुक्ककम्मकवया अजरा अमरा असंगा य**) कर्मरूप कवच से वर्जित होने के कारण, एव आयु कर्म का सर्वथा प्रक्षय हो जाने के कारण वे अमर कहे जाते है। तथा सकलक्लेशों से रहित होने के कारण वे असग कहे जाते है । ये सिद्ध, बुद्ध, आदि सव शब्द, पर्यायवाची शब्द है ॥ सू १२६ ॥

'सिद्धत्ति य बुद्धत्ति य' ઇત્યાદિ.

( सिद्धत्ति य ) કૃતકૃત્ય હોવાથી તેમને સિદ્ધ કહેવામાં આવે છે. (बुद्धत्ति य) કેવળજ્ઞાનથી સકલ લોકાલોકના જ્ઞાતા હોવાના કારણે બુદ્ધ કહેવામા આવે છે. ( पारगयत्ति य ) ભવરૂપ સમુદ્રથી પારગત થઈ જવાના કારણે તેમને પારગત કહેવામાં આવે છે. (परंपरगयत्ति य) મિથ્યાત્વ–આદિ ચૌદ ગુણસ્થાનકો અને મનુષ્ય આદિ સુગતિઓની પરંપરાથી ભવસિંધુને પાર કરવાને કારણે તે પરંપરગત કહેવાય છે. ( उम्मुक्ककम्मकवया अजरा अमरा असंगा य ) કર્મરૂપ કવચથી વર્જિત હોવાના કારણે તેમજ આયુકર્મનો સર્વથા પ્રક્ષય થઈ જવાના કારણે તેઓને અમર કહેવામાં આવે છે, તથા સકલ ક્લેશોથી રહિત હોવાના કારણે અસંગ કહેવામાં આવે છે. આ સિદ્ધ બુદ્ધ આદિ બધા શબ્દો પર્યાયવાચી શબ્દ છે. ( સૂ. ૧૨૬ )

अव्वाबाहं सुक्खं, अणुहोंती सासयं सिद्धा ॥ सू० १२७॥

मूलम्—अतुलसुखसागरगया, अव्वाबाहं अणोवमं पत्ता ।
सव्वमणागयमद्धं, चिट्ठंति सुही सुहं पत्ता ॥ सू० १२८ ॥

॥ ओवाइय समत्त ॥

निस्तीर्णानि सर्वदुःखानि यैस्ते तथा—शारीरमानससकलदुःखान्यतिक्रान्ताः, पुनः—'जाइजरामरणबंधणविमुक्का' जातिजरामरणबन्धनविमुक्ताः=जन्मवार्द्धक्यमृत्युकर्मबन्धनरहिता 'सिद्धा' सिद्धाः 'अव्वाबाहं' अव्याबाध=व्याघातवर्जितं 'सासयं' शाश्वत=सार्वकालिक 'सोक्खं' सौख्यम् 'अणुहोंती' अनुभवन्ति ॥ सू. १२७ ॥

टीका—'अतुलसुख'-इत्यादि । 'अतुलसुखसागरगया' अतुलसुखसागरगता—अतुलः=अनुपमो यः सुखसागरः=सुखसमुद्रस्तं गताः=प्राप्ताः, पुनः 'अव्वाबाहं' अव्या-

---

'णिच्छिण्णसव्वदुक्खा' इत्यादि ।

(सिद्धा) ये सिद्ध भगवान् (णिच्छिण्णसव्वदुक्खा) समस्त दुःखों के अतिक्रमण, तथा (जाइजरामरणबंधणविमुक्का) जन्म, जरा एवं मरण के बन्धनों से निर्मुक्त हो जाने के कारण, (सासयं अव्वाबाहं सुक्खं अणुहोंती) शाश्वत एवं अव्याबाध सुख का अनन्त काल तक अनुभव करते रहते है ॥ सू. १२७ ॥

'अतुलसुखसागरगया' इत्यादि ।

(अतुलसुखसागरगया) अनुपम सुख सागर में मग्न वे सिद्ध भगवान्,

---

'णिच्छिण्णसव्वदुक्खा' ઇત્યાદિ.

(सिद्धा) એ સિદ્ધ ભગવાન (णिच्छिण्णसव्वदुक्खा) સઘળા દુઃખોના અતિક્રમણ, તથા (जाइजरामरणबंधणविमुक्का) જન્મ, જરા તેમજ મરણનાં બંધનોથી નિર્મુકત થઈ જવાના કારણે (सासयं अव्वाबाहं सुक्खं अणुहोंती) શાશ્વત તેમજ અવ્યાબાધ સુખનો અનંત કાલ સુધી અનુભવ કરતા રહે છે. (સૂ ૧૨૭)

'अतुलसुखसागरगया' ઇત્યાદિ.

(अतुलसुखसागरगया) અનુપમ સુખના સાગરમાં મગ્ન તે સિદ્ધ ભગવાન, (अव्वाबाहं अणोवमं पत्ता) તે પ્રાપ્ત કરેલા મુકિતસ્થાનમાં (सव्वमणा-

बाधं=व्याघातवर्जितम् 'अणोवमं' अनुपमम्=सादृश्यवर्जितं सिद्धिस्थानं 'पत्ता' प्राप्ताः=अधिष्ठिताः सिद्धाः. 'सुहं पत्ता' सुखं प्राप्ताः=सुखमधिगताः, अतएव 'सुही' सुखिनः सन्तः **सव्वमणागयमद्धं'** सर्वमनागताद्धं=सर्वं भविष्यत्कालं **'चिट्ठंति'** तिष्ठन्तीति ॥ सू. १२८ ॥

**॥ औपपातिकं समाप्तम् ॥**

॥ इति श्रीविश्वविख्यात–जगद्वल्लभ–प्रसिद्धवाचक–पञ्चदशभाषाकलितललितकला–पालापक–प्रविशुद्धगद्यपद्यनैकग्रन्थनिर्मापक – वादिमानमर्दक – श्रीशाहू–छत्रपतिकोल्हापुरराजप्रदत्त–'जैनशास्त्राचार्य'-पदभूषित–कोल्हापुरराजगुरु–बालब्रह्मचारि–जैनाचार्य–जैनधर्मदिवाकर–पूज्य–**श्रीघासीलाल**-व्रतिविरचिता **औपपातिक–सूत्रस्य पीयूषवर्षिण्याख्या** व्याख्या सम्पूर्णा ॥

---

(अव्वाबाहं अणोवमं पत्ता) प्राप्त हुए उस मुक्ति स्थान में (सव्वमणागयमद्धं चिट्ठंति सुही सुहं पत्ता) अनन्तकाल तक सदा सुखी ही रहते हैं। ॥ सू. १२८ ॥

**॥ इति औपपातिकसूत्र का हिन्दी अनुवाद सम्पूर्ण ॥**

---

गयमद्धं चिट्ठंति सुही सुहं पत्ता ) અનંતકાળ સુધી સુખીજ રહે છે. ( સૂ. ૧૨૮ )

**ઇતિ ઔપપાતિક સૂત્રનો ગુજરાતી અનુવાદ સંપૂર્ણ**

# દાનવીરોની નામાવલી

*

શ્રી અખિલ ભારત શ્વેતામ્બર સ્થાનકવાસી
ન શાસ્ત્રોદ્ધાર સમિતિ.

*

ગરેડીયા કુવા રોડ–ગ્રીન લોજ પાસે,
રા જ કો ટ

*

શરૂઆત તા. ૧૮–૧૦–૪૪ થી તા. ૧૦–૧૨–૫૮ સુધીમાં
દાખલ થયેલ મેમ્બરોનાં મુબારક નામો

*

ગામવાર કકાવારી લિસ્ટ.

*

( રૂા. ૨૫૦ થી ઓછી રકમ ભરનારનું નામ આ યાદીમાં
સામેલ કરેલ નથી.)

## આદ્યમુરબ્બીશ્રીઓ–૫

(ઓછામાં ઓછી રૂા. ૫૦૦૦ ની રકમ આપનાર)

| નંબર | નામ | ગામ | રૂપિયા |
|---|---|---|---|
| ૧ | શેઠ શાન્તીલાલ મંગળદાસભાઇ જાગીતા ભીલમાલીક | અમદાવાદ | ૧૦૦૦૦ |
| ૨ | શેઠ હરખચંદ કાલીદાસભાઇ વારીયા હા. શેઠ લાલચંદભાઈ જેચંદભાઇ, નગીનભાઇ, વૃજલાલભાઈ તથા વલ્લભદાસભાઈ | ભાવનગર | ૬૦૦૦ |
| ૩ | કોઠારી જેચંદભાઈ અજરામર હા. હરગોવિંદભાઈ જેચંદભાઈ | રાજકોટ | ૫૨૫૧ |
| ૪ | શેઠ ધારશીભાઈ જીવનભાઈ | શોલાપુર | ૫૦૦૧ |
| ૫ | સ્વ. પિતાશ્રી છગનલાલ શામળદાસના સ્મરણાર્થે હ. ભોગીલાલ છગનલાલભાઇ ભાવસાર | અમદાવાદ | ૫૨૫૧ |

## મુરબ્બીશ્રીઓ–૨૧

(ઓછામાં ઓછી રૂા. ૧૦૦૦ ની રકમ આપનાર)

| નંબર | નામ | ગામ | રૂપિયા |
|---|---|---|---|
| ૧ | વકીલ જીવરાજભાઈ વર્ધમાન કોઠારી હ. કહાનદાસભાઇ તથા વેણીલાલભાઇ | જેતપુર | ૩૬૦૫ |
| ૨ | દોશી પ્રભુદાસ મૂળજીભાઈ | રાજકોટ | ૩૬૦૪ |
| ૩ | મ્હેતા ગુલાબચંદ પાનાચંદ | રાજકોટ | ૩૨૮‌૯ાા‌ાા |
| ૪ | મ્હેતા માણેકલાલ અમુલખરાય | ઘાટકોપર | ૩૨૫૦ |
| ૫ | સંઘવી પીતામ્બરદાસ ગુલાબચંદ | જામનગર | ૩૧૦૧ |
| ૬ | શેઠ શામજીભાઈ વેલજીભાઈ વીરાણી | રાજકોટ | ૨૫૦૦ |
| ૭ | નામદાર ઠાકોર સાહેબ લખધીરસિંહજી બહાદુર | મોરબી | ૨૦૦૦ |
| ૮ | શેઠ લ્હેરચંદ કુંવરજી હા. શેઠ ન્યાલચંદ લ્હેરચંદ | સિદ્ધપુર | ૨૦૦૦ |
| ૯ | શાહ છગનલાલ હેમચંદ વસા હા. મોહનલાલભાઈ તથા મોતીલાલભાઈ | મુંબઈ | ૨૦૦૦ |
| ૧૦ | શ્રી સ્થાનકવાસી જૈન સંઘ | મોરબી | ૧૯૬૩ |
| ૧૧ | મ્હેતા સોમચંદ તુલસીદાસ તથા તેમનાં ધર્મપત્ની અ. સૌ. મણીગૌરી મગનલાલ | રતલામ | ૧૫૦૦ |
| ૧૨ | મ્હેતા પોપટલાલ માવજીભાઈ | જામજોધપુર | ૧૩૦૧ |
| ૧૩ | દોશી કપુરચંદ અમરશી હા. દલપતરામભાઈ | જામજોધપુર | ૧૦૦૨ |
| ૧૪ | બગડીઆ જગજીવનદાસ રતનશી | દામનગર | ૧૦૦૨ |
| ૧૫ | શેઠ આત્મારામ માણેકલાલ | અમદાવાદ | ૧૦૦૧ |
| ૧૬ | શેઠ માણેકલાલ ભાણજીભાઈ | પોરબંદર | ૧૦૦૧ |
| ૧૭ | શ્રીમાન ચંદ્રસિંહજી સાહેબ મ્હેતા (રેલ્વે મેનેજર) | કલકત્તા | ૧૦૦૧ |
| ૧૮ | મ્હેતા સોમચંદ નેણસીભાઇ (કરાંચીવાળા) | મોરબી | ૧૦૦૧ |

૧૯ શાહ હરીલાલ અનોપચંદભાઈ ખંભાત ૧૦૦૧
૨૦ કોઠારી છબીલદાસ હરખચંદભાઈ મુંબઇ ૧૦૦૦
૨૧ કોઠારી રંગીલદાસ હરખચંદભાઈ શિહોર ૧૦૦૦

## સહાયક મેમ્બરો-૪૯

(ઓછામાં ઓછી રૂા. ૫૦૦ ની રકમ આપનાર)

૧ શાહ રંગજીભાઈ મોહનલાલ અમદાવાદ ૭૫૧
૨ મોદી કેશવલાલ હરીચંદભાઈ સાબરમતી ૭૫૦
૩ શ્રી સ્થાનકવાસી જૈનસંઘ હા. શેઠ જુંઝાભાઇ વેલસીભાઈ વઢવાણ શહેર ૭૫૦
૪ શેઠ નરોત્તમદાસ ઓઘડભાઇ શીવ ૭૦૦
૫ શેઠ રતનશી હરજીભાઇ હા. ગોરધનદાસભાઈ જામજોધપુર ૫૫૫
૬ બાટવીયા ગીરધર પરમાનંદ હા. અમીચંદભાઇ બાબીજાળીઆ ૫૨૭
૭ મોરબીવાળા સંઘવી દેવચંદ નેણશીભાઈ તથા તેમનાં ધર્મપત્નિ
અ. સૌ. મણીબાઇ તરફથી હ. મુલચંદ દેવચંદ (કરાંચીવાલા) મલાડ ૫૧૧
૮ વોરા મણીલાલ પોપટલાલ અમદાવાદ ૫૦૨
૯ ગોસલીયા હરીલાલ લાલચંદ તથા
ચંપાબેન ગોસલીયા અમદાવાદ ૫૦૨
૧૦ શાહ પ્રેમચંદ માણેકચંદ તથા અ.સૌ.સમરતબેન રાજસીતાપુર અમદાવાદ ૫૦૨
૧૧ શેઠ ઇશ્વરલાલ પુરુષોત્તમદાસ અમદાવાદ ૫૦૧
૧૨ શેઠ ચંદુલાલ છગનલાલ અમદાવાદ ૫૦૧
૧૩ શાહ શાન્તીલાલ માણેકલાલ અમદાવાદ ૫૦૧
૧૪ શેઠ શીવલાલ ડમરભાઈ (કરાંચીવાલા) લીંબડી ૫૦૧
૧૫ કામદાર તારાચંદ પોપટલાલ ધોરાજીવાળા રાજકોટ ૫૦૧
૧૬ મ્હેતા મોહનલાલ કપુરચંદ રાજકોટ ૫૦૧
૧૭ શેઠ ગોવિંદજીભાઈ પોપટભાઈ રાજકોટ ૫૦૦
૧૮ શેઠ રામજી શામજી વીરાણી રાજકોટ ૫૦૧
૧૯ સ્વ. પિતાશ્રી નંદાજીના સ્મરણાર્થે
હા. વેણીચંદ શાન્તીલાલ (જાબુઆવાળા) મેઘનગર ૫૦૧
૨૦ શ્રી સ્થાનકવાસી જૈનસંઘ. હા. શેઠ ઠાકરશી કરસનજી થાનગઢ ૫૦૦
૨૧ શેઠ તારાચંદ પુખરાજજી ઔરંગાબાદ ૫૦૦
૨૨ શ્રી સ્થાનકવાસી જૈનસંઘ ઔરંગાબાદ ૫૦૦
૧૫૦ શેઠ શેષમલજી જીવરાજજી
૧૨૫ શેઠ અનરાજજી લાલચંદજી
૧૨૫ ધુકડચંદજી રૂપચંદજી

૧૦૦ દગડુમલજી ચાંદમલજી

---

૫૦૦

૨૩ મ્હેતા મૂળચંદ રાઘવજી હા. મગનલાલભાઈ તથા દુર્લભજીભાઇ પ્રાફા ૭૫૦
૨૪ શેઠ હરખચંદ પુરુષોત્તમ હા. ઇન્દુકુમાર ચોરવાડ ૫૦૦
૨૫ શેઠ કેસરીમલજી વસતીમલજી ગુગલીયા રાણાવાસ ૫૦૧
૨૬ સ્થા. જૈનસંઘ હા. બાટવીઆ અમીચંદ ગીરધરભાઇ ખાખીજાળીઆ ૫૦૧
૨૭ શેઠ ખીમજીભાઈ બાવાભાઇ હા. ફુલચંદભાઈ, ગુલાબચંદભાઈ
નાગરદાસભાઇ તથા જમનાદાસભાઇ મુંબઈ ૫૦૧
૨૮ શેઠ મણીલાલ મોહનલાલ ડગલી હા. મુળજીભાઇ મણીલાલ મુંબઇ ૫૦૧
૨૯ સ્વ. કાંતીલાલભાઈના સ્મરણાર્થે હા. શેઠ બાલચંદ સાકરચદ મુંબઈ ૫૦૧
૩૦ કામદાર રતીલાલ દુર્લભજી (જેતપુરવાળા) મુંબઇ ૫૦૧
૩૧ શાહ જયંતીલાલ અમૃતલાલ શીવ ૫૦૧
૩૨ વોરા મણીલાલ લક્ષ્મીચંદ શીવ ૫૦૧
૩૩ શેઠ ગુલાબચંદ ભુદરભાઈ તથા કસ્તુરબેન હ. ભાઈ અનોપચંદ બારરોડ ૫૦૧
૩૪ મહાન ત્યાગી બેન ધીરજકુંવર ચુનીલાલ મ્હેતા પ્રાફા ૫૦૧
૩૫ શ્રી સ્થાનકવાસી જૈનસંઘ પ્રાફા ૫૦૧
૩૬ શ્રી મગનલાલ છગનલાલ શેઠ રાજકોટ ૫૦૧
૩૭ શેઠ ચતુરદાસ ઠાકરશી તથા અ. સૌ. નંદકુવરબેન તરફથી જામનગર ૫૦૩
૩૮ શેઠ દેવચંદ અમરશી (બેન ધીરજકુવરની દીક્ષા પ્રસંગે ભેટ) ભાણવડ ૫૦૧
૩૯ શ્રી સ્થાનકવાસી જૈનસંઘ (બેન ધીરજકુવરની દીક્ષા પ્રસંગે ભેટ) ભાણવડ ૫૦૧
૪૦ વકીલ વાડીલાલ નેમચંદ શાહ વીરમગામ ૫૦૧
૪૧ મ્હેતા શાંતિલાલ મણીલાલ હા. કમળાબેન મ્હેતા અમદાવાદ ૫૫૬
૪૨ શ્રીયુત લાલચંદજી તથા અ. સૌ. ધીસાબેન ,, ૫૦૧
૪૩ શેઠ મોહનલાલ મુકુટલાલ બાલયા ,, ૫૦૧
૪૪ સ્વ. શેઠ ઉકાભાઇ ત્રીભોવનદાસ વીસલપુરવાળાના સ્મરણાર્થે
તેમનાં ધર્મપત્નિ લક્ષ્મીબાઇ ગીરધર તરફથી હ. મરઘાબેન
તથા મંગુબેન ,, ૫૦૧
૪૫ પારેખ જયંતીલાલ મનસુખલાલ રાજકોટવાળા હા. વિનુભાઇ ,, ૫૦૧
૪૬ શ્રીયુત શેઠ લાલચંદજી મીશ્રીલાલજી ,, ૫૦૧
૪૭ શ્રી વાંકાનેર સ્થા. જૈન સંઘ વાંકાનેર ૫૦૧
૪૮ શ્રી સ્થા. જૈન સંઘ બોટાદ ૫૦૧
૪૯ શેઠ ગુદડમલજી શેષમલજી જેવર (બરાર) ચોપળગાંવ ૫૦૧

# ૪૧૨ મેમ્બરોનું ગામવાર લીસ્ટ

## અમદાવાદ તથા પરાંઓ.

| | | |
|---|---|---|
| ૧ | શેઠ ગીરધરલાલ કરમચંદ | ૨૫૧ |
| ૨ | શેઠ છોટાલાલ વખતચંદ હા. ફકીરચંદભાઈ | ૨૫૧ |
| ૩ | શાહ કાન્તીલાલ ત્રીભોવનદાસ | ૨૫૧ |
| ૪ | શાહ પોચાલાલ પીતામ્બરદાસ | ૨૫૧ |
| ૫ | શાહ પોપટલાલ મોહનલાલ | ૨૫૧ |
| ૬ | શેઠ પ્રેમચંદ સાકરચંદ | ૨૫૦ |
| ૭ | શાહ રતીલાલ વાડીલાલ | ૨૫૧ |
| ૮ | શેઠ લાલભાઈ મંગળદાસ | ૨૫૧ |
| ૯ | સ્વ. અમૃતલાલ વર્ધમાનના સ્મરણાર્થે હા કાનજીભાઈ અમૃતલાલ | ૨૫૧ |
| ૧૦ | ભાવસાર ભોગીલાલ જમનાદાસ (પાટણવાળા) | ૨૫૧ |
| ૧૧ | શાહ નટવરલાલ ચંદુલાલ | ૨૫૧ |
| ૧૨ | શાહ નરસિંહદાસ ત્રીભોવનદાસ | ૨૫૧ |
| ૧૩ | શ્રી શાહપુર દરીયાપુરી આઠકોટી સ્થા. જૈન ઉપાશ્રય હા. વહીવટ કર્તા શેઠ ઈશ્વરલાલ પુરુષોત્તમદાસ | ૨૫૧ |
| ૧૪ | શ્રી છીપાપોળ દરીયાપુરી આઠકોટી સ્થા. જૈનસંઘ હા. ચંદુલાલ અચરતલાલ | ૨૫૧ |
| ૧૫ | શાહ ચીનુભાઈ બાલાભાઈ C/o શાહ બાલાભાઈ મહાસુખરામભાઈ | ૨૫૧ |
| ૧૬ | શાહ ભાઈલાલ ઉજમશી | ૨૫૧ |
| ૧૭ | શ્રી સુખલાલ ડી. શેઠ હા. ડૉ. કું. સરસ્વતીબ્હેન શેઠ | ૨૫૧ |
| ૧૮ | શ્રી સૌરાષ્ટ્ર સ્થા. જૈનસંઘ હા શાહ કાન્તિલાલ જીવણલાલ | ૨૫૧ |
| ૧૯ | મોદી નાથાલાલ મહાદેવદાસ | ૨૫૧ |
| ૨૦ | શાહ મોહનલાલ ત્રીકમદાસ | ૨૫૧ |
| ૨૧ | શ્રી છકોટી સ્થા. જૈનસંઘ હા. શાહ પોચાલાલ પીતામ્બરદાસ | ૨૫૧ |
| ૨૨ | શેઠ પોપટલાલ હંસરાજના સ્મરણાર્થે હા. શેઠ બાબુલાલ પોપટલાલ | ૨૫૧ |
| ૨૩ | દેશાઈ અમૃતલાલ વર્ધમાન બાપોદરાવાળાના સ્મરણાર્થે હા. ભાઈલાલ અમૃતલાલ દેશાઈ | ૨૫૧ |
| ૨૪ | શાહ નવનીતલાલ અમુલખરાય | ૨૫૧ |
| ૨૫ | શાહ મણીલાલ આશારામ | ૨૫૧ |
| ૨૬ | શાહ ચીનુભાઈ સાકરચંદ | ૨૫૧ |
| ૨૭ | શાહ મરજીવનદાસ ઉમેદચંદ | ૨૫૧ |
| ૨૮ | શાહ રજનીકાન્ત કસ્તુરચંદ | ૨૫૧ |

| | | |
|---|---|---|
| ૨૯ | સંઘવી જીવણલાલ છગનલાલ (સ્થા. જૈન) | ૨૫૧ |
| ૩૦ | શાહ શાંતિલાલ મોહનલાલ ધ્રાંગધ્રાવાળા | ૨૫૨ |
| ૩૧ | અ. સૌ. બેન રતનબાઈ નાદેચા હા. ધુલજીભાઇ ચંપાલાલજી | ૨૫૧ |
| ૩૨ | શાહ હરિલાલ જેઠાલાલ ભાડલાવાલા | ૨૫૧ |
| ૩૩ | શ્રી સરસપુર દરીયાપુરી આઠકોટી સ્થા. જૈન ઉપાશ્રય હા. ભાવસાર ભોગીલાલ છગનલાલ | ૨૫૧ |
| ૩૪ | શેઠ પુખરાજજી સમતીરામજી સાદડીવાળા | ૨૫૧ |
| ૩૫ | સ્વ. પિતાશ્રી જવાહીરલાલજી તથા પૂજ્ય ચાચાજી હજારીમલજી બરડીયાના સ્મરણાર્થે હા. મૂળચંદજી જવાહીરલાલજી | ૨૫૧ |
| ૩૬ | સ્વ. ભાવસાર બબાભાઇ (મંગળદાસ) પાનાચંદના સ્મરણાર્થે હા. તેમના ધર્મપત્નિ પુરીબેન | ૨૫૧ |
| ૩૭ | સ્વ. પિતાશ્રી રવજીભાઇ તથા સ્વ. માતુશ્રી મૂળીબાઈના સ્મરણાર્થે હા. કકલભાઈ કોઠારી | ૩૦૧ |
| ૩૮ | ભાવસાર કેશવલાલભાઈ મગનલાલભાઇ | ૨૫૧ |
| ૩૯ | શાહ કેશવલાલ નાનચંદ જાખડાવાળા હા. પાર્વતીબેન | ૨૫૧ |
| ૪૦ | શાહ જીતેન્દ્રકુમાર વાડીલાલ માણેકચંદ રાજસીતાપુરવાળા (સાબરમતી) | ૨૫૧ |
| ૪૧ | શ્રી સ્થા. જૈન સંઘ (સાબરમતી) | ૨૫૦ |
| ૪૨ | શ્રી બીપિનચંદ્ર તથા ઉમાકાંત ચુનીલાલ ગોપાણી (રાણપુરવાળા) | ૩૦૧ |
| ૪૩ | ભાવસાર છોટાલાલભાઈ છગનલાલભાઈ | ૨૫૧ |
| ૪૪ | ભાવસાર શકરાભાઈ છગનલાલભાઇ | ૨૫૧ |
| ૪૫ | અ. સૌ. જીવીબેન રતીલાલ હા. ભાવસાર રતીલાલ હરગોવિંદદાસ | ૨૫૧ |
| ૪૬ | સંઘવી બાલુભાઈ કમળશી તથા તેમનાં ધર્મપત્નિઓ અ. સૌ. ચંપાબેન તથા વસંતબેન તરફથી | ૨૫૧ |
| ૪૭ | અ. સૌ. વિદ્યાબેન વનેચંદ દેશાઈ હા ભૂપેન્દ્રકુમાર વનેચંદ દેશાઈ | ૨૫૧ |
| ૪૮ | સ્વ. પારેખ નાનચંદ ગોવિંદજી મોરબીવાળાના સ્મરણાર્થે હા. રતીલાલ નાનચંદ પારેખ | ૩૦૧ |
| ૪૯ | શાહ નટવરલાલ ગોકળદાસ | ૨૫૧ |
| ૫૦ | શાહ શામળભાઈ અમરશીભાઈ | ૨૫૧ |
| ૫૧ | શાહ ત્રીભોવનદાસ મગનલાલના સ્મરણાર્થે તેમનાં ધર્મપત્નિ શીવકુંવરબેન તરફથી હા. રતીલાલ ત્રીભોવનદાસ | ૪૦૨ |
| ૫૨ | અ. સૌ. કંકુબેન (ભાવસાર ભોગીલાલભાઇ છગનલાલભાઈના ધર્મપત્નિ) | ૩૦૯ |

| | | |
|---|---|---|
| ૫૩ | અ. સૌ. સવિતાબેન (જયંતીલાલ ભોગીલાલનાં ધર્મપત્નિ) | ૨૫૧ |
| ૫૪ | અ. સૌ. શાંતાબેન (દીનુભાઈ ભોગીલાલનાં ધર્મપત્નિ) | ૨૫૧ |
| ૫૫ | અ. સૌ. સુનંદાબેન (રમણભાઈ ભોગીલાલનાં ધર્મપત્નિ) | ૨૫૧ |
| ૫૬ | શેઠ હીરાજી રૂગનાથજીના સ્મરણાર્થે હા. વાગમલજી રૂગનાથજી | ૩૦૧ |
| ૫૭ | શેઠ મણીલાલ ખોધાભાઈ | ૨૫૧ |
| ૫૮ | પટવા સુમેરમલજી અનોપચંદજી જોધપુરવાળા | ૩૦૧ |
| ૫૯ | સ્વ. માણેકલાલ વનમાળીદાસ શાહના સ્મરણાર્થે હા. રમણલાલ માણેકલાલ | ૨૫૧ |
| ૬૦ | સ્વ. શાહ ધનરાજજી ખેમરાજજીનાં સ્મરણાર્થે હા. કનૈયાલાલજી ધનરાજજી | ૩૦૧ |
| ૬૧ | શ્રી સારંગપુર દ. આ. કો. સ્થા. જૈન સંઘ હા. શાહ રમણલાલ ભગુભાઈ | ૨૫૧ |
| ૬૨ | દોશી હરજીવનદાસ જીવરાજ તથા લક્ષ્મ બાઈ લહેરચંદના સ્મરણાર્થે હા. દોશી મનહરલાલ કરસનદાસ સુળીવાળા | ૨૫૧ |
| ૬૩ | શાહ પૂનમચંદ ફતેહચંદ | ૨૫૧ |
| ૬૪ | શ્રી ચતુરભાઇ નંદલાલ | ૨૫૧ |
| ૬૫ | શ્રીયુત અમૃતલાલ ઈશ્વરલાલ | ૨૫૧ |
| ૬૬ | શાહ જાદવજી મોહનલાલ તથા શાહ ચીમનલાલ અમુલખભાઈ | ૨૫૧ |
| ૬૭ | અ, સૌ. લાભુબેન મગનલાલ હા. શાહ અમૃતલાલ ધનજીભાઇ વઢવાણ શહેરવાળા | ૩૦૧ |
| ૬૮ | અ. સૌ. બહેન કાન્તાબેન ગોરધનદાસ | ૨૫૧ |
| ૬૯ | દોશી ફુલચંદ સુખલાલભાઈ બોટાદવાળાના સ્મરણાર્થે હ. દોશી છબીલદાસ ફુલચંદભાઇ | ૨૫૧ |
| ૭૦ | લાલાજી રામકુમારજી જૈન | ૨૫૧ |
| ૭૧ | શેઠ છોટાલાલ ગુમાનચંદ પાલનપુરવાળા | ૨૫૧ |
| ૭૨ | શાહ ધીરજલાલ મોતીલાલ | ૨૫૧ |
| ૭૩ | સંઘવી સૂર્યકાંત ચુનીલાલના સ્મરણાર્થે હ. સંઘવી જીવણલાલ ચુનીલાલ | ૨૫૧ |
| ૭૪ | ભાવસાર મોહનલાલ અમુલખરાય | ૨૫૧ |
| ૭૫ | શાહ ફુલચંદ સુલચંદભાઈ હ. હસમુખભાઈ ફુલચંદભાઇ | ૨૫૧ |
| ૭૬ | લલ્લુભાઈ મગનભાઇ ચૂડાવાલાના સ્મરણાર્થે હ. જસવંતલાલ લલ્લુભાઈ | ૩૦૧ |
| ૭૭ | શ્રીમાન મીશ્રીલાલજી જવાહીરલાલજી બરડીયા અલ્વરવાળા | ૨૫૧ |
| ૭૮ | મ્હેતા સુળચંદ મગનલાલ | ૨૫૧ |
| ૭૯ | વૈદ્ય નરસીદાસ સાકરચંદનાં ધર્મપત્નિ રેવાબાઈના સ્મરણાર્થે હ. હરીલાલભાઇ | ૨૫૧ |

## અમરેલી

૧ માસ્તર હકમીચંદ દીપચંદ શેઠ ૨૫૧

## અમલનેર

૧ શાહ નાગરદાસ વાઘજીભાઈ ૨૫૧
૨ શ્રી સ્થા. જૈનસંઘ હા. શાહ ગાંડાલાલ ભીખાલાલ ૨૫૧

## આણંદ

૧ શેઠ રમણીકલાલ એ. કપાસી હા. મનસુખલાલભાઇ ૨૫૧

## આસનસોલ

૧ બાવીસી મણીલાલ ચત્રભુજના સ્મરણાર્થે તેમનાં ધર્મપત્નિ
મણીબાઇ તરફથી હા. રસિકલાલ, અનિલકાંત, વિનોદરાય ૨૫૧

## આટકોટ

૧ શાહ ચુનીલાલ નારણજી ૩૦૧

## ઉદયપુર

૧ શ્રીયુત સાહેબલાલજી મ્હેતા ૩૦૧
૨ શેઠ મોતીલાલજી રણજીતલાલજી હીંગડ ૨૫૧
૩ શેઠ મગનલાલજી બાગરેચા ૨૫૧
૪ અ. સૌ. બ્હેન ચંદ્રાવતી તે શ્રીમાન બહોતલાલજી નાહરનાં
ધર્મપત્નિ હા. શેઠ રણજીતલાલજી હીંગડ ૨૫૧
૫ સ્વ.શેઠ કાળુલાલજી લોઢાના સ્મરણાર્થે હા. શેઠ દોલતસિંહજી લોઢા ૨૫૧
૬ સ્વ. શેઠ પ્રતાપમલજી સાખલાના સ્મરણાર્થે
હા. પ્રાણુલાલ હીરાલાલ સાખલા ૨૫૧
૭ પૂજ્ય પિતાશ્રી મોતીલાલજી મ્હેતાના સ્મરણાર્થે
હા. રણજીતલાલજી મોતીલાલજી મ્હેતા ૨૫૧
૮ શેઠ છગનલાલ બાગરેચા ૨૫૧
૯ શેઠ ભીમરાજ થાવરચંદ બાફણા ૨૫૧

## ઉમરગાંવરોડ

૧ શાહ મોહનલાલ પોપટલાલ પાનેલીવાળા ૨૫૧

## ઉપલેટા

૧ શેઠ જેઠાલાલ ગોરધનદાસ ૨૫૧
૨ સ્વ. બેન સંતોકબેન કચરા હા. ઓગમચંદભાઈ, છોટાલાલભાઈ
તથા અમૃતલાલભાઈ વાલજી (કલ્યાણવાળા) ૨૫૧

૩ શેઠ ખુશાલચંદ કાનજીભાઈ હા. શેઠ પ્રતાપભાઈ ૨૫૧
૪ સંઘાણી મૂળશંકર હરજીવનભાઈના સ્મરણાર્થે
હા. તેમના પુત્રો જયંતીલાલભાઈ તથા રમણીકલાલ ૨૫૧
૫ દોશી વિઠ્ઠલજી હરખચંદ (આગળના રૂા. ૧૫૧ મળીને) ૨૫૧

### એડન કેમ્પ

૧ શાહ ગોકળદાસ શામજી ઉદાણી ૨૫૧
૨ શાહ જગમોહનદાસ પરસોતમદાસ ૨૫૧

### કલકત્તા

૧ શ્રી કલકત્તા જૈન શ્વે. સ્થા. (ગુજરાતી) સંઘ.
હા. શાહ જયસુખલાલ પ્રભુલાલ ૨૫૧

### કલોલ

૧ શેઠ મોહનલાલ જેઠાભાઈના સ્મરણાર્થે હા. શેઠ આત્મારામ મોહનલાલ ૨૫૧
૨ ડો. મયાચંદ મગનલાલ શેઠ હા. ડો. રતનચંદ મયાચંદ ૨૫૧
૩ સ્વ. નાથાલાલ ઉમેદચંદના સ્મરણાર્થે હા. શાહ રતીલાલ નાથાલાલ ૨૫૧
૪ શાહ મણીલાલ તલકચંદના સ્મરણાર્થે હા. મારફતીયા ચંદુલાલ મણીલાલ ૨૫૧
૫ સ્વર્ગસ્થ શ્રીયુત વાડીલાલ પરશોત્તમદાસના સ્મરણાર્થે
હા. ઘેલાભાઈ તથા આત્મારામભાઈ ૨૫૧
૬ શેઠ નાગરદાસ કેશવલાલ ૨૫૧
૭ શ્રી સ્થાનકવાસી જૈન સંઘ હ. શેઠ આત્મારામભાઈ મોહનલાલભાઇ ૨૫૧

### કડી

૧ શ્રી સ્થા. દરીયાપુરી જૈન સંઘ હા. ભાવસાર દામોદરદાસભાઈ ઇશ્વરભાઈ ૨૫૧

### કાનપુર

૧ શાહ રમણીકલાલ પ્રેમચંદભાઇ (આગળના રૂા. ૧૫૦ મળીને) ૩૦૦
૨ શાહ હરકીશનદાસ ફૂલચંદભાઇ ૨૫૧

### કુંદણીઃ—(આટકોટ)

૧ દોશી રતીલાલ ટોકરશીભાઈ ૨૫૧

### કોલકી

૧ પટેલ ગોવિંદલાલ ભગવાનજી ૨૫૧
૨ પટેલ ખીમજી જેઠાભાઇ વાઘાણી (તેમના સ્વ. સુપુત્ર રામજીભાઇના સ્મરણાર્થે) ૩૦૨

### ખાખીજાળીયા

૧ ખાટવીયા ગુલાબચંદ લીલાધર (આગળના રૂા. ૧૫૧ મળીને) ૨૫૧

### ખીચન

૧ શેઠ કીશનલાલ પૃથ્વીરાજ ૩૫૨

## ખંભાત

| | |
|---|---|
| ૧ શેઠ માણેકલાલ ભગવાનદાસ | ૨૫૧ |
| ૨ શ્રી સ્થા. જૈન સંઘ હા. પટેલ કાન્તીલાલ અંબાલાલ | ૨૫૧ |
| ૩ શાહ સાકરચંદ મોહનલાલ | ૨૫૧ |
| ૪ શાહ ચંદુલાલ હરીલાલ | ૨૫૧ |
| ૫ શાહ સકરાભાઇ દેવચંદ | ૨૫૧ |
| ૬ શાહ ત્રિભોવનદાસ મગળદાસ | ૨૫૧ |

## ગુંદા

| | |
|---|---|
| ૧ સ્વ. મહેતા પૂનમચંદ ભવાનભાઈના સ્મરણાર્થે હા. તેમનાં ધર્મપત્નિ દીવાળીબેન લીલાધર | ૨૫૧ |

## ગોંડલ

| | |
|---|---|
| ૧ સ્વ. બાખડા વચ્છરાજ તુલસીદાસના ધર્મપત્નિ કમળબાઈ તરફથી હ. માણેકચંદભાઈ તથા કપુરચંદભાઈ | ૨૫૧ |
| ૨ પીપળીઆ લીલાધર દામોદર તરફથી તેમનાં ધર્મપત્નિ અ. સૌ. લીલાવતી સાકરચંદ કોઠારીના બીજા વરસીતપની ખુશાલીમા | ૩૦૧ |
| ૩ કામદાર જુઠાલાલ કેશવજીના સ્મરણાર્થે હા. હરીલાલ જુઠાભાઇ | ૩૦૧ |
| ૪ સ્વ. કોઠારી કૃપાશંકર માણેકચદના સ્મરણાર્થે હા. તેમનાં ધર્મપત્નિ પ્રભાકુંવરબેન | ૨૫૧ |

## ગોધરા

| | |
|---|---|
| ૧ શાહ ત્રીભોવનદાસ છગનલાલ | ૩૦૧ |

## ઘટકણુ

| | |
|---|---|
| ૧ શાહ ચંદુલાલ કેશવલાલ | ૨૫૧ |

## ઘોલવાડ (થાણા)

| | |
|---|---|
| ૧ મહેતા ગુલાબચંદજી ગંભીરમલજી | ૩૦૦ |

## ઘોડનદી

| | |
|---|---|
| ૧ શેઠ ચાંદમલ મોહનલાલ ભડારી | ૨૫૧ |

## ચુડા (ઝાલાવાડ)

| | |
|---|---|
| ૧ શ્રી સ્થા. જૈનસંઘ હા. રતીલાલ ગાંધી પ્રમુખ | ૨૫૧ |

## જલેસર (બાલાસોર)

| | |
|---|---|
| ૧ સંઘવી નાનચંદ પોપટભાઈ થાનગઢવાળા | ૨૫૧ |

## જામજોધપુર

| | |
|---|---|
| ૧ શ્રી સ્થા. જૈનસંઘ | ૩૮૭ |
| ૨ શાહ ત્રીભોવનદાસ ભગવાનજી પાનેલીવાળા | ૨૫૧ |
| ૩ દોશી માણેકચંદ ભવાન (આગળના રૂા ૧૫૧ મળીને) | ૨૫૧ |

૪ પટેલ લાલજી જુઠાભાઈ (આગળના રૂા. ૧૫૧ મળીને) ૨૫૧
૫ શેઠ બાવનજી જેઠાભાઇ (આગળના રૂા. ૧૫૧ મળીને) ૨૫૧

**જામનગર**

૧ શેઠ છોટાલાલ કેશવજી ૨૫૧
૨ વોરા ચીમનલાલ દેવજીભાઇ ૨૫૧
૩ ડો. સાહેબ પી. પી. શેઠ ૨૫૦

**જામખંભાળીઆ**

૧ શેઠ વસનજી નારણજી ૨૫૧
૨ શ્રી સ્થા. જૈનસંઘ હા. મ્હેતા રણછોડદાસ પરમાનંદ ૨૫૧
૩ સંઘવી પ્રાણલાલ લવજીભાઈ ૨૫૧

**જાવરા**

૧ સ્વ. ભંડારી સ્વરૂપચંદજી શાહના ધર્મપત્નિ મોતીબેનના સ્મરણાર્થે
હ. શ્રીયુત લાલચંદજી રાજમલજી કીશનગઢવાળા ૨૫૧

**જુનાગઢ**

૧ શાહ મણીલાલ મીઠાભાઈ હા. હરીલાલભાઈ (હાટીના માળીઆવાળા) ૨૫૧

**જુનારદેવ** (મધ્ય પ્રાંત)

૧ ઘેલાણી ત્રીકમજીભાઈ લાધાભાઇ ૨૫૧

**જેતપુર**

૧ શેઠ અમૃતલાલ હીરજીભાઇ હા. નરભેરામભાઇ (જસાપુરવાળા) ૨૫૧
૨ દોશી છોટાલાલ વનેચંદ ૨૫૧
૩ કોઠારી ડોલરકુમાર વેણીલાલ ૨૫૧
૪ અ. સૌ. બ્હેન સુરજકુંવર વેણીલાલ કોઠારી ૨૫૧

**જેતલસર**

૧ શાહ લક્ષ્મીચંદ કપુરચંદ ૨૫૧
૨ કામદાર લીલાધર જીવગજના સ્મરણાર્થે તેમનાં ધર્મપત્નિ જબકબેન
તરફથી હા. શાન્તીલાલભાઈ ગોંડલવાળા

**જોધપુર** (રાજસ્થાન)

૧ હસ્તીમલજી મનરૂપમલજી સામસુખા ૨૫૧

**જોરાવરનગર**

૧ શ્રી શ્વે. સ્થા જૈન સંઘ હ. શેઠ ચંપકલાલ ધનજીભાઈ ૨૫૧

**ડભાસ**

૧ સ્વ. તુરખીઆ લહેરચંદ માણેકચંદના સ્મરણાર્થે તેમનાં ધર્મપત્નિ
જીવતીબાઇ તરફથી હા. જયંતીભાઈ ૨૫૧

### ડોંડાઇચા

૧ શ્રી સ્થા. જૈન સંઘ હા. શેઠ ચંપાલાલજી મારફે ૨૫૦

### દસા (વાયાધોળા)

૧ શ્રી દસાગામ શ્રી સ્થા જૈન સંઘ હ. એક સદ્ગૃહસ્થ તરફથી ૨૫૧

### થાનગઢ

૧ શાહ ઠાકરશીભાઈ કરશનજી ૨૫૧
૨ શેઠ જેઠાલાલ ત્રીભોવનદાસ ૨૫૧
૩ શાહ ધારશીભાઈ પાશવીરભાઈ હા. સુખલાલભાઇ ૨૫૧

### દહાણુ રોડ (થાણા)

૧ શાહ હરજીવનદાસ ઓઘડ ખંધાર (કરાચીવાળા) ૨૫૧

### દિલ્હી

૧ લાલા પૂર્ણચંદજી જૈન (સેન્ટ્રલ બેંકવાળા) ૩૫૧
૨ શ્રીયુત મ્હેતાબચંદ જૈન ૨૫૧
૩ લાલાજી મીઠ્ઠનલાલજી જૈન એન્ડ સન્સ ૩૦૧
૪ લાલાજી ગુલશનરાયજી જૈન એન્ડ સન્સ ૩૦૧
૫ અ. સૌ. સજ્જનબેન ઇંદરમલજી પારેખ ૨૫૧

### ધાર (મધ્યપ્રાંત)

૧ શેઠ સાગરમલજી પનાલાલજી ૨૫૧

### ધ્રાંગધ્રા

૧ શ્રી સ્થા. જૈન મોટા સંઘ હા. શેઠ મંગળજીભાઈ જીવરાજ ૨૫૧
૨ સંઘવી નરસીદાસ વખતચંદ ૩૦૧
૩ ઠક્કર નારણદાસ હરગોવીંદદાસ ૨૫૧
૪ કોઠારી કપૂરચંદ મંગળજી ૨૫૧

### ધોરાજી

૧ મ્હેતા પ્રભુદાસ મૂળજીભાઇ ૩૫૧
૨ પિતાશ્રી ભગવાનજી કચરાભાઈના સ્મરણાર્થે
હા. પટેલ દલીચદ ભગવાનજી ૨૫૧
૩ અ સૌ. બચીબેન બાબુભાઇ ૨૫૧
૪ ધી નવ સૌરાષ્ટ્ર ઓઈલ મીલ પ્રા. લીમીટેડ ૨૫૧
૪ સ્વ. રાયચંદ પાનાચંદ શાહના સ્મરણાર્થે હા. ચીમનલાલ રાયચંદ ૩૦૧
૬ ગાંધી પોપટલાલ જેચંદ ૨૫૦
૭ દેશાઈ છગનલાલ ઠાહ્યાભાઈ લાઠવાળાનાં ધર્મપત્નિ દિવાળીબેન તરફથી હા. કુમારી હસુમતી ૨૫૧

## ધંધુકા

| | |
|---|---|
| ૧ ભાવસાર ખોડીદાસ ગણેશભાઈ | ૨૫૧ |
| ૨ શેઠ પોપટલાલ ધારશી | ૨૫૧ |
| ૩ સ્વ ગુલાબચંદભાઈના સ્મરણાર્થે હા પોપટલાલ નાનચંદ | ૨૫૧ |
| ૪ વસાણી ચત્રભુજ વાઘજીભાઈ | ૨૫૧ |

## નંદુરબાર

| | |
|---|---|
| ૧ શ્રી સ્થાનકવાસી જૈન સંઘ હા. શેઠ પ્રેમચંદ ભગવાનલાલ | ૨૫૦ |

## પાણસણા

| | |
|---|---|
| ૧ શ્રી સ્થાનકવાસી જૈન સંઘ | ૨૫૧ |

## પાલણપુર

| | |
|---|---|
| ૧ લક્ષ્મીબેન હા. મ્હેતા હરીલાલ પીતામ્બરદાસ | ૨૫૧ |
| ૨ શ્રી લોકાગચ્છ સ્થાનકવાસી જૈન પુસ્તકાલય | ૨૫૧ |
| ૩ મહેતા મણીલાલ ભાઇચંદભાઇ | ૨૫૧ |
| ૪ મહેતા સૂરજમલ ભાઇચંદભાઈ | ૨૫૧ |

## પાલેજ

| | |
|---|---|
| ૧ સ્વ મનસુખલાલ મોહનલાલ સંઘવીના સ્મરણાર્થે હા. ભાઈ ધીરજલાલ મનસુખલાલ | ૩૦૧ |

## પુના

| | |
|---|---|
| ૧ શેઠ ઉતમચંદજી કેવળચંદજી ધોકા | ૨૫૧ |

## પ્રાંતિજ

| | |
|---|---|
| ૧ શ્રી પ્રાંતિજ સ્થા જૈનસંઘ હ. શ્રીયુત અંબાલાલ મહાસુખરામ | ૨૫૧ |

## બરવાળા (ઘેલાશા)

| | |
|---|---|
| ૧ સ્વ મોહનલાલ નરસીદાસના સ્મરણાર્થે હા. તેમનાં ધર્મપત્નિ સુરજબેન મોરારજી | ૨૫૧ |

## બગસરા (ભાયાણી)

| | |
|---|---|
| ૧ શેઠ પોપટલાલ રાઘવજી રાયડીવાળા હા. શેઠ માનસંગ પ્રેમચંદ | ૨૫૧ |

## બેરાજા (કચ્છ)

| | |
|---|---|
| ૧ શેઠ ગાંગજી કેશવજી (જ્ઞાનભંડાર માટે) | ૨૫૧ |

## બેંગલોર

| | |
|---|---|
| ૧ બાટવીયા વનેચંદ અમીચંદ મહાવીર ટેક્ષટાઈલ સ્ટોર તરફથી ભાઈ ચંદ્રકાંતના લગ્નની ખુશાલીમાં | ૨૫૨ |

## બોટાદ

| | |
|---|---|
| ૧ સ્વ. વસાણી હરગોવિંદદાસ છગનલાલના સ્મરણાર્થે હા. તેમનાં ધર્મપત્નિ છબલબેન | ૨૫૧ |

## બાકાનેર

| | |
|---|---|
| ૧ શેઠ ભેરૂદાનજી શેઠીયા | ૨૫૪ |

## બોડેલી

| | | |
|---|---|---|
| ૧ | શાહ પ્રવિણચંદ્ર નરસીદાસ (સાણંદવાળા) | ૨૫૧ |
| ૨ | શાહ ગીરધરલાલ સાકરચંદ | ૨૫૧ |

## ભાણવડ

| | | |
|---|---|---|
| ૧ | શેઠ જેચંદભાઈ માણેકચંદ | ૩૫૨ |
| ૨ | સંઘવી માણેકચંદ માધવજી | ૨૫૧ |
| ૩ | શેઠ લાલજીભાઇ માણેકચંદ ( લાલપુરવાળા ) | ૨૫૧ |
| ૪ | શેઠ રામજી જીણાભાઇ | ૨૫૧ |
| ૫ | શેઠ પદમશી ભીમજી ફોફરીઆ | ૨૫૧ |
| ૬ | ફોફરીઆ ગાંડાલાલ કાનજીભાઇ હા. અ. સૌ. શાંતાબેન વસનજી | ૨૫૧ |
| ૭ | વકીલ મણીલાલ ખેંગારભાઈ પૂનાતર | ૨૫૧ |

## ભીલવાડા

| | | |
|---|---|---|
| ૧ | શ્રી શાંતિ જૈન પુસ્તકાલય હ. ચાંદમલજી માનમલજી સંઘવી | ૨૫૧ |
| ૨ | શેઠ ભીમરાજ મીશ્રીલાલજી | ૨૫૧ |

## ભોજાય (કચ્છ)

| | | |
|---|---|---|
| ૧ | જ્ઞાન મંદિરના સેક્રેટરી શાહ કુંવરજી જીવરાજ | ૨૫૧ |

## ભાવનગર

| | | |
|---|---|---|
| ૧ | સ્વ. કુંવરજી બાવાભાઇના સ્મરણાર્થે હ. શાહ લહેરચંદ કુંવરજી | ૩૦૧ |

## મદ્રાસ

| | | |
|---|---|---|
| ૧ | શેઠ મેઘરાજજી દેવીચંદજી | ૨૫૧ |

## મનોર (થાણા)

| | | |
|---|---|---|
| ૧ | શાહ શેરમલજી દેવીચંદજી જસવંતગઢવાળા હા. પૂનમચંદજી શેરમલજી બોલ્યા | ૨૫૧ |

## માનકુવા (કચ્છ)

| | | |
|---|---|---|
| ૧ | સ્વ. મહેતા કુંવરજી નાથાલાલના સ્મરણાર્થે હા. તેમનાં ધર્મપત્નિ કુંવરબાઈ હરખચંદ | ૨૫૧ |

( માનકુવા સ્થાનકવાસી જૈનસંઘ માટે )

## મુંબઇ તથા પરાંઓ

| | | |
|---|---|---|
| ૧ | શેઠ છગનલાલ નાનજીભાઈ | ૨૫૧ |
| ૨ | શાહ હરજીવન કેશવજી | ૨૫૧ |
| ૩ | ઘેલાણી પ્રભુલાલ ત્રીકમજીભાઈ (બોરીવલી) | ૨૫૨ |
| ૪ | શેઠ છોટુભાઈ હરગોવિંદદાસ કટોરીવાલા | ૨૫૧ |

| | | |
|---|---|---|
| ૫ | શ્રી વર્ધમાન સ્થા. જૈન સંઘ | |
| | હા. કેશરીમલજી અનોપચંદજી ગુગળીયા (મલાડ) | ૨૫૧ |
| ૬ | શેઠ ડુંગરશી હંશરાજ વીસરીયા | ૨૫૧ |
| ૭ | શાહ રમણીકલાલ કાળીદાસ તથા અ. સૌ. કાન્તાબેન રમણીકલાલ | ૨૫૧ |
| ૮ | શાહ હિમતલાલ હરજીવનદાસ | ૨૫૧ |
| ૯ | શાહ રતનશી મોણશીની કંપની | ૨૫૧ |
| ૧૦ | શાહ શીવજી માણેક ( કચ્છ બેરાજાવાળા ) | ૨૫૧ |
| ૧૧ | વોરા પાનાચંદ સંઘજીના સ્મરણાર્થે | |
| | હા. ત્રંબકલાલ પાનાચંદ એન્ડ બ્રધર્સ | ૨૫૧ |
| ૧૨ | સ્વ. પૂ. પિતાશ્રી વીરચંદ જેસીંગભાઇ લખતરવાળાના સ્મરણાર્થે | |
| | હા. કેશવલાલ વીરચંદ શેઠ | ૨૫૧ |
| ૧૩ | શા. કુંવરજી હંસરાજ | ૨૫૧ |
| ૧૪ | સ્વ. માતુશ્રી માણેકબેનના સ્મરણાર્થે | |
| | હા. શેઠ વલભદાસ નાનજી (પોરબંદરવાળા) | ૩૦૧ |
| ૧૫ | એક સદ્‌ગૃહસ્થ હા. શેઠ સુદરલાલ માણેકચંદ | ૨૫૧ |
| ૧૬ | અ. સૌ. પાનબાઈ હા. શેઠ પદમશી નરસિંહભાઇ (મલાડ) | ૨૫૧ |
| ૧૭ | શ્રીયુત અમૃતલાલ વર્ધમાન બાપોદરાવાળા હા. વલીચંદ અમૃતલાલ | ૨૫૧ |
| ૧૮ | સ્વ. શાહ નાગશી સોજપાળ ગુંદાળાવાળાના સ્મરણાર્થે | |
| | હા. રામજી નાગશી (મલાડ) | ૨૫૧ |
| ૧૯ | શાહ રામજી કરશનજી થાનગઢવાળા | ૨૫૧ |
| ૨૦ | શાહ નગીનદાસ કલ્યાણજી વેરાવળવાળા | ૨૫૧ |
| ૨૧ | શીવલાલ ગુલાબચંદ શેઠ મેવાવાળા | ૨૫૧ |
| ૨૨ | સ્વ. જટાશંકર દેવજી દોશીના સ્મરણાર્થે | |
| | હા. રણછોડદાસ (બાબુલાલ) જટાશંકર દોશી | ૩૦૧ |
| ૨૩ | સ્વ- ગોડા વણારશી ત્રીભોવન સરસઇવાળા સ્મરણાર્થે | |
| | હા. જગજીવન વણારશી ગોડા (મલાડ) | ૨૫૧ |
| ૨૪ | સ્વ. ત્રીભોવનદાસ વ્રજપાળ વીંછીયાવાળાના સ્મરણાર્થે | |
| | હા. હરગોવિંદદાસ ત્રીભોવનદાસ અજમેરા | ૨૫૧ |
| ૨૫ | સ્વ. કાનજી મૂળજીના સ્મરણાર્થે તથા માતુશ્રી દિવાળીબાઈના ૧૬ | |
| | ઉપવાસના પારણા પ્રસંગે હા. જયંતીલાલ કાનજી કાળાવડવાળા(મલાડ) | ૨૫૧ |
| ૨૬ | શેઠ ખુશાલભાઈ ખેંગારભાઇ | ૨૫૦ |
| ૨૭ | શાહ પ્રેમજી માલશી ગંગર (મલાડ) | ૨૫૧ |

૨૮ સ્વ. પિતાશ્રી પત્તુભાઇ મોનાભાઈના સ્મરણાર્થે
હા. શાહ કાનજી પતુભાઈ (મલાડ) ૨૫૧
૨૯ શાહ વેલજી જેશીંગભાઇ છાસરાવાળા તરફથી તેમનાં
ધર્મપત્નિ અ. સૌ. સ્વ. નાનબાઈના સ્મરણાર્થે ૩૦૧
૩૦ સ્વ. પિતાશ્રી રાયશી વેલજીના સ્મરણાર્થે
હા. શાહ દામજી રાયશી (મલાડ) ૩૦૧
૩૧ શેઠ ત્રંબકલાલ કસ્તુરચંદ લીંબડીવાળા તરફથી
શ્રી અજરામર શાસ્ત્રભંડાર લીંબડી માટે ( માટુંગા) ૨૫૧
૩૨ સ્વ. પિતાશ્રી ભીમજી કોરશી તથા માતુશ્રી પાલાબાઇના સ્મરણાર્થે
હા. શાહ ઉમરશીભાઇ ભીમશી કચ્છપતરીવાળા (મલાડ) ૩૦૧
૩૩ શેઠ ચુનીલાલ નરભેરામ વેકરીવાળા ૨૫૧
૩૪ શાહ વરજાંગભાઇ શીવજી (મલાડ) ૨૫૧
૩૫ રતીલાલ ભાઇચંદ મહેતા ૨૫૧
૩૬ શાહ ખીમજી મૂળજી પૂજા (મલાડ) ૨૫૧
૩૭ મેસર્સ સવાણી ટ્રાન્સપોર્ટ કંપની હા. શેઠ માણેકલાલ વાડીલાલ ૨૫૧
૩૮ ઘેલાણી વલભજી નરભેરામ હ. નરસીભાઈ વલભજી ૨૫૧
૩૯ અ. સૌ. સમતાબેન શાન્તીલાલ C/o શાન્તીલાલ ઉજમશી શાહ(મલાડ) ૨૫૧
૪૦ તેજાણી કુબેરદાસ પાનાચંદ ૨૫૧
૪૧ કપાસી મોહનલાલ શીવલાલ ૨૫૧
૪૨ સ્વ. કેશવલાલ વછરાજ કોઠારીના સ્મરણાર્થે
સુરજબેન તરફથી હા. તનસુખલાલભાઈ (મલાડ) ૨૫૧
૪૩ દડીયા અમૃતલાલ મોતીચંદ (ઘાટકોપર) ૨૫૧
૪૪ શેટ સરદારમલજી દેવીચંદજી કાવેડીયા (સાદડીવાળા) ૨૫૧
૪૫ દોશી ચત્રભુજ સુદરજી (ઘાટકોપર) ૨૫૧
૪૬ દોશી જુગલકીશોર ચત્રભુજ (ઘાટકોપર) ૨૫૧
૪૭ દોશી પ્રવીણચંદ્ર ચત્રભુજ (ઘાટકોપર) ૨૫૧
૪૮ શાહ ત્રીભોવનદાસ માનસિંગ દોઢીવાળાના સ્મરણાર્થે
હા. શાહ હરખચંદ ત્રીભોવનદાસ ૨૫૧
૪૯ શાહ જેઠાલાલ ડામરશી ધાંગધ્રાવાળા હા. શાહ વાડીલાલ જેઠાલાલ ૨૫૦
૫૦ શાહ ચંદુલાલ કેશવલાલ
૫૧ સ્વ. પિતાશ્રી શામળજી કલ્યાણજી ગોંડલવાળાના સ્મરણાર્થે
તેમના પુત્રો તરફથી હા. વૃજલાલ શામળજી ખોવીશી ૩૦૧

| | | |
|---|---|---|
| પર | શાહ પ્રેમજી હીરજી ગાલા | ૨૫૧ |
| ૫૩ | સ્વ. પિતાશ્રી ભગવાનજી હીરાચંદ જસાણીના સ્મરણાર્થે હા. લક્ષ્મીચંદ તથા કેશવલાલભાઈ | ૩૦૧ |
| ૫૪ | સ્વ. પિતાશ્રી હંસરાજ હીરાના સ્મરણાર્થે હા. દેવશી હંસરાજ કચ્છ બીદડાવાળા (મલાડ) | ૨૫૧ |
| ૫૫ | સ્વ. માતુશ્રી ગોમતીબાઈના સ્મરણાર્થે હા. શાહ પોપટલાલ પાનાચંદ | ૨૫૧ |
| ૫૬ | શેઠ નેમચંદ સ્વરૂપચંદ ખંભાતવાળા હા. ભાઈ જેઠાલાલ નેમચંદ | ૨૫૧ |
| ૫૭ | સ્વ. પિતાશ્રી શાહ અંબાલાલ પરસોતમ પાણશણાવાળાના સ્મરણાર્થે તેમના પુત્રો તરફથી હા. બાપાલાલભાઇ | ૨૫૧ |
| ૫૮ | બેન કેશરબાઈ ચંદુલાલ જેસીંગલાલ શાહ | ૨૫૧ |
| ૫૯ | દડીયા જેસીંગલાલ ત્રીકમજી | ૨૫૧ |
| ૬૦ | શાહ કાન્તીલાલ મગનલાલ (ઘાટકોપર) | ૨૫૧ |
| ૬૧ | કોઠારી સુખલાલજી પૂનમચંદજી (ખાર) | ૨૫૧ |
| ૬૨ | સ્વ. માતુશ્રી કડવીબાઈના સ્મરણાર્થે હા. તેમના પૌત્ર હકમીચંદ તારાચંદ દોશી (કાંદીવલી) | ૨૫૧ |
| ૬૩ | પારેખ ચીમનલાલ લાલચંદનાં ધર્મપત્નિ અ. સૌ. શ્રીમતી ચંચળબાઇના સ્મરણાર્થે હા. સારાભાઈ ચીમનલાલ | ૨૫૧ |
| ૬૪ | શાહ કોરશીભાઈ હીરજીભાઇ | ૩૦૧ |
| ૬૫ | પિતાશ્રી કુંદનમલજી મોતીલાલજીના સ્મરણાર્થે હા. મોતીલાલ જુગરમલ (અહમદનગરવાળા) | ૨૫૧ |
| ૬૬ | શ્રી વર્ધમાન શ્વેતામ્બર સ્થા. જૈન સંઘ હા. શેઠ રૂપચંદ શીવલાલ કામદાર (અંધેરી) | ૨૫૧ |
| ૬૭ | અ. સૌ. કમળાબેન કામદાર હા. રૂપચંદ શીવલાલ (અંધેરી) | ૨૫૧ |
| ૬૮ | ધી મરીના મોર્ડન હાઈસ્કુલ ટ્રસ્ટ ફંડ હા. શાહ મણીલાલ ઠાકરશી. | ૨૫૧ |
| ૬૯ | સ્વ. માતુશ્રી જીવીબાઈના સ્મરણાર્થે હા. શામજી શીવજી કચ્છ ગુંદાળાવાળા (ગોરેગાંવ) | ૨૫૧ |
| ૭૦ | શાહ રવજીભાઇ તથા ભાઇલાલભાઇની કંપની (કાંદીવલી) | ૨૫૧ |
| ૭૧ | અ. સૌ. લાછુબેમ હા. રવજી શામજી (કાદીવલી] | ૨૫૧ |
| ૭૨ | અ. સૌ. બેન કુંદનગૌરી મનહરલાલ સંઘવી (ખારરોડ) | ૨૫૧ |
| ૭૩ | શાહ કરશન લધુભાઈ (દાદર) | ૩૦૧ |
| ૭૪ | અ. સૌ. રંજનગૌરી ચંદુલાલ શાહ C/o ચંદુલાલ લક્ષ્મીચંદ (માટુંગા) | ૨૫૧ |
| ૭૫ | મ્હેતા મોટર સ્ટોર્સ હા. અનોપચંદ ડી. મહેતા (મુંબઈ) | ૨૫૧ |

૭૬ શેઠ મનુભાઈ માણેકચંદ હા. ઝાટકીયા નરભેરામ મોરારજી (ઘાટકોપર) ૨૫૧
૭૭ ખેતાણી મણીલાલ કેશવજી (વડીયાવાળા) ઘાટકોપર ૨૫૧
૭૮ સ્વ. કસ્તુરચંદ અમરશીના સ્મરણાર્થે હા. તેમનાં ધર્મપત્નિ
ઝવેરબેન મગનલાલની વતી—જયંતીલાલ કસ્તુરચંદ મશ્કારીયા
(ચુડાવાળા) ૨૫૧
૭૯ સ્વ. પૂજ્ય માતુશ્રી જકલબાઇના સ્મરણાર્થે
હા. દેશાઈ વ્રજલાલ કાળીદાસ (મલાડ) ૨૫૧
૮૦ શાહ નટવરલાલ દીપચંદ તરફથી તેમનાં ધર્મપત્નિ
અ. સૌ. સુશીલાબેનના વર્ષીતપની ખુશાલીમા ૨૫૧
૮૧ શેઠ રસીકલાલ પ્રભાશંકર મોરબીવાળા તરફથી તેમનાં માતુશ્રી
મણીબેનના સ્મરણાર્થે ૩૦૧
૮૨ કોટીચા જયતીલાલ રણછોડદાસ સૌભાગ્યચંદ જુનાગઢવાળા ૨૫૧
૮૩ મોદી અભેચંદ સુરચંદ રાજકોટવાળા હા. ડોસાલાલ અભેચંદ ૨૫૧
૮૪ સ્વ. શાહ રાયશી કચરાભાઇના સ્મરણાર્થે તેમના
ધર્મપત્નિ નેણબાઈ વતી હ શાહ જેઠાલાલ રાયશી ૨૫૧
૮૫ શ્રીયુત જે. સી. વોરા ૨૫૦
૮૬ શ્રી વર્ધમાન સ્થા. જૈન શ્રાવક સંઘ હ. સંઘવી ચીમનલાલ અમરચંદ (દાદર) ૨૫૧
૮૭ સ્વ. આશારામ ગીરધરલાલના સ્મરણાર્થે હ. શાંતિલાલ
આશારામની વતી જસવંતલાલ આશારામ લખતરવાળા ૨૫૧

## માંડવી (કચ્છ)

૧ શ્રી સ્થા. છ કોટી જૈન સંઘ હા. મહેતા ચુનીલાલ વેલજી ૨૭૭

## માંડવા (ધોળાજંકશન)

૧ શ્રી માડવા સ્થા. જૈન સંઘ હ. અ. સૌ. કંચનગૌરી રતિલાલ
ગોસલીયા ગઢડાવાળા ૨૫૧

## મેસાણા

૧ શાહ પદમશી સુરચંદના સ્મરણાર્થે હા. શીવલાલ પદમશી વીરમગામવાળા ૨૫૧

## મોમ્બાસા

૧ શાહ દેવરાજ પેથરાજ ૨૫૦
૨ શ્રીયુત નાથાલાલ ડી. મહેતા ૨૫૧

## યાદગીરી

૧ શેઠ બાદરમલજી સૂરજમલજી બેન્કર્સ ૨૫૦

### રાણપુર (ઝાલાવાડ)

| | |
|---|---|
| ૧ શ્રીમતિ માતુશ્રી સમરતબાઈના સ્મરણાર્થે હા. ડો. નરોત્તમદાસ ચુનીલાલ કાપડીયા | ૨૫૧ |

### રાણાવાસ (મારવાડ)

| | |
|---|---|
| ૧ શેઠ જવાનમલજી નેમીચંદજી હા. બાબુ રીખબચંદજી | ૩૦૧ |

### રાજકોટ

| | |
|---|---|
| ૧ ધી વાડીલાલ ડાઈંગ એન્ડ પ્રિન્ટીંગ વર્કસ | ૪૦૦ |
| ૨ શેઠ રતીલાલ ન્યાલચંદ | ૨૫૧ |
| ૩ બાબુ પરશુરામ છગનલાલ શેઠ (ઉદેપુરવાળા) | ૨૫૦ |
| ૪ શેઠ મનુભાઈ સુળચંદ (એન્જીનીઅર સાહેબ) | ૨૫૧ |
| ૫ શેઠ શાન્તીલાલ પ્રેમચંદ તેમનાં ધર્મપત્નિના વરસીતપ પ્રસંગે | ૨૫૧ |
| ૬ ઉદાણી ન્યાલચંદ હાકેમચંદ વકીલ | ૨૫૧ |
| ૭ શેઠ પ્રજારામ વીઠ્ઠલજી | ૨૫૧ |
| ૮ બહેન સર્યુબાળા નૌત્તમલાલ જસાણી (વરસીતપની ખુશાલી) | ૨૫૧ |
| ૯ મોદી સૌભાગ્યચંદ મોતીચંદ | ૨૫૧ |
| ૧૦ બદાણી ભીમજી વેલજી તરફથી તેમનાં ધર્મપત્નિ અ. સૌ. સમરતબેનના વરસીતપની ખુશાલી | ૨૫૧ |
| ૧૧ દોશી મોતીચંદ ધારશીભાઈ (રીટાયર્ડ એન્જીનીઅર સાહેબ) | ૨૫૧ |
| ૧૨ કામદાર ચંદુલાલ જીવરાજ | ૨૫૦ |
| ૧૩ હેમાણી ઘેલુભાઈ સવચંદ | ૨૫૧ |
| ૧૪ પ્રભુલાલ ન્યાલચંદ દફ્તરી | ૨૫૧ |
| ૧૫ સ્વ. મહેતા દેવચંદ પુરૂષોત્તમદાસના સ્મરણાર્થે તેમનાં ધર્મપત્નિ હેમકુવરબાઈ તરફથી હા. જયંતીલાલ દેવચંદ મહેતા | ૨૫૧ |

### રાજાજીકાકેરડા (ભીલવાડા)

| | |
|---|---|
| ૧ શ્રીમાન જોરાવરમલજી ધર્મચંદજી ડુંગરવાલ [ મુનીશ્રી માંગીલાલજીના ઉપદેશથી ] | ૨૫૧ |

### રાયચુર

| | |
|---|---|
| ૧ સ્વ. માતુશ્રી મોંઘીબાઈના સ્મરણાર્થે હ. શાહ શીવલાલ ગુલાબચંદ વઢવાણવાળા | ૨૫૧ |

### રંગુન

| | |
|---|---|
| ૧ કામદાર ગોરધનદાસ મગનલાલનાં ધર્મપત્નિ અ. સૌ. કમળાબેન | ૨૫૧ |

### રાપર (કચ્છ)

| | |
|---|---|
| ૧ પુજ્ય વાલજીભાઇ ન્યાલચંદ | ૨૫૧ |

## લખતર

૧ શાહ રાયચંદ ઠાકરશીના સ્મરણાર્થે હા. શાહ શાન્તીલાલ રાયચંદ ૨૫૧
૨ ભાવસાર હરજીવનદાસ પ્રભુદાસના સ્મરણાર્થે
હા. ભાઈ ત્રીભોવનદાસ હરજીવનદાસ ૨૫૧
૪ શાહ ચુનીલાલ માણેકચંદ ૨૫૧
૫ શાહ જાદવજી ઓઘડભાઈ સદાદવાળાના સ્મરણાર્થે
હા. ભાઈ શાન્તીલાલ જાદવજી ૨૫૧
૬ દોશી ઠાકરશી ગુલાબચંદના સ્મરણાર્થે તેમનાં ધર્મપત્નિ સમરતબેન
વૃજલાલ તરફથી હા. જયંતીલાલ ઠાકરશી ૨૫૧

## લાલપુર

૧ શેઠ નેમચંદ સવજીભાઈ મોદી હા. મગનલાલભાઈ ૨૫૧
૨ શેઠ મુળચંદ પોપટલાલ હા. મણીબાઈ તથા જેસીંગલાલભાઈ ૨૫૧

## લાખેરી ( રાજસ્થાન )

૧ માસ્તર જેઠાલાલ મોનજીભાઈ હા. મહેતા અમૃતલાલ જેઠાલાલ
(સીવીલ એન્જીનીઅર સાહેબ) ૨૫૧

## લીમડી ( પંચમહાલ )

૧ શાહ કુંવરજી ગુલાબચંદ ૨૫૧
૨ છાજેડ ઘાસીરામ ગુલાબચંદ ૨૫૧ા≈

## લીંબડી (સૌરાષ્ટ્ર)

૧ શાહ ચકુભાઈ ગુલાબચંદ ૨૫૧

## લાકડીયા (કચ્છ)

શ્રી સ્થાવર જૈન સંઘ હ. શાહ રતનશી કરમણ ૨૫૧

## લોનાવાલા

૧ શેઠ ધનરાજજી મૂળચંદજી મૂથા ૨૫૧

## વઢવાણ શહેર

૧ શાહ દીલીપકુમાર સવાઈલાલ હા. સવાઈલાલ ત્રંબકલાલ શાહ ૨૫૧
૨ શાહ મગનલાલ ગોકળદાસ હા. રતીલાલ મગનલાલ કામદાર ૨૫૧
૩ સંઘવી મુળચંદ બેચરભાઈ હા. ભાઈ જીવણલાલ ગફલદાસ ૨૫૧
૪ શેઠ વૃજલાલ સુખલાલ ૨૫૧
૫ શેઠ કાન્તીલાલ નાગરદાસ ૨૫૧
૬ વોરા ચત્રભુજ મગનલાલ ૨૫૧
૭ સંઘવી શીવલાલ હીમજીભાઈ ૨૫૧
૮ શાહ દેવશી દેવકરણ ૨૫૧
૯ વોરા ડોસાભાઈ લાલચંદ સ્થા. જૈન સંઘ હા. વોરા નાનચંદ શીવલાલ ૨૫૧
૧૦ વોરા ધનજીભાઈ લાલચંદ સ્થા. જૈન સંઘ હા. વોરા પાનાચદ ગોબરદાસ ૨૫૧

૧૧ દોશી વીરચંદ સુરચંદ હા. દોશી નાનચંદ ઉજમશી ૨૫૧
૧૨ સ્વ વોરા મણીલાલ મગનલાલ હા. વોરા ચત્રભુજ મગનલાલ ૨૫૧

## વટામણ

૧ શ્રી વટામણ સ્થા. જૈન સંઘ હા. શ્રી ડાહ્યાભાઈ હલુભાઈ પટેલ ૨૫૧

## વલસાડ

૧ શાહ ખીમચંદ મૂળજીભાઈ ૨૫૧

## વણી

૧ મહેતા નાનાલાલ છગનલાલનાં ધર્મપત્નિ સ્વ. ચંચળબેન તથા પુરીબેનના સ્મરણાર્થે હા. ભાઇ મનહરલાલ નાનાલાલ ૨૫૧

## વડોદરા

૧ કામદાર કેશવલાલ હિમતરામ પ્રોફેસર સાહેબ (ગોંડલવાળા) ૨૫૧
૨ વકીલ મણીલાલ કેશવલાલ શાહ ૨૫૧

## વડીયા

૧ પંચમીયા ભવાનભાઈ કાળાભાઈ (જેતપુરવાળા) ૨૫૧

## વાંકાનેર

૧ માસ્તર કાન્તીલાલ ત્રંબકલાલ ખંઢેરીયા ૨૫૧
૨ દફતરી ચુનીલાલ પોપટલાલ મોરબીવાળા હા. ભાઇ પ્રાણલાલ ચુનીલાલ ૨૫૧

## વીંછીયા

૧ શ્રી સ્થા. જન સંઘ હા. અજમેરા રાયચંદ વૃજપાળ ૨૫૧

## વીરમગામ

૧ શાહ વીઠ્ઠલભાઇ મોદી માસ્તર ૨૫૧
૨ શાહ નાગરદાસ માણેકચંદ ૨૫૧
૩ શાહ મણીલાલ જીવણલાલ (શાહપુરવાળા) ૨૫૧
૪ શાહ અમુલખ (બચુભાઈ) નાગરદાસના ધર્મપત્નિ અ સૌ.બેન લીલાવંતીના વરસીતપના પારણાની ખુશાલીમા હા. ભાઈ કાન્તીલાલ નાગરદાસ ૩૦૦
૫ સ્વ. શેઠ ઉજમશી નાનચંદના સ્મરણાર્થે તેમના પુત્રો તરફથી હા. શેઠ ચુનીલાલ નાનચંદ ૨૫૧
૬ સ્વ. શેઠ મણીલાલ લક્ષ્મીચંદના સ્મરણાર્થે તેમના પુત્રો તરફથી હા. ખીમચંદભાઈ (ખારાઘોડાવાળા) ૨૫૧
૭ સ્વ. શેઠ હરીલાલ પ્રભુદાસના સ્મરણાર્થે હા. શેઠ અનુભાઈ હરીલાલ ૨૫૧
૮ સંઘવી જેચંદભાઈ નારણદાસ ૨૫૧
૯ સ્વ. શાહ વેલશીભાઇ સાકરચંદભાઈના સ્મરણાર્થે હા. ચીમનલાલ વેલશી (કત્રાસવાળા) ૨૫૧

૧૦ પારેખ મણીલાલ ટોકરશી લાતીવાળા તરફથી (મોટીબેનના સ્મરણાર્થે) ૨૫૧
૧૧ શાહ નારણદાસ નાનજીભાઇના સુપુત્ર વાડીલાલભાઇનાં ધર્મપત્નિ અ. સૌ.
નારંગીબેનના વરસીપત નિમીત્તે હા. શાન્તીભાઇ ૨૫૧
૧૨ સ્વ. છબીલદાસ ગોકળદાસના સ્મરણાર્થે તેમનાં ધર્મપત્નિ
કમળાબેન તરફથી હા. મંજુલાકુમારી ૨૫૧
૧૩ શ્રી સ્થા. જૈન શ્રાવિકા સંઘ હા. પ્રમુખ અ. સૌ. રંભાબેન વાડીલાલ ૨૫૧
૧૪ સ્વ. ત્રીભોવનદાસ દેવચંદ તથા સ્વ. અ. સૌ. ચંચળબેનના
સ્મરણાર્થે હા. ડો. હિંમતલાલ સુખલાલ ૨૫૧
૧૫ શાહ મૂળચંદ કાનજીભાઇ તરફથી હા. નાગરદાસ ઓઘડભાઈ ૨૫૧
૧૬ શેઠ મોહનલાલ પીતાંબરદાસ હા. ભાઈ કેશવલાલ તથા મનસુખભાઇ ૨૫૧
૧૭ શ્રીમતી હીરાબેન નથુભાઈના વરસીતપ નિમિત્તે
હા. નથુભાઈ નાનચંદ શાહ ૩૦૧
૧૮ સ્વ. મણીયાર પરસોતમદાસ સુદરજીના સ્મરણાર્થે
હા. શેઠ સાકરચંદ પરસોતમદાસ ૨૫૧
૧૯ શેઠ મણીલાલ શીવલાલ ૨૫૧

**વેરાવલ**

૧ શાહ કેશવલાલ જેચંદભાઈ ૨૫૧
૨ શાહ ખીમચંદ સૌભાગ્યચંદ વસનજી ૨૫૧
૩ સ્વ. શેઠ મદનજી જેચંદભાઈ માંગરોળવાળાના સ્મરણાર્થે તેમનાં ધર્મપત્નિ
લાડકુંવરબાઈ તરફથી હા. ધીરજલાલ મદનજી ૨૫૧

**સરખેજ**

૧ સ્વ. પિતાશ્રી શાહ ફકીરચંદ પુંજાભાઈના સ્મરણાર્થે
હા. શાહ રમણલાલ ફકીરચંદ ૨૫૧

**સતારા**

૧ સ્વ. મદનલાલજી કુંદનમલજી કોઠારીના સ્મરણાર્થે હા. તેમનાં ધર્મપત્નિ
રાજકુવરબાઇ મદનલાલજી ૨૫૧

**સાદડી**

૧ શેઠ દેવરાજજી જીતમલજી પૂનમીયા ૨૫૧

**સાલબની** ( બંગાળ )

૧ દોશી ચુનીલાલ ફુલચંદ મોરબીવાળા ૨૫૦

**સાણંદ**

૧ શાહ હીરાચંદ છગનલાલ હા. શાહ ચીમનલાલ હીરાચંદ ૩૦૧
૨ અ. સૌ. ચંપાબેન હા. દોશી જીવરાજ લાલચંદ ૨૫૧
૩ પટેલ મહાસુખલાલ ડોસાભાઈ ૨૫૧
૪ શાહ સાકરચંદ કાનજીભાઇ ૨૫૧

૫ પુરીબેન ચીમનલાલ કલ્યાણજી સંઘવી લીમડીવાળાના સ્મરણાર્થે
હા. વાડીલાલ મોહનલાલ કોઠારી ૨૫૧

૬ પારેખ નેમચંદ મોતીચંદ સુળીવાળાના સ્મરણાર્થે
હા. પારેખ ભીખાલાલ નેમચંદ ૨૫૧

૭ સંઘવી નારણદાસ ધરમશીના સ્મરણાર્થે હા. ભાઇ જયંતિલાલ નારણદાસ ૨૫૧

**સુરત**

૧ શ્રી સ્થા. જૈન સંઘ હા. શાહ છોટુભાઈ અભેચંદ ૨૫૧

૨ શ્રીયુત કલ્યાણચંદ માણેકચંદ હડાલાવાળા ૨૫૧

**સુવઇ ( કચ્છ )**

૧ સાવળા શામજી હીરજી તરફથી સદાનંદી જૈન મુનિશ્રી છોટાલાલ
મહારાજના ઉપદેશથી સુવઇ સ્થા. જૈન સંઘ જ્ઞાનભંડારને ભેટ ૨૫૧

**સુરેન્દ્રનગર**

૧ શેઠ ચાંપશીભાઇ સુખલાલ ૨૫૧

૨ ભાવસાર ચુનીલાલ પ્રેમચંદ ૨૫૧

૩ સ્વ. કેશવલાલ મૂળજીભાઇનાં ધર્મપત્નિ અમૃતબાઈના સ્મરણાર્થે
હા. શાહ કેશવલાલ ( થાનગઢવાળા) ૨૫૧

૪ શાહ ન્યાલચંદ હરખચંદ ૨૫૧

૫ શાહ વાડીલાલ હરખચંદ ૨૫૧

**સંજેલી (પંચમહાલ)**

૧ શાહ લુણાજી ગુલાબચંદ ૨૫૧

૨ શ્રી સ્થા. જૈન સંઘ હા. શેઠ પ્રેમચંદ દલીચંદ ૨૫૧

**હાટીનામાળીયા**

૧ શેઠ ગોપાલજી મીઠાભાઈ ૨૫૦

**હારીજ**

૧ અમુલખભાઈ મુળજી હા. પ્રકાશચંદ અમુલખ ૩૦૧

૨ સ્વ. બેન ચંદ્રકાન્તાના સ્મરણાર્થે હા. અમુલખ મુળજીભાઈ ૩૦૧

**હુબલી**

૧ હીરાચંદ વનેચંદજી કટારીઆ ૨૫૧

**તા.૧૦-૧૨-૫૮ સુધી મેમ્બરોની સંખ્યા**

**૫ આદ્ય મુરબ્બીશ્રીઓ**
**૨૧ મુરબ્બીશ્રીઓ**
**૪૯ સહાયક મેમ્બરો**
**૪૧૨ લાઇફ મેમ્બરો**
**૬૯ બીજા કલાસના મેમ્બરો**

---

**કુલ મેમ્બરો ૫૫૬**

રાજકોટ તા. ૧૦-૧૨-૫૮

સાકરચંદ ભાઇચંદ શેઠ
મંત્રિ

## શ્રી અખિલ ભારત શ્વેતામ્બર સ્થાનકવાસી જૈન શાસ્ત્રોદ્ધાર સમિતિની

# અગત્યની અપીલ

### સ્થાનકવાસી જૈન ભાઇઓ અને બ્હેનો:—

સ્થાનકવાસી સમાજને બે અવલંબન છે. તેમાં પહેલું મુનિવર્ગ અને બીજું શાસ્ત્રશ્રવણ છે. જ્યાં જ્યાં મુનિમહારાજોની ગેરહાજરી હોય છે (અને ભવિષ્યમાં રહેવાની છે) તે સ્થળે આ શાસ્ત્રો સ્થાનકવાસી કોમને ટકાવી રાખવા મોટામાં મોટું સાધન છે.

ઓછામાં ઓછા રૂા. ૫૦૦૦) આપી આદ્ય મુરબ્બીપદ આપ દિપાવી શકો છો.

ઓછામાં ઓછા રૂા. ૧૦૦૦) આપી મુરબ્બીપદ મેળવી શકો છો.

ઓછામા ઓછા રૂા. ૫૦૦) આપી સહાયક મેમ્બર બની શકો છો.

અને ઓછામા ઓછા રૂા. ૨૫૦) આપી લાઇફ મેમ્બર તરીકે દરેક ભાઈ બેન દાખલ થઇ શકે છે,

ઉપુરના દરેક મેમ્બરોને ૩૨ સૂત્રો તથા તેના તમામ ભાગો મળી લગભગ ૭૦ ગ્રંથો જેની કિંમત લગભગ ૮૦૦ ઉપર થાય છે તે ભેટ તરીકે મળી શકે છે. અને દરેક શાસ્ત્રમા તેમનું નામ પ્રસિદ્ધ કરવામા આવે છે.

દરેક શાસ્ત્ર ૪ ભાષામાં તૈયાર થાય છે. એટલે દરેક પાનામા ૪ ભાષા જોવામાં આવશે. ઉપરમાં અર્ધમાગધી, તેની નીચે સંસ્કૃત છાયા–ટીકા ત્યાર બાદ હીન્દી રાષ્ટ્રભાષા અને છેવટે ગુજરાતીમાં અનુવાદ જોવામા આવશે.

શ્રમણ વર્ગ, શ્રાવક વર્ગને દરેક પ્રદેશમાં વસતા સમાજનાં દરેક અંગને એક સરખી રીતે ઉપયોગી થાય તેવી રીતે ખ્યાલ કરીને શાસ્ત્રની રચના કરવામાં આવે છે.

બહાર દેશાવરમા વસતા આપણા ભાઈઓને તેમજ ગામડામાં વસતા શ્રાવકોને તેમજ ફુરસદે વાચન કરનાર બ્હેનો તેમજ વિદ્યાર્થીઓને એક સરખું ઉપયોગી થઈ શકે તેવું સાહિત્ય બીજી કોઈ જગ્યાએ મળી શકે તેમ નથી.